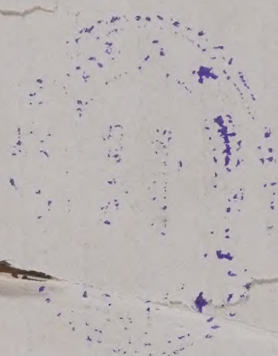
॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाटीकासहितभगवद्गीताप्रारम्भः ॥


दु.
भी.
कौरवसना
पाडवसना
श्रीकृष्ण
अर्जुन

रुपोंकू पावनकरेहै एकतो वक्ताउ
केपादकाउदक पावनकरैहै इति ।।
उपदेशकरणेकाप्रयास करणा ।।
जनावणेवासतै पूंछैं हैं ।
(मू. श्लो.)
त्वया ।
ताशास्त्र
।। ७
टीका । हे
कन्या
सहित
हूं
है

प्रस्तावना

...नंदसे समस्त सज्जनोंको विदित करते हैं कि, चिदानन्दमय ब्रह्मके अनादिसिद्धशक्तिद्वारा प्रपंचित अनंतकोटिब्रह्माण्डात्मक संसारमें अनंतजन्मार्जित सुकृतदुष्कृतकर्मोंसे ... प्राप्त होनेवाले असंख्यात जीवोंको इस भवपाशसे मुक्तहोकर सच्चिदानन्द परब्रह्ममय होना यही परम उत्तम कर्तव्य है. अब यह विचार करना चाहिये कि, मोक्षरूप ...प्ति सहजसाध्य नहीं है. किंतु प्रबलतरसंस्कारसाध्य है. वे संस्कार स्वस्ववर्णाश्रमोचित धर्मानुष्ठानद्वारा शमदमादिसाधनसंपत्तिप्राप्तिपर्यंत उपचित होकर चित्तकी शुद्धि करते ... एवं शुद्धि होनेके उपरान्त सद्गुरूपाश्रयण करके उनके मुखारविन्दसे उपदिष्ट हुए उपनिषदादि वाक्योंके अर्थतात्पर्यका विचार करनेसे तत्त्वंपदार्थबोध उत्पन्न होता है, तिसके अनन्तर ...य विचारैकगम्य "अहं ब्रह्मास्मि" इस वाक्यार्थकी उपस्थिति जब दृढतर होती है तब पूर्णब्रह्ममयत्व प्राप्त होता है वही मोक्षोपाय है. अब मोक्षसिद्धिके अर्थ उपनिषदादि वेदान्तवाक्योंका अर्थबोध होना आवश्यक है. सब उपनिषद्ग्रन्थ मिलकर अतिविस्तीर्ण वेदान्तशास्त्र है. सबका विचार साधारणप्रज्ञपुरुषोंको होना अतिदुर्घट है. इस अभिप्रायसे संपूर्ण उपनिषदोंका सार सार संग्रहकरके श्रीभगवान् श्रीकृष्णजीने अर्जुनको उपदेश दिया है. वह भगवदुक्ती "श्रीमद्भगवद्गीता" इस नामसे सुप्रसिद्ध है. यह भगवद्गीता श्रीमान् वेदव्यासजीने श्रीकृष्णार्जुनसंवादरूपसे श्रीमन्महाभारतके भीष्मपर्वमें निवेशित करी है. इस भगवद्गीतामें "तत् त्वम् असि" इन तीन पदोंका अर्थनिर्णयके अर्थ तीन षट्क (छः छः अध्यायोंका एक एक भाग ऐसे मिल कर अठारह अध्याय) हैं. इस शास्त्रका मुख्य उद्देश संपूर्ण प्राणिमात्रोंको स्वस्ववर्णाश्रमोक्त धर्माचरणपूर्वक परमात्मतत्त्वज्ञानसे मोक्षसंपादन करना यही है. ऐसा यह परमोपयोगी भगवद्गीताशास्त्र सर्व सज्जनोंसे संमानित इस भूमंडलमें सुप्रसिद्धही है. इस भगवद्गीताशास्त्रके ऊपर अद्यावधि बहुत आचार्योंने भाष्यरचनाकरके उपनिषदर्थोंका आभ्यंतरीक सारअंश प्रकटकिया है. जिसके द्वारा अनेक सज्जनोंको परमार्थका लाभ हुआ है. ऐसेही अनेकानेक विद्वज्जनोंने सविस्तर टीकायें निर्माण करके भाष्योक्तार्थका अनुसरण किया है. परंतु कालमाहात्म्यसे संस्कृतविद्याके अध्ययन अध्यापनके प्रचारका ऱ्हास होनेसे सर्वसाधारण लोगोंको यथार्थ सारअर्थका बोध होना दुर्लभ हुवा. यह विचार करके परममान्य श्रीमन्निखिलगुणगणालंकृतविद्वद्गणशिरोवतंस श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य पूज्यपादश्रीस्वामि **चिद्घनानंद गिरिजी** महोदयने सर्व सांसारिक लोकोंके उपकारार्थ **श्रीमच्छांकरभाष्यके** पदपदार्थानुकूल यह **"गूढार्थदीपिका"** नामक भाषाटीका निर्माणकरके सब सांसारिक लोकोंके ऊपर महान् अनुग्रह किया है. अब हम बड़े आनंदसे उक्त महोदयको जितने धन्यवाद देंगे उतनेही थोडे हैं. इन महात्मापुरुषने इस भूमंडलमें अवतार लेकरके शास्त्रका पुनरुज्जीवन किया है. प्रथमतः इन्होंने **"न्यायप्रकाश"** ग्रंथ निर्माण करके न्यायशास्त्रके प्रेमियोंको न्यायशास्त्रोक्त प्रमाण प्रमेय ऐसे सुबोध करदियेहैं कि, जिनको केवलभाषा जाननेवाले समस्त जिज्ञासुजन अनायाससेही न्यायशास्त्रमें पारंगत होसकते हैं और **"आत्मपुराण"** ग्रंथका भाषांतर करके उपनिषदोंका संपूर्ण अर्थ साधारण लोकोंको करतलामलकवत सुलभ करदिया है. और यह गीता **"गूढार्थदीपिका"** भाषाटीका निर्माणकरके समस्त शास्त्रसिद्धान्तको सर्व लोकोंके अर्थ सुलभ करदिया है और **"तत्त्वानुसंधान"** नामक ग्रंथ निर्माण



श्लोक ॥ (वासुदेवकथाप्रश्नः पुरुषांस्त्रीन्पुनातिहि ॥ वक्तारंपृच्छकंश्रोतृंस्तत्पादसलिलंयथा) अर्थयह ॥ परमेश्वररूपवासुदेवकीकथाकाजोप्रश्नहै सोप्रश्न तीनपुरुषोंकूं पावनकरैहै एकतौ वक्तापुरुषकूं पावनकरैहै और दूसरा प्रश्नकरणेहारेपुरुषकूं पावनकरैहै ॥ और तीसरा श्रोतापुरुषोंकूं पावनकरैहै जैसे विष्णुकेपादकाउदक पावनकरैहै इति ।। ७१ ।। ❀ ॥ तहां जबपर्यंत शिष्यकूं संशयविपर्ययरहित अत्मज्ञानकीउत्पत्तिहोवै तबपर्यंत ब्रह्मवेत्ताकृपालुगुरुवोंनें उपदेशकरणेकाप्रयास करणा ।। इसप्रकारकेगुरुकेधर्मकीशिक्षाकरणेअर्थ सर्वज्ञभीश्रीकृष्णभगवान् अर्जुनकेप्रति अभीतुम्हारेकूंउपदेशकीअपेक्षानहींहै इकअर्थकेजनावणेवासतै पूंछैं हैं ।

(मू. श्लो.) कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेणचेतसा ॥ कच्चिदज्ञानसंमोहःप्रनष्टस्तेधनंजय ॥ ७२ ॥ कच्चित् । एतत् । श्रुतं पार्थ । त्वया । एकाग्रेण चेतसा । कच्चित् । अज्ञानसंमोहः । प्रनष्टः । ते । धनंजय ॥ ७२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! तुमनैं यहगीताशास्त्र एकाग्र चित्तकरिकै क्यां श्रवणकऱ्या हेधनंजय ! तुम्हारा अज्ञानकृतसंमोह क्यां नष्टहुआ यहतूं हमारेप्रतिकहु ॥ ७२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमआप्तसर्वज्ञपरमेश्वरनैं तुम्हारेताईं उपदेशकऱ्याजो यहब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रहै सोयहगीताशास्त्र तुमनैं एकाग्रचित्तकरिकै क्याश्रवणकऱ्या अर्थात् तुमनैंयहगीताशास्त्र क्याअर्थसहितनिश्चयकऱ्या ॥ हेधनंजय ! इसगीताशास्त्रकेश्रवणकरिकै तुम्हारा अज्ञानकृतविपर्ययरूपसंमोह अज्ञानरूपकारणसहित क्यानष्टहुआ ॥ तात्पर्ययह ॥ सो अज्ञानकृतसंमोह कदाचित् अबपर्यंतभी तुम्हारा नष्टनहींहुआहोवै तौ मैंभगवान् वासुदेवतुम्हारेताईं पुनःभी उपदेशकरूं यहआपणेचित्तकावृत्तांत तूं हमारेआगेकथनकर इति ॥ इहां (कच्चित्) यहदोनोंशब्द प्रश्नकेवाचकहैं तहां अनात्मारूपदेहादिकोंविषे जोआत्मत्वबुद्धिहै तथास्वधर्मरूपयुद्धविषे जोअधर्मत्वबुद्धिहै सोविपर्ययही इहां अज्ञानकृतसंमोहजानणा इति ॥ ७२ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार श्रीभगवान्करिकै पूंछाहुआ अर्जुन मैं अभी कृतार्थहुआहूं यातैं हमारेकूं पुनःउपदेशकीअपेक्षानहीं है इसप्रकारके आपणेअभिप्रायकूं कथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ नष्टोमोहःस्मृतिर्लब्धात्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥ स्थितोस्मिगतसंदेहः करिष्येवचनंतव ॥ ७३ ॥ नष्टः । मोहः । स्मृतिः । लब्धा त्वत्प्रसादात् । मया । अच्युत । स्थितः । अस्मि । गतसंदेहः । करिष्ये । वचनं । तव ॥ ७३ ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअच्युत ! मैंअर्जुननैं तुम्हारेप्रसादतैं आत्मज्ञानरूपस्मृति पाईहै ताकरिकै हमारा सोमोह नष्टहोताभयाहै याकारणतैं सर्वसंशयोंतैं रहितहुआ मैंतुम्हारीशासनाविषेस्थित हुंवाहूं सो तुम्हारा वचन मैंकरूंगा ॥ ७३ ॥ इतिपदार्थः ॥

इसगीताशास्त्रकेपाठमात्रकूंकरै है तथापि तिसपाठकूंश्रवणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं यहपुरुष इसगीताकेपाठकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरै है याप्रकारकी बुद्धिहोवैहै ॥ इसकारणतैं सोपाठकपुरुष तिसपाठमात्रतैंभी ज्ञानयज्ञकेफलरूपमोक्षकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा प्राप्तहोवैहै ॥ जबी यहपुरुष इसगीताशास्त्रकेपाठमात्रतैंभी परंपराकरिकै मोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै तबी इसगीताशास्त्रकेअर्थकेअनुसंधानपूर्वक इसगीताशास्त्रकूंपठनक करताहुआ यहपुरुष साक्षात्‌ही तिसमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ तहां (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप) इसवचनकरिकै पूर्वचतुर्थ अध्यायविषे द्रव्यमयादिकसर्वयज्ञोंतै ज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठता कथनकरिआयेहैं इति ॥ ७० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व इसगीताशास्त्रके वक्तापुरुषकेफलकूं तथा अध्ययनकरणेहारेपुरुषकेफलकूंकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इसगीताशास्त्रकेश्रोतापुरुषकेफलकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रद्धावाननसूयश्चशृणुयादपियोनरः ॥ सोपिमुक्तःशुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥ श्रद्धावान् । अनसूयः । च । शृणुयात् । अपि । यः । नरः । सः । अपि । मुक्तः । शुभान् । लोकान् । प्राप्नुयात् । पुण्यकर्मणाम्॥७१॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन ! जो पुरुष श्रद्धावानहुआ। तथा असूयादोषतैंरहितहुआ इसगीताशास्त्रकूं केवल श्रवणमात्रही करैहै श्रोतापुरुष भी सर्वपा पोंतैंमुक्तहुआ पुण्यकर्मवालापुरुषोंके शुभ लोकोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ ७१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! लोकोंऊपरिकरुणाकरिकै इसगीताशास्त्रका उच्चस्वरतैंपाठकरणेहारा जो अन्यपुरुषहै तिसअन्यपुरुषकेमुखतैं जोकोईपुरुष आस्तिक्य बुद्धिरूपश्रद्धावान्‌हुआ तथादोषकाआरोपणरूपअसूयादोषतैंरहितहुआ इसगीताशास्त्रकूं. केवल श्रवणमात्रहीकरै है अर्थात् यहपुरुष इसगीताशास्त्रका उच्चैस्वर करिकै पाठ किसवासतैकरताहै अथवा यहपुरुष इसगीताशास्त्रका असंबद्ध पा[illegible]रताहै इत्यादिकदोषोंकूं वक्तापुरुषविषे नहीं आरोपणकरताहुआ जोपुरुष श्रद्धा वान्‌होइकै इसगीताशास्त्रके केवल पाठमात्रकूंभी श्रवणकरै है सो केवल पाठमात्रकाश्रोतापुरुषभी सर्वपापोंतैंमुक्तहुआ अश्वमेधादिकपुण्यकर्मोंकेकरणेहारेधर्मात्मा पुरुषोंके शुभलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् जिनउत्तमलोकोंकूं अश्वमेधादिकपुण्यकर्मोंकेकरणेहारेपुरुष प्राप्तहोवैं हैं तिनउत्तमलोकोंकूंही सोगीताकेपाठमात्रकूं श्रवणकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ इहां (शृणुयादपि सोपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै , ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ इसगीताशास्त्रकेअर्थज्ञानतैंरहितकेवल अक्षरमात्रकाश्रोतापुरुषभी जबी उत्तमलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै तबी इसगीताशास्त्रकेअर्थज्ञानपूर्वक इसगीताशास्त्रकाश्रवणकरणेहारापुरुष तिनउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां इसप्रकारकाफल श्रीभागवतविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां

मनुष्येषु । कश्चित् । मे । प्रियकृत्तमः । भविता । न । च । मे । तस्मात् । अन्यः । प्रियतरः । भुवि ॥ ६९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन ! तथा सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे तिसपुरुषतें अन्य कोईभीमनुष्य मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवाला नहींहै नहींहो
वैगा तथा मैंपरमेश्वरकूंभी तिसतें अन्यपुरुष इसपृथिवीविषे अत्यंतप्रिय नहींहै ॥ ६९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे इसगीताशास्त्रकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै तिसविद्वान्पुरुषतैंअन्य सर्वमनुष्योंकेमध्यविषेकोईभी मनुष्य मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवाला इसवर्त्तमानकालविषैहैनहीं तथा पूर्वकोई हुआनहीं तथा आगेकोईहोवैगानहीं किंतु सोसंप्र दायकाप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुषही मैंपरमेश्वर विषयक अतिशयप्रीतिवालाहै ॥ हेअर्जुन ! केवल सोविद्वान्पुरुषही मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवालानहीं किंतु मैंपरमेश्वरकूंभी तिससंप्रदायप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुषतैंअन्य कोईभीपुरुष अतिशयप्रीतिकाविषयक पूर्वनहींहोताभयाहै ॥ तथा अबी इसभूमिलोकविषैहै नहीं तथा आगेहोवैगानहीं किंतु सोसंप्रदायकाप्रवर्त्तकविद्वान्पुरुषही मैंपरमेश्वरकूं अतिशयप्रीतिकाविषयहै इति ॥ ६९ ॥ ❀ ॥ तहां (यइमं परमंगुह्यम्) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं इसब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रकेअध्यापककेफलकूं कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इसगीताशास्त्रकेअध्ययन करणेहारेपुरुषकेफलकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अध्येष्यतेचयइमंधर्म्यंसंवादमावयोः ॥ ज्ञानयज्ञेनतेनाहमिष्टःस्यामितिमेमतिः ॥ ७० ॥ अध्येष्यते । च । यः ।
इमम् । धर्म्यम् । संवादम् । आवयोः । ज्ञानयज्ञेन । तेन । अहम् । इष्टः । स्याम् । इति । मे । मतिः ॥ ७० ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! पुनः जोपुरुष तुमहमदोनोंके संवादरूप तथाधर्म्यरूप इसगीताशास्त्रकूं अध्ययनकरैगा तिसपुरुषकरिकै मैंपरमेश्वर ज्ञान
यज्ञकरिकै पूजित होवौं हूं इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै ॥ ७० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मोक्षकेप्रातिकाकारणरूपजोआत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानरूपधर्मकाकारणहोणेतैं धर्म्यरूप अथवा धर्मतैं अविरुद्धहोणेतैंधर्म्यरूप जोयह तुम्हारा हमारासंवादरूप गीताशास्त्रहै इसगीताशास्त्रकूं जोअधिकारीपुरुष अध्ययनकरैगा अर्थात् जपरूपकरिकैपाठकरैगा तिसपाठकरणेहारेपुरुषकरिकै मैंपरमेश्वर ज्ञानयज्ञकरिकै पूजितहोऊंगा अर्थात् इसगीताशास्त्रकेचतुर्थअध्यायविषे द्रव्ययज्ञादिकसर्वयज्ञोंतैं श्रेष्ठरूपकरिकैकथनकऱ्याजो ज्ञानरूपयज्ञहै तिसज्ञानरूप यज्ञकरिकै मैंपरमेश्वर तिसपाठकपुरुषकरिकै पूजितहोऊंगा ॥ इसप्रकारका मैंपरमेश्वरकानिश्चयहै ॥ यद्यपि यहपुरुष इसगीताशास्त्रकेअर्थकूंनहींजानताहुआही

इसगीताशास्त्रकूं पाठरूपतैं तथाअर्थरूपतैं स्थापनकरै है इहां (मद्भक्तेषु) इसवचनकरिकै जोपुनः भक्तिकाग्रहणकऱ्याहै सोपूर्वउक्त तपस्वीआदिकतीनविशेषणोंतैंरहितपुरुषकूंभी भगवद्भक्तिमात्रकरिकै पात्ररूपताकेसूचनकरणेवासतै है इति ॥ तहां सोसंप्रदायकाप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुष क्याबुद्धिकरिकै यहगीताशास्त्रतिनभक्तजनोंविषे स्थापनकरै है ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं ॥ (भक्तिंमयिपरांकृत्वाइति) अधिकारीभक्तजनोंकेताईं जोहमनैं यहगीताशास्त्र उपदेशकरीताहै सोयह हमनैं परमगुरुरूपभगवान्की शुश्रूषाहीकरीतीहै ॥ इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोविद्वान्पुरुषहमारेभक्तों केताईं यहगीताशास्त्र उपदेशकरै है सोउपदेशकरतापुरुष मैंभगवान्वासुदेवकूं प्राप्तहीहोवै है अर्थात् सोविद्वान्पुरुष इसजन्ममरणरूपसंसारतैं शीघ्रमुक्तहीहोवै है ॥ हेअर्जुन ! इसअर्थविषे तुमनैं कदाचित्भी संशयनहींकरणा ॥ अथवा (भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ मैंपरमेश्वरविषे पराभक्तिकूंकरिकै सर्वसंशयोंतैंरहित हुआ सोविद्वान्पुरुष मैं परमेश्वरकूं अवश्यप्राप्तहीहोवैहै इति ॥ अथवा सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरविषे पराभक्तिकूंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवै है ॥ अन्यकिसीलोककूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (यइमंपरमंगुह्यम्) इसश्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै ॥ जोपुरुष भगवद्भक्तितैंरहितहुआभी केवल आपणेमानपूजाकीइच्छावालाहूआ इसपरमरहस्यरूपगीताशास्त्रकूं मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे प्राप्तकरै है सोपुरुषभी तिसपुण्यविशेषकेप्रभावतैं मैंचिदेकरसपरमेश्वरविषे अद्वैतभावनारूप उपासनारूपभक्तिकूं करिकै अर्थात् तिसउपासनारूपपराभक्तिविषे अतिआदरकूंप्राप्तहोइकै तथातिसपरमभक्तिकूंअनुष्ठानकरिकै मैंपरमात्माकूंही प्राप्तहोवैहै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन ! इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ परमेश्वरकेभक्तिकेलेशमात्रतैंभीरहित ऐसेजे अजामिलादिक हुएहैं तेअजामिलादिक आपणेपुत्रविषे स्नेहकेवशतैं तिसपुत्रके नारायण इसनामकरिकै परमेश्वरकास्मरण करतेभयेहैं ॥ तिसनारायणनामकेउच्चारणमात्रतैं प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ परमेश्वर तिनअजामिलादिकोंकेताईं शुभगतिकीप्राप्ति करताभयाहै ॥ जबी नारायणनामकेउच्चारणमात्रकरिकैही अजामिलादिक शुभगतिकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तबी जोपुरुष वाणीकरिकै इसगीताशास्त्रकेरहस्यअर्थकूं प्रतिपादनकरै है ॥ तिसपुरुषकूं भगवद्भक्तिलाभादिकक्रमकरिकै कृतकृत्यताहोवैहै याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ इहां किसीकमूलपुस्तकविषे (यइमंपरमंगुह्यम) इसवचनकेस्थानविषे (यइदंपरमंगुह्यम्) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहीजानणा इति ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः ॥ भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि ॥ ६९ ॥ नं । चं । तंस्मात् ।

ष्यकारभगवान् कथनकरतेभये हैं ॥ तहां श्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याजो विद्याउपदेशकेसंप्रदायकाप्रकारहै सोप्रकार श्रुतिविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेऽयताय नमाब्रूयाअवीर्यवतीतथास्याम् ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे अनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइके खेदकूंप्राप्तहुई वेदविद्या विद्याकेउपदेष्टाब्राह्मणों केसमीपजाइके यहवचन कहतीभई ॥ हेब्राह्मणोंतुम हमारेकूंगुह्यराखो ॥ ताकरिकै मैंविद्या तुम्हारेकूं भोगमोक्षदोनोंकीप्राप्तिकरूंगी ॥ और जोकदाचित् लोकों केऊपरिकृपादृष्टिकरिकै तुम हमारेकूं गुह्यनहींराखिसकतेहोवौ तौभी जोपुरुष गुणोंविषेदोषोंकाआरोपणरूपअसूयादोषवालाहै तथा ऋजुभावतैंरहितहै तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै तथा गुरुकीसेवाभक्तितैंरहितहै ऐसेअनधिकारीपुरुषकेताईं तुमोंनैं कदाचित्भी हमाराउपदेश नहींकरणा ॥ जोतुम धनादिकपदार्थोंकेलोभकरिकैऐसेअनधिकारीपुरुषोंकेताईं हमाराउपदेशकरोगे तौ मैंवंध्यास्त्रीकीन्याईं निष्फलहोवैंगी किंतु जोपुरुष असूयादोषतैंरहितहै तथा ऋजुभाववालाहै तथाइंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपवालाहै तथा गुरुकीसेवाभक्तिवालाहै तथा ईश्वरविषेअनुरागवालाहै ऐसेअधिकारीपुरुषोंकेताईं तुमोंनैं हमारा उपदेशकरणा इति ॥ किंवा जिसपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै तैसेही ब्रह्मविद्याकेउपदेष्टागुरुविषेपरमभक्तिहै तिसमहात्मापुरुषकूंही यहवेदांतप्रतिपादित अर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवै है इति ॥ ६७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार इसब्रह्मविद्यारूप गीताशास्त्रकेसंप्रदायविधिकूंकथनकरिकै अब श्रीभगवान् तिससंप्रदायकेप्रवर्त्तकपुरुषकेफलकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यइमंपरमंगुह्यंमद्भक्तेष्वभिधास्यति ॥ भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥ यः । इमम् । परमम् । गुह्यम् । मद्भक्तेषु । अभिधास्यति । भक्तिम् । मयि । पराम् । कृत्वा । माम् । एव । एष्यति । असंशयः ॥ ६८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषे परा भक्तिकूं करिकै इस परम गुह्य शास्त्रकूं मेरेभक्तोंविषे स्थापनकरैहै सोपुरुष मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवै है इसअर्थविषे संशयनहीं है ॥ ६८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तुम्हाराहमारासंवादरूप जोयहगीताशास्त्रहै कैसाहैयहगीताशास्त्र परमहै अर्थात् मोक्षरूप निरतिशयपुरुषार्थका साधनहोणेतैं सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैयहगीताशास्त्र गुह्यहै अर्थात् सर्वशास्त्रों केरहस्य अर्थकाप्रतिपादकहोणेतैं जिसीकिसीपुरुषकेताईं, उपदेशकरणेयोग्यनहीं है ॥ ऐसेइसपरमगुह्यगीताशास्त्रकूं जोसंप्रदायकप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे स्थापनकरै है अर्थात् मैंपरमेश्वरविषेअनुरागरूपभक्तिवालेपुरुषोंविषे जोविद्वान्पुरुष

करणेयोग्यहै तथाभक्तितैंरहितपुरुषकेताईंभी नहीं उपदेशकरणेयोग्यहै तथा[११] शुश्रूषातैंरहितपुरुषकेताईंभी नहीं[११] उपदेशकरणेयो
योग्यहै तथा[१२] जोपुरुष[१३] मैंपरमेश्वरविषयक[१४] असूयाकरैहै[१५] तिसकेताईंभी नहीं[१६] उपदेशकरणेयोग्यहै ॥ ६७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तुम्हारे जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिकरणेवासतै मैंसर्वज्ञ परमआप्त परमेश्वरनैं सर्वशास्त्रोंके अर्थकारहस्यरूप जोयहगीताशास्त्र उपदेशकऱ्याहै सोयहगीताशास्त्र अतपस्कपुरुषकेताईं कदाचितभी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ तहां जोपुरुष शब्दादिकविषयों तैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ताकानाम अतपस्कहै ॥ ऐसेइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितपुरुषकेताईं यहगीताशास्त्र किसीभीअवस्थाविषे नहींउपदेशकरणेयोग्यहै अर्थात् महान्‌संकटकेप्राप्त हुएभी ऐसेअजितइंद्रियपुरुषकेताईं यहगीताशास्त्र नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ इहां (कदाचन) इसपदका वक्ष्यमाणतीनोंपर्यायोंविषे संबंधकरणा ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालातौ है परंतुब्रह्मविद्याकेउपदेष्टागुरुविषे तथाईश्वरविषे भक्तितैंरहितहै ऐसेअभक्तपुरुषकेताईंभी यहगीताशास्त्र कदाचित भीनहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ हे अर्जुन ! जो पुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालाभीहै तथाभक्तिवालाभीहै परंतु जोपुरुष गुरुकी पादप्रक्षालनादिसेवारूपशुश्रूषातैंरहितहै ऐसेपुरुषकेताईंभी यहगीताशास्त्र कदाचित्‌भी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालाभीहै तथाभक्तिवालाभीहै तथाशुश्रूषावालाभीहै ॥ परंतु जोपुरुष मैं भगवान्‌वासुदेवकूं मनुष्यमानिकै तथाअसर्वज्ञत्वादिकगुणोंवालामानिकै असूयाकरै है अर्थात् मैंपरमेश्वरविषे आत्मप्रशंसादिकदोषोंकाआरोपणकरिकै हमारेईश्वरपणेकूं नहींसहनकरताहुआ जोपुरुष हमारेद्वेषकूंहीकरैहै ऐसे मैं परमेश्वरकीउत्कृष्टताकूंनहींसहनकरणेहारेपुरुषकेताईंभी यहगीताशास्त्र कदाचितभी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै किंतु जोपुरुष मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपवालाहै तथा गुरुईश्वरविषे भक्तिवालाहै तथा गुरुकीसेवारूपशुश्रूषावालाहै तथा मैंपरमेश्वरविषे अनुरागवालाहै ऐसेअधिकारीपुरुषकेताईंही यहगीताशास्त्र उपदेशकरणेयोग्यहै ॥ तहां इसश्लोकविषे एकनकारकेकथन करणेकरिकैही उक्तअर्थकीसिद्धि होइसकैहै ताएकनकारकूंनकहिकै श्रीभगवान्‌नैं जोइहां च्यारिनकारकथनकरेहैं सो एकएकविशेषणकेअभावहुएभी इस गीताशास्त्रकेउपदेशकीअयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै कथनकरेहैं ॥ और (मेधाविनेतपस्विनेवाविद्यादेया) अर्थयह ॥ शास्त्रकेअर्थधारणकरणेकीशक्तिवाले मेधावीपुरुषकेताईं अथवा इंद्रियोंकेनिग्रहवाले तपस्वीपुरुषकेताईं यहब्रह्मविद्या देणेयोग्यहै ॥ इसवचनविषे विद्याकेअधिकारीका विकल्प देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं शुश्रूषा गुरुभक्ति भगवत्‌अनुरक्ति इनतीनविशेषणोंयुक्त तपस्वीपुरुषकेताईं यहविद्या देणेयोग्यहै ॥ अथवा तिनतीनविशेषणोंयुक्त मेधावीपुरुषकेताईं यहविद्या देणेयोग्यहै ॥ तहां विद्याकीप्राप्तिविषे मेधा तप इनदोनोंकूं पाक्षिकत्वहुएभी भगवत्‌अनुरक्ति गुरुभक्ति शुश्रूषा इनतीनोंका सर्वत्र नियमही है ॥ इसप्रकार श्रीभा

तीसराभगवत्शरण अतिमात्र कह्याजावैहै ॥ जैसे (सकलमिदमहंचवासुदेवः परमपुमान्परमेश्वरःसएकः ।। इतिमतिरचलाभवत्यनंते हृदयगतेव्रजतान्विहाय दूरात्) अर्थयह ।। यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् तथामैं वासुदेवरूपहीहै ॥ सोपरमपुरुषपरमेश्वर एकअद्वितीयरूपहीं है ।। इसप्रकारकीअचलमति जिनपुरुषोंकी हृदयदेशविषेस्थितपरमात्मादेवविषे होवैहै हे दूत ! ऐसेसर्वत्रब्रह्मदृष्टिवालेपुरुषोंकेसमीप तुमनैं कदाचित्भी नहींजाणा किंतु ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं दूरतैंपरित्यागकारिकै तूं गमनकर ।। यह दूतकेप्रति यमराजाकावचनहै इति ।। इत्यादिकवचनोंविषे सोतीसरा भगवत्शरण कथनकर्‍याहै ।। इसप्रकारकी भगवत्शरणरूपभूमिकाविषे अंबरीष प्रह्लाद गोपी आदिक बहुतभक्तजन दृष्टांतरूपकरिकै कथनकरेहैं ॥ यहतीनोंप्रकारका भगवत्शरण भक्तिरसायननामाग्रंथविषे श्रीमधुसूदनस्वामीनैं विस्तारतैंवर्णनकर्‍याहै इति ।। तहां इसगीताशास्त्रविषे श्रीभगवान्‌कूं कर्मनिष्ठा ज्ञाननिष्ठा भगवद्भक्तिनिष्ठा यहतीनोंनिष्ठा परस्पर साध्यसाधनभावकूं प्राप्तहुई विवक्षितहैं ॥ तेतीनोंनिष्ठा पूर्व बहुतविस्तारतैंकथनकरिआये हैं ।। और यहअष्टादशअध्याय सर्वगीताशास्त्रका उपसंहाररूपहै ।। यातैं इहां प्रथम सर्वकर्मोंके संन्यासपर्यंतकर्मनिष्ठातौ (स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै ॥ और दूसरी संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकेपरिपाकसहित ज्ञाननिष्ठातौ (ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम्) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै ॥ और तीसरीभगवद्भक्तिनिष्ठातौ उक्तदोनोंनिष्ठावोंका साधनरूपभीहै तथाफलरूपभीहै ॥ यातैं सातीसरी भगवद्भक्तिनिष्ठा श्रीभगवान्‌नैं अंतविषे (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै इति ॥ और श्रीभाष्यकारभगवान्‌तौ (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् सर्वकर्मों केसंन्यासका अनुवादकरिकै (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै ज्ञाननिष्ठाका उपसंहारकरताभयाहै इसप्रकारकाव्याख्यान करतेभयेहैं ॥ तथा दूसरेभीअनेकप्रकारकेदुर्मतोंका खंडनकरतेभयेहैं ॥ सोसर्वप्रसंग इहां ग्रंथकेविस्तारभयतैं लिख्यानहीं इति ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्‌नैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसश्लोकपर्यंत सर्वगीताशास्त्रकाअर्थ समाप्तकर्‍या ॥ अब श्रीभगवान् इसब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रके संप्रदायविधिकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) इदंतेनातपस्कायनाभक्तायकदाचन ॥ नचाशुश्रूषवेवाच्यंनचमांयोभ्यसूयति ॥ ६७ ॥ इदम् । ते[1] । न । अतपस्काय । न । अभक्ताय । कदाचन । न । च । अशुश्रूषवे । वाच्यम् । न । च । माम् । यः अभ्यसूयति ॥ ६७॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! तुम्हारे हितवासतै हमनैंकथनकर्‍याहुआ यहगीताशास्त्र इंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितपुरुषकेताईं कदाचित्भी नहीं उपदेश

वादी यहवचनकहे ॥ इहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेव्याजकरिकै अधिकारीब्राह्मणोंकेप्रतिही (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै संन्यासकाविधानकऱ्याहै ॥ सोयहकूहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ॥ (वक्ष्यामितेहितम् त्वांमोक्षयिष्यामिसर्वपापेभ्यः त्वंमाशुचः) इसप्रकारके उपक्रमउपसंहारवाक्योंविषे अर्जुनकेप्रति यहउपदेश प्रतीतहोवैहै ॥ जोकदाचित् अर्जुनके व्याजकरिकै संन्यासकेअधिकारीब्राह्मणोंके प्रतिही यह भगवान्‌काउपदेश अंगीकारकरिये तौ तेउपक्रमउपसंहारवाक्य असंगतहोवैंगे ॥ यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास विधाननहींकऱ्याहै किंतु वर्णआश्रमके धर्मोंकीन्याईं संन्यासधर्मोंविषेभी अनादरकरिकै एकभगवत्‌शरणतामात्रविषेही श्रीभगवान्‌का तात्पर्य है इति ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सर्वधर्मोंविषे नहींआदर करिकै तूं एकमैंपरमेश्वरकेशरणकूं प्राप्तहुआ है इसकारणतैं सर्वधर्मकार्योंकाप्रवर्त्तक मैंपरमेश्वर तुम्हारेकूं बंधुवधादिनिमित्तक तथासंसारकेहेतुभूत ऐसे सर्व पापोंतैं प्रायश्चित्तनैंविनाही मुक्तकरूंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ (धर्मेणपापमपनुदति) इसश्रुतिविषे धर्मकूं पापनिवृत्तिकाहेतु कथनकऱ्याहै सोधर्मरूप मैंपरमेश्वरहीहूं॥ यातैं प्रायश्चित्ततैंविनाही मैंधर्मरूपपरमेश्वर तुम्हारेकूं तिनसर्वपापोंतैंमुक्तकरूंगा ॥ इसकारणतैं तूंशोककूंमतकर अर्थात् इसयुद्धविषेप्रवृत्तहुए मैंअर्जुनका बंधुवधादिनिमित्तक प्रत्यवायतैं किसप्रकार निस्तारहोवैगा इसप्रकारकेशोककूं तूं मतकर इति ॥ तहां (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै श्रीगवान्नैं भगवत्‌शरणका विधानकऱ्या सोभगवत्‌शरण शास्त्रविषे तीनप्रकारका कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तस्यैवाहंममैवासौसएवाहमितित्रिधा ॥ भगवच्छरणत्वंस्यात्साधनाभ्यासपाकतः ॥) अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं साधनोंकेअभ्यासकेपरिपाकतैं तीनप्रकारका भगवत्‌शरण प्राप्तहोवै है ॥ तहां एकतौ तिसपरमेश्वरकाही मैंहूं इसप्रकारका भगवत्‌शरण होवैहै ॥ और दूसरा यहपरमेश्वर मेराहीहै इसप्रकारका भगवत् शरण होवै है ॥ और तीसरा सोपरमेश्वर मैंहीहूं इसप्रकारका भगवत्‌शरण होवैहै ॥ तहां प्रथम भगवत्‌शरणतौ मृदु कह्याजावैहै॥ जैसे (सत्यपिभेदापगमेनाथतवाहंनमामकीनस्त्वम् ॥ सामुद्रोहितरंगः क्वचनसमुद्रोनतारंगः) ॥ अर्थयह ॥ हे सर्वजगत्‌केनाथ परमेश्वर ! ॥ जैसे समुद्रका तथा तरंगोंका भेदनहीं है तौभी समुद्रकेतरंगकहेजावैहैं कोई समुद्र तरंगोंका कह्याजावैनहीं ॥ तैसे तुम्हारा तथा हमारा यद्यपि भेदनहींहैं तथापिमैंतुम्हाराहीहूं तूं परमेश्वर हमारानहीं है इति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे सोप्रथम भगवत्‌शरण कथनकऱ्याहै ॥ और दूसरा भगवत्‌शरण मध्यम कह्याजावैहै ॥ जैसे (हस्तमुत्क्षिप्ययातोसि बलात्कृष्णकिमद्भुतम् ॥ हृदयाद्यदिनिर्यासि पौरुषंगणयामिते ॥) अर्थयह ॥ हे कृष्ण भगवन् ! बलात्कारसे हमारेहस्तकूं छुडाइकै तूं जाताभयाहै ॥ इसकरिकै तुम्हारा कोईअद्भुतपौरुष सिद्धनहींहोता ॥ जबी तूं हमारेहृदयतैं निकसिजावेगा तबी मैं तुम्हारेपौरुषकूं मानूंगा ॥ सोहमारेहृदयतैं कदाचित्‌भी तूं जाणेवालानहीं है इति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे सोदूसरा भगवत्‌शरण कथनकऱ्याहै ॥ और

हेतें (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें स्वरूपतैंतिनकर्मोंकात्याग विधाननहींकऱ्या किंतु स्वरूपतैं तिनकर्मोंकेवियमानहुएभी तिनकर्मोंविषे अतिआदरकूंनकरिकै एकभगवत्शरणमात्र ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इनच्यारिआश्रमियोंकेप्रति साधारणरूपतैं विधानकऱ्याहै ॥ तहां तिनच्यारि आश्रमियोंका शास्त्रप्रतिपादित स्वधर्मविषेतौ अतिआदर संभवहोइसकैहै ॥ यातैं तिनकर्मोंविषे अतिआदरकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्नें (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ और अनर्थरूपफलकीप्रातिकरणेहाराजोअधर्महै तिसअधर्मविषे किसीभीबुद्धिमान्पुरुषका आदर संभवतानहीं ॥ तथा तिनअधर्मोंकापरित्याग दूसरेप्रतिषेधशास्त्रोंकरिकैभीप्राप्तहै ॥ यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनविषेस्थित धर्मपदकूं धर्मअधर्मसाधारणकर्ममात्रकाउपलक्षणमानिकै इसवचनकूं अधर्मके त्यागकाबोधक अंगीकारकरणा संभवतानहीं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ शास्त्रप्रतिपादित वर्णआश्रमकेधर्मोंकूं जैसे स्वर्गादिरूपअभ्युदयकीकारणता शास्त्रविषेप्रसिद्धहै तैसे तिनधर्मोंकूं मोक्षकीकारणताभी होवैगी ॥ इसप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैही श्रीभगवान्नें (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ कोई स्वरूपतैं तिनकर्मोंकेपरित्यागवासतै श्रीभगवान्नें सोवचन नहींकह्याहै ॥ तहां जोकोईवादी यहवचनकहै ॥ (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकापरित्यागही विधानकऱ्याहै ॥ सोयहकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविहित सर्वधर्मोंकात्यागतौ संन्यासकेविधायकवचनोंकरिकैही प्राप्तहै ॥ तैसे अधर्मोंकात्यागभी प्रतिषेधशास्त्रकरिकैही प्राप्तहै और जोअर्थ पूर्व किसीभीप्रमाणकरिकै नहींप्राप्तहोवैहै तिसीहीअर्थका विधानहोवैहै ॥ अन्यप्रमाणकरिकैप्राप्तअर्थका विधानसंभवैनहीं ॥ यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें धर्मअधर्मरूपसर्वकर्मोंकात्याग विधाननहींकऱ्याहै ॥ और जोकोईवादी यहवचनकहै (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहभगवान्कावचनभी सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासका विधायकहीहै सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें एकभगवत्शरणतामात्रही विधानकरीहै यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन केवल अनुवादमात्रहीहै ॥ कर्मोंकेत्यागकाविधायकनहींहै ॥ और सर्वशास्त्रोंका परमरहस्यईश्वरशरणताहीहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नें तिसईश्वरशरणताविषेही इसगीताशास्त्रकीपरिसमाप्तिकरीहै ॥ तिसईश्वरशरणतातैंविना तिससंन्यासकाभी आपणेफलविषे परिअवसान होवैनहीं किंतु तिसईश्वरशरणताकीप्राप्तिकरिकैही तिससंन्यासका आपणेफलविषेपरिअवसानहोवैहै ॥ किंवा क्षत्रियहोणेतैं संन्यासआश्रमकाअनधिकारी जोअर्जुनहै ॥ तिसअर्जुनकेप्रति (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकाउपदेश संभवताभीनहीं ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसधर्मकेकरणेविषे अधिकारीहोवैहै तिसपुरुषकेप्रतिही तिसधर्मकाउपदेश संभवैहै ॥ तिसधर्मकेअनधिकारीपुरुषकेप्रति तिसधर्मकाउपदेश संभवैनहीं ॥ और जोकोई

ज्य । माम् । एकम् । शरणम् । व्रज । अहम् । त्वा । सर्वपापेभ्यः । मोक्षयिष्यामि । मां । शुचः ॥ ६६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! सर्वधर्मोंकूं परित्यागकरिकै एक मैंपरमेश्वररूप शरणकूं तूं प्राप्तहोउ मैंपरमेश्वर तुम्हारेकूं सर्वपापोंतैं मुक्तकरूंगा तूं मत शोककैंकर ॥ ६६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां केईकधर्मतौ वर्णधर्महोवैंहैं ॥ और केईकधर्मतौ आश्रमधर्म होवैंहैं ॥ और केईकधर्मतौ सामान्यधर्म होवैहैं ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैंब्राह्मणादिकवर्णमात्रकेप्रति जेधर्म विधानकरेहैं तेधर्म वर्णधर्म कहेजावैंहैं ॥ और तिसशास्त्रनैं ब्रह्मचर्यादिकआश्रममात्रकेप्रति जेधर्म विधानकरेहैं तेधर्म आश्रमधर्म कहेजावैंहैं ॥ और तिसशास्त्रनैं वर्णआश्रमदोनोंकेप्रति साधारणरूपतैं विधानकरेजेधर्महैं तेधर्म सामान्यधर्म कहेजावैहैं ॥ तेतीनोंप्रकारकेधर्म इसीअध्यायविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं परित्यागकरिकै अथवा जितनेक वियमान धर्महैं तथा जितनेक अवियमान धर्महैं तिन सर्व धर्मोंकूं परित्यागकरिकै अर्थात् स्वरूपतैं तिन धर्मोंकेवियमानहुएभी यहधर्मही हमारा शरणरूपहै इसप्रकार स्वशरणतारूपतैं तिनधर्मोंकूं नहींस्वीकारकरिकै तूं अर्जुन सर्वधर्मोंकेअधिष्ठानरूप तथासर्वधर्मोंकेफलप्रदातारूप मैंअद्वितीयईश्वररूपशरणकूं प्राप्तहोउ अर्थात् तेपूर्वउक्तधर्महोवो अथवा नहींहोवो ॥ अन्यकीअपेक्षावाले तिनधर्मोंकरिकै क्याप्रयोजन सिद्धहोवैहै ॥ और अन्यकीअपेक्षातैंरहित ऐसाजो भगवत्काअनुग्रहहै तिसभगवत्केअनुग्रहतैंही मैंकृतार्थ होवौंगा इसप्रकारके निश्चयकरिकै तिनधर्मोंविषे अतिआदरकूंनकरिकै मैंपरमानंदघनमूर्तिश्रीभगवान्वासुदेवकूंही तूं निरंतरभावनाकरिकै भज अर्थात् यहपरमात्मादेवकाचिंतनही परमतत्त्वहै ॥ इसतैंपरैदूसराकोईअधिकतत्त्वहैनहीं ॥ इसप्रकारकेविचारपूर्वक प्रेमकीउत्कटताकरिकै सर्वअनात्मचिंतनतैंशून्य तथा तैलधाराकीन्याई अनवच्छिन्न ऐसीमनकीवृत्तियोंकरिकै तूं मैंपरमात्मादेवकूं निरंतर चिंतनकर ॥ इहां (मामेकंशरणंव्रज) इतनेवचनमात्रकरिकैही सर्वधर्मों केत्यागकालाभ होइसकैहै ॥ यातैं पुनः (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै जोतिनसर्वकर्मोंकेनिषेधकाअनुवादकऱ्याहै सो अनुवाद परमेश्वरविषे सर्वधर्मकार्योंकीकारिताके लाभवासतैकऱ्याहै अर्थात् मैं अंतर्यामीपरमेश्वरकूंही सर्वधर्मकार्योंकीकारिताहोणेतैं मैंपरमेश्वरकेशरणागतपुरुषकूंअवश्यकरिकै तिनधर्मोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै इसप्रकारकेव्याख्यानकाभी खंडनकऱ्या ॥ सोव्याख्यानयहहै ॥ (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इतनेकहणेकरिकै केवलधर्ममात्रकापरित्याग प्रतीतहोवैहै ॥ अधर्मकात्याग प्रतीतहोवैनहीं ॥ और इहां धर्मअधर्मदोनोंकापरित्याग विवक्षितहै ॥ यातैं इहां धर्मपद धर्मअधर्मरूपकर्ममात्रकाबोधकहै ॥ ऐसेधर्मअधर्मरूपकर्ममात्रकूं परित्यागकरिकै मैंपरमेश्वररूपशरणकूं तूं प्राप्तहोउ इति ॥ सोइसप्रकारकाव्याख्यान संभवतानहीं ॥ का

अर्जुन होउ ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानकांडरूपतृतीयषट्कका जीवब्रह्मकाअभेदरूपअर्थ संक्षेपकारिकै कथनकऱ्या ॥ शंका–हे भगवन्! इसप्रकारकीज्ञाननिष्ठा किसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (मद्भक्तःइति) हे अर्जुन ! तिसज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै तूंमैंपरमेश्वरका अनन्यभक्तहोउ ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं उपासनाकांडरूप द्वितीयषट्कका भगवद्भक्तिरूपअर्थ संक्षेपकरिकैकथनकऱ्या ॥ शंका–हेभगवन् ! अल्पपुण्यवालेपुरुषकूं साभगवद्भक्तिभी कैसेउत्पन्नहोवगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (मद्याजीइति) तहां मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकेकरणेकाहै स्वभावजिसका ताकानाम मद्याजीहै ऐसामद्याजी तूंहोउ अर्थात् मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तूं आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं कर ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं कर्मकांडरूप प्रथमषट्कका निष्कामकर्मरूपअर्थ संक्षेपकरिकैकथनकऱ्या ॥ शंका–हेभगवन् ! यज्ञादिककर्मोंकासाधनरूप जोधनहै तिसधनकेअभावतैं तथास्त्रीआदिकोंकेअभावतैं जोपुरुष तिनयज्ञादिककर्मोंकेकरणेविषे असमर्थहै तिसपुरुषकूं साभगवद्भक्ति दुर्लभहीहोवैगी ॥ ताभक्तिकेदुर्लभतातैं बलतैंकारचित्तकीवृत्ति अत्यंतदुर्लभहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् अत्यंतसुलभउपायकूंकथनकरैं हैं (मांनमस्कुरुइति) हेअर्जुन! तिनयज्ञादिककर्मों केकरणेकाअसामर्थ्यहुए तं प्राकृतभक्तिकरिकैही प्रतिमादिकोंविषे मैंभगवान्कूं धूपदीपादिकसर्वउपचारोंकेसमर्पणपूर्वक नमस्कारादिकोंकरिकै आराधनकर ॥ तहां (यज्ञोवैनमः) इत्यादिकवचनोंकरिकै आश्वलायनऋषि नमस्कारकूंभी यज्ञरूप कहताभयाहै ॥ अब सोपानक्रमतैं नमस्कार निष्कामकर्म भगवद्भक्ति इनतीनसाधनोंकीप्राप्तिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकूंप्राप्तहुएपुरुषकेफलकूंकथनकरैं हैं (मामेवैष्यसिइति) हेअर्जुन ! इसप्रकार साधनसंपत्तिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकूंप्राप्तहुआतूं सर्वजगतकेकारणरूप तथासर्वकेईश्वररूप तथासर्वशक्तिसंपन्न तथाअखंडएकरस ऐसेभेतत्पदार्थपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ जैसे दर्पणादिकउपाधिकेनिवृत्तहुए प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए घटाकाश महाकाशभावकूंप्राप्तहोवैहै तैसे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ अब इसउक्तअर्थविषे अर्जुनकेदृढविश्वासकरावणेवासतै श्रीभवान् शपथकरिकैकहैं हैं (सत्यंतेप्रतिजानेइति) हेअर्जुन ! अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकीज्ञाननिष्ठावालाहुआतूं मैंपरमात्मादेवकूंही अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैगा इसप्रकारकीसत्यप्रतिज्ञाकूं मैं तुम्हारेआगे करताहूं ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंअत्यंतप्रियहै ॥ इसकारणतैं वंचनाकरणेकेअयोग्यतैंअर्जुनकेप्रतिमैंभगवान् यहसत्यप्रतिज्ञा करूंहूं इति ॥ ६५ ❀ ॥ तहां (ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति ॥ तमेवसर्वभावेनशरणंगच्छ) यहजोवचनपूर्वकथनकऱ्याथा ॥ अब तिसीवचनकेअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वासर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः ॥ ६६ ॥ सर्वधर्मान् । परित्य

मैंपरमेश्वरकाभक्तहुआ हमाराचिंतनकर ।। शंका—हे भगवन् ! तैंपरमेश्वरविषयक साअनुरागरूपभक्तिही किसउपायकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् तिसभक्तिकेउपायकूंकथनकरैं हैं ॥ (मद्याजीइति) हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषयक अनुरागरूपभक्तिकीप्राप्तिवासतै तूं मद्याजी होउ ।। तहां मैंभगवान्वासुदेवकेपूजनकरणेकाहै स्वभावजिसका ताकानाम मद्याजीहै अर्थात् सर्वकालविषे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेपूजापरायणहोउ ॥ शंका—हे भगवन् ! पूजनकरणेकीसामग्रीकेअभावहुए तिसअनुरागरूपभक्तिकीप्राप्तिवासतै क्याउपाय करणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (मांनमस्कुरुइति) हे अर्जुन ! तिसपूजाकीसामग्रीकेअभावहुए मैंपरमेश्वरकूं तूं नमस्कारकर अर्थात् अत्यंतनिम्रतापूर्वक शरीरमनवाणीकरिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंही आराधनकर ॥ इहां (मद्याजी) इसपदकरिकै कथनकऱ्याजो पूजारूपअर्चनहै ।। तथा (नमः) इसपदकरिकैकथनकऱ्याजो नमस्काररूपवंदनहै तेअर्चन वंदन दोनोंभागवतधर्म दूसरेभीभागवतधर्मोंकेउपलक्षणहैं तेभागवनधर्म श्रीभागवतविषे यहकथनकरेहैं ।। तहांश्लोक ।। (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ।। अर्चनंवंदनं दास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ।। अर्थयह ।। विष्णुभगवान्कां श्रवण तथाकीर्त्तन तथास्मरण तथापादोंकासेवन तथाअर्चन तथावंदन तथादासभाव तथासखाभाव तथाआत्माकाअर्पण यहनवभागवतधर्मकहेजावैहैं ॥ इसीकूंही नवधाभक्तिभीकहैं हैं इति ।। हे अर्जुन ! इसप्रकारकेभागवतधर्मोंकाअनुष्ठानकरिकै सर्वदामैंपरमेश्वरविषे अनुरागकीउत्पत्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहुआ तूं अर्जुन मैंभगवान्वासुदेवकूंही प्राप्तहोवैगा अर्थात् तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकवेदांतवाक्यों तैं जन्य आत्मसाक्षात्कारकरिकै तूं अभेदरूपकरिकै मैंअद्वितीयनिर्गुणरूप परब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैगा ।। हे अर्जुन ! इसउक्तअर्थविषे तूं संशयकूं मतकर ।। मैंपरमेश्वर तुम्हारेआगेइसउक्तअर्थविषे सत्यप्रतिज्ञाकूंकरताहूं ।। जिसकारणतैं तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै तिसकारणतैं तैंप्रिय अर्जुनकेसाथि वंचनाकरणी हमारे कूंउचितनहींहै इति ॥ अथवा (सत्यंते) इसवचनविषे (सति अंते) इसप्रकारकेपदच्छेदकरिकै यहअर्थकरणा ॥ प्रारब्धकर्मकेनाशहुए तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोवैगा इति ॥ परंतु इसद्वितीयव्याख्यानतैं सोप्रथमव्याख्यानही समीचीनहै ॥ काहेतैं (विशतेतदनन्तरम्) इसवचनकरिकै पूर्व प्रारब्धकर्मके नाशहुएतैं अनंतर तत्त्ववेत्तापुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरिआयेहैं ॥ तिसपूर्वउक्तअर्थकाही (मामेवैष्यसिसत्यंते) इसवनचकरिकैअनुवाद अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ तिसअनुवादकीअपेक्षाकरिकै अर्जुनकेविश्वासकीदृढताकरावणेहारा सोप्रथमव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ तहां इसश्लोककरिकै (यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम् ॥ स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसपूर्वउक्तश्लोकका व्याख्यानकऱ्या इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (मन्मनाभव) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां मैंहीप्रत्यक्आत्मा आनंदघनपरिपूर्णब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं प्रत्यक् अभिन्नब्रह्माकारहैमनजिसका ताकानाम मन्मनाहै ऐसामन्मना तूं

सर्वतैंअत्यंतगुह्य हमारे परम वचनकूं तूं पुनः भी श्रवणकर जिसकारणतैं हमारेकूं तूंअतिशयकरिके प्रियहै तिसकारणतैं मैं तुम्हारे हितकूं कथन करूंहूं ॥ ६४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वहमनैं संन्यासपर्यंत निष्कामकर्मयोगकूं गुह्य कह्याथा ॥ तथा तिस निष्कामकर्मयोगतैं ज्ञानकूं गुह्यतर कह्याथा ॥ अब तिसीनिष्कामकर्मयोगतैं तथा ताकेफलभूतज्ञानतैं सर्व तैं गुह्यतम तथासर्व तैं उत्कृष्ट ऐसेहमारेवचनकूं तूं पुनःभी श्रवणकर अर्थात् पूर्व तिसतिसप्रसंगविषे विस्तारतैंकथनकर्‍याहुआ भी सोवचन केवल तुम्हारेअनुग्रहवासतै मैंभगवान् पुनःतिसवचनकूं संक्षेपकरिकेकथनकरताहूं तिसवचनकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां गुह्य पदार्थ तैं जोअतिगुह्यहोवै है ताकानाम गुह्यतरहै ॥ और तागुह्यतरपदार्थ तैंभी जोअतिगुह्यहोवैहै ताकानाम गुह्यतमहै ॥ हे अर्जुन ! किसीपदार्थकेलाभवासतै अथवा आपणीपूजावासतै अथवा आपणीख्यातिवासतै मैंपरमेश्वर सोवचन तुम्हारेताईं नहींकहताहूं किंतु तूंअर्जुन हमारेकूं जिसकारणतैं अतिशयकरिकेप्रियहै तिसकारणतैं तुम्हारेकरिके नहीं पूंछाहुआभी मैंपरमेश्वर कृपाकरिकै तुम्हारे परमश्रेयरूपहितकूं कथनकरताहूं इति ॥ ६४ ॥ ❀ ॥ श्रीभगवान् तिसपरमश्रेयरूपहितकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसिसत्यंतेप्रतिजानेप्रियोसिमे ॥ ६५ ॥ मन्मनाः । भव । मद्भक्तः । मद्याजी । माम् । नमः । कुरु । माम् । एव । एष्यसि । सत्यम् । ते । प्रतिजाने । प्रियः । असि । मे ॥ ६५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! तूं मन्मना तथामेराभक्त तथामद्याजी होउ तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कार कर ऐसेकरताहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैगा तुम्हारेसमीप मैं सत्य प्रतिज्ञाकरताहूं जिसकारणतैं तूं हमारेकूं प्रियहै ॥ ६५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! तूं मन्मना होउ ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवविषेहीहैमनजिसका ताकानाम मन्मनाहै ऐसामन्मना तूं होउ अर्थात् सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाही तूं चिंतनकर ॥ शंका—हेभगवन् ! कंसशिशुपालादिकभी द्वेषकरिके सर्वदा तुम्हाराहीचिंतनकरतेभयेहैं॥इसप्रकारतैं मैंभी तुम्हाराचिंतनकरूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवानकहैं हैं (मद्भक्तः) इति हे अर्जुन ! तूंमैंपरमेश्वरकाभक्त होउ ॥ तहां परमप्रेमकरिकै मैंपरमेश्वरविषे जोअनुरागरूप अनुरक्तिहै ताकानाम मेरीभक्तिहै ऐसीमेरीभक्तिकरिकै तूं युक्तहोउ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषयकाअनुरागकरिकै सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक आपणेमनकूं तूंकर ॥ यद्यपि तेकंसशिशुपालादिक मनकरिकै सर्वदा मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेभयेहैं तथापि तेकंसशिशुपालादिक परमप्रेमकरिकै मैंपरमेश्वरविषेअनुरागवालेहुए मैंपरमेश्वरकाचिंतन नहींकरतेभयेहैं किंतु केवलद्वेषकरिकैही मेराचिंतनकरतेभयेहैं ॥ यातैं तेकंसशिशुपालादिक मैंपरमेश्वरकेभक्त कहेजातेनहीं और तूंअर्जुनतो

तूं इच्छाकरताहोवै तिसअर्थकेअनुष्ठानकूं तूंकर ॥ परंतुइसगीताशास्त्रकूं आदिअंतपर्यंत भलीप्रकारतैं नहींविचारकरिकै केवलआपणीइच्छामात्रकरिकै तुम्हारेकूं किंचित् भी कार्यकरणेयोग्यनहींहै ॥ इहांश्रीभगवान्का यहतात्पर्यहै ॥ जोमुमुक्षु अशुद्धअंतःकरणवालाहै तिसमुमुक्षुजनकूंतौ प्रथम मोक्षकेसाधनभूतआत्मज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यताकेप्रतिबंधकपापकर्मोंकेनाशकरणेवासतै स्वर्गादिकफलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै तथाभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेधर्मोंकाहीअनुष्ठान करणेयोग्यहै ॥ तिननिष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरणजिसका ऐसासोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्राह्मणशरीर होवै तौ सोब्राह्मणअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै आत्मज्ञानकेसाधनरूप वेदांतवाक्योंके विचारवासतै शास्त्रप्रतिपादितविधितैं शिखायज्ञोपवीतकेत्यागपूर्वकसर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंहीकरै ॥ सोसंन्यासकेग्रहणकरणेकाविधि आत्मपुराणके एकादशअध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं इहांलिख्यानहीं ॥ तिससंन्यासतैं एकभगवत्शरणताकरिकै पूर्वउक्त विविक्तदेशसेवादिकज्ञानसाधनोंके अभ्यासतैं श्रवणमननिदिध्यासनकरिकै आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै तिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सर्वकर्मोंके संन्यासकरणेविषेअनधिकारी ऐसेजे क्षत्रियवैश्यादिकमुमुक्षुहैं तिनमुमुक्षुक्षत्रियवैश्यादिकोंनैंतौ अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतरभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहीकरणा ॥ यद्यपि अंतःकरणकीशुद्धिवासतैही कर्मोंकाअनुष्ठानहोवैहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैं अनंतर तिनकर्मोंकेअनुष्ठानका कोईप्रयोजन नहींहै तथापि श्रुतिस्मृतिरूपभगवत्की आज्ञाके पालनवासतै तथाअन्यलोकोंकूंशुभकर्मोंविषेप्रवर्तनरूपलोकसंग्रहवासतै तिनक्षत्रियवैश्यादिकोंनैं अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतरभी तिनकर्मोंकूंहीकरणा ॥ इसप्रकार निष्कामकर्मोंकेकरतेहुए तिनक्षत्रियवैश्यादिकमुमुक्षुजनोंकूं एकभगवत्शरणताकीप्राप्तिकरिकै पूर्वजन्मविषेकरेहुए संन्यासादिकसाधनोंकेपरिपाकतैं अथवा हिरण्यगर्भकीन्याईं संन्यासकीअपेक्षातैंविनाही केवल परमेश्वरकेअनुग्रहमात्रकरिकै अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अथवातिनमुमुक्षुक्षत्रियवैश्यादिकोंकं अगलेजन्मविषे ब्राह्मणशरीरकीप्राप्तिहोइकै तहां संन्यासादिकसाधनपूर्वक आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकारकेविचारकियेहुए इहां मोहकेप्राप्तिकाअवकाश होवैनहीं इति ॥ ६३ ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंतगंभीरजो यहगीताशास्त्रहै तागीताशास्त्रके आदिअंत्यपर्यंत समग्र विचारकरणेतैंजन्यपरिश्रमकीनिवृत्तिकरणेवासतै आपही श्रीभगवान् कृपाकरिकै तिस सर्वगीताशास्त्रकेसारअर्थकूं संक्षेपकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वगुह्यतमंभूयःशृणुमेपरमंवचः ॥ इष्टोसिमेदृढमितिततोवक्ष्यामितेहितम् ॥ ६४ ॥ सर्वगुह्यतमम् । भूयः । शृणु । मे । परमम् । वचः । इष्टः । असि । मे । दृढम् । इति । ततः । वक्ष्यामि । ते । हितम् ॥ ६४॥ इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन !

तिसईश्वरकूं तूं आश्रयणकर ॥ इसप्रकार जबी तूं अर्जुन सर्वप्रकारकरिकै तिसअंतर्यामीईश्वरकूंही आश्रयणकरैगा तबी अंतर्यामीईश्वरकेअनुग्रहतैं तूंअर्जुन पराशांतिकूं प्राप्तहोवैगा अर्थात् तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तिपर्यंत तिसईश्वरकेअनुग्रहतैं तूंकार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप पराशांतिकूं प्राप्तहोवैगा ॥ तथा शाश्वत स्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ तहां अद्वितीयस्वप्रकाशपरमानंदब्रह्मरूपकरिकै जो अवस्थानहै ताकानाम स्थानहै ॥ कैसाहैसोस्थान शाश्वतहै अर्थात उत्पत्तिनाशतैं रहितहोणेतैं नित्यहै ॥ ऐसे नित्यस्थानकूं तूं प्राप्तहोवैगा अर्थात् तिसईश्वरकेअनुग्रहतैंप्राप्तभयाजो अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका तत्त्वज्ञानहै तिसतत्त्वज्ञानतैं कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप मोक्षकूं तूं प्राप्तहोवैगा ॥ इहां किसीटीकाविषे (परांशांतिम्) इसवचनकरिकै समाधिका ग्रहण कऱ्याहै तिससमाधिकीप्राप्ति इसपुरुषकूं ईश्वरकेअनुग्रहतैंहीहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्) इससूत्रकरिकै पतंजलिभगवान्नैंभी कथन करीहै इति ॥ ६२ ॥ ❀ ॥ अब इससर्वगीताशास्त्रकेअर्थकाउपसंहारकरतेहुए श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) इतितेज्ञानमाख्यातंगुह्याद्गुह्यतरंमया ॥ विमृश्यैतदशेषेणयथेच्छसितथाकुरु ॥ ६३ ॥ इति । ते । ज्ञानम् । आख्यातम् । गुह्यात् । गुह्यतरम् । मया । विमृश्य । एतत् । अशेषेण । यथा । इच्छसि । तथा । कुरु ॥ ६३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेताईं इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै गुह्यपदार्थतैंभी अत्यंतगुह्य आत्मज्ञान कथनकऱ्याहै यातैं इसगीता शास्त्रकूं आदिअंतपर्यंत विचारकरिकै जिसप्रकार इच्छताहोवै तिसप्रकार तूं कर ॥ ६३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका हेअर्जुन ! हमाराअनन्यभक्त तथाअत्यंतप्रिय ऐसाजोतूंअर्जुनहै तिसतुम्हारेताईं मैंपरमआप्तसर्वज्ञपरमेश्वरनैं इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मोक्षकासाधनरूप आत्मविषयकज्ञान कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोज्ञान गुह्यपदार्थतैंभी अत्यंतगुह्यहै अर्थात् परमरहस्यरूप ऐसाजो संन्यासपर्यंत निष्कामकर्मयोगहै तिसगुह्यकर्म योगतैंभी यहआत्मज्ञान गुह्यतर कहिये अत्यंतरहस्यरूपहै ॥ जिसकारणतैं तिससंन्यासपर्यंतकर्मयोगका यहआत्मज्ञान फलरूपहीं है ॥ साधनकीअपेक्षाकरिकै फलविषे रहस्यरूपता युक्तहीहै ॥ अथवा इसलोकविषे गुह्यराखणेयोग्य जे मंत्र तंत्र मणि रसायण आदिकपदार्थ हैं तिनगुह्यपदार्थोंतैंभी यहआत्मज्ञान अत्यंत गुह्यहै ॥ काहेतैं तेमंत्रतंत्रादिक इसपुरुषकूं केवलसांसारिकअनित्यसुखकीही प्राप्तिकरैं हैं ॥ और यहआत्मज्ञानतौ इसपुरुषकूं ब्रह्मानंदरूपनित्यसुखकीही प्राप्ति करैहै ॥ यातैं तिनमंत्रतंत्रादिकोंतैं इसआत्मज्ञानविषे अत्यंतगुह्यरूपता युक्तहीहै ॥ यातैं हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेताईं उपदेशकऱ्याजो यहगीताशास्त्रहै तिसगीताशास्त्रकूं पूर्वउत्तरवाक्योंकीएकवाक्यतापूर्वक आदिअंतपर्यंत समग्र विचारकरिकै पश्चात आपणेअधिकारकेअनुसार जिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेकी

नारायण स्थितहै इति ॥ इसप्रकारका अंतर्यामीनारायणरूपईश्वर सर्वप्राणियोंके अंतःकरणरूपहृदयदेशविषे स्थितहै अर्थात् जैसे सामान्यतैं सर्वत्रव्यापक भी सूर्यकाप्रकाश दर्पणादिकस्वच्छउपाधियोंविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे सर्वद्वीपोंकाअधिपतिभीश्रीराम उत्तरकोशलविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै तैसे सामान्यतैं सर्वव्यापकहुआभी सोअंतर्यामीईश्वर तिनअंतःकरणोंविषे विशेषकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तिसअंतर्यामीईश्वरकी हृदयदेशविषेस्थिति कथनकरीहै ॥ शंका—हेभगवन् ! सोअंतर्यामीईश्वर क्याकार्यकरताहुआ तिनसर्वप्राणियोंकेहृदयदेश विषेस्थितहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (भ्रामयन्इति) हेअर्जुन ! सोअंतर्यामीईश्वर आपणीमायाकरिकै तिनसर्वप्राणियोंकूं आपणेआपणे पुण्यपापकर्मोंकेअनुसार तथापूर्वलेसंस्कारोंकेअनुसार जहांतहां शुभअशुभकर्मविषे प्रवर्त्तकरताहुआ तिनसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषे स्थितहोवैहै ॥ अब इसअर्थविषे दृष्टांतकूं कथनकरैं हैं (यंत्रारूढानिइति) हेअर्जुन ! यंत्रविषेआरूढ जेकाष्ठरचित पुरुषअश्वादिरूपप्रतिमाहैं जेप्रतिमा अत्यंतपरतंत्रहैं ॥ तिनकाष्ठमयप्रतिमावोंकूं जैसे सूत्रधारीमायावीपुरुष भ्रमणकरावैहै तैसे यहअंतर्यामीईश्वरभी आपणीमायाकरिकै तिनसर्वप्राणियोंकूं जहांतहां भ्रमणकरावैहै इति ॥ यातैं इसयुद्धकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआभी तूंअर्जुन तिसअंतर्यामीईश्वरकीप्रेरणातैं अवश्यइसयुद्धकूंकरैगा ॥ इहां (हेअर्जुन) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धअंतःकरणवत्त्व कथनकऱ्या ताकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ शुद्धअंतःकरणवाला तूंअर्जुन ऐसेसर्वांतर्यामीईश्वरकेजाणणेकूं योग्यहै इति ॥ ॥ ६१ ॥ ❋ ॥ शंका—हेभगवन् ! परतंत्रसर्वप्राणियोंकूं जोकदाचित् अंतर्यामीईश्वरही प्रेरणाकरताहोवै तौ (स्वर्गकामोयजेत परदारान्नगच्छेत्) इत्यादिकविधिनिषेधशास्त्रकूं तथासर्वपुरुषप्रयत्नकूं अनर्थकता प्राप्तहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) तमेवशरणंगच्छसर्वभावेनभारत ॥ तत्प्रसादात्परांशांतिंस्थानंप्राप्स्यसिशाश्वतम् ॥ ६२ ॥ तम् । एव । शरणम् । गच्छ । सर्वभावेन । भारत । तत्प्रसादात् । पराम् । शांतिम् । स्थानम् । प्राप्स्यसि । शाश्वतम् ॥ ६२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भारत सर्वप्रकारकरिकै तिसईश्वररूप आश्रयकूं ही तूं आश्रयणकर तिसईश्वरकेप्रसादतैं तूं परा शांतिकूं तथा शाश्वत स्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ ६२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोअंतर्यामीईश्वर सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै तिनसर्वप्राणियोंकूं शुभअशुभकार्यविषेप्रवर्त्तकरैहै ॥ ऐसेसर्वकेआश्रयरूपअंतर्यामीईश्वरकूंही इससंसारसमुद्रकेउत्तरणवासतै तूंसर्वभावकरिकै आश्रयणकर अर्थात् शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वप्रकारकरिकै

निबंद्धः । स्वेन । कर्मणा । कर्त्तुम् । न । इच्छसि । यत् । मोहात् । करिष्यसि । अवशः । अपि । तत् ॥ ६० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन स्वभावजन्य आपणे कर्मकरिकै वशीकृतहुआतूं मोहकेवशतैं जिसयुद्धकूं करणेवासतै नहीं इच्छताहै तिसयुद्धकूं तूं अवशहुआ भी करैगा ॥ ६० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्त क्षत्रियस्वभावकरिकैजन्य जेशौर्यादिक अनागंतुककर्म हैं तिनकर्मोंकरिकैवशीकृतहुआ तूं अर्जुन मोहकेवशतैं जिसयुद्धकेकरणेकूं नहींइच्छताहै अर्थात् मैंअर्जुन स्वतंत्रहूं यातैं जिसजिसअर्थकीइच्छाकरूंगा तिसीहीअर्थकूं संपादनकरूंगा इसप्रकारकेभ्रमरूपमोहकेवशतैं जोतूं बंधुवधादिकोंकानिमित्तभूतइसयुद्धकेकरणेकूं नहींइच्छताहै तिसयुद्धरूपकर्मकूं तूं अर्जुन अवशहुआभी करैगा अर्थात् तिसयुद्धरूपकर्मकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआभी तूं पूर्वउक्तस्वाभाविककर्मोंके परतंत्रहुआ तथाअंतर्यामीपरमेश्वरकेपरतंत्रहुआ तिसयुद्धकूं अवश्यकरिकै करैगा इति ॥ ६० ॥ ❀ ॥ तहां (अवशः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे स्वभावरूपप्रकृतिकाअधीनपणा तथाअंतर्यामीईश्वरकाअधीनपणा सूचनकऱ्या ॥ तहां स्वभावरूपप्रकृतिकाअधीनपणातौ पूर्वश्लोकविषे प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब अंतर्यामीईश्वरकाअधीनपणा स्पष्टकरिकै प्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति ॥ भ्रामयन्सर्वभूतानियंत्रारूढानिमायया ॥ ६१ ॥ ईश्वरः । सर्वभूतानाम् । हृद्देशे । अर्जुन । तिष्ठति । भ्रामयन् । सर्वभूतानि । यंत्रारूढानि । मायया ॥ ६१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन अंतर्यामी ईश्वर यंत्रविषे आरूढ काष्ठमय प्रतिमावोंकीन्याई सर्वप्राणियोंकूं मायाकरिकै जहांतहां भ्रमणकरावताहुआ सर्वप्राणियोंके हृदयदेशविषे स्थितहोवैहै ॥ ६१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार तिनसर्वजीवोंकूं शुभअशुभकर्मविषेप्रवर्त्तक जोअंतर्यामीनारायणहै जोअंतर्यामीनारायण ॥ (यःपृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अंतरो यंपृथिवीनवेद यस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमंतरोयमयति ॥ यच्चकिंचिज्जगत्सर्वंदृश्यतेश्रूयतेपिवा ॥ अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्यनारायणःस्थितः) ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ॥ इनदोनोंश्रुतियोंका यहअर्थहै जोअंतर्यामीईश्वर पृथिवीविषेस्थितहुआ तिसपृथिवीकेअंतरहै ॥ तथा जिसअंतर्यामीईश्वरकूं सापृथिवी नहीं जानतीहै ॥ तथा जिसअंतर्यामीईश्वरका सापृथिवी शरीरहै ॥ तथाजोअंतर्यामीईश्वर तिसपृथिवीकूंप्रवर्त्तकरै है सोही अं. .मी ईश्वर तुम्हाराआत्माहै इति ॥ और जितनाक सर्वजगत् देखणेविषेआवैहै तथाश्रवणकरणेविषेआवताहै तिसनामरूपात्मकसर्वजगतकूं अंतर्बाह्यव्याप्यकरिकै

मच्चित्तहुआ तूं मेरे प्रसादतें दुस्तरकामक्रोधादिकोंकूंभी तरिजावैगा और जोकदाचित तूंअर्जुन अहंकारतें मेरेवचनकूंनहीं श्रवणकरैगा तौतूं नष्टहोवैगा ॥ ५८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मच्चित्तहुआतूं मेरेप्रसादतैं सर्वदुर्गोंकूं तरिजावैगा ॥ तहां संसारदुःखकेसाधनरूप जेअतिदुस्तर कामक्रोधादिकहैं तिनोंकानाम दुर्गहै ॥ ऐसेकामक्रोधादिरूपसर्वदुर्गोंकूं तूं अर्जुन आपणेप्रयत्नतैंविनाही केवल मैं परमेश्वरकेअनुग्रहतैं सुखेनही अतिक्रमणकरैगा ॥ और जोकदाचित् तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनोंविषेअविश्वासकारिकै मैंपंडितहूं इसप्रकारकेगर्वरूपअहंकारतैं तिसहमारेवचनकूं नहींश्रवणकरैगा अर्थात् जोकदाचित् तूं हमारेवचनोंकेअर्थकूं नहींअनुष्ठानकरैगा तौ तूं अर्जुन ! नष्टहोवैगा अर्थात् आपणीइच्छातैं युद्धादिकस्वधर्मकापारित्यागकारिकै संन्यासादिकपरधर्मकेअनुष्ठानतैं तूं सर्वपुरुषोंतैंभ्रष्टहोवैगा इति ॥ ॥ ५८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! युद्धादिककर्मोंके करणेविषे अथवा नहींकरणेविषे मैं अर्जुन स्वतंत्रहूं ॥ यातें तुम्हारेवचनके अर्थकूं मैंनहींकरूंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) यदहंकारमाश्रित्यनयोत्स्यइतिमन्यसे ॥ मिथ्यैवव्यवसायस्तेप्रकृतिस्त्वांनियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥ यत् । अहंकारम् । आश्रि त्य । न । योत्स्ये । इति । मन्यसे । मिथ्या । एव । व्यवसायः । ते । प्रकृतिः । त्वाम् । नियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तूं अहंकारकूं आश्रयकरिकै मैं नहीं युद्धकरूंगा इसप्रकार जो मानताहै सो तुम्हारा निश्चय मिथ्या हीहै जिसकारणतैं तुम्हारेकूं प्रकृति अवश्य युद्धविषे प्रेरणाकरैगी ॥ ५९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंधर्मात्माहूं यातैं इसयुद्धरूपक्रूरकर्मकूं मैंनहींकरूंगा इसप्रकारकेमिथ्याअभिमानकूंआश्रयकरिकै इसयुद्धकूं मैं नहींकरूंगा इसप्रकार जोतूं मानताहै सोतुम्हारानिश्चय निष्फलहीहै ॥ जिसकारणतैं क्षत्रियजातिकाआरंभक रजोगुणस्वरूप जाप्रकृतिहै साप्रकृति तुम्हारेकूं इसयुद्धरूपकर्मविषे अवश्यकरिकै प्रवर्त्तकरैगी ॥ इसीकारणतैंही (प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति) इसवचनकरिकै पूर्व सर्वजीवोंकीप्रवृत्ति आपणीआपणी प्रकृतिकेअधीन कथनकरिआयेहैं यातैं तूं अर्जुन स्वतंत्रनहींहै किंतु आपणीप्रकृतिके अधीनहै इति ॥ ५९ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् अर्जुनका स्वप्रकृतिकेअधीनपणा निरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) स्वभावजेनकौंतेयनिबद्धःस्वेनकर्मणा ॥ कर्त्तुंनेच्छासियन्मोहात्कारिष्यस्यवशोपितत् ॥ ६० ॥ स्वभावजेन । कौंतेय

करतानहीं ॥ तथापि जोकदाचित् सोभगवत्शरण अधिकारीपुरुष तिनप्रतिषिद्धकर्मोंकूंकरैभी तौभी मैंपरमेश्वरके अनुग्रहतैं प्रत्यवायकीअनुत्पत्तिकरिकै अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेमेरेसाक्षात्कारकरिकै सोअधिकारीपुरुष मोक्षकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तिसभगवत्शरणताकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवाननैं (सर्व कर्माण्यपिसदाकुर्वाणाः) इसप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै इति ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं एकमैंपरमेश्वरकीशरणतामात्रही आत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षकासाधनहै तिसतैंअन्य कर्मोंकाअनुष्टान वाकर्मोंकासंन्यास मोक्षकासाधनहैनहीं ॥ तिसकारणतैं तूंक्षत्रियअर्जुन केवल मैंपरमेश्वरपरायणहीहोउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) चेतसासर्वकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्परः ॥ बुद्धियोगमुपाश्रित्यमच्चित्तःसततंभव ॥ ५७ ॥ चेतसा । सर्वकर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्परः । बुद्धियोगम् । उपाश्रित्य । मच्चित्तः । सततम् । भव ॥ ५७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! चित्त करिकै सर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषे समर्पणकरिकै मत्परहुआ तूं बुद्धियोगकूं स्वीकारकरिकै सर्वदा मच्चित्त होउ ॥५७॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसलोकके दृष्टअर्थोंकीप्राप्तिकरणेहारे तथा स्वर्गादिकलोकोंकेअदृष्टअर्थोंकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेक लौकिकवैदिककर्म हैं तिनसर्वकर्मोंकूं विवेकयुक्तबुद्धिकरिकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरिकै अर्थात् (यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम्) इसपूर्वश्लोकउक्त रीतिसैं तिनलौकिकवैदिकसर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरिकै मत्परहुआतूं तहां मैंभगवान्वासुदेवहीहूं अत्यंतप्रियजिसकूं ताकानाम मत्परहै ॥ ऐसामत्पर हुआतूं पूर्वकथनकऱ्याजो कर्मफलकीसिद्धिअसिद्धिविषेसमत्वबुद्धिरूपबुद्धियोगहै जोबुद्धियोग बंधकेहेतुरूपभीकर्मोंविषे मोक्षकेहेतुपणेकासंपादकहै ॥ ऐसेबुद्धियोग कूं अनन्यशरणरूपतैंस्वीकारकरिकै सर्वदा मच्चित्तहोउ ॥ तहां मैं भगवान् वासुदेवविषेहीं हैचित्तजिसका दूसरेकिसीराजाविषे वाकामिनीआदिकोंविषे जिसका चित्तहैनहीं ताकानाम मच्चित्तहै ॥ इसप्रकारका मच्चित्त तूं अर्जुन सर्वदाहोउ ॥ इहां किसीमूलपुस्तकविषे (बुद्धियोगमपाश्रित्य) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ एसेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहीजानणा इति ॥ ५७ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! तिसमच्चित्तहोणेतैं कौनप्रयोजनसिद्धहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान कहैंहैं ॥ अथवा इसपूर्वउक्तभक्तियोगके करणेविषेगुणकूं तथानकरणेविषेदोषकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मच्चित्तःसर्वदुर्गाणिमत्प्रसादात्तरिष्यसि ॥ अथचेत्त्वमहंकारान्नश्रोष्यसिविनंक्ष्यसि ॥ ५८ ॥ मच्चित्तः । सर्वदुर्गाणि । मत्प्रसादात् । तरिष्यसि । अथचेत् । त्वम् । अहंकारात् । न । श्रोष्यसि । विनङ्क्ष्यसि ॥ ५८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

साधनोंकीपुष्कलताही प्राप्तहोवैहै ॥ और शुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यनै तेकर्म अनुष्ठानकरणेयोग्यनहीं हैं ॥ काहेतैं तेकर्म चित्तकेविक्षेपकेहेतुहोणेतैं मोक्षकेसाधनरूपआत्मज्ञानके प्रतिबंधकही हैं ॥ इसप्रकारके अर्जुनकेअभिप्रायकूंजानिकै श्रीभगवान् तिसअर्जुकेप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वकर्माण्यपिसदाकुर्वाणोमद्व्यपाश्रयः ॥ मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतंपदमव्ययम् ॥ ५६ ॥ सर्वकर्माणि । अपि । सदा । कुर्वाणः । मद्व्यपाश्रयः । मत्प्रसादात् । अवाप्नोति । शाश्वतम् । पदम् । अव्ययम् ॥ ५६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सर्वकर्मोंकूं सदा करताहुआ भी मेरेशरणागतपुरुष मेरेअनुग्रहतैं शाश्वत अव्यय पदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ५६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष पूर्वउक्तनिष्कामकर्मोंकरिकै शुद्ध अंतःकरणवालाहुआहै सोशुद्धअंतःकरणवालापुरुष अवश्यकरिकै भगवत्शरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं निष्कामकर्मोंकरिकैजन्य जोअंतःकरणकीशुद्धिहै ताशुद्धिका भगवत्शरणकीप्राप्तिविषैही परिअवसानहै ॥ इसप्रकार निष्कामकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक भगवत्शरणकूं प्राप्तहुआ जोअधिरीपुरुषहै सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्राह्मणहोवैहै तौ संन्यासकाप्रतिबंधकक्षत्रियत्व वैश्यत्व जातिनैंरहितहोणेतैं सोब्राह्मण निःशंकहोइकै विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरै ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तथासर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक भगवत्शरणकूं प्राप्तहुए तिसब्राह्मणकाभी इसजन्ममरणरूपसंसारतैंमोक्षतौ एकभगवत्केप्रसादतैंहीहोवैहै ॥ तिसभगवत्प्रसादतैंविना केवलकर्मोंकेत्यागमात्रतैं तिसअधिकारीब्राह्मणका संसारतैंमोक्षहोवैनहीं ॥ और तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तहुआ जोअधिकारीपुरुषहै सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् संन्यासकाअधिकारी क्षत्रियवैश्यहोवै सोक्षत्रियवैश्यअधिकारीपुरुषतौ कर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ परंतु सोक्षत्रियवैश्य मद्व्यपाश्रयहुआ कर्मोंकूंकरै ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवहोहूं व्यपाश्रय कहिये शरण जिसका ताकानाम मद्व्यपाश्रयहै अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेशरणहोइकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकऱ्याहैसर्वात्मभाव जिसनैं ताकानाम मद्व्यपाश्रयहै ॥ ऐसामद्व्यपाश्रयहुआ यहक्षत्रियवैश्यादिकअधिकारीपुरुष संन्यासकाअनधिकारीहोणेतैं सर्वदासर्वकर्मोंकूंकरताहुआभी अर्थात् शास्त्रविहित स्ववर्णआश्रमकेधर्मरूपकर्मोंकूं अथवा लौकिककर्मोंकूं अथवा प्रतिषिद्धकर्मोंकूं करताहुआभी मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैं हिरण्यगर्भकीन्याईं अहं ब्रह्मास्मि इसप्रकारके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै शाश्वतअव्ययपदकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् (तद्विष्णोः परमंपदम्) इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादित जो मोक्षरूपपदहै जिसपदकूंप्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ तिसमोक्षरूपपदकूं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपद शाश्वतहै अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेनैं नित्यहै ॥ तथा अव्ययहै अर्थात् परिणामभावतैंरहितहैं ॥ यद्यपि इसप्रकारका भगवत्शरण अधिकारीपुरुष कदाचित्भी प्रतिषिद्धकर्मोंकूं

मांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम्) इसउत्तरार्द्धविषे (मांतत्त्वतः ज्ञात्वाततः भवतिअनंतरंतत्विशते) इसप्रकारतैं भवति इसपदके अध्याहारपूर्वक पदोंकीयोजनाक रिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ इहां (ततः) इसपदकरिकै सर्वत्रव्यापक मायाविशिष्ट कारणब्रह्मका ग्रहणकरणा ॥ और (तदितिवाएतस्यमहतोभूतस्यनाम भवति) इसश्रुतिविषे तत् यहनाम शुद्धब्रह्मकाकह्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं मैंपरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहतत्त्ववेत्तापु रुष प्रथम सर्वात्माभूतकारणब्रह्मरूपहोवैहै तहांश्रुति ॥ (यएवंवेदाहंब्रह्मास्मीतिसइदंसर्वंभवति) ॥ अर्थयह ॥ जोतत्त्ववेत्तापुरुष अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै सोतत्त्ववेत्तपुरुष सर्वरूपहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिनैं तत्त्ववेत्तापुरुषकूं प्रथम सर्वात्म्यरूप कारणब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और तिसकारणब्रह्मभावकीप्राप्तितैंअनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष शुद्धब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् मुक्तपुरुषोंकूं मायाउपाधिककारणब्रह्मकीप्राप्तिद्वाराही निर्गुणशुद्धब्र ह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसपक्षका विस्तारतैंप्रतिपादन ग्रंथांतरोंविषेस्पष्टहै इति ॥ ५५ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! जोपुरुष अनात्मज्ञहै तथाअशुद्धअंतःकरण वालाहै सोपुरुषताअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ और जोपुरुष शुद्धअंतःकरणवालाहै सोपुरुषतौ सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरिकैही आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्तापूर्वआपनैं कथनकरी ॥ और सोसर्वकर्मोंकासंन्यास ब्राह्मणनैंही करणेयोग्यहै ॥ क्षत्रियवैश्यनैं सोसर्वकर्मोंकासंन्यास करणेयोग्यनहीं है ॥ इसअर्थकूंभी (कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः) इसवचनकरिकै आप कथनकरतेभयेहो ॥ तहां शुद्धहुआहै अंतःकरणजिनोंका ऐसेक्षत्रियादिकोंनैं क्याकर्मही अनुष्ठानकरणेयोग्यहै ॥ अथवा सर्वकर्मोंकासंन्यास करणेयोग्यहै ॥ तहां शुद्धअंतःकरणवाले क्षत्रियवैश्यनैं कर्महीकरणेयोग्यहैं ॥ यहप्रथमपक्षतौ संभवतानहीं ॥ काहेतैं (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमः कारणमुच्यते) इत्यादिकवचनकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकूं कर्मोंकेअनुष्ठानकानिषेध पूर्वआप कथनकरिआयेहो ॥ और शुद्धअंतःकरणवाले क्षत्रियवैश्यनैं संन्यास करणेयोग्यहै ॥ यहदूस रापक्षभी संभवतानहीं॥काहेतैं (स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः) इत्यादिकवचनोंकरिकै केवलब्राह्मणकाधर्मरूप जोसर्वकर्मोंकासंन्यासकाहै तिससंन्यासका क्षत्रियवै श्यकेप्रति आपनिषेधकरिआयेहो ॥ और कर्मोंकाअनुष्ठान तथातिनकर्मोंकात्याग इनदोनों प्रकारोंतैंविना तीसराकोईप्रकारहैनहीं ॥ जिसतीसरेप्रकारकूं तेशुद्धअंतः करणवालेक्षत्रियवैश्यादिक करैं ॥ यातैं कर्मोंकाअनुष्ठान तथा कर्मोंकात्यागरूपसंन्यास इनदोनोंका शुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यकेप्रति प्रतिषेधहोणेतैं तथाअ न्यप्रकारकेअभावहोणेनैं एकप्रतिषेधकाअतिक्रमणतौ अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैगा ॥ तहांशुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यकूं कर्मोंकेअनुष्ठाननैं कर्मोंकात्यागही श्रेष्ठ है ॥ काहेतैं (कर्मणाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकवचनोंविषे कर्मोंकूं बंधकाहेतुपणाही कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेबंधकेहेतुरूपकर्मों केपरित्यागकरिकै इसपुरुषकूं मोक्षके

हतशोकः) ॥ अर्थयह ॥ अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेज्ञानकीप्राप्तिकालविषेमुक्तहुआ तथानिवृत्तहुएहैंसर्वशोकजिसके ऐसाजोतत्त्ववेत्तापुरुषहै सोतत्त्ववेत्तापुरुष श्रीकाशीआदिकतीर्थोंविषे देहकूं परित्यागकरताहुआ ॥ अथवा चांडालकेगृहविषे देहकूंपरित्यागकरताहुआ ॥ अथवा सन्निपातादिकरोगकेवशतैं शास्त्रअर्थकीस्मृतितैंरहितहोइके देहकूंपरित्यागकरताहुआ सर्वप्रकारतैं विदेहकैवल्यकूंहीप्राप्तहोवैहै इति ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेतत्त्वज्ञानकरिकैनिवृत्तहुआहै अज्ञानजिसका ऐसा जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी नजानामि इसप्रकारकाप्रत्ययतौ होवैहै परंतु जैसा अज्ञानीपुरुषका सोप्रत्यय अज्ञानतैंहोवैहै तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषका सोप्रत्यय अज्ञानतैंहोवैनहीं किंतु अज्ञानकेनाशकरिकैजन्य तथाउपादानतैंरहित तथासाक्षात्आत्माकेआश्रित तथातत्त्वज्ञानकेसंस्कारोंकरिकैनिवर्त्य तथाअंतःकरणादिकोंकेस्थितिकाअवधिरूप ऐसाजो अज्ञानकासंस्कारहै तिसअज्ञानकेसंस्कारतैंही तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं नजानामि यहप्रत्यय होवैहै ॥ इसप्रकारतैं विवरणादिकग्रंथोंविषे व्यवस्थाकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेअंत्यसाक्षात्कारतैंअनंतर (अहंब्रह्मनभवामि अहंब्रह्मनजानामि) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मनहींहूं तथामैंब्रह्मकूंनहींजानताहूं इसप्रकारकाप्रत्ययतौ तत्त्ववेत्तापुरुषकूं कदाचित्भी होतानहीं ॥ परंतु तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं जो कदाचित् व्यवहारकालविषे अहंघटंनजानामि ॥ अर्थयह ॥ मैंघटकूंनहींजानताहूं इत्यादिकप्रत्ययहोवै तिसप्रत्ययकीसिद्धिवासतै सोअज्ञानका संस्कार कल्पनाकर्‍याहै ॥ यातैं इहां किंचित्मात्रभी अनुपपत्तिहोवैनहीं ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर शास्त्रकारोंनैं जोअज्ञानकालेश अंगीकारकर्‍याहै तिसअज्ञानलेशपदकरिकैभी यहअज्ञानकासंस्कारही विवक्षितहै ॥ तिससंस्कारतैंभिन्न दूसराकोई अवयवादिरूपअर्थ तिसअज्ञानलेशपदकरिकैविवक्षितनहीं है ।। काहेतैं घटपटादिकद्रव्योंकीन्याई सोअज्ञानकोई सावयवद्रव्यहैनहीं जिससावयवताकरिकै तत्त्वज्ञानकरिकै कछुक अज्ञान निवृत्तहोवैहै कछुकअज्ञान बाकीरहैहै याप्रकारकीकल्पनाहोवै है ॥ परंतु सोअज्ञान सावयवहैनहीं ॥ और अज्ञानकूंअनिर्वचनीयहोणेतैं जोकदाचित् तिसअज्ञानका कोईएकदेश अंगीकारकरिये तौ तिसअज्ञानकेएकदेशकी निवृत्तिवासतै पुनः अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेअंत्यज्ञानकीअपेक्षा अवश्यहोवैगी ॥ सोइसप्रकारकाज्ञान मरणकालविषे दुर्घटही है ॥ यातैं तिसअज्ञानकेएकदेशविषेभी पूर्वउत्पन्नहुएतत्त्वज्ञानकेसंस्कारकरिकैहीनाश्यता अंगीकार करणीहोवैगी ॥ ताकरिकै पूर्वउक्तसंस्कारपक्षतैं इसएकदेशपक्षविषे किंचित्मात्रभी विशेषतासिद्धनहींहोवैगी ।। यातैं सापूर्वउक्त अज्ञानसंकारोंकीकल्पनाही श्रेष्ठहै ॥ इसप्रकारकेजीवन्मुक्तिकीअपेक्षाकरिकैही पूर्व श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति (उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः) इसप्रकारकावचन कथनकर्‍याथा ।। तथा तत्त्ववेत्तास्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षण कथनकरेथे ।। यातैं (ततदनंतरंमांविशते) इसवचनकरिकै तत्त्ववेत्तापुरुषकूं देहपाततैंअनंतर विदेहकैवल्यकीप्राप्ति जोभगवान्नैं कथनकरीहै सो युक्तहीहै इति ।। और किसीटीकाविषेतौ (ततो

नकेउत्पन्नहुएभी देहकेपातपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकूं विदेहकेवल्यकाप्रतिबंधकपणा अंगीकारकरणा उचितहै ।। यद्यपि जैसे दीपक अंधकारकाविरोधिहोवैहै ॥ यातैं सोदीपक आपणेउत्पत्तिकालविषेही ताअंधकारकीनिवृत्ति करै है तैसे तत्त्वज्ञानभी अज्ञानकाविरोधी है ।। यातैं सोतत्त्वज्ञानभी आपणेउत्पत्तिकालविषेही ताअज्ञानकूं निवृत्तकरै है ।। और ता अज्ञानरूपउपादानकारणकेनिवृत्तिहुए ताकेकार्यरूप अहंकारदेहादिकभी उसीकालविषेनिवृत्तहोणेचाहिये तथापि तत्त्वज्ञानकरिकै उपादानकारणरूपअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी ताअज्ञानकेकार्यरूप अहंकारदेहादिक उपादानकारणतैंविनाही प्रारब्धकर्मकेभोगपर्यंत स्थितहोवैं हैं ।। जिसकारणतैं तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकप्रत्यक्षहीदेखणेविषेआवैं हैं ।। और । (नहिदृष्टेरनुपपन्नंनाम) अर्थयह ।। प्रत्यक्षप्रमाणसिद्धअर्थविषे किंचित्मात्रभी अनुपपत्तिहोवै नहीं ।। यहसर्वशास्त्रकारोंकानियमहै ॥ ऐसेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिक किसीनैंनिषेधकरिसकीतेनहीं ॥ औरउपादानकारणकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर कार्यकीस्थिति कहांभीदेखीतीनहीं ऐसीजोकोईशंकाकरै साशंकाभीसंभवतीनहीं ॥ काहेतैं समवायिकारणकेनाशतैं कार्यद्रव्यकेनाशकूं अंगीकारकरणेहारे जेनैयायिकहैं तिननैयायिकोनैंभी उपादानकारणतैंरहित एकक्षणमात्र कार्यद्रव्यकीस्थिति अंगीकारकरीहै ॥ और तिन नैयायिकोंके मतविषे नित्यपरमाणुवोंविषेसमवेत जोद्व्यणुकरूपकार्यद्रव्यहै ।। तिसद्व्यणुकका समवायिकारणकेनाशतैंनाशहोवैनहीं किंतु दोपरमाणुवोंकासंयोगरूप असमवायिकारणकेनाशतैंही ताद्व्यणुककानाशहोवैहै ।। और जेनैयायिक सर्वत्र असमवायिकारणकेनाशकूंही कार्यद्रव्यकेनाशविषेहेतुकहे हैं ।। तिननैयायिकोंकेमतविषेतौ आश्रयकेनाशस्थलविषे उपादानतैंरहितहुआ कार्यद्रव्य दोक्षणपर्यंतस्थिररहै है ।। इसप्रकार नैयायिकोंनैं उपादानकारणकेनाशहुएभी कार्यद्रव्यकी एकक्षणपर्यंतस्थिति वा दोक्षणपर्यंतस्थिति अंगीकारकरीहै ।। तैसे सिद्धांतविषेभी अज्ञानरूपउपादानकारणकेनिवृत्तहुएभी प्रारब्धकर्मरूपप्रतिबंधकेविद्यमानहुए अहंकारदेहादिरूपकार्यकी बहुतकालपर्यंतस्थिति किसीतैंभी निवृत्तहोइसकैनहीं ।। और तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकोंकीनिवृत्तिविषे प्रारब्धकर्मोंकूंप्रतिबंधकपणा है ।। यहअर्थ केवल स्वकल्पनामात्रतैं सिद्धनहींहै किंतु (तस्यतावदेवाचिरम्) इसपूर्वउक्तश्रुतिकरिकैंहीसिद्धहै ।। तथा तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकोंकेस्थितिकीअनुपपत्तिरूपअर्थापत्तिप्रमाणकरिकैभीसिद्धहै ।। किंवा तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकोंकीनिवृत्तिविषे केवल तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेहीप्रारब्धकर्म प्रतिबंधकनहीं हैं किंतु तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेउपदेशकरिकै कृतार्थहोणेहारे शिष्यसेवकादिकोंकेअदृष्टभी प्रतिबंधकहै तिनप्रारब्धकर्मोंकेअभावकीअपेक्षाकरिकै सोपूर्वसिद्धहीअज्ञानकानाश ताअज्ञानकेकार्यरूप अंतःकरणदेहादिकोंकूंनाशकरै है ।। यातैं तिन अंतःकरणदेहादिकोंकेनाशकरणेवासतै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनः ज्ञानकीअपेक्षाहोवैनहीं ।। यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ।। तहांश्लोक ।। (तीर्थेश्वपचगृहेवानष्टस्मृतिरपिपरित्यजन्देहम् ।। ज्ञानसमकालमुक्तःकैवल्यंयाति

रूपहूं ॥ अथवा प्राणरूपहूं ॥ अथवा मनरूपहूं ॥ अथवा कोईककालस्थायीहूं ॥ अथवा क्षणिकविज्ञानरूपहूं ॥ अथवा शून्यरूपहूं ॥ अथवा कर्त्ताभोक्ता रूपहूं ॥ अथवा जडरूपहूं ॥ अथवा जडअजडरूपहूं ॥ अथवा चित्रूपहूं ॥ अथवा भोक्तारूपहूं ॥ अथवा कर्तृत्वभोक्तृत्वतैंरहित आनंदघनरूपहूं ॥ इसप्रकारका विचारकरिकै श्रुतिविरुद्धसर्वपक्षोंकाबाधकरिकै सोअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकूं परिपूर्ण सत्य ज्ञान आनंदघन सर्वउपाधियों तैंरहित अखंड एकरस अद्वितीय अजर अमर अभय अशोक रूपहीजानैहै ॥ देहइंद्रियादिरूप मेरेकूंजानतानहीं ॥ इसप्रकारका तिसनिदिध्यासनरूपभक्तितैं मैंपरमात्मादेवकूं यथावत् जानिकै अर्थात् अखंडएकरसअद्वितीयआनंदरूप ब्रह्म मैंहीहूं ॥ इसप्रकारतैं मैंपरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमात्मादेवविषेही प्रवेशकरैहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए तथाताअज्ञानकेदेहादिककार्योंकेनिवृत्तहुए सर्वउपाधियों तैंरहितहुआ सोपरमहंससंन्यासी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपही होवैहै ॥ तहां सर्वउपाधियों तैंरहितहोइकै सोतत्त्ववेत्तासंन्यासी कबी ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहुए कहैंहैं (तदनंतरमिति) अर्थात् बलवान्प्रारब्ध कर्मकेभोगकरिकै देहकेपातहुएतैंअनंतर सोतत्त्ववेत्तासंन्यासी देहादिकसर्वउपाधियों तैंरहितहुआ ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ यद्यपि (तदनंतरम्) इसवचनका ज्ञानतैं अनंतर याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाकारनैं कऱ्याहै तथापि यहअर्थ संभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञान ब्रह्मविषेप्रवेश इनदोनोंका पूर्वउत्तरभावतौ (ज्ञात्वा) इसवचनविषेस्थित क्त्वा इसप्रत्ययकरिकैहीसिद्धहोवैहै ॥ (तदनंतरम्) यहपद व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं (तदनंतरम्) इसवचनका देहपाततैंअनंतर यहअर्थही सम्यक् है इति ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं (तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्षेऽथसंपत्स्ये) इसश्रुतिकाअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ इसश्रुतिका यहअर्थ है ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनेकालपर्यंतही विलंबहै ॥ जितनेकालपर्यंत प्रारब्धकर्मकेभोगकरिकै इसदेहकापात नहींहोवैहै ॥ देहके पातहुएतैंअनंतर सर्वउपाधियों तैंरहितहुआ सोब्रह्मवेत्तापुरुष निर्गुणअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिरूपविदेहमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ जोकदाचित् तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहुएभी देहकेपातपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकूं विदेहकैवल्यका प्रतिबंधक नहींमानिये तौ तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिकालविषेही देहकापात हो वैगा ॥ तहां ज्ञानकेसमकालही देहकापातनमानणे विषे एकतौ ब्रह्मविद्याकेसंप्रदायका उच्छेद प्राप्तहोवैगा ॥ और दूसरा जीवन्मुक्तिकीप्रतिपादकश्रुति असंगतहोवैगी ॥ साश्रुति यहहै ॥ (विमुक्तश्चविमुच्यते । भूयश्चांतेविश्व मायानिवृत्तिः) ॥ अर्थयह ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै मुक्तहुआभी यहविद्वान्पुरुष प्रारब्धकर्मके भोगकरिकै देहपाततैंअनंतर पुनःविशेषकरिकैमुक्तहोवैहै इति ॥ और इसतत्त्ववेत्ता पुरुषकी अज्ञानरूपमाया पूर्व तत्त्वज्ञानकरिकैनिवृत्तहुईभी लेशरूपकरिकैरहीहुईसामाया पुनःदेहपाततैंअनंतर निवृत्तहोवैहै इति ॥ यहदोनोंश्रुति मुक्तपुरुषकीपुनःमुक्तिकूं कथनकरतीहुई तथानिवृत्तहुई सामाया पुनःनिवृत्तिकूंकथनकरतीहुई विद्वान्पुरुषकेजीवन्मुक्तिकूं कथनकरैहैं ते दोनोंश्रुति असंगतहोवैंगी ॥ यातैं तत्त्वज्ञा

धानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्ति योंकीआवृत्तिरूपउपासनाहै जिसउपासनाकूं परिपक्वनिदिध्यासनकहैंहैं ॥ तथा जाउपासना श्रवणमननकेअध्यासका फलरूपहै ॥ ऐसीनिदिध्यासनरूप मेरीभक्तिकूं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ कैसीहैसामेरीभक्ति पराहै अर्थात् व्यवधानतैंरहित ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकाजनकहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ अथवा परा कहिये (चतुर्विधा भजंतेमाम्) इसश्लोकविषेकथनकरीजा च्यारिप्रकारकीभक्तिहै तिसच्यारिप्रकारकीभक्तिविषे ज्ञानरूपअत्यंतभक्तिहै ॥ इसप्रकारकीपराभक्तिवालापुरुष श्रीभागवतविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वभूतेषुयेनैकंभगवद्भावमीक्षते ॥ भूतानिभगवत्यात्मन्येषभागवतोत्तमः) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकै यहपुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे एकभगवद्भावकूं देखैहै अर्थात् (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) इसश्रुतिप्रमाणतैं सर्वभूतोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपब्रह्मकूंही व्यापकदेखैहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकाआत्मरूप जोभगवान्परब्रह्महै तिसपरब्रह्मविषे तिनसर्वभूतोंकूं कल्पितदेखैहै ॥ इसप्रकारका तत्त्ववेत्तापुरुषही सर्वभगवद्भक्तोंविषे उत्तमभक्तहै इति ॥ ५४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! तिसनिदिध्यासनरूपभक्तिकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्ति होवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसभक्तिकेफलकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) भक्त्यामामभिजानातियावान्यश्चास्मितत्त्वतः ॥ ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम् ॥ ५५ ॥ भक्त्या । माम् । अभिजानाति । यावान् । यः । च । अस्मि । तत्त्वतः । ततः । माम् । तत्त्वतः । ज्ञात्वा । विशते । तदनंतरम् ॥ ५५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमात्मादेव जिसपरिमाणवालाहूं तथा जिसस्वरूपवाला हूं ऐसेमैंपरमात्माकूं तिसभक्तिकरिकै सोपुरुष यथावत् साक्षात्कारकरैहै इसप्रकार तिसभक्तितैं मैंपरमात्माकूं यथावत् साक्षात्कारकरिकै देहपाततैंअनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरब्रह्मविषे अभेदरूपतैं प्रवेशकरै है ॥ ५५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तिसनिदिध्यासनरूप ज्ञाननिष्ठानामाभक्तिकरिकै सोअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकूं यथावत् स्वरूपतैं साक्षात्कारकरै है ॥ अब तिस यथार्थस्वरूपकूं वर्णनकरैं हैं ॥ (यावान्यश्चास्मि) तहां मैं अणुपरिमाणवालाहूं अथवा मैं देहकेतुल्य मध्यमपरिमाणवालाहूं ॥ अथवा नैयायिकोंनैं कल्पनाकऱ्याजो आकाशकीन्यांई सर्वमूर्त्तद्रव्योंकेसाथि संयोगित्वरूप विभुत्वहै तिसविभुत्वका मैं आश्रयहूं ॥ अथवा सप्रपंचअद्वैतवादियोंकीन्यांई मैं स्वगतभेदवालाहूं ॥ अथवा मैं अखंड एकरस सर्वत्रव्यापकहूं इसप्रकारकाविचारकरिकै श्रुतिविरुद्धपक्षोंकाबाधकरिकै सोपुरुष मैं परमात्मादेवकूं अखंड एकरस नित्य विभुरूपही जानै है ॥ अणुरूप वामध्यमपरिमाणवाला वा नैयायिकोंकेविभुपरिमाणवाला वा स्वगतभेदवाला मैंपरमात्मादेवकूं जानतानहीं ॥ तथा मैं देहरूपहूं अथवा इंद्रिय

बहुएभी शरीरकेरक्षणवासतै दूसरेलोकों तैं प्राप्तकरेहुए जेबाह्यभोगकेसाधनहैं तिन्होंकानाम परिग्रहहै ॥ ऐसे अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथा क्रोधकूं तथापरिग्रहकूं परित्यागकरिकै तथा शास्त्रकीविधिपूर्वक शिखायज्ञोपवीतादिकोंकूं परित्यागकरिकै तथा शरीरकेनिर्वाहवासतैशास्त्रविहित दंड कमंडलु कौपीन कंथा आदिकोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् परमहंसपरिव्राजकहोइकै जोपुरुष निर्ममहुआहै अर्थात् देहकेजीवनमात्रविषेभी जोपुरुष ममताअभिमानतैंरहितहै इसकारणतैंही अहंकारममकारकेअभावकरिकै हर्षविषादतैंरहितहोणेतैं जोपुरुष शांतहै अर्थात् चित्तकेसर्वविक्षेपों तैंरहितहै ॥ इसप्रकारका परमहंससंन्यासीही ज्ञानसाधनोंकेपरिपाकक्रमकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवै है अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेब्रह्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहांपूर्व (वैराग्यंसमुपाश्रितः) इसवचनकरिकै विषयोंकीअभिलाषारूपकामकापरित्याग कथनकरिकै पुनः (कामंपरित्यज्य) इसवचनकरिकै जो तिसकामकापरित्याग कथनकऱ्याहै सोतिसकामकेपरित्यागकरणेविषे प्रयत्नकी अधिकताबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन्! इसप्रकारका परमहंससंन्यासी किससाधनक्रमकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिससाधनक्रमकूं कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ ५४ ॥ ब्रह्मभूतः । प्रसन्नात्मा । न । शोचति । न । कांक्षति । समः । सर्वेषु । भूतेषु । मद्भक्तिम् । लभते । पराम् ॥ ५४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष ब्रह्मभूतहै तथाप्रसन्नात्माहै तथानहीं शोककरै है तथानहीं इच्छाकरैहै तथा सर्व भूतोंविषे समहै सोपुरुष परा मेरीभक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ५४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुषब्रह्मभूतहै अर्थात् जोपुरुष वेदांतशास्त्रके श्रवणमननकेअभ्यासतैं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेदृढनिश्चयवालाहै ॥ तथा जोपुरुष प्रसन्नात्माहै अर्थात् शमदमादिकसाधनोंकेअभ्यासतैं जोपुरुष शुद्धचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैंही जोपुरुष नष्टहुएपदार्थका शोकनहींकरै है ॥ तथा अप्राप्तहुएपदार्थकीइच्छानहींकरै है ॥ इसीकारणतैंही निग्रहअनुग्रहकेअनारंभतैं जोपुरुष सर्वभूतोंविषे समहै अर्थात् जैसे आपणेकूं सुखप्रियहोवै तथादुःख अप्रियहोवै है तैसे जोपुरुष आपणेआत्माकीन्याईं सर्वप्राणीमात्रकेसुखकूंतौ प्रियदेखैहै तथादुःखकूं अप्रियदेखै है ॥ अथवा (समःसर्वेषुभूतेषु) इसवचनका यह अर्थकरणा ॥ (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहै इसप्रकारकीबुद्धिकरिकै जोपुरुष जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज इनच्यारिप्रकारकेभूतोंविषे विषमभावतैंरहितहै इति ॥ इसप्रकारका ज्ञाननिष्ठसंन्यासी मैंपरमात्मादेवकीभक्तिकूं प्राप्तहोवै है अर्थात् मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषयक जो विजातीयवृत्तियोंकेव्यव

रणेहारेआहारकेसेवनतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष यतवाक्कायमानसहै ॥ तहां बहिर्मुखप्रवृत्तितैं निरुद्धकरेहैं वाक् काय मन यह तीनों जिसनैं ताकानाम यतवाक्कायमानसहै अर्थात् जोपुरुष यम नियम आसन इत्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै तथा जोपुरुष नित्यहीध्यानयोगपरायणहै ॥ तहां चित्त विषे आत्माकारवृत्तियोंकी जाआवृत्तिहै ताकानाम ध्यानहै अर्थात् विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और तिसध्यानकरिकै चित्तका जोसर्ववृत्तियों तैंरहितपणेका संपादनहै ताकानाम योगहै ॥ इसीप्रकारका योगकास्वरूप (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) इससूत्रकरिकै पतंजलिभगवान्नैंभी कथनकऱ्याहै ॥ जोपुरुष इसप्रकारके ध्यानके तथायोगके नित्यही अनुष्ठानपरायणहोवैहै तिसध्यानयोगकूंछोडिकै जोपुरुष कदाचित्भी मंत्रजपतीर्थयात्रादिकोंकेअनुष्ठानपरायणहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष वैराग्यकूंप्राप्तहुआहै ॥ तहां इसलोकके विषयोंविषे तथापरलोकके विषयोंविषे स्पृहाकाविरोधी जोचित्तका परिणामविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ऐसेवैराग्यकूं जोपुरुष विवेकपूर्वक प्राप्तहुआहै सोपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंपरिग्रहम् ॥ विमुच्यनिर्ममः शांतोब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ५३ ॥ अहंकारम् । बलम् । दर्पम् । कामम् । क्रोधम् । परिग्रहम् । विमुच्य । निर्ममः । शांतः । ब्रह्मभूयाय । कल्पते ॥ ५३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं तथापरिग्रहकूं परित्यागकरिकै ममतातैंरहितहुआ तथाविक्षेपतैंरहितहुआ यहपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै ॥ ५३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां मैं महान्कुलविषेउत्पन्नहुआहूं तथा महान्पुरुषोंका मैंशिष्यहूं तथा मैं अतिविरक्तहूं दूसराकोई हमारेसमानहैनहीं इसप्रकारकाजो अभिमानहै ताकानाम अहंकारहै ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रतैंविरुद्ध जोअसत् आग्रहहै ताकानाम बलहै ॥ यद्यपि बहुतस्थलविषे शरीरकेसामर्थ्यकूं बलकहाहै तथापि इहां बलशब्दकरिकै सोशारीरबल ग्रहणकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं स्वाभाविकहोणेतैं सोशारीरबल त्यागकरणेकूंअशक्यहै ॥ तथा आत्मज्ञानकेसाधनोंकेसंपादनकरणेविषे अनुकूलहै ॥ और हर्षकरिकैजन्य तथाधर्मकेअतिक्रमकरणेकाकारणरूप ऐसाजो मदहै ताकानाम दर्पहै यहवार्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ (हृष्टोदृप्यतिदृप्तोधर्ममतिक्रामति ॥) अर्थयह ॥ हर्षकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष मदरूपदर्पकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मदरूपदर्पकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष धर्मका अतिक्रमणकरैहै इति ॥ और इसलोकके अथवा परलोकके विषयोंकीजा अभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और द्वेषकानाम क्रोधहै ॥ और स्पृहाकेअभा

टीका। हे अर्जुन ! सर्वसंशयविपर्ययों तैंशून्यहोणतैं विशुद्ध ऐसीजा अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेवेदांतवाक्योंतैंजन्य ब्रह्मात्म ऐक्यविषयक बुद्धिकीवृत्तिहै ता बुद्धिवृत्तिकरिकै सर्वदा युक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष धैर्यरूपधृतिकरिकै शरीरइंद्रियसंघातरूपआत्माकूं नियमनकरिकै अर्थात् तिससंघातकूं शास्त्रनिषिद्धमार्गकीप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरिकै अंतरआत्मापरायणकरिकै ॥ इहां (आत्मानंनियम्यच) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै तिसचशब्दकरिकै योगशास्त्रविषे कथनकरेहुए दूसरेसाधनोंकाभी समुचयकरणा ॥ तथा शब्दादिकविषयोंकूं परित्यागकरिकै अर्थात् शब्द स्पर्शरूप रस गंध यहजेपंचविषयहैं जेशब्दादिक विषय आपणेभोगकरिकै इसभोक्तापुरुषके बंधनकरणेविषेसमर्थहैं ॥ तथा जेशब्दादिकविषय ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै शरीरकीस्थितिमात्ररूपप्रयोजनविषे उपयोगीनहीं हैं ॥ तथा जेशब्दादिकविषय शास्त्रकरिकैभीनिषिद्धनहीं हैं ॥ ऐसेशब्दादिकविषयोंकूंभी परित्यागकरिकै ॥ और जेशब्दादिकविषय इसशरीरकी स्थितिमात्रविषे उपयोगीहैं तिनविषयोंविषेभी रागद्वेषकूंपरित्यागकरिकै ॥ इहां (रागद्वेषौव्युदस्यच) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै तिसचशब्दतैं दूसरेभीजितनेकज्ञानकेविक्षेपकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेपरित्यागका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार विशुद्धबुद्धिकरिकैयुक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष धृतिसैं संघातकूं नियमनकरिकै तथाशब्दादिकविषयोंकापरित्यागकरिकै तथारागद्वेषादिकोंका परित्यागकरिकै विविक्तसेवीआदिकविशेषणोंकरिकैयुक्तहोवै सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै ॥ इसरीतितैं इसश्लोकका तथाअगलेश्लोकका (ब्रह्मभूयायकल्पते) इसतृतीयश्लोककेवचनसाथि अन्वय करणा इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) विविक्तसेवीलघ्वाशीयतवाक्कायमानसः ॥ ध्यानयोगपरोनित्यंवैराग्यंसमुपाश्रितः ॥ ५२ ॥ विविक्तसेवी । लघ्वाशी । यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरः । नित्यम् । वैराग्यम् । समुपाश्रितः ॥५२॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष एकांतदेशकासेवनकरणेहाराहै तथापरिमितभोजनकरणेहाराहै तथाजीतेहैंवाक्कायमनजिसनैं तथानित्यहीं ध्यानयोगपरायणहै तथावैराग्यकूं प्राप्तहुआहै सोपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै ॥ ५२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। जनोंकेसंसर्गतैंरहित तथापवित्र ऐसाजो कोईवनहै अथवा पर्वतकीगुहादिकहै ताकानाम विविक्तदेशहै ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाहैस्वभावजिसका ताकानाम विविक्तसेवीहै अर्थात् चित्तकीएकाग्रताकेसिद्धिवासतै जोपुरुष तिसचित्तकेविक्षेपकरणेहारेपदार्थों केसंसर्गतैंरहितहै तथा जोपुरुष लघ्वाशीहै तहां परिमितहित पवित्र ऐसेअन्नके भोजनकरणेकाहैस्वभावजिसका ताकानाम लघ्वाशीहै अर्थात् जोपुरुष निद्राआलस्यादिरूपचित्तकेलयक

हुआ यहपुरुष जिसप्रकारकरिकै ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरै है तिसप्रकारकूं तूं मेरेवचनतैं संक्षेपकरिकै ही निश्चयकर तथातिस सिद्धिकूंप्राप्तहुएपुरुषकी जो ज्ञानकी परा निष्ठाहै तिसकूंभी तूंनिश्चयकर ॥ ५० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंसैं अंतर्यामीईश्वरकूंआराधनकरिकै तिसईश्वरकेप्रसादतैं उत्पन्नहुईजा सर्वकर्मोकेत्यागपर्यंत तथाज्ञानकेउत्पत्तिकी योग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिरूप सिद्धिहै ऐसीसिद्धिकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष जैसे ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् जिसप्रकारकरिकै प्रत्यक्अभिन्नशुद्धब्रह्मकूं साक्षात्कारकरै है तिसप्रकारको तूंअर्जुन अनुष्ठानकरणेवासतै मेरेवचनतैं निश्चयकर ॥ शंका—हेभगवन् ! बहुतविस्तारकरिकै कथन कऱ्याहुआ सोप्रकार हमारीबुद्धिविषे कैसेआरूढहोवैगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (समासेनैवइति) हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरकेवचनतैं संक्षेपकरिकैही तूंतिसप्रकारकूं निश्चयकर ॥ नबहुतविस्तारकरिकै ॥ शंका—हेभगवन् ! तिसप्रकारकेनिश्चयकरणेकरिकै क्यासिद्धहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (निष्ठा ज्ञानस्ययापरा) इति । हेअर्जुन ! श्रवणमननरूपविचारकरिकै उत्पन्नभयाजो आत्मज्ञानहै तिसज्ञानकीजा परिसमाप्तिरूपनिष्ठाहै अर्थात् तिसनिष्ठातैं अनंतरदूसराकोईसाधन अनुष्ठानकऱ्याजावैनहीं ॥ कैसीहैजानिष्ठा पराहै अर्थात् अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ अथवा साक्षात्मोक्षकाहेतुहोणेतैं जानिष्ठा सर्वकेअंतविषेस्थितहै ॥ हेअर्जुन ! तिसपूर्वउक्तसिद्धिकूं प्राप्तहुए पुरुषकी इसप्रकारकी जाब्रह्मकीप्राप्तिरूप पराज्ञाननिष्ठाहै तिसज्ञाननिष्ठाकूंभी तूं मेरेवचनतैं संक्षेपकरिकै निश्चयकर इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (निष्ठाज्ञानस्ययापरा) यहब्रह्मकाहीविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां या कहिये जोप्राप्यब्रह्मज्ञानकीपरानिष्ठाहै अर्थात् जिसब्रह्मकी अपेक्षाकरिकै दूसराकोई पदार्थ सर्वतैं अंतरज्ञेय रूपनहींहै ऐसे ज्ञानकी परानिष्ठारूप ब्रह्मकूं यहशुद्धअंतःकरणवाला मुमुक्षु जिसप्रकारकरिकै साक्षात्कारकरै है तिसप्रकारकूं तूं हमारेवचनतैं संक्षेपकरिकै निश्चयकर इति ॥ ५० ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसप्रकार सहित इसज्ञाननिष्ठाका कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) बुद्ध्याविशुद्धयायुक्तोधृत्यात्मानंनियम्यच ॥ शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वारागद्वेषौव्युदस्यच ॥ ५१ ॥ बुद्ध्या । विशुद्धया । युक्तः । धृत्या । आत्मानम् नियम्य । च । शब्दादीन् । विषयान् । त्यक्त्वा । रागद्वेषौ । व्युदस्य । च ॥५१॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन ! विशुद्ध बुद्धिकरिकै युक्तहुआ यहपुरुष धैर्यकरिकै इससंघातकूं नियमकरिकै तथा शब्दादिक विषयोंकूं परित्यागकरिकै तथा रागद्वेषकूं परित्यागकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ५१ ॥ इतिपदार्थः ॥

त्माइति) इहां आत्माशब्दकरिकैअंतःकरणकाग्रहणकरणा ॥ सोअंतःकरण सर्वविषयों तैंनिवृत्तकरिकै वशकऱ्याहैजिसनैं ताकानाम जितात्माहै ॥ ऐसाजितात्माहोणेतैंही जोपुरुष सर्वत्र असक्तबुद्धिहै ॥ शंका—हेभगवन् ! विषयरागकेविद्यमानहुए तिनविषयोंतैंअंतःकरणकीनिवृत्ति कैसेसंभवैगी ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (विगतस्पृहः इति)। हेअर्जुन ! जोपुरुष देहजीवनकेहेतुभूतअन्नपानादिकभोगोंविषेभी इच्छातैंरहितहै अर्थात् सर्वदृश्यपदार्थोंविषे दोषदर्शनकरिकै तथानित्यबोधपरमानंदरूपमोक्षेगुणाकेंदर्शनकरिकै जोपुरुष सर्वअनात्मपदार्थोंतैंविरक्तहुआहै ॥ इसप्रकारका जो शुद्धअंतःकरणवालापुरुष (स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैप्रतिपादित कर्मजन्य अपरमसिद्धिकूंप्राप्तहुआहै अर्थात् आत्मज्ञानकासाधनरूप जोवेदांतवाक्योंकाविचारहै ताविचारका अधिकाररूप तथाज्ञाननिष्ठाकीयोग्यतारूप ऐसीजा निष्कामकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिरूप अपरमसिद्धिहै तिसअपरमसिद्धिकूं जोपुरुष प्राप्तहुआहै सोशुद्धअंतःकरवालाअधिकारीपुरुष शिखायज्ञोपवीतादिकसहित सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकै परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् सोअधिकारीपुरुष संन्यासपूर्वकवेदांतविचारकरिकै परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां (निष्कलंनिष्क्रियंशांतम्) इसश्रुतिनैं ब्रह्मकूं क्रियारूपकर्मतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मकानाम निष्कर्महै ॥ तिसनिष्कर्मकूंविषयकरणेहारा जो वेदांतविचारतैंउत्पन्नहुआ आत्मज्ञानहै ताज्ञानकानाम नैष्कर्म्य है ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकानाम नैष्कर्म्य है ॥ ऐसीनैष्कर्म्यरूपजासिद्धिहै कैसीहैसानैष्कर्म्यसिद्धि परमाहै अर्थात्. पूर्वउक्त निष्कामकर्मजन्य अंतःकरणकीशुद्धिरूप अपरमसिद्धिकाफलरूपहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ ऐसीआत्मसाक्षात्काररूप परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंके परिपाककरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ अथवा (संन्यासेन) इसवचनविषेस्थित तृतीयाविभक्ति इत्थंभूतलक्षणाविषेहै ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सर्वकर्मोंकासंन्यासरूप ऐसीजा नैष्कर्म्यसिद्धिहै अर्थात् ब्रह्मसाक्षात्कारकीयोग्यतारूप जानैर्गुण्यलक्षणसिद्धिहै ॥ कैसीहैसासिद्धि परमहै अर्थात पूर्वउक्तअंतःकरणकीशुद्धिरूप सात्विकसिद्धिकाफलरूपहोणेतैं श्रेष्ठहै ॥ ऐसीसर्वकर्मोंकासंन्यासरूप परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं सोअसक्तबुद्धिजितात्मापुरुषही प्राप्तहोवैहै इति ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व कथनकरेजेसाधनहैं तिनसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न सर्वकर्मोंकेसंन्यासीकूं ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे अब साधनोंकेक्रमकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) सिद्धिंप्राप्तोयथाब्रह्मतथाप्नोतिनिबोधमे॥समासेनैवकौंतेयनिष्ठाज्ञानस्ययापरा॥५०॥सिद्धिम्। प्राप्तः। यथा। ब्रह्म। तथा। आप्नोति। निबोध। मे। समासेन। एव। कौंतेय। निष्ठा। ज्ञानस्य। या। परा॥५०॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय सिद्धिकूं प्राप्त

भगवत्अर्पितनिष्कामकर्मोंकरिकै अशुद्धिकीनिवृत्तिद्वारा अंतःकरणकेशुद्धिकूंप्राप्तहुआहै तथा जोपुरुष शुद्धब्रह्मात्मऐक्यकीजिज्ञासाकूं प्राप्तहुआहै ऐसामुमुक्षुजनतौ स्वइष्टमोक्षकाहेतुभूतब्रह्मात्मऐक्यज्ञानकेसाधनरूप वेदांतवाक्योंकेश्रवणादिकोंकेकरणेवासतै सर्वविक्षेपोंकीनिवृत्तिद्वारा तिनश्रवणादिकोंकाअंगरूप तथाश्रुतिस्मृतिकरिकैविहित ऐसेसर्वकर्मोंकेसंन्यासकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषे तथास्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्मादेवंविच्छांतोदांतउपरतस्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्येत्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकारणतैं शमदमादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोतीनहीं तिसकारणतैं यह अधिकारीपुरुष शमयुक्तहोइकै तथादमयुक्तहोइकै तथाउपरतिवालाहोइकै तथातितिक्षावालाहोइकै तथासमाधानवालाहोइकै आपणेअंतःकरणविषे आत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥ इहां उपरतः इसशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यास कथनकऱ्याहै अर्थात् शमदमादिकसाधनपूर्वक सर्वकर्मों केसंन्यासवालाहोइकै यहअधिकारीपुरुष आत्माकेसाक्षात्कारवासतै वेदांतवाक्योंकूं विचारकरै इति ॥ यहवार्त्ता अन्यश्रुतिविषे भी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै ही वेदांतवाक्योंका श्रवणकरै इति ॥ तहांस्मृति ॥ (सत्यानृतेसुखदुःखेविद्यानिमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष सत्य अनृत सुख दुःख यहलोक परलोक इत्यादिकसर्वकापरित्यागकरिकै आत्मसाक्षात्कारवासतै वेदांतशास्त्रकाविचारकरै इति ॥ इसप्रकारका परमहंसपरिव्राजकही (ब्रह्मसंस्थाऽमृतत्वमेति) इसश्रुतिनैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनआश्रमोंतैंविलक्षणरूपकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ और इसप्रकारका परमहंससंन्यासीही परमहंसपरिव्राजककृतकृत्यगुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ तथा इसी मुमुक्षुपरमहंससंन्यासीकूं उद्देशकरिकै श्रीव्यासभगवान्नैं (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इत्यादिक च्यारिअध्यायरूप उत्तरमीमांसाशास्त्र प्रारंभकऱ्याहै ॥ इसप्रकारके शुद्धअंतःकरणवाले मुमुक्षुजनका अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) असक्तबुद्धिःसर्वत्रजितात्माविगतस्पृहः ॥ नैष्कर्म्यसिद्धिंपरमांसंन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥ असक्तबुद्धिः । सर्वत्र । जितात्मा । विगतस्पृहः । नैष्कर्म्यसिद्धिम् । परमाम् । संन्यासेन । अधिगच्छति ॥ ४९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सर्वत्र असक्तबुद्धि तथाजितात्मा तथाविगतस्पृह ऐसाअधिकारीपुरुष परम नैष्कर्म्यसिद्धिकूं संन्यासकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ४९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! आसक्तिकेनिमित्तरूप जे धन स्त्री पुत्र गृह इत्यादिकपदार्थ हैं तिनधनादिकपदार्थोंविषेभीजोपुरुष असक्तबुद्धिहै अर्थात् मैं इनधनादिकपदार्थोंकाहूं तथा यहधनादिकपदार्थ मेरेहैं इसप्रकारकेअभिष्वंगतैंरहितहैबुद्धिजिसकी ताकानाम असक्तबुद्धिहै ॥ अब तिसअसक्तबुद्धिपणेविषे हेतुकहैं हैं (जिता

वजन्य [3]सदोष [4]भी कर्मकूं यहपुरुष नहीं परित्यागकरै जिसकारणतैं सर्वहीधर्म धूंमकरिकै [11]अग्निकी [12]न्याई [13]सामान्यदोषकरिकै [14]आवृतहैं ॥ ४८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्तस्वभावकरिकैजन्य जो स्ववर्णआश्रमकाकर्म है सोकर्मसदोषभीहोवै अर्थात् शास्त्रविहितहिंसारूपदोषकरिकैयुक्तभीहोवै ॥ ऐसेसदोषभी ज्योतिष्टोमयुद्धादिक स्वकर्मकूं अंतःकरणकीशुद्धितैंपूर्व तूं अर्जुन वा अन्यकोईपुरुष नहींपरित्यागकरै ॥ जिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंरहित कोईभी अज्ञानीपुरुष एकक्षणमात्रभी कर्मोंकूंनहींकरिकै स्थितहोणेकूंसमर्थहोतानहीं किंतु सोअज्ञानीपुरुष यत्किंचित्कर्मकूंकरताहुआही स्थितहोवैहै ॥ हे अर्जुन ! यहपुरुष स्वधर्मकापरित्यागकरिकै परकेधर्मकूंअनुष्ठानकरताहुआभी दोषतैंमुक्तहोतानहीं ॥ काहेतैं जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि धूमकरिकैआवृतहोवैहै ॥ तैसे जितनेक स्वधर्म हैं तथाजितनेक परधर्म हैं तेसर्वहीधर्म सत्त्वादिकतीनगुणरूपसामान्यदोषकरिकैव्याप्तहैं ॥ यातैं तेसर्वहीधर्म दोषयुक्तही हैं ॥ यहवार्ता पूर्व (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः) इसयोगसूत्रकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं जैसे विषतैंउत्पन्नहुआकृमि विषकूं नहींपरित्यागकरै है तैसे यहअनात्मज्ञपुरुष अगतितैं कर्मोंकूंकरताहुआ त्रिगुणात्मकसामान्यदोषकरिकै तथाबंधुवधादिनिमित्तकविशेषदोषकरिकै युक्तभी स्वभावजन्ययुद्धादिकर्मकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ जिसकारणतैं यहअज्ञानीपुरुष सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे समर्थहैनहीं ॥ और सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषेसमर्थ जोशुद्धअंतःकरणवालापुरुषहै सोतौ तिनसर्वकर्मोंका परित्यागहीकरै ॥ इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ तहां अशुद्धअंतःकरणवाला अनात्मज्ञपुरुष जो सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे समर्थनहींहै तौ तिनसर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे कौनपुरुष समर्थ है ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहुए कहैं हैं ॥ जोअधिकारीपुरुष नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै अर्थात् एकआत्माही नित्यहै आत्मातैंभिन्न देहादिकसर्वअनात्मपदार्थ अनित्यहैं इसप्रकारकेनित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै ॥ और विवेकवालाहोणेतैंही जोपुरुष वैराग्यवालाहै अर्थात् इसलोकके जितनेकविषयभोगहैं तथास्वर्गादिलोकोंके जितनेकविषयभोगहैं तिनसर्वविषयभोगोंविषे जोपुरुष रागतैंरहितहै और वैराग्यवाला होणेतैंही जोपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इनषट्संपत्तिरूपसाधनकरिकैसंपन्नहै ॥ तहां विषयोंतैं मनकूंरोकणा याकूं शमकहैं हैं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैंरोकणा याकूं दमकहैं हैं ।। और स्त्रीपुत्रधनादिकसाधनोंसहित सर्वकर्मोंकाजोपरित्यागहै ताकूं उपरतिकहैं हैं ।। और शीत उष्ण क्षुधा पिपासा इत्यादिक द्वंद्वधर्मोंकाजोसहनहै ताकानाम तितिक्षाहै॥ और वेदगुरुवोंकेवचनोंविषेजोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै ।। और मनकेविक्षेपकीजानिवृत्तिहै ताकूं समाधानकहैं हैं ॥ इसप्रकारके शमदमादिकषट्संपत्तिरूपसाधनकरिकै जोपुरुष संपन्नहै तथा जोपुरुष

(मू. श्लो.) श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात ॥ स्वभावनियतंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥४७॥ श्रेयान्। स्वधर्मः। विगुणः। परधर्मात्। स्वनुष्ठितात्। स्वभावनियतम्। कर्म। कुर्वन्। न। आप्नोति। किल्बिषम् ॥४७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सम्यक्अनुष्ठानकरेहुए परधर्मतैं असम्यक्अनुष्ठानकऱ्याहुआ स्वधर्म अतिश्रेष्ठहोवैहै स्वभावजन्य कर्मकूं करताहुआ यहपुरुष पापकूं नहीं प्राप्तहोता ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मंत्र द्रव्य देवता आदिकसर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक सम्यक् अनुष्ठानकऱ्याहुआ जोपरधर्महै तिसपरधर्म तैं किंचित्मंत्रादिकअंगोंतैंरहित असम्यक्अनुष्ठानकऱ्याहुआभी स्वधर्म अत्यंतश्रेष्ठहोवैहै ॥ यातैं यहयुद्धादिरूपधर्म यद्यपि हिंसाकरिकैयुक्तहै और भिक्षाअटनादिरूपधर्म ताहिंसादोषतैंरहित है तथापि तैंक्षत्रियराजानैं सोयुद्धादिरूपस्वधर्मही अनुष्ठान करणेयोग्यहै सोभिक्षाअटनादिरूपपरधर्म तुम्हारेकूं अनुष्ठानकरणेयोग्य नहींहै ॥ यहवार्त्ता (स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः) इत्यादिकवचनकरिकै पूर्वभी हम तुम्हारेप्रति कथनकरिआयेहैं ॥ शंका—हे भगवन् ! यद्यपि युद्धादिक हमारा स्वधर्महै तथापि सोयुद्धादिकर्म बांधवोंकी हिंसाजन्य प्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यातैं सोयुद्धादिरूपकर्म हमारेकूं अनुष्ठाकरणेयोग्यनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसयुद्धरूप कर्मविषे प्रत्यवायकी हेतुताकूं निषेधकरैं हैं ॥ (स्वभावनियतमिति) हे अर्जुन ! पूर्व (शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यम्) इत्यादिकवचनकरिकै कथनकऱ्याजो क्षत्रियराजाका गुणकृतस्वभावहै तिसस्वभावकरिकैजन्ययुद्धादिककर्मकूं करताहुआ यहक्षत्रियराजा बांधवोंकीहिंसानिमित्तकपापकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (सुखदुःखेसमंकृत्वा) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वभी विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इसवेदवचननैं यज्ञका अंगरूपकरिकै विधानकरीजा पशुकीहिंसाहै साहिंसावेदविहितहोणेतैं जैसे प्रत्यवायकाहेतुनहीं है तैसे वेदभगवान्नैं युद्धकाअंगरूपकरिकै विधानकरीजा बांधवादिकोंकीहिंसाहै साहिंसाभी वेदविहितहोणेतैं प्रत्यवायकाहेतुनहीं है ॥ यहवार्त्ता अनेकवार कथनकरिआये हैं ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं शास्त्रविहित हिंसादिकोंकूं प्रत्यवायकाहेतुपणा नहीं है ॥ तथा परकाधर्म भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा सामान्यदोषकरिकै सर्वकर्म दुष्टही हैं ॥ तिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंरहित वर्णआश्रमकाअभिमानीपुरुष स्वभावजन्य विहित कर्मकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सहजंकर्मकौंतेयसदोषमपिनत्यजेत् ॥ सर्वारंभाहिदोषेणधूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥ सहजम्। कर्म। कौंतेय। सदोषम्। अपि। न। त्यजेत्। सर्वारंभाः। हि। दोषेण। धूमेन। अग्निः। इव। आवृताः ॥ ४८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे कौंतेय स्वभा

नाम् । येन । सर्वम् । इदम् । ततम् । स्वकर्मणा । तम् । अभ्यर्च्य । सिद्धिम् । विंदति । मानवः ॥४६॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! जिसईश्वरतैं आकाशादिकभूतोंकी उत्पत्ति होवै है तथाजिसईश्वरनैं यह सर्वविश्व व्याप्तकऱ्याहै तिसईश्वरकूं स्वकर्मकरिकै संतुष्ट करिकै यहमनुष्य अंतःकरणकीशुद्धिकूं प्राप्तहोवै है ॥ ४६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मायाउपाधिकचैतन्यआनंदघनरूप तथासर्वज्ञरूप तथासर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वजगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकरणरूप ऐसेजिसअंतर्यामी ईश्वरतैं आकाशादिकसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवै है अर्थात् जैसे स्वप्नविषे रथादिकपदार्थोंकी मायामयी उत्पत्तिहोवै है तैसे जिसअंतर्यामीईश्वरतैं इन आकाशादिक सर्वभूतोंकी मायामयीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथा जिसएकअंतर्यामीईश्वरनैं आपणेसत्‌रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै यहसर्वदृश्यप्रपंच तीनोंकालविषे व्याप्तकऱ्या है अर्थात् जिसअंतर्यामीचैतन्यनैं यहसर्वकल्पितप्रपंच आपणेअधिष्ठानस्वरूपविषे अंतर्भावकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंअतिरिक्तहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानतैं अतिरिक्तहोवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानचैतन्यविषेकल्पित यहसर्वप्रपंच तिसअधिष्ठानचैतन्यतैंअतिरिक्त है नहीं ॥ तहां अंतर्यामी ईश्वरतैंही सर्वजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय होवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति) ॥ अर्थयह ॥ हे भृगु ! जिसकारणरूपवस्तुतैं यहआकाशादिकसर्वभूत उत्पन्नहोवैं हैं तथा उत्पन्नहुएतेसर्वभूत जिसकारणरूपवस्तुकारिकै जीवतेहैं तथा विनाशकूंप्राप्तहुए तेसर्वभूत जिसकारणरूपवस्तुविषे लयकूंप्राप्तहोवै हैं सोसर्वजगत्काअभिन्ननिमित्तउपादानकारणरूपवस्तुकूंही तूं ब्रह्मरूपजान ॥ ऐसे कारणरूपब्रह्मका तूं विचारकर इति ॥ इसश्रुतितैं तिसअंतर्यामी ईश्वरतैंहीसर्वजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय प्रतीतहोवैहै ॥ और (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम्) इत्यादिकश्रुतितैं तिसअंतर्यामीईश्वरविषे मायारूपउपाधिकीप्रतीतिहोवैहै और (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इसश्रुतितैं तिसअंतर्यामीईश्वरविषे सर्वज्ञपणा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं (यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं श्रुतिप्रतिपादितअर्थही कथन कऱ्याहै इति ॥ ऐसेसर्वजगत्केउपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूप अंतर्यामी ईश्वरकूं यहअधिकारीपुरुष शास्त्रविहितआपणेवर्णआश्रमकेकर्मकरिकै संतुष्टकरिकै तिसअंतर्यामी ईश्वरकेप्रसादतैं सिद्धिकूंप्राप्तहोवै है अर्थात् ब्रह्मात्मैक्यज्ञाननिष्ठाकीयोग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वर्णाश्रमकर्मोंकेअनधिकारी जेदेवादिकहैं तेदेवादिकतौ केवल उपासनामात्रकारिकैही तिससिद्धिकूंप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आपणेआपणेवर्णआश्रमकाधर्म ही इनमनुष्योंकूं परमेश्वरके प्रसादकाहेतुहै इसकारणतैं इनअधिकारीमनुष्योंनैं तिसस्वधर्मकाही अनुष्ठानकरणा ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

नोंही आश्रमोंकूं परिव्राजकभावकरिकै ज्ञाननिष्ठाकेप्राप्तहुए मोक्षकीप्राप्तिकूं (ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति) इसवचनकरिकै कहतीभई है ।। इसप्रकारकीव्यवस्थाके सिद्धहुए जोमोक्षकीइच्छावान् ब्रह्मचारी वा गृहस्थ वा वानप्रस्थ फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै तथाभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै शास्त्रविहित आपणे वर्ण आश्रमकेकर्मोंकूंकरै है सोमुमुक्षु ब्रह्मचारी वा गृहस्थ वा वानप्रस्थ अवश्यकरिकै संसिद्धिकूंप्राप्तहोवै है ।। इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) स्वेस्वेकर्मण्यभिरतःसंसिद्धिंलभतेनरः॥ स्वकर्मनिरतःसिद्धिंयथाविंदतितच्छृणु ॥ ४५ ॥ स्वे । स्वे । कर्मणि । अभिरतः । संसिद्धिम् । लभते । नरः । स्वकर्मनिरतः सिद्धिम् । यथा । विन्दति । तत् । शृणु ॥ ४५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहमनुष्य आपणे आपणे कर्मविषे निष्ठावान्हुआ संसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै आपणेकर्मविषेनिष्ठावान्पुरुष जिसप्रकारतैं सिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै तिसप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ ४५ ॥ इतिपदार्थः॥

टीका । हेअर्जुन ! श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं तिसतिसवर्णआश्रमकेप्रति जोजोकर्म विधानकऱ्याहै तिसआपणे आपणेकर्मविषे अभिरतहुआ यहपुरुष अर्थात् तिसआपणेआपणेकर्मके सम्यक्अनुष्ठानपरायणहुआ यहवर्णाश्रमकाअभिमानीमनुष्य संसिद्धिकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् देहइंद्रियरूपसंघातकीअशुद्धिकेक्षयकरिकै सम्यक्ज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यताकूं प्राप्तहोवैहै ।। तहांवेदोंविषे जितनाककर्मकांडहै तिससर्वकर्मकांडका वर्णाश्रमकाअभिमानीमनुष्यही अधिकारीहोवैहै ॥ और देवादिकोंविषे सोवर्णआश्रमकाअभिमानहैनहीं ॥ यातैं कर्मकांडकरिकैप्रतिपादित तिनवर्णाश्रमकेधर्मोंविषे तिनदेवादिकोंकूंअधिकारहैनहीं ॥ इसअर्थके बोधनकरणेवासतै इहां श्रीभगवान्नैं मनुष्यकावाचक (नरः) यहशब्द कथनकऱ्याहै ॥ और वर्णाश्रमकेअभिमानकीअपेक्षातैं रहितसगुणब्रह्मकीउपासना वोंविषे तथानिर्गुणब्रह्मविद्याविषेतौ तिनदेवादिकोंकाभी अधिकारहै ॥ यहवार्ता देवताधिकरणविषे श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतेवर्णनकरीहै इति ॥ शंका—हेभग वन् ! (कर्मणाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंतैं कर्मोंकूं बंधकाहेतुपणाही सिद्धहोवैहै यातैं बंधकेहेतुरूप तिनकर्मोंविषे मोक्षकाहेतुपणा कैसेसंभवैगा किंतु नहींसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए यद्यपि कर्म बंधकेहेतुहैं तथापि उपायविषेतौ तेकर्म मोक्षकेहेतुहोवैं हैं ॥ इसप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (स्वकर्मनिरतः) इति हेअर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष शास्त्रविहित आपणेवर्णआश्रमकर्मविषे निष्ठावालाहुआ जिसप्रकारतैं तिससंसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै तिस प्रकारकूं तूंअबी श्रवणकर अर्थात् श्रवणकरिकै तिसप्रकारकूं तूं निश्चयकर इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसप्रकारकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यतःप्रवृत्तिर्भूतानां येनसर्वमिदंततम् ॥ स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः ॥ ४६ ॥ यतः । प्रवृत्तिः । भूता

तथावृत्तकूं तथामेधाकूं तथाद्रव्योंकूं तथाधर्मानुष्ठानकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ इसप्रकारकाधर्मकाफल गौतमऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ।। तहां गौतमवचन ॥ (वर्णाश्रमाश्चधर्मनिष्ठाः प्रेत्य कर्मफलमनुभूय ततःशेषेण विशिष्टदेशजातिकुलरूपायुःश्रुतवृत्तवित्तसुखमेधसोजन्मप्रतिपद्यंते विष्वंचोविपरीतानश्यंति ॥) अर्थयह ॥ ब्राह्मणादिकच्यारिवर्ण तथाब्रह्मचर्यादिकच्यारिआश्रम आपणेआपणेधर्मविषेनिष्ठावालेहुए मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकलोकोंविषे किंचित्कर्मोंकेसुखरूपफलकूंअनुभव करिकै तिसतैंअनंतर परिशेषतैंरहेहुएकर्मकरिकै श्रेष्ठदेश उत्तमजाति उत्तमकुल सुंदररूप आयुष् वेदोंकाअध्ययन वृत्त वित्त सुख मेधा इत्यादिकगुणोंयुक्तजन्मकूंप्राप्त होवैं हैं ॥ और शास्त्रनिषिद्धमार्गविषेप्रवृत्तहोणेहारेपापिष्ठपुरुषतौ नरकादिकोंविषेजन्मकूंप्राप्तहोइके विनाशकूंप्राप्तहोवैं हैं अर्थात् तेपापीपुरुष कृमिकीटादिभाव करिकै सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोवैं हैं इति ।। इसप्रकारकाधर्मकाफल हारीतऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ।। तहांश्लोक ।। (काम्यैःकेचियज्ञदानैस्तपोभिर्लब्ध्वालोकान्पुनरांयांतिजन्म ।। कामैर्मुक्ताःसत्ययज्ञाःसुदानास्तपोनिष्ठा अक्षयान्यांतिलोकान् ।। १ ।।) ॥ अर्थयह ।। केईकसकामपुरुषतौ काम्ययज्ञदानोंकरिकै तथाकाम्यतपोंकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकूं प्राप्तहोइके पुनः इसमनुष्यलोकविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैं हैं ।। और कामोंकरिकैमुक्तहुए तथासत्यरूपयज्ञवाले तथाश्रेष्ठदानवाले तथा तपविषेनिष्ठावाले ऐसेकेईकनिष्कामपुरुषतौ अक्षयलोकोंकूं प्राप्तहोवैं हैं ।। इहां कामनाकेसद्भावतैं तथाकामनाके असद्भावतैं फलकाभेद दिखायाहै इति ॥ और भविष्यपुराणविषेतौ सोकर्मोंकाफल इसप्रकारतैं कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (फलंविनाप्यनुष्ठानंनित्यानामिष्यतेस्फुटम् ॥ काम्यानांस्वफलार्थंतुदोषघातार्थमेवतु ॥ ॥ १ ॥ नैमित्तिकानांकरणेत्रिविधंकर्मणांफलम् ॥ क्षयंकेचिदुपात्तस्यदुरितस्यप्रचक्षते ॥ २ ॥ अनुत्पत्तिंतथाचान्येप्रत्यवायस्यमन्वते ॥ नित्यांक्रियांतथा चान्येआनुषंगफलांविदुः ॥ ३ ॥) ॥ अर्थयह ॥ अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकातौ फलतैंविनाभी अनुष्ठान कऱ्याजावैहै ॥ और ज्योतिष्टोमादिक काम्यकर्मोंकातौ तिसतिसस्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवास्तैही अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ।। और नैमित्तिककर्मोंकातौ दोषकीनिवृत्तिवास्तैही अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकारतैं कर्मोंका तीनप्रकारकाहीफलहोवैहै ॥ और केईकऋषितौ करेहुएपापकर्मकानाशही तिननित्यकर्मोंकाफलमानैं हैं ॥ और दूसरेकेईकऋषितौ प्रत्यवायकीअनुत्पत्तिही तिननित्यकर्मोंकाफल मानैं हैं ॥ और अन्यकेईकआपस्तंबादिकऋषितौ तिननित्यकर्मोंका स्वर्गादिरूपआनुषंगिकफलही अंगीकारकरैं हैं ।। सो आनुषंगिकफल (तद्यथाम्रेफलार्थेनिर्मिते) इत्यादिकवचनकरिकै पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ।। ३ ।। और (त्रयोधर्मस्कंधा यज्ञोऽध्ययनंदानमिति प्रथमस्तप एवद्वितीयो ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासीतृतीयोऽत्यंतमात्मानमाचार्यकुलेऽवसादयन्निति) यहश्रुतितौ गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी इनतीनआश्रमोंकूं कथनकरिकै पश्चात् (सर्वएतेपुण्यलोकाभवंति) इसवचनकरिकै तिनतीनोंआश्रमोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिकेअभावहुए मोक्षकीअप्राप्ति कथनकरिकै पश्चात् शुद्धअंतःकरणवालेइनती

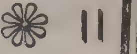
क्षकाहेतुभूत जोआत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकी उत्पत्तिकेप्रतिबंधकजेप्रत्यवायहैं तिनप्रत्यवायोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै जोनिष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानहै सो कृत्स्नधर्म कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारतैं हारीतऋषिनैं च्यारिप्रकारकाधर्मकथनकऱ्याहै इति ॥ और शास्त्रोंविषे जैसे च्यारिहिवर्ण कथनकरेहैं तैसे शास्त्रोंविषे च्यारिहीआश्रम कथनकरे हैं ॥ तहां गौतमवचन ॥ (तस्याश्रमविकल्पमेकेब्रुवते ब्रह्मचारीगृहस्थो भिक्षुर्वैखानसइति ॥) अर्थयह ॥ वेदवेत्तापुरुष तिसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मचारी गृहस्थ भिक्षु वैखानस यहच्यारिप्रकारका आश्रमविकल्प कथनकरैंहैं ॥ इहां भिक्षु इसशब्दकरिकै संन्यासीकाग्रहणकरणा और वैखानस इसशब्दकरिकै वानप्रस्थकाग्रहणकरणा इति ॥इसप्रकारकेच्यारिआश्रमोंकूं आपस्तंबऋषिभी कथनकरताभयाहै ॥ तहांआपस्तंबवचन ॥ (चत्वारआश्रमा गार्हस्थ्यमाचार्यकुलंमौनंवानप्रस्थमितितेषुसर्वेषुयथोपदेशमव्यग्रोवर्त्तमानः क्षेमंगच्छति इति ॥) अर्थयह ॥ गार्हस्थ्य आचार्यकुल मौन वानप्रस्थ यहच्यारिही आश्रमहोवैं हैं ॥ इनच्यारोंतैंभिन्न पंचमाकोईआश्रम होवैनहीं इहां गार्हस्थ्यम् इसशब्दकरिकै गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरणा ॥ और आचार्यकुलम् इसशब्दकरिकै ब्रह्मचर्यआश्रमका ग्रहणकरणा ॥ और मौनम् इसशब्दकरिकै संन्यासआश्रमका ग्रहणकरणा ॥ तिनच्यारोंआश्रमोंके मध्यविषे जिसजिसआश्रमके प्रति शास्त्रनैं जजेधर्म विधानकरेहैं तिसतिसआश्रमविषेस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष तिनातिनधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वक अनुष्ठानकरताहुआ शुभगतिकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसीप्रकारकेच्यारिआश्रमोंकूं वसिष्ठमुनिभी कथनकरताभयाहै ।। तहांवसिष्ठवचन ।। (चत्वारआश्रमाब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थपारिव्राजकाः) इति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ परिव्राजक यहच्यारिही आश्रमहोवैं हैं ।। इहां परिव्राजक इसशब्दकरिकै संन्यासीकाग्रहणकरणाइति ।। इसप्रकार श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रोंविषे जैसे च्यारिवर्णआश्रम कथनकरे हैं तैसे तिनच्यारिवर्णआश्रमोंके पृथक्पृथक्धर्मभी कथनकरे हैं ।। तैसे अज्ञानीपुरुषोंकेप्रति तिनवर्णआश्रमधर्मोंका यथायोग्यफलभी शास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ।। तहां मनुभगवान्नैंभी तिनवर्णआश्रमधर्मोंकाफल कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ।। श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठन्हिमानवः ॥ इहकीर्त्तिमवाप्नोति प्रेत्यचानुत्तमंसुखम्) ।। अर्थयह ।। श्रुतिस्मृतिकरिकैविधानकऱ्या जोवर्णआश्रमकाधर्म है ॥ तिसधर्मकूं अनुष्ठानकरताहुआ यहपुरुष इसलोकविषेतौ कीर्तिकूंप्राप्तहोवै है और मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकउत्तमसुखकूंप्राप्तहोवै है इति ।। सोधर्मकाफल आपस्तंबऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांआपस्तंबवचन ।। (सर्ववर्णानांस्वधर्मानुष्ठानेनपरमपरिमितंसुखं ततःपरिवृत्तौ कर्मफलशेषेणजातिंरूपंवर्णंबलंवृत्तंमेधांप्रज्ञांद्रव्याणिधर्मानुष्ठानमितिप्रतिपद्यंते) ।। अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारोंवर्णोंकूं आपणेआपणेधर्मकेअनुष्ठानकरिकै उत्कृष्टअपरिमितस्वर्गादिकसुख प्राप्तहोवै है ।। तिसस्वर्गादिकसुखकूंभोगिकै जबी तिन कर्मीपुरुषोंकी पुनःइसभूमिलोकविषेआवृत्तिहोवै है तबी बाकीरहेहुएकर्मशेषकरिकै तेकर्मीपुरुष इसलोकविषे जातिकूं तथारूपकूं तथावर्णकूं तथाबलकूं

कन्याहै ॥ कैसाहैसोधर्म वेदहै मूलजिसका ॥ याकारणतैंही सोधर्म सनातनहै ॥ १ ॥ तहां एकतौ वर्णधर्म होवैहै ॥ और दूसरा आश्रमधर्म होवैहै ॥और तीसरा वर्णआश्रमधर्म होवैहै ।। और चौथा गौणधर्म होवैहै ।। और पाँचवाँ नैमित्तिकधर्म होवैहै ।। २ ।। तहां एकब्राह्मणादिरूपवर्णमात्रकूं आश्रयकरिकै जोधर्म प्रवर्त्त होवैहै सोवर्णधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे उपनयनरूपधर्म ब्राह्मणादिरूपवर्णमात्रकूंआश्रयकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोउपनयनरूपधर्म वर्णधर्म कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और जोधर्म केवलआश्रममात्रकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै सोधर्म आश्रमधर्म कह्याजावैहै ।। जैसे भिक्षादंडादिरूपधर्म आश्रमकूंआश्रयकरिकैही प्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोभिक्षादंडादिरूपधर्म आश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ ४ ॥ औरजोधर्म वर्णकूंतथाआश्रमकूं आश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै सोधर्म वर्णाश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे मौंजादिकमेखलारूपधर्म वर्णकूं तथाआश्रमकूं आश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोमौंजादिकमेखलारूपधर्म वर्णाश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ ५ ॥ और जो धर्म किसीगुणकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै सोधर्म गौणधर्म कह्याजावैहै ।। जैसे राज्याभिषेककूंप्राप्तहुएक्षत्रियका प्रजावोंकापालनरूपधर्म गुणकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्त होवैहै ॥ यातैं सोप्रजाकापालनरूपधर्म गौणधर्म कह्याजावैहै ।। ६ ।। और जोधर्म केवल निमित्तमात्रकूंआश्रयकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै सोधर्म नैमित्तिकधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे पापकीनिवृत्तिवासतै कऱ्याजोप्रायश्चित्तरूपधर्महै सोधर्म पापरूपनिमित्तकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोप्रायश्चित्तरूपधर्म नैमित्तिकधर्म कह्याजावैहै इति ॥ ७ ॥ और हारीतऋषितौ च्यारिप्रकारकाधर्म कथनकरताभयाहै ॥ तहां हारीतवचन ॥ (अथाश्रमिणां पृथग्धर्मोविशेषधर्मःसमानधर्मःकृत्स्नधर्मश्चेति) अर्थयह ॥ आश्रमीपुरुषोंका एकतौ पृथक्धर्म होवैहै ॥ और दूसरा विशेषधर्म होवैहै ॥ और तीसरा समानधर्म होवैहै ॥ और चौथा कृत्स्नधर्म होवैहै॥ तहां जोधर्म एकही आश्रमविषे पृथक् पृथक् अनुष्ठानकऱ्याजावैहै सोधर्म पृथक् धर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंका स्वस्वधर्म है और जोधर्म आपणेआपणेआश्रमविशेषविषेही अनुष्ठानकऱ्याजावैहै सोधर्म विशेषधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इनच्यारिआश्रमियोंके आपणेधर्म हैं ॥ और जोधर्म च्यारिवर्णोंका तथाच्यारिआश्रमोंका समानधर्म है सोधर्म समानधर्म कह्याजावैहै ॥ तहां च्यारिवर्णोंकेसमानधर्मतौ महाभारतविषे यहकहेहैं ॥ तहां श्लोक ॥ (आनृशंस्यमहिंसाचाप्रमादःसंविभागिता ॥ श्राद्धकर्मातिथेयंचसत्यमक्रोधएवच ॥ १ ॥ स्वेषुदारेषुसंतोषःशौचंनित्यानसूयता ॥ आत्मज्ञानंतितिक्षाचधर्मःसाधारणोनृप ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ क्रूरभावतैंरहितपणा अहिंसा अप्रमाद भूतोंकेतांईअन्नादिकोंकाविभागदेणा श्राद्धकर्म गृहविषेप्राप्तहुएअतिथिकासन्मान सत्य अक्रोध स्वास्त्रियों विषेसंतोष शौच असूयातैंरहितपणा आत्मज्ञान तितिक्षा यह च्यारिवर्णोंके साधारण धर्म हैं इति ॥ और सर्वआश्रमोंकेसाधारणधर्मतौ पूर्व (शमोदमस्तपःशौचम्) इसश्लोककेव्याख्यानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ और सो

कर्महैं कैसे हैं तेकर्म स्वभावजहैं अर्थात् सत्त्वगुणहैगौणजिसविषेऐसाजोप्रधानभूतरजोगुणहै तिसरजोगुणकेस्वभावजन्यहैं इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ अब वैश्य शूद्र इनदोनोंके गुणस्वभावकृतकर्मोंकूं कथनकरै हैं ।

(मू. श्लो.) कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजम् ॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजम् ॥ ४४ ॥ कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यम् । वैश्यकर्म । स्वभावजम् । परिचर्यात्मकम् । कर्म । शूद्रस्य । अपि । स्वभावजम ॥ ४४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! कृषिगोवोंकारक्षणवाणिज्ययह स्वभावजन्य वैश्यकाकर्म है तथा शूद्रका द्विजातिपुरुषोंकाशुश्रूषारूप स्वभावजन्य कर्महै ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां व्रीहियवादिकअन्नोंकीउत्पत्तिवासतै जोभूमिकाविलेखनहै ताकानाम कृषिहै ॥ और गौआदिकपशुवोंकाजोपालनहै ताकानाम गोरक्ष्यहै ॥ और अन्नादिकपदार्थोंका क्रयविक्रयरूपजोव्यापारहै ताकानाम वाणिज्यहै ॥ और वृद्धिवासतैधनकाप्रयोगरूपजोकुसीदहै ताकुसीदकाभी इसवाणिज्यविषेही अंतर्भावजानणा ॥ यहतीनों वैश्यजातिकाकर्म है॥ कैसाहै सोकर्म स्वभावजहै अर्थात् तमोगुणहैगौणजिसविषे ऐसाजो प्रधानभूतरजोगुणहै तारजोगुणकेस्वभावजन्यहै इति ॥ अब शूद्रके गुणस्वभावकृतकर्मकूं कथनकरैं हैं (परिचर्यात्मकम्) इति तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकानाम द्विजातिहै ऐसेद्विजातिपुरुषोंकीशुश्रूषारूपजोकर्म है सोकर्म शूद्रजातिका स्वभावजन्यकर्म है अर्थात् रजोगुणहैगौणजिसविषे ऐसाजो प्रधानभूत तमोगुणहै तिसतमोगुणकेस्वभावजन्यहै इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (शमोदमस्तपःशौचम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंके स्वभावजन्य गौणनामाधर्म कथनकरे तिनगौणधर्मोंतैंभिन्न दूसरेभीधर्मशास्त्रोंविषेकथनकरे हैं ॥ तेधर्म भविष्यपुराणविषे यहकहे हैं ॥ तहांश्लोक ॥ (धर्मःश्रेयःसमुद्दिष्टंश्रेयोऽभ्युदयलक्षणम् ॥ सतुपंचविधःप्रोक्तोवेदमूलःसनातनः ॥ १ ॥ वर्णधर्मः स्मृतस्त्वेक आश्रमाणामतःपरम् ॥ वर्णाश्रमस्तृतीयस्तुगौणोनैमित्तिकस्तथा ॥ २ ॥ वर्णत्वमेकमाश्रित्ययोधर्मःसंप्रवर्त्तते ॥ वर्णधर्मःसउक्तस्तुयथोपनयनंनृप ॥ ३ ॥ यस्त्वाश्रमंसमाश्रित्यअधिकारःप्रवर्त्तते ॥ सखल्वाश्रमधर्मःस्याद्भिक्षादंडादिकोयथा ॥ ४ ॥ वर्णत्वमाश्रमत्वंचयोऽधिकृत्यप्रवर्त्तते ॥ सवर्णाश्रमधर्मस्तुमौंजाद्यामेखलायथा ॥ ५ ॥ योगुणेनप्रवर्त्ततगुणधर्मःसउच्यते ॥ यथामूर्द्धाभिषिक्तस्यप्रजानांपरिपालनम् ॥ ६ ॥ निमित्तमेकमाश्रित्ययोधर्मःसंप्रवर्त्तते ॥ नैमित्तिकःसविज्ञेयःप्रायश्चित्तविधिर्यथा ॥ ७ ॥) अब यथाक्रमतैं इनसप्तश्लोकोंकेअर्थ वर्णनकरैं हैं ॥ शास्त्रविहितधर्मही इसपुरुषकेश्रेयकासाधनहोणेतैं श्रेयरूप कथनकऱ्याहै ॥ सोश्रेय स्वर्गादिक अभ्युदयरूपहै ॥ इसप्रकारका श्रेयरूपधर्म शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं पंचप्रकारका कथन

मादिकधर्म जिसपुरुषविषे नहींपायेजावैंहैं सोपुरुष जातिकरिके ब्राह्मणहुआभी इनशमदमादिक धर्मोंकेअभावकरिकै शूद्ररूपही जानणेयोग्यहै ॥ इसीकारण तैंही महाभारतके आरण्यकपर्वविषे सर्पभावकूंप्राप्तहुए नहुषराजाकेप्रति युधिष्ठिरराजानैं यहवचन कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सत्यंदानंक्षमाशीलमानृशंस्यंतपोघृणा ॥ दृश्यंतेयत्रनागेंद्रसब्राह्मणइतिस्मृतः ॥ यत्रैतल्लक्ष्यतेसर्पवृत्तंसब्राह्मणः स्मृतः ॥ यत्रैतन्नभवेत्सर्पतंशूद्रमितिनिर्दिशेत्)॥ अर्थयह ॥ हेनागेंद्र । सत्य दान क्षमा शील क्रूरभावतैंरहितपणा तप दया यहसर्वधर्म जिसपुरुषविषे देखेजावैंहैं सोपुरुष ब्राह्मणहीजानणा ॥ हे सर्प ! यहसत्यादिकधर्म जिसपुरुषविषे नहींविद्यमानहैं तिसपुरुषकूं शूद्रहीजानणा इति ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ इसश्लोकविषेजेशमदमादिकधर्म कथनकरेहैं तेसर्वधर्म दैवीसंपत्‌रूपहैं सादैवीसंपत् पूर्वषोडशअध्यायविषे विस्तारतैंवर्णन करिआयेहैं ॥ साशमदमादिरूपदैवीसंपत् ब्राह्मणकूंतौ स्वभावसिद्धहै ॥ और क्षत्रियवैश्यादिकोंकूं नैमित्तिकहै ॥ यातैं इहांकिंचित्‌मात्रभी विरोधहोवैनहीं ॥ और ब्राह्मणके याजन अध्यापन प्रतिग्रह इत्यादिकअसाधारणधर्मतौ स्मृतियोंविषेप्रसिद्धही हैं इति ॥ ४२ ॥  ॥

अब क्षत्रियके गुणस्वभावकृतकर्मोंकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् ॥ दानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ॥ ४३ ॥ शौर्यम् । तेजः । धृतिः । दाक्ष्यम् । युद्धे । च । अपि । अपलायनम् । दानम् । ईश्वरभावः । च । क्षात्रम् । कर्म । स्वभावजम् ॥ ४३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! शौर्य तेज धृति दाक्ष्य तथा युद्धविषे भी अपलायन दान तथा ईश्वरभाव यहसर्व स्वभावजन्य क्षत्रियजातिकेविहित कर्म हैं ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां अत्यंतबलवान्‌पुरुषोंकेभी प्रहारकरणेविषेप्रवृत्तिरूप जोविक्रमहै ताकानाम शौर्यहै ॥ और अन्यशत्रुवोंकरिकैनहींपराभवतारूप जोप्रागल्भ्य ताकानाम तेजहै ॥ और महान्‌विपत्तिकेप्राप्तहुएभी देहइंद्रियरूप संघातका जोअव्याकुलीभावहै ताकानाम धृतिहै ॥ और शीघ्रउत्पन्नहुएकार्योंविषेभी व्यामोहतैंरहितहोइकैप्रवृत्तिरूप जोदक्षभावहै ताकानाम दाक्ष्यहै ॥ और युद्धविषे महान्‌शस्त्रोंकेप्रहारहुएभी तिसयुद्धतैंजोपीछेनहींहटणाहै ताकानाम अपलायनहै ॥ और संकोचतैंरहितहोइकै सुवर्ण गौ गृह अन्न भूमि इत्यादिकधनविषे आपणेममत्वका परित्यागकरिकै जोब्राह्मणादिकोंकेममत्वकाआपादनहै ताकानाम दानहै ॥ और प्रजाकेपालनकरणेवासतै आपणे भृत्यादिकोंकेसमीप आपणेप्रभुशक्तिकाजोप्रगटकरणाहै ताकानाम ईश्वरभावहै ॥ अथवा शास्त्रनिषिद्धमार्गविषेप्रवृत्तहोणेहारेदुष्टप्राणियोंकेनियमनकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम ईश्वरभावहै ॥ हे अर्जुन ! यह शौर्यतैंआदिलैके ईश्वरभावपर्यंत सर्वकर्म क्षत्रियजातिके शास्त्रविहित

अस्पृहाकहीजावैहै इति ॥ ९ ॥ यह दयातैंआदिलेकेअस्पृहापर्यंत अष्टगुणही गौतमऋषिनैं आत्माकेगुणरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ तहांगौतमवचन ॥ (अथाष्टावात्मगुणाः दयासर्वभूतेषुक्षांतिरनसूयाशौचमनायासोमंगलमकार्पण्यमस्पृहा इति ॥) अर्थयह ॥ सर्वभूतोंविषेदया क्षांति अनसूया शौच अनायास मंगल अकार्पण्य अस्पृहा यहअष्टआत्माकेगुणहैं इति ॥ इसीप्रकारकेसाधारणधर्म महाभारतविषेभीकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (सत्यंदमस्तपःशौचंसंतोषोह्रीःक्षमार्जवम् ॥ ज्ञानंशमोदयाध्यानमेषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ सत्यंभूतहितंप्रोक्तंमनसोदमनंदमः ॥ तपःस्वधर्मवर्तित्वं शौचंसंकरवर्जनम् ॥ २ ॥ संतोषोविषयत्यागोह्रीरकार्यनिवर्त्तनम् ॥ क्षमाद्वंद्वसहिष्णुत्वमार्जवंसमचित्तता ॥ ३ ॥ ज्ञानंतत्त्वार्थसंबोधःशमश्चित्तप्रशांतता ॥ दयाभूतहितैषित्वंध्यानंनिर्विषयंमनः (इति ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ सत्य दम तप शौच संतोष ह्री क्षमा आर्जव ज्ञान शम दया ध्यान यहसर्व ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंके साधारण सनातनधर्महैं ॥ १ ॥ अब तीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं तिनसत्यादिकोंकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ सर्वभूतोंकाजोहितकरणाहै ताकानाम सत्यहै ॥ और मनकाजोनिग्रहहै ताकानाम दमहै ॥ और आपणेधर्मविषेजो वर्त्तणाहै ताकानाम तपहै ॥ और वर्णसंकरकाजोपरित्यागहै ताकानाम शौचहै ॥ और विषयाकों जोपरित्यागहै ताकानाम संतोषहै ॥ और शास्त्रनिषिद्धकर्मतैंजानिवृत्तिहै ताकानामह्रीहै ॥ और शीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंकेसहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और समचित्तपणेकानाम आर्जवहै ॥ और तत्त्वअर्थकाजोसम्यक्बोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और चित्तकीजाप्रशांतताहै ताकानामशमहै ॥ और सर्वभूतोंकेहितकीजाइच्छाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयोंकीवासनातैं रहितजोमनहै ताकानाम ध्यानहै इति ॥ ४ ॥ इसप्रकारकेसाधारणधर्म देवलऋषिनैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (शौचंदानंतपःश्रद्धागुरुसेवाक्षमादया ॥ विज्ञानंविनयःसत्यमितिधर्मसमुच्चयः ॥ १ ॥ व्रतोपवासनियमैःशरीरोत्तापनंतपः ॥ प्रत्ययोधर्मकार्येषुतथाश्रद्धेत्युदाहृता ॥ २ ॥ नास्तिह्यश्रद्दधानस्यकर्मकृत्यंप्रयोजनम् ॥ यत्पुनर्वैदिकीनांचलौकिकीनांचसर्वशः ॥ ३ ॥ धारणंसर्वविद्यानांविज्ञानमितिकीर्त्यते ॥ विनयंद्विविधंप्राहुःशश्वद्दमशमावितिः ॥४॥) अर्थयह ॥ शौच दान तप श्रद्धा गुरुसेवा क्षमा दया विज्ञान विनय सत्य यहसाधारणधर्मोंकासमुच्चयहै इति ॥ तहां व्रतउपवासनियमोंकरिकै जोशरीरकाशोषणहै ताकानाम तपहै और धर्मकार्योंविषे जोचित्तकीसावधानताहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ जिसकारणतैं श्रद्धातैंरहितपुरुषकूं किसीभीकर्मकाफल प्राप्तहोतानहीं ॥ इसकारणतैं इसपुरुषनें जोजोकार्य कारणा सोश्रद्धापूर्वकहीकरणा ॥ और लौकिकसर्वविद्यावोंका तथावैदिकसर्वविद्यावोंका जोधारणहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ और शम दम यहदोप्रकारका विनय कह्याहै इति ॥ दूसरेसर्वधर्म पूर्व व्याख्यानकरिआयेहैं ॥ यातैं तिनधर्मोंकेप्रतिपादकवचन यहांलिखेनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहशम दमादिकधर्म जिसपुरुषविषे पायेजावैं हैं सोपुरुष जातिकरिकैशूद्रहुआभी इनशमदमादिकलक्षणोंकरिकै ब्राह्मणरूपही जानणेयोग्यहै ॥ और यहशमद

॥ तहांश्लोक ॥ (दयाक्षमानसूयाचशौचानायासमंगलम् ॥ अकार्पण्यमस्पृहत्वंसर्वसाधारण ॥निच ॥ १ ॥ परेवाबंधुवर्गेवामित्रेद्वेष्टरिवासदा ॥ आपन्नेरक्षितव्यंतु दयैषापरिकीर्त्तिता ॥ २ ॥ बाह्येवाध्यात्मिकेचैवदुःखेचोत्पादितेकचित् ॥ नकुप्यतिनवाहंतिसाक्षमापरिकीर्त्तिता ॥ ३ ॥ नगुणान्गुणिनोहंतिस्तौतिमंदगुणानपि ॥ नान्यदोषेषुरमतेसानसूयाप्रकीर्तिता ॥ ४ ॥ अभक्ष्यपरिहारश्चसंसर्गश्चाप्यनिर्गुणैः ॥ स्वधर्मेचव्यवस्थानंशौचमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ५ ॥ शरीरंपीड्यतेयेनसुशुभेनापि कर्मणा ॥ अत्यंततन्नकर्त्तव्यमनायासःसउच्यते ॥ ६ ॥ प्रशस्ताचरणंनित्यमप्रशस्तविसर्जनम् ॥ एतद्धिमंगलंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ७ ॥ स्तोकादपिप्रदातव्यमदीनेनांतरात्मना ॥ अहन्यहनियत्किंचिदकार्पण्यंहितत्स्मृतम् ॥ ८ ॥ यथोत्पन्नेनसंतोषःकर्त्तव्योह्यर्थवस्तुना ॥ परस्याचिंतयित्वार्थंसाऽस्पृहापारिकीर्तिता ॥ ॥ ९ ॥) अब यथाक्रमतैं इननवश्लोकोंकेअर्थकूं कथनकरैं हैं ।। दया १ क्षमा २ अनसूया ३ शौच४अनायास५मंगल६अकार्पण्य७अस्पृहा८यहअष्टधर्म च्यारिवर्णों के तथाच्यारिआश्रमों के साधारणधर्म हैं इति ॥ १ ॥ अब द्वितीयश्लोककरिकै दयाकास्वरूप कथनकरैं हैं ।। आपत्तिकूंप्राप्तहुआ जोकोई अन्यप्राणीहै अथवा आपणाबंधुवर्ग है अथवा आपणामित्रहै अथवाआपणाद्वेषकर्त्ताशत्रुहै तिनसर्वोंका तिसआपत्तितैं जोरक्षणकरणाहै ताकानाम दयाहै ।। २ ।। अब तृतीयश्लोककरिकै क्षमाकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ आपणेप्रारब्धकर्मकेवशतैं बाह्यआदिभौतिकदुःखकेप्राप्तहुए तथा आध्यात्मिकदुःखकेप्राप्तहुए तथातिनदुःखोंकेउत्पादकशत्रुआदिकोंकेप्राप्तहुए यहपुरुष जिसकरिकै क्रोधकूंनहींकरै है तथातिनोंकूंहनन नहींकरैहै सा क्षमाकहीजावैहै ॥ ३ ॥ अब चतुर्थश्लोकरिकै अनसूयाकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ यहपुरुष जिसकरिकै गुणीपुरुषोंकेगुणोंकूं नहींहननकरैहै तथा अन्यपुरुषकेअल्पगुणोंकीभी स्तुतिकरैहै तथा अन्यपुरुषोंकेदोषोंकेकथनविषे प्रीतिमान्नहींहोवैहै सा अनसूया कहीजावैहै ।। ४॥ अब पंचमश्लोककरिकै शौचकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ मांसमदिरादिक अभक्ष्य वस्तुओंका जोपरित्यागहै ॥ तथा विद्यादिकगणवालेपुरुषोंका जोसमागमहै ॥ तथा आपणेधर्मविषे जोस्थितहै इसकूं शौचकहैंहैं ।। ५ ।। अब षष्ठश्लोककरिकै अनायासकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ जिसशुभकर्मकरिकैभी शरीर अत्यंतपीडाकूंप्राप्तहोवै ऐसाशुभकर्मभी इसपुरुषनैं करणानहीं सो अनायास कह्याजावैहै ॥ ६ ॥ अब सप्तमश्लोककरिकै मंगलकास्वरूप कथनकरैं हैं ।। शास्त्रविहित श्रेष्ठआचरणका जोसर्वदाकरणाहै तथा शास्त्रनिषिद्धअश्रेष्ठआचरणका जोसर्वदा परित्यागहै इसीकूंही तत्त्ववेत्तामुनिजनोंनैं मंगल कह्याहै ॥ ७ ।। अब अष्टमश्लोककरिकै अकार्पण्यकास्वरूप कथनकरैं हैं ।। आपणेगृहविषे जेअन्नधनादिकपदार्थ अल्पभीहैं तिन अल्पपदार्थतैंभी दीनतातैंरहितमनकरिकै दिनदिनविषे अतिथिब्राह्मणोंकेताईं यत्किंचित्अन्नादिकपदार्थदेणे इसकूं अकार्पण्य कहैं हैं ॥ ८ ॥ अब नवमश्लोककरिकै अस्पृहाकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ परकेअर्थकूं नचिंतनकरिकै इसपुरुषोंनैं प्रारब्धवशतैंप्राप्तहुएधनादिकपदार्थोंकरिकै जोसंतोषकरीताहै ।। सा

शौचम् । क्षांतिः । आर्जवम् । एव । च । ज्ञानम् । विज्ञानम् । आस्तिक्यम् । ब्रह्मकर्म । स्वभावजम् ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! शम दम तप शौच क्षांति आर्जव तथा ज्ञान विज्ञान आस्तिक्य यहनव स्वभावजन्य ब्राह्मणकेकर्म हैं ॥ ४२ ॥
इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां अंतःकरणकाजोनिग्रहहै ताकानाम शमहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यकरणोंकाजोनिग्रहहै ताकानाम दमहै ॥ और पूर्वसप्तदशअध्यायविषे कथनकरया जो शारीर वाचिक मानस यहतीनप्रकारकातपहै सोतपही इहां तपशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और शौच बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां मृत्तिकाजलकरिकै जो शरीरकीशुद्धिहै ताकूं बाह्यशौचकहैं हैं ॥ और अंतःकरणकेशुद्धिकूं अंतरशौच कहैं हैं ॥ सोदोनोंप्रकारकाहीशौच इहां शौचशब्दकरिकै ग्रहणकरणा ॥ और कठोरवचनोंकरिकैनिरादरकरेहुएभी तथादंडादिकोंकरिकैताडनकरेहुएभी इसपुरुषकेमनविषे जोक्रोधादिकविकारों तैंरहितपणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ ताक्षमाकाही इहां क्षांतिशब्दकरिकैग्रहणकरणा और कुटिलतातैंरहितपणेकानाम आर्जवहै ॥ और षट्अंगोंसहितवेदकूं तथा तावेदकेअर्थकूं विषयकरणेहारी जो अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और कर्मकांडविषे यज्ञादिककर्मोंकाजोकौशलहै तथाज्ञानकांडविषे ब्रह्मआत्माकेएकताकाजो अनुभवहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ और पूर्वकथनकरीजासात्त्विकीश्रद्धाहै ताकानाम आस्तिक्यहै ॥ इसप्रकारके शम दम तप शौच क्षांति आर्जव ज्ञान विज्ञान आस्तिक्य यह सत्त्वगुणके स्वभावकृत नवधर्म ब्रह्मकर्म कहेजावैं हैं अर्थात् ब्राह्मणजातिकेकर्म कहेजावैं हैं ॥ यद्यपि सात्त्विकअवस्थाविषे ब्राह्मणादिकच्यारोंहीवर्णके यहशमदमादिकनवधर्म संभवहोइसकैंहैं ॥ तथापि यहशमदमादिकनवधर्म बाहुल्यताकरिकै ब्राह्मणविषेहीहोवैं हैं ॥ जिसकारणतैं सोब्राह्मण सत्त्वस्वभाववालाही है ॥ और अन्यक्षत्रियादिकोंविषेतो तिससत्त्वगुणकीवृद्धिकेवशतैं तेशमदमादिकधर्म कदाचित्‌ही उत्पन्नहोवैं हैं इसीकारणतैंही अन्यशास्त्रविषे यहशमदमादिकधर्म ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंकेसाधारणधर्मरूपकरिकै कथनकरेहैं ॥ तहां शमदमादिकधर्म च्यारिवर्णोंके साधारणधर्म हैं इसवार्त्ताकूं विष्णुभगवानभी कहताभयाहै ॥ तहांश्लोक ॥ (क्षमासत्यंदमःशौचंदानमिंद्रियसंयमः ॥ अहिंसागुरुशुश्रूषातीर्थानुसरणंदया ॥ १ ॥ आर्जवंलोभशून्यत्वंदेवब्राह्मणपूजनम् ॥ अनभ्यसूयाचतथाधर्मःसामान्यउच्यते ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ क्षमा सत्य दम शौच दान इंद्रियोंकासंयम अहिंसा गुरुकीशुश्रूषा तीर्थोंकासेवन दया आर्जव लोभतैंरहितपणा देवताब्राह्मणोंकापूजन असूयादोषतैंरहितपणा यहसर्वधर्म सामान्यधर्म कहेजावैं हैं अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमोंके साधारणधर्म कहेजावैं हैं इति ॥ इसप्रकारकेसाधारणधर्मोंकूं बृहस्पतिभी कथनकरताभयाहै ॥

यहतीनोंधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनों के साधारणधर्म हैं ॥ और कृषि वाणिज्य पशुवोंकापालन तथावृद्धिकेवास्तै धनकाप्रयोगरूपकुसीद यहकर्म वैश्यकेअसाधारणहैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकीसेवाकरणी येशूद्रकाकर्म है इति ॥ इसप्रकारके च्यारिवर्णों केभिन्नभिन्नधर्म आपस्तंबऋषिनैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांआपस्तंबवचन ॥ (चत्वारोवर्णाब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रास्तेषांपूर्वपूर्वोजन्मतःश्रेयान् स्वकर्मब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनंयज्ञोयाजनंदानंप्रतिग्रहणम् ॥ एतान्येवक्षत्रियस्याध्यापनयाजनप्रतिग्रहणानीति परिहार्य्यं युद्धदंडाधिकानि क्षत्रियवद्वैश्यस्यदंडयुद्धवर्जंकृषिगोरक्षवाणिज्याधिकम् परिचर्याशूद्रस्येतरेषांवर्णानाम् इति ॥) अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण कहेजावैं हैं तिनच्यारिवर्णों केमध्यविषे उत्तरउत्तरवर्णकीअपेक्षाकररिकै पूर्वपूर्ववर्ण जन्मतैंश्रेष्ठहोवैंहै ॥ जैसे क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनतीनोंकीअपेक्षाकररिकै ब्राह्मणश्रेष्ठहै ॥ और वैश्य शूद्र इनदोनोंकी अपेक्षाकररिकै क्षत्रिय श्रेष्ठहै ॥ और शूद्रकीअपेक्षाकररिकै वैश्य श्रेष्ठहै ॥ तहां अध्ययन अध्यापन यज्ञ याजन दान प्रतिग्रह यहषट्कर्म ब्राह्मणकेहोवैं हैं ॥ और इनषट्कर्मोंविषे अध्यापन याजन प्रतिग्रह इनतीनोंकूंछोडिकै अध्ययन यज्ञ दान यहतीनोंकर्म क्षत्रियकेहोवैं हैं ॥ और युद्ध तथादुष्टपुरुषोंकूंदंड यहदोनोंकर्म क्षत्रियके ब्राह्मणतैं अधिकहोवैं हैं ॥ और क्षत्रियकीन्याईं वैश्यकेभी युद्धदंडकूंछोडिकै अध्ययन यज्ञ दान यहतीनकर्म साधारणहोवैं हैं ॥ और कृषि गौआदिकपशुवोंकापालन वाणिज्य यहकर्म वैश्यके क्षत्रियतैंअधिकहोवैंहैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकीसेवाकरणी यह शूद्रकाकर्म है इति ॥ इसीप्रकारके च्यारिवर्णों केभिन्नभिन्नधर्म मनुभगवान्नैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (अध्यापनमध्ययनंयजनंयाजनंतथा ॥ दानंप्रतिग्रहंचैवब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ १ ॥ प्रजानांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच ॥ विषयेष्वप्रसक्तिंचक्षत्रियस्यसमादिशत् ॥ २ ॥ पशूनांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच ॥ वणिक्पथंकुसीदंचवैश्यस्यकृषिमेवच ॥ ३ ॥ एकमेवतुशूद्रस्यप्रभुःकर्मसमादिशत् ॥ एतेषामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया ॥ ४ ॥) ॥ अर्थयह ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सर्वज्ञपरमेश्वर ब्राह्मणों के अध्ययन अध्यापन यजन याजन दान प्रतिग्रह यहषट्कर्म कथनकरताभयाहै ॥ और प्रजाकारक्षण दान यज्ञ अध्ययन विषयोंविषेनहींआसक्ति इत्यादिकधर्म क्षत्रियके कहताभयाहै ॥ और पशुवोंकारक्षण दान यज्ञ वेदोंकाअध्ययन वाणिज्य वृद्धिवास्तैधनका प्रयोगरूपकुसीद कृषि इत्यादिकधर्म वैश्यकेकहताभयाहै ॥ और असूयातैंरहितहोइकै ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीशुश्रूषाकरणी यहएककर्म शूद्रका कहताभयाहै इति ॥ इसप्रकारतैं ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णों केकर्म सत्त्वादिकगुणों केभेदकररिकै भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ तहां प्रथम ब्राह्मणके स्वाभाविकगुणकृतकर्मोंकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) शमोदमस्तपः शौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ ४२ ॥ शमः[1] । दमः[2] । तपः[3] ।

ऐसेस्वभावप्रभवगुणोंकरिकै तेच्यारवर्णों केकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ तहां धर्मोंकाप्रतिपादक जोशास्त्रहै सोशास्त्रभी इसपुरुषकेस्वभावकीअपेक्षा अवश्य करैहै ॥ यातैं तेच्यारिवर्णोंकेकर्म शास्त्रकारिकै भिन्नभिन्नकरेहुएभी तिनस्वभावप्रभवगुणोंकरिकै भिन्नभिन्नकरेहुएहैं इसप्रकारतैंकहेजावैंहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्र पुरुषकेसंस्काररूपस्वभावकीअपेक्षा अवश्यकरैहै ॥ इसकारणतैंही शास्त्रकारोंनैं यहन्याय्य कथनकऱ्याहै ॥ यज्ञादिककर्मोंकेविधानकरणेहारेजे विधिवचनहैं तिनवचनोंकी अधिकारीपुरुषकीशक्ति सहकारीहोवैंहै इति ॥ इसप्रकार स्वभावप्रभवगुणोंकरिकै ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ यहवार्त्ता गौतमऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांगौतमवचन ॥ (द्विजातीनामध्ययनमिज्यादानम् ब्राह्मणस्याधिकाःप्रवचनयाजनप्रतिग्रहाः पूर्वेषुनियमस्तुराज्ञोऽधिकंरक्षणं सर्वभूतानांन्याय्यदंडत्वम् वैश्यस्याधिकंकृषिवणिक्पशुपाल्यंकुसीदंच शूद्रश्चतुर्थोवर्णएकजातिस्तस्यापिसत्यमक्रोधः शौचमाचमनार्थपाणिपादप्रक्षालनमेवैकश्राद्ध कर्मभृत्यभरणंस्वदारवृत्तिःपरिचर्योत्तरेषामिति) ।। अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकानाम द्विजातिहै तिन द्विजातिपुरुषोंकातौ वेदोंकाअध्ययन अग्निहोत्रादिककर्म दान यह तीनों साधारणधर्महै ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरावणा तथायज्ञकरावणा तथाप्रतिग्रहलेणा यहतीनोंधर्म ब्राह्मणकेअधिकहैं ।। क्षत्रिय वैश्यके यहतीनोंधर्म हैंनहीं ।। और पूर्वकथनकरेजे अध्ययन इज्या दान यहतीनधर्महैं तिनतीनोंधर्मोंकीअवश्यकर्त्तव्यता तथासर्वभूतोंकारक्षण तथादुष्टप्राणियोंकूं नीतिपूर्वकदंडकरणा यहधर्म क्षत्रियके अधिकहैं और कृषि वाणिज्य गौआदिकपशुवोंकापालन तथावृद्धिकेवासतै धनकाप्रयोगरूपकुसीद यहधर्म वैश्यके अधिकहैं ।। और एकजन्मवालाजो शूद्रहै तिसशूद्रकेतौ सत्य अक्रोध शौच आचमनकेवासतैपाणिपादोंकाप्रक्षालन एकश्राद्धकर्म भृत्योंकाभरण स्वदारवृत्ति तीनवर्णोंकीसेवा इत्यादिकधर्म हैं इति ।। इसगौतमऋषिकेवचनविषे ब्राह्मणादिकवर्णोंके साधारणधर्म तथाअसाधारणधर्म कथनकरे हैं ।। इसीप्रकारके च्यारिवर्णों केधर्म वसिष्ठमुनिनैंभी कथनकरेहैं ।। तहांवसिष्ठवचन ॥ (षट्कर्माणिब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनंयज्ञोयाजनंदानंप्रतिग्रहश्चेति त्रीणिराजन्यस्याध्ययनंयज्ञोदानंच शस्त्रेणचप्रजापालनस्वधर्मस्तेनजीवेत् एतान्येवत्रीणिवैश्यस्यकृषिवणिक्पशुपाल्यंकुसीदंच तेषांपरिचर्याशूद्रस्यइति) ।। अर्थयह ॥ आप वेदोंकाअध्ययनकरणा ॥ १ ॥ तथा दूसरेपुत्रशिष्यादिकोंकेप्रति वेदोंकाअध्ययनकरावणा ॥ २ ॥ तथा आप यज्ञकरणा ॥ ३ ॥ तथा दूसरेयजमानकेप्रति ऋत्विक्होइकै यज्ञकरावणा ॥ ४ ॥ तथा आप दानदेणा ॥ ५ ॥ दूसरेतैं दानलेणा ॥ ६ ॥ यहषट्कर्म ब्राह्मणकेहीहोवैं हैं ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरणा तथायज्ञकरणा तथादानदेणा यहतीनकर्म क्षत्रियकेहोवैं हैं ॥ यहतीनोंकर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनोंके साधारणहैं ॥ और शस्त्रकरिकैप्रजाकापालनकरणा यह क्षत्रियका असाधारण स्वधर्महै ॥ इसअसाधारणधर्मकरिकै सोक्षत्रिय आपणाजीवनकरै ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरणा तथायज्ञकरणा तथादानकरणा यहपूर्वउक्ततीनोंकर्म वैश्यकेभीहैं ॥ परंतु

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण कहेजावैहैं ॥ तिनच्यारिवर्णोंविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णतौ द्विजाति कहेजावैहैं ॥ तहां दोमातापितातैं जिस काजन्महोवै ताकूं द्विजाति कहे हैं तथाद्विजकहैं हैं ॥ तहां इनब्राह्मणादिकतीनवर्णोंका प्रथमजन्मतौ लोकप्रसिद्धपितामातातैंहोवैहै ॥ और दूसराजन्मतौ मौंजिबंधनकर्मविषेहोवैहै ॥ तहांतिसद्वितीयजन्मविषे इनब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकी सावित्री माताहोवैहै ॥ और उपदेशकर्त्ताआचार्य पिताहोवैहै इति ॥ इसप्रकार उत्पत्तिकेस्थानविशेषतैंभी तिनच्यारिवर्णोंका विभागही सिद्धहोवैहै ॥ तहां श्रुति ॥ (ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रोअजायत) इति ॥ अर्थयह ॥ इसपरमेश्वरकेमुखस्थानतैं ब्राह्मण उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ और बाहुस्थानतैं क्षत्रिय उत्पन्नहोतेभयेहैं ।। और ऊरुस्थानतैं वैश्य उत्पन्नहोतेभयेहैं ।। और दोनोंपादोंतैं शूद्र उत्पन्नहोतेभयेहैं इति ॥ इसप्रकारका वर्णोंकाविभाग अन्यश्रुतिविषेभीकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (गायत्र्याब्राह्मणमसृजत त्रिष्टुभाराजन्यम् जगत्यावैश्यं नकेनचिच्छंदसाशूद्रमिति ॥) अर्थयह ॥ परमेश्वर गायत्रीनामाछंदकारिकै ब्राह्मणकूं उत्पन्नकरताभया और त्रिष्टुभ्नामा छन्दकरिकै क्षत्रियकूं उत्पन्नकरताभया ॥ और जगतीनामाछंदकारिकै वैश्यकूं उत्पन्नकरताभया ॥ और शूद्रकूं किसीभीछंदकरिकै नहींउत्पन्नकरताभया इति ॥ और (शूद्रश्चतुर्थोवर्णएकजातिः ॥) अर्थयह ॥ ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीअपेक्षाकरिकै शूद्र चतुर्थवर्णकह्याजावैहै सोशूद्रएकहीजन्मवालाहोवैहै द्वितीयजन्मवालाहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकारतैं गौतमऋषिभी तिनच्यारि वर्णोंकेविभागकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकारके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारि वर्णोंके कर्म परस्पर भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ शंका—हेभगवन् ! तिनच्यारिवर्णोंकेकर्म किनोंकरिकै भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिनकर्मोंकेभिन्नभिन्नपणेविषे निमित्तकूं कथनकरैं हैं (स्वभावप्रभवैर्गुणैः) इति। हेअर्जुन ! ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिकरूपस्वभावोंका प्रभव कहिये हेतुभूत जेसत्त्वादिकगुणहैं तिनसत्त्वादिकगुणोंकरिकैही तेच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां ब्राह्मणस्वभावकातौ प्रशांतरूपहोणेतैं सत्त्वगुणही हेतुभूतहै ॥ और क्षत्रियस्वभावकातौ ईश्वरस्वभावालाहोणेतैं सत्त्वउपसर्जनरजोगुणही हेतुरूपहै ॥ और वैश्यस्वभावकातौ इच्छास्वभाववालाहोणेतैं तमउपसर्जनरजोगुणही हेतुरूपहै ॥ और शूद्रस्वभावकातौ मूढस्वभाववालाहोणेतैं रजउपसर्जनतमोगुणही हेतुरूपहै ॥ इहां उपसर्जननाम गौणकाहै इति ॥ अथवा मायानामप्रकृतिकानाम स्वभावहै ॥ तिसमायारूपउपादानकारणतैं प्रभव कहिये उत्पत्तिहै जिनगुणोंकी तिनसत्त्वादिकगुणोंकानाम स्वभावप्रभवगुणहै ॥ ऐसेस्वभावप्रभवगुणोंकारिकै तेच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ अथवा जोपूर्वजन्मकासंस्कार इसवर्त्तमानजन्मविषे आपणेफलदेणेकीअभिमुखताकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआहै तासंस्कारकानाम स्वभावहै ॥ सोसंस्काररूपस्वभाव निमित्तरूपकारिकैहैकारण जिनगुणोंका तिनोंकानाम स्वभावप्रभवगुणहै ॥

तहां सत्त्व रज तम यहतीनगुणात्मक क्रियाकारकफलस्वरूप सर्वहीसंसार मिथ्याज्ञानकरिकैकल्पित अनर्थरूपही है ॥ यह अर्थ पूर्वचतुर्दशअध्याय विषे कथनकऱ्याथा सोपूर्वउक्तअर्थ इहांश्रीभगवान्नैं उपसंहारकऱ्या ॥ और पूर्वपंचदशअध्यायविषेतौ वृक्षरूपकल्पनाकरिकै तिसीअनर्थरूप संसारकूं कथनकरिकै (अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥ ततःपदं तत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गतानानिवर्त्तंतिभूयः) इसश्लोककरिकै विषयोंविषे वैराग्यरूप असंग शस्त्रकरिकै तिससंसारवृक्षका छेदनकरिकै इस अधिकारीपुरुषनैं परमात्मारूपपद अन्वेषणकरणेयोग्यहै ॥ यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ तहां सर्वसंसारकूं त्रिगुणात्मकहोणेतैं तिसत्रिगुणात्मकसंसारवृक्षका कैसेंछेदनहोवैगा ॥ और जिसअसंगशस्त्रकरिकै इससंसार वृक्षका छेदनहोवैहै ॥ तिसअसंगशस्त्र कीप्राप्तिही महादुर्घटहै ॥ इसप्रकारकीशंकाकेप्राप्तहुए आपणेआपणे अधिकारके अनुसार वेदभगवान्नैं विधानकरेजे वर्णआश्रमके धर्म हैं तिनधर्मोंकरि कैप्रसन्नहुएपरमेश्वरतैं इसअधिकारीपुरुषकूं तिस असंगशस्त्रकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअर्थकेकहणेवासतै ॥ तथा इतनाही सर्ववेदोंकाअर्थ है सोअर्थ परमपुरुषार्थकी इच्छावान् अधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैअनुष्ठानकरणेयोग्यहै इसप्रकारतैं इसगीताशास्त्रविषे सर्ववेदोंकेअर्थका उपसंहार करणेयोग्यहै ॥ इसअर्थकेकहणेवासतै इसतैंउत्तरप्रकरणकाआरंभकरैं है तहांप्रथम सूत्ररूपश्लोक कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ब्राह्मणक्षत्रियविशांशूद्राणांचपरंतप ॥ कर्माणिप्रविभक्तानिस्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् । शूद्राणाम् । च । परंतप । कर्माणि । प्रविभक्तानि । स्वभावप्रभवैः । गुणैः ॥ ४१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपरं तप ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंके तैथा शूद्रोंके कर्म स्वभावजन्य गुणोंकरिकै पृथक् पृथक् व्यवस्थितहैं तिनोंकूं तूं श्रवणकर ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेपरंतप ! अर्थात् हेअंतरबाह्यशत्रुवोंकूं संतापकीप्राप्तिकरणेहारा अर्जुन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनोंके तथाशूद्रोंके कर्म परस्पर भिन्नभिन्नहुए स्थितहैं ॥ इहां (ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्) इनतीनोंपदोंका जोसमासकऱ्याहै सो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनोंवर्णोंविषे द्विजपणेकरिकै वेदोंकाअध्ययन अग्निहोत्र इत्यादिक तुल्यधर्मोंके कथनकरणेवासतै और (शूद्राणाम्) इसवचनकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंतैं शूद्रोंकाजो पृथक् कथनकऱ्याहै सो तिन शूद्रोंविषे एकजातिपणेकरिकै वेदकेअनधिकारीपणेकेजनावणेवासतै है इति ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां वसिष्ठवचन ॥ (चत्वारोवर्णाब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रास्तेषांत्रयोवर्णाद्विजातयोब्राह्मणक्षत्रियवैश्यास्तेषांमातुरग्रेद्विजननं द्वितीयंमौंजिबंधने अत्रास्यमातासावित्री पितात्वाचार्यउच्यते) इति ॥ अर्थयह ॥

सुखं प्रथमआरंभविषे तथा परिणामविषे बुद्धिकूं मोहकरणेहाराहै तथा निद्राआलस्यप्रमादतैंउत्पन्नहुआहै सोसुखं तामस कह्याहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोसुख प्रथमआरंभविषे तथापरिणामविषे बुद्धिकूं मोहकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा जोसुख निद्रा आलस्य प्रमाद इनतीनोंतैंही उत्पन्नहुआहै ॥ तहां निद्रा आलस्य यहदोनोंतौ प्रसिद्धही हैं ॥ और कर्त्तव्यअर्थकेनिश्चयतैंविना जोकेवल मनोराज्यमात्रहै ताकानाम प्रमादहै ।। ऐसे निद्राआलस्यप्रमादतैं जो सुख उत्पन्नहुआहै ॥ जोसुख सात्त्विकसुखकीन्याईं आत्मविषयकबुद्धिकेप्रसादतैंभी जन्यनहीं है ॥ तथा राजससुखकीन्याईं जोसुखविषयइंद्रियकेसंयोगतैंभी जन्यनहीं है ॥ ऐसानिद्राआलस्यप्रमादजन्यसुख शिष्टपुरुषोंनैं तामससुख कथनकऱ्याहै इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ अब पूर्व सात्त्विक राजस तामस इसत्रिविधपणे करिकेनहींकथनकरेहुएभीपदार्थोंका संग्रहकरावतेहुए श्रीभगवान् इसपूर्वउक्तप्रकारकेअर्थकूं उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नतदस्तिपृथिव्यांवादिविदेवेषुवापुनः ॥ सत्त्वंप्रकृतिजैर्मुक्तंयदेभिःस्यात्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ न । तत् । अस्ति । पृथिव्याम् । वा । दिवि । देवेषु । वा । पुनः । सत्त्वम् । प्रकृतिजैः । मुक्तम् । यत् । एभिः । स्यात् । त्रिभिः । गुणैः ॥ ४० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जो पदार्थ प्रकृतिजन्य इनपूर्वउक्त तीनं गुणोंकरिकै रहित होवै सोपदार्थ इसंपृथिवीविषे अथवा स्वर्गविषे देवतावोंविषे नहीं विद्यमानहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकीसाम्यअवस्थारूप जाप्रकृतिहै तिसप्रकृतितैं जन्य जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं अर्थात् तिसप्रकृतितैं वैषम्यअवस्थाकूंप्राप्तहुए जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ तहां सत्त्व रज तम यहतीनगुणरूपही प्रकृतिहोवै है ॥ यातैं तिनगुणोंविषे साक्षात्प्रकृतिजन्यत्व संभवतानहीं किंतु तिसगुणोंकीसाम्यअवस्थारूपप्रकृतितैं जोतिनसत्त्वादिकगुणोंकीवैषम्यअवस्थाहै सावैषम्यअवस्थाही तिनगुणोंकीउत्पत्तिहै ॥ अथवा इहां प्रकृतिशब्द करिकै अनिर्वचनीयमायाकाग्रहणकरणा ॥ तिसमायारूपप्रकृतिकरिकै जन्य कहिये कल्पित जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ अथवा प्रकृतिशब्दकरिकै जन्मांतरके धर्मअधर्मकेसंस्कारोंकाग्रहणकरणा ॥ तिससंस्काररूपप्रकृतितैंजन्य जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ ऐसेप्रकृतिजन्य तथाबंधकेहेतुरूप सत्त्वादिकतीनगुणोंकरिकै रहित जोप्राणीरूप वाअप्राणीरूप सत्त्वकहिये पदार्थ होवै सोप्राणीरूप वाअप्राणीरूप पदार्थ इसपृथिवीविषेस्थित मनुष्यादिकोंविषे तथास्वर्गविषेस्थित देवतावोंविषे हैनहीं अर्थात् किसीभीलोकविषे सत्त्वादिकतीनगुणोंतैंरहित कोईभीअनात्मवस्तु हैनहीं ॥ सर्वहीअनात्मवस्तु तीनगुणोंकरिकैयुक्तहैं इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥

इति ॥ इहां केईक विद्वान्पुरुष (सुखंत्विदानीम्) इसश्लोकका यहअर्थकरैंहैं ॥ यहपुरुष पुनःपुनःसेवनरूपअभ्यासतैं जिस सात्त्विकसुखविषे वा राजससुखविषे वा तामससुखविषे रतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसरतिकरिकै यहपुरुष पुत्रशोकादिरूपदुःखकेभी अवसानरूपअंतकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम सुखहै सोसुख सत्त्वादिक गुणोंकेभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तिसत्रिविधसुखकूं तूं अबी श्रवणकर ॥ इसप्रकार तत् इसपदकाअध्याहारकरिकै संपूर्णश्लोककाअन्वयकऱ्याहै ॥ तहां इसश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकैतौ सामान्यतैंसुखमात्रकालक्षणकथनकऱ्याहै ॥ और इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै तिससुखकेत्रिविधपणेकेकथनकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ और (यत्तदग्रेविषमिव) इसश्लोककरिकै सात्त्विकसुखकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ श्रीभाष्यकारोंकाभी इसीप्रकारकाअभिप्रायहै इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥

अब राजससुखकास्वरूप वर्णनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ॥ परिणामेविषमिवतत्सुखंराजसंस्मृतम् ॥ ३८ ॥ विषयेंद्रियसंयोगात् । यत् । तत् । अग्रे । अमृतोपमम् । परिणामे । विषम् । इव । तत् । सुखम् । राजसम् । स्मृतम् ॥ ३८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! जो सुख विषयइंद्रियकेसंयोगतैंजन्यहै तथाप्रथमआरंभविषे अमृतकेसमानहै तथापरिणामविषे विषके तुल्यहै सो सुख राजस कह्याहै ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोसुख शब्दादिकविषयोंके तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंके संबंधतैंहीजन्यहै ॥ पूर्वउक्त आत्मविषयक बुद्धिकेप्रसादतैं जोसुख जन्यहैनहीं ॥ तथा जोसुख प्रथमआरंभविषे मनइंद्रियोंकेसंयमादिरूपक्लेशकेअभावतैं भोक्तापुरुषकूं अमृतकेसमानहोवैहै तथा जोसुख परिणामकालविषे तिसभोक्तापुरुषकूं इसलोककेदुःखोंका तथापरलोककेदुःखोंका प्रापकहोणेतैं विषकेसमानहै अर्थात् जैसे मरणकासाधनरूपविष लोकोंकूं प्रतिकूलहोवैहै तैसे जोविषयसुखपरिणामकालविषे तिसभोक्तापुरुषकूं अत्यंतप्रतिकूलहोवैहै ऐसाअत्यंतप्रसिद्ध जोस्रक्चंदनवनितासंगादिजन्य विषयसुखहै सोविषयजन्यसुख शिष्टपुरुषोंनैं राजस सुख कह्याहै इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ अब तामस सुखकास्वरूप वर्णनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) यदग्रेचानुबंधेचसुखंमोहनमात्मनः ॥ निद्रालस्यप्रमादोत्थंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ यत् । अग्रे । च । अनुबंधे । च । सुखम् । मोहनम् । आत्मनः ॥ निद्रालस्यप्रमादोत्थम् । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ ३९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जो

गकरणेयोग्यहै यहसुख ग्रहणकरणेयोग्यहै इसप्रकारकेविवेकवासतै तूं अन्यसंकल्पोंकापरित्यागकरिकै ताकेश्रवणविषे आपणेमनकूंस्थिरकर ॥ इहां (हे भरतर्षभ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसअर्जुनविषे मनकेस्थिरताकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ इसप्रकार अर्द्धश्लोककरिकै तिससुखकेत्रिविधपणेकेकथनकी प्रतिज्ञाकरी ॥ अब (अभ्यासाद्रमतेयत्र) इत्यादिक सार्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् प्रथम सात्विकसुखकास्वरूप वर्णन करैं हैं हे अर्जुन ! यह यमनियमादिक साधनसंपन्न अधिकारीपुरुष जिससमाधिसुखविषे अभ्यासतैं रमणकरैहै अर्थात् अत्यंतपरिचयतैं परितृप्तहोवैहै जैसे विषयजन्यसुखविषे यहपुरुष शीघ्रही तृप्तहोवैहै तैसे जिससमाधिसुखविषे यहअधिकारीपुरुष शीघ्रही परितृप्तहोतानहीं किंतु निरंतर दीर्घकाल सत्कारपूर्वकसेवनकरेहुए अत्यंतदृढपरिचयरूप अभ्यासतैंही परितृप्तहोवैहै ॥ तथा जिससमाधिसुखविषे रमणकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष सर्वदुःखोंकेअवसानरूपअंतकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे विषयजन्यसुखकेअंतविषे यहपुरुष महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैहै तैसे जिससुखकेअंतविषे दुःखकीप्राप्तिहोती नहीं किंतु सर्वदुःखोंकापरिअवसानरूपअंतही होवैहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ अब (दुःखांतंचनिगच्छति) इसवचनकेअर्थकूंस्पष्टकरिकैवर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यत्तदग्रेविषमिवपरिणामेऽमृतोपमम् ॥ तत्सुखंसात्त्विकंप्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ यत् । तत् । अग्रे । विषम् । इव । परिणामे । अमृतोपमम् । तत् । सुखम् । सात्त्विकम् । प्रोक्तम् । आत्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! जो सुख प्रथमप्रारंभविषे विषकी न्याई होवैहै तथा परिणामविषे अमृतकेतुल्यहोवैहै तथा आत्मविषयकबुद्धिके प्रसादतैंजन्यहोवैहै सो सुख योगीपुरुषोंनैं सात्त्विक कह्याहै ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोसमाधिसुख अग्रेविषकीन्याईहोवैहै अर्थात् ज्ञानवैराग्यकरिकै ध्यानसमाधिकेआरंभकालविषे अत्यंतआयासकरिकैसाध्यहोणेतैं प्रसिद्ध विषकीन्याई जोसुख द्वेषविशेषकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा जोसुख परिणामविषे अमृतकेतुल्यहै अर्थात् तिसज्ञानवैराग्यकेपरिपाकविषे जोसुख अमृतकी न्याई अत्यंतप्रीतिकाविषयहोवैहै ॥ तथा जोसुख आत्मबुद्धिप्रसादजन्यहै ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ताकानाम आत्मबुद्धिहै ॥ ताआत्मबुद्धिकाजो प्रसादहै अर्थात् निद्राआलस्यादिकदोषोंतैंरहितहोइकै जो स्वस्थतारूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम आत्मबुद्धिप्रसादहै ॥ ऐसेआत्मविषयकबुद्धिके प्रसादतैं जोसुख उत्पन्नहोवैहै ॥ राजससुखकीन्याई जोसुख विषयइंद्रियकेसंयोगतैंजन्यहैनहीं ॥ तथा तामससुखकीन्याई जोसुख निद्राआलस्यादिकोंकरिकैभी जन्यहैनहीं ॥ इसप्रकारका अनात्मबुद्धिकीनिवृत्तिकरिकै आत्मविषयकबुद्धिकेप्रसादतैंजन्य जोसमाधिकासुखहै सोसुख योगीपुरुषोंनैं सात्त्विकसुख कह्याहै

संपादन करणेका निश्चयकरतानहीं ॥ हेपार्थ ! इसप्रकारकी साधृति राजसीधृति कहीजावैहै ॥ इहां यज्ञादिककर्मोंजन्यपुण्यरूपअपूर्वकानाम धर्महै ॥ और विषयजन्य सुखका नाम कामहै ॥ और धनादिकपदार्थोंकानाम अर्थहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ अब तामसधृतिकास्वरूववर्णनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) ययास्वप्नंभयंशोकंविषादंमदमेवच ॥ नविमुंचतिदुर्मेधाधृतिःसापार्थतामसी ॥ ३५ ॥ यया । स्वप्नम् । भयम् शोकम् । विषादम् । मदम् । एवं । च । न । विमुंचति । दुर्मेधाः । धृतिः । सा । पार्थ । तामसी ॥३५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ ! दुर्बुद्धिपुरुष जिसधृतिकरिकै स्वप्नकूं तथाभयकूं तथाशोककूं तथाविषादकूं तथा मदकूं कदाचित्भी नहीं परित्यागकरैहै सो धृति तामसी कहीजावै है ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां निद्राकानाम स्वप्नहै ॥ और प्रतिकूलवस्तुकेदर्शनजन्यत्रासकानाम भयहै ॥ और इष्टवस्तुकेवियोगजन्य जोसंतापहै ताकानाम शोकहै ॥ और इंद्रियोंकीजाड्याकुलताहै ताकानाम विषादहै ॥ और शास्त्रनिषिद्धविषयोंकेसेवनकरणेकीजाअभिमुखताहै ताकानाम मदहै ॥ ऐसेस्वप्नकूं तथाभयकूं तथाशोककूं तथाविषादकूं तथामदकूं यहदुष्टबुद्धिवाला अविवेकीपुरुष जिसधृतिकरिकै कदाचित्भी नहींपरित्यागकरैहै किंतु जिसधृतिकरिकै यहदुर्बुद्धिपुरुष तिनस्वप्नभयादिकोंकूंही कर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरैहै ॥ साधृति शिष्टपुरुषोंनैं तामसीधृति कहीहैइति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व क्रियावोंका तथाकर्त्तादिककारकोंका सत्त्वादिकतीनगुणोंकेभेदकरिकै सात्त्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिनक्रियावोंकरिकैजन्यसुखरूप फलके त्रिविधपणेकूं श्रीभगवान च्यारिश्लोकोंकरिकैकथनकरैं हैं ॥ तहांप्रथम अर्द्धश्लोककरिकै तिससुखरूपफलके त्रिविधपणेकीप्रतिज्ञाकरिकै सार्द्धश्लोककरिकै सात्त्विक सुखकास्वरूप वर्णनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) सुखंत्विदानींत्रिविधंशृणुमेभरतर्षभ ॥ अभ्यासाद्रमतेयत्रदुःखांतंचनिगच्छति ॥३६॥ सुखम् । तु । इदानीम् । त्रिविधम् । शृणु । मे । भरतर्षभ । अभ्यासात् । रमते । यत्र । दुःखांतम् । च । निगच्छति ॥३६॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभरतवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन ! पुनः अबी हमारेवचनतें त्रिविधं सुखकूं तूंश्रवणकर हेअर्जुन ! जिससमाधिसुखविषे यहपुरुष अभ्यासतें रमणकरैहै तथा दुःखकेअंतकूं प्राप्तहोवै है ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभरतवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन ! अबीतूं मैंपरमेश्वरकेवचनतें सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै सुखकेत्रिविधपणेकूं श्रवणकर अर्थात् यहसुख परित्या

तहां (प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंच) इत्यादिकतीनश्लोकोंकारिकै बुद्धिका त्रिविधपणा कथनकन्या ॥ अब (धृत्यायया) इत्यादिकतीनश्लोकोंकारिकै धृतिके त्रिविधपणेकूंकथनकरैं हैं ॥ तहांप्रथम सात्विकधृतिकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) धृत्याययाधारयतेमनःप्राणेंद्रियक्रियाः ॥ योगेनाव्यभिचारिण्याधृतिःसापार्थसात्त्विकी ॥ ३३ ॥ धृत्या । यया । धारयते । मनःप्राणेंद्रियक्रियाः । योगेन । अव्यभिचारिण्या । धृतिः । सा । पार्थ । सात्त्विकी ॥ ३३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! योगेकरिकै व्याप्त जिसै धृतिकरिकै यहपुरुष मनप्राणइंद्रियोंके क्रियावोंकूं निरुद्धकरै है सा धृति सात्त्विकी कही जावैहै ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! समाधिरूपयोगहै तिसयोगकरिकैव्याप्तजाधृतिहै ऐसीजिसधृतिकारिकै यहअधिकारीपुरुष मनकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं तथाप्राणोंकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं तथाइंद्रियोंकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं धारणकरै है अर्थात् जिसधृतिकारिकै यहअधिकारीपुरुष तिनमनप्राणइंद्रियोंकेचेष्टारूपक्रियावोंकूं शास्त्रनिषिद्धमार्गतैंनिरुद्धकरै है ॥ तथा जिसधृतिकेविद्यमानहुए इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैसमाधिहोवैहै ॥ तथा जिसधृतिकारिकै धारणकरीहुई मनप्राणइंद्रियादिकोंकीक्रिया शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै शास्त्रप्रतिपादितअर्थतैंअन्यअर्थकूं विषयकरतीनहीं ॥ इसप्रकारकी साधृति सात्त्विकाधृति कहीजावैहै इति ॥ ३३ ॥

❀ ॥ अब राजसीधृतिकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ययातुधर्मकामार्थान्धृत्याधारयतेऽर्जुन ॥ प्रसंगेनफलाकांक्षीधृतिःसापार्थराजसी ॥ ३४ ॥ यया । तु । धर्मकामार्थान् । धृत्या । धारयते । अर्जुन । प्रसंगेन । फलाकांक्षी । धृतिः । सा । पार्थ । राजसी ॥ ३४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! पुनः कर्तृत्वादिकअभिनिवेशकरिकै फलकीइच्छावानहुआ यहपुरुष जिसै धृतिकरिकै धर्म कामअर्थ इनतीनोंकूंही धारणकरै है हेपार्थ ! सा धृति राजसीकहीजावैहै ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (ययातु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सो तु शब्द पूर्वउक्तसात्त्विकधृतितैं इसराजसधृतिविषे भिन्नपणेकूंकथनकरै है ॥ हेअर्जुन ! कर्तृत्वआदिकअभिनिवेशकारिकै स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरताहुआ यहपुरुष जिसधृतिकारिकै धर्मकूं तथाकामकूं तथाअर्थकूं धारणकरै है अर्थात् धर्म काम अर्थ यहतीनोंही हमारेकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारतैं तिसधर्मकामअर्थकूंही नित्यकर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरैं हैं ॥ कदाचित्भीमोक्षके

आगेभीजानिलेणी इति ॥ और इसश्लोकविषे श्रीभगवानूनैं बंध मोक्ष इनदोनोंका प्रवृत्तिआदिकोंकेअंतविषेकथनकऱ्याहै यातैं इहां तिसबंधमोक्षविषयकही तिनप्रवृत्तिआदिकोंकाव्याख्यानकऱ्याहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ अबराजसीबुद्धिकास्वरूपवर्णनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) ययाधर्ममधर्मंचकार्यंचाकार्यमेवच ॥ अयथावत्प्रजानातिबुद्धिःसापार्थराजसी ॥ ३१ ॥ यया । धर्मम् । अधर्मम् । च । कार्यम् । च । अकार्यम् । एव । च । अयथावत् । प्रजानाति । बुद्धिः । सा । पार्थ राजसी ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ ! यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै धर्मकूं तथा अधर्मकूं तथा कार्यकूं तथा अकार्यकूं अयथावत् ही जानताहै सो बुद्धि राजसी कहीजावैहै ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित जेअग्निहोत्रादिककर्म हैं तिनकानाम धर्महै ॥ और तिसश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै निषिद्ध जेहिंसादिककर्म हैं तिनकानाम अधर्महै ॥ यहधर्मअधर्मदोनों अदृष्ट अर्थकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ ऐसे अदृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे धर्मअधर्मदोनोंकूं तथादृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे कार्य अकार्य इनदोनोंकूं यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै अयथावत्ही जानताहै अर्थात् यहक्याहै इसप्रकारकेअनिश्चयकूं अथवा यहवस्तु इसप्रकारकीहै वाअन्यप्रकार कीहै इसप्रकारके संशयकूं यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै प्राप्तहोवैहै साबुद्धि राजसीबुद्धि कहीजावैहै इति ॥ ३१ ॥ ❀ अब तामसीबुद्धिकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अधर्मंधर्ममितियामन्यतेतमसावृता ॥ सर्वार्थान्विपरीतांश्चबुद्धिःसापार्थतामसी ॥ ३२ ॥ अधर्मम् । धर्मम् । इति । या । मन्यते । तमसा । आवृता । सर्वार्थान् । विपरीतान् । च । बुद्धिः । सा । पार्थ । तामसी ॥ ३२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! तमकरिकै आवृतहुई जो बुद्धि अधर्मकूं धर्म इसप्रकार मानैं है तथा दूसरेभीसर्वअर्थोंकूं विपरीतही मानैं है साबुद्धि तामसी कहीजावैहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! विशेषदर्शनकाविरोधी जोतमरूपदोषहै तिसतमरूपदोषकरिकै आवृतहुई जाबुद्धि अधर्मकूं धर्मरूपकरिकैमानैं है अर्थात् अदृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वकर्मोंविषे जाबुद्धि विपर्ययकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा दृष्टहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे सर्वज्ञेयपदार्थ हैं तिनसर्वज्ञेयपदार्थोंकूंभी जाबुद्धि विपरीतही मानैं है अर्थात् सुखादिकोंकेहेतुभूतपदार्थोंकूंभी जाबुद्धि दुःखादिकोंकाहेतुभूतही मानैं है। ऐसीविपर्ययवालीबुद्धि तामसीबुद्धि कहीजावैहै इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥

ककथनकरिकैही तिसअंतःकरणके इच्छादिकसर्ववृत्तियोंकात्रिविधपणा इहांविवक्षितहै ॥ यातैं इच्छादिकवृत्तियोंकेपरिसंख्यावासतैंभी तिसज्ञानधृतिदोनोंकापृथक्कथन संभवतानहीं इति ॥ इसप्रकारकेसंदेहकेप्राप्तहुए इहां याप्रकारकानिर्णयकरणा ॥ पूर्वजो कर्ताका कथनकऱ्याथा सोअंतःकरणउपहितचिदाभासका नाम कर्ता है और इहांतौ तिसउपहितचिदाभासतः पृथक्करीहुई उपाधिमात्रही कारणरूपकरिकैविवक्षितहै सर्वत्र करणउपहितकूंही कर्तापणाहोवैहै ॥ यद्यपि (कामःसंकल्पोविचित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) इसश्रुतिविषेकथनकरीहुईकामादिकसर्ववृत्तियोंका त्रिविधपणाहीविवक्षितहै ॥ तथापि इहां बुद्धि धृति इनदोनोंका जोपृथक्रूपणा कथनकऱ्याहै सो ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति इनदोनोंकेउपलक्षणवासतै कथनकऱ्याहै ॥ कोईइच्छादिकवृत्तियोंके परिसंख्यावासतैं कथनकऱ्यानहीं यातैं इहां किंचिन्मात्रभीपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहां प्रथम (प्रवृत्तिंच) इत्यादिकतीनश्लोकों करिकैबुद्धिकात्रिविधिपणाकथनकरेहैं ॥ ताकेविषेभी प्रथम सात्त्विकबुद्धिकास्वरूप कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचकार्याकार्येभयाभये ॥ बंधंमोक्षंचयावेत्तिबुद्धिःसापार्थसात्त्विकी ॥ ३० ॥ प्रवृत्तिम् । च । निवृत्तिम् । च । कार्याकार्ये । भयाभये । बंधम् । मोक्षम् । च । या । वेत्ति । बुद्धिः । सा । पार्थ । सात्त्विकी ॥ ३० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ ! जा बुद्धि प्रवृत्तिकूं तथा निवृत्तिकूं तथा कार्यअकार्यकूं तथाभयअभयकूं तथा बंधकूं तथा मोक्षकूं जानैहै साबुद्धि सात्त्विकी कहीजावैहै ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। इहां कर्ममार्गकानाम प्रवृत्तिहै ॥ और संन्यासमार्गकानाम निवृत्तिहै ॥ और तिसप्रवृत्तिमार्गविषेस्थितहोइकै जोकर्मोंकाकरणाहै ताकानाम कार्यहै ॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषेस्थितहोइकै जोकर्मोंकानहींकरणाहै ताकानाम अकार्यहै और तिसप्रवृत्तिमार्गविषे जोगर्भवासादिकदुःखहैं ताकानाम भयहै ॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषे जोतिनगर्भवासादिकदुःखोंकाअभावहै ताकानाम अभयहै ॥ और तिसप्रवृत्तिमार्गविषे मिथ्याज्ञानकृत जो कर्तृत्वादिकअभिमानहै ताकानाम बंधहै ॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषे जो तत्त्वज्ञानकृत अज्ञानका तथाताकेकार्यका अभावहै ताकानाम मोक्षहै ॥ ऐसे प्रवृत्तिकूं तथानिवृत्तिकूं तथाकार्यकूं तथाअकार्यकूं तथाभयकूं तथाअभयकूं तथाबंधकूं तथामोक्षकूं जाबुद्धि जानैहै साप्रमाणजन्यनिश्चयवालीबुद्धि सात्त्विकीबुद्धि कहीजावैहै ॥ यद्यपितिनप्रवृत्तिनिवृत्तिआदिकोंकेज्ञानविषे बुद्धिकूं करणरूपताहीहै कर्तारूपताहैनहीं किंतु तिसबुद्धिवालेपुरुषकूंहीकर्तारूपताहै ॥ यातैं (ययाबुद्ध्यापुरुषःवेत्ति) इसप्रकार काहीकरणा उचितथा तथापि तिसकरणरूपबुद्धिविषेकर्तृत्वकेउपचारतैं श्रीभगवान्नैं (या बुद्धिःवेत्ति) इसप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकारकीरीति

तहांपूर्व उन्नीसवेंश्लोकविषे (ज्ञानंकर्म) इत्यादिकवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानकर्म कर्त्ता इनतीनोंके सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै त्रिविधपणेके व्याख्यानकरणेकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ सोतिनज्ञानादिकोंकात्रिविधपणा (सर्वभूतेषुयेनैकम्) इत्यादिकनवश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब (मुक्त संगोनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः) इसपूर्व उक्तवचनविषे सूचनकरी जाबुद्धि धृतिहै तिस बुद्धिधृतिदोनोंके त्रिविधपणेके कथनकी प्रतिज्ञाकूं श्रीभगवान् कहैहैं ।

(मू. श्लो.) बुद्धेर्भेदंधृतेश्चैवगुणतस्त्रिविधंशृणु ॥ प्रोच्यमानमशेषेणपृथक्त्वेनधनंजय ॥ २९ ॥ बुद्धेः । भेदम् । धृतेः । च । एव । गुणतः । त्रिविधम् । शृणु । प्रोच्यमानम् । अशेषेण । पृथक्त्वेन । धनंजय ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेधनंजय बुद्धिका तथा धृतिका सत्त्वादिकगुणकरिकै त्रिविध हीं भेद मैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेप्रति समग्र भिन्नभिन्नकरिकै कथनकरीताहै तिसकूं तूं श्रवण कर ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! निश्चयादिरूपवृत्तियोंवालीजाबुद्धिहै तथा तिसबुद्धिकीवृत्तिविशेषरूपजाधृतिहै तिसबुद्धिका तथा तिसधृतिका सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेद करिकै सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाही भेदहोवैहै ॥ सोतीनप्रकारकाभेद आलस्यादिकदोषतैंरहित तथापरमआप्तरूप मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकेप्रति अशेषकरिकै तथा पृथक्पणेकरिकै कथनकरीताहै अर्थात् समग्ररूपकरिकै तथा यहग्रहणकरणेयोग्यहै यहनहींग्रहणकरणेयोग्यहै याप्रकारकेविवेककरिकै कथनकरीताहै ॥ ऐसे बुद्धिकेतीनप्रकारकेभेदकूं तथाधृतिकेतीनप्रकारकेभेदकूं तूं श्रवणकर अर्थात् तिसत्रिविधभेदकेश्रवणकरणेकूं तूं सावधानहोउ ॥ तहां (हेधनंजय) इससंबोधनकरिकै दिग्विजयविषे अर्जुनकेप्रसिद्धमहिमाकूंसूचनकरताहुआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं तिसत्रिविधभेदकेश्रवणकरणेविषे उत्साहकरावताभया इति ॥ इहां यहसंदेह प्राप्तहोवैहै ॥ (बुद्धेर्भेदम्) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं जो बुद्धि यहशब्दकथनकऱ्याहै तिसबुद्धिशब्दकरिकै श्रीभगवान्कूं केवल वृत्तिमात्र अभिप्रेतहै ॥ अथवा ताबुद्धिशब्दकरिकै वृत्तिवालाअंतःकरण अभिप्रेतहै ।। तहां बुद्धिशब्दकरिकै केवलवृत्तिमात्र अभिप्रेतहै ॥ इसप्रथमपक्षविषे तिसवृत्तिरूपबुद्धितैं ज्ञानकास्वरूप पृथक्कह्याचाहिये ॥ और बुद्धिशब्दकरिकै वृत्तिवालाअंतःकरण अभिप्रेतहै ॥ इसद्वितीयपक्षविषेतिसवृत्तिवालेअंतःकरणकूंही कर्त्ताकास्वरूप पृथक्कह्या चाहिये ॥ नहींतौ पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा वृत्तियोंवालेअंतःकरणकूंही कर्त्तापणाहोणेतैं ज्ञान धृति इनदोनोंकापृथक्कथनकरणा व्यर्थहीहै ॥ जोकोई यहकहै इच्छादिकवृत्तियोंकेपरिसंख्यावासतै तिसज्ञानधृतिदोनोंका पृथक्कथनहै ॥ सोयहकहणाभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं वृत्तियोंवालेअंतःकरणकेत्रिविधपणे

असमर्थहै ताकानाम लुब्धहै ॥ तथा जोपुरुष हिंसात्मकहै ॥ तहां आपणेअभिप्रायकूंप्रगटकारिकै जो दूसरेकेजीविकारूपवृत्तिकाछेदनकरणाहै ताकानाम हिंसाहै ॥ साहिंसाहैस्वभावजिसका ताकानाम हिंसात्मकहै ॥ और आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकारिकै दूसरेकेवृत्तिकाछेदनकरणेहारा पुरुष नैष्कृतिक कह्याजावैहै ॥ इतना हिंसात्मक नैष्कृतिक दोनोंविषे भेदहै ॥ सोनैष्कृतिककर्त्ता अगलेश्लोकविषेकथनकरणाहै इति ॥ तथा जोपुरुष अशुचिहै अर्थात् शास्त्रउक्त बाह्य अंतर दोप्रकारकेशौचतैंरहितहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकैशरीरकीशुद्धिकूं बाह्यशौच कहैं हैं ॥ और मैत्रीकरुणादिकशुभवासनावोंकरिकै चित्तकूं कामक्रोधादिकों तैं रहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष कर्मकेफलकी सिद्धिविषे तथाअसिद्धिविषे हर्षशोककरिकैयुक्तहै ॥ इसप्रकारकाकर्त्ता शिष्टपुरुषों नैं राजसकर्त्ता कह्याहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अबतामसकर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) अयुक्तःप्राकृतःस्तब्धःशठोनैष्कृतिकोऽलसः ॥ विषादीदीर्घसूत्रीचकर्त्तातामसउच्यते ॥ २८ ॥ अयुक्तः । प्राकृतः । स्तब्धः । शठः । नैष्कृतिकः । अलसः । विषादी । दीर्घसूत्री । च । कर्त्ता । तामसः । उच्यते ॥२८॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन ! पुनः जोपुरुष अयुक्तहै तथाप्राकृतहै तथास्तब्धहै तथाशठहै तथानैष्कृतिकहै तथाअलसहै तथाविषादीहै तथा दीर्घसूत्रीहै ऐसाकर्त्ता तामसकर्त्ता कह्याजावैहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष अयुक्तहै अर्थात् सर्वकालविषे विषयोंविषेचित्तकीसंलग्नताकरिकै जोपुरुष करणेयोग्यकर्मविषे चित्तकीसावधानतातैं रहित है तथा जोपुरुष प्राकृतहै अर्थात् मूढबालकीन्याई जोपुरुष शास्त्रसंस्कारतैंरहितबुद्धिवालाहै तथा जोपुरुष स्तब्धहै अर्थात् गुरु देवता आदिकों के आगेभी जोपुरुष नम्रभावतैंरहितहै तथा जोपुरुष शठहै अर्थात् अन्यपुरुषोंकीवंचनाकरणेवासतै जोपुरुष अन्यप्रकारतैं अर्थकूं जानताहुआभी अन्यप्रकारतैंही ताअर्थका कथनकरैहै तथा जोपुरुष नैष्कृतिकहै अर्थात् यहहमारा बहुतउपकारीहै याप्रकारका उपकारित्वभ्रम आपणेविषे दूसरेपुरुषका उत्पन्नकरिकै तिसपुरुषकी जीविकारूपवृत्तिकाछेदनकरिकै जोपुरुष आपणेस्वार्थकीसिद्धिकरणेहाराहै तथा जोपुरुष अलसहै अर्थात् अवश्यकरणेयोग्यकर्मविषेभी जोपुरुष नहीं प्रवृत्तहोणेहाराहै तथा जोपुरुष विषादीहै अर्थात् असंतुष्टस्वभाववाला होणेतैं जोपुरुष निरंतर अनुशोचनस्वभाववालाहै तथा जोपुरुष दीर्घसूत्रीहै अर्थात् निरंतर सहस्रशंकावोंकरिकैयुक्तअंतःकरणवालाहोणेतैं जोपुरुष अत्यंतशिथिलप्रवृत्तिवालाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकार्य एकदिनविषे करणेयोग्यहै तिसकार्यकूं एकमासकरिकैभीकरिसकैहै अथवा नहींभीकरिसकैहै इसप्रकारका कर्त्तापुरुष तामसकर्त्ता कह्याजावैहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥

अनहंवादी । धृत्युत्साहसमन्वितः । सिद्ध्यसिद्ध्योः । निर्विकारः । कर्त्ता । सात्त्विकः । उच्यते ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! फलकीइच्छातैंरहित तथाअहंवादी इथाधृतिउत्साहदोनोंकरिकैयुक्त तथासिद्धिअसिद्धिदोनोंविषे निर्विकार ऐसाकर्त्ता सात्त्विककर्ताकह्याजावैहै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष मुक्तसंगहै अर्थात् त्यागकरीहैकर्मफलकीइच्छाजिसनैं ।। तथा जोपुरुष अनहंवादीहै अर्थात् मैंकर्मकाकर्त्ताहूं इसप्रकारके अभिमानपूर्वकवचनकूं जो नहींउच्चारणकरैहै अथवा जोपुरुष आपणेगुणोंकीश्लाघातैंरहितहै ताकानाम अनहंवादीहै ।। तथा जोपुरुष धृति उत्साह इनदोनों करिकैयुक्तहै ।। तहा विघ्नआदिकोंकेप्राप्तहुएभी प्रारंभकरेहुएकर्मके नहींपरित्यागकाहेतुरूप जाअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जाकूं धैर्यकहैं हैं ताकानाम धृतिहै ॥ और इसकर्मकूं मैं अवश्यकरिकैसिद्धकरूंगा याप्रकारकी जा निश्चयात्मकबुद्धिहै जाबुद्धि उक्तधृतिकाकारणरूपहै ताकानाम उत्साहहै ।। ऐसे धृति उत्साह दोनोंकरिकै जोपुरुष युक्तहै ।। तथा जोपुरुष करेहुएकर्मके फलकीप्राप्तिविषे तथा अप्राप्तिविषे निर्विकारहै तहां करेहुएकर्मके फलकीप्राप्तिहुए जो हर्षहोवैहै तथा तिसफलकी अप्राप्तिहुए जो शोकहोवैहै सोहर्षहैकारणजिसका ऐसाजो मुखका विकासपणाहै तथा सोशोकहैकारणजिसका ऐसाज मुखकामलिनपणाहै तिनदोनोंकानाम विकारहै ताविकारतैं जोपुरुष रहितहै तथा जोपुरुष केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैही तिसकर्मविषेप्रवृत्तहुआहै फलकरिकै अथवा रागकरिकै जोपुरुष तिसकर्मविषे प्रवृत्तहुआनहीं ।। इसप्रकारका कर्त्तापुरुष सात्त्विककर्त्ता कह्याजावैहै इति ।। २६ ।। ❀ ॥ अब राजसकर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) रागीकर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धोहिंसात्मकोऽशुचिः ॥ हर्षशोकान्वितःकर्त्ताराजसःपरिकीर्तितः ॥ २७ ॥ रागी । कर्मफलप्रेप्सुः । लुब्धः । हिंसात्मकः । अशुचिः । हर्षशोकान्वितः । कर्त्ता । राजसः । परिकीर्तितः ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन जोपुरुष रागवालाहै तथाकर्मकेफलकीइच्छावान्है तथालुब्धहै तथाहिंसास्वभावालाहै ॥ तथा अशुचिहै तथाहर्षशोककरिकैयुक्तहै ऐसाकर्त्ता शिष्टपुरुषों नैं राजसकर्त्ता कथनकर्‍याहै ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष रागीहै अर्थात् कामादिकोंकरिकैयुक्तहैचित्तजिसका ॥ इसीकारणतैंही जोपुरुष तिसतिसकर्मकेस्वर्गादिकफलोंकीइच्छावाला है ॥ तथा जोपुरुष लुब्धहै अर्थात् परायेधनादिकपदार्थोंकीअभिलाषाकरणेहाराहै ॥ अथवा धनवान्हुआभी जोपुरुष धर्मकेवास्ते धनकेखर्चकरणेनैं

लक्षणता दिखावैं हैं ॥ हे अर्जुन ! स्वर्गादिकफलोंकीइच्छावान् सकामपुरुषनैं तथापूर्वउक्त संगरूपगर्वयुक्तपुरुषनैं जोकाम्यकर्म करीताहै ॥ जोकर्म बहुलायासहै ॥ अर्थात् सर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वककऱ्याहुआही काम्यकर्म फलकीप्राप्तिकरेहै किंचित्मात्रअंगकीविगुणताकेहुए काम्यकर्म फलकाहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं सर्वअंगोंकीपरिपूर्णताकरणेकरिकै जोकाम्यकर्म कर्त्तापुरुषकूं बहुतक्लेशकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ इहां (वापुनः) इसवचनविषैस्थितजो पुनः यहशब्दहै सोपुनःशब्द इसराजसकर्मविषे अनियतपणेकूंबोधनकरैहै ॥ काहेतैं जैसे नित्यकर्मविषे सर्वदा कर्त्तव्यताहोवै है तैसे इसकाम्यकर्मविषे सर्वदा कर्त्तव्यता होवैनहीं किंतु जब पर्यंत इसपुरुषविषे फलकीकामनारहै है तबपर्यंतही तिसकाम्यकर्मकीकर्त्तव्यतारहै है ॥ कामनाकेनिवृत्तहुएतैं अनंतर तिसकाम्यकर्मकीकर्त्तव्यतारहैनहीं ॥ यातैं तिसकाम्यकर्मविषे सोअनियतपणा युक्तहीहै ॥ इसप्रकारका काम्यकर्म शिष्टपुरुषोंनैं राजसकर्म कह्याहै ॥ इहां सर्वविशेषणोंकरिकै इसराजसकर्मविषे पूर्वश्लोकउक्तसात्त्विककर्मके सर्वविशेषणोंतैं विपरीतपणा कथनकऱ्याहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब तामसकर्मकास्वरूप वर्णनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) अनुबंधंक्षयंहिंसामनपेक्ष्यचपौरुषम् ॥ मोहादारभ्यतेकर्मयत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥ अनुबंधनम् । क्षयम् । हिंसाम् । अनपेक्ष्य । च । पौरुषम् । मोहात् । आरभ्यते । कर्म । यत् । तत् । तामसम् । उच्यते ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः अनुबंधकूं तथाक्षयकूं तथाहिंसाकूं तथापौरुषकूं नविचारिकैकेवल अविवेकतैं जो कर्म आरंभकरीताहै सोकर्म तामसकर्म कह्याजावे है ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ।

टीका । हे अर्जुन ! आगेहोणेहाराजो अशुभफलहै ताकानाम अनुबंधहै ॥ और शरीरकेसामर्थ्यका तथाधनका तथासेनाका जो विनाशहै ताकानाम क्षयहै ॥ और प्राणियोंकी जापीडाहै ताकानाम हिंसाहै ॥ और आपणाजोसामर्थ्यहै ताकानाम पौरुषहै ॥ ऐसे अनुबंधकूं तथाक्षयकूं तथाहिंसाकूं तथापौरुषकूं कर्मके प्रारंभतैंपूर्व नविचारिकै केवल अविवेकरूपमोहकेवशतैं जोकर्म आरंभकरीताहै सोकर्म तामसकर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे इसदुर्योधननैं तिनअनुबंधादिकऱ्यारोंकानहींविचारकारिकै केवल अविवेकरूपमोहतैं इसयुद्धरूपकर्मकाआरंभकऱ्याहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै पूर्व सात्त्विक राजस तामस इसभेदकारिकै तीनप्रकारकाकर्म निरूपणकऱ्या ॥ अब (मुक्तसंगः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेकर्त्ताका कथनकरैं हैं ॥ तहां प्रथम सात्त्विककर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मुक्तसंगोऽनहंवादीधृत्युत्साहसमन्वितः ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारःकर्त्तासात्त्विकउच्यते ॥ २६ ॥ मुक्तसंगः ।

(मू. श्लो.) नियतंसंगरहितमरागद्वेषतःकृतम् ॥ अफलप्रेप्सुनाकर्मयत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ नियतम् । संगरहितम् । अरागद्वेषतः । कृतम् । अफलप्रेप्सुना । कर्म । यत् । तत् । सात्त्विकम् । उच्यते ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! फलकीइच्छातैंरहित पुरुषनैं संगतैं रहित तथाराग द्वेषतैं रहित जो नित्य कर्म करीताहै सोकर्म सात्त्विक कह्याजावैहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोकर्म नियतहै अर्थात् तिसकर्मके जितनेक द्रव्य देवता मंत्र आदिकअंगहैं तिन सर्वअंगोंकी परिपूर्णताकरणेविषेअसमर्थपुरुषोंकूंभी जोकर्म आपणेफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैकरै है ॥ ऐसा अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्महै ॥ तथा जोकर्म संगरहितहै ॥ तहां मैंही महान्याज्ञिकहूं हमारेसमानदूसराकोई हैनहीं इत्यादिकअभिमानरूप तथा अहंकारहैनामजिसका ऐसाजो राजसगर्वविशेषहै ताकानाम संगहै तिससंगतैं जोकर्म रहितहै अर्थात् जोकर्म इसप्रकारकेअभिमानपूर्वक नहींकऱ्याजावैहै तहां जितनैकालपर्यंत अज्ञानहै तितने कालपर्यंत कर्तृत्वभोक्तृत्वकाप्रवर्त्तक अहंकार सात्त्विकपुरुषविषेभी रहै है ॥ और तिसअज्ञानतैं तथा अहंकारतैं रहित जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंतौ कर्मोंकाअधिकारहीनहीं है ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकबार कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं सात्त्विकपुरुषविषे कर्तृत्वभोक्तृत्त्वकेप्रवर्त्तक सामान्यअहंकारके विद्यमानहुएभी सोराजसगर्वरूपविशेष अहंकार रहतानहीं इति ॥ तथा जोकर्म अरागद्वेषतैंकऱ्याजावैहै तहां इसकर्मकरिकै मैं राजसन्मान आदिकोंकूंप्राप्त होवैंगा इसप्रकारकेअभिप्रायकानाम रागहै ॥ और इसकर्मकरिकै मैं शत्रुकूंपराजयकरूंगा इसप्रकारकेअभिप्रायकानाम द्वेषहै ॥ तिसरागद्वेषदोनोंकरिकै जोकर्म नहींकरयाहुआहै इसप्रकारका जो यज्ञदानहोमादिरूपनित्यकर्म फलकी इच्छातैंरहितनिष्कामपुरुषनैं स्वधर्मजानिकै करीताहै ॥ सो यज्ञदानहोमादिरूपनित्यकर्म सात्त्विककर्म कह्याजावैहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ अब राजसकर्मकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यत्तुकामेप्सुनाकर्मसाहंकारेणवापुनः ॥ क्रियतेबहुलायासंतद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ यत् । तु । कामेप्सुना । कर्म । साहंकारेण । वा । पुनः । क्रियते । बहुलायासम् । तत् । राजसम् । उदाहृतम् ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः सकामपुरुषनैं तथा अहंकारयुक्तपुरुषनैं अनियत तथाबहुतक्लेशकीप्राप्तिकरणेहारा जो काम्यकर्म करीताहै सोकाम्यकर्म शिष्टपुरुषों नैं राजसकर्म कह्याहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सो तुशब्द पूर्वउक्तसात्त्विककर्मतैं इसराजसकर्मविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासते है सावि

हे अर्जुन ! पुनः जोज्ञानें किसीएक कार्यविषे परिपूर्णअर्थकीन्याई अभिनिवेशवालाहै तथायुक्तितें रहितहै तथापरमार्थआलंबनतें रहितहै तथा अल्पहै सोज्ञानें शिष्टपुरुषोंने तामस कह्याहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वश्लोकउक्तराजसज्ञानतें इसतामसज्ञानविषे विलक्षणताके बोधनकरणेवासतैंहै ॥ साविलक्षणता दिखावैंहैं ॥ आकाशादिकपंचभूतोंके बहुतकार्योंके विद्यमानहुएभी तिनसर्वकार्योंके मध्यविषे किसीएक देहरूपकार्यविषे अथवा प्रतिमादिरूप कार्यविषे जोज्ञान परिपूर्ण अर्थकीन्याई सक्तहै अर्थात् इतनामात्रही आत्माहै तथाइतनामात्रही ईश्वरहै इसतैंपरे कोईआत्मानहीं है तथाइसतैंपरे कोईईश्वर नहीं है इसप्रकारकेअभिनिवेशकरिकै जोज्ञान किसीदेहरूपएककार्यविषे अथवा किसीप्रतिमादिरूपएककार्यविषेही संलग्नहुआहै ॥ जैसे आत्मा सावयवहै तथादेहपरिमाणहै याप्रकारका दिगंबरोंकाज्ञानहै ॥ तथा जैसे यहस्थूलदेहही आत्माहै इसप्रकारका चार्वाकोंकाज्ञानहै ॥ तथा जैसे पाषाणकाष्ठादिरूप यहप्रतिमामात्रही ईश्वरहै इसतैंपरे दूसराकोईईश्वरहैनहीं इसप्रकारका शास्त्रसंस्कारोंतैंरहित मूढपुरुषोंकाज्ञानहै ॥ तथा जोज्ञान अहैतुकहै क्या उपपत्तिरूपहेतुतैंरहितहै अर्थात् देहप्रतिमातैंभिन्न दूसरे जितनेकभूतोंकेकार्य हैं तिनसर्वकार्योंविषे आत्मपणेकेअभावहुए तथाईश्वरपणेकेअभावहुए इसभूतोंकेकार्यरूपदेहविषे सोआत्मपणा कैसेसंभवैगा तथाइसभूतोंके कार्यरूपप्रतिमाविषे सोईश्वरपणा कैसेसंभवैगा किंतु नहींसंभवैगा ॥ इसप्रकारके विचारतैं जोज्ञान रहितहै ॥ इसीकारणतैंही जोज्ञान अतत्त्वार्थवत्‌है ॥ तहां जोअर्थ प्रमाणांतरकरिकैबाधितनहींहोवैहै ताअर्थकानाम तत्त्वार्थहै ॥ सोतत्त्वार्थ जिसज्ञानका विषयनहींहोवै ताज्ञानकानाम अतत्त्वार्थवत्‌है अर्थात् जोज्ञान अयथार्थअर्थविषयकहै तथा जोज्ञान अल्पहै अर्थात् आत्माको नित्यत्वविभुत्वकूं नहींविषयकरणेतैं जोज्ञान अत्यंत अल्पहै ॥ इसप्रकारकाजो अनित्यपरिच्छिन्नदेहादिकोंविषेआत्मत्वअभिमानरूप चार्वाकादिकोंकाज्ञानहै ॥ जोज्ञान आत्मा तथाईश्वर दोनों नित्यहैं तथाविभुहैं तथादेहादिकसंघाततैंभिन्नहैं इसप्रकारके तार्किकपुरुषोंकेज्ञानतैंभी अत्यंतविलक्षणहै सोज्ञान बुद्धिमान्‌पुरुषों नैं तामसज्ञान कह्याहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥

तहां एकअद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा जो औपनिषद्‌पुरुषोंका सात्त्विकज्ञानहै सोअद्वितीयआत्मविषयक सात्त्विकज्ञानतौ मुमुक्षुजनों नैं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और नित्य तथाविभु तथापरस्परभिन्न ऐसे अनेकआत्मावोंकूं विषयकरणेहारा जो द्वैतदर्शीतार्किकपुरुषोंका राजसज्ञानहै तथा अनित्य परिच्छिन्न देहादिरूपआत्माकूं विषयकरणेहारा जोचार्वाकादिकोंका तामसज्ञानहै तेराजसतामसदोनोंज्ञान मुमुक्षुजनों नैं परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ यहअर्थ (सर्वभूतेषुयेनैकम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै पूर्व कथनकऱ्या ॥ अब (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिके श्रीभगवान् सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिके कर्मके त्रिविधपणेकूं कथनकरैं हैं ॥ तहां प्रथम सात्त्विककर्मकास्वरूप वर्णनकरैंहैं ।

हे अर्जुन ! पुनः परस्परभेदकरिकैस्थितहुए देहादिकसर्व भूतोंविषे परस्परविलक्षण नानाआत्मावोंकूं जो ज्ञान जानै है तिस ज्ञानकूं तूं राजस जान ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (पृथक्त्वेनतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सो तुशब्द पूर्वश्लोकउक्तसात्त्विकज्ञानतैं इसराजसज्ञानविषे विलक्षणताकेबोधनकरणे वासतैहै ॥ साविलक्षणता कहै हैं ॥ हे अर्जुन ! परस्परभेदकरिकैस्थित हुए जेदेहादिकसर्वभूतहैं तिनसर्वभूतोंविषे जोज्ञान पृथक्विधनानाआत्मावोंकूंदेखै है अर्थात् देहदेहविषे सुखित्वदुःखित्वादिरूपकरिकै परस्परविलक्षण भिन्नभिन्नआत्मावोंकूं जोज्ञान देखै है ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी पंडितहै कोईप्राणी मूर्ख है इत्यादिक अनेकप्रकारकीविलक्षणता देखणेविषे आवैहै ॥ जोकदाचित् सर्वदेहोंविषे एकहीआत्माहोवै तो एकप्राणीकेसुखीहुए सर्वहीप्राणी सुखीहुए चाहियें ॥ तथा एकप्राणीकेदुःखीहुए सर्वहीप्राणी दुःखीहुएचाहियें ॥ सोऐसादेखणेविषे आवतानहीं ॥ यातैं सर्व देहोंविषे एकआत्मानहींहै किंतु देहदेहविषेभिन्नभिन्नआत्माहै इसप्रकारकेकुतर्ककरिकैउत्पन्नहुआ जोज्ञान देहदेहविषे भिन्नभिन्नआत्माकूंदेखै है तिसज्ञानकूं तूं राजसज्ञान जान ॥ इहां यद्यपि (यज्ज्ञानंवेत्ति) इसवचनकेस्थानविषे (येनज्ञानेनवेत्ति) इसप्रकारकाहीवचन कहणायोग्यथा ॥ तथापि (यज्ज्ञानंवेत्ति) यहजोवचन श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै सो तिसज्ञानरूपकरणविषे कर्तृत्वकेउपचारतैं कथनकऱ्याहै ॥ जैसे (एधांसिपचंति) यहवचन पाकके करणरूप काष्ठों विषे कर्तृत्वके उपचारतैं कह्याजावैहै ॥ अथवा सोज्ञान कर्त्तारूपअहंकारका वृत्तिरूपहै ॥ यातैं कर्त्तारूपअहंकारका तिसवृत्तिरूपज्ञानकेसाथिअभेद मानिकै श्रीभगवान्नैं (यज्ज्ञानंवेत्ति) यहवचनकऱ्याहै इति ॥ और (यज्ज्ञानंवेत्ति) इसवचनविषे पूर्व ज्ञानपदकथनकरिकै (तज्ज्ञानम्) इसवचनविषे जोपुनः ज्ञानपद कथनकऱ्याहै सोज्ञानपद आत्माकेभेदज्ञानकूं तथा तिनअनात्माकेभेदज्ञानकूं जनावैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ देहदेहविषे आत्मावोंका परस्परभेद ॥ १ ॥ तथा तिनआत्मावोंका ईश्वरतैंभेद ॥ २ ॥ तथा तिनआत्मावोंतैं अचेतनवर्गकाभेद ॥ ३ ॥ तथा ईश्वरतैं अचेतनवर्गकाभेद ॥ ४ ॥ तथा तिस अचेतनवर्गका परस्परभेद ॥ ५ ॥ इसप्रकारके अनौपाधिकपंचभेदोंकूं विषयकरणेहारा जोकुतार्किकपुरुषोंकाज्ञानहै ॥ सोभेदज्ञान राजसहीजानणा इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥

अब तामसज्ञानकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यत्तुकृत्स्नवदेकस्मिन्कार्येसक्तमहैतुकम् ॥ अतत्त्वार्थवदल्पंचतत्तामससमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ यत् । तु । कृत्स्नवत् । एकस्मिन् । कार्ये । सक्तम् । अहैतुकम् । अतत्त्वार्थवत् । अल्पम् । च । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

नोंका सात्त्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा ज्ञातव्यरूपकरिकै प्रतिज्ञाकरी ॥ अब प्रथम ज्ञानकेत्रिविधपणेकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् निरूपण करैहैं ॥ ताकेविषेभी प्रथम अद्वैतआत्मवादियोंके सात्त्विकज्ञानकूं कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) सर्वभूतेषुयेनैकंभावमव्ययमीक्षते ॥ अविभक्तंविभक्तेषुतज्ज्ञानंविद्धिसात्त्विकम् ॥ २० ॥ सर्वभूतेषु । येन । एकम् । भावम् । अव्ययम् । ईक्षते । अविभक्तम् । विभक्तेषु । तत् । ज्ञानम् । विद्धि । सात्त्विकम् ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन परस्परभेदवाले सर्वभूतोंविषे सर्वत्रव्यापक एक अव्यय सत्तारूपभावकूं जिसज्ञानकरिकै यहपुरुष साक्षात्कारकरैहै तिस ज्ञानकूं तूं सात्त्विक जान ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! अव्याकृत हिरण्यगर्भ विराट् यहहैंनामजिनोंके ऐसेजे वीज सूक्ष्म स्थूल रूप समष्टिव्यष्टिरूप सर्वभूतहैं जेसर्वभूत विभक्तहैं अर्थात् भिन्नभिन्ननामरूपकरिकै परस्पर व्यावर्त्यहैं तथा नानारसहैं ऐसेउत्पत्तिनाशवान् दृश्यवर्गरूप सर्वभूतोंविषे सत्तारूपभावकूं जिसवेदांतवाक्योंकेविचारजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरै है अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे परमार्थसत्तारूप स्वप्रकाशआनंदआत्माकूं जिसज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरैहै ॥ कैसाहै सोसत्तारूपभाव एक है अर्थात् सजातीयभेदविजातीयभेद स्वगतभेद इनतीनभेदोंतैंरहितहोणेतैं अद्वितीयरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसो सत्तारूपभाव अव्ययहै अर्थात् उत्पत्तिविनाशादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै तथाअदृश्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोसत्तारूपभाव अविभक्तहै अर्थात् सर्व जडपदार्थोंकाअधिष्ठानरूपकरिकै तथासर्वकल्पितपदार्थोंकेबाधकाअवधिरूपकरिकै सर्वत्र व्यापकहै ॥ ऐसे सर्वत्रव्यापकअद्वितीयआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जिसवेदांतवाक्यजन्यज्ञानकरिकै साक्षात्कारकरैहै तिस मिथ्याप्रपंचकेबाधक आत्मज्ञानकूं तूं सात्त्विकज्ञान जान ॥ और इसअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारतैं भिन्न जितनाकद्वैतदर्शनहै सोसर्वही द्वैतदर्शन राजसहोणेतैं तथातामसहोणेतैं संसारकाहीकारणहै ॥ यातैं तिसद्वैतदर्शनविषे कदाचित्भी सात्त्विकपणा होवैनहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब राजसज्ञानकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) पृथक्त्वेनतुयज्ज्ञानंनानाभावान्पृथग्विधान् ॥ वेत्तिसर्वेषुभूतेषुतज्ज्ञानंविद्धिराजसम् ॥ २१ ॥ पृथक्त्वेन । तु । यत् । ज्ञानम् । नानाभावान् । पृथग्विधान् । वेत्ति । सर्वेषु । भूतेषु । तत् । ज्ञानम् । विद्धि । राजसम् ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

यहतीनप्रकारका कथनकऱ्याहे ।। तहां सत्त्व रज तम यहतीनोंगुण कार्यकेभेदकरिकै प्रतिपादनकरिये जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम गुणसंख्यानहै ऐसा कपिलमुनिकृतसांख्यशास्त्रहै ॥ ऐसेसांख्यशास्त्रविषे तेज्ञानकर्मकर्त्तातीनों सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकेही कथनकरे हैं ॥ इहां (त्रिधैव) इसवचनविषेस्थितजो एव यहशब्दहै सोएवशब्द सात्त्विक राजस तामस इनतीनप्रकारों तैंभिन्न चतुर्थप्रकारकेनिवृत्तकरणेवासतै है ॥ यद्यपि कपिलमुनिरचितसांख्यशास्त्र परमार्थब्रह्मकीएकताविषे प्रमाणभूतनहीं है ॥ जिसकारणतैं सांख्यशास्त्रविषे नानाआत्माहीअंगीकारकरे हैं तथापि सोसांख्यशास्त्र अपरमार्थरूपसत्त्वादिकगुणोंके गौणभेदकेनिरूपणविषे व्यावहारिकप्रमाणभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसकारणतैं वक्ष्यमाणअर्थकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (गुणसंख्यानेप्रोच्यते) यहवचन कथनकऱ्याहै अर्थात् यहज्ञानादिकोंकात्रिविधपणा केवल इसगीताशास्त्रविषेही प्रसिद्धनहीं है किंतु कपिलमुनिराचित सांख्यशास्त्र विषेभी प्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारतैं वक्ष्यमाणअर्थकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं सोवचन कथनकऱ्याहै इति ॥ हे अर्जुन ! तिनज्ञानादिकतीनोंकूं तथासत्त्वादिकगुणकृत तिनज्ञानादिकोंकेभेदकूं तूं यथावत् श्रवणकर अर्थात् शास्त्रविषे जिसप्रकारका तिनोंकास्वरूप कथनकऱ्याहै तिसीप्रकारके तिनोंकेस्वरूपकूं श्रवणकरणेवासतै तूं सावधानहोउ इति ॥ यद्यपि पूर्व चतुर्दशअध्यायविषे तथासप्तदशअध्यायविषेभी श्रीभगवान सत्त्वादिकगुणोंकूं तथातिनगुणोंकृत सात्त्विकादिकभेदकूं कथनकरिआये है ॥ यातैं पुनः इहां तिनगुणोंके तथातिनगुणोंकृतभेदके कथनकरणेतैं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवै है तथापि तिनवचनोंकी इसप्रकारतैंव्यवस्थाकरणेकरिकै पुनरुक्तिदोषकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तहां पूर्वचतुर्दशअध्यायविषेतौ (तत्रसत्त्वंनिर्मलत्वात्) इत्यादिकवचनोंकरिकै सत्त्वादिकगुणोंविषे बंधकेहेतुपणेकाप्रकार निरूपणकऱ्याथा ॥ गुणातीतपुरुषके जीवन्मुक्तपणेकेनिरूपणकरणेवासतै और सप्तदशअध्यायविषेतौ (यजंतेसात्त्विकादेवान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै सत्त्वादिकगुणकृत त्रिविधस्वभावकेनिरूपणकरिकै यहअर्थ सिद्धकऱ्याथा ॥ इसअधिकारीपुरुषनैं असुररूपराजसतामसस्वभावकापरित्यागकरिकै सात्त्विकआहारादिकोंकेसेवनकरिकै दैवरूपसात्त्विकस्वभावही संपादनकरणा इति ॥ और इसअष्टादशअध्यायविषेतौ स्वभावतैं गुणातीतअसंगआत्माका क्रियाकारक फल इनतीनोंकेसाथि किंचित्मात्रभीसंबंधनहीं है ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै तिनक्रियाकारकादिकसर्वोंकूं त्रिगुणरूपताही है इसतैंभिन्नदूसराकोईस्वरूप तिनक्रियाकारकादिकोंकाहैनहीं जिसकरिकै इनक्रियाकारकादिकोंकूं आत्माकासंबंधीपणाहोवै इसअर्थकूंकथनकऱ्याहै ॥ इनतीनोंअध्यायोंकेवचनोंविषेविशेषताहै ॥ यातैं इहांपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे ज्ञान कर्म कर्त्ता इनतीं

होवैं हैं तथाजेजे कर्मकेआश्रयहोवैं हैं तेसर्व कारकरूपहीहोवैं हैं ॥ तथात्रिगुणात्मकहीहोवैं हैं ॥ और यहआत्मादेवतौ कारकभावतैंरहितहै तथातीनगुणों तैं भी रहितहै ॥ यातैंयहआत्मादेव सर्वकर्मोंकेस्पर्श तैंरहितहै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता तथा करण कर्म कर्त्ता यहदोत्रिक कथनकरे ॥ अबतिनदोनोंत्रिकोंविषे त्रिगुणरूपता अवश्यकरिकैकहणे योग्यहै ॥ यातैं श्रीभगवान् तिनदोनोंत्रिकोंकूं संक्षेपतैंकथनकरिकै तिनदोनोंत्रिकोंविषे त्रिगुणरूपताकीप्रतिज्ञाकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ज्ञानंकर्मचकर्त्ताचत्रिधैवगुणभेदतः ॥ प्रोच्यतेगुणसंख्यानेयथावच्छृणुतान्यपि ॥ १९ ॥ ज्ञानम् । कर्म । च । कर्त्ता । च । त्रिधा । एव । गुणभेदतः । प्रोच्यते । गुणसंख्याने । यथावत् । शृणु । तानि । अपि ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन सांख्य शास्त्रविषे ज्ञान तथा कर्मतथा कर्त्ता सत्त्वादिकतीनगुणोंकेभेदतैं तीनप्रकारका ही कथनकऱ्याहै तिनज्ञानादिकोंकूं तथातिनोंकेभेदोंकूं तूं यथावत् श्रवणकर ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां (ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञाता) इसपूर्वउक्तवचनविषे कथनकऱ्याजो प्रत्यक्षादिकप्रमाणजन्य वस्तुकाप्रकाशरूपअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै सोज्ञानही इहां ज्ञानशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और वस्तुविषे जोज्ञेयपणाहोवै है सो ज्ञानरूपउपाधिकृतहोवै है ज्ञानतैंविना ज्ञेयपणाहोवैनहीं ॥ यातैंपूर्वउक्त ज्ञेयका इसज्ञानविषेही अंतर्भावजानणा ॥ और इहां कर्मशब्दकरिकै यज्ञादिरूपक्रियाकाग्रहणकरणा ॥ जायज्ञादिरूपक्रिया (त्रिविधःकर्मसंग्रहः) इसवचनविषे पूर्वकर्मशब्दकरिकैकथनकरी है ॥ और (ज्ञानंकर्मच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै तिस चकारतैं पूर्वउक्त कर्म करण इनदोनोंकारकोंकाभी इसक्रियाविषे हीअंतर्भाव जानणा ॥ काहेतैं वस्तुविषेजोकारकपणाहोवै है सोक्रियारूपउपाधिकृतहोवै है ॥ क्रियातैंविना कारकपणाहोवैनहीं ॥ यातैं कर्मकरण इनदोनोंकारकोंका तिसक्रियाविषेअंतर्भाव युक्तही है ॥ और पूर्वश्लोकविषे (करणंकर्मकर्त्तेति) इसवचनविषे कथनकऱ्याजो क्रियाकाउत्पादक कर्त्ता है तिसीहीकर्त्ता का इहां कर्त्ताशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और (कर्त्ताच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै तिसचकारतैं पूर्वकथनकरेहुए परिज्ञाताका इसकर्त्ताविषेहीअंतर्भाव जानणा ॥ यद्यपि करण कर्म इनदोनोंकारकोंकीन्याईं कर्त्ताविषेभी सोक्रिया उपाधिकपणा तुल्यही है ॥ यातैं करण कर्म इनदोनोंकारकोंकीन्याईं कर्त्ताकाभीइहां पृथक्कथन नहींकऱ्याचाहिये॥तथापि कर्त्ताविषे जोपृथक् त्रिगुणतारूपकाकथनहै सो कुतार्किकपुरुषोंकेभ्रमकरिकैकल्पितआत्मपणेकेनिवृत्तकरणेवासतै है ॥ जिस कारणतैं तेकुतार्किकपुरुष कर्त्ताकूंहीआत्मामानैं हैं ॥ ऐसा ज्ञान तथाकर्म तथाकर्त्ता गुणसंख्यानविषे सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदतैं सात्त्विक राजस तामस

यहतीनों परस्पर समुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकैही सर्वकर्मोंकेआरंभकहोवैंहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैंहैं ॥ (त्रिविधाकर्मचोदना) इति । इहां चोदनानाम प्रवर्त्तककाहै अर्थात् ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता यहसमुच्चितहुएतीनोंही कर्मकेप्रवर्त्तक हैं ॥ः यद्यपि पूर्वमीमांसाविषे क्रियाविषेप्रवर्त्तकवचनकूंही चोदनाकह्याहै तथापि इहां ज्ञानादिकोंविषे वचनरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं वचनपणेकापरित्यागकरिकै क्रियाकेप्रवर्तकमात्रविषे इहां चोदनाशब्दकीलक्षणाकरणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अनात्मपदार्थोंविषेही प्रेरणीयत्वहै तथा प्रेरकत्वहै ॥ असंगआत्माविषे सोप्रेरणीयत्व तथाप्रेरकत्व हैनहीं इति ॥ इतनेकरिकै (ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाकर्मचोदना) इसपूर्वार्द्धकाअर्थ कथनकन्या ॥ अब (करणंकर्मकर्त्तेतित्रिविधःकर्मसंग्रहः) इसउत्तरार्द्धकाअर्थ वर्णनकरैं हैं ॥ तहां जिसकेव्यापारतैंअनंतर क्रियाकीसिद्धिहोवैहै ताकानाम करणहै ॥ सोकरण बाह्य अंतर भेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्रादिकइंद्रियतौ बाह्यकरणहै ॥ और मनबुद्धिआदिक अंतकरणहै ॥ और कर्त्तापुरुषकूं क्रियाकरिकै प्राप्तहोणेकूंइष्टजोकारकहै ताकानाम कर्महै सोकर्म उत्पाद्य आप्य संस्कार्य विकार्य इसभेदकरिकै च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोवस्तु उत्पत्तिकेयोग्यहोवैहै ताकूं उत्पाद्यकहैंहैं ॥ अथवा जोवस्तु पूर्वनहोइकै पश्चात् उत्पन्नहोवै ताकूं उत्पाद्यकहैंहैं ॥ और जोवस्तु पूर्वसिद्धहुआही प्राप्तहोवैहै ताकूं आप्यकहैहैं ॥ और गुणाधानमलापकर्षरूप संस्कारकेयोग्यजो वस्तुहै ताकूं संस्कार्यकहैहैं ॥ और पूर्वअवस्थाकापरित्यागकरिकै अवस्थांतरकीजाप्राप्तिहै ताकानाम विकारहै ताविकारकूं जोवस्तुप्राप्तहोवै ताकूं विकार्य कहैं हैं इति ॥ और जो इतरकारकोंकरिकैअप्रयोज्यहोवै तथासकलकारकोंकाप्रयोजकहोवै ताकानाम कर्त्ताहै सोकर्त्ता इहां चित्अचित्कीग्रंथिरूपलेणा ॥ यह करण कर्म कर्त्ता तीनोंही परस्परसमुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकै कर्मसंग्रहहैं अर्थात् कर्मोंकाआश्रयरूप हैं ॥ तहां (करणंकर्मकर्त्तेति) इसवचनकेअंतविषे स्थितजो इति यहशब्दहै तिसइतिशब्दतैं संप्रदान अपादान अधिकरण इनतीनकारकोंकाभी करणादिकतीनकारकोंविषेहीअंतरभाव ग्रहणकरणा ॥ तहां सम्यकश्रेयबुद्धिकरिकैजिसकेताईं वस्तु दईजावैहै ताकूं संप्रदानकहैं हैं ॥ जैसे वेदवेत्ताब्राह्मणकेताईं गौकूं देताहै ॥ इहां वेदवेत्ताब्राह्मण संप्रदानकारकहै ॥ और संयोगपूर्वकविभागविषेजोअवधिहै ताकूं अपादानकहैं हैं ॥ जैसे पर्वततैंश्रीगंगाजी उतरतीहै ॥ इहां पर्वत अपादानकारकहै ॥ आधारकानाम अधिकरणहै इति ॥ इसप्रकारके कर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्कारक व्याकरणविषेप्रसिद्धहैं ॥ तहां संप्रदान अपादान अधिकरण इनतीन कारकोंका कर्त्तादिकोंविषेअंतर्भावकरिकै श्रीभगवान्नैं इहां कर्त्ता कर्म करण यहतीनप्रकारकेकारक कथनकरेहैं ॥ इसप्रकार त्रिविधभावकूंप्राप्तहुआ सो कारकषट्कही सर्वक्रियाका आश्रयहै ॥ कूटस्थआत्मा किसीभीक्रियाकाआश्रय नहीं है इति ॥ यातैं इसश्लोककरिकै यहभावार्थसिद्धभया ॥ जेजे कर्मकेप्रेरक

तथाअभोक्ताहूं इसप्रकारकाजो अकर्त्ताआत्माकासाक्षात्कारहै इसीकानाम परमार्थसंन्यासहै ॥ इसप्रकारका परमार्थसंन्यास जनकअजातशत्रुआदिकतत्त्ववेत्तागृहस्थपुरुषोंविषेभी वियमानहै ॥ यातैं तेजनकादिकतत्त्ववेत्तापुरुषभी तिसपरमार्थसंन्यासवालेही हैं ॥ यद्यपिजनकादिकगृहस्थज्ञानियोंविषे आपणेवर्णआश्रमकेकर्म देखणेविषेआवैं हैं तथापि जैसे तत्त्ववेत्तापरमहंससंन्यासियोंविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं बाधितानुवृत्तिकरिकै अथवा अन्यपुरुषोंकीकल्पनाकरिकै भिक्षाअटनादिककर्म प्रतीतहोवैं हैं तैसे प्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं बाधितानुवृत्तिकरिकै अथवा अन्यपुरुषोंकीकल्पनाकरिकै तिनजनकादिकोंविषे सोकर्मोंकादर्शन विरुद्धनहीं है ॥ इसीकारणतैंही आत्मज्ञानकाफलभूत विद्वत्संन्यास कह्याजावैहै ॥ और साधनभूतजो विविदिषासंन्यासहै सोविविदिषासंन्यासतौ प्रथम इसप्रकारकानहींहुआभी ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर इसीप्रकारकाहीहोवैहै इति ।। १७ ।। ❀ ॥ तहांपूर्व अधिष्ठानादिकपांचोंकूं सर्वकर्मोंकाहेतुरूपकथनकरिकै आत्माकूं तिनसर्वकर्मोंकेस्पर्शतैंरहित कथनकऱ्या ॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थकूंही ज्ञानज्ञेयादिकप्रक्रियाकीरचनाकरिकै तथात्रैगुण्यभेदकेव्याख्यानकरिकै पूर्वतैंविलक्षणरीतितैं वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाकर्मचोदना ॥ करणंकर्मकर्तेतित्रिविधःकर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानम् । ज्ञेयम् । परिज्ञाता । त्रिविधा । कर्मचोदना । करणम् । कर्म । कर्त्ता । इति । त्रिविधः । कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता यहतीनों कर्मकेप्रवर्तकहैं तथा करण कर्म कर्त्ता यह तीनों कर्मकाआश्रयहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसनैं वस्तुकायथार्थस्वरूप प्रकाशमानकरीताहै ताकानाम ज्ञानहै अर्थात् प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जन्य जो घटादिकविषयोंकाप्रकाशरूपक्रियाहै ताकानाम ज्ञानहै ।। और तिसज्ञानरूपक्रियाकेकर्मभूत जेघटादिकपदार्थ हैं तिन्होंकानाम ज्ञेयहै ॥ और तिसज्ञानरूपक्रियाकाआश्रयभूत तथाअंतःकरणरूपउपाधिकरिकै परिकल्पित ऐसाजो भोक्ताहै ताकानाम परिज्ञाताहै ॥ यह ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता समुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकैही इष्ट अनिष्टरूपसर्वकर्मोंकाआरंभकरै है ॥ इनतीनोंकेसमुच्चयतैंविना किसीभीकर्मकाआरंभहोवैनहीं ॥ काहेतैं ज्ञेयके तथा ज्ञाताके वियमानहुएभी ज्ञानकेअभावहुए इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ।। यातैं प्रवृत्तिविषे तिसज्ञानकूं अवश्यहेतु मान्याचाहिये ।। और ज्ञानके तथाज्ञाताके वियमानहुएभी देशकालकरिकैज्ञेयकेव्यवहितहुए इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ।। यातैं तिसप्रवृत्तिविषे ज्ञेयकूंभी अवश्यहेतुमान्याचाहिये ।। और सुषुप्तिअवस्थाविषे संस्काररूप ज्ञानज्ञेयकेवियमानहुएभी ज्ञाताकेअभावतैं इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रवृत्तिविषे परिज्ञाताकूंभी अवश्यहेतुमान्याचाहिये ।। यातैं ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता

त्तापुरुषकीबुद्धि लिपायमाननहींहोवेहै ।। सो पूर्वउक्तदुर्मतिपुरुषतैंविलक्षण सुमति परमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माकूं केवल अकर्ताहीदेखै हैं कदाचित भी आत्माकूं कर्तामानतानहीं ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानकेअभावतैं अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेकर्मकेफलकूं कदाचित्भी प्राप्त होतानहीं ॥ इतनाही इसगीताशास्त्रकाअर्थ है इति ।। अब श्रीभगवान् तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीस्तुतिकरणेवासतै तिसपूर्वउक्त अहंकारकेअभावकूं तथा बुद्धि लेपकेअभावकूं कथनकरैं हैं (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) इति हे अर्जुन ! ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष इनसर्वप्राणियोंकूं हननकरिकैभी नहींहननकरै है ॥ अर्थात् मैंअसंग आत्मा सर्वदा अकर्ताहूं इसप्रकारके अकर्तास्वरूपके साक्षात्कारतैं सो तत्त्ववेत्तापुरुष तिसहननरूप क्रियाकाकर्ताहोवैनहीं ।। इसी कारणतैंही सोतत्त्ववेत्तापुरुष बंधायमानभीहोतानहीं अर्थात् तिस हननरूपक्रियाकेकार्यरूप अधर्मफलकेसाथिभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ इहां (यस्य नाहंकृतोभावः) इसवचनकेअर्थकातौ (नहंति) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ।। और (बुद्धिर्यस्यनलिप्यते) इसवचनकेअर्थकातौ (ननिबध्यते) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ।। इहां (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें तत्त्वसाक्षात्कारकामहत्त्व कथनकरयाहै ॥ कोई तत्त्ववेत्तापुरुष सर्वप्राणियोंकाहननकरै इसअर्थविषे भगवान्का तात्पर्यहैनहीं ।। और सर्वात्मदर्शीतत्त्ववेत्तापुरुषविषे सर्वप्राणियोंकाहन नकरणा संभवतानहीं ॥ और (हत्वापिसइमाँल्लोकान्) इसवचनकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषे जो हननक्रियाकाकर्त्तापणा कथनकरयाहै सो लौकिकबाधितकर्तृ त्वदृष्टिकरिकैकथनकरयाहै ॥ और (नहंति) इसवचनकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषे जो कर्तृत्वकानिषेधकरयाहै सोशास्त्रीयपरमार्थिकदृष्टिकरिकै निषेध करयाहै ।। यातैं (हत्वा नहंति) इनदोनोंवचनोंका परस्परविरोधहोवैनहीं इति ॥ तहां इसगीताशास्त्रकेआदिविषे (नायंहंतिनहन्यते) इसवचनकरिकै आत्मा विषे सर्वकर्मोंकाअस्पर्शीपणा प्रतिज्ञाकरिकै (नजायतेम्रियते) इत्यादिकेहेतुरूपवचनोंकरिकै तिसप्रतिज्ञातअर्थकीसिद्धिकरिकै (वेदाविनाशिनंनित्यम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै विद्वान्पुरुषकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति संक्षेपकरिकैकथनकरीथी ॥ और सोईही सर्वकर्मोंकेअधिकारकी निवृत्ति मध्यविषे तिस तिसप्रसंगकरिकै विस्तारतैंप्रतिपादनकरीथी ॥ और इहां इतनाही इसगीताशास्त्रकाअर्थ है ॥ इसप्रकारतैं शास्त्रअर्थकेएकतावत्त्वदिखावणेवासतै (नहंतिननिबध्य ते) इसवचनकरिकै सासर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति उपसंहारकरीहै ।। यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अविद्याकरिकैकल्पित तथाअधिष्ठानादिकपंचअनात्मपदा र्थोंकरिकैकरेहुए ऐसेजे विहितनिषिद्धकर्म हैं तिनसर्वकर्मोंका अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकीआत्मविद्याकरिकै मूलसहित उच्छेदहोइजावै है ॥ याकारणतैं पर मार्थसंन्यासीपुरुषोंकूं अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाकर्मकाफल नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकरयाथा सोयुक्तहीहै ॥ तहां मैंआत्मा अकर्ताहूं

संबंधकरिकै मैंस्वप्रकाशअसंगचैतन्यनैं प्रकाशकरीते हैं ॥ तेअधिष्ठानादिकपंचही सर्वकर्मोंकेकर्त्ता हैं ॥ मैंअसंगआत्मा कदाचित्भी तिनकर्मोंका कर्त्तानहींहूं ॥ किंतु मैंआत्मादेवतौ तिनअधिष्ठानादिकपंचकर्त्तावोंका तथातिनोंकेव्यापारोंका साक्षीभूतहूं ॥ तथा क्रियाशक्तिवालेप्राणरूपउपाधितैं तथाज्ञानशक्तिवालेअंतःकरणरूपउपाधितैं मैं रहितहूं ॥ तथा मैं शुद्धहूं ॥ तथासर्वकार्यकारणोंकेसंबंधतैं मैं रहितहूं ॥ तथा मैं कूटस्थनित्यहूं ॥ तथा मैं सर्वद्वैततैंरहितहूं ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैं मैं रहितहूं ॥ इसीप्रकारके हमारेस्वरूपकूं ॥ (असंगोह्ययंपुरुषःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च अप्राणोह्यमनाःशुभ्रोअक्षरात्परतःपरः ॥ अज आत्मामहान्ध्रुवः सलिलएकोद्रष्टाद्वैतः अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणः निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनिरवद्यंनिरंजनम्) ॥ इत्यादिकश्रुतियांभी प्रतिपादनकरैं हैं ॥ तथा इसीप्रकारकेहमारेस्वरूपकूं (अविकार्योयमुच्यते ॥ प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः ॥ अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते ॥ तत्त्ववित्तुनसज्जते ॥ शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते ॥) इत्यादिकस्मृतियांभीप्रतिपादनकरैं हैं ॥ यातैं मैंअसंगआत्मा तिनकर्मोंकाकर्त्तानहींहूं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै जोतत्त्ववेत्तापुरुष असंगआत्माकूं कर्त्तामानतानहीं किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकूंही सर्वकर्मोंकाकर्त्तामानैं है इति ॥ इसीकारणतैंही जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी अंतःकरणरूपबुद्धि नहींलिपायमानहोवैहै अर्थात् जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि अनुशयवालीहोतीनहीं ॥ तहां इसकर्मकूं मैं करूंगा तथा इसकर्मके फलकूं मैं भोगौंगा इसप्रकारकाजो अनुसंधानहै जो अनुसंधान कर्त्ताभोक्तापणेकीवासनारूपनिमित्तकरिकैजन्यहै तिसअनुसंधानरूपलेपकानाम अनुशयहै ॥ सोलेपरूपअनुशय पुण्यकर्मविषेतौ हर्षरूपहोवैहै ॥ और पापकर्मविषे पश्चात्तापरूपहोवै है ॥ इसप्रकारके दोनोंप्रकारकेलेपकरिकै जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि युक्तनहींहोवै है ॥ काहेतैं अकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमान निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि तिसअनुशयरूपलेपयुक्तहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (नैनंकृताकृतेतपतः । एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणानोकनीयान् । तंविदित्वानलिप्यते कर्मणापापकेन । यथापुष्करपलाशआपोनश्लिष्यंतएवमेवंविदिपापकर्मनश्लिष्यते) ॥ अर्थयह ॥ जैसे अज्ञानीपुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्मतपायमानकरै है तैसे इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्म तपायमानकरतानहीं ॥ और इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका यहमहान्प्रभावहै ॥ जो पुण्यकर्मकरिकैतौ हर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ तथा पापकर्मकरिकै परितापकूंनहींप्राप्तहोता ॥ और मैं ब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकै यहतत्त्ववेत्तापुरुष पुण्यपापकर्मोंकरिकैलिपायमानहोतानहीं ॥ और जैसे जलविषेस्थितकमलकेपत्रकूं जलस्पर्शकरतेनहीं तैसे इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुण्यपापकर्म स्पर्शकरतानहीं इति ॥ इतनेकहणेकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतभावनहीं है ॥ तथा जिसतत्त्वे

संबन्धपणा संभवतानहीं ॥ और (केवलम्) यहशब्दतौ स्वभावतैंसिद्धही आत्माकेअसंगअद्वितीयरूपकूं अनुवादकरै है ॥ आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेपुरुषोंविषे दुर्मतिपणा बोधनकरणेवासतै ॥ यातैं (केवलम्) इसशब्दतैं सोवादीकाअर्थ सिद्धहोइसकैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां (पंचेमानिमहाबाहो) इत्यादिक च्यारिश्लोकोंकरिकै (अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्य) इन पूर्वउक्तश्लोकके तीनचरणोंका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (नतुसंन्यासिनां क्वचित्) इसचतुर्थचरणका श्रीभगवान् एकश्लोककरिकै व्याख्यानकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यस्यनाहंकृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते ॥ हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते ॥ १७ ॥ यस्य । न । अहंकृतः । भावः । बुद्धिः । यस्य । न । लिप्यते । हत्वा । अपि । सः । इमान् । लोकान् । न । हंति । न । निबध्यते ॥१७॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! जिसविद्वान्पुरुषकी मैंकर्त्ताहूंइसप्रकारकी वृत्ति नहींहोवैहै तथा जिसविद्वान्पुरुषकी बुद्धि नहीं लिपायमानहोवैहै सोविद्वान्पुरुष इन लोकोंकूं हनन करिकै भी नहीं हननकरै है तथानहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका ! हेअर्जुन ! पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्याजो दुर्मतिपुरुषहै तिसदुर्मतिपुरुषतैंअत्यंतविलक्षण जोअधिकारीपुरुषहै जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै विवेककेविरोधीपापकर्मोंकेक्षयहुए विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंकूंप्राप्तहुआहै तथा गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं उत्पन्नहुआहै अकर्त्ता अभोक्ता स्वप्रकाश परमानंद अद्वितीय ब्रह्ममैंहूं याप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार जिसकूं ऐसे जिसविद्वान्पुरुषका अहंकृतभाव नष्टहोइगयाहै अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअज्ञानकेबाधितहुए जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी मैंकर्ताहूं इसप्रकारकीवृत्ति कदाचित्भी नहींहोवैहै ॥ अथवा (यस्यनाहंकृतोभावः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषका भाव कहिये सद्भाव अहंकृतोन कहिये अहंइसप्रकारकेकथनयोग्यनहींहै ॥ काहेतैं तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अहंकारकेबाधहुए तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका शुद्धस्वरूपमात्रही परिशेषतैंरहै है ॥ तिसशुद्धस्वरूपविषे मनवाणीकी विषयताहैनहीं ॥ अथवा (यस्यनाहंकृतोभावः) इसवचनका यहतीसराअर्थ करणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतः कहिये अहंकारका भाव कहिये तादात्म्यअध्यास नहींहै ॥ काहेतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका सोतादात्म्यअध्यास विवेककरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ यद्यपि व्यवहारकालविषे तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषेभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सोकर्त्तापणा प्रतीतहोवैहै तथापि सोतत्त्ववेत्तापुरुष इसप्रकारकाविचारकरिकै आपणेआत्माविषे सोकर्त्तापणा मानतानहीं किंतु पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकपांचोंविषेही सोकर्त्तापणा मानताहै सोविचार दिखावैं हैं ॥ सर्वात्मारूपमेरेविषे मायाकरिकैकल्पित जोपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहैं जेअधिष्ठानादिकपंच कल्पित

आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंदेखतानहीं इसविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसविपरीतदर्शनविषे हेतुकहैं हैं (अकृतबुद्धित्वात्इति) तहां गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैनहींउत्पन्नकरीहैविवेकबुद्धि जिसनैं ताकानाम अकृतबुद्धिहै ॥ ऐसाअकृतबुद्धिहोणेतैं सोपुरुष आत्माकूं विपरीतहीदेखै है अर्थात् वास्तवतैं असंग उदासीन अकर्त्तारूपभी आत्माकूं सोभ्रांतपुरुष कर्त्तारूपही देखै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत रज्जुकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींहुआ तबपर्यंत यहपुरुष सर्पभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरिसकतानहीं तैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत सत्य ज्ञान अनंत अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद तीनअवस्थावोंतैंरहित असंग उदासीन ऐसाब्रह्म मैंहूं इसप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै नहींउत्पन्नहुआहै तबपर्यंत यहपुरुष तिस कर्तृत्वभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकैनिवृत्तकरिसकतानहीं इति ॥ शंका—हेभगवन् ! सोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै इसप्रकारके ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूं किसवासते नहींउत्पन्नकरता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहैं हैं (दुर्मतिःइति) तहां विवेककेप्रतिबंधकपापकर्मोंकरिकै मलिनहुईमतिजिसकी ताकानाम दुर्मतिहै ऐसादुर्मतिहोणेतैंही सोभ्रांतपुरुषब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचार करतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ पापकर्मोंकरिकैअशुद्धबुद्धिवालाहोणेतैं नित्यअनित्यवस्तुविवेकादिकोंतैंरहितपणेकरिकै ब्रह्मात्मज्ञानकेअयोग्यहोणेतैं सोभ्रांतपुरुष अविद्याकरिकै अकर्त्तारूपभीआत्माकूं कर्त्तारूपकल्पनाकरताहुआ तथाकेवलरूपभीआत्माकूं अकेवलरूपकल्पनाकरताहुआ तथाकर्मकेकर्त्तारूपअधिष्ठानादिकपांचोंविषे तादात्म्यअभिमानतैं कर्मोंकेत्यागकरणेविषेअसमर्थहुआ इसीकारणतैंही संसारी कर्मकाअधिकारी देहभृत् अकृतबुद्धि इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सर्वप्रकारतैं जन्ममरणकीप्राप्तिकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारके कर्मकेफलकूंही अनुभवकरै है ॥ इतनेकरिकै जोतार्किक देहादिकों तैंव्यतिरिक्त आत्माकूंही केवल कर्त्तादेखै है सोतार्किकभी अकृतबुद्धिहीजानणा यहअर्थ बोधनकर्‍या इति ॥ और केईकवादीतौ (तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः) इसश्लोकका यहअर्थ करै हैं ॥ आत्मा केवल कर्त्तानहींहै किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिल्याहुआ आत्मा कर्त्ताहोवैहै ॥ इसप्रकारवास्तवतैं तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलिकैकर्त्ता भावकूं प्राप्तहुएआत्माकूं जोपुरुष केवल कर्त्तादेखै है अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकोंकेसंबंधतैंविना केवल एकआत्माकूंही कर्त्तादेखताहै सोपुरुष दुर्मतिहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ (केवलम्) इसशब्दकेप्रयोगतैंसिद्धहोवै है इति ॥ सोयहवादियोंकाअर्थ समीचीननहीं ॥ काहेतैं सर्वक्रियावों तैंरहित असंगआत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलनाहीसंभवतानहीं ॥ और जलसूर्यकीन्याई तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि असंगआत्माका जोआविद्यक मिलना अंगीकारकरिये तौ तिसआविद्यक मिलनेकरिकै आत्माविषे सोकर्तृत्वभी आविद्यकहीहोवैगा ॥ और तेअधिष्ठानादिकभीसर्व आविद्यकही हैं ॥ ऐसेकल्पितअधिष्ठानादिकोंकेसाथि आत्माका वास्तव

होवैनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां इनपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकूंही सर्वकर्मोंकाकर्त्तापणाहोणेतैं असंगआत्माकूं तिनकर्मोंकाकर्त्तापणा हैनहीं ॥ इसप्रकारकाजो आत्माविषे अकर्त्तापणेकाज्ञानहै तथा तिनअधिष्ठानादिकपांचोंविषे कर्त्तापणेकाज्ञानहै सोज्ञानही तिनअधिष्ठानादिकपांचोंके निरूपणकाफलहै ॥ ऐसेफलकूं अब श्रीभगवान् आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेमूढपुरुषोंकीनिंदापूर्वकइसचतुर्थश्लोककरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः ॥ पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः ॥ १६ ॥ तत्र । एवंसति । कर्त्तारम् । आत्मानम् । केवलम् । तु । यः । पश्यति । अकृतबुद्धित्वात् । न । सः । पश्यति । दुर्मतिः ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिनसर्वकर्मों विषे अधिष्ठानादिकपांचोंकरिकैजन्यताकेहुएभी जोमूढपुरुष असंग उदासीनरूपही आत्माकूं कर्त्तारूप देखताहै सो दुर्मति पुरुष शास्त्रजन्यविवेकबुद्धितैं रहितहोणेतैं नहीं देखताहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरेजे धर्मअधर्मरूप सर्वकर्म हैं तिनसर्वकर्मोंविषे पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकरिकै जन्यताके सिद्धहुएभी वास्तवतैं असंगउदासीनरूपहीआत्माकूंजोमूढपुरुष कर्त्तारूप देखताहै अर्थात् जोआत्मादेव सर्वजडप्रपंचकाप्रकाशकहै तथा सत्तास्फूर्त्तिरूपहै तथा स्वप्रकाशपरमानंदघनहै तथा बाधतैंरहितहै तथा असंगउदासीनहै तथा अकर्त्ता है तथा अविक्रियहै तथा अद्वितीयहै वास्तवतैं इसप्रकारका असंगउदासीनअकर्त्तारूपहुआभी जोआत्मादेव अविद्याकरिकै पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकारणोंविषे प्रतिबिंबितहोवै है ॥ जैसे सूर्य जलविषे प्रतिबिंबितहोवै है ॥ तहां जलादिकोंकूंप्रकाशकरणेहारा सोसूर्य यद्यपि तिनजलादिकों तैंभिन्नहै तथापि तिसजलकेसाथि तिससूर्यकातादात्म्यभावकल्पनाकरिकै मूढपुरुष जैसे तिसजलकेचलनकरिकै तिससूर्यकूं चलायमानहुआ मानताहै तैसे तिनअधिष्ठानादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारे असंगअद्वितीय आत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि तादात्म्यभावकूंकल्पनाकरिकै तिनअधिष्ठानादिकोंकेकर्मोंका असंगआत्माविषे आरोपणकरिकै जोपुरुष मैंहीकर्मोंकाकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं सर्वकेसाक्षीरूपभीआत्माकूं क्रियाकाआश्रयरूप देखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुकेवास्तवस्वरूपकूं नहींजानणेहारापुरुष तिसरज्जुकूं भुजंगरूपकरिकैकल्पनाकरै है तैसे आत्माके असंगअकर्त्तारूपवास्तवस्वरूपकूं नहींजानताहुआ जोपुरुष अविद्याकरिकै तिसअसंगआत्माकूं तिन देहादिकोंकेकर्मका आश्रयरूपकरिकैमानै है सोभ्रांतपुरुष इसप्रकारतैंआत्माकूंदेखताहुआभी नहीं देखताहै ॥ जैसे रज्जुकूं सर्परूपकरिकैदेखताहुआभी भ्रांतपुरुष तिसरज्जुकूं नहीं देखेहै तैसे वास्तवतैं असंगउदासीन अकर्त्ता आत्माकूं कर्त्तारूपकरिकैदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष तिसआत्माकूं नहींदेखैहै ॥ शंका—हे भगवन् ! सोमूढपुरुष भ्रांतिकरिकै आत्माकूं विपरीतहीदेखैहै ॥

(मू. श्लो.) शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतनरेः ॥ न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः ॥ १५ ॥ शरीरवाङ्मनोभिः । यत् । कर्म । प्रारभते । नरः । न्याय्यम् । वा । विपरीतम् । वा । पंच एते । तस्य । हेतवः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यह पुरुष शरीरवाक्मनइनतीनोंकरिकै जिस धर्मरूप अथवा अधर्मरूप कर्मकूं प्रारंभकरै है तिनसर्वकर्मके यह अधिष्ठानादिकपंचही कारण रूपहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां शारीर वाचिक मानसिक यहविधिनिषेधरूप तीनप्रकारकाहीकर्म धर्मशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तथा (प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारंभः) इसवचनकरिकै अक्षपादनैंभी सोतीनप्रकारकाहीकर्म कथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रधानताकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै अथवा वाक्करिकै अथवामनकरिकै जिस न्याय्यरूपकर्मकूं अथवा विपरीतरूपकर्मकूं प्रारंभकरै है तिससर्वहीकर्मके यहपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहीकारणरूपहैं ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित जेअग्निहोत्रादिकधर्म हैं ताकूं न्याय्यकहैं हैं ॥ और तिसश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जेहिंसादिकअधर्म हैं ताकूं विपरीतकहैं हैं ॥ तहां जीवनकेहेतुभूत जे उच्छास निःश्वास निमेष उन्मेष क्षुत जृंभण इत्यादिक स्वाभाविककर्म हैं तथा अन्यभीजेकेई विहितप्रतिषिद्धकेसमान कर्म हैं तेसर्वकर्म पूर्वकरेहुएधर्मअधर्मदोनोंकेही कार्यरूपहैं ॥ यातैं तेसर्वकर्म न्याय्य विपरीत इनदोनोंकर्मोंविषेही अंतर्भूतहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्केवचनविषेन्यून तादोषकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और शास्त्रका तथा शास्त्रउक्तकर्मका मनुष्यही अधिकारीहोवैहै ॥ इसअर्थके बोधनकरणेवासते श्रीभगवान्नैं मनुष्यकावाचक (नरः) यहशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शंका—शरीर वाक् मन इनोंकरिकै जोकर्म प्रारंभ कऱ्याजावैहै इसप्रकारकावचनकरिकै पश्चात् तिससर्वकर्मके अधिष्ठानादिकपंचकारणहैं यहवचनकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान इहां (शरीर) इसपदकरिकै अधिष्ठानका ग्रहणकरणा ॥ और (नरः) इसपदकरिकै कर्त्ताका ग्रहणकरणा ॥ और (वाङ्मनः) इसपदकरिकै करणका ग्रहणकरणा ॥ और (प्रारभते) इस पदकरिकै चेष्टाका ग्रहणकरणा ॥ और (न्याय्यंवाविपरीतंवा) इसवचनकरिकै धर्मअधर्मरूपदैवका ग्रहणकरणा ॥ यद्यपि सर्वकर्मोंविषे अधिष्ठानादिक पांचोंकारणोंकाउपयोग समानहै तिनपांचोंतैंविना कोईभीकर्म सिद्धहोतानहीं तथापि श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे विधिप्रतिषेधरूप शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकाहीकर्म प्रसिद्धहै ॥ यातैं यहकर्म शारीरहै वाचिकहै यहकर्म मानसहै इसप्रकारकाजो कथनहै सोकथन तिसतिसकर्मविषे तिसतिसशरीरादिकोंकीप्रधानताकी अपेक्षाकरिकैहै ॥ कोईसोकथन तिनशारीरादिककर्मोंविषे अधिष्ठानादिकपांचों कीहेतुताकूं निवृत्तकरतानहीं ॥ यातैं किंचित्मात्रभी इहांविरोध

और (सधीःस्वप्नोभूत्वेमंलोकमतिक्रामतिमृत्योरूपाणि ध्यायतीवलेलायतीव) इत्यादिक श्रुतियोंविषे तिनउत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा अंतःकरणरूपबुद्धिविषे कथनकऱ्याहै ॥ इहां जोकदाचित् प्राण अंतःकरण इनदोनोंउपाधियोंका स्वतंत्रहीभेद अंगीकारकरिये तौ जीवात्माकेभी भेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सोजीव काभेद सिद्धांतविषे अंगीकृतनहीं है ॥ यातैं अंतःकरणप्राण इनदोनोंकूं एकरूपकरिकैही उत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा युक्तहै ॥ और प्राण अंतःकरण इन दोनोंका जोभेद कथनकऱ्याहै सोभेदतौ तिनोंकेएकभावविषेभी क्रियाशक्ति ज्ञानशक्तियोंकेभेदकरिकै संभवहोइसकैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञान शक्तिभागकेलयहुएभी क्रियाशक्तिभागकाजोदर्शनहै सोदर्शनतौ प्राणअंतःकरणकेएकभावविषेभी विरुद्धनहींहै ॥ और दृष्टिसृष्टि लयविषे सर्वकेलयहुएभी सो प्राणव्यापारवाला सुषुप्तपुरुषकाशरीर अन्यपुरुषों नैं यहसोयाहुआहै इसप्रकारतैं कल्पनाकरीताहै ।। यातैं दोनोंप्रकारतैंभी प्राण अंतःकरण इनदोनोंकेभेदकाकथन संभवहोइसकैहै इति ॥ और पूर्व उक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपकर्त्ता तथाद्वादशप्रकारकाकरण तथाप्राणादिरूपचेष्टा इनसर्वोंकेऊपरि यथाक्रमतैं अनुग्रहकरणेहारे जेदेवताहैं तिनदेवतावोंकानाम दैवहै सोदैव इहां कारणवर्गविषे पंचमहै अर्थात् पंचत्वसंख्याकेपूर्णकरणेहाराहै ।। इहां (दैवंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरावणेवास्तैहै अर्थात् पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकोंकीन्याई यहदैवभी अनात्मारूपहै तथा भौतिकहै तथामायाकरिकैकल्पितहै इति ।। तहां कर्त्ता करण चेष्टा इनतीनोंकाअधिष्ठान जोशरीरहै तिसशरीररूपअधिष्ठानकातौ पृथिवीदेवताहै ॥ काहे तैं (यत्रास्यपुरुषस्यमृतस्याग्निंवागप्येतिवातंप्राणश्चक्षुरादित्यंमनश्चंद्रंदिशःश्रोत्रंपृथिवींशरीरम्) इसश्रुतिविषे वाक्आदिकोंकेअधिष्ठाताअग्नि आदिकोंकेसाथि शरीरकाअधिष्ठातारूपकरिकै पृथिवीका पठनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्रुतिप्रमाणतैं शरीररूपअधिष्ठानका पृथिवीही देवतासिद्धहोवैहै ॥ और कर्त्ता रूपअहंकारका रुद्रदेवताहै सो पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहै इसप्रकार श्रोत्रादिककरणोंके अधिष्ठातादेवताभी प्रसिद्धहीहैं ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण इनपंचज्ञानइंद्रियोंके यथाक्रमतैं दिक् वात अर्क प्रचेता अश्विनी यहपंच देवताहैं ।। और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ इनपंचकर्मइंद्रियोंके यथाक्रमतैं वह्नि इंद्र उपेंद्र मित्र प्रजापति यहपंच देवताहैं ॥ और मन बुद्धि इनदोनोंके यथाक्रमतैं चंद्र बृहस्पति यहदोनों देवताहैं ॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान इनचेष्टा रूपपंचप्राणोंकेतो यथाक्रमतैं सद्योजात वामदेव अघोर तत्पुरुष ईशान यहपंच देवताहैं ते पुराणादिकोंविषे प्रसिद्धहीहैं ।। और किसीटीकाविषेतौ दैवशब्द करिकै धर्मअधर्मकाग्रहणकऱ्याहै इति ।। १४ ।। ❀ ।। तहां पूर्वश्लोकविषे तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंका स्वरूपकथनकऱ्या ।। अब इसतृतीयश्लोककरिकै श्रीभगवान तिनपांचोंविषे सर्वकर्मोंकेकारणपणेकूं कथनकरैं हैं ।

तिसकर्ताविषे अनात्मरूपताकानिश्चय अत्यंतसुगमहोवैहै इति ॥ और अपंचीकृतपंचमहाभूतोंतैंउत्पन्नहुए तथाशब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप ऐसेजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं तिनइंद्रियोंकानाम करणहै ॥ कैसाहैसोकरण पृथग्विधहै अर्थात् श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथा मन बुद्धि इसद्वादशभेदकरिकै नानाप्रकारकाहै ॥ यद्यपि शास्त्रविषे मन बुद्धि चित्त अहंकार यहच्यारोंही अंतःकरणकेभेद कथनकरेहैं तथापि इहांकारणवर्गविषेस्थित मन बुद्धि यहदोनोंतिसअंतःकरणरूपअहकारके वृत्तिविशेषलैणे ॥ और तिनवृत्तियोंवाला जो अहंकारहै सोअहंकारतौ केवल कर्त्तारूपहीहै करणरूप हैनहीं ॥ और चेतनकाआभासतौ सर्वत्रतुल्यहीहै ॥ तहां अतःकरणरूपअहंकारविषे कर्त्तापणा (विज्ञानंयज्ञंतनुते) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहीहै ॥ इहां (करणंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैहै अर्थात् जैसे पूर्वउक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपकर्त्ता अनात्मारूपहै तथाभौतिकहै तथाकल्पितहै तैसे यहद्वादशप्रकारका करणभी अनात्मारूपहै तथाभौतिकरूपहै तथा कल्पितहै इति ॥ और क्रियाशक्तिहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे अपंचीकृतपंचमहाभूतहैं तिनपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप तथाक्रियाप्रधानत्वरूपकरिकै तथावायवी यत्वरूपकरिकै कथनकरेहुए ऐसेजे क्रियारूपप्राणादिकहैं तिनक्रियारूपप्राणादिकोंकानाम चेष्टाहै ॥ कैसीहैचेष्टा विविधाहै अर्थात् प्राण अपान व्यान उदान समान इसभेदकरिकैतौ पंचप्रकारकीहै ॥ अथवा नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय इनपांचोंकूंमिलाइकै दशप्रकारकीहै ॥ तहां यहनागादिकपंचप्राणादिक पां चोंकेअंतर्भूतही हैं ॥ यातैं बहुतस्थलोंविषे पंचहीप्राण कथनकरेहैं ॥ पुनःकैसीहैतेप्राणरूपचेष्टा पृथक्हैं अर्थात् स्थानकेभेदतैं तथाकार्यकेभेदतैं भिन्नभिन्नहै ॥ इहां (विविधाश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैहै अर्थात् जैसे पूर्वउक्त अधिष्ठान कर्त्ता करण यहतीनों अनात्मारूपहैं तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहैं तैसे यहप्राणरूपचेष्टाभी अनात्मारूपहै तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहै इति ॥ इहां केईकविद्वान्पुरुषतौ यहकहैं हैं ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे कर्त्तारूपअंतःकरणकेलयहुएभी प्राणकाव्यापार देखणेविषेआवैहै ॥ और जहांतहां प्राणकूं अंतःकरणतैंभिन्नकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोप्राण अंतःकरणतैं अत्यंतभिन्नकीन्याईहै इति ॥ और केईकसूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषतौ यहकहैं हैं ॥ क्रियाश क्तिवाला तथाज्ञानशक्तिवाला एकही अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्य चेतनके जीवपणेकाउपाधिहै ॥ सोजीवपणेकाउपाधिरूप एकहीकार्य क्रियाशक्तिकीप्रधानता करिकैतौ प्राण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ज्ञानशक्तिकोप्रधानताकरिकै अंतःकरण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ काहेतैं (सईक्षांचक्रे कस्मिन्वाहमुत्क्रांते उत्क्रांतोभविष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठास्यामीति सप्राणमसृजत) इसश्रुतिविषे उत्क्रांति स्थिति आदिकोंकाउपाधिपणा प्राणविषे कथनकऱ्याहै ॥

स्त्रविषे जो सर्वकर्मोंकाअंतपणा कथनकऱ्याहै सोयुक्तहै ॥ इसीअर्थकूं श्रीगवान् (सर्वकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनकरिकैभी कथनकरताभयाहै इति ॥ इहां कितनेकमूलपुस्तकोंविषे (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ और कितनेकमूलपुस्तकोंविषे (पंचैतानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ परंतु श्रीभाष्यकारोंनैं तथाश्रीमधुसूदननैं तथानीलकंठपंडितनैं (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठअंगीकारकरिकैव्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं इसपुस्तकविषेभी (पंचेमानि) इसप्रकारकाही पाठरख्याहै ॥ इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां वेदांतशास्त्रहैप्रमाणाणजिनोंविषे ऐसेजे कर्म केपंचकारणहैं तेपंचकारण आत्माकेअकर्त्तापणेकीसिद्धिवास्तै परित्याज्यरूपकरिकै जानणेयोग्यहैं ॥ यहअर्थ पूर्वकथनकऱ्या ॥ तहां तेपंचकारण कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् द्वितीयश्लोककरिकै तिनपांचों केस्वरूपकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणंचपृथग्विधम् ॥ विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥ १४ ॥ अधिष्ठानम् । तथा । कर्त्ता । करणम् । च । पृथग्विधम् । विविधाः । च । पृथक् । चेष्टाः । दैवम् । च । एव । अत्र । पंचमम् ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! अधिष्ठान तथा कर्त्ता तथा नानाप्रकारका करण तथा नानाप्रकारकी भिन्नभिन्न चेष्टा तथा इनकारणोंविषे पंचमा दैव यहपांचों कर्म के कारणहैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इच्छा द्वेष सुख दुःख चेतना इत्यादिकधर्मों केअभिव्यक्तिकाआश्रयरूप जोयह पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यरूप स्थूलशरीरहै ताशरीरकानाम अधिष्ठानहै ॥ और मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारकेअभिमानवाला तथाज्ञानशक्तिप्रधानअपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप ऐसाजो अहंकारहै जोअहंकार अंतःकरण बुद्धि विज्ञान इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकऱ्याजावैहै तथा जोअहंकार आत्माकेसाथि तादात्म्यअध्यासकरिकै स्वनिष्ठकर्तृत्वादिकधर्मोंकूं आत्माविषेआरोपणकरणेहाराहै ताअहंकारकानाम कर्त्ता है ॥ इहां (तथाकर्त्ता) इसवचनविषेस्थित जो तथा यहशब्दहै तिस तथाशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसअहंकाररूपकर्त्ताविषे पूर्वउक्तशरीररूपअधिष्ठानकीसदृशता कथनकरीहै अर्थात् जैसे सोशरीररूपअधिष्ठान अनात्मारूपहै तथाआकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूपहै तथास्वप्नकेपदार्थोंकीन्याई मायाकरिकैकल्पितहै ॥ तैसे यहअहंकाररूपकर्त्ताभी अनात्मारूपहै तथाभूतोंकाकार्यरूपहै तथास्वप्नपदार्थोंकीन्याई कल्पितहै ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ इसस्थूलशरीरकूं यद्यपि लोकायतिकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकैग्रहणकऱ्याहै तथापि अन्यशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तिसस्थूलशरीरकूं अनात्मारूप करिकैही निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसेस्थूलशरीरकूं जबी कर्त्ताविषे दृष्टांतरूपकरिकै कथनकऱ्या तबी तार्किकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकै ग्रहणकऱ्या जोकर्त्ता है

हे अर्जुन ! तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कृतांतरूपसांख्यशास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ तहां ब्रह्मानंदरूपनिरतिशयपुरुषार्थकीप्राप्तिवासतै तथाजन्ममरणादिकसर्वअनर्थोंकी निवृत्तिवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं जाणणेयोग्यजे जीव ब्रह्म तिनदोनोंकीएकता ताएकताबोधकेउपयोगी श्रवणमननादिकसाधन इत्यादिकपदार्थ हैं तेसर्वपदार्थ प्रतिपादनकरेहैंजिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम सांख्यहै ॥ ऐसासांख्यनामवाला उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्रहै ऐसे सांख्यनामावेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंच कारण प्रतिपादनकरेहैं ॥ शंका—हे भगवन् ! केवल आत्मवस्तुमात्रकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै तिसवेदांतशास्त्रविषे यहलोकप्रसिद्ध अनात्मरूप तथा अवस्तुरूप पंचकर्म केकारण किसवासतै प्रतिपादनकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसवेदांतशास्त्रकेविशेषणकूंकथनकरैं हैं ॥ (कृतांते इति) तहां क्रियतेइतिकृतम् ॥ अर्थयह ॥ इसपुरुषनैं प्रयत्नकरिकै जो करीताहै ताकानाम कृतहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कृत यहशब्द सर्वकर्मोंकावाचकहै ॥ तिनसर्वकर्मोंका अंतहै क्या परिसमाप्तिहै आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा (निष्कलंनिष्क्रियंशांतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै कृत कहिये स्पष्टकऱ्याहै अंत क्या आत्मअनात्मदोनोंकातत्त्वनिश्चय जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा वेदप्रतिपादित नित्यनैमित्तिककर्मोंकानाम कृतहै ॥ तिनकर्मोंका अंतहै क्या परित्यागहै जिसशास्त्रकेश्रवणवासतै ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ तहां (संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्) इसश्रुतिनैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरणेवासतै सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकासंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ ऐसे कृतांतरूपवेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कथनकरेंहैं अर्थात् लोकविषेप्रसिद्ध तथाअनात्मरूप ऐसेजे तेअधिष्ठानादिकपंचकारणहैं तेपांचोंहीकारणमिथ्याज्ञानकृतअध्यारोपकरिकै लोकोंनैं आत्मारूप करिकैग्रहणकरेहैं ॥ ऐसेपंचकारणोंकूं आत्मतत्त्वज्ञानकरिकैबाधकरणेवासतै परित्याज्यरूपकरिकै वेदांतशास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ कोई तिनकारणों केकथन करणेविषे तिसवेदांतशास्त्रका तात्पर्य हैनहीं किंतु अद्वितीयआत्माकेप्रतिपादनविषेही तावेदांतशास्त्रका तात्पर्य है ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ देहादिकअनात्मपदार्थोंकाधर्मरूपजोकर्म है सोकर्मही असंग आत्माविषे अविद्याकरिकै अध्यारोपितहुआहै वास्तवतैं आत्माविषे सोकर्म हैनहीं ॥ इसप्रकारतैं जबी वेदांत शास्त्रनैं आत्माकावास्तवस्वरूप प्रतिपादनकरीताहै तबी शुद्धआत्माकेज्ञानकरिकै तिसअध्यारोपितकर्मकाबाधहोणेतैं तिनसर्वकर्मोंकाअंत कऱ्याजावैहै ॥ तिस अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै तिनकर्मोंकाअंत कऱ्याजातानहीं ॥ इसकारणतैं असंगआत्माविषे तिनकर्मों केअसंबंधकेप्रतिपादनकरणेवासतै तेमायाकल्पित अनात्मभूत पंचकर्मों केकारण वेदांतशास्त्रविषे अनुवादकरेहैं ॥ कोई तिनपंचकारणों केप्रतिपादनकरणेविषे वेदांतशास्त्रका तात्पर्य है नहीं ॥ यातैं अद्वैतआत्ममात्रविषे जोवेदांतशास्त्रका तात्पर्य है तिसतात्पर्यकी इहां हानिहोवैनहीं इति ॥ यातैं (कृतांते) इसविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं वेदांतशा

पुरुषकूंतौ अविद्याकर्मादिकसंसारकेकारणकाअभावहोणेतैं स्वतःही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं श्रीभगवान्नैं इसश्लोकविषे दोपदार्थ सूचनकरे हैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां आत्मज्ञाननैंरहित अज्ञानीपुरुषके संसारीपणेविषे कर्मोंकेपरित्यागकाअसंभवरूपहेतु (नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्या ॥ तहांतिसअज्ञानीपुरुषकूं कर्मोंकेत्यागकेअसंभवविषे कौनहेतुहै अर्थात् किसहेतुतैं सोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकूंनहींत्यागसकैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ कर्मकेहेतुरूप जेअधिष्ठानादिकपंचहैं तिनपांचोंविषे जोअज्ञानीपुरुषोंका तादात्म्यअभिमानहै सोतादात्म्यअभिमानही तिसकर्मत्यागकेअसंभवविषेहेतुहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै वर्णन करैं हैं ॥ तहां तेअधिष्ठानादिकपांचों वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणमूलकहैं ॥ ऐसेअधिष्ठानादिकपांचों परित्यागकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् प्रथमश्लोककरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) पंचेमानिमहाबाहोकारणानिनिबोधमे ॥ सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ पंच । ईमानि । महाबाहो । कारणानि । निबोध । मे । सांख्ये । कृतांते । प्रोक्तानि । सिद्धये । सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन सर्वकर्मोंकी सिद्धिवासतै ईनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिक पंचकारणोंकूं तूं हमारे वचनतैं निश्चयकर जेपंचकारण सर्वकर्मोंकी समाप्तिवाले वेदांतशास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे महान्बाहुवालाअर्जुन ! लौकिक वैदिक जितनेककर्म हैं तिनसर्वकर्मोंकीसिद्धिवासतै इनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिकपंचकारणोंकूं मैंसर्वज्ञ परमआत्मपरमेश्वरकेवचननैं तूं निश्चयकर अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकपांचोंकेस्वरूपजानणेवासतै तूं सावधानहोउ ॥ तहां यहअधिष्ठानादिकपंचकारण कोईअत्यंत दुर्विज्ञेयनहीं हैं किंतुसावधानचित्तवाले पुरुषनैं यहअधिष्ठानादिकपंचकारण जानिसकीते हैं ॥ इसप्रकार तिनपांचोंकारणोंकेज्ञानवासतैचित्तकेसमाधानकेविधानकरिकै श्रीभगवान् तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकी स्तुतिकरताभयाहै ॥ और (हेमहाबाहो) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनपांचकारणोंकीस्तुतिवासतै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनअधिष्ठानादिकपांचकारणोंकेजानणेविषे महान्पराक्रमवालेश्रेष्ठपुरुषही समर्थहोवैंहैं अश्रेष्ठपुरुष समर्थहोवैंनहीं ॥ ऐसा महान्पराक्रमवालाश्रेष्ठपुरुष तूं अर्जुनभी है ॥ तूं अर्जुनभीइनपांचोंकारणोंकेजानणेविषेसमर्थ है इति ॥ शंका–हे भगवन् ! जेअधिष्ठानादिकपंचकारण आपकेवचननैं जानणेयोग्यहैं तेअधिष्ठानादिकपंचकारण किसीअन्यप्रमाण करिकैभीसिद्धहैं ॥ अथवा केवल आपकेवचनमात्रतैंहीसिद्धहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ श्रीभगवान् निमआपणेवचनविषे अर्जुनकेविश्वासकरावणेवासतै तिनपंचकारणोंकीसिद्धिविषे वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणकूं कथन करैं हैं (सांख्येकृतांतेप्रोक्तानि इति)

सोशरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवै है याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ यातैं अज्ञानीपुरुषकूं पूर्वलेकर्मकेवशतैं शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवै है ॥ यहअर्थ अर्थकीमर्यादाकरिकैसिद्धभया ॥ यातैं (नतुसंन्यासिनांकचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासीशब्दकरिकै निष्कामकर्मीपुरुषोंकाहीग्रहणकरणा ॥ यहएकभविकवादियोंकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै किंतु पूर्वउक्तभाष्यकारोंकाव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद अद्वितीय सत्य स्वप्रकाश ऐसाजोब्रह्महै सोब्रह्म मैंहूं ॥ इसप्रकारकाजोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै सोसाक्षात्कार निर्विकल्पहै ॥ तथा वेदांतमहावाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा विचारकरिकैनिश्चितकऱ्याहैप्रामाण्यजिसका तथा सर्वप्रकारतैं अप्रामाण्यशंकातैंरहितहै ऐसेब्रह्मात्मसाक्षात्कारकरिकै तिसब्रह्मात्माके अज्ञानकीनिवृत्तहुएतैं अनंतर तिसअविद्याकेकार्यरूप कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअभिमानतैंरहित ऐसाजो वास्तवमुख्यसंन्यासीहै सोमुख्यसंन्यासीतौ अविद्यासहित सर्वकर्मोंकेनाशतैं केवलशुद्धस्वरूपहुआ अविद्याकर्मादिनिमित्तक पुनः शरीरकेग्रहणकूं कदाचित्भी अनुभवकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके सर्व भ्रमोंका अविद्यारूपकारणकेनाशकरिकै नाशहोइगयाहै ॥ और जोपुरुष अविद्यावालाहै तथा कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानवालाहै तथा देहभृत्है सोअविद्यावान् देहभृत्पुरुषतौ तीनप्रकारकाहोवै है ॥ तहां रागद्वेषादिकदोषोंकीप्रबलतातैं आपणीइच्छामात्रतैं काम्यकर्मोंकूं तथानिषिद्धकर्मोंकूं करणेहारा ऐसाजो मोक्षशास्त्रका अनधिकारीपुरुषहै सोतौ प्रथमहै ॥ और पूर्वकरेहुएपुण्यकर्मकेवशतैं किंचित्मात्र नष्टहुएहैंरागादिकदोष जिसके ॥ तथा विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकेपरित्याग करणेविषे असमर्थहुआभी जोपुरुष निषिद्धकर्मोंका तथाकाम्यकर्मोंका परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै नित्यकर्मोंकूं तथानैमित्तिककर्मोंकूंही करै है ऐसाजो मोक्षशास्त्रकाअधिकारी गौणसंन्यासी है सोगौणसंन्यासी दूसराहै ॥ और नित्यनैमित्तिककर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर उत्पन्नहुई है आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषा जिसकूं तथा श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मोक्षकेसाधनरूपआत्मज्ञानकेसंपादनकरणेकी इच्छावान् तथा शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै वेदांतशास्त्रकेविचारवासतै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेशरणकूंप्राप्तहुआ ऐसाजो विविदिषासंन्यासीहै सोविविदिषासंन्यासी तीसराहै ॥ तहां प्रथमपुरुषकूंतौ सोशरीरकाग्रहणरूप संसारीपणा सर्वकूंप्रसिद्धही है ॥ और दूसरेपुरुषकूंतौ सोसंसारीपणा (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और तीसरेपुरुषकूंतौ सोसंसारीपणा षष्ठअध्यायविषे (अयतिःश्रद्धयोपेतः) इत्यादिकवचनोंनैं प्रश्नका उत्थापनकरिकै निर्णयकऱ्याहै ॥ यातैं अविद्याकर्मादिककारणसामग्रीकेविद्यमानहुए अज्ञानीपुरुषकूं सोसंसारीपणा अवश्यकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ तहां किसीअज्ञानीपुरुषकूंतौ ज्ञानकेप्रतिकूलशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ और किसीअज्ञानीपुरुषकूं ज्ञानकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ इतनी तिनोंविषेविशेषताहै ॥ और तत्त्ववेत्ता

प्रकारकाव्याख्यानकरतेहो ॥ तहां गौणअर्थ तथामुख्यअर्थ इनदोनोंअर्थोंके मध्यविषे किसीबाधककेअविद्यमानहुए मुख्यअर्थविषेही शब्द बोधकूंउत्पन्नकरै है ॥ यहतौ शब्दकीमर्यादाहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे फलसहित सर्वकर्मोंकात्यागीपुरुषतौ तासंन्यासीशब्दका मुख्यअर्थ है ॥ और जैं से मुख्यसंन्यासी विषे कर्मोंके फलकात्यागीपणा रहै है तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोफलकात्यागीपणा रहैहै ॥ यातैं फलत्यागित्वरूपसमानगुणकूं लैके सोसंन्यासीशब्द तिसकर्मीपुरुष विषेभी प्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं सोकर्मीपुरुष तिससंन्यासीशब्दका गौणअर्थहै ॥ और (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासी इसशब्दके मुख्य अर्थकेग्रहणकरणेविषे कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं तिसमुख्यअर्थकाही इहां संन्यासीइसशब्दकरिकै ग्रहणकरणा उचितहै ॥ यहअर्थ शब्दकीमर्यादातैंसिद्धहोवैहै इति ॥ और कारणसामग्रीके विद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यह अर्थ मर्यादा कहीजावैहै ॥ तिसअर्थमर्यादाकरिकै भी सोपूर्वउक्तअर्थही सिद्धहोवै सोप्रकार दिखावैं हैं जिसपुरुषनैं ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकै कर्मोंकेफलकापरित्यागकऱ्याहै तथा जोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिवासतै नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरे है सोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकूं नहींप्राप्तहोइकै जबी मध्यविषेही मरणकूं प्राप्तहोवैहै तिसपुरुषकूं पूर्व ले पुण्यपापकर्मोंके वशतैं तीनप्रकारकेशरीरकाग्रहणरूपसंसारकीप्राप्ति किसपुरुषनैं निवृत्तकरिसकीतीहै किंतु कोईभीपुरुष तिसके निवृत्तिकरणेविषेसमर्थनहीं है ॥ तिसपुण्यपापरूप कारणके विद्यमानहुए शरीरकाग्रहणरूपकार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैगा ॥ तहां आत्मज्ञानतैंरहितपुरुष पुण्यपापकर्मकेवशतैं अवश्यकरिकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः) ॥ अर्थयह ॥ हे गार्गि ! जोपुरुष इसअक्षरब्रह्मकूंनजानिकै इसमनुष्यलोकतैं गमनकरै है सोपुरुष कृपणही जानणा इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकाफलभूत जोआत्मज्ञानहै ताज्ञानकीउत्पत्तिवासतै तिसनिष्काम कर्मीपुरुषकूं अधिकारीशरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकै अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ इसीकारणतैंही पूर्व षष्ठअध्यायविषे (शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोऽभिजायते) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहअर्थ निर्णयकऱ्याथा ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर शास्त्रकी विधिपूर्वक फलसहितसर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै जिसनैं तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवणादिकोंकूं करताहुआ जोपुरुष आत्मज्ञानकूंनप्राप्तहोइकै मध्यविषेही मरणकूंप्राप्तहुआहै ऐसा योगभ्रष्ट विविदिषासंन्यासी भोगइच्छाके विद्यमानहुए तिसमरणतैंअनंतर पवित्रश्रीमानूपुरुषोंके गृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भोगइच्छाकेअविद्यमानहुए सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुषोंके गृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ यहसर्वअर्थपूर्वषष्ठअध्यायविषेकथनकऱ्याथा ॥ इसकहणेकरिकै यहकैमुतिकन्याय सिद्धहोवैहै ॥ जबी आत्मज्ञानतैंरहित सर्वकर्मों केत्यागी विविदिषासंन्यासीकूंभी शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकै होवैहै तबी आत्मज्ञानतैंरहितकर्मीपुरुषकूं

होवैहै ॥ तथा सर्वसंशय छेदेनहावैं हैं ॥ तथा सर्वकर्म क्षयहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थयह ॥ प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेसंचितकर्मतौ विनाशहोइजावैहैं और तत्त्वसाक्षात्कारतैं उत्तरकरेहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहीनहींहोवै है ॥ इसप्रकारकाअर्थ श्रुतिस्मृतिविषेकथनकरयाहै इति ॥ इत्यादिकश्रुति सूत्रवचन परमात्माकेज्ञानतैंही सर्वकर्मोंकेनाशकूं कथनकरैं हैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त गौणसंन्यासियोंकूंतौ पूर्वलेपुण्यपापकर्मकेवशतैं पुनःशरीर काग्रहणरूपसंसार अवश्यकरिकैंप्राप्तहोवैहै ॥ और तत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासियोंकूंतौ अविद्याकर्मादिकोंकेअभावतैं पुनः सोसंसार प्राप्तहोवैनहीं किंतु मोक्षही प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारका तिनदोनोंकेफलविषे विशेषहै इति ॥ इहां केईकवादी इसप्रकार कहैं हैं (अनाश्रितःकर्मफलंकार्यंकर्मकरोतियः । ससंन्यासी) इत्यादिकवचनोंविषे कर्मोंकेफलकात्यागकारिकै कर्मोंकूंकरणेहारे कर्मीपुरुषोंविषेभी संन्यासी इसशब्दका प्रयोगकरयाहै ॥ यातैं (नतुसंन्यासेनांकचित्) इस वचनविषेभी संन्यासीशब्दकरिकै कर्मफलकेत्यागकरणेहारे कर्मीपुरुषही ग्रहणकरणे ॥ और (नतुसंन्यासिनांकचित्) इसवचनविषे जो पूर्वउक्त अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेफलका संन्यासियोंविषे निषेधकर्‍याहै सोभी तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं जिननित्यनैमित्तिककर्मोंके नहींकरणेकारिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेकरणेकारिकै इनपुरुषोंविषे जापापकीउत्पत्तिहोवैहै सापापकीउत्पत्ति तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे तिननित्यनैमित्तिककर्मों केकरणेकारिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेपरित्यागकारिकै होवैनहीं ॥ यातैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं अनिष्टफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तेकर्मीपुरुष काम्यकर्मोंकूंकर तेनहीं ॥ तथा ईश्वरअर्पणबुद्धिकारिकै तिनकर्मीपुरुषों नैं स्वर्गादिलफलोंका परित्यागकर्‍याहै ॥ यातैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं इष्टफलकीप्राप्तिभीहोवैनहीं ॥ इसीकारणतैंही तिनकर्मीपुरुषोंकूं मिश्रफलकीप्राप्तिभी होवैनहीं ॥ इसरीतिसैं तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहीफल संभवतानहीं ॥ इसीकारणतैंही शास्त्रविषे यहवचनकह्याहै ॥ तहाँ श्लोक ॥ (मोक्षार्थीनप्रवर्त्ततत्रकाम्यनिषिद्धयोः ॥ नित्यनैमित्तिकेकुर्यात्प्रत्यवायजिहासया) ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकी इच्छावान् अधिकारी पुरुष तिन काम्य कर्मोंविषे तथा निषिद्धकर्मोंविषे नहीं प्रवृत्तहोवै किंतु जिन नित्य नैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं जो प्रत्यवाय प्राप्तहोवैहै तिसप्रत्यवायकेपरित्यागकी इच्छाकारिकै यह मोक्षार्थी पुरुष तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकूंही करै ॥ इतनेमात्रकरिकैही इसअधिकारीपुरुषकूं संसारकाअभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार एकभविकवादकीरीतिसैं भगवान्केवचनका व्याख्या नकरणेहारे वादियोंकेप्रति यहवचन कह्याचाहिये ॥ शब्दकीमर्यादा तथाअर्थकीमर्यादा तुमों नैं निर्णयकरीनहीं ॥ इसकारणतैंही श्रीभगवान्केवचनका तुम इस

टीका । हेअर्जुन ! कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंकेत्यागवालेहुएभी कर्मोंकाअनुष्ठानकरणेहारे जे आत्मज्ञानकरणेहारे जे आत्मज्ञानतैंरहित गौणसंन्यासीहैं तिनोंकानाम अत्यागीहै ॥ जेअत्यागीपुरुष आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाकीउत्पत्तिपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिकूंनहींसंपादनकरिकै तिसतैंपूर्वहीमरणकूंप्राप्तहुएहैं ऐसेअत्यागी पुरुषोंकूं मरणतैंअनंतर पूर्वकरेहुएकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूपफल अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ इहां (कर्मणः) इसपदकरिकै यद्यपि एकही कर्म कथनकऱ्याहै तथापि एककर्मविषे तीनप्रकारकेफलकीजनकतासंभवतीनहीं ॥ यातैं (कर्मणः) यहपद कर्मत्वजातिविशिष्ट पुण्य पाप मिश्रित इनतीनप्रकारकेहीकर्मोंका वाचकहै ॥ सोशरीरकाग्रहणरूपकर्मकाफल कारणरूपकर्मोंकेत्रिविधपणेकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहीहोवैहै ॥ तहां पापकर्मकातौ अनिष्टफलहोवैहै और पुण्यकर्मका इष्टफलहोवैहै और पुण्यपापदोनोंकर्मोंका मिश्रफलहोवैहै ॥ तहां यहशरीर हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारके प्रतिकूलताज्ञानकेविषय जेनारकीयतिर्यक्शरीरहैं तिनशरीरोंकीप्राप्ति अनिष्टफल कह्याजावैहै ॥ और यहशरीर हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारके अनुकूलताज्ञानकेविषय जेदेवादिक शरीरहैं तिनशरीरोंकीप्राप्ति इष्ट फल कह्याजावैहै ॥ और पापकर्मकेफलयुक्त तथापुण्यकर्मकेफलयुक्त जेमनुष्यशरीरहैं तिनशरीरोंकीप्राप्ति मिश्रफल कह्याजावैहै ॥ यद्यपि (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकैही तिसकर्मकेफलविषे त्रिविधपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ यातैं पुनः (त्रिविधम्) यहवचनकहणा असंगतहै ॥ तथापि (त्रिविधम्) इसवचनकरिकै जो पुनःतिसफलकेत्रिविधपणेकाअनुवादकऱ्याहै सो तिसत्रिविधफलकेपरित्यागकरावणेवास्तै कऱ्याहै अर्थात् मुमुक्षुजननें इनतीनोंप्रकारकेफलकापरित्यागकरणा इति ॥ इतनेकरिकै तिनगौणसंन्यासियोंकूं मरणतैंअनंतर कर्मकेवशतैं शरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब तिनमुख्यसंन्यासियोंकूंतौ ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुए विदेहकैवल्यरूपमोक्षही प्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथन करैंहैं (नतुसंन्यासिनां क्वचित् इति) हेअर्जुन ! विधिवत् सर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहैजिनोंनें तथामैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके परमात्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त ऐसेजे परमहंसपरिव्राजक मुख्यसंन्यासीहैं तिनमुख्यसंन्यासियोंकूंतौ मरणतैंअनंतर तिनकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूप अनिष्टफल अथवा इष्टफल अथवा मिश्रफल किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तिनब्रह्मवेत्तामुख्यसंन्यासियोंका आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ ता अज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुए ताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वकर्मभी तिनोंके निवृत्तहोइगयेहैं ॥ और जन्मकीप्राप्तिविषे अज्ञान तथा अज्ञानजन्यकर्मही कारणहैं ॥ तिनोंकेनिवृत्तहुए तिनतत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासियोंकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं परमात्मा देवकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेद

पोषणकरेहै ताकानाम देहभृत्है ॥ तात्पर्ययह ॥ नहींनिवृत्तहुआहैकर्मकेअधिकारकाहेतुभूतदेहाभिमान जिसका ताकानाम देहभृत्है ॥ कैसाहैसोदेहभृत्पुरुष कर्मोंविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं तिनरागद्वेषादिकोंकीबाहुल्यताकारिकै निरंतर तिनकर्मोंविषेप्रवर्त्तमानहै ॥ ऐसे विवेकज्ञानतैंशून्यदेहाभिमानीपुरुषनैं तत्त्ववेत्तापुरुषकीन्याई तेकर्म निःशेषतैं परित्याग नहींकरिसकीते ॥ काहेतैं जबपर्यंत कारणसामग्री विद्यमानहोवैहै तबपर्यंत निःशेषतैं कार्यकापरित्याग कऱ्याजातानहीं ॥ सारागद्वेषादिरूपकारणसामग्री तिसअज्ञानीपुरुषविषे विद्यमानहै ॥ यातैं जोअज्ञानीअधिकारी अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकरता हुआभी परमेश्वरकीकृपाकेवशतैं तिनकर्मोंकेफलका परित्यागकरै है सोअधिकारीपुरुषभी त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावै है अर्थात् सोकर्मकर्त्ताअज्ञानीपुरुष वास्तवतैंअत्यागीहुआभी स्तुतिकेवासतै त्यागशब्दकीगौणीवृत्तिकारिकै त्यागी इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सो निःशेषतैंसर्वकर्मोंकापरित्यागतौ देहाभिमानतैंरहित परमार्थदर्शीपुरुषनैंही करिसकीताहै ॥ यातैं सोपरमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुषही त्यागशब्दकीमुख्यवृत्तिकारिकै त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इहां (यस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द तिसकर्मफलत्यागीपुरुषके दुर्लभताकाबोधनकरणेवासतैंहै अर्थात् फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिननित्यकर्मोंकूंकरणेहारा पुरुषभी दुर्लभहींहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! देहाभिमानवाला तथापरमात्मज्ञानतैंरहित ऐसाजोकर्मीपुरुषहै सोकर्मीपुरुषभी फलकीइच्छाकेपरित्यागमात्रतैं गौणसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ और देहाभिमानतैंरहित तथापरमात्मज्ञानवाला ऐसाजो फलसहितसर्वकर्मोंके त्यागवाला जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै सोतत्त्ववेत्तापुरुषतौ मुख्यसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे आपनैं कथनकऱ्या ॥ तहां गौणसंन्यासीकेफलविषे तथामुख्यसंन्यासीकेफलविषे क्याविशेषहै॥जिसविशेषकेअलाभकरिकै एकसंन्यासीविषेतौ गौणपणाहोवैहै और जिसविशेषकेलाभकरिकै दूसरेसंन्यासीविषे मुख्यपणाहोवैहै ॥ और कर्मकेफलकात्यागीपणातौ तिनदोनोंविषे तुल्यही है ॥ यातैं ताकरिकैभी विशेषतासंभवैनहीं किंतु इसतैं कोईअन्य हीविशेष कह्याचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्यनतुसंन्यासिनांक्वचित् ॥ १२ ॥ अनिष्टम् । इष्टम् । मिश्रम् । च । त्रिविधम् । कर्मणः । फलम् । भवति । अत्यागिनाम् । प्रेत्य । न । तु । संन्यासिनाम् । क्वचित्॥१२॥इतिपदच्छेदः॥

हे अर्जुन ! तिन गौणसंन्यासियोंकूंतौ मरणतैंअनंतर कर्मोंका अनिष्ट इष्ट तथा मिश्र यहतीनप्रकारका फल प्राप्तहोवैहै और मुख्यसंन्यासियोंकूंतौ कबीभी सोत्रिविधफल नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

त्तापुरुष रहितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सर्वकर्मोंतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष अकुशलकर्मोंविषे द्वेषनहींकरै है अर्थात् अज्ञानीपुरुषोंकेबंधनकाहेतुहोणेतैं अशोभनरूप जे काम्य कर्म हैं अथवा निषिद्ध कर्म हैं तिन काम्यकर्मोंकूं सो तत्त्ववेत्ता पुरुष प्रतिकूलतारूपकरिकै मानता नहीं ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकाहेतुहोणेतैं शोभनरूप जे नित्यकर्म हैं तिननित्यकर्मोंविषेभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष प्रीतिकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं कर्तृत्व भोक्तृत्वअभिमानतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष कृतकृत्यहीहै ॥ ऐसे कृतकृत्यतत्त्ववेत्तापुरुषंका किसीकर्मविषेद्वेष तथाकिसीकर्मविषेप्रीति संभवैनहीं ॥ यह सर्वअर्थ श्रुतिविषेभी कथनकरया है ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं ॥ इसप्रकारके ब्रह्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेदनहोवैहै ॥ तथा पूर्वउक्तसर्वसंशयभी छेदनहोवैंहैं ॥ तथा पुण्यपापसर्वकर्मभी क्षय होवैंहैं इति ॥ हेअर्जुन! जिसकारणतैं तिससात्त्विकत्यागका इसप्रकारका महान्फलहै तिसकारणतैं इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरिकैभी सोसात्त्विक त्यागही संपादनकरणा इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां कर्मविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं तेरागद्वेषादिक ज्ञानवान्पुरुषविषेहैंनहीं ॥ यातैं तिस ज्ञानवान्पुरुषविषेतौ सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवहोइसकैहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकरया अब ज्ञानीपुरुषविषे सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवता नहीं इसअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहैंहैं ।

(मू. श्लो.) नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः ॥ यस्तुकर्मफलत्यागीसत्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ न । हि । देहभृता । शक्यम् । त्यक्तुम् । कर्माणि । अशेषतः । यः । तु । कर्मफलत्यागी । सः । त्यागी । इति । अभिधीयते ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन! जिसकारणतैं देहाभिमानी पुरुषनैं निःशेषतैं कर्म त्यागणेकूं नहीं शक्यहैं तिसकारणतैं जोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकेफलका त्यागीहै सोअज्ञानीपुरुषभी त्यागी ईसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं मैंगृहस्थहूं इसप्रकारके अबाधितअभिमानकरिकै जोपुरुष देहकूंधारणकरै है अथवा पोषणकरै है ताकानाम देहभृतहै अर्थात् कर्मकेअधिकारकाहेतुभूत जे ब्राह्मणादिकवर्ण हैं तथागृहस्थादिकआश्रमहैं तिनवर्णआश्रमोंकाआश्रयरूप तथाकर्तृत्वभोक्तृत्वआदिकोंकाआश्रयरूप ऐसाजो स्थूलसूक्ष्मशरीरइंद्रियादिकोंकासंघातरूपदेहहै जोदेह अनादिअविद्यावासनावोंकेवशतैं व्यवहारकेयोग्यतारूपकरिकैकल्पितहोणेतैं असत्यहै ॥ ऐसेअसत्यदेहकूं सत्यरूपकरिकेदेखताहुआ तथाआपणेतैंभिन्नभी तिसदेहकूं आपणेतैंअभिन्नकरिकै देखताहुआ जोपुरुष पूर्वउक्तअभिमानकरिकै तिसदेहकूं धारणकरै है अथवा

सात्त्विकत्यागवालापुरुष जबी सत्त्वकरिकैंव्याप्तहोवै है तबी तत्त्वज्ञानवाला होवै है तथासर्वसंशयोंतैंरहितहोवै है तबी अशोभन कर्मकूं नहीं प्रतिकूलमानैहै तथा शोभनकर्मविषे नहीं प्रीतिकरै है ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोत्यागीपुरुष सात्त्विकत्यागकरिकैयुक्तहै अर्थात् पूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै कर्तृत्वअभिनिवेशकूं तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकूं परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै वेदविहित नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरै है सोत्यागीपुरुष जिसकालविषे सत्त्वकरिकै सम्यक् आविष्टहोवै है ॥ तहां आत्म अनात्मविवेकज्ञानकाहेतुभूतजो चित्तविषेस्थित सम्यक्ज्ञानकाप्रतिबंधकरजतमरूपमलकाराहित्यरूप अतिशयताहै ताकानाम सत्त्वहै ।। तासत्त्वकरिकैसम्यक् व्याप्तहोवै है ।। इहां उक्तसत्त्वकीव्याप्तिविषे जोनियमकरिकै आत्मज्ञानरूपफलकाजनकपणाहै यहही सम्यक्पणाहै अर्थात् भगवत्अर्पितनित्यकर्मोंकेअनुष्ठानतैं पापरूपमलकाअपकर्षरूपसंस्कारकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यगुणकाआधानरूपसंस्कारकरिकै संस्कृत जबी अंतःकरणहोवै है तबी सोत्यागी पुरुष मेधावीहोवै है ।। तहां विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता तथासर्वकर्मोंकाविधिवत्परित्याग तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन इत्यादिकसाधनोंकरिकै तथातिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनसाधनोंकरिकै उत्पन्नहुआ तथातत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्यहैकरणजिसका तथा निवृत्तहुईहैसर्वअप्रामाण्यशंकाजिसतैं तथाअखंडअद्वितीयचैतन्यवस्तुकूंनहींविषयकरणेहारा ऐसाजो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानहै ताकानाम मेधाहै ।। ऐसीमेधाकरिकै जोपुरुष नित्यहीयुक्तहोवै ताकानाम मेधावीहै ऐसामेधावी सोपुरुष होवै है अर्थात् स्थितप्रज्ञहोवै है ।। और तिस स्थितप्रज्ञताकाल विषे सोपुरुष छिन्नसंशयहोवै है ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै छिन्नहुएहैं क्या निवृत्तहुएहैं सर्वसंशय जिसके ताकानाम छिन्नसंशयहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अहं ब्रह्मास्मि इसप्रकारकीब्रह्मविद्यारूपमेधाकरिकै तिसपुरुषकीअविद्या निवृत्तहोइजावै है और साअविद्याही सर्वसंशयोंकीउत्पत्तिविषेकारणहै ।। यातैं ताकारणरूप अविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताअविद्याकेकार्यरूप सर्वसंशयोंतैं तथाविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष रहितहोवै है इति ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकी निवृत्तिद्वारा जिनसंशयोंकीनिवृत्तिहोवै है तेसंशय यहहैं ॥ संचित आगामि वर्त्तमान इनतीनप्रकारकेकर्मोंकरिकै हमारेकूं कोईलेपहै अथवा नहीं है ॥ और कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकसंसार आत्माकूंहोवै है अथवा अंतःकरणादिकअनात्माकूंहोवै है ॥ और मोक्षकाहेतु योगहै अथवा उपासनाहै अथवा कर्म है अथवा आत्मसाक्षात्कारहै और सालोक्य सामीप्य सायुज्य यहहीमोक्षहै अथवा इसीजन्मविषे ब्रह्मात्मरूपकरिकैस्थिति मोक्षहै इति ॥ इनसर्वसंशयोंविषे अंत्य कीकोटि सिद्धांतरूपजानणी ।। और आदिकीकोटि पूर्वपक्षरूपजानणी ।। इत्यादिकसर्वसंशयोंतैं तथादेहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिरूपसर्वविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववे

कनहींहैं किंतु फलकीइच्छापूर्वक जेकर्म हैं तिनकर्मोंकात्यागही तिनदोनोंशब्दोंकाअर्थ है ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकऱ्याथा तिसअर्थकाभी इहां विस्मरण करणानहीं ॥ तहां फलकीइच्छाकोविद्यमानहुएभी पूर्वउक्तमोहकेवशतैं अथवा शरीरकेक्लेशकेभयतैं जोनित्यकर्मोंकापरित्यागहै सोत्यागतौ कर्मरूपविशेष्यकेअभावकृत विशिष्टाभावरूपहै सो विशेष्याभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्याग तामसपणेकरिकै तथाराजसपणेकरिकै पूर्व निंदनकऱ्याथा और नित्यकर्मोंकेविद्यमानहुएभी तिनकर्मोंके फलकीइच्छाकाजोपरित्यागहै ॥ सोत्याग फलकीइच्छारूपविशेषणकेअभावकृत विशिष्टाभावरूपहै सो विशेषणाभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्यागसात्त्विकपणेकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकार विशेष्यकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे तथाविशेषणकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे विशिष्टाभावपणा तुल्यहीहै यातैं श्रीभगवान्केपूर्वअपरवचनोंका विरोधहोवैनहीं ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यकेदोनोंकेअभावकृत जोविशिष्टाभाव रूप कर्मोंकात्यागहै सोत्यागतौ सत्त्वादिकतीनगुणों तैंरहितहोणेतैं निर्गुणरूपही है ।। यातैं सोनिर्गुणत्याग सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेत्यागविषे गण्याजावैनहीं इति॥ इतनेकहणेकरिकै इसप्रकारकेदोषकीभी निवृत्तिकरी ।। सोदोषयह है ॥ तहां (त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधः संप्रकीर्तितः) इसवचनकरिकै प्रथम तीनप्रकारकेत्यागकीप्रतिज्ञाकरिकै तिसतैंअनंतर दोप्रकारकेकर्मत्यागकूंकथनकरिकै पश्चात्तिसप्रतिज्ञाकेप्रतिकूल कर्मकेअनुष्ठानरूप तीसरेप्रकारकूं श्रीभगवान् कथनकरताभयाहै ॥ यातैं श्रीभगवान्कूं प्रगटही अकुशलतारूपदोष प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे कोईपुरुष तीनब्राह्मणोंकोभोजनकरावणा याप्रकारकावचन प्रथमकहै तिसतैंअनंतर यहवचन कहै दोतौ कठकौंडिन्यनामाब्राह्मण तीसराक्षत्रिय ॥ इसप्रकारकेवचनकहणेहारेपुरुषकूं प्रगटही अकुशलतादोषकीप्राप्तिहोवै है काहेतैं प्रथम तीनब्राह्मणोंकेभोजनकरावणेकीप्रतिज्ञाकरिकै पश्चात् दोतौ ब्राह्मणकहणे तीसराक्षत्रियकहणा ॥ यहवार्ता पूर्वप्रतिज्ञाकीविस्मृतिरूप अकुशलतादोषतैंहोवैहै ॥ तैसे प्रथम तीनप्रकारकेत्यागकीप्रतिज्ञाकरिकैपश्चात् दोप्रकारकातौ कर्मोंकात्यागकहणा और तीसरा कर्मोंकाअनुष्ठानकहणा ॥ यहवार्त्ता अकुशलतादोषतैं होवैहै इति ॥ सोयह दोष संभवतानहीं ॥ काहेतैं तिनतीनोंप्रकारोंविषे विशिष्टाभावरूपत्यागसामान्यपणेकरिकै एकजातीयपणा पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्विषे अकुशलताकाकथनकरणा यहही तिनपुरुषोंविषे महान्अकुशलताहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वउक्त सात्त्विकत्यागकेग्रहणकरावणेवासते श्रीभगवान् तिससात्त्विकत्यागके अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठारूपफलकूं कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) नद्वेष्टयकुशलंकर्मकुशलेनानुषज्जते ॥ त्यागीसत्त्वसमाविष्टोमेधावीछिन्नसंशयः ॥ १० ॥ न । द्वेष्टि । अकुशलम् । कर्म । कुशले । न । अनुषज्जते । त्यागी । सत्त्वसमाविष्टः । मेधावी । छिन्नसंशयः ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोपूर्वउक्त

न्नरः) ॥ अर्थयह ॥ वेदप्रतिपादित अग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकूंनकरिकै यहअधिकारीपुरुष पापरूपप्रत्यवायकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहांस्मृतिवचन ॥ (श्रौतंचापितथास्मार्तंकर्मालंब्यवसेद्द्विजः ॥ तद्विहीनः पतत्येवह्यालंबरहितांधवत्)॥ अर्थयह ॥ श्रौतनित्यकर्मोंकूं तथास्मार्त्तनित्यकर्मोंकूं आश्रयणकरिकैही यहद्विज स्थितहोवै ॥ तिनश्रौतस्मार्त्तकर्मों तैंरहितहुआ यहद्विज अवश्यकरिकै अधोपतनहोवै ॥ जैसे यष्टिकादिकआलंबनतैंरहित अंधपुरुष गर्त्तविषे पतन होवैहै इति ॥ अन्यस्मृति (एकाहंजपहीनस्तुसंध्याहीनोदिनत्रयम् ॥ द्वादशाहमनग्निश्चशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीब्राह्मण एकदिनपर्यंत जपतैंरहितहै ॥ तथा तीनदिनपर्यंत संध्यातैंरहितहै तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै सोब्राह्मण शूद्रहीजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है इति ॥ अन्यस्मृति ॥ (त्र्यहंसंध्याविरहितोद्वादशाहंनिरग्निकः ॥ चतुर्वेदधरोविप्रःशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तीनदिनपर्यंत संध्योपासनतैंरहितहै ॥ तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै सोब्राह्मण च्यारिवेदोंकापाठकहुआभी शूद्रहीजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है इति ॥ अन्यस्मृति (तस्मान्नलंघयेत्संध्यांसायंप्रातःसमाहितः ॥ उल्लंघयतियोमोहात्सयातिनरकंध्रुवम्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकारणतैं संध्याकेउल्लंघनकरणेतैं इसब्राह्मणविषे शूद्रभावकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारीब्राह्मण तिससंध्याकूं कदाचित्भी उल्लंघन नहींकरैं किंतु सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे यहब्राह्मण सावधानहोइकै तिनसंध्याकूंकरैं ॥ जोब्राह्मण प्रमादकेवशतैं तिससंध्याकापरित्यागकरैहै सोब्राह्मण निश्चयकरिकै नरककूंप्राप्तहोवै है इति इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनों नैं अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मों केनहींकरणेतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और (धर्मेणपापमपनुदतितस्माद्धर्मंपरमंवदंति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अग्निहोत्रादिकनित्यधर्मकरिकै प्रतिबंधकपापोंकूंनिवृत्तकरैहै ॥ तिसकारणतैं वेदवेत्तापुरुष इसनित्यधर्मकूं परमधर्म कहैंहैं इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंनैं ज्ञानकेप्रतिबंधकपापोंकी निवृत्तिरूप तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यकीउत्पत्तिरूप आत्मसंस्कारही तिननित्यकर्मोंकाफल कथनकन्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषेतौ संध्योपासनरूपनित्यकर्मका ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफल कथनकन्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (संध्यामुपासतेयेतुसततंसंशितव्रताः ॥ विधूतपापास्तेयांतिब्रह्मलोकमनामयम्) ॥ अर्थयह ॥ जेअधिकारीपुरुष दृढव्रतवालेहुए संध्याकूं उपासनाकरैंहैं तेपुरुष सर्वपापों तैंरहितहोइकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैंहैं इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तिननित्यकर्मोंकाभीफल कथनकन्याहै ॥ तिसफलकीइच्छाकापरित्यागकरिकैही इसअधिकारीपुरुषनैं तेनित्यकर्मकरणे इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं इहां (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै तिननित्यकर्मोंकेफलकापरित्याग कथनकन्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान्के वचनविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीशंका संभवतीनहीं इति ॥ किंवा त्यागसंन्यास यहदोनोंशब्द घट पट इनदोनोंशब्दोंकीन्याईं भिन्नभिन्नजातिवालेअर्थकेवाच

अभिमतनहीं है ॥ शंका–(स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत) इत्यादिकवचनोंनैं जैसे स्वर्गपुत्रपशुआदिकफलोंकाउद्देशकरिकै काम्यकर्मोंका विधान कऱ्याहै तैसे नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेवचनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिननित्यकर्मोंका कोईफलही हैनहीं यातैं (फलंत्यक्त्वा) याप्रकारकावचन भगवान्नैं कैसेकह्याहै ॥ समाधान–यद्यपि नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेवचनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं तथापि तिननित्यकर्मोंकाकोईफल अवश्य अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ जोनित्यकर्मोंकाफल नहींअंगीकारकरिये तौ (फलंत्यक्त्वा) यहभगवान्कावचनही असंगतहोवैगा ॥ काहेतैं प्राप्तवस्तुकाही निषेधहोवैहै अप्राप्तवस्तुका निषेधहोतानहीं ॥ जोकदाचित् नित्यकर्मोंकाकोईफलनहींहोता तौ (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् तिननित्यकर्मोंकेफलका निषेधनहींकरते यातैं तिन नित्यकर्मोंकाभी कोईफलहै यहअर्थ (फलंत्यक्त्वा) इसभगवान्केवचनतैंहीजान्याजावै है ॥ किंवा शास्त्रकारोंनैं याप्रकारकान्याय कथनकऱ्याहै ॥ (प्रयोजनमनुद्दिश्यमंदोपिनप्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ फलरूपप्रयोजनका नहींउद्देशकरिकै मूढपुरुषभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहोतानहीं तौबुद्धिमान्पुरुष तिसप्रयोजनकेउद्देशतैंविना कार्यविषे कैसेप्रवृत्तहोवैगा किंतु नहींप्रवृत्तहोवैगा इति ॥ यातैं तिननित्यकर्मोंका जोकोईभीफल नहींअंगीकारकरिये तौ तिननिष्फलनित्यकर्मोंविषे कोईभीपुरुष प्रवृत्तहोवैगानहीं ॥ याकारणतैंभी तिननित्यकर्मोंका कोईफल अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा आपस्तंबऋषिनैंभी तिननित्यकर्मोंकाफलकथनकऱ्याहै ॥ तहांऋषिवचन ॥ (तद्यथाम्रेफलार्थेनिर्मितेच्छायागंधइत्यनूत्पद्यते एवंधर्मंचर्यमाणमर्थाअनुत्पद्यंते ॥ अर्थयह ॥ जैसेजिसपुरुषनैं आम्रफलोंकीप्राप्तिवास्तै आम्रकावृक्ष लगायाहै तिसपुरुषकूं तिसआम्रवृक्षके छायासुगंधरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे जिसपुरुषनैं स्वधर्मजानिके नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकऱ्याहै तिसपुरुषकूं तिननित्यकर्मोंकेस्वर्गादिरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैं हैं ॥ तहां महान्फलकीप्राप्तितैंपूर्व इच्छातैंविनाही जोफल प्राप्तहोवैहै ताकूं आनुषंगिफलकहैं हैं ॥ तहांअंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै जोमोक्षकीप्राप्तिहै यहही तिननित्यकर्मोंका महान्फलहै सोमहान्फल जबपर्यंत इसपुरुषकूं नहींप्राप्तहोवैहै तबपर्यंत इसपुरुषकूं तिननित्यकर्मों केवशतैं स्वर्गादिकआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ इसआपस्तंबऋषिकेवचनतैंभी तिननित्यकर्मोंकाफलसिद्धहोवै है ॥ किंवा जिन अग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकेनहींकरणेकरिकै जेप्रत्यय उत्पन्नहोवैं हैं तिननित्यकर्मों केकरणेकरिकै तेप्रत्यवाय उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ यातैं प्रत्यवायकीनिवृत्तिभी तिननित्यकर्मोंकाहीफलहै ॥ तहां नित्यकर्मों केनहींकरणेकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अकृत्वैवैदिकं नित्यंप्रत्यवायीभवे

हेअर्जुन ! यहकर्म दुःखरूप हींहै इसप्रकारमानिंके शरीरकेक्लेशकेभयतें नित्यकर्मकूं त्यागकरणा ऐसाजोत्याग सोत्याग राजसहै ऐसेराजस त्यागकूं करिकै सोपुरुष त्यागकेफलकूं कदाचित्भी नहीं प्राप्तहोता ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! पूर्वउक्तमोहकेअभावहुएभी जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहुआ ऐसाजो कर्मोंकाअधिकारी पुरुषहै सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुष यहअग्निहोत्र संध्याउपासनादिकसर्वनित्यकर्म दुःखरूपही हैं ॥ याप्रकारतैं तिननित्यकर्मोंकूं दुःखरूपमानिकै तथा तिननित्यकर्मोंकेकरणेकरिकै जोशरीरविषेक्लेशहोवैहै तिसक्लेशकेभयतैं तिननित्यकर्मोंकाजोपरित्याकरै है सोकर्मोंकात्याग राजसत्याग कह्याजावैहै ॥ जिसकारणतैं सोदुःख रजोगुणरूपहीहोवैहै ॥ इसकारणतैं पूर्वउक्तमोहतैंराहितहुआभी सोराजसपुरुष तिसराजसत्यागकूंकरिकैं त्यागकेफलकूंप्राप्तहोतानहीं अर्थात वक्ष्यमाणसात्त्विकत्यागका जोज्ञाननिष्ठारूपफलहै तिसफलकूं सोराजसत्यागवालापुरुष प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै नित्यकर्मोंका तामसत्याग तथाराजसत्याग परित्याज्यता रूपकरिकैदिखाया ॥ यातैं तिसतामसराजसत्यागकापरित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं कानकैमोंकात्याग अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिसाज्ञाकेहुए इसअधिकारीपुरुषनैं सात्त्विकत्यागही ग्रहणकरणे योग्यहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरतेहुये श्रीभगवान् तासात्त्विकत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेऽर्जुन ॥ संगंत्यक्त्वाफलंचैवसत्यागःसात्त्विकोमतः ॥ ९ ॥ कार्यम् । इति । एव । यत् । कर्म । नियतम् । क्रियते । अर्जुन । संगम् । त्यक्त्वा । फलम् । च । एव । सः । त्यागः । सात्त्विकः । मतः ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहकर्म करणेयोग्य हीं है इसप्रकारमानिकै जो नित्यंकर्म संगकूं तथा फलकूं त्यागकरिकै हीं करीताहै सो त्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्त्विक मान्याहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अग्निहोत्र संध्याउपासना इत्यादिकनित्यकर्मोंका विधानकरणेहारे जे (अग्निहोत्रंजुहोति अहरहःसंध्यामुपासीत) इत्यादिकवचनहैं तिनवचनोंविषे यद्यपि तिननित्यकर्मोंकाफल कथनकर्यानहीं तथापि वेदविहितहोणेतें यहनित्यकर्म हमोरकूं अवश्यकरिकै करणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारका निश्चयकरिकै तिननित्यकर्मोंके कर्तृत्वअभिनिवेशरूपसंगकूं तथास्वर्गादिकफलकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत जो अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्म करीताहै सोत्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्त्विकही मान्याहै अर्थात् फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक तथाकर्तृत्वअभिमानकेत्यागपूर्वक सो नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानरूप सात्त्विकत्याग शिष्टपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै ग्राह्यतारूपकरिकैअभिमतहै ॥ पूर्वउक्त राजसतामसत्यागकीन्याईं परित्याज्यतारूपकरिकै

इति ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनों नैं हिंसादोषवालेनित्यकर्मोंका निषेधकरिकें अंतःकरणकीशुद्धिवासतै गायत्रीमंत्रादिकोंकेजपकाही विधानकऱ्याहै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषों नैंभी तेयज्ञादिकनित्यकर्म परित्यागहीकरणे इति ॥ सोयह सांख्यियोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं यज्ञविषे जो पशुआदिकोंकीहिंसाहै साहिंसा इसपुरुषके अनर्थकाहेतुनहीं है किंतु यज्ञतैंविना जोपशुआदिकोंकीहिंसाहै साहिंसाही इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहोवै है ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहश्रुतिवचन जो भूतोंकीहिंसाकानिषेधकरै है सोभीयज्ञयुद्धादिकों तैंविनाजीवोंकेहिंसाकानिषेधकरै है ॥ जोकदाचित् (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचन सर्वहिंसामात्रकानिषेधकरताहोवै तौ (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिक वेदकेवचन जे यज्ञविषे पशुहिंसाका विधानकरैं हैं तेसर्ववचन व्यर्थहोवैंगे सोवेदकेवचनोंकूं व्यर्थकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेवचनका परस्परउत्सर्गअपवादभावमानिंके व्यवस्थाकरणीही उचितहै ॥ (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचनतौ उत्सर्गहै ॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) यहवचनताउत्सर्गका अपवाद है ताअपवादस्थलकूंछोडिकेंही अन्यत्र ताउत्सर्गवचनकीप्रवृत्तिहोवै है अर्थात् यज्ञयुद्धादिकों तैंविना इसपुरुषनैं किसीजीवकीहिंसानहींकरणी इसप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवै है ॥ यातैं शास्त्रविहित यज्ञसंबंधीहिंसा दोषरूपनहीं है ॥ और पूर्वउक्त महाभारतकावचन तथामनकावचनतौ केवलजपयज्ञकी स्तुतिपरहै कोई सोवचन यज्ञसंबंधीहिंसाविषे अधर्मपणेकूंबोधनकरतानहीं ॥ काहे तैं यहयज्ञसंबंधीहिंसा अधर्मरूपहै इसअर्थविषे तिसवचनका तात्पर्य हैनहीं किंतु केवल जपकीस्तुतिविषेही तिसवचनका तात्पर्य है ॥ और जिसवचनका जिसअर्थविषे तात्पर्यहोवै है तिसवचनका सोईहीअर्थहोवै है ॥ यातैं सांख्यियोंकूं वेदविहित अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य इत्यादिकनित्यकर्मोंविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै ॥ तथा धर्मरूप तिनकर्मोंविषे जोअधर्मपणेकाज्ञानहै तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जो नहीं अनुष्ठानकरणेकाज्ञानहै सोयह सर्वविपर्यासरूपज्ञानमोहरूपही है ऐसेमोहकेवशतैं जो नित्यकर्मोंकापारित्यागहै सोपरित्याग तामसत्यागकह्याजावै है ॥ जिसकारणतैं मोहतमरूपही है इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तामसत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरिकें अब श्रीभगवान् राजसत्यागके स्वरूपकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) दुःखमित्येवयत्कर्मकायक्लेशभयात्त्यजेत् ॥ सकृत्वाराजसंत्यागं नैवत्यागफलंलभेत् ॥ ८ ॥ दुःखम् । इति । एव । यत् । कर्म । कायक्लेशभयात् । त्यजेत् । सः । कृत्वा । राजसम् । त्यागम् । न । एव । त्यागफलम् । लभेत् ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

केही हेतुहोवैं हैं ॥ यातैं तेकाम्यकर्म दोषवालेही हैं ॥ इसीकारणतैंही बंधकीनिवृत्तिकाकारणरूपजोआत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकीइच्छावान्पुरुषनैं कऱ्याहुआ जो तिनकाम्यकर्मोंकात्यागहै सोत्यागतौ शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवताही है परंतु अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोणेतैं दोषतैंरहित ऐसेजेश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविहित अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्म हैं ऐसेनित्यकर्मोंकात्यागकरणा अंतःकरणकेशुद्धिकी इच्छावान्मुमुक्षुजनोंकूं शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवतानहीं किंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासतै मुमुक्षुजनों नैं तिननित्यकर्मोंका अवश्यकरिकैअनुष्ठानकरणा ॥ यहअर्थ (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वभी प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ हे अर्जुन ! ऐसे अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेनित्यकर्मोंका जो मोहकेवशतैंपरित्यागहै सोपरित्याग तामसत्याग कह्याजावै है ॥ तहां वेदविहित तिननित्यकर्मविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै तथा धर्मरूपतिनकर्मोंविषे जो अधर्मपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जोनहींअनुष्ठानपणेकाज्ञानहै इसप्रकारका भ्रांतिज्ञानरूप जो विपर्यासहै ताकानाम मोहहै ऐसेमोहकेवशतैं जो तिननित्यकर्मोंकापरित्यागहै सोपरित्याग तामसत्याग कह्याजावैहै इति ॥ सोइसप्रकारका विपर्यासरूप मोह सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंकूंहोवै है ॥ तहां तिनसांख्यियोंका यह अभिप्रायहै ॥ जैसे काम्यकर्म दोषवालेहोवैं हैं तैसे अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य ज्योतिष्टोम इत्यादिक नित्यकर्मभी दोषवालेहीहोवैं हैं काहेतैं तिननित्यकर्मोंविषेभी व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै तथायज्ञशालाकेमार्जनकरिकै तथाअग्निविषे होमकरणेकरिकै जीवोंकीहिंसाहोवै है तथा पशुवोंकीहिंसाहोवै है यातैं तेनित्यकर्मभी हिंसारूपदोषवालेहोणेतैं काम्यकर्मोंकीन्याई दुष्टही हैं ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिनैं सर्वभूतोंकेहिंसाका निषेधकऱ्याहै ॥ यातैं यज्ञविषे जोपशुकीहिंसाहै साहिंसाभी निषिद्धही है ॥ और अंतःकरणकीशुद्धितौ तिनहिंसाप्रधाननित्यकर्मों तैंविना गायत्रीआदिकमंत्रोंकेजपकरिकैही होइसकैहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जपस्तुसर्वधर्मेभ्यःपरमोधर्मउच्यते ॥ अहिंसयाहिभूतानांजपयज्ञःप्रवर्त्तते ॥ अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंकाजोजपहै सोजपतौ सर्वधर्मोंतैंपरमधर्म कह्याजावै है काहेतैं जपयज्ञतैंभिन्न जितनेक ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहैं तेसर्वयज्ञ भूतोंकीहिंसाकरिकैही प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और यहजपयज्ञतौ भूतोंकीअहिंसाकरिकैहीप्रवृत्तहोवै है ॥ इसकारणतैं यहजपयज्ञ सर्वधर्मों तैंपरमधर्म कह्याजावै है इति ॥ यहवार्त्ता मनुनैंभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (जाप्येनैवतुसंसिध्येद्ब्राह्मणोनात्रसंशयः ॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते ॥) अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंके जपकरिकैही ब्राह्मण अंतःकरणकेशुद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है ॥ तिसअंतःकरणकीशुद्धिवासतै यहअधिकारीपुरुष दूसरेकिसीकर्मकूंकरै अथवा नहींकरै ॥ और अहिंसारूपमैत्रीवालापुरुषही ब्राह्मण कह्याजावै है

साअंतःकरणकीशुद्धि आत्मज्ञानविषे किंचित्मात्रभीउपयोगीहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता वार्त्तिकग्रंथकेकर्त्ता श्रीसुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (काम्येपिशुद्धिरस्त्येवभोगसिद्ध्यर्थमेवसा ॥ विड्वराहादिदेहेननह्यैंद्रंभुज्यतेफलम्) ॥ अर्थयह ॥ काम्यकर्मोंकेकियेहुएभी अंतःकरणकीशुद्धितौ होवैहै परंतु साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिकेवल भोगकी सिद्धिवासतैहीहोवैहै ज्ञानकीउत्पत्तिवासतेहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं इंद्रसंबंधीसुखरूपफल मलिनअंतःकरणवाले विड्वराहादिकदेहकरिकै भोग्याजातानहीं किंतु शुद्धअंतःकरणवाले देवदेहकरिकैही सोफल भोग्याजावैहै इति ॥ और जेयज्ञदानतपादिककर्म ज्ञानविषेउपयोगी अंतःकरणकीशुद्धिकूंकरे हैं तेयज्ञदानादिकर्म स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वककरेहुए बंधकेहेतुरूपहुएभी फलकीइच्छातैंविना करेहुए तेयज्ञदानादिककर्म बंधकेहेतुरूपहोवैंनहीं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं फलकीइच्छापूर्वक तेयज्ञदानादिककर्म करणेनहीं किंतु मुमुक्षुजनोंनैं संगकूं तथा फलोंकूं परित्यागकरिकैही तेकर्म करणेयोग्यहैं ॥ तहां यौवनादिकअवस्था तथाब्राह्मणादिकवर्ण तथागृहस्थादिकआश्रम इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो मैं इनकर्मोंकाकर्त्ताहूं मैंने यहकर्म अवश्यकरणेयोग्यहै॥याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहै ताकानाम संगहै ॥ और कामनाकेविषयभूत जे तिसतिसकर्मकरिकैप्राप्तहोणेहारे स्वर्गादिकपदार्थहैं तिनोंकानामफलहै ॥ऐसे संगकूं तथाफलोंकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धि वासतैही तेयज्ञदानादिककर्म करणेयोग्यहैं॥इसप्रकारका मैंभगवान्‌कानिश्चित मतहै॥इसीकारणतैंही हे पार्थ ! कर्मकेअधिकारीपुरुषों नैं तेयज्ञदानादिककर्म त्यागकरणेयोग्यहैं अथवा नहींत्यागकरणेयोग्यहैं इनदोनोंमतोंविषे तेकर्म नहींत्यागकरणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारका मैंभगवान्‌का मत अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ तहां श्रीभगवान्‌नैं पूर्व (निश्चयंशृणुमेतत्र) इसवचनकरिकै जो आपणानिश्चय कथनकरयाथा सोआपणानिश्चय इसश्लोकविषे उपसंहारकऱ्या इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं पूर्वकथनकऱ्याजो आपणापक्षथा सोआपणापक्ष इतनेपर्यंत स्थापनकरया ॥ अब (त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरयाजो परपक्षथा तिसपरपक्षके पूर्वउक्तत्यागकेत्रिविधपणेकेव्याख्यानकरिकै निषेधकरणेका आरंभकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नियतस्यतुसंन्यासःकर्मणोनोपपद्यते ॥ मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्त्तितः ॥ ७॥ नियतस्य । तु । संन्यासः । कर्मणः । न । उपपद्यते । मोहात् । तस्य । परित्यागः । तामसः । परिकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः कर्मका त्याग नहीं संभवैहै तिसनित्यकर्मका मोहतैं परित्याग तामसत्याग कथनकऱ्याहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक करेजे काम्यकर्म हैं तेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोवैंनहीं उलटा तेकाम्यकर्म इसपुरुषकेबंध

है ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै ॥ इहां यज्ञ दान तप यहतीनोंकर्म ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमोंके शास्त्रविहितसर्वकर्मोंकेउपलक्षणहैं ऐसे यज्ञदानतपरूपकर्म तिनयज्ञादिककर्मोंकेस्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारे हैं अर्थात् तेयज्ञदानतपरूपकर्म ज्ञानकेप्रतिबंधकपापरूपमलकी निवृत्तिकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूप पुण्यगुणकाआधानकरिकै फलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंके शोधकहीहोवैं हैं ॥ इहां अंतःकरणरूपउपाधिकीशुद्धिकरिकैही तिसअंतःकरणउपहितपुरुषोंकीशुद्धि भगवान्कूं अभिप्रेतहै ॥ हे अर्जुन! जिसकारणतैं तेयज्ञदानतपरूपकर्म फलकीइच्छातैंरहितपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेहैं तिसकारणतैं अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छावान् कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं फलकीइच्छातैंरहित यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्भी परित्याग करणेनहीं किंतु तेयज्ञदानतपरूपकर्म अवश्यकरिकैकरणे ॥ यद्यपि (नत्याज्यम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यज्ञदानतपरूपकर्मका अत्यागपणा कथन कन्या ॥ ताअत्यागपणेकरिकैही अर्थतैं तिनयज्ञदानादिककर्मोंकीकर्त्तव्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पुनः (कार्यमेवतत्) इसवचनकरिकै तिनयज्ञदानादिककर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरणी संभवतीनहीं ॥ तथापि तिस यज्ञदानादिरूपकर्मोंकीकर्त्तव्यताके अत्यंतआदरवास्तै श्रीभगवान्नैं पुनः (कार्यमेवतत्) यह वचन कथनकन्याहै ॥ अथवा ॥ (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत्) इसवचनका याप्रकारतैं अर्थकरणा ॥ जिसकारणतैं यज्ञदानतपरूपकर्म कार्यहै अर्थात् कर्त्तव्यतारूपकरिकै वेदनैंविधानकरयाहै ॥ तिसकारणतैं सोयज्ञदानतपरूपकर्म इसअधिकारीपुरुषनैं कदाचित्भी नहींत्यागकरणा इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥

शंका—हे भगवन्! यज्ञदानतपरूपकर्मोंका जोकदाचित् अंतःकरणकीशुद्धिकरणेविषे सामर्थ्यहोवै तौ स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकैकरेहुएभी तेयज्ञदानतपरूपकर्म तिसअंतःकरणकेशोधकहोवैंगे ॥ यातैं फलकीइच्छाकापरित्यागकरणा व्यर्थहीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं ।

(मू. श्लो.) एतान्यपितुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाफलानिच ॥ कर्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितंमतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ एतानि । अपि । तु । कर्माणि। संगम् ।त्यक्त्वा । फलानि । च । कर्तव्यानि । इति । मे । पार्थ । निश्चितम् । मतम् । उत्तमम् ॥ ६॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ पुनः येहपूर्वउक्त यज्ञदानादिककर्म भी कर्तृत्वअभिमानकूं तथा स्वर्गादिकफलोंकूं परित्यागकरिकै करणेयोग्यहैं इसप्रकारका मेरेपरमेश्वरका निश्चित श्रेष्ठ मतहै॥ ६॥ इतिपदार्थः॥

टीका । इहां (एतान्यपितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वउक्तशंकाके निवृत्तकरणेवास्तैहै ॥ हे अर्जुन ! यद्यपि काम्यकर्मभी आपणे धर्मस्वभावतैं इसपुरुषके अंतः करणकीशुद्धिकरैं हैं तथापि साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धि तिनकाम्यकर्मोंके सुखरूपफलकेभोगमात्रविषेही उपयोगीहोवैहै ॥

अधिकारीपुरुषहै ऐसेअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर कन्याजो तिनशुद्धिकेसाधनभूतसर्वकर्मोंका परित्यागहै सोकर्मोंकापरित्यागतौ प्रथम साधनरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीसाधनरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विविदिषासंन्यास कहैं हैं ॥ इसीसाधनरूपविविदिषासंन्यासकूं श्रीभगवान् आगे (नैष्कर्म्य सिद्धिंपरमाम्) इसवचनकरिकै कथनकरैं गे ॥ और जन्मांतरोंविषेकन्याजो श्रवणादिकसाधनोंकाअभ्यासहै तिसअभ्यासकेपरिपाकतैं इसजन्मविषे प्रथमही उत्पन्नहुआहैआत्मसाक्षात्कारजिसकूं ऐसाजो कृतकृत्य विद्वान् पुरुषहै ऐसेविद्वान्पुरुषनैं स्वतःही कन्याजो फलकीइच्छाका तथाकर्मोंका परित्यागहै सोकर्मोंकापरित्याग दूसरा फलरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीफलरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्वत्संन्यास कहे हैं ॥ सोफलभूतविद्वत्संन्यास श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिरेवस्यात्) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै पूर्व व्याख्यानकन्या ॥ तथा स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणादिकोंकरिकैभी पूर्व बहुतविस्तारतैंकथनकन्याहैं इति ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं इसपूर्वउक्तरीतितैं त्यागकास्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ और तुमनैं (त्यागस्यतत्त्वंवेदितुमिच्छामि) इसवचनकरिकै पूर्व त्यागकेस्वरूपजानणेकी प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसकारणतैं मैंसर्वज्ञपरमेश्वरकेवचनतैंही तिसत्यागकेयथार्थस्वरूपकूं तूंअर्जुन निश्चयकर इति ॥ इहां (हेभरतसत्तम हेपुरुषव्याघ्र) इनदोसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैंअर्जुनविषे यथाक्रमतैं कुलनिमित्तकउत्कर्ष तथास्वपौरुषनिमित्तकउत्कर्ष कथनकन्या ताकरिकै तिसअर्जुनविषेतिसत्यागकेस्वरूपनिश्चयकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! (त्याज्यंदोषवदित्येके) इसश्लोकविषेकथनकरीजा वादियोंकीविप्रतिपत्तिहै तिसविप्रतिपत्तिके कोटिभूतदोनोंपक्षोंविषे कौनआपकानिश्चयहै ॥ क्याप्रथमपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा द्वितीयपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा इनदोनोंपक्षोंतैंभिन्न कोईतीसराहीपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै कथनकन्याजोद्वितीयपक्षहै सोद्वितीयपक्षही हमारानिश्चयहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥ यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम् ॥ ५ ॥ यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यम् । कार्यम् । एव । तत् । यज्ञः । दानम् । तपः । च । एव । पावनानि । मनीषिणाम् ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहै किंतु सोकर्म करणेयोग्य ही है जिसकारणतैं यज्ञ दान तप यहतीनों फलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारे ही हैं ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रौतस्मार्तरूप जो अग्निहोत्रादिरूपयज्ञहै ॥ तथा उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेताईं शास्त्रकेविधिप्रमाण जो गौसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादान

दोनोंकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकरिकैविशिष्टदंडीपुरुषका जोअभावहै सोविशिष्टाभाव कह्याजावैहै सोशिविष्टाभाव विशेषणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतै अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं होवैहै ॥ तहां जहां पुरुषरूपविशेष्यकेवियमानहुएभी दंडरूपविशेषणका अभाव होवैहै तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ इहां दंडरूपविशेषणकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषका अभावहोवैहै ॥ और जहांदंडरूपविशेषणकेवियमानहुएभी पुरुषरूपविशेष्यका अभावहोवैहै तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ इहां पुरुषरूपविशेष्यकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभावहोवैहै ॥ और जहां दंडरूपविशेषणकाभीअभावहोवैहै तथापुरुषरूपविशेष्यकाभीअभावहोवैहै तहांभी दंडीपुरुषनहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ इहां दंडरूपविशेषणके तथापुरुषरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभाव होवैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकै विशिष्टजोकर्म है तिसविशिष्टकर्मकात्यागरूप विशिष्टाभावभी इच्छारूपविशेषणकेअभावतैं अथवा कर्मरूपविशेष्यकेअभावतैं अथवा इच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कर्मरूपविशेष्यकेवियमानहुएभी फलकीइच्छारूपविशेषणकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकात्यागहै सोइच्छारूपविशेषणकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहप्रथमत्यागहै ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणकेवियमानहुएभी कर्मरूपविशेष्यकाजोपरित्यागहै सो कर्मरूपविशेष्यकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहदूसरा त्यागहै ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकापरित्यागहै ॥ सो विशेषण विशेष्य दोनोंकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहतीसरात्यागहै ॥ तहां प्रथम कर्मकात्यागतौ सात्त्विकहोणेतैं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरा त्यागतौ राजस तामस इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै सोदोनोंप्रकारकाही दूसरात्याग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां दुःखबुद्धिकरिकै करयाहुआ सोकर्मोंकात्याग राजस कह्याजावैहै ॥ और भ्रांतिरूपविपर्यासकरिकै करयाहुआ सोकर्मोंकात्याग तामस कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं करया जो कर्मोंकात्यागहै सोत्यागही इहां अर्जुनकेप्रश्नकाविषयहै ॥ और शुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं कर्मोंकाअनधिकारीजोपुरुषहै सोकर्मोंकाअनधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो तीसरा गुणातीतनामा त्यागहै सोत्याग इहां अर्जुनकेप्रश्नकाविषयहैनहीं ॥ सोगुणातीतनामा कर्मोंकात्यागभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ साधनरूपहोवैहै ॥ और दूसरा फलरूपहोवैहै तहां फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक कर्मोंकाअनुष्ठानरूप जोसात्त्विकत्यागहै तिससात्त्विकत्यागकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरणजिसका तथा उत्पन्नहुई हैआत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाजिसकूं तथाआत्मज्ञानकेसाधनभूत श्रवणमननरूपवेदांतविचारकेवासतै स्वर्गादिकसर्वफलोंकीइच्छातैंरहित ऐसाजो

अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी तेसर्वहीकर्म परित्यागहीकरणेयोग्यहैं इसप्रकार केईक बुद्धिमान्पुरुष कहैं हैं अथवा इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ जैसे रागद्वेषादिकदोष इसअधिकारीपुरुषनैं परित्यागकरणेयोग्यहैं तैसे नहींउत्पन्नहुआ है आत्मज्ञानजिन्होंकूं तथानहींउत्पन्नहुई है विविदिषाजिन्होंकूं ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी आपणेबंधकाहेतुजानिकै तेसर्वकर्म परित्यागहीकरणेयोग्यहैं ॥ यह श्लोककेपूर्वार्धकरिकैं एकपक्षसिद्धभया ॥ अब श्लोककेउत्तरार्धकरिकै द्वितीयपक्ष कथनकरैं हैं (यज्ञदानतपःकर्मइति) हेअर्जुन ! अंतःकरणकी शुद्धितैंरहित कर्मोंकेअधिकारीपुरुषों नैं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकीउत्पत्तिवासतै यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्भीनहींपारित्यागकरणे ॥ इसप्रकार केईक दूसरेबुद्धिमान्पुरुष कहैं हैं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार कर्मोंकेपरित्यागविषे वादियोंकीविप्रतिपत्तिकूं कथनकरिकै अब श्रीभगवान् आपणे निश्चयकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) निश्चयंशृणुमेतत्रत्यागेभरतसत्तम ॥ त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः ॥ ४ ॥ निश्चयम् । शृणु । मे । तत्र । त्यागे । भरतसत्तम । त्यागः । हि । पुरुषव्याघ्र । त्रिविधः । संप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभरतकुलविषेश्रेष्ठअर्जुन ! तिसं कर्मत्यागविषे हमारे निश्चयकूं तूं श्रवणकर हेसर्वपुरुषोंविषे श्रेष्ठ अर्जुन जिसकारणतैं सोत्याग तीनप्रकारका कथनकन्याहे ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित जोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहै सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहै कर्त्ताजिसका तथासंन्यासत्यागइनदोनोंशब्दोंकरिकै प्रतिपादनकन्याहुआ ऐसाजो फलकीइच्छापूर्वककर्मोंकापरित्यागहै जिसत्यागकास्वरूप पूर्वतुमनैं हमारेसैं पूछाहै तिसत्यागविषे पूर्वआचार्यों नैं कन्याजो निश्चयहै तिसनिश्चयकूं तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचननैं श्रवणकर ॥ शंका—हेभगवन् ! तिसत्यागविषे ऐसीक्यादुर्विज्ञेयताहै जिसकूं मैंआपकेवचननैं श्रवण करूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसत्यागकीदुर्विज्ञेयताकूंकथनकरैंहैं (त्यागोहिइति) हेअर्जुन ! कर्मोंकाअधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो फलकी इच्छापूर्वककर्मोंकात्यागहै सोत्याग जिसकारणतैंवेदवेत्तापुरुषों नैं तीनप्रकारका कथनकन्याहै अर्थात् तामस राजस सात्त्विक इसभेदकरिकैसोत्यागतनिप्रकार का कथनकन्याहे ॥ अथवा (त्रिविधःसंप्रकीर्तितः) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकैं विशिष्ट जोकर्म है तिसइच्छाविशिष्टकर्मका जोत्यागहै सोविशिष्टाभावरूप त्यागविशेषणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतैं अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारका कथनकन्याहे सोप्रकार दिखावैं हैं ॥ और कहांतो विशेषणकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहे ॥ और कहांतो विशेष्यकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहे ॥ और कहां तोविशेषण विशेष्य

रिके तेकाम्यकर्मभी अंतःकरणकीशुद्धिवासतैहीकरणे काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे स्वभातैंतौ नित्यपणा अथवा काम्यपणा होतानहीं किंतु कर्त्तापुरुषकेअभिप्रायविशेषकरिकेही तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे नित्यपणा अथवा काम्यपणा सिद्धहोवैहै ॥ तहां जोअग्निहोत्र स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्याजावैहै तिसअग्निहोत्रविषे तौ कम्यपणा होवैहै ॥ और जोअग्निहोत्र स्वर्गादिफलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवलभगवतअर्पणबुद्धिकरिकै कऱ्याजावैहै तिसअग्निहोत्रविषे नित्यपणाहोवै है यातैं यहअर्थसिद्धभया आत्मज्ञानकी इच्छारूपविविदिषाविषे केवल नित्यकर्मोंकाही उपयोगहोवैहै ॥ तिसविविदिषाविषे काम्यकर्मोंका किंचित्मात्रभी उपयोगहोवैनहीं ॥ यातैं इनमुमुक्षुजनोंनैं तिनकाम्य कर्मोंका तिसतिसफलसहित स्वरूपतैंहीपरित्यागकरणा ॥ यहतौ इसश्लोकके पूर्वार्धकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ और तिसविविदिषाविषे जैसे नित्यकर्मोंकाउपयोगहोवैहै तैसे तिसतिसफलकीइच्छातैंरहित काम्यकर्मोंकाभी उपयोगहोवैहै ॥ यातैं तिसविविदिषाकीप्राप्तिवासतै तिनकाम्यमोंका तथानित्यकर्मोंका स्वरूपतैंअनुष्ठानकियेहुएभी इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छमात्रका परित्यागकरणा यह श्लोककेउत्तरार्धकाअर्थ सिद्ध होवैहै ॥ इसकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ फलसहित काम्यकर्ममात्रकाजोत्यागहै सोत्यागतौ संन्यासशब्दका अर्थहै ॥ और नित्यकाम्यरूपसर्वकर्मोंकेफलकीइच्छामात्रकाजोपरित्यागहै सोत्याग त्यागशब्दकाअर्थहै ॥ यातैं जैसे घट पट इनदोनोंशब्दाका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थहोवैहै ॥ तैसे संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थनहींहै किंतु अंतःकरणकीशुद्धि वासतै स्वरूपतैंकर्मोंकेअनुष्ठानहुएभी तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छाकोपरित्यागरूप एकहीअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकासिद्धहोवैहै इसप्रकारतैं इसश्लोककरिकै एकप्रश्नकानिर्णय सिद्धभया इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकेउत्तरकहणेवासतै संन्यासशब्दकेअर्थविषे तथात्यागशब्दकेअर्थविषे त्रिविधपणेकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम तिसअर्थविषे वादियोंकेविप्रतिपत्तिकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः ॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ॥ ३ ॥ त्याज्यम् । दोषवत् । इति । एके । कर्म । प्राहुः । मनीषिणः । यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यम् । इति । च । अपरे ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! रागद्वेषादिकदोषकीन्याई कर्मभी परित्यागकरणेयोग्य हैं इसप्रकार केईक बुद्धिमान्पुरुष कहतेहैं तथा यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकार दूसरेबुद्धिमान्पुरुषकहतेहैं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! नित्य नैमित्तिक काम्य प्रायश्चित्त इत्यादिकसर्वहीकर्म इसपुरुषके बंधकेहेतुहोणेतैं दोषवदहैं अर्थात् तेसर्वकर्म दोषवालेहैं ॥ यातैं

अंत्यप्रश्नकेंनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् उत्तरकूं कथनकरैं हैं ॥ तहां जैसे लुहारपुरुष बहुप्रयत्नसाध्यकटाहकूं छोडिकै प्रथम अल्पप्रयत्नसाध्य सूचीकूंबनाइदेवैहै तैसे बहुतविस्तारतैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकूं छोडिकै प्रथम थोडेमैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकाकथनकरणा याकूं सूचीकटाहन्यायकहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः ॥ २ ॥

काम्यानाम् । कर्मणाम् । न्यासम् । संन्यासम् । कवयः । विदुः । सर्वकर्मफलत्यागम् । प्राहुः । त्यागम् । विचक्षणाः ॥२॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! काम्य कर्मोंके त्यागकूं सूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यास जानैं हैं तथाविचारविषे कुशलपुरुष सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं त्याग कहैं हैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत)इत्यादिकविधिवचनों नैं स्वर्गादिफलकीकामनावालेपुरुषकेप्रति विधानकरेजे ज्योतिष्टोमादिक काम्यकर्महैं जेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिविषे किंचित्मात्रभी उपयोगकरतेनहीं ऐसेकाम्यकर्मोंका जोत्याग तिसत्यागकूं केईकसूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यासरूपजानैं हैं ॥ काहेतैं ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इसश्रुतिनैं नित्यकर्मोंकाही प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकऱ्याहै ॥ तहां इसश्रुतिविषे वेदानुवचनशब्द ब्रह्मचारीके सर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ और यज्ञ दान यहदोनोंशब्द गृहस्थके सर्वधर्मोंकेउपलक्षणहैं ॥ और तप अनाशकयहदोनोंशब्द वानप्रस्थकेसर्वधर्मोंकेउपलक्षणहैं इति ॥ और (ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः) इत्यादिकवचनोंनैंभी प्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिद्वारा नित्यकर्मोंकाही आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे उपयोग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं नित्यकर्मोंकाही आत्मविषे अथवा आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाविषे उपयोगहै ॥ काम्यकर्मोंका आत्मज्ञानविषे तथाविविदिषाविषे किंचित्मात्रभी उपयोगनहींहै यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तथा विविदिषाकीउत्पत्तिपूर्वक आत्मज्ञानकी प्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषनैं भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै नित्यकर्मोंकाहीअनुष्ठानकरणा ॥ और काम्यकर्मतौ तिसतिसफलसहित सर्वही परित्यागकरणे यह एकमत कथनकऱ्या ॥ अब द्वितीयमतका कथनकरैं हैं (सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः इति) हेअर्जुन ! सर्वकाम्यकर्मोंके तथासर्वनित्यकर्मोंके जो फलकात्यागहै अर्थात् अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छाकरिकै विविदिषाकीप्राप्तिवासतै जो तिन काम्यरूपनित्य सर्वकर्मोंकाअनुष्ठानहै तिस सर्व कर्मकेफलकेत्यागकूं विचारविषेकुशलपुरुष त्यागरूप कहैं हैं ॥ यद्यपि (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत) इत्यादिकवचनों नैं ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंके स्वर्ग पुत्र पशु इत्यादिक भिन्नभिन्नफलही कथनकरेहैं तथापि इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसस्वर्गादिकफलकीनहींइच्छाक

नोंकेअधिकारीपुरुषहैं ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनेंकऱ्याजो किंचित्कर्मोंकाग्रहणकारिकै किंचित्कर्मोंकापरित्यागहै सोकर्मों
षाभी उत्पन्नहुईनहीं ऐसेजेक गतैं गौणावृत्तितैं संन्यासशब्दकरिकै कह्याजावैहै ।। इसप्रकारका अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अविद्वान्कर्मके अधिकारीपुरुषनैं
कापरित्याग त्यागअंशरूप गुणकेय सर्वप्रकारतैं कर्मोंकात्यागरूपहैनहीं किंतु किसीकरूपकरिकै कर्मोंकात्यागरूपहै इसप्रकारके संन्यासकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन
कऱ्याजो संन्यासहै जोसंन्यास भेदकारिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं तथा त्यागकेस्वरूपकूंभी मैं सात्विकादिकभेदकारिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं ।। तहां
सात्विक राजस तामस इसप्रकारकेभी दोनोंशब्दोंकीन्याईं भिन्नभिन्नजातिवाले अर्थकेवाचकहैं अथवा घट कलश इनदोनोंशब्दोंकीन्याईं एकही जातिवाले
संन्यासत्यागयहदोनोंशब्द घट पट इन[illegible]पक्ष अंगीकारहोवै तबी त्यागकेस्वरूपकूं संन्यासतैंपृथक्करिकै मैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ।। और
अर्थकेवाचकहैं ।। तहां इनदोनोंपक्षोंविषे जबी औ[illegible]प्रवृत्तिकूं निमित्तभूत अवांतरउपाधिकाभेदमात्र कह्याचाहिये ।। संन्यास त्याग इनदोनोंविषे एकके
जबी द्वितीयपक्ष अंगीकारहोवै तबी संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकेप्र बाहुजिसकूं ताकानाम महाबाहुहै ।। और केशिनामादैत्यकूं जो नाशकरताभयाहै
व्याख्यानकरिकैही दोनोंकाव्याख्यान सिद्धहोवैगा इति ।। तहां महान्हैंदोनों बाह्यउपद्रवोंकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या और हृषीकनाम इंद्रियोंका
ताकानाम केशिनिषूदनहै इनदोनोंसंबोधनोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे अंतरकामक्रोधादिकउपद्रवोंकेनि
है तिनइंद्रियोंकाजोईशहोवै अर्थात् प्रवर्त्तकहोवै ताकानाम हृषीकेशहै भगवान्केती संबोधनकथनकरेहैं इति ।। तहां इसश्लोकविषे अर्जुनकेदोप्रश्न
वृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ।। इहां भगवत्विषयकअत्यंतअनुरागतैं अर्जुननैं यज्ञादिककर्मोंका साधर्म्यभी रहैहै तथा पूर्वउक्तगुणातीतरूपदोप्रका
सिद्धहुए ।।तहां कर्मकेअधिकारीअविद्वान्पुरुषोंनैं कऱ्याजो संन्यासहै तिससंन्यासविषे पूर्वउक्त करितेहैं तैसे यहसंन्यासभी कर्मकेअधिकारीपुरुषनैंही कऱ्याहै
रकेसंन्यासका साधर्म्यभी रहैहै ।। तहां जैसे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्म कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं नामा दोप्रकारकासंन्यास संन्यासशब्दकरिकै प्रतिपादनकऱ्याजावैहै
यहही इससंन्यासविषे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्मोंका समानधर्महै ॥ और जैसे पूर्वउक्त गुणातीत गुणातीतनामा दोप्रकारकेसंन्यासका समानधर्महै ॥ इसप्रकार
तैसे यहसंन्यासभी संन्यासशब्दकरिकै प्रतिपादनकऱ्याजावैहै यहही इससंन्यासविषे पूर्वउक्त विषे त्रिगुणताकेसंभवअसंभवदोनोंकरिकै संशयहोवैहै सोसंशयतौ
यज्ञादिकोंकेसमानधर्मकरिकै तथागुणातीतनामादोनोंसंन्यासोंकेसमानधर्मकरिकै जो इससंन्यास पर्यायरूपताहोणेतैं कर्मोंकेत्यागरूपकरिकै तथाकर्मफलकेत्यागरूप
प्रथमप्रश्नकाबीजरूपहै और संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकूं घट कलश इनदोशब्दोंकीन्याईं रूपहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां सूचीकटाहन्यायकरिकै
करिकै तिनदोनोंकेविलक्षणताकेकथनतैं उत्पन्नहुआजोसंशयहै सोसंशयतौ द्वितीयप्रश्नकाबी

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ अथ अष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ ॥ तहांपूर्व सप्तदश अध्यायविषे श्रद्धाका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेदकथनकरिकै तथा आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारका भेद कथनकरिकै कर्मीपुरुषोंका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेद कथनकऱ्या ॥ सात्त्विकोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथाराजस तामसोंकेपरित्यागकरावणे वासतै अब संन्यासके सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधपणेकूंकथनकरिकै संन्यासियोंकेभी सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधपणेकूं अवश्य करिकैकह्याचाहिये ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर करणेयोग्य जोफलभूत सर्वकर्मोंकासंन्यासहै जिससंन्यासकूं शास्त्रविषे विद्वत्संन्यास कहैं हैं ॥ सोफल भूतसंन्यासतौ पूर्वचतुर्दश अध्यायविषे गुणातीतरूपकरिकै व्याख्यानकऱ्याथा ॥ यातैं सोफलभूतविद्वत्संन्यासतौ सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधभेदके योग्यहोवैनहीं ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व तिसआत्मासाक्षात्कारकीप्राप्तिअर्थ जो सर्वकर्मोंकासंन्यासहै ॥ जो संन्यास आत्मसाक्षात्कारकीइच्छावान्पुरुषनैं वेदांतवाक्योंकेविचारवासतै कऱ्याजावै है ॥ जिससंन्यासकूं शास्त्रविषे विविदिषासंन्यासकहैं हैं ॥ सोविविदिषासंन्यासभी (त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व निर्गुणरूपकरिकै व्याख्यानकऱ्याथा ॥ यातैं सोविविदिषासंन्यासभी सात्त्विक राजस तामस इस प्रकारकेत्रिविधपणेकेयोग्यहैनहीं किंतु फलभूतविद्वत्संन्यास तथाविविदिषासंन्यास यहदोनोंसंन्यास गुणातीतसंन्यास कहेजावै हैं॥ और जिनपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिहुईनही तथाआत्मसाक्षात्का रकीइच्छारूपविविदिषाकीभी उत्पत्तिहुईनहीं ऐसे तत्त्ववेत्तापणेतैंरहित तथाजिज्ञासुपणेतैंरहितपुरुषोंका जो कर्मोंकासंन्यासहै ॥ जोसंन्यास (ससंन्यासीचयोगीच) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व गौणसंन्यासरूपकरिकेव्याख्यानकऱ्याथा ॥ तिससंन्यासका सात्त्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा संभवहोइसकैहै ॥ तिसीहीसंन्यासके विशेषताजानणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरै है ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ संन्यासस्यमहाबाहोतत्त्वमिच्छामिवेदितुम् ॥ त्यागस्यचहृषीकेशपृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥ संन्यासस्य । महाबाहो । तत्त्वम् । इच्छामि । वेदितुम् । त्यागस्य । च । हृषीकेश । पृथक् । केशिनिषूदन ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमहाबाहु हेहृषीकेश हेकेशिनिषूदन संन्यासके तथा त्यागके स्वरूपकूं मैंअर्जुन पृथक् जानणेकूं चाहताहूं सोकृपाकरिकै कहो ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेमबाहो ! हे हृषीकेश ! हे केशिनिषूदन ! श्रीभगवन् जिनपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहुईनहीं तथा जिनपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदि

लोककेफलकी तथापारलौकिकफलकी प्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतैं यह अधिकारीपुरुष सात्त्विकीश्रद्धाकरिकैहीसात्त्विकयज्ञादिक कर्मकूं करै ऐसेश्रद्धापूर्वककरेहुए सात्त्विकयज्ञादिकोंविषे जोकदाचित् विगुणतादोषकीशंका प्राप्तहोवै तौ यह अधिकारीपुरुष ओंतत्सत् इसप्रकारकेब्रह्मके नामकूं उच्चारणकरिकै तिनयज्ञादिककर्मोंकूं विगुणतादोषतैंरहितकरै इति ॥ तहां इससप्तदशअध्यायविषे यहअर्थ निर्णयकऱ्या ॥ आलस्यादिकदोषकरिकै शास्त्रविधिकापरित्यागकऱ्याहैजिनों नैं तथा श्रद्धापूर्वकपितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकेव्यवहारमात्रकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषेप्रवृत्तिहै जिनोंकी ॥ तथा शास्त्रकेविधिकापरित्यागरूप जोअसुरपुरुषोंकाधर्म है तथाश्रद्धापूर्वककर्मोंकाअनुष्ठानरूप जो देवोंकाधर्म है तिनदोनोंधर्मोंकरिकैयुक्तहोणेतैं तेपुरुष क्याअसुरहैं अथवादेवहैं इसप्रकारके अर्जुनकेसंशयके विषयभूत जेपुरुषहैं तिनपुरुषोंकेमध्यविषे जेपुरुष राजसतामसश्रद्धापूर्वक राजसतामसरूप यज्ञादिककर्मोंकूंहीकरैं हैं ते पुरुषतौ असुर कहेजावैं हैं ॥ ऐसेअसुरपुरुषतौ शास्त्रप्रतिपादितज्ञानसाधनोंके अधिकारीही हैं ॥ और जेपुरुष सात्त्विकश्रद्धापूर्वक सात्त्विकयज्ञादिकोंकूंकरैं हैं तेपुरुषतौ देवकहेजावैं हैं ॥ तेदेवपुरुषतौ शास्त्रप्रतिपादितज्ञानसाधनोंकेअधिकारीहोवैं हैं ॥ इसप्रकारकानिर्णय श्रीभगवान्नैं इसअध्यायविषे सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकी श्रद्धाकेप्रतिपादनद्वारा आहारादिकोंकेसात्त्विकादिकत्रिविधपणेकरिकै सिद्धकऱ्या इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितायांप्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सप्तदशोध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति सप्तदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १७ ॥



ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामकरिकै जबी तिसविगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै तबी श्रद्धातैंरहितपणेकरिकै शास्त्रीयविधिकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रकरिकै यत्किंचित्यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे आसुरपुरुषोंकूंभी ओंतत्सत्इसनामकरिकैही विगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ यातैं यज्ञादिककर्मों केसात्त्विकपणेकाहेतुभूत श्रद्धाका कोईभीप्रयोजननहीं है ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् श्रद्धातैंविनाकरेहुएसर्वकर्मों केनिष्फलताकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अश्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेश्रद्धात्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ अश्रद्धया । हुतम् । दत्तम् । तपः । तप्तम् । कृतम् । च । यत् । असत् । इति । उच्यते । पार्थ । न । च । तत् । प्रेत्य । नो । इह ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! अश्रद्धाकरिकै जोहवनकरीताहै तथाजोदानकरीताहै तथाजोतप करीताहै तथा जोकोईअन्यभी कर्मकरीताहै सोसर्व असत् इसनामकरिकै कह्याजावैहै जिसकारणतैं सोश्रद्धारहितकर्म परलोकविषेभी नहींफलदेवैहै तथाइसलोकविषेभी नहींफलदेवैहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसपुरुषनैं अश्रद्धाकरिकै अग्निविषे जोहवनकरीताहै तथा ब्राह्मणों केताईं जोसुवर्णादिकपदार्थोंकादान देताहै तथा शारीरतप वाचिकतप मानसतप यहतीनप्रकारकाजोतप करीताहै तथा इसतैं अन्यभी जेस्तुतिनमस्कारादिककर्म करीतेहैं तेअश्रद्धाकरिकैकरेहुए हवनादिकसर्वहीकर्म असत् इसप्रकारकेनामकरिकै कहेजावैं हैं अर्थात् तेसर्वकर्मआसाधुही कहेजावैं है यातैं श्रद्धातैंविनाकरेहुएतिनकर्मोंका ओंतत्सत् इसनामकरिकै सोसाधुभावकन्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेपाषाणकीशिलाविषे अंकुरकेउत्पत्तिकी योग्यताहीहोतीनहीं तैसे तिनश्रद्धातैंरहितकर्मोंविषे सर्वप्रकारकरिकै तिससाधुभावकी योग्यताहीहोतीनहीं ऐसेसाधुभावकेयोग्य तिनकर्मोंविषे ओंतत्सत इसनामकरिकै सोसाधुभाव कदाचित्भीसंभवतानहीं इति ॥ शंका–हे भगवन् ! तेश्रद्धातैंरहितकर्म किसहेतुतैं असत् कहेजावैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेहेतु कहैं हैं (नचतत्प्रेत्यनोइहइति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं अश्रद्धाकरिकैकन्याहुआ सोकर्म परलोकविषेभी फलकी प्राप्तिकरतानहीं काहेतैं तेश्रद्धारहितकर्म विगुणतादोषवालेहोणेतैं धर्मरूपअपूर्व केउत्पादकहोतेनहीं ताधर्मरूप अपूर्वतैंविना सोस्वर्गादिरूप पारलौकिकफल प्राप्तहोतानहीं तथा सोश्रद्धातैंविनाकन्याहुआकर्म इसलोकविषेभी यशरूपफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ जिसकारणतैंश्रद्धाहीनपुरुषकी शिष्टपुरुष स्तुतिकरतेनहीं किंतु निंदाहीकरतेहैं यातैं श्रद्धातैंरहितहोइके कन्याजो यज्ञादिरूपकर्महै सोकर्म इस

भावविषेभी सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै अर्थात् जिसवस्तुकेअसाधुपणेकीशंकाहोवैहै तिसवस्तुकेसाधुपणेविषेभी सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै यातैंयहसत्शब्द विगुणतादोषकीनिवृत्तिकरिकै तिनयज्ञादिककर्मों के साधुत्वकरणेकूं तथातिनयज्ञादिककर्मों के फलकीविद्यमानताकरणेकूं समर्थ है ॥ हे अर्जुन ! जैसे सद्भावविषे तथासाधुभावविषे यहसत्शब्द उच्चारणकरीताहै तैसे प्रतिबंधतैंरहितहोइके शीघ्रही सुखकेजनक जे विवाहादिक मांगलिककर्म हैं तिनकर्मों विषेभी शिष्टपुरुषों नैं सोसत् शब्द उच्चारणकरीताहै यातैं यहसत्शब्द विगुणतादोषकीनिवृत्तिकरिकै तिनयज्ञादिककर्मोंविषे प्रतिबंधतैंरहित शीघ्रही फलकी जनकता संपादनकरणेविषे समर्थ है इसकारणतैं यहसतशब्द अत्यंतश्रेष्ठहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) यज्ञेतपसिदानेचस्थितिःसदितिचोच्यते ॥ कर्मचैवतदर्थीयंसदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥ यज्ञे । तपसि । दाने । च । स्थितिः । सत् । इति । च । उच्यते । कर्म । च । एव । तदर्थीयम् । सत् । इति । एव । अभिधीयते ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! पुनः यज्ञविषे तथातपविषे तथा दानविषे स्थितिभी सत् इसप्रकार कथनकरीतीहै तथा तदर्थीय कर्म भी सत् इस प्रकार ही कथनकरीताहै ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यज्ञविषे तथातपविषे तथादानविषे जास्थितिहै अर्थात् तत्परताकरिकै जाअवस्थितिरूपनिष्ठाहै सानिष्ठारूपस्थितिभी विद्वान्पुरुषों नैं सत् इसनामकरिकै कथनकरीतीहै तथा तदर्थीय जोकर्म है सोकर्मभी सत् इसनामकरिकैही कथनकरीताहै ॥ तहां तिन यज्ञतपदानरूपअर्थोंविषेउत्पन्नहुआ जो तिनयज्ञादिकों केअनुकूल कर्मविशेषहै ताकानाम तदर्थीयकर्म है अथवा जिसब्रह्मका यहसतनाम कथनकरयाहै सोब्रह्महै अर्थ क्या विषय जिसका ताकानाम तदर्थ है ऐसा शुद्धब्रह्मविषयकज्ञानहै तिसब्रह्मज्ञानकेअनुकूल जेकर्म हैं तिनकर्मोंकानाम तदर्थीयकर्म है अथवा भगवत् अर्पणबुद्धिकरिकैकऱ्या जोकर्म है ताकानाम तदर्थीयकर्म है अथवा परमेश्वरकीप्रातिवासतै कऱ्याजोकर्म है ताकानाम तदर्थीयकर्म है ऐसा तदर्थीयकर्मभी विद्वान्पुरुषों नैं सत् इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै यातैं सत् यहनाम यज्ञादिककर्मों केविगुणतादोषकीनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै यातैं यहभावार्थसिद्धभया ॥ जिस ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामका एकएक ओंकारादिरूपअवयवकाभी इसप्रकारकामाहात्म्यहै तिस ओंकारादिकतीनअवयवोंकासमुदायरूप ओंतत्सत्इसनामका अत्यंतअद्भुत माहात्म्यहैयाकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! आलस्यादिकदोषकरिकै शास्त्रीयविधिकापरित्यागकरिकै श्रद्धावान् होइकै केवल वृद्धपुरुषों केव्यवहारमात्रकरिकै यज्ञतपदानादिककर्मोंकूं करणेहारे जेपुरुषहैं तिनपुरुषोंकूंकिसी प्रमादकेवशतैं तिनकर्मोंविषेविगुणतादोषकेप्राप्तहुए

दानादिरूपक्रिया विगुणतादोषतैंरहितहोइकै समाप्तहोवैं हैं यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जिस ओंतत्सत् इसनामके ओं इसएकअवयवकेउच्चारणतैंभी सर्व विगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै तिस संपूर्णनामकेउच्चारणतैंतिसविगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै याकेविषे पुनः क्याकहणाहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे काम्ययज्ञादिककर्मोंविषे तथानिष्कामयज्ञादिककर्मोंविषे साधारणतारूपकरिकै ओं इसशब्दकाउपयोग कथनकन्या ॥ अब मुमुक्षुजनकृतकेवल निष्कामकर्मविषे तत् इसशब्दकेउपयोगकूंकथनकरतेहुये श्रीभगवान् तत्इसशब्दकाव्याख्यानकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तदित्यनभिसंधायफलंयज्ञतपःक्रियाः ॥ दानक्रियाश्चविविधाः क्रियंतेमोक्षकांक्षिभिः ॥ २५ ॥ तत् । इति । अनभिसंधाय । फलम् । यज्ञतपःक्रियाः । दानक्रियाः । च । विविधाः । क्रियंते । मोक्षकांक्षिभिः ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मोक्षकीइच्छावान्पुरुषों नैं तत् इसशब्दका उच्चारणकरिकै फलकूं नंइच्छाकरिकै नानाप्रकारकी यज्ञतपरूपक्रिया तथा दानरूपक्रिया करीतियांहैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तत्त्वमसि इत्यादिकश्रुतियोंविषेप्रसिद्ध जो तत् यहब्रह्मकानामहै इस तत् नामकूंउच्चारणकरिकैही फलकीइच्छातैंरहितहोइकै मुमुक्षुजनों नैं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै नानाप्रकारकी यज्ञरूपक्रिया करीहैं तथा नानाप्रकारकी तपरूपक्रिया करीहैं तथा नानाप्रकारकी दानरूप क्रिया करीहैं तिस तत्शब्दकेउच्चारणकेप्रभावतैं तिनमुमुक्षुजनोंकी तेयज्ञतपदानादिरूपसर्वक्रिया निर्विघ्नसमाप्तहोवैहैं यातैं यह तत्शब्दभीअत्यंतश्रेष्ठहै ॥ २५ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तीसरे सत् इसशब्दकादोश्लोकोंकरिकैव्याख्यानकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सद्भावेसाधुभावेचसदित्येतत्प्रयुज्यते ॥ प्रशस्तेकर्मणितथासच्छब्दःपार्थयुज्यते ॥ २६ ॥ सद्भावे । साधुभावे । च । सत् । इति । एतत् । प्रयुज्यते । प्रशस्ते । कर्मणि । तथा । सच्छब्दः । पार्थ । युज्यते ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ ! सद्भावविषे तथा साधुभावविषे शिष्टपुरुषों नैं सत् इसप्रकारका शब्द उच्चारणकरीताहै तथा प्रशस्त कर्मविषेभी सत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! (सदेवसोम्येदमग्रआसीत्) इत्यादिकश्रुतियोंविषेप्रसिद्ध जो सत् यह ब्रह्मकानामहै सोसत्शब्द शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषों नैं सद्भावविषे उच्चारणकरीताहै अर्थात् जिसवस्तुकेअविद्यमानपणेकीशंकाहोवै है तिसवस्तुकेविद्यमानपणेविषे सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै तथा शिष्टपुरुषों नैं साधु

कारीपुरुषकूं तिनयज्ञतपदानादिककर्मोंविषे विगुणतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ (प्रमादात्कुर्वतांकर्मप्रच्यवेताध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोःसंपूर्णंस्यादितिश्रुतिः) ॥ अर्थयह ॥ यज्ञादिककर्मकूं करणेहारेपुरुषका किसीप्रमादकेवशतैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे जोकोईमंत्रादिरूपअंगभंगहोइजावैहै सोमंत्रादिरूपअंग विष्णुभगवान्केस्मरणतैंही परिपूर्णहोवैहै इसप्रकार श्रुतिभगवती कथनकरै है इति ॥ और वेदवेत्ताशिष्टपुरुषभी जिसजिस वैदिककर्मका आरंभकरैं हैं तिसतिसकर्मकेआरंभविषे ओंतत्सत् इसनामकूंस्मरणकरिकैही तिसतिसकर्मकूंकरैं हैं यातैं शिष्टाचाररूपप्रमाणतैंभी तिस नामकेस्मरणका विगुणतादोषकीनिवृत्तिरूपफल सिद्धहोवैहै इति ॥ अब ओंतत्सत् इसनामकेस्मरणविषे यज्ञादिककर्मोंकेविगुणतादोषकीनिवृत्तिकरणेकासामर्थ्य कथनकरणेवासतै श्रीभगवान् तिसब्रह्मकेनामकीस्तुति करैं हैं (ब्राह्मणास्तेनइति) इहां ब्राह्मणशब्द ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंका उपलक्षणहैं यातैंयह अर्थसिद्धभया ॥ पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे प्रजापति ब्रह्मानैं जो ब्राह्मणादिककर्मोंकेकर्त्ता तथाकारणरूपवेद तथाकर्मरूपयज्ञ उत्पन्नकरै हैं सो ओंतत्सत् इस ब्रह्मकेनामकरिकैही उत्पन्नकरैं हैं यातैं यज्ञादिकसृष्टिकाहेतुहोणेतैं यहमहान्प्रभाववाला ब्रह्मकानाम तिसविगुणतादोषकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थही है इति ॥

॥ २३ ॥ ❁ ॥ तहां अकार उकार मकार इनतीनअवयवोंकेव्याख्यानकरिकै जैसे तिन अकारादिकतीनअवयवोंकेसमुदायरूप ओंकारका व्याख्यानहोवैहै ॥ तैसे ओं तत् सत् इनतीनअवयवोंकेव्याख्यानकरिकै तिनओंकारादिकतीनअवयवोंकेसमुदायरूप ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामकूं श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै व्याख्यानकरैं हैं ॥ तिसब्रह्मकेनामकीस्तुतिकेअतिशयतावासतै तहां प्रथम ओंकारशब्दकाव्याख्यानकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तस्मादोमित्युदाहृत्ययज्ञदानतपःक्रियाः ॥ प्रवर्त्ततेविधानोक्ताः सततंब्रह्मवादिनाम् ॥ २४ ॥ तस्मात् । ओम् । इति । उदाहृत्य । यज्ञदानतपःक्रियाः । प्रवर्त्तते । विधानोक्ताः । सततम् । ब्रह्मवादिनाम् ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिसकारणतैं ओं इसप्रकारकेशब्दकूं उच्चारणकरिकैही वेदवेत्तापुरुषोंकी विधिशास्त्रउक्त यज्ञदानतपरूपक्रिया निरंतर प्रवृत्तहोवैहैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसकारणतैं (ओमितिब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियोंविषे ओंयहशब्द ब्रह्मकानाम प्रसिद्धहै तिसकारणतैं ओं इसशब्दकाउच्चारणकरिकैही वेदवेत्तापुरुषोंकी विधिशास्त्रबोधित यज्ञदानतपरूपसर्वक्रियानिरंतर प्रवर्त्तहोवैं हैं अर्थात् वेदवेत्तापुरुष जिसजिस शास्त्रविहित यज्ञतपदानादिरूपक्रियाकूंकरैं हैं तिसतिसक्रियातैंपूर्व ओं इसशब्दकाउच्चारणकरिकैही पश्चात् तिसतिसक्रियाकूंकरैं हैं ॥ तिस ओंकारकेउच्चारणके प्रभावतैं तिनवेदवेत्तापुरुषोंकी तेयज्ञ

सुवर्णादिकपदार्थोंकादान दियाजावैहै सोदान शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनें तामस कह्याहै ॥ और उत्तमदेश उत्तमकाल उत्तमपात्र इनतीनोंकेप्राप्तहुएभी जोदान असत्कृत दियाजावैहै अर्थात् प्रियभाषण पादोंकाप्रक्षालन चंदनपुष्पअक्षतादिकोंकरिकैपूजन इत्यादिरूप सत्कारतैंरहित जोदान दियाजावैहै तथा जोदान अवज्ञात दियाजावैहै अर्थात् दानकेपात्ररूपब्राह्मणादिकोंका निरादरकरिकै जो दान दियाजावै है सोदानभी शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनें तामसही कह्याहै इति ॥ ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेद कथनकरिकै तेसात्त्विकआहारादिक अवश्य करिकैग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ और तेराजसतामसआहारादिक अवश्यकरिकैपरित्यागकरणेयोग्यहैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ तहां आहारतौ केवल क्षुधाकी निवृत्तिरूप दृष्टअर्थकीही सिद्धिकरै है ॥ धर्मकीउत्पत्तिद्वारा स्वर्गादिरूपअदृष्टअर्थकीसिद्धि करतानहीं यातैं किसीअंगकीविगुणताकरिकै तिसआहारकेफलके अभावकीशंकाहोतीनहीं ॥ और धर्मकीउत्पत्तिद्वारा अंतःकरणकीशुद्धिरूप अथवा स्वर्गादिरूप अदृष्टअर्थकीप्राप्ति करणेहारे जे यज्ञ तप दान यहतीनोंहैं तिन यज्ञ तप दान तीनोंकेतौ किसीमंत्रादिरूप अंगकीविगुणतातैं धर्मरूप अपूर्वकेनहींउत्पन्नहुए तिसफलकाअभावहीहोवैहै इसकारणतैं सात्त्विकभी तिसयज्ञतपदानविषे निष्फलताही प्राप्तहोवैहै काहेतैं तिस यज्ञतपदानकेअनुष्ठानकरणेहारेजेमनुष्यहैं तिनमनुष्योंविषे प्रमादकीबाहुल्यताहोणेतैं तिनयज्ञादिकोंकेकरतेहुए किसी नकिसीअंगकीविगुणता अवश्यकरिकैहोवै है इसकारणतैं तिसविगुणताकेनिवृत्तकरणेवासतै ओंतत्सत् इसभगवतकेनामकाउच्चारणरूप सामान्यप्रायश्चित्तकूं परम कृपालुश्रीभगवान् अधिकारीजनोंकेप्रति उपदेशकरैहैं ।

(मू. श्लो.) ओंतत्सदितिनिर्देशोब्रह्मणस्त्रिविधःस्मृतः ॥ ब्राह्मणास्तेनवेदाश्चयज्ञाश्चविहिताःपुरा ॥२३॥ ओंतत्सत् । इति । निर्देशः । ब्रह्मणः । त्रिविधः । स्मृतः । ब्राह्मणाः । तेन । वेदाः । च । यज्ञाः । च । विहिताः । पुरा ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! ओंतत्सत् इसप्रकारका तीनअवयवोंवाला परब्रह्मका नाम स्मरणकऱ्याहै तिसनामकरिकैही सृष्टिआदिकालविषे प्रजापतिनें ब्राह्मणादिककर्त्ता तथा कारणरूप वेद तथा कर्मरूपयज्ञ उत्पन्नकरेहैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जैसे अकार उकार मकार इनतीनअवयवोंवाला एकहीप्रणवनाम परब्रह्मकाहोवैहै तैसे ओंतत् सत् यहतीनहैंअवयवजिसके ऐसा ओंतत्सत् यहएकहीनाम परब्रह्मका वेदांतवेत्तापुरुषोंनें स्मरणकऱ्याहै ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतै पूर्व वेदांतवेत्तामहर्षियोंनेंभी ओंतत्सत् यहपरब्रह्मकानाम स्मरण कऱ्याहै तिसकारणतैं इदानींकालके वेदांतवेत्तापुरुषोंनेंभी ओंतत्सत् यहपरब्रह्मकानाम अवश्यकरिकै स्मरणकरणा ऐसेनामकेस्मरणकरणेतैं इसअधि

लेवैनहीं इति ॥ ऐसे अनुपकारीपात्रकेताईं उत्तमदेशकालविषे निष्कामहोइकै शास्त्रकीविधिपूर्वक दियाजो सुवर्णादिकपदार्थोंकादानहै सोदान सात्त्विक कह्याजावैहै इति ॥ २० ॥ ❋ ॥

(मू. श्लो.) यत्तुप्रत्युपकारार्थंफलमुद्दिश्यवापुनः ॥ दीयतेचपरिक्लिष्टंतद्दानंराजसंस्मृतम् ॥ २१ ॥ यत् । तु । प्रत्युपकारार्थम् । फलम् । उद्दिश्य । वा । पुनः । दीयते । च । परिक्लिष्टम् । तत् । दानम् । राजसम् । स्मृतम् ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः जोदान प्रतिउपकारवासतै अथवा स्वर्गादिकफलकूं उद्देशकरिकै तथा पश्चात्तापयुक्त दियां जावैहै सो दान राजस कह्याहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोदान प्रतिउपकारवासतै दियाजावै है अर्थात् इसब्राह्मणकेताईं जोमैं यहदानदेवूंगा तौयहब्राह्मण किसीकालविषे हमारेऊपरि कोई उपकारकरैगा इसप्रकारकीबुद्धिकरिकै केवल दृष्टप्रयोजनकीसिद्धिवासतैही जोदान दियाजावैहै अथवा इसदानकरिकै हमारेकूं यहस्वर्गादिकफल प्राप्तहोवै इसप्रकारतैंस्वर्गादिकफलकाउद्देशकरिकै जोदान दियाजावै है तथा इतनाधन हमनैं काहेवासतै खरचकऱ्या इसप्रकारकेपश्चात्तापवालाहोइकै जोदान दियाजावै है सोदान शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनैं राजसदान कह्याहै ॥ इहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वउक्तसात्त्विकदानतैं इसराजसदानविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै इति ॥ २१ ॥ ❋ ॥

(मू. श्लो.) अदेशकालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते ॥ असत्कृतमवज्ञातंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ अदेशकाले । यत् । दानम् । अपात्रेभ्यः । च । दीयते । असत्कृतम् । अवज्ञातम् । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः जो दान अदेशकालविषे अपात्रोंकेताईं सत्कारतैंरहित तथाअवज्ञापूर्वक दियाजावैहै सोदान शिष्टपुरुषोंनैं तामस कह्याहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! स्वभावतैं अथवा दुर्जनपुरुषोंकेसंबंधतैं पापकाहेतुरूप जोअशुचिस्थानहै ताकानाम अदेशहै ॥ और पुण्यकाहेतुरूपकरिकैअप्रसिद्ध जोकोईक कालहै ताकानाम अकालहै अथवा अशौचकालकानाम अकालहै ऐसे अदेशविषे तथाअकालविषे विद्यातपतैंरहित नटविटादिकअपात्रोंकेताईं जो

यत् । पीडया । क्रियते । तपः । परस्य । उत्सादनार्थम् । वा । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जो तप दुराग्रहकरिकै ईससंघातके पीडाकरिकै कन्याजावैहै अथवा अन्यप्राणीके विनाशकरणेवासतै कन्याजावै है सोतप शिष्ट पुरुषों नैं तामस कह्याहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! अविवेककीअतिशयताकरिकै कन्याहुआजो दुराग्रहहै. तिसदुराग्रहकरिकै देहइंद्रियरूप संघातकी पीडाकरिकै जोतप कन्याजावैहै अथवा अन्यकिसीप्राणीकेविनाशकरणेवासतै जोतप कन्याजावैहै सोतप शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषों नैं तामस कह्याहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (श्रद्धयापरयातप्तम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारका तप कथनकन्या ॥ अब (दातव्यमितियद्दानम्) इत्यादिक तीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं दानके सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) दातव्यमितियद्दानंदीयतेनुपकारिणे ॥ देशेकालेचपात्रेचतद्दानंसात्त्विकंस्मृतम् ॥ २० ॥ दातव्यम् । इति । यत् । दानम् । दीयते । अनुपकारिणे । देशे । काले । च । पात्रे । च । तत् । दानम् । सात्त्विकम् । स्मृतम् ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहदानअवश्यकर्त्तव्यहै इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जो दान उत्तमदेशविषे तथा उत्तमकालविषे तथा अनुपकारी पात्रके ताई दियाजावैहै सो दान सात्त्विक कह्याहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं यहदान हमारेप्रति विधानकन्याहै यातैं तिसशास्त्रकी आज्ञाकेवशतैं यहदान हमारेकूंअवश्यकरणेयोग्यहै इस प्रकारकानिश्चयकरिकै तथातिसदानकेफलकीइच्छातैं रहितहोइकै जो सुवर्ण अन्न भूमि गौ इत्यादिकपदार्थोंकादान उत्तमदेशविषे तथाउत्तमकालविषे अनुपकारी पात्रकेताई दियाजावैहै सोदान शास्त्रवेत्ता शिष्टपुरुषों नैं सात्त्विक कह्याहै ॥ तहां कुरुक्षेत्रादिकतीर्थभूमिका नाम उत्तमदेशहै ॥ और सूर्यग्रहणादिककालोंकानाम उत्तमकालहै ॥ और जोपुरुष आपणेऊपरि कदाचित्भी कोईउपकार नहींकरताहोवै ताकानाम अनुपकारीहै ॥ और विद्या तप दोनोंकरिकै जो पुरुष युक्तहोवै ताकानाम पात्रहै अथवा आपणा तथा दातापुरुषका जोरक्षणकरणेहाराहै ताकानाम पात्रहै ॥ तहांशास्त्रवचन ॥ (विद्यातपोभ्यामात्मनोदातुश्चपालनक्षमएवप्रतिगृह्णीयात) ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण विद्याकरिकै तथातपकरिकै आपणेरक्षाकरणेविषे तथादातापुरुषकेरक्षणकरणेविषे समर्थ होवै सोब्राह्मणही तिसदातापुरुषतैं धनादिकपरिग्रहकूं ग्रहणकरै ॥ जोब्राह्मण विद्यातैंरहितहै तथातपतैंभीरहितहै सोब्राह्मण कदाचित्भी प्रतिग्रहकूं

तपः । तत् । त्रिविधम् । नरैः । अफलाकांक्षिभिः । युक्तैः । सात्त्विकम् । परिचक्षते ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! फलकी इच्छातैंरहित ऐकाग्रचित्तवाले पुरुषों नैं परम श्रद्धाकरिकै कऱ्याहुआजो सोपूर्वउक्त तीनप्रकारका तपहै तिसतपकूं शिष्टपुरुष सात्त्विकतप कहैंहैं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! फलकीअभिलाषातैंरहित ऐसेजे युक्तपुरुषहैं अर्थात् कार्यकी सिद्धिअसिद्धिदोनोंविषे हर्षविषादरूपविकारभावैंतरहित जेसमाहितचित्तवाले अधिकारीपुरुषहैं ऐसेनिष्कामअधिकारीपुरुषों नैं अप्रामाण्यशंकारूपकलंकतैंशून्यआस्तिक्यबुद्धिरूप श्रद्धाकरिकै अनुष्ठानकऱ्याजो सोपूर्वउक्त शारीर वाचिक मानस यहतीनप्रकारकातपहै तिसतपकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष सात्त्विकतपकथनकरैंहैं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) सत्कारमानपूजार्थंतपोदंभेनचैवयत् ॥ क्रियतेतदिहप्रोक्तंराजसंचलमध्रुवम् ॥ १८ ॥ सत्कारमानपूजार्थम् । तपः । दंभेन । च । एवं । यत् । क्रियते । तत् । इह । प्रोक्तम् । राजसम् । चलम् । अध्रुवम् ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! पुनः जो तप सत्कारमानपूजाकेवासते दंभकरिकै ही कऱ्याजावैहै सोतप शिष्टपुरुषों नैं राजस कह्याहै सोतप इसलोकाविषेहीफलदेवैहै तथाचलै है तथाअध्रुवहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! यहतपस्वीब्राह्मण बहुतश्रेष्ठहैं इसप्रकारतैं अविवेकीपुरुषोंनैं करीजास्तुतिहै तास्तुतिकानाम सत्कारहै ॥ और अविवेकीपुरुषों नैं करेजे अभ्युत्थानादिकहैं ताकानाम मानहै ॥ और अविवेकीपुरुषों नैं कऱ्याजो पादोंकाप्रक्षालनहै तथाअर्चनहै तथाधनादिकपदार्थोंकादानहै ताकानाम पूजाहै ऐसे सत्कारवासतै तथामानवासतै तथापूजावासतै केवल दंभकरिकै जोतप कऱ्याजावैहै ॥ आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकै जोतप कऱ्याजातानहीं सोतप शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषों नैं राजसतप कह्याहै सोराजसतप केवल इसलोककेफलकीहीप्राप्तिकरैहै पारलौकिकफलकीप्राप्तिकरतानहीं कैसाहैसोराजसतप चलहै अर्थात् अत्यंतअल्पकालविषेस्थायीफलकाहेतुहै ॥ पुनःकैसाहैसोराजस तप अध्रुवहै अर्थात् तिसफलकीजनकताकेनियमतैंरहितहै काहेतैं तिसराजसतपकूं करणेहारे जितनेकपुरुषहैं तिनसर्वोंकूं नियमकरिकै तेसत्कारमानपूजादिक प्राप्तहोतेनहीं किंतु किसीकिसीपुरुषकूंही तेसत्कारमानपूजादिक प्राप्तहोवैहैं यातैं इसलोककेफलविषेभी सोराजसतप नियमकरिकैहेतुनहीं है ॥ १८ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) मूढग्राहेणात्मनोयत्पीडयाक्रियतेतपः ॥ परस्योत्सादनार्थंवातत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥ मूढग्राहेण । आत्मनः ।

तिष्ठ तथातेश्रेयोभविष्यति) इत्यादिकवाक्यहैं ।। अर्थयह ॥ हे पुत्र ! तूंशांतहोउ तथा वेदाभ्यासकूं तथाचित्तकेनिरोधरूपयोगकूं तूंकर तिसकरिकै तुम्हारा श्रेयहोवैगा इति ।। इसवचनविषे अनुद्वेगकरत्व सत्यत्व प्रियत्व हितत्व यहच्यारोंहीविशेषण विद्यमानहैं ऐसेवचनकाउच्चारण वाङ्मयतप कह्याजावैहै अर्थात् वाचिकतप कह्याजावैहै ॥ और शास्त्रनैं वेदोंकेअध्ययनकालविषे जोजोनियम कथनकरे हैं तिसशास्त्रउक्तनियमपूर्वक जोऋगादिकवेदोंकाअभ्यासहै सोवेदोंकाअभ्यासभी वाचिकतप कह्याजावैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) मनःप्रसादःसौम्यत्वंमौनमात्मविनिग्रहः ॥ भावसंशुद्धिरित्येतत्तपोमानसमुच्यते ॥ १६ ॥ मनःप्रसादः । सौम्यत्वम् । मौनम् । आत्मविनिग्रहः । भावसंशुद्धिः । इति । एतत् । तपः । मानसम् । उच्यते ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मनकाप्रसाद तथासौम्यत्व तथामौन तथामनकाविनिग्रह तथाहृदयकीशुद्धि इसप्रकारका यहसर्व तप मानसतप कह्याजावै है ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! विषयोंकीचिंताकृतव्याकुलतातैंरहिततारूप जा मनकीस्वस्थताहै ताकानाम मनःप्रसादहै ॥ और सर्वलोकोंकेहितकीइच्छाकरणी तथाशास्त्रनिषिद्धपदार्थोंकानहींचिंतनकरणा इसप्रकारकाजो सौमनस्यहै ताकानाम सौम्यत्वहै ॥ और एकाग्रताकरिकै आत्माकाचिंतनरूप जोनिदिध्यासनहै ताकूं मुनिभावकहैं हैं तामुनिभावकानाम मौनहै अथवा वाक्इंद्रियकेसंयमकाहेतुभूत जोमनकासंयमहै ताकानाम मौनहै इसप्रकारका भाष्यकारोंनैं मौनशब्दकाअर्थ कऱ्याहै ।। और मनकेसर्ववृत्तियोंका जोविशेषकरिकैनिग्रहहै जिसकूं असंप्रज्ञातनामा निरोधसमाधि कहैं हैं ताकानाम आत्मविनिग्रहहै ॥ और हृदयरूपभावकी जा कामक्रोधलोभादिरूपमलकी निवृत्तिरूप सम्यक्शुद्धिहै ताकानाम भावसंशुद्धिहै ।। तहां तिसहृदयविषे कामक्रोधादिरूपअशुद्धिकी जोपुनः नहींउत्पत्ति होणीहै यहही तिसशुद्धिविषे सम्यक्पणाहै अथवा अन्यपुरुषोंकेसाथि व्यवहारकालविषे जो छलकपटरूपमायातैंरहितपणाहै ताकानाम भावसंशुद्धिहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ भाष्यकारोंनैं कऱ्याहै ।। इसप्रकारका मनःप्रसादतैं आदिलैके भावसंशुद्धिपर्यंत यहसर्वतप मानसतप कह्याजावैहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां (देवद्विजगुरुप्राज्ञ) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै शारीर वाचिक मानस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकातप कथनकऱ्या ॥ अब तिसतीनप्रकारकेतपके सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रद्धयापरयातप्तंतपस्तत्त्रिविधंनरैः ॥ अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकंपरिचक्षते ॥ १७ ॥ श्रद्धया । परया । तप्तम् ।

जोतपसिद्धहोवैहे ताकानाम शारीरतपहे ।। केवल शरीरमात्रकरिके जोतप सिद्धहोवैहे ताकानाम शारीरतप नहीं हे ।। काहेतें (अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणंचपृथग्विधम् ।। विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ।। शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतेनरः ।। न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः) इनदोनोंश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् आगेअष्टादशअध्यायविषे अधिष्ठान कर्त्ता करण चेष्टा देव इनपांचोंविषेही सर्वकर्मोंकीकारणता कथनकरैंगे ।। इसीप्रकारकीरीति आगे वाचिकतपविषे तथामानसतपविषेभी जानिलेणी इति ।। और किसीटीकाविषेतो प्राज्ञ इसशब्दकरिकै ब्रह्मवेत्तापुरुषोंका ग्रहणकऱ्याहे तहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीप्रज्ञा जिस पुरुषकूंप्राप्तहुई हे ताकानाम प्राज्ञहे ।। इहां द्विज इसशब्दकरिकै कथनकरेजे द्विजातिपुरुषहैं तिनद्विजातिपुरुषोंतैं श्रीभगवान्नैं जो प्राज्ञपुरुषोंका पृथक्कथन कऱ्याहे सो इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैकथनकऱ्याहे ।। पूर्वलेअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तभईजा ईश्वरकीप्रसन्नताहे तिसईश्वरकीप्रसन्नताकरिकै सोब्रह्मनिष्ठत्वरूपप्राज्ञत्व तिनद्विजातिपुरुषोंतैंभिन्न शूद्रादिकोंविषेभी संभवहोइसकैहे ।। जैसे विदुर धर्मव्याध इत्यादिकोंविषे सोब्रह्मनिष्ठत्वरूपप्राज्ञत्व शास्त्रोंमैंप्रसिद्धहीहे ।। तथा (स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपही पूर्वकथनकऱ्याहे ।। ऐसे ब्रह्मनिष्ठत्वरूप प्राज्ञपणेकरिकैयुक्त तेशूद्रादिकभी पूजनहीकरणेयोग्यहैं ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं द्विजातिपुरुषोंतैं तिनप्राज्ञपुरुषोंका पृथक् कथनकऱ्याहे इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अनुद्वेगकरंवाक्यंसत्यंप्रियहितंचयत् ॥ स्वाध्यायाभ्यसनंचैववाङ्मयंतपउच्यते ॥ १५ ॥ अनुद्वेगकरम् । वाक्यम् । सत्यम् । प्रियहितम् । च । यत् । स्वाध्यायाभ्यसनम् । च । एव । वाङ्मयम् । तपः । उच्यते ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दुःखकीनहींप्राप्तिकरणेहारा तथासत्य तथा प्रियहित ऐसाजो वाक्यहे तथा वेदोंकाजोअभ्यासहे यहसर्व वाङ्मय तप कह्याजावैहे ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोवाक्य अनुद्वेगकरहे अर्थात् जोवाक्य किसीभीश्रोताप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरतानहीं तथा जोवाक्यसत्यहे अर्थात् जोवाक्य किसीप्रमाणमूलकहे तथाजिसवाक्यकाअर्थ किसीअन्यप्रमाणकरिकैबाधितनहींहे तथा जोवाक्य प्रियहे अर्थात् जोवाक्य आपणेउच्चारणकालविषेही श्रोतापुरुषकेश्रोत्रइंद्रियकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहाराहे तथा जोवाक्य हितहे अर्थात् जोवाक्य आगेपरिणामविषेभी तिसश्रोतापुरुषकूं सुखकीहीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ इहां (प्रियहितंचयत्) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहे सोचशब्द अनुद्वेगकरत्व सत्यत्व प्रियत्व हितत्व इनच्यारोंविशेषणोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहे अर्थात् जोवाक्य अनुद्वेगकरत्व आदिकच्यारोंविशेषणोंकरिकैविशिष्टहै किसीएकविशेषणकरिकैभीन्यूननहीं हे ॥ जैसे (शांतोभववत्स स्वाध्यायंयोगंचान

धर्मरूप अपूर्व अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै काहेतैं सोराजसयज्ञ शास्त्रकीविधिपरिमाणही अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ और यहतामसयज्ञतौशास्त्रकीविधिपरिमाण अनुष्ठानकऱ्याजातानहीं यातैं तिसतामसयज्ञतैं कोईभी धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोतानहीं इतनादोनोंविषे परस्परभेदहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥

तहां (अफलाकांक्षिभिः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकेयज्ञ कथनकरे ॥ अब सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेतप केकथनकरणेवासतै श्रीभगवान् प्रथम तीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं शारीर वाचिक मानस इसभेदकरिकै तिसतपकी तीनप्रकारताकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनंशौचमार्जवम् ॥ ब्रह्मचर्यमहिंसाचशारीरंतपउच्यते ॥ १४ ॥ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम् । शौचम् । आर्जवम् । ब्रह्मचर्यम् । अहिंसा । च । शारीरम् । तपः । उच्यते ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! देवद्विजगुरुप्राज्ञइनसर्वोंकापूजन तथा शरीरकीशुद्धि तथाआर्जव तथा ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा यह सर्व शारीर तप कह्याजावैहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्रह्मा विष्णु शिव सूर्य अग्नि दुर्गा इत्यादिकोंकानाम देवहै ऐसेब्रह्मादिकदेवोंकाजोपूजनहै ॥ और सदाचारकरिकै युक्तजेउत्तमब्राह्मणहैं तिन्होंकानाम द्विजहै ऐसेद्विजोंकाजोपूजनहै ॥ और पिता माता आचार्य इत्यादिकवृद्धपुरुषोंकानाम गुरुहै ऐसेगुरुवोंकाजो पूजनहै ॥ वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं जानणेहारे जेपंडितहैं तिन्होंकानाम प्राज्ञहै ऐसेप्राज्ञोंकाजोपूजनहै ॥ इहां शास्त्रकीविधिप्रमाण श्रद्धाभक्तिपूर्वक यथायोग्य जो तिनदेवादिकोंकेताईं प्रणाम शुश्रूषा प्रदक्षिणा अन्नदान इत्यादिकोंकाकरणाहै यहही तिनदेवादिकोंका पूजनहै इति ॥ और मृत्तिकाजलकरिकै जोशरीरकीशुद्धिरूप शौचहै और आर्जवजोहै ॥ तहां अंतःकरणकीअकुटिलतारूपजोआर्जवहै सोआर्जवतौ (भावसंशुद्धिः) इसशब्दकरिकै श्रीभगवान् आगे मानसतपविषे कथनकरैंगे यातैं इहां आर्जवशब्दकरिकै ताअकुटिलताका ग्रहणकरणानहीं किंतु शास्त्रविहितकर्मविषेजाप्रवृत्तिहै तथाशास्त्रनिषिद्धकर्मतैं जानिवृत्तिहै साएकरूपप्रवृत्तिहै साएकरूपप्रवृत्तिही इहां आर्जवशब्दकरिकेग्रहणकरणी और शास्त्रनिषिद्धमैथुनतैंनिवृत्तिरूप जो ब्रह्मचर्यहै तथा शास्त्रनिषिद्धप्राणियोंके पीडनकाअभावरूप जाअहिंसाहै ॥ इहां (अहिंसाच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ताचकारकरिकै अस्तेय अपरिग्रह इनदोनोंकाभी ग्रहणकरणा ।। इसप्रकार देवपूजनतैं आदलैके अहिंसापर्यंत सर्वहीशारीरतप कह्याजावैहै ॥ तहां शरीरहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजे कर्त्तादिकहैं तिन्होंकरिकै

पारलौकिक स्वर्गादिकफलका नहीं उद्देशकरिकैभी केवल दंभकेवासतैही कऱ्याजावैहै इसप्रकारकेविकल्पकरिकै दोपक्ष सिद्धहोवैं हैं ॥ और कोईकयज्ञतो पारलौकिकस्वर्गादिकफलवासतेभी तथाइसलोकके दंभवासतैभी कऱ्याजावैं हैं इसप्रकार दोनोंकासमुच्चयकरिकै एकपक्ष सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं दृष्टफलका उद्देशकरिकै अथवा अदृष्टफलका उद्देशकरिकै अथवा दृष्टअदृष्टदोनोंफलोंका उद्देशकरिकै शास्त्रकेअनुसार जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावैहै तिसयज्ञकूं तूं राजसयज्ञ जान अर्थात् तिस यज्ञकूं तूं राजसजानिकै परित्यागकर ॥ इहां (हेभरतश्रेष्ठ !) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवानूनैं अर्जुनविषे तिसराजसकर्मकेपरित्यागकरणेकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (अभिसंधाय तु) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वश्लोकउक्त नित्यकर्मरूपसात्त्विकयज्ञतैं इसकाम्यकर्मरूपराजसयज्ञविषे विलक्षणताकेसूचनकरणेवासतैहै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) विधिहीनमसृष्टान्नंमंत्रहीनमदक्षिणम् ॥ श्रद्धाविरहितंयज्ञंतामसंपरिचक्षते ॥ १३ ॥ विधिहीनम् । असृष्टान्नम् । मंत्रहीनम् । अदक्षिणम् । श्रद्धाविरहितम् । यज्ञम् । तामसम् । परिचक्षते ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोयज्ञ शास्त्रविधितैंरहितहै तथा अन्नदानतैंरहितहै तथामंत्रतैंरहितहै तथादक्षिणातैंरहितहै तथाश्रद्धातैंरहितहै ऐसेयज्ञकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष तामसयज्ञ कहैं हैं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोयज्ञ विधिहीनहै अर्थात् जिसप्रकारतैं शास्त्रनैं तिसयज्ञकरणेकाविधानकऱ्याहै तिसशास्त्र उक्तरीतितैं जोयज्ञ विपरीतहै तथा जोयज्ञ असृष्टान्नहै अर्थात् जिसयज्ञविषे ब्राह्मणादिकोंकेताईं अन्नदान नहींकरयाजावैहै तथा जोयज्ञ मंत्रहीनहै अर्थात् उदात्तादिकस्वरोंकरिकै तथा ककारादिकवर्णोंकरिकै मंत्रोंतैंरहितहै तथा जो यज्ञ दक्षिणातैंरहितहै तथा ऋत्विजब्राह्मणविषयकद्वेषादिकोंकरिकै जोयज्ञ श्रद्धातैंरहितहै ऐसेयज्ञकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष तामसयज्ञ कहैं हैं इति ॥ तहां विधिहीनत्व असृष्टान्नत्व मंत्रहीनत्व अदक्षिणत्व श्रद्धाविरहितत्व यहजे पंचविशेषण कथनकरेहैं तिन पंचविशेषणों के मध्यविषे एकएकविशेषणकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ पंचप्रकारका सिद्धहोवैहै ॥ और तिनपांचोंविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ एकप्रकारका सिद्धहोवैहै इसप्रकारतैं षट्तामसयज्ञ सिद्धहोवैं हैं ॥ और तिनपांचविशेषणोंकेमध्यविषे दोविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहीसिद्धहोवैहै ॥ और तीनविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहीसिद्धहोवैहै ॥ और च्यारिविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहीसिद्धहोवै है ॥ इसप्रकारतैं तिसतामसयज्ञके बहुतप्रकारकेभेद सिद्धहोवैं हैं ॥ तहां पूर्वउक्तराजसयज्ञविषे अंतःकरणकीशुद्धिकेअभावहुएभी स्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिकरणेहारा

फलकीइच्छातैंरहितपुरुषों नैं यहअवश्यकर्त्तव्य हीहै ईसप्रकार मनकूं निश्चितकरिकै जो शास्त्रविहित यज्ञ अनुष्ठानकरीताहे सोयज्ञ सात्त्विक कह्याजावै है ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य ज्योतिष्टोम इत्यादिकोंका नाम यज्ञहै सोयज्ञ दोप्रकारकाहोवै है एककाम्ययज्ञहोवै है दूसरानित्ययज्ञहोवै है ॥ तहां (दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत) इत्यादिकवचनों नैं स्वर्गादिकफलकेसंयोगकरिकै विधानकऱ्याजो यज्ञहै सोयज्ञ काम्ययज्ञ कह्याजावैहै सोकाम्ययज्ञतौ सर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक इसपुरुषनैं आपही अनुष्ठानकरीताहै ब्राह्मणादिकप्रतिनिधिद्वारा अनुष्ठानकरीतानहीं ॥ और (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) इत्यादिकवचनों नैं फलकेसंयोगतैंविनाही केवलजीवनादिकनिमित्तकेसंयोगकरिकै विधानकऱ्याजोयज्ञहै जोयज्ञ सर्वअंगोंकीपूर्णताकेअभावहुए ब्राह्मणादिकप्रतिनिधिकरिकैभी अनुष्ठानकऱ्याजावै है सोयज्ञ नित्ययज्ञ कह्याजावै है ॥ तहां सर्वअंगोंकीसंपूर्णताकेअभावहुएभी प्रतिनिधिकूंग्रहणकरिकै हमारेकूं अवश्यकरिकै सोनित्यकर्म करणेयोग्यहै जिसकारणतैं प्रत्यवायकीनिवृत्तिकरणेवासतै वेदभगवाननैं आवश्यक जीवनादिकनिमित्तकरिकै सोनित्यकर्म विधान कऱ्याहै इसप्रकारतैं आपणेमनकूंनिश्चितकरिकै अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छावानूहोणेतैं काम्यकर्मोंकेअनुष्ठानतैंविमुखपुरुषों नैं शास्त्रप्रमाणतैंनिश्चयकऱ्याहुआ जोयज्ञ अनुष्ठानकरीताहै सोशास्त्रप्रमाणतैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अनुष्ठानकऱ्या नित्ययज्ञ सात्त्विक कह्याजावै है इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अभिसंधायतुफलंदंभार्थमपिचैवयत् ॥ इज्यतेभरतश्रेष्ठतंयज्ञंविद्धिराजसम् ॥ १२ ॥ अभिसंधाय । तु । फलम् । दंभार्थम् । अपि । च । एव । यत् । इज्यते । भरतश्रेष्ठ । तम् । यज्ञम् । विद्धि । राजसम् ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भरतवंशविषे श्रेष्ठअर्जुन ! पुनः स्वर्गादिकफलकूं उद्देशकरिकै तथा दंभकेवासतै भी जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावै है तिसं यज्ञकूं तूं राजस जान ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभरतकुलविषेश्रेष्ठअर्जुन ! पुरुषोंकीकामनाकेविषयभूत जेस्वर्गादिफलहैं तिसस्वर्गादिकफलका उद्देशकरिकै जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावै है अंतःकरणकेशुद्धिकाउद्देशकरिकै जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजातानहीं ॥ और यहसर्वलोक हमारेकूं धर्मात्माकहैं याप्रकारकीइच्छाकरिकै जोलोकोंविषे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ऐसेदंभवासतैभी जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावै है ॥ इहां (अपिचैव) यहवचन विकल्पसमुच्चय इनदोनोंकेकथनकरिकै तीनपक्षोंकेसूचनकरणेवासतै है ॥ तहां कोईकयज्ञतौ दंभकेवासतैनहींकऱ्याहुआभी पारलौकिकस्वर्गादिकफलकाउद्देशकरिकैही कऱ्याजावै है तथा कोईकयज्ञतौ

दिकहै ॥ इहां (उच्छिष्टमपिचामेध्यम्) इसवचनविषेस्थितजो (अपिच) यहशब्दहै सोशब्द वैद्यकशास्त्रविषेकथनकरेहुए अपथ्यआहारोंकेसमुच्चय करावणेवासतैं है ॥ इसप्रकारकेलक्षणोंकरिकैयुक्तजोआहारहै सोआहार तामसपुरुषोंकूंही प्रियहोवैहै अर्थात् इनसर्वउक्तलक्षणोंकरिकै तिसआहारकूं तामस जानणा ऐसातामसआहार सात्त्विकपुरुषोंनैं अत्यंतदूरतैंही परित्यागकरणा इति ॥ ऐसेतामसआहारविषे दुःखशोकादिकोंकीकारणता अत्यंत प्रसिद्धही है ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं साक्षात्मुखतैंकथनकरीनहीं ॥ इहां श्रीभगवान्नैं यथाक्रमकरिकै तीनप्रकारके आहारवर्ग कथनकरे हैं ॥ तहां (रस्याः) इत्यादिकतौ सात्त्विकआहारवर्ग कथनकऱ्या है ॥ और (कट्वम्ल) इत्यादिक राजसआहारवर्ग कथनकऱ्या है ॥ और (यातयामम्) इत्यादिक तामसआहारवर्ग कथनकऱ्या है ॥ इसप्रकार तीनप्रकारकेआहारवर्ग कथनकरे हैं तहां राजसआहारवर्ग तथा तामसआहारवर्ग इनदोनों वर्गोंविषे सात्त्विकआहारवर्गका विरोधीपणाही जानणा सोप्रकार दिखावैं हैं ॥ तहां अतिकटुत्वादिक रस्यत्वकेविरोधीहीहोवैं हैं जिसकारणतैं अतिकटुत्वादिकआहार अत्यंतस्वादुहोवैंनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धही है ॥ और रूक्षपणा स्निग्धपणेकाविरोधीहोवै है ॥ और अतितीक्ष्णपणा तथाअतिविदाहकपणा यहदोनों धातुवोंकेपोषणकाविरोधीहोणेतैं स्थिरताकेविरोधीही होवैं हैं ॥ और अतिउष्णत्वादिक हृद्यत्वकेविरोधीहोवैं हैं ॥ और आमयप्रदत्व आयुः सत्त्व बल आरोग्य इनच्यारोंका विरोधीहोवै है ॥ और दुःखशोकप्रदत्व सुखप्रीति इनदोनोंका विरोधीहोवै है इसरीतिसैं राजस आहारवर्गविषे सात्त्विकआहारवर्गकाविरोधीपणा स्पष्टही है ॥ इसप्रकार तामसआहारवर्गविषेभी गतरसत्व यातयामत्व पर्युषितत्व यहतीनों यथायोग्य रस्यत्व स्निग्धत्व स्थिरत्व इनतीनोंके विरोधीहीं है ॥ और पूतित्व उच्छिष्टत्व अमेध्यत्व यहतीनों हृद्यत्वकेविरोधी हैं ॥ और तामस आहारवर्गविषे आयुःसत्त्वा दिकोंकाविरोधीपणातौ स्पष्टही है तहां राजसआहारवर्गविषेतौ केवल दृष्टविरोधमात्रहीहोवै है ॥ और तामसआहारवर्गविषेतौ दृष्टविरोध तथाअदृष्टविरोध दोनोंहीहोवैं हैं इतनी दोनोंविषे परस्पर विशेषताहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (आयुःसत्त्व) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाआहार कथनकऱ्या ॥ अब (अफलाकांक्षिभिः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस इनतीनप्रकारकेयज्ञोंकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अफलाकांक्षिभिर्यज्ञोविधिदृष्टोयइज्यते ॥ यष्टव्यमेवेतिमनःसमाधायससात्त्विकः ॥ ११ ॥ अफलाकांक्षिभिः । यज्ञः । विधिदृष्टः । यः । इज्यते । यष्टव्यम् । एव । इति । मनः । समाधाय । सः । सात्त्विकः ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

जेआहार अतिकटुहैं तथाअतिअम्लहैं तथाअतिलवणहैं तथाअतिउष्णहैं तथाअतितीक्ष्णहैं तथाअतिरूक्षहैं तथाअतिदाहकरणेहारेहैं इति ॥ तहां निंबादिक आहार अतिकटु कहेजावैं हैं ॥ और निंबुजंबीरादिकआहार अतिअम्ल कहेजावैं हैं ॥ और सैंधवादिकआहार अतिलवण कहेजावैं हैं ॥ और जिसआहारकेभक्षणकरतेहुए मुख तथा हस्त दाहहोवैं हैं सोआहार अतिउष्ण कह्याजावैहै ॥ और मरीचादिकआहार अतितीक्ष्ण कहेजावैं हैं ॥ और स्नेहतैंरहित जे कंगुकोद्रवादिकआहारहैं तेआहार अतिरूक्ष कहेजावैं हैं ॥ और अत्यंतसंतापकीप्राप्तिकरणेहारेजे राजिकादिकआहारहैं तेआहार अतिविदाहीकहेजावैं हैं इति ॥ तथा जेआहार दुःख शोक आमय इनतीनोंकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तहां तात्कालिकजापीडाहै ताकानाम दुःखहै ॥ और पश्चात् भावीजोदौर्मनस्यहै ताकानाम शोकहै ॥ और ज्वरादिकरोगोंकानाम आमयहै ॥ ऐसे दुःखशोकआमयकूं जेआहार वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमताद्वारा प्राप्तकरैं हैं तिनआहारोंकानाम दुःखशोकामयप्रदहै ॥ ऐसेआहार राजसपुरुषोंकूंही प्रियहोवैं हैं अर्थात् इनपूर्वउक्तलक्षणोंकारिकै तेआहार राजस जानणे ॥ ऐसे राजसआहार सात्त्विकपुरुषोंनें अवश्यकरिकै परित्यागकरेचाहिये ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) यातयामंगतरसंपूतिपर्युषितंचयत् ॥ उच्छिष्टमपिचामेध्यंभोजनंतामसप्रियम् ॥ १० ॥ यातयामम् । गतरसम् । पूति । पर्युषितम् । च । यत् । उच्छिष्टम् । अपि । च । अमेध्यम् । भोजनम् । तामसप्रियम् ॥१०॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोआहार यातयामहै तथागतरसहै तथापूतिहै तथा पर्युषितहै तथाउच्छिष्टहै तथा अमेध्यहै सोआहार तामसपुरुषोंकूंहीप्रियहोवैहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोआहार यातयामहै अर्थात् अर्धपक्कहुआहै तथा जोआहार गतरसहै अर्थात् अत्यंतपकणेकारिकैशुष्कहुआ जोआहार विरसताकूं प्राप्तहुआहै ॥ अथवा अग्निकरिकै पक्कहुआ जोओदनादिकआहार प्रहारादिककालकेव्यवधानकरिकै शीतलताकूंप्राप्तहोवै है तिसआहारकानाम यातयामहै ॥ और जिसआहारका सारअंश निकासलियाहै ताआहारकानाम गतरसहै ॥ जैसे मथनकरेहुएदुग्धादिकहैं ॥ तथा जो आहार पूतिहै अर्थात् जोआहार दुर्गंधवालाहै ॥ तथा जोआहार पर्युषितहै अर्थात् अग्निकरिकैपक्कहुआ जोआहार एकरात्रिके व्यवधानकरिकै भोजनकर्त्तापुरुषकूं तात्कालिकउन्मादकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यहां (पर्युषितंचयत्) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै सोचशब्द इसप्रकारकेअत्यंतदुष्टपणेकारिकैप्रसिद्ध अन्यआहारों केभी समुच्चयकरावणेवास्तेहै ॥ तथा जोआहार उच्छिष्टहै अर्थात् भोजनकरिकैपीछेरह्याजोअन्नहै ॥ तथा जोआहार अमेध्यहै अर्थात् यज्ञकेअयोग्य जेअशुचि मांसमत्स्या

(मू. श्लो.) आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ॥ रस्याःस्निग्धाःस्थिराहृद्याआहाराःसात्त्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः । रस्याः । स्निग्धाः । स्थिराः । हृद्याः । आहाराः । सात्त्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेर्जुन ! आयुष् सत्त्व बल आरोग्यसुख प्रीति इनसर्वोंकूं बधावणेहारे तथा रस्य स्निग्ध स्थिर हृद्य ऐसे आहार सात्त्विकपुरुषोंकूं प्रियहोवैं हैं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां चिरकालपर्यंतजीवनकानाम आयुषहै ॥ और बलवानदुःखकेप्राप्तहुएभी निर्विकारपणेकासंपादक जोचित्तकाधैर्यहै ताकानाम सत्त्वहै अथवा उत्साहकानाम सत्त्वहै ॥ और आपणेकूंकरणेविषेउचितजोकार्यहै ताकार्यविषे परिश्रमकेअभावकाप्रयोजक जोशरीरकासामर्थ्य है ताकानाम बलहै ॥ और ज्वरशूलादिकव्याधियोंका जोअभावहै ताकानाम आरोग्यहै ॥ और भोजनतैंअनंतर जो अंतर आह्लादतृप्तिहै ताकानाम सुखहै ॥ और भोजनकालविषे जो अरुचितैंरहितपणाहै अर्थात् तिसभोजनविषयकइच्छाकीउत्कटताहै ताकानाम प्रीतिहै ॥ ऐसेआयुष् सत्त्वबल आरोग्य सुखप्रीति इनसर्वोंकूं जेआहार बधावणेहारेहैं ॥ तथा जे आहार रस्यहैं अर्थात् मधुररसकी प्रधानताकरिकै जेआहार अत्यंतस्वादुहैं ॥ तथा जेआहार स्निग्धहैं अर्थात् स्वभावसिद्धस्नेहकरिकै तथाआगंतुक घृतादिरूपस्नेहकरिकै जेआहार युक्तहैं ॥ तथा जेआहार स्थिरहैं अर्थात् जेआहार रसादिकअंशकरिकै शरीरविषे चिरकालपर्यंत स्थायीहैं ॥ तथा जेआहार हृद्यहैं अर्थात् दुर्गंधअशुचित्वादिक दृष्टअदृष्टदोषोंतैंरहितहोणेतैं जेआहार आपणेदर्शनमात्रकरिकैही हृदयकीप्रसन्नताकरणेहारेहैं इसप्रकारकेगुणोंकरिकै युक्तजे भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य यहच्यारिप्रकारकेआहारहैं तेआहार सात्त्विकपुरुषोंकूंही प्रियहोवैं हैं अर्थात् इनपूर्वउक्तलक्षणोंकरिकैतेआहारसात्त्विकजानणे ॥ तथासात्त्विकपणेकीइच्छाकरणेहारेपुरुषोंनैं यहपूर्वउक्तआहारही ग्रहणकरणेयोग्यहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ॥ आहाराराजसस्येष्टादुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहाराः । राजसस्य । इष्टाः । दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! कटु अम्ल लवण अतिउष्ण तीक्ष्ण रूक्ष दाहकरणेहारे तथा दुःखशोकरोगइनतीनोंकीप्राप्तिकरणेहारे ऐसेआहार राजसपुरुषोंकूंही प्रियहोवैं हैं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (अतिउष्ण) इस वचनविषेजो अति यहशब्दहै तिसअतिशब्दका कटुआदिकसप्तशब्दोंकेसाथि अन्वयकरणा ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥

दुष्टकर्मोंकेकरणेकरिकैही मनुष्योंविषे असुरपणा प्राप्तहोवैहै ॥ इसकारणतैंही श्रीभगवान्नैं (तान्असुरान्विद्धि) इसप्रकार तिनपुरुषोंविषे साक्षात्असुरपणा कथनकऱ्यानहीं किंतु आसुरनिश्चयकरिकैही तिन्होंविषेअसुरपणाकथनकऱ्याहै इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां जे सात्त्विकहैं तेतौ देवहैं और जे राजसहैं तथातामसहैं ते विपरीतबुद्धिवालेहोणेतैं असुरहैं ॥ यहअर्थ पूर्व निर्णयकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् सात्त्विकोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथाराजसतामसोंके परित्यागकरावणेवासतै आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंके त्रिविधपणेकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) आहारस्त्वपिसर्वस्यत्रिविधोभवतिप्रियः ॥ यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंशृणु ॥ ७ ॥ आहारः । तु । अपि । सर्वस्य । त्रिविधः । भवति । प्रियः । यज्ञः । तपः । तथा । दानम् । तेषाम् । भेदम् । इमम् । शृणु ॥ ७ ॥ इतिप॰ ॥ हेअर्जुन ! पुनः । सर्वप्राणियोंका प्रिय आहार भी तीनप्रकारकाही होवैहै तथा यज्ञ तप दान यहभी तीनप्रकारकेहीहोवैं हैं तिनआहारादिकोंके इस सात्त्विकादिकभेदकूं तूं श्रवणकर ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरीहुई श्रद्धाही केवल तीनप्रकारकीनहींहोवैहै किंतु सर्वप्राणियोंका प्रियआहारभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीन प्रकारकाही होवैहै च्यारिप्रकारकाहोवैनहीं काहेतें सर्वपदार्थोंकूं त्रिगुणात्मकहोणेतैं तिसतैंभिन्न चौथाकोईप्रकार संभवतानहीं ॥ तहां भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य यहजोच्यारिप्रकारका अन्नहै ताकानाम आहारहै ॥ हे अर्जुन ! क्षुधाकीनिवृत्तिरूपदृष्टअर्थकीसिद्धिकरणेहारा सोआहार जैसे सात्त्विकादिकभेदकरिकै तीन प्रकारकाहै तैसे धर्मकीउत्पत्तिद्वारा स्वर्गादिरूपअदृष्टअर्थकीसिद्धिकरणेहारे जे यज्ञ तप दान यहतीनों हैं ते यज्ञ तप दान तीनोंभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेहीहोवैं हैं ॥ तहां अग्निआदिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जोघृतादिकद्रव्यकापरित्यागहै ताकानाम यज्ञहै ॥ और शरीरइंद्रियोंकूंशोषणकरणहारेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकहैं तिन्होंकानाम तपहै ॥ और आपणेममत्वकेविषयभूत जे सुवर्ण गौ अन्न गृह इत्यादिकपदार्थ हैं तिनसुवर्णादिकपदार्थोंविषे आपणेममत्वकापरित्यागकरिकै जो ब्राह्मणादिकोंकाममत्वसंपादनकरणाहै ताकानाम दानहै ऐसे आहार यज्ञ तप दान च्यारोंका जो सात्त्विक राजस तामस यह तीनप्रकारकाभेदहै सो यह भेद मैं तुम्हारेप्रति स्पष्टकरिकै कथनकरताहूं तिसभेदकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकरइति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ अब आहार यज्ञ तप दान इन च्यारोंके सात्त्विक राजस तामस इस तीन प्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् पंचदशश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ॥ तिसविषेभी प्रथम आहारकेसात्त्विकादिकभेदकूं तीन श्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

अथवा वेदकेविरोधीबौद्धादिकोंनें रच्याजोआगमहै ताकानाम अशास्त्रहै तिसअशास्त्रनें विधानकऱ्याजो तप्तशिलाआरोहणादिकतपहै ताकानाम अशास्त्र
विहिततपहै कैसाहैसोतप घोरहै अर्थात् कर्त्तापुरुषकूं तथाअन्यप्राणियोंकूं केवल पीडाकीहीप्रातिकरणेहाराहै ऐसे अशास्त्रविहितघोरतपकूंही जेपुरुष
सर्वदाकरैं हैं ॥ तथा जेपुरुष दंभ अहंकार इनदोनोंकरिकै संयुक्तहैं ।। तहां सर्वलोक हमारेकूंधर्मात्माकहैं याप्रकारकी इच्छाराखिकै तिनलोकोंविषे जो आपणा धा
र्मिकपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और सर्वगुणोंकरिकै मैंही सर्वतैं श्रेष्ठहूं ॥ याप्रकारका जोदुष्टअभिमानहै ताकानाम अहंकारहै।। ऐसे दंभ अहंकार दोनों
करिकै जेपुरुष सम्यक्युक्तहैं ।। तहां दंभअहंकारकेयोगविषे जो आयासतैंविनाही वियोगकेउत्पत्तिकरणेका असामर्थ्यहै यहही सम्यक्पणा है तथा जेपुरुष
कामरागबलकरिकैयुक्तहैं तहां कामनाकेविषयभूत जे शब्दस्पर्शादिकविषयहैं तिनविषयोंकानाम कामहै तिनविषयरूपकामोंविषे जोअत्यंतआसक्तिहै
ताकानाम रागहै ॥ और सोरागहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो अतिउग्रदुःखोंकेसहनकरणेका सामर्थ्यहै ताकानाम बलहै ऐसेकामरागबलकरिकै जेपुरुष सर्व
दायुक्तहैं अथवा शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषे जाअभिलाषाहै ताकानाम कामहै॥और सर्वदा तिनविषयोंविषे अभिनिविष्टत्वरूप जो अभिष्वंगहै ताकानाम रागहै॥
और इसविषयकूं मैं अवश्यकरिकैसंपादनकरूंगा याप्रकारकाजोआग्रहहै ताकानाम बलहै ॥ ऐसे काम राग बल इनतीनोंकरिकै जेपुरुष सर्वदायुक्तहैं ॥
इसीकारणतैंही बलवान्दुःखकूंदेखिकैभी नहींनिवर्त्तमानहुए जेपुरुष शरीरविषेस्थितभूतोंकेसमूहकूं कृशकरैं हैं अर्थात् देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारकरिकै
परिणामकूंप्राप्तहुए जेपृथिवीआदिकपंचभूतहैं तिनभूतों केसमूहकूं जेपुरुष व्यर्थउपवासादिकोंकरिकै कृशकरेहैं तथा इसशरीरकेअंतर भोक्तारूपकरिकैस्थित
जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरकूंभी जेपुरुष इसभोग्यशरीरकेकृशकरणेकरिकै कृशकरैं हैं अथवा अंतर्यामीरूपकरिकै इसशरीरविषेस्थित जो बु
द्धिका तथा ताबुद्धिकेवृत्तियोंका साक्षीरूप मैंपरमैश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरकूं जेपुरुष हमारीशास्त्ररूपआज्ञाकाउल्लंघनकरिकैकृशकरैं हैं इसीकारणतैंही जेपुरुष
अचेतसहैं अर्थात् विवेकतैंशून्यहैं ऐसे इसलोकके सर्वभोगों तैं विमुख तथा परलोकविषेअधमगतिकूंप्राप्तहोणेहारे सर्वपुरुषार्थों तैंभ्रष्ट तिनपुरुषोंकूं तूंअर्जुन
आसुरनिश्चयजान ॥ तहां आसुरहै क्या विपरीतभावनायुक्तहै वेदअर्थकाविरोधीनिश्चद जिन्होंका तिन्होंकानाम आसुरनिश्चयहै अर्थात् तेपुरुष यद्यपि मनु
ष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैं हैं तथापि तेपुरुष असुरोंकेहीकर्मोंकूंकरैं हैं यातैं तिनपुरुषोंकूं तूंअर्जुन असुररूपही जान अर्थात् तिनपुरुषोंकूं असुररूपजानिकै
तिन्होंकीउपेक्षाकर इति ॥ इहां (असुरनिश्चयान्) इसवचनविषे तिनपुरुषोंकेनिश्चयविषे आसुरपणा कथनकऱ्या ॥ यातैं तिसनिश्चयपूर्वक जितनीक तिनपुरु
षोंकेअंतःकरणकीवृत्तियां हैं तिनसर्ववृत्तियोंविषेभी सोआसुरपणाही जानणा ॥ और असुरत्वजातितैंरहितमनुष्योंविषे साक्षात्असुरपणा रहतानहीं किंतु

और शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तिसस्वभावजन्य श्रद्धाकरिकै रजोगुणवाले कुबेरादिकयक्षोंकूं तथानैर्ऋतआदिकराक्षसोंकूं पूजनकरैं हैं तेअन्यपुरुष और शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तास्वभावजन्यश्रद्धाकरिकै तमोगुणवाले प्रेतोंकूं तथाभूतगणोंकूं पूजनकरैं हैं तेअन्यपुरुष तामस जानणे ॥ तहां जेब्राह्मणादिक आपणेधर्म तैंभ्रष्टहोवैं हैं तेब्राह्मणादिक तिसशरीरकेपातहुएतैंअनंतर वायुमयदेहकूंप्राप्तहोइकै उल्कामुखकटपूतनादिकनामवाले प्रेतहोवैं हैं अथवा पिशाचविशेषकानाम प्रेतहै ॥ और सप्तमातृकआदिकोंकानाम भूतगणहै ॥ इहां (भूतगणांश्चान्ये) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोअन्ये यहपदहै तापदका (सात्त्विकाः राजसाः तामसाः) इनतीनोंपदोंविषे संबंधकरणा ॥ ताकरिकै सात्त्विक राजस तामस इनतीनप्रकारकेपुरुषोंविषे परस्परविलक्षणतासिद्धहोवैहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेपरित्यागकरणेहारेपुरुषोंकी सात्त्विकादिरूपनिष्ठा देवपूजनादिककार्य तैं निर्णयकरी ॥ तहां केईक राजसतामसपुरुषभी पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेपरिपाकतैं सात्त्विकहोइकै शास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीपणेकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जेपुरुष आपणेदुराग्रहकरिकै तथा पूर्वलेकिसीपापकर्मकेपरिपाकतैंप्राप्तहुएदुर्जनसंगादिकदोषकरिकै तिस राजसतामसभावकूं नहींपरित्यागकरैं हैं तेपुरुष शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्ग तैंभ्रष्टहुए शास्त्रनिषिद्धअसन्मार्गकेअनुसरणकरिकै इसलोकविषे तथापरलोकविषे केवल दुःखकेहीभागीहोवैं हैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अशास्त्रविहितंघोरंतप्यंतेयेतपोजनाः ॥ दंभाहंकारसंयुक्ताःकामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥ कर्षयंतःशरीरस्थंभूतग्राममचेतसः ॥ मांचैवांतःशरीरस्थंतान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥ अशास्त्रविहितम् । घोरम् । तप्यंते । ये । तपः । जनाः । दंभाहंकारसंयुक्ताः । कामरागबलान्विताः । कर्षयंतः । शरीरस्थम् । भूतग्रामम् । अचेतसः । माम् । च । एव । अंतः । शरीरस्थम् । तान् । विद्धि । आसुरनिश्चयान् ॥ ५ ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जे पुरुष अशास्त्रविहित घोर तपकूं करैं हैं तथा दंभअहंकारकरिकैसंयुक्तहैं तथाकामरागबलकरिकैयुक्तहैं तथाशरीरविषेस्थित भूतोंकेसमूहकूं कृशकरैं हैं ॥ तथा अंतर शरीर विषेस्थित मैंपरमेश्वरकूं भी कृश करैं हैंतथाविवेकतैंरहित हैं तिनपुरुषोंकूं आसुरनिश्चयवालाही जान ॥ ५ ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जेपुरुष अशास्त्रविहितघोरतपकूं करैं हैं ॥ इहांऋगादिकवेदोंकानाम शास्त्रहै सोवेदरूपशास्त्र जितनाक इदानींकालविषे पठनपाठनकरणेविषेप्रसिद्धहै सोतौ प्रत्यक्षहै ॥ और जोवेदका भाग इदानींकालविषे कहांभी पठनपाठनकरणेविषे प्रसिद्धनहीं है सोवेदकाभाग स्मृतिआदिकोंविषेकथनकरेहुए अर्थका मूलरूपकरिकै अनुमानकऱ्याजावैहै ॥ ऐसेप्रत्यक्षरूपशास्त्रनैं तथाअनुमेयरूपशास्त्रनैं जोतप नहींविधानकऱ्याहै तातपकानाम अशास्त्रविहिततपहै ॥

ष्योंकाअंतःकरण शास्त्रजन्यविवेकज्ञानकरिकै रजोतमोगुणकाअभिभवकरिकै उद्भूतसत्त्वगुणवाला कऱ्याजावै है ॥ और जेपुरुष शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैं शून्यहैं तिनसर्वप्राणीमात्रकी तिसआपणेआपणेअंतःकरणकेअनुसारही श्रद्धाहोवै है अर्थात् तिसअंतःकरणकीविचित्रतातैं तिनप्राणियोंकी साश्रद्धाभी विचित्रहीहोवै है ॥ तहां सत्त्वगुणहैप्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतौ सात्त्विकीश्रद्धाहोवै है ॥ और रजोगुणहै प्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतौ राजसी श्रद्धाहोवै है ॥ और तमोगुणहैप्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतौ तामसीश्रद्धाहोवै है इति ॥ हेअर्जुन ! तिनपुरुषोंकी किसप्रकारकीसानिष्ठाहोवै है यहजोपूर्व तुमनैंप्रश्नकऱ्याथा तिसप्रश्नकेउत्तरकूं तूंअब श्रवणकर ॥ यह शास्त्रजन्यज्ञानतैंरहित तथाकर्मकाअधिकारी त्रिगुणात्मकअंतःकरणविशिष्टपुरुष श्रद्धामय होवै है तहां जिसविषेश्रद्धाकीबाहुल्यताहोवै है ताकानाम श्रद्धामयहै ॥ जैसे अन्नकीबाहुल्यतावालेयज्ञकूं अन्नमययज्ञकहैं हैं ॥ श्रद्धामयहोणेतैंही जोपुरुष जिसश्रद्धावालाहै अर्थात् जोपुरुष जिससात्त्विकीश्रद्धावालाहै अथवा राजसीश्रद्धावालाहै अथवा तामसीश्रद्धावालाहै सोपुरुष तिसआपणीश्रद्धाकेअनुसारही सात्त्विक कह्याजावै है अथवा राजस कह्याजावै है अथवा तामस कह्याजावै है ।। यातैं इसपुरुषकी श्रद्धाकरिकैही सानिष्ठा जानीजावै है इति ।। तहां महान्भरतकुलविषेजोउत्पन्नहुआहोवै ताकानाम भारतहै ।। अथवा शास्त्रजन्यज्ञानकानाम भाहै ताकेविषे जोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ।। इसभारतसंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धसात्त्विकपणा सूचनकऱ्या इति ॥ ३ ॥ ❀ ।। शंका–हे भगवन् ! इसपुरुषकीश्रद्धाही इसपुरुषकेनिष्ठाकूं जनावै है यहवचन पूर्वआपनैं कथनकऱ्या सोसत्यहै परंतु साश्रद्धा आपअज्ञातहुई तिसनिष्ठाकूं जनावैगीनहीं किंतु आपज्ञातहुई साश्रद्धा तिसनिष्ठाकूं जनावैगी यातैं इसपुरुषकी साश्रद्धाही किसउपायकरिकैजानीजावै है ।। ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए देवपूजनादिककार्यरूपलिंगकरिकै साश्रद्धा अनुमानकरी जावै है ।। इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यजंतेसात्त्विकादेवान्यक्षरक्षांसिराजसाः ॥ प्रेतान्भूतगणांश्चान्येयजंतेतामसाजनाः ॥ ४ ॥ यजंते । सात्त्विकाः । देवान् । यक्षरक्षांसि । राजसाः । प्रेतान् । भूतगणान् । च । अन्ये । यजंते । तामसाः । जनाः ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जेपुरुष देवतावोंकूं पूजनकरैं हैं तेपुरुष सात्त्विक जानणे और जेपुरुष यक्षराक्षसोंकूं पूजनकरैं हैं तेपुरुष राजस जानणे और जेपुरुष प्रेतोंकूं तथा भूतगणोंकूं पूंजनकरैं हैं तेअन्यपुरुष तामस जानणे ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तास्वभावजन्यश्रद्धाकरिकै वसुरुद्रादिक सात्त्विकदेवतावोंकूं पूजनकरैं हैं तेअन्यपुरुष सात्त्विक जानणे ॥

श्रद्धा कहीजावैहै ॥ इसप्रकार संस्काररूपस्वभावकेत्रिविधपणेकरिकै साश्रद्धाभी तीनप्रकारकीहीहोवैहै इति ॥ इहां (राजसीचैव) इसवचनविषेस्थितजो (चएव) यहदोशब्दहैं तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथम च इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ जोश्रद्धा आरंभहुएजन्मविषे केवल शास्त्रकेसंस्कारमात्र करिकैभी जन्यहोवैहै सा विद्वान्पुरुषोंकीश्रद्धा कारणकीएकरूपताकरिकै एकसात्त्विकीरूपहीहोवै है राजसीरूप तथातामसीरूप होवैनहीं इति ॥ और दूसरेएव इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जाश्रद्धा शास्त्रकीअपेक्षातैंरहितहै तथाप्राणीमात्रविषेसाधारणहै तथापूर्वउक्तस्वभावकरिकै जन्यहै ॥ साश्रद्धाही तिसस्वभावके त्रिविधपणेकरिकैतीनप्रकारकीहोवैहै इति ॥ और (तामसीच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै सोचकार तिनतीनप्रकारोंकेसमुच्चय करावणेवासतैंहै इति ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं पूर्वजन्मकेवासनारूपस्वभावकाअभिभवकरणेहारा शास्त्रजन्यविवेकविज्ञानतिनशास्त्रविधिकेउल्लंघनकरणेहारेपुरुषों कूंहैनहीं तिसकारणतैं तिनपुरुषोंके पूर्ववासनारूपस्वभावकेवशतैं साश्रद्धातीनप्रकारकीहीहोवैहै तिसतीनप्रकारकीश्रद्धाकूं तूं श्रवणकर तिसश्रद्धाकूंश्रवण करिकै तिनपुरुषोंविषे देवभावकूं अथवा आसुरभावकूं तूं आपेही निश्चयकरैगा इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अंतःकरणविषेस्थित पूर्वजन्मकी वासनारूपनिमित्तकारणकी विचित्रताकरिकै तिस श्रद्धाकी विचित्रता कथनकरी ॥ अब श्रीभगवान् तिसश्रद्धाकेउपादानकारणरूपअंतःकरणकीविचित्रताकरिकैभी तिसश्रद्धाकीविचित्रताकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सत्त्वानुरूपासर्वस्यश्रद्धाभवतिभारत ॥ श्रद्धामयोयंपुरुषोयोयच्छ्रद्धःसएवसः ॥ ३ ॥ सत्त्वानुरूपा । सर्वस्य । श्रद्धा । भवति । भारत । श्रद्धामयः । अयम् । पुरुषः । यः । यच्छ्रद्धः । सः । एव । सः ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भारत ! सर्वप्राणीमात्रकी आपणेअंतःकरणकेअनुसारही श्रद्धा होवै है यह पुरुष श्रद्धामयहोवै है यातैं जो पुरुष जिसश्रद्धावालाहोवैहै सोपुरुष तत्सदृश ही होवैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सत्त्वगुणहै प्रधानजिन्होंविषे ऐसेजे त्रिगुणात्मक अपंचीकृतपंचमहाभूतहैं तिनपंचमहाभूतों तैं उत्पन्नहुआ यहअंतःकरणप्रकाशस्वभाव वालाहोणेतैं सत्त्व इसनामकरिकैकह्याजावैहै सोअंतःकरण किसीकशरीरविषेतौ उद्भूतसत्त्वगुणवालाहीहोवैहै ॥ जैसे देवतावोंकाअंतःकरणहै ॥ और किसी शरीरविषेतौ सोअंतःकरण रजोगुणकरिकैअभिभूतसत्त्वगुणवालाहोवैहै ॥ जैसे यक्षादिकोंकाअंतःकरणहै ॥ और किसीकशरीरविषेतौ सोअंतःकरण तमोगुण करिकै अभिभूतसत्त्वगुणवालाहोवैहै ॥ जैसे भूतप्रेतादिकोंकाअंतःकरणहै ॥ और मनुष्योंकातौ सोअंतःकरण बाहुल्यताकरिकै व्यामिश्रितहीहोवैहै ॥ सोमनु

पक्षातैंरहित श्रद्धापूर्वक देवपूजनादिरूपक्रियाकीव्यवस्थिति किसप्रकारकीहै क्यासात्त्विकीहै अथवा राजसीतामसीहै ॥ तहां तिनपुरुषोंकी सानिष्ठा जोकदाचित् सात्त्विकीहोवैगी तौ सत्त्विकस्वभाववाले होणेतैं तेपुरुष देवताहीहोवैं गे ॥ और तिनपुरुषोंकी सानिष्ठा जोकदाचित् राजसीतामसी होवैंगी तौ राजसतामसस्वभाववाले होणेतैं तेपुरुष असुरहीहोवैं गे इति ॥ इहां (सत्त्वं) इसपदकरिकै अर्जुननैं संशयकी एककोटि कथनकरीहै ॥ और (रजस्तमः) इसवचनकरिकै तासंशयकी दूसरी कोटि कथनकरीहै ॥ इसीविभागकेजनावणेवासतै तिनदोनोंके मध्यविषे (आहो) इसशब्दकाकथनकऱ्याहै यातैं सात्त्विकी राजसी तामसी यहतीनकोटि इहां ग्रहणकरणीनहीं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां जेपुरुष शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै श्रद्धापूर्वक देवपूजनादिककर्मोंकूंकरैं हैं तेपुरुष तिसश्रद्धाकेभेदकरिकै भेदवालेहीहोवैं हैं ॥ तहां जेपुरुष सात्त्विकीश्रद्धाकरिकैयुक्तहोवैं हैं तेपुरुषतौ देव कहेजावैं हैं ऐसेसात्त्विकश्रद्धावालेदेवपुरुषतौ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीभावकूंप्राप्तहोवैं हैं तथा तिनसाधनोंजन्यफलकूंभी प्राप्तहोवैं हैं ॥ और जेपुरुष राजसीश्रद्धाकरिकै तथा तामसीश्रद्धाकरिकै युक्तहैं तेपुरुष असुर कहेजावैं हैं ऐसेअसुर पुरुषतौ शास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीभावकूं प्राप्तहोवैंनहीं तथातिनसाधनोंजन्यफलकूंभी प्राप्तहोते नहीं ॥ इसप्रकारकेविवेककरिकै अर्जुनकेसंशयके निवृत्तकरणेकीइच्छाकरताहुआ श्रीभगवान् तिनश्रद्धाकेभेदकूंकथनकरेहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिविधाभवतिश्रद्धादेहिनांसास्वभावजा ॥ सात्त्विकीराजसीचैवतामसीचेतितांशृणु ॥ २ ॥

त्रिविधा । भवति । श्रद्धा । देहिनाम् । सा । स्वभावजा । सात्त्विकी । राजसी । च । एव । तामसी । च । इति । ताम् । शृणु ॥ २ ॥

इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! देहाभिमानवाले पुरुषोंकी सा स्वभावजन्य श्रद्धा सात्त्विकी तथा राजसी तथा तामसी यह तीनें प्रकारकी ही होवैहै तिसश्रद्धाकूं तूं श्रवणकर ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए यहप्राणी शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै देवपूजनादिककर्मोंकूंकरैं हैं सा देहाभिमानीपुरुषोंकी स्वभावजन्यश्रद्धा तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां जन्मांतरोंविषे संपादनकरेजे धर्मअधर्मआदिकोंके संस्कारहैं जिनसंस्कारोंनैं इसजन्मकाआरंभकऱ्याहै तिनसंस्कारोंकानाम स्वभावहै सोजीवोंकास्वभाव सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै तिसतीनप्रकारकेस्वभावकरिकैजन्य जा श्रद्धाहै साश्रद्धाभी सात्त्विकी राजसी तामसी इसभेदकरिकै तीनप्रकारकी होवैहै काहेतैं लोकविषे जोजोकार्यहोवैहै सोसोकार्य आपणेकारणकेसदृशहीहोवैहै कारणतैंविलक्षण कार्यहोवैनहीं ॥ तहां सात्त्विकस्वभावजन्यश्रद्धा सात्त्विकीश्रद्धा कहीजावैहै ॥ और राजसस्वभावजन्यश्रद्धा राजसीश्रद्धा कहीजावैहै ॥ और तामसस्वभावजन्यश्रद्धा तामसी

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां कर्मकेअनुष्ठानकरणे हारेपुरुष तीनप्रकारकेहोवें हैं ।। केईकपुरुषतौ शास्त्रकेविधिकूंजानिकरिकैभी अश्रद्धारूपदोषतैं तिसशास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रतैं यत्किंचित्कर्मोंका अनुष्ठानकरैं हैं ऐसे पुरुषतौ सर्वपुरुषार्थों के अयोग्यहोणेतैं आसुर कहेजावैं हैं ॥ और केईकपुरुषतौ शास्त्रकेविधिकूंजानिकरिकै अत्यंतश्रद्धावान्होइकै तिसशास्त्रविधिकेअनुसारही निषिद्धकर्मोंकापरित्यागकरिकै शास्त्रविहितकर्मोंका अनुष्ठानकरैं हैं ऐसेपुरुषतौ सर्वपुरुषार्थोंकेयोग्यहोणेतैं देव कहेजावैं हैं यहअर्थ पूर्वषोडशअध्यायकेअंतविषे निर्णयकऱ्या ॥ और जेपुरुषशास्त्रकेविधिकूं आलस्यादिकदोषकेवशतैं परित्यागकरिकै आपणेपितापितामहादिक वृद्धपुरुषों के व्यवहार मात्रकरिकै श्रद्धापूर्वक निषिद्धकर्मोंकापरित्यागकरिकै विहितकर्मोंकाअनुष्ठानकरैं हैं तिनपुरुषोंविषे असुरोंकाधर्म घटताहै तथादेवतावोंकाधर्मभी घटताहै ॥ तहां शास्त्रकेविधिकापरित्यागकरणा यहतौअसुरोंकाधर्म तिन्होंविषेघटै है ॥ और श्रद्धापूर्वक विहितकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा यहदेवतावोंकाधर्म तिन्होंविषे घटैहै ॥ इसप्रकार असुरों केधर्मकरिकै तथादेवतावोंकेधर्मकरिकै युक्तहुए तेपुरुष क्याअसुरोंविषेअंतर्भूतहैं अथवा देवतावोंविषेअंतर्भूतहैं इसप्रकार दोनोंकर्मों केदर्शननैं तथाएककोटिकनिश्चयकरावणेहारेअर्थकेदर्शनतैं संशयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरै है ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ येशास्त्रविधिमुत्सृज्ययजंतेश्रद्धयान्विताः ॥ तेषांनिष्ठातुकाकृष्णसत्त्वमाहोरजस्तमः ॥ १ ॥ ये । शास्त्रविधिम् । उत्सृज्य । यजंते । श्रद्धया । अन्विताः । तेषाम् । निष्ठा । तु । का । कृष्ण । सत्त्वम् । आहो । रजः । तमः ॥ १ ॥

॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकृष्ण ! जेपुरुष शास्त्रविधिकूं परित्यागकरिकै श्रद्धाकरिकै युक्तहुए देवपूजनादिकोंकूं करैं हैं तिनपुरुषोंका पुनः किसप्रकारकी निष्ठाहै सात्त्विकीहै अथवा राजसी तामसीहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेकृष्ण ! अर्थात् हेसत्यआनंदरूप ! जैसे देवतापुरुष श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेअनुसारिहोवैं हैं तैसे जे पुरुष शास्त्रकेअनुसारिहैं नहीं किंतु जेपुरुष श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेविधिकूं आलस्यादिकदोषकेवशतैंपरित्यागकरिकैवर्त्तेहैं ॥ और जैसे असुरपुरुष श्रद्धातैंरहितहोवैं हैं तैसे जेपुरुष श्रद्धातैंरहितहैंनहीं किंतु जेपुरुष आपणे पितापितामहादिकवृद्धपुरुषों केव्यवहारकेअनुसरणमात्रतैं श्रद्धाकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ इसप्रकार आलस्यादिकदोषकेवशतैं शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै तथाआपणेवृद्धपुरुषों केव्यवहारके अनुसरणमात्रतैं श्रद्धाकरिकैयुक्तहुए जेपुरुष देवपूजनादिककर्मोंकूं करैहैं तिनपुरुषोंकी किसप्रकारकीनिष्ठाहै अर्थात् शास्त्रविधिकीउपेक्षा तथावृद्धव्यवहारमात्रतैंश्रद्धा इनदोनोंकरिकै जेपुरुष पूर्वअध्यायउक्त देवअक्षरपुरुषोंतैं विलक्षणहैं तिनपुरुषोंकी साशास्त्रविधिकीअ

टीका । हे अर्जुन ! जिसकारणतैं शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छापूर्वकवर्त्तणेहारा पुरुष इसलोकके तथापरलोकके सर्वपुरुषार्थोंकेअयोग्यहोवैहै जिसकारणतैं श्रेयकीइच्छावान् तैं अर्जुनकूं कार्यअकार्यकीव्यवस्थाविषे केवलशास्त्रही प्रमाणरूपहै अर्थात् हमारेकूं क्याकरणेयोग्यहै क्यानहींकरणे योग्यहै इसप्रकारकी जा कर्त्तव्यअकर्त्तव्यअर्थकीव्यवस्थाहै तिसव्यवस्थाविषे श्रुतिस्मृतिपुराणइतिहासादिरूपशास्त्रप्रमाणही बोधकहै ॥ आपणीबुद्धितथावृद्धा दिकोंकेवाक्य तिसव्यवस्थाविषे प्रमाणरूपनहीं हैं यातैं इसकर्मकेअधिकारभूमिविषे इसपुरुषनैं यहकर्म करणा यहकर्म नहींकरणा इसप्रकारके प्रवर्तकनिवर्तकरूप शास्त्रकेविधाननैं कथन कऱ्याजोविहितप्रतिषिद्धकर्महै तिसकर्मकूं भलीप्रकारजानिकै शास्त्रनिषिद्धकर्मकापरित्यागकरिकै आपणेअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत शास्त्र विहितआपणेयुद्धादिककर्मोंकेहीकरणेकूं तूं योग्यहै इति ॥ तहां इसषोडशअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं यहअर्थकथनकऱ्या ॥ पूर्वउक्तदंभदर्पादिकसर्व आसुरसंपत्का मूलभूत तथासर्वअश्रेयकीप्राप्तिकरणेहारे तथासर्वश्रेयकेप्रतिबंधक ऐसेजेकाम क्रोध लोभ यहतीन महान्दोषहैं तिनकामादिकमहान्दोषोंकापरित्यागकरिकै श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् इसअधिकारीपुरुषनैं अत्यंतश्रद्धापूर्वक शास्त्रकेश्रवणपरायणहोणा तथा तिसशास्त्रउपदिष्टअर्थके अनुष्ठानपरायणहोणा यह अर्थ श्रीभगवान्नैं दैवीसंपत् आसुरीसंपत् इनदोनोंसंपदावोंके भिन्नभिन्नकथनकरिकै निर्णयकऱ्या इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां षोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति षोडशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १६ ॥



हे अर्जुन ! जोपुरुष शास्त्रविधिकूं परित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रतैं वर्त्तताहै सोपुरुष अंतःकरणके शुद्धिकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै तथा इस लोककेसुखकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै तथास्वर्गमोक्षरूप उत्कृष्ट गतिकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! अधिकारीजनोंकेप्रति अपूर्वअर्थकाबोधनकरीताहै जिसनैं ताकानाम शास्त्रहै ऐसेशास्त्ररूपऋगादिकच्यारिवेदहैं तथा तिसवेदकेअनुसारी स्मृति पुराण इतिहास सूत्र इत्यादिकभी शास्त्ररूपहीहैं तिसशास्त्रकीजाविधिहै ॥ अर्थात् इसअधिकारीपुरुषनैं यहकार्य करणा यह कार्य नहींकरणा इस प्रकारके कर्त्तव्यअकर्त्तव्यज्ञानकेहेतुभूत जेप्रवर्त्तकनिवर्तक विधिनिषेधवचनहैं ॥ तहां (अहरहःसंध्यामुपासीत) अर्थयह यहत्रैवर्णिकपुरुषदिनदिनविषे संध्याकूं करै इत्यादिकवचनतो विधिवचन कहेजावैं हैं ॥ और (परदारान्नगच्छेत्) अर्थयह ॥ यहपुरुष परस्त्रीकेसाथि मैथुननहींकरै इत्यादिकवचन निषेधवचन कहेजावैं हैं ॥ ऐसेशास्त्रविधिकूं जोपुरुष अश्रद्धातैं परित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रतैं वर्त्तताहै अर्थात् जोपुरुष शास्त्रविहितभीकर्मकूं करतानहीं तथा शास्त्रनिषिद्धभीकर्मकूं करताहै सोशास्त्रविधिकेपरित्यागकरणेहारापुरुष पुरुषार्थकेप्राप्तिकीयोग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिकेकर्मोंकूं करताहुआभी प्राप्तहोता नहीं ॥ तथा सोपुरुष इसलोककेसुखकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तथा सोपुरुष स्वर्गरूपउत्कृष्टगतिकूं अथवा मोक्षरूपउत्कृष्टगतिकूंभी प्राप्तहोतानहीं किंतु सो शास्त्रकेविधिकाउल्लंघनकरणेहारापुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहीहोवैहै इति ॥ इहां (शास्त्रविधिम्) इसवचनविषे जोभगवान्नैंविधि यहशब्दकथनकऱ्याहै सोतिन विधिनिषेधवचनों तैंअतिरिक्त प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेप्रतिपादक जेतत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकवेदांतवचनहैं तेवचनभी शास्त्ररूपहीहैं ॥ इसअर्थकेसूचनकरणे वासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं शास्त्रतैंविमुखहोइकै आपणीइच्छापूर्वक प्रवर्त्तहोणेहारेपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैं भ्रष्टहोवैं हैं तिसकारणतैं इनअधिकारीपुरुषों नैं शास्त्रकीविधिकरिकैही कर्मोंकूंकरणा ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसषोडशअध्यायका उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तस्माच्छास्त्रंप्रमाणंतेकार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तंकर्मकर्त्तुमिहार्हसि ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्भ० सूप०ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेदैवासुरसंपद्विभागयोगोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ तस्मात् । शास्त्रम् । प्रमाणम् । ते । कार्याकार्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वा । शास्त्रविधानोक्तम् । कर्म । कर्त्तुम् । इह । अर्हसि ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! तिसकारणतैं तैंअर्जुनकूं कार्यअकार्यकीव्यवस्थाविषेही शास्त्रही प्रमाणहै यातैं इसकर्मके अधिकारभूमिविषे शास्त्रविधानकरिकैकथनकरेहुए कर्मकूं जानिकरिकै तूं युद्धादिककर्मों के करणेकूं योग्यहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

लोभका जो अनर्थविषेप्रवृत्तिरूपकार्य है ताकार्यका विवेककरिकैजोप्रतिबंधहै तथा तिसतैंअनंतर तिनकामादिकोंकीजोनहींउत्पत्तिहै यहही तिनकामादिकतीनोंका परित्यागहै ॥ तहां काम क्रोध लोभ इनतीनोंकास्वरूप इसीअध्यायविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! काम क्रोध लोभ इनतीनोंकेत्यागकरणेहारेपुरुषकूं कौनफल प्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) एतैर्विमुक्तःकौंतेयतमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ॥ आचरत्यात्मनःश्रेयस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ २२ ॥ एतैः । विमुक्तः । कौंतेय । तमोद्वारैः । त्रिभिः । नरः । आचरति । आत्मनः । श्रेयः । ततः । याति । पराम् । गतिम् ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय ! नरकके द्वारभूत इन काम क्रोध लोभ तीनोंनैं परित्यागकऱ्याहुआ यहपुरुष आपणे श्रेयकूंही सिद्धकरैहै तिसतैं परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! नरककेप्राप्तिकासाधनभूत तथाअत्यंतअधमयोनियोंकेप्राप्तिकासाधनभूत जे काम क्रोध लोभ यहतीनहैं इनतीनोंतैंरहितहुआ यहपुरुष आपणेश्रेयकूंही सिद्धकरै है अर्थात् इसअधिकारीपुरुषकेप्रति वेदभगवान्नैं हितरूपकारिकैविधानकऱ्येजे भगवत्भजनादिकअर्थहैं तिनअर्थोंकूंही सोपुरुष अनुष्ठानकरै है ॥ हेअर्जुन ! इन काम क्रोध लोभ तीनोंकेपरित्यागतैंपूर्व तिनकामादिकोंकरिकैप्रतिबद्धहुआ यहपुरुष आपणेश्रेयकूं सिद्धकरता नहीं जिसकरिकै इस पुरुषकूं मोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवै उलटा यहपुरुष आपणेअश्रेयकूंही संपादनकरै है जिसकरिकै इसपुरुषका नरकविषेहीपतनहोवैहै और अभी तिसकामक्रोधादिरूपप्रतिबंधतैंरहितहुआ यहपुरुष आपणेअश्रेयकूं संपादनकरतानहीं किंतु अभी आपणेश्रेयकूंही संपादनकरै है तिसश्रेयकेसंपादनतैं इसलोकके सुखकूंअनुभवकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषोंनैं यहकामादिकतीनों अवश्यकरिकै परित्यागकरणे इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं अश्रेयकेनहींआचरणकरणेका तथाश्रेयकेआचरणकरणेका केवल शास्त्रही निमित्तहै काहेतैं अश्रेयकानहींआचरण तथाश्रेयका आचरण यहदोनों केवल शास्त्रप्रमाणकरिकैही जान्येजावैं हैं अन्यकिसीप्रमाणकरिकै जान्येजातेनहीं तिसकारणतैं तिसशास्त्रकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छापूर्वकवर्त्तणेहारापुरुष किसीभीपुरुषार्थकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥

(मू. श्लो.) यःशास्त्रविधिमुत्सृज्यवर्त्ततेकामकारतः ॥ नससिद्धिमवाप्नोतिनसुखंनपरांगतिम् ॥ २३ ॥ यः । शास्त्रविधिम् । उत्सृज्य । वर्त्तते । कामकारतः । न । सः । सिद्धिम् । अवाप्नोति । न । सुखम् । न । पराम् । गतिम् ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

रीसंपदावोंके निवृत्तकरणेवासतै यहपुरुष दैवीसंपदावोंका संपादननहींकरैगा तौ तिनआसुरीसंपदावोंकेवशतैं व्याघ्रसर्पादिकनीचदेहोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतर श्रेयसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषेअयोग्यहोणेतैं इसपुरुषका कदाचित्‌भीनिस्तारनहींहोवैगा इसप्रकार सोपुरुष महान्‌संकटोंकूंप्राप्तहोवैगा यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरौषधंस्थानंसरुजःकिंकरिष्यति) ॥ अर्थयह ॥ आसुरीसंपत् रूपनिमित्तकरिकै उत्पन्नहोणेहारी जानरकरूपव्याधिहै तिसनरकरूपव्याधिकीनिवृत्तिकरणेहारी दैवीसंपद्रूपचिकित्साकूं जोपुरुष इस अधिकारीमनुष्यशरीर विषे नहींकरैहै सोरोगीपुरुष दैवीसंपद्रूपऔषधतैं रहितस्थानविषे जाइकै तिननरकरूपव्याधिकेनिवृत्तकरणेवासतै क्याउपायकरैगा किंतु तहांकोईभीउपाय नहींकरैगाइति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! (दंभोदर्पोऽतिमानश्च) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वआपनैं कथनकरीजा आसुरसंपत्है साआसुरसंपत् अनेकप्रकारकीहै यातैं सासर्वआसुरसंपत् इसपुरुषनैं आपणेआयुष्कीसमाप्तिपर्यंत प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसआसुरीसंपत्कूं संक्षेपकरिकैकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ॥ २१ ॥ त्रिविधम् । नरकस्य । इदम् । द्वारम् । नाशनम् । आत्मनः । कामः । क्रोधः । तथा । लोभः । तस्मात् । एतत् । त्रयम् । त्यजेत् ॥२१॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! इसपुरुषकूं अधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहारा यहै तीनप्रकारका नरकका द्वारहै काम क्रोध तथा लोभ तिसकारणतैं इन तीनोंकूं परित्यागकरै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! नरककेप्राप्तिका यहतीनप्रकारकाही द्वार कहिये साधनहै सोयहतीनप्रकारकाद्वारही पूर्वउक्त सर्वआसुरसंपत्कामूलभूतहै तथा आत्माकेनाशकरणेहाराहै अर्थात् धर्ममोक्षादिकसर्वपुरुषार्थोंकीअयोग्यताकूंसंपादनकरिकै इनपुरुषोंकूं अत्यंतअधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहां सोतीनप्रकारका नरककाद्वार कौनहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्‌कहैं हैं (कामःक्रोधस्तथालोभःइति) हे अर्जुन ! काम क्रोध लोभ यहतीनोंही इसपुरुषकूं नरककीप्राप्ति करणेहारेहैं तथा व्याघ्र सर्प कीट पतंग वृक्ष इत्यादिक अत्यंतअधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और इनतीनोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतरही इसपुरुषकूं तेसर्वआसुरसंपत् प्राप्तहोवैं हैं ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं काम क्रोध लोभ यहतीनोंही इसपुरुषकूं सर्वअनर्थोंकेमूलभूतहैं तिसकारणतैं यहअधिकारी पुरुष इनतीनोंका अवश्यकरिकैपरित्यागकरै ॥ इनतीनोंकेपरित्यागकरिकैही पूर्वउक्तसर्वहीआसुरसंपत् परित्यागकरीजावैहै ॥ तहां चित्तविषेउत्पन्नहुए कामक्रोध

आपन्नाः । मूढाः । जन्मनि । जन्मनि । माम् । अप्राप्य । एव । कौंतेय । ततः । यांति । अधमाम् । गतिम् ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे कौंतेय ! जेपुरुष कदाचित्भी आसुरी योनि कूं प्राप्तहुएहैं तेपुरुष जन्म जन्मविषे अविवेकीहुए वेदमार्गकूं नप्राप्तहोइके ही तिसैं तैंभी अधम गतिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जेपुरुष कदाचित्भी आसुरीयोनिकूंप्राप्तहुएहैं तेपुरुष जन्मजन्मविषे, मूढहुए अर्थात् तमोगुणकी बाहुल्यताकरिकै विवेकतैं शून्यहुए मेरेकूंप्राप्तहोइकै अर्थात् मैंपरमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकूं नप्राप्तहोइके तिसतैंभीअत्यंतनिकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ इहां (मामप्राप्यैव) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो एव यहशब्दहै सोएवशब्द तिर्यकूस्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्ग के प्राप्तिकीअयोग्यताकूंबोधनकरैं हैं अर्थात् तिनतिर्यकूस्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्ग के प्राप्तिकी योग्यताहीनहीं है यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तेआसुरपुरुष वेदमार्गकीप्राप्तिकेअयोग्यहोइके पूर्वपूर्वनिकृष्टयोनियोंतैं उत्तरउत्तर अत्यंतनिकृष्ट अधमयोनियोंकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ जैसे व्याघ्रयोनितैं सर्पयोनि निकृष्टहै तिससर्पयोनितैंभी कीटपतंगादिकयोनि निकृष्टहैं तिसकीटपतंगादिकयोनितैंभी वृक्षादिकयोनि निकृष्टहैं इति ॥ इहां यद्यपि (मामप्राप्य) इसवचनविषेस्थित मां इसपदकरिकै परमेश्वररूपअर्थकीहीप्रतीतिहोवैहै तथापि मां इसपदकरिकै परमेश्वरकाग्रहणकरणानहीं किं तु मां इसपदकरिकै परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाही ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे जोअर्थ किसीभीप्रकारकरिकै प्राप्तहोवैहै तिसवस्तुविषेही तिसअर्थकानिषेधहोवैहै सर्वप्रकारतैंअप्राप्तअर्थका निषेधहोतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे परमेश्वरकेप्राप्तिकीकोईशंकामात्रभीहोतीनहीं ॥ जिसपरमेश्वरकीप्राप्तिका (अप्राप्य) इसशब्दकरिकै निषेधहोवै ॥ यद्यपि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकीभीप्राप्ति संभवतीनहीं तथापि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीशंकामात्र कदाचित् होइसकैहै तिसवेदमार्ग के प्राप्तिकाही (अप्राप्य) यहशब्द निषेधकरैहै यातैं मां इसपदकीलक्षणावृत्तितैं परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाग्रहणकरणा उचितहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ मां इसपदकीलक्षणावृत्तिकरिकै परमेश्वरकेप्राप्तिकासाधनरूप अधिकारीमनुष्यदेहका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ यातैं इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं एकवारभी आसुरीयोनिकूंप्राप्तहुएपुरुषोंकूं तिसतैंउत्तरउत्तर निकृष्टतम तथानिकृष्टतम योनियोंकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकूं तिननिकृष्टयोनियों केनिवृत्तकरणेका सामर्थ्यहोवैनहीं तिसकारणतैं जितनैंकालपर्यंत अधिकारीमनुष्यदेहकीप्राप्तिहै तितनैंकालपर्यंत महान् यत्नकरिकै परमनिकृष्टआसुरीसंपदावों केनिवृत्तकरणेवासतै शीघ्रही इनश्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं यथाशक्तिपरिमाण दैवीसंपदावोंका संपादनकरणा जो कदाचित् तिनआसु

रिंके तिन्हेंकेपापोंकानाशहोवैहै काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहुआभी सोपरमेश्वरविषे जिसवस्तुविषे जिसकार्यकेउत्पत्तिकीयोग्यताहोवैहै तिसवस्तुतैंही तिसकार्यकीउत्पत्तिकरै है अयोग्यवस्तुतैं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ जैसे पाषाणोंविषे यवअंकुरकेउत्पत्तिकीयोग्यताहैनहीं यातैं परमेश्वर तिनपाषाणोंविषे यवअंकुरकीउत्पत्तिकरतानहीं किंतुयवबीजोंविषेही तिसयवअंकुरकीउत्पत्तिकरै है तैसे पुण्यकर्मकीउत्पत्तिकेअयोग्य तिनआसुरपुरुषोंविषे सो ईश्वरभी पुण्यकर्मोंकूंउत्पन्नकरतानहीं और जोकोईवादी यहवचनकहै कार्यके करणेकूं तथा न करणेकूं तथाअन्यथाकरणेकूं जोसमर्थहोवै ताकानाम ईश्वर है ऐसाईश्वरहोणेतैं सोपरमेश्वर पुण्यकर्मोंकेअयोग्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताकेसंपादनकरणेमैंसमर्थही है इति ॥ सोयहकहणा यद्यपि सत्यहै काहे तैं सोपरमेश्वर सत्यसंकल्पहै यातैं सोपरमेश्वर जोकदाचित् इनआसुरपुरुषोंविषेपुण्यकर्मकीयोग्यताहोवै इसप्रकारकासंकल्पकरै तो तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताहोइजावै परंतु सोपरमेश्वर इसप्रकारकासंकल्पही करतानहीं काहेतैं परमेश्वरकीआज्ञारूप जोश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै तिसशास्त्रकाउल्लंघनकरणेहारे तथापरमेश्वरकेभक्तोंकेद्रोही ऐसेजे तेदुरात्माआसुरपुरुषहैं तिनआसुरपुरुषोंऊपरि तिसपरमेश्वरकीप्रसन्नता हैनहीं ताप्रसन्नतातैंविना सोपरमेश्वर तिससंकल्पकूंकैसेकरैगा किंतु कदाचित्भी नहींकरैगा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमुन्निनीषते एषएवसाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषते ॥) अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर प्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं ऊपरिले स्वर्गादिकलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरै है तिसपुरुषकूंतौ पुण्यकर्मकरावैहै और यहपरमेश्वर अप्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं नरकादिकअधोलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरै है तिसपुरुषकूंतौ पापकर्मही करावैहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नताकाकारणरूप जो परमेश्वरकीवेदरूपआज्ञाकापालनहै सोआज्ञाकापालन जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहै तिनपुरुषों ऊपरि तौ परमेश्वरकी प्रसन्नताहोवै है ॥ और जिनपुरुषोंविषे सोपरमेश्वरकीआज्ञाकापालन नहीं है तिनपुरुषोंऊपरि परमेश्वरकी प्रसन्नताहोतीनहीं ॥ और कारणके विद्यमानहुएही कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै कारणकेअभावहुए कार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं यहवार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्धही है ॥ इसविषे परमेश्वरकूं विषमता तथानिर्दयता कैसेप्राप्तहोवैगी किंतु नहींप्राप्तहोवैगी इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् ! ऐसे आसुरपुरुषोंकाभी क्रमकरिकै बहुतजन्मोंकेअंतविषे श्रेयहोवैगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए ऐसे आसुर पुरुषोंका कदाचित्भी श्रेयहोणेहारानहीं है इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरै हैं ।

(मू. श्लो.) आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनिजन्मनि ॥ मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥ आसुरीम् । योनिम् ।

कैसे हैं तेआसुरपुरुष क्रूरहैं अर्थात् सर्वदा जीवोंकीहिंसाविषेहीप्रीतिवाले हैं इसीकारणतैंही तेआसुरपुरुष सर्वनरोंविषेअधमहैं अर्थात् अत्यंतनिंदितहैं ॥ पुनः कैसे हैं तेआसुरपुरुष अशुभहैं अर्थात् निरंतर शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंहीकरणेहारे हैं ऐसेतिन आसुरपुरुषोंकूं कर्मकेफलकाप्रदाता मैंपरमेश्वर नरकजाणेकेमार्गोंविषेही गेरताहूं ॥ और तेआसुरपुरुष आपणेपापकर्मों के वशतैं तिननरकोंविषे बहुतकालपर्यंत अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै जबी तिसनरकतैंआवैं हैं तबी मैंपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूंपूर्वलेकर्मवासनावोंकेअनुसार व्याघ्रसर्पादिक अत्यंतक्रूरयोनियोंविषेही गेरताहूं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्रोही तथासाधुपुरुषों के द्रोही आसुरपुरुषोंऊपरि मैंपरमेश्वरकी कदाचित्भी कृपाहोतीनहीं ॥ तहां इसप्रकारकेपापात्माआसुरपुरुषनीचयोनियोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथकपूयचरणाअभ्यासोहयत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिंवा शूकरयोनिंवा चांडालयोनिंवाइति ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रनिषिद्ध पापकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषशीघ्रही नीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैं हैं कबीश्वानयोनिकूंप्राप्तहोवैं हैं कबी शूकरयोनिकूंप्राप्तहोवैं हैं कबी चांडालयोनिकूंप्राप्तहोवैं हैं इसतैं आदिलेके दूसरीभीअनेकनीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ इसप्रकार जीवोंकेपूर्वपूर्वकर्मों के अनुसार फलकीप्राप्तिकरणेहारेईश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयति ॥) अर्थयह ॥ इसलोकविषे कोईप्राणीसुखीहै कोइप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी धनीहै कोईप्राणी दरिद्रीहै कोईप्राणी पंडितहै कोईप्राणी मूर्ख है ॥ इसप्रकारकेविषमजगत्कीउत्पत्तिकरणेहारे ईश्वरविषे विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी अवश्यकरिकै प्राप्तिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीव्यासभगवान् कहैं हैं परमेश्वर जीवोंकेपुण्यपापकर्मकी अपेक्षाकरिकै इसविषमजगत्कूं उत्पन्नकरैं हैं तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारही कोईप्राणी सुखीहोवैहै कोईप्राणी दुःखीहोवैहै ॥ यातैं परमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं इसीप्रकारकेअर्थकूं । (अथकपूयचरणाः ।) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरैं हैं इति ॥ ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप सोअंतर्यामीपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं केवल पापकर्मही करावैहै पुण्यकर्मकरावतानहीं काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंविषे केवल पापकर्मोंकाहीबीजविद्यमानहै पुण्यकर्मोंकाबीज तिन्होंविषेहैनहीं और बीजकेअनुसारही अंकुरकीउत्पत्तिहोवैहै अन्यबीजतैं अन्यअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे निंबकेबीजतैं निंबके अंकुरकीही उत्पत्तिहोवै है तिसनिंबकेबीजतैं आम्रकेअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि सोपरमेश्वर परमकृपालुहै तथापि सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूंनाशकरतानहीं काहेतैं तिनपापोंकेनाशकरणेहारे जेपुण्यकर्म हैं तेपुण्यकर्म तिनआसुरपुरुषोंविषे हैंनहीं यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषों के पापोंकूंनाशकरतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मों के करणेकीयोग्यताहैनहीं यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं पुण्यकर्मभी करावतानहीं जिनपुण्यकर्मोंक

तिनयज्ञोंविषे तिनआसुरपुरुषोंकीश्रद्धाहै नहीं ॥ यातैं तिनश्रद्धाहीनयज्ञोंका दूसरातौ कोईफलहोवैनहीं किंतु दीक्षादिकनियमोंकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके आत्माकूं केवल व्यर्थही पीडाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार पशुआदिकोंकीभी अविधिपूर्वकहिंसाकरिकै दूसराकोईफल होवैनहीं किंतु ताहिंसाकरिकै केवल चैतन्यकाद्रोहमात्रही सिद्धहोवैहै इसरीतिसैं आपणेदेहोंविषेस्थित तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषेस्थित चैतन्यरूपमैंपरमेश्वरकाद्वेषकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरैं हैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहतीसराअर्थकरणा ॥ इहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै परमेश्वरके लीलाविग्रहरूप रामकृष्णादिकनामवाले देहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै प्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामवाले भक्तजनोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ताकरिकै यहअर्थ सिद्धहोवैहै मैंपरमेश्वरके लीलाविग्रहरूप वासुदेवादिकनामवालेदेहोंविषे मनुष्यत्वबुद्धिरूपभ्रमकरिकै तेआसुरपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं करैं हैं ॥ तथाप्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामोंवाले भक्तजनोंकेदेहोंविषे सर्वदा आविर्भावकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं तेआसुरपुरुष करैं हैं ॥ यहवार्त्ता पूर्वनवमअध्यायविषे (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥ मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः ॥) इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकरीथी ॥ तथा (अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः) इसवचनकरिकैभीपूर्वकथनकरीथी इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ जिसमैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै अधिकारीजन पावनहोवैं हैं तिसमैंपरमेश्वरविषेही तिनआसुरपुरुषोंकाद्वेषहै ऐसेद्वेषीपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातैं तेआसुरपुरुष किसीप्रकारकरिकैभी पावनहोतेनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका--हेभगवन् ! आपपरमेश्वरकी कृपाकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकाभी कदाचित् निस्तारहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए तिनआसुरपुरुषोंका कदाचित्भी निस्तारहोणेहारानहीं है इस प्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥ तान् । अहम् । द्विषतः । क्रूरान् । संसारेषु । नराधमान् । क्षिपामि । अजस्रम् । अशुभान् । आसुरीषु । एव । योनिषु ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! द्वेषकरणेहारे तथाक्रूर तथानरोंविषेअधम तथा निरंतर अशुभकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेतिनआसुरपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर नरकजाणेकेमार्गों विषेही गेरताहूं तिसतैंअनंतर अत्यंतक्रूर व्याघ्रसर्पादिकयोनियोंविषे ही गेरताहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्गकेविरोधी जे आसुरपुरुषहैं कैसेहैं तेआसुरपुरुष मैंपरमेश्वरका तथासाधुजनोंका सर्वदा द्वेषकरणेहारे हैं ॥ पुनः

महान्पुरुषोंकेउल्लंघनकरणेकाकारणरूप ऐसाजो चित्तकादोषविशेषहै ताकानाम दर्प है ॥ और इष्टवस्तुविषयक जाअभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और अनिष्टवस्तुविषयक जोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ इहां (क्रोधंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै तिसचकारकरिकै परगुणोंकेनहींसहनकरणेकास्वभावरूप मात्सर्यका तथाअन्यभीमहान्दोषोंका ग्रहणकरणा ॥ ऐसे अहंकार बल दर्प काम क्रोध मात्सर्य इत्यादिकमहान्दोषोंकूं तेआसुरपुरुष सर्वदा आश्रयणकरैं हैं इसकारणतैं तेआसुरपुरुष नरकविषेहीपडैं हैं ॥ शंका–हेभगवन् ! इसप्रकारकेपतितभी तेआसुरपुरुष आपपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै पावनहुए नरकविषेनहींपडैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंविषे भगवद्भक्तिकाअसंभव कथनकरैं हैं (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतःइति) इहां देहशब्दका आत्मशब्दके अंतविषे तथापरशब्दकेअंतविषे संबंधकरणेतैं (मांआत्मदेहेषुपरदेहषुप्रद्विषंतः) इसप्रकारकावाक्य सिद्धहोवै है ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके पुत्रभार्यादिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ यातैं (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहअर्थ सिद्धहोवै है तिनआसुरपुरुषोंकेप्रेमकाविषयभूत जे आपणेदेहहैं तथापुत्रभार्यादिकोंकेदेहहैं तिनसर्वदेहोंविषे तिन्होंकेबुद्धिकर्मादिकोंका साक्षीरूपकरिकैविद्यमान तथानिरतिशयप्रीतिकाविषय ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंही तेआसुरपुरुष करैं हैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरकीआज्ञारूप जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै तिसशास्त्रउक्तअर्थकेअनुष्ठानतैंरहितपणेकरिकै जो तिसशास्त्ररूपआज्ञाकाउल्लंघनहै यहही मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषहै ॥ और इस लोकविषेभी राजादिकमहान्पुरुषोंकेआज्ञाकूं जोपुरुष उल्लंघनकरैं हैं तिसपुरुषकूं तिनराजादिकोंकाद्वेषीकहैं हैं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्वेषकूंकरणेहारे तिनआसुरपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै इति ॥ शंका–हेभगवन् ! ऐसेआसुरपुरुषोंकूं आपणेगुरुआदिकमहान्पुरुष क्योंनहींशिक्षाकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अभ्यसूयकाः इति) हेअर्जुन ! वेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित जेगुरुआदिकवृद्धपुरुषहैं तिनगुरुआदिकोंविषेस्थित करुणादिक गुणोंविषे तेआसुरपुरुष वंचनादिकदोषोंकाहीआरोपणकरैं हैं ऐसेअसूयादोषवाले आसुरपुरुषोंकूं तिनगुरुवोंकेवचनोंविषे श्रद्धाहीहोतीनहीं ॥ यातैं तेगुरुभी तिनआसुरपुरुषोंकूं शिक्षाकरतेनहीं ॥ इसप्रकार बहिरंगरूप तथाअंतरंगरूप सर्वसाधनोंतैंशून्यहुए ते आसुरपुरुष केवल नरकविषेहीपडैं हैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै पशुआदिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवै है ॥ तिन आसुरपुरुषोंकेदेहोंविषे तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषे चैतन्यअंशकरिकैस्थित जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरैं हैं ॥ तहां दंभपूर्वककरेहुए

सोमानहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेतैंभिन्न आपणेगुरुआदिकोंविषेभी अपूज्यत्वकाअभिमानहै ताकानाम मदहै ऐसे धननिमित्तकमानकरिकै तथामान निमित्तकमदकरिकै युक्तहुए तेअसुरपुरुष नामयज्ञोंकरिकै यजनकरैं हैं तहां जेयज्ञ केवल नाममात्रकरिकैही यज्ञरूपहोवैं वास्तवतैं यज्ञरूपहोवैंनहीं तिनयज्ञोंकाना म नामयज्ञहै अथवा जेयज्ञ कर्त्तापुरुषविषे दीक्षित सोमयाजी इत्यादिकनाममात्रकेही संपादकहोवैं हैं किसीधर्म केसंपादकहोतेनहीं तिनयज्ञोंकानाम नामयज्ञ है ॥ ऐसे नाममात्रयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष विधिपूर्वककरतेनहीं किंतु अविधिपूर्वकहीकरैं हैं अर्थात् वेदनैं विधानकरे जे द्रव्य देवता मंत्र दक्षिणा इत्यादिक यज्ञकेअंगहैं तिनअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकूंकरतेनहीं ॥ ऐसेयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष कोईश्रद्धापूर्वक करतेनहीं किंतु दंभ करिकैकरतेहैं तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी बाह्यतैंलोकोंकेआगे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ऐसेदंभकरिकै तेआसुरपुरुष यज्ञोंकूंकरैं हैं इसकारणतैं तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकेफलोंकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां (यक्ष्येदास्यामि) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याजो दंभअहंकारादिकहैंप्रधानजिसविषे ऐसासंकल्पहै तिससंकल्पकरिकैप्रवृत्तहुए तिनआसुरपुरुषोंके बहिरंगसाधनरूप यागदानादिककर्मभी सिद्धहोतेनहीं तौ विचार वैराग्य भगवद्भक्ति इत्यादिकअंतरंगसाधन तिनआसुरपुरुषोंके कैसेसिद्धहोवैंगे किंतु ते अंतरंगसाधन तिन्होंके कदाचितभी सिद्धनहीं होवैंगे ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ अहंकारम् । बलम् । दर्पम् । काम म् । क्रोधम् । च । संश्रिताः । माम् । आत्मपरदेहेषु । प्रद्विषंतः । अभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं आश्रयणकरणेहारे तथा आपणेदेहपरदेहोंविषेस्थित मैंपरमेश्वरका द्वेषकरणेहारे तथाअसूया दोषवाले तेआसुरपुरुष नरकविषेहीपडैं हैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अहंअभिमानरूपजोअहंकारहै सोअहंकारतौ सर्वप्राणियोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणअहंकार इहां अहंकारशब्दकरिकैग्रहणकर णानहीं किंतु जेगुण आपणेविषेहैंनहीं तिनगुणोंकाआपणेविषे आरोपणकरिकै तिनआरोपितगुणोंकरिकै जो आपणेमहानूपणेकाअभिमानहै ताकानाम अहं कारहै ॥ इसप्रकार शरीरविषे कार्यकरणेकासामर्थ्यरूपजोबलहै सोबलतौ सर्वप्राणियोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणबल इहां बलशब्दकरिकै ग्रहणकर णानहीं किंतु अन्यप्राणियोंकेपराभवकरणेवासतै जो शरीरविषेस्थित सामर्थ्यविशेषहै ताकानाम बलहै ॥ और अन्यप्राणियोंकीअवज्ञारूप तथागुरुराजादिक

रिकैयुक्तहैं तिन्होंकानाम विभ्रांतहै ॥ अनेकचित्तहोवैं तेही विभ्रांतहोवैं तिन्होंकानाम अनेकचित्तविभ्रांतहै ॥ अब ताभ्रांतिकीप्राप्तिविषेहेतुकहैं हैं (मोहजालसमावृताःइति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं तेआसुरपुरुष मोहरूपजालकरिकै आवृतहुएहैं तिसकारणतैं तेआसुरपुरुष पूर्वउक्तअनेकदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविधप्रकारकीभ्रांतिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेहितकासाधनहै ॥ और यहवस्तु हमारेअहितकासाधनहै इसप्रकारके हितअहितविवेकका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम मोहहै सोमोहही आवरणरूपताकारकै बंधनकाहेतुहोणेतैं लोकप्रसिद्धजालकीन्याई जालरूपहै ॥ ऐसेमोहरूपजालकरिकै तेआसुरपुरुष सम्यक्आवृतहुएहैं अर्थात् तिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष सर्व ओरतैंवेष्टनकरें हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध सूत्रमयजालनैं मत्स्यादिकजंतु परवशकरीतेहैं तैसेतिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष परवशकरेंहैं ॥ इसीकारणतैंही तेआसुरपुरुष आपणेअनिष्टकेसाधनरूपभी विषयभोगोंविषे प्रसक्तहुएहैं अर्थात् सर्वप्रकारकरिकै तिनविषयभोगोंविषेही अत्यंतआसक्तहुएहैं तिसविषयभोगोंकीआसक्तिकरिकै क्षणक्षणविषे पापोंकूंसंचयकरतेहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैं हैं अर्थात् विष्ठा श्लेष्म रुधिर इत्यादिकमलिनपदार्थोंकरिकैपूर्णजे वैतरणीआदिकनरकहैं तिननरकोंविषेहीतेआसुरपुरुष पतनहोवैं हैं इति ॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् ! तिसआसुरपुरुषोंकेमध्यविषेभी कितनेक आसुरपुरुषोंकी यागादिककर्मोंविषे प्रवृत्ति देखणेमैंआवैहै ॥ यातैं तिनआसुरपुरुषोंका नरकविषेपतनकहणा अयुक्तहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) आत्मसंभाविताःस्तब्धाधनमानमदान्विताः ॥ यजंतेनामयज्ञैस्तेदंभेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ आत्मसंभाविताः । स्तब्धाः । धनमानमदान्विताः । यजंते । नामयज्ञैः । ते । दंभेन । अविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! आत्मसंभावित तथास्तब्ध तथाधनमानमदकरिकैयुक्त तेआसुरपुरुष नाममात्रयज्ञोंकरिकै अविधिपूर्वक दंभकरिकै यजनकरें हैं । ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पुनःकैसेहैं तेआसुरपुरुष आत्मसंभावितहैं अर्थात् हम सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहैं इसप्रकार आपणेआपकरिकैही पूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं किसीश्रेष्ठपुरुषोंकरिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं ॥ अथवा आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकरिकैही तेआसुरपुरुष पूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं किसीश्रेष्ठपुरुषकरिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं पुनःकैसेहैं ते आसुरपुरुष स्तब्धहैं अर्थात् नम्रभावतैंरहित हैं तानम्रताकेअभावविषेहेतुकहैं हैं (धनमानमदान्विताःइति) तहां सुवर्ण पशु अन्न गृह भूमि इत्यादिकोंकानाम धनहै सोधनहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेविषे पूज्यत्वरूपअतिशयताकाअध्यासहै ताकानाम मानहै

(मू. श्लो.) आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया ॥ यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ आढ्यः । अभिजनवान् । अस्मि । कः । अन्यः । अस्ति । सदृशः । मया । यक्ष्ये । दास्यामि । मोदिष्ये । इति । अज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ धनवान् तथाकुलवान् मैंहीहूं यातें हमारे सदृश दूसरा कौनहै मैं यागकूंकरूंगा तथादानकूंकरूंगा तिसतें हर्षकूं प्राप्तहोवूंगा इसप्रकार तेआसुरपुरुष अविवेककरिकैमोहितहोवैं हैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इसलोकविषे मैंही धनवानहूं तथा कुलीनभीमैंहीहूं इसकारणतैं इसलोकविषे धनकरिकै तथा कुलकरिकै हमारेसमान दूसराकौनहै किंतु हमारेसमानदूसराकोईभीपुरुष धनवान् तथाकुलवान् नहीं है ॥ शंका—धनकरिकै तथाकुलकरिकै तुम्हारेतुल्य कोईमतहोवो तौभी यागकरिकै तथादानकरिकै तुम्हारेतुल्य कोईहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहैं हैं ॥ (यक्ष्येदास्यामिइति) मैंआपणीप्रतिष्ठाकेवासतै इसप्रकारकेमहान्यागकूंकरौंगा तिसयाग करिकैभी मैं दूसरेसर्वयागकरणेहारेपुरुषोंकूं अभिभवकरौंगा ॥ यातैं यागकरिकैभी हमारेतुल्य कोई हैनहीं ॥ और हमारीस्तुतिकरणेहारेजे नट भाट नर्त्तकी आदिकहैं तिननटादिकोंकेताईं मैं बहुत धन देवूंगा तिसधनकेदेणेतैं मैं नर्त्तकीआदिकोंकेसाथि बहुतहर्षकूंप्राप्तहोवूंगा ॥ यातैं दानकरिकैभी हमारेतुल्य कोई हैनहीं ॥ इसप्रकारतैं तेआसुरपुरुष अविवेकरूपअज्ञानकरिकै मोहितहोवैं हैं अर्थात् तिसअविवेकरूपअज्ञाननैं तेआसुरपुरुष भ्रमकीपरंपरारूप विविधप्रकारकेमोहकूं प्राप्तकरीते हैंइति ॥ १५ ॥

(मू. श्लो.) अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताःकामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ अनेकचित्तविभ्रांताः । मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः । कामभोगेषु । पतंति । नरके । अशुचौ ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अनेकदुष्टसंकलपोंकरिकै विभ्रांतहुए तथामोहरूपजालकरिकैआवृतहुए तथाविषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहुए तेआसुरपुरुष अशुचि नरकविषे पतन होवैं हैं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरेजे अनेकप्रकारकेचित्तकेदुष्टसंकल्पहैं तिन अनेकचित्तकेदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविधप्रकारकीभ्रांतिहुई है जिन्होंकूं तिन्होंका नाम अनेकचित्तविभ्रांतहै ॥ अथवा नहीं हैएकवस्तुचिंतनकाविषय जिसका ताकानाम अनेकहै अनेकहै क्या पूर्वउक्तबहुतविषयोंविषेसंलग्नहै चित्त जिन्होंका तिन्होंकानाम अनेकचित्तहै ॥ और यहकार्य आदिविषेकरणेयोग्यहै अथवा यहकार्य आदिविषेकरणेअयोग्यहै इसप्रकार विशेषकरिकै जेपुरुष भ्रांतिक

टीका । हेअर्जुन ! तेआसुरपुरुष निरंतर धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहैं इसकारणतैंही तेआसुरपुरुष इसप्रकारके मनोराज्योंकूंकरैं हैं ॥ यहधन हमनैं अबी इस उपायकरिकै पायाहै और इसधनतैंअन्य दूसरेभी मनकीतुष्टिकरणेहारेधनकूं मैं अबी शीघ्रहीप्राप्तहोवैंगा और यहधन हमारेगृहविषे पूर्वही इकट्ठाकऱ्याहु आहै सोयहधनभी इसउपायकरिकै अगलेवर्षविषे पुनःबहुतहोवैगा ॥ इसप्रकार धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैं हैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १३ ॥ ❀ इसप्रकारतिनआसुरपुरुषोंकेतृष्णारूपलोभकावर्णनक रिकै अब तिनआसुरपुरुषोंकेअभिप्रायकेकथनकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके क्रोधकाभी वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ॥ ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ १४ ॥ असौ । मया । हतः । शत्रुः । हनिष्ये । च । अपरान् । अपि । ईश्वरः । अहम् । अहम् । भोगी । सिद्धः । अहम् । बलवान् । सुखी ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमनैं यह शत्रु हननकऱ्याहै तथा दूसरेशत्रुवोंकूं भी मैं हननकरूंगा मैं ईश्वरहूं तथामैं भोगीहूं तथामैं सिद्धहूं तथाबलवान्हूं तथासुखीहूं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । अत्यंतदुर्जय जोयह देवदत्तनामा हमारा शत्रुथा सोयहशत्रु हमनैं हननकऱ्याहै ॥ यातैं अबी मैं विनाहीआयासतैं दूसरेभीसर्वशत्रुवोंकूं हननकरूंगा हमारे तैं कोईभीशत्रु जीवनकूंप्राप्तहोवैगानहीं ॥ इहां (हनिष्येच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ताचकारकरिकै यहअभिप्राय सूचनकऱ्या ॥ तिनशत्रुवोंकूं मैं केवल हननहीनहींकरूंगा किंतु तिनशत्रुवोंके धनदारादिकपदार्थोंकूंभी मैंहरणकरूंगा इति ॥ शंका—तुम्हारेतुल्य अथवा तुम्हारेतैंभीअधिक दूसरेशत्रु विद्यमानहैं ॥ यातैं सर्वशत्रुवोंकेनाशकरणेकासामर्थ्य तुम्हारेविषे किसहेतुतैं है ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहैंहैं ॥ (ईश्वरोहमिति) मैंईश्वरहूं केवल मनुष्यनहींहूं ॥ जिसमनुष्यपणेकरिकै हमारेतुल्य अथवा हमारेतैंअधिककोईपुरुषहोवै यहअत्यंततुच्छबलवालेदीनजन हमारी क्याहानिकरैंगे सर्वप्रकारतैं हमारेतुल्य कोईभीप्राणीनहीं है इसअभिप्रायकरिकै तेआसुरपुरुष आपणेईश्वरपणेकूं वर्णनकरैं हैं (अहंभोगीइति) जिसकारणतैं मैंही भोगीहूं अर्थात् विषय भोगोंकेसर्वसाधनोंकरिकै मैंही युक्तहूं तथा मैंही सिद्धहूं अर्थात् भ्राता पुत्र भृत्य इत्यादिकसहायकरिकै मैंही संपन्नहूं तथा स्वतः भी मैंबलवान्हूं अर्थात् अत्यंतओजसवालाहूं तथा मैंही सुखीहूं अर्थात् सर्वप्रकारतैं नीरोगहूं इसकारणतैं मैं ईश्वरहीहूं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका—धनकरिकै अथवा कुलकरिकै कोईपुरुष तुम्हारेतुल्यहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुषकहैंहैं ।

टीका। हेअर्जुन ! जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय करणेकूंअशक्यहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ अथवा जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय आपणेकूं ज्ञातनहीं है तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै तेआशाही लोकप्रसिद्धपाशकीन्याई इसपुरुषकेबंधनकाहेतुहोणे तैं पाशरूपहै ॥ ऐसे आशारूपपाशों के अनेकशतोंकरिकै अर्थात् अनेकसमूहोंकरिकै तेआसुरपुरुष बाँध्येहुएहैं अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धरज्जुआदिकपाशोंकरिकैबांध्येहुए चौरादिकदुष्टपुरुष तिनरज्जुआदिकपाशों नैं आपणेगृहादिकस्थानों तैं निकासिकै जहांतहां भ्रमणकराइते हैं तैसे आशारूपपाशोंकरिकैबांध्येहुए यहआसुरपुरुषभी तिन आशारूपपाशों नैं श्रेयरूपस्वस्थानतैंनिकासिकैजहांतहां भ्रमणकराइते हैं पुनः कैसेहैं तेआसुरपुरुष कामक्रोधपरायणहैं ॥ तहां कामक्रोध यहदोनों है परअयन क्या आश्रय जिन्होंका तिन्होंकानाम कामक्रोधपरायणहै अर्थात् परस्त्रियोंकेसंभोगकीअभिलाषाकरिकै तथापरकेअनिष्टकरणेकीअभिलाषाकरिकै तेआसुरपुरुष सर्वदा युक्तहैं ऐसे आसुरपुरुष केवल स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगवासतैही धनादिकपदार्थोंकेइकट्ठेकरणेकीइच्छाकरैं हैं ॥ कोईधर्मकेवासतै तेआसुरपुरुष धनादिकपदार्थों के इकट्ठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और तेआसुरपुरुष विषयभोगवासतै जोधनकेइकट्ठेकरणेकीइच्छाकरैं हैं सोभीशास्त्र उक्तमार्गकरिकै ताधनकेइकट्ठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु केवल अन्यायकरिकैही ताधनकेइकट्ठेकरणेकीइच्छाकरैं हैं ॥ तहां छलकपटकरिकै अथवा बलात्कारसैं जोपरकेधनकाहरणकरणाहै ताकानाम अन्यायहै अर्थात् शास्त्रतैंविरुद्धमार्गकरिकै जोधनकासंपादनकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ इहां (अर्थसंचयान्) इसबहुवचन करिकै श्रीभगवान्नैं तिनआसुरपुरुषोंविषे लोभ दिखाया काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंकूं धनकीप्राप्तिहुएभी तिसधनकीतृष्णा निवृत्तहोतीनहीं किंतु साधनकीतृष्णा दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ और धनादिकविषयोंकेप्राप्तहुएभी जो दिनदिनविषे तिनविषयोंके तृष्णाकीवृद्धिहै तिसकूंही शास्त्रविषे तथालोकविषे लोभकहैंहैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! तिनआसुरपुरुषों के चित्तविषे इसप्रकारकीधनकीतृष्णाहै यहवार्त्ता कैसे जानीजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषों के इसप्रकारकीधनकीतृष्णाकूं तिनआसुरपुरुषोंके मनोराज्यों के कथनकरिकै वर्णनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपिमेभविष्यतिपुनर्धनम् ॥१३॥ इदम् । अद्य । मया । लब्धम् । इमम् । प्राप्स्ये । मनोरथम् । इदम् । अस्ति । इदम् । अपि । मे । भविष्यति । पुनः । धनम् ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ यहधन इसकालविषे हमनें पायाहै इस मनोरथकूं मैंशीघ्रही प्राप्तहोऊंगा तथा यहधन हमारेगृहविषे पूर्वही विद्यमानहै तथा यह धन भी अगलेवर्षविषे पुनः बहुतहोवैगा ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

कैसीहैसाचिंता अपरिमेयहै अर्थात् असंख्यातपदार्थविषयकहोणेतैंसाचिंताभी असंख्याताहै साचिंता इतनीसंख्यावालीहै इसप्रकारतैं निश्चयकरणेकूंअशक्य है पुनः कैसीहैसाचिंता प्रलयांताहै ॥ इहां मरणकानाम प्रलयहै ॥ सोमरणरूपप्रलयहैअंतजिसका ताकानाम प्रलयांताहै अर्थात् जीवितकालपर्यंत वर्त्त मानहै ॥ ऐसीअपरिमेय तथाप्रलयांत चिंताकूं तेआसुरपुरुष आश्रयणकरैं हैं ॥ इहां (चिंतामपरिमेयांच) इसवचनाविषेस्थित जोचकारहै सोचकार पूर्वउक्तअशुचिव्रतकेसमुच्चयकरावणेवासतै है अर्थात् तेअसुरपुरुष केवल अशुचिव्रतवालेहुए तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तहोतेनहीं किंतु इसप्रकारकीचिंताकूं आश्रयणकरतेहुएभी तेआसुरपुरुष तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैं हैं इति ॥ हेअर्जुन ! तेआसुरपुरुष सर्वकालविषे अनंतचिंतावोंकरिकैयुक्तहुएभी कदाचितभी परलोककीचिंताकरिकैयुक्तहोतेनहीं किंतु तेआसुरपुरुष कामोपभोगपरमाहीहोवैं हैं ॥ तहां कृपणपुरुषों के कामनाकाविषयभूत जेशब्दस्पर्शादिकदृष्टविषयहैं तिन्होंकानाम कामहै तिनशब्दादिकविषयरूपकामोंकाउपभोगहै परम क्या पुरुषार्थ जिन्होंकूं धर्मादिक जिन्होंकूं पुरुषार्थरूपहैं नहीं तिन्होंकानाम कामोपभोगपरमाहै अर्थात् तेअसुरपुरुष इसलोकके स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंके भोगकूंही परमपुरुषार्थरूपकरिकैमानैंहैं ॥ धर्मकूं तथामोक्षकूं पुरुषार्थरूप मानतेनहीं ॥ शंका–हेभगवन् ! तेआसुरपुरुष जैसे इसलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरैं हैं तैसे परलोककेउत्तमसुखकीकामना किसवासतेनहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (एतावदितिनिश्चिताः) तहां इसलोकविषे शब्दस्पर्शादिकविषयोंके भोगतैंजन्य जो दृष्टसुखहै सोईहीसुखहै इसदृष्टसुखतैंभिन्न इसशरीरके वियोगहुएतैंअनंतर भोगणेयोग्यदूसराकोईसुखहैनहीं ॥ काहेतैं इसस्थूलशरीरतैंभिन्नदूसराकोई भोक्ताहैनहीं जोभोक्ता परलोकविषे जाइकै तिससुखकूंभोगै किंतु यहस्थूलशरीरही भोक्ताआत्माहै ॥ इसप्रकारकेनिश्चयवालेहुए तेआसुरपुरुष परलोककेसुखकीकामनाकरतेनहीं ॥ यहआसुरपुरुषों का मत बृहस्पतिनैंभी कथनकर्‍याहै ॥ तहांसूत्र ॥ (चैतन्यविशिष्टःकायःपुरुषः ॥ कामएवैकः पुरुषार्थः) ॥ अर्थयह ॥ चैतन्यरूपधर्मकरिकैविशिष्ट जोयहस्थूल शरीरहै सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ और इसलोकके स्रक्चंदनवनितादिकविषयोंकाभोगही परमपुरुषार्थ इति ॥ यद्यपि बृहस्पति वैदिकपुरुषहै तथापि असुरोंके मोहकरणे वासतै तिसबृहस्पतिनैं इसप्रकारकेसूत्ररचेहैं ॥ याकारणतैंही वैदिकपुरुष तिनसूत्रोंकूंप्रमाणरूप मानतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) आशापाशशतैर्बद्धाःकामक्रोधपरायणाः ॥ ईहंतेकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ आशापाशशतैः । बद्धाः । कामक्रोधपरायणाः । ईहंते । कामभोगार्थम् । अन्यायेन । अर्थसंचयान् ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! आशारूपपाशोंके समूहकरिकै बाँध्येहुए तथाकामक्रोधदोनों हैं आश्रयजिन्होंके ऐसेतेआसुरपुरुषविषयभोगवासतैही अन्यायकरिकै धनादिकपदार्थोंकूं इच्छतेहैं ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

दुष्पूर कामकूं आश्रयणकरिकै दंभमानमदकरिकेयुक्तहुए तथाअशुचिव्रतवालेहुए तेआसुरपुरुष अविवेकतैं अशुभनिश्चयोंकूं ग्रहणकरिकै वेदविरुद्धकर्मोंविषेही प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! शतकोटिवर्षपर्यंतभी विषयोंकेभोगकरिकै नहींपूर्णहोणेहारा ऐसाजो तिसतिसदृष्टविषयोंकी अभिलाषारूपकामहै ऐसेदुष्पूरकामकूं आश्रयणकरिकै तेआसुरपुरुष दंभ मान मद इनतीनोंकरिकैयुक्तहोवैं हैं ॥ तहां अनंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी जोबाह्यतैं लोकोंकेआगे आपणाधर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और वास्तवतैं पूज्यभावकेअयोग्यहुएभी जा लोकोंकेआगे आपणापूज्यपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम मानहै ॥ और वास्तवतैं अधिकताकाआरोपणहै जो आपणेविषे अधिकताकाआरोपणहै ताकानाम मदहै ॥ जोमद श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेका हेतुरूपहै ॥ ऐसे दंभ मान मद तीनोंकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष केवलअविवेकतैं असत्ग्राहोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इनस्त्रियोंका आकर्षणकरैंगे तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम महान्निधियोंकूंसंपादनकरैंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इसशत्रुकूंमारैंगे इत्यादिक दुराग्रहरूप अशुभनिश्चयोंकूं केवल अविवेकरूपमोहतैं ग्रहणकरिकै तेआसुरपुरुष अशुचिव्रतहोवैं हैं ॥ तहां श्मशानादिकदेश तथाउच्छिष्टत्वादिकअवस्था तथामद्यमांसादिकोंकाभक्षण इत्यादिकअशौचकीअपेक्षाकरिकै सिद्धहोणेहारे जेवाममतंत्रउक्तव्रतहैं तेअशुचिव्रतहैंजिन्होंके तिन्होंकानाम अशुचिव्रतहै ॥ ऐसेअशुचिव्रतहुए तेआसुरपुरुष केवल दृष्टफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकाआराधनरूप जिसीकिसी वेदविरुद्धकर्मविषेही प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ ऐसेआसुरपुरुष मरिकै अशुचिनरकविषे पतनहोवैं हैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इनपूर्वउक्तआसुरपुरुषोंकूंही पुनः आसुरीसंपद्रूप अनेकविशेषणोंकरिकै कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) चिंतामपरिमेयांचप्रलयांतामुपाश्रिताः ॥ कामोपभोगपरमाएतावदितिनिश्चिताः ॥ ११ ॥ चिंताम् । अपरिमेयाम् । च । प्रलयांताम् । उपाश्रिताः । कामोपभोगपरमाः । एतावत् । इति । निश्चिताः ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तथा मरणपर्यंतस्थित अपरिमित चिंताकूं जिन्होंनेंआश्रयणकर्याहै तथा शब्दादिकविषयोंकाभोगहीहैपरमपुरुषार्थजिन्होंकूं तथा यहविषयजन्यदृष्टहीसुखहै तिसप्रकारहै निश्चयजिन्होंका ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूप जोयोगहै तथा प्राप्तवस्तुकापरिरक्षणरूपजोक्षेमहै तिसआपणेयोगक्षेमकेउपायकाचिंतनरूप जा चिंताहै

(मू. श्लो.) एतांदृष्टिमवष्टभ्यनष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युग्रकर्माणःक्षयायजगतोऽहिताः ॥ ९ ॥ एताम् । दृष्टिम् । अवष्टभ्य । नष्टात्मानः । अल्पबुद्धयः । प्रभवंति । उग्रकर्माणः । क्षयाय । जगतः । अहिताः ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! इसपूर्वउक्त दृष्टिकूं आश्रयणकरिकै ते नष्टात्मा अल्पबुद्धि उग्रकर्मवाले शत्रुपुरुष सर्वप्राणियोंके नाशकरणेवासते व्याघ्रसर्पादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैं हैं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! इसपूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिहै तिसदृष्टिकूंआश्रयकरिकै तेआसुरपुरुष नष्टात्माहोवैं हैं तहां काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिरूप रजतमदोषकरिकै नष्टहुआहै क्या आवृतहुआहै आत्मा क्या विवेकबुद्धि जिन्होंकी तिन्होंकानाम नष्टात्माहै अर्थात् तेआसुरपुरुष परलोकके साधनोंतैं भ्रष्टहुएहैं ॥ पुनः कैसेहैं तेआसुरपुरुष अल्पबुद्धिहैं ॥ तहां अत्यंततुच्छ जे स्रक् चंदन वनिता इत्यादिकविषयोंकेभोगहैं तिन्होंकानाम अल्पहै ऐसेविष यभोगरूप अल्पविषेहैंबुद्धिजिन्होंकी तिन्होंकानाम अल्पबुद्धि है अथवा मल मांस रुधिर अस्थि मज्जा इत्यादिकनिंदितपदार्थोंकासमूहरूप जोयहदेहहै ताकानाम अल्पहै ऐसेअल्पदेहविषेहै अहंबुद्धि जिन्होंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै अर्थात् दृष्टविषयसुखमात्रकाउद्देशकरिकैप्रवृत्तहुई हैं बुद्धि जिन्होंकी तिनों कानाम अल्पबुद्धिहै पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष उग्रकर्मा हैं ॥ तहां उग्रहैं क्या अत्यंतक्रूरहैं कर्म जिन्होंके तिनोंकानाम उग्रकर्मा हैं अर्थात् देहमात्रकापोषणहै प्रयोजन जिन्होंका तथाजीवोंकीहिंसाहैप्रधान जिन्होंविषे ऐसेजे शास्त्रनिषिद्धकर्म हैं तिननिषिद्धकर्मोंकूंही तेआसुरपुरुष सर्वदाकरैं हैं पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष अहिताहैं अर्थात् अपकारकियेविनाही सर्वप्राणीमात्रकेशत्रुहैं ॥ इसप्रकार पूर्वउक्त लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिकूं आश्रयणकरिकै नष्टात्माहुए तथाअल्पबुद्धि हुए तथाउग्रकर्माहुए तथाशत्रुहुए तेआसुरपुरुष सर्वप्राणीमात्रकेनाशकरणेवासतै व्याघ्रसर्पादिकरूपकरिकै उत्पन्नहोवैं हैं यातैं यहपूर्वश्लोकउक्त लोकायतिकपुरुषों कीदृष्टिही अत्यंतअधोगतिकाहेतुहै ॥ इसकारणतैं श्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं सर्वप्रकारकरिकै सादृष्टि परित्यागकरणेयोग्यहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार व्याघ्रसर्पादिकतामसीयोनियोंविषे बहुतकालपर्यंत भ्रमणकरतेहुए तेआसुरपुरुष जबी किसीकर्मकेवशतैं पुनः मनुष्ययोनिकूंप्राप्तहोवैं हैं तबी भी तेआसुरपुरुष आपणेश्रेयकेउपायविषे प्रवृत्तहोवैंनहीं किंतु अश्रेयकेउपायविषेही प्रवृत्तहोवैं हैं इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) काममाश्रित्यदुष्पूरंदंभमानमदान्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्ततेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥ कामम् । आश्रित्य । दुष्पूरम् । दंभमानमदान्विताः । मोहात् । गृहीत्वा । असद्ग्राहान् । प्रवर्तंते । अशुचिव्रताः ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन !

देणेविषे नहींहै ईश्वर नियंता जिसका ताकानाम अनीश्वरहै ॥ ऐसाअनीश्वर इसजगतकूं कहैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ बलवान्पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं ते आसुरपुरुष वेदोंकूं तथास्मृतिपुराणइतिहासादिकोंकूं प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंही तेअसुरपुरुष तिनवेदस्मृतिआदिकोंकरिकैबोधित धर्म अधर्मकूं तथाईश्वरकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंही तेआसुरपुरुष निर्भयहोइकै निषिद्धआचरणकूंहीकरैं हैं ॥ तानिषिद्धआचरणकरिकै तेआसुरपुरुष धर्मरूपपुरुषार्थतैं तथामोक्षरूप पुरुषार्थतैं भ्रष्टहीहोवैं हैं इति ॥ शंका—हे भगवन् ! केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोधर्मअधर्महै ताधर्मअधर्मकीसहायताकरिकै इससर्वजगतकाकारणरूप जोप्रकृतिकाअधिष्ठातापरमेश्वरहै ताकारणरूपपरमेश्वरतैंरहित इसजगतकूं तेआसुरपुरुष जो अंगीकारकरैंगे तौकारणकेअभावहुए तिसजगत्रूपकार्यकी उत्पत्ति तिनोंकेमतविषे कैसेहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (अपरस्परसंभूतं) इति । हेअर्जुन ! तेआसुरपुरुष इसजगतकूं ईश्वरतैंउत्पन्नहुआ मानतेनहीं किंतु इसजगतकूं अपरस्परसंभूत मानैंहैं अर्थात् विषयसुखकी अभिलाषारूपकामनैं प्रेरणाकन्याहै पुरुषहै तथास्त्रीहै तिसपुरुषस्त्रीदोनोंकेसंयोगतैंही यहजगत् उत्पन्नहुआहै ॥ यातैं यहजगत कामहेतुकहै अर्थात् इसजगतका सोकामही कारणहै ॥ ताकामतैंभिन्न दूसराकोई इसजगतकाकारणहैनहीं ॥ ॥ शंका—हे भगवन् ! इसजगतकीउत्पत्तिविषे धर्मअधर्मकूंभी कारणमान्याचाहिये ॥ काहेतैं जो कदाचित् धर्मअधर्मकूं इसजगतकाकारण नहींमानियें तौ इसजगतविषे कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणीमूर्ख कोईप्राणी पंडितहै इसप्रकारकीव्यवस्था नहींहोवैगी ॥ और धर्मअधर्मकूं इसजगतकाकारण मानणेविषे साव्यवस्था सिद्धहोइसकैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं(किमन्यत्)इति । हे अर्जुन ! तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मरूपअदृष्टकूं इसजगतका कारणमानतेनहीं ॥ काहेतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेअंगीकारकियेहुए अंतविषे स्वभाव विषेही पारिअवसानहोवैगा ॥ तास्वभावकरिकैही इसजगतविषे सुखदुःखादिकोंकी विचित्रता संभवहोइसकैहै ॥ ताविचित्रताकेवासतै धर्मअधर्मरूपअदृष्टकीकल्पना काहेवासतैकरणी ॥ और शास्त्रविषेभी यहनियमकह्याहै ॥ (दृष्टेसंभवति अदृष्टकल्पनायाअन्यायत्वात्)॥ अर्थयह ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकी कल्पनाकरणी अयुक्तहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ कामही सर्वप्राणियोंकाकारणहै ॥ तिसकामतैंभिन्न दूसराकोई धर्मअधर्मरूपअदृष्ट तथाईश्वरादिक इसजगतकाकारणहैनहीं ॥ इसप्रकार तेआसुरपुरुष इसजगतकूं केवल कामहेतुकहीकहैंहैं ॥ यहपूर्वउक्तदृष्टि देहात्मवादीलोकायतिकपुरुषोंकीकथनकरीहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! यहपूर्वउक्त लोकायतिक पुरुषोंकीदृष्टिभी शास्त्रीयदृष्टिकीन्याईं इष्टरूपहीहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए मुमुक्षुजनोंकूं तिसदृष्टितैं निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् तादृष्टिविषे अनिष्टरूपताकूंकथनकरैंहैं ।

भाषणरूप जोसत्यहै ॥ सोसत्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे रहतानहीं ॥ ऐसे शौचतैंरहित तथाआचारतैंरहित तथामिथ्यावादी मायावीअसुरमनुष्य इसलोकविषेभी प्रसिद्धहीहैं इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै तथा निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै तिनधर्मअधर्मदोनोंकाप्रतिपादक वेदरूपप्रमाण वियमानहीहै कैसाहैसोवेदरूपप्रमाण भ्रमप्रमादआदिकसर्वदोषोंतैंरहितहै तथा साक्षात परमेश्वरकीआज्ञारूपहै तथा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ और तिसवेदकेअनुसारी स्मृति पुराण इतिहास आदिकभी तिसधर्मअधर्मकेप्रतिपादक वियमानहीहैं ऐसे प्रमाणभूत वेदोंके तथास्मृतिपुराणइतिहासआदिकोंके वियमानहुएभी तिनआसुरपुरुषोंकूं तिसधर्मअधर्मकाअज्ञान तथाताकेप्रमाणकाअज्ञान किसकारणतैंहोवै ॥ और तिनपुरुषोंकूं ताधर्मअधर्मके तथाताकेबोधकप्रमाणके ज्ञानहुए वेदरूपआज्ञाकेउल्लंघनकरणेहारेपुरुषोंकूंशासनाकरणेहारे परमेश्वरकेवियमानहुए तिनपुरुषोंकूं वेदउक्तअर्थकानअनुष्ठानकरिकै शौचआचारादिकोंतैंरहितपणाभी किसकारणतैंहोवैहै जिसकारणतैं दुष्टजनोंकूंशासनाकरणेहारा परमेश्वरभी लोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् कहैहैं ।

(मू. श्लो.) असत्यमप्रतिष्ठंतेजगदाहुरनीश्वरम्॥अपरस्परसंभूतंकिमन्यत्कामहैतुकम्॥८॥असत्यम् । अप्रतिष्ठम् । ते । जगत् । आहुः । अनीश्वरम् । अपरस्परसंभूतम् । किं । अन्यत् । कामहैतुकम् ॥८॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! तेआसुरपुरुष ईसजगतकूं असत्य अप्रतिष्ठ अनीश्वर अपरस्परसंभूत कामहैतुक कहैहैं इसजगत्का दूसराकोईकारण नहींहै ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! तेआसुरपुरुष इसजगतकूं असत्यकहैहैं ॥ तहां प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै नहींबाधकूंप्राप्तहुआहैतात्पर्यका विषय जिसका ऐसाजो तत्त्ववस्तुका बोधक वेदरूपप्रमाणहै तथा तिसवेदरूपप्रमाणकेअनुसारी जेस्मृति पुराण इतिहास आदिकहैं तिन्होंकानाम सत्यहै ऐसासत्य नहींहैवियमान जिसविषे ताकानाम असत्यहै ऐसाअसत्यरूप इसजगतकूं कहैहैं ॥ ययपि ऋगादिकच्यारिवेद तथामनुस्मृतिआदिकस्मृतियां तथाभागवतादिकअष्टादशपुराण तथामहाभारतादिकइतिहास प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहैं तिनप्रत्यक्षसिद्धवेदादिकोंकानिषेधकरणा संभवतानहीं तथापि तेआसुरपुरुष तिनवेदोंकी तथास्मृति पुराणइतिहासआदिकोंकी प्रमाणताकूंअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं प्रमाणतारूपविशेषणकेअभावतैं तिसप्रमाणताविशिष्टवेदादिकोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ और असत्यहोणेतैंही इसजगतकूं तेआसुरपुरुष अप्रतिष्ठ कहैहैं ॥ तहां नहींहै धर्मअधर्मरूपप्रतिष्ठा व्यवस्थाकाहेतु जिसका ताकानाम अप्रतिष्ठहै अर्थात् तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मकूं इसजगतकेव्यवस्थाकाहेतु मानतेनहीं ॥ तथा ते आसुरपुरुष इसजगतकूं अनीश्वर कहैहैं ॥ तहां शुभअशुभकर्मके सुखदुःखरूपफलके

भगवद्भक्तकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और त्रयोदशअध्यायविषेतौ ज्ञानकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और चतुर्दशअध्यायविषेतौ गुणातीतपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और इसषोडशअध्यायविषेतौ (अभयंसत्त्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ अब दूसरे असुरभूतसर्गकूं मैंविस्तारतैं प्रतिपादनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर अर्थात् तिसअसुरभूतसर्गकेपरित्यागकरणेवासतै प्रथम तिसआसुरभूतसर्गकूं तूं निश्चयकर ॥ काहेतें जिसअनिष्टपदार्थका भलीप्रकारतेंज्ञानहोवैहै सोअनिष्टपदार्थही परित्याग कऱ्याजावैहै तिसपदार्थकेस्वरूपजानेतैंविना तिसपदार्थका परित्यागकऱ्याजावैनहीं इति ॥ तहां (हे पार्थ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्‌नें अर्जुनविषे आपणासंबंधीपणा कथनकऱ्या। ताकरिकै अर्जुनविषयक उपेक्षाकाअभाव सूचनकऱ्या अर्थात् मैंपरमेश्वर कदाचित्‌भी तुम्हारीउपेक्षानहींकरौंगा इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ अब (तानहंद्विषतःक्रूरान्) इसश्लोकतैंपूर्वस्थित द्वादशश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् परित्यागकरणेयोग्यआसुरीसंपद्‌कूं प्राणियोंकाविशेषणरूपकरिकै कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरासुराः ॥ नशौचंनापिचाचारोनसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥ प्रवृत्तिम् । च । निवृत्तिम् । च । जनाः । न । विदुः । आसुराः । न । शौचम् । न । अपि । च । आचारः । न । सत्यम् । तेषु । विद्यते ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! असुरस्वभाववाले मनुष्य धर्मकूं तथा अधर्मकूं नहीं जानतेहैं इसकारणतेंही तिनआसुरमनुष्योंविषे शौच नहीं रहैहै तथा आचार भी नहीं रहैहै तथासत्य भी नहीं रहै है ॥ ७ ॥इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! दंभदर्पादिरूपअसुरस्वभाववाले मनुष्य प्रवृत्तिकूंभी जानतेनहीं अर्थात् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै तिसधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानते नहीं ॥ इहां (प्रवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ताचकारकरिकै तिसधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यका ग्रहणकरणा अर्थात् ताधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं तथा तेआसुरमनुष्य निवृत्तिकूंभी जानतेनहीं अर्थात् निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै तिसअधर्मकूंभी तेआसुर मनुष्य जानतेनहीं ॥ इहां (निवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ताचकारकरिकै तिसअधर्मकेप्रतिपादकनिषेधवाक्यका ग्रहणकरणा अर्थात् ताअधर्मकेप्रतिपादक निषेधवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंही तिनआसुरमनुष्योंविषे बाह्यशौच तथाअंतरशौच यहदोप्रकारकाशौचभी नहींरहैहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै जाशरीरकीशुद्धिहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै जोरागद्वेषादिकों तैंरहितपणाहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ और मनुआदिकश्रेष्ठपुरुषोंनें धर्मशास्त्रविषे कथनकऱ्याजोआचारहै सोआचारभी तिनआसुरमनुष्योंविषे रहतानहीं ॥ तथा प्रिय हित यथार्थ

हे पार्थ ! इस लोकविषे दोप्रकारके ही भूतसर्ग हैं एकतौ देवसर्ग है और दूसरा आसुरसर्ग है तहां देवसर्गतौ हमनें तुम्हारेप्रति पूर्व विस्तारतें कथनकऱ्या है अब दूसरे आसुरसर्गकूं तूं हमारे तें श्रवणकर ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इससंसारविषे दोप्रकारकेही भूतसर्ग हैं अर्थात् दोप्रकारकीही मनुष्योंकीसृष्टिहै ॥ तहां तेदोप्रकारकेसर्ग कौन हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ (देवआसुरएवच) हे अर्जुन ! एकतौ देवसर्गहै और दूसरा आसुरसर्गहै ॥ इनदोनोंसर्गों तैंभिन्न तीसराकोई राक्षससर्ग अथवा मनुष्यसर्ग हैनहीं ॥ तहां जोमनुष्य जिसकालविषे शास्त्रजन्यसंस्कारोंकीप्रबलताकरिकै स्वभावसिद्धरागद्वेषकूं अभिभवकरिकै केवल धर्मपरायणहीहोवैहै सोमनुष्य तिसकालविषे देवकह्याजावैहै ॥ और जोमनुष्य जिसकालविषे स्वभावसिद्धरागद्वेषकी प्रबलताकरिकै शास्त्रजन्यसंस्कारोंकूं अभिभवकरिकै केवल अधर्मपरायणही होवैहै सोमनुष्य तिसकालविषे असुर कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं दोप्रकारकाही मनुष्यसर्गसिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धर्म अधर्म इनदोनों तैं भिन्न तीसरीकोईकोटिहैनहीं किंतु लोकविषे तथावेदविषे धर्म अधर्म यहदोकोटिही प्रसिद्धहैं ॥ तहां दोप्रकारकाही भूतसर्गहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (द्वयाहप्राजापत्या देवाश्चासुराश्च ततःकनीयसाएवदेवाज्यायसाअसुराः) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए दोप्रकारकेही भूतसर्ग हैं ॥ एकतौ देव हैं दूसरेअसुर हैं ॥ तहां असुरों तैं देवताछोटे हैं ॥ और देवतावों तैं असुरबडे हैं इति ॥ और दम दान दया इनतीनोंका विरोधकरणेहाराजो (त्रयाःप्राजापत्याः) इत्यादिकवाक्यहै तिसवाक्यविषेतौ दम दान दया इनतीनों तैंरहित मनुष्यही असुरभाववालेहुए किसीसमानधर्मकरिकै देवकहेजावैं हैं तथा मनुष्यकहेजावैं हैं तथा असुरकहेजावैं हैं ॥ यातैं तिसवाक्यतैं तीसरेभूतसर्गकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तहां तिसप्रसंगविषे प्रजापतिनैं एकही दम इसअक्षरकरिकै दमतैंरहितमनुष्योंके प्रतितौ इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमका उपदेशकऱ्याहै ॥ और दानतैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौ दानकाउपदेशकऱ्या है ॥ और दयातैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौ दयाकाउपदेशकऱ्याहै इसप्रकार एकमनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंकेप्रतिही प्रजापतिनैं अधिकारभेदतैं दम दान दया इनतीनोंकाउपदेशकऱ्याहै ॥ कोईतिसवचनविषे परस्परविजातीय देव असुर मनुष्य यहतीनों विवक्षितनहीं हैं जिसकारणतैं शास्त्रकेउपदेशका मनुष्यही अधिकारीहोवैहै ॥ देवता तथाअसुर शास्त्रउपदेशकेअधिकारीहोवैंनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ राक्षसीप्रकृति तथामानुषीप्रकृति यहदोनोंप्रकृतियां आसुरीसंपतविषेही अंतर्भूत हैं ताआसुरीसंपततैं तेदोनों भिन्ननहीं हैं ॥ यातैं देवसर्ग आसुरसर्ग यहदोप्रकारकेही भूतसर्ग हैं यहजो पूर्ववचनकह्याथा सोयुक्तही है इति ॥ हे अर्जुन ! तिनदोप्रकारकेभूतसर्गोंविषे प्रथमजो देवभूतसर्ग है सोदेवभूतसर्गतौ हमनैंतुम्हारेप्रति पूर्व विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौ स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणविषे सोदेवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और द्वादशअध्यायविषेतौ

नूनें जाजा फलकीइच्छापूर्वक तथाअहंकारपूर्वक राजसीतामसीक्रिया निषेधकरीहै सासानिषिद्धक्रिया तिसतिसवर्णकी तथातिसतिसआश्रमकी आसुरीसंपत् कहीजावैहै इसीआसुरीसंपत्विषेही राक्षसीप्रकृतिका अंतर्भावहै साआसुरीसंपत्तौ नियमतैं संसाररूपबंधकेवास्तैही शास्त्रोंकूं तथाशास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं संमतहै अर्थात् सर्वशास्त्र सर्वशास्त्रवेत्तापुरुष तिसआसुरीसंपत्कूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारबंधकाही कारण कहैंहैं ॥ यातैं श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषों नैं साआसुरीसंपत् अवश्यकरिकैपरित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां मैंअर्जुन दैवीसंपद्करिकैयुक्तहूं अथवा आसुरीसंपद्करिकैयुक्तहूं इसप्रकारके संशययुक्तअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् धैर्यदेवैं हैं (माशुचः इति) हे अर्जुन ! मैंअर्जुन आसुरीसंपद्करिकैयुक्तहूं इसप्रकारकीशंकाकरिके तूं शोककूं मतप्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुनभी इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुई सात्त्विकीशुभवासनावोंकूं आपणेअंतःकरणविषे प्रादुर्भावहुआदेखिकैही इसजन्मकूंप्राप्तहुआहै॥ अर्थात् इसजन्मतैंपूर्वभी तुमनैं कल्याणकाहीसंपादनकऱ्याहै और आगेभी तुम्हाराकल्याणहीहोणाहै॥इसकारणतैं आपणेविषेआसुरीसंपद्कीशंकाकरिके तुम्हारेकूंशोककरणाउचितनहीं है इति ॥ इहां (हेपांडव) इससंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या॥जबी पांडुराजाकेदूसरेपुत्रोंविषेभी सादैवीसंपत्प्रसिद्धही देखणेविषेआवैहै तबी मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्ततैंअर्जुनविषे सादैवीसंपत्है याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! राक्षसीप्रकृतिकातौ आसुरीसंपत्विषे अंतर्भावहोवौ ॥ काहे तैं शास्त्रनिषिद्धक्रियाकीअभिमुखता आसुरीसंपद्विषे तथाराक्षसीप्रकृतिविषे तुल्यही है ॥ और किसीस्थलविषे आसुरी संपत् राक्षसीप्रकृति इनदोनोंका जो भिन्नभिन्नकथनकऱ्याहै सोभी विषयभोगकीप्रधानताकरिकै तथाजीवहिंसाकीप्रधानताकरिकै संभवहोइसकैहै ॥ परंतु दैवीसंपत् आसुरीसंपत् इनदोनों तैंभिन्न तीसरीमानुषीप्रकृतितौ जुदाही है ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सामानुषीप्रकृति जुदीहीकथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (त्रयाःप्राजापत्याःप्रजापतौपितरि ब्रह्मचर्यमूषुर्देवामनुष्याअसुराइति) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए देवता मनुष्य असुर यहतीनों तिसप्रजापतिपिताकेसमीप ब्रह्मचर्यकूंकरतेभये इति ॥ यातैं सातीसरी मानुषीप्रकृतिभी आसुरीसंपत्कीन्याईं हेयकोटिविषे कहीचाहिये अथवा दैवीसंपत्कीन्याईं उपादेयकोटिविषे कहीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) द्वौभूतसर्गौलोकेऽस्मिन्दैवआसुरएवच ॥ दैवोविस्तरशःप्रोक्तः आसुरंपार्थमेशृणु ॥ ६ ॥ द्वौ । भूतसर्गौ । लोके । अस्मिन् । दैवः । आसुरः । एव । च । दैवः । विस्तरशः । प्रोक्तः । आसुरम् । पार्थ । मे । शृणु ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

रंभकालविषे पूर्वलेपापकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ तथा असुरपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय ऐसाजो रजोतमोगुणमय अशुभवासनावोंका समूह है ॥ तिसअशुभवासनावों केसमूहकूं आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै जिसपुरुषका आगेअश्रेयहोणाहै ऐसेनिंदित पुरुषकूं तेदंभतैंलेकेअज्ञानपर्यंत सर्वदोषही प्राप्तहोवैं हैं ॥ पूर्वउक्त अभयादिकगुण तिसपुरुषकूं कदाचित्भी प्राप्तहोवैंनहीं ॥ इहां (हेपार्थ) इससंबोधनकेकहणे करिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ विशुद्धकुलविषेउत्पन्नहुई पृथामाताका तूंपुत्रहै ॥ यातैं इसदंभदर्पादिक असुरसंपद्के तूं योग्यन हीं है इति ॥ इहां मूलश्लोकविषे (अतिमानश्च) इसपदकेस्थानविषे (अभिमानश्च) इसप्रकारकापाठ यद्यपि बहुतपुस्तकोंविषेहै तथापि श्रीभाष्यकारों नैं तथाभाष्यकेव्याख्यानकर्ता श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामिमधुसूदननैं (अतिमानश्च) इसप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकेही व्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं इहां (अतिमानश्च) इसप्रकारकाहीपाठलिख्याहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व च्यारिश्लोकोंकरिकै दैवीसंपद् तथाआसुरीसंपद् यहदोप्रकारकासंपद् कथ कऱ्या ॥ अब अधिकारीजनोंकूं तिसदैवीसंपद्विषेप्रवृत्तकरणेवासतै तथातिसआसुरी संपद्तैंनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् इनदोनोंसंपदों के भिन्नभिन्न फलकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासुरीमता ॥ माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥ दैवीसंपत् । विमोक्षाय । निबंधाय । आसुरी । मता । मा । शुचः । संपदम् । दैवीम् । अभिजातः । असि । पांडव ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दैवीसंपत् मोक्षवासतै होवैहै और आसुरीसंपत् बंधकेवासतै मानीहै हेपांडव ! तूं दैवी संपद्कूं संपादनकरिकैजन्म्या है यातैं तूं मत शोककर ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके मध्यविषे तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमों केमध्यविषे जिसजिस वर्ण केप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवान्नैं जाजा फलकी इच्छातैंरहित सात्त्विकीक्रिया विधानकरीहै सासाक्रिया तिसीतिसीवर्णकी तथातिसी तिसीआश्रमकी दैवीसंपतकहीजावैहै सादैवीसंपत् सत्त्वशुद्धि भगवद्भक्ति ज्ञानयोगव्यवस्थिति इतनेपर्यंत सिद्धहुई इसअधिकारीपुरुषकूं संसारबंधनतैं विमोक्ष वासतैहीहोवैहै अर्थात् सादैवीसंपत् इसअधिकारीपुरुषकूं कैवल्यमोक्षकीही प्राप्तिकरै है ॥ यातैं आपणेश्रेयकीइच्छाकरणेहारेपुरुषों नैं सादैवीसंपत्ही ग्रहण करणेयोग्यहै इति ॥ और तिनच्यारिवर्णों केमध्यविषे तथा तिनच्यारिआश्रमों केमध्यविषे जिसजिसवर्ण केप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवा

वैहै ॥ और पूर्वपूर्वजन्मकेपापकर्मकीवासनाकारिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पापवान्होवैहै इति ॥ इहां (हेभारत) इससंबोधनकेकहणेकारिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरचा ॥ शुद्धवंशविषेउत्पन्नहोणेतैं तूं अर्जुन अत्यंतपवित्रहै ॥ यातैं तूं अर्जुन इसपूर्वउक्त दैवीसंपदरूपधर्मोंके संपादूनकरणेकूंयोग्यहै इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वतीनश्लोकोंकारिकै ग्राह्यतारूपकारिकै दैवीसंपदूकूं कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागकारिकै आसुरीसंपद्कूं एकश्लोककरिकै संक्षेपतैं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) दंभोदर्पोऽतिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच ॥ अज्ञानंचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरीम् ॥ ४ ॥ दंभः । दर्पः । अतिमानः । च । क्रोधः । पारुष्यम् । एव । च । अज्ञानम् । च । अभिजातस्य । पार्थ । संपदम् । आसुरीम् ॥४॥ इतिपदच्छेदः ॥हे पार्थ रजोतमोगुणमय अशुभवासनाकूं संपादनकारिकैजन्मेहुएपुरुषकूं दंभ दर्प तथा अतिमान क्रोध तथा पारुष्य तथा अज्ञान यहदोषही प्राप्तहोवैं हैं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! आपणेमहान्पणेकीसिद्धिवासतै लोकोंकेसमीप आपणेकूं अत्यंतधर्मात्मापणेकारिकै जो प्रसिद्ध करणा है ताकानाम दंभहै ॥ और धन विद्या कुल स्वजन रूप कर्म इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेकाहेतुभूत गर्वविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और आपणेविषेजो अत्यंतपूज्यत्वरूप अतिशयताका आरोपहै ताकानाम अतिमानहै जिसअतिमानकारिकै असुर पराभवकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहवार्त्ता (देवाश्चासुरश्चोभये प्राजापत्याः पस्पृधिरेततोऽसुराअतिमानेनैवकस्मिन्वयंजुहुयामेतिस्वेष्वेवास्येषुजुह्वतश्चेरुस्तेऽतिमानेनैव पराबभूवुस्तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्यह्येतन्मुखंयदतिमानः इति ॥) इसशतपथब्राह्मणविषे कथनकरीहै ॥ और आपणे अनिष्टकरणेविषे तथापरकेअनिष्टकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारा जोअभिज्वलनरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं क्षोभभीकहैं हैं ताकानाम क्रोधहै ॥ और प्रत्यक्ष अत्यंतरूक्षवचनकाजोउच्चारणहै ताकानाम पारुष्यहै इहां (पारुष्यमेवच) इसवचनविषे स्थित जो चकारहै सोचकार इहां नहींकथनकरेहुएजे भावरूप चपलतादिकदोषहैं तिनसर्वदोषोंकेसमुच्चयकरावणेवासतै है और यहकार्य हमारेकूं करणेयोग्यहै यहकार्य हमारेकूं नहींकरणेयोग्यहै याप्रकारकाजो कर्त्तव्यविषयकहै ताविवेककेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ इहां (अज्ञानंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै सोचकार इहां नहींकथनकरेहुए जेअभावरूप अधृतिआदिकदोष हैं तिन दोषोंके भी समुच्चयकरावणे वासतैहै ॥ तहां ऐसे दंभादिकदोष किसपुरुषकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (आसुरींसंपदम् अभिजातस्यइति) हे अर्जुन ! इसशरीरकेआ

टीका। हे अर्जुन ! प्रगल्भताकानाम तेजहै अर्थात् स्त्रीबालकादिकमूढजनोंकारिकै जो अभिभवकूंनहींप्राप्तहोणाहै ताकानाम तेजहै ॥ और सामर्थ्य केविद्यमानहुएभी जो परिभवकरणेहारेपुरुषोंऊपरि क्रोधनहींकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुएभीदेहइंद्रियोंके स्थिरताकरणेका जो प्रयत्न विशेषहै जिसप्रयत्नविशेषकारिकै स्थिरकरेहुए शरीरइंद्रिय व्याकुलताकूंप्राप्तहोतेनहीं ताप्रयत्नविशेषकानाम धृतिहै ॥ यह तेज क्षमा धृति तीनों क्षत्रियके दैवीसंपद्रूप असाधारणधर्म हैं ॥ और धनादिकअर्थोंके संपादनादिकोंविषे जो माया अनृतआदिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम शौचहै यहशौच अंतरकाशौचही जानणा ॥ मृत्तिकाजलादिकोंकारिकैजन्य शरीरकीशुद्धिरूप बाह्यशौचका इहां शौचशब्दकारिकै ग्रहणकरानहीं काहेतैं तिसशौचकूं शरीरकीशुद्धिरूपताकारिकै बाह्यपणाहोणेतैं अंतःकरणकीवासनारूपताहैनहीं ॥ और इहांप्रसंगविषेतौ सात्त्विकादिकभेदकारिकै भिन्न अंतःकरणकीवासनावोंकाही दैवीआसुरीसंपद्रूपकारिकै प्रतिपादन विवक्षितहै ॥ यातैं ताशौचपदकारिकै तिसबाह्यशौचकाग्रहणकरणानहीं ॥ और स्वाध्यायकीन्यांई जिसीकिसीरूपकारिकै तिसबाह्यशौचकूंभी जोवास नारूपअंगीकारकरिये तौ शौचशब्दकारिकै तिसबाह्यशौचकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ और किसीप्राणीकेहननकरणेकीइच्छाकारिकै जो शस्त्रादिकोंकाग्रहणहै ताकानाम द्रोहहै ताद्रोहतैं जोनिवृत्तिहै ताकानाम अद्रोहहै ॥ यह शौच अद्रोह दोनों वैश्यके दैवीसंपद्रूप असाधारणधर्म हैं ॥ और अत्यंतमानीपणेका नाम अतिमानिताहै अर्थात् आपणेविषे पूज्यत्वअतिशयकीजाभावनाहै ताकानाम अतिमानिताहै ताअतिमानिताका जोअभावहै ताकानाम नाति मानिताहै अर्थात् आपणेकारिकै पूज्य जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्ण हैं तिन्होंके आगे जोनम्रभावहै ताकानाम नातिमानिताहै ॥ यहनातिमानिता शूद्रका दैवीसंपद्रूप असाधारणधर्म है इति ॥ इहां (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इत्यादिकश्रुतियोंनें आत्मज्ञानके इच्छाकेउपायरूपकारिकैकथनकरेअसाधारणरूप तथासाधारणरूप वर्णआश्रमकेधर्म हैं तेसर्वधर्मभी इहां दैवीसंपद्रूपकारिकैग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार अभयधर्मतैं आदिलेकेनातिमानिताधर्मपर्यंत तीनश्लोकोंकारिकै कथनकरेजे भिन्नभिन्न वर्णआश्रमकेधर्म हैं तेधर्म इसपुरुषविषे उत्पन्नहोवैं हैं तहां किसीप्रकारकेपुरुषविषे तेधर्म उत्पन्नहोवैंहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्‌कहें हैं (संपदंदैवीम् अभिजातस्य इति)हेअर्जुन ! इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकारिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जो शुद्धसत्त्वगुणमय वासनावोंकासमूहहै तिसशुभवासनावोंकासमूहकूं आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूंप्राप्तहु आजोपुरुषहै जिसपुरुषकूं आगेश्रेयकीप्राप्तिहोणीहै तिसपुरुषकूंही यहअभयादिकधर्म प्राप्तहोवैं हैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (पुण्यःपुण्येनकर्मणाभवति पापःपापेन ॥) अर्थयह ॥ पूर्वपूर्वजन्मकेपुण्यकर्मकीवासनाकारिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यवान्‌हो

अहिंसा सत्य अक्रोध त्याग शांति अपैशुन सर्वभूतोंविषे दया अलोलुप्त्व मार्दव ह्री अचापल यहसर्व दैवीसंपद् रूपहैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! प्राणियोंके जीवकारूपवृत्तिकाजोछेदनहै ताकानाम हिंसाहै ताहिंसातैंजोरहितपणाहै ताकानाम अहिंसाहै अर्थात्जिस जिसप्राणीका जिसजिसवृत्तितैं जीवनहोताहोवै तिसतिस प्राणिके तिसतिसवृत्तिका कदाचित्भी छेदननहींकरणा याकानाम अहिंसाहै ॥ और अनर्थकाअजनक ऐसाजो यथार्थअर्थका बोधकवचनहै तिसवचनका सर्वदा उच्चारणकरणा याकानाम सत्यहै ॥ तहां जिसयथार्थअर्थकेबोधकवचनकेउच्चारणतैं ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहो तीहोवै तिसविषे सत्यताकेनिवृत्तकरणेवासतै अनर्थकाअजनक यहविशेषणकथनकर्याहै और अन्यप्राणियों नैं वाणीकरिकैनिरादरकियेहुए तथाताडनकियेहुए उत्पन्नभयाजो क्रोधहै ताक्रोधका तिसीकालविषे जोउपशमनहै ताकानाम अक्रोधहै ॥ औरशास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकाजोसंन्यासहै ताकानामत्यागहै ॥ यद्यपि कहां दानकूंभी त्यागकहैं हैं तथापि सोदान पूर्वश्लोकविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं इहां त्यागशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यासही ग्रहणकरणा ॥ और अंतःकरणका जोउपशमहै ताकानाम शांतिहै ॥ और परोक्षकालविषे अन्यपुरुषकेदोषोंकूं अन्यपुरुषकेआगे जोप्रगटकरणाहै ताकानाम पैशुनहै तिसपैशुनके अभावकानानाम अपैशुनहै ॥ और दुःखीप्राणियोंऊपरि जाकृपाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथाभोगकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जो इंद्रियोंकाअविक्रियपणाहै ताकानाम अलोलुप्त्वहै ॥ और क्रूरस्वभावतैंरहितपणेकानाम मार्दवहै अर्थात् व्यर्थपूर्वपक्षादिकोंकूंकरणेहारे शिष्यादिकोंकेप्रतिभी अप्रियवाणीतैंरहितहोइकै जोप्रियवाणीकरिकै बोधनकरणाहै ताकानाम मार्दवहै ॥ और नहींकरणेयोग्यकार्यविषयकप्रवृत्तिकेआरंभविषे तिसप्रवृत्तिका प्रतिबंधक जा लोकलज्जाहै ताकानाम ह्रीहै ॥ और प्रयोजनतैंविनाभी जोवाक् पाणि पाद इत्यादिकइंद्रियोंके व्यापारका करणाहै ताकानाम चापलहै ताचापलकाजो अभावहै ताकानाम अचापलहै ॥ तहां आर्जवतैंलेके अचापलपर्यंत यह पूर्वउक्त ब्राह्मणके दैवीसंपद्रूप असाधारणधर्महैं ॥ इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता ॥ भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥ तेजः । क्षमा । धृतिः ! शौचम् । अद्रोहः । नातिमानिता । भवंति । संपदम् । दैवीम् । अभिजातस्य । भारत ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभारत ! तेज क्षमा धृति शौच अद्रोह नातिमानिता यहसर्व सत्त्वगुणमयी वासनाकूं संपादनकरिकैजन्मेहुएपुरुषकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

गवानूनैं इहां अभयादिकोंकेसाथि तिसभगवद्भक्तिका पठनकऱ्यानहीं इति ॥ इसप्रकार महानुभाग्यवालेपरमहंससंन्यासियोंके फलभूतदैवीसंपद्कूंकथनकरिकै श्रीभगवान् अब तिनसंन्यासियोंतैंअन्य गृहस्थादिकोंके साधनभूतदैवीसंपद्कूं कथनकरैं हैं (दानंदमश्चइति) तहांआपणेममत्वअभिमानकेविषय जेअन्न सुवर्ण गौ भूमि गृह इत्यादिकपदार्थ हैं तिनअन्नादिकपदार्थोंका यथाशक्तिपरिमाण तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक जो अतिथिब्राह्मणादिकोंकेताईं देणाहे ताकानाम दानहे ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका जो स्वस्वविषयतैंनिवृत्तिरूपसंयमहे ताकानाम दमहे ॥ यद्यपि गृहस्थपुरुषोंविषे सर्वप्रकारतैं इंद्रियोंकासंयम संभवता नहीं तथापि ऋतुकालादिकोंतैं अतिरिक्तकालविषे जो मैथुनादिकोंकानहींकरणाहे यहही तिनगृहस्थोंके इंद्रियोंकासंयमहे ॥ इहां (दमश्च) इसवचन विषेस्थित जो चकारहे सोचकार इहांनहींकथनकरेहुए दूसरेभीनिवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतैहे ॥ और शास्त्रविहितकर्मविशेषकानाम यज्ञहै सोयज्ञ दोप्रकारकाहोवैहे एकतौ श्रौतयज्ञहोवैहे और दूसरा स्मार्त्तयज्ञहोवैहे ॥ तहां अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास सोमयाग इत्यादिक श्रौतयज्ञकहेजावैं हैं ॥ और देवयज्ञ पितृयज्ञ भूतयज्ञ मनुष्ययज्ञ इहच्यारौं स्मार्त्तयज्ञ कहेजावैं हैं यद्यपि ब्रह्मयज्ञभी स्मार्त्तयज्ञही कह्याजावैहे तथापि इहां तिसब्रह्मयज्ञकास्वाध्यायपद करिकै पृथक्‌ही कथनकऱ्याहे ॥ यातैं इहां यज्ञशब्दकरिकै च्यारिहीस्मार्त्तयज्ञ ग्रहणकरेहैं ॥ इहां (यज्ञश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहे सोच कार इहांनहींकथनकरेहुए दूसरेभी प्रवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतै है॥ यह दान दम यज्ञ तीनों गृहस्थपुरुषकेही दैवीसंपद्रूपहैं ॥ और पुण्यविशेषकी उत्पत्तिवासतै जो ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनहे ताकानाम स्वाध्यायहे ॥ इसस्वाध्यायकूंही ब्रह्मयज्ञ कहैं हैं ॥ यद्यपि पूर्वउक्तयज्ञशब्दकरिकै पंचप्रकारकेस्मार्त्तयज्ञोंका कथनसंभवहोइसकैहे तथापि तिसस्वाध्यायविषे ब्रह्मचारीकाअसाधारणधर्मपणा कथनकरणेवासतै श्रीभगवानूनैं इहां स्वाध्यायका पृथक्‌कथनकऱ्याहे ॥ और आगेसतदशअध्यायविषे कथनकऱ्याजो शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकातपहे सोतीनप्रकारकातपही इहां तपशब्दकरिकैग्रहणकरणा सोतप वानप्रस्थका असाधारणधर्म हे ॥ इसप्रकारसंन्यास गृहस्थ ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ इनच्यारिआश्रमोंके असाधारणधर्मोंकूंकथनकरिकै अब ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके असाधारणकर्मोंका कथनकरैं हैं (आर्जवम् इति) तहां वक्रभावका जोपरित्यागहे ताकानाम आर्जवहे अर्थात् श्रद्धावान्‌श्रोतावोंकेसमीप निश्चय करेहुएअर्थका जो नहींगुह्यरखणाहे ताकानामआर्जवहे इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥ दयाभूतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवंह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ अहिंसा । सत्यम् । अक्रोधः । त्यागः । शांतिः । अपैशुनम् । दया । भूतेषु । अलोलुप्त्वम् । मार्दवं । ह्रीः । अचापलम् ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन !

इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अभय अंतःकरणकीशुद्धि ज्ञानयोगदोनोंविषेस्थिति दान तथा दम तथा यज्ञ स्वाध्याय तप आर्जव यहसर्वदैवीसंपद्रूपहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हेअर्जुन ! शास्त्रनैं उपदेशकऱ्याजोअर्थ है ताअर्थविषे संशयतैंरहितहोइके जो तिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेविषे तत्परताहै ताकानाम अभयहै ॥ अथवा सर्वपरिग्रहतैंरहित एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवौंगा इसप्रकारकेभयतैं जोरहितपणाहै ताकानाम अभयहै ॥ और अंतःकरणकी जा सम्यक्निर्मलताहै ताकानाम सत्त्वसंशुद्धिहै ॥ तहां ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे जा परमेश्वरकेस्वरूपजानणेकीयोग्यताहै यहही ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे सम्यक्पणाहै ॥ अथवा परवंचन माया अनृत इत्यादिकोंकाजोपरित्यागहै ताकानाम सत्त्वसंशुद्धिहै ॥ तहां आपणे अर्थकीसिद्धिकरणेवासतै जिसीकिसीमिसकरिकै जो परका वशकरणाहै ताकानाम परवंचनहै ॥ और हृदयविषे अन्यप्रकारकाअभिप्रायराखिकै बाह्यतैं अन्यप्रकारकाव्यवहारकरणा याकानाम मायाहै ॥ और जैसा वृत्तांतदेख्याहोवै तैसावृत्तांत मुखतैंनहींकथनकरणा किंतु तिसतैंअन्यथाहीकथनकरणा याकानाम अनृतहै ॥ इत्यादिकों तैंजोरहितपणाहै ताकानाम सत्त्वसंशुद्धिहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रतैं जोआत्माकेस्वरूपकानिश्चयहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और चित्तकीएकाग्रताकरिकै तिसस्वरूपका जोआपणेअनुभवविषे आरूढपणा है ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोग दोनोंविषे जा व्यवस्थितिहै अर्थात् सर्वकालविषे तत्परताहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ अथवा (अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः) इसवचनका यहदूसरा अर्थकरणा (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) ॥ अर्थयह ॥ हमारेतैं सर्वभूतप्राणियों केताई अभयप्राप्तहोवै इसप्रकारका अभयदानदेणेकासंकल्प संन्यासकेग्रहणकालविषेहोवै है तासंकल्पकाजो परिपालनहै अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जो किसीभीप्राणीकूं भयकीप्राप्तिनहींकरणी है ताकानाम अभयहै यहअभयरूपधर्म दूसरेभी परमहंसकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ और श्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनोंकीपरिपक्वताकरिकै अंतःकरणका असंभावनाविपरीतभावनादिकमलोंतैं जो रहितपणाहै ताकानाम सत्त्वसंशुद्धिहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका जेआत्मसाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और मनोनाश वासनाक्षय इनदोनोंकेअनुकूल जो पुरुषप्रयत्नहै ताकानाम योगहै तिसज्ञानयोगदोनोंकरिकै जासंसारीजनों तैंविलक्षण जीवन्मुक्तिरूपअवस्थितिहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ इसप्रकारकेव्याख्यानाकियेहुए यहअभयादिकदैवीसंपद् फलरूपहीजानणी ॥ तहां भगवद्भक्तितैंविना साअंतःकरणकीशुद्धि होतीनहीं यातैं ताअंतःकरणकीशुद्धिकेकथनकरिकै साभगवद्भक्तिभी कथनहुईजानणी ॥ काहेतैं (महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम्) इस नवमेंअध्यायकेश्लोकविषे दैवीसंपद्विषे भगवद्भक्तिकाभी कथनकऱ्याथा और साभगवद्भक्ति अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातैं श्रीभ

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षोडशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वले अध्यायविषे (अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं मनुष्यदेहविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुईशुभवासनावोंकूं संसारवृक्षकाअवांतरमूलरूपकरिकै कथनकऱ्याथा तेवासनाही पूर्वनवमेंअध्यायविषे प्राणियोंकीप्रकृतिरूपकरिकै दैवी आसुरी राक्षसी यहतीनप्रकारकी सूचन करीथी तहां वेदनैं बोधनकरेजे नित्यनैमित्तिककर्म हैं तथा आत्मज्ञानकेशमदमादिकउपायहैं तिनदोनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै सासात्त्विकीशुभवासना दैवीप्रकृति कहीजावै है और वेदउक्तनिषेधका उल्लंघनकरिकै स्वभावतैं सिद्धरागद्वेषकेअनुसारी तथासर्वअनर्थोंका कारणरूप जा प्रवृत्तिहै ताप्रवृत्तिकाहेतुभूत जा राजसीतामसीरूप अशुभवासनाहै साअशुभवासना आसुरीप्रकृति तथाराक्षसीप्रकृति कहीजावै है ॥ तहां विषयभोगोंकीप्रधानताकरिकै रागकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे आसुरीप्रकृतिपणाहै ॥ और हिंसाकीप्रधानताकरिकै द्वेषकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे राक्षसीप्रकृतिपणाहै इतनादोनोंका अवांतरभेदहै इति ॥ अब इसअध्यायविषे यहवार्त्ताकहैं हैं ॥ शास्त्रकेअनुसारिपणेकरिकै तिसशास्त्रविहितअर्थविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै सासात्त्विकीशुभवासनातौ दैवीसंपद् कहीजावै है ॥ और शास्त्रकाउल्लंघनकरिकै तिसशास्त्रनिषिद्ध विषयोंविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा राजसी तामसीरूप अशुभवासनाहै साअशुभवासना राक्षसी आसुरी इनदोनोंकीएकताकरिकैआसुरीसंपद् कही जावै है ॥ इसरीतिसैं शुभरूपताकरिकै तथाअशुभरूपकरिकै दोप्रकारकाही वासनावोंकाभेदहै ॥ यहहीदोप्रकारकाभेद (द्वयाहप्राजापत्यादेवाश्चासुराश्च) इत्यादिकश्रुतियोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहां दैवीसंपद्रूपशुभवासनातौ इसअधिकारीपुरुषके मोक्षकाहेतुहै ॥ और आसुरीसंपद्रूपअशुभवासना इसपुरुषके बंधकाहेतुहै ॥ यातैं दैवीसंपद्रूपशुभवासनातौ इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकै ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और आसुरीसंपद्रूपअशुभवासना अवश्यकरिकै परित्यागकरणेयोग्यहै सो शुभवासनावोंकाग्रहण तथाअशुभवासनावोंकापरित्याग तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपजानेतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनशुभवासनावोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथा तिनअशुभवासनावोंकेपरित्यागकरावणेवासतै तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारायहषोडशाध्याय प्रारंभकरीताहै तहां प्रथम तीनश्लोकोंकरिके श्रीभगवान् ग्रहणकरणेयोग्यदैवीसंपद्केस्वरूपकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम् ॥ १ ॥

अभयम् । सत्त्वसंशुद्धिः । ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानम् । दमः । च । यज्ञः । च । स्वाध्यायः । तपः । आर्जवम् ॥ १ ॥

(मू. श्लो.) इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयानघ ॥ एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि० ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नामपंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ इति । गुह्यतमम् । शास्त्रम् । इदम् । उक्तम् । मया । अनघ । एतत् । बुद्ध्वा । बुद्धिमान् । स्यात् । कृतकृत्यः । च । भारत ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्वव्यसनोंतैंरहित भारत मैंभगवान्नैं तुम्हारेप्रति इसंपूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप तथासंपूर्णशास्त्ररूप यहँ पंचदशाध्याय कथनकऱ्याहै इसकूं जांनिकै यहपुरुष आत्मज्ञानवाला हो वैहै तथा कृतकृत्य होवैहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अनघ ! अर्थात् हेसर्वव्यसनोंतैंरहित तथा हे भारत ! अर्थात् हे भरतवंशविषेउत्पन्नहुएअर्जुन ! मैंभगवान्नैं तैंअर्जुनकेप्रति इसपंचदशअध्यायविषे पूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप संपूर्णशास्त्रही संक्षेपकरिकै कथनकऱ्याहै अर्थात् अष्टादशअध्यायरूपसर्वगीताशास्त्रका जितनाकअर्थहै सोसंपूर्णअर्थ हमनैं संक्षेपकरिकै इसपंचदशअध्यायविषे तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसपंचदशअध्यायकेअर्थकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरिकै यहअधिकारीपुरुष बुद्धिमान्होवैहै अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेआत्मज्ञानवालाहोवैहै तथा सोअधिकारिपुरुष कृतकृत्यभीहोवैहै ॥ तहां इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतिसवर्णआश्रमविषे करणेयोग्य जितनेक शुभकर्महैं तेसर्वशुभकर्म करेहुएहैं जिसपुरुनैं अर्थात् जिसपुरुषकूं पुनःकोईकर्म करणेयोग्यरह्यानहीं तापुरुषकानाम कृतकृत्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रेष्ठकुलविषेजन्मकूंप्राप्तहुए ब्राह्मणनैं जोजोशास्त्रविहितकर्म करणेयोग्यहै सोसर्वकर्म परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए कऱ्याजावैहै तिस परमात्मादेवकेसाक्षात्कारतैंविना किसीभीपुरुषके तिनकर्त्तव्यकर्मोंकीसमाप्ति होतीनहीं॥ इहां (हेअनघ हेभारत) इनदोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरताभया ॥ इसपंचदशअध्यायकेअर्थकूंजानिकै जबी साधारणपुरुषभी आत्मज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैहै तबी तूं अर्जुनतौ महाकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहुआहै तथाआप सर्वव्यसनोंतैंरहितहै यातैं कुलकेगुणोंकरिकै तथाआपणेगुणोंकरिकै युक्तहुआ तूंअर्जुन इसपंचदशअध्यायकेअर्थकूंजानिकै आत्मज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैगा याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ और (हेअनघ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहभीअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वव्यसनोंतैंरहित अधिकारीपुरुषकेप्रतिही ब्रह्मवेत्तागुरुनैं यहअत्यंतगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरणी ॥ व्यसनोंवाले पुरुषकूं यहब्रह्मविद्या उपदेशकरणीनहीं इति ॥ २० ॥ ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर क्षरकूं अतिक्रमणकरताभयाहूं तथा अक्षरतैं भी अत्यंतउत्कृष्टहूं इस कारणतैं लोकविषे तथा वेदविषे पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्ध हुआहूं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! कार्यरूपहोणेतैं विनाशवान् तथास्वप्नादिकोंकीन्याई मायामय ऐसाजो अश्वत्थनामा यहसंसारवृक्षहै तिस संसारवृक्षरूप क्षरकूं मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं अतिक्रमणकरताभयाहूं ॥ तथा माया अविद्या अज्ञान भगवत्शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैप्रसिद्ध जो अव्याकृतरूपकारणहै जिसअव्याकृत रूपकारणकूं । (अक्षरात्परतःपरः) इसश्रुतिविषे अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तथा जोमायारूपअक्षर इससंसारवृक्षकाबीजरूपहै ऐसे सर्वजगत्केका रणरूप मायानामाअक्षरतैंभी मैंपरमेश्वर उत्तमहूं अर्थात् चैतन्यरूपहोणेतैं मैंपरमेश्वरतिसजडरूपअक्षरतैं अत्यंतउत्कृष्टहूं ॥ इसकारणतैं अर्थात् चेतनपुरुषका उपाधिरूप जे क्षरअक्षरदोनोंहैं जेक्षरअक्षरदोनों चेतनपुरुषकेतादात्म्यअध्यासतैं पुरुष इसनामकरिकैकहेजावैं हैं ऐसेक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियों तैं अत्यंतउत्कृष्टहोणे तैं मैंपरमेश्वर इसलोकविषे तथा वेदविषे पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहुआहूं ॥ तहां कविपुरुषोंकरिकैरचितकाव्यादिरूपलोकविषेतौ । (हरिर्यथैकःपुरुषोत्त मः ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकैप्रसिद्धहूं ॥ और वेदविषेतौ । (सउत्तमःपुरुषःइत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् पूर्वउक्तअर्थसहित तिसपुरुषोत्तमनामकेज्ञानकाफल वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) योमामेवमसंमूढोजानातिपुरुषोत्तमम् ॥ सप्तर्वविद्भजतिमांसर्वभावेनभारत ॥ १९ ॥ यः । माम् । एवम् । असंमूढः । जानाति । पुरुषोत्तमम् । सः । सर्ववित् । भजति । माम् । सर्वभावेन । भारत ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष संमोहतैंरहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं इसप्रकार पुरुषोत्तमरूप जानताहै सोपुरुषही सर्वज्ञहोवैहै तथाभक्तियोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरैहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष असंमूढहुआ अर्थात यहकृष्णभी कोईमनुष्यविशेषहीहै याप्रकारकेसंमोहतैं रहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं पुरुषोत्तमनामके अर्थ ज्ञानपूर्वक पुरुषोत्तमरूपही जानैहै मनुष्यरूपजानतानहीं सोअधिकारीपुरुषही मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रेमलक्षणभक्तियोगकरिकै सेवनकरैहै तथा सोअधिकारी पुरुषही सर्वविताहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकूं सर्वकाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा सोपुरुषही सर्वज्ञहै ॥ यातैं (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्सम तीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते) यहजोपूर्ववचनकह्याथा सोवचन युक्तहीहै ॥ तथा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजोवचन पूर्व कथनकऱ्याथा सोवचनभी युक्तहीहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसपंचदशअध्यायकेअर्थकीस्तुतिकरतेहुए इसअध्यायकाउपसंहारकरैं हैं ।

टीका। हेअर्जुन ! अत्यंतउत्कृष्ट प्रत्यक्चेतनआत्मारूपपुरुषतौ अन्यही है अर्थात् क्षरशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो कार्यसमूहहै तथाअक्षरशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो मायारूपकारणउपाधिहै तिनदोनोंजडउपाधियोंतैं अत्यंतविलक्षण तथातिनदोनों उपाधियोंकाप्रकाशकरणेहारा प्रत्यक्चेतनस्वरूप उत्तमपुरुष तीनराहीहै ॥ जोचेतनपुरुष वेदांतशास्त्रोंविषे परमात्माइसनामकरिकै कथनकऱ्याहै अर्थात् अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहजेपंचकोशहैं जेपंचकोश अज्ञानकरिकै तिनतिनवादियोंनैं आत्मरूपकरिकै कल्पनाकरेहैं ऐसेपंचकोशोंतैंजो परमहोवै तथाआत्माहोवै ताकानाम परमात्माहै ॥ तहां सोचेतनरूप उत्तमपुरुष अकल्पितहोणेतैं तिनकल्पितपंचकोशोंतैं अत्यंतउत्कृष्टहोणेतैं परमहै ॥ तथा (ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठा)इसश्रुतिनैं सर्वकाअधिष्ठानरूपकरिकै कथनकऱ्याहै तथा सर्वभूतोंका प्रत्यक्चेतनरूपहै ॥ इसकारणतैं वेदांतशास्त्रोंविषे सोचेतनरूपउत्तमपुरुष परमात्माइसनामकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ हेअर्जुन जोपरमात्मादेव भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक इनतीनलोकरूपसर्वजगतकूं आपणीमायाशक्तिंतैं स्वाश्रितकरिकै आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै धारणकरैहै तथापोषणकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (व्यक्ताव्यक्तंभरतेविश्वमीशः) ॥ अर्थयह ॥ कार्यकारणरूपसर्वजगतकूं परमेश्वर धारणकरैहै तथाभरणकरैहै इति पुनः कैसाहै अव्ययहै अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंशून्यहै तथा ईश्वरहै अर्थात् सूर्यचंद्रादिकसर्वजगत्कानियंता नारायणरूपहै ऐसाउत्तमपुरुष वेदांतोंविषे परमात्मा इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सउत्तमः पुरुषः) ॥ अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवही उत्तमपुरुषहै इति ॥ इहां प्रत्यक्चेतनरूपआत्माके जे (अव्ययःईश्वरः) यहदो विशेषण कथनकरेहैं तेदोनोंविशेषण हेतुगर्भितविशेषणहैं ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवै हैं ॥ चेतन आत्मा तिसपूर्वउक्तअक्षरनामादोपुरुषोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै अव्ययहोणेतैं जोवस्तु तिनक्षरअक्षरदोनोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोवस्तु अव्ययभीनहींहोवैहै जैसे बुद्धिआदिकहैं इति ॥ तथा चेतन आत्मा तिनक्षरअक्षरदोनोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै ईश्वरहोणेतैं जैसे प्रजाकानियंता महाराजा तिसप्रजातैंभिन्नहीहोवैहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वकथनकऱ्याजो क्षरअक्षरदोनोंतैंविनाविलक्षण परमात्मादेवहै तिसपरमात्मादेवका पुरुषोत्तम यहप्रसिद्धनाम कथनकरिकै ऐसापरमात्मादेव मैंहींहूं इसप्रकारतैं (ब्रह्मणोहि प्रतिष्ठाहं तद्धामपरमंमम) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वकथनकरेहुए आपणे महिमाके निश्चयकरावणेवासतै श्रीभगवान् आपणेस्वरूपकूं दिखावैहैं।

(मू. श्लो.)यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्तमः॥अतोऽस्मिंलोकेवेदेचप्रथितःपुरुषोत्तमः॥१८॥यस्मात् । क्षरम् । अतीतः । अहम् । अक्षरात् । अपि । च । उत्तमः । अतः । अस्मि । लोके । वेदे । च । प्रथितः । पुरुषोत्तमः॥ १८॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

टीका। हेअर्जुन ! चैतन्यपुरुषका उपाधिरूपहोणेतैं पुरुषशब्दकरिकैकथनकरेहुए दोपुरुषही इससंसारविषेहैं कौनहैं तेदोपुरुष ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (क्षरश्चाक्षरएवचइति) हेअर्जुन ! एकतो क्षरनामापुरुषहै और दूसरा अक्षरनामापुरुषहै अर्थात् उत्पत्तिविनाशवाला जितनाक कार्यसमूहहै सोकार्यसमूहतो क्षरनामापुरुषहै और आत्मज्ञानतैंविना विनाशतैंरहित तथाक्षरनामापुरुषकेउत्पत्तिकाबीजरूप ऐसी जा भगवत्कीमायाशक्ति है साकारणउपाधिरूप मायाशक्ति दूसरा अक्षरनामापुरुषहै ॥ इसीप्रकारके तिनदोनोंपुरुषों केस्वरूपकूं श्रीभगवान् आपही स्पष्टकरिकैकथनकरैं हैं (क्षरः सर्वाणिभूतानि इति) ॥ हेअर्जुन ! उत्पत्तिविनाशकवाले जितनेक कार्यहैं तेसर्वकार्यतो क्षरः इसनामकरिकैकहेजावैं हैं ॥ और कूटस्थ अक्षर इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ तहां यथार्थवस्तुका आच्छादनकरिकै अयथार्थवस्तुकाजोप्रकाशनहै जिसकूं वंचनभीकहैंहैं तथामायाभीकहैं हैं ताकानाम कूटहै तिसकूटरूपकरि कैजोस्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै अर्थात् आवरणशक्ति विक्षेपशक्ति इनदोनोंरूपोंकरिकै जो स्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै ॥ ऐसेकूटस्थनामवाली भगवत् कीमायाशक्तिरूप कारणउपाधिहै सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि इससर्वसंसारकाबीजरूपहोणेतैं तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नहींनाशहोणेतैं अनंतहै ॥ यातैं सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि अक्षर इसनामकरिकैकही जावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतो क्षरशब्दकरिकै सर्वअचेतनवर्गकाग्रहणकरिकै (कूटस्थोऽक्षरउच्यते) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञनामा जीवात्माका ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोयहव्याख्यान समीचीननहीं है ॥ काहेतैं (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः) इसवक्ष्यमाण वचनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञआत्माकूंही पुरुषोत्तमरूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ यातैं इहां क्षर अक्षर इनदोशब्दोंकरिकै कार्यउपाधिकारणउपाधि यहदोनोंजडउपाधि ही ग्रहणकरणेयोग्यहैं इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे क्षरशब्दकरिकै सर्वकार्यरूपउपाधिका कथनकऱ्या ॥ और अक्षरशब्दकरिकै भगवत्की मायाशक्तिरूप कारणउपाधिका कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिनक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियोंतैंविलक्षण तथातिनदोनोंउपाधियों केदोषोंकरिकैअलिपायमान ऐसाजो निन्य शुद्धबुद्ध मुक्तस्वभाव उत्तमपुरुषहै तिसउत्तमपुरुषका श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्य विभर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥ उत्तमः । पुरुषः । तु । अन्यः । परमात्मा । इति । उदाहृतः । यः । लोकत्रयम् । आविश्य । बिभर्ति । अव्ययः । ईश्वरः ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः अत्यंतउत्कृष्ट चेतनपुरुषतो तिसक्षरअक्षरदोनोंतैं भिन्नही है तथा परमात्मा इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै जोचेतनपुरुष तीनलोकोंकूं स्वाश्रितकरिकै धारणकरै है तथाअव्ययरूपहै तथाईश्वररूपहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

अर्थात् हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेताईं वेदांतकीप्राप्तिरूपअनुग्रहकर्त्ता मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै) ॥ अर्थयह ॥ जोपरमेश्वर पूर्व हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया तथा जोपरमेश्वर तिसब्रह्माकेताईं सर्ववेदोंकूंदेताभया इति ॥ अथवा (वेदान्तकृत्) इसवचनका यहअर्थ करणा ॥ इसलोकविषे अधिकारीशिष्योंकेताईं आचार्यरूपकरिकै वेदांतकेअर्थकाप्रकाशकरणेहारा मैंपरमेश्वरहीहूं पुनःकैसाहूंमैं वेदवित्हूं ॥ तहां वेदकाअर्थरूप जोनिर्विशेषअद्वितीयब्रह्महै तिसब्रह्मकूं जोपुरुष मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैं तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतैं आपणाआत्मारूपकरिकै जानैहै ताकानाम वेदवित्है ऐसा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै सोब्रह्मवेत्तापुरुषभी मैंपरमेश्वरहीहूं यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै पूर्वभीकथनकरिआयेहैं ॥ तहां (सर्वस्यचाहंहृदिसंनिविष्टः) इसवचनकरिकै सर्वप्राणीमात्रकूंआपणाआत्मारूपकरिकै श्रीभगवान्नैं जोपुनःवेदांतकृतमैंहूं तथावेदवित्मैंहूं यहवचन कथनकऱ्याहै सो इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्या है मूढपुरुषोंनैं तथाबुद्धिमानपुरुषोंनैं वेदांतशास्त्रकेउपदेशकर्त्तागुरुविषे तथाअन्यभी ब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे परमेश्वरबुद्धि अवश्यकरिकैकरणी इति ॥ तहां (यदादित्यगतंतेजो) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनकृतउपासनावासतै श्रीभगवान्नैं आपणीविभूति कथन करी साविभूतिही परमेश्वरका पारमार्थिकरूपहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीभगवान् आपणेयथार्थस्वरूपकेबोधनकरणेवासतै कहैं हैं (वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्यःइति) हेअर्जुन ! ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंविषेस्थित जितनाक उपनिषद्रूपवेदांतहैं तिनवेदांतोंकरिकै मैंपरमात्मादेवही जानणेयोग्यहूं अर्थात् (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म विज्ञानमानंदंब्रह्म आनंदोब्रह्म तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरम् अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम् अप्राणममुखमश्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमचक्षुष्कमनामगोत्रमशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनित्यंशुद्धंबुद्धंमुक्तंसत्यंसूक्ष्मंपरिपूर्णमद्वयंसदानंदचिन्मात्रंशांतंचतुर्थंमन्यंते सआत्मासविज्ञेयः तत्त्वमसि ॥) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनोंनैं जानणेयोग्य जो निर्विशेष नित्य शुद्ध बुद्धमुक्तस्वभाव सच्चिदानंद एकरसअद्वितीय परमात्मादेवहै सोपरमात्मादेवरूपही मैंपरमार्थतैंहूं पूर्वउक्तमायोपाधिकस्वरूप मैंपरमार्थतैंनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार आपणे सोपाधिकस्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् कृपाकरिकै अर्जुनकेताईंक्षरअक्षरनामा कार्यकारणरूपदोउपाधियोंतैं रहित निरुपाधिशुद्धआपणेस्वरूपकूं तीनश्लोकोंकरिकैप्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) द्वाविमौपुरुषौलोकेक्षरश्चाक्षरएवच ॥ क्षरःसर्वाणिभूतानिकूटस्थोऽक्षरउच्यते ॥ १६ ॥ द्वौ । इमौ । पुरुषौ । लोके । क्षरः । च । अक्षरः । एव । च । क्षरः । सर्वाणि । भूतानि । कूटस्थः । अक्षरः । उच्यते ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! संसारविषे यह दो ही पुरुषहैं एकतौ क्षरपुरुषहै तथा दूसरा अक्षरपुरुषहै तहां कार्यरूपसर्व भूततौ क्षरपुरुष कह्याजावैहै और कारणरूपमाया अक्षरपुरुष कह्याजावैहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

हननी मैंआत्मादेवतैंहीहोवै है इति ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणी जीवरूपताकूंकथनकरिकै अब ब्रह्मरूपताकूंकथनकरैं हैं ॥ (वेदैश्चसर्वैःइति) हेअर्जुन! ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकरिकै मैंपरमात्मादेवही जानणेयोग्यहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्ववेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनेक ऋगादिकवेदहैं तेसर्ववेद जिसपरमात्मादेवरूपपदकूंकथनकरैं हैं इति ॥ यद्यपि ऋगादिकवेदोंकेकर्मकांड तथाउपासनाकांड इंद्रादिकदेवतावोंकूंही कथनकरैं हैं तथापि मैंपरमात्मादेवही तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंका आत्मारूपहूं ॥ यातैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंकथनकरतेहुएभी तेकर्मउपासनाकांड मैंपरमात्मादेवकूंही कथनकरैं हैं ॥ तहां परमात्मादेवही इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहैं इसअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुरथोदिव्यःससुपर्णोगरुत्मान् ॥ एकंसद्विप्रा बहुधावदंत्यग्निंयमंमातरिश्वानमाहुः ॥ एषउह्येवसर्वेदेवाः) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरैं हैं ॥ पुनः कैसाहूं मैंपरमात्मादेव वेदांतकृतहूं अर्थात् वेदव्यासादिकरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवही उपनिषद्रूपवेदांतकेअर्थकीसंप्रदायका प्रवर्त्तकहूं ॥ हेअर्जुन ! केवल वेदांतअर्थकेसंप्रदायमात्रकाही मैं प्रवर्त्तकनहींहूं किंतु वेदवित्भी मैंहीहूं अर्थात् कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनेकमंत्रब्राह्मणरूप सर्ववेदहैं तिनसर्ववेदोंकेअर्थकूंजानणेहाराभी मैंपरमात्मादेवहीहूं ॥ यातैं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजो पूर्वअध्यायविषेवचनकह्याथा सोयथार्थही है इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (सर्वस्यचाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्या है ॥ सर्वप्राणियोंकीबुद्धिरूपगुहाविषे मैंपरमात्मादेव क्षेत्रज्ञनामाजीवरूपकरिकै अत्यंतसमीपहुआ स्थितहूं ॥ इसकारणतैं सर्वप्राणीरूप मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं जीवब्रह्मविषे भेददृष्टि कदाचित्भीनहींकरणी यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तहां यहसर्वजगत् परमेश्वररूपही है इसप्रकार सर्वत्र परमेश्वरबुद्धिकरिकै जेपुरुष परमेश्वरकीउपासनाकरैं हैं तथा जेपुरुष तिसउपासनाकूंनहींकरैं हैं तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवै है तिसफलकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।। (मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंचइति) हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरकीउपासनाकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरण जिन्होंका ऐसेअधिकारी पुरुषोंकूंतौ मैंपरमेश्वरतैंही गुरुशास्त्रकेअनुग्रहकरिकै स्मृतिहोवै है अर्थात् (सआत्मा तत्त्वमसि) इसवचनकरिकै श्रीगुरुवोंनैं जो त्रिविधपरिच्छेदतैंरहित निर्विशेषआत्मा तूं है इसप्रकारतैं बोधनकऱ्या है सोनिर्विशेषशुद्धआत्मा मैंहूं इसप्रकारकी जो तिसीहीआत्माविषे स्वात्मपणेकीस्मृतिहै सास्मृतिभी तिनअधिकारी पुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंहीहोवै है ।। तथा यहसर्वजगत् तथामैं ब्रह्मरूपही है इसप्रकार सर्वजगत्विषे तथाआपणेविषे जो ब्रह्ममात्रपणेका ज्ञानहै सोज्ञानभी तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंही होवैहै ।। और जेपुरुष मैंपरमेश्वरकीउपासनातैंरहितहैं तथा मलिनबुद्धिवाले हैं तथा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकै दुष्टहैं ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतिनस्मृतिका तथातिसज्ञानका जो अपोहनहै अर्थात् अप्राप्तिहै साअप्राप्तिभी मैंपरमेश्वरतैंहीहोवै है ।। हे अर्जुन ! पुनःमैंपरमेश्वर कैसाहूं वेदांतकृतहूं

सोमदोनोंही सर्वरूपहैं ॥ इसप्रकारकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं अन्नकेदोषकालेपहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका जोशास्त्रविषे फलसहितध्यान कथनकऱ्याहै सोभी इहां जानिलेणा इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) सर्वस्यचाहंहृदिसन्निविष्टोमत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच ॥ वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेवचाहम् ॥ १५ ॥ सर्वस्य । च । अहम् । हृदि । सन्निविष्टः । मत्तः । स्मृतिः । ज्ञानम् । अपोहनम् । च । वेदैः । च । सर्वैः । अहम् । एवम् । वेद्यः । वेदांतकृत् । वेदवित् । एव । च । अहम् ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः मैंपरमात्मादेवही सर्वप्राणियोंके बुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइके प्रविष्टहुआहूं इसकारणतैं मैंआत्मादेवतैंही तिनसर्वप्राणियोंकूं स्मृति तथाज्ञान तथा तिसस्मृतिज्ञानदोनोंकाअभाव होवैहै तथा सर्व वेदोंकरिकै मैंपरमेश्वर ही जाननेयोग्यहूं तथावेदांतअर्थकासंप्रदायकाप्रवर्त्तकहूं तथा मैंपरमेश्वर ही सर्व वेदोंके अर्थका वेत्ताहूं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्रह्मातैंआदिलैके स्थावरपर्यंत जितनेकऊंचनीचप्राणीहैं तिनसर्वप्राणियोंकीबुद्धिविषे मैंपरमात्मादेवही जीवात्मारूपहोइके प्रविष्टहुआहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सएवइहप्रविष्टः । अनेनजीवेनात्मानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव जीवात्मारूपहोइके इससंघातविषे प्रवेशकरताभया ॥ और इसजीवात्मारूपकरिकै इससंघातविषेप्रवेशकरिकै मैंपरमात्मादेव नामरूपकूंस्पष्टकरूं इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां इनसर्वसंघातोंविषे परमात्मादेवकाही जीवात्मारूपकरिकेप्रवेशकूं कथनकरैं हैं ।। इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं जीवब्रह्मकाअभेदकथनकऱ्या ॥ इसीहीजीवब्रह्मकेअभेदकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि) इत्यादिकश्रुतियांभी कथनकरैं हैं ॥हे अर्जुन ! जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवही इनसर्वप्राणियोंकीबुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइके प्रविष्टहुआहूं ॥ इसकारणतैं इनसर्वप्राणियोंकूं जाजास्मृति होवैहै तथा जोजोज्ञानहोवैहै सास्मृति तथासोज्ञान मैंआत्मादेवतैंही होवैहै ॥ तहां पूर्वअनुभवकरेहुएअर्थकूंविषयकरणेहारी जा संस्कारजन्य अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम स्मृतिहै सास्मृति अयोगीपुरुषोंकूंतौ इसजन्मविषे पूर्वअनुभवकरेहुएअर्थविषयकही होवैहै ॥ और योगीपुरुषोंकूंतौ जन्मांतरोंविषेअनुभवकरेहुएअर्थविषयकभी होवैहै ॥ इसप्रकार सोप्रत्यक्षज्ञानभी अयोगीपुरुषोंकूंतौ विषयइंद्रियकेसंयोगजन्यही होवैहै और योगीपुरुषोंकूंतौ देशकालकरिकैव्यवहितवस्तुकाभी सोप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै सोदोनोंप्रकारकाज्ञान तथासोदोनोंप्रकारकीस्मृति मैंआत्मादेवतैंही होवैहै ॥ और काम क्रोध शोक मोह इत्यादिकोंकरिकै व्याकुलहैचित्तजिन्होंका ऐसेपुरुषोंकूं जो तिस स्मृतिका तथाज्ञानका अभावहोवैहै सोअभावरूपअपो

रुग्रापृथिवीचदृढा । सदाधारपृथिवीम् ॥) अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवनैं स्वर्गलोक तथामहान्पृथिवीअत्यंतदृढकरेहैं ॥ जिसकरिकै गुरुत्वधर्मवालेहुएभी यहस्वर्ग तथापृथिवी नीचैपतनहोतेनहीं तथा यहपृथिवी सत्यपरमात्मादेवकेहीआधारहै इति ॥ किंवा सर्वरसस्वभाववाला जोसोमहै तिससोमरूपहोइकै मैंपरमेश्वरही पृथिवीतैंउत्पन्नहुई व्रीहियवादिकसर्वओषधियोंकूं पुष्टिमान्करूंहूं तथास्वादुरसवालाकरूंहूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥ १४ ॥ अहम् । वैश्वानरः । भूत्वा । प्राणिनाम् । देहम् । आश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः । पचामि । अन्नम् । चतुर्विधम् ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरही जठराग्निरूपहोइकै सर्वप्राणियोंकेदेहकूं आश्रयणकरताहुआ तथाप्राण अपानकरिकैप्रज्वलितहुआ च्यारि प्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! (अयमग्निर्वैश्वानरोयोयमंतः पुरुषेयेनेदमन्नंपच्यते) ॥ अर्थयह ॥ जोअग्नि इसपुरुषकेअंतरस्थितहै तथा जिसअग्निनैं यहच्यारिप्रकारकाअन्न पाचनकरीताहै सोयहअग्नि वैश्वानरहै इति ॥ इसश्रुतिनैं वैश्वानरनामकरिकैकथनकरयाजो जठराग्निहै सोजठराग्निरूपहोइकै मैंपरमेश्वरही सर्वप्राणियों के देहोंकेअंतरप्रविष्टहुआ तथा तिसजठराग्निकूंप्रज्वालनकरणेहारे प्राणअपानकरिकैयुक्तहुआ प्राणियोंनैंभोजनकरेहुए भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य इसच्यारिप्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां जोवस्तु दांतोंसैंखंडनकरिकै भक्षणकऱ्याजावैहै तावस्तुकूं भक्ष्य कहैहैं ॥ जैसे पूडीअपूपादिकहैं तिसभक्ष्यवस्तुकूं चर्व्यभी कहैहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंकेव्यापारतैंविनाही केवल जिह्वासैंहलाइकै भीतर निगल्याजावैहै तावस्तुकूं भोज्य कहेहैं ॥ जैसे पायससूपादिकहैं ॥ और जोवस्तु जिह्वाविषेप्राप्तहुआही रसकेस्वादमात्रकरिकै भीतर निगल्याजावैहै तथा किंचित्द्रवीभूतहोवैहै तावस्तुकूं लेह्य कहैहैं ॥ जैसे गुड आम्ररस शिखरिण्य आदिकहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंसैंनिष्पीडनकरिकै ताकेरस अंशकूं भीतरनिगलिकै परिशेषतैंरहेहुएअसारअंशकूं बाह्यपरित्यागकरीताहै तावस्तुकूं चोष्य कहैहैं ॥ जैसे इक्षुदंडादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (पचाम्यन्नंचतुर्विधम्) ॥ इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मैंपरमेश्वरही जठराग्निरूप होइकै मनुष्यादिकसर्वप्राणियोंकेअंतरस्थितहुआ पार्थिव आप्य तैजस वायव्य इसच्यारिप्रकारकेअन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां मनुष्यादिकप्राणियोंकातौ व्रीहियवादिक पार्थिव अन्नहै ॥ और चातकादिकप्राणियोंकातौ जलरूप आप्य अन्नहै ॥ और वालखिल्यादिकप्राणियोंकातौ अग्निरूप तैजस अन्नहै ॥ और सर्पादिकप्राणियोंकातौ वायुरूप वायव्य अन्नहै इति ॥ तहां जोभोकाहै सो अग्निवैश्वानररूपहै ॥ और जोभोज्यअन्नहैसो सोमरूपहै ॥ इसप्रकार यहअग्नि

करणेवासतै यहदूसराअर्थभी संभवहोइसकैहै ॥ जोकदाचित् इसश्लोककूं परमेश्वरकीविभूतिकथनकरिकै नहींअंगीकारकरिये तौ पुनःतेजशब्दकेग्रहणतैं विनाही (तन्मामकंविद्धि) इतनेमात्रवचनकूंही श्रीभगवान् कथनकरता इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आदित्य चंद्रमा अग्नि इनशब्दोंकरिकै चक्षुआदिककरणोंकेअधिष्ठानतारूप सूर्यादिकदेवतावोंका तथासूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत चक्षुआदिककरणोंका ग्रहणंकरणा ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवै है ॥ चक्षुआदिकबाह्यकरणोंकेअधिष्ठातारूप जेसूर्यादिकदेवताहैं तथातिनसूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत जेचक्षुआदिकबाह्यकरणहैं तिनदोनोंविषेविद्यमानजो रूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै सोतेज मैंपरमेश्वरकाही तूंजान ॥ तहांश्रुति ॥ (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धःयेनचक्षूंषिपश्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहसूर्य तपकरै है ॥ तथा जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहचक्षु रूपादिकपदार्थोंकूंदेखैंहैं ॥ इति ॥ इसप्रकारमनविषे तथातामनकेअभिमानीचंद्रमादेवताविषे जो अंतरप्रपंचकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै तिसतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वरकाहीजान ॥ इसप्रकार वाक्इंद्रियविषे तथातावाक्इंद्रियकेअभिमानीअग्निदेवताविषे जो अव्याकृतआदिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वरकाही जान इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) गामाविश्यचभूतानिधारयाम्यहमोजसा ॥ पुष्णामिचौषधीःसर्वाःसोमोभूत्वारसात्मकः ॥ १३ ॥ गाम् । आविश्य । च । भूतानि । धारयामि । अहम् । ओजसा । पुष्णामि । च । ओषधीः । सर्वाः । सोमः । भूत्वा । रसात्मकः ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! पुनः आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै सर्वभूतोंकूं मैंपरमेश्वरही धारणकरूंहूं तथा सर्वरसस्वभाववाला सोमरूप होइकै सर्व ओषधियोंकूं मैंपरमेश्वरही पुष्टिवालीकरूंहूं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरही पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीकूं सर्वओरतैंव्याप्तकरिकै तथा धूलीमुष्टिकेतुल्य इसपृथिवीकूं आपणेबलकरिकै अत्यंतदृढकरिकै इसपृथिवीऊपरिरहणेहारे स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरताहूं ॥ जैसे वायु आपणीशक्तिकरिकै मेघमंडलविषेप्रवेशकरिकै तामेघमंडलविषेस्थित जलोंकूं धारणकरै है तैसे मैंपरमेश्वरभी पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीविषेप्रवेशकरिकै आपणीशक्तिकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै तिनस्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरूंहूं ॥ जोकदाचित् मैंपरमेश्वर आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूंअत्यंतदृढकरिकै इनसर्वभूतोंकूं धारणकरताहोवों तौ सिकताकेमुष्टितुल्य यहपृथिवी शीघ्रही विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैगी ॥ अथवा यहपृथिवी अधोदेशचलीजावैगी ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (येनद्यौ

(मू. श्लो.) यदादित्यगतं तेजोजगद्भासयतेखिलम् ॥ यच्चंद्रमसियच्चाग्नौतत्तेजोविद्धिमामकम् ॥ १२ ॥ यत् । आदित्यगतम् । तेजः । जगत् । भासयते । अखिलम् । यत् । चंद्रमसि । यत् । च । अग्नौ । तत् । तेजः । विद्धि । मामकम् ॥१२॥ इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन! आदित्यविषेस्थित जो तेजहै तथा चंद्रमाविषेस्थित जोतेजहै तथा अग्निविषेस्थित जोतेजहै जोतेजइससर्व जगत्कूं प्रकाश करताहै तिस तेजकूं तूंमेरास्वरूपही जान ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग (नतद्भासयतेसूर्यः) इत्यादिकश्लोककरिकै पूर्व व्याख्यानकऱ्याथा अब (तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोककरिकै श्रीभगवानूनैं व्याख्यानकरीताहै ॥ हे अर्जुन ! आदित्यविषे स्थितजो चैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै तथा चंद्रमाविषेस्थित जोचैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै तथा अग्निविषेस्थित जोचैतन्यात्मक ज्योतिरूप तेजहै जोचैतन्यज्योतिरूपतेज इससर्वजगत्कूं प्रकाशकरै है तिसचैतन्यात्मकज्योतिरूपतेजकूं तूं अर्जुन मैंपरमात्माकास्वरूपभूतही जान ॥ यद्यपि स्थावरजंगमरूपसर्वपदार्थोंविषे सोचैतन्यात्मक ज्योति समानही है तथापि सत्त्वगुणकीउत्कर्षताकरिकै तेआदित्यादिक सर्व तैंउत्कृष्टहैं याकारणतैं तिनआदित्यादिकोंविषेही सोचैतन्यरूपज्योति अतिशयकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तमोगुणप्रधान तथारजोगुणप्रधान अन्यपदार्थोंविषे स्वरूपतैं विद्यमान हुआभी सोचैतन्यरूपज्योति स्पष्टकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै आदित्यादिकोंविषे विशेष्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवानूनैं इहां आदित्यचंद्रमादिकोंका ग्रहणकऱ्याहै ॥ जैसे मुखकीसमीपताकेतुल्यहुएभी काष्ठभित्तिआदिकअस्वच्छपदार्थोंविषे सोमुख प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्तहोवैनहीं ॥ और स्वच्छतथाअतिस्वच्छ ऐसे जे दर्पणादिकपदार्थ हैं तिनदर्पणादिकपदार्थोंविषेतौ तास्वच्छताकीन्यूनअधिकताकरिकै सोमुखभी न्यूनअधिकभावतैं प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्त होवै है तैसे सोचैतन्यरूपज्योतिभी स्वरूपतैंसर्वपदार्थोंविषेविद्यमानहुआभी सत्त्वगुणप्रधानआदित्यादिकोंविषेही स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तमोगुणप्रधानघटादिकपदार्थोंविषे स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ अथवा (यदादित्यगतं तेजो) इसवचनविषे तेजशब्दका कथनकरिकै (तत्तेजोविद्धिमामकम्) इसवचनविषे जोपुनःतेजशब्दका कथनकऱ्याहै तिसतैं इसश्लोकका यहदूसराअर्थभी प्रतीत होवै है ॥ आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषेस्थित जो परकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ श्वेतभास्वररूप तेजहै जोतेज रूपवान्सर्ववस्तुरूपजगत्कूं प्रकाश करै है सोतेज मैंपरमेश्वरकाही तूंजान अर्थात् मैंपरमेश्वरकेविभूतिरूप तिसतेजविषे तूं मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकर इति ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरकीविभूतिकथन

जोयहआत्माहै ॥ तथा सुखदुःख मोह रूप सत्त्व रज तम इनगुणोंकरिकैयुक्त जोयहआत्माहै इसप्रकारकी सर्वअवस्थावोंविषे दर्शनकेयोग्यभी इसआत्माकूं विमूढपुरुष नहींदेखिसकैं हैं ॥ तहांइसश्लोककेविषयभोगोंकी तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयभोगोंकी वासनावोंकरिकै आकर्षणहुआहैचित्तजिनोंका ऐसेजे आत्मा अनात्माकेविवेककरणेविषेअयोग्यपुरुषहैं तिनोंकानाम विमूढहै ऐसेविमूढपुरुष तिनउत्क्रमणादिकअवस्थावोंविषे इसआत्मादेवकूं देहादिकोंतैंभिन्नकारिकै जानि सकतेनहीं यहबडाकष्टहै ॥ और जेपुरुष श्रुतिप्रमाणजन्यज्ञानरूपचक्षुवालेहैं तेविवेकीपुरुष तो तिनउत्क्रमणादिक सर्वअवस्थावोंविषे इसआत्मादेव कूंदेहादिकोंतैंभिन्नकारिकैदेखैहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ अब (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) इसवचनकेअर्थकूं तथा (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूं यथा क्रमतैं स्पष्टकारिकैवर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः ॥११॥ यतंतः । योगिनः । च । एनम् । पश्यंति । आत्मनि । अवस्थितम् । यतंतः । अपि । अकृतात्मानः । न । एनम् । पश्यंति । अचेतसः ॥११॥इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! प्रयत्नकरतेहुए योगीपुरुष ही आपणीबुद्धिविषे स्थित इसआत्माकूं देखतेहैं और प्रयत्नकरतेहुए भी अशुद्धअंतःकरण वाले अविवेकीपुरुष इसआत्माकूं नहीं देखतेहैं ॥ ११ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ध्यानादिकउपायोंकरिकै यत्नकरतेहुए जेशुद्धअंतःकरणवाले योगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषही आपणीबुद्धिविषेस्थित इसआनंदस्वरूपआत्मा कूं साक्षात्कारकरैं हैं ॥ और जिनपुरुषोंनें यज्ञादिकनिष्कामकर्मोंकरिकै आपणेअंतःकरणकूंशुद्धनहींकऱ्याहै तथाअशुद्धअंतःकरणवालेहोणेतैंही जेपुरुष आत्मानात्माकेविवेकतैंरहितहैं तेअशुद्धअंतःकरणवालेअविवेकीपुरुषतौ प्रयत्नकरतेहुएभी इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकारिसकतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहांसर्वजगतकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थभी सूर्यचंद्रमादिक जिसपरब्रह्मरूपपदकूं प्रकाशकरणेविषेसमर्थहोतेनहीं ॥ तथा जिसपदकूंप्राप्तहुए मुमुक्षुजन पुनःसंसारकी प्राप्तिवासतै आवतेनहीं ॥ और जैसेमहाकाशतैं घटादिकउपाधिकृतभेदवालेहुए घटकाशादिक तिसमहाकाशके कल्पितअंशभावकूंप्राप्तहोवैहैं तैसे जिसपरब्रह्मरूपप दके उपाधिकृतभेदकूंप्राप्तहोइकै कल्पितअंशादिक तिसमहाकाशकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसेमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकउपाधियोंके निवृत्तहुए यहजीव जिसपरब्रह्मरूप पदकेसाथि अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदके सर्वात्मपणेकूं तथासर्वव्यवहारोंके साधकपणेकूं दिखाइकरिकै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसपूर्व अध्याय उक्तवचनके अर्थका वर्णनकरणेवासतै अब च्यारिश्लोकों कारिके श्रीभगवान् आपणे विभूतियोंके संक्षेपकूं कथनकरैंहैं

अब श्रीभगवान् तिनइंद्रियोंका कथनकरतेहुए जिसप्रयोजनवासतै यहजीवात्मा तिनइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकैनिर्गमनकरै है तिसप्रयोजनकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेवच ॥ अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ॥ ९ ॥ श्रोत्रम् । चक्षुः । स्पर्शनम् । च । रसनम् । घ्राणम् । एव । च । अधिष्ठाय । मनः । च । अयम् । विषयान् । उपसेवते ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन । यह जीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथा चक्षुइंद्रियकूं तथा त्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथा घ्राणइंद्रियकूं तथा मनकूं आश्रयणकरिकै ही शब्दादिकविषयोंकूं भोगताहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहजीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथाचक्षुइंद्रियकूं तथात्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथाघ्राणइंद्रियकूं तथामनकूं आश्रयणकरिकैही शब्दस्पर्शादिकविषयोंकूंभोगैहै ।। इहां (घ्राणमेवच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै तिसचकारकरिकै वागादिकपंचकर्मइंद्रियोंका तथाप्राणकाभी ग्रहणकरणा ॥ और (मनश्च) इसवचनविषे स्थितजो चकारहै तिसचकारकरिकै बुद्धि चित्त अहंकार इनतीनोंकाभी ग्रहणकरणा अर्थात् पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण चतुष्टयअंतःकरण इनसर्वोंकूं आश्रयणकरिकैही यहजीवात्मा शब्दादिकविषयोंकूंभोगैहै ।। तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रयणकियेतैंविना केवलशुद्धआत्मा तिनशब्दादिकविषयोंकूंभोगतानहीं ।। यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै तहांश्रुति ।। (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ।। अर्थयह ।। देहश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआही आत्मा भोक्ताहोवैहै ।। इसप्रकार वेदवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष कथनकरैं हैं इति ।। ९ ।। ❀ ॥ ऐसेदर्शनयोग्यभीआत्माकूं मूढपुरुषदेखतेनहीं किंतु विवेकीपुरुषही देखैं हैं ।। इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) उत्क्रामंतंस्थितंवापिभुंजानंवागुणान्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यंतिपश्यन्तिज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ उत्क्रामंतम् । स्थितम् । वा । अपि । भुंजानम् । वा । गुणान्वितम् । विमूढाः । न । अनुपश्यंति । पश्यंति । ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! उत्क्रमणकरतेहुए अथवा तिसीहीदेहविषेस्थितहुए अथवा विषयोंकूंभोगतेहुए तथागुणोंकरिकैयुक्तहुए ऐसेआत्माकूं भी विमूढपुरुष नहीं देखसकतेहैं किंतु ज्ञानरूपचक्षुवालेपुरुषही तिसआत्माकूं देखतेहैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वास्तवतैंगमनादिकसर्वविकारोंतैंरहितहुआभी अंतःकरणादिकउपाधिकेतादात्म्यअध्यासतैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकेप्रति गमनकरताहुआ जोयहआत्माहै ।। अथवा तिसपूर्वलेशरीरविषेही स्थितहुआ जोयहआत्माहै ।। अथवा तिसदूसरेशरीरविषे शब्दादिकविषयोंकूंभोगताहुआ

जेश्रोत्रादिकइंद्रिय जाग्रत्स्वप्नकेभोगजनककर्मोंकेक्षयहुए प्रकृतिविषेस्थितहैं अर्थात् अज्ञानरूपप्रकृतिविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहैं ऐसेमनसहितइंद्रियोंकूं सोजीवात्मा पुनः जाग्रत्भोगोंकेजनककर्मोंकेउदयहुए तिनभोगोंकेवासतै आकर्षणकरैहै अर्थात् जैसे कूर्मनामाजंतु आपणेशरीरविषेलीन करेहुए शिरपादादिकअंगोंकूं पुनः तिसआपणेशरीरतैं बाह्यप्रगटकरैहै तैसे सोजीवात्माभी तिसअज्ञानरूपप्रकृतितैं मनसहितइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंकेग्रहणकी योग्यतारूपकरिकै पुनःप्रगटकरैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मज्ञानतैं अनावृत्तिहुएभी अज्ञानतैं पुनःआवृत्ति कोईअनुपपन्ननहींहै किंतु अज्ञानतैं इस जीवात्माकी पुनःआवृत्ति युक्तहीं है ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन्! यहजीवात्मा जिसकालविषे तिनमनसहितइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) शरीरंयदवाप्नोतियच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ॥ गृहीत्वैतानिसंयातिवायुर्गंधानिवाशयात् ॥ ८ ॥ शरीरम् । यत् । अवाप्नोति । यत् । च । अपि । उत्क्रामति । ईश्वरः । गृहीत्वा । एतानि । संयाति । वायुः । गंधान् । इव । आशयात् ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन! जिसकालविषे यहजीवात्मा उत्क्रमणकरै है तिसकालविषे तिनइंद्रियोंकूं आकर्षणकरै है तथा जिसकालविषे दूसरे शरीरकूं प्राप्तहोवैहै तिसकालविषे इनमनसहितइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकै भी जावैहै जैसे पुष्पादिकस्थानतैं वायु गंधकूं ग्रहण करिकैजावैहै ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन! देहइंद्रियरूपसंघातकास्वामिहोणेतैं ईश्वररूप जोयहजीवात्माहै सो यहजीवात्मा जिसकालविषे उत्क्रमणकरैहै अर्थात इसदेहतैंबाह्यनिर्गमनकरैहै तिसकालविषे यहजीवात्मा जिसदेहतैंबाह्य निर्गमनकरैहै तिसदेहतैं मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ हेअर्जुन! यहजीवात्मा तिनमनसहितइंद्रियोंकूं केवल आकर्षणहीनहींकरैहै किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे इसपूर्वशरीरतैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे तिनमनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकैभी जावैहै ॥ तिनइंद्रियोंकूंछोडिकै जातानहीं अर्थात् जैसे तिसपरित्यागकरेहुएपूर्वलेशरीरविषे पुनःआवैनहीं तैसे तिन इंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै जावैहै ॥ यहअर्थ (संयाति) इसवचनविषे सं इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं सूचनकर्‍या ॥ अब इसस्थूलशरीरकेविद्यमानहुएही तिसशरीरतैं इंद्रियोंकेग्रहणकरणेविषे श्रीभगवान् दृष्टांतकूं कथनकरैं हैं ॥ (वायुर्गंधानिवाशयात्इति) हेअर्जुन! जैसे पुष्पादिकस्थानतैं गंधरूपसूक्ष्मअंशोंकूंग्रहणकरिकैवायु पूर्वादिकदिशावोंविषे गमनकरैहै तैसे यहजीवात्माभी इसस्थूलदेहतैं मनसहितइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै परलोकविषेगमनकरैहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

तहां (उत्क्रामंतम्) इसश्लोकविषे स्थितजो (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) यहवचनहै ॥ इसवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् (यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम्) इसअर्द्धश्लोककरिकै वर्णनकरैंगा ॥ और (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूंतौ (यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः) इसअर्धश्लोकरिकै वर्णनकरैंगा ॥ इसप्रकारतैं इनवक्ष्यमाणपंचश्लोकोंकी परस्परसंबंधरूपसंगति सिद्धहोवैहै ॥ अभीआगे इनपंचश्लोकों के केवल अक्षरोंकेअर्थकूं वर्णनकरैं गे इति ।

(मू. श्लो.) ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ॥ मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥ ७ ॥ मम । एव । अंशः । जीवे लोके । जीवभूतः । सनातनः । मनःषष्ठानि । इंद्रियाणि । प्रकृतिस्थानि । कर्षति ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इससंसारविषे मैंपरमात्माका ही अंश सनातन जीवरूपहै सोजीव मनहैछठा जिनोंविषे ऐसेप्रकृतिविषे स्थित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरेहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहित जो मैंपरमात्मादेवहूं तिसमैंपरमात्मादेवकाही मायाकरिकैकल्पित अंशकीन्यांईअंशरूप इससंसारविषे वियमानहै अर्थात् जैसेवास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितसूर्यका जलविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप प्रतिबिंब होवैहै तथा जैसे वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितमहाकाशका घटविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप घटाकाश होवैहै तैसे वास्तवतैंअंशअंशीभावतैंरहित मैंपरमात्मादेव काभी इससंसारविषे मिथ्याभेदवालाअंशकीन्यांईअंश वियमानहै ॥ सो मैंपरमात्मादेवकाअंश प्राणोंकाधारणरूपउपाधिकरिकै जीवभूतहुआहै अर्थात् कर्त्ता भोक्ता संसारी इसप्रकारकी मिथ्याही प्रसिद्धिकूं प्राप्तहुआहै ।। कैसाहैसोजीवरूपअंश सनातनहै क्या नित्यहै अर्थात् अंतःकरणादिकउपाधिकृतपरिच्छिन्न ताकेहुएभी वास्तवतैं सोजीवात्मा परमात्मास्वरूपही है ।। काहेतैं श्रुतिविषे तिसपरमात्मादेवकाही इसशरीरविषे जीवरूपकरिकै प्रवेश कथनकऱ्याहै ।। तहांश्रुति ॥ (सएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः । तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत् ।।) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवही इससंघातविषे नखकेअग्रभागतैंलेके प्रवेशकरताभया ।। और सोपरमात्मादेव इससंघातकूंउत्पन्नकरिकै आपही जीवरूपहोइकै इससंघातविषेप्रवेशकरताभया इति ।। यातैं आत्मज्ञानतैं अज्ञानकेनिवृत्तहुए यह जीवात्मा आपणेस्वरूपभूतब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै तिसब्रह्मतैं पुनःआवृत्तिकूंनहीप्राप्तहोवैहै यहअर्थ जोपूर्व कथनकऱ्याथा सोयुक्तही है ॥ शंका—हेभगवन् ! स्वस्वरूपकूंप्राप्त हुआभी यहजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थातैं पुनः किसप्रकार आवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं॥(मनःषष्ठानिइति) हेअर्जुन ! मनहै छठाजिनोंविषे ऐसेजो श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं अर्थात् इंद्ररूपआत्माके शब्दादिकविषयों केउपलब्धिकारणरूपकरिकै लिंगरूप जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥

तथातिसब्रह्मतैं अनावृत्तिहै यहदोनोंभी गौणहैं मुख्यनहीं हैं ॥ आपणेतैं भिन्नवस्तुकेप्रति जोगमनहै तथातिसतैंआवृत्तिहै सोगमन तथाअनावृत्ति दोनोंही मुख्य कहेजावैं हैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं जीवब्रह्मकेअभेदहुएभी जो तिन्होंकाभेदभ्रमहोवैहै सोभेदभ्रम केवल अंतःकरणादिकउपाधिकेवशतैंहीहोवैहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेवशतैं घटाकाशका महाकाशतैं भेदभ्रमहोवैहै ॥ ताअंतःकरणादिकउपाधिकेनिवृत्तहुए सोभेदभ्रमभी निवृत्तहोइजावैहै इति ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ जीवकाउपाधिभूत सो संस्कारकर्मादिविशिष्ट अंतःकरण आपणेकारणरूपअज्ञानविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तातैं तिसअज्ञानरूपकारणतैंही तिसअंतःकरणका पुनरुद्भवहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानकरिकै जबी अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै तबी अज्ञानरूपकारणकेअभावहुए अंतःकरणादिककार्योंकीउत्पत्ति कहांतैं होवैगी किंतु नहींउत्पत्तिहोवैगी ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ इसजीवके अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारके वेदांतवाक्यजन्यसाक्षात्कारतैं मैंब्रह्मनहींहूं इसप्रकारके अज्ञानकीजानिवृत्तिहै साअज्ञानकीनिवृत्तिही श्रीभगवान्नैं (यद्गत्वा) इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहुआजो अनादि अज्ञानहै तिसअज्ञानके पुनःउत्थानकेअभावतैं जो तिसअज्ञानकेकार्यरूपसंसारकाअभावहै सोसंसारकाआभावही श्रीभगवान्नैं (ननिवर्त्तते) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान्केवचनोंविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और इसजीवका पारमार्थिकस्वरूप ब्रह्मही है यहवार्त्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं इसतैंउत्तरग्रंथकरिकै प्रतिपादनकरियेगा ॥ तहां यहजीवात्मा वास्तवतैंब्रह्मरूपही है ॥ यातैं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजीवकी तिसब्रह्मरूपतातैं पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् (ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः ॥) इसअर्द्धश्लोककरिकै कथनकरैगा ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ सर्वकार्यों केसंस्कारसहितअज्ञान विद्यमानहै ॥ याकारणतैंही इसजीवात्माकूं तिससुषुप्तितैं पुनः संसारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् (मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥) इसअर्द्धश्लोककरिकै कथनकरैगा ॥ तिसतैंअनंतर वास्तवतैंअसंसारीरूपहुआभी मायाकरिकैसंसारीभावकूंप्राप्तहुआ तथामंदमतिपुरुषोंनैं देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तकऱ्याहुआ ऐसाजो यहजीवात्माहै तिसजीवात्माका तिसदेहतैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (शरीरंयदवाप्नोति) इसश्लोककरिकैकथनकरैगा ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरणेहारा जोयहजीवात्माहै तिसजीवात्माका तिनश्रोत्रादिकइंद्रियों तैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंच) इसश्लोककरिकैकथनकरैगा ॥ तहां इसप्रकार देहइंद्रियादिकों तैंविलक्षणआत्माकूं उत्क्रांतिआदिकअवस्थावोंविषे सर्वप्राणी किसवास्तैनहीं देखतेहैं ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए विषयवासनाकरिकैविक्षिप्तचित्तवालेपुरुष दर्शनयोग्यभी तिसआत्मादेवकूं नहीं देखिसकैंहैं ॥ इसप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् (उत्क्रामंतंस्थितंवापि) इसश्लोककरिकै कथनकरैगा ॥

प्राप्तहुएहैं तेपदार्थ अंतविषे अवश्य नीचैपतनहोवैं हैं और जेपदार्थसंयोगवालेहुएहैं तेपदार्थ अंतविषे अवश्य वियोगवालेहोवैं हैं ॥ और जिसपदार्थका जन्म हुआहै सोपदार्थ अंतविषे अवश्य मरणकंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोआप यहवचनकहो ॥ अनात्मवस्तुकीप्राप्तिही अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैहै आत्माकी प्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैनहीं सोयहआपकाकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (सतासोम्यतदासंपन्नोभवति) इसश्रुतिनैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणी मात्रकूं आत्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ।। परंतुसाआत्मभावकीप्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीही है ॥ जोकदाचित् सुषुप्तिविषे आत्मभावकूंप्राप्तहुएप्राणियोंकी जाग्रत्विषे पुनरावृत्ति नहीं अंगीकारकरिये तौ तिससुषुप्तिमात्रकरिकेही सर्वप्राणी मुक्तहोवैंगे ॥ यातैं मुक्तहुएतिनसुषुप्तपुरुषोंका पुनःउत्थान नहींहोणाचाहिये और तिनसुषुप्तपुरुषोंकी पुनरावृत्तितौ देखणेविषे आवै है ।। यातैं तिसपरब्रह्मरूपपदकीप्राप्तिविषे (यद्गत्वा) यहवचनकहणा संभवतानहीं ॥ और तिसगमनकूं जोगौणमानियें तौभी तिसपदतैं अनिवृत्ति नहींसंभवैहै ।। इसप्रकारकी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं ।। हे अर्जुन ! तिसब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोणे हारा जोजीवात्माहै सोजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैं कोईभिन्ननहीं है किंतुयहजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैंअभिन्नही है ।। और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपही है इसअर्थकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म अयमात्माब्रह्म) इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरैं हैं यातैं (यद्गत्वाननिवर्त्तन्ते) इसवचनकरिकै कथनकरीजा जीवा त्माकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै साप्राप्ति स्वर्गादिकोंकेप्राप्तिकीन्याईं मुख्यनही हैं किंतु साप्राप्तिगौणहै अर्थात् अज्ञानमात्रकरिकैव्यवहितजोब्रह्महै तिसब्रह्मकी अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकाज्ञानमात्रही प्राप्तिकहीजावैहै ।। तहां जिसपक्षमैं अंतःकरणविषे अथवा अविद्याविषे जो ब्रह्मकाप्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंबही जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौ जैसे जलविषेप्रतिबिंबितसूर्यका ताजलकेअभावहुए बिंबभूतसूर्यकेप्रति गमनहोवैहै ।। तथा तिसबिंबभूतसूर्यतैं तिसप्रतिबिंबकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेअभावहुए इसप्रतिबिंबरूपजीवकाभी तिसनिरुपाधिकबिंबरूपब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिस ब्रह्मतैं इसजीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ और जिसपक्षमैं बुद्धिअवच्छिन्नजोब्रह्मकाभागहै ताकानाम जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौ जैसे घटाकाशका घटरूपउपाधिकै निवृत्तहुए महाकाशकेप्रति गमनहोवैहै ।। तथा तिसमहाकाशतैं ताघटाकाशकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं तैसे इसजीवात्मा काभी तिसबुद्धिरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिसब्रह्मतैं इस जीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ इहां जैसे वास्तवतैं बिंबरूपसूर्यतैंअभिन्न प्रतिबिंबरूपसूर्यका तिसबिंबरूपसूर्यकेप्रतिगमन तथातिसतैं अनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहीं हैं ।। और जैसे वास्तवतैं महाकाशतैं अभिन्नघटाकाश का तिसमहाकाशकेप्रति गमन तथातिसतैंअनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहीं हैं तैसे वास्तवतैंब्रह्मतैंअभिन्नइसजीवात्माका जो तिसब्रह्मकेप्रति गमनहै

श्रुतिकायहअर्थ है ॥ जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष इसअदृश्य अनात्म अनिरुक्त अनिलयन ब्रह्मविषे भयतैंरहित स्थितिकूंप्राप्तहोवै है तिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष पुनरावृत्तिकेभयतैंरहित ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे अदृश्य अनात्म्य अनिरुक्त अनिलयन यहच्यारिविशेषण ब्रह्मकेकथनकरे हैं ॥ तहां चक्षुकीदृष्टिका जो अविषयहोवै ताकानाम अदृश्यहै ॥ इसअदृश्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे सूर्यकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या ॥ और मनरूप आत्माका जो विषयहोवै है ताकानाम आत्म्यहै तिसतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनात्म्यहै इसअनात्म्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे मनकी अविषयता कथनकरिकै चंद्रमाकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या और स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवै जिसविषे ताकानाम निलयनहै ॥ ऐसाअव्याकृत रूपकारणहै तिसकारणरूपनिलयनतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनिलयनहै ॥ इसीकारणतैंही सोब्रह्म अनिरुक्तहै अर्थात् कथनकरणेकूंअयोग्यहै ॥ इसअनिरुक्तविशेषणकरिकै तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीअविषयताकथनकरिकै अग्निकृतप्रकाशका निषेधकऱ्या इति ॥ और केईकभेदवादीतौ (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ करैं हैं ॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि इनतीनोंकरिकैअप्रकाश्य तथाअर्चिरादिमार्गकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य तथाब्रह्मलोकतैंभीऊपरिस्थित तथाअप्राकृत तथानित्य ऐसा वैष्णवपद देशांतरविषेस्थितहै तिसवैष्णवपदकूं अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवै है इति ॥ सोयह तिनभेदवादियोंका अर्थ अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं (नरूपमस्येहतथोपलभ्यते) इसश्लोकविषे सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्यारूपही कथनकऱ्या है ॥ और (अतोऽन्यदार्तम्) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवतैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याहैं ॥ इसश्रुतिनैंभी परमात्मादेवतैंभिन्न सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्याकह्याहै सोदृश्यपणा जैसे इनलोकोंविषे है तैसे तिसवैष्णवलोकविषेभी सोदृश्यपणा तुल्यही है ॥ यातैं देशांतरविषेस्थित तिसवैष्णवलोकविषेभी सोमिथ्यापणा अवश्यकरिकैहोवैगा ॥ ऐसेमिथ्यालोकविषेप्राप्तहुएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिभी अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ यातैं यहभेदवादियोंकाव्याख्यान समीचीननहीं है किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् ! (यद्गत्वाननिवर्तंते) यहआपकावचन असंगतहै ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसपदविषे जावैंगे तो तिसपदतैं अवश्यकरिकै निवृत्तभीहोवैंगे ॥ जैसे स्वर्गविषेगएहुएकर्मीपुरुष तास्वर्गतैं अवश्यकरिकै पीछेआवैं हैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसपदतैं पीछेनहींआवैंगे तो तिसपदविषे जावैंगेभीनहीं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिसपदविषे जाते हैं ॥ और तिसपदतैं पुनः आवतेनहीं यहदोनोंवचन परस्पर विरुद्धहैं ॥ और जो जहांजाताहै सो तहांतैं अवश्य फिरआवताहै यहवार्त्ता शास्त्रविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वेक्षयांतानिचयाःपतनांताःसमुच्छ्रयाः ॥ संयोगाविप्रयोगांतामरणांतंहिजीवितम् ॥) ॥ अर्थयह ॥ जेपदार्थवृद्धिवाले हैं तेपदार्थ अंतविषे अवश्य क्षयवालेहोवैं हैं ॥ और जेपदार्थ उच्चस्थानविषे

नैं प्रकाशकरीते हैं ॥ और यहपरब्रह्मरूपपदतौ रूपवान् हुआ चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ।। यातैं इसपदकूं सोसूर्यप्रकाशकरिसकतानहीं ।। तहां (नतत्रचक्षुर्गच्छति नचक्षुषागृह्यते) इत्यादिकश्रुतियां तिसपरब्रह्मविषे चक्षुइंद्रियकीअविषयताकूं कथनकरैं हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपदविषे सर्वबाह्यइंद्रियोंकीनिवृत्ति कथनकरी ।। अब तिसपदविषे मनकीव्यावृत्ति कथनकरैं हैं (नशशांकःइति) हेअर्जुन ! तिसपदकूं चंद्रमाभी नहींप्रकाशकरिसकैहै ।। काहेतैं जोवस्तु मनकरिकैग्रहणकरीजावै है तिसवस्तुकूंही सोमनऊपरिअनुग्रहकरणेहाराचंद्रमा प्रकाशकरै है ।। और यहपरब्रह्मरूपपदतौ तिसमनकरिकैग्रहण होतानहीं ।। यातैं इसपरब्रह्मकूं सोचंद्रमाभी प्रकाशकरिसकतानहीं ।। तहां (यन्मनसानमनुते) इत्यादिक श्रुतियां तिसब्रह्मरूपपदविषे मनकीविषयताका निषेधकरैं हैं ॥ और तिसपरब्रह्मरूपपदकूं अग्निभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु वाक्इंद्रियकाविषयहोवै है तिसवस्तुकूंही सोवाक्इंद्रियऊपरिअनुग्रहकरणेहारा अग्नि प्रकाशकरै है तावाक्इंद्रियकेअविषयवस्तुकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ और (यद्वाचानभ्युदितम् । नचक्षुषागृह्यतेनापि वाचा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीविषयताका निषेधकऱ्या है ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद चक्षु मन वाक् इनतीनोंका अविषयहै तिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद स्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वप्रपंचतैंरहित प्रत्यक्अद्वितीयरूपहै ॥ इसप्रकार (नांतःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञंअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकश्रुतियोंनैं सर्वधर्मोंतैंरहितकरिकै जो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयब्रह्म प्रतिपादनकऱ्या है सोअद्वितीयब्रह्म मैंपरमेश्वरका परमधामहै अर्थात् परमभावतैंरहित जोअंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानहै तिसवृत्तिरूपज्ञानतैंअन्य चिन्मात्रज्योतिरूपहै ॥ इहां राहोःशिरः इसवाक्यविषे राहुपदतैं उत्तरसंबंधकावाचकषष्ठीविभक्तिके विद्यमानहुएभी जैसे राहुकाशिरहै इसप्रकारकाबोधहोतानहीं किंतु राहुतैंअभिन्नशिरहै इसप्रकारका अभेदबोधहीहोवैहै ॥ तैसे (तद्धामपरमंमम) इसवचनविषे मम इसपदतैं उत्तरसंबंधकावाचक षष्ठीविभक्तिकेविद्यमानहुएभी मेरापरमधामहै याप्रकारकाबोधहोवैनहीं किंतु मैंपरमेश्वरतैंअभिन्न सोस्वप्रकाशब्रह्मरूपधामहै याप्रकारका अभेद बोधहीहोवै है इति ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं सोअद्वितीयस्वयंज्योतिब्रह्मरूपपद मैंपरमेश्वरका स्वरूपही है ॥ इसकारणतैंही जिसपदकूं अहंब्रह्मास्मि इसज्ञानपूर्वक प्राप्तहोइके विद्वान्पुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं अर्थात् पुनः जन्मकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं पुनः आवृत्तिकाकारणरूप जोमूलअज्ञानहै सोमूलअज्ञान तिनपुरुषोंका मैंपरब्रह्मकेअभेदज्ञानतैं निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तेतत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ इसकारणतैं इसश्लोककेव्याख्यानकियेहुएही (यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयंप्रतिष्ठांविंदते अथसोऽभयं गतोभवति ॥) इसश्रुतिकेअर्थकी तिसश्लोकविषे अनुकूलताहोवै है ॥ इस

जोवस्तु तिसज्योतिकरिकै भास्यमानहोवैहै सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ जैसे सूर्यरूपज्योतिकरिकैभास्यमान घटादिकपदार्थ स्वभासकसूर्यरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं तैसे यहसूर्यचंद्रमादिकजडज्योतिभी स्वभासकचैतन्यपरब्रह्मरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ इतनेकहणे करिके श्रीभगवानूनैं यहअनुमान सूचनकरचा ॥ सूर्य चंद्रमादिक परब्रह्मकेप्रकाशकनहीं है तिसपरब्रह्मकरिकैभास्यमानहोणे तैं जोवस्तु जिसज्योतिकरिकैभास्यमान होवैहै सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूंप्रकाशकरतानहीं है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ सूर्यकूं प्रकाशकरतेनहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः । तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सूर्यभी नहींप्रकाशकरिसकता तथा चंद्रमा तारागणभी नहींप्रकाशकरिसकते तथा यहविद्युत्भी नहींप्रकाशकरिसकते तौ यहअल्पप्रकाशवालाअग्नि तिसपरब्रह्मकूं कैसेप्रकाशकरिसकैगा किंतु नहींप्रकाशकरिसकैगा ॥ और तिसपरब्रह्मकेप्रकाशमानहुएतैंपश्चात्‌ही यहसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ तथा तिसपरब्रह्मकी प्रकाशरूपदीप्तिकरिकैही यहसर्वजगत् प्रतीतहोवैहै इति ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदकूं स्वप्रकाशरूपताकहणेकरिकै श्रीभगवानूनैं इसशंकाकीनिवृत्तिकरी सोपरब्रह्मरूप वैष्णवपद वेद्यहै अथवानहीं अर्थात् किसीकेज्ञानकाविषयहै अथवा नहीं जोकहो सोपद वेद्यहै तौ जोवस्तु वेद्यहोवैहै सोवस्तु आपणेतैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरैहै ॥ जैसे घटादिकवेद्यवस्तु आपणे तैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरै है तैसे सोवेद्यपदभी आपणेभिन्न किसीवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्य करैगा ॥ यातैं तुम्हारेमतविषे द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोपद अवेद्यहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरो तौ तिसपदविषे अपुरुषार्थरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ जिसकारणतैं अवेद्यपदविषे पुरुषार्थरूपतासंभवतीनहीं इति ॥ इस शंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ काहेतैं सोपदब्रह्मरूपपद अवेद्यहुआभी आपपरोक्षरूपहीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जोब्रह्म साक्षात्अपरोक्षरूपहै इति ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति तथापुरुषार्थरूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदविषे अवेद्यरूपतातौ श्रीभगवानूनैं (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकविषे सूर्यादिकोंकरिकेअभास्यमानत्वरूपहेतुकरिकै कथनकरीहै ॥ और सर्वकीप्रकाशकताकरिकै स्वयंअपरोक्षपणातौ (यदादित्यगतंतेजः) इसवक्ष्यमाणश्लोकविषे श्रीभगवान् कथनकरैंगा ॥ इसप्रकार दोनोंश्लोकोंकरिकै श्रीभगवानूनें (नतत्रसूर्योभाति) इसपूर्वउक्तश्रुतिके दोनोंविभागोंकाअर्थ कथनकरचा इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरब्रह्मपदकूं सूर्यभीनहीं प्रकाशकरै है ॥ काहेतैं सोपद रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ॥ जोरूपवान्वस्तु चक्षुइंद्रियकाहोवैहै सोरूपवान्वस्तुही तिसचक्षुऊपरिअनुग्रहकरणेहारेसूर्यनैं प्रकाशकरीताहै ॥ जैसे रूपवान्घटादिकपदार्थ चक्षुइंद्रियकाविषयहोणेतैं सूर्य

वेदांतप्रमाणतैं उत्पन्नहुए सम्यक्आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तकर्याहैआत्माकाअज्ञान जिन्होंनैं ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषही तिसपूर्वउक्त अविनाशी परब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां इनपूर्वउक्तसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूप वैष्णवपदहै तिसीहीगंतव्यपदकूं अब श्रीभगवान् विशेषणोंकरिकैकथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ ६ ॥ नँ । तँत् । भासयते । सूर्यः । नँ । शशांकः । नँ । पावकः । यँत् । गैत्वा । नँ । निवर्त्तते । तँत् । धाम । परमम् । मँम ॥ ६ ॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसपदकूं प्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष नहीं आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैंहैं तिसपदकूं सूर्यभी नहीं प्रकाशकरिसकैहै तथा चंद्रमाभी नहीं प्रकाशकरि सकैहै तथाअग्निभी नहीं प्रकाशकरिसकैहै जिसकारणतैं मैंविष्णुका स्वरूपभूत सोपदसर्वतैंउत्कृष्टस्वयंप्रकाशस्वरूपहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्तसाधनोंकरिकै जिस निर्गुणअद्वितीयब्रह्मरूप वैष्णवपदकूं प्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहै अर्थात् पुनः जन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सर्वजगत्केप्रकाशकरणेकीशक्तिवाला सूर्यभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! सूर्यकेअस्तहुएभी चंद्रमाकृतप्रकाश देखणेविषे आवैहै ॥ यातैं सोचंद्रमाही तिसपदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (नशशांकइति) हे अर्जुन ! सोचंद्रमाभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! सूर्य चंद्रमा दोनोंकेअस्तहुएभी अग्निकृतप्रकाश देखणेमैंआवैहै ॥ यातैं सोअग्निही तिस पदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (नपावकःइति) हे अर्जुन ! सोअग्निभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीनों तिसपदकूं प्रकाशनहींकरिसकते इसप्रकारकीप्रतिज्ञामात्र तैं तिस अर्थकीसिद्धिहोइसकतीनहीं ॥ जोकदाचित् प्रतिज्ञामात्रतैंही अर्थ कीसिद्धिहोतीहोवै तौ वंध्यापुत्रोऽस्ति इसप्रतिज्ञामात्रकरिकै वंध्यापुत्रकीभी सिद्धिहोणीचाहिये और होतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रतिज्ञाकरेहुएअर्थकी सिद्धिविषे कोईहेतुकह्याचाहिये सोहेतुकौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषे तिसपरब्रह्मकीस्वयंप्रकाशतारूपहेतुकूं कथनकरैंहैं (तद्धा मपरमंममइति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं मैंव्यापकविष्णुका स्वरूपभूत सोपद धामरूपहै अर्थात् स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा सूर्य चंद्रमा अग्नि इत्यादिकसर्व जडज्योतियोंकूं प्रकाशकरणेहाराहै तथा परमहै अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ तिसकारणतैं तेसूर्यचंद्रादिक तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ लोकविषेभी

हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (यतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणीइति) हे अर्जुन ! जिसआद्यपुरुषतैं मायाकेयोगकरिकै इसमायामयसंसारवृक्षकी यहअनादिप्रवृत्ति चलीहुई है जैसे ऐंद्रजालिकपुरुषतैं मायामय हस्तिआदिकोंकीप्रवृत्ति होवैहै तैसे जिसआद्यपुरुषतैं इसमायामयसंसारवृक्षकी प्रवृत्तिहुई है ऐसेआद्यपुरुषकेशरण कीप्राप्तिहीं तिसपदकेजानणेकाउपायहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब तिसवैष्णवपदकेज्ञानपूर्वक तिसवैष्णवपदकूंप्राप्तहोणेहारे अधिकारीपुरुषोंके तिसपदकीप्राप्ति वासतै दूसरेसाधनोंकूं भी श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदमव्ययंतत् ॥ ५ ॥
निर्मानमोहाः जितसंगदोषाः । अध्यात्मनित्याः । विनिवृत्तकामाः । द्वंद्वैः । विमुक्ताः । सुखदुःखसंज्ञैः । गच्छंति । अमूढाः । पदम् । अव्ययम् । तत् ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मानमोहदोनोंनिवृत्तहुएहैंजिन्हों तैं तथाजीत्याहैसंगदोषजिन्हों नें तथाप रमात्मस्वरूपकेविचारविषेतत्पर तथानिवृत्तहुएहैंकामजिन्होंके तथासुखदुःखनामवाले शीतउष्णादिकद्वंद्वों नें परित्यागकरेहुए ऐसे विद्वान्पुरुष तिस अव्यय पदकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! गर्वहैनामजिसका ऐसाजो अहंकारहै ताअहंकारकानाम मानहै ॥ और अविवेककानाम मोहहै अथवा विपर्ययकानाम मोहहै ॥ तिस मान मोहदोनोंतैं जेपुरुष निकसेहुएहैं तिनपुरुषोंकानाम निर्मानमोहहै ॥ अथवा तेमानमोहदोनों निवृत्तहुएहैं जिन्होंतैं तिन्होंकानाम निर्मानमोहहै अर्थात् अहंकार अ विवेक दोनोंतैंरहित पुरुषोंकानाम निर्मानमोहहै ॥ तथा जेपुरुष जितसंगदोषहैं अर्थात् प्रियअप्रियपदार्थोंकीसमीपताकेप्राप्तहुए भी जेपुरुष रागद्वेषतैं रहितहैं ॥ अथवा जीत्याहुआहै संग तथादोष जिनोंनें तिनोंकानाम जितसंगदोषहै ॥ इहां संगशब्दकरिकैतौ मैंकर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकाग्रहण करणा ॥ और दोषशब्दकरिकै रागद्वेषादिकदोषोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा जेपुरुष अध्यात्मनित्यहैं अर्थात् जेपुरुष परमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपके विचारविषे निरंतर तत्परहैं तथा जेपुरुष विनिवृत्तकामहैं तहां विशेषकरिकै निवृत्तहुएहैं विषयभोगरूपकाम जिनोंके तिनोंकानाम विनिवृत्तकामहै अर्थात् जिनपुरुषोंनें विवेकवैराग्यद्वारा सर्वकर्म त्यागकरेहैं तिन्होंकानाम विनिवृत्तकामहै ॥ और सुखदुःखकाहेतुहोणेतैं सुखदुःखनामवाले ऐसेजे शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिक द्वंद्वहैं ऐसे द्वंद्वों नें जेपुरुष परित्यागकरेहैं ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौ (सुखदुःखसंगैः) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ताका यहअर्थकरणा ॥ सुखदुःखदोनोंके साथिहै संग क्या संबंध जिनोंका ऐसेजे शीतउष्णादिकद्वंद्वहैं तिनद्वंद्वोंनैं जेपुरुषपरित्यागकरे हैं ॥ इसप्रकारके अमूढपुरुष अर्थात्

(मू. श्लो.) ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गतानानिवर्ततिभूयः ॥ तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येयतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणी ॥ ४ ॥
ततः । पदम् । तत् । परिमार्गितव्यम् । यस्मिन् । गताः । न । निवर्त्तंति । भूयः । तम् । एव । च । आद्यम् । पुरुषम् । प्रपद्ये । यतः । प्रवृत्तिः । प्रसृता । पुराणी ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिसतैंअनंतर सोब्रह्मरूप पदही जानणेयोग्य है जिसपदविषे स्थितहुए विद्वान्पुरुष पुनः नहीं जन्मकूं प्राप्तहोवे है तथा जिसपुरुषतैं इससंसारवृक्षकीप्रवृत्ति अनादि पसरिहुईहै तिस आद्य पुरुषकेही मैंशरणकूंप्राप्तहुआहूं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष तिसवैराग्यरूपअसंगशस्त्रकरिकै पूर्वउक्तसंसाररूपवृक्षकूं मूलसहित उच्छेदनकरिकै तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजाइकै तिससंसाररूपअश्वत्थवृक्षतैंऊर्ध्वस्थितजोशुद्धब्रह्मरूपवैष्णवपदहै जोपद (तद्विष्णोःपरमंपदम्) इत्यादिकश्रुतियों नैं प्रतिपादनकऱ्याहै सोशुद्धब्रह्मरूप पदही इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणमननरूप वेदांतवाक्योंके विचारकरिकै जानणेकूंयोग्यहै ॥ तहांश्रुति (सोऽन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः) ॥ अर्थयह ॥ सोपरब्रह्मही इसअधिकारीपुरुषकूं अन्वेषणकरणेकूंयोग्यहै तथा सोब्रह्महो इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेकीइच्छाकरणेयोग्यहै इति ॥ तहां मार्गकरिकै जो वस्तुका खोजणाहै ताकानाम अन्वेषणहै ॥ शंका—हे भगवन् ! सर्व कर्मोंकेसंन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं जोपद जानणेयोग्यहै सोपद कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (यस्मिन्गतानानिवर्त्ततिभूयःइति) हे अर्जुन ! जिसपदविषे अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेज्ञानकरिकै प्राप्तहुए तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः संसारकीप्राप्तिवासतै नहींआवैं हैं अर्थात् पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैं हैं सोअद्वितीयब्रह्मरूपपदही इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ शंका—हे भगवन् ! सोनिर्गुणब्रह्मरूपपद किसउपायकरिकै जान्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तापदकेजानणेकाउपाय कथनकरैं हैं (तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येइति) हे अर्जुन ! पूर्व जोअद्वितीयनिर्गुणब्रह्म पदशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तिसीही परब्रह्मरूपआद्यपुरुषके मैंअधिकारी जन शरणकूंप्राप्तहुआहूंइसप्रकारतैं जो तिसएकपरब्रह्मकीशरणताहै ताशरणताकरिकैही सोपरब्रह्मरूपपद जान्याजावैहै ॥ तहां सर्वजगत्केआदिविषे जोविद्यमान होवै ताकानाम आद्यहै ॥ और यहसर्वजगत् जिसनैं आपणे अस्तिभाति प्रियरूपकरिकै पूर्णकऱ्याहै ताकानाम पुरुषहै ॥ अथवा इनशरीररूपसर्वपुरियोंविषे जो अधिष्ठानरूपकरिकैशयनकरै है ताकानाम पुरुषहै ॥ ऐसेआद्यपुरुषरूपपरब्रह्मका जोनिरंतरचिंतनरूप अनन्यभक्तिहै साअनन्यभक्तिहीतिसपरब्रह्मरूपपदकेसाक्षात्कारकाउपायहै इति ॥ शंका—हे भगवन् ! सोकौनपुरुषहै जिसकेशरणकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष तिसवैष्णवपदकूं जानताहै ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाके

टीका। हे अर्जुन! पूर्ववर्णनकऱ्याजो यहसंसाररूपवृक्षहै सोकैसाहै इससंसारविषे स्थितप्राणियोंनैं इससंसारवृक्षका जिसप्रकारका ऊर्ध्वमूल अधःशाख इत्यादिकरूप पूर्ववर्णनकऱ्याहै तिसप्रकारकारूप नहींजानीताहै ॥ काहेतैं जैसे स्वप्नकेपदार्थ तथामृगतृष्णाकाजल तथामायारचितपदार्थ तथागंधर्वनगर यहसर्व मिथ्याहोणेतैं दृष्टनष्टस्वरूपवालेही हैं ॥ तैसे यहसंसारवृक्षभीमिथ्या होणे तैं दृष्टनष्टस्वरूपवालाही है ॥ तहां जोपदार्थ देखतेदेखते नष्टहोइजावै है ताकानाम दृष्टनष्टहै॥ ऐसेदृष्टनष्टस्वभाववाले इससंसारवृक्षका सोपूर्वउक्त ऊर्ध्वमूल अधःशाख इत्यादिकरूप इनजीवोंकूं देखणेविषेआवतानहीं ॥ इसीकारणतैंही इससंसार वृक्षका अवसानरूपअंतभी नहींप्रतीतहोवै है अर्थात् इतनेकालकेव्यतीतहुएतैंपश्चात् यहसंसारवृक्ष समाप्तिकूंप्राप्तहोवैगा इसप्रकारतैं इससंसारवृक्षका अंतभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष पारिअवसानरूपअंततैंरहितहै ॥ तथा इससंसारवृक्षका आदिभी नहींप्रतीतहोवै है अर्थात् इसकाल तैं लेके यहसंसारवृक्ष प्रवृत्तहुआहै याप्रकारतैं इससंसारवृक्षकाआदिभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष अनादिहै ॥ तथा इससंसारवृक्षकीस्थिति रूपप्रतिष्ठाभी प्रतीतहोतीनहीं अर्थात् मध्यभी प्रतीतहोतानहीं ॥ काहेतैं आदि अंत दोनोंकीअपेक्षाकरिकैही मध्य कह्याजावै है ताआदिअंतकेअसिद्धहुए सोमध्यभी सिद्धहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका यहसंसारवृक्ष जिसकारणतैं दुश्छेद्यहै तथासर्वअनर्थोंकेकरणेहाराहै तिसकारणतैं अनादिअज्ञानकरिकै अत्यंतदृढ बांध्याहैमूलजिसका ऐसे इसपूर्वउक्त अश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष छेदनकरै ॥ इहां विषयसुखकीस्पृहाकानाम संगहै तासंग काविरोधीजोवैराग्यहै ताकानाम असंगहै अर्थात् पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा इनतीनएषणावोंका त्यागरूप जोवैराग्यहै ताकानामअसंगहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्ध कुठारादिकशस्त्र लोकप्रसिद्ध वृक्षकेविरोधीहोवैं हैं तैसे यहवैराग्यभी इस रागद्वेषादिरूपसंसारवृक्षका विरोधीहै ॥ यातैं यहवैराग्यभी शस्त्ररूपहै ॥ कैसाहैयह वैराग्यरूप असंगशस्त्र दृढहै अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेब्रह्मज्ञानकीउत्कटइच्छाकरिकै दृढकऱ्याहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धशस्त्र पाषाण विशेषकेघर्षणतैं तीक्ष्णहोवै है तैसे जोवैराग्यरूपअसंगशस्त्र पुनःपुनः विवेकअभ्यासकरिकै तीक्ष्णहुआहै ॥ ऐसे दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनपूर्वउक्तसंसारवृक्ष मूलसहितउच्छेदनकरै अर्थात् वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनसंपत्तिकरिकै सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै ॥ यहही तिससंसारवृक्षकाछेदनहै इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! ऐसेसंसाररूपअश्वत्थवृक्षकूं असंगशस्त्रसैं छेदनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतैंअनंतरभी कछुकर्तव्यहै अथवा इतनैंमात्रकरिकैही कृतकृत्यताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसतैंअनंतर कर्तव्यताकूंकथनकरैं हैं।

शाखाहैं ॥ इसप्रकार मनुष्यलोकतैंआदिलैके पशु पक्षी वृक्ष नारकीयशरीरपर्यंत नीचैस्थानोंविषे तथातिसीमनुष्यलोकतैं लैके ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेस्थानोंविषे तिससंसाररूपवृक्षकी जीवरूपशाखा विस्तारकूंप्राप्तहुई हैं कैसीहैं तेशाखा गुणोंकरिकैप्रवृद्धहुई हैं अर्थात् जैसे प्रसिद्धवृक्षकीशाखा जलकेंसिंचनकरिकै स्थूल भावकूंप्राप्तहोवैं हैं तैसे देह इंद्रिय विषय इत्यादिकआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैं तिसतीनगुणरूपजलकरिकै तेजीवरूप शाखा स्थूलभावकूंप्राप्तहुई हैं पुनः कैसीहैं तेशाखा विषयरूपपल्लवोंवालीहैं अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखावोंकेअग्रभागकेसाथि कोमलअंकुररूप पल्लवोंका संबंधहोवै है तैसे पूर्वउक्तजीवरूपशाखावोंके अग्रभागस्थानीय जेइंद्रियजन्यवृत्तियां हैं तिनवृत्तियोंकेसाथि तिनशब्दादिकविषयोंकासंबंधहै ॥ याकारणतैं तेशब्दादिकविषय तिनशाखावोंके कोमलपल्लवरूपहैं पुनः कैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष जिससंसारवृक्षके अवांतरमूल नीचैतथाऊपरि अनुस्यूत होइकैरहैं हैं तहां तिसतिसपदार्थकेभोगकरिकैजन्य जे रागद्वेषादिकवासनाहैं जेवासना इसपुरुषकी धर्मअधर्मविषेप्रवृत्तिकरावैं हैं तेरागद्वेषादिकवासनाही इससंसारवृक्षके अवांतरमूलहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे इससंसारवृक्षका जो मायाविशिष्टब्रह्मरूपमूल कथनकऱ्याथा सोमुख्यमूल कथनकऱ्याथा ॥ और अबी वासनारूपअवांतरमूलकथनकरैं हैं ॥ यातैं इहां पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ कैसेहैं तेवासनारूपअवांतरमूल कर्मानुबंधीहैं ॥ तहां धर्मअधर्मरूपकर्म हैं पश्चात्भावी जिन्होंके तिन्होंकानाम कर्मानुबंधी है अर्थात् तेरागद्वेषादिकवासनारूपअवांतरमूल प्रथम आपउत्पन्नहोइकै पश्चात् ताधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्न करैं हैं ॥ तहां तेवासनारूपमूल किसस्थानविषे तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्न करैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तास्थानका कथनकरैं हैं (मनुष्य लोकेइति) तहां मनुष्यहोवै सोईही लोकहोवै ताकानाम मनुष्यलोकहै अर्थात् अधिकारीब्राह्मणादिकदेहोंकानाम मनुष्यलोकहै ॥ ऐसे अधिकारीब्राह्मणा दिकशरीरोंविषेही तेवासनारूपमूल बाहुल्यताकरिकै तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्नकरैं हैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रविषे मनुष्यकूंही कर्मकाअधिकार कथनकऱ्याहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसपूर्वउक्तसंसारविषे अनिर्वचनीयता कथनकरिकै ताकेछेदनकेउपायकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नरूपमस्येहतथोपलभ्यतेनांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥३॥ न । रूपम् । अस्य । इह । तथा । उपलभ्यते । न । अंतः । न । च । आदिः । न । च । संप्रतिष्ठा । अश्वत्थम् । एनम् । सुविरूढमूलम् । असंगशस्त्रेण । दृढेन । छित्त्वा ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इससंसारविषेस्थितप्राणियों नें इससंसारवृक्षका तिसप्रकारका रूप नहीं जानीताहै तथाअंतभी नहीं जानीताहै तथा आदिभी नहीं जानीताहै तथा मध्यभी नहीं जानीताहै ऐसेदृढमूलवाले इस अश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं अत्यंतदृढ वैराग्यरूपशस्त्रकरिकै छेदनकरिकै ब्रह्म जानणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

डरूपवेदभी इससंसाररूपवृक्षकेपरिरक्षणवासतैहीं हैं ॥ काहेतैं तेकर्मकांडरूपवेद धर्म अधर्म तथातिन्होंकाकारण तथातिन्होंकाफल इनच्यारोंकूंही प्रकाशकरैं हैं ॥ ताकरिकै तेकर्मकांडरूपवेद इससंसाररूपवृक्षका परिरक्षणकरैं हैं ॥ यातैं तिनकर्मकांडरूपवेदोंविषे संसाररूपवृक्षकीपर्णरूपता युक्तही हैइति ॥ हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष इसप्रकारके मूलसहित मायामय अश्वत्थरूप संसारवृक्षकूं जानताहै सोईहीअधिकारीपुरुष वेदवितहै अर्थात् कर्मकांडरूपवेदका जोकर्मरूपअर्थ है तथा ज्ञानकांडरूपवेदका जोब्रह्मरूपअर्थहै तिसकर्मरूपअर्थकूं तथाब्रह्मरूपअर्थकूं सोईहीअधिकारीपुरुष जानताहै इति ॥ तहां इससंसारवृक्षका मूलतौ ब्रह्महै और हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपहै ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष आपणेस्वरूपकरिकैतौ विनाशवानही है और प्रवाहरूपकरिकैतौ यहसंसारवृक्ष अनंतहै ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष वेदउक्तकर्मरूपजलकरिकैतौ सिंचनकऱ्याजावैहै और ब्रह्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकऱ्याजावैहै ॥ इतनाही सर्ववेदोंकाअर्थहै ॥ इसप्रकारकेवेदकेअर्थकूं जोअधिकारीपुरुष जानताहै सोअधिकारीपुरुषही सर्वअर्थोंकूंजानताहै ॥ इसकारणतैं तिस मूलसहित संसारवृक्षकेज्ञानकी श्रीभगवान् स्तुतिकरैं हैं (यस्तंवेद स वेदविदिति) ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तसंसारवृक्षके अवयवोंकी दूसरीभी कल्पना कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशाखागुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः ॥ अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके ॥ २ ॥

अधः । च । ऊर्ध्वम् । प्रसृताः । तस्य । शाखाः । गुणप्रवृद्धाः । विषयप्रवालाः । अधः । च । मूलानि । अनुसंततानि । कर्मानुबंधीनि । मनुष्यलोके ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिससंसारवृक्षकी शाखा नीचै तथा ऊपरि पसरीहुईहैं जेशाखा सत्त्वादिकगुणोंकरिकैबंधीहुई हैं तथाशब्दादिकविषयरूपपल्लवोंवाली हैं तथातिससंसारवृक्षके वासनारूपमूल नीचै तथाऊपरि अनुस्यूतहैं जेमूल अधिकारीमनुष्यदेहविषे पुण्यपापरूपकर्मकेजनकहैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां पूर्वश्लोकविषे कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपकरिकैकथनकरेथे ॥ अब तिनशाखावोंविषेभी जाविशेषता स्थितहै तिसविशेषताकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (अधश्चोर्ध्वम् इति) हे अर्जुन ! तिनशाखारूपजीवोंविषेभी जेनिषिद्धआचरणवाले दुष्कृती जीव हैं ते दुष्कृतीजीवतौ इससंसारवृक्षकी नीचैपसरीहुईशाखाहैं अर्थात् तेपापीजीव पश्वादिकनीचयोनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई शाखाहैं ॥ और शास्त्रविहित आचरणवाले जे सुकृती जीवहैं ते धर्मात्मा जीवतौ इस संसारवृक्षकी उपरिपसरीहुई शाखाहैं अर्थात् ते धर्मात्मापुरुष देवादिकयोनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई

र्थात् तिसअव्यक्तरूपमूलकेदृढपणेकरिकैही यहसंसाररूपवृक्ष महान्वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा स्कंधतैं उत्पन्नहोवैं हैं तैसे बुद्धितैंही इससंसारके नानाप्रकारकेपरिणाम उत्पन्नहोवैं हैं ॥ इसप्रकारके समानधर्मपणेकरिकै यहबुद्धिही स्कंधरूपहै ॥ ऐसेबुद्धिरूपस्कंधवालाहोणेतैं यहसंसारवृक्ष बुद्धिस्कंधमय कह्याजावैहै ॥ और जैसे प्रसिद्धवृक्षकेभीतर छिद्ररूपकोटरहोवैं हैं तैसे इससंसारवृक्षविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेछिद्रही कोटररूपहैं इति ॥ १ ॥ और जैसे यहप्रसिद्धवृक्ष अनेकशाखावोंवालाहोवैहै तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी आकाशादिकपंचमहाभूतरूप विविधप्रकारकीशाखावोंवालाहै ॥ अथवा विशाखा यहशब्द स्तंभकावाचकहै यातैं महाभूतहैं विशाखा क्या स्तंभ जिसके ताकानाम महाभूतविशाखहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्ध वृक्ष पत्रोंवालाहोवैहै तैसे यह संसाररूपवृक्षभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपपत्रोंवालाहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षविषे पुष्पहोवैं हैं तथा तिनपुष्पोंतैं फल उत्पन्नहोवैं हैं तैसे यहसंसारवृक्षभी धर्मअधर्मरूपपुष्पोंवालाहै ॥ तथा तिनधर्मअधर्मरूपपुष्पोंतैंउत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलोंवालाहै इति ॥ २ ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्ष पक्षीआदिकोंका उपजीव्यहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी सर्वभूतप्राणियोंका उपजीव्यहै जिसतैंउपजीवनहोवै ताकानाम उपजीव्यहै ॥ और इससंसारवृक्षकूं परमात्मादेव ब्रह्मनैं आश्रितकऱ्याहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवृक्ष कहैं हैं और यहसंसारवृक्ष आत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै छेदनकऱ्याजातानहीं ॥ यातैं यहसंसारवृक्ष सनातन कह्याजावैहै ॥ और यह संसारवृक्ष जीवात्मारूपब्रह्मका भोग्यहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवन कहैं हैं ॥ ऐसेसंसाररूपवृक्षविषे शुद्धब्रह्मतौ साक्षीकीन्याईं विराजमानहै अर्थात् इससंसारकेगुणदोषोंकरिकै सोब्रह्म लिपायमानहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ऐसेसंसारवृक्षकूं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकार केदृढआत्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तथाभेदनकरिकै अर्थात् मूलसहितनाशकरिकै यहअधिकारीपुरुष आत्मारूपगतिकूंप्राप्तहोइके तिसआत्मरूपमोक्षतैं पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ४ ॥ इत्यादिकअनेकस्मृतियां इससंसारकूं वृक्षरूपकरिकै वर्णनकरैं हैं ॥ यद्यपि लोकविषे ऐसाकोईवृक्ष प्रसिद्धहैनहीं जिसकालमूलतौ ऊपरिहोवै और शाखा नीचेहोवैं हैं तथापि श्रीगंगाजीकेतरंगोंकरिकैहन्यमानहुआ जोगंगाकाऊंचातीरहै तिसतीरतैंवायुनैं नीचेपतनकऱ्याजो महान्अश्वत्थकावृक्षहै तिसवृक्षका मूलतौ ऊपरिहोवैहै और शाखा नीचेहोवैंहैं ॥ तिसीअश्वत्थवृक्षकूं उपमानकरिकै श्रीभगवान्नैं इससंसाररूपवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला कह्याहै ॥ यातैं इसभगवान्केवचनविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ पुनःकैसाहै यहमायामय संसाररूपअश्वत्थवृक्ष वेदरूपछंद जिसके पर्णहैं अर्थात् तत्त्ववस्तुका आवरकहोणेतैं अथवा संसाररूपवृक्षका रक्षकहोणेतैं यहकर्मकांडरूप ऋग् यजुष् साम अथर्वण च्यारिवेद प्रसिद्धपर्णोंकीन्याईं जिससंसाररूपवृक्षके पर्णरूपहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे प्रसिद्धपर्ण वृक्षकेपरिरक्षणवास्तैहीहोवैं हैं तैसे यहकर्मकां

ऊर्ध्वहै सोऊर्ध्व मूल क्या कारणहै जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ अथवा सर्वसंसारकेबाधहुएभी बाधतैंरहित तथासर्वसंसारभ्रमकाअधिष्ठान ऐसाजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्वहै सोऊर्ध्वहै आपणीमायाशक्तिकरिकै मूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ पुनःकैसाहै यहसंसाररूपवृक्ष अधःशाखहै ॥ इहां (अधः) इसशब्दकरिकै पश्चात्उत्पन्नहुए कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकोंका ग्रहणकरणा ॥ और जैसेलोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे प्रसृतहोवैं हैं तैसे तेहिरण्यगर्भादिकभी नानादिशावोंविषे प्रसृतहुएहैं ॥ यातैं तेहिरण्यगर्भादिकहैं प्रसिद्धशाखावोंकीन्याई शाखा जिसकी ताकानाम अधःशाखहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अश्वत्थहै ॥ तहां जोवस्तु यहवस्तु अगलेदिनविषेरहैगा याप्रकारके विश्वासके योग्यनहींहोवै ताकानाम अश्वत्थहै इसप्रकारकेविश्वासकेअयोग्यहोणेतैं यहसंसारवृक्ष अश्वत्थहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अव्ययहै अर्थात् अनादिअनंतरूप जो यहदेहादिकोंकाप्रवाहहै तिसका यहसंसाररूपवृक्ष आश्रयहै ॥ तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै इससंसारवृक्षका उच्छेदहोतानहीं ॥ यातैं यहसंसारवृक्ष अव्ययहै ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतियां इसमायामयसंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थरूप तथा अव्ययरूप कथनकरैंहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ऊर्ध्वमूलोऽर्वाक्शाखएषोऽश्वत्थःसनातनः ॥) अर्थयह ॥ सर्वतैंउत्कृष्टजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्व है सोऊर्ध्व है मूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ और अर्वाक् नाम निकृष्टकाहै ऐसेनिकृष्ट कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकहैं ॥ अथवा महत्तत्त्व अहंकार पंचतन्मात्रा इत्यादिकहैं तेहिरण्यगर्भादिक अथवा महत्तत्त्वअहंकारादिक प्रसिद्धशाखाकीन्याई शाखाहैं जिसकी ताकानाम अर्वाक्शाखहै ॥ ऐसाऊर्ध्वमूल तथाअर्वाक्शाख यहसंसाररूप अश्वत्थवृक्ष सनातनहै इति ॥ इत्यादिक श्रुतियां कठवल्लीउपनिषद्विषे पठनकरीहैं ॥ तहां इसश्रुतिविषेस्थितजो अर्वाक्शाखःयहपदहै सोपद मूलश्लोकविषेस्थित अधःशाखम् इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ और श्रुतिविषेस्थितजो सनातनः यहपदहै सोपदमूलश्लोकविषेस्थित अव्ययम् इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ इसीप्रकारके इससंसाररूपवृक्षकूं स्मृतिवचनभी कथनकरैंहैं ॥ तहांस्मृति ॥ (अव्यक्तमूलप्रभवस्तस्यैवानुग्रहोत्थितः ॥ बुद्धिस्कंदमयश्चैवइंद्रियान्तरकोटरः ॥ १ ॥ महाभूतविशाखश्चविषयैःपत्रवांस्तथा ॥ धर्माधर्मसुपुष्पश्चसुखदुःखफलोदयः ॥ २ ॥ आजीव्यःसर्वभूतानांब्रह्मवृक्षःसनातनः ॥ एतद्ब्रह्मवनंचैवब्रह्माचरतिसाक्षिवत् ॥ ३ ॥ एतच्छित्त्वाचभित्त्वाचज्ञानेनपरमासिना ॥ ततश्चात्मगतिंप्राप्यतस्मान्नावर्ततेपुनः ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ अव्याकृतहैनामजिसका ऐसाजो मायाविशिष्टब्रह्महै ताकानाम अव्यक्तहै सोअव्यक्तही मूल कहिये कारणरूपहै ॥ ऐसे अव्यक्तरूप मूलतैंहै प्रभव क्या उत्पत्ति जिसकी ताकानाम अव्यक्तमूल प्रभवहै ऐसा यहसंसाररूपवृक्षहै ॥ तथा तिसअव्यक्तरूपमूलकेअनुग्रहतैंहीयहसंसारवृक्ष उत्थितहुआहै अ

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पंचदशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वचतुर्दशअध्यायविषे संसारबंधनकेहेतुभूत सत्त्वादिकतीनगुणोंको कथनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्तियोगकरिकै तिनसत्त्वादिकतीनगुणोंकेआतिक्रमणपूर्वक ब्रह्मभावरूपमोक्ष प्राप्तहोवैहै यहअर्थ श्रीभगवान्नें (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ।। सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते) ॥ इसवचनकरिकैकथनकरया ॥ तहां तैंमनुष्यकेभक्तियोगकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कैसेहोवैगी किंतुनहींहोवैगी ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् आपणेविषे ब्रह्मरूपताकेबोधनकरणेवासते (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ।। शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच) ॥ यहसूत्ररूपश्लोक कथनकरताभया ।। इसी सूत्रभूतश्लोककेअर्थकूं विस्तारतैंवर्णनकरणेहारा यहवृत्तिरूप पंचदशअध्याय श्रीभगवान्नें प्रारंभकरीताहै ।। जिसकारणतैं श्रीकृष्णभगवान्केवास्तवस्वरूपकूंजानिकै तिसके निरतिशयप्रेमरूपभजनकरिकै गुणातीतहुए यहअधिकारीलोग किसीभीप्रकारकरिकै ब्रह्मभावरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ।। तहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इत्यादिक भगवान्केवचनकूंश्रवणकरिकै मैंअर्जुनकेतुल्य मनुष्यरूप यहकृष्ण ब्रह्मकाभीमैंप्रतिष्ठाहूं इसप्रकारकावचन कैसेकहताहै इसप्रकारकेविस्मयकरिकेयुक्तहुए तथापूछणेयोग्यअर्थकीअस्फूर्तिरूपअप्रतिभाकरिकैतथालज्जाकरिकै किंचित्मात्रभी पूछणेकूंअसमर्थहुए ऐसेअर्जुनकूं जानिकरिकै कृपाकरिकै ता अर्जुनकेप्रति आपणेस्वरूपकेकहणेकी इच्छाकरतेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।। तहां संसारतैंविरक्तपुरुषकूंही परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानविषे अधिकारहै ॥ वैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ताज्ञानविषेअधिकारहैनहीं ।। यातैं प्रथम वैराग्य संपादनकरयाचाहिये ।। तहां पूर्वअध्यायविषे कथनकरया जो परमेश्वरकेअधीनवर्त्तणेहारेप्रकृतिपुरुषकेसंयोगकाकार्यरूप संसारहै तिससंसारकूं वृक्षरूपकल्पनाकरिकै वर्णनकरैं हैं तिससंसारतैं वैराग्यकीप्राप्तिवासते ।। जिसकारणतैं सोवैराग्यभी तिसपूर्वउक्तगुणातीतपणेका उपायरूपही है ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम् ॥ छंदांसियस्यपर्णानियस्तंवेदसवेदवित् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वमूलम् । अधःशाखम् । अश्वत्थम् । प्राहुः । अव्ययम् । छंदांसि । यस्य । पर्णानि । यः । तम् । वेद । सः । वेदवित् ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! श्रुतिस्मृतियां इससंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थ तथाअव्यय कहै है जिस संसारवृक्षके कर्मकांडरूपवेद पर्ण हैं तिससंसाररूपवृक्षकूं जोपुरुष जानताहै सोपुरुषही वेदवेत्ताहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहसंसाररूपवृक्ष कैसाहै ऊर्ध्वमूलहै ।। तहां स्वप्रकाशपरमानंदरूपहोणेतैं तथानित्यहोणेतैं सर्वतैंउत्कृष्ट कारणरूप जोब्रह्महै ताकानाम

शाश्वतधर्मकाभी मैंही प्रतिष्ठाहूं ।। तहां नित्यमोक्षहैफलजिसका ऐसाजो ज्ञाननिष्ठारूपधर्म है ताकानाम शाश्वतधर्म है ॥ ऐसामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा ज्ञाननिष्ठारूपधर्मभी मैंपरमेश्वरविषेही परिअवसानवालाहै अर्थात् तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिकै मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु प्राप्तहोतानहीं किंतु मपरमात्मादेवही तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिकै प्राप्तहोताहूं ॥ तथा ऐकांतिकसुखकीभी मैंही परिअवसानरूपप्रतिष्ठाहूं अर्थात् परमानंदस्वरूपहोणेतैं मैंपरमात्मादेवही सर्वमुमुक्षुजनोंकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहूं ।। मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकिंचित्मात्रभीसुख प्राप्तहोणेयोग्यनहीं है ।। तहांश्रुति ।। (योवैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति) ॥ अर्थयह ।। देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रव्यापक परमात्मादेवही सुखरूपहै परिच्छिन्नपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभी सुखनही है इति ।। हेअर्जुन ! जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं तिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवका अनन्यभक्त ब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तही है इति ।। और किसी टीकाविषेतौ (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकन्याहै ।। इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे (एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे) इसवचनविषेस्थित ब्रह्मशब्दकरिकै वेदकाही ग्रहणकन्याहै ।। यातैं इहां भी ब्रह्मशब्दकरिकै वेदकाही ग्रहणकरणा ।। ऐसेब्रह्मनामावेदका मैंपरमात्माहीं प्रतिष्ठाहूं अर्थात् सर्व वेदोंका तात्पर्यकरिकै परिअवसानकास्थान मैंपरब्रह्महीहूं ॥ तहांश्रुति ।। (सर्वे वेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्म उपासना ज्ञान यहतीनकांडरूप ऋगादिकसर्व वेद साक्षात् वापरंपराकरिकै जिसपरब्रह्मरूपपदकूंही कथनकरैंहैं इति ।। कैसाहैसोवेद अमृतहै अर्थात् कर्म ब्रह्म इनदोनों केप्रतिपादनद्वारा मोक्षरूपअमृतका साधनहै पुनःकैसाहैसोवेद अव्ययहै अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं सोवेदअपौरुषेयहै अपौरुषेयहोणेतैंहीसोवेदअप्रामाण्यशंकारूपकलंकतैंरहितस्वतः प्रमाणरूपहै ॥ और शाश्वतधर्मकाभी मैंही प्रतिष्ठाहूं अर्थात् जैसे काम्यधर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरिकै नाशहोइजावैं हैं तैसे भगवत्विषेअर्पणकन्याहुआ यह नित्यधर्म नाशहोवैनहीं ।। तथा विविदिषादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशाश्वतफलकाहेतुहोवैहै ॥ यातैंभगवत्विषेअर्पणकन्याहुआ सोनित्यधर्म शाश्वतधर्म कह्याजावैहै ऐसेशाश्वतधर्मकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य परमफलरूपभी मैंपरमात्मादेवहीहूं ॥ और विषयसंबंधजन्यसुखतैंरहित ऐसाजो स्वरूपभूतमोक्षसुखहै ताकानाम ऐकांतिक सुखहै ॥ ऐसेऐकांतिकसुखकाभी मैंपरमात्मादेवही प्रतिष्ठाहूं अर्थात् पराकाष्ठारूपहूं ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं तिसकारणतैं ऐसेमैंपरमात्मादेवकूंचिंतनकरणेहारा अधिकारीजन ब्रह्मभावकूंही प्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तही है इति ।। २७ ।। ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ।। श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ।। ।। छ ।। ।। छ ।। ।। छ ।।

तथा व्यापकसुखस्वरूपहो ।। तथा निरंजनहो अर्थात् अज्ञानरूपअंजनतैंरहितहो ।। तथा सर्वत्रपरिपूर्णहो ।। तथा द्वैतभावतैंरहितहो ।। तथा सर्वउपाधियों तैंरहितहो ।। तथा अमृतरूपहो अर्थात् मोक्षस्वरूपहो इति ।। इसश्लोकविषे श्रीब्रह्मानैं श्रीकृष्णभगवान्कूंसर्वउपाधियों तैंरहित आत्मारूप तथाब्रह्मरूप कह्याहै ॥ और इसीप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप श्रीशुकदेवनैंभी स्तुतिप्रसंगतैंविनाही कथनकऱ्याहै ।। तहांश्लोक ।। (सर्वेषामेववस्तूनांभावार्थोभवतिस्थितः ।। तस्यापि भगवान्कृष्णःकिमतद्वस्तुरूप्यताम् ।।) अर्थयह ।। जितनीकार्यरूपवस्तुहैं तिनसर्वकार्यरूपवस्तुवोंका जोभावार्थ है क्या सत्तारूपपरमार्थस्वरूपहै सो भावार्थ कार्यरूपकरिकैजायमानसोपाधिकब्रह्मविषेही स्थितहै ।। काहेतें सिद्धांतविषे कारणकीसत्तातैंपृथक् कार्यकीसत्ता अंगीकारहैनहीं ॥ जैसे कुंडलकंकणादिकभूषणरूपकार्योंकी सुवर्णरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ।। तथा जैसे घटशरावादिककार्योंकी मृत्तिकारूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ॥ तैसे इसप्रपंचरूपकार्यकीभी तिससोपाधिकब्रह्मरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ।। यहवार्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारों नैं विस्तारतैं कथनकरीहै ॥ और तिसकारणरूपसोपाधिब्रह्मकाभी सोसत्तारूपभावार्थ श्रीकृष्णभगवान्है ।। काहेतैं सो सोपाधिककारणब्रह्म निरुपाधिकब्रह्मविषेही कल्पितहै ।। और जोजोकल्पितवस्तुहोवैं हैं सोसोअधिष्ठानतैंपृथक्होवैंनहीं ।। जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्नहीं है ॥ और श्रीकृष्णभगवान्ही सर्वकल्पनावोंकाअधिष्ठानरूपहोणेतैं परमार्थसत्यनिरुपाधिकब्रह्मरूपहै ॥ यातैं यहनिरुपाधिकब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्ही तिसकारणरूपसोपाधिकब्रह्मका परमार्थसत्तारूप भावार्थ है ।। ऐसेअधिष्ठानब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्तैंअन्य कोईभीवस्तु पारमार्थिकहैनहीं किंतु सोपरब्रह्मरूपश्रीकृभगवान्ही एक पारमार्थिकहै इति ।। इसीहीअर्थकूं श्रीभगवान्नैं इहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै इति ।। अथवा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शंका—हे भगवन् ! जोपुरुष जिसदेवताकाध्यानकरैहै सोपुरुष तिसीही देवताभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तुम्हाराभक्त तुम्हारेभावकूंतौ प्राप्त होवैगा परंतु सोतुम्हाराभक्त ब्रह्मभावकूं कैसेप्राप्तहोवैगा किंतु ब्रह्मभावकूं नहींप्राप्तहोवैगा ॥ जिसकारणतैं आप तिसब्रह्मतैंजुदाहहो ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् आपकूं ब्रह्मरूपताकथनकरैंहैं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहमिति) हे अर्जुन ! सर्वउपाधियों तैंरहित परमात्मादेवरूप शुद्धब्रह्मका परिअवसानरूप प्रतिष्ठा मैंहीहूं अर्थात् मेरेतैं सोपरब्रह्म भिन्ननहीं है किंतु मैंही परब्रह्मरूपहूं ।। तथा अव्ययरूपअमृतकीभी मैंही प्रतिष्ठाहूं ॥ तहां सर्वअनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै ताकानाम अमृतहै सोमोक्षरूपअमृत किसीप्रकारकरिकैभी नाशहोता नहीं ।। यातैं सोमोक्षरूपअमृतअव्यय कह्या जावैहै ॥ ऐसेविनाशतैंरहितमोक्षरूपअमृतकाभी मैंपरमात्मादेवविषेही परिअवसानहै अर्थात मैंपरमात्मादेवकी अभेदरूपकरिकैप्राप्तिही मोक्षहै ॥ तथा

टीका । हेअर्जुन ! तत्त्वमसि इसवाक्यविषेस्थितजो तत्पदहै तिसतत्पदकावाच्यअर्थरूप तथासर्वजगतकेउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूप ऐसाजो मायाविशिष्ट सोपाधिकब्रह्म ऐसेसोपाधिकब्रह्मका मैंनिर्विकल्पकवासुदेवही प्रतिष्ठाहूं अर्थात् पारमार्थिकरूप तथानिर्विकल्पकरूप तथासत्चित्आनंदरूप ऐसाजो सर्वउपाधियोंतैंरहिततत्पदकालक्ष्यअर्थरूपहै सोलक्ष्यअर्थरूप मैंहीहूं ॥ तहां (प्रतिष्ठत्यत्रेतिप्रतिष्ठा) इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कल्पितरूपतैंरहित अकल्पितरूपही प्रतिष्ठाशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं मैंनिरुपाधिकशुद्धब्रह्मही तिससोपाधिकब्रह्मका वास्तवस्वरूपहूं ॥ तिसकारणतैं अधिकारीपुरुष मैंनिरुपाधिकशुद्धब्रह्मका निरंतर चिंतनकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तही है इति ॥ शंका— हेभगवन् ! किसप्रकारकेब्रह्मकी आप प्रतिष्ठाहो ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसब्रह्मकेविशेषणोंकूं कथनकरैं हैं (अमृतस्यइति) हेअर्जुन ! जिसब्रह्मका मैंपरमेश्वर प्रतिष्ठारूपहूं सोब्रह्म कैसाहै अमृतहै अर्थात् विनाशतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्मही अमृतरूपहै तथाअभयरूपहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्म अव्ययहै अर्थात् विपारिणामतैंरहितहै पुनः कैसाहै सोब्रह्मशाश्वतहै अर्थात् अपक्षयतैंरहितहै इहांविनाश विपरिणाम अपक्षय इनतीनविकारोंकानिषेध जन्म अस्ति वृद्धि इनतीनविकारोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै अर्थात् सोब्रह्म षट्भावविकारों तैंरहितहै पुनः कैसाहैसोब्रह्म धर्मरूपहै अर्थात् ज्ञाननिष्ठारूप धर्मकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहै पुनःकैसाहैसोब्रह्म सुखरूपहै अर्थात् परमानंदरूपहै ॥ अबतिससुखविषे विषयइंद्रियकेसंयोगकरिकै जन्यत्वकूंनिवृत्तकरणेवासतै तासुखकाविशेषण कथनकरैं हैं (ऐकांतिकस्यइति) कैसाहैसोसुख ऐकांतिकहै अर्थात् जोसुख विषयजन्यसुखकीन्याई व्यभिचारीनहीं है किंतु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे जोसुख विद्यमानहै इसीही व्यापकसुखकूं (योवैभूमातत्सुखम्) यहश्रुतिभी कथनकरैहै ऐसेअमृतादिकसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टब्रह्मका मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं वास्तवस्वरूपहूं तिसकारणतैंही मैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इससंसारबंधतैंमुक्तहोवैहै इति ॥ तहां इसप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप ब्रह्मानैंभी श्रीकृष्णभगवान्केप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ एकस्त्वमात्मापुरुषःपुराणःसत्यःस्वयंज्योतिरनंतआद्यः ॥ नित्योऽक्षरोजस्रसुखोनिरंजनः पूर्णोऽद्वयोमुक्तउपाधितोऽमृतः) ॥अर्थयह॥ हेश्रीकृष्णभगवान् ! आपकैसेहो एकहो अर्थात् सर्वत्रएकरूपहो तथा सर्वप्राणियोंका आत्मारूपहो ॥ तथा पुरुषहो अर्थात् सर्वशरीररूपपुरियोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै स्थितहो ॥ तथा पुराणहो अर्थात् इसतैंपूर्वभी विद्यमानहो ॥ तथा सत्यहो अर्थात् तीनकालोंविषेबाधतैंरहितहो ॥ तथा स्वयंज्योतिहो अर्थात् आपणेप्रकाशवासतै इतरप्रकाशकीअपेक्षातैंरहितहो ॥ तथा अनंतहो अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहो ॥ तथा आद्यहो अर्थात् सर्वकाआदिकारणहो ॥ तथा नित्यहो अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैं रहितहो ॥ तथा अक्षरहो ॥

प्रयत्नतैंसिद्ध लक्षणरूपकरिकैंस्थितहोवैंहैं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ अब यहअधिकारीपुरुष किसउपायकरिकै तिनगुणोंकूं अतिक्रमणकरै है इसतृतीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते ॥ २६ ॥ माम् । च । यः । अव्यभिचारेण । भक्तियोगेन । सेवते । सः । गुणान् । समतीत्य । एतान् । ब्रह्मभूयाय । कल्पते ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! पुनः जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अनन्य भक्तियोगकरिकै चिंतनकरैहै सोमेराभक्त इनपूर्वउक्त सत्त्वादिकगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै ब्रह्महोणेवासतै समर्थहोवे है ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सर्वभूतोंकाअंतर्यामी तथाआपणीमायाशक्तिकरिकैक्षेत्रज्ञभावकूंप्राप्तहुआ ऐसाजो मैं परमानंदघन भगवान्वासुदेवहूं तिसमैंपरमेश्वरकूंही जोअधिकारीपुरुष अव्यभिचारी भक्तियोगकरिकै सेवनकरैहै ॥ तहां विजातीयवृत्तियों के व्यवधानतैंरहित जो तैलधाराकीन्याई मैंपरमात्मादेवविषयक सजातीय वृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अव्यभिचारीभक्तियोगहै जोभक्तियोग पूर्वद्वादशअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ ऐसेपरमप्रेमरूपअनन्यभक्तियोगकरिके जोपुरुष मैंनारायणकूं सर्वदा चिंतनकरैहै सोमैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इनपूर्वउक्त सत्त्वादिकतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै अर्थात् अद्वैतदर्शनकरिकै तिनसत्त्वादिकतीनगुणोंकूंबाधकरिकै निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै ॥ यातैं सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाचिंतनही तिसगुणातीतपणेका उपायहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां मैंपरमात्मादेवकेचिंतनकरणेहारापुरुष मोक्षकूंहीप्राप्तहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे श्रीभगवान् आपणीमहान्तारूपहेतुकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेगुणत्रयविभागयोगोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ब्रह्मणः । हि । प्रतिष्ठा । अहम् । अमृतस्य । अव्ययस्य । च । शाश्वतस्य । च । धर्मस्य । सुखस्य । ऐकांतिकस्य । च ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिस कारणतैं अमृतरूप तथा अव्ययरूप तथा शाश्वतरूप तथाधर्मरूप तथा अव्यभिचारी सुखरूप ऐसेसोपाधिककारणब्रह्मका मैंनिरुपाधिकवासुदेव वास्तवस्वरूपहूं तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीभक्तितैं मोक्षकीप्राप्ति युक्तही है ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

(मू. श्लो.) मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः ॥ सर्वारंभपरित्यागीगुणातीतःसउच्यते ॥ २५ ॥ मानापमानयोः । तुल्यः । तुल्यः । मित्रारिपक्षयोः । सर्वारंभपरित्यागी । गुणातीतः । सः । उच्यते ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेद ॥ हेअर्जुन ! जोपुरुष मानअपमानदोनोंविषे तुल्यहै तथामित्रपक्षशत्रुपक्षदोनोंविषे तुल्यहै तथासर्व आरंभपरित्यागकरेहैं जिसनें सोपुरुष गुणातीत कह्याजावै है ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोतत्त्ववेत्तापुरुष मान अपमान दोनोंविषे तुल्यहै तहां सत्कारकानाम मानहै जिससत्कारकूं लोकविषे आदर कहैहैं ॥ और तिरस्कारकानाम अपमानहै जिसतिरस्कारकूं लोकविषे अनादर कहैहैं ॥ तिस मानअपमानदोनोंविषे जोपुरुष तुल्यहै अर्थात् मानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं हर्षनहींहोवै है तथा अपमानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं विषादनहींहोवैहै ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः) इसवचनकरिकैकथनकरीजा निंदास्तुतिहै तथा इसश्लोकविषेकथनकरयाजो मानअपमानहै तिनदोनोंविषे इतनाभेदहै निंदास्तुति यहदोनोंतौशब्दरूपहीहोवैं हैं ॥ काहेतें दोषोंकेकथनकानाम निंदाहै ॥ और गुणोंकेकथनकानाम स्तुतिहै सोकथन शब्दरूपहीहै ॥ और मानअपमानतौ शब्दतेंविनाभी शरीरमनकाव्यापारविशेषरूपहोवैंहैं ॥ इतना तिनदोनोंविषेभेदहै इति ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौ (मानापमानयोस्तुल्यः) इसप्रकारकाभीपाठहोवै है इसप्रकारकेपाठविषे सोपूर्वउक्तअर्थहीजानणा ॥ तथा जोतत्त्ववेत्तापुरुष मित्रपक्ष शत्रुपक्ष दोनोंविषे तुल्यहै अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष जैसे मित्रपक्षकेद्वेषका अविषयहोवै है तैसे शत्रुपक्षकेभी द्वेषका अविषयहोवैहै ॥ अथवा जोतत्त्ववेत्तापुरुष मित्रपक्षाविषेतौ अनुग्रहनहींकरै है ॥ और शत्रुपक्षविषे निग्रहनहींकरैहै ॥ तथा जोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इहां शरीरमनवाणीकरिकै जिन्होंका आरंभकरयाजावैहै तिन्होंकानाम आरंभहै ऐसेलौकिकवैदिककर्म हैं तिन कर्मरूपसर्वआरंभोंका परित्यागकरया है जिसनें ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै अर्थात् इसदेहकीयात्रामात्रविषेउपयोगी जेभिक्षाअटनादिककर्म हैं तिनकर्मोंतैंभिन्न दूसरेसर्वकर्मोंकापरित्यागकरया है जिसनें ताकानाम सर्वारंभपरित्यागी है ॥ इसप्रकार (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै कथनकरेहुए जेआचारहैं ऐसेआचारोंकरिकैयुक्त जोतत्त्ववेत्तापुरुषही गुणातीत कह्याजावै है ॥ तात्पर्ययह (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै कथनकरेजे उपेक्षकत्वादिकधर्म हैं तेउपेक्षकत्वादिकधर्म आत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंपूर्वतौ प्रयत्नसाध्यहोवैंहैं अर्थात आत्मज्ञानकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषनैं तिसआत्मज्ञानकेसाधनरूप करिकै तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म अनुष्ठानकरणे ॥ और तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर तिस गुणातीतजीवन्मुक्तपुरुषकेतौ तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म विनाही

(मू. श्लो.) समदुःखसुखःस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ समदुःखसुखः । स्वस्थः । समलोष्टाश्मकांचनः । तुल्यप्रियाप्रियः । धीरः । तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! समहैदुःखसुखदोनोंजिसकूं तथास्वरूपविषैहैस्थितिजिसकी तथासमहैंलोष्टअश्मकांचनजिसकूं तथातुल्यहैं प्रियअप्रियदोनोंजिसकूं तथातुल्यहैं आपणीनिंदास्तुतिदोनों जिसकूं ऐसाधीरपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका दुःखविषेतौ द्वेषनहीं है तथा सुखविषे रागनहीं है ॥ और तेदुःखसुखदोनोंही अनात्मारूपअंतःकरणकेहीधर्म हैं ॥ तथा स्वप्नकीन्याई मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं रागद्वेषतैंरहितपणेकरिकै तथाअनात्मधर्मपणेकरिकै तथामिथ्यापणेकरिकै समहैं तेदुःखसुखदोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम समदुःखसुखहै ॥ शंका—हेभगवन् ! तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनों किसहेतुतैं समहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताके विषेहेतुकहैं हैं (स्वस्थःइति) हेअर्जुन ! जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष स्वस्थहै अर्थात् द्वैतदर्शनतैंरहितहोणेतैं जो तत्त्ववेत्तापुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्थितहै ॥ इसकारणतैंही तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनोंसमहैं ॥ आत्मा विषेस्थितितैंरहित बहिर्मुखपुरुषकूंही तिनदुःखसुखदोनोंविषे विषमताहोवैहै ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैंसोतत्त्ववेत्तापुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषेहीस्थितहै तिसकारणतैंहीसोतत्त्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां समहैं क्या ग्रहणत्यागभावतैं रहितहैं लोष्ट अश्मकांचन यहतीनों जिसकूं ताकानाम समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां मृत्तिकाकेपिंडकानाम लोष्टहै औरपाषाणकानाम अश्महै औरसुवर्णकानाम कांचनहै अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष लोष्टादिकतुच्छवस्तुवोंविषेतौ त्यागबुद्धितैंरहितहै ॥ तथा सुवर्णादिकमहान्पदार्थोंविषे ग्रहणबुद्धितैंरहितहै ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ इसकारणतैंही सोतत्त्ववेत्तापुरुष तुल्यप्रियाप्रियहै ॥ तहां तुल्यहैं सुखकासाधनरूपप्रिय तथादुःखकासाधनरूपअप्रिय दोनों जिसपुरुषकूं दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यप्रियाप्रियहै अर्थात् जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं सोप्रियपदार्थ तौ यहप्रियपदार्थ हमारेहितकासाधन है याप्रकारकी हितसाधनताबुद्धिकाविषयनहीं है ॥ और सोअप्रियपदार्थतौ यहअप्रियपदार्थ हमारेअहितकासाधनहै याप्रकारकी अहितसाधनताबुद्धिका विषय नहीं है किंतु तेप्रियअप्रियदोनोंतिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी उपेक्षाबुद्धिकेहीविषयहोवैं हैं ॥ तथा जोपुरुष धीरहै अर्थात् बुद्धिमान्है अथवाधृतिमान्है ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष धीरहै इसकारणतैंही सोतत्त्ववेत्तापुरुष तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ तहां आपणेदोषोंकेकथनकानाम निंदाहै और आपणेगुणोंकेकथनकानाम स्तुतिहै ॥ तुल्यहैं आपणेनिंदा तथास्तुति दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इस प्रकारतैं इसश्लोकका द्वितीयश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ।

होवैहै सोलक्षण स्वार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ और जोलक्षण दूसरेकूंभी ज्ञातहोवैहै सोलक्षण परार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ इसीस्वार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे स्वसंवेद्य कहैं हैं ॥ और इसी परार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे परसंवेद्य कहैं हैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ अब सोगुणातीतपुरुष किस आचारवालाहोवै इसद्वितीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् तीनश्लोकोंकरिकैवर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) उदासीनवदासीनोगुणैर्योनविचाल्यते ॥ गुणावर्त्ततइत्येवयोवतिष्ठतिनेंगते ॥ २३ ॥ उदासीनवत् । आसीनः । गुणैः । यः । न । विचाल्यते । गुणाः । वर्त्तते । इति । एवं । यः । अवतिष्ठति । न । इंगते ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्याई स्थितहै है तथासत्त्वादिकगुणोंनैं नहीं चलायमानकरीता तथा तेगुण ही परस्पर वर्त्ततेहैं इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष स्थितहोवै है तथा नहीं किंचित्मात्रभी व्यापारकरै है सोपुरुष गुणातीतकह्याजावै है ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन! परस्पर विवादकरणेहारे जेदोपुरुषहैं तिनदोनोंकेमध्यविषे किसीकेभीपक्षकूं जोपुरुष अंगीकारकरतानहीं तापुरुषकानाम उदासीनहै ॥ सोउदासीनपुरुष जैसे किसीपुरुषविषे रागकूंभी करतानहीं तथा किसीपुरुषविषे द्वेषकूंभी करतानहीं किंतु सोउदासीनपुरुष रागद्वेषतैंरहितहुआस्थित होवैहै ॥ तिसउदासीनपुरुषकीन्याई जोपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोइकै आपणेसत्आनंदस्वरूपविषेही स्थितहोवै है ॥ तथा सुखदुःखादिरूपआकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुए जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ऐसेतीनगुणोंनैंभी जोपुरुष आपणेस्वरूपकीस्थितितैंचलायमानकरीतानहीं किंतु देह इंद्रिय विषय इत्यादिरूपआकारकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए तेसत्त्वादिकगुणही आपसमैं साधकबाधक भावकरिकै तथाग्राह्यग्राहकभावकरिकै तथाउपकार्यउपकारकभावकरिकै वर्त्ते ते हैं॥ इनसर्वगुणोंकाप्रकाशकजो मैंआत्माहूं तिसमैंआत्माका किसीभीप्रकाश्यवस्तुकेधर्मसाथि संबंधहैनही ॥ जैसे घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाश करणेहारेसूर्यका किसीभी प्रकाश्यरूप घटादिकपदार्थोंकेधर्मोंसाथि संबंधहैनहीं ॥ और यहसर्वप्रपंच दृश्यरूपहै तथाजडरूपहै तथास्वप्नकीन्याई मिथ्याही है ॥ और मैंआत्मातौ द्रष्टाहूं तथास्वयंज्योतिस्वरूपहूं तथापरमार्थसत्यहूं तथासर्वविकारोंतैंरहितहूं तथाद्वैतभावतैंरहितहूं ॥ इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष आपणेस्वरूपविषेहीस्थित होवै है किसीभीकार्यकीसिद्धिवासतै व्यापारवालाहोतानहीं ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावै है ॥ इसप्रकार इसश्लोकका तीसरेश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ इहां (योवतिष्ठति) इसवचनकेस्थानविषे (योनुतिष्ठति) इसप्रकारकाभी किसीपुस्तकविषेपाठहोवैहै सोइसप्रकारकेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहीजानणा इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ किंच ।

यकरिकै श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तप्रकारतैंविलक्षणप्रकारकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेलक्षणादिकोंकूं पांचश्लोकोंकरिकेकथनकरैं हैं ॥ तहां सोगुणातीतपुरुष किन लक्षणरूपलिंगोंकरिकैविशिष्टहोवैहै ॥ इसप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं एकश्लोककरिके कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ प्रकाशंचप्रवृत्तिंचमोहमेवचपांडव ॥ नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानिननिवृत्तानिकांक्षति ॥ २२ ॥ प्रकाशम् । च । प्रवृत्तिम् । च । मोहम् । एव । च । पांडव । न । द्वेष्टि । संप्रवृत्तानि । न । निवृत्तानि । कांक्षति ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! प्रवृत्तहुए प्रकाशकूं तथा प्रवृत्तिकूं तथा मोहकूं जोपुरुष कदाचित्भी नहीं द्वेषकरैहै तथा निवृत्तहुएतिन्होंकूं नहीं इच्छा करैहै सोपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन! सत्त्वगुणकाकार्यरूप जोप्रकाशहै तथा रजोगुणकाकार्यरूप जा प्रवृत्तिहै तथा तमोगुणकाकार्यरूपजो मोहहै इहां प्रकाश प्रवृत्ति मोह यहतीनोंकार्य सत्त्वादिकतीनगुणोंके दूसरेभीसर्वकार्योंकेउपलक्षणहैं तेसत्त्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिकसर्वकार्य आपणीआपणीकारणसामग्रीकेवशतें उत्पन्नहुए यद्यपि दुःखरूपहीहोवैंहैं तथापि जोविद्वान्पुरुष दुःखबुद्धिकरिकै तिनकार्योंविषे द्वेषकूंनहींकरै है अर्थात् यहदुःखरूपगुणोंकेकार्य काहेकूंउत्पन्नहुए हैं याप्रकारतैं जोविद्वान्पुरुष तिन्होंविषे द्वेषकूंकरतानहीं ॥ और तेसत्त्वादिकगुणोंकेप्रकाशादिककार्य आपणेआपणेविनाशकीसामग्रीकेवशतें निवृत्तहुए यद्यपि सुखरूपहीहोवैं हैं तथापि जो विद्वान्पुरुष सुखबुद्धिकरिकै तिन्होंकीइच्छानहींकरै है अर्थात् सुखरूप यहगुणोंकेकार्योंकीनिवृत्ति हमारेकूं सर्वदा प्राप्तहोवै याप्रकारकी जोपुरुष इच्छाकरतानहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान्पुरुष तिससत्त्वादिकगुणोंकूं तथातिनसत्त्वादिकगुणोंकेकार्योंकूं स्वप्नकीन्याईं मिथ्यारूपही जानैं हैं ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआपदार्थ इसपुरुषके रागका वाद्वेषका विषयहोवैनहीं ॥ जैसे मिथ्यारूपकरिकै जान्याहुआ शुक्तिरजत इसपुरुषके रागकाविषयनहीं होवैहै ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआ रज्जुसर्प इसपुरुषके द्वेषकाविषय नहींहोवैहै ॥ इसप्रकार सत्त्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिककार्योंकीप्रवृत्तिविषे जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै ॥ तथा तिनकार्योंकीनिवृत्तिविषे जोपुरुष रागतैंरहितहै सोविद्वान्पुरुष गुणातीत कह्याजावैहै इसप्रकार इसश्लोकका चतुर्थश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ तहां श्रीभगवान्नैं यहजोगुणातीतपुरुषकालक्षण कथनकऱ्याहै सोयहलक्षण तिसगुणातीतपुरुषकूं हीप्रत्यक्षहै दूसरेकिसीकूं प्रत्यक्षहैनहीं ॥ काहेतैं एकपुरुषकेअंतःकरणविषेरह्याजो द्वेषहै तथाताद्वेषकाअभावहै तथारागहै तथातारागकाअभावहै तिनद्वेषादिकोंकूं दूसरापुरुष जानिसकतानहीं ॥ यातैं यहगुणातीतपुरुषकालक्षण स्वार्थलक्षणहीहै परार्थलक्षण हैनहीं ॥ तहां जोलक्षणग केवल आपणेकूंही ज्ञात

ज्ञानकरिकै तिनगुणोंकाबाधकरिकै जन्मकरिकै तथा मृत्युकरिकै तथा जराकरिकै तथाआध्यात्मिकादिकदुःखोंकरिकै विमुक्तहुआ अर्थात् जीवितकालविषेही तिनमायामय जन्ममृत्युआदिकोंके संबंधतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष अमृतकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं प्राप्त होवै है इति ॥ ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां इनसत्त्वादिकतीनगुणोंकाअतिक्रमणकरिकै यहविद्वान्पुरुष जीवितकालविषेही मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसपूर्वउक्तअर्थकूंश्रवणकरिकै अर्जुन तिसगुणातीतपुरुषकेलक्षणजानणेकी तथा आचारजानणेकी तथागुणातीतपणेकेउपायजानणेकीइच्छाकरताहुआ श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतोभवतिप्रभो ॥ किमाचारःकथंचैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ कैः । लिंगैः । त्रीन् । गुणान् । एतान् । अतीतः । भवति । प्रभो । किमाचारः । कथम् । च । एतान् । त्रीन् । गुणान् । अतिवर्त्तते ॥ ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे प्रभो ! इन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारापुरुष किन लिंगोंकरिकैविशिष्ट होवैहै तथा किसआचारवालाहोवै है तथा इन तीन गुणोंकूं किसप्रकारकरिकै अतिक्रमणकरै है ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे प्रभो ! सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारा जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै सोगुणातीत तत्त्ववेत्तापुरुष किनलिंगोंकरिकै विशिष्टहोवैहै अर्थात् जिनलक्षणरूपलिंगोंकरिकै सोतत्त्ववेत्तापुरुष जान्याजावैहै तेलक्षणरूपलिंग आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इति प्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ तथा तिसगुणातीततत्त्ववेत्तापुरुष कौनआचारहोवैहै अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष यथेष्टचेष्टावालाहोवैहै ॥ अथवा नियमपूर्वकचेष्टावालाहोवैहै सोतत्त्ववेत्तापुरुषकाआचारभी आपहमारेप्रति कथनकरो ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ तथा सोतत्त्ववेत्तापुरुष किसप्रकारकरिकै इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरै है अर्थात् तिसगुणातीतपणेकाउपायकौनहै सोउपायभी आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ इहां (हे प्रभो) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननें श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ दुःखादिकोंकोनिवृत्तकरणेविषे जोसमर्थ होवै ताकानाम प्रभुहै ॥ जैसे राजादिकसमर्थपुरुष आपणेभृत्योंकेदुःखकूं निवृत्तकरैं हैं तैसे समर्थहोणेतें आपभगवान्नेंही मैंभृत्यकादुःख निवृत्तकरणेयोग्यहै ॥ इति ॥ २१ ❀ ॥ तहां यद्यपि इसगीताशास्त्रकेद्वितीयअध्यायविषे (स्थितप्रज्ञस्यकाभाषा) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहसर्वअर्थ पूर्वही अर्जुननें पूछाथा ॥ तथा (प्रजहाति यदाकामान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंभगवान्नें तिसकाउत्तरभागपूर्वही कथनकऱ्याथा तथापि यहअर्जुन तिस पूर्वउक्तअर्थकूं पुनः प्रकारांतरकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहुआ अबी पूछैहै ॥ इसप्रकारके ताअर्जुनकेअभिप्रायकूं निश्च

जिसकालविषे यहद्रष्टापुरुष सत्त्वादिकगुणों तैं अन्य कर्त्ताकूं नहीं देखता है तथा तिनगुणोंतैं आत्माकूं पर जानताहै जिसकालवि
षे सोद्रष्टापुरुष ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! कार्यकारण विषय इनतीनआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्त्वादिकतीनगुणहैं तिनगुणोंतैं अन्यकिसीकर्त्ताकूं जिसकालविषे यह द्रष्टापुरुष विचारविषेकुशलहुआ नहीं देखै है अर्थात् विचारतैंपूर्व तिनगुणोंतैंअन्य आत्माकूं कर्त्तारूपदेखताहुआभी जोपुरुष विचारतैंपश्चात् तिनसत्त्वादिकगुणोंतैंअन्यकर्त्ताकूंनहीं देखैहै किंतु तेसत्त्वादिकगुणही अंतःकरण बहिःकरण शरीर विषय इत्यादिकभावकूंप्राप्तहुए सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकेकर्त्ताहोवैं हैं ॥ इसप्रकार जोपुरुष तिनसत्त्वादिकगुणोंकूंहीकर्त्ता देखैहै तथा तिसतिसअवस्थाविशेषरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जेतेसत्त्वादिकगुणहैं तिनगुणों तैं जोपुरुष आत्माकूं परजानैहै अर्थात् जैसे आकाशविषे स्थितसूर्य भूमिविषेस्थितजलकेसाथि तथाताजलकेकंपादिकविकारोंकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं तैसे जो आत्मादेवैं सत्त्वादिकतीनगुणोंकेसाथि तथातिनगुणों केकार्योंकेसाथि संबंधवालाहैनहीं तथा तिनकार्यसहितगुणोंका प्रकाशकहै तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै तथा सर्वप्रपंचकासाक्षीहै तथा सर्वत्रसमहै ॥ ऐसे एकअद्वितीयरूपक्षेत्रज्ञआत्माकूं जोद्रष्टापुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैहै तिसकालविषे सोद्रष्टापुरुष मैंपरमेश्वरकेभावकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् सोपुरुष मैंहीब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैंअभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं ब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपजानताहुआ यहपुरुष ब्रह्मरूपही होवैहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् इसप्रकार सत्त्वादिकतीनगुणोंकूंही कर्त्तापणा देखणेहारा तथातिनगुणों तैं आत्माकूं परदेखणेहारा पुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं किसप्रकारकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसप्रकारकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) गुणानेतानतीत्यत्रीन्देहीदेहसमुद्भवान् ॥ जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ २० ॥ गुणान् । एतान् । अ
तीत्य । त्रीन् । देही । देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैः । विमुक्तः । अमृतम् । अश्नुते ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे
अर्जुन ! देहकेउत्पत्तिकावीजरूप इन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं परित्यागकरिकै जन्ममृत्युजरादुःखइनोंकरिकै विमुक्तहुआ यहवि
द्वान्पुरुष मोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! देहकीउत्पत्तिकेबीजरूप ऐसेजे मायारूप सत्त्व रज तम यहतीनगुण हैं इनतीनगुणोंकूंअतिक्रमणकरिकै अर्थात् जीवितकालविषेही तत्त्व

विवक्षितहै यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सत्त्वगुणका जो शास्त्रजन्य ज्ञानरूप तथाशुभकर्मरूप वृत्तहै तिससत्त्वगुणकेवृत्तविषेस्थितहुए अर्थात् श्रद्धापूर्वक तिसवृत्तकूंधारणकरतेहुए यहपुरुष ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेदेवलोकोंकूं प्राप्तहोवैं हैं अर्थात् तिसज्ञानकर्मकीन्यूनअधिकताकरिकै तेपुरुष न्यूनअधिकतावालेतिनदेवतावोंविषेही उत्पन्नहोवैं हैं ॥ मनुष्यशरीरकूं तथापश्वादिशरीरकूं तेसात्त्विकपुरुष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ और जेपुरुष रजोगुणके लोभादिपूर्वकराजस कर्मरूपवृत्तविषे स्थितहैं अर्थात् जेपुरुष तिसराजसकर्मरूपवृत्तकूं अत्यंतप्रीतिपूर्वककरैं हैं तेराजसपुरुषतौ पुण्यपापमिश्रित इसमनुष्यलोकविषेही स्थितहो वैं हैं तेराजसपुरुष देवशरीरकूं तथापशुआदिकशरीरकूंप्राप्तहो वैंनहीं किंतु इनमनुष्योंविषेही तेराजसपुरुष उत्पन्नहोवैं हैं ॥ और सत्त्व रज इनदोनोंगुणोंकी अपेक्षाकरिकै पश्चात्भावीहोणेतैं तिनदोनों तैं निकृष्ट ऐसाजो तमोगुणहै तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिरूपवृत्तविषे प्रीतिवाले जेतामसपुरुषहैं तेतामसपुरुषतौ अधोगमनकरैं हैं अर्थात् पशुआदिकयोनियोंविषेही उत्पन्नहोवैं हैं तेतामसपुरुष मनुष्यशरीरकूं तथादेवताशरीरकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तहां सात्त्विकपुरुष तथाराजसपुरुषभी कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितहोवैं हैं यातैं तिन्होंकूंभी पश्वादिकशरीरोंकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्ते श्रीभगवान् तिनतमोगुणकेवृत्तविषे स्थितपुरुषोंका विशेषण कथनकरैं हैं (तामसाःइति) तहां जिनपुरुषोंविषे सर्वकालमें तमोगुणही प्रधानहै तिनपुरुषोंका नाम तामसहै ॥ ऐसेतामसपुरुषही पशुआदिकयोनियोंविषे जन्मैं हैं। और सात्त्विकपुरुष तथाराजसपुरुष कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितभीहोवैं हैं तौभी तिन्होंविषे सोतमोगुण प्रधानहोवैनहीं किंतु अत्यंतगौणहोवैहै ॥ यातैं तेसात्त्विकपुरुष तथाराजसपुरुष पशुआदिकयोनियोंविषे उत्पन्नहोवैंनहीं इहां किसीमूलपुस्तकविषे (जघन्यगुणवृत्तिस्थाः) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थही जानणा इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥

तहां इसचतुर्दशअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं तीनअर्थोंकेकथनकरणेकी प्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां एकतौ क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगकूं ईश्वरकेअधीनपणा ॥ १ ॥ और दूसरे तेगुण कौनहैं तथा तेगुण किसप्रकार इसजीवात्माकूंबंधायमानकरैं हैं ।। २ ।। और तीसरा तिनगुणों तैं इसपुरुषका किसप्रकारकरिकै मोक्षहोवैहै ॥ तथा तिसगुणातीतमुक्तपुरुषका कौनलक्षणहै ॥ ३ ।। इनतीनोंअर्थोंविषे आदिकेदोअर्थतौ पूर्वविस्तारतैंकथनकरे अब तीसरेअर्थकाकथनकरणा परिशेषतैं रह्या ताकेविषेभी सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकूं मिथ्याज्ञानरूपहोणेतैं इसपुरुषका सम्यक्ज्ञानतैं तिनगुणों तैं मोक्षहोवैहै इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारंयदाद्रष्टानुपश्यति ॥ गुणेभ्यश्चपरंवेत्तिमद्भावंसोधिगच्छति ॥१९॥ न । अन्यम् । गुणेभ्यः । कर्त्तारम् । यदा । द्रष्टा । अनुपश्यति । गुणेभ्यः । च । परम् । वेत्ति । मद्भावम् । सः । अधिगच्छति ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

तम इनदोनोंशब्दोंका जो रजोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे तथातमोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे प्रयोगकर्याहै सो कार्य कारण दोनोंकेअभेदकूंअंगीकारकरिके कर्याहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसप्रकारकेफलकीविचित्रताविषे पूर्वउक्तहेतुकूंही कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) सत्त्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएवच ॥ प्रमादमोहौतमसोभवतोऽज्ञानमेवच ॥ १७ ॥ सत्त्वात् । संजायते । ज्ञानम् । रजसः । लोभः । एव । च । प्रमादमोहौ । तमसः । भवतः । अज्ञानम् । एव । च ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सत्त्वगुणतैं ज्ञान उत्पन्नहोवैहै तथा रजोगुणतैं लोभ ही उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणतैं प्रमादमोहदोनों उत्पन्नहोवैं हैं तथाअज्ञान भी होवैं है ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रोत्रादिकइंद्रियेंहैंद्वारजिसके ऐसाजो शब्दादिविषयकज्ञानहै सोप्रकाशरूपज्ञानतौ केवल सत्त्वगुणतैंही उत्पन्नहोवैहै इसकारणतैं तिस प्रकाशरूपज्ञानकेअनुसारी सात्त्विककर्मका प्रकाशकीबाहुल्यतावाला सुखरूपफलहीहोवै है ॥ और कोटिविषयोंकीप्राप्तिकरिकैभी निवृत्तकरणेकूंअशक्य जा अभिलाषाविशेषहै ताकानामलोभहै ऐसालोभ रजोगुणतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां निरंतरवृद्धिकूंप्राप्तहुआ तथापूरणकरणेकूंअशक्य ऐसे लोभकूं दुःखकाहेतुपणा प्रसिद्धहीहै यातैं तिसलोभपूर्वककर्याजो राजसकर्म है तिसराजसकर्मकाभी दुःखहीफल होवैहै ॥ और तमोगुणतैं प्रमाद मोह यहदोनों उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तथा अज्ञानभी उत्पन्नहोवैहै ॥ इहां अज्ञानशब्दकरिके अप्रकाशका ग्रहणकरणा ॥ और प्रमादमोह इनदोनोंशब्दोंकाअर्थतौ (अप्रकाशोप्रवृत्तिश्च) इसपूर्वउक्त श्लोकविषे कथनकरिआयेहैं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ अब सत्त्वादिकतीनगुणोंकेवृत्तविषेस्थितपुरुषोंका (यदासत्त्वेप्रवृद्धेतु) इसपूर्वउक्तश्लोकविषेकथनकर्याजोफलहै तिसीही फलकूं ऊर्ध्वभावकरिके तथा अधोभावकरिके कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्त्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तस्थाअधोगच्छंतितामसाः ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वम् । गच्छंति । सत्त्वस्थाः । मध्ये । तिष्ठंति । राजसाः । जघन्यगुणवृत्तस्थाः । अधः । गच्छंति । तामसाः ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सत्त्ववृत्तविषेस्थितपुरुष ऊपरिलेलोकोंकूं जावैंहैं और रजोवृत्तविषेस्थितपुरुष मनुष्यलोकविषे स्थितहोवैं हैं और निकृष्टतमोगुणकेवृत्तविषेस्थित तामसपुरुष अधः गमनकरैंहैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां तीसरेतमोगुणकेअंतविषे वृत्त यहशब्द श्रीभगवान्नैं कथनकर्याहै ॥ यातैं सत्त्वरज इनआदिके दोगुणोंकेअंतविषेभी सोवृत्तशब्द श्रीभगवान्कूं

रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूं प्राप्तहोइके कर्मकेअधिकारीमनुष्योंविषे उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणकीवृद्धिहुए मरणकूंप्राप्तहुआ यहजीव पश्वादिकयोनियोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ १५ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहदेहाभिमानीजीव जबी रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै तबी कर्मसंगियोंविषे उत्पन्नहोवैहै · अर्थात् श्रुतिस्मृतिकरिकैविधानकरेजे अग्निहोत्रादिककर्महैं तथाश्रुतिस्मृति करिकैनिषिद्धकरेजे हिंसादिककर्महैं तिनकर्मोंविषे तथातिनकर्मोंकेफलोंविषे अधिकारीजेमनुष्यहैं तिन्होंकानाम कर्मसंगीहै ऐसेकर्मसंगीमनुष्योंविषे जोजीव जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार तमोगुणकीवृद्धिहुए यहजीव जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै तबी यहजीव कार्यअकार्यकेविचारतैंरहित पश्वादिकमूढयोनियोंविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १५ ॥ ❀ ॥ अब सत्त्वादिकतीनगुणोंविषे आपणेअनुसारकर्मद्वारा विचित्रफलकीहेतुताकूं श्रीभगवान संक्षेपकरिकैकथकरैहैं ।

(मू. श्लो.) कर्मणःसुकृतस्याहुःसात्त्विकंनिर्मलंफलम् ॥ रजसस्तुफलंदुःखमज्ञानंतमसःफलम् ॥ १६ ॥ कर्मणः । सुकृतस्य । आहुः । सात्त्विकम् । निर्मलम् । फलम् । रजसः । तु । फलम् । दुःखम् । अज्ञानम् । तमसः । फलम् ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! महर्षिजन सात्त्विक धर्मका सात्त्विक निर्मल फल कथनकरैहैं पुनः राजसधर्मका दुःखरूप फल कहैहैं तथा तामसधर्मका अज्ञानरूप फल कहैहैं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! महर्षिजन उत्तमसात्त्विकधर्मका सात्त्विक तथानिर्मल फल कहैहैं अर्थात् सत्त्वगुणकरिकैप्राप्तहुआ तथारजतमरूपमलकरिकैनहींमिल्याहुआ ऐसाजोसुखरूपफलहै सोसुखरूपफल तासात्त्विकधर्मका कहैहैं ॥ और पापमिश्रितपुण्यरूप जोराजसधर्म है तिसराजधर्मकातो तेमहर्षि राजसदुःखरूपफल कहैहैं अर्थात रजोगुणतैंउत्पन्नहुआ जो बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखहै सो तिसराजसधर्मकाफल कह्याजावैहै ॥ काहेतैं जोजोकार्यहोवैहै सोसोकार्य आपणेकारणकेसदृशहीहोवैहै ॥ यातैं पापमिश्रितपुण्यरूपराजसकर्मका बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखरूपफल युक्तहीहै ॥ और तेमहर्षिजन तामसधर्मकातो अज्ञानरूपफलही कहैहैं अर्थात् तमोगुणकरिकैजन्यहोणेतैं तामसरूप ऐसाजो अविवेकप्रयुक्तदुःखहै सोदुःख तिसतामसधर्मकाहीफलकह्याजावैहै ॥ तहां सात्त्विकादिककर्मोंकालक्षणतो (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै अष्टादशअध्यायविषे श्रीभगवान् आपहीकथनकरैंगे ॥ इहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं रज

प्रमादः। मोहः। एव। च। तमसि। एतानि। जायंते। विवृद्धे। कुरुनंदन ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तमोगुणके वर्द्धमानहुए ही अप्रकाश तथा अप्रवृत्ति तथाप्रमाद तथा मोह इतनेलिंग उत्पन्नहोवैं हैं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! जिसकालविषे तमोगुणकीवृद्धिहोवै है तिसकालविषे अप्रकाश अप्रवृत्ति प्रमाद मोह इतनेलिंग उत्पन्नहोवैं हैं अर्थात् यहपुरुष इतने अव्यभिचारीलिंगोंकरिकैही तमोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां गुरुशास्त्रादिक बोधकेकारणोंकेविद्यमानहुएभी जो सर्वप्रकारतें ताबोधकीअयोग्यताहै ताकानाम अप्रकाशहै ॥ और उत्पन्नकऱ्याहै आपणेअर्थकाबोधनजिसनैं ऐसाजो प्रवृत्तिकाकारणरूप (अग्निहोत्रंजुहुयात्) इत्यादिकशास्त्रहै ताशास्त्रकेविद्यमानहुएभी जोसर्वप्रकारतें तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे प्रवृत्तिअयोग्यताहै ताकानाम अप्रवृत्तिहै ॥ और तिसकालविषे कर्त्तव्यतारूपकरिकैप्राप्तहुए अर्थकाभीजो तिसकालविषेस्मरणनहींहोणा ताकानाम प्रमादहै ॥ और निद्राका तथाविपर्ययका नाम मोहहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अब मरणकालविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्त्वादिकतीन गुणोंकेफलविशेषकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) यदासत्त्वेप्रवृद्धेतुप्रलयंयातिदेहभृत् ॥ तदोत्तमविदांलोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ यदा। सत्त्वे। प्रवृद्धे। तु। प्रलयम्। याति। देहभृत्। तदा। उत्तमविदाम्। लोकान्। अमलान्। प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! पुनः यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणके वर्द्धमानहुए मृत्युकूं प्राप्तहोवै है तबी उपासक पुरुषोंके मलरहित लोकों कूं प्राप्तहोवैहै ॥ ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणकेवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवै है तबी यहजीव उत्तमवित् पुरुषोंकेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां हिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकानाम उत्तमहै तिनउत्तमोंकूं जेपुरुष जानैं हैं अर्थात् तिनहिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकी जेपुरुष उपासनाकरैं हैं तिनपुरुषोंकानाम उत्तमवित्है ॥ तिनउत्तमवित्पुरुषोंके जेलोकहैं अर्थात् दिव्यसुखोंकेभोगके जेस्थानविशेषहैं जेलोक अमलहैं अर्थात् रजतमरूपमलतैंरहितहैं ऐसेलोकोंकूं सो पुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) रजसिप्रलयंगत्वाकर्मसंगिषुजायते ॥ तथाप्रलीनस्तमसिमूढयोनिषुजायते ॥ १५ ॥ रजसि। प्रलयम्। गत्वा। कर्मसंगिषु। जायते। तथा। प्रलीनः। तमसि। मूढयोनिषु। जायते ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहदेहाभिमानीजीव

पआवरणका विरोधीहोवैहै ॥ तैसे आपणेशब्दादिकविषयोंकेआवरणकाविरोधी ऐसाजो तिनशब्दादिकविषयाकार बुद्धिकावृत्तिरूपपरिणामविशेषहै ताका नाम प्रकाशहै ॥ ऐसाज्ञानरूपप्रकाश जिसकालविषेउत्पन्नहोवैहै तिसकालविषे तिसज्ञानप्रकाशरूपलिंगकरिकै यहपुरुष अबी प्रकाशरूपसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्रा प्तहुआहै इसप्रकार जानैं ॥ इहां (विवृद्धंसत्त्वमित्युत) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो उत यहशब्दहै सोउतशब्द अपि इसशब्दकेअर्थका वाचकहै ता करिकैयहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जैसे ज्ञानरूपप्रकाशकरिकै सत्त्वगुणकीवृद्धि जानीजावैहै तैसेसुखादिकलिंगोंकरिकैभी यहपुरुषतासत्त्वगणकीवृद्धिकूं जानैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ उत इसशब्दकायहअर्थकऱ्याहै ॥ सत्त्वगुणकीवृद्धिकीन्याईं यहपुरुष तिसज्ञानरूपप्रकाशकरिकै रज तम इनदोनोंगुणोंके क्षीणताकूंभी जानैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) लोभःप्रवृत्तिरारंभः कर्मणामशमःस्पृहा ॥ रजस्येतानिजायंतेविवृद्धेभरतर्षभ ॥ १२ ॥ लोभः । प्रवृत्तिः । आरंभः । कर्मणाम् । अशमः । स्पृहा । रजसि । एतानि । जायंते । विवृद्धे । भरतर्षभ ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभरतर्षभ रजोगुणके वर्द्ध मानहुए लोभ प्रवृत्ति कर्मोंका आरंभ अशम स्पृहा येहसर्व उत्पन्नहोवै है ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! रागात्मक रजोगुणकेवर्द्धमानहुए इसपुरुषविषे लोभप्रवृत्ति कर्मोंकाआरंभ अशम स्पृहा इतनेरागात्मकलिंग उत्पन्नहोवैं हैं अर्थात् इनलोभा दिकलिंगोंकरिकै यहपुरुष रजोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां महानधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिहुएभी दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहुईजा तिनधनादिकप्राप्तिकीअभिलाषाहै ताकानामलोभहै अर्थात् आपणेविषयकीप्राप्तिकरिकैभी नहीं निवृत्तहुई जाइच्छाविशेषहै ताकानाम लोभहै ॥ और निरंतरही प्रयत्नवाला होणा याकानाम प्रवृत्तिहै ॥ और बहुतधनकेखर्चकरणेतैंसिद्धहोणेहारे तथा शरीरकूंआयासकीप्राप्तिकरणेहारे ऐसेजेकाम्य निषिद्ध लौलिक महागृहादिविषयक व्यापरहैं तिनोंकानाम कर्म है ऐसेकर्मोंकाजो उद्यमहै ताकानाम कर्मोंका आरंभहै ॥ और इसकार्यकूंकरिकै पुनःमैं इसदूसरेकार्यकूंकरोंगा इसदूसरेकार्यकूं करिकै पुनःमैं इसतीसरेकार्यकूंकरौंगा याप्रकारकेसंकल्पोंकेप्रवाहकीजो नहींउपरामताहोणीहै ताकानाम अशमहै ॥ और परधनादिकोंकेदेखणेमात्रकरिकै जो जिसीकिसीउपायकरिकै तिनपरधनादिकोंकेग्रहणकरणेकीइच्छाहै ताकानाम स्पृहाहै ॥ इसप्रकार लोभतैंआदिलैकेस्पृहापर्यंत कथनकरेजेलिंगहैं तिनलिंगों करिकै यहपुरुष वृद्धिकूंप्राप्तहुएरजोगुणकूंजानैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्चप्रमादोमोहएवच ॥ तमस्येतानिजायंतेविवृद्धेकुरुनंदन ॥ १३ ॥ अप्रकाशः । अप्रवृत्तिः । च ।

(मू. श्लो.) रजस्तमश्चाभिभूयसत्त्वंभवतिभारत ॥ रजःसत्त्वंतमश्चैवतमःसत्त्वंरजस्तथा ॥ १० ॥ रजः । च । अभिभूय । सत्त्वम् । भवति । भारत । रजः । सत्त्वम् । तमः । च । एव । तमः । सत्त्वम् । रजः । तथा ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभारत! रजोगुणकूं तथा तमोगुणकूं अभिभवकरिकै जबीसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवै तथा रजोगुणकूं तथा सत्त्वगुणकूं अभिभवकरिकै जबी तमोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै तथा तमोगुणकूं तथासत्त्वगुणकूंअभिभवकरिकै जबी रजोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै तबी तेसत्त्वादिकगुण आपणेआपणेकार्यकूंकरैं हैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसकालविषे रज तम इनदोनोंहीगुणोंकूं एकहीकालविषेअभिभवकरिकै अर्थात् तिरस्कारकरिकै सोसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे सो सत्त्वगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभीजिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथातमोगुणकूं दोनोंकूं एकहीकालविषे अभिभवकरिकै वृद्धिकूं प्राप्तहोवैहै तिसकालविषेही सोरजोगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार तमोगुणभी जिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथारजोगुणकूंदोनोंकूं एकहीकालविषेअभिभवकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषेही सोतमोगुण पूर्वउक्तआपणे कार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! तिनसत्त्वादिकतीनगुणोंकीवृद्धि किसलिंगकरिकेजानीजावैहै ॥ तावृद्धिकेज्ञानहुएही यहपुरुष ताकेनिवृत्तकरणेविषेसमर्थहोवैगा ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् वृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्त्वादिकतीन गुणोंके लिंगोंकूं तीनश्लोकोंकरिकैकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वद्वारेषुदेहेस्मिन्प्रकाशउपजायते ॥ ज्ञानंयदातदाविद्याद्विवृद्धंसत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥ सर्वद्वारेषु । देहे । अस्मिन् । प्रकाशः । उपजायते । ज्ञानम् । यदा । तदा । विद्यात् । विवृद्धम् । सत्त्वम् । इति । उत ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इस देहविषे श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूप प्रकाश उत्पन्नहोवैहै तिसकालविषे सत्त्वगुण वृद्धिकं प्राप्तहुआहै इसप्रकार जैनणा ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसजीवात्माका सुखदुःखकेभोगकास्थानरूपजो यहदेहहै इसदेहविषेस्थित जे शब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप श्रोत्रादिकइंद्रियरूप सर्वद्वारहैं तिनइंद्रियरूपसर्वद्वारोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूपप्रकाश उत्पन्नहोवैहै अर्थात् जैसे दीपक आपणेविषयरूपघटादिकपदार्थोंकेअंधकाररू

टीका। तहां (तमस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वउक्त सत्त्व रज दोनोंकीअपेक्षाकरिकै इसतमोगुणविषे विलक्षणताकेबोधन करणेवासतै है ॥ हे अर्जुन ! तमोगुणकूं तूं आवरणशक्तिरूपअज्ञानतैं उत्पन्नहुआ जान ॥ इसकारणतैंही सोतमोगुण सर्व देहाभिमानीजीवोंका मोहनहै अर्थात् अविवेकरूपताकरिकै भ्रांतिकाजनकहै ॥ ऐसातमोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं प्रमादकरिकै तथाआलस्यकरिकै तथानिद्राकरिकै बंधायमानकरै है ॥ तहां वस्तुके विवेककरणेकाजोअसामर्थ्य है ताकानाम प्रमादहै सोप्रमादतौ सत्त्वगुणके प्रकाशरूपकार्यका विरोधीहोवै है ॥ और प्रवृत्तिकरणेका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम आलस्यहै ॥ सोआलस्यतौ रजोगुणके प्रवृत्तिरूपकार्यका विरोधीहोवै है ॥ और तमोगुणकूंआलंबनकरणेहारीजा लयरूपवृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै सानिद्रा तौ सत्त्वगुणकेकार्यका तथारजोगुणकेकार्यकादोनोंकाही विरोधीहोवै इति ॥ ८ ॥ ❀ शंका–हे भगवन् ! पूर्वउक्तकार्योंकेमध्यविषे किसकार्यविषे किसगुणकी उत्कर्षताहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) सत्त्वंसुखेसंजयतिरजःकर्मणिभारत॥ ज्ञानमावृत्यतुतमःप्रमादेसंजयत्युत ॥९॥ सत्त्वम्। सुखे। संजयति। रजः। कर्मणि। भारत। ज्ञानम्। आवृत्य। तु। तमः। प्रमादे। संजयति। उत ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभारत सत्त्वगुण इसपुरुषकूं सुखविषे युक्तकरै है तथारजोगुण कर्मविषे युक्तकरै है औरं तमोगुणतौ ज्ञानकूं आच्छादनकरिकै प्रमादविषे भी युक्तकरै है॥९॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! सोपूर्वउक्त सत्त्वगुण उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ इसदेहाभिमानीजीवकूं सुखविषे युक्तकरै है अर्थात् दुःखकेकारणका अभिभवकरिकै इसपुरुष कूं सुखविषेजोडै है ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभी उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ सुखकेकारणोंका अभिभवकरिकै इसजीवात्माकूं लौकिकवैदिककर्मोंविषे युक्तकरै है ॥ और तमोगुणतौ प्रयाणकेबलकरिकैउत्पन्नहुएभी सत्त्वगुणकेकार्यरूपज्ञानकूं आवृतकरिकै इसपुरुषकूं प्रमादविषे युक्तकरै है ॥ तहांजिसवस्तुकाजानणा अवश्यकरिकै प्राप्तहोवै तावस्तुकाभी जोनहींजानणाहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ऐसेप्रमादविषे सोतमोगुण इसपुरुषकूं जोडैहै ॥ इहाँ (संजयत्युत) इसवचनविषेस्थितजो उत यह शब्दहै सोउतशब्द अपिइसशब्दकेअर्थकावाचकहै ॥ ताकरिकै आलस्य निद्राइनदोनोंकाभीग्रहणकरणा अर्थात् सोतमोगुण इसजीवात्माकूं आलस्यविषे तथानिद्राविषेभी जोडै है ॥ तहां जोकार्य अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहै ताकार्यकाभी जोनहींकरणाहै ताकानाम आलस्यहै ॥ और लयनामा तामसीवृत्तिविशेषकानाम निद्राहै ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! इसपूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्याजो सत्त्वादिकतीनगुणोंका कार्य है तिसआपणेआपणेकार्यकूं तेसत्त्वादिकतीन गुण किसकालविषे करैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवानकहैं हैं।

श्लोकविषे सुखकूं तथाचेतनारूपज्ञानकूंभी इच्छाद्वेषादिकोंकीन्याईं क्षेत्रकाही धर्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहे ॥ तहां अंतःकरणकाधर्मरूप जोसुखहै तथाज्ञानहै ॥ तासुखज्ञानदोनोंका जोआत्माविषेअध्यासहै जोअध्यास मैंसुखीहूं मैंजानताहूं इसप्रकारकीप्रतीतिकरिकैसिद्धहै ॥ ताकानाम सुखसंगहै तथाज्ञानसंगहै ॥ ऐसे सुख संगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै सोसत्त्वगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरै है ॥ तहां विषयकेधर्म प्रकाशकरूपविषयीकेहोवैंनहीं ॥ जैसे घटादिकविषयोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकेहोवैंनहीं ॥ यातैं यहसर्वबंध अविद्यामात्रही है यहवार्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआये हैं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) रजोरागात्मकंविद्धितृष्णासंगसमुद्भवम् ॥ तन्निबध्नातिकौंतेयकर्मसंगेनदेहिनम् ॥ ७ ॥ रजः । रागात्मकम् । विद्धि । तृष्णासंगसमुद्भवम् । तत् । निबध्नाति । कौंतेय । कर्मसंगेन । देहिनम् ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय तृष्णासंगदोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ऐसेरजोगुणकूं तूं रागरूप जान सोरजोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरै है ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां यहपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे रंजनकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम रागहै ॥ सोरागही है आत्मा क्या स्वरूप जिसका ताकानाम रागात्मकहै ॥ ऐसा रागात्मक रजोगुणकूं तूं जान ॥ यद्यपि सोराग तिसरजोगुणका धर्म है ॥ तथापि धर्म धर्मी दोनोंका तादात्म्यहीहोवै है ॥ यातैं तारजोगुणकूंरागरूपकह्याहै ॥ इसीकारणतैंही सोरजोगुण तृष्णासंगसमुद्भवहै ।। तहां अप्राप्तवस्तुकेप्रातिकीजाअभिलाषाहै ताकानाम तृष्णाहै ।। और प्राप्तवस्तुकेविनाशकेप्राप्तहुएभी जो तिसवस्तुकेरक्षणकरणेकीअभिलाषाहै ताकानाम आसंगहै ।। तिस तृष्णा आसंग दोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ताकानाम तृष्णासंगसमुद्भवहै ।। ऐसारजोगुण वास्तवतैं अकर्त्तारूपहुएभी कर्तृत्वअभिमानवालेजीवात्माकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरै है ।। तहां इसलोककेफलकाहेतुरूप तथापरलोककेफलकाहेतुरूप जे लौकिक वैदिककर्म हैं तिनकर्मोंविषे मैंइसकर्मकूंकरूंहूं मैं इसकर्मकूंभोगौंगा इसप्रकारका जो अभिनिवेशविशेषहै ताकानाम कर्मसंगहै ।। ऐसे कर्मसंगकरिकै सोरजोगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरै है ।। जिसकारणतैं सोरजोगुण केवल प्रवृत्तिकाही हेतुहै इति ।। ७ ।। ❀ ॥

(मू. श्लो.) तमस्त्वज्ञानजंविद्धिमोहनंसर्वदेहिनाम् ॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नातिभारत ॥ ८ ॥ तमः । तु । अज्ञानजम् । विद्धि । मोहनम् । सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिः । तत् । निबध्नाति । भारत ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भारत ! पुनः तमोगुणकूं तूं अज्ञानजन्य जान जोतमोगुण सर्वजीवोंकूं भ्रांतिकाजनकहैसोतमोगुण प्रमादआलस्यनिद्राकरिकै इसजीवकूं बंधायमान करे है ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

(प्रकृतिसंभवाः) इसनामकरिकैकहेजावैं हैं ॥ तेसत्त्वादिकतीनगुण इसदेहविषे अर्थात् तिसप्रकृतिकेकार्यरूपशरीरइंद्रियसंघातविषे अव्ययरूपदेहीकूं अर्थात् वास्तवतैं जन्ममरणादिकसर्वविकारों तैंरहितहोणेतैं अव्ययरूप तथाअविद्याकरिकै देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएजीवकूं बंधायमानकरैं हैं अर्थात् वास्तवतैं निर्विकाररूपभी तिसजीवात्माकूं तेसत्त्वादिकगुण आपणेविकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्याई दिखावैं हैं ॥ यहही तिनसत्त्वादिकगुणोंकृत तिसजीवात्माविषेबंधहे ॥ याप्रकारका (निबध्नंति) इसशब्दकाअर्थ अगलेश्लोकोंविषेभीजानलेणा ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे जलकरिकै भरेहुएपात्र आकाशविषेस्थितसूर्यकूं प्रतिबिंबाध्यासकरिकै आपणेविषेस्थितकंपादिक विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्याई दिखावैं हैं तैसे तेसत्त्वादिकतीनगुणभी वास्तवतैंनिर्विकारआत्माकूंभी आपणेविषे स्थित विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्याई दिखावैं हैं ॥ आत्माविषे जैसे वास्तवतैं बंधनहींसंभवै है तैसे (शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते) इसवचनविषे पूर्वविस्तारतैं कथनकरिआयेहैं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंविषे इसजीवात्माका बंधकपणा कथनकऱ्या ॥ अब कौनगुण किसके संगकरिकै इसजीवात्माकूंबंधायमानकरै है ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तत्रसत्त्वंनिर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ॥ सुखसंगेनबध्नातिज्ञानसंगेनचानघ ॥ ६ ॥ तत्र । सत्त्वम् । निर्मलत्वात् । प्रकाशकम् । अनामयम् । सुखसंगेन । बध्नाति । ज्ञानसंगेन । च । अनघ ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेसर्वव्यसनोंतैंरहितअर्जुन ! तिनतीनगुणोंकेमध्यविषे स्वच्छहोणेतैं प्रकाशक तथादुःखतैंरहित ऐसा सत्त्वगुण इसजीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथा ज्ञानसंग करिकै बंधायमानकरैहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सत्व रज तम यहपूर्वकथनकरेजे तीनगुणहैं तिनतीनगुणोंकेमध्य विषे प्रथम जोसत्त्वगुणहै सोसत्त्वगुणकैसाहै प्रकाशकहै अर्थात् चैतन्यका तमोगुणकृतजोआवरणहै ताआवरणका नाशकरणेहाराहै ॥ ताप्रकाशकताविषेहेतुकहैं हैं ॥ (निर्मलत्वात् इति) अर्थात् आपणेस्वच्छस्वभावताकरिकै चेतनकेप्रतिबिंबकेग्रहणकरणे योग्यहोणेतैं सोसत्त्वगुण प्रकाशकहै ॥ किंवा सोसत्त्वगुण केवल चैतन्यकाहीअभिव्यंजकनहीं है किंतु अनामयभीहै अर्थात् दुःखरूपआमयकाविरोधीजोसुखहै तिससुखकाभी सोसत्त्वगुण अभिव्यंजकहै ॥ इसप्रकार चैतन्यका तथा सुखका अभिव्यंजक जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुणइस जीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै बंधायमानकरैहै ॥ इहां सुखशब्दकरिकै तथाज्ञानशब्दकरिकै अंतःकरणकापरिणामरूप सुखका तथाज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ कोई आत्मस्वरूप सुखका तथाज्ञानका तासुखज्ञानशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ काहेतैं (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः) इसपूर्वउक्त

टीका । हेअर्जुन ! देव पितर मनुष्य पशु मृग इत्यादिकसर्वयोनियोंविषे जेजेमूर्तियां उत्पन्नहोवैं हैं अर्थात् जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज इसभेदकरिकै विलक्षण तथानानाप्रकारकेआकारवाले जेजेशरीर उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तिनशरीररूपसर्वमूर्तियोंका तिसतिसमूर्तिकेकारणभावकूंप्राप्तहुई साअव्याकृतनामामायाही मातारूपहै ॥ और मैंपरमेश्वरतौ तिसमायारूपयोनिविषे गर्भाधानकरणेहारा तिनसर्वशरीरोंका पितारूपहूं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तिनदेवादिकशरीरों के लोकप्रसिद्ध जेजेकारण प्रतीतहोवैंहैं तेसर्वकारण तिसअव्याकृतनामा मायारूपब्रह्मकेही अवस्थाविशेषरूपहैं ॥ यातैं (संभवःसर्वभूतानांततोभवतिभारत) यह भगवान्कावचन युक्तही है इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरवादीसांख्यशास्त्रकाखंडनकरिकै क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूं ईश्वरके अधीनपणा कथनकरया ॥ अब किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुणकौनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसपुरुषकूं बंधायमानकरैं हैं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् (सत्त्वंरजस्तमः) इसश्लोकतैं आदिलैके (नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारम्) इसश्लोकतैंपूर्व चतुर्दशश्लोकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सत्त्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः ॥ निबध्नंतिमहाबाहोदेहेदेहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥ सत्त्वम् । रजः । तमः । इति । गुणाः । प्रकृतिसंभवाः । निबध्नंति । महाबाहो । देहे । देहिनम् । अव्ययम् ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन ! सत्त्व रज तम यह मायातैंउत्पन्नहुए तीनंगुण इसदेहविषे अव्यय जीवात्माकूं बंधायमानकरैं हैं ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सत्त्व रज तम इसनामवाले जेतीनगुणहैं तेसत्त्वादिकतीनोंगुण चैतन्यपुरुषकेप्रति नित्यही परतंत्रहैं ॥ कदाचित्भी तेगुण स्वतंत्रहोवैंनहीं ॥ काहेतैं इसश्लोकविषेजे जेपदार्थ अचेतनरूपहैं तेसर्व अचेतनपदार्थ चैतन्यपुरुषकेअर्थहीहोवैं हैं ॥ जैसे गृहादिकअचेतनपदार्थ चेतनगृहीपुरुषकेअर्थही होवैं हैं ॥ तैसे तेसत्त्वादिकतीनगुणभी अचेतनहोणेतैं चेतनपुरुषकेअर्थही हैं ॥ जैसे नैयायिक रूपादिकगुणोंकूं पृथिवीआदिकद्रव्यकेआश्रितमानेहैं तैसे यहसत्त्वादिकतीनगुण किसीद्रव्यकेआश्रितहैंनहीं ॥ तथा जैसे नैयायिक पृथिवीआदिकगुणीद्रव्यतैं रूपादिकगुणोंकूं भिन्नमानैं हैं तैसे इहांसिद्धांतविषे तिनसत्त्वादिकगुणोंका मायारूपप्रकृतितैं भिन्नपणा विवक्षितहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सिद्धांतविषे सामायारूपप्रकृति सत्त्वादिकतीनगुणरूपही हैं ॥ शंका—हेभगवन् ! तेसत्त्वादिकतीनगुण जोकदाचित् प्रकृतिरूपहीहोवैं तौ (प्रकृतिसंभवाः) इसवचनकरिकैतिनगुणोंकी प्रकृतितैंउत्पत्तिकिसवासतैकथनकरीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ (प्रकृतिसंभवाः) हेअर्जुन ! सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकी जा साम्यअवस्थाहै ताकानाम प्रकृतिहै ॥ जिसप्रकृतिकूंशास्त्रविषे भगवत्कीमाया कहैहैं ऐसीमायारूपप्रकृतितैं तेसत्त्वादिकतीनगुणपरस्पर अंगअंगीभावकरिकै विषमताकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ याकारणतैं तेसत्त्वादिकगुण

णात्मकमाया मैंईश्वरके गर्भाधानकास्थानहै तिसमायाविषे मैंईश्वर संकल्परूपगर्भकूं धारणकरूंहूं तिसगर्भाधानतैंही सर्वभूतोंकी उत्पत्ति होवैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरका महद्ब्रह्म योनिहै ॥ इहां महद्ब्रह्मशब्दकरिकै अव्याकृतका ग्रहणकरणा ॥ जिसअव्याकृतकूं शास्त्रविषे अविद्या अज्ञान प्रकृति त्रिगुणात्मिकामाया इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरैं हैं ॥ सोअव्याकृत आपणेआकाशादिकसर्वकार्योंकीअपेक्षाकरिकैअधिकहोणेतैं महत् कह्याजावैहै ॥ तथा आपणेसर्वकार्योंकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ अथवा ब्रह्मका उपाधिरूपहोणेतैं सोअव्याकृत ब्रह्मकह्याजावैहै ॥ अथवा महत्तत्त्वनामा प्रथम कार्यकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं सोअव्याकृत महद्ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ ऐसेमहद्ब्रह्मनामवाली त्रिगुणात्मकमाया मैंपरमेश्वरकी योनिहै अर्थात् गर्भाधानकरणेका स्थानरूपहै ॥ ऐसीमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वर गर्भकूंधारणकरूंहूं अर्थात् सर्वभूतोंकेजन्मकाकारणरूप जो (एकोऽहंबहुस्यांप्रजायेय) इसप्रकारका ईक्षण रूपसंकल्पहै तिससंकल्परूपगर्भकूं तिसमायारूपयोनिविषे धारणकरूंहूं अर्थात् तिससंकल्पकाविषयकरूंहूं ॥ जैसे इसलोकविषे कोईकपिता पुण्यपापकरिकै युक्तहुए तथाव्रीहियवादिकआहाररूपकरिकैआपणेविषेलीनहुये ऐसेपुत्रकूं स्थूलशरीरकेसाथिसंबंधकरणेवासतै आपणीस्त्रीकीयोनिविषे वीर्यकेसिंचनपूर्वक गर्भकूंधारणकरैहै तिसगर्भाधानतैं सोपुत्र स्थूलशरीरकेसाथि संबंधवालाहोवैहै ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतै मध्यविषे कलिल बुद्बुद आदिकअनेकअवस्था होवैं हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे मैंपरमेश्वरविषेलीनहुए जे अविद्या काम कर्मवाले क्षेत्रज्ञनामाजीवहैं तिनजीवोंकूं सृष्टिकालविषे कार्यकारणसंघातरूप भोग्य क्षेत्रकेसाथि संबंधकरणेवासतैही मैंपरमेश्वर चिदाभासरूपवीर्यकेसिंचनपूर्वक तिस मायाकीवृत्तिरूपगर्भकूं धारणकरूंहूं ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतैही मध्यविषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी इत्यादिकोंकीउत्पत्तिरूपअवस्थाहोवैं हैं ॥ तिसमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंही हिरण्यगर्भादिकसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंविना तिनसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! मायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैं सर्व भूतोंकीउत्पत्ति कैसेसंभवैगी ॥ जिसकारणतैं देवतादिकदेहविशेषोंके दूसरेकारणभी संभवहोइसकैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ॥

(मू. श्लो.) सर्वयोनिषुकौंतेयमूर्त्तयःसंभवंतियाः ॥ तासांब्रह्ममहद्योनिरहंबीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सर्वयोनिषु । कौंतेय । मूर्त्तयः । संभवंति । याः । तासाम् । ब्रह्ममहत् । योनिः । अहम् । बीजप्रदः । पिता ॥ ४ ॥इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय ! देवादिक सर्वयोनियों विषे जे शरीर उत्पन्नहोवैं हैं तिनशरीरोंका सोमायाही मातारूपहै मैंपरमेश्वरतौ गर्भाधानकाकर्त्ता पितारूपहूं ॥ ४॥ इतिपदार्थः ॥

तिसज्ञानविषे उत्कृष्टफलवत्त्व कथनकऱ्या ॥ यातैं तिनदोनोंपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ ऐसेउत्कृष्टवस्तुकूंविषयकरणेहारे तथाउत्कृष्टफलकीप्राप्ति करणेहारे आत्मज्ञानकेसाधनरूपज्ञानकूं मैंश्रीभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति पुनःभी कथनकरताहूं अर्थात् इसतैंपूर्वअध्यायोंविषे जोज्ञान अनेकवार हमनैं तुम्हारे प्रति कथनकरयाहै सोईही ज्ञान अबी पुनःभी पूर्वउक्तप्रकारतैं किंचितविलक्षणप्रकारकरिकै मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जिससाधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्ति पूर्वक अनुष्ठानकरिकै सर्वही मननशीलसंन्यासी कैवल्यमोक्षरूपपरमासिद्धिकूं इसदेहसंबंधतैंप्राप्तहोतेभयेहैं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां तिससाधनरूपज्ञानकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं सामोक्षरूपपरमसिद्धिअवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) इदंज्ञानमुपाश्रित्यममसाधर्म्यमागताः ॥ सर्गेपिनोपजायंतेप्रलयेनव्यथंतिच ॥ २ ॥ इदम् । ज्ञानम् । उपाश्रित्य । मम । साधर्म्यम् । आगताः । सर्गे । अपि । न । उपजायंते । प्रलये । न । व्यथंति । च ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! इस साधनरूपज्ञानकूं अनुष्ठान करिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणस्वरूपकूं अत्यंतअभेदकरिकैप्राप्तहुए विद्वान् पुरुष सृष्टिकालविषे भी नहीं उत्पन्नहोवैं हैं तथा प्रलयकालविषे नहीं लयहोवैं हैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इस साधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अनुष्ठानकरिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणरूपकूं अत्यंतअभेदरूपकरिकै प्राप्तहुए अर्थात् हमही अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपहैं ॥ याप्रकारतैं आपणेआत्माकूं अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपजानतेहुए विद्वान्पुरुषसर्गविषेभी नहींउत्पन्नहोवैं हैं तथाप्रलयविषेभी नहींलयहोवैं हैं अर्थात् हिरण्यगर्भादिकोंकेउत्पन्नहुएभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ तथा ताहिरण्यगर्भकेविनाशकालरूपप्रलयविषेभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष लयभावकूंप्राप्तहो वैंनहीं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरिकै तिसज्ञानकीप्रशंसाकरिकैश्रोतापुरुषोंकूं श्रीभगवान् तिसज्ञानकेअभिमुखकरतेभए अब परमेश्वरकेअधीनवर्तनेहारे जेप्रकृतिपुरुषहैं तिनप्रकृतिपुरुषदोनोंकूही सर्वभूतोंकेउत्पत्तिकाकारणपणाहै ॥ सांख्यशास्त्रकीन्याईं स्वतंत्र तिसप्रकृतिपुरुषदोनों विषे सर्वभूतोंकाकारणपणाहैनहीं ॥ इसविवक्षितअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ममयोनिर्महद्ब्रह्मतस्मिन्गर्भंदधाम्यहम् ॥ संभवः सर्वभूतानांततोभवति भारत ॥ ३ ॥ मम । योनिः । महद्ब्रह्म । तस्मिन् । गर्भम् । दधामि । अहम् । संभवः । सर्वभूतानाम् । ततः । भवति । भारत ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भारत त्रिगु

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वत्रयोदशअध्याय विषे (यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैं सर्वस्थावरजंगम भूतोंकीउत्पत्ति कथनकरीथी ॥ तहां ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरसांख्यमतकाखंडनकरिकै ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूं ईश्वरकेआधीनपणा अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा तिसत्रयोदशअध्यायविषे (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं गुणोंकेसंगकूंही जन्मकाकारण कह्याथा ॥ तहां किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुण कौनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसजीवकूंबंधायमानकरैं हैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा (भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं भूतप्रकृतिकेमोक्षका कथनकऱ्याथा ॥ तहां भूतप्रकृतिनामवालेसत्त्वादिकगुणों तैं इसअधिकारीपुरुषका किसप्रकारकरिकैमोक्षहोवैहै ॥ तथातिसमुक्तहुएपुरुषकेकौनलक्षणहैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्याचाहिये ॥ इससर्वअर्थकूं विस्तारतैं कहणेवासतै श्रीभगवान्नैं यहचतुर्दशअध्याय प्रारंभकरीताहै ॥ तहां श्रोतापुरुषोंकीरुचिउत्पन्नकरणेवासतै श्रीभगवान् आगेवक्ष्यमाणअर्थकी दोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकरतेहुए कहैं हैं ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ परंभूयःप्रवक्ष्यामिज्ञानानांज्ञानमुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वामुनयःसर्वेपरांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥

परम्[३] । भूयः[१] । प्रवक्ष्यामि[६] । ज्ञानानाम्[५] । ज्ञानम्[४] । उत्तमम्[२] । यत्[७] । ज्ञात्वा[८] । मुनयः[१०] । सर्वे[९] । पराम्[१२] । सिद्धिम्[१३] । इतः[११] । गताः[१४] ॥१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! ज्ञानसाधनोंकेमध्यमें उत्तम तथाश्रेष्ठ ऐसेज्ञानसाधनकूं मैंभगवान् पुनःभी तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं जिसँसाधनकूं अनुष्ठानकरिकै सर्व मुनि इसदेहबंधनतैं परम कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्त होतेभयेहैं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां (ज्ञायतेऽनेनेतिज्ञानम्) अर्थयह ॥ जिससाधनकरिकै आत्मवस्तु जान्याजावैहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै इहां ज्ञानशब्द परमात्मविषयकज्ञानकेसाधनका वाचकहै ॥ कैसाहैसोज्ञान परहै अर्थात् परमात्मरूपपरवस्तुविषयकहोणेतैं श्रेष्ठहै ॥ पुनाकैसाहै सोज्ञान ज्ञानोंकेमध्यविषे उत्तम है अर्थात् (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इसश्रुतिनैं विधानकरेजे यज्ञदानादिक ज्ञानकेबहिरंगसाधनहैं तिनसर्वबहिरंगसाधनोंकेमध्यविषे उत्तमफलकाहेतुहोणेतैं उत्तमहै ॥ कोईपूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकेमध्यविषे सोज्ञान उत्तमनहीं है काहेतैं तेअमानित्वादिकसाधनभी अंतरंगसाधनहोणेतैं उत्तमफलकेहीहेतुहैं ॥तहां (परम्) इसविशेषणकरिकैतो तिसज्ञानविषे उत्कृष्टवस्तुविषयकत्व कथनकऱ्या ॥ और (उत्तमम्) इसविशेषणकरिकैतो

तामायाशक्तिकानाम भूतप्रकृतिहै ॥ ताभूतप्रकृतिकी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकी परमार्थभूतआत्मविद्याकरिकै आत्यंतिकनिवृत्तिहै ताकानाम भूतप्रकृतिमोक्षहै ॥ ऐसेभूतप्रकृतिमोक्षकूंभी जेअधिकारीपुरुष तिसज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं तेअधिकारिजनही परमार्थआत्मवस्तुस्वरूप कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ऐसी कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोइके तेअधिकारीजन पुनःदेहकूंग्रहणकरैंनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै तथा पूर्वउक्त क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताज्ञानवालाहै तिसअधिकारीपुरुषकूंही सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिकरिकै परमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं परमपुरुषार्थकीइच्छावान् पुरुषनैं तेअमानित्वादिकसाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे ॥ तथा सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकाविवेकज्ञान अवश्यकरिकै संपादनकरणा इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायांत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ।

इति त्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥



तानहीं ॥ तथा तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंकेभेदकरिकै सोसूर्यभेदकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे सोएकहीक्षेत्रज्ञआत्मा पूर्वउक्तसर्वक्षेत्रकूं प्रकाशकरै है ॥ इस कारणतैंही सोक्षेत्रज्ञआत्मा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेधर्मोंकारकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तथा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेभेदकरिकै सोक्षेत्रज्ञआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथाताक्षेत्रज्ञकेभेदकरिकैभेदकूंप्राप्तहोवैनहीं तिसक्षेत्रकाप्रकाश होणेतैं जो जिसवस्तुकाप्रकाशकहोवैहै सो तिसप्रकाश्यवस्तुकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथातिसप्रकाश्यवस्तुभेदकरिकैभीभेदकूंप्राप्तहोवै नहीं जैसेसूर्यहै इति ॥ किंवा क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकारकैलिपायमाननहींहोवैहै यहवार्त्ताकेवलअनुमानप्रमाणकरिकैही सिद्धनहीं है किंतु साक्षात्श्रुतिभगवतीभी इसअर्थकूं कथनकरै है ॥ तहांश्रुति ॥ (सूर्योयथासर्वलोकस्यचक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मानलिप्यतेलोकदुःखेन बाह्यः) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वलोकका चक्षुरूपसूर्य चक्षुके विषयरूप बाह्यपदार्थोंकेदोषोंकारकै लिपायमानहोवैनहीं तैसे सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरणेहारा तथादेहादिकसंघाततें भिन्न ऐसाजो सर्वभूतोंकाअंतरआत्माहै सोएकअद्वितीयआत्माभीप्रकाश्यरूपदेहादिकोंकेदुःखोंकारकै लिपायमानहोवैनहींइति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥

अबश्रीभगवान् इसत्रयोदशअध्यायकेअर्थका फलसहित उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम् ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि०ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेक्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देशयोगोनामत्रयोदशोध्यायः स० ॥ १३ ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । एवम् । अंतरम् । ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृतिमोक्षम् । च । ये । विदुः । यांति । ते । परम् ॥ ३४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जेपुरुष क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताकूं पूर्वउक्तप्रकारतें ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं तथा भूतोंके कारणरूपमायाकेअत्यंताभावकूं जानतेहैं तेअधिकारीपुरुष कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! पूर्वकथनकऱ्याजोक्षेत्रहै तथाक्षेत्रज्ञहै तिनदोनोंके विलक्षणताकूं जेपुरुष ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं अर्थात् यहक्षेत्रतौ जडहै तथाकर्त्ताहै तथाविकारीहै तथापरिच्छिन्नहै ॥ और यहक्षेत्रज्ञआत्मातौ चेतनहै तथाअकर्त्ताहै तथाअविकारीहै तथाअपरिच्छिन्नहै ॥ इसप्रकारकी दोनोंकीविलक्षणताकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशजन्यआत्मज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तथाजेअधिकारिपुरुष भूतप्रकृतिकेमोक्षकूं जानतेहैं ॥ तहां आकाशादिकसर्वभूतोंकाकारणरूप जा माया अविद्या अज्ञान इत्यादिकनामोंवाली परमेश्वरकीशक्तिहै जिसमायाशक्तिकूं (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरैं हैं ॥

तीयभेद संभवैनहीं ॥ और (अतोऽन्यदार्त्तम्) यहश्रुति आत्मातैंभिन्नसर्वजगतकूंकाल्पितकहै है ॥ और कल्पितवस्तुकी अधिष्ठानतैंभिन्नसत्ताहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे विजातीयभेदभी संभवैनहीं ॥ और (निष्कलम् निर्गुणम् निष्क्रियम् शांतम्) यहश्रुति आत्माकूं निरवयव निर्गुण निष्क्रिय कहै है ॥ यातैं आत्माविषे स्वगतभेदभी संभवैनहीं इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ तहां शरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव आप असंगहोणेतैं तिसशरीरकेकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तअर्थविषे दृष्टांतकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा । सर्वगतम् । सौक्ष्म्यात् । आकाशम् । न । उपलिप्यते । सर्वत्र । अवस्थितः । देहे । तथा । आत्मा । न । उपलिप्यते ॥३२॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! जैसे सर्वत्रव्यापकभी आकाश असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवै है तैसे सर्व देहोंविषे स्थितहुआभी यह आत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवैहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन! जैसे घटमठतैं आदिलेके जितनेक दुष्ट तथाअदुष्ट मूर्तद्रव्यहैं तिनंसर्वद्रव्योंविषे अंतर तथा बाह्यव्याप्यकरिकैवर्त्तमानहुआभी यह आकाश सूक्ष्महोणेतैं अर्थात् असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनमूर्त्तद्रव्योंके सुगंध दुर्गंध वर्षा आतप अग्नि धूम रज पंक इत्यादिकगुणदोषोंकरिकै लिपायमान होतानहीं तैसे देव मनुष्य पशु इत्यादिकउच्चनीचसर्वदेहोंविषे अंतर बाह्य सर्वत्रव्याप्यकरिकैस्थितहुआभी यहआत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनदेहादिकृत शुभअशुभकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (असंगोनहिसज्जते) ॥ अर्थयह ॥ यह आत्मादेव असंगहोणेतैं किसीभीवस्तुकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ किंवाइसआत्मादेवविषे केवल असंगतारूपहेतुतैंही अलेपतानहींहै किंतु प्रकाशकत्वरूपहेतुतैंभी इसआत्मादेवविषे साअलेपताहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकैकथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३३ ॥ यथा । प्रकाशयति । एकः । कृत्स्नम् । लोकम् । इमम् । रविः । क्षेत्रम् । क्षेत्री । तथा । कृत्स्नम् । प्रकाशयति । भारत ॥ ३३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन! जैसे एकही सूर्य इस सर्व लोककूं प्रकाशकरैहै तैसे क्षेत्रज्ञनामाआत्मा इससर्व क्षेत्रकूं प्रकाशकरैहै ॥ ३३ ॥इतिपदार्थः॥

टीका । हेअर्जुन! जैसे एकहीसूर्य इसरूपवान्देहादिकसर्ववस्तुवोंकूं प्रकाशकरैहै परंतु तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंके धर्मोंकरिकै सोसूर्य लिपायमानहो

विकारभावकीप्राप्तिकरिकैही तेधर्म उत्पन्नहोवैंहैं तथानष्टहोवैंहैं ॥ और यहआत्मादेवतौ तिनसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ यातैं यह आत्मादेवं तिनधर्मोंकेव्ययकरिकै भी व्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवाअरेऽयमात्मानुच्छित्तिधर्मा) ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयि ! यहआत्मादेव स्वरूपतैंभी नाशादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशादिकाविकारोंकरिकैभी नाशादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहै इति ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं यहआत्मादेव जन्म अस्ति वृद्धि विपरिणाम अपक्षय विनाश इनषट्भावविकारोंतैंरहितहै इसकारणतैं यहआत्मादेव आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी तिसशरीरके प्रवृत्तहुएभी यहआत्मादेव किंचित्मात्रभी करतानहीं ॥ जैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै जलविषेस्थितहुआभी सूर्य ताजलकेचलायमानहुएभी चलायमानहोवैनहीं तैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव ताशरीरकेप्रवृत्तहुएभी किंचितमात्रभी करतानहीं ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभी लौकिकवैदिककर्मकूं करतानहीं तिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ काहेतें इसलोकविषे जोजोपुरुष जिसजिसशुभअशुभकर्मकूंकरैहै सोसोपुरुषही तिसतिसकर्मके सुखदुःखरूपफलकरिकैलिपायमानहोवैहै ॥ तिसतिसकर्मकूंनहींकरताहुआपुरुष तिसतिसकर्मकेफलकरिकैलिपायमानहोवैनहीं ॥ और यहआत्माभीकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तहां (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखम्) इत्यादिकवचनकरिकै तिनइच्छाद्वेषादिकोंविषे क्षेत्रकाहीधर्मपणा कथनकरचाहै ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानि) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंविषे मायाकाहीकार्यपणा कथनकऱ्याहै असंगआत्माका कोईधर्मनहींहै तथाकोईकार्यनहींहै ॥ याकारणतैंही परमार्थदर्शीविद्वानपुरुषोंकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकाअभाव पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इतनेकरिकै आत्माविषे सर्वधर्मोंतैंरहितपणाकथनकरिकै स्वगतभेदभी निवृत्तकरे ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणि) इसश्लोकविषेतौ पूर्व सजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौ पूर्व विजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (अनादित्वान्निर्गुणत्वात्) इसश्लोकविषेतौ स्वगतभेद निवृत्तकऱ्याहै ॥ यातैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद इनतीनभेदोंतैंरहितहोणेतैं अद्वितीयब्रह्मरूपही यहआत्माहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ तहां समानजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै जैसे एकवृक्षविषे दूसरेवृक्षकाभेदहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे तिसीवृक्षविषे पाषाणकाभेदहै ॥ और एकहीवस्तुविषे आपणेअवयवोंकरिकैजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै ॥ जैसे तिसएकहीवृक्षविषे शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिक अवयवोंकरिकैभेदहै ॥ और (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) यहश्रुति सर्वभूतोंविषे एकहीआत्मा कहैहै ताआत्माकेसमानजातिवाला दूसराकोई आत्माहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे सजा

अकर्त्तापणा हुएभीशरीरकासंबंधरूपउपाधिकरिकै कर्त्तापणा होवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूंनिवृत्तकरतेहुए श्रीभगवान् (यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैवर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.)अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः॥शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते॥३१॥अनादित्वात् । निर्गुणत्वात् । परमात्मा । अयम् । अव्ययः । शरीरस्थः । अपि । कौंतेय । न । करोति । न । लिप्यते ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! अनादिहोणेतें तथा निर्गुणहोणेतें यह परमात्मा अव्ययहै ऐसाआत्मा इसशरीरविषेस्थित हुआ भी नहीं करै है नहीं लिपायमानहोवै है ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! परमेश्वरतैंअभिन्नहोणेतैं परमात्मारूप जोयह अपरोक्ष प्रत्यक्आत्माहै सोयहआत्मा अव्ययहै ॥ तहां जन्ममरणादिकविकारोंकानाम व्ययहै ताविकाररूपव्ययकूं जोनहींप्राप्तहोवैहै ताकानाम अव्ययहै अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितवस्तुकानाम अव्ययहै सोव्ययदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ धर्मीकेस्वरूपकूंही उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्ययहोवैहै ॥ औरदूसरा ताधर्मीकेस्वरूपकीअनुत्पत्तिहुएभी ताकेधर्मोंकूं उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्यय होवैहै ॥ तहां श्रीभगवान् आत्माविषे प्रथमव्ययका निषेधकरैं हैं (अनादित्वातइति) तहां पूर्व असत्त्वअवस्थाकानाम आदिहै जैसे घटादिकपदार्थोंकी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जा असत्त्वअवस्थाहै साअसत्त्वअवस्थाही तिनघटादिकोंकी आदिहै साआदि जिसवस्तुकीनहींहोवै तावस्तुकानाम अनादिहै ॥ ऐसा अनादि सर्वकालविषेसत्यआत्माहै ॥ ऐसाअनादिहोणेतैंही यहआत्मादेव कारणकेअभाववालाहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु तिसआदिवालाहोवैहै तिसवस्तुकाही जन्महोवै है जैसे घटादिकपदार्थ तिसआदिवालेहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और आत्माकी साआदिहैनहीं ॥ यातैं आत्माका जन्मभीहोवैनहीं ॥ और ताजन्मतैंपश्चातही मरणपर्यंत सर्वभावविकार प्राप्तहोवैं हैं ॥ ताजन्मरूपआदिविकारकेअभावहुए इसआत्मादेवकूं तेमरणपर्यंत सर्वभावविकारभी प्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव आपणेस्वरूपतैं तिसजन्मादिविकाररूपव्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यकश्चिज्जनितानचाधिपः) ॥ अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवका कोईभीउत्पन्नकरणेहाराकारण नहीं है तथा तिसआत्मादेवका कोईभीअधिष्ठाता नहीं है इति ॥ अब दूसरेव्ययका निषेध करैं हैं (निर्गुणत्वातइति) हेअर्जुन ! यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहोणेतैंभी अव्ययहै ॥ काहेतैं इसलोकविषे जितनेक रूपरसादिकधर्म हैं तिनसर्व धर्मोंका आपणेधर्मीकेसाथि तादात्म्यहीहोवै है यातैं तेरूपादिकधर्म आपणेधर्मीकूं विकारभावकीनहींप्राप्तिकरिकै उत्पन्न वा नाश होवैंनहीं किंतु आपणेधर्मीकूं

विषे तथाविषमताविषे किंचितमात्रभी प्रमाणनहीं है ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकवार प्रतिपादनकरिआयेहैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व आपादतैं क्षेत्रके भेददर्शनका कथनकारकै क्षेत्रज्ञकेभेददर्शनका निषेधकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसक्षेत्रकेभेददर्शनकूंभी मायिकत्वरूपहेतुकारकै निषेधकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यदाभूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ॥ ततएवचविस्तारंब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ ३० ॥ यदा । भूतपृथग्भावम् । एकस्थम् । अनुपश्यति । ततः । एवं । च । विस्तारम् । ब्रह्म । संपद्यते । तदा ॥ ३० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे भूतोंकेपृथक्भावकूं एकआत्माविषेस्थित देखताहै तथा तिसएकआत्मातैं हीं तिनभूतोंके विस्तारकूं देखताहै तिसकालविषे एकब्रह्महो होवैहै ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे स्थावरजंगमरूप सर्वजडभूतोंके परस्परभिन्नत्वरूप पृथक् भावकूं एकविषेस्थित देखताहै अर्थात एकहीसतरूपअधिष्ठानआत्माविषे तिसभूतोंकेपृथक्भावकूं कल्पितदेखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोजोवस्तु कल्पितहोवैहै सोसोकल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तिसरज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैंनहीं ॥ तथा जैसे कनकविषेकल्पित कुंडलकंकणादिकभूषणातिसकनकतैंभिन्नहोवैं नहीं ॥ तैसे सतरूपआत्माविषेकल्पित यहसर्वभूतोंकापृथक्भावभी तिसअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर जोपुरुष आपणे स्वरूपकाविचारकरैहै अर्थात् यहसर्वजगत् आत्मारूपही है आत्मातैंभिन्नसत्तावाला यहजगत् नहींहै इसप्रकारतैं जोपुरुष विचारकारिकै देखैहै ॥ इस प्रकार तिसअधिष्ठानआत्मातैं सर्वभूतोंकेअपृथक्हुएभी जोपुरुष तिसएकआत्मातैंही मायाकेवशतैं तिनसर्वभूतोंके विस्तारकूंतथापृथक्भावकूं स्वप्नमायाकीन्याई विचारकारिकै देखैहै तिसकालविषे सजातीयभेददर्शनकेअभावतैं सर्वअनर्थोंतैंशून्य एकब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥) अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं स्थावरजंगमरूपसर्वभूत आपणाआत्मारूपहीहोतभये हैं तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्माकेएकअद्वितीयभावकूं देखणेहारे तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं शोक तथामोह कदाचित्भीहोवैनहीं इति ॥ तहां (प्रकृत्यैव चकर्माणि) इसपूर्वश्लोकविषे तौ श्रीभगवान्नैं क्षेत्रज्ञआत्माकेभेदका निषेधकऱ्याथा ॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौ श्रीभगवान्नैं क्षेत्ररूपआत्मपदार्थोंकेभेदकाभी निषेधकऱ्याहै ॥ इतनी इनदोनोंश्लोकोंविषे विशेषताहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! आत्माकं स्वभावतैं

अंधतमकारिकैआवृत ऐसेजे नरकादिकलोकहैं तिनलोकोंकूं तेपुरुष मरिकैप्राप्तहोवें हैं जेपुरुष आत्महनहैं ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जेपुरुषआत्मअभिमानकरैं हैं तिनपुरुषोंकानाम आत्महनहै इति ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसाक्षात्कारकरै है सोपुरुष देहादिकअनात्मपदार्थों विषे आत्मअभिमानकूं शुद्धआत्माकेदर्शनकारिकै नाशकरै है ।। यातैं आपणेवास्तवस्वरूपकेलाभतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेआपणे आत्माकूं आपणेआत्माकारिकै नाशकरतानहीं ।। इसीकारणतैंही सोतत्त्ववेत्तापुरुष परागतिकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूं सोतत्त्ववेत्तापुरुष प्राप्तहोवै है इति ।। २८ ।। ❀ ।। शंका—हे भगवन् ! शुभअशुभकर्मोंकूं करणेहारे देहदेहविषे भिन्नभिन्नही आत्माहैं ।। तथा तिसतिससुखदुःखादिरूप विचित्रफलके भोक्ताहोणे तैं तेआत्मा विषमस्वभाववालेभी हैं ।। यातैं सर्वभूतोंविषेस्थित एकआत्माकूंसमदेखताहुआ यहपुरुष आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं नहींहननकरै है यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानिसर्वशः ॥ यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति ॥ २९ ॥ प्रकृत्या । एव । च । कर्माणि । क्रियमाणानि । सर्वशः । यः । पश्यति । तथा । आत्मानम् । अकर्त्तारम् । सः । पश्यति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मायारूपप्रकृतिनैं ही सर्वप्रकारकरिकै सर्वकर्म करीते हैं इसप्रकार जोविवेकीपुरुष देखताहै तथा क्षेत्रज्ञआत्माकूं जो अकर्त्ता देखैहै सोईहीपुरुष सम्यक् देखताहै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै आरंभकरणेयोग्य जेलौकिकवैदिककर्म हैं तेसर्वकर्म सर्वप्रकारकरिकै प्रकृतिनैंही करीते हैं अर्थात् देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारपरिणामकूंप्राप्तहुई तथासर्वविकारोंकाकारणरूपऐसीजा त्रिगुणात्मक भगवत्कीमायाहै तिसमायारूपप्रकृतिनैंही तेसर्व कर्म करीते हैं ॥ सर्वविकारोंतैंशून्य क्षेत्रज्ञनामापुरुषनैं तेकर्म करीतेनहीं ॥ इसप्रकारतैं जो विवेकीपुरुष शास्त्ररूपचक्षुकारिकै देखैहै ॥ इसप्रकार तिसप्रकृतिरूपक्षेत्रनैं करेहुएजेकर्म हैं तिनसर्वकर्मोंविषे जोपुरुष क्षेत्रज्ञआत्माकूं अकर्त्तारूपदेखैहै तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितदेखैहै तथाअसंगदेखैहै तथासर्वत्रएकदेखैहै तथासर्वत्रसम देखैहै सोपुरुषही परमार्थदर्शीहोणे तैं देखताहै ॥ ऐसेआत्माकेस्वरूपकूंनजानणेहारे सर्वअज्ञानीजन अंधही हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जन्ममरणादिकविकारवालेक्षेत्रका तिसतिसाविचित्रकर्मकाकर्त्तापणेकरिकै देहदेहविषे भेदहुएभी तथाविषमताहुएभी निर्विशेषअकर्त्ताआत्माकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहीं है ॥ जैसे घटमठादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित आकाशकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहीं है तैसे निर्विशेषअकर्त्ता आत्माके भेद

यहपदही ताआत्मारूपविशेष्यकावाचक जानणा इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब अधिकारी जनोंकी ताआत्मदर्शनविषे रुचिउत्पन्नकरणेवासते इसपूर्वश्लोकउक्त आत्मदर्शनकी श्रीभगवान् फलकरिकेस्तुतिकरें हैं ।

(मू. श्लो.) समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमीश्वरम् ॥ नहिनस्त्यात्मनात्मानंततोयातिपरांगतिम् ॥ २८ ॥ समम् । पश्यन् । हि । सर्वत्र । समवस्थितम् । ईश्वरम् । न । हिनस्ति । आत्मना । आत्मानम् । ततः । याति । पराम् । गतिम् ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! सर्वभूतोंविषे सम तथासमवस्थित तथाईश्वररूप ऐसेआत्माकूं देखताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतें आत्माकरिकै आत्माकूं नहीं हननकरै है तिसकारणतें परम गतिकूं प्राप्तहोवै है ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे जोआत्मा समहै अर्थात् सर्वत्रएकरूपहै तथा जोआत्मा समवस्थितहै अर्थात् जन्मतें आदिलेके विनाशपर्यंत सर्वभावविकारोंतेंरहितहुआ स्थितहै ॥ तथा जोआत्मा ईश्वरहै अर्थात् सर्वप्राणियोंकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ इसप्रकारके पूर्वउक्तसर्वविशेषणोंकरिके विशिष्ट जोआत्माहै तिसआत्माकूं देखताहुआ अर्थात् इसप्रकारकाआत्मादेव मैंहूं याप्रकारतें शास्त्रदृष्टिकरिकै तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतें आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं हननकरतानहीं तिसकारणतें सोविद्वान्पुरुष परमगतिकूं प्राप्तहोवै है ॥ और इसलोकविषे जितनेक अज्ञानीजनहैं तेसर्वहीआज्ञानीजन परमार्थतेंसतरूप तथाएकअद्वितीयरूप तथाअकर्त्ताअभोक्तारूप तथापरमानंदरूप ऐसेआत्माकूं अस्तिभातिरूपवस्तुविषेभी नास्तिनभाति इसप्रकारकीप्रतीतिकरावणेविषेसमर्थ ऐसीअविद्याकरिकै आपही तिरस्कारकरतेहुए न हुएजैसाकरैं हैं ॥ यातें तेसर्वअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहीकरैं हैं ॥ अथवा अविद्याकरिकै आत्मत्वरूपकरिकैग्रहणकऱ्याजो देहइंद्रियादिकोंकासंघातरूपआत्माहै तिससंघातरूपपुरातनआत्माकूं हननकरिकैपुण्यपापकर्मके वशतें पुनः नवीनसंघातरूपआत्माकूं ग्रहणकरैंहैं ॥ याकारणतेंभी तेअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहीकरैं हैं ॥ यातें दोनोंप्रकारतें तेसर्वअज्ञानीजन आत्महत्यारेही है ॥ ऐसेआत्महत्यारेअज्ञानीजनोंकूं लक्ष्यकरिकैही यहशकुंतलाकावचनरूपस्मृति प्रवृत्तहुई है ॥ तहांश्लोक ॥ (किंतेननकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा ॥ योऽन्यथासंतमात्मानमन्यथाप्रतिपाद्यते) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष सत् चित् आनंद विभु आत्माकूं असत् जड दुःख परिच्छिन्नरूपमानैहै तिसआत्माकेअपहरणकरणेहारे चौरपुरुषनैं कौनपाप नहींकऱ्याहै किंतु तिसपुरुषनैं सर्वपापकरे हैं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (असूर्यानामतेलोकाअंधेनतमसावृताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥) ॥ अर्थयह ॥ दंभदर्पादिकआसुरीसंपदावालेपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे तथा

टीका । हे अर्जुन ! उत्पत्तिधर्मवाले जितनेक स्थावरजंगमप्राणीरूपभूतहैं कैसेहैं तेसर्वभूत अनेकप्रकारकेजन्मादिकपरिणामस्वभाववत्ताकरिकै तथागुणप्रधानभावकीप्राप्तिकरिकै विषमस्वभाववाले हैं ॥ इसकारणतैंही तेभूत अत्यंतचंचलहैं अर्थात् क्षणक्षणविषेपरिणामी हैं तापरिणामकूंनप्राप्तहोइकै एकक्षणमात्रभी स्थितहोणेकूंसमर्थ हैंनहीं ॥ इसीकारणतैंही तेसर्वभूत परस्पर बाध्यबाधकभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ इसीकारणतैंही तेसर्वभूत विनाशवान्हैं अर्थात् मायागंधर्वनगरादिकोंकीन्याईं दृष्टनष्टस्वभाववाले हैं जोपदार्थ देखतेदेखतेही नष्टहोइजावै है सो पदार्थ दृष्टनष्टस्वभाववाला कह्याजावै है ॥ ऐसे सर्वस्थावरजंगमरूपभूतोंविषे आत्मादेव समहै अर्थात सर्वत्र एकरूपहै तथासर्व देहोंविषेएकहै ॥ तथा जोआत्मादेव तिनसर्वभूतोंविषे जन्मादिकपरिणामों तैंरहितताकरिकै निर्विकाररूपतैंस्थितहै ॥ तथा जोआत्मादेव परमेश्वरहै अर्थात देहादिकसर्वजडवर्गकेप्रति सत्तास्फूर्तिकाप्रदाताहोणेतैं बाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तहां नाशहोणेयोग्यवस्तुकूंबाध्य कहैं हैं ॥ और नाशकरणेहारेवस्तुकूं बाधक कहैं हैं ॥ ऐसेबाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तथा सर्वदोषों तैंरहितहै ॥ पुनःकैसाहैसोआत्मादेव अविनाशी है अर्थात् मायागंधर्वनगरादिकोंकीन्याईं दृष्टनष्टप्राय इससर्व द्वैतकेबाधहुएभी जोबाधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवा अरेऽयमात्मा) अर्थयह ॥ हे मैत्रेयि ! यहआत्मादेव नाशतैंरहितहै इति ॥ इसरीतिसैं सर्वप्रकारकरिकै इसजडप्रपंचतैंविलक्षण जोप्रत्यक्आत्माहै तिसप्रत्यक्आत्माकूं जो अधिकारीजन वेदांतशास्त्ररूपचक्षुकरिकै सर्वजडवर्ग तैंभिन्नकरिकैदेखै है सोईहीअधिकारीजन आत्माकूंदेखै है ॥ जैसे जाग्रत्केबोधकरिकै स्वप्नभ्रमकूंनिवृत्त करताहुआ पुरुषही सम्यक्देखै है ॥ और जोपुरुष इसप्रकारतैं आत्माकूंनहीं देखैहै सोअज्ञानीपुरुषतौ स्वप्नदर्शीपुरुषकीन्याईं भ्रांतिकरिकैविपरीतदेखताहुआभी नहींही देखैहै काहेतैं जोजोभ्रमहोवै है सोसोभ्रम अदर्शनरूपहीहोवै है ॥ भ्रमविषे दर्शनरूपता संभवतीनहीं ॥ जैसे रज्जुकूंसर्परूपकरिकै देखताहुआभी भ्रांतपुरुष यहदेखताहै याप्रकारतैंकह्याजावैनहीं किंतु यह नहीं देखताहै याप्रकारतैंही कह्याजावै है ॥ काहे तैं ताकल्पितसर्पकाजोदर्शनहै सोदर्शन तारज्जुकाअदर्शनरूपही है ॥ तारज्जुकेअदर्शनतैं सोसर्पकादर्शन भिन्ननहीं है यातैं तासर्पकूंदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष नहींही देखैहै यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारके सर्वउपाधियों तैंरहित शुद्धआत्माकेदर्शनतैं साआत्माकाअदर्शनरूपअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ताअविद्यारूपकारणकीनिवृत्तितैंअनंतर ताकेकार्यरूपसंसारकीभी निवृत्ति होइजावै है ऐसाआत्मज्ञान इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ तहां इसश्लोकविषे यद्यपि श्रीभगवान्नैं (आत्मानम्) याप्रकारका आत्मारूपविशेष्यकावाचकपद कथनकऱ्यानहीं तथापि जहां विशेषणवाचकपदहोवैं हैं तहां विशेष्यवाचकपदकी अर्थतैंहीप्राप्तिहोवै है यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकानियमहै ॥ तेविशेषणवाचकपद इहांभी (समं तिष्ठंतं परमेश्वरम् अविनश्यंतम्) यहविद्यमानहैं ॥ यातैंआत्मारूपविशेष्यकालाभ इहां अर्थतैंहीप्राप्तहोवै है अथवा (परमेश्वरम्)

इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति बनिसकैहै ॥ इसअर्थ केनिश्चयकरावणेवासतै इसत्रयोदशअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्नैं संसारका तथातासंसार केनिवर्त्तकआत्मज्ञानका दोनोंका विस्तारतैंनिरूपणकरीताहै ॥ तहां (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) यहजोवचन पूर्वकथनकऱ्याथा तिसवचनके अर्थकूंही अब श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ ॥२६॥ यावत् । संजायते । किंचित् । सत्त्वम् । स्थावरजंगमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् । तत् । विद्धि । भरतर्षभ॥२६॥इतिपदच्छेदः ॥हेभरतवंश विषेश्रेष्ठअर्जुन ! जितना कोई स्थावरजंगमरूप वस्तु उत्पन्नहोवै है तिससर्वकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंउत्पन्नहुआ जानैं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! तीनिलोकोंविषे कोईवस्तु स्थावररूप अथवा जंगमरूप उत्पन्नहुहोवैहै तिनसर्ववस्तुवोंकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंही उत्पन्नहुआ जान॥ तहां अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूप जितनाक जड अनिर्वचनीय भावअभावरूप दृश्यप्रपंचहै यहसर्व क्षेत्ररूपहै ॥ और ताक्षेत्रतैंविलक्षण तथाताक्षेत्रकाप्रकाशक तथा स्वप्रकाशपरमार्थसत् तथाअसंगउदासीन तथासर्वधर्मोंतैंरहित ऐसाजो अद्वितियचैतन्यहै ताकानाम क्षेत्रज्ञहै ॥ ऐसे क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोनोंका जो मायाकेवशतैं परस्परअविवेकनिमित्तक सत्यअनृतमिथुनीकरणरूप मिथ्यातादात्म्यअध्यासहै यहही ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञाकासंयोगहै ॥ ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगतैंही यहस्थावरजंगमरूपसर्वकार्य उत्पन्नहोवैं हैं ॥ इसप्रकारतैं तूंनिश्चयकर ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंही यहसंसार प्रतीत होवैहै ॥ तास्वरूपकेज्ञानतैं यहसंसार नाशकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ जैसे स्वप्नादिकमिथ्यापदार्थ अधिष्ठानवस्तुकेयथार्थस्वरूपकेअज्ञानतैंही प्रतीतहोवैं हैं तास्वरूपकेज्ञानहुएतैं निवृत्तहोइजावैंहैंइति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्यारूपसंसारकूंकथनकरिकै अब तिससंसारकीनिवृत्तिकरणेहारीब्रह्मविद्याकेकथनकरणेवास्ते (यएवंवेत्तिपुरुषम्) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं श्रीभगवन् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) समंसर्वेषुभूतेषुतिष्ठंतंपरमेश्वरम् ॥ विनश्यत्स्वविनश्यंतंयःपश्यतिसपश्यति ॥ २७ ॥ समम् । सर्वेषु । भूतेषु । तिष्ठंतम् । परमेश्वरम् । विनश्यत्सु । अविनश्यंतम् । यः । पश्यति । सः । पश्यति ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! नाशवान् सर्वभूतोंविषे सम तथानिर्विकाररूपतैंस्थित तथाविनाशतैंरहित तथा परमेश्वररूप ऐसेआत्माकूं जोपुरुष देखै है सोपुरुषही देखैहै ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

आत्माकूं अंतःकरणकीशुद्धि श्रवण मनन ध्यान इनच्यारोंकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरैं हैं इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब चौथेमंदतरअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्यउपासते ॥ तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ अन्ये । तु । एवम् । अजानंतः । श्रुत्वा । अन्येभ्यः । उपासते । ते । अपि । च । अतितरंति । एव । मृत्युम् । श्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! पुनः अन्यअधिकारीजनतौ पूर्वउक्तउपायकरिकै आत्माकूंनहींजानतेहुए अन्यगुरुवोंतें श्रवणकरिकै आत्माकाचिंतनकरें हैं तेअधिकारीजन भी श्रवणपरायणहुए ईसमृत्युयुक्तसंसारकूं अवश्य अतिक्रमणकरैं हैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (अन्येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकरेहुए तीनप्रकारकेअधिकारियोंतें इनमंदतर अधिकारियोंविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै साविलक्षणतादिखावैं हैं ॥ हे अर्जुन ! पूर्वश्लोकविषेकथनकरेजे ध्यान सांख्ययोग कर्मयोग यह तीन उपायहैं तिनतीनों उपायोंविषे किसीभी उपायकरिकै आत्माकूंनहींजानतेहुएकेईकमंदतर अधिकारीजनतौ अन्यपरमकारुणिकआचार्योंतें श्रवणकरिकै उपासनाकरैं हैं अर्थात् तुम इसआत्माकूं इसप्रकारतेंचिंतनकरौ इसप्रकारतें तिनकृपालुआचार्योंकरिकै उपदेशकरेहुए तथातिनगुरुवोंकेवचनोंविषे अत्यंतश्रद्धावालेहुए तिसीप्रकारतें आत्माकूंचिंतनकरैं हैं ।। तेश्रुतिपरायणपुरुषभी अर्थात् आपणीबुद्धिकरिकै ताविचारविषेअसमर्थहुएभी अत्यंतश्रद्धावान्ताकरिकै तागुरुकेउपदेशश्रवणमात्रपरायणहुएभी मृत्युयुक्तइससंसारकूं अवश्यकरिकै अतिक्रमणकरैं हैं ।। तात्पर्ययह ।। ध्यानविषेप्रवृत्तिकीअतिशयतातें तिनपुरुषोंकूं चित्तकीशुद्धिवासतै कर्मोंकीभीअपेक्षाहैनहीं और वेदउक्ततत्त्वविषेदृढनिश्चयतें तिनपुरुषोंकूं असंभावनाकीनिवृत्तिवासतै श्रवणमननकीभीअपेक्षाहैनहीं इति ।। इहां (तेपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ताअपिशब्दकारिकै श्रीभगवान्नें यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ जेआप विचारकरणेविषेसमर्थनहीहैं किंतु अन्यगुरुवोंतेंश्रवणमात्रकारिकै आत्माकाचिंतनकरैं हैं तेपुरुषभी जबी इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरैं हैं तबी आप विचारविषेसमर्थपुरुष इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरैं हैं याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ तहां आत्मज्ञानकरिकै जो कार्यसहितअज्ञानकी निवृत्तिकरणीहै यहही तामृत्युयुक्तसंसारका अतिक्रमणहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां अधिष्ठानब्रह्मकेआश्रितरहणेहारी तथाताब्रह्मकूंहीविषयकरणेहारी ऐसीजा अनिर्वचनीयअविद्याहै ताअविद्याकरिकैही यहसर्वसंसार उत्पन्नहुआहै ॥ यातें ताअधिष्ठानब्रह्मकूंविषयकरणेहारी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानरूपब्रह्मविद्याहै ताब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्याकेनिवृत्तहुए

(मू. श्लो.) ध्यानेनात्मनिपश्यंतिकेचिदात्मानमात्मना ॥ अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे ॥ २४ ॥ ध्यानेन । आत्मनि । पश्यंति । केचित् । आत्मानम् । आत्मना । अन्ये । सांख्येन । योगेन । कर्मयोगेन । च । अपरे ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! केईकअधिकारीजनतौ ध्यानकरिकैही आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्आत्माकूं ध्यानयुक्तअंतःकरण करिकै साक्षात्कारकरैं हैं और दूसरेअधिकारीजनतौ सांख्य योगकरिकै आत्माकूं साक्षात्कारकरैं हैं तथा अन्यकेईकअधिकारीजनतौ कर्मयोगकरिकै आत्माकूं साक्षात्कारकरैंहैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां इसलोकविषे च्यारिप्रकारकेअधिकारीजनहोवैं हैं तहां एकअधिकारीजनतौ उत्तम होवै है ॥ और दूसरेअधिकारीजन मध्यमहोवैं हैं ॥ और तीसरेअधिकारीजन मंद होवैं हैं ॥ और चौथेअधिकारीजन मंदतर होवैंहैं ॥ तिनच्यारोंविषे प्रथम उत्तमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥ (ध्यानेनइति) तहां देहादिकअनात्मपदार्थाकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोआत्मचिंतनहै जिसआत्मचिंतनकूं शास्त्रविषेनिदिध्यासनशब्दकरिकैकथनकरचा है तथा जोआत्मचिंतन श्रवणमननकाफलरूपहै ॥ तथा जिसआत्मचिंतनकरिकै देहादिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूपविपरीतभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै तानिदिध्यासनरूप आत्मचिंतनकानाम ध्यानहै ऐसेध्यानकरिकैही केईकउत्तमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्चेतनरूपआत्माकूं ताध्यानयुक्तशुद्धअंतःकरणकरिकै साक्षात्कारकरैंहैं इति॥ अब मध्यमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (अन्येसांख्येनयोगेनइति) तहां पूर्वउक्त निदिध्यासनरूपध्यानतैं पूर्व भावी ऐसाजो श्रवणमननरूप आत्मचिंतनहै जोआत्मचिंतन नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनों तैं उत्तर कन्याजावैहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन यह त्रिगुणात्मकमायाकेपरिणामरूप सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याभूतहैं और तिनसर्वमिथ्यापदार्थोंकासाक्षीरूप नित्य विभु निर्विकार सत्य समस्तजडपदार्थोंकेसंबंधतैंरहित ऐसाजो प्रत्यक्चेतनआत्माहै सोमैंहूं इसप्रकारके वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकैजन्यहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगतअसंभावनाका निवर्त्तकहै ता श्रवणमननरूप आत्मचिंतनकानाम सांख्ययोगहै ऐसेसांख्ययोगकरिकै केईकमध्यमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्आत्माकूं ताध्यानकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरैं हैं इति ॥ अब तीसरेमंदअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानके साधनकूं श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ (कर्मयोगेनचापरेइति) तहां फलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवल ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकैकरेहुए ऐसेजे तिसतिसवर्णआश्रमकेउचितअग्निहोत्रादिककर्म हैं तिनकर्मोंकानाम कर्मयोगहै ॥ ऐसेकर्मयोगकरिकै केईकमंदअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक

अधिकारीपुरुष ईसपूर्वउक्तप्रकारतैं क्षेत्रपुरुषकूं तैंथा आपणेविकारों संहित अँविद्यारूपप्रकृतिकूं जानैंहै सोपुरुष संर्वप्रकारतैं वँर्त्त मानहुआ भी पुंनः नेंहीं जैंन्मकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्रज्ञनामापुरुषकूं जानैंहै अर्थात् यहसर्वत्र व्यापकपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं जोपुरुष इसक्षेत्रज्ञआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरैंहै ॥ तथा जोपुरुष देहादिविकारोंसहित अविद्यारूपप्रकृतिकूंजानैंहै अर्थात् यहदेहादिकाविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृति आत्मज्ञानकरिकेबाधितहोणेतैं मिथ्याभूतहीहै ताआत्मज्ञानकरिकै हमारा अज्ञान तथाताअज्ञानकार्यरूप प्रपंचदोनों निवृत्तहो इगयेहैं इसप्रकारतैं जोपुरुष तागुणसहितप्रकृतिकूंजानैं है ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वथावर्त्तमानहुआभी अर्थात् अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्याईं शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै वर्त्तमानहुआभीपुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं अर्थात् इसविद्वान्पुरुषकूं जिसशरीरविषेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहुई है तिसशरीरकेपातहुएतैं अनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःद्वितीयदेहकूंग्रहणकरैनहीं ॥ काहेतैं अविद्याकरिकैही इसपुरुषकूं पुनःजन्मकी प्राप्तिहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्यारूपकारणका जबी नाशहोवैहै तबी ताअविद्याकेजन्मादिककार्योंकाभी अभावहोइजावैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ पूर्व बहुतवार कथनकरिआयेहैं किंतु पुण्यपापकर्मोंकरिकैही इसपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेपुण्यपापकर्म इसतत्त्ववेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकै नाशहोइजावैंहैं ॥ याकारणतैंभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थ यह । मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेपुण्यपापरूप सर्वसंचितकर्म नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और तिसआत्मज्ञानतैंउत्तर करेहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहीनहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहै इति ॥ इहां (सर्वथावर्त्तमानोपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्यायसूचनकऱ्या ॥ अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्याईं शास्त्रविधिकाउल्लंघन करिकै वर्त्तमानहुआभी यहतत्त्ववेत्तापुरुष जबी पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै तबी शास्त्रविधिकानहींउल्लंघनकरिकै आपणेश्रेष्ठआचारविषे वर्त्तमानहुआ सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां देवराजइंद्र शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै जैसे विश्वरूपनामापुरोहितकूं तथाअनेकसंन्यासियोंकूं हननकरताभयाहै सासर्ववार्ताआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २३ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वकथनकरेहुएफलसहितआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकेभेदकरिकै साधनोंकेविकल्पोंकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

चार्वाकादिकहैं ॥ और दूसरेगुणसंगविषेतौ तिनदेहइंद्रियादिरूपगुणोंकूंहीप्रधानहोणेतैं आत्माविषेवास्तवकर्तृत्वादिअभिमानकरिकै यहपुरुष कर्मकेफलका भर्त्ता कह्याजावैहै ॥ जैसे नैयायिकआदिकहैं ॥ और तीसरेगुणसंगविषेतौ आत्माकेसाथि तिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै गुणविषे स्थितभीभोक्तापणेकूं असंगभीआत्माविषे वस्त्रविषेभल्लातककेअंकोंकीन्याई यहपुरुष मानताहुआ अनुमंता कह्याजावैहै ॥ जैसे सांख्यशास्त्रवालेपुरुषहैं ॥ और चौथेगुणसंगविषेतौ सर्वप्रकारतैं तिनगुणोंके धर्मोंका आत्माविषेप्रवेश नहींदेखताहुआ उदासीनबोधरूपताकरिकै तिनसर्वगुणोंकेप्रचारोंकूंदेखताहुआ यहपुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै जैसे हमवेदांतियोंका साक्षीआत्माहै ॥ तहां पूर्वकथनकरेजे भोक्ता भर्त्ता अनुमंता उपद्रष्टा यहच्यारि गुणोंकेसंगवालेहैं तिनच्यारों गुणसंगियोंविषे उपद्रष्टातौ उत्तमहै ॥ और अनुमंता मध्यमहै और भर्त्ता अधमहै और भोक्ता अधमतैंअधमहै ॥ और जोचैतन्यदेव तिनगुणोंकेसंगतैं भोक्तादिभावकूंप्राप्तहुआहै सोईहीचैतन्यदेव जिसकालविषे तिनसर्वगुणोंकूंआपणेवशकरिकै क्रीडाकरैहै तिसकालविषे महेश्वर इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और जोचैतन्यदेव इसजगत्के उत्पत्ति स्थितिलयकाकर्त्ता प्रभु अंतर्यामीहै सोईहीचैतन्यदेव तिनसर्वगुणोंकापरित्यागकरिकैस्थितहुआहै परमात्मा इसनामकरिकैभी कह्याजावैहै ॥ यद्यपि उपद्रष्टाभी गुणोंकापरित्यागकरिकै तिनगुणोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहोवैहै तथापि संघातउपहित तिसीहीउपद्रष्टाकूं दूसरेसंघातकेप्रचारकाद्रष्टापणा हैनहीं ॥ और परमात्मादेवतौ सर्वसंघातोंकेप्रचारोंकाद्रष्टाहै ॥ यातैं सर्वतैंउत्कृष्टहोणेतैं यह परमआत्माहै ॥ इसपरमात्माकूं (उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान् आगेकथनकरैंगा ॥ तहां महेश्वर परमात्मा यहदोनोंभी गुणसंगीहीहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसदेहविषे विद्यमान तथासर्वगुणोंकूंआपणेविषेलयकरिकै स्थित ऐसाजोसर्वगुणोंतैंरहित अखंड एकरस अद्वितीयआत्माहै सोएकआत्मादेवही तिसगुणसंगकरिकै उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्मा यह षट् प्रकारकाहोवैहै ॥ यहही इसक्षेत्रज्ञआत्माका प्रभावहै ॥ तहां अनुमंता भर्त्ता भोक्ता इनतीनरूपोंकरिकै तौ यहआत्मादेव बंधायमानहोवैहै ॥ और उपद्रष्टा महेश्वर परमात्मा इनतीनरूपोंकरिकैतौ यहआत्मादेव नित्यमुक्तएकअद्वितीयरूपहीहोवैहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकऱ्या अर्थात् क्षेत्रज्ञकास्वरूप तथाताकाप्रभाव वर्णनकऱ्या अब (यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते) यहजोवचन पूर्वकथनकऱ्याथा ताका उपसंहारकरैहैं ।

(मू. श्लो.) यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह ॥ सर्वथावर्त्तमानोपिनसभूयोभिजायते ॥ २३ ॥ यः । एवम् । वेत्ति । पुरुषम् । प्रकृतिम् । च ॥ गुणैः । सह । सर्वथा। वर्त्तमानः । अपि । न । सः । भूयः । अभिजायते॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जो

जैसे पुत्रादिकोंकाभरणकरणेहारापिता तिनपुत्रादिकोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष भोक्ताहै अर्थात् बुद्धिकीसुखदुःखमोक्षरूप जे वृत्तियां विशेषहैं तिनवृत्तियोंकूं स्वरूपचैतन्यकरिकैप्रकाशकरताहुआ यहआत्मादेव निर्विकारहुआही तिनसुखादिकोंका उपलब्धाहै ॥ इतनेकहणेकारिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै भोक्ताहोणेतैं ॥ जैसे देवदत्तनामाभोकापुरुष अन्नादिकभोज्यपदार्थोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहै सोक्षेत्रज्ञपुरुष महेश्वरहै ॥ तहां महान्होवै सोईही ईश्वरहोवैहै ताकानाम महेश्वरहै ॥ तहांसर्वकाआत्मारूपहोणेतैं सोक्षेत्रज्ञपुरुष महान् कह्याजावैहै ॥ और स्वतंत्र होणेतैं ईश्वर कह्याजावैहै ॥ अथवा जैसे चुंबकपाषाणकीसमीपताकरिकै लोह चेष्टाकरैहै तैसे जिसकीसमीपतामात्रकारिकै यहबुद्धिआदिकसर्वपदार्थ नानाप्रकारकीचेष्टाकरैं हैं सोक्षेत्रज्ञआत्मा ईश्वर कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (महतोमहीयान् ईशानोभूतभव्यस्य) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव आकाशादिक महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वजगत्का प्रेरणाकरणेहारा ईशानहै इति ॥ इतनेकहणेकारिकै श्रीभगवान्नैं यह अनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा प्रकृतितैं तथाताकेंकार्यतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै महेश्वरहोणेतैं जैसे महाराजा आपणीप्रजातैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनः कैसाहै सोक्षेत्रज्ञपुरुष श्रुतिविषेपरमात्मा इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै अर्थात् अविद्याकेवशतैं आत्मत्वरूपकरिकैकल्पनाकरेजे देहतैंआदिलेकेबुद्धिपर्यंत जडपदार्थहैं तिनसर्व जडपदार्थोंतैंजो उत्कृष्टहोवै ताकूं परमकहैं हैं ऐसा परम जो पूर्वउक्तउपद्रष्टृत्वादिकविशेषणविशिष्ट आत्माहै ताकानाम परमात्माहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् आपही आगेकथनकरैगा ॥ इतनेकहणेकारिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्याहै ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै परमात्माहोणेतैं जोदेहइंद्रियादिकोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोपरमात्माभीनहींहोवैहै जैसे देहइंद्रियादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (उपद्रष्टानुमंताच) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञ तथाताक्षेत्रज्ञकाप्रभाव इनदोनोंकेवर्णनकरणेकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां क्षेत्रज्ञकास्वरूपतौ पूर्ववर्णनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै ताक्षेत्रज्ञकेप्रभावकावर्णनकरैं हैं ॥ (उपद्रष्टाइति) तहांपूर्वश्लोकविषे पुरुषका देहइंद्रियमनआदिकगुणोंकेसाथि जोसंगहै सोगुणसंगही इसपुरुषकेजन्मकाकारणहै यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तहां सोगुणसंग च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ पुरुषकानिषेधकरिकै तिसगुणमात्रकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै और दूसरा तिसपुरुषकूंअंतरभूतकरिकै तिसगुणकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ और तीसरा पुरुषकी तथातिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै सोगुणसंगहोवैहै ॥ और चौथा तिनगुणोंकीअप्रधानताकरिकै तथातापुरुषकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ तहां प्रथमगुणसंगविषेतौ देहइंद्रियमनआदिरूपगुणोंकेसंघातकूंही आत्मारूपकरिकैदेखताहुआ यहपुरुष भोक्ता कह्याजावैहै ॥ जैसे देहादिकोंकूंही आत्मामानणेहारे

जन्यगुणोंकेसंबंधतैंरहितहै तथाआपणेस्वरूपकरिकै परमार्थतैंअसंसारी है ॥ अब तिसपुरुषके वास्तवतैंअसंगपणेविषे श्रीभगवान् उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्मा इनषट्हेतुगर्भितविशेषणोंकूंकथनकरैं हैं (उपद्रष्टाइति) हेअर्जुन ! सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष कैसाहै उपद्रष्टाहै अर्थात् जैसे यज्ञरूपकर्मकीसिद्धिकरणे वासतै व्यापारवालेहुए जेऋत्विक्हैं तथायजमानहैं तिनऋत्विक्यजमानकेसमीपवर्त्ती जोकोईअन्यपुरुषहै सोअन्यपुरुष आपतिसयज्ञकेअनुकूलव्यापारतैंरहितहुआभी यज्ञवियाविषे कुशलहोणेतैं तिनऋत्विक्यजमानकेव्यापारोंविषेस्थितगुणदोषोंकूं देखै है ॥ तैसे यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष देहइंद्रियादिकोंके व्यापारविषे आप नहींव्यापारवालाहुआ तथातिनदेहइंद्रियादिकोंतैंविलक्षणहुआ तिनव्यापारसहितदेहइंद्रियादिकोंकूं समीपस्थितहोइकैदेखै है ॥ सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष तिनदेहइंद्रियादिकोंकी न्याई आपकर्त्ताहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सयत्तत्रकिंचित्पश्यत्यनन्वागतस्तेनभवत्यसंगोह्ययंपुरुषः) ॥ अर्थ यह ॥ यहआत्मादेवपुरुष तिनजाग्रत्स्वप्नादिकअवस्थावोंविषे जिसजिसपदार्थकूंदेखैहै तिसतिसपदार्थकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मापुरुष असंगहै इति ॥ अथवा देह चक्षु मन बुद्धि आत्मा इनपांचद्रष्टावोंके मध्यविषे बाह्यदेहादिकच्यारि द्रष्टावोंकी अपेक्षाकरिकै अव्यवहितद्रष्टाजो आत्मापुरुषहै सोआत्मापुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहां उपद्रष्टा इसवचनविषेस्थितजो उप यहशब्दहै ताउपशब्दका समीपताअर्थहै ॥ सोअव्यवधानरूप समीपताअर्थ प्रत्यक्आत्माविषेहीघटैहै अन्यकिसीअनात्मपदार्थविषे घटतानहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै ॥ उपद्रष्टाहोणेतैं जैसेयज्ञका उपद्रष्टापुरुष तायज्ञकेकर्त्ताऋत्विक्यजमानतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष अनुमंताहै अर्थात् देहइंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे आप नहींप्रवृत्तहुएभी प्रवृत्तहुएकीन्याईं समीपतामात्रकरिकै तिनोंकेअनुकूलहोणेतैं साक्षेत्रज्ञपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ अथवा आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तहुए जेदेहइंद्रियादिकहैं तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं जोकदाचित्भी आपणेव्यापारतैं निवृत्तकरतानहीं ॥ सोतिनदेहइंद्रियादिकोंकासाक्षीरूपपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अनुमंतासाक्षीच उपद्रष्टानुद्रष्टानुमंतैषआत्मा ॥) अर्थ यह ॥ यहआत्मादेव अनुद्रष्टाहै तथासाक्षीहै ॥ तथा यहआत्मादेव उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवाननैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै अनुमंताहोणेतैं ॥ जैसे विवादकर्त्तापुरुषतैं तटस्थपुरुष भिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष भर्त्ता है अर्थात् चैतन्यकेआभासकरिकैयुक्त तथासंघातभावकूंप्राप्तहुए जे देह इंद्रिय मन बुद्धिहैं तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं सोक्षेत्रज्ञ आत्मापुरुष आपणीसत्ताकरिकै तथास्फुरणकरिकै धारणकरणेहाराहै तथापोरणकरणेहाराहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नहै भर्त्ताहोणेतैं ॥

तथा अविद्वान्पुरुषकी समानताही अंगीकारकरौगे तौ जैसे सोविद्वान्पुरुष मुक्तहै तैसे सोअविद्वान्पुरुषभी क्योंनहींमुक्तहोता ॥ तथा जैसे सोअविद्वानपुरुष बंधायमानहै तैसेसोविद्वान्पुरुषभी क्योंनहींबंधायमानहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (कारणंगुणसंगोस्यसदसयोनिजन्मसु) इति । हे अर्जुन ! देहइंद्रियविषयरूपगुणोंविषे जोइसपुरुषका संगहै अर्थात् यहमैंहूं यहमेरे हैं ॥ इसप्रकारकाजो अहंममअभिमानरूप अभिनिवेशहै सोगुणसंगही इसपुरुषके सत्असत् योनिजन्मोंविषे कारणहै ॥ तहां विद्वान्पुरुषोंविषेतौ सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग हैनहीं॥यातैं तेविद्वान्पुरुष जन्मादिकबंधकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और अविद्वान्पुरुषों विषेतौ सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग विद्यमानहै ॥ यातैं तेअविद्वान्पुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे किसीपुरुषकेदेहविषे पिशाच प्रवेशकरैहै ॥ तहां तिसदेहविषे तापिशाचकाभीसंबंधहै ॥ तथा तिसदेहपतिजीवकाभीसंबंधहै ॥ तिसदेहसंबंधकेसमानहुएभी जिसकालविषे सोपिशाच तिसदेहके अभिमानकूंधारणकरैहै तिसकालविषेतौ सोपिशाचही तिसदेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैहै ॥ सोदेहपतिजीव तादेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैनहीं ॥ और जिस कालविषे सोदेहपतिजीवही तिसदेहकेअभिमानकूंधारणकरैहै ॥ तिसकालविषे सोदेहपति जीवही तिसदेहकीपीडाकरिकैपीडितहोवैहै ॥ सोपिशाच तादेहकीपीडा करिकैपीडितहोवैनहीं ॥ इसप्रकारतैं अहं ममअभिमानरूपसंगविषेही बंधकपणा प्रसिद्धदेखणेविषेआवैहै ॥ समीपतामात्रविषे सोबंधकपणा देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं विद्वान्पुरुषविषे तथाअविद्वान्पुरुषविषे देहसंबंधकेसमानहुएभी अहंममअभिमानरूपसंगकृत तथातासंगके अभावकृत तिनदोनोंविषे महान्विशेषताहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे प्रकृतिकेंमिथ्यातादात्म्यअसाध्यासतैंही पुरुषकूं संसारकीप्राप्तिहोवैहै ताप्रकृतिकेतादात्म्यतैंविना स्वरूपतैं तापुरुषविषे सोसंसारहैनहीं यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका किसप्रकारकासोवास्तवस्वरूपहै जिसस्वरूपविषे सोसंसारनहीं संभवैहै ऐसीअर्जुनकीजिसाज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषकेस्वरूपकूं साक्षात्दिखावतेहुए कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) उपद्रष्टानुमंताचभर्त्ताभोक्तामहेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरुषःपरः ॥ २२ ॥ उपद्रष्टा । अनुमंता । च । भर्त्ता । भोक्ता । महेश्वरः । परमात्मा । इति । च । अपि । उक्तः । देहे । अस्मिन् । पुरुषः । परः ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन इस देहविषे वर्त्तमानहुआभी यहपुरुष सर्वतैंभिन्नहै जिसकारणतैं यहपुरुष उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै तथा भर्त्ताहै तथा भोक्ताहै तथामहेश्वरहै तथा श्रुतिविषे परमात्मा ईसनामकरिकैभी कथनकऱ्याहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तिसमायारूपप्रकृतिकापरिणामरूपजोयहदेहहै इसदेहविषे जीवरूपकरिकैवर्त्तमानहुआभी यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष परहै अर्थात् तिसप्रकृति

और पशुआदिक असत्योनिविषेजन्मवाले हैं ॥ यातैं तिनपशुआदिकशरीरोंविषे तामसअनिष्टफलही भोग्याजावै है ॥ और ब्राह्मणादिकमनुष्यशरीरतौ धर्म अधर्मदोनोंकरिकैमिश्रितहोणेतैं सत्असत्योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनमनुष्यशरीरोंविषे राजस इष्टअनिष्टमिश्रितफल भोग्याजावै है इति ॥ अथवा (गुण संगः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सुखदुःखमोहरूप जेशब्दादिकविषयरूपगुणहैं तिनशब्दादिकगुणोंविषे जोइसपुरुषका अभिलाषारूपसंगहै जिसअ भिलाषारूपसंगकूं शास्त्रविषे काम इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसागुणसंगही इसपुरुषकूं सत्असत्योनिजन्मोंविषे कारणहोवै है ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरी है तहांश्रुति ॥ (सयथाकामोभवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते ॥) अर्थयह ॥ सोपुरुष जिसवस्तुविषयक अभिलाषारूपकामवालाहोवै है तिसवस्तुविषयकही निश्चयवालाहोवै है ॥ और जिसवस्तुविषयकनिश्चयवालाहोवै है तिसवस्तुकीप्राप्तिवासतैही कर्मकूंकरै है ॥ और जिसवस्तुकीप्राप्तिवासतै कर्मकूंकरै है तिसीहीवस्तुकूंप्राप्तहोवै है इति ॥ इसपक्षविषेभी तासंसारकामूलकारणरूपकरिकैतौ सो त्रिगुणात्मकप्रकृतिकाता दात्म्यअभिमानहीअंगीकारकरणा इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै देह इंद्रिय मन इत्यादि कसंघातकानाम प्रकृतिहै ॥ ऐसीप्रकृतिविषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआही यहपुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखमोहरूपगुणोंकूंभोगै है ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिसमा धिमूर्च्छादिकोंविषे इसपुरुषका तिसप्रकृतिविषेस्थितपणानहीं है तिसकालविषे तासुषुप्तिसमाधिमूर्च्छादिकोंविषे यहपुरुष तिनसुखदुःखादिकोंकूं प्राप्तहो वैनहीं ॥ यातैं तेसुखदुःखादिक केवल उपाधिविषेहीस्थितहैं ताउपाधिकेअभावहुए तेसुखदुःखादिक प्रतीतहोवैंनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहवार्त्ताश्रु तिविषेभीकथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ॥ अर्थयह ॥ देह श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआही यहआत्मा भोक्ताहोवै है॥इसप्रकार तत्त्ववेत्तापुरुष कथनकरैं हैं इति ॥ यहश्रुति देह इंद्रियमनकेयोगतैंही आत्माविषेभोक्तापणेकूंदिखावतीहुई केवलशुद्धआत्माविषे ताभोक्तापणेकानिषेधकरैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ देह इंद्रिय मन इत्यादिकजडपदार्थोंकासं घातरूप जाप्रकृतिहै तिसप्रकृतिविषेस्थितहुआ विद्वान्पुरुष अथवाअविद्वान्पुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं समानही भोगै है ॥ यहवार्त्ता ब्रह्म सूत्रोंविषे श्रीभाष्यकार भगवान्नैंभी कथनकरी है (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) ॥ अर्थयह ॥ व्यवहारकालविषे विद्वान्पुरुषकी पशुआदिकोंकेसाथि तुल्य ताहीहोवै है अर्थात् जैसे पशुआदिक इष्टवस्तुकूंदेखिकै प्रवृत्तहोवैं हैं अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैं हैं तैसे सोविद्वान्पुरुषभी इष्टवस्तुकूंदेखिकैतौ प्रवृत्तहोवै है और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवै है इति॥शंका—हे भगवन् ! प्रकृतिविषेस्थितहोइकै ताप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगविषे जो विद्वान्पुरुषकी

ष्यकापुत्रहूं मैंकाणाहूं मैंखंजहूं मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं देहादिकोंके कार्यत्वादिकधर्म चेतनआत्माविषेआरोपितहुए प्रतीतहोवैं हैं ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासरूपछायाकूंप्रातहुई साबुद्धिभी मैंचेतनतावालीहूं तथासुखदुःखादिकोंकूं मैं जानतीहूं इसप्रकारतैं चेतनआत्माकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानै है ॥ इसप्रकारका जो प्रकृतिपुरुषदोनोंविषे परस्पर धर्मोंकाअध्यासहै सोअध्यासही इससंसारकाकारण सिद्धहोवै है ॥ इतनेकहणेकरिकै जोसांख्यवादियों नैं केवलपुरुषविषेहीभोक्तापणा मान्याहै सोभी खंडनहुआजानणा ॥ जोकदाचित् ऐसानहींअंगीकारकरिये किंतु प्रकृतिकूंतौ कर्त्तामानियें और पुरुषकूं भोक्तामानियें तौ कर्तृत्व भोक्तृत्व इनदोनोंका एकअधिकरण सिद्धनहींहोवैगा किंतु भिन्नभिन्न अधिकरणसिद्धहोवैगा सोअत्यंतविरुद्धहै और भोक्तापुरुषविषे निर्विकारपणाभी सिद्धहोवैगानहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! (पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वआपनैं क्षेत्रज्ञनामापुरुषविषे सुखदुःखकाभोक्तृत्वरूप संसारीपणा कथनकऱ्या सो तिसपुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्तहै अथवा नहीं है ॥ तहां किसीनिमित्ततैंविना जो तिसपुरुषविषेसंसारीपणा मानोंगे तौ मुक्तिकालविषे तिसपुरुषविषे सोसंसारीपणा होणाचाहिये इसदोषकी निवृत्तिकरणेवासतै तापुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्त अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सो निमित्त कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तानिमित्तकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान् ॥ कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ पुरुषः । प्रकृतिस्थः । हि । भुंक्ते । प्रकृतिजान् । गुणान् । कारणम् । गुणसंगः । अस्य । सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहक्षेत्रज्ञ पुरुष मायारूपप्रकृतिविषेस्थितहुआही तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगैं हैं यातैं सत्असत्योनिजन्मोंविषे इसपुरुषका त्रिगुणात्मप्रकृतिकेसाथितादात्म्यही कारणहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष प्रकृतिविषेस्थितहुआही अर्थात् मायारूपप्रकृतिकेसाथि मिथ्यातादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआही तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगै है अर्थात् अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तिनसुखदुःखादिकोंकूंअनुभवकरै है ॥ यातैं तिसप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगकास्थानरूप जो सत्योनिविषेजन्महै तथाअसत्योनिविषेजन्महै तथासत्असत्योनिविषेजन्महै तिनजन्मोंकीप्राप्तिविषे इसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका गुणसंगही कारणहै अर्थात् सत्त्व रज तम यहतीनगुणात्मक मायारूपप्रकृतिविषे तिसपुरुषका तादात्म्यअभिमानही कारणहै ॥ ताप्रकृतिकेतादात्म्यअभिमानतैंविना तिसअसंगपुरुषकूं स्वभावतैं सोफलभोक्तृत्वरूपसंसार संभवतानहीं ॥ तहां इंद्रादिकदेवताशरीरतौ सत्योनिविषेजन्मवाले हैं यातैं तिनदेवताशरीरोंविषे सात्त्विकइष्टफलही भोग्याजावै है ॥

सत्त्व रज तम यह तीनगुणहैं तिनषोडशविकारोंकूं तथातीनगुणोंकूं तूंतिसमायारूपप्रकृतितैंही उत्पन्नहुआजान इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अबतिनविकारोंविषे प्रकृतिजन्यत्वका विवेचनकरतेहुए श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञपुरुषविषे संसारकाहेतुपणा दिखावैंहैं ।

(मू. श्लो.) कार्यकरणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते ॥ पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २० ॥ कार्यकरणकर्तृत्वे । हेतुः । प्रकृतिः । उच्यते । पुरुषः । सुखदुःखानाम् । भोक्तृत्वे । हेतुः । उच्यते ॥२०॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! कार्यकरणोंकेकर्त्तापणे विषे साप्रकृतिही हेतु कहीजावैहै तथा सुखदुःखोंके भोक्तापणे विषे सोपुरुषही हेतु कह्याजावैहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां शरीरकानामकार्य है और ताशरीरविषेस्थित जे पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय मन बुद्धि चित्तयहत्रयोदशइंद्रियहैं तिनोंकानाम करणहै ॥ इहांइसदेहकाआरंभकरणेहारे आकाशादिकपंचभूत तथाशब्दादिकपंचविषय यहसर्व ताशरीररूपकार्यकेग्रहणकरिकै ग्रहणकरणे ॥ औरसुखदुःखमोहरूप सत्त्व रज तम यहतीनगुण तिसकरणकेआश्रितहोणेतैं ताकरणकेग्रहणकरिकै ग्रहणकरणे ॥ ऐसेकार्योंके तथाकरणोंके कर्तृत्वविषे अर्थात् तिसकार्यकरणकेआकारपरिणाम विषे महाऋषियों नैं सामायारूपप्रकृतिही कारणरूपकहीहै ॥ तहां किसीपुस्तकविषे (कार्यकारणकर्तृत्वे) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठ विषेभी यहपूर्वउक्तअर्थहीजानणा ॥ इसप्रकारमायारूपप्रकृतिविषे संसारकाकारणपणा कथनकरिकै अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषविषेभी जिसप्रकारका सोकारणपणाहै ताकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं (पुरुषःइति) हे अर्जुन ! जोक्षेत्रज्ञरूप जीवनामापुरुष पूर्व पराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकऱ्याथा सोक्षेत्रज्ञपुरुष सुखदुःखोंके भोक्तृत्वविषे कारण कह्याजावैहै अर्थात सुखदुःखमोहरूप सर्वभोग्यपदार्थोंके वृत्तियुक्तअनुभवविषे कारण कह्याजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतो (कार्यकरणकर्तृत्वे) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ ताक्षेत्रज्ञपुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे सामायारूपप्रकृतिही तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्निकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआलोह तिसअग्निकेचतुष्कोणत्वआदिकोंका कारणहोवैहै तैसे तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई सामायारूपप्रकृतिही तापुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे कारणहोवैहै ॥ इसप्रकार ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापणेविषे सोक्षेत्रज्ञपुरुषही ताप्रकृतिविषेआपणेआभासरूपछायाकीप्राप्तिकरिकै कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्नि लोहाविषेआपणीछायाकीप्राप्तिकरिकै तालोहकेदाहकर्त्तापणेविषे कारणहोवैहै तैसे सोक्षेत्रज्ञपुरुषभी ताप्रकृतिविषेआपणेछायाकीप्राप्तिकरिकै ताप्रकृतिके सुखदुःखोंके भोक्तापणेविषे कारणहोवैहै सोदिखावैंहैं ॥ कार्यपणा करणपणा कर्त्तापणा यहतीनों वास्तवतैं प्रकृतिके विकाररूपदेहइंद्रियबुद्धिकेधर्महुएभी चेतनआत्माविषे आरोपणकरेजावैंहैं ॥ जैसे मैंगौरहूं मैंइसमनु

टीका । हे अर्जुन ! माया अज्ञान अविद्या यहहैंनाम जिसके ऐसीजा त्रिगुणात्मिका परमेश्वरकीशक्तिहै जामायाशक्ति पूर्वसतमअध्यायविषे अष्टप्रकारकी कथनकरीथी तथा अपराप्रकृति इसनामकारिकै कथनकरीथी साक्षेत्रनामा अपराप्रकृति इहां प्रकृतिशब्दकारिकै ग्रहणकरणी ॥ और पूर्वसतमअध्यायविषे जा क्षेत्रज्ञरूपजीवनामा पराप्रकृति कथनकरीथी साजीवनामा पराप्रकृतिही इहां पुरुषशब्दकरिकै ग्रहणकरणी ॥ ऐसे प्रकृति पुरुष दोनोंकूंभी तूं अनादिही जान ॥ तहां नहीं विद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताकानाम अनादि है एसाअनादिरूप तिनदोनोंकूं तूं जान ॥ तहां (मायांतुप्रकृतींविद्यात्) इस श्रुतिनें तिसमायारूपप्रकृतिकूंही सर्वजगत्काकारणकह्याहै ऐसी सर्वजगत्केकारणरूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणा युक्तहै ॥ काहेतें जोकदाचित् तिसमायानामा प्रकृतिकूंभी अन्यकिसीकारणकीअपेक्षा मानियें तौ तिसप्रकृतिके कारणकूंभी किसीअन्यकारणकीअपेक्षाहोवैगी तिसअन्यकारणकूंभी किसीअन्यकारणकी अपेक्षा होवैगी इसप्रकारतें कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैगी ॥ यातें तामायारूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणाही माननेयोग्यहै ॥ किंवा तिसमायारूपप्रकृतिविषे केवल युक्तिकारिकैही सोअनादिपणा नहीं किंतु (अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णाम्) यहसाक्षात्श्रुतिभी तिसप्रकृतिविषे अनादिपणेकूं कथनकरैहै ॥ किंवा जैसे मायारूप प्रकृति विषे सो अनादिपणायुक्तिकारिकै तथाश्रुतिकारिकै सिद्धहै ॥ तैसे क्षेत्रज्ञनामा जीवात्मापुरुषविषेभी सोअनादिपणा युक्तिकारिकै तथाश्रुतिकारिकै सिद्धहै सोदिखावैं हैं ॥ इनसर्वप्राणीमात्रकूं जन्मकालविषेही हर्ष शोक भय सुख दुःख प्रवृत्ति इत्यादिक प्राप्तहोवैं हैं तिनहर्षशोकादिकोंविषे इसजन्मकेतौ धर्मअधर्मसंस्कार कारणहैंनहीं किंतु तिनजीवोंकूं तेहर्षशोकादिक पूर्वजन्मके धर्मअधर्मकारिकै तथासंस्कारोंकरिकैही प्राप्तहोवैं हैं तेधर्मअधर्मादिकधर्म आश्रयतैंविना संभवतेनहीं ॥ यातैं इसजन्मतैंपूर्वजन्मोंविषेभी ताजीवात्माकीविद्यमानता अंगीकारकरणीहोवैगी इसप्रकारतैं धर्मअधर्मादिकोंकीआश्रयतारूपकरिकै इसजीवात्माविषे अनादिपणा सिद्धहोवैहै ॥ किंवा इसजीवात्माकूं जोकदाचित् अनादिनहींमानियें किंतु उत्पत्तिवाला मानियें तौ पूर्वकरेहुएपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाही नाशहोवैगा ॥ तथा पूर्वनहींकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगहोवैगा ॥ याप्रकारके कृतनाश तथाअकृताभ्यागम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैंगे तिनदोनोंदोषोंकी निवृत्तिवास्तैभी इसजीवात्माकूं अनादिही मान्याचाहिये ॥ और (अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते) इत्यादिकश्रुतियांभीतिसजीवात्माकूं अनादिही कथनकरैं हैं इति ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सामायानामाप्रकृति अनादिहै इसकारणतैं तामायानामाप्रकृतिविषे जोपूर्वसर्वभूतोंकाकारणपणा कथनकऱ्याथा सो संभवहोइसकैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं (विकारांश्चेति) हे अर्जुन ! आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहजेपंचमहाभूतहैं तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन यहजे एकादशइंद्रियहैं ॥ इनषोडशोंकानाम विकार है ॥ तथा सुख दुःख मोहरूप जे

परमगुरुरूप मैंभगवान्वासुदेवविषे समर्पणकरेहैं सर्वकर्मजिसनैं तथाएकमैंपरमेश्वरकेहीशरणकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोमेराभक्तही इनपूर्वउक्त क्षेत्र परमगुरुरूप मैंभगवान्वासुदेवविषे
ज्ञान ज्ञेय तीनोंकूं भलीप्रकारतैंजानिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतैयोग्यहोवैहै अर्थात् सर्वअनर्थोंतैंरहित परमानंदब्रह्मभावरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥
तहां परमेश्वरकीभक्तिकरिकैही इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथा
देवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै और जैसीपरमात्मादेवविषे
अनन्यभक्तिहै तैसीही ब्रह्मवेत्तागुरुविषेअनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंही यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ हृदयविषेप्रकाशमानहोवैंहैं इति ॥ और यहअधिकारी
पुरुष ज्ञेयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधि
कारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकारतैं ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहीहोवैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छावान् यह
अधिकारीपुरुष अत्यंततुच्छविषयभोगोंकीइच्छाकापरित्यागकरिकै सर्वकालविषे एकमैंपरमेश्वरकेशरणहुआ आत्मज्ञानकेअमानित्वादिकसाधनोंकूंही प्रयत्नतैं
संपादनकरै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तग्रंथकरिकै (तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्च) इसवचनका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (यद्विकारियतश्चयत् सचयोय
त्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकरणा प्राप्तभया ॥ तहां प्रकृतिपुरुष इनदोनोंकूं संसारकाहेतुपणाकथनकरिकै (यद्विकारियतश्चयत्) इसवचनकाअर्थ (प्रकृ
तिंपुरुषंचैव) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै विस्तारतैंकथनकरेहैं ॥ और (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकाअर्थतौ (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इत्यादिकदोश्लोकों
करिकै विस्तारतैंकथनकरैंगे ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायविषे क्षेत्रनामा अपराप्रकृति तथाक्षेत्रज्ञजीवनामा पराप्रकृति इनदोनोंप्रकृतियोंकूंकथनकरिकै (एतयोनी
निभूतानि) इसवचनकरिकै तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे सर्वभूतोंकीकारणता कथनकरीथी ॥ अब तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे अनादिपणा कथनकरिकै सर्वभूतोंविषे
तिनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यपणेकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपि ॥ विकारांश्चगुणांश्चैवविद्धिप्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ प्रकृतिम् । पुरुषम् । च ।
एव । विद्धि । अनादी । उभौ । अपि । विकारान् । च । गुणान् । च । एव । विद्धि । प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन ! प्रकृतिकूं तथा पुरुषकूं दोनोंकूं भी तूं अनादि ही जान तथा विकारोंकूं तथा गुणोंकूं तांप्रकृतितैंउत्पन्नहुआ ही तूं
जान ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

होवै है ।। तिनसाधनोंतैंविना प्राप्तहोवैनहीं ।। यातैं अमानित्वादिकसाधनसंपन्न पुरुषही तिसज्ञेयब्रह्मकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिनसाधनोंतैंरहित बहिर्मुखपुरुष तिसज्ञेयब्रह्मकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ शंका—हेभगवन् ! यज्ञादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य स्वर्गादिक जैसे देशकालकरिकै व्यवहितहोवैं हैं तैसे अमानित्वादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य सोज्ञेयब्रह्मभी देशकालकरिकैव्यवहितहीहोवैगा ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (हृदिसर्वस्यधिष्ठितमिति) हेअर्जुन ! सोज्ञेयब्रह्म स्वर्गादिकोंकीन्याईं कोईव्यवहितनहीं है किंतु सर्वप्राणियोंकीबुद्धिविषेही स्थितहै अर्थात् सोज्ञेयब्रह्म सामान्यतैं सर्वप्रपंचविषेस्थितहुआभी विशेषरूपकरिकै तिसबुद्धिविषेही जीवरूपकरिकै तथाअंतर्यामीरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ।। जैसे सामान्यतैंसर्वपदार्थोंविषेस्थितहुआभी सूर्यकातेज दर्पणसूर्यकांतमणि इत्यादिकस्वच्छपदार्थोंविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवै है ।। तैसेस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे सामान्यरूपतैंस्थितहुआभी सोपरब्रह्म ताबुद्धिविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवै है ।। तात्पर्ययह ।। सोपरब्रह्म सर्वप्राणियोंका आपणाआत्मारूपहोणेतैं वास्तवतैंअत्यंत अव्यवहितहुआभी भ्रांतिकरिकै व्यवहितकीन्याईं प्रतीतहोवै है सोईहीज्ञेयब्रह्म तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वभ्रमकेकारणरूपअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै है इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वकथनकरेहुएक्षेत्रादिकोंकूं तथाअधिकारीकूं तथाफलकूं कथनकरतेहुए श्रीभगवान् इसपूर्वप्रसंगका उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) इतिक्षेत्रंतथाज्ञानंज्ञेयंचोक्तंसमासतः ॥ मद्भक्तएतद्विज्ञायमद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥ इति । क्षेत्रम् । तथा । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । च । उक्तम् । समासतः । मद्भक्तः । एतत् । विज्ञाय । मद्भावाय । उपपद्यते ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेताईं इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्र तथा ज्ञान तथा ज्ञेय संक्षेपकरिकै कथनकरचा मेराभक्त इनक्षेत्रादिकतीनोंकूं जानिकरिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेतांई महाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत क्षेत्रकास्वरूप संक्षेपतैं कथनकरचा ॥ तथा अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत ज्ञानभी संक्षेपतैंकथनकरचा ॥ तथा (अनादिमत्परंब्रह्म) इसवचनतैंआदिलैके (हृदिसर्वस्याधिष्ठितम्) इसवचनपर्यंत ज्ञेयब्रह्मभी संक्षेपतैं कथनकरचा अर्थात् जेक्षेत्र ज्ञान ज्ञेय यहतीनों श्रुतिस्मृतियोंविषे अत्यंतविस्तारतैं कथनकरे हैं तेतीनों तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंतैंआकर्षणकरिकै मंदबुद्धि पुरुषोंकेअनुग्रहवासतै मैंपरमेश्वरनैं संक्षेपकरिकै तुम्हारेताईं कथनकरे हैं ॥ इतनाही सर्ववेदोंकाअर्थ है तथाइसगीताशास्त्रकाअर्थ है इति ॥ तहां इसअर्थविषे पूर्व द्वादशअध्यायविषेकथनकरे हैं लक्षणजिसके ऐसाजो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोमेराभक्तही अधिकारी है ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (मद्भक्तःइति) अर्थात्

ज्योतिर्योंकाप्रकाश संभवैहै इति ॥ शंका—हेभगवन् ! सोचैतन्यस्वरूपब्रह्म स्वभावतैंजडपणे तैंरहितहुआभी जडपदार्थों केसाथि संबंधवालाहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकी
शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (तमसःपरमुच्यतेइति) हेअर्जुन ! सोपरब्रह्म जडवर्गरूपतमतैं परकह्याहै अर्थात् अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूपयहसर्वप्रपंच
यहदोनों अपारमार्थिकहैं ॥ और सोचैतन्यरूपज्ञेयब्रह्म पारमार्थिकहै ताअसत्जगत्का तथासत्ब्रह्मका कोईभीसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं श्रुतिभगवतीनैं
तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं सोज्ञेयब्रह्म अविद्याके तथाताकेकार्यरूपप्रपंचके संबंधतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अक्षरात्परतःपरः । आदित्यवर्णतमसःपरस्ता
त्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकैनहींनाशहोणेहारी तथाआपणेकार्यकीअपेक्षाकरिकैपर ऐसीजा अविद्याहै तिसअविद्यातैंभी सोपरब्रह्मपरहै
तथा सोपरब्रह्म सूर्यकीन्याई दूसरेप्रकाशककीनहीं अपेक्षाकरताहुआ सर्वप्रपंचकाप्रकाशककरैहै ॥ तथा अविद्यारूपतमतैंपरहै इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं
भी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निःसंगस्यैवसंगेनकूटस्थस्य विकारिणा ॥ आत्मनोऽनात्मनायोगोवास्तवोनोपपद्यते) ॥ अर्थयह ॥ सर्वसंगतैंरहित कूटस्थ आ
त्माका संगवान् विकारी अनात्मवस्तुकेसाथि वास्तवसंबंध संभवतानहीं इति ॥ अथवा (तमसःपरमुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जड
वर्गरूप तमतैंभिन्नपणा कथनकऱ्याहै ताभिन्नपणेकीसिद्धिकरणेवासते तिसज्ञेयब्रह्मका (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसवचनकरिकै हेतुगर्भितविशेषण कथनक
ऱ्याहै ताकरिकै यहअनुमान सिद्धहोवैहै सोज्ञेयब्रह्म तिसजडवर्गरूपतमतैंभिन्नहोणेकूंयोग्यहै ज्योतिर्योंकाभीज्योतिरूपहोणेतैं जोपदार्थ जडवर्ग तैं भिन्ननहींहोवै
है सोपदार्थ ज्योतिर्योंकाज्योतिरूपभीनहींहोवैहै जैसे घटादिकजडपदार्थ हैं इति ॥ जिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्मस्वयंज्योतिरूपहै तथासर्वजडपदार्थों केसंबंधतैंरहितहै॥
तिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्म ज्ञानरूपहै ॥ अथवा ॥ शंका—हेभगवन् ! जैसे चंद्ररूपज्योतिका प्रकाशकरणेहारा तथाभौतिकत्वरूपकरिकैताचंद्रकेसजातीय सूर्यरूप
ज्योतिहै यहवार्त्ता ज्योतिषशास्त्रविषेप्रसिद्धहै तैसे तिनसूर्यादिकज्योतिर्योंकाप्रकाशकरणेहारा तथातिनसूर्यादिकोंकेसजातीय कोईअलौकिकज्योतिहोवैगा ॥
ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुएश्रीभगवान् कहैहैं (ज्ञानमिति) हेअर्जुन ! सो सूर्यादिज्योतिर्योंकाप्रकाशकरणेहारा ज्ञेयब्रह्म केसाहै ज्ञानरूपहै अर्थात् प्रमाणजन्य
चित्तवृत्तिकरिकैअभिव्यक्त संवित्रूपहै कोई अलौकिक भौतिकज्योतिनहीं है ॥ ऐसाज्ञानरूपहोणेतैंही सोपरब्रह्म ज्ञेयरूपहै अर्थात् अज्ञातहोणेतैं सोपरब्रह्म
अधिकारीजनोंनैं जानणेकूंयोग्यहै ताज्ञानरूपब्रह्मतैंभिन्न जडपदार्थोंविषे सोअज्ञातपणा रहैनहीं ॥ यातैं तेजडपदार्थ जानणेयोग्यनहीं हैं ॥ शंका—हेभगवन् !
ऐसाज्ञेयब्रह्म इनसर्वप्राणियोंनैं किसवासतेनहींजानताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (ज्ञानगम्यमिति) हेअर्जुन ! पूर्व अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्व
ज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकरेजे बीससाधनहैं जेसाधन ज्ञानकेहेतुहोणेतैं ज्ञानशब्दकरिकैकथनकरेहैं ॥ ऐसेज्ञानरूपसाधनोंकरिकैही सोज्ञेयब्रह्म प्राप्त

करिसकैनहीं ॥ शंका–हेभगवन् ! इसप्रकारतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन सर्वभूतोंविषेव्यापकहोवो ॥ परंतु सर्वजगतकाकारणजोब्रह्महै सोकारणब्रह्मतौ ताक्षेत्रज्ञचेतनतैं भिन्नही है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहे हैं (भूतभर्तृचइति) हेअर्जुन ! सोब्रह्मभूतभर्तृहै अर्थात् जोब्रह्म स्थितिकालविषे अधिष्ठानतारूप करिकै सर्वभूतोंको धारणकरै है तथापोषणकरेहै ॥ तथा जोब्रह्म प्रलयकालविषे तिनसर्वभूतोंकासंहारकरैहै ॥ तथा जोब्रह्म सृष्टिकालविषे तिनसर्वभूतोंकूं उत्पन्न करै है ॥ जैसे रज्जुआदिकअधिष्ठान मायाकल्पितसर्पादिकोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहैं तैसे इससर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूपजोब्रह्महै सोब्रह्मही सर्वदेहोंविषेएकक्षेत्रज्ञरूप तुमनैं जानणा ॥ तिसब्रह्मतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन भिन्ननहींजानणा इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥शंका– हेभगवन् ! सर्वत्रविद्यमान हुआभी सोज्ञेयब्रह्म जबीनहींप्रतीतहोवैहै तबी सोज्ञेयब्रह्म जडहीहोवेगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए सोज्ञेयब्रह्म नहींप्रतीतहोणेमात्रकरिकै जडहोवैनहीं ॥ कोहतैं सोपरब्रह्म यद्यपि स्वयंज्योतिरूपहै तथापि सोपरब्रह्म रूपादिकगुणों तैं रहितहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मविषे नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकीअविषयता संभवहोइ सकैहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कहैं हैं (ज्योतिषामपितज्ज्योतिःइति) अथवा पूर्वश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलय कर्तृत्वरूपतटस्थलक्षण कथनकऱ्याथा ॥ अब (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसश्लोककरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका स्वरूपलक्षण कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) ज्योतिषामपितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ॥ ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्यधिष्ठितम् ॥ १७ ॥ ज्योतिषाम् । अपि । तत् । ज्योतिः । तमसः । परम् । उच्यते । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । ज्ञानगम्यम् । हृदि । सर्वस्य । धिष्ठितम् ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोज्ञेयब्रह्म सूर्यादिकज्योतियोंका भी ज्योति है तथाजडवर्गरूपतैं पर कह्या है तथाज्ञानरूपहै तथाज्ञेयरूपहै तथाज्ञान करिकैप्राप्यहै तथासर्वप्राणियों के बुद्धिविषे स्थितहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! पुनः सोज्ञेयब्रह्मकैसाहे ज्योतियोंकाभीज्योतिहै अर्थात् अनात्मपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहारे जो आदित्य चंद्रमा अग्नि विद्युत् इत्यादिक बाह्यज्योतिहैं तथामनबुद्धिआदिक अंतरज्योतिहैं तिनसर्वज्योतियोंकाभी सोपरब्रह्म प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तहां चैतन्यज्योतिविषे सूर्यादिकजडज्योतियोंका प्रकाशकपणा युक्तिकरिकैभी संभवहोइकैहै ॥ तथाइसअर्थकूं साक्षात्श्रुतिभगवतीभी कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः । तस्यभासासर्वमिदं विभाति) ॥ अर्थयह ॥ जिसस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकारकै यहतेजयुक्तसूर्य तपायमानहोवैहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकेप्रकाशकरिकै यहसूर्यचन्द्रादिकसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ तथा यहवार्त्ता श्रीभगवान् आपही (यदादित्यगतं तेजः) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरैगा॥यातैं चैतन्यब्रह्मरूपज्योतिकरिकै सूर्यादिकजड

णोंतैंरहितहोणेतैं अविज्ञेयहै अर्थात् यहब्रह्म इसीप्रकारकाहीहै ॥ याप्रकारतैं स्पष्टज्ञानकेयोग्यहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंनित्यम् ॥) अर्थयह ॥ सोपरब्रह्म आकाशादिसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै तथानित्यहै इति ॥ इसीकारणतैंही सोपरब्रह्म विवेकवैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषोंकूं सहस्रकोटिवर्षोंकरिकैभी प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरस्थहै अर्थात् लक्षकोटियोजनमार्गकेअंतरायवालेदेशकीन्याईं अत्यंत दूरहै ॥ और जेपुरुष तिनविवेकवैराग्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं तिनपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंत समीपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (दूरात्सुदूरे तदिहांतिकेचपश्यत्स्विहैवनिहितंगुहायाम्) ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितहैं ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतौ यहपरमात्मादेव अत्यंत दूरलोकालोकपर्वततैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधसंपन्नहोइकै ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तहुएहैं ऐसे उत्तमअधिकारीपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेही साक्षात्कारहोवैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व त्रयोदशश्लोकविषे (सर्वमावृत्यतिष्ठति) इसवचनकरिकै एकहीपरमात्मादेव सबजडवर्गकूंव्यापकरिकैस्थितहुआहै यहअर्थ सामान्यतैं कथनकऱ्या अब देहविषे आत्माकेभेदमानणेहारेवादियोंकेखंडनकरणेवासतै तिसअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैवर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचास्थितम् ॥ भूतभर्तृचतज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥ १६ ॥ अविभक्तम् । च । भूतेषु । विभक्तम् । इव । च । स्थितम् । भूतभर्तृ । च । तत् । ज्ञेयम् । ग्रसिष्णु । प्रभविष्णु च ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः सोपरब्रह्म सर्वप्राणियोंविषे एकहीहै तथा भिन्नहुएकी न्याईं स्थितहै सोपरब्रह्मही सर्वभूतोंकाधारणकरणेहारा तथा संहारकरणेहारा तथा उत्पन्नकरणेहारातुमनैं जानणा ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सोपरब्रह्म सर्वप्राणियोंविषे एकहीव्यापकहै देहदेहविषे भिन्नभिन्नहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोपरब्रह्म आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंविषे अग्नि गुह्यहोइकैरह्याहै तैसे सोएकहीपरमात्मादेव सर्वभूतोंविषे गुह्यहोइकै रह्याहै इति ॥ इसप्रकार वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहुआभी सोपरब्रह्म इनदेहोंकेसाथि तादात्म्यकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म देहदेहविषे भिन्नभिन्न हुएकीन्याईं स्थितहै अर्थात् जैसे एकहीआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेद प्रतीतहोवैहै सोमिथ्याभेद वास्तवतैंआकाशकीएकताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं तैसे एकहीपरमात्मादेवविषे देहादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद तिसपरमात्मादेवकीवास्तवएकताकूं निवृत्त

आपणीमायाशक्तिकरिकै सर्वभूतहै ॥ तहां लोकविषे अधिष्ठानतैंविना कोईभीभ्रमहोतानहीं . किंतु रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानविषेही सर्परजतादिकोंकाभ्रम होवैहै ॥ यातैं जोचैतन्य आपणेसत्‌रूपकरिकै सर्वकल्पितप्रपंचकूंधारणकरै है तथापोषणकरै है ताकानाम सर्वभृतहै ॥ पुनःकैसाहैसोज्ञेयब्रह्म निर्गुणहै अर्थात् परमार्थतैंतौ सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंतैंरहितहै तथा गुणोंकाभोक्ताहै अर्थात् शब्दस्पर्शादिकविषयद्वारा सुख दुःख मोहके आकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुएजे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैंतिनगुणोंकाभोक्ताहै तथाउपलब्धाहै ॥ तहांश्रुति ॥ (साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव सर्वका साक्षीहै तथाचेतनहै तथाअद्वितीयहै तथासत्त्वादिकसर्वगुणोंतैंरहितहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) बहिरंतश्चभूतानामचरंचरमेवच ॥ सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचांतिकेचतत् ॥ १५ ॥ बहिः । अंतः । च । भूतानाम् । अचरम् । चरम् । एव । च । सूक्ष्मत्वात् । तत् । अविज्ञेयम् । दूरस्थम् । च । अंतिके । च । तत् ॥१५॥ इतिपदच्छेदः॥हेअर्जुन! सोज्ञेयब्रह्म हो सर्वभूतोंके बाह्यहै तथा अंतरहै तथा स्थावररूपहै तथाजंगमरूपहै तथासूक्ष्महोणेतैं अविज्ञेयहै तथा सोज्ञेयब्रह्म अत्यंतदूरस्थितहै तथा अत्यंतसमीपहै ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पुनःकैसाहै सोज्ञेयब्रह्म उत्पत्तिधर्मवाले जितनेक कल्पितकार्यहैं तिनसर्वकल्पितकार्योंके बाह्य तथाअनंतर सोएकही अकल्पितअधिष्ठानरूपब्रह्मव्यापकहै अर्थात् जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं तिनकल्पितसर्पादिकोंके बाह्य तथाअंतर सोरज्जुरूपअधिष्ठानही व्यापकहोवैहै तैसे तिनसर्वभूतोंके बाह्य तथाअनंतर सोअधिष्ठानरूपब्रह्महही सर्वप्रकारकरिकै व्यापकहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदंतरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्य बाह्यतः) ॥ अर्थयह ॥ सोअधिष्ठानरूप परब्रह्महीइससर्वप्रपंचके अंतर तथाबाह्य व्यापकहै इति ॥ सर्वत्रव्यापकहोणेतैं सोपरब्रह्महही सर्वस्थावरभूतरूपहै तथा सर्वजंगमभूतरूपहै॥काहेतैं इसलोकविषे जोजोकल्पितपदार्थहोवैहैं सोअधिष्ठानतैंभिन्नसत्तावालाहोवैंनहीं किंतु सोकल्पितपदार्थ अधिष्ठानरूपहीहोवैहैं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पादिक अधिष्ठानरज्जुरूपहीहैं तैसे अधिष्ठानब्रह्मविषेकल्पित यहस्थावरजंगमरूपजगत्‌भी तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्नसत्तावालानहींहै किंतुताअधिष्ठानब्रह्मरूपही है ॥ यातैं इनस्थावरजंगमपदार्थोंकूं अधिष्ठानब्रह्मरूपता युक्तहीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म) अर्थयह ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहै इति ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकारतैं सोज्ञेयब्रह्म जो सर्वकाआत्मारूपहै तौ सर्वप्राणी तिसपरब्रह्मकूं स्पष्टकरिकैक्यों नहींजानते ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेनजाणणेविषेहेतुकहैं हैं (सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयमिति) हे अर्जुन ! सोपरब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहुआभी अत्यंतसूक्ष्महोणेतैं तथारूपादिकगु

इसवृद्धपुरुषोंकेन्यायकूंअनुसरणकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाअध्यारोपकरिकै (अनादिमत्परंब्रह्म) इसपूर्वउक्तवचनका पूर्वलेश्लोकविषे व्याख्यानकऱ्या ॥ अब तिसअध्यारोपितसर्वप्रपंचका अपवादकरिकै (नसत्तन्नासदुच्यते) इसपूर्वउक्तवचनकेव्याख्यानकरणेअर्थ अधिकारीजनोंकेप्रति निरुपाधिकस्वरूपकेजनाणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरैहैं ।

(मू. श्लो.) सर्वेंद्रियगुणाभासंसर्वेंद्रियविवर्जितम् ॥ असक्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच ॥ १४ ॥ सर्वेंद्रियगुणाभासम् । सर्वेंद्रियविवर्जितम् । असक्तम् । सर्वभृत् । च । एव । निर्गुणम् । गुणभोक्तृ । च ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोज्ञेयब्रह्म सर्वइंद्रियोंतैंरहितहै तथा सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकैभासमानहै तथासर्वसंबंधतैंरहितहै तथा सर्वकेधारणकरणेहाराहीहै तथासत्त्वादिकगुणोंतैंरहितहै तथा तिनसत्त्वादिकगुणोंकाभोक्ताहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! सोज्ञेयपरब्रह्म परमार्थतैंतौ श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तथा आपणीमायाकरिकै सर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकैभासमानहै ॥ तहां बाह्यकरणरूप जेश्रोत्रवागादिकदशइंद्रियहैं ॥ तथा अंतःकरणरूपजोमनबुद्धिहैं तिनसर्वइंद्रियोंकेजेगुणहैं अर्थात् श्रवण वचन संकल्प निश्चय इत्यादिकजेव्यापारहैं तिनसर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकै सोज्ञेयब्रह्म भासमानहोवैहै अर्थात् सोपरब्रह्म तिनसर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकै व्यापारवालेकीन्याईं प्रतीतहोवैहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (ध्यायतीवलेलायतीव) ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेव ध्यानकरताकीन्याईं तथाचलायमानहुएकीन्याईं प्रतीतहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे ध्यायति इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजोध्यानहै सोध्यान सवज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ और लेलायति इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो चलनरूपलेलायनहै सोलेलायन सर्वकर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै अर्थात् तिनइंद्रियोंकेतादात्म्य अध्यासतैं यहआत्मादेव मैं देखताहूं मैं श्रवणकरताहूं मैंबोलताहूं मैं चलताहूं इसप्रकारतैं तिसतिसइंद्रियकेव्यापारविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और वास्तवतैं तिनसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । अपाणिपादोजवनोगृहीता) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव वास्तवतैं चक्षुतैंरहितहुआभी देखैहै तथा वास्तवतैं श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी शब्दकूंश्रवणकरैहै ॥ तथा वास्तवतैं हस्तइंद्रियतैंरहितहुआभी वस्तुकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा वास्तवतैं पादइंद्रियतैंरहितहुआभी शीघ्रगमनवालाहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोपरब्रह्म परमार्थतैंतौ सर्वसंबंधोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्यते) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमात्मापुरुष सर्वसंगतैंरहितहोणेतैं असंगहै तथा यहअसंगआत्मादेव किसीभीपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकार परमार्थतैं असंगहुआभी सोपरब्रह्म

टीका। हे अर्जुन! पूर्वहमनैं कथनकरयाजो ज्ञेयब्रह्महै सोज्ञेयब्रह्म कैसाहै सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जे अचेतनरूप पाणिहैं तथा पादहैं तेअचेतनरूप सर्वपाणिपाद आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतनरूपक्षेत्रज्ञाननैं ताचेतनकानाम सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां लोकविषे जितनीक अचेतनपदार्थोंकी प्रवृत्तियांहैं तेसर्वप्रवृत्तियां चेतनरूपअधिष्ठानपूर्वकहीहोवैं हैं ॥ चेतनरूपअधिष्ठातैंविना जडपदार्थोंकीप्रवृत्तिकहींभीदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदार्थोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषपूर्वकहीहोवैहै तैसे हस्तपादादिकसर्वजडपदार्थोंकीप्रवृत्तियांभी चेतनब्रह्मपूर्वकहीहोवैं हैं ॥ ऐसे हस्तपादादिकसर्वजडवर्गकेप्रवर्त्तक चेतनक्षेत्रज्ञरूपब्रह्मविषे नास्तिपणेकीशंका कदाचित्भी संभवतीनहीं इति ॥ याप्रकारकीयुक्ति (सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्) इत्यादिकसर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी ॥ इहां पाणिपाद इनदोइंद्रियोंकाग्रहण वागादिकसर्वकर्मइंद्रियोंका उपलक्षणहै ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञेयब्रह्म सर्वतोक्षिशिरोमुखहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनेक अक्षिहैं तथाशिरहैं तथामुखहैं तेसर्व अक्षिशिरमुख आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतोक्षिशिरोमुखहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरब्रह्म सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनेक श्रवणइंद्रियहैं तेसर्वश्रवणइंद्रिय आपणे आपणे व्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ इहां अक्षि श्रोत्र इनदोनोंइंद्रियोंकाग्रहण सर्वज्ञानइंद्रियोंका तथामनबुद्धिआदिकोंका उपलक्षणहै ॥ पुनःकैसाहै सोपरब्रह्म सर्वदेहोंविषे सोएकही नित्यविभुचेतन सर्वजडवर्गकूं अध्यासिकसंबंधकारिकै आपणेसत्तास्फूर्तिरूपतैंव्याप्यकरिकै स्थितहुआहै अर्थात् निर्विकारस्थितिकूंही प्राप्तहुआहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान आपणेविषेकल्पित सर्पादिकोंके गुणकरिकै तथादोषकरिकै लिपायमानहोवैनहीं तैसे आपणेविषे अध्यस्तजडप्रपंचके दोषकारिकै तथागुणकारिकै सोचेतन देवलेशमात्रतैंभी बंधायमानहोवैनहीं इति ॥ तहां सर्वदेहोंविषे एकहीचेतनहै सोचेतन नित्यहै तथाविभुहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नचेतनहैंनहीं ॥ यहसर्ववार्त्ता पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तहां इसश्लोककरिकै श्रीभगवाननैं यहदोअनुमान सूचनकरे ॥ श्रोत्रादिकप्रपंचज्ञानइंद्रिय तथावागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामनबुद्धिआदिक चतुष्टयअंतःकरण यहसर्व चेतनशक्तिनिमित्त करस्वस्वव्यापारवालेहैं स्वभावतैंजडहोणेतैं चर्ममयअथवाकाष्ठमयप्रतिमादिकोंकीन्याईं इति ॥ तथा देहइंद्रियादिकसर्व स्वभावतैंजडहैं दूसरेचेतनअधिष्ठाताकी बुद्धिपूर्वकप्रवृत्तिवालेहोणेतैं रथादिकोंकीन्याईं इति ॥ इसप्रकारतैं सर्वप्राणियोंकेदेहइंद्रियादिकउपाधियोंकारिकै तिसज्ञेयब्रह्मका अस्तिपणानिश्चयकऱ्याजावै है इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां ॥ (अध्यारोपापवादाभ्यांनिःप्रपंचंप्रपंच्यते ॥) ॥ अर्थयह ॥ शुद्धब्रह्मविषे प्रथमइससर्वप्रपंचका अध्यारोपकारिकै तिसतैंअनंतर तिससर्वप्रपंचका निषेधरूपअपवादकरिकै सोशुद्धब्रह्म श्रुति भगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं अधिकारीशिष्योंकेप्रति आत्मारूपकारिकै प्रतिपादनकरीताहैइति ॥

सर्वप्रपंचमात्रकानिषेधकरैं हैं ।। ऐसा जातिआदिकसर्वधर्मौं तैंरहितसोनिर्गुणब्रह्म किसीभीशब्दनैं कथनकरीतानहीं इति ।। शंका—हे भगवन् ! सोनिर्गुणब्रह्म जोकदाचित् किसीभीशब्दकरिकै नहींकथनकऱ्याजावैहै तौ (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) ॥ अर्थयह ॥ जोज्ञेयवस्तुहै तिसकूं मैंतुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ तथा ॥ (शास्त्रयोनित्वात्) ॥ अर्थयह ॥उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्रहै योनि क्या प्रमाण जिसविषे ऐसासोब्रह्महै ॥ यहव्यासभगवान्कासूत्रभीकैसे संगतहोवैगा ॥ समाधान—हे अर्जुन ! तिसनिर्गुणब्रह्मकूं उपनिषद्रूपशास्त्र जो प्रतिपादनकरै है सो शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै प्रतिपादनकरतानहीं किंतु यथाकथंचित् लक्षणावृत्तिकरिकै सोशब्द तिसनिर्गुणब्रह्मकूं प्रतिपादनकरै है सोप्रतिपादनकरणेकाप्रकारतौ द्वितीयअध्यायविषे (आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनम्) इसश्लोकविषे विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ।। यातैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे शब्दकीप्रवृत्तिकेनिषेधकरणेहारे (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकेसाथि (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) इसहमारेवचनका तथा (शास्त्रयोनित्वात्) इससूत्रवचनका विरोधहोवैनहीं इति ॥ आर किसीटीकाविषेतौ (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ सोज्ञेयब्रह्म प्रधानपरमाणुआदिकोंकीन्याईं सत् इसनामकरिकै कह्याजावैनहीं ।। तथा शून्यकीन्याईं असत् इसनामकरिकैभी कह्याजावैनहीं ॥ तहांश्रुति ।। (नासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजोनोव्योमापरोयदिति) ।। अर्थयह ॥ इससृष्टितैंपूर्व शून्यभीनहींहोताभया ॥ तथा त्रिगुणात्मकप्रधानभी नहींहोताभया ॥ तथा परमाणुभी नहींहोतेभये ।। तथा अव्यक्तभीनहींहोताभया इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (नसत्उच्यते) इसवचनकरिकै तिस निरुपाधिकशुद्धब्रह्मविषे सत्शब्दकी तथाअसत्शब्दजन्यज्ञानकी अविषयता कथनकरी ताकहणेकरिकै यहशंकाप्राप्तहुई ।। तिसज्ञेयब्रह्मकूं जोकदाचित् सत्शब्दका तथाअसत्शब्दजन्यज्ञानकाअविषयमानौंगे तौसोब्रह्म वंध्यापुत्रशशशृंगकीन्याईं असत्हीहोवैगा इति इसप्रकारकीशंकाकूं श्रीभगवान् (नासदुच्यते) इसवचनकरिकै सामान्यतैं निवृत्तकरतेभये अब तिसीअसत्पणेकीशंकाकूं विस्तारतैंनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रादिककरणरूपउपाधिद्वारा चेतनक्षेत्रज्ञरूपताकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मकेअस्तिपणेकूं प्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतः श्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति ॥ १३ ॥ सर्वतःपाणिपादम् । तत् । सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतःश्रुतिमत् । लोके । सर्वम् । आवृत्य । तिष्ठति ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै सर्व देहोंविषेहैंहस्तपादाजिसके तथासर्व देहोंविषेहैं नेत्राशिरमुखाजिसके तथासर्व देहोंविषे श्रवणइंद्रियवालाहै तथासर्वप्राणियोंकेशरीरविषेसर्वअचेतनवर्गकूं व्याप्यकरिकै स्थित है ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

कानाम मत्परहै ।। सोयहव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ काहेतैं जिसज्ञेयवस्तुकूंजानिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवानूनैं पूवकथनकऱ्याहै ॥ सामोक्षकीप्राप्ति निर्विशेषशुद्धब्रह्मकेज्ञानतैंहीहोवैहै ॥ शक्तिवाले सविशेषब्रह्मकेज्ञानतैं सामोक्षकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इहां श्रीभगवानूनैं निर्विशेषब्रह्महीं कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेनिर्विशेषब्रह्मविषे शक्तिमत्त्वकहणा असंगतहै इति ॥ अब श्रीभगवान् ताज्ञेयब्रह्मकीनिर्विशेषताकूं कथनकरैं हैं (नसत्तन्नासदुच्यतेइति) तहां जोवस्तु अस्ति इसप्रकारतैं विधिमुखकरिकैप्रमाणकाविषयहोवैहै सोवस्तु सत् इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और जोवस्तु नास्ति इसप्रकारतैं निषेधमुखकरिकै प्रमाणकाविषयहोवैहै सोवस्तु असत् इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सोज्ञेयब्रह्मतौ निर्विशेषहै तथास्वप्रकाशचैतन्यस्वरूपहै ॥ यातैं सोब्रह्म सत् असत दोनों तैं विलक्षणहोणेतैं सतभी नहींकह्याजावै तथा असतभी नहींकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति (यतोवाचोनिवर्त्तंतेअप्राप्यमनसासह) ॥ अर्थयह ।। मनसहितवाणी जिसनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मकंनप्राप्तहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मतैंनिवृत्तहोइजावैहै इति॥हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्म सत्नहीं है अर्थात् भावत्वधर्मकाआश्रयनहीं है तथा असत् नहींहै अर्थात् अभावत्वधर्मकाआश्रयनहीं है।।इसकारणतैंसोज्ञेयब्रह्म किसीभीशब्दनैं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै कथननहींकरता॥तात्पर्ययह॥जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारों शब्दकीप्रवृत्तिकेहेतुहोवैं हैं॥ जैसे गौ अश्व इत्यादिकशब्दतौ गोत्व अश्वत्व इत्यादिकजातियोंकूंलेकै आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृहोवैं हैं ॥ और शुक्ल कृष्ण इत्यादिकशब्दतौ शुक्लनील इत्यादिकगुणोंकूंलेकै आपणेआपणे अर्थविषेप्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौ पाक पाठ इत्यादिकक्रियावोंकूंलेकै आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और धनी गोमान् इत्यादिकशब्दतौ स्वस्वामिभावआदिकसंबंधोंकूंलेकै आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैं हैं ॥ इहां गुण क्रिया संबंध इनतीनों तैंभिन्न जितनेक जातिरूपधर्म हैं तथाउपाधिरूपधर्म हैं तेसर्वधर्म जातिशब्दकरिकैग्रहणकरणे ।। तहां (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवानूनैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जातिकानिषेध कथनकऱ्याहै सोजातिकानिषेध गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै अर्थात् तिसज्ञेयब्रह्मविषे जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारोंनही हैं ॥ तहां (एकमेवाद्वितीयम्) ॥ यहश्रुति॥तिसब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकहतीहुई ताब्रह्मविषे जातिकानिषेधकरैहै ।। काहेतैं अनेकव्यक्तियोंविषेरहणेहाराजोएकधर्म है ताकूं जातिकहैं हैं ॥ जैसे अनेकगौव्यक्तियोंविषेरहणेहारा जो एकगोत्वधर्म है ताकूं जातिकहैं हैं ऐसीजाति एकअद्वितीयब्रह्मविषे संभवतीनहीं ॥ और (निर्गुणंनिष्क्रियंशांतम्) यह श्रुति यथाक्रमतैं तिसब्रह्मविषे गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकानिषेधकरै है ॥ तहां निर्गुणम् इसपदकरिकैतौ गुणोंकानिषेधकरै है और निष्क्रियम् इसपदकरिकै क्रियाकानिषेधकरै है और शांतम् इसपदकरिकै संबंधकानिषेधकरै है ।। और (असंगोह्ययंपुरुषःअथातः आदेशोनेतिनेति) ॥ यहदोनोंश्रुतियांतौ तिसज्ञेयब्रह्मविषे

इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् ! अमानित्वतैंआदिलैकेतत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत पूर्वकथनकरेजे ज्ञाननामा बीससाधनहैं तिनसाधनोंकरिकै कौनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् षट्श्लोकोंकरिकै तिसज्ञेयवस्तुकानिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥ ज्ञेयम् । यत् । तत् । प्रवक्ष्यामि । यत् । ज्ञात्वा । अमृतम् । अश्नुते । अनादिमत् । परम् । ब्रह्म । न । सत् । तत् । न । असत् । उच्यते ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मुमुक्षुजननैं जोवस्तु जानणेयोग्यहै सोज्ञेयवस्तु मैं तुम्हारेताईं कथनकरताहूं जिसज्ञेयवस्तुकूं जानिकै यहमुमुक्षु अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु अनादिमत् परं ब्रह्म है सोब्रह्म नहींतौ सत् कह्याजावैहै तथा नहीं असत् कह्याजावैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसमुमुक्षुजननैं पूर्वउक्त अमानित्वादिकसाधनोंकरिकै जोवस्तु जानणेयोग्यहै सोज्ञेयवस्तुमैं भगवान् तैंअर्जुनकेताईं स्पष्टकरिकै कथनकरता हूं ॥ अब श्रीभगवान् ताश्रोताअर्जुनकूं तिसज्ञेयवस्तुकेअभिमुखकरणेवासतै उत्तमफलकरिकै ताज्ञेयवस्तुकीस्तुतिकरैं हैं (यज्ज्ञात्वामृतमश्नुतेइति) हे अर्जुन ! जिसवक्ष्यमाणज्ञेयवस्तुकूं जानिकरिकै यहअधिकारिपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् इसअनर्थरूपसंसारतैं मुक्तहोवै है ॥ शंका–हे भगवन् ! जिसज्ञेयवस्तु कूंजानिकै यहअधिकारीपुरुष मुक्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु कैसाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् ताज्ञेयवस्तुकास्वरूप कथनकरैं हैं (परंब्रह्मइति) हे अर्जुन ! परं कहिये अतिशयतातैंरहित तथा ब्रह्म कहिये देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो परमात्मादेवहै सोपरमात्मादेवही ज्ञेयरूपहै अर्थात् इसमुमुक्षुजननैं पूर्वउक्तसाधनोंकरिकैजानणेयोग्यहै कैसाहैसोपरब्रह्म अनादिमतहै ॥ तहां कारणकानाम आदिहै ॥ अथवा उत्पत्तिकानाम आदिहै सोआदि जिसवस्तुका होवै तावस्तुकानाम आदिमतहै ॥ ऐसेआदिमत् देहादिकपदार्थहैं तिन आदिमत्पदार्थों तैं जो विलक्षणहोवै अर्थात् कारणतैं तथाउत्पत्तितैं रहितहोवै ताकानाम अनादिमतहै अर्थात् सर्वविकारोंतैंविलक्षणवस्तुकानाम अनादिमतहै ॥ और किसीटीकाविषेतौ (अनादिमत्परम्) यहएकहीपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां कार्यकानाम आदिमत्है ॥ और कारणकानाम पर है ॥ ताकार्यकारणदोनों तैं जोअन्यहोवै ताकानाम अनादिमत्परहै ॥ और अन्यकिसी टीकाविषेतौ (अनादि मत्परम्) याप्रकारके दोपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां सोब्रह्मअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैं रहितहै ॥ तथा सोब्रह्म मत्परहै अर्थात् मैंसगुणब्रह्मतैंपर निर्विशेषरूपहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषेतौ (मत्परम्) इसपदका यह अर्थकऱ्याहै ॥ मैंभगवान्वासुदेवहूं पराशक्ति जिसकी ता

ऐसीजा महात्माजनोंकीसभाहै तिससभाविषेतौ इसअधिकारीजननैं अवश्यकरिकैप्रीतिकरणी ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (संगःसर्वात्मनाहेयः सचेत्त्यक्तुंनशक्यते ॥ ससद्भिःसहकर्त्तव्यःसतांसंगोहिभेषजम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीजननैं सर्वप्रकारकरिकै संगकापरित्यागकरणा ॥ और जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं तासंगकापरित्याग नहींकियाजावै तौभी इसअधिकारीजननैं विषयीबहिर्मुखपुरुषोंकासंग कदाचित्भी नहींकरणा किंतु महात्माजनोंकेसाथि सोसंगकरणा ॥ जिसकारणतैं सोमहात्माजनोंकासंग इससंसाररूपरोगकेनिवृत्तकरणेका भेषजहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ॥ एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् । तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतत् । ज्ञानम् । इति । प्रोक्तम् । अज्ञानम् । यत् । अतः । अन्यथा ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन! अध्यात्मज्ञानविषेजानिष्ठाहै तथातत्त्वज्ञानकेप्रयोजनकाजोदर्शनहै यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञान इसनामकरिकै कथनकरेहैं इन्हों तैं विपरीत जेमानित्वादिकहैं तेसर्व अज्ञानरूपहीहैं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! आत्माकूंआश्रयणकरिकै प्रवृत्तहुआजो आत्मअनात्मविवेकज्ञानहै ताकानाम अध्यात्मज्ञानहै तिसअध्यात्मज्ञानविषेही जाअत्यंत निष्ठाहै ताकानाम अध्यात्मज्ञाननित्यत्वहै ॥ जिसकारणतैं तिसविवेकविषेनिष्ठावालापुरुषही महावाक्यार्थज्ञानविषे समर्थहोवैहै ॥ इसकाणतैं इसअधिकारी पुरुषनैं तिसअध्यात्मज्ञानविषेनिष्ठा अवश्यकरिकैकरणी ।। १९ ।। और तत्त्वज्ञानकेअर्थका जोदर्शनहै ।। तहां (अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि) इत्यादिकवेदांतवाक्यहैं कारणजिसके तथाअमानित्वादिकसर्वसाधनोंकेपरिपाककाफलरूप ऐसाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकासाक्षात्कारहै ताकानाम तत्त्वज्ञानहै ऐसेतत्त्वज्ञानकाजो अर्थहै अर्थात् अविद्यादिकसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षरूपप्रयोजनहै तिसतत्त्वज्ञानकेमोक्षरूपअर्थका जोदर्शनहै अर्थात् पुनःपुनः विचारकरिकैदेखणाहै ताकानाम तत्त्वज्ञानार्थदर्शनहै ॥ २० ॥ ऐसातत्त्वज्ञानार्थदर्शनभी इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैकर्त्तव्यहै ॥ काहेतैं तिसतत्त्वज्ञानके फलकेदर्शनहुएतैंअनंतरही तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैहै फलकेज्ञानतैंविना तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अमानित्वतैंआदिलेके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकरेजेबीस २० साधनहैं ॥ तेबीससाधन आत्मज्ञानकीप्राप्तिकेहेतुरूपहोणेतैं ज्ञान इसनामकरिकैकथनकरेहैं ।। इनअमानित्वादिकसाधनोंतैं विपरीत जेमानित्व दंभित्व हिंसा अक्षांति अनार्जव इत्यादिकहैं तेमानित्वादिक आत्मज्ञानकेविरोधीहोणेतैं अज्ञान इसनामकरिकैकथनकरेहैं ।। यातैं इन अधिकारीपुरुषोंनैं तिनअज्ञाननामा मानित्वदंभित्वादिकोंकापरित्यागकरिकै तेज्ञाननामा अमानित्वअदंभित्वादिकबीससाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे

दाना किनपदार्थोंविषे परित्यागकरणेयोग्यहैं ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (पुत्रदारगृहादिषुइति) हे अर्जुन ! पुत्रोंविषे तथास्त्रियोंविषे तथागृहों विषे सा सक्ति तथाअभिष्वंग परित्यागकरणेयोग्यहैं ।। इहां (पुत्रदारगृहादिषु) इसवचनविषेस्थितजो आदिशब्दहै ताआदिशब्दकरिकै इनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनेकस्नेहकेविषय धन भृत्य आदिकपदार्थहैं तिनसर्वोंकाग्रहणकरणा अर्थात् स्नेहकेविषयसर्वपदार्थोंविषे सक्तितैंरहितहोणा तथाअभिष्वंगतैंरहितहोणा ॥ और इष्टअनिष्टकीप्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तहोणा अर्थात् प्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषेतौ हर्षकूं नहींकरणा और अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषे विषादकूं नहींकरणा इसीकानाम समचित्तपणाहै ॥ १५ ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ किंच ।

(मू. श्लो.) मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसादि ॥ १० ॥ मयि । च । अनन्ययोगेन । भक्तिः । अव्यभिचारिणी । विविक्तदेशसेवित्वम् । अरतिः । जनसंसदि ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अनन्ययोगकरिकै अव्यभिचारिणी ऐसीजा मैंपरमेश्वरविषे भक्तिहै तथा एकांतदेशकासेवनहै तथा विषयीजनोंकीसभाविषे जाअप्रीतिहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंभगवान्वासुदेवपरमेश्वरविषे जाभक्तिहै अर्थात् यहपरमेश्वर सर्वतैंउत्कृष्टहै याप्रकारके सर्वतैंउत्कृष्टताज्ञानपूर्वक जा मेरेविषे निरतिशयप्रीतिहै ॥ कैसीहोवैसाभक्ति अनन्ययोगकरिकैअव्यभिचारिणीहोवै ॥ तहां इसभगवान्वासुदेवतैंपरे दूसराकोईहैनहीं यातैं सोभगवान्वासुदेवही हमारीगतिहै याप्रकारका जोनिश्चयहै ताकानाम अनन्ययोगहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै जाभक्ति अव्यभिचारिणीहै अर्थात् किसीभीप्रतिकूलहेतुनैं निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ऐसी भक्तिभी ज्ञानकाहीहेतुहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ (प्रीतिर्नयावन्मयिवासुदेवेनमुच्यतेदेहयोगेनतावत्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकी जबपर्यंत मैंभगवान्वासुदेवविषे निरतिशयप्रीतिनहींहै तबपर्यंत यह अधिकारीपुरुष देहकेसंबंधतैंरहितहोवैनहीं इति ॥ १६ ॥ और विविक्तदेशकासेवित्वजोहै तहां जोदेश स्वभावतैंहीशुद्धहोवै अथवा संस्कारोंकरिकैशुद्धकऱ्याहोवै तथा अशुचिसर्पव्याघ्रादिकों तैंरहितहोवै तथा चित्तकीप्रसन्नता करणेहाराहोवै तादेशकानाम विविक्तदेशहै ॥ ऐसा नदीतीर पर्वतकीगुहा आदिकजोदेशहैं ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम विविक्तदेशसेवित्वहै ॥ १७ ॥ और आत्मज्ञानतैंविमुख तथाविषयभोगलंपटताका उपदेशकरणेहारे ऐसेजे विषयीबहिर्मुखजनहैं तिनविषयीजनोंकीजासभाहै जासभा तत्त्वज्ञानका अत्यंतप्रतिकूलहै ताविषयीपुरुषोंकीसभाविषे जो अरतिहै अर्थात् तासभाविषे जो नहींरमणकरणाहै ॥ १८ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअनुकूल

पुनः दर्शनहै अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखरूपदोषका जोपुनःपुनः दर्शनहै अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखका
तथादोषका जो पुनः पुनः दर्शनहै ॥ तहां जन्मविषेतौ माताकेउदरविषे नवमासपर्यंत अत्यंतसंकुचितहोइकैस्थितहोणा ॥ तथा माताकेमलविषेस्थितकृमियोंकरि
कैदंशनहोणा ॥ तथा माताकेजठराग्निकरिकैदाहहोणा ॥ तथा जरायुचर्मकरिकैवेष्टितहोणा तथा जन्मकालविषे प्रसववायुकरिकैआकर्षणहोणा ॥ तथा अत्यंत
अल्पयोनियंत्रतैंनिकसणा ॥ तथा मलमूत्रविषेस्थितहोणा इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोषताजन्मविषेहैं ॥ और मृत्युविषेतौ सर्वनाडियोंका
आकर्षण होणा तथा मर्मस्थानोंकाछेदनहोणा ॥ तथा प्राणोंकाआकुंचनहोणा ॥ तथा ऊर्ध्वश्वासहोणे ॥ तथा अत्यंतव्यथाकरिके मलमूत्रादिकोंकाबाह्य
निकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तामृत्युविषेहैं ॥ और जराअवस्थाविषेतौ सर्वअंगोंकीशिथिलताहोणी ॥ तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकी
मंदताहोणी ॥ तथा शरीरविषेकंपादिकहोणे ॥ तथाकासश्वासहोणा ॥ तथा उठतेहुए नीचेपड़िजाणा ॥ तथा आपणेस्वजनोंकरिकैनिरादरकूंप्राप्तहोणा ॥
तथा शरीरकेद्वारोंतैं मलमूत्रलाल आदिकोंकाप्रातहोणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष ताजराअवस्थाविषेहैं ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंविषे
तौ शरीरविषेदुर्बलताहोणी ॥ तथा शीतज्वरादिकोंकेवेगकरिकै परितापादिकहोणे ॥ तथा अत्यंतकटुकषायऔषधोंकापानकरणा ॥ तथा देहविषेदुर्गंधहोणा ॥
तथा स्वेदादिकोंकानिकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तिनव्याधियोंविषेहैं ॥ तेजन्ममरणादिकोंकेदुःख तथादोष आत्मपुराणकेप्रथमअध्या
यविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं इहां संक्षेपतैंकथनकरे हैं ॥ याप्रकारकेदुःखदोषोंकादर्शन विषयों तैं वैराग्यकाहेतुहोणेतैं आत्मज्ञानविषे उपकारकरैहै ॥
यातैं इनअधिकारीजनों नैं सोदुःखदोषोंकादर्शन अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ १२ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृहादिषु ॥ नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ असक्तिः । अनभिष्वंगः ।
पुत्रदारगृहादिषु । नित्यम् । च । समचित्तत्वम् । इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुत्रस्त्रीगृहादिकपदार्थोंविषे
सक्तितैंरहितहोणा तथा अभिष्वंगतैंरहितहोणा तथा इष्टअनिष्टकी प्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तरहणा ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहपदार्थ हमारे हैं इतनेअभिमानमात्रकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिहै ताकानाम सक्तिहै तिससक्तितैंरहितकानाम असक्तिहै ॥ १३ ॥
और यहपदार्थ मैंहीहूं याप्रकारकीअभेदभावनाकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिकीअतिशयताहै अर्थात तिनपदार्थोंकेसुखीदुःखीहुए मैंही सुखीदुःखीहोवूंहूं
याप्रकारका जोअत्यंतअभिनिवेशहै ताकानाम अभिष्वंगहै ॥ ताअभिष्वंगतैंरहितहोणेकानाम अनभिष्वंगहै ॥ १४ ॥ शंका—हे भगवन् ! सक्ति अभिष्वंग यह

शौचहै ॥ सोशौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौबाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै ॥ तहां जलमृत्तिकाकारिकै शरीरकेमलोंका जोप्रक्षालनहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और विषयोंविषेदोषदर्शनरूप विरोधीवासनावोंकारिकै मनके रागद्वेषादिकमलोंकी जोनिवृत्तिकरणीहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ ७ ॥ और मोक्षकेसाधनोंविषे प्रवृत्तहुएपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमका नपरित्यागकारिकै जो पुनःपुनः प्रयत्नकीअधिकताहै ताकानाम स्थैर्यहै ॥ ॥ ८ ॥ और देहइंद्रियोंकासंघातरूपआत्माका मोक्षतैंप्रतिकूलविषे स्वभावतैंप्राप्तप्रवृत्तिकूं निरुद्धकारिकै जो मोक्षकेसाधनोंविषेही व्यवस्थापनहै ताकानाम आत्मविनिग्रहहै ॥ ९ ॥ यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञानकेसाधनहोणेतैं ज्ञानरूपकहेहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका तथावक्ष्यमाणश्लोकोंका एकादशश्लोकके (एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तम्) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ इंद्रियार्थेषु । वैराग्यम् । अनहंकारः । एव । च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! श्रोत्रादिकइंद्रियोंके शब्दादिकविषयोंविषे जोवैराग्यहै तथा अहंकारतैंजोरहितपणाहै तथा जन्म मृत्यु व्याधि दुःख दोष इनसर्वोंका जोपुनः पुनःदर्शनहै ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रोत्रादिकइंद्रियोंके शब्दादिकविषयोंविषे अथवा इसलोकके तथापरलोकके विषयभोगोंविषे रागकी विरोधी जा अस्पृहारूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ १० ॥ और लोकविषे आपणीस्तुतिके अभावहुएभी मनविषेप्रगटहुआ जो मैंसर्वतैंउत्कृष्टहूं याप्रकारकागर्व है ताकानाम अहंकारहै ताअहंकारकाजो अभावहै ताकानाम अनहंकारहै ॥ ११ ॥ और माताकेउदरविषे नवमासपर्यंतनिवासकारिकै योनिद्वारा जोबाह्य निकसणाहै ताकानाम जन्म है और प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे सर्वमर्मस्थानोंकाजोछेदनहै ताकानाम मृत्युहै ॥ और जिसअवस्थाविषे बुद्धिकीमंदता तथासर्वअंगोंकीशिथिलता तथास्वजनादिकृतपरिभव इत्यादिकदोष प्राप्त होवैं हैं ताअवस्थाकानाम जराहै ॥ और ज्वरअतीसारआदिकरोगोंकानाम व्याधिहै और अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यहतीनोंउपद्रवहैंनिमित्त जिसविषे ऐसाजो इष्टवस्तुकेवियोगजन्य तथाअनिष्टवस्तुकेसंयोगजन्य चित्तकापरितापरूप परिणामविशेषहै ताकानाम दुःखहै ॥ और वात पित्त श्लेष्म मल मूत्र इत्यादिकोंकारिकैपरिपूर्ण होणेतैं जो इसशरीरविषे निंदितपणाहै ताकानाम दोषहै ऐसे जन्मका तथामृत्युका तथाज्वरका तथाव्याधियोंका तथादुःखोंका तथादोषका जोअनुदर्शनहै अर्थात् पुनःपुनः विचारकारिकै देखणाहै अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख इनपांचोंविषे दोषका पुनः

होइसकैंनहीं ॥ काहेतें आपणाउत्पत्तिविनाश आपणेकरिकै देख्याजातानहीं ॥ और ताउत्पत्तिनाशतैंभिन्न दूसरेभी जितनेक आपणेधर्महैं तिनधर्मोंकाभी आपणेदर्शनतैंविना दर्शन संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं धर्मीकेदर्शनतैं अनंतरही ताकेधर्मोंकादर्शनहोवैहै ॥ तहांजोकदाचित् आपणेकरिकैही आपणादर्शन मानियें तौ तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तापणा तथा कर्मपणा आपणेविषे प्राप्त होवैगा ॥ सो एकहीवस्तुविषे एकहीकालविषे एकहीक्रियाका कर्त्तापणा तथा कर्मपणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सविकारवस्तु ताउत्पत्तिनाशादिकविकारका साक्षीहोइसकैनहीं किंतु निर्विकारवस्तुही तिनसर्वविकारोंकासाक्षी सिद्ध होवैहै ॥ यातैं यहअथसिद्धभया ॥ विकारीपणाही तिसक्षेत्रकाचिह्नहै अर्थात् जिसजिसपदार्थविषे सोविकारीपणाहै सोसोपदार्थ क्षेत्ररूपही जानणा ॥ कोई नामलैकेपरिगणन ताक्षेत्रकाचिह्न हैनहीं इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारक्षेत्रकेस्वरूपकाप्रतिपादनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञकूं क्षेत्रतैंभिन्नकरिकै विस्तारतैं प्रतिपादनकरणेवासतै तिसक्षेत्रज्ञकेज्ञानकीयोग्यता अर्थ श्रीभगवान् प्रथम अमानित्वादिकवीससाधनोंकूं पंचश्लोकोंकरिकै कथनकरैंहैं ।

(म. श्लो.) अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥ आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ अमानित्वम् । अद

म्भित्वम् । अहिंसा । क्षांतिः । आर्जवम् । आचार्योपासनम् शौचम् । स्थैर्यम् । आत्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! अमानिपणा अदंभिपणा अहिंसा क्षांति आर्जव आचार्यकीउपासना शौच स्थैर्य आत्माकानिग्रह यहसर्व ज्ञानकेसाधन होणेतें ज्ञानरूपहैं ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां जेगुण आपणेविषेविद्यमानहैं तथा जेगुण आपणेविषे नहींविद्यमानहैं ऐसे विद्यमानगुणोंकरिकै तथा अविद्यमानगुणोंकरिकै जाआपणीस्तुतिहै ताकानाम मानीपणाहै तामानीपणेतैं जोरहितहोणाहै ताकानाम अमानित्वहै ॥ १ ॥ और लाभपूजाख्यातिकेवासतै जो लोकोंकेआगे आपणेधर्मोंकाप्रगट करणाहै ताकानाम दंभीपणाहै तादंभीपणेतैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अदंभित्वहै ॥ २ ॥ और शरीरमनवाणीकरिकै जो प्राणियोंकापीडनहै ताकानाम हिंसाहै ताहिंसातैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ ३ ॥ और चित्तकेक्रोधादिकविकारोंका कारणरूप जो दुष्टपुरुषोंकृत अपराधहै ताअपराधकेप्राप्त हुएभी जो निर्विकारचित्तपणेकरिकै तिसअपराधका सहनकरणाहै ताकानाम क्षांति है ॥ ४ ॥ और जैसाआपणेहृदयविषेहोवै तैसाहीवाह्यव्यवहारकरणा यापकारकाजो अकुटिलपणाहै ताकानाम आर्जवहै अर्थात् अन्यप्राणियोंकी वंचनाकरणेतैंरहितहोणेकानाम आर्जवहै ॥ ५ ॥ और ब्रह्मविद्याकाउपदेश करणेहाराजो आचार्यहै तिसआचार्यका जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक पूजननमस्कारादिकोंकरिकै सेवनहै ताकानाम आचार्योपासनहै ॥ ६ ॥ और शुद्धिकानाम

दिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेतौ यहशब्दादिकपंच ज्ञाप्यत्वरूपकरिकैविषयहैं और वागादिकपंचकर्मइंद्रियों केतौ तेशब्दादिकपंच कार्यत्वरूपकरिकैविषयहैं ॥ तहां पूर्व कथनकरीहुई अष्टप्रकारकी प्रकृति पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचविषय एकमन इनसर्वोंकूं सांख्यशास्त्रवाले चौवीसतत्त्व कहैं हैं इति ॥ और सुखविषे तथासुख कसाधनोंविषे यहसुख हमारेकूंप्राप्तहोवै तथायहसुखकेसाधन हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकी स्पृहारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं शास्त्रविषे कामभीकहैं हैं तथारागभी कहैं हैं ताकानाम इच्छाहै ॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे यहदुःख हमारेकूं मतप्राप्तहोवै तथादुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकी जा पूर्वउक्त स्पृहाका विरोधी चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूंशास्त्रविषे क्रोधभीकहैं हैं तथाईर्ष्याभीकहैं हैं ताकानाम द्वेषहै ॥ और निरुपाधिकइच्छाकाविषयभूत तथाधर्म हैअसाधारणकारणजिसका तथापरमात्मसुखकाअभिव्यंजक ऐसीजा चित्तकीवृत्ति विशेषहै ताकानाम सुखहै ॥ और निरुपाधिकद्वेषकाविषयभूत तथा अधर्म हैअसाधारणकारण जिसका ऐसीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम दुःखहै॥औरपंचमहाभूतोंकापरिणामरूप ऐसाजोइंद्रियोंसहितशरीरहै ताकानाम संघातहै ॥ और स्वरूपज्ञानकाअभिव्यंजक तथाप्रमाणहैअसाधारणकारणजिसका ऐसीजा प्रमाज्ञाननामा चित्तकी वृत्तिविशेषहैताकानाम चेतनाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुए देहइंद्रियोंकेस्थितकरणेकाहेतुरूप जोप्रयत्नहै ताकानाम धृतिहै ॥ इहां इच्छादिकोंकाग्रहण अंतःकरणकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै तेअंतःकरणकेधम श्रुतिविषेयह कहे हैं ॥ तहांश्रुति ॥ (कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) ॥ अर्थयह ॥ इच्छासंकल्प संशय श्रद्धाअश्रद्धा धृति अधृति लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनरूपही हैं इति॥यहश्रुतिवचन मृद्घटःइसवचनकीन्याईं मनरूपउपादानकारणकेसाथि कामादिककार्योंका अभेदकथनकरिकै तिनकामा दिककार्योंविषेमनकाधर्मपणा कथनकरै है ॥ इसप्रकार पंचमहाभूतों तैं आदिलेके धृतिपर्यंत पूर्वकथनकरेहुए जितनेक जडपदार्थ हैं तेसर्वजडपदार्थ क्षेत्रज्ञना मासाक्षीकरिकैभास्यमानहोणेतैं तिसक्षेत्रज्ञसाक्षीतैंभिन्नहैं ॥ ऐसेयहसर्वजडपदार्थ हमनैं संक्षेपकरिकै क्षेत्र इसनामकरिकैकथनकरे हैं ॥ तथा तेक्षेत्ररूपसर्वपदार्थ भास्यअचेतनरूपही हैं ॥ शंका—हे भगवन् ! शरीरइंद्रियोंकासंघातही चेतनरूपहोणेतैं क्षेत्रज्ञहै इसप्रकार लोकायतिक मानैं हैं ॥ और चेतनरूपक्षणिक विज्ञान ही आत्माहै ॥ इसप्रकार सुगत मानैं हैं ॥ और इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञान यहसर्व आत्माकेलिंगहैं इसप्रकार नैयायिकमानैं हैं ॥ यातैं पंचमहाभूतों तैंआ दिलेकेधृतिपर्यंत यहसर्व क्षेत्ररूपहैं यहआपकाकहणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताक्षेत्रकेलक्षणकूं कहैं हैं (सविकारमिति) तहां जन्मतैंआदिलेकेविनाशपर्यंत जोपरिणाम ताकानाम विकारहै तिसविकारसहितजोहोवै ताकानाम सविकारहै अर्थात् उत्पत्तिनाशादिकविकारोंवालेका नाम सविकारहै ॥ तहां पंचमहाभूतों तैंआदिलेकेधृतिपर्यंत जेपदार्थ पूर्वकथनकरे हैं तेसर्वपदार्थ सविकाररूपहैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ तिसविकारकेसाक्षी

सविकारम् । उदाहृतम् ॥५॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि तथा अव्यक्त तथा दश श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा एकमन तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयशब्दादिकपंच तथा इच्छा द्वेष सुख दुःख संघात चेतना धृति यह सर्व विकारसहित संक्षेपकरिके क्षेत्ररूप कहेहैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पृथिवी जल तेज वायु आकाश यह जे पंचमहाभूतहैं ॥ तथा तिनपंचमहाभूतोंकाकारण जोअभिमानलक्षण अहंकारहै ॥ तथा तिसअहंकारका कारणरूप जोअध्यवसायलक्षण महत्तत्त्वनामाबुद्धिहै ॥ तथा तिसमहतत्त्वनामाबुद्धिकाकारणरूप तथासत्त्वरजतमगुणात्मक ऐसाजो प्रधानरूप अव्यक्त है ॥ जोअव्यक्त सर्वकाकारणरूपही है किसीकाभी कार्यरूपहैनहीं ॥ यह महाभूतों तें आदिलेकेअव्यक्तपर्यंत अष्टप्रकारकीप्रकृति कहीजावै है यहअर्थ सांख्यमतके अनुसार कथनकऱ्या ॥ अब वेदांतमतकेअनुसारअर्थकरें हैं ॥ तहां अव्यक्तशब्दकरिकेतौं अनिर्वचनीय अव्याकृतका ग्रहणकरणा जिसअव्याकृतकूं (ममभायादुरत्यया) इसवचनकरिके श्रीभगवानूनैं मायानामा परमेश्वरकीशक्तिरूप कथनकऱ्याहै ॥ और बुद्धिशब्दकरिकेतौ सृष्टिकेआदिकालविषे स्रष्टव्यप्रपंच विषयक मायाकावृत्तिरूप ईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकेतौ तिसईक्षणतैंअनंतरभावी तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकेसंकल्पका ग्रहणकरणा ॥ तिससंकल्पतैंअनंतर आकाशादिकक्रमकरिके पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति ग्रहणकरणी इति ॥ और सांख्यशास्त्रकरिकेसिद्धजे अव्यक्त महत्तत्व अहंकार यहतीन तत्त्वहैं तेतीनों वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकारकरेनहीं ॥ उलटा (ईक्षतेर्नाशब्दम्) इत्यादिकसूत्रोंकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारों नैं तेसांख्यशास्त्रकल्पितप्रधानादिकपदार्थ बहुतविस्तारतैंखंडनकरे हैं तहां (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्) इसश्रुतिकरिकेप्रतिपादन करीजा मायानामा परमेश्वरकीशक्तिहै सामायाशक्तिही इहां श्रीभगवानूनैं अव्यक्तशब्दकरिकेकथनकरी है ॥ और (तदैक्षत) इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजोस्रष्टव्य जगतविषयक मायाकावृत्तिरूपईक्षणहै सोईक्षणही इहां श्रीभगवानूनैं बुद्धिशब्दकरिके कथनकऱ्याहै ॥ और (बहुस्यांप्रजायेय) ॥ इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजो तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकासंकल्पहै सोपरमेश्वरकासंकल्पही इहां श्रीभगवानूनैं अहंकारशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तिसतैंअनंतर (तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरी है ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्ध यह वेदांतपक्षही श्रेष्ठहै इति ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहजेपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यहजे पंच कर्मइंद्रियहैं यहदोनोंमिलिके दशइंद्रियहोवैं हैं ॥ तथासंकल्पविकल्परूप जोएकमनहै ॥ तथा तिनश्रोत्रादिकदशइंद्रियोंके जेशब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचविषयहैं ॥ तहां श्रोत्रा

इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै पश्चात् यहवचनकह्याहै ॥ (तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसदजायत) ॥ अर्थयह ॥ केईकवादीतौ ऐसेकहैं हैं ॥ यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्होताभया सोअसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ तिसअसत्कारणतैं यहसत्कार्य उत्पन्नहोताभया इति ॥ इसवचनकरिकै नास्तिकोंकेमतकाकथनकरिकै तिसतैं अनंतर सोउद्दालकऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ (कुतस्तुखलुसोम्यैवंस्यादितिहोवाचकथमसतःसज्जायेत) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु ! यहनास्तिकोंकाकहणा कैसेसंभवैगा किंतु नहींसंभवैगा ॥ जिसकारणतैं असत्कारणतै सत्कार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भी होतीनहीं जोकदाचित् असत्तैंभी सत्कीउत्पत्तिहोतीहोवै तौ असत्वंध्यापुत्रतैंभी सत्पुत्रकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और होती नहीं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकूंप्रतिपादनकरणेहारे तेब्रह्मसूत्रपदरूपवचनहैं ॥ पुनःकैसेहैं तेब्रह्मसूत्रपदरूपवचन विनिश्चितहैं अर्थात् उपक्रम उपसंहारवाक्योंकीएकवाक्यताकरिकै संशयतैंरहितअर्थकेप्रतिपादकहैं ॥ इसप्रकारकेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्यों नैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपण कर्याहै ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषे ज्ञानकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा निरूपणकर्या ॥ इसप्रकार पूर्व वसिष्ठादिकऋषियोंनैं तथाऋगादिकवेदोंकेमंत्रोंनैं तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैं अत्यंतविस्तारतैंकथनकर्याजो क्षेत्रक्षेत्रज्ञका यथार्थस्वरूपहै तिसीस्वरूपकूं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेताईं संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर इति ॥ अथवा (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनविषे ब्रह्मसूत्रहोवैं तेहीपदहोवैं याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरणा ॥ तहां (आत्मेत्येवोपासीत) ॥ अर्थयह ॥ यह अधिकारीपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्मामैंहूं याप्रकारकाचिंतनकरै ॥ इत्यादिकवाक्यतौ विद्यासूत्र कहेजावैं हैं ॥ और (नसवेदयथापशुः) ॥ अर्थयह ॥ आपणेआत्मातैं देवताकूंभिन्नमानिकै जोपुरुष तादेवताकीउपासनाकरै है सोभेददर्शीपुरुष पशुकीन्याईं किंचित्मात्रभी जानतानहीं ॥ इत्यादिकवचनतौ अविद्यासूत्रकहेजावैं हैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनकरिकै (जन्माद्यस्ययतः) इत्यादिकवेदांतसूत्रोंकाग्रहणकर्याहैइति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपजानणेविषे अर्जुनकीरुचि उत्पन्नकरिकै अब श्रीभगवान् तिस अर्जुनकेताईं दोश्लोककरिकै प्रथम क्षेत्रकास्वरूप कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच ॥ इंद्रियाणिदशैकंचपंचचेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः ॥ एतत्क्षेत्रंसमासेनसविकारमुदाहृतम् ॥६॥ महाभूतानि । अहंकारः । बुद्धिः । अव्यक्तम् ।एव । च । इंद्रियाणि।दश। एकम् । च । पंच । च । इंद्रियगोचराः । इच्छा । द्वेषः । सुखम् । दुःखम् । संघातः । चेतना । धृतिः । एतत् । क्षेत्रम् । समासेन ।

जिसविस्तारकरिकैकथनकरेहुएअर्थका आप अबी संक्षेपकरिकैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिविषे तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषयप्रीतिकेउत्पन्नकरणेवासतै तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकीस्तुतिकरतेहुए कहैंहैं ।

(मू. श्लो.) ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैःपृथक् ॥ ब्रह्मसूत्रपदैश्चैवहेतुमद्भिर्विनिश्चितैः॥४॥ऋषिभिः । बहुधा । गीतम् । छंदोभिः । विविधैः । पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैः । च । एव । हेतुमद्भिः । विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियों नैं बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै तथाबहुतप्रकारके ऋगादिकवेदोंनैंभी भिन्नाभिन्नकरिकै कथनकऱ्याहै तैंथा युक्तियोंवाले तथानिश्चितअर्थवाले ऐसेब्रह्मसूत्रपदों नैं भी सोस्वरूप बहुतप्रकारतैंकथनकऱ्याहै ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! यहक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियों नैंभी योगशास्त्रविषे धारणाध्यानकाविषयरूपकरिकै बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे योगशास्त्रकारिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या ॥ तथा विविधछंदोंनैंभी सोस्वरूप पृथक्पृथक्करिकै निरूपणककऱ्याहै अर्थात नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेऋगादिकवेदोंके मंत्रहैं तथाब्राह्मणहैं तिन्होंनैंभी भिन्नभिन्नकरिकै सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे कर्मकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै॥ तहां ब्रह्म इसपदका सूत्र इसपदकेसाथि तथा पद इसपदकेसाथि अन्वयकरणेतैं ब्रह्मसूत्र ब्रह्मपद यहदोप्रकारकेवचन सिद्धहोवैं हैं ॥ तहां जिनवाक्यों नैं किंचित् मात्रव्यवधानकरिकैब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै जैसे (यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंतितद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जिसतैं यहसर्वभूत उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तथा उत्पन्नहुएतेसर्वभूत जिसकरिकै जीवते हैं ॥ तथा विनाशकूंप्राप्तहुएतेसर्वभूतजिसविषेलयप्रभावकूंप्राप्तहोवैंहैं सोईहीब्रह्महै इति ॥ इत्यादिक ब्रह्मकेतटस्थलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे जेउपनिषद्वाक्यहैं तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै ॥ और जिनवाक्योंनैं साक्षातही नाब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानामब्रह्मपदहै ॥ जैसे ब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म) इत्यादिक उपनिषद्वाक्यहैं ॥ ऐसे ब्रह्मसूत्ररूपवाक्यों नैं तथाब्रह्मपदरूपवाक्योंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैंनिरूपणकऱ्याहै कैसेहैं तेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्य हेतुमतहैं अर्थात् इष्ट अर्थकेसाधकअनेकयुक्तियोंकेप्रतिपादकहैं ॥ तेयुक्तियांयहहैं ॥ छांदोग्यउपनिषद्विषे उद्दालकऋषिनैंश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ (सदेवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतो ! यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्‌रूपहोताभया ॥ सोसत् एकअद्वितियरूपहोताभया

अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप तथाक्षेत्ररूप मैंपरमेश्वरकूंही तूं जान ॥ तहां क्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकी ब्रह्मरूपताविषेतौ पूर्वही श्रुतिरूपप्रमाण कथनकऱ्या है ॥ और क्षेत्रकीब्रह्मरूपताविषेतौ (ब्रह्मैवेदंसर्वं सर्वंखल्विदंब्रह्म) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै संक्षेपतैंकथनकरे हुएअर्थकूं अब विस्तारतैंकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्चयद्विकारियतश्चयत् ॥ सचयोयत्प्रभावश्चतत्समासेनमेशृणु ॥ ३ ॥ तत् । क्षेत्रम् । यत् । च । यादृक् । च । यद्विकारि । यतः । च । यत् । सः । च । यः । यत्प्रभावः । च । तत् । समासेन । मे । शृणु ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोशरीररूप क्षेत्र जिसस्वभाववालाहै तथा जिसइच्छादिकधर्मवालाहै तथा जिसइंद्रियादिकविकारोंवालाहै तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै तथा सोक्षेत्रज्ञ जिसस्वभाववालाहै तथा जिसप्रभाववालाहै सोक्षेत्रज्ञकास्वरूप मेरेवचननतैं तूं संक्षेपकरिकै श्रवणकर ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! (इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै कथनकऱ्याजो देह इंद्रिय अंतःकरण इत्यादिक जडवर्गरूपक्षेत्रहै सोक्षेत्र आपणेस्वरूपकरिकै जिस जड दृश्य परिच्छिन्नआदिकस्वभाववालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इच्छाद्वेषादिक धर्मोंवालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इंद्रियादिकविकारोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा (यतश्चयत्) इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ सोक्षेत्रजिसप्रकृतिपुरुषकेसंयोगतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा जिस स्थावरजंगमादिकभेदकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ इतनेकरिकैक्षेत्रकेस्वरूपका विचारकऱ्या ॥ अब क्षेत्रज्ञकेस्वरूपका विचार करैं हैं (सचइति) हेअर्जुन ! (एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञइतितद्विदः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्या जो क्षेत्रज्ञहै सोक्षेत्रज्ञभी आपणेस्वरूपतैं जिसस्वप्रकाशचैतन्यआनंदस्वभाववाला है ॥ तथा उपाधिकृत जिनशक्तिरूपप्रभावोंवालाहै इति ॥ तिनसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टक्षेत्रकेयथार्थस्वरूपकूं तथाक्षेत्रज्ञकेयथार्थस्वरूपकूंतूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचननतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर अर्थात् तिस क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं श्रवणकरिकै तूं निश्चयकर इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! पूर्वश्लोकविषे आपनैं यहवचन कह्याथा ॥ तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं तूं मेरेवचननतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर इति ॥ सोयहआपका कहणा तबी संभवै जबी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकऱ्याहोवै ॥ काहेतैं जोअर्थ पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकरीताहै सोअर्थही पश्चात् संक्षेपकरिकैकथनकऱ्याजावैहै ॥ पूर्व विस्तारतैंनहींकथनकरेहुएअर्थका संक्षेपकरिकैकथन संभवतानहीं सोइसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिन्हींनैं विस्तारकरिकैकथनकऱ्याहै ॥

जानणेकी मैंइच्छाकुरताहूं ॥ आपकृपाकरिकै सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ परंतु यहश्लोक श्रीभाष्यकारांतैंआदिलेक किसीभीटीकाकारनैं ग्रहणक
न्यानहीं यातैं यह जान्याजावैहै यहअर्जुनकेप्रश्नकाश्लोक पश्चात् किसीविद्वान्नैं पायाहै इसीकारणतैं इसत्रयोदशअध्यायकेप्रारंभविषे यहश्लोक हमन
लिख्यानहीं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार देहइंद्रियअंतःकरणादिरूपक्षेत्रतैंविलक्षण स्वप्रकाशक्षेत्रज्ञकूंकथनकरिकै अबतिसक्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकाजो
असंसारीपरमात्माकेसाथि एकतारूप पारमार्थिकस्वरूपहै तिसस्वरूपकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञम् । च । अपि । माम् । विद्धि । सर्वक्षेत्रेषु । भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । ज्ञानम् । यत् । तत् । ज्ञानम् । मतम् । मम ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभारत ! पुनः सर्वक्षेत्रोंविषेस्थित क्षेत्रज्ञकूं तूं मैंअद्वितीयब्रह्मरूप ही जान ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंका जो ज्ञान है सो ज्ञानही मैंपरमेश्वरकूं अभिमतहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभारत ! अर्थात् हेभरतराजाकेवंशविषेउत्पन्नहुआअर्जुन ! ॥ अथवा आत्माकारवृत्तिकानाम भाहै ताआत्माकारअखंडवृत्तिविषे जोसर्वदा रमण
करैहै अथवा ताअखंडवृत्तिविषे जो सर्वदा प्रीतिवालाहै ताकानाम भारतहै अर्थात् हेआत्मज्ञानविषेप्रीतिवालाअर्जुन ! पूर्वउक्त देहइंद्रियादिसंघातरूप सर्व
क्षेत्रोंविषे अधिष्ठानरूपकरिकैस्थित जोएकक्षेत्रज्ञहै जोक्षेत्रज्ञ स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै तथानित्यहै तथाविभुहै तथा अविद्याकरिकैआरोपितहैंकर्तृत्वभोक्तृ
त्वादिकधर्म जिसविषे ऐसेतिसक्षेत्रज्ञकूं तूं अर्जुन तिस अविद्याकल्पितरूपका परित्यागकरिकै मैंपरमेश्वररूप जान अर्थात् अंतःकरणादिकसर्वउपाधियों तैं
रहित तिसप्रत्यक्आत्मारूपक्षेत्रज्ञकूं तूं असंसारीअद्वितीयब्रह्मानंदरूप जान ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥) अर्थ
यह ॥ यहजीवात्माब्रह्मरूपहै ॥ तथा मैंब्रह्मरूपहूं ॥ तथा सोसतब्रह्म तूंहै ॥ तथा यहआनंदरूप प्रज्ञाननामाजीवात्मा ब्रह्मरूपहै इति ॥ हेअर्जुन ! इसपूर्वउक्त क्षेत्रका
तथाक्षेत्रज्ञका जोज्ञानहै अर्थात् मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं यहक्षेत्रतौ रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्यारूपहै ॥ और तिसक्षेत्ररूपभ्रमकाअधिष्ठानहोणेतैं यहक्षेत्रज्ञनामा
आत्मा परमार्थसत्यहै ॥ याप्रकारनैं जो तिसक्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका ज्ञानहै सोईहीज्ञान मोक्षकासाधनहोणेतैं मैंपरमेश्वरकूं ज्ञानतैंभिन्न दूसरेजितनेक लौकि
कवैदिकज्ञानहैं तेसर्वज्ञान ताअविद्याके विरोधीहैंनहीं ॥ यातैं तेसर्वज्ञान अज्ञानरूपकरिकैसंमतहै अर्थात् तिसीज्ञानकूं मैंपरमेश्वर अविद्याकाविरोधी प्रकाश
रूप मानताहूं ॥ इसप्रकारकेज्ञानरूपही हैं इति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ (क्षेत्रज्ञंचापि) इसवचनविषे जो चकारहै ताचकारकरिकै पूर्वउक्तक्षेत्रकाभी ग्रहणकऱ्या है ॥

वानूनैं जा भूमिआदिकअष्टप्रकारकीअपरानामाप्रकृति क्षेत्ररूपकरिकैसूचनकरीथी तथा जीवरूप पराप्रकृति क्षेत्रज्ञरूपकरिकैसूचनकरीथी तिसीक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूप दोनोंप्रकृतियोंकेस्वरूपकूं भिन्नभिन्नकरिकैनिरूपणकरतेहुए श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच॥इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ १ ॥ इदम् । शरीरम् । कौंतेय । क्षेत्रम् । इति । अभिधीयते । एतत् । यः । वेत्ति । तम् । प्राहुः । क्षेत्रज्ञम् । इति । तद्विदः ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

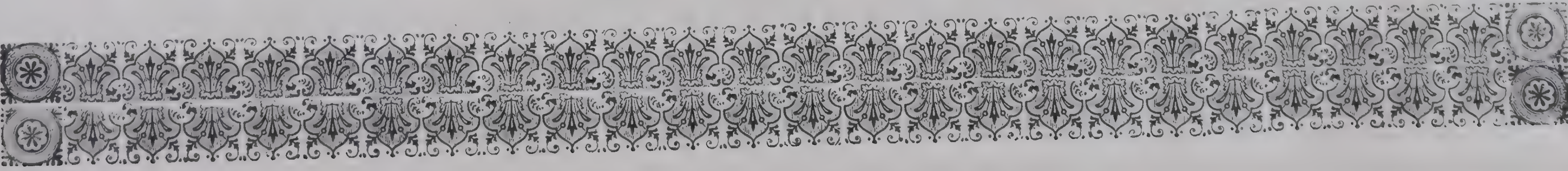
हेअर्जुन ! यह शरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै और इसक्षेत्रकूं जो जानैहै तिसकूं क्षेत्रकेजानणेहारेपुरुष क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेकौंतेय ! अर्थात् हेकुंतीमाताकेपुत्रअर्जुन ! श्रोत्रादिकइंद्रियोंसहित तथाचतुष्टयअंतःकरणसहित तथापंचप्राणोंसहित जोयह सुखदुःखकेभोगकाआयतनरूप शरीरहै सोशरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ अब क्षेत्रशब्दकाअर्थ निरूपणकरैं हैं ॥ तहांअविद्याकरिकै जो आत्मक्षयकरैहै तथाविद्याकरिकै आत्माकूं रक्षणकरैहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकैयुक्तपुरुष क्षयकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूं जन्ममरणादिकअर्थरूपक्षयतैं जोरक्षणकरैहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवासर्वकालविषे दीपशिखाकीन्याईं जोआप क्षयकूंप्राप्तहोता जावैहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा सुखदुःखादिरूपफलकीउत्पत्तिविषे जो लोकप्रसिद्धभूमिरूपक्षेत्रकीन्याईं आचरणकरैहै ताकानाम क्षेत्रहै इति ॥ ऐसे इसशरीररूपक्षेत्रकूं जो जानैहै अर्थात् इसशरीररूपक्षेत्रविषे जो अहंममअभिमानकरैहै तिसकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कृषीकरणेहारा कृषीवलपुरुष भूमिरूपक्षेत्रकेफलकाभोक्ताहोवैहै तैसे यहजीवात्माभी इससंघातरूप क्षेत्रकेसुखदुःखरूपफलका भोक्ताहोवैहै ॥ यातैं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ शंका—हे भगवन् ! इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कौन कथनकरैं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (तद्विदः इति) हेअर्जुन ! यहक्षेत्र असत्जडदुःखरूपहै ॥ और यहक्षेत्रज्ञआत्मा सत्चित्आनंदरूपहै ॥ इसप्रकारतैं इस क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेभेदकूं जानणेहारे जेविवेकीपुरुषहैं तेविवेकीपुरुषही इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञइसनामकरिकैकथनकरैं हैं इति ॥ इहांकिसीकमूलपुस्तकविषे (श्रीभगवानुवाच ॥ (इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसश्लोकतैंपूर्व अर्जुनकाप्रश्नरूप यहश्लोकहै (अर्जुनउवाच ॥ प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच ॥ एतद्वेदितुमिच्छामिज्ञानंज्ञेयंचकेशव) अर्थयह ॥ हेकेशव ! प्रकृतिक्याहै तथापुरुषक्याहै तथाक्षेत्रक्याहै तथाक्षेत्रज्ञक्याहै तथाज्ञानक्याहै तथाज्ञेयक्याहै ॥ इससर्वअर्थके

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व प्रथमअध्यायतैंलेके षष्ठअध्यायपर्यंत प्रथमषट्कविषे त्वंपदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और सप्तमअध्यायतैंलेके द्वादशअध्यायपर्यंत द्वितीयषट्कविषे तत्पदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिन शोधित तत्त्वंपदार्थकाअभेदरूप महावाक्यकेअर्थकूं कथनकरणेहारा तथातत्त्वज्ञानहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो त्रयोदशअध्यायतैंआदिलेकेअष्टादशअध्यायपर्यंत तृतीयषट्कहे तिसतृतीयषट्ककाआरंभकहैं हैं ॥ तहांपूर्व द्वादशअध्यायविषे (तेषामहंसमुद्धर्ता मृत्युसंसारसागराद्भवामि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे अधिकारीजनोंका मृत्युसंसारसागरतैंउद्धारकर्त्तापणा कथनकऱ्याथा ॥ सो आत्मविषयकअज्ञानरूपमृत्युतैं इनअधिकारीजनोंकाउद्धरण आत्माकेज्ञानतैंविना संभवतानहीं किंतु (तरतिशोकमात्मवित् ॥ तरत्यविद्यांविततांहृदियस्मिन्निवेशिते) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन आत्माकेज्ञानतैंही अविद्यारूपअज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरैं हैं ॥ यातैं जिसप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै तिसमृत्युसंसारकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथा जिसतत्त्वज्ञानकरिकैयुक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुणोंवालेसंन्यासी पूर्वद्वादशअध्यायविषेवर्णनकरेथे ॥ सो आत्मतत्त्वज्ञान अबी अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ और सोतत्त्वज्ञान अद्वितीयपरमात्माकेसाथि जीवात्माकेअभेदकूंहीविषयकरै हैं ॥ काहेतैं जन्ममरणतैंआदिलेकेजितनेकअनर्थहैं तिनसर्वअनर्थोंका जीवब्रह्मकाभेदभ्रमही कारणहै तहांश्रुति ॥ (मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतभावकूंदेखै है सोपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवै है इति ॥ ऐसेभेदभ्रमकीनिवृत्ति जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंविनाहोवैनहीं किंतु जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेयहशंकाहोवै है ॥ मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंकर्ताहूं मैंभोक्ताहूं इसप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणियोंविषेहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातौ सुखदुःखादिरूपसंसारवालेहैं तथा शरीरशरीरविषे भिन्नभिन्नहैं ॥ जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहीआत्माहोवै तौ एकशरीरविषेसुखदुःखकेअनुभवहुए सर्वशरीरोंविषे तासुखदुःखकाअनुभव होणाचाहिये सोहोतानहीं ॥ यातैं शरीरशरीरविषे आत्मा भिन्नभिन्नहैं ॥ और परमात्मादेवतौ तासुखदुःखादिरूपसंसारतैंरहितहै तथा एकहै ॥ ऐसेअनेकसंसारीजीवोंका एकअसंसारीपरमात्माकेसाथिअभेद संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए सो सुखदुःखादिरूपसंसार तथाभिन्नपणा अविद्याकल्पितअनात्मवस्तुकेही धर्महैं ॥ जीवात्माका संसारीपणा तथाभिन्नपणा धर्महैनहीं याप्रकारकाविवेचन अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ तिसविवेचनकेअर्थ देह इंद्रिय अंतःकरण प्राण इत्यादिरूपक्षेत्रोंतैं भिन्नकरिकै क्षेत्रज्ञनामाजीवात्मापुरुष तिनसर्वक्षेत्रोंविषेएकहीहै तथानिर्विकारहै इसअर्थकेप्रतिपादनकरणेवास्तै इसत्रयोदशअध्यायविषे क्षेत्रक्षेत्रज्ञका विवेचनकरैं हैं ॥ तहांपूर्व सप्तमअध्यायविषे श्रीभग

यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त सोपाधिकसगुणब्रह्मकेध्यानकीपरिपक्वतातैं अनंतर निरुपाधिकनिर्गुणब्रह्मकाचिंतनकरणेहारा तथाअद्वेष्टृत्वादिकधर्मोंकरिकै युक्त तथानिरंतर श्रवणमननिदिध्यासनकूंकरताहुआ ऐसाजो उत्तमअधिकारीपुरुषहै तिसउत्तमअधिकारीपुरुषकूं वेदांतवाक्योंकेअर्थका तत्त्वसाक्षात्कार अवश्यकरिकैहोवैहै तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैं ताअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकै मुक्तिकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं मुक्तिकाहेतुरूप जो वेदांतमहावाक्योंकाअर्थहै तिसअर्थकेअन्वययोग्यजो तत्पदार्थरूप परमेश्वरहै सोतत्पदार्थरूपपरमेश्वर इनअधिकारीजनों नैं अवश्यकरिकै चिंतनकरणा ॥ यहअर्थ उपासनाकाण्डरूप इसमध्यकेषट्ककरिकैसिद्धभया इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामीचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥ उपासनाकांडंद्वितीयंतत्पदार्थप्रतिपादनंसमाप्तम् ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ ॥ छ ॥

इति द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥



अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके तेभगवत्उक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुण विनाहीप्रयत्नतैं स्वभावतैंहीसिद्धहोवैंहैं ॥ जैसे मुमुक्षुजनविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैंहैं तथासाधनरूपहोवैं हैं तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैं नहीं तथासाधनरूपभीहोवैंनहीं इति ॥ यहही अद्वेष्टृत्वादिकधर्म पूर्वकथनकरेहुए स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणरूपकरिकैकथन करेहैं तेही यहअद्वेष्टृत्वादिक प्रयत्नकरिकैसंपादनकरेहुए मुमुक्षुजनके मोक्षकासाधनरूपकहोवैं हैं ॥ इसअर्थकूं प्रतिपादनकरतेहुए श्रीभगवान् इसद्वादश अध्यायकीसमाप्ति करैं हैं ।

(मू. श्लो.) येतुधर्मामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते ॥ श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्तेतीवमेप्रियाः ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेभक्तियोगोनामद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥ ये । तु । धर्मामृतम् । इदम् । यथा । उक्तम् । पर्युपासते । श्रद्दधानाः । मत्परमाः । भक्ताः । ते । अतीव । मे । प्रियाः ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन । पुनः जेमुमुक्षुजन श्रद्धावान्हुए तथामैंपरमेश्वरपरायणहुए इस पूर्व उक्त धर्मरूप अमृतकूं संपादनकरैं हैं तेमुमुक्षु भक्तजनभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरेहुएजीवन्मुक्तपुरुषोंतैंविलक्षणजे मोक्षकीइच्छावान्संन्यासी श्रद्धावान्हुए अर्थात् यहअद्वेष्टृत्वादिकधर्मही मुक्तिकेसाधनहैं याप्रकारकी विश्वासरूपश्रद्धाकरिकै युक्तहुए ॥ तथा जेमुमुक्षुजन मत्परमहुए अर्थात् मैं अक्षरनिर्गुणब्रह्महीहूं परम क्या प्राप्तहोणेयोग्यनिरतिशय गति जिन्होंकूं ऐसेमत्परमहुए इसपूर्वउक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरैं हैं अर्थात् मोक्षरूपअमृतकेसाधनहोणेतैं अमृतरूप अथवा अमृतकीन्याई आस्वादनकरणेयोग्यहोणेतैं अमृतरूप ऐसेजे (अद्वेष्टासर्वभूतानाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकरेहुए अद्वेष्टृत्वादिकधर्महैं तिसधर्मरूपअमृतकूं जेमुमुक्षुजन प्रयत्नतैं संपादन करैं हैं तेभक्तजन अर्थात् मैंनिरुपाधिकब्रह्मकूंभजनकरणेहारेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहैं ॥ यहश्रीभगवान्कावचन (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैसूचनकरेहुएअर्थका उपसंहाररूपहै ॥ यातैं इसश्लोकका यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसकारणतैं इस अद्वेष्टृत्वादिकधर्मरूपअमृतकूं श्रद्धाकरिकैसंपादनकरताहुआ यह अधिकारीपुरुष परमेश्वरका अत्यंतप्रियहोवैहै तिसकारणतैं ज्ञानवान्पुरुषके स्वभावसिद्धहोणेतैं लक्षणरूपहुएभी यह अद्वेष्टृत्वादिकधर्म तत्त्वकेजानणेकीइच्छावान् तथाविष्णुकेपरमपदकेप्राप्तिकीइच्छावान् ऐसेमुमुक्षुजननैं आत्मज्ञानकाउपायरूपकरिकैअत्यंतप्रयत्नतैंसंपादनकरणे इति ॥

॥ और किसीकेगुणोंकाकथनकरणा याकानाम स्तुतिहै ॥ ऐसी निंदा तथास्तुति दोनों
टीका। हे अर्जुन ! किसीकेदोषोंका कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ तथाआपणीनिंदाकूंश्रवणकरिकैदुःखीहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष आपणीस्तुति
तुल्यहैंजिसकूं अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष आपणीस्तुतिकूंश्रवणकरिकैसुखीहोवैहै अर्थात् जिसपुरुषनैं आपणेवाक्इंद्रियकानिरोधकऱ्याहै ॥ शंका—हे भगवन् ! आपणेशरीर
निंदाकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष मौनीहै अर्थात् जिसपुरुषनैं आपणेवाक्इंद्रियकानिरोधकऱ्याहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैंहैं (संतुष्टोयेनकेन
यात्राकेनिर्वाहवास्तै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी वाक्इंद्रियकाव्यापार अवश्यकरिकैअपेक्षितहोवैगा ॥ तिनजिसीकिसीप्रकारकेअन्न
नचितइति) हे अर्जुन ! आपणेप्रयत्नतैंविनाही बलवान् प्रारब्धकर्मनैं प्राप्तकरेजे शरीरकीस्थितिकेहेतुरूप अन्नवस्त्रादिकपदार्थ हैं अर्थात् नियमपूर्वक एकस्थानविषे
वस्त्रादिकपदार्थोंकरिकैही जोपुरुष संतुष्टहै अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष अनिकेतहै अर्थात् नियमपूर्वक एकस्थानविषे
निवासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष स्थिरमतिहै ॥ तहां स्थिरहै क्या परमार्थसत्यवस्तुविषयकहै मति क्या बुद्धिकीवृत्ति जिसकी ताकानाम स्थिरमतिहै ॥ इस
प्रकारकाजोभक्तिमान्पुरुषहै सोभक्तिमान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ तहां शास्त्रविषे निर्गुणब्रह्मकेभक्तिका यहलक्षणकथन
करयाहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकांतभक्तिर्गोविंदे यत्सर्वत्रतदीक्षणम् ॥ अहैतुक्यव्यवहितायाभक्तिः पुरुषोत्तमे ॥ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्यह्युदाहृतम्) ॥
॥ अर्थयह ॥ सर्वप्रपंचविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै जोपरमात्मादेवकादर्शनहै यहही तापरमात्मादेवविषे एकांतभक्तिहै अर्थात् अनन्यभक्तिहै ॥ और
विपरीतभावनाकीनिवृत्तिआदिकप्रयोजनतैंरहित तथाविजातीयवृत्तिकेव्यवधानतैंरहित ऐसी जा ब्रह्मवेत्तापुरुषोंकी प्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेवविषे अखंडाकारवृत्ति
रूपभक्तिहै ॥ यहही विद्वान्पुरुषों नैं निर्गुणब्रह्मविषयकभक्तिकास्वरूप कथनकरयाहै इति ॥ इसप्रकारकीभक्तिवाला ब्रह्मवेत्तापुरुषही इहां श्रीभगवान्नैं भक्तिमान्
इसशब्दकरिकै तथा भक्त इसशब्दकरिकै कथनकरयाहै ॥ और इहां श्रीभगवान्नैं जोपुनःपुनः भक्तिकाकथनकरयाहै सोपरमेश्वरकीअनन्यभक्तिही मोक्षकी
प्राप्तिविषेपुष्कलकारणहै इसअर्थकेदृढकरावणेवास्तै कथनकरयाहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥
तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै तथा जैसे परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै
तैसेहीब्रह्मवेत्तागुरुविषे अनन्यभक्तिहै तिस महात्मापुरुषकूंही यहवेदकरिकैप्रतिपादितअर्थ प्रकाशमानहोवैं हैं ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां (अद्वेष्टासर्व
भूतानाम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै निर्गुणअक्षरब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासियों के लक्षणरूप तथास्वभावतैंहीसिद्ध अद्वेष्टृत्वादिकधर्म कथन
करे ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्य नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्पन्नात्मावबोधस्यह्यद्वेष्टृत्वादयोगुणाः ॥ अयत्नतोभवंत्येवनतुसाधनरूपिणः)

तथा जोपुरुष इष्टवस्तुकेसंयोगकी तथा अनिष्टवस्तुकेवियोगकी इच्छाकरतानहीं ॥ अब (सर्वारंभपरित्यागी) इसपूर्वउक्तविशेषणकावर्णनकरैं हैं (शुभाशुभ परित्यागीइति) हे अर्जुन ! सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशुभकर्म हैं तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेअशुभकर्म हैं तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका परित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसा मैंपरमेश्वरकी भक्तिवाला जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) समःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुसमःसंगविवर्जितः ॥ १८ ॥ समः । शत्रौ । च । मित्रे । च । तथा । मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । समः । संगविवर्जितः ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः जोपुरुष शत्रुविषे तथा मित्रविषे समानहै तथा मान अपमानदोनोंविषे समानहै तथा शीतउष्णसुखदुःखइनसर्वोंविषे समानहै तथासंग तैं रहितहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसलोकविषे जोप्राणी किसीकाअपकारकरै है ताकूं शत्रुकहैं हैं ॥ और जोप्राणी किसीकाउपकारकरै है ताकूं मित्रकहैं हैं ॥ ऐसे अपकारकरणेहारेशत्रुविषे तथाउपकारकरणेहारेमित्रविषे जोपुरुष समहै अर्थात् आपणे पापपुण्यरूपप्रारब्धकर्म केवशतैंही इसदेहका कोईप्राणी अपकारकर्त्ता चशत्रुहोवैहै तथाकोईप्राणी उपकारकर्त्ता मित्रहोवैहै याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै जोपुरुष तिसशत्रुविषे तथामित्रविषे समदृष्टिहीहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष सुहृद्पुरुषोंनैंकरेहुए पूजनरूपमानविषे तथादुष्टपुरुषोंनैं करेहुए तिरस्काररूपअपमानविषे समहै अर्थात् तामान अपमानकृत हर्षविषादरूपविकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा प्रारब्धकर्म केवशतैंप्राप्तहुए जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्म हैं तिनशीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंविषेभी जोपुरुष समानहै ॥ तथा जोपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् इसलोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध तथाअचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेक पदार्थ हैं तिनसर्वपदार्थों के यहपदार्थ अत्यंतरमणीकहै याप्रकारकेशोभनअध्यासतैं रहितहै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित् ॥ अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः ॥ १९ ॥ तुल्यनिंदास्तुतिः । मौनी । संतुष्टः । येन । केनचित् । अनिकेतः । स्थिरमतिः । भक्तिमान् । मे । प्रियः । नरः ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तुल्य है निंदास्तुतिजिसकूं तथाजोपुरुष मौनवालाहै तथा जिस किसैअन्नवस्त्रादिकोंकरिकै संतुष्टहै तथागृहतैंरहितहै तथास्थिरहैमतिजिसकी ऐसा भक्तिमान् पुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

(मू. श्लो.) अनपेक्षःशुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १६ ॥ अनपेक्षः । शुचिः । दक्षः । उदासीनः । गतव्यथः । सर्वारंभपरित्यागी । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जो पुरुष निरपेक्षहै तथाशुचिहै तथादक्षहै तथाउदासीनहै तथागतव्यथहै तथासर्वआरंभपरित्यागकरेहैंजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सो भक्त मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष अनपेक्षहै अर्थात् विनाहीप्रयत्ननैं यदृच्छामात्रकरिकै प्राप्तहुएभी जेभोगकेसाधनहैं तिनसर्वभोगकेसाधनोंविषे जोपुरुष निस्पृहहै ॥ तथा जोपुरुष शुचिहै अर्थात् बाह्यअंतर दोप्रकारकेशौचकरिकैयुक्तहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकाप्रक्षालनकरणा याकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै अंतःकरणकूंरागद्वेषादिकोंतैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष दक्षहै अर्थात् अवश्यकरिकेजानणेयोग्य तथा अवश्यकरिकैकरणेयोग्य ऐसेअर्थोंकेप्राप्तहुए जोपुरुष तिसतिसअर्थके जानणेकूं तथाकरणेकूंसमर्थहै ॥ तथा जोपुरुष उदासीनहै अर्थात् जोपुरुष किसीभी मित्रादिकोंकेपक्षकूंग्रहणकरतानहीं ॥ तथा जोपुरुष गतव्यथहै अर्थात् किसीदुष्टपुरुषोंनैं ताडनकियेहुएभी नहींउत्पन्नहुईहैपीडारूपव्यथा जिसकूं ॥ तथा जोपुरुष सर्वारंभपरित्यागी है ॥ तहां इसलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे तथापरलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेक लौकिकवैदिककर्म हैं तिनकर्मोंकानाम सर्वारंभहै ऐसेसर्वारंभोंकूंपरित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजोपरमहंससंन्यासी है ताकानाम सर्वारंभपरित्यागी है ॥ इसप्रकारका जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) योनहृष्यतिनद्वेष्टिनशोचतिनकांक्षति ॥ शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः ॥ १७ ॥ यः । न । हृष्यति । न । द्वेष्टि । न । शोचति । न । कांक्षति । शुभाशुभपरित्यागी । भक्तिमान् । यः । सः । मे । प्रियः ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! जोपुरुष नहीं हर्षकरै है नहीं द्वेषकरै है तथानहीं शोककरै है तथानहीं इच्छाकरै है तथा शुभ अशुभकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै जिसनैं ऐसाजो भक्तिमान्पुरुषहै सोपुरुष परमेश्वरकूं प्रिय है ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां पूर्व त्रयोदशश्लोकविषे (समदुःखसुखः) यहविशेषणकथनकऱ्याथा तिसविशेषणकाही अब विस्तारतैंवर्णनकरै हैं ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथाअप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए जोपुरुष द्वेषकूंप्राप्तहोतानहीं तथा प्राप्तप्रियवस्तुकेवियोगहुए जोपुरुष शोककूंकरतानहीं ॥

पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ याप्रकारका अर्थ अगलेश्लोकोंविषेभी जानलेणा इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ अब पुनः भी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके विशेषणोंकूं निरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः ॥ हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः ॥ १५ ॥ यस्मात् । न । उद्विजते । लोकः । लोकात् । न । उद्विजते । च । यः । हर्षामर्षभयोद्वेगैः । मुक्तः । यः । सः । च । मे । प्रियः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसपुरुषतैं यहलोक नहीं संतापकूंप्राप्तहोवै है तथा जोपुरुष तिसलोकतैं नहीं संतापकूंप्राप्तहोवै है तथा जोपुरुष हर्षअमर्षभयउद्वेगइनच्यारोंनैं परित्यागकऱ्याहै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रिय है ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वप्राणियोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारे जिसपरमहंससंन्यासीतैं कोईभीप्राणी संतापकूंप्राप्तहोवैनहीं अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष किसीभीप्राणीकूं शरीरमनवाणीकरिकै पीडाकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तथा विनाही अपराधतैं संतापकीप्राप्तिकरणेहारे जे दुष्टप्राणी हैं ऐसेदुष्टप्राणीरूपलोकतैं जोपुरुष संतापकूंप्राप्तहोतानहीं जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वत्र अद्वैतआत्मदर्शीहै तथापरमकारुणिकहोणेतैंक्षमास्वभाववालाहै ॥ तथा जोपुरुष हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इन चारोंनैं परित्यागकऱ्याहै ॥ तहां इष्टवस्तुकेलाभहुए जो रोमांचअश्रुपातादिकोंकाहेतुरूप तथाआनंदकाअभिव्यंजक चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानामहर्ष है ॥ और दूसरेकीउत्कृष्टताकाअसहनरूपजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम अमर्षहै ॥ और व्याघ्र चौर शत्रु इत्यादिकअनिष्टवस्तुवोंकेदर्शनजन्य जा त्रासरूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम भयहै ॥ और जनोंतैंरहितएकांतस्थानविषे सर्वपरिग्रहतैंशून्य एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवौंगा इसप्रकारकी व्याकुलतारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम उद्वेगहै ॥ ऐसे हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनच्यारोंनैं जोपुरुष परित्यागकऱ्याहै अर्थात् सोब्रह्मवेत्तापुरुष अद्वैतदर्शीहोणेतैं तिनहर्षादिकोंकेयोग्यहैनहीं ॥ यातैं तिनहर्षादिकोंनैं आपेही सोतत्त्ववेत्तापुरुष परित्यागकरदिया है ॥ कोई सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनहर्षादिकोंकेत्यागवासतै आप व्यापारवालाहुआनहीं ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (यथापर्वतमादीप्तंनाश्रयंतिमृगद्विजाः ॥ तद्वद्ब्रह्मविदोदोषानाश्रयंतेकदाचन ॥ १ ॥ मंत्रौषधबलैर्यद्वज्जीर्यतेभक्षितंविषम् । तद्वत्सर्वाणिकर्माणिजीर्यंतेज्ञानिनःक्षणात् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्निकरिकैदग्धहुएपर्वतकूं मृगादिकपशु तथापक्षी आश्रयण करतानहीं तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं रागद्वेषादिकदोष आश्रयणकरतानहीं ॥ १ ॥ और जैसे भक्षणकऱ्याहुआविष मंत्रऔषधिकेबलकरिकैजीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावै है तैसे ज्ञानवान्पुरुषके पुण्यपापरूपसर्वकर्मएकक्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ २ ॥ इसप्रकारकेगुणोंवाला जो मैंपरमेश्वरका भक्तहै सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ किंच ।

द्वेषहोवैहै ताप्रतिकूलबुद्धितैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ ताप्रतिकूलबुद्धिकेअभावहुए सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंका द्वेषकरताहोवैनहीं किंतु सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहीहोवैहै अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे स्नेहवालाहीहोवैहै ।। अबतामैत्रीभावविषे हेतुकहैं हैं ।। (करुणःइति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष करुणावालाहै इसकारणतैंसोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहै ।। तहां दुःखीप्राणियोंविषे जोदयाकरणीहै ताकानाम करुणाहै ॥ ऐसी करुणावाले पुरुषका नाम करुणहै अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वभूतोंकेताईं अभयदानदेणेहारा परमहंससंन्यासीहै ॥ तथा सोतत्त्ववेत्तापुरुष निर्ममहै अर्थात् आपणेदेहविषेभी यहदेह हमाराहै याप्रकारकीममताबुद्धितैंरहितहै ।। तथा सोपुरुष निरहंकारहै अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष श्रेष्ठआचारकरिकै तथावेदविद्यादिकों करिकै अहंकारकूंप्राप्तहोवैहै तैसे सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिन श्रेष्ठआचार विद्यादिकोंकरिकै अहंकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा द्वेष राग इनदोनों तैंरहितहोणेतैं समहै दुःखसुखदोनोंजिसकूं इसीकारणतैंही सोतत्त्ववेत्तापुरुष क्षमावालाहै अर्थात् ताडनादिकोंकरिकैभी विक्रियाकूंप्राप्तहोतानहीं इति ।। १३ ।। ❀ ।। अब पूर्वश्लोकविषेकथनकरेहुए निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषके अन्यभीविशेषणाकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) संतुष्टःसततंयोगीयतात्मादृढनिश्चयः ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १४ ॥ संतुष्टः । सततम् । योगी । यतात्मा । दृढनिश्चयः । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जो पुरुष सर्वदा संतुष्टहै तथासमाहितचित्तवालाहै तथावशकऱ्याहैसंघातजिसनैं तथादृढहै निश्चयजिसका तथामैंपरमेश्वरविषे अर्पण करेहैं मनबुद्धिजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सोभक्त मैंपरमेश्वरकूं प्रियहैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष सर्वकालविषे संतुष्टहै अर्थात् शरीरकीस्थितिकेकारणरूप जेअन्नवस्त्रादिकपदार्थ हैं तिनअन्नादिकपदार्थोंकी प्राप्तिविषे अथवा अप्राप्तिविषे जोपुरुष संतोषवालाहै ॥ इहां (सततम्) इसपदका सर्वविशेषणोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ तथा जोपुरुष सर्वदा योगीहै अर्थात् सर्वकालविषे जोपुरुष समाहितचित्तवालाहै ॥ तथा जोपुरुष यतात्माहै अर्थात् आपणेवशकऱ्याहैशरीरइंद्रियादिरूपसंघात जिसनैं ॥ तथा जोपुरुष दृढनिश्चयहै ॥ तहां दृढहै क्या कुतार्किकपुरुषोंनैं अभिभवकरणेकूंअशक्यहोणेतैंस्थिरहै निश्चय क्या अकर्ताअभोक्तासच्चिदानंदअद्वितीयब्रह्ममैंहूं याप्रकारकाज्ञान जिसका ताकानाम दृढनिश्चयहै अर्थात् स्थितप्रज्ञपुरुषकानाम दृढनिश्चयहै ॥ तथा मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषे समर्पणकऱ्याहै संकल्पविकल्पात्मकमन तथा निश्चयात्मकबुद्धि जिसनैं ॥ इसप्रकारका जोहमारा भक्तहै अर्थात् सर्वउपाधितैंरहित शुद्धअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जानणेहारा जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै सोब्रह्मवेत्ता

सूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥) अर्थयह ॥ इसअधिकारीजनकूं ईश्वरके चिंतनरूपईश्वरप्रणिधानतैं समाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसईश्वरकेप्रणिधानतैंही इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा विघ्नरूपअंतरायोंका अभावहोवैहै इति ॥ यातैं पूर्व (क्लेशोधिकतरस्तेषाम्) इत्यादिकवचनोंकारिकै जो निर्गुणब्रह्मकेउपासनाकी निंदाकरीथी सोनिंदा सगुणब्रह्मकीउपासनाकेस्तुतिवासतेकरीथी ॥ कोई निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीथी ॥ जैसे उदितहोमकेविधानविषे जो अनुदितहोमकी निंदाकरीहै सानिंदा तिस उदितहोमकीस्तुतिवासतेही करीहै ॥ कोई अनुदितहोमकेनिषेधकरणेवासते सानिंदा नहींकरीहै ॥ तहां सूर्यकेउदयहुए जोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं उदितहोम कहैं हैं ॥ और सूर्यकेउदयहुएतैंप्रथमजोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं अनुदितहोमकहैं हैं ॥ तैसे सगुणउपासनाकेविधानविषे जोनिर्गुणउपासनाकीनिंदाकरीहै सानिंदाभी तिससगुणउपासनाकी स्तुतिवासतैहै ॥ कोई निर्गुणउपासनाकेनिषेधवासतै सानिंदानहीं है ॥ काहेतें शास्त्रकारोंनें यहन्याय कह्याहै ॥ (नहिनिंदानिंद्यंनिंदितुंप्रवर्त्ततेऽपितुविधेयंस्तोतुम्) अर्थयह ॥ शास्त्रविषेजोनिंदावचनहोवैं हैं तेनिंदावचन तिसनिंद्यवस्तुकेनिंदनकरणेवासतै प्रवृत्तनहींहोवैं हैं किंतु प्रसंगविषेप्राप्त विधेय अर्थकेस्तुतिकरणेवासतै तेनिंदावचन प्रवृत्तहोवैं हैं इति ॥ यातैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासकही वास्तवतैं योगवित्तमहैं ॥ ऐसे निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषही श्रीभगवान्नैं (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः । उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै पुनःपुनः श्रेष्ठतारूपकरिकै कथनकरे हैं ॥ हे अर्जुन ! तुमनैंभी अधिकारकूंसंपादनकरिकै तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकाही ज्ञान तथासर्वधर्म अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकेप्रति बोधकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथाता अर्जुनकेपरम हितकीइच्छा करताहुआ श्रीकृष्णभगवान् सप्तश्लोकोंकारिकै तिन अभेददर्शनवाले तथाकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहुए निर्गुणब्रह्मकेउपासकोंकी स्तुतिकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच ॥ निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १३ ॥ अद्वेष्टा । सर्वभूतानाम् । मैत्रः । करुणः । एव । च । निर्ममः । निरहंकारः । समदुःखसुखः । क्षमी ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष सर्वभूतोंका अद्वेष्टाहै तथामैत्रीवाला ही है तथा करुणावालाहै तथा निर्ममहै तथा निरहंकारहै तथासमहैदुःखसुखजिसकूं तथाक्षमावालाहै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सोनिर्गुणकेब्रह्मवेत्तापुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकै देखै है ॥ यातैं जोपदार्थ आपणेदुःखकाभीहेतुहै तिसपदार्थविषेभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी प्रतिकूलबुद्धिहोवैनहीं और जिसवस्तुविषे यहवस्तु हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकीप्रतिकूलबुद्धिहोवैहै तिसवस्तुविषेही

त्वसामान्यधर्मकूंलैके इदानींकाळकेब्राह्मणभी अपरिमितपराक्रमवताकरिकै स्तुतिकरेजावैं हैं ॥ तैसे सोकर्मकेफलत्यागभी कामत्यागकेफलकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै इति ॥ औ किसीटीकाविषेतौ (श्रेयोहिज्ञानमभ्यासात्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ निदिध्यासनरूपअभ्यासतैं श्रवणमननजन्यपरोक्ष ज्ञान श्रेष्ठहै ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैं विष्णुकेनामोंकाश्रवणकीर्तनरूपध्यान श्रेष्ठहै ॥ और तिसध्यानतैं कर्मोंकेफलकात्याग श्रेष्ठहै ॥ कैसाहैसोकर्मोंकेफलका त्याग जिसत्यागतैंउत्तर व्यवधानतैंबिनाही चित्तशुद्धिआदिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशांति प्राप्तहोवैहै ॥ इहां यद्यपि निदिध्यासनरूपअभ्यासकीअपेक्षाकरिकै सोपरोक्षज्ञान बाह्यसाधनहै ॥ और तापरोक्षज्ञानकीअपेक्षाकरिकै सोश्रवणकीर्त्तनादिरूपध्यान बाह्यसाधनहै ॥ और ताध्यानकीअपेक्षाकरिकै सोकर्मोंकेफलका त्याग बाह्यसाधनहै ॥ यातैं अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकहणी असंगतहै तथापि अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधन करणेकूं सुगमहोवैहै ॥ और सोपानक्रमकरिकै बाह्यसाधनकीप्राप्तिपूर्वकही अंतरसाधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनबाह्यसाधनोंविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्ति करावणेवासतै पूर्वपूर्वसाधनकीअपेक्षाकरिकै तिसतिसबाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकथनकरीहै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व मंदअधिकारीकेप्रति अतिदुष्कर होणेतैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासनाकीनिंदाकरिकै अतिसुगम सगुणब्रह्मकीउपासना विधानकरी ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेकरणेविषेभी जेपुरुष असमर्थ हैं तिनपुरुषोंके अशक्तिकीतारतम्यताकेअनुसार दूसरेभी अभ्यासादिकतीनसाधन श्रीभगवान्नैं विधानकरे ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेविधानकरणेविषे तथा अभ्यासादिकतीनसाधनोंकेकहणेविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्रायहै ॥ यहअधिकारीजन किसीभीप्रकारकरिकै सर्वप्रतिबंधकोंतैंरहितहोइकै तथाउत्तमअधि कारीहोइकै सर्वसाधनोंकाफलरूप निर्गुणब्रह्मविद्याविषे प्रवेशकरै इति ॥ काहेतैं साधनोंकाजोविधानहोवैहै सोफलकीप्राप्तिवासतैहीहोवैहै ॥ फलतैंविना साधनोंका विधान होवैनहीं ॥ यातैं इहां श्रीभगवान्नैं जो सगुणब्रह्मकीउपासना तथा अभ्यासादिकतीनसाधन विधानकरेहैं तेसर्वसाधन निर्गुणब्रह्मविद्यारूपफलकीप्राप्ति वासतैही विधानकरेहैं यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निर्विशेषंपरंब्रह्मसाक्षात्कर्तुमनीश्वराः ॥ येमंदास्तेऽनुकंप्यंतेसविशेषनि रूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतेमनस्येषांसगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ जेमंदअधिकारीजन निर्विशेषपर ब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेकूं समर्थ नहींहोवैंहैं तेमंदअधिकारीजन सगुणब्रह्मकेनिरूपणकरिकै अनुग्रहकेविषयकरीतेहैं अर्थात् श्रुतिभगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैं तिनमंदअधिकारीपुरुषोंकेऊपरि अनुग्रहकरिकै सगुणब्रह्मकानिरूपणकरीताहै इति ॥ १ ॥ तिससगुणब्रह्मकेध्यानतैं जबी तिनमंदअधिकारी पुरुषोंकामन वशहोवैहै तबी तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वउपाधियोंकीकल्पनातैंरहित तिसनिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै इति ॥ २ ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योग

इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! अभ्यासतैं ज्ञान ही श्रेष्ठहै ताज्ञानतैं ध्यान श्रेष्ठहै ताध्यानतैं कर्मोंकेफलका त्यागश्रेष्ठहै जिसंत्यागतैं अनंतर मोक्षरूपशांति होवैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! ज्ञानकीप्राप्तिवासतै कऱ्याजो श्रवणकाअभ्यासहै तिसअभ्यासतैं ज्ञानही श्रेष्ठहै अर्थात् श्रवणकरिकै तथामननकरिकै उत्पन्नभयाजो आत्मविषयक निश्चयरूपज्ञानहै जिसज्ञानकूंश्रवणज्ञान तथामननज्ञान कहैंहैं ॥ तथा जोज्ञान प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगत असंभावनाका निवर्त्तकहै ऐसाज्ञानतिसअभ्यासतैं श्रेष्ठहै ॥ और तिस श्रवणमननजन्यज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान व्यवधानतैं रहितहुआही आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ और सोश्रवणज्ञान तथामननज्ञान तानिदिध्यासनद्वारा आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ व्यवधानतैंरहितहुआ सोज्ञान आत्मसाक्षात्कारका हेतुहैनहीं ॥ यातैं तिसज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यानकीश्रेष्ठतायुक्तहै ॥ इसप्रकारतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान यद्यपि सर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठहै तथापि अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानीपुरुषकूं ताध्यानतैंभीश्रेष्ठहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसकर्मफलकेत्यागकी स्तुतिकरैंहैं (ध्यानात्कर्मफलत्यागइति) हेअर्जुन ! अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागहै सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानी पुरुषकूं तिसनिदिध्यासनरूपध्यानतैंभी श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं निगृहीतचित्तवालेपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै तिसत्यागतैं इसअधिकारीपुरुषकूंअज्ञानसहित सर्वसंसारका उपशमरूपशांति व्यवधानतैंविनाही प्राप्तहोवै है ॥ साशांति कालांतरकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (यदासर्वे प्रमुच्यंतेकामायेऽस्यहृदिस्थिताः ॥ अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥) अर्थयह ॥ इसजीवकेहृदयविषेस्थित जेकामहैं तेसर्वकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवैं हैं तिसीकालविषेही यहजीव अमृतहोवैहै तथाइसीदेहविषे ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं सर्वकर्मोंकेत्यागविषे मोक्षकासाधनपणाजान्याजावैहै ॥ और इसगीताशास्त्रविषेभी स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणोंविषे (प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगतान्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपही सर्वकर्मोंकेत्यागविषे मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि श्रुतिविषे तथास्थितप्रज्ञकेलक्षणोंविषे सर्वकर्मोंकेत्यागकूंही मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ कर्मोंकेफलकेत्यागकूं मोक्षकासाधनपणा कह्यानहीं तथापि तेकर्मकेफलभी कामरूपही हैं ॥ यातैं तिनकर्मोंकेफलोंकाजोत्यागहै सोत्यागभी कामकात्यागही है ॥ ताकामत्यागस्वरूप सामान्यधर्मकूंलेके श्रीभगवान्नैं ताकर्मफलकेत्यागकी कामत्यागके फलकरिकै स्तुतिकरी है ॥ जैसे पूर्व अगस्त्यब्राह्मण समुद्रकूंपानकरताभयाहै तथा परशुरामब्राह्मण इसपृथिवीकूं क्षत्रियराजावोंतैंरहितकरताभयाहै सोब्राह्मणपणाइदानींकालकेब्राह्मणोंविषेभी है ॥ यातैं ताब्राह्मण

मादिकम् ॥) इसशास्त्रकेवचनविषे विष्णुकेदोरूपकथनकरेहैं ॥ तहां संन्यासीतौ तिसविष्णुका चलरूपहै और सुवर्णादिकधातुमय तथापाषाणमय प्रतिमादिक
नाविष्णुका अचलरूपहै तासंन्यासीके अथवा विष्णुकीप्रतिमाके पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवैहै इति ॥ इसीश्रवणादिकनवप्रकारकेभजनकूं शास्त्रविषे भागवत
धर्म कहैहैं ॥ ऐसे भागवतधर्मनामा मत्कर्मोंकेकरणेविषे तूं तत्परहोउ ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तिनश्रवणकीर्त्तनादिक भागवतकर्मोंकूंभीकरताहु
आ तूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथा आत्माज्ञानकीप्राप्तिद्वारा निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपसिद्धिकूं प्राप्तहोवैगाइति ॥ १० ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुंमद्योगमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंततःकुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥ अथ । एतत् । अपि ।
अशक्तः । असि । कर्त्तुम् । मद्योगम् । आश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागम् । ततः । कुरु । यतात्मवान् ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अ
र्जुन ! जबी तूं इसपूर्वउक्तभागवतकर्मके भी करणेकूं अशक्त होवै तबी मैंपरमेश्वरकेयोगकूं आश्रयणकरताहुआ तथा यतात्मवान्
हुआ तूं सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! बाह्यविषयोंविषेप्रीतिमान् ऐसाजोचित्तहै ऐसेबहिर्मुखचित्तवालाहोणेतैं जबी तूं पूर्वश्लोकउक्त श्रवणकीर्त्तनादिकभागवतधर्मोंकूंभी संपाद
नकरणेविषेअसमर्थहोवै तबी तूं मद्योगकूंआश्रितहुआ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेशरणताकूंआश्रयणकरताहुआ अथवा मैंपरमेश्वरविषे जोसर्वकर्मोंकाअर्पणहै
ताकानाम मद्योगहै ऐसेमद्योगकूंआश्रयणकरताहुआ तथा यतात्मवान्हुआ इहां शब्दादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरे हैं श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियजिसनैं ताकानाम यतहै ॥
औरविवेकीकानाम आत्मवान्है ॥ यतहोवै सोईही आत्मवान्होवै ताकानामयतात्मवान्है अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेनिरोधवाले विवेकीपुरुषकानाम
यतात्मवान्है ॥ ऐसायतात्मवान्हुआ तूंअर्जुन उक्तपूर्व श्रौतस्मार्त्तरूपसर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर अर्थात् तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाका तूंपरित्यागकर इति ॥
॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व सगुणब्रह्मकीउपासना अभ्यासयोग भागवतधर्म कर्मकेफलकात्याग यहच्यारिसाधन अधिकारीकेभेदतैं विधानकरे तिनच्यारिसाधनोंके
मध्यविषे अंतमेंविधानकऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनहै तिसत्यागरूपसाधनविषेही पूर्वउक्तसाधनोंकेविधानका परिअवसानहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंके
फलकात्यागरूपसाधनविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् इससर्वकर्मोंके फलकात्यागरूपसाधनकीस्तुतिकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते ॥ ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥ १२ ॥ श्रेयः । हि ।
ज्ञानम् । अभ्यासात् । ज्ञानात् । ध्यानम् । विशिष्यते । ध्यानात् । कर्मफलत्यागः । त्यागात् । शांतिः । अनंतरम् ॥ १२ ॥

टीका । इहां श्लोकके आदिविषे स्थितजो अथ यहशब्दहै सोअथशब्द पूर्वउक्तपक्षकीअपेक्षाकरिकै दूसरेपक्षकेआरंभकाबोधकहै ॥ हेधनंजय ! जबीतूं मैंस गुणब्रह्मविषे जैसे चित्त स्थिरहोवै तैसे आपणेचित्तकूं स्थापनकरणेविषे अशक्तहोवै तबीतूं अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणेवासतै इच्छाकर अर्थात् प्रयत्नकर ॥ तहां सुवर्णादिकधातुमय अथवा पाषाणमय जेविष्णुशिवादिकोंकीप्रतिमाहैं तिन बाह्य प्रतिमादिकआलंबनविषे सर्वओरतैंनिवृत्तकरेहुएचित्त का जोपुनःपुनःस्थापनहै ताकानाम अभ्यासहै तिसअभ्यासपूर्वक जो समाधिरूपयोगहै ताकानाम अभ्यासयोगहै ॥ ऐसेअभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे वासतै तूंप्रयत्नकर ॥ इहां श्रीभगवाननैं (हेधनंजय) इससंबोधनकेकहणेकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ युधिष्ठिरराजाके राजसूययज्ञवासतै बहुतशत्रुवोंकूं जीतकरिकै तूं धनकूंलेआवताभयाहै ॥ यातैं तुम्हारा धनंजय यहनाम होताभयाहै ॥ ऐसा धनंजयनामवालातूं अर्जुन एकमनरूपशत्रुकूंजीतिकै तत्त्वज्ञानरूपधनकूं हरणकरैगा यहवार्त्ता तुम्हारेविषे कोईआश्चर्यरूप नहीं है इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमो भव॥मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥ अभ्यासे । अपि । असमर्थः । असि । मत्कर्मपरमः । भव । मदर्थम् । अपि । कर्माणि । कुर्वन् । सिद्धिम् । अवाप्स्यसि ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पूर्वउक्तअभ्यासविषे भी जबीतूं असमर्थ होवै तबीतूं भागवतकर्मपरायण होउं मैंपरमेश्वरअर्थ कर्मोंकूं भी करताहुआ तूं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैगा ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्याजोअभ्यासहै ताअभ्यासकेकरणेविषेभी जबीतूं असमर्थहोवै तबी तूं मत्कर्मपरम होउ ॥ तहां मैंपरमेश्वरकी प्रसन्नताअर्थ जेकर्महैं तिनकर्मोंकानाम मत्कर्म है तेभगवत्कीप्रसन्नता वासतै भजनरूपकर्म शास्त्रविषे नवप्रकारकेकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्तनंविष्णोः स्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुभगवानके रामकृष्णादिकनामोंकूंश्रवणकरणा ॥ १ ॥ तथा ताविष्णु केनामोंकूं आपणेमुखकरिकैकथनकरणा ॥ २ ॥ तथा आपणेमनकरिकै ताविष्णुका सर्वदा स्मरणकरणा ॥ ३ ॥ तथाताविष्णुकेपादोंकासेवनकरणा ॥ ४ ॥ तथा चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप इत्यादिकपदार्थोंकरिकै ताविष्णुका अर्चनकरणा ॥ ५ ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकै ताविष्णुकेताईं नमस्काररूपवंदनकरणा ॥ ६ ॥ तथा ताविष्णुका दासभावकरणा ॥ ७ ॥ तथा ताविष्णुका सखाभावकरणा ॥ ८ ॥ तथा ताविष्णुकेताईं आपणेशरीररूपआत्माका अर्पणकरणा ॥ ९ ॥ इहां यद्यपि सर्वत्रव्यापकविष्णुके साक्षात् पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवतानहीं तथापि (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रति

मनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेही स्थिरकर तथाआपणेबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेही स्थिरकर ताकरिके इसदेहपाततें अनन्तर तूं मैंशुद्ध ब्रह्मविषे ही अभेदरूपतें निवासकरैगा याकेविषे कोईसंशय तुमनैं नहींकरणा ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तूं आपणे संकल्पविकल्परूपमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेही स्थिरकर अर्थात् तामनकेसर्ववृत्तियोंकूं मैंसगुणपरमेश्वरविषयक कर ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेशब्दादिकविषयोंकूं तामनकेवृत्तियोंकाविषयनहींकर तथा आपणी निश्चयरूपबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेही स्थिरकर अर्थात् ताबुद्धिकी सर्ववृत्तियां मैंसगुणब्रह्मविषयकहीकर ॥ तात्पर्ययह ।। दूसरेसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै तूं सर्वकालविषे मैंसगुणब्रह्मकूंही चिंतनकर ॥ शंका—हेभगवन् ! इस प्रकारतें आपसगुण ब्रह्मकेचिंतनकरणेतें हमारेकूं कौनफल प्राप्तहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताचिंतनकरणेकाफल कथनकरैंहैं ॥ (निवसिष्यसिइति) हे अर्जुन ! इसप्रकारतें जबी तूं निरंतर मैंसगुणब्रह्मकाचिंतनकरैगा तबी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं इसदेहकेपाततैंअनंतर मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकै निवासकरैगा ॥ इसप्रकारके सगुणब्रह्मकीउपासनाकेमोक्षरूपफलविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा अर्थात् तासगुणब्रह्मकेउपासककूं तिसमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषेतुमनैंकिंचित्मात्रभी प्रतिबंधककीशंका नहींकरणी ॥ इहां यद्यपि (एवअतऊर्ध्वम्) इसवचनविषे (एवातऊर्ध्वम्) इसप्रकारकोसंधिकरणीचाहितीथी तथापिश्रीभगवान्नें जोइहां संधिनहींकरी सोश्लोककेपूर्णवासतै नहींकरी इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

तहां पूर्वश्लोकविषे सगुणब्रह्मकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या अब तिससगुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषेभी अशक्त जेअधिकारीजनहैं तिनअधिकारीजनोंनें ताअशक्तिकीतारतम्यताकरिकै प्रथमतौ प्रतिमादिकबाह्यवस्तुवोंविषे भगवान्केध्यानकाअभ्यासकरणा अर्थात् तिनप्रतिमादिकोंविषे भगवद्बुद्धिकरणी और तिनप्रतिमादिकों केध्यानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं तिनअधिकारीजनोंनें तौ श्रवणकीर्त्तनादिरूप भागवतधर्मोंका अनुष्ठानकरणा और तिनभागवतधर्मोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं तिनअधिकारी जनोंनें तौ सर्वकर्मों के फलकापरित्यागकरणा अर्थात् फलकीइच्छातैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरणा ॥ इसप्रकारके तीनसाधनोंकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् ॥ अभ्यासयोगेन ततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ॥ ९ ॥ अथ । चित्तम् । समाधातुम् । न । शक्नोषि । मयि । स्थिरम् । अभ्यासयोगेन । ततः । माम् । इच्छ । आप्तुम् । धनंजय ॥९॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेधनंजय जबीतूं मैंसगुणब्रह्मविषे आपणेचितकूं स्थिर स्थापनकरणेकूं नहीं समर्थहोवै तबी अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे अर्थ इच्छाकर ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

विषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंविश्वरूपपरमात्माहीहूं पर क्या आपणेतैंअन्य ज्ञातव्यद्रष्टव्यपदार्थ जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै अर्थात् आपणेतैंअन्यवस्तुविषे सर्वत्र मैंपरमेश्वरकं देखणेहारेपुरुषोंकानाम मत्परहै ॥ ऐसेमत्परहुए जेअधिकारीपुरुष अनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरैं हैं तहां मैंभगवानवासुदेवकूंत्यागके नहींविद्यमानहैअन्यआलंबन जिसविषे ताकानाम अनन्यहै ॥ ऐसाअनन्यरूप जोसमाधिरूपयोगहै जिस अनन्यसमाधिरूपयोगकूं शास्त्रविषे एकांतभक्तियोग इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए अर्थात् सर्वसौंदर्यकेसारकानिधानरूप तथा आनंदघनरूपविग्रहवाला तथादोभुजावों करिकै युक्त अथवा च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्त तथासर्वजनों केमनकूंमोहनकरणेहारीमुरलीकूं अतिमनोहरसप्तस्वरोंकरिकै बजावणेहारा तथा शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूं हस्तोंविषेधारणकरणेहारा ऐसाजो मैंभगवानवासुदेवहूं तिस मैंभगवान्वासुदेवकूं चिंतनकरतेहुए अथवा नरसिंह राघव वामन इत्यादिरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए अथवा पूर्वदिखायेहुएविश्वरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकी उपासनाकरैं अर्थात् ऐसेमैंपरमेश्वरविषयक व्यवधानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्तियों केप्रवाहकूं जेअधिकारीपुरुष करैं हैं अथवा (उपासते) इसपदका यहदूसराअर्थकरणा जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेसमीपवर्तिपणेकरिकै स्थितहोवैं हैं ऐसेजे मैंपरमेश्वरविषेआवेशितचित्तवालेपुरुषहैं अर्थात् पूर्वउक्त मैंस गुणब्रह्मविषेआवेशितकऱ्याहै क्या एकाग्रताकरिकैप्रवेशितकऱ्याहै चित्तजिनोंनैं तिनोंकानाम मय्यावेशितचेतसूहै ऐसे सगुणब्रह्मकेचिंतनपारायणपुरुषोंका मैं भगवान्वासुदेव मृत्युसंसारसागरतैं समुद्धर्ता होवूंहूं ॥ तहां मृत्युकरिकैयुक्त जोमिथ्याअज्ञान तथाताअज्ञानकाकार्यभूत यहसंसारहै सोमृत्युयुक्तसंसारही प्रसिद्ध सागरकीन्याईं दुस्तरहोणे तैं सागररूपहै ऐसेमृत्युसंसारसागरतैं मैंपरमेश्वर तिनउपासकपुरुषोंका समुद्धर्त्ता होवूंहूं अर्थात् तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर ज्ञानरूप आश्रयकी प्राप्तिकरिकै विनाहींआयासतैं तथाथोडेहीकालविषे सर्वप्रपंचकेबाधकाअवधिभूत शुद्धब्रह्मरूप ऊर्ध्वस्थानविषे धारणकरणेहारा होवूंहूं इहां (हे पार्थ) यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैं कह्याहै सोतूंअर्जुन हमारेपिताकेभगिनीकापुत्रहै तथाहमाराअनन्यभक्तहै यातैं इसमृत्युयुक्तसंसारसागरतैं तैंअर्जुन काभी मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकैउद्धारकरूंगा तूं भयमतकर ॥ याप्रकारकेआश्वासनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां इतनेग्रंथ करिकै सगुणब्रह्मकेउपासनाकीस्तुति कथनकरी ॥ अब तिस सगुणब्रह्मकीउपासनाका विधानकरैं हैं।

(मू. श्लो.) मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय ॥ निवसिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः ॥ ८ ॥ मयि । एव मनः । आधत्स्व । मयि । बुद्धिं । निवेशय । निवसिष्यसि । मयि । एव । अतः । ऊर्ध्वं । न । संशयः ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तूं आपणे

ऐसेजे सगुणब्रह्मकेउपासकहैं तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे केवल ऐश्वर्यविशेषकी प्राप्तिरूपफलही प्राप्तहोवैनहीं किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविनाही तथाश्रवणमननिदिध्यासनादिकोंकीआवृत्तिरूपक्लेशतैंविनाही ईश्वरकीप्रसन्नताकरिकैसहकृत तथा आपेहीस्फुरणहुए ऐसेवेदांतवाक्यकरिकै तत्त्वज्ञानकीभीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुये तिसब्रह्मलोकविषेहीऐश्वर्यभोगकेअंतविषे तिनउपासकपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मविद्याकाफलरूप परमकैवल्यमुक्ति प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरीशयंपुरुषमीक्षते) ॥ अर्थयह ॥ प्राप्तहुआहैहिरण्यगर्भकाऐश्वर्यजिसकूं ऐसासोउपासकपुरुष तिसब्रह्मलोककेऐश्वर्यभोगकेअंतविषे इनसर्वजीवोंकासमष्टिरूप तथाश्रेष्ठ ऐसेहिरण्यगर्भतैंभीपर कहिये विलक्षण तथाश्रेष्ठ तथाहृदयरूपगुहाविषेस्थित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसाजो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयपरमात्मादेवहै तिसपरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै अर्थात् ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविना आपेही स्फुरणहुआजो वेदांतवाक्यरूपप्रमाणहै ताप्रमाणकरिकै सोउपासकपुरुष तापरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ तासाक्षात्कारकरिकैही सोउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तक्लेशतैंविनाही सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं ईश्वरकेप्रसादतैं निर्गुणब्रह्मविद्याकामोक्षरूपफलप्राप्तहोवैहै ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः ॥ अनन्येनैवयोगेनमांध्यायंतउपासते ॥ ६ ॥ तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् ॥ भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ ये । तु । सर्वाणि । कर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्पराः । अनन्येन । एव । योगेन । माम् । ध्यायंतः । उपासते । तेषाम् । अहम् । समुद्धर्त्ता । मृत्युसंसारसागरात् । भवामि । नचिरात् । पार्थ । मयि । आवेशितचेतसाम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! पुनः जेपुरुष सर्व कर्मोंकूं मैंसगुणब्रह्मविषे अर्पणकरिकै मेरेपरायणहुए तथा अनन्य समाधिरूपयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं ही चिंतनकरतेहुए मेरीउपासनाकरैहैं तिनै मैंपरमेश्वरविषे आवेशितचित्तवालेपुरुषोंका मैंपरमेश्वर मृत्युयुक्तसंसारसमुद्रतैं शीघ्रंही उद्धारकरणेहारा होवूंहूं ॥ ६ ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (येतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सो तुशब्द पूर्वउक्त अर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्तैहै ॥ हे अर्जुन ! जेअधिकारीजन मैंसगुणपरमेश्वरविषे नित्य नैमित्तिक स्वाभाविक इत्यादिकसर्वकर्मोंकूंअर्पणकरिकै मत्परहुएहैं अर्थात् मैंभगवान्वासुदेवहीहूं पर क्या प्रकृष्टप्रीतिकाविषय जिन्होंकं तिन्होंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहीहूं पर क्या सर्वकर्मोंकरिकैप्राप्य जिन्होंकूं तिन्होंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहीहूं पर क्या ध्यानक

प्रथमतौ विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता इनचतुष्टयसाधनोंकरिसंपन्नहोणा ॥ तिसतैंअनंतर विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदान्तवाक्योंकाश्रवणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसतिसवाक्यकेविचारकरिकै तिस तिसभ्रमकी निवृत्तिकरणी ॥ इत्यादिकसाधनोंकेकरणेविषे तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं महानप्रयासकीप्राप्ति प्रत्यक्षहीसिद्धहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (क्लेशोधिकतरस्तेषाम्) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि सगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं एकहीमोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषविषे श्रेष्टताकहणीसंभवतीनहीं तथापि एकहीफलकूं जेपुरुष दुष्करउपायकरिकैप्राप्तहोवैं हैं तिनपुरुषोंकीअपेक्षा करिकै तिसफिलकूं जेपुरुष सुगमउपायकरिकैप्राप्तहोवैं हैं तेपुरुष श्रेष्ठकेहजावैं हैं यहभगवान्‌काअभिप्रायहै ॥ यद्यपि पूर्वनवमअध्यायकेद्वितीयश्लोकविषे (सुसुखंकर्तुमव्ययम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ और इहां (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखम्) इसवचनकरिकै बहुतदुःखकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तिसपूर्वउत्तरवचनका परस्परविरोध प्रतीतहोवैहै तथापि श्रीभगवान्‌का यहअभिप्रायहै विवेकादिकसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न जेनिष्कामअधिकारीजनहैं तिन अधिकारीजनोंकूंतौ सुखेनही निर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंका देहादिकोंविषेअहंममअभिमानहै ऐसे सकामपुरुषोंकूं बहुतदुःखकरिकैही सानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवै है ॥ इसअभिप्रायकरिकैही श्रीभगवान्नैं इहां (देहवद्भिः) इसवचनकरिकै देहाभिमानीपुरुषही कथनकरे हैं ॥ ऐसेदेहाभिमानीपुरुषोंकूं सगुणब्रह्मकाचिंतनहीसुगमहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥

शंका—हेभगवन् ! सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोकदाचित्‌एकहीफलकीप्राप्तिहोतीहोवै तौ क्लेशकीअल्पताकरिकै सगुणब्रह्मवेत्ता पुरुषोंविषेतौ उत्कृष्टताहोवै और क्लेशकीअधिकताकरिकै निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे निकृष्टताहोवै परंतु तिन दोनोंकूं एकफलकीप्राप्तिहोतीनहीं किंतु तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौ अविद्याकीतथाताकेकार्यप्रपंचकीनिवृत्तिपूर्वक निर्विशेषपरमानंदब्रह्मरूपताकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवै है ॥ और सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौ अधिष्ठानरूपानिर्गुणब्रह्मका साक्षात्कारहैनहीं यातैं तिन्होंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं किंतु तेसगुणब्रह्मवेत्तापुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकेलोकविषेजाइकै तहां ऐश्वर्यविशेषरूपफलकूंप्राप्तहोवैं हैं यातैं तिन निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं मोक्षरूपअधिकफलकीप्राप्तिवासतैजोआयासकीअधिकताहै सो आयासकीअधिकता तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे न्यूनताकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अल्पफलवासतै आयासकीअधिकताही न्यूनताकीप्राप्तिकरै है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहैं हैं ॥ समाधान—हे अर्जुन ! सगुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै निवृत्तहोइगएहैंसर्वप्रतिबंधजिन्होंके

देकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै इति ॥ इसप्रकारकेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तेसर्वतैंविरक्तअधिकारीजन आप ब्रह्मरूपहुएभी सर्वसाधनोंकाफलभूत तथासंशयतैंरहित ऐसेआत्मसाक्षात्कारकरिकै मैंअक्षरब्रह्मरूपकूंहीप्राप्तहोवैं हैं अर्थात् तेतत्त्ववेत्तापुरुष तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही तिसतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही स्थितहोवैं हैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीजन ब्रह्मरूपहुआही ब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं आपणाआत्मारूपकरिकैब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपही होवैहै इति ॥ तहां ज्ञानवान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहै यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपही इसगीताशास्त्रविषे कथनकरीहै इति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ❀ अब इननिर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंतैं पूर्वकथनकरेहुएसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंकीअतिशयताकूंदिखावतेहुए श्रीभगवान्अर्जुनकेप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥ क्लेशः । अधिकतरः । तेषाम् । अव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता । हि । गतिः । दुःखम् । देहवद्भिः । अवाप्यते ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! निर्गुणब्रह्मविषेआसक्तहैचित्तजिन्होंका तिनपुरुषोंकूं अतिअधिक क्लेशहोवै जिसकारणतैं देहाभिमानीपुरुषोंनैं सोनिर्गुण ब्रह्म बहुतदुःखकरिकै पावताहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जेअधिकारीपुरुष पूर्वकथनकरेथे तिनअधिकारीजनोंकूंभी सर्वविषयोंतैंआपणेमनकूंनिवृत्तकरिकै सगुणब्रह्मविषे तामनकेजोडनेविषे तथा निरंतर परमेश्वरकीप्रसन्नताअर्थ निष्कामकर्मपरायणहोणेविषे तथापरमसात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहोणेविषे अधिकक्लेशतौ प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु तिन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूं अधिकतरक्लेशप्राप्तहोवैनहीं अर्थात् अत्यंतअधिकक्लेश प्राप्तहोवैनहीं ॥ और निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणहैचित्तजिन्होंका ऐसेजे पूर्वउक्तश्रवणादिकसाधनोंवाले अधिकारीजन हैं तिन निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणअधिकारीजनोंकूंतैं अधिकतरक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् अतिशयकरिकैअधिक आयासरूपक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अब इसपूर्वउक्त अर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहैंहैं (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखमिति) जिसकारणतैं देहविषेअहंममअभिमानवालेपुरुषोंनें साअव्यक्तरूपगति बहुतदुःखकरिकै पाइतीहै ॥ तहां मुमुक्षुजन तत्त्वज्ञानकरिकै प्राप्तहोवैं जिसकूं ऐसाजो गंतव्यफलरूपनिर्गुणब्रह्महै ताकानाम गतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (साकाष्ठासापरागतिः) अर्थयह ॥ सोनिर्गुण ब्रह्मही सर्वकाअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहै इति ॥ सोनिर्गुणब्रह्म नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहै नहीं यातैं तानिर्गुणब्रह्मरूपगतिकूं अव्यक्तकह्याहै अर्थात् देहाभिमानीपुरुषोंनैं साअक्षरब्रह्मरूपगति बहुतदुःखकरिकैहीपाईतीहै ॥ तहां

अज्ञानभी कूटइसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ताकार्यप्रपंचसहित अज्ञाननामकूटविषे जोवस्तु आध्यासिकसंबंधकरिकै अधिष्ठानरूपतैं स्थितहोवैहे तावस्तुकानाम कूटस्थहै अर्थात् कार्यप्रपंचसहितअज्ञानका अधिष्ठानरूपजोपरब्रह्महै ताकानाम कूटस्थहै ॥ इतनेकहणेकरिकै पूर्वउक्तसर्वअनुपपत्तियोंका परिहारकऱ्या ॥ इसकारणतैंही सर्वविकारोंकूं अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं ताअविद्याकाअधिष्ठानरूपसाक्षीचैतन्य निर्विकारहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (अचल मिति) तहां विकारकानाम चलनहै ताचलनरूपविकारतैंजोरहितहोवै ताकानाम अचलहै ॥ अचलहोणेतैंही सोअक्षरब्रह्म ध्रुवहै अर्थात् परिणामीभावतैं रहितनित्यहै ॥ इसप्रकारके अक्षरशुद्धब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन चिंतनकरैं हैं अर्थात् ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरिकै प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तथामननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै जेअधिकारीपुरुष ध्यानकूं करैं हैं अर्थात् अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै तैलधाराकीन्याईं विच्छेदतैंरहित सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूपनिदिध्यासनभूतध्यानकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकूंविषयकरैं हैं ॥ शंका—हे भगवन् ! श्रोत्रादिकइंद्रियोंका आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथि संबंधकेविद्यमानहुए सोवि जातीयवृत्तियोंकातिरस्कार कैसेहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (सन्नियम्येंद्रियग्राममिति) हे अर्जुन ! जे अधिकारीजन आपणेश्रोत्रादिक इंद्रियोंकेसमूहकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकाध्यानकरैं हैं ॥ इतने कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं शमदमादिकषट्संपत्ति कथनकरी ॥ शंका—हे भगवन् ! विषयभोगकीवासनाकेविद्यमानहुए तिनशब्दादिकविषयोंतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीनिवृत्ति कैसेसंभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (सर्वत्रसमबुद्धयः इति) हे अर्जुन ! सर्वविषयोंविषे समहै क्या तुल्यहै अर्थात् हर्षविषाददोनों तैं तथारागद्वेषदोनोंतैंरहितहैबुद्धिजिन्होंकी तिन्होंकानाम सर्वत्रस मबुद्धिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सम्यक्ज्ञानकरिकैं जिनपुरुषोंका हर्षविषाद आदिकोंकाकारणरूपअज्ञान निवृत्तहोइगयाहै तथा विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकै जिनपुरुषोंकीसर्व विषयइच्छा निवृत्तहोइगई है ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ ऐसेसर्वत्रसमबुद्धिवालेहुए जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकाचिंतन करैं हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वशीकारनामावैराग्य कथनकऱ्या ॥ इसीकारणतैंही सर्वत्रआत्मदृष्टिकरिकै हिंसाकेकारणरूपद्वेषतैंरहितहोणेतैं जेअधिका रीपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवाले हैं ॥ अर्थात् (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) इसमंत्रकरिकै सर्वभूतप्राणियोंकेताईं दईहुई हैअभयरूपदक्षिणा जिन्होंनैं ऐसेजेपरमहंससंन्यासी हैं ॥ तहां संन्यासियोंनैं सर्वभूतप्राणियोंकेताईं अभयदानदेणा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्यो दत्वासंन्यासमाचरेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वस्थावरजंगमरूपप्राणियोंकेताईं अभयदान

तत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंनें व्यापकआत्मातैंभिन्न आकाशादिकसर्वप्रपंचकूं परिच्छिन्नकह्याहै ॥ यातैं आकाशादिकोंविषे तानियमकाभंगहोवै नहीं इति ॥ और जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रव्यापकहै तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्म अचिंत्यहै अर्थात् सोअक्षरब्रह्म जैसे शब्दकेप्रवृत्तिकाविषयनहीं है तैसे मनकेप्रवृत्तिकाभीविषयनहीं है ॥ शब्दकेप्रवृत्तिकीन्याईं मनकीप्रवृत्तिभी परिच्छिन्नवस्तुकूंही विषयकरै है ताअक्षरब्रह्मविषे परिच्छिन्नपणाहैनहीं यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे मनकेप्रवृत्तिकीभीविषयता संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाचोनिवर्त्तंतेअप्राप्यमनसासहइति) ॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसअक्षरब्रह्मकूंन प्राप्तहोइके जिसअक्षरब्रह्मतैं निवर्त्तहोइजावैं हैं इति ॥ शंका—हे भगवन् ! सोअक्षरब्रह्म जोकदाचित् वाणीका तथामनका नहींविषयहोवै तौ श्रुतिवचन तथा व्याससूत्र ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता किसवासतै कथनकरतेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामिइति दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिःइति मनसैवानुद्रष्टव्यमिति) ॥ अर्थयह ॥ हेशाकल्य ! केवल उपनिषद्प्रमाणकरिकैजानणेयोग्यजोपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मकास्वरूप मैंयाज्ञवल्क्य तुम्हारेसैं पूछताहूं इति ॥ और सूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषों नैं विषयवासनातैंरहित एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैही यहआत्मादेव साक्षात्कारकरीताहै इति ॥ और यह आत्मा देव केवलशुद्धमनकरिकैही देख्याजावैहै इति ॥तहां व्याससूत्र ॥ (शास्त्रयोनित्वात्) ॥अर्थयह॥उपनिषद्रूपशास्त्रहै योनि क्या प्रमाणजिसविषे ऐसापरब्रह्महै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिसूत्रवचन तिसपरब्रह्मविषेभी उपनिषद्रूपवाणीकीविषयता तथाशुद्धमनकीविषयता कथनकरैं हैं ॥ ब्रह्मकूंअविषयमानणेविषे तेसर्व असंगतहोवैंगे ॥ समाधान—हे अर्जुन महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं उत्पन्नभईजाबुद्धिकीअंत्यवृत्तिहै ताबुद्धिकीवृत्तिविषे अविद्याकल्पितसंबंधकरिकै परमानंदबोधरूपशुद्धवस्तुकेप्रतिबिंबितहुएही कल्पितरूप अविद्याकी तथाताअविद्याकेकार्यकी निवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंही उपचारमात्रतैं तिसपरब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथाबुद्धिकीविषयता कथनकरीहैअर्थात् महावाक्यजन्य शुद्धबुद्धिकीवृत्ति चिदाभासकरिकैयुक्तहुई ब्रह्माश्रिततथाब्रह्मविषयक अविद्याकी निवृत्तिमात्रकरैहै ॥ जिसकूंशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्तिकहैहैं तिसकूंअंगीकारकरिकैही श्रुतिसूत्रवचनोंनैं ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता कथनकरीहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे फलव्याप्तिरूप मुख्यविषयताहै तैसे ब्रह्मविषे कोईमुख्यविषयता कथनकरीनहीं इससर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसअक्षरविषे कल्पित अविद्याकेसंबंधका उपपादनकरणेवासतैकहैं हैं (कूटस्थम्) इति ॥ तहां जोवस्तु वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै तावस्तुकूं लोकविषे कूट इसनामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ जैसे इसलोकविषे जोसाक्षीपुरुष वास्तवतैंमिथ्यावादीहुआभी सत्यवादीपुरुषकीन्याईं प्रतीतहोवैहै तासाक्षीकूं कूटसाक्षी कहैं हैं ॥ तैसे मायाअविद्यारूपयहअज्ञानभी आपणेकार्यप्रपंचसहित वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी विचारहीनपुरुषोंकूं सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहकार्यप्रपंचसहित

टीका । हे अर्जुन ! जेअधिकारीजन अक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं निरंतर चिंतनकरैंहैं तेअधिकारीपुरुषभीमैंअक्षररूपनिर्गुणब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैंहैं ॥ जोअक्षर रूपनिर्गुण ब्रह्म बृहदारण्यकउपनिषद्विषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गी के प्रति (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकवचनोकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ इहां (येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वकथनकरेहुए सगुणब्रह्मकेउपासकों तैं इननिर्गुणब्रह्मके उपासकोंविषे विलक्षणताके बोधनकरणेवासतैहै ॥ अब तिसअक्षरविषे निर्गुणब्रह्मरूपताकेसिद्धकरणेवासतै ताअक्षरके सप्तविशेषणोंकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ॥ हेअर्जुन ! सोनिर्विशेषब्रह्मरूप अक्षर कैसाहै अनिर्देश्यहै अर्थात्सोअक्षरब्रह्म किसीशब्दकरिकैकथनकरणेकूंअशक्यहै ॥ शंका–हे भगवन् ! सोअक्षरब्रह्म शब्दकरिकै क्योंनहींकथ नकऱ्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताअनिर्देश्यपणेविषे हेतुकहैंहैं (अव्यक्तमिति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोअक्षर अव्यक्तहै अर्थात् शब्दकीप्रवृत्तिकेनिमित्तभूत जे जाति गुण क्रियासंबंध यहच्यारि धर्म हैं तिनच्यारों तैं सोअक्षररहित तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्मकिसीभीशब्दकरिकैकथ नकऱ्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे जिसजिसअर्थविषे जोजोशब्द प्रवृत्तहोवैहै सोसोशब्द तिसतिसअर्थविषे जातिकूं अथवा गुणकूं अथवा क्रियाकूं अथवासंबंधकूं द्वारभूतकरिकैही प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मण इत्यादिकशब्द ब्राह्मणत्वादिकजातिकूंलेकेही स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ और शुक्ल नील इत्यादि कशब्द शुक्लनीलादिकगुणोंकूंलेकेही स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैंहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौ पाकादिरूपक्रियाकूंलेकेही स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहो वैंहैं ॥ और पिता पुत्र इत्यादिकशब्दतौ जन्यजनकभावआदिकसंबंधकूंलेकेही स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैंहैं ॥ इस प्रकारतैं सर्वशब्द जातिगुणादिकनिमित्तकूंलेके ही आपणेआपणेअर्थविषे प्रवृत्तहोवैंहैं ॥ और निर्विशेषअक्षरब्रह्मविषे तेजातिगुणादिकविशेषधर्म हैंनहीं यातैं ता अक्षरब्रह्मविषे किसीभीशब्दकीप्रवृत्ति होवैनहीं इति ॥ शंका–हे भगवन् ! सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकधर्मों तैंरहित किसहेतुतैं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनजातिआदिकों तैंरहि तपणेविषे हेतुकहैंहैं (सर्वत्रगमिति) हे अर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रगहै अर्थात् सर्वत्रव्यापकहै तथासर्वकाकारणहै तिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकों तैंरहितहै जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै तथाकार्यहोवैहै सोपदार्थही तिनजातिगुणादिकधर्मवालाहोवैहै ॥ यद्यपिनैयायिक आकाश काल दिशा इनतीनोंविषे अकार्यपणा तथाव्यापकपणा अंगीकारकरिकैभी तिनतीनोंविषे जातिगुणादिक अंगीकारकरैंहैं यातैं परिच्छिन्नकार्यविषेही तेजातिगुणा दिकरहैंहैं यहनियम संभवतानहीं तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तिनआकाशादिकोंविषेभी कार्यपणा तथापरिच्छिन्नपणाही अंगीकारहै ॥ तहां (आत्मनआका शःसंभूतः ॥) अर्थयह ॥ आत्मातैं आकाश उत्पन्नहोताभया इत्यादिकश्रुतियों नैं तिनआकाशादिकोंकी आत्मातैंउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ (और योवैभूमा

इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जेअधिकारीपुरुष आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे एकाग्रकरिकै नित्ययुक्तहुए तथासात्विक श्रद्धाक
रिकै युक्तहुए मैंसाकारब्रह्मकूं चिंतनकरैं हैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूं युक्ततम अभिमतहैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंभगवान्वासुदेवपरमेश्वरसगुणब्रह्मविषे आपणेमनकूं आवेशकरिकै अर्थात् अनन्यशरणताकारिकै तथानिरतिशयप्रियताकारिकै आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे प्रवेशकरिकै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिंगुलकेरंगकेसाथिमिलिकै लाख तन्मयहोइजावैहै तैसे आपणेमनकूं मैंपरमेश्वरमयकरिकै जेअधिकारी पुरुष नित्ययुक्तहुए अर्थात् निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषयक उद्यमवालेहुए ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष परश्रद्धाकारिकैयुक्तहुए अर्थात् आराधनकऱ्याहुआ यहसगुणपरमेश्वर अवश्यकरिकै हमारा निस्तारकरैगा याप्रकारकी आस्तिक्यबुद्धिरूप सात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए सर्वयोगेश्वरोंकाभीईश्वररूप तथासर्वज्ञ तथासमग्रकल्याणगुणोंकास्थानरूप ऐसेसाकारब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं सर्वदा चिंतनकरैं हैं ॥ तेअधिकारीजनही मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकारिकै अभिमतहैं अर्थात् तेअधिकारीपुरुष सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषे आसक्तचित्तवालेहोणेतैं सर्वविषयोंतैंविमुखहोइकै मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेहुए संपूर्णदिनरात्रियोंकूंव्यतीतकरैं हैं ॥ यातैं तेसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारी जनही मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिप्रेतहैं अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वयोगीजनोंतैंश्रेष्ठ मानताहूं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकीअपेक्षाकारिकै तिनसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंविषे कौनअतिशयताहै ॥ जिसअतिशयताकारिकै तेसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषही आपकूं युक्ततमरूपकरिकैअभिमतहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसअतिशयताकूं कथनकरतेहुए प्रथम तिसअतिशयताकेनिरूपक निर्गुणब्रह्मकेवेत्तावोंकीश्लोकोंकरिकै स्तुतिकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ॥ ३ ॥ संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ॥४॥ ये । तु । अक्षरम् । अनिर्देश्यम् । अव्यक्तम् । पर्युपासते । सर्वत्रगम् । अचिंत्यम । च । कूटस्थम् । अचलम् । ध्रुवम । सन्नियम्य । इंद्रियग्रामम् । सर्वत्र । समबुद्धयः । ते । प्राप्नुवंति । माम् । एव । सर्वभूतहितेरताः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः जेअधिकारजिन इंद्रियोंके समूहकूं निरुद्धकरिकै सर्वत्र समबुद्धिवालेहुए तथासर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवालेहुए अनिर्देश्य अव्यक्त सर्वव्यापक अचिंत्य तथा कूटस्थ अचल ध्रुव ऐसेनिर्गुणब्रह्मरूप अक्षरकूं निरंतर चितनकरैं हैं तेअधिकारीपुरुषभी मैंनिर्गुणब्रह्मकूं ही प्राप्तहोवैं हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

जेअधिकारीपुरुष इसप्रकारकेसाकाररूपवाले तैंपरमेश्वरकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरचिंतनकरैंहैं ॥ इतनेकहणेकरिकै सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहोरभक्तजनोंका कथन कऱ्या ॥ अब निर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथनकरैंहैं (येचाप्यक्षरमिति) हे भगवन् ! जेअधिकारीपुरुष सर्वसंसारतैंविरक्तहुए तथासर्वकर्मोंकेत्याग वालेहुए अक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंपरमेश्वरकूं निरंतर चिंतनकरैंहैं ॥ तहां न क्षरति अश्नुतेवा इत्यक्षरम् ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तु कदाचित्भी नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकानाम अक्षरहै अथवा जोवस्तु आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकै इससर्वजगत्कूं व्याप्तकरैहै ताकानाम अक्षरहै ऐसाअक्षररूप निर्गुणब्रह्महै ॥ इसीनिर्गुणब्रह्म रूपअक्षरकूं बृहदारण्यकउपनिषद्विषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति स्थूलसूक्ष्मादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणा अभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) ॥ अर्थयह ॥ हे गार्गि ! इसीनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षरकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण स्थूलभावतैंरहितकहैं हैं तथाअणुभावतैंरहित कहैं हैं तथा ह्रस्वभावतैंरहित कहैंहैं तथादीर्घभावतैंरहित कहैंहैं इति ॥ जिसकारणतैं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर सर्वउपाधियोंतैंरहितहै इसकारणतैंही सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर अव्यक्तहै अर्थात् नेत्रादिकसर्वकरणोंकाअविषयहै ॥ ऐसेअक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंनिराकारनिर्गुणपरमेश्वरकूं जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर चिंतनकरैंहैं तिनदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौनअधिकारीजन योगवित्तमहैं अर्थात् कौनअधिकारीजन अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ अथवा कौनअधिकारीजन अतिशयकरिकै समाधिरूपयोगकूं प्राप्तहुएहैं तहां समाधिरूपयोगकूं जेपुरुष जानैंहैं अथवा प्राप्तहोवैंहैं तिन्होंकानाम योगवित्है ॥ तिनयोगवित्पुरुषोंकेमध्यविषे जेअत्यंतश्रेष्ठहोवैं तिन्होंकानाम योगवित्तमहै अर्थात् इसप्रकारकेयोगवित्तैतेदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनहैं तिनदोनों प्रकारके अधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौनअधिकारीजन अत्यंतश्रेष्ठयोगवित्हैं अर्थात् किनअधिकारीपुरुषोंकाज्ञान मैंअर्जुननैं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सगुणब्रह्मके जानणेहारपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणेयोग्यहै अथवा निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणे योग्यहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां सर्वज्ञ श्रीकृष्णभगवान् तिसअर्जुनका सगुणविद्याविषेही अधिकारकूंदेखताहुआ तिसअर्जुनकेप्रति साससगुणविद्याही विधानकरैगा ॥ तथा यथाअधिकारकेअनुसार ताविद्याकेन्यूनअधिकतायुक्तसाधनोंकाभी विधानकरैगा ॥ इसकारणतैं प्रथम साकारब्रह्मविद्याविषे ताअर्जुनकी रुचिकरावणेवासतै तासाकारब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरताहुआ साप्रथम साकारब्रह्मविद्याहीश्रेष्ठहै इसप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यावेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते ॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः ॥ २ ॥ मयि । आवेश्य । मनः । ये । माम् । नित्ययुक्ताः । उपासते । श्रद्धया । परया । उपेताः । ते । मे । युक्ततमाः मताः ॥ २ ॥

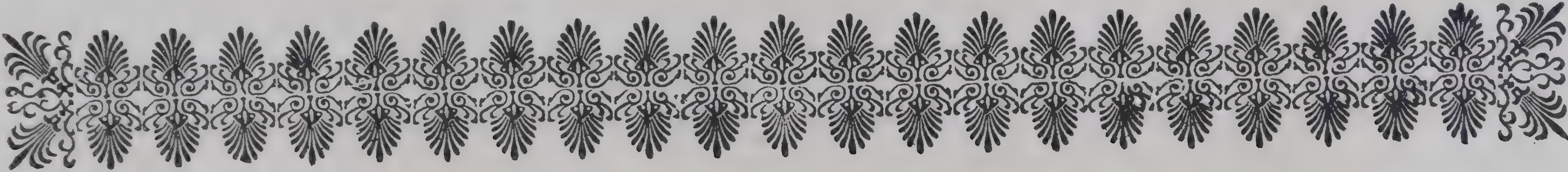
ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ द्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व एकादशेअध्यायकेअंतविषे (मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव) इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं च्यारिवार मत् यहशब्द कथनकऱ्याहै तिस मत्शब्दकेअर्थविषे यहसंशयहोवैहै जो श्रीभगवान्नैं ता मत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुका कथनकऱ्याहै अथवा साकारवस्तुका कथनकऱ्याहै इति ॥ तहां इसप्रकारकेसंशयकीउत्पत्ति विषे श्रीभगवान्के पूर्वउक्तवचनहीकारणहैं ॥ काहेतैं श्रीभगवान्नैं (मत्कर्मकृत्) इसश्लोकतैंपूर्व निराकारवस्तुकूं तथासाकारवस्तुकूं दोनोंकूं मत् इसशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां (बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौ श्रीभगवान्नैं ता मत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुकाही कथनकऱ्याहै ॥ और विश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर (नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौ श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै साकारवस्तुकाही कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्रीभगवान्के तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्था अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकैही करणीहोवैगी ॥ जोकदाचित् अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थानहींकरिये तौ तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ इसप्रकारअधिकारीपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थाकेप्राप्तहुए मैंमुमुक्षुअर्जुननैं क्यानिराकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ अथवा साकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै इसप्रकार आपणेअधिकारकेनिश्चयकरणेवासतै सगुणविद्या तथानिर्गुणविद्या इनदोनोंविद्यावोंकेविशेषता जाणणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपासते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः ॥ १ ॥ एवम् । सतत युक्ताः । ये । भक्ताः । त्वाम् । पर्युपासते । ये । च । अपि । अक्षरम् । अव्यक्तम् । तेषाम् । के । योगवित्तमाः ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! इसप्रकार निरंतरयुक्तहुए तथाएकसाकारवस्तुकेशरणहुए जेअधिकारीपुरुष तैंसाकारपरमेश्वरकूं निरंतरचिंतनकरैहैं तथा जेविरक्तपुरुष अक्षर अव्यक्तरूप तैंनिर्गुणब्रह्मकूंही निरंतरचिंतनकरैहैं तिनदोनोंकेमध्यविषे कौनपुरुष अतिशयकरिकै योगकेजानणेहारेहैं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! जेअधिकारीजन (मत्कर्मकृन्मत्परमः) इसपूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै सततयुक्तहैं अर्थात् जेपुरुष निरंतर भगवत्अर्पणकर्मादिकोंविषे सावधानताकरिकै प्रवृत्तहुएहैं ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष भक्तहैं अर्थात् जेपुरुष एकसाकारवस्तुकेही शरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इसप्रकारसततयुक्तहुए तथाभक्तहुए

तहां (मत्कर्मकृत् मत्परमः) इनदोनोंपदोंकरिकैतौ संपूर्णकर्मयोग तथासंपूर्णध्यानयोगकथनकऱ्या ॥ जोकर्मयोग तथाध्यानयोग त्वंपदार्थका शोधकहै ॥ और (मद्भक्तः) इसपदकरिकैतौ समग्रउपासनाकांडकेअर्थकासंग्रहकऱ्या ॥ और (संगवर्जितः) इसपदकरिकैतौ सर्वसंगकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषे स्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष भगवत्ध्याननिष्ठहोवै यह अर्थकथनकऱ्या ॥ और (निर्वैरःसर्वभूतेषु) इसवचनकरिकैतौ यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ यहअधिकारीपुरुष इससर्व विश्वकूं भगवतरूपकरिकै देखै जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष इससर्वविश्वकूं भगवतरूपकरिकैनहींदेखैगा तौभेदबुद्धिवाले इसअधिकारीपुरुषविषे सानि वैरताही संभवैगीनहीं ॥ इसप्रकारतैं यहलोक सर्वगीताशास्त्रकेसारभूत अर्थकूंकथनकरैं हैं ॥ और (हेपांडव) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवानूनैं अर्जुनका विशुद्धवंशविषेजन्म कथनकऱ्या ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूं अर्जुन इससर्वशास्त्रकेसारभूतअर्थकूं जानणेविषेसमर्थ है इति ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायांगीतागूढार्थदीपिकाख्यायामेकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ।

इति एकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥



ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शननामएकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ मत्कर्मकृत् । मत्परमः । मद्भक्तः । संगवर्जितः । निर्वैरः । सर्वभूतेषु । यः । सः । माम् । एति । पांडव ॥ ५५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पांडव ! जोपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै तथामेराभक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै सोपुरुषही मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवे है ॥ ५५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे पांडव ! अर्थात् हेपांडुराजाकेपुत्रअर्जुन । जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है अर्थात् जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतैही वेदविहित अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकूंकरै है ॥ शंका—हे भगवन् ! स्वर्गादिकफलोंकीकामनावोंकेवियमानहुए इसअधिकारीपुरुषविषे सोमत्कर्मकृत्पणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (मत्परमःइति) हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष मत्परमहै अर्थात् मैंपरमेश्वरहीहूं प्राप्तरूपकरिकैनिश्चितजिसकूं दूसरे स्वर्गादिकफल जिसकूं प्राप्तव्यरूपकरिकैनिश्चितहैं नहीं तिसपुरुषकानाम मत्परमहै ॥ जिसकारणतैं सोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै तिसकारणतैं ही सोअधिकारीपुरुष मद्भक्तहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकेप्राप्तिकीआशाकरिकै जोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकेभजनपरायणहै ॥ शंका—हे भगवन् ! पुत्रादिकपदार्थोंविषेस्नेहकेवियमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोतुम्हाराभक्तपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ (संगवर्जितः) इति । जोअधिकारीपुरुष संगतैंरहितहै अर्थात् पुत्र स्त्री धन गृह इसतैं आदिलैकेजितनेकबाह्यअनात्मपदार्थ हैं तिनसर्वपदार्थोंकी इच्छातैंरहितहै ॥ शंका—हे भगवन् ! शत्रुवोंविषेद्वेषकेवियमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोसंगतैंरहितपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (निर्वैरःसर्वभूतेषु इति) हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंविषेवैरतैंरहितहै अर्थात् जेप्राणी आपणाअपकारकरैं हैं ऐसेअपकारीप्राणियोंविषेभी जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै तथामद्भक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै सोअधिकारी पुरुषही मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ हे अर्जुन ! यहजो सर्वशास्त्रकासारभूतअर्थ हमनैं तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहै सोयहअर्थही तुम्हारेकूं जाणणेयोग्यहै ॥ इस अर्थके जानणेतैंपरे दूसराकोई तुम्हारेकूंकर्तव्यनहीं है इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (मत्परमः) इसपदका यह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ मीयतेपदार्थोऽनयाइति मा ॥ अर्थयह जिसकरिकै पदार्थ निश्चयकऱ्याजावै है ताकानाम माहै अर्थात् नेत्रादिकइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिकरिकैही सर्वपदार्थ निश्चयकरेजावैं हैं यातैं ताइंद्रियजन्यवृत्तिकानाममाहै ॥ तहां मत्पराहै क्या सर्वत्रमैंपरमेश्वरकेस्वरूप ग्रहणपराहै साइंद्रियजन्यवृत्तिरूप मा जिसपुरुषकी ताकानाम मत्परमहै इति ॥

यातैं इसश्लोकविषेपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! इसप्रकारकेविश्वरूपवालातूं जबीवेदोंकेअध्ययनकरिकै तथा तपकरिकै
नथादानकरिकै तथाअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै देखणेकूं अशक्यहैं तबी दूसरेकिसउपायकरिकैंतूं देखणेकूंशक्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्
नाविश्वरूपकेदर्शनकाउपाय कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥ भक्त्या । तु । अनन्यया । शक्यः । अहम् । एवंविधः । अर्जुन । ज्ञातुम् । द्रष्टुम् । च । तत्त्वेन । प्रवेष्टुम् । च । परंतप ॥ ५४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! हेपरंतप इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर अनन्य भक्तिकरिकै ही जानणेकूं शक्यहूं तथा वास्तवरूपकरिकै साक्षात्कारकरणेकूं शक्य हूं तथा अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेकूं शक्यहूं ॥ ५४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे परंतप अर्थात् हे अज्ञानरूपशत्रुकूंनाशकरणेहारा अर्जुन ! इसप्रकारकेदिव्य विश्वरूपकूंधारणकरणेहारा मैंपरमेश्वर एकअनन्यभक्तिकरिकैही जान
णेकूंशक्यहूं अर्थात् सर्वविषयवासनाकापरित्यागकरिकै एकमैंपरमेश्वरविषयक जा निरतिशयप्रीतिरूप अनन्यभक्तिहै ता अनन्यभक्तिकरिकैही यहअधिकारी
जन शास्त्ररूपप्रमाणतैं मैंपरमेश्वरकूंजानिसकैंहै अन्यकिसीउपायकरिकै जानिसकतेनहीं ॥ हे अर्जुन ! तिसअनन्यभक्तिकरिकै शास्त्रप्रमाणतैं मैंपरमेश्वरकेवल
जानणेकूंही शक्यनहींहूं किंतु तिसअनन्यभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वर वेदांतवाक्योंके श्रवणमननिदिध्यासनकीपरिपाकताकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपतैं साक्षात्कार
करणेकूंभी शक्यहूं अर्थात् ता अनन्यभक्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं मैंब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकारतैं साक्षात्कारभीकरैं हैं
और तिससाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तिससाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंपरमेश्वर तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं आपणेवास्तवस्वरूपतैं प्राप्तहोणेकूंभी शक्यहूं
अर्थात् तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवूंहूं ॥ इहां (हेपरंतप) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं अज्ञानरूपशत्रुकी
निवृत्तिकरिकै आपणेअद्वितीयनिर्गुणस्वरूपविषे अभेदरूपकरिकै प्रवेशकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (शक्यः अहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहं)
इसप्रकारकावचन चाहियेथा तथापि शक्य इसपदतैंउत्तर जो विसर्गोंकालोपकर्‍याहै सो पूर्वकीन्याईं छांदसहै इति ॥ ५४ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान्नैं
समग्रगीताशास्त्रका सारभूतअर्थ मुमुक्षुजनोंकेअनुष्ठानवासतै इकट्ठाकरिकै कथनकरियेहै ।

(मू. श्लो.) मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम ॥ देवाअप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ सुदुर्दर्शम् । इदम् । रूपम् । दृष्टवानसि । यत् । मम । देवाः । अपि । अस्य । रूपस्य । नित्यम् । दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरके जिसे विश्वरूपकूं तूंअबी देखताभयाहै यहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूंअशक्यहै जिसकारणतें देवता भी नित्यही इस विश्वरूपके दर्शनकीइच्छाकरै हैं ॥ ५२॥ इतिपदार्थः॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरके जिसविश्वरूपकूं तूं अबी देखताभयाहै सोयहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूं अशक्यहै ।। जिसकारणतें इंद्रादिकदेवताभी सर्वदा इसहमारे विश्वरूपकेदर्शनकीइच्छाही करतेरहतेहैं परंतु जैसे तूं अर्जुन इसहमारेविश्वरूपकूं देखताभयाहै तैसे तेइंद्रादिकदेवता पूर्वभी इसहमारे विश्वरूपकूं नहींदेखतेभयेहैं ।। और आगेभीनहींदेखैंगे इति ॥ ५२ ॥ ❀ ।। शंका—हे भगवन् ! तेइंद्रादिकदेवता इसआपकेविश्वरूपकूं किस कारणतें पूर्व नहींदेखतेभयेहैं तथाआगेनहीं देखैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ मैंपरमेश्वरकीअनन्यभक्तितैंरहितहोणेतैं तेदेवता इसहमारेविश्वरूपकूं पूर्वनहींदेखतेभयेहैं तथा आगेनहीं देखैंगे ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ॥ ५३ ॥ न । अहम् । वेदैः । न । तपसा । न । दानेन । न । च । इज्यया । शक्यः । एवंविधः । द्रष्टुम् । दृष्टवानसि । माम् । यथा ॥ ५३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तूं जिसप्रकारतें मैंविश्वरूपकूं देखताभयाहै इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर वेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथातपकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथादानकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथा अग्निहोत्रादिककर्मकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं ॥ ५३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । मैंविश्वरूपपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं तूं अर्जुन अबी देखताभयाहै इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर ऋगादिकच्यारिवेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा तुलापुरुष कन्या गौ सुवर्ण अन्न इत्यादिकपदार्थोंकेदानकरिकैभी मैंदेखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा अग्निहोत्रादिकश्रौतस्मार्तकर्मोंकरिकैभी मैंदेखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तहांपूर्व (नवेदयज्ञाध्ययनैः) इसश्लोकविषे जोअर्थ कथनकऱ्याथा सोईहीअर्थ (नाहंवेदैर्नतपसा) इसश्लोकविषे जोअबी पुनःकथनकऱ्याहै सो तिसविश्वरूपकेदर्शनकीअत्यंतदुर्लभताकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥

वपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ इति । अर्जुनम् । वासुदेवः । तथा । उक्त्वा । स्वकम् । रूपम् । दर्शयामास । भूयः । आश्वासयामास । च । भीतम् । एनम् । भूत्वा । पुनः । सौम्यवपुः । महात्मा ॥ ५० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेधृतराष्ट्र सोकृष्णभगवान् अर्जुनके प्रति इसप्रकारकावचन कहिकै तिसीप्रकारका आपणा चतुर्भुजरूप पुनः दिखावताभया तथा सोपरमकृपालुभगवान् पुनः तिससौम्यशरीरवाला होईकै भययुक्त इसअर्जुनकूं आश्वासनकरताभया ॥ ५० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! सोवासुदेवकृष्णभगवान् ताअर्जुनकेप्रति यहपूर्वउक्तवचनकहिकै ताविश्वरूपधारणतैंपूर्व जिसप्रकारकेरूपवालाथा तिसीप्रकारआपणारूप ताअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया अर्थात् मस्तकऊपरिकिरीटकूंधारणकरणेहारा तथाकानोंविषे मकराकृतिकुंडलोंकूंधारणकरणेहारा तथाच्यारोंभुजावोंविषे शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूंधारणकरणेहारा तथा श्रीवत्स कौस्तुभ वनमाला पीतांबर इत्यादिकोंकरिकैशोभायमान इसप्रकारके आपणेपूर्वलेरूपकूं तिस अर्जुनके प्रति पुनः दिखावताभया ॥ तथा सोमहात्माकृष्णभगवान् अर्थात् परमकारुणिक तथासर्वकाईश्वर तथासर्वज्ञ इत्यादिककल्याणोंकाआकाररूप श्रीकृष्णभगवान् पुनः सौम्यवपुहोइकै अर्थात् परमअनुग्रहरूपशरीरवालाहोइकै पूर्वविश्वरूपकेदर्शनतैंभयकूंप्राप्तहुएअर्जुनकेप्रति धैर्ययुक्तवचनोंकरिकै आश्वासनकरताभया इति ॥ ॥५०॥ ❀ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान्के तिस पूर्वले चतुर्भुजस्वरूपकेदर्शनतैंअनंतरसोअर्जुन भयतैंरहितहोइकै श्रीकृष्णभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥ इदानीमस्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥ दृष्ट्वा । इदम् । मानुषम् । रूपम् । तव । सौम्यम् । जनार्दन । इदानीम् । अस्मि । संवृत्तः । सचेताः । प्रकृतिम् । गतः ॥५१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेजनार्दन ! तुम्हारे इस मानुष सौम्य रूपकूं देखिकै अबी मैंअर्जुन अव्याकुलचित्त हुवा हूं तथा स्वस्थताकूं प्राप्तहुआहूं ॥ ५१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे जनार्दन ! तुम्हारे इससौम्यमानुषरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन अबी सचेता हुआहूं अर्थात् पूर्वविश्वरूपकेदर्शनजन्यभयकरिकैकरेहुएव्यामोहकेअभाव करिकै अबीमैं चित्तकीव्याकुलतातैंरहितहुआहूं ॥ तथा मैंअर्जुन अबीप्रकृतिकूंप्राप्तहुआहूं अर्थात् तिसभयजन्यव्यथातैंरहितहोणेतैं स्वस्थभावकूंप्राप्तहुआहूं इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनऊपरिकऱ्याजो विश्वरूपकादर्शनरूपअनुग्रहहै ताअनुग्रहकीदुर्लभताकूं श्रीभगवान् अबच्यारिश्लोकों करिकै कथनकरैंहैं ।

विसर्गोंकालोपहै सोछांदसहै ॥ और यद्यपि एकनकारकेपठनतैंही अध्ययन दान क्रिया तप इनसर्वोंकानिषेध होइसकैहै तथापि अध्ययन दान क्रिया तप इनच्यारोंकेसाथि जो भिन्नभिन्न नकारकापठनकऱ्याहै सो तिसविश्वरूपकेदर्शनविषे तिनअध्ययनादिकोंकेनिषेधकी दृढतावासतै कथनकऱ्याहै ॥ और (नचक्रियाभिः) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै सोचकार इहांनहींकहेहुएदूसरेसाधनोंकाभी समुच्चयकरणेवासतैहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना दूसरेकिसीभीसाधनकरिकै यहहमाराविश्वरूप देख्याजातानहीं इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन ! तुम्हारेअनुग्रहवासतै मैंपरमेश्वरनैं प्रगटकऱ्याजोयह आपणा विश्वरूपहै तिसहमारेविश्वरूपकरिकै जोकदाचित् तुम्हारेकूं उद्वेगप्राप्तहुआहै तौ मैंपरमेश्वर इसआपणेविश्वरूपका अभी उपसंहारकरताहूं ॥ तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वारूपंघोरमीदृङ्ममेदम् ॥ व्यपेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदंप्रपश्य ॥ ४९ ॥

मा । ते । व्यथा । मा । च । विमूढभावः । दृष्ट्वा । रूपम् । घोरम् । ईदृक् । मम । इदम् । व्यपेतभीः । प्रीतमनाः । पुनः । त्वम् । तत् । एव । मे । रूपम् । इदम् । प्रपश्य ॥ ४९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरके इसप्रकारके इस घोर रूपकूं देखकै तैंअर्जुनकूं व्यथा मतहोवौ तथा विमूढभावभी मतहोवौ किंतु भयतैंरहित प्रसन्नमनहुआ तूं अर्जुन पुनः मैंपरमेश्वरके तिसपूर्वले इस रूपकूं ही देख ॥ ४९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! अनेकबाहुमुखादिकोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतभयानक जोयहहमाराविश्वरूपहै तिसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकैस्थितहुआजोतूंअर्जुनहै तिसतुम्हारेकूं व्यथा मतप्राप्तहोवौ अर्थात् भयरूपनिमित्ततैंउत्पन्नभईजा पीडाहै सापीडा मतप्राप्तहोवौ ॥ तथा मेरेइसविश्वरूपकेदर्शनहुएभी जोतुम्हारेकूं विमूढभाव प्राप्तहुआहै अर्थात् व्याकुलचित्तपणा तथाअपरितोष प्राप्तभयाहै सोविमूढभावभी तुम्हारेकूं मतप्राप्तहोवौ किंतु भयतैंरहितहोइकै तथाप्रसन्न मनहोइकै तूंअर्जुन पुनःतिसीहमारे चतुर्भुजरूपकूंदेख अर्थात् इसविश्वरूपतैंपूर्व तूंअर्जुन जिसहमारे चतुर्भुजवासुदेवरूपकूं सर्वदा देखताथा तिसीहमारेचतुर्भुजरूपकूं तूंअबी भयतैंरहितहोइकै तथासंतोषयुक्तहोइकै देख ॥ इहां भयतैंरहितपणा तथा संतोष यहदोनों श्रीभगवान्नैं (प्रपश्य) इसवचनविषेस्थित प्र इस शब्दकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ अब संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) संजयउवाच ॥ इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शयामासभूयः ॥ आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्य

धृतराष्ट्रकेगृहविषे भीष्मादिकोंकूभी यहविश्वरूप आपनै दिखायाथा ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे यशोदामाताकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ तथा अक्रूरकूंभी यहविश्वरूप आपने दिखायाथा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ हेअर्जुन ! तिनभीष्मादिकोंकू जोहमनै विश्वरूपदिखायाथा सोइसविश्वरूपका एकअवांतररूपहीथा ॥ यातैं सोरूप सर्वतैंउत्तमनहींथा ॥ औरयहजोविश्वात्मकरूप हमनैं तुम्हारेकूंदिखायाहै सोसर्वतैं श्रेष्ठहै ॥ दूसरेकिसीनैभी पूर्व यहरूप देख्यानहीं इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥ (यन्मेइति) हेअर्जुन ! जोयह हमाराविश्वात्मकरूप तुम्हारेतैं अन्यकिसीनैभी पूर्वदेख्यानहीं सोयहविश्वात्मकआपणास्वरूप मैंपरमेश्वरनैं कृपाकरिकै तैं अर्जुनकेताई अबी दिखायाहै इति ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन ! इसविश्वरूपकादर्शनरूप जो अत्यंतदुर्लभ हमाराप्रसादहै तिसहमारे प्रसादकूंप्राप्तहोइके तूंअर्जुन अब कृतार्थही हुआहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अब ताविश्वरूपकीदुर्लभताकूं कथनकरै है ।

(मू. श्लो.) नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥ एवंरूपःशक्यअहंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ न । वेदयज्ञाध्ययनैः । न । दानैः । न । च । क्रियाभिः । न । तपोभिः । उग्रैः । एवम् । रूपः । शक्यः । अहम् । नृलोके । द्रष्टुम् । त्वदन्येन । कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकुरुवंशविषेअतिशूरवीरअर्जुन ! इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारके विश्वरूपवाला मैंभगवान तुम्हारेतैंअन्यपुरुषनैं वेदोंकेतथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथादानोंकरिकै नहीं देखणेकूं शक्यहूं तथा कर्मोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं तथाउग्र तपोंकरिकै नहीं देखणेकूंशक्यहूं ॥ ४८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंका जो गुरुमुखतैंअक्षरोंकाग्रहणरूप अध्ययनहै तथा पूर्वमीमांसा कल्पसूत्र इत्यादिकोंकरिकै वेदबोधितकर्मरूपयज्ञोंका जो अर्थविचाररूपअध्ययनहै तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै तथा तुलापुरुषदान कन्यादान गौसुवर्णअन्नदान इत्यादिकदानोंकरिकै तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्तकर्मोंकरिकै तथा कायइंद्रियोंकेशोषकहोणेतैं करणेविषे अत्यंतकठिन ऐसेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ऐसेतपोंकरिकै इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर तुम्हारेतैंअन्यपुरुषोंनै देखणेकूं अशक्यहूं अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंरहितपुरुष वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथावेदप्रतिपादितकर्मोंकेयथार्थज्ञानकरिकै तथादानोंकरिकै तथाउग्रतपोंकरिकै मेरेइसविश्वरूपकूं देखिसकतेनहीं ॥ ऐसाअत्यंतदुर्लभ यहविश्वरूप हमनैं कृपाकरिकै तुम्हारेकूंदिखायाहै ॥ तिसरूपकेदर्शनतैं अबी तूं कृतार्थहुआहै इति ॥ तहां मूलश्लोकविषे (शक्यः अहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहम्) इसप्रकारकावचनही करणेयोग्यथा ॥ तथापि (शक्यअहम्) इसवचनविषेजो शक्य इसपदतैउत्तर

॥ ४६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् ! मैंअर्जुनें किरीटवाले तथागदावाले तथाचक्रहैहस्तविषेजिनके ऐसेंतुम्हारेकूं पूर्वकीन्याईं ही देखणेकूं इच्छताहूं यातैं हेसहस्रबाहुवाला हेविश्वमूर्त्ति अबी आप तिसेंपूर्वले चतुर्भुज रूपकरिके ही प्रगट होवो ॥ ४६ ॥ इतिप० ॥

टीका ! हेभगवन् ! किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रहैहस्तविषेजिसके ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैंअर्जुन इस विश्वरूपतैंपूर्व जैसे देखताभ याहूं तिसीआपकेसुंदरस्वरूपकूं अबी मैं अर्जुन देखणेकीइच्छाकरताहूं ॥ यातैं हेसहस्रबाहो अर्थात् हे अनेकसहस्रभुजावोंवाला ॥ तथा हेविश्वमूर्ते अर्थात् हेसर्व विश्वरूपमूर्तिकूंधारणकरणेहारा श्रीभगवान् अबीइसकालविषे इसआपकेविश्वरूपकाउपसंहारकरिके तिसपूर्वलेचतुर्भुजस्वरूपकरिके प्रगटहोवो ॥ इतनेकहणे करिके यह अर्थसूचनकऱ्या अर्जुननैं सर्वकालविषे श्रीभगवान्का चतुर्भुजादिकस्वरूपही देखियेहै इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकरिकेप्रार्थना कऱ्याहुआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं भयकरिकेपीडितहुआदेखिके तिसविश्वरूपकाउपसंहारकरिके उचितवचनोंकरिके तिसअर्जुनकूं आश्वासनकरताहुआकहैहै ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरंदर्शितमात्मयोगात् ॥ तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्ट पूर्वम् ॥४७ ॥ मया । प्रसन्नेन । तव ।अर्जुन । इदम्। रूपम्। परम् । दर्शितम् ।आत्मयोगात् । तेजोमयं । विश्वम् । अनंतम् । आद्यं। यत् । मे । त्वदन्येन । न । दृष्टपूर्वम् । ॥४७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! प्रसन्नतावालेमैंपरमेश्वरनैं आपणेसामर्थ्यतैं तुम्हारेताईं यहविश्वात्मक श्रेष्ठ रूप दिखायाहै कैसाहैसोरूप तेजोमयहै तथासर्वविश्वरूपहै तथाअनंतहै तथाअनादिहै जोरूप हमारा तुम्हारेतैंअन्यकिसीनैंभी नहींपूर्वदेख्याहै ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! तूं इसहमारेविश्वरूपकूंदेखिके भयकूंमतप्राप्तहोउ ॥ कोई तुम्हारेकूंभयकीप्राप्तिकरणेवास्ते मैंनेंयहविश्वरूप दिखायानहीं किंतु प्रसन्नता वाले मैंपरमेश्वरनैं अर्थात् तैं अर्जुनविषयकअतिशयकृपावाले मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकोताईं यहआपणा विश्वरूपात्मकश्रेष्ठरूप आपणेसामर्थ्यतैं दिखायाहै सो केवल तुम्हारेऊपरिकृपादृष्टिकरिकैही दिखायाहै ॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिके ताविश्वरूपविषे कथनकऱ्याजोश्रेष्ठत्वरूपपरत्वहै तिसीपरत्वकूंही अब स्पष्ट करिकेकथनकरै हैं ॥ (तेजोमयमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोहमाराविश्वरूप तेजोमयहै अर्थात् कोटिसूर्यकेप्रकाशसमानहैप्रकाशजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोरूप विश्वहै अर्थात् सर्वविश्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप आदिअंततैंरहितहै ॥ ऐसाअपणाविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं केवल तैंअत्यंतप्रियभक्तअर्जुनकेताईंही दिखायाहै । शंका—हेभगवन् ! यहविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रसन्नहोइकै केवल तैंअर्जुनकेताईंही दिखायाहै ॥ यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं

नियंताहो ॥ पुनःकैसेहोआप ईड्यहो अथात् ब्रह्मादिकदेवतावोंकरिकैभी स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसकारणतैं हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ जैसे पुत्रके अपराधकूं पिता क्षमाकरैहै ॥ तथा जैसे सखाकेअपराधकूं सखा क्षमाकरैहै ॥ तथा जैसे पतिव्रताप्रियाकेअपराधकूं पति क्षमाकरैहै ॥ तैसे मैंअर्जुनकेअपराधकूंभी आपपरमेश्वर क्षमाकरणेकूंयोग्यहो ॥ जिसकाणतैं मैंअर्जुन केवल तुम्हारेहीशरणहूं ॥ अन्यकिसीकेशरणहूंनहीं ॥ तिसकारणतैं आप हमारेअपराधकूं क्षमाकरणेयोग्यहो इति ॥ इहां (प्रियायार्हसि) इसवचनविषे वत् इसशब्दकालोप तथा विसर्गोंकेलोपहुएभी संधि यहदोनों छांदसहैं इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति आपणेअपराधकेक्षमाकीप्रार्थनाकरिकै पुनः श्रीभगवान्केप्रति तिसविश्वरूपकेउपसंहारपूर्वक पूर्वलेरूपकेदर्शनकीप्रार्थना दोश्लोकोंकरिकै करैहै ।

(मू. श्लो.) अदृष्टपूर्वंहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितंमनोमे ॥ तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥ अदृष्टपूर्वम् । हृषितः । अस्मि । दृष्ट्वा । भयेन । च । प्रव्यथितम् । मनः । मे । तत् । एव । मे । दर्शय । देव । रूपम् । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ ४५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् ! पूर्वकबीभीनहीं देखेहुएइसविश्वरूपकूं देखके मैंअर्जुन हर्षवान् हुआहूं तथा भयकरिकै मेरा मन व्याकुलहुआहै यातैं मैंअर्जुनकेताई सोपहला रूप ही दिखावो हेदेव हेदेवेश हेजगन्निवास मेरेऊपरि प्रसादकूंकरौ ॥ ४५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! मैंअर्जुननैं पूर्व कदाचित्भीनहीं देख्याहुआ ऐसा जो आपकायहविश्वरूपहै ॥ तिसआपकेविश्वरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन हर्षकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ तथा तिसविकरालरूपकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाजोभयहै तिसभयकरिकै हमारामन व्याकुलहोताभयाहै ॥ यातैं हेभगवन् ! मैंअर्जुनकेताईं सोप्राणोंतैंभीप्रिय आपणा पूर्वलारूपही दिखावो ॥ हे देव ! अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ इथा हेदेवेश ! अर्थात् हेसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्‌काआधाररूप ॥ मैंअर्जुनउपरि तिसपूर्वलेरूपकादर्शनरूपप्रसादकूंकरौ इति ॥ ४५ ॥ ❀ अब जिसपूर्वलेरूपकेदर्शनकी अर्जुननैं प्रार्थनाकरीहै तिसरूपकूं सोअर्जुन विशेषणोंकरिकैकथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) किरीटिनंगदिनंचक्रहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥ तेनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥ किरीटिनं । गदिनं । चक्रहस्तम् । इच्छामि । त्वां । द्रष्टुम् । अहं । तथा । एव । तेन । एव । रूपेण । चतुर्भुजेन सहस्रबाहो । भव । विश्वमूर्ते

दूसराकोईहैनहीं तो तिनतीनलोकोंविषेतैंपरमेश्वरतैं अधिक दूसरा कोईकहांतैंहोवैगा किंतु कोईभीअधिकनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहै नहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोई अंगीकारकरिये तौ सोदूसराभी ईश्वरहीसिद्धहोवैगा ॥ तहां एकईश्वरतो इसजगत्केउत्पन्नकरणे कीइच्छाकरैगा ॥ और दूसराईश्वर तिसीकालविषे इसजगतकेसंहारकरणेकीइच्छाकरैगा ॥ यातैं कोईभीव्यवहार सिद्धनहींहोवैगा किंतु सर्वव्यवहारोंकालो पहोवैगा ॥ यातैं तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोई हैनहीं ॥ जबी तीन्लोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभीकोईनहींभया तबी तुम्हारेतैंअधिक कौनहोवैगा किंतु सर्वप्रकारकरिकै तुम्हारेतैंअधिक कोईहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नत्वत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकेसमानभी कोईदेखणेविषेआवतानहीं ॥ तथा तिसपरमेश्वरतैं अधिकभी कोईदेखणेविषे आवतानहीं इति ॥ तहां तैंपरमेश्वरकेसमानपुरुषकाही असंभवहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे अर्जुन हेतुकहैहै (हेअ प्रतिमप्रभावइति) इहां सादृश्यकानाम प्रतिमाहै ॥ सासादृश्यरूपप्रतिमानहींहै विद्यमानजिसकूं ताकानाम अप्रतिमहै ॥ ऐसाअप्रतिमहैप्रभावक्या सामर्थ्य जिसका ताकानाम अप्रतिमप्रभावहै इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आप ऐसेहो तिसकारणतैं मैंअर्जुन आपणे अपराधोंकूंक्षमाकरावणेवासतै आपकेआगेदं डवत्प्रणामकरिकै प्रार्थनाकरताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुनकहैहै ।

(मू. श्लो.) तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायंप्रसादयेत्वामहमीशमीड्यम् ॥ पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युःप्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुम् ॥४४॥ तस्मात् । प्रणम्य । प्रणिधाय । कायम् । प्रसादये । त्वाम् । अहम् । ईशम् । ईड्यम् । पिता । इव । पुत्रस्य । सखा । इव । सख्युः । प्रियः । प्रियायाः । अर्हसि । देव । सोढुम् ॥ ४४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! तिसकारणतैं तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथाआपणेदेहकूं भूमिविषेदंडकीन्याई धारणकरिकै मैंअर्जुन सर्वोंकरिकैस्तुतिकरणेयोग्य तैं ईश्वरकूं प्रसन्नहोवो ऐसीप्रार्थनाकरूंहूं इसकारणतैं हेदेव पुत्रकेअपराधकूं पिताकी न्याई तथासखाकेअपराधकूं सखाकी न्याई तथाप्रियाकेअपराधकूं पतिकीन्याई हमारेअपराधकूं आप क्षमाकरणेकूं योग्यहो ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वलोकका पितारूप है ॥ तथा सर्वकागुरुरूपहै ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथा आपणीकायाकूं अत्यंतनीचेधारणकरिकै अर्थात् दंडकीन्याई भूमिविषेपतनहोइकै तैंपरमेश्वरकेप्रसन्नताकीप्रार्थना करताहूं अर्थात् मैंअपराधीअर्जुन तिन आपणेअपराधोंकीक्षमाकरावणेवासतै मैंअर्जुनऊपरि आप प्रसन्नहोवो याप्रकारकीप्रार्थना आपकेआगेकरताहूं ॥ कैसेहोआप ईशहो अर्थात् इससर्वजगत्क

यत् । च । अवहासार्थम् । असत्कृतः । असि । विहारशय्यासनभोजनेषु । एकः । अथवा । अपि । अच्युत । तत्समक्षम् । तत् क्षामये । त्वाम् । अहम् । अप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अच्युत ! तथा परिहासकेवासतै विहारशय्याआसनभोजनविषे एकलास्थितहुआ अथवा कदाचित् तिनसखावोंकेसन्मुखास्थितहुआ तूं परमेश्वर मैंअर्जुननैं जो पराभवकऱ्या है सोसर्वअपराध मैंअर्जुन तैं अप्रमेयकेप्रति क्षमाकरावताहूं ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अच्युत ! अर्थात् हेसर्वदानिर्विकार ॥ क्रीडारूपजोविहारहै तिसविहारविषे तथा वस्त्रतूलिकादिकोंकरिकैरचीहुईजा शयनकरणेकास्थानरूप शय्याहै तिसशय्याविषे तथा सिंहासनादिरूप जोआसनहै ताआसनविषे तथा सजातीयबहुतपुरुषोंकीपंक्तिविषे अन्नकाभक्षणरूपजोभोजनहै ताभोजनविषे सर्वसखावोंकूंछोडिकैएकलेस्थितहुएआपका अथवा परिहासकरतेहुए तिनसखावोंकेसमीपस्थितहुए आपका मैंअर्जुननैं उपहासकेवासतै जोपराभवकऱ्याहै तेअनुचितवचनरूप सर्वअपराध अथवा असत्करणरूप सर्वअपराध मैं अर्जुन तुम्हारेतैं क्षमाकरावताहूं ॥ कैसेहोआप अप्रमेयहो अर्थात् अचिंत्यप्रभाववालेहो ॥ तात्पर्ययह ॥ अचिंत्यप्रभाववाला तथा सर्वविकारोंतैं रहित तथापरमकृपालुरूप ऐसेआपपरमेश्वरनैं तुम्हारेप्रभावकूंनजानणेहारेमैंअर्जुनके तेसर्वअपराध क्षमाकरणे इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति सापूर्वउक्त अचिंत्यप्रभावता स्पष्टकरिकैवर्णनकरैहै ।

(मू. श्लो.) पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्वत्समोस्त्यभ्यधिकःकुतोन्योलोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ॥ ४३ ॥ पिता । असि । लोकस्य । चराचरस्य । त्वम् । अस्य । पूज्यः । च । गुरुः । गरीयान् । न । त्वत्समः । अस्ति । अभ्यधिकः । कुतः । अन्यः । लोकत्रये । अपि । अप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेउपमातैंरहितप्रभाववाला इस चराचररूप सर्वलोकका तूं पितारूप है तथा पूज्यहै तथागुरुरूपहै तथा गुरुतरहै तीनलोकविषे तुम्हारेसमान भी कोईअन्य नहीं है तौ तुम्हारेतैं अधिक कहांतैंहोवै ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! इसस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्मात्रका तूं पिताहै अर्थात् जनकहै ॥ तहांश्रुति॥(यतोवाइमानिभूतानिजायंते) ॥ अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहसर्वभूतप्राणी उत्पन्नहोवैं हैं ॥ इत्यादिकश्रुतियां तैंपरमेश्वरकूं सर्वजगत्‌काजनककहैं हैं ॥तथा सर्वकाईश्वरहोणेतैं आपही पूज्यहो ॥ तथा आपही सर्वशास्त्रकेउपदेशकरणेहारे गुरुरूपहो॥इसी कारणतैंही सर्वप्रकारकरिकै आप गुरुतरहो अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टहो ॥ इसीकारणतैंही हे भगवन् ! तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभी

कह्याजावैहै अर्थात् तैंपरमेश्वरतैंअतिरिक्त कोईभीवस्तुनहीं है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ हेभगवन् ! जिस कारणतैं मैं अर्जुन तैंपरमेश्वरकेमाहात्म्यकेअज्ञानतैं तुम्हारे अनेकअपराधोंकूं करताभयाहूं तिसकारणतैं परमकृपालुरूप तैंपरमेश्वरकूं दंडवत्प्रणामकरिकै मैंअर्जुन तिनआपणेअपराधोंकीक्षमा करताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै कहै है ।

(मू. श्लो.) सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तंहेकृष्णहेयादवहेसखेति ॥ अजानतामहिमानंतवेदंमयाप्रमादात्प्रणयेनवापि ॥ ४१ ॥

सखा।इति। मत्वा। प्रसभम्। यत्। उक्तम्। हेकृष्ण।हेयादव । हेसखे । इति ।अजानता। महिमानम्। तव । इदम् । मया। प्रमादात्। प्रणयेन। वा। अपि ॥ ४१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन्! तुम्हारे इसविश्वरूपकूं तथाऐश्वर्यरूपकूं नजानणेहारे मैंअर्जुननें यहकृष्णहमारासखाहै इसप्रकार मानिकै चित्तकेविक्षेपतैं अथवा स्नेहकरिकै भी जे हेकृष्ण! हेयादव ! हेसखे ! इसप्रकारके अभिभवपूर्वकवचन कहेहैं तेसर्व आप क्षमाकरो ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हेभगवन् ! यहकृष्णभगवान् हमारा सखाहै अर्थात् समानवयवालाहै अथवा हमारेमामेकापुत्रहै ॥ इस प्रकारका तुम्हारेकूं मानिकै हमनैं आपणेचित्तकेविक्षेपरूपप्रमादतैं अथवा स्नेहकरिकै आपकेप्रति जेप्रसभवचनकथनकरेहैं अर्थात् आपणी उत्कृष्टताकाख्यापनरूपअभिभवकरिकै जेअनुचित वचन कथनकरेहैं तेसर्वहमारे अपराध आप क्षमाकरो ॥ शंका–हेअर्जुन ! ऐसेअनुचितवचन तुमनैं किसहेतुतैं कथनकरेहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकेकहणेविषे हेतुकूं कथनकरै है ॥ (अजानतामहिमानंतवेदमिति) हेभगवन् ! जिसकारणतैं तुम्हारे इसविश्वरूपकूं तथातुम्हारेऐश्वर्यरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्व जानतानहींथा ॥ इसकारणतैं मैंअर्जुन आपकेप्रति तेअनुचितवचन कहताभयाहूं ॥ शंका–हेअर्जुन ! तुमनैं हमारेकूं ऐसेकौनअनुचितवचन कहे हैं ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकास्वरूप कथनकरै है (हेकृष्णहेयादवहेसखेइति) हेभगवन् ! सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहारे तथाब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकेभीगुरुरूप ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैं अर्जुन हेकृष्ण ! हेयादव ! हेसखे ! इसप्रकारकेसंबोधनोंकरिकै बुलावताभयाहूं इति ॥ तहां किसीमूलपुस्तकविषे (महिमानंतवेमं) याप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेतौ (महिमानम् इमम्) इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यही जानणा अर्थात् तुम्हारे इसविश्वरूपमहिमाकूं मैंअर्जुन पूर्वजानतानहींथा इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु ॥ एकोथवाप्यच्युततत्समक्षंतत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥

(मू. श्लो.) नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः ॥ ४० ॥ नमः । पुरस्तात् । अथ । पृष्ठतः । ते । नमः । अस्तु । ते । सर्वतः । एव । सर्व । अनंतवीर्यामितविक्रमः । त्वं । सर्वम् । समाप्नोषि । ततः । असि । सर्वः । ॥ ४० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेसर्व तुम्हारेताईं अग्रभागविषे हमारा नमस्कार होवउ तथा पृष्ठविशेभी नमस्कार होवउ तथा तुम्हारेताईं सर्वदिशावोंविषे ही नमस्कारहोवउ तूंपरमेश्वर अनंतवीर्यअमितविक्रमवालाहै तथातूं इससर्वजगतकूं व्याप्तकरै है तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व कह्याजावै है ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका ! हेसर्व ! अर्थात् हेसर्वात्मारूपभगवन् ! मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताईं अग्रभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताईं पृष्ठभागविषेभीनमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताईं सर्वदिशावोंविषे नमस्कारहोवौ ॥ इहां यद्यपि सर्वात्मारूपव्यापकपरमेश्वरके अग्रभागपृष्ठभागादिक संभवतेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकेही तेअग्रभागादिकहोवैं हैं तथापि अर्जुननैं तिससर्वात्मारूप परमेश्वरके तेअग्रभागादिककल्पनाकरिकै कथन करें हैं ॥ वास्तवतैं तासर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिकहैंनहीं इति ॥ और किसिटिकाविषेतौ (पुरस्तात्) इसपदका कर्मोंकेआदिविषे यहअर्थ कऱ्या है ॥ और (पृष्ठतः) इसपदका तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषे यहअर्थकऱ्याहै ॥ और (सर्वतः) इसपदका तिनकर्मोंकेमध्यविषे यहअर्थकऱ्याहै अर्थात कर्मोंकेआदिविषेभी तैं परमेश्वरकेताईं हमारानमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषेभी तैंपरमेश्वरकेताईं हमारानमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंके मध्यविषेभी तैंपरमेश्वरकेताईं हमारा नमस्कारहोवौ ॥ इसव्याख्यानविषे तिस सर्वात्मारूपपरमेश्वरके अग्रभागादिक कल्पनाकरेजावैंनहीं इति ॥ हेभगवन् आपकैसेहो अनंतवीर्यअमितविक्रमहो ॥ तहां अनंतहै वीर्यजिसका तथाअमितहैविक्रमजिसका ताकानाम अनंतवीर्यअमितविक्रमहै ॥ तहांशरीरके बलका नाम वीर्यहै ॥ और शिक्षाशस्त्रोंके प्रयोगकीजाकुशलताहै ताकानाम विक्रमहै ॥ तहांएकवीर्यकरिकैही अधिकता तथाएकविक्रमकरिकैही अधिकता तौ भीम दुर्योधनादिकोंविषे तथाअन्यराजावोंविषेभी विद्यमानहै परंतु अनंतवीर्यकरिकैअधिकता तथा अमितविक्रमकरिकैअधिकता आपपरमेश्वरतैंविना दूसरेकिसीविषेहैनहीं किंतु एकआपविषेही है अथवा (अनंतवीर्य अमितविक्रमः) यहदोपदजानणे तहां अनंतवीर्य यहपदतौ हेअनंतवीर्य ! याप्रकारतैं श्रीभगवान्का संबोधनहै इति ॥ तहां अर्जुननैं श्रीभगवान्का (हेसर्व) यहसंबोधन कथनकऱ्याथा तासर्वशब्दकेअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरै है (सर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः इति) हेभगवन ! जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वजगतकूं आपणेसत्ता स्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकरि रह्याहै तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व इसनामकरिकै

हे भगवन् ! जितनाकयहदृश्यप्रपंचहै सोभीतूंही है अर्थात् ज्ञानस्वरूप तैंपरमेश्वरविषे इसजडरूपदृश्यप्रपंचका कोईभीवास्तव संबंध हैनहीं यातैं यहसर्वदृश्यप्रपंच तैंपरमेश्वरविषे कल्पितही है॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंपृथक्‌होवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्‌होवैंनहीं ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ इसीकारणतैंही आप परमधामहो अर्थात् सत्चित्‌आनंदघन तथाकार्यसहितअविद्यातैंरहित जोव्यापकविष्णुका परमपदहै सोपरमपदभी आपहीहो ॥ हे भगवन् स्वतःसत्तास्फूर्तितैंरहितजोयहसर्वविश्वहै सोयहसर्वविश्व स्थितिकालविषे मायिकसंबंधकरिकै तैंसत्तास्फुरणरूपकारणनैंही व्याप्तकऱ्याहै॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणेइदम्‌रूपकरिकै कल्पितसर्पदंडादिक व्याप्तकरे हैं तैसे तैंपरमेश्वरनैंही आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यहसर्वजगत्‌व्याप्त कऱ्याहै इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्‌की सर्वदेवतारूपकरिकै स्तुतिकरै है ।

(मू. श्लो.) वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥ नमोनमस्तेऽस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोऽपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥

वायुः । यमः । अग्निः । वरुणः । शशांकः । प्रजापतिः । त्वम् । प्रपितामहः । च । नमः । नमः । ते । अस्तु । सहस्रकृत्वः । पुनः । च । भूयः । अपि । नमः । नमः । ते ॥ ३९ ॥ प्रतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! वायु यम अग्नि वरुण चंद्रमा प्रजापति तथा प्रपितामह इत्यादिकसर्वदेवतारूप तूं परमेश्वरही है यातैं तैंपरमेश्वरकेताईं हमारा अनेकसहस्रवार नमस्कार नमस्कार होउ तथा तुम्हारेताईं पुनः भी वारंवार नमस्कार नमस्कार होउ ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! तूं परमेश्वरही वायुरूपहै॥ तथा तूंपरमेश्वरही यमरूपहै ॥ तथा तूंपरमेश्वरही अग्निरूपहै ॥ तथा तूंपरमेश्वरही वरुणरूपहै ॥ तथा तूंपरमेश्वरही चंद्रमारूपहै ॥ इहां (शशांकः) यहशब्द सूर्यादिकदेवतावोंकाभी उपलक्षकहै अर्थात् तूंपरमेश्वरही सूर्यादिकसर्वदेवतारूपहै ॥ तथा तूंपरमेश्वरही प्रजापतिरूपहै इहां (प्रजापतिः) इसशब्दकरिकै विराट्‌काग्रहणकरणा अथवा हिरण्यगर्भकाग्रहणकरणा अथवा दक्षादिकोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा तूंपरमेश्वरही प्रपितामहरूपहै ॥ अर्थात् तिसहिरण्यगर्भकाभी पितारूपजोकारणब्रह्महै सोभीतूंपरमेश्वरही है ॥ हे भगवन् ! जिसकारणतैं सर्वदेवतारूपहोणेतैं तूंपरमेश्वर सर्वप्राणियोंकरिकै नमस्कारकरणेयोग्यहै तिसकारणतैं मैंअत्यंतअनाथअर्जुनकाभी तुम्हारेताईं अनेकसहस्रवार नमस्कारहोउ नमस्कारहोउ ॥ तथा पुनःभी आपकेताईं वारंवार नमस्कारहोउ नमस्कारहोउ ॥ इहां पुनःपुनः नमस्कारोंकीआवृत्तिकरिकै अर्जुननैं भक्तिश्रद्धापूर्वक भगवत्‌केनमस्कारोंविषे अलंबुद्धिकाअभाव सूचनकऱ्या अर्थात् तैंपरमेश्वरकेताईं श्रद्धाभक्तिपूर्वक पुनःपुनःनमस्कारोंकेकरणेतैं मैंअर्जुनकीतृप्तिहोतीनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ किंच ।

जोवस्तु प्रतीतिहोवैहै तावस्तुकानाम असत्है अथवा व्यक्तकानाम सत्है ॥ और अव्यक्तनाम असत्है ॥ सोसत्असत्रूपभी आपहीहो ॥ तथा तिस सत्असत्तैंभी सूक्ष्मजोसर्वकामूलकारणरूप अक्षरब्रह्महै सोअक्षरब्रह्मभी आपहीहो ॥ तैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुनहीं हैं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म) अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपही है इति ॥ हे भगवन् ! इसपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंकरिकै तेसिद्धादिकसर्वलोक तैंपरमेश्वरकेताईं नमस्कारकरैं हैं ॥ तथा अत्यंतहर्षकूं तथा अनुरागकूं करैं हैं इसविषे कोई आश्चर्यनहींहै इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब अत्यंतभक्तिकेवेगतैं सोअर्जुन पुनःभी श्रीकृष्णभगवान्कीस्तुतिकरै है ।

(मू. श्लो.) त्वमादिदेवःपुरुषःपुराणस्त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ वेत्तासिवेद्यंचपरंचधामत्वयाततंविश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥

त्वम् । आदिदेवः । पुरुषः । पुराणः । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परम् । निधानम् । वेत्ता । असि । वेद्यम् । च । परम् । च । धाम । त्वया । ततम् । विश्वम् । अनंतरूप ॥ ३८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अनंतरूप ! तूं परमेश्वरही आदिदेवहै तथापुरुषहै तथापुराणहैं तथातूंही इस विश्वका परम निधानहै तथासर्वके जानणेहारा है तथा सर्ववेद्यरूपहै तथा परम धामरूप है तथा तुमनैही यहसर्वविश्व व्याप्तकऱ्याहै ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अनंतरूप ! अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितस्वरूप ॥ इससर्वजगत्केउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं तुमही आदिदेवहो ॥ तथा सर्वत्र अस्तिभाति प्रियरूपकारिकै पूर्णहोणेतैं तुमही पुरुषहो ॥ अथवा सर्वशरीररूपपुरियोंविषे शयनकर्ताहोणेतैं तुमही पुरुषहो ॥ तथा तुमही पुराणहो अर्थात् अनादिहो ॥ अथवा इसशरीरकेनाशहुएभी आप नाशहोतेनहीं यातैं पुराणहो ॥ तथा तुमही इससर्वविश्वका परमनिदानहो अर्थात् इससर्वविश्वकेलयका स्थानरूपहो ॥ इहां (आदिदेवःपरंनिधानम्) इनदोनोंपदोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे सर्वजगत्के उत्पत्तिकाहेतुपणा तथालयकास्थानपणा कथनकऱ्या ॥ ताकरिकै परमेश्वरविषे सर्वजगत्का उपादानकारणपणा कथनकऱ्या ॥ काहेतैं जिसतैं कार्य उत्पन्नहोवैहै तथा जिसविषे कार्यलयहोवैहै सो उपादानकारणहीहोवैहै ॥ जैसे घटरूपकार्य मृत्तिकातैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ तथामृत्तिकाविषेही लयहोवैहै ॥ यातैं सामृत्तिका ताघटका उपादानकारणहीहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरविषे सर्व जगत्का उपादानकारणपणाकहिकै अब सर्वज्ञतारूपहेतुकरिकै सांख्यशास्त्रकल्पितजडप्रधानरूपकारणकीव्यावृत्तिकरताहुआ अर्जुन तिसपरमेश्वरविषे जगत्का निमित्तकारणपणाभी कथनकरै है (वेत्तासिइति) हे भगवन् ! सर्वज्ञहोणेतैं आपही इससर्वजगत्केजानणेहारेहो अर्थात् आपहीइससर्वजगत्का कर्तारूपनिमित्तकारणहो ॥ तहां इससर्वजगत्कूं जो परमेश्वरतैं भिन्नअंगीकारकरिये तौ द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ताद्वैतभावकीनिवृत्तिकरणेवास्तै अर्जुन कहै है (वेद्यमिति)

सोभी युक्तही है ॥ इहां सिद्ध यहशब्द देवजातिमात्रकाउपलक्षणहै अर्थात् देव ऋषि सिद्ध गंधर्व चारण इत्यादिकसर्वदेवत्वजातिवालेपुरुष हेस्वामिन् ! जोतुमनैं दुष्टजनोंकेसंहारकरणेकीप्रतिज्ञाकरी है साप्रतिज्ञा अवश्यकरिकै पूर्णकरणी याप्रकारकीप्रार्थनापूर्वक तैंपरमेश्वरकेताईं जोप्रमाणकरैं हैं सोभी युक्तही हैं इति ॥ तहां (स्थानेहृषीकेश) यहश्लोक रक्षोघ्ननामामंत्ररूपकरिकै मंत्रशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ जिसमंत्रकेअनुष्ठानकरिकै दुष्टराक्षसोंकाहननहोवे तामंत्रकानाम रक्षोघ्नमंत्रहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषे सर्वलोकोंके हर्षकीविषयता तथाअनुरागकीविषयता तथानमस्कार्यता कथनकरी ॥ अब तिसीअर्थकीसिद्धिकरणेविषे अर्जुन हेतुकहेहै ।

(मू. श्लो.) कस्माच्चतेननमेरन्महात्मन्गरीयसेब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे ॥ अनंतदेवेशजगन्निवासत्वमक्षरंसदसत्तत्परंयत् ॥ ३७ ॥

कस्मात् । च । ते । न । नमेरन् । महात्मन् । गरीयसे । ब्रह्मणः । अपि । आदिकर्त्रे । अनंत । देवेश । जगन्निवास । त्वम् । अक्षरम् । सत् । असत् । तत्परम् । यत् ॥ ३७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहात्मन् ! हेअनंत ! हेदेवेश ! हेजगन्निवास ! ब्रह्माके भी गुरुरूप तथाजनकरूप ऐसेआपकेताईं तेसर्वदेवता किसवासतै नहीं नमस्कारकरैंगे किंतुकरैंगेही हे भगवन् ! तूं ही सतरूपहै तथाअसतरूपहै तथातिनदोनोंतेंपरे जो अक्षरब्रह्महै सोभीतूं है ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेमहात्मन् ! अर्थात् हेपरमउदारचित्तवाला ॥ तथा हेअनंत ! अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ! ॥ तथा हे देवेश ! अर्थात् हेहिरण्यगर्भादिकसर्वदेवतावोंकेनियंता ! ॥ तथा हेजगन्निवास ! अर्थात् हेसर्वजगत्‌काआश्रयरूप ! ॥ तुम्हारेताईं तेसर्वसिद्धोंकेसमूह तथासर्वदेवता किसवासतै नहींनमस्कारकरैंगे किंतु आपकेताईं तिनसर्वोंकानमस्कारकरणा उचितही है ॥ कैसेहोआप सर्वजगत्‌कागुरुरूपजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी अत्यंतगुरुरूपहो ॥ तथा इससर्वजगत्‌काजनकजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी जनकहो ऐसेआपकेताईं तिनसर्वसिद्धादिकोंकानमस्कार उचितही है ॥ इहां (कस्माच्च) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोचकारहै ताचकारकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंकाभी नियंतापणा तथाउपदेष्टापणा इत्यादिकहेतुवोंविषे एकएकभीहेतु आपपरमेश्वरविषे तिनसर्वसिद्धोंकीनमस्कार्यताका प्रयोजकहै ॥ जबी एकएकभीहेतु आपविषे तानमस्कार्यताका प्रयोजकहुआ तबी महात्मापणा तथाअनंतपणा तथाजगन्निवासपणा इत्यादिकअनेकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहुआ सोहेतु आपविषे तानमस्कार्यताकाप्रयोजकहै याकेविषेक्याआश्चर्य है इति ॥ पुनःकैसेहोआप सत्‌रूपहो तथा असत्‌रूपहो ॥ तहां अस्ति इसप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवै है तावस्तुकानाम सत् है ॥ और नास्तिइसप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकरिकै

धकरणा (प्रणम्यआह) याप्रकारतैंपदोंकासंबंधकरणानहीं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ अबएकादशश्लोकोंकरिकैअर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति सोवचनकहैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥ रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यंतिच सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ स्थाने । हृषीकेश । तव । प्रकीर्त्या । जगत् । प्रहृष्यति । अनुरज्यते । च । रक्षांसि । भीतानि । दिशः । द्रवंति । सर्वे । नमस्यन्ति । च । सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेहृषीकेश ! तुम्हारी प्रकीर्तिकरिकै यहसर्वजगत् हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अनुरागकूंप्राप्तहोवैहै तथाराक्षस भयकूंप्राप्तहुए सर्वदिशावोंविषे भागेजावैहैं तथा सर्व सिद्धोंकेसमूह नमस्कारकरैं हैं यहसर्व वार्ता युक्तही है ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेहृषीकेश ! अर्थात् हेसर्वइंद्रियोंकेप्रवर्त्तक जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर अत्यंतअद्भुतप्रभाववालाहै तथाभक्तवत्सलहै तिसकारणतैं तुम्हारीप्रकीर्तिकरिकै अर्थात् तुम्हारीनिरतिशयउत्कृष्टताकेकीर्त्तनकरिकै तथाश्रवणकरिकै केवल मैंअर्जुनही अत्यंतहर्षकूंनहींप्राप्तहोता किंतु राक्षसोंकाविरोधी जितनाकचेतनमात्ररूपजगत्‌है सोसर्वजगत्‌भी तिसआपकीप्रकीर्तिकरिकै महान्‌हर्षकूंप्राप्तहोवैहै यहवार्त्ताभी युक्तही है ॥ तथा तिसतुम्हारीप्रकीर्त्तिकरिकै यहसर्वजगत् तैंपरमेश्वरविषयक अनुरागकूं जोप्राप्तहोवैहै सोभी युक्तही है ॥ तथा तिसतुम्हारीप्रकीर्त्तिकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जो सर्वदिशावोंविषे भागेभागेजावैहैं सोभी युक्तही है ॥ तथा सर्व कपिलादिक सिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेताईं जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरैं हैं सोभी युक्तही है इति ॥ और किसी टीकाविषेतौ (स्थानेहृषीकेश) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हेहृषीकेश (कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः) ॥ अर्थयह ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुष्टजनहैं तिनसर्वदुष्टलोकोंकेसंहारकरणेवासतै मैंकालरूपपरमेश्वर प्रवृत्तहुआहूं ॥ यहवचन आपनैं पूर्वकथनकऱ्याथा तिस आपके प्रकृष्टवचनरूपप्रकीर्त्तिकूंश्रवणकरिकै यहसाधुलोकरूपजगत् जो परमसंतोषकूं प्राप्तहोवैहै सोभी युक्तही है अर्थात् साधुलोकोंकेरक्षणकरणेवासतै परमेश्वरनैं सर्वदुष्टजनोंकेसंहारकियेहुए तिनसाधुलोकोंकूं परमसंतोषकीप्राप्तिहोणी युक्तही है तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकूंश्रवणकरिकै तेसाधुलोक तैंभक्तवत्सल तथासर्वभूतोंकेसुहृद्रूप परमात्मादेवविषे जो अनुरागकूंकरैं हैं सोभीयुक्तही है अर्थात् सर्वलोकोंकेउपद्रवकूंनिवृत्तकरणेवासतैउद्यमवाले तथापरमकृपालुरूप ऐसेतैंपरमेश्वरविषे तिनसाधुलोकोंका अनुरागहोणा युक्तही है ॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जोपूर्वादिकदिशावोंकेकोणोंविषे भागेभागेजावैं हैं सोभीयुक्तही है ॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वलोकोंकेसुखकीइच्छाकरणेहारे सर्वसिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेताईं जोनमस्कारकरैं हैं

तूं मतभ्रांतहोउ ॥ हे अर्जुन ! तिसभयकूंपरित्यागकरिकै तूंयुद्धकूंकर ॥ इसप्रकार भयकापरित्यागकरिकै जबी तूं युद्धकूंकरैगा तबी इससंग्रामविषे थोड़ेहीका लमैं इनदुर्योधनादिकसर्वशत्रुवोंकूं जीतैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जितनेकभीष्मादिकयोधाहैं तिनयोधावोंविषे किसीयोधातैं आपणे पराजयकीशंकाकूं तूंमतकर ॥ तथा किसीभीयोधाकेहननकरणेजन्य पापकीशंकाकूं तूंमतकर इति ॥ ३४ ॥ तहांदुर्योधनकेजयहोणेकीआशाकेविषयभूत जे द्रोणाचार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण यहच्यारियोधाहैं तिनच्यारोंकेहननहुएतैंअनंतर निराश्रयहुएदुर्योधनकाभी हननहीहोवैगा इसप्रकारकाविचारकरिकै यहधृतराष्ट्र आपणेजयकीआशाकापरित्यागकरिकै जबी इनपांडवोंकेसाथि मित्रभावकरिकै युद्धतैंनिवृत्तहोवैगा तबीपांडवोंकी तथाकौरवोंकीदोनोंकीही शांतिहोवैगी ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायवालासंजय तिसतैंअनंतर क्यावृत्तांतहोताभया ऐसी धृतराष्ट्रकीजिज्ञासाकेहुए कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) संजयउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिर्वेपमानःकिरीटी ॥ नमस्कृत्वाभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥ एतत् । श्रुत्वा । वचनम् । केशवस्य । कृतांजलिः । वेपमानः । किरीटी । नमस्कृत्वा । भूयः । एव । आह । कृष्णम् । सगद्गदम् । भीतभीतः । प्रणम्य॥३५॥इतिपदच्छेदः ॥ हे धृतराष्ट्र ! श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्त वचनकूं श्रवणकरिकै जोडेहैं दोनोंहस्त जिसनैं तथाकंपायमानहुआ तथाअत्यंतभययुक्तहुआ सोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारकरिकै तथाअत्यंतनम्रहोइके सगद्गद जैसेहोवै तैसेपुनः भी कहताभया ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्तवचनकूंश्रवणकरिकै सोकिरीटीअर्जुन अर्थात् इंद्रनैंदियाहैकिरीटजिसकूं ऐसापरमवीररूपकरिकै प्रसिद्धअर्जुन कंपायमानहुआ अर्थात् परमआश्चर्यकेदर्शनजन्यसंभ्रमकरिकै कंपायमान हुआसोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारकरिकै सगद्गदजैसेहोवै तैसे पुनःभी कहताभया ॥ तहां भयकरिकै अथवा हर्षकरिकै निकस्याहुआजोअश्रुजलहै ताअश्रुवोंकरिकैनेत्रोंकेपूर्णहुए तथाकफकरिकै अवरुद्धहुएकंठपणे करिकै जेवाणीके मंदपणा तथासकंपपणा इत्यादिकविकारहैं ताकानाम सगद्गदहै ॥ ऐसे सगद्गदकरिकैयुक्त जैसेहोवै तैसे सोअर्जुन भीतभीतहुआ अर्थात् अत्यंतभयकरिकैयुक्तहुआ पूर्व श्रीकृष्ण भगवान्कूंनमस्कारकरिकै पुनःभीप्रणामकरिकै अर्थात् अत्यंतनम्रहोइके पुनःभी यहवक्ष्यमाणवचन कहताभया इति ॥ इहां किसीटीकाविषे (एवाह) इसवचनविषे (एव आह) याप्रकारकापदच्छेदकरिकै आह इसपदकूं प्रसिद्धिकावाचक अव्ययपदमान्याहै काहेतैं आह इसप्रकारकापदच्छेदकरिकै आह इसपदकूं जोवचनरूपक्रियाकावाचकमानिये तौ पुनः अर्जुनउवाचयहवक्ष्यमाणवचन पुनरुक्तहोवैगा ॥ यातैं (प्रणम्यअर्जुनउवाच) याप्रकारतैंही पदोंकासंबं

चार्य कैसाहै सर्वब्राह्मणोंविषे उत्तमब्राह्मणहै तथा धनुर्वेदकाआचार्यहै तथा हमसर्वोंकागुरुहै तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ और इसदुर्योधनकी
सेनाविषेस्थितजोभीष्मपितामहहै सोभीष्मपितामह कैसाहै आपणीइच्छातैंमरणेहाराहै तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै जिसभीष्मपितामहकूं परशुराम
नैंभीपराजयकन्यानहीं ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजो जयद्रथहै सोजयद्रथ कैसाहै जिसजयद्रथका वृद्धक्षत्रनामापिता जो योधा इसहमारेपुत्र
काशिर भूमिविषेगेरैगा तिसयोधाकाभीशिर तिसीकालविषे भूमिविषेगिरैगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै तपकूंकरताभयाहै तथा जोजयद्रथ आपभी सर्वदा
महादेवकेआराधनपरायणहै तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ऐसा जयद्रथराजाभी जीतणेकूंअशक्यहै ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजोकर्ण है सो
कर्णकैसाहै साक्षात्सूर्यकेसमानहै तथा सूर्यभगवान्केआराधनकरिकै प्राप्तहुआहैदिव्यअस्त्रजिसकूं तथा इंद्रनैंदईहुई जाएकपुरुषकेनाशकरणेहारी तथा
व्यर्थकरणेकूंअशक्य ऐसीशक्तिहै ताशक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ इन्होंतैंआदिलैके दूसरेभी कृपाचार्य अश्वत्थामा भूरिश्रवा इत्यादिकजेमहान्प्रभाववालेयोधाहैं
तेसर्वयोधा सर्वप्रकारतैं दुर्जयही हैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकमहान्योधावोंकेविद्यमानहुए मैं अर्जुन ! इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतिकै निष्कंटकराज्यकूं कैसेभोगौंगा ॥
तथा यशकूंकैसेप्राप्तहोवौंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताशंकाकेविषयभूतयोधावोंकूं स्वस्ववाचकनामोंकरिकैकथनकरतेहुए कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) द्रोणंचभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथान्यानपियोधवीरान् ॥ मयाहतांस्त्वंजहिमाव्यथिष्ठायुध्यस्वजेतासिरणेसपत्नान् ॥ ३४ ॥

द्रोणम् । च । भीष्मम् । च । जयद्रथम् । च । कर्णम् । तथा । अन्यान् । अपि । योधवीरान् । मया । हतान् । त्वम् । जहि । मा । व्यथिष्ठाः । युध्यस्व । जेतासि । रणे । सपत्नान् ॥ ३४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! द्रोणाचार्यकूं तथा भीष्मपिता
महकूं तथा जयद्रथकूं तथा कर्णकूं तथा इन्होंतैंअन्य भी योधावोंकूं जेयोधा मैंपरमेश्वरनैंही हननकरिराखेहैं तिनसर्वयोधावोंकूं
तूं अर्जुन हननकर तूं मत व्यथाकूंप्राप्तहोउ तथायुद्धकूंकर इससंग्रामविषे शत्रुवोंकूं तूं अवश्य जीतैगा ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! द्रोणाचार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण तथाइन्होंतैंभिन्न दूसरेभी जितनेक महान्योधा हैं जेभीष्मादिकसर्वयोधा यहभी
ष्मादिक कैसेजयहोवैंगे याप्रकारकी तुम्हारीशंकाकेविषयभूतहैं तेभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा कालरूपमैंपरमेश्वरनैं तुम्हारेयुद्धतैंपूर्वही हननकरिराखेहैं ऐसेभीष्म
द्रोणादिकयोधावोंकूं तूं अर्जुन अबी हननकर ॥ पूर्वहननाकियेहुएयोधावोंकेहननकरणेविषे तुम्हारेकूं कौनपरिश्रमहोवैगा किंतु तिन्होंकेहननकरणेविषे तुम्हारेकूं
कोई भीपरिश्रमहोवैगानहीं यातैं तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकमहान्योधा कैसेहननाकियेजावैंगे इसप्रकारकी भयनिमित्तकपीडारूपव्यथाकूं

(मू. श्लो.) तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वाजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम् ॥ मयैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचिन् ॥

॥३३॥तस्मात् । त्वम् । उत्तिष्ठ । यशः । लभस्व । जित्वा । शत्रून् । भुंक्ष्व । राज्यम् । समृद्धम् । मया । एव । एते । निहताः । पूर्वम् । एव । निमित्तमात्रम् । भव । सव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिसकारणतैं तूं युद्धवासतैउद्यमवालाहोउ तथा यशकूं प्राप्तहोउ तथाशत्रुवोंकूं जीतकै निष्कंटक राज्यकूं भोग हेसव्यसाचिन् ! येहतुम्हारेयुद्धतैंपूर्व ही मैंपरमेश्वरनैं ही हननकरिछोडेहैं तूंकेवल निमित्तमात्र होउ ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसकारणतैं तुम्हारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी यहभीष्मद्रोणादिक अवश्यकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैंगे तिसकारणतैं तूंअर्जुन अबी युद्धकरणे वासतै उद्यमवालाहोउ ॥ तायुद्धविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकरिकै तूं यशकूंप्राप्तहोउ अर्थात् जेभीष्मद्रोणादिक इंद्रादिकदेवतावोंकारिकैभी दुर्जयथे तेभीष्मद्रोणादिकअतिरथि इसअर्जुननैं शीघ्रही जयकरिलिये ॥ याप्रकारकेयशकूंही तूं प्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकायश महान्पुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणैं ऐसेयशकीप्राप्तिवासतै तूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोउ अर्थात् तुम्हारेकूंइसप्रकारकेमहान्यशकीप्राप्तिकरणेवासतैही मैंभगवान् तुम्हारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तकरताहूं ॥ कोई तुम्हारेयुद्धतैंविना यहभीष्मद्रोणादिक नहींनाशहोवैंगे इसवासतै मैं तुम्हारेकूं युद्धविषेप्रवृत्त करतानहीं ॥ हेअर्जुन ! इनशत्रुवोंकेमारणेकरिकै तुम्हारेकूं केवल यशकीहीप्राप्तिनहींहोवैगी किंतु इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं विनाहीप्रयत्नतैं जयकरिकैसर्वऐश्वर्यसंपन्न निष्कंटकराज्यकूंभी तूं भोग ॥ शंका--हे भगवन् ! इनभीष्मद्रोणादिकअतिरथियोधावोंकेविद्यमानहुए तिनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकाजयकरणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्कहैं हैं (मयैवैतेइति)हेअर्जुन ! तुम्हारेयुद्धरूपव्यापारतैंपूर्वही यहभीष्मद्रोणादिक कालरूपमैंपरमेश्वरनैंही आयुषतैंरहितकरिराखेहैं केवल तुम्हारेकूं लोकविषेयशकीप्राप्तिकरणेवासतै यहभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा हमनैं रथतैंनीचेगिरायेनहीं ॥ यातैं हेसव्यसाचिन् ! तूं केवल निमित्तमात्रहोउ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकयोधा अर्जुननैंही जयकरेहैं याप्रकारके सर्वलोकोंकेवचनोंका आस्पदहोउ ॥ तहां वामहस्तकरिकैभी शरोंकेचलावणेकास्वभाव जिसकाहोवै ताकानाम सव्यसाचिनहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ऐसेमहान्पराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकाजयकरणा कोईअसंभावितनहीं है ॥ किंतु संभवनाही है ॥ यातैं तुम्हारेयुद्धरूपव्यापारतैंअनंतर मैंपरमेश्वर इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं रथतैंनीचेगेरौंगा तिसकूंदेखिकै सर्वलोक ऐसीकल्पनाकरैंगे ॥ इसअर्जुननैंही इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकऱ्याहै इति ॥ ३३ ॥  ॥ शंका--हे भगवन् ! इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जोद्रोणाचार्यहै सोद्रोणा

न्) यहतुम्हाराप्रश्न संभवतानहीं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन कहैहै (नहिप्रजानामिइति) हे भगवन् ! जिसकारणतैं मैंअर्जुन आप परमेश्वरकासखाहुआ भी आपकीचेष्टारूपप्रवृत्तिकूंभी जानतानहीं इसकारणतैं आपही आपकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैप्रार्थना कऱ्याहुआ श्रीभगवान् जोआपणास्वरूपहै तथाजिसकार्यकेकरणेवासतै आपणीप्रवृत्तिहै यहसर्ववार्तातीनश्लोकोंकरिकै अर्जुनकेप्रति कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ कालोऽस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः ॥ ऋतेपित्वानभविष्यंतिसर्वेयेवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः॥३२॥कालः । अस्मि । लोकक्षयकृत् । प्रवृद्धः । लोकान् । समाहर्त्तुम् । इह । प्रवृत्तः । ऋते । अपि । त्वां । न । भविष्यंति । सर्वे । ये । अवस्थिताः । प्रत्यनीकेषु । योधाः ॥ ३२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सर्वलोकोंकासंहारकर्त्ता तथा अत्यंत वृद्धिकूंप्राप्तहुआ कालरूपपरमेश्वर मैंहूं तथाइसकालविषैदुर्योधनादिकोंकूं भक्षणकरणेवास्तै प्रवृत्तहुआहूं यातैं प्रतिपक्षियोंकी सेनाओंविषे जे योधा स्थितहैं तेसर्वयोधा तुम्हारे युद्धरूप व्यापारतैं विना भी नहीं विद्यमानहोवैंगे ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! भूमिविषेभाररूपजेप्राणीहैं तिनदुष्टप्राणियोंकेनाशकरणेहारा अथवा प्रलयकालविषे सर्वप्राणियोंकेनाशकरणेहारा तथामहान्वृद्धिकूंप्राप्तहुआ क्रियाशक्तिउपहितकालरूपपरमेश्वर मैं हूं ॥ इसप्रकार आपणे स्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् आपणीप्रवृत्तिकूं कथनकरैं हैं (लोकान्इति) हेअर्जुन ! जिसकार्यकेकरणेवासतै मैंभगवान् अबीप्रवृत्तहुआहूं तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुर्योधनादिकलोकोंकूं भक्षणकरणेवासतै इसलोकविषे मैंप्रवृत्तहुआहूं ॥ शंका—हे भगवन् ! मैंअर्जुनकीप्रवृत्तितैंविना आप इनदुर्योधनादिकोंकूं कैसे नाशकरो गे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ (ऋतेपित्वाइति) हे अर्जुन ! तुम्हारेतैंविनाभी अर्थात् तुम्हारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी केवलमैंपरमेश्वरकेव्यापारमात्रकरिकैही यहभीष्मद्रोणकर्णादिकसर्वयोधानाशकूंप्राप्तहोवैं गे ॥ तथा इसदुर्योधनकीसेनाविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनेकयोधास्थितहैं तेसर्वहीयोधा मैंपरमेश्वरनैंही हननकरिराखेहैं ॥ यातैं तिन्होंकेहननकरणेविषे तैंअर्जुनके युद्धरूपव्यापारका कोईअत्यंत जरूरनहीं है ॥ तुम्हारेव्यापारतैंविनाही यहदुर्योधनादिकसर्व नाशहोवैंगे इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् ! हमारे युद्धरूपव्यापारतैंविनाही जोकदाचित् यहदुर्योधनादिक नाशहोतेहोवैं तो आप वारंवार हमारेकूं युद्धकरणेविषे किसवासतै प्रवृत्तकरतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

वोंकूं तूं ग्रासकरताहुआ अर्थात् तिनआपणेमुखोंद्वारा आपणेउदरविषेप्रवेशकरावताहुआ तिनआपणेप्रज्वलितमुखोंकरिकै सर्वओरतैंअस्वादनकरे हैं अर्थात् जैसे यहमनुष्य कोईस्वादुवस्तुकूंभक्षणकरिकै आपणीजिह्वाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं तैसे तूंपरमेश्वरभी तिनदुर्योधनादिकराजावोंकूंभक्षणकरिकै आपणी जिह्वाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटैहै क्याकरिकै आपणेदीप्तिरूपतेजोंकरिकै इससमग्रजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकै ॥ हेभगवन् ! जिसकारणतैं तूं आपणीदीप्तियोंकरिकै इससर्वजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरै है तिसकारणतैं तेतुम्हारी अत्यंततीव्र दीप्तियां प्रज्वलितअग्निकीन्याईं संतापकूंउत्पन्नकरैं हैं इति ॥ ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तिनभगवान्कीदीप्तियोंकरिकै व्याकुलहुआअर्जुन यहसाक्षात्परिपूर्णभगवान्हैं याप्रकारतैं भगवान्केस्वरूपकानहींस्मरणकरिकै भगवान्केप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥
आख्याहि । मे । कः । भवान् । उग्ररूपः । नमः । अस्तु । ते । देववर । प्रसीद । विज्ञातुम् इच्छामि । भवंतम् । आद्यम् । न । हि । प्रजानामि । तव । प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! ऐसेउग्ररूपवाले आप कौनहो यहवार्त्ता हमारेताईं कथनकरो हेसर्व देवतावोंविषेश्रेष्ठ ! तुह्मारेताईं हमारा नमस्कार होवै आप प्रसन्नहोवो मैंअर्जुन सर्वकेकारणरूप तुम्हारेकूं जानणेकी इच्छाकरताहूं जिसकारणतैं तुम्हारी चेष्टाकूं मैं नहीं जानताहूं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । उग्रहै क्या अत्यंतक्रूरहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै अथवा प्रलयकालविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहारा रुद्र है ताकानाम उग्रहै ताउग्रकेरूपकीन्याईं हैं रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या सर्वलोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै रूपजिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या क्रूरहै रूप क्या कर्म जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ ऐसे उग्ररूपवाले आप कौनहो अर्थात् प्रलयकालकेरुद्रहो अथवा प्रलयकालकीअग्निहो अथवा महान्मृत्युहो अथवा कालांतकहो अथवा परमपुरुषहो अथवा इनसर्वोंतैंकोईअन्यहो जोअबी आपकास्वरूप है सोस्वरूप मैंअर्जुनकेताईं आप कृपाकरिकै कथनकरो ॥ याकारणतैंही मअर्जुनका आपसर्वजगत्केगुरुरूपपरमेश्वरकेताईं नमस्कारहोवै ॥ हेसर्वदेवतावों विषेश्रेष्ठभगवान ! आप हमारेऊपरि प्रसादकरो अर्थात् क्रूरताकापरित्यागकरिकै प्रसन्नहोवो हेभगवन् ! सर्वजगत्काकारणरूपजोआपहो तिसकारणरूपआप परमेश्वरकूं मैंअर्जुन विशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ शंका—हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरकास्वरूपतौ हमारीचेष्टाकेदर्शनतैंही जानणेकूंशक्यहै ॥ यातैं (कोनवा

टीका । हे भगवन् ! जैसे अनेकमार्गोंविषेप्रवृत्तहुई जेश्रीगंगायमुनादिकनदियां है तिननदियोंके जेबहुतजलोंकेवेगहै अर्थात् जिनजलोंके जेवेगवालेप्रवाहहैं तेबहुत जलोंकेप्रवाह समुद्रकेअभिमुखहुए तिससमुद्रविषेही अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरैं हैं ॥ तैसे इसमनुष्यलोकविषेशूरवीरजेदुर्योधनादिकराजेहैं तेयहदुर्योधनादिकराजे तैंपरमेश्वरके सर्वओरतैंप्रकाशमानमुखोंविषे अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरैं हैं ॥ तहां कितनेकपुस्तकोंविषे (अभितोज्वलंति) इसवचनकेस्थानविषे (अभिविज्वलंति) याप्रकारकाभी पाठहोवै है ॥ इसप्रकारकेपाठहुएभी सोपूर्वउक्तअर्थहीजानणा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अबश्रीविश्वरूपभगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके बुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूं कथनकरै है ।

(मू. श्लो.) यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतंगाविशंतिनाशायसमृद्धवेगाः ॥ तथैवनाशायविशंतिलोकास्तवापिवक्त्राणिसमृद्धवेगाः ॥ २९ ॥

यथा । प्रदीप्तम् । ज्वलनम् । पतंगाः । विशंति । नाशाय । समृद्धवेगाः । तथा । एव । नाशाय । विशंति । लोकाः । तव । अपि । वक्त्राणि । समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतै प्रज्वलित अग्निविषे प्रवेशकरैं हैं तैसें ही यहदुर्योधनादिक भी अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतै तुम्हारे मुखोंविषे प्रवेशकरैं हैं ॥२९॥ इतिपदार्थः॥

टीका । हे भगवन् ! जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेमरणवासतै प्रज्वलितअग्निविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरैं हैं तैसे यहदुर्योधनादिकसर्वराजेभी अत्यंतवेग वालेहुए आपणेमरणवासतै तैंपरमेश्वरकेमुखोंविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरैं हैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व युद्धकीकामनावालेराजावोंका भगवान्केमुखोंविषे प्रवेशकाप्रकार कथनकऱ्या अबतिसप्रवेशकालविषे श्रीभगवान्केप्रवृत्तिकेप्रकारकूं तथाभगवान्केदीप्तिरूपप्रकाशकेप्रवृत्तिकेप्रकारकूं अर्जुन कहै है ।

(मू. श्लो.) लेलिह्यसेग्रसमानःसमंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥ तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपंतिविष्णो ॥ ३० ॥

लेलिह्यसे । ग्रसमानः । समंतात् । लोकान् । समग्रान् । वदनैः । ज्वलद्भिः । तेजोभिः । आपूर्य । जगत् । समग्रम् । भासः । तव । उग्राः । प्रतपंति । विष्णो ॥ ३० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे विष्णुभगवान् संपूर्ण लोकोंकूं ग्रासकरताहुआतूं आपणे प्रज्वलित मुखोंक रिकै सर्वओरतैं आस्वादनकरताहै सइसमग्र जगत्कूं आपणीदीप्तियोंकरिकै सर्व ओरतैंपूर्णकरिकै याकारणतैं तुम्हारी तेउग्र दीप्तियां संतापकूंउत्पन्नकरैं हैं ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे विष्णो ! अर्थात् हे सर्वत्रव्यापकविश्वरूपभगवान् इसप्रकार अत्यंतवेगकरिकै तुम्हारेमुखविषेप्रवेशकरतेहुए जेदुर्योधनादिकसर्वराजे हैं तिनसर्वराजा

योंधनादिकसर्व शीघ्रही प्रवेशकरैं हैं तहां केईकयोधा चूर्णहुए शिरोंकरिकैविशिष्टहुए दांतोंकीमध्यसंधियोंविषे लगेहुए देखणे में आवैं हैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! यह धृतराष्ट्रकेदूर्योधनादिकसर्वपुत्र शल्यराजातैंआदिलैके सर्वराजावोंसहितही अत्यंतशीघ्रतातैं तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरतेहैं ॥ हेभगवन् ! केवल यहदुर्योधनादिकही तुम्हारेविषे प्रवेशनहींकरते किंतु सर्वलोकोंनैं अजेयतारूपकारकैसंभावनाकऱ्याहुआ जोयह भीष्मपितामहहै तथाद्रोणाचार्य है तथासर्वकालविषे हमाराद्वेषी जोयह सूतपुत्रकर्णहै यहतीनोंभी हमारेसंबंधीरूप धृष्टद्युम्नादिकमुख्ययोधावोंसहित तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरैं हैं ॥ अब तिसविश्वरूपभगवानूविषे तिनदुर्योधनादिकों केप्रवेशकाद्वार कथनकरैं हैं (वक्त्राणिइति) हेभगवन् जे आपकेमुख दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहैं ॥ याकारणतैंही तेमुख अत्यंतभयानकहैं ॥ ऐसेआपकेमुखोंविषेही यहदुर्योधनादिकसर्व अत्यंतशीघ्रतातैं प्रवेशकरैं हैं ॥ तिनप्रवेशकरणेहारोंविषेभी केईकयोधातौ चूर्णभावकूंप्राप्तहुए मस्तकोंकरिकैयुक्तहुए आपकेदांतोंकेमध्यसंधियोंविषे लगेहुए हमनैं देखेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इनदोनोंश्लोकों केपदोंकी (अमीधृतराष्ट्रस्यपुत्राः त्वांविशंति भीष्मद्रोणादयःतेवक्त्राणिविशंति) याप्रकारतैंयोजनाकरिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ धृतराष्ट्रके अत्यंतपापिष्ठ जेदुर्योधनादिकपुत्रहैं तेदुर्योधनादिकपापिष्ठतौ तीनलोकरूपशरीरवालेआपपरमेश्वरविषेही प्रवेशकरैं हैं अर्थात् तेदुर्योधनादिकआपणेपापकर्मकेअनुसार तैंविश्वरूपभगवानूकेपायुस्थानविषे स्थितनरकोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकतौ आपपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ यातैं यहभीष्मादिकतौ आपपरमेश्वरके जिनमुखों तैं अग्नि ब्राह्मणदेवता उत्पन्नहुएहैं तिनमुखोंविषेही प्रवेशकरैं हैं ॥ इसप्रकार दुर्योधनादिकोंके तथाभीष्मादिकोंके गतिकीविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै इसप्रकारतैंपदोंकाअन्वयकरणा युक्तहै इति ॥ २६ ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे दुर्योधनादिकसर्वराजावोंका भगवान्केमुखोंविषेप्रवेश कथनकऱ्या सोप्रवेश दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकप्रवेशतौ अबुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ दूसराप्रवेश बुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ तहां नजानिकैजोप्रवेशहै ताकूं अबुद्धिपूर्वकप्रवेशकहैं हैं ॥ और जानिकैजोप्रवेशहै ताकूं बुद्धिपूर्वकप्रवेशंकहे हैं ॥ तहां भगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके अबुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यथानदीनांबहवोंबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवंति ॥ तथा तवामीनरलोकवीराविशंतिवक्त्राण्यभितोज्वलंति ॥ २८ ॥

यथा । नदीनाम् । बहवः । अंबुवेगाः । समुद्रम् । एव । अभिमुखाः । द्रवंति । तथा । तव । अमी । नरलोकवीराः । विशंति वक्त्राणि । अभितः । ज्वलंति ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् ! जैसे नदियोंके बहुत जलोंकेवेग समुद्रकेअभिमुखहुए समुद्रकूं ही प्रवेश करें हैं तैसें यह मनुष्यलोककेवीर तुम्हारे सर्वओरतैं प्रकाशमान् मुखोंकूंही प्रवेशकरैं हैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

अर्जुन दिशावोंकूंभी नहीं जानताहूं तैंथा सुखकूंभी नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ यातें हेदेवेश हेजगन्निवास हमारे ऊपरि प्रसन्नहोवो ॥ २५ ॥

॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहोणेतैं भयकीप्रातिकरणेहारे तथाप्रलयकालके अग्निकेतुल्य ऐसेजेआपकेमुखहैं तिन आपकेमुखोंविषे यद्यपि मैंअर्जुन प्राप्तहुआनहीं तथापि तिनआपकेमुखोंकूं केवलदेखिकरिकैंही भयकेवशतैं मैंअर्जुन पूर्व अपर इत्यादिकभेदकरिकै दिशावोंकूंभी जानतानही ॥ इसी कारणतैंही मैंअर्जुन तुम्हारेदर्शनहुएभी सुखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास आप हमारेऊपरि प्रसन्नहोवो ॥ जिसकरिकैभयतैंरहितहोइकै मैंअर्जुन तुम्हारेदर्शनजन्यसुखकूं प्राप्तहोऊ ॥ तहां अन्यकिसीकी नहींअपेक्षाकरिकैं जो आपेहीप्रकाशमानहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और आपणीसमीपतामात्रतैं जोसर्वकूं चेष्टाकरावे ताकानाम इशहै ॥ जोदेवहोवे सोईही ईशहोवै ताकानाम देवेशहै अर्थात् स्वप्रकाशरूप सर्वकेप्रेरककानाम देवेशहै ॥ अथवा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंका जोईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और इससर्वजगतका जोनिवासहोवै अर्थात् अधिष्ठानहोवै ताकानाम जगन्निवासहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व इसएकादशअध्यायके सप्तमश्लोकविषे (ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वदा हमारेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूं देखणाही तुम्हारेकूंइष्टहै ॥ तिसजयपराजयकूंभी तूं इसहमारेदेहविषेही देख इति॥ अब तिसआपणेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूंभी मैं देखताहूं इसअर्थकूं अर्जुन पांचश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः ॥ भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥ ॥ २६ ॥ वक्त्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंदृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः ॥ २७ ॥

अमी । च । त्वाम् । धृतराष्ट्रस्य । पुत्राः । सर्वे । सह । एव । अवनिपालसंघैः । भीष्मः । द्रोणः । सूतपुत्रः । तथा । असौ । सह । अस्मदीयैः । अपि । योधमुख्यैः । वक्त्राणि । ते । त्वरमाणाः । विशंति । दंष्ट्राकरालानि । भयानकानि । केचित् । वि लग्नाः । दशनांतरेषु । संदृश्यंते । चूर्णितैः । उत्तमांगैः ॥ २६ ॥२७॥ इतिपदच्छेदः॥ हेभगवन् ! पुनः यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकपुत्र सर्व राजावोंकेसमूह सहित ही अत्यंतशीघ्रतावालेहुएतैं परमेश्वरविषे प्रवेशकरैंहैं तथाभीष्म तथाद्रोण तथा यह कर्ण यहतीनों हमारेसंबंधीरूपभी मुख्ययोधावों सहित तुम्हारेविषेप्रवेशकरैं हैं हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैविकराल तथा अतिभयानक ऐसेतुम्हारे मुखोंविषे यहदु

(मू. श्लो.) नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वाहि त्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिंनविंदामिशमंचविष्णो ॥ ॥२४॥ नभःस्पृशम् । दीप्तम् । अनेकवर्णम् । व्यात्ताननम्।दीप्तविशालनेत्रम्।दृष्ट्वा। हि ।त्वाम्।प्रव्यथितांतरात्मा। धृतिं। न ।विंदामि शमम् । च । विष्णो ॥२४॥ इतिपदच्छेदः॥हेविष्णुभगवन् ! संपूर्णआकाशविषेव्यापक तथाअत्यंतप्रज्वलित तथाअनेकहैंवर्णजिस विषे तथाविस्फारितहैंमुखजिसविषे तथाप्रज्वलितविशालहैंनेत्रजिसविषे ऐसेंतुम्हारेकूं देखके ही व्यथाकूं प्राप्तहुआहै मनजिसका ऐसामैंअर्जुन धैर्यकूं तथा शमकूं नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे विष्णु ! अर्थात् हे सर्वत्रव्यापकभगवन् ! मैंअर्जुन तुम्हारेकूंदेखिके भयकरिकै केवल व्यथामात्रकूंही नहींप्राप्तभयाहूं किंतुभयकरिकैअत्यंतव्यथाकूं प्राप्तहुआहै अंतरात्मा क्या मन जिसका ऐसामैंअर्जुन तुम्हारेकूंदेखिकरिकैही धृतिकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं अर्थात् देहइंद्रियादिकसंघातकेधारणकरणेका सामर्थ्यरूपधैर्यकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ तथा मनकीस्थिरतारूपशमकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ कैसाहैसोआपकास्वरूप ॥ इससंपूर्णआकाशरूपअंतरिक्षलोकविषे व्याप्तहोइरह्याहै अथवा आकाशकीन्याई सर्वपदार्थोंकूं स्पर्शकरिरह्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोआपकास्वरूप दीप्तहै अर्थात् महान् अग्निकीन्याई अत्यंतप्रज्वलितहै ॥ पुनः कैसाहैसोस्वरूप ॥ अनेकवर्ण है अर्थात् भयकीप्राप्तिकरणेहारेअनेकरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ विस्फारितहुएहैंमुखजिसविषे अर्थात् फाटेहुएहैंमुखजिसविषे ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ सूर्यमंडलकीन्याई प्रज्वलित तथाविशालहैंनेत्रजिसविषे ॥ ऐसेआपकेस्वरूपकूंदेखिकरिकैही भयकरिके व्यथाकूंप्राप्तहुआहैमनजिसका ऐसामैंअर्जुन धृतिकूं तथाशमकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ इहां (हे विष्णो) इससंबोधनकरिके अर्जुननें विश्वरूपभगवान्कीव्यापकता कथनकरी ॥ ताकरिके यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं आपविश्वरूप सर्वत्रव्यापकहो ॥ तिसकारणतैं तुम्हारेकरिकैयुक्त भयानकदेशकूं परित्यागकरिके मैंअर्जुन अन्यत्रजाणेविषेसमर्थनहींहूं ॥ यातैं यहभयानकविश्वरूप आपनैं अंतर्धानकऱ्याचाहिये इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थकूंही पुनःदूसरे प्रकारतें कथनकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रसन्नताकी प्रार्थना करैहै ।

(मू. श्लो.) दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि ॥ दिशोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ २५ ॥ दंष्ट्रा करालानि । च । ते । मुखानि । दृष्ट्वा । एव । कालानलसन्निभानि । दिशः । न । जाने । न । लभे । च । शर्म । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! दंष्ट्रावोंकरिकैभयंकर तथा प्रलयअग्निकेतुल्य तुम्हारे मुखोंकूं देखकरिके ही मैं

साध्यहैं तथाविश्वे देवहैं तथाअश्विनीकुमारहैं तथा मरुतहैं तथा ऊष्मपां हैं तथागंधर्वयक्षअसुरसिद्धोंकेसमूहहैं तेसर्वे ही तुम्हारेकूं देखतेहैं तथा विस्मयकूंप्राप्तहोवें हैं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! रुद्रहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा आदित्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा वसुहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा साध्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा विश्वहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा दोनों अश्विनीकुमारजोहैं तथा मरुतहैनामजिनोंका ऐसेजे उनंचास देवताविशेषहैं तथा ऊष्मपाहै नामजिनोंका ऐसाजो पितरोंकासमूहहै जेपितर (ऊष्मभागाहि पितरः) इसश्रुतिविषे ऊष्मपानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ तथा गंधर्वोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा यक्षोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा असुरोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा सिद्धोंकेजोसमूहहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वही तैंविश्वरूपवालेपरमेश्वरकूं देखतेहैं ॥ तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंअनंतर तेसर्वही विस्मयकूंप्राप्तहोवें हैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व वीसवेंश्लोकविषे (लोकत्रयं प्रव्यथितंमहात्मन्) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकेदर्शनतैं तीनलोकोंकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थका उपसंहारकरें हैं ।

(मू. श्लो.) रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादम् ॥ बहूदरंबहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथितास्तथाहम् ॥ २३ ॥ रूपम् । महत् । ते । बहुवक्त्रनेत्रम् । महाबाहो । बहुबाहूरुपादम् । बहूदरम् । बहुदंष्ट्राकरालम् । दृष्ट्वा । लोकाः । प्रव्यथिताः । तथा । अहम् ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे महाबाहुवालेभगवन् ! अत्यंतमहान् तथाबहुतहैंमुखनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंबाहुऊरुपाद जिसविषे तथाबहुतहैंउदरजिसविषे तथाबहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अतिभयानक ऐसे तुम्हारे इसविश्वरूपकूं देखके सर्वप्राणी तथा मैंअर्जुन व्यथाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे महान् भुजावालेविश्वरूपभगवन् तुम्हारे इसअद्भुतविश्वरूपकूंदेखिके सर्वप्राणीभयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा मैं अर्जुनभी तारूपकूंदेखिकै भयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ कैसाहैसोतुम्हारा विश्वरूप महतहै अर्थात् अत्यंतमहत्परिमाणवालाहै पुनःकैसाहैसोतुम्हारारूप बहुतहैं मुखजिसविषे तथा बहुतहैंनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंभुजाजिसविषे तथा बहुतहैंऊरुजिसविषे तथा बहुतहैंपादजिसविषे तथा बहुतहैंउदरजिसविषे तथा जोरूप बहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अत्यंतभयानकहै ऐसेआपकेरूपकेदेखणेमात्रतैंही हमारेसहित सर्वप्राणी भयकरिकैपीडितहोतेभयेहैं इति ॥ २३ ॥

❀ ॥ अब अर्जुन तापरमेश्वरके विश्वरूपविषे शोभायमानपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरें हैं ।

उयहै अर्थात् महान्तेजस्वीहोणेतैं आत्यंतदुःखकरिकैजान्याजावे है ॥ यातैं हेभगवन् ! अवी इसआपकेविश्वरूपकूं अंतर्धानकरो इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब मैंपरमेश्वरही सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरणेहाराहूं॥ याप्रकारतैं आपणेविषे सर्व पृथिवीकेभारकासंहारकरतापणेकूंप्रगटकरणेहारेभगवानकूंदेखिकै सोअर्जुन कहै है।

(मू. श्लो.) अमीहित्वासुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताःप्रांजलयोगृणंति ॥ स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवंतित्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ अमी । हि । त्वां । सुरसंघाः । विशंति । केचित् । भीताः । प्रांजलयः । गृणंति । स्वस्ति । इति । उक्त्वा । महर्षिसिद्धसंघाः । स्तुवंति । त्वाम् । स्तुतिभिः । पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन्! यह देवतावोंकेसमूह तुम्हारेप्रति हि प्रवेशकरैं हैं तथाकेईकपुरुष भयकूंप्राप्तहुए दोनोंहाथोंकूंजोडिकै स्तुतिकरैं हैं तथा महाऋषिसिद्धपुरुष ईसजगत्कास्वस्तिहोवो ईसप्रकारकावचन कहिकै तैंपरमेश्वरकी परिपूर्णअर्थकेबोधक वचनोंकरिकै स्तुतिकरैं हैं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हेभगवन् ! पृथिवीकेभारकेउतारणेवासतै मनुष्यरूपकरिकैअवतारकूंप्राप्तहुए तथादुष्टजनोंकेविनाशकरणेवासतै युद्धकूंकरतेहुए जेयह वसु आदित्य इत्यादिकदेवतावोंकेसमूहहैं तेसर्व देवगण तुम्हारेविषेही प्रवेशकरतेहुए हमारेकूं देखणेमैंआवैं हैं ॥ इहां (त्वा असुरसंघाः) याप्रकारका पदच्छेदकरिकै इसवचनका यहदूसराभीअर्थकरणा ॥ असुरोंकाअंशरूपहोणेतैं असुररूप जेयहदुर्योधनादिकहैं जेदुर्योधनादिरूपअसुरगण इसपृथिवीविषेभाररूप हैं ऐसेदुर्योधनादिक असुरगण दुष्टअदृष्टोंकरिकैप्रेरणाकरेहुए आपणेमरणवासतै तुम्हारेविषे प्रवेशकरैं हैं ॥ जैसे पतंग आपणेमरणवासतै अग्निविषे प्रवेशकरैं हैं तथा दोनोंसेनावोंके मध्यविषे केईकपुरुष भीतहुए अर्थात् भागणेविषेभीअसमर्थहुए आपणेदोनोंहाथजोडिकै दूरतैंही तुम्हारीस्तुतिकरैं हैं ॥ इसप्रकारतैं महान्युद्धकेप्राप्तहुए उत्पातादिकोंकेनिमित्तोंकूंदेखिकै इससर्वविश्वका स्वस्तिहोवो अर्थात् रक्षणहोवो ॥ इसप्रकारकेवचनोंकूंकहिकै नारदादिकसर्वमहाऋषि तथाकपिलादिकसर्वसिद्ध युद्धकेदेखणेवासतै तहांआयेहुए सर्वविश्वकेविनाशकेनिवृत्तकरणेवासतै परिपूर्णअर्थकेबोधक तथागुणोंकीउत्कृष्टताकूंप्रतिपादनकरणेहारे ऐसेवचनोंकरिकै आपपरमेश्वरकी स्तुतिकूंकरैं हैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच।

(मू. श्लो.) रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥ गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्षंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥ रुद्रादित्याः । वसवः । ये । च । साध्याः । विश्वे । अश्विनौ । मरुतः । च । ऊष्मपाः । च । गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः । वीक्षंते । त्वाम् । विस्मिताः । च । एव । सर्वे ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन्! जे रुद्रआदित्यहैं तथावसुहैं तथा

यें हैंनेत्र जिसके तथाप्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके तथाआपणेतेजकरिकै इस सर्वविश्वकूं तपायमानकरणेहारा ऐसेआपकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन देखताहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! पुनःसोआपकाविश्वरूपकैसाहै उत्पत्तितैंभीरहितहै ॥ तथा स्थितितैंभीरहितहै ॥ तथा विनाशतैंभीरहितहै ॥ तथा अपरिमितहै वीर्य क्या प्रभाव जिसका ॥ तथा अनंतहैंबाहुजिसकी ॥ इहां (अनंतबाहुम्) यहशब्द मुखादिकसर्वअवयवोंकीअनंतताका उपलक्षणहै ॥ तथा चंद्रमा सूर्य यहदोनों हैं नेत्र जिसके ॥ तथा प्रज्वलितअग्निहैमुखजिसका ॥ अथवा प्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके ॥ तथा आपणेतेजकरिकै इससर्वजगतकूं तपायमानकरणेहाराहै ॥ ऐसे तुम्हारेइसविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिस भगवान्केविश्वरूपकी सर्वत्रव्यापकताकूं कथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) द्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः ॥ दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २० ॥

द्यावापृथिव्योः । इदम् । अंतरम् । हि । व्याप्तम् । त्वया । एकेन । दिशः । च । सर्वाः । दृष्ट्वा । अद्भुतम् । रूपम् । उग्रम् । तव । इदम् लोकत्रयम् । प्रव्यथितम् । महात्मन् ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहात्मन् तैं एकनैं ही स्वर्गपृथिवीके मध्यमें यहअंतरिक्ष व्याप्तकऱ्याहै तथा सर्व दिशा व्याप्तकरीहैं तुम्हारे इस अद्भुत उग्र रूपकूं देखि के तीनलोक अत्यंतभययुक्तहुएहैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेमहात्मन् ! अर्थात् हेसाधुपुरुषोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारा विश्वरूपभगवान् स्वर्ग पृथिवी इनदोनोंकेमध्यविषेस्थित जोयहअंतरिक्षलोकहै सोअंतरिक्षतैंनेएकपरमेश्वरनैंही व्याप्तकऱ्याहै ॥ तथा पूर्वपश्चिमादिक सर्वदिशाभी तैं विश्वरूपनैंही व्याप्तकरीहैं ॥ इहां अंतरिक्षका तथादिशावोंका ग्रहण स्थावरजंगमरूपसर्वविश्वका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् यहस्थावरजंगमरूपसर्वविश्वतैंविश्वरूपपरमेश्वरनैंही व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जोवस्तु जिसनैं व्याप्तकरीताहै सो वस्तु तिसकास्वरूपहीहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकानैं व्याप्तकरेहुए घटशरावादिककार्य मृत्तिकास्वरूपहीहोवैं हैं तैसे तैंपरमेश्वरनैं व्याप्तकऱ्याहुआ यहसर्वविश्व तुम्हाराहीस्वरूपहै अर्थात् सर्वविश्वरूप तूंही है ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपही है इति ॥ हेभगवन् ! तुम्हारे इसविश्वरूपकूंदेखिकै तीनलोक भयकरिकै अत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अब ताविश्वरूपकेदर्शनविषे भयकीहेतुतासिद्धकरणेवासतै ताविश्वरूपके हेतुगर्भितदोविशेषणोंकूं अर्जुन कथनकरैहै (अद्भुतं उग्रम्) इति हेभगवन् ! कैसाहैसोतुम्हाराविश्वरूप अद्भुतहै अर्थात् आपणेदर्शनतैं अत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप

अर्जुननैं ताविश्वरूपकेदर्शनकानिषेध कथनकऱ्याथा ॥ और (पश्यामि) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकादर्शन कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनकाविरोध प्राप्तहोवैहै तथापि अधिकारीकेभेदतैं तेदोनोंवचन संभवैहैं ॥ तहां दिव्यचक्षुतैंरहितपुरुषकूंतौ सोविश्वरूपदेखणेकूं अशक्यहैं ॥ और दिव्यचक्षुवालेपुरुषकूं सो विश्वरूप देखणेकूं शक्यहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हे भगवन् ! बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी तर्कनाकरणेकूंअशक्य ऐसाजोतुम्हारा निरतिशयऐश्वर्यहै ताऐश्वर्यके दर्शनतैंमैंअर्जुन आपपरमेश्वरकूंइसप्रकारका मानताहूं ॥ इसवार्त्ताकूं अर्जुनकथनकरै है ।

(मू. श्लो.) त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ त्वमव्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोमतोमे ॥ १८ ॥

त्वम् । अक्षरं । परमं । वेदितव्यं । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परं । निधानं । त्वम् । अव्ययः । शाश्वतधर्मगोप्ता । सनातनः । त्वं । पुरुषः । मतः । मे ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! आपही परम अक्षरहो तथाआपही जानणेयोग्यहो तथाआपही इस जगतका परम आश्रयहो तथाआपही अव्ययहो तथाअनादिधर्मकापालकहो तथाआपही सनातन परमात्मापुरुष हमारेकूं संमतहो ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! (एतद्वैतदक्षरंगार्गि) इत्यादिकश्रुतिनैं अक्षररूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ तथा । (अव्यक्तात्पुरुषःपरः) इत्यादिकश्रुतिनैं सर्वतैंपर रूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ जोनिर्गुणब्रह्महै सोनिर्गुणब्रह्मरूपभी आपहीहो ॥ जिसकारणतैं आप निर्गुणब्रह्मरूपहो इसकारणतैं आपही मुमुक्षुजनोंनैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकरिकै जानणेयोग्यहो ॥ तथा आपही इससर्वजगतका परमआश्रयहो अर्थात् इससर्वकल्पितप्रपंचका अधिष्ठानरूपहो ॥ इसीकारण तैंही आप अव्ययहो अर्थात् नित्यहो ॥ तथा नित्यवेदकरिकैप्रतिपादितहोणेतैं शाश्वतरूपजोवर्णआश्रमकाधर्महै ताधर्मकेभी आपही पालनकरणेहारेहो ॥ अथवा (शाश्वत धर्मगोप्ता) यहदोपदजानणे ॥ तहां शाश्वत यहपदतौ श्रीभगवान्कासंबोधनहै अथात् हे शाश्वत ! हे नित्यरूप ! ॥ इसपक्षविषे (अव्ययः) इसपदका विनाशतैंरहित यहअथकरणा ॥ इसीकारणतैंही जोसनातन परमात्मादेवरूपपुरुषहै सोपरमात्मापुरुषभीआपकूंही मैंमानताहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुंशशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामित्वांदीप्तहुताशवक्त्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतम् ॥ १९ ॥

अनादिमध्यांतम् । अनंतवीर्यम् । अनंतबाहुम् । शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि । त्वाम् । दीप्तहुताशवक्त्रम् । स्वतेजसा । विश्वम् । इदं । तपंतम् ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! उत्पत्तिस्थितिनाशतैंरहित तथाअनंतहैप्रभावजिसका तथाअनंतहैंबाहुजिसकी तथाचंद्रमासू

वेत्र अनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुम्हारेकूं मैंअर्जुन देखताहूं पुनः तुम्हारे अंतकूंभी मैं नहीं देखताहूं तथामध्यकूंभीनहीं देखताहूं तथा आदिकूंभी नहींदेखताहूं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे सर्वविश्वकाईश्वर ! तथाहेसर्वविश्वरूप श्रीभगवान् ! अनेकहैंबाहुजिसविषे अनेकहैंउदरजिसविषे तथा तथाअनेकहैंमुखजिसविषे तथाअनेकहैं नेत्र जिसविषे ऐसेतुम्हारेविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैंदेखताहूं ॥ तथा सर्वत्रअनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुम्हारेकूं मैं देखताहूं ॥ तथा तुम्हारे अवसानरूपअंतकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुम्हारे मध्यकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुम्हारे आदिकूंभी मैं देखतानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ देशकरिकै अथवा कालकरिकै परिच्छिन्न होवैहै तिसपदार्थकाही आदि मध्य अंतहोवैहै ॥ और आपतौ सर्व देशविषे तथासर्वकालविषे वियमानहो ॥ यातैं आपका सोआदिमध्यअंत संभवतानहीं ॥ इहां (हे विश्वेश्वर ! हे विश्वरूप !) यहजोदोसंबोधन भगवान्के अर्जुननैं कथनकरेहैं सो तिसकालविषे अतिसंभ्रमतैं कथनकरे हैं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिसीविश्वरूपभगवान्कूं अन्यप्रकारतैं अनेकविशेषणोंकरिकै युक्तकथनकरे है ।

(मू. श्लो.) किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमंतम् ॥ पश्यामित्वांदुर्निरीक्षंसमंताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥
किरीटिनम् । गदिनम् । चक्रिणम् । च । तेजोराशिम् । सर्वतः । दीप्तिमंतम् । पश्यामि । त्वाम् । दुर्निरीक्षम्। समंतात् । दीप्तानलार्कद्युतिम् । अप्रमेयम् । ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रकूं धारणकरणेहारे तथा तेजकासमूहरूप तथासर्वओरतैं प्रकाशमान् तथादेखणेकूं अशक्य तथाप्रकाशमानअग्निसूर्यकेप्रभाकीन्याई प्रभावाले तथाअप्रमेय ऐसेतुम्हारेकूं मैंअर्जुन सर्वओरतैं देखताहूं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! कैसाहैसोआपकाविश्वरूप मस्तकऊपरिमुकुटकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा हस्तोंविषे गदाकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा चक्रकूंधारण करणेहाराहै ॥ तथा सर्वओरतैं प्रकाशमानहै ॥ तथा सर्वतेजकासमूहरूपहै ॥ इसकारणतैंही दुर्निरीक्षहै अर्थात् इसदिव्यचक्षुतैंविना देखणेकूंअशक्यहै ॥ इहां (दुर्निरीक्ष्यम्) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै तौ दुःख यहशब्द निषेधकावाचकजानणा अर्थात् सोआपकास्वरूप नहींदेख्याजावैहै ॥ पुनःकैसाहै सोविश्वरूप ॥ अत्यंतदीप्तिमानजोअग्निसूर्यहैं तिनअग्निसूर्यदोनोंकेप्रभाकीन्याई है प्रभाजिसकी ॥ तथा अप्रमेयहै अर्थात् इसप्रकारका यहस्वरूपहै याप्रकारतैं निश्चयकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेस्वरूपकूंधारणकरणेहारेतुम्हारेकूं सर्वओरतैं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैंदेखताहूं ॥ यद्यपि (दुर्निरीक्ष्यम्) इसवचनकरिकै

ताभया इति॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं हमारेप्रति जोविश्वरूप दिखायाहै सोविश्वरूप यद्यपि सर्वलोकोंकरिकै देखणेकूंअशक्यहै तथापि श्रीभगवान्नैं प्राप्तकरेहुएदिव्यचक्षुकरिकै मैंअर्जुन तिसविश्वरूपकूं प्रत्यक्षदेखताहूं ॥ यातैं हमारेकोई अहोभाग्यहैं ॥ इसप्रकार आपणेअनुभवकूंप्रगटकरताहुआ सो अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति कहै है ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वांस्तथाभूतविशेषसंघान् ॥ ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्वसर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥ पश्यामि । देवान् । तव । देव । देहे । सर्वान् । तथा । भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणम् । ईशम् । कमलासनस्थम् । ऋषीन् । च । सर्वान् । उरगान् । च । दिव्यान् ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे देव तुम्हारे इसविश्वरूपदेहविषे मैं अर्जुन सर्व देवतावोंकूं देखताहूं तथा स्थावरजंगमरूपभूतोंकेसमूहकूं देखताहूं तथा कमलरूपआसनविषेस्थित सर्वकेनियंता चतुर्मुखब्रह्माकूं देखताहूं तथा सर्व ऋषियोंकूं देखताहूं तथा दिव्य सर्पोंकूं देखताहूं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे विश्वरूपकेधारणकरणेहारे नारायणदेव तुम्हारेइसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन वसु रुद्र आदित्य इत्यादिकसर्व देवतावोंकूं देखताहूं अर्थात् इसदिव्यचक्षुजन्यज्ञानकाविषय करताहूं ॥ याप्रकारका (पश्यामि) इसशब्दकाअर्थ आगेभीसर्वपर्यायोंविषेजानिलेणा ॥ तथा इसतुम्हारेविश्वरूपदेहविषे मैं अर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकेसमूहकूंभी देखताहूं ।। और सर्वभूतोंकानियंता जोचतुर्मुखब्रह्माहै जोब्रह्मा कमलरूपआसनविषेस्थितहै अर्थात् पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुहै तासुमेरुरूपआसनविषेस्थितहै अथवा विष्णुभगवान्केनाभिकमलरूपआसनविषेस्थितहै ऐसेचतुर्मुखब्रह्माकूंभी मैंअर्जुन तुम्हारेइसविश्वरूपदेहविषे देखताहूं ॥ तथा वसिष्ठतैंआदिलेके जेब्रह्माकेपुत्ररूप नारदसनकादिकऋषिहैं तिनसर्वऋषियोंकूंभी मैं तुम्हारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा इसलोकविषेअप्रसिद्ध जेवासुकिआदिकसर्प हैं तिनसर्पोंकूंभी मैंतुम्हारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखता हूं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां जिस भगवान्केविश्वरूपदेहविषे सोअर्जुन इनपूर्वउक्तसर्वपदार्थोंकूं देखताभयाहै तिसीविश्वरूपदेहकूं सोअर्जुन अब अनेकअद्भुतविशेषणोंकरिकै वर्णनकरै है ।

(मू. श्लो.) अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोनंतरूपम् ॥ नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूप ॥ १६ ॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम् । पश्यामि । त्वाम् । सर्वतः । अनंतरूपम् । न । अन्तम् । न । मध्यम् । न । पुनः । तव । आदिम् । पश्यामि विश्वेश्वर । विश्वरूप ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर हेसर्वविश्वरूप अनेकहैंबाहुउदरमुखनेत्र जिसविषे तथासें

कृत्स्नम् । प्रविभक्तम् । अनेकधा । अपश्यत् । देवदेवस्य । शरीरे । पांडवः । तदा ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे राजन् ! तिसकालविषे सोअर्जुन ! देवतावोंकरिकैपूज्यभगवान्के तिस विश्वरूपशरीरविषे किसीएकदेशविषेस्थित अनेकप्रकारकरिकै भिन्नभिन्न सर्व जगत्कूं देखताभया ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे राजन् ! जिसकालविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आश्चर्यमय विश्वरूप दिखाया तिसकालविषे सोअर्जुन इंद्रादिकसर्व देवतावोंकरिकै पूज्यभगवान्के तिसविश्वरूपशरीरविषे किसीएकअवयवविषे सर्वजगत्कूं देखताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ देव पितर मनुष्य इत्यादिकअनेकप्रकारोंकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ हे धृतराष्ट्र इसप्रकार अद्भुतविश्वरूपकेदर्शनहुएभी सोअर्जुन भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ तथा तिसरूपकूंदेखिकै सोअर्जुन आपणेनेत्रोंकूंभी नहीं मूंदताभया ॥ तथा संभ्रमकेवशतैं सोअर्जुन तिसकालविषे अवश्यकर्त्तव्यअर्थकूं विस्मरणभीनहींकरताभया ॥ तथा भयभीतहोइकै सोअर्जुन तिसदेशतैं भागताभीनहींभया किंतु महान्चित्तक्षोभकेप्राप्तहुएभी अत्यंतधैर्यवालाहोणेतैं सो अर्जुन तिसकालविषे उचितव्यवहारकूंही करताभया ॥ यहसर्वअर्थ संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरै है ।

(मू. श्लो.) ततःसविस्मयाविष्टो हृष्टरोमाधनंजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४ ॥ ततः । सः । विस्मयाविष्टः । हृष्टरोमा । धनंजयः । प्रणम्य । शिरसा । देवम् । कृतांजलिः । अभाषत ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे धृतराष्ट्र ! तिसतैं अनंतर विस्मयकरिकैव्याप्तहुआ तथापुलकितरोमांचवाला हुआ सो धनंजय तिसनारायणदेवकूं आपणेमस्तककरिकै नमस्कारकरिकै आपणे दोनोंहस्तजोडिकै यहवचनकहताभया ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे राजन् ! युधिष्ठिरराजाकेराजसूययज्ञवासतै सर्वराजोंकूंजीतिकै सोअर्जुन धनकूंलेआवताभयाहै यातैंताअर्जुनकूं धनंजयकहैं हैं ॥ तथा सोअर्जुन साक्षात् महादेवकेसाथभी युद्धकरताभयाहै ॥ ऐसा अत्यंतप्रसिद्धपराक्रमवाला तथाअग्निकीन्याईं अत्यंततेजस्वी तथाअत्यंतधैर्यवान् सोअर्जुन तिसविश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर विस्मयकरिकै आविष्टहुआ अर्थात् तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंउत्पन्नभया जो चित्तकाकोईअलौकिकचमत्काररूपविस्मयहै ताविस्मयकरिकै व्याप्तहुआ इसीकारणतैंही हृष्टरोमाहुआ अर्थात् ताविस्मयकरिकै पुलकितहुएहैंसर्वशरीरकेरोमाजिसके ऐसासोअर्जुन तिसविश्वरूपकेधारणकरणेहारेनारायणदेवकूं भूमिविषेलगायेहुएआपणेमस्तककरिकै अत्यंतश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै इसवक्ष्यमाणवचनकूं कह

टीका । हे राजन् ! पुष्पमय तथारत्नमय ऐसीजेदिव्यमालाहैं तिनदिव्यमालावोंकूं धारणकऱ्याहैजिसनैं तथा पीतांबरादिकदिव्यवस्त्रोंकूं धारणकऱ्याहै जिसनैं तथा दिव्यगंधवालेकर्पूरचंदनादिकोंकाहैलेपन जिसविषे तथा सर्वाश्चर्यमयहै अर्थात तेजबल वीर्यशक्ति रूप गुण अवयव अवस्थान इत्यादिक सर्वविशेषोंकरिकै अनेकअद्भुतरूपोंवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप देवहै अर्थात् प्रकाशस्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप अनंतहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेद तैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसोरूप विश्वतोमुखहै अर्थात् सर्वओरतैं हैंमुखजिसविषे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति दिखावताभया ॥ इसप्रकारतैं पूर्वअष्टमश्लोकविषेस्थित (दर्शयामास) इसपदोकेसाथि इनदेनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अथवा अर्जुनोददर्श इसपदकाअध्याहारकरिकै इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा अर्थात् ऐसेस्वरूपकूं सोअर्जुन देखताभया इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिसविश्वरूपका (देवं) यहविशेषण कथनकऱ्या था ॥ अब तिसविशेषणका इसश्लोकविषे विस्तारतैंवर्णनकरैंहै ।

(मू. श्लो.) दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता ॥ यदिभाः सदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः ॥ १२ ॥ दिवि । सूर्यसहस्र
स्य भवेत् । युगपत् । उत्थिता । यदि । भाः । सदृशी । सा । स्यात् । भासः । तस्य । महात्मनः ॥ १२ ॥ इतिप० ॥ हे राजन् !
आकाशविषे एकहीकालमैं जबी सहस्रसूर्यकी प्रभा उत्थितहुई होवै तबी साप्रभा तिस विश्वरूपकी प्रभाके तुल्य
होवै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे राजन् ! आकाशविषे सहस्रसूर्यकी अर्थात् एकहीकालविषेउदयहुए अपरिमितसूर्यों केसमूहकी एकहीकालविषे जोकदाचित् प्रभा उत्थित हुईहोवै है तो साप्रभा तिसविश्वरूपकीप्रभाकेतुल्यहोवै अथवानहींभीतुल्यहोवै ॥ और मैंतौ यहमानताहूं तिनसूर्योंकीप्रभातैंभी ताविश्वरूपकीप्रभा अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ इसतैंपरेदूसरीकोईउपमाहैनहीं ॥ तहां एकहीकालविषे अपरिमितसूर्योंका उदयहोणाही संभवतानहीं ॥ यातैं यहउपमा अभूतउपमाहै ॥ ताअभूतउपमाकरिकै यहअर्थ सूचनाकऱ्या ॥ सर्वप्रकारतैं ता विश्वरूपके प्रभाकीउपमासंभवतानहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे देहकिसीअवयवविषे सर्वजगत्केदेखणेकीआज्ञाकरीथी सोअर्जुन तिसअर्थकूंभी अनुभवकरताभया ॥ यहवार्ताभी संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरैं है ।

(मू. श्लो.) तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥ अपश्यद्देवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥ तत्र । एकस्थम् । जगत् ।

ततः । राजन् । महायोगेश्वरः । हरिः । दर्शयामास । पार्थाय । परमम् । रूपम् । ऐश्वरम् ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेधृतराष्ट्र सोमहान्योगेश्वर कृष्णभगवान् इसप्रकारकावचन कहिके तिसतैंअनंतर अर्जुनकेताईं आपणे दिव्य ऐश्वर रूपकूं दिखावताभया ॥ ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! सोमहायोगेश्वरहरि अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वयोगिजनोंकाईश्वर तथाआपणे भक्तजनोंकेसर्वक्लेशोंकूहरणकरणेहारा कृष्णभगवान् इसप्राकृत चक्षुकरिके तूं अर्जुन दिव्यरूपमैं परमेश्वरकूं नहींदेखसकैगा यातैं मैं तुम्हारेकूं दिव्यचक्षु देताहूं याप्रकारकावचन तिसअर्जुनकेप्रति कहिके तिस दिव्यचक्षुकेंदेणेतैंअनंतर तिसअनन्यभक्तअर्जुनेकताईं देखणेविषेअशक्यभीआपणेदिव्यऐश्वररूपकूं दिखावताभया इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब तिसदिव्यरूपकूं अनेकविशेषणोंकरिकेयुक्त कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥ अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ अनेकवक्त्रनयनम् । अनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणम् । दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे राजन् ! अनेकहैंमुखतथानेत्रजिसविषे तथा अनेकअद्भुतवस्तुवोंकाहै दर्शनजिसविषे तथा अनेक भूषणहैं जिसविषे तथा दिव्यअनेक उठाएहुएहैंआयुधजिसविषे ऐसेरूपकूं सोभगवान् दिखावताभया ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे राजन् ! अनेकहैंमुख तथानेत्र जिसरूपविषे तथा विस्मयकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकवस्तुवोंकाहैदर्शन जिसरूपविषे तथा अनेकदिव्यभूषणहैं जिसरूपविषे तथा उठाएहुएहैंचक्रगदाआदिकदिव्यआयुधजिसस्वरूपविषे ऐसेस्वरूपकूं सोकृष्णभगवान् तिसअर्जुनकेताईं दिखावताभया इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ दिव्यमाल्यांबरधरम् । दिव्यगंधानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयम् । देवम् । अनंतम् । विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे राजन् ! दिव्यमालातथावस्त्रधारणकरेहैं जिसनैं तथा दिव्यगंधवालेवस्तुवोंकाहैलेपनजिसविषे तथासर्वआश्चर्यमय तथाप्रकाशरूप तथाअपरिच्छिन्न तथा सर्वओरतैं हैंमुख जिसविषे ऐसेरूपकूं दिखावताभया ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे गुडाकेश ! अर्थात् हेनिद्राकूंजयकरणेहारा अर्जुन इसहमारेदेहविषे किसीएक नखकेअग्रमात्ररूपअवयवविषेस्थित इसस्थावरजंगमसहित समग्र जगत्कूं तूं अबी देख ॥ जोसर्वजगत् तिसतिसस्थानविषेभ्रमणकरिकै शतकोटिवर्षपर्यंतभी देखणेकूंअशक्यहै ॥ तिससर्वजगत्कूं तूं अबी एकत्रस्थितहुआही देख ॥ हे अर्जुन ! जोकोई अन्यभी जयपराजयादिकोंकेदेखणेकीइच्छाकरताहोवै तिनजयपराजयादिकोंकूंभी तूं आपणेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै इसहमारे देहविषेदेख इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां (मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो) ॥ अर्थयह ॥ सोआपकाऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूंशक्यहै ॥ इसप्रकार जो आप मानतेहोवैं तौ सोरूप हमारेकूंदिखावो ॥ यहजोवचन पूर्व अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति कथनकऱ्याथा तिसरूपकेदेखणेविषे श्रीभगवान् अब किंचित् विशेषता कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ न । तु । माम् । शक्यसे । द्रष्टुम् । अनेन । एव । स्वचक्षुषा । दिव्यम् । ददामि । ते । चक्षुः । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम्॥८॥इतिपदच्छेदः ॥हेअर्जुन ! तूं पुनः इस आपणीचक्षुकरिकै दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी देखणेकूं नहीं समर्थहै इसकारणतैं मैंपरमेश्वर तुम्हारेताई दिव्य चक्षु देताहूं तिसदिव्यचक्षुकरिकै मैंपरमेश्वरके ऐश्वर्यरूप योगकूं तूंदेख ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहस्वभावतैंसिद्ध जोतुम्हाराप्राकृतचक्षुहै इसप्राकृतचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरके देखणेकूं तूं कदाचित्भी समर्थनहीं है ॥ शंका—हे भगवन् ! तबी मैं अर्जुन तिसतुम्हारेस्वरूपकूं कैसेदेखसकूंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (दिव्यमिति) हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरके तिसदिव्यरूपकेदेखणेविषेसमर्थ ऐसी दिव्य कहिये अप्राकृतचक्षुकूं मैंपरमेश्वर तुम्हारेताई देताहूं ॥ तिसदिव्यचक्षुकरिकै तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेयोगकूं अर्थात् नबनतेहुएअर्थके बनावनेकीसामर्थ्यतारूपयोगकूं देख ॥ कैसाहैसोयोग ऐश्वरहै अर्थात् मैंईश्वरकाही असाधारणधर्म है अन्यकिसीविषे सोयोग रहतानहीं ॥ इहां किसी पुस्तकविषे (नतुमांशक्ष्यसे) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै तापाठका यहअर्थकरणा तूं अर्जुन इसचक्षुकरिकै दिव्यरूपवाले मैंपरमेश्वरकेदेखणेकूं समर्थ नहींहोवैगा इति ॥ ८ ॥ ❀ तहां श्रीभगवान् अर्जुनकेताई सोआपणादिव्यरूप दिखावतेभये ॥ तिसरूपकूंदेखिकै अत्यंतविस्मयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्के प्रति सोदेख्याहुआदिव्यरूप कथनकरताभयाइसवृत्तांतकूं (एवमुक्त्वा) इत्यादिकषट्श्लोकोंकरिकै धृतराष्ट्रकेप्रति संजयकहैं है ।

(मू. श्लो.) संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥ दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ एवम् । उक्त्वा ।

वताहूं तूं सावधानहोउ इसप्रकार ताअर्जुनकूं अभिमुखकरताभयाहै ॥ और (शतशःअथसहस्रशः) इनसंख्यावाचक दोनोंपदोंकरिकै श्रीभगवाननैं तिनरूपोंविषे अपरिमितरूपता कथनकरी है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हे अर्जुन ! विलक्षणविलक्षण नीलपीतादिकवर्ण हैं जिन्होंके तथाविलक्षणविलक्षण अवयवोंकीरचनाविशेषरूपआकृतिहैजिनोंकी ऐसेजे अनेकप्रकारके तथाअत्यंतअद्भुत तथाअपरिमितसंख्यावाले मैंपरमेश्वरकेरूपहैं तिनरूपोंकूं तूंदेख अर्थात् तिनरूपोंकेदेखणेकूं तूं योग्यहोउ इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे दिव्यरूपोंकेदिखावणेकीप्रतिज्ञा करी ॥ अब तिसप्रतिज्ञाकेपूर्ण करणेवासतै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति दोश्लोकोंकरिकै यत्किंचित्मात्र तेआपणेरूप कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा ॥ बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत ॥ ६ ॥ पश्य । आदित्यान् । वसून् । रुद्रान् । अश्विनौ । मरुतः । तथा । बहूनि । अदृष्टपूर्वाणि । पश्य । आश्चर्याणि । भारत ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! तूं आदित्योंकूं तथावसुवोंकूं तथारुद्रोंकूं तथा अश्विनीकुमारोंकूं तथामरुतोंकूं देख तथा पूर्वनहींदेखेहुए बहुत अद्भुत रूपोंकूंदेख ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तूं द्वादशआदित्योंकूंदेख ॥ तथा अष्टवसुवोंकूंदेख ॥ तथा एकादशरुद्रोंकूंदेख ॥ तथा दोनोंअश्विनीकुमारोंकूंदेख ॥ तथा उनंचास मरुतोंकूंदेख ॥ तथा इनोंतैंअन्य दूसरेभीदेवतावोंकूं तूं देख ॥ हे अर्जुन जेरूपतैंअर्जुननैं तथा किसीअन्यप्राणीनैं इसमनुष्यलोकविषे कबीभी देखेनहीं हैं ऐसेबहुत अद्भुतरूपोंकूं अबीतूंदेख इति ॥ तहां (बहूनि) यहवचन (शतशोथसहस्रशः) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आदित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा) ॥ यहवचन (नानाविधानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (अदृष्टपूर्वाणि) यहवचन (दिव्यानि) इसपूर्वउक्त वचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आश्चर्याणि) यहवचन (नानावर्णाकृतीनिच) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै इति ॥ ६ ॥ ❀ हे अर्जुन ! केवल इतनेमात्ररूपोंकूंही तूं देखणेयोग्यनहीं है ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्‌बी हमारेदेहविषेस्थितहुआतूंदेख ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥

(मू. श्लो.) इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥ ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ इह । एकस्थम् । जगत् । कृत्स्नम् । पश्य । अद्य । सचराचरम् । मम । देहे । गुडाकेश । यत् । च । अन्यत् । द्रष्टुम् । इच्छसि ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन हमारे इस देहविषे एकअवयवविषेस्थित जंगमस्थावरसहित समस्त जगत्कूं तूं आज देख तथा जो कोई अन्यभीजय पराजयादिक देखणेकूं इच्छाकरताहै सोभीदेख ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

सोतुम्हारा ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै इसप्रकार जबी आप मानतेहोवौ तबी हे योगियों केईश्वर हमारेताईं आप नाशतैंरहित तिसऐश्वररूपाविशिष्ट आत्माकूं दिखावो ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां सृष्टि स्थिति संहार प्रवेश प्रशासन इनपांचोंकेकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम प्रभुहै ॥ हेप्रभो ! अर्थात् हेसर्वकेस्वामिन् सोआपका ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै ॥ ऐसे जबीआप मानतेहोवौ अर्थात् ऐसे जबी आपजानतेहोवौ ॥ अथवा यहअर्जुन इसहमारेरूपको देखै ऐसीजबी आप इच्छाकरतेहोवो तबीहेसर्वयोगियोंकेईश्वर ! तिसआपकीइच्छाकेवशतैं मैंअत्यंतजिज्ञासुअर्जुनकेताईं परमकारुणिकआप तिसऐश्वररूपविशिष्ट नथानाशतैं रहित आत्माकूं दिखावो अर्थात् तिसआपकेस्वरूपकूं हमारेचक्षुवोंका विषयकरौ ॥ इहां जेपुरुष अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकैयुक्तहैं तिनोंकानाम योगीहै तिनसर्वयोगियोंकाजोईश्वरहोवै ताकानाम योगेश्वरहै ॥ इसयोगेश्वरसंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ भगवान्‌केप्रति सूचनकऱ्या ॥ अणिमादिकसिद्धियोंकरिकैयुक्तजेयोगीपुरुषहैं तेयोगीपुरुषभी आपणीइच्छाकेवशतैं अशक्यकार्यकूंभी सिद्धकरिसकैंहैं ॥ और आपतौ तिनयोगियों केभी ईश्वरहो अर्थात् परमेश्वरकेध्यानकरिकैही तिनयोगीपुरुषोंकूं ऐसा सामर्थ्य प्राप्तभयाहै ॥ यातैं आप जोकदाचित् तिसस्वरूपकेदिखावणेकी इच्छाकरोगे तौ मैंअर्जुनतिसआपकेस्वरूपकूं अवश्यकरिकैदेखूंगा इति ॥ अथवा (हेयोगेश्वर) इससंबोधनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जो जीवब्रह्मकेएकत्वकादर्शनरूपज्ञानयोगहै ताकानाम योगहै तायोगकाजोईश्वरहोवै अर्थात् अधिकारिजनोंकेप्रति ताज्ञानयोगकीप्राप्तिकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम योगेश्वरहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अत्यंतभक्तअर्जुनकरिकै प्रार्थनाकरेहुए श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति तिसस्वरूपकेदिखावणे कीइच्छाकरतेहुए कहैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोऽथसहस्रशः ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥ पश्य । मे । पार्थ । रूपाणि । शतशः । अथ । सहस्रशः । नानाविधानि । दिव्यानि । नानावर्णाकृतीनि । च ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ ! नानाप्रकारकेवर्णतथाआकृतिहैंजिनोंके ऐसे नानाप्रकारके अद्भुत अनेक शत तथा अनेकसहस्र मे परमेश्वरके रूपोंकूं तूं देख ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां इसश्लोकनैंआदिलेकेअगलेच्यारिश्लोकोंविषे क्रमतैं (पश्य) इसशब्दकीआवृत्तिकरिकै श्रीभगवान् तेआपणेदिव्यरूप में तुम्हारेकूंदिखा

विषे जोपुरुष विचित्रफलकाप्रदाताहोवै है सो पुरुष असंगउदासीनहोवैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरतौ बंधमोक्षादिकविचित्रफलका प्रदाताहुआभी असंग उदासीनही है ॥ इसतैं आदिलैकेदूसराभी सर्वात्मत्व आदिक सोपाधिकमाहात्म्यभी हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्याहै ॥ हे भगवन् ! आपपरमेश्वरका केवल यहसोपाधिकमाहात्म्यही हमनैं श्रवणनहींकऱ्या किंतुआपपरमेश्वरका निरुपाधिक अव्यय रूपमाहात्म्यभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ इहां व्ययनाम नाशकाहै तानाशतैंजोरहितहोवै ताका नाम अव्ययहै इति ॥ २ ॥

(मू. श्लो.) एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्वर ॥ द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ एवम् । एतत् । यथा । आत्थ । त्वम् । आत्मानम् । परमेश्वर । द्रष्टुम् । इच्छामि । ते । रूपम् । ऐश्वरम् । पुरुषोत्तम ॥३॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपरमेश्वर ! जिसप्रकारतैं आपणेआत्माकूं तूं कथनकरताहै सोआपकाकहणा यथार्थही है तथापि हेपुरुषोत्तम ! तुम्हारा ऐश्वर रूप देखणेकूं मैं इच्छाकरता हूं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे परमेश्वर ! जिस सोपाधिक निरतिशय ऐश्वर्यरूपकरिकै तथा जिस निरुपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै आप आपणेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहो ॥ सो आपकाकहणा यथार्थही है ॥ किसीकालविषेभी आपकाकहणा अयथार्थनहीं है अर्थात् तुम्हारेवचनविषेकहांभी हमारेकूं अविश्वासकीशंकानहीं है ॥ हेपुरुषोत्तम ! यद्यपि हमारा आपकेवचनोंविषे दृढविश्वासहै तथापि कृतार्थहोणेकीइच्छाकरिकै मैंअर्जुन तुम्हारे ऐश्वर्यरूपके देखणेकीइच्छाकरताहूं अर्थात् ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बल वीर्य तेज इत्यादिगुणोंकरिकैसंपन्न जोआपईश्वरका अद्भुतस्वरूपहै ताकानाम ऐश्वर्यरूपहै तारूपकेदेखणेकी मैंइच्छाकरताहूं ।। तहां सर्व पुरुषों तैं सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकै जोउत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ।। इसपुरुषोत्तमसंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्के प्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ।। हेभगवन् ! तुम्हारेवचनविषे हमारेकूं अविश्वासनहीं है ।। तथा आपके तिसऐश्वर्यरूपकेदेखणेकीइच्छाभी हमारेकूंबहुतहै ।। इसहमारेवृत्तांतकूं आप सर्वज्ञहोणेतै तथाअंतर्यामीहोणेतैं जानतेहीहो इति ।। ३ ।। ❀ ।। शंका—हेअर्जुन ! तुम्हारेकरिकै देखणेकूंअशक्य जोहमारास्वरूपहै तिसस्वरूपकेदेखणेकीइच्छा तूंकिसवासतैकरताहै ।। जोवस्तुदेखणेकूंशक्यहोवैहै तिसवस्तुकेही देखणेकीइच्छाकरणी उचितहोवैहै ।। ऐसी श्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन कहैहै ।

(मू. श्लो.) मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो ॥ योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्ययम ॥ ४ ॥ मन्यसे । यदि । तत् । शक्यम् । मया । द्रष्टुम् । इति । प्रभो । योगेश्वर । ततः । मे । त्वम् । दर्शय । आत्मानम् । अव्ययम् ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेप्रभो !

जैसे त्वंपदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा पष्ठअध्यायपर्यन्त आपकावचन हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ तैसे तत्पदार्थकानिर्णयहैप्रधानजिसविषे ऐसा सप्तअध्यायतैंआदि लेके दशमअध्यायपर्यंत आपकावचनभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै इसवार्त्ताकूं अर्जुन कथनकरै है ।

(मू. श्लो.) भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया ॥ त्वत्तःकमलपत्राक्षमाहात्म्यमपिचाव्ययम् ॥ २ ॥ भवाप्ययौ । हिं । भूतानाम् । श्रुतौ । विस्तरशः । मया । त्वत्तः । कमलपत्राक्ष । माहात्म्यम् । अपि । चं । अव्ययम् ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकमल पत्राक्ष इनभूतोंके उत्पत्तिप्रलय दोनों तैं भगवानतैं ही हमनैं विस्तारतैं श्रवणकरेहैं तथा आपकासोपाधिक माहात्म्य तथा नि रुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्य भी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेकमलपत्राक्ष श्रीभगवान् ! इहां कमलकेपत्रकीन्याई दीर्घ तथाविशाल तथाकिंचित्रक्ततायुक्त तथा अत्यंतमनोरमहैं अक्षि क्या नेत्र जिसके ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुन नैं भगवान्की जो अत्यंतसौंदर्यता कथनकरीहै सो परमेश्वरविषयकप्रेमकीअतिशयतातैं कथनकरीहै ॥ अथवा (हेकमलपत्राक्ष) इससंबोधनका यहअर्थकरणा ॥ (कमलतिप्रकाशयति इति कमलमात्मज्ञानम् ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपानंदरूपजोब्रह्मसुखहै ताकानाम कंहै तिसब्रह्मसुखकूं जोप्रकाशकरेहै ताकानाम कमलहै ॥ ऐसा महावाक्यजन्य आत्मज्ञानहै ॥ आत्मज्ञानकरिकैही ताब्रह्मसुखका प्रकाशहोवैहै ॥ तथा (पत नात्त्रायतेइतिपत्रम् ॥) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं इसजन्ममरणकेप्रवाहरूपसंसारसमुद्रविषेपतनतैं जोरक्षणकरैहै ताकानाम पत्रहै ऐसापत्ररूपभी सो आत्मज्ञानहीहै अर्थात् कमलरूपहोवै तथासोईहीपत्ररूपहोवै ताकानाम कमलपत्रहै ॥ (कमलपत्रेणअक्ष्यतेप्राप्यतेइतिकमलपत्राक्षः) ॥ अर्थयह ॥ तिस कमलपत्रनामा आत्मज्ञानकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम कमलपत्राक्षहै अर्थात् हेआत्मज्ञानकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य शुद्धपरब्रह्म तैं परमेश्वरतैंही इनसर्वभूतों के उत्पत्तिप्रलय हमनैं (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥ प्रकृतिंस्वामवष्टभ्य अहंसर्वस्यप्रभवः) इत्यादिकवचनोंकरिकै विस्तारतैं श्रवणकरेहैं ॥ कोईसंक्षेपतैंएकही वार श्रवणनहींकरे ॥ हे भगवन् ! आपपरमेश्वरतैं इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलयकूंही केवल हमनैं नहींश्रवणकऱ्या किंतु तुम्हारा माहात्म्यभी हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्या है ॥ तहां महात्मारूपपरमेश्वरका जोनिरतिशयऐश्वर्यरूपभावहै ताकानाम माहात्म्यहै सोमाहात्म्य यहहै ॥ इसलोकविषे जोकर्त्ताहोवैहै सोविकारीही होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौ इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकाकरताहुआभी अविकारीरूपही है ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष दूसरोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावैहै सोपुरुष विषमतादोषवालाही होवैहै ॥ और यहपरमेश्वर तौ जीवोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावताहुआभी विषमतादोषतैंरहितहै ॥ और इसलोक

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ एकादशाध्यायप्रारंभः॥ तहां पूर्वदशमअध्यायविषे श्रीभगवान् नानाप्रकारकीविभूतिकूंकथनकरिकै ताकेअंतविषे (विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्) इसवचनकरिकै परमेश्वरके सर्वविश्वात्मकस्वरूपकूं कथनकरताभया ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन परमेश्वरके तिस सर्वविश्वात्मकस्वरूपकेसाक्षात्कारकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथापूर्वउक्तअर्थकीप्रशंसाकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ।

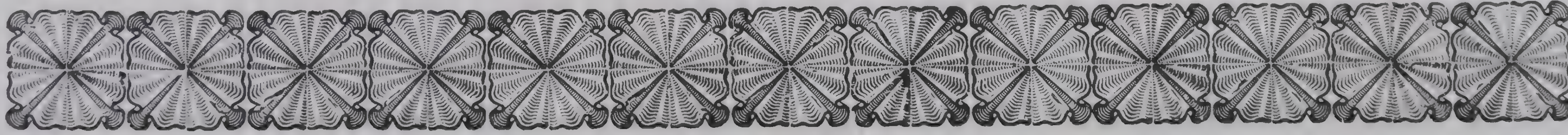
(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ॥ यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥ मदनुग्रहाय । परमम् । गुह्यम् । अध्यात्मसंज्ञितम् । यत् । त्वया । उक्तम् । वचः । तेन । मोहः । अयम् । विगतः । मम ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे भगवन् ! हमारेअनुग्रहवासतै आपनैं जो परम गुह्य अध्यात्मनामवाला वचन कथन कर्‍याहै तिसवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह मोह नष्टहोताभयाहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! यह हमारे भ्रातापुत्रादिकसर्वबांधव मरणकूंप्राप्तहोतेहैं और मैंअर्जुन इनोंकाहननकरताहूं इसप्रकारकेशोकमोहरूपसागरविषे डूब्याहुआ जोमैंअर्जुनहूं तिसहमारेअनुग्रहवासतै अर्थात् तिसशोकमोहकी निवृत्तिरूपउपकारवासतै परमकृपालुसर्वज्ञआपनैं (अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्) इसवचनतैंआदिलैके षष्ठअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत त्वंपदार्थकानिरूपक जोवाक्य कथनकर्‍याहै कैसाहै सोवाक्य परमहै अर्थात् निरतिशयमोक्षरूपपुरुषार्थविषे परिअवसानवालाहै ॥ अथवा परम कहिये शीघ्रहीशोकमोहकानिवर्त्तकहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन गुह्यहै अर्थात् शास्त्रनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्त तथाश्रद्धातैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकूं नहीं देणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन अध्यात्मसंज्ञितहै अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेककूंविषयकरणहाराहै ॥ तहां आत्माअनात्माकेविवेककरणेवासतैजोशास्त्रहै ताकानाम अध्यात्महै सोअध्यात्महै संज्ञा क्या नाम जिसका ताकानाम अध्यात्मसंज्ञितहै ॥ ऐसे आपकेवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह स्वअनुभवसिद्धमोह नष्टहोताभयाहै अर्थात् मैंअर्जुन इनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरताहूं तथामैंअर्जुननैं यहभीष्मद्रोणादिक हननकरीतेहैं इत्यादिक नानाप्रकारकाविपर्ययरूपमोह हमारा तिसआपकेवचनकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ जिसकारणतैं तिसपूर्वउक्तवचनविषे (नायंहंतिनहन्यते नजायतेम्रियतेवाकदाचित् वेदाविनाशिनंनित्यम् अच्छेद्योयमदाह्योयम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसआत्माकूं आपनैं सर्वविकारोंतैंरहितकथनकर्‍याहै तिसकारणतैं सोहमारामोह अभी नष्टहोताभयाहै ॥ तहां इसश्लोककेप्रथमपादविषे जोएकअक्षरअधिकहैसोआर्षहै अर्थात् ऋषिप्रणीतहोणेतैं दुष्टनहीं है इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां

त्माका अंश तथापाद संभवतानहीं तथापि जैसे निरवयवआकाशके घटमठादिकउपाधियोंकरिकै घटाकाश मठाकाश मेघाकाश इत्यादिकअंशोंकीकल्पनाहोवैहै तैसे निरवयवनिराकारपरमात्मादेवकेभी अविद्यादिकउपाधियोंकरिकै तेअंश तथापाद कल्पनाकरेजावैंहैं वास्तवतैं तेअंश तथापादहैंनहीं इति ॥ ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १० ॥

इति दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥



हे अर्जुन ! जो जो प्राणी ऐश्वर्यवालाहै तथा लक्ष्मीवालाहै तथा बलवालाहै तिसं तिसं प्राणीकूं ही तूं मैंपरमेश्वरके शक्तिकेअंश करिकैउत्पन्नहुआ जान ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसलोकविषे जोजोप्राणी ऐश्वर्यरूपविभूतिकरिकै युक्तहै तथा जोजोप्राणी श्रीमत् है अर्थात् लक्ष्मीकरिकै वासंपदाकरिकै वाशोभाकरिकै वाकांतिकरिकै युक्तहै तथा जोजोप्राणी अत्यंतबलादिकोंकरिकैयुक्तहै तिसतिसप्राणीकूंही तूं मैंपरमेश्वरकीशक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहुआ जान इति ॥ यहभगवानूकावचन पूर्वनहीं कथनकरीहुईविभूतियों केभीसंग्रहकरावणेवासतै है इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार एकदेशरूप अवयवकरिकै विभूतिकूंकथनकरिकै अब सकलतारूपकरिकै तिसविभूतिकूं कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवार्जुन ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ॥४२॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥ अथवा । बहुना । एतेन । किं । ज्ञातेन । तव । अर्जुन । विष्टभ्य । अहम् । इदम् । कृत्स्नम् । एकांशेन । स्थितः । जगत् ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ अथवा हे अर्जुन ! इस बहुत ज्ञातकरिकै तुम्हारा क्याप्रयोजनसिद्धहोवैगा इस सर्व जगत्कूं मैंपरमेश्वर एकदेशकरिकै धारणकरिकै स्थितहुआहूं ॥ ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (अथवा) यहपद पूर्वउक्तविभूतिपक्षतेभिन्नपक्षकावाचकहै सोपक्षांतर कहैं हैं ॥ हे अर्जुन ! (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै मंदअधिकारीपुरुषोंकेध्यानवासतै कथनकरी जा हमनैं आपणीसावशेष विभूतिहै इसबहुतप्रकारकीसावशेषविभूतिकेज्ञानकरिकै तैंउत्तमअधिकारीकूं कौनफलहै किंतु कोईभीफल तेरेकूंनहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्तयत्किंचित्विभूतिकेज्ञानहुएभी हमारीसर्वविभूतियोंकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं तैंउत्तमअधिकारीकूंतौ याप्रकारतैं हमाराध्यानकऱ्याचाहिये ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमात्मादेव इससर्वजगत्कूं आपणेएकदेशमात्रकरिकै धारणकरिकै अथवा व्याप्तकरिकै स्थितहूं मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवका यहसर्व विश्व एकपादहै ॥ और तीनपादतौ आपणेनिर्गुणस्वयंज्योतिस्वरूपविषेस्थितहैं इति ॥ यातैं हे अर्जुन ! द्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्यमैंहूं तथानक्षत्रोंकेमध्यविषेचंद्रमामैंहूं इत्यादिकपरिच्छिन्नदृष्टिकापरित्यागकरिकै तूं सर्वजगतविषे मैंपरमात्मादेवकूंव्यापकदेख इति ॥ यद्यपि निरवयवनिराकारपरमा

(मू. श्लो.) यच्चापिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥ यत् । च । अपि । सर्वभूतानाम् । बीजम् । तत् । अहम् । अर्जुन । न । तत् । अस्ति । विना । यत् । स्यात् । मया । भूतम् । चराचरम् ॥ ३९ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! तथा जोचेतन इनसर्वभूतोंका कारणहै सोकारण भी मैंहीहूं मैंपरमेश्वरतें विनां जो चर अचरूप वस्तु होवै सोवस्तु नहीं है ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसे प्रसिद्धवृक्षोंकेप्ररोहका कारण बीजहोवै है तैसे इनसर्वभूतोंकेप्ररोहकाकारणरूप जोमायाउपहितचेतनरूपबीजहै सो बीजरूपकारणभी मैं हीहूं॥ हे अर्जुन! मैंपरमेश्वरतैंविना जोकोई चरअचररूपवस्तुविद्यमानहोवै सोऐसीकोईवस्तु हैनहीं किंतु तेसर्वभूत मैंबीजरूपपरमेश्वरकाकार्यहोणेतैं मैंसत्तास्फुरणरूपपरमेश्वरकरिकेही व्याप्तहैं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ अब इसविभूतिप्रकरणकेअर्थका उपसंहारकरतेहुए श्रीभगवान्तिसविभूतिकूं संक्षेपतैं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नांतोस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप ॥ एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया ॥ ४० ॥ न । अंतः । अस्ति । मम । दिव्यानाम् । विभूतीनाम् । परंतप । एषः । तु । उद्देशतः । प्रोक्तः । विभूतेः । विस्तरः । मया ॥ ४० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरके दिव्य विभूतियोंका कोईअंत नहीं है । और यहजो हमनैं तुम्हारेप्रति विभूतिका विस्तार कथनकऱ्याहै सो एकदेशकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ ४० ॥इतिपदार्थः ॥

टीका । हे परंतप ! अर्थात् हेकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूंतापकरणेहारा अर्जुन मैंपरमेश्वरका तिनदिव्यविभूतियोंका कोईअंत नहींहैअर्थात् तेसर्वविभूतियां इतनीहैं यापकारकीसंख्या तिनविभूतियोंकीनहीं है ॥ यातैं सर्वज्ञपुरुषोंनैंभी साहमारेविभूतियोंकीसंख्या जानणेकूं वाकहणेकूं समर्थनहींहोईता ॥ शंका—हे भगवन् ! जबी सर्वज्ञपुरुषभी तिनविभूतियों केकहणेकूं समर्थनहीं है तबी (आदित्यानामहंविष्णुः) ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै ते आपणीविभूतियां आप कैसे कहतभयेहो ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (एषतुइति) हे अर्जुन ! यहजोहमनैं तुम्हारेप्रति आपणीविभूतिकाविस्तार कथनकऱ्याहै सोभी किमीएकदेशकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) यद्यद्विभूतिमत्सत्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ यत् । यत् । विभूतिमत् । सत्त्वं । श्रीमत् । ऊर्जितम् । एव । वा । तत् । तत् । एव । अवगच्छ । त्वम् । मम । तेजोंऽशसंभवम् ॥ ४१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

व्यवसाय मैंहूं ॥ तथा सात्त्विकपुरुषोंका जो धर्मज्ञानवैराग्यऐश्वर्यतारूपसत्त्वहै अर्थात् सत्त्वगुणकाकार्य है सोसत्त्व मैंहूं इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः ॥ मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः ॥ ३७ ॥ वृष्णीनाम् । वासुदेवः । अस्मि । पांडवानाम् । धनंजयः । मुनीनाम् । अपि । अहम् । व्यासः कवीनाम् । उशनाकविः ॥ ३७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! यादवोंकेमध्यमें वसुदेवकापुत्रकृष्ण मैंहूं तथा पांडवोंकेमध्यमें धनंजय मैंहूं तथा मुनियोंकेमध्यमें व्यासमुनि मैंहूं तथा कवियों केमध्यमें शुक्रकवि मैंहूं ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वयादवोंकेमध्यविषे वसुदेवकापुत्ररूपकरिकेप्रसिद्ध तथातुम्हारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा यहकृष्णमैंहूं ॥ तथा सर्वपांडवोंकेमध्यविषे धनंजयनामाजोतूंअर्जुनहै सोमैंहूं ॥ तथा मननशीलमुनियोंकेमध्यविषे श्रीव्यासमुनि मैंहूं ॥ तथा सूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेहारेकवियोंकेमध्यविषे शुक्रनामाकवि मैंहूं इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥ मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ दंडः । दमयताम् । अस्मि । नीतिः । अस्मि । जिगीषताम् । मौनम् । च । एव । अस्मि । गुह्यानाम् । ज्ञानम् । ज्ञानवताम् । अहम् ॥ ३८ ॥ इतिप० ॥

हे अर्जुन ! शिक्षाकरणेहारेपुरुषोंका दंडे मैंहूं तथा जीतनेकीइच्छावालेपुरुषोंका न्यायरूपनीति मैं हूं तथा गुह्यअर्थोंका मौन मैं हूं तथा ज्ञानवालेपुरुषोंका ज्ञान मैं हूं ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अशिक्षितदुष्टपुरुषोंकूं कुमार्गतैंनिवृत्तकरिकै सुमार्गविषे प्रवृत्तकरणेहारे जेराजादिकपुरुषहैं तिनराजादिकोंका जो दुष्टपुरुषोंकूं तिसकुमार्गतैं निवृत्तकरणेकाहेतुरूपदंडहै सोदंड मैंहूं ॥ तथा जीतणेकीइच्छावान्पुरुषोंका जो जयकेउपायकाप्रकाशक न्यायरूपनीतिहै सानीति मैंहूं ॥ तथा गुह्यअर्थोंकेगोपराखणेकाहेतुरूप जो वाक्‌इंद्रियकानिग्रहरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष वाक्‌इंद्रियकानिग्रहकरिकै तूष्णींस्थितहोवैहै तिसपुरुषकेअंतरके अभिप्रायकूं कोईभीजानिसकतानहीं ॥ यातैं सोवाणीकानिग्रहरूपमौन अर्थकेगोपराखणेकाहेतुहै इति ॥ अथवा इसका यहअर्थकरणा ॥ गोप्यपदार्थोंकेमध्यविषे संन्याससहित श्रवणमननपूर्वक जो आत्मकानिदिध्यासनरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तथा ज्ञानवाले सर्वज्ञानीपुरुषोंका जो वेदांतशास्त्रकेश्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै जन्य तथासर्वअज्ञानकाविरोधी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका आत्मज्ञानहै सोआत्मज्ञानमैंहूं इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहम् ॥ मासानांमार्गशीर्षोहमृतूनांकुसुमाकरः ॥ ३५ ॥ बृहत्साम । तथा । साम्नां । गायत्री । छंदसाम् । अहम् । मासानाम् । मार्गशीर्षः । अहम् । ऋतूनाम् । कुसुमाकरः ॥ ३५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! गीतिविशेषरूपसामोंकेमध्यमें बृहत्साम मैंहूं तथा छंदोंकेमध्यमें गायत्रीछंद में हूं तथा मासोंकेमध्यमें मार्गशीर्षमास में हूं तथा ऋतुवोंकेमध्यमें वसंतऋतु मैंहूं ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ऋगादिकच्यारिवेदोंकेमध्यविषे सामवेद मैंहूं याप्रकारकेवचनकरिकै सामवेदकीउत्कृष्टता पूर्वहमनैं कथनकरीथी तिससामवेदविषेभी यहअन्यविशेषताहै ऋचावोंकेअक्षरोंविषेआरूढ जे गीतिविशेषरूपसामहैं तिनसर्वसामोंकेमध्यविषे (त्वामिद्धिहवामहे) इसऋचाविषेस्थित गीतिविशेषरूप तथा सर्वकाईश्वररूपकरिकेइंद्रकीस्तुतिरूपक जो बृहत्सामहै सोबृहत्साम मैंहूं ॥ और नियमपूर्वकहैंअक्षर तथापाद जिसके ताकानामछंदहै ऐसेछंदभावकरिकैविशिष्ट जेवदकीऋचाहैं तिनसर्वछंदोंकेमध्यविषे द्विजपणेकासंपादक जा चतुर्विंशतिअक्षरोंवाली गायत्री है जागायत्री (गायत्रीवाइदंसर्वंभूतम्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ऐसागायत्रीनामाछंद मैंहूं ॥ तथा द्वादशमासोंकेमध्यविषे अत्यंतशीतआतपतैंरहितहोणेतैं सुखकाहेतु जोमार्गशीर्षमासहै सोमार्गशीर्षमास मैंहूं ॥ तथा षट्ऋतुवों केमध्यविषे सर्वसुगंधिवालेपुष्पोंकाआकारहोणेतैं अत्यंतरमणीक तथा (वसंतेब्राह्मणमुपनयीत वसंतेब्राह्मणोऽग्नीनादधीत वसंतेज्योतिषायजेत) इत्यादिक श्रुतियोंकरिकैप्रसिद्ध जोवसंतऋतुहै सोवसंतऋतु मैंहूं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्त्वंसत्त्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ द्यूतम् । छलयताम् । अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहम् । जयः । अस्मि । व्यवसायः । अस्मि । सत्त्वम् । सत्त्ववताम् । अहम् ॥ ३६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! छलकरणेहारेपुरुषोंका जूवारूपछल मैं हूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका तेज मैंहूं तथाजयकरणेहारेपुरुषोंका जय मैंहूं तथाव्यवसायवालेपुरुषोंका व्यवसाय मैं हूं तथा सत्त्ववालेपुरुषोंका सत्त्व मैं हूं ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! परकावंचनरूपछलकेकरणेहारेजेधूर्त्तपुरुषहैं तिनछलवालेपुरुषोंका जो जुवारूपछलहै जोजूवारूपछलसर्वस्वहरणकरणेकाकारणहै सोजूवारूपछल मैंहूं ॥ तथा अत्यंतउग्रप्रभाववालेजेतेजस्वीपुरुषहैं तिनतेजस्वीपुरुषोंका जोअप्रतिहतआज्ञारूपतेजहै सोतेज मैंहूं ॥ तथा जयकरणेहारेपुरुषोंका जो पराजयहुएपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टतारूपजयहै सोजय मैंहूं ॥ तथा व्यवसायवालेपुरुषोंका जो नियमतैंफलकीप्राप्तिकरणेहारा उद्यमरूपव्यवसायहै सो

तिनसर्वफलप्रदातावोंकेमध्यविषे सर्वकर्मोंकेफलप्रदाताजोईश्वरहै सोअंतर्यामीईश्वरमैंहूं ॥ इहांकिसीटीकाविषेतौ (द्वंद्वःसामासिकस्यच) इसवचनका यहअर्थ कथन कऱ्याहै ॥ वेदमंत्रोंकेअर्थका कथनकरणेवासतै जो विद्वान्पुरुषोंका अथवा गुरुशिष्यका एकत्र अवस्थानहै ताकानाम समासहै तासमासविषे तिनसर्वोंनैं जित नाकअर्थ निर्णयकऱ्याहै तासर्वअर्थकानाम सामासिकहै ॥ तिससर्वअर्थकेमध्यविषे द्वंद्व कहिये रहस्यअर्थ मैंहूं ॥ तहां (द्वंद्वंरहस्य) इससूत्रविषे शाब्दिकपुरुषोंनैं द्वंद्वशब्दकूं रहस्यअर्थकावाचक कह्याहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् ॥ कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ॥ ३४ ॥ मृत्युः । सर्वहरः । च । अहम् । उद्भवः । च । भविष्यताम् । कीर्तिः । श्रीः । वाक् । च । नारीणाम् । स्मृतिः । मेधा । धृतिः । क्षमा॥३४॥इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! तथा संहारकर्त्तावोंकेमध्यमैं सर्वकासंहारकरणेहारा मृत्यु मैंहूं तथा भावीकिल्याणोंकेमध्यमैं उत्कर्षरूपउद्भव मैंहूं तथा सर्व नारियोंकेमध्यमैं कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहधर्मकीसप्तपत्नियां मैंहूं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसलोकविषेजितनेकसंहारकरणेहारे हैं तिनसर्वोंकेमध्यविषेसर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जो मृत्युहै सोमृत्यु मैंहूं ॥ तथा होणेहारेजितनेक कल्याणहैं तिनसर्वकल्याणोंकेमध्यविषे जोऐश्वर्यकाउत्कर्षरूप उद्भवहै सोउद्भव मैंहूं ॥ तथा सर्वनारियोंकेमध्यविषे धर्मकीपत्नियांरूप जेकीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहसप्तनारियां हैं तेमैंहूं ॥ तहां इसपुरुषकाधर्मीपणाहैनिमित्तजिसविषे ऐसीजा प्रसिद्धपणेकरिकै च्यारोंदिशावोंविषेस्थितअनेकदे शोंमैंरहणेहारेलोकोंकेज्ञानकीविषयतारूप प्रख्यातिहै ताकानाम कीर्तिहै ॥ और धर्म अर्थ काम इनतीनोंकानाम श्री है ॥ अथवा शरीरकीशोभाकानाम श्री है ॥ अथवा उज्ज्वलकांतिकानाम श्री है ॥ और सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारी जासंस्कृतवाणीरूप सरस्वती है ताकानाम वाक्है ॥ और पूर्वअनुभवकरेहुएअर्थकी जाबहुतकालकेपीछेभी स्मरणकरणेकीशक्तिहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ और अनेकग्रंथोंकेअर्थधारणकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम मेधाहै ॥ और अनेकप्रकारकी पीडाकेप्राप्तहुएभी शरीरइंद्रियरूपसंघातकेस्थिरताकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकरावणेहारेकारणकरिकै चपलताकेप्राप्त हुएभी तिसप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरणेकी जाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ और हर्षविषाद दोनोंविषे जाचित्तकीअविकारताहै ताकानाम क्षमाहै इति ॥ जिनकीर्तिआदि कसप्तनारियोंकेआभासमात्रकेसंबंधकरिकैभी यहजन सर्वलोकोंकरिकै आदरकरणेयोग्यहोवै हैं ॥ ऐसीकीर्तिआदिकसप्त नारियोंकूं सर्वनारियोंतैंउत्तमपणाअ तिप्रसिद्धहीहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ किंच ।

पराजयमात्रपर्यंत परस्पर कथाहै ताकानाम जल्पकथाहै तथावितंडाकथाहै ॥ तहां छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंकरिकै परपक्षकूं दूषितकरणा इतनाअंशतौ जल्पकथाविषे तथावितंडाकथाविषे समानहीहोवैहै तथापि वितंडाकथाविषेतौ एकपुरुषनैं आपणेपक्षका केवलस्थापनहीकरीताहै परपक्षविषे दूषणदईता नहीं ॥ और अन्यपुरुषनैंतौ तिसपक्षविषे केवल दूषणही दयीताहै आपणेमतकास्थापनकरीतानहीं ॥ और जल्पकथाविषेतौ विवादकर्त्तादोनोंपुरुषों नैं आपणाआपणापक्ष स्थापनभी करीताहै तथा दोनोंनैं परपक्षकूं दूषितभीकरीताहै इतना जल्प वितंडाका परस्परभेदहै तहां अन्यअर्थकेअभिप्रायकरिकै उच्चारणकरेहुएवचनका अन्यअर्थकल्पनाकरिकै तिसवक्तापुरुषकूं जोदूषणदेणाहै ताकानाम छलहै और असत्उत्तरकानाम जातिहै और पराजयकेहेतु कानाम निग्रहस्थानहै छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंका विभाग तथाउदाहरण न्यायग्रंथोंविषेप्रसिद्धहै इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अक्षराणामकारोऽस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ अक्षराणाम् । अकारः । अस्मि । द्वंद्वः । सामासिकस्य । च । अहम् । एव । अक्षयः । कालः । धाता । अहम् । विश्वतोमुखः॥३३॥इतिप०॥हेअर्जुन ! अक्षरोंके मध्यमैं अकारअक्षर मैं हूं तथा समाससमूहकेमध्यमैं द्वंद्वसमास मैंहूं तथा मैंपरमेश्वरही क्षयतैंरहित कालरूपहूं तथा सर्वफलप्रदा तावोंके मध्यमैं सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता अंतर्यामीईश्वर मैंहूं ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सर्ववर्णरूपअक्षरोंकेमध्यविषे (अकारोवैसर्वावाक्) इसश्रुतिनैं सर्ववाक्रूपकरिकैकथनकऱ्याजोअकारअक्षरहै सोअकारअक्षर मैंहूं ॥ तथा सर्वसमासोंकाजोसमूहहै ताकानाम सामासिकहै ऐसे समाससमूहकेमध्यविषे उभयपदार्थप्रधानजो रामकृष्णौ यहद्वंद्वसमासहै सोद्वंद्वसमास मैंहूं ॥ तहां उपकुंभं इत्यादिकअव्ययीभाव समासतौ पूर्वपदार्थप्रधानहोवै है ॥ और राजपुरुषःइत्यादिकतत्पुरुषसमासतौ उत्तरपदार्थप्रधानहोवै है ॥ और चित्रगुः इत्यादिकब हुव्रीहिसमासतौ अन्यपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं द्वंद्वसमासतैंभिन्न कोईभीसमास उभयपदार्थप्रधानहोवैनहीं यातैं तिनसर्वसमासोंतैं सोद्वंद्वसमास उत्कृष्टहै ॥ और क्षणघटिकादिकनाशवान्कालकाअभिमानीरूप तथातिससर्वकालकूंजानणेहारा जोपरमेश्वरनामा अक्षयकालहै जिसपरमेश्वररूपअक्षयकालकूं (कालकालोगुणीसर्वविद्यः) इत्यादिकश्रुतियां कालकाभीकालरूपकरिकैप्रतिपादनकरैं हैं ॥ सोअक्षयकालरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ यद्यपि (कालःकलयतामहम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं पूर्वही आपणेकूं कालरूपताकथनकरीथी तथापि पूर्व श्रीभगवान्नैं आपणेकूं नाशवान्कालरूपता कथनकरीथी और अबीइहां अक्षयकालरूपता कथनकरीहै यातैं इसवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और करेहुएकर्मकेफलकीप्राप्तिकरणेहारेजितनेकराजादिकहैं

टीका। हेअर्जुन ! जितनेकपावनकरणेहारेपदार्थहैं अथवा जितनेकवेगवालेपदार्थहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे पवन मैंहूं ॥ तथा युद्धविषे अत्यंतकुशल जितनेक शस्त्रोंकेधारणकरणेहारे योद्धाहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वराक्षसोंकेकुलकानाशकरणेहारा परमशूरवीर जोदशरथकापुत्र श्रीरामहै सोराम मैंहूं ॥ तथा सर्वमत्स्योंकेमध्यविषे मकरनामामत्स्य मैंहूं ॥ तथा वेगकरिकैचलायमानहैजलजिन्होंविषे ऐसीजे यमुनागोदावरी आदिकसर्वनदियांहैं तिनसर्वनदियोंकेमध्यविषे तिनसर्वनदियों तैंअत्यंतश्रेष्ठ श्रीगंगाजी मैंहूं ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ किंच।

(मू. श्लो.) सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन ॥ अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ सर्गाणाम् । आदिः । अंतः । च । मध्यम् । च । एव । अहम् । अर्जुन । अध्यात्मविद्या । विद्यानाम् । वादः । प्रवदताम् । अहम् ॥ ३२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! अचेतनरूपकार्योंका उत्पत्ति तथा स्थिति तथा लय मैंपरमेश्वर हीहूं तथासर्वविद्याओंकेमध्यमें अध्यात्मविद्या मैंहूं तथा विवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकेमध्यमें वादनामाकथा मैंहूं ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हेअर्जुन ! अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेकउत्पत्तिमानकार्यहैं तिनसर्वकार्योंका उत्पत्ति तथास्थिति तथालय मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ यद्यपि (अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच) इसवचनविषे पूर्वभी श्रीभगवान्नैं आपणेकूं सर्वभूतोंका उत्पत्तिस्थितिलयरूप कथनकऱ्याथा तथापि पूर्वतौ चेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकीही उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीथी और अबीइहां अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकी उत्पत्तिस्थिति लयरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं इहां पुनरुक्तिदोषकी प्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ तथा सर्वविद्यावोंकेमध्यविषे मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाजीवब्रह्मके अभेदकाप्रतिपादक ऐसीजाउपनिषदरूप अध्यात्मविद्याहै साअध्यात्मविद्यामैंहूं ॥ तथा परस्परविवादकर्त्ता पुरुषोंकी जा वाद जल्प वितंडा यहतीनप्रकारकीकथाहैं तिनकथावोंकेमध्यविषे वादनामाकथा मैंहूं ॥ इहां यद्यपि (प्रवदताम्) यहशब्द विवादकर्त्तापुरुषोंकाही वाचकहै तिनविवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकावाचकहैनहीं तथापि जैसे पूर्व (भूतानामस्मिचेतना) इसवचनविषे भूतानां इसशब्दकी तिनभूतसंबंधीपरिणामोंविषे लक्षणा अंगीकारकरीथी तैसे इहांभी प्रवदतां इसशब्दकी तिनविवादकर्त्तापुरुषसंबंधीकथावोंविषे लक्षणाअंगीकारकरणी उचितहै ॥ तहां परस्पर रागद्वेषतैंरहित तथापरस्पर जयपराजकीइच्छातैंरहित तथापरपर तत्त्वबोधनकरणेकीइच्छावाले ऐसेजे एकगुरुकेपासिअध्ययनकरणेहारेदोशिष्यहैं अथवा गुरुकेशिष्यदोनोंहैं तिनदोनोंकी जा तत्त्वनिर्णय पर्यंत परस्पर प्रश्नउत्तररूपकथाहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और वादकथाकाफलरूपजो तत्त्वनिर्णयहै तिसतत्त्वनिर्णयका प्रतिवादियोंकेखंडनकरिकै संरक्षणकरणेवास्तै परस्पर जीतनेकइच्छावालेदोपुरुषोंकी जो जय

हे अर्जुन ! नागोंकेमध्यमें अनंतनाग मैंहूं तथा जलचरोंकेमध्यमें वरुण मैं हूं तथा पितरोंकेमध्यमें अर्यमा मैंहूं तथा नियमनकरणेहारोंकेमध्यमें यम मैं हूं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वनागोंकेमध्यविषे तिनसर्वनागोंकाराजारूप जोशेषनामा अनंतनागहै सोअनंतनाग मैंहूं ॥ तथा जलविषेविचरणेहारे सर्वजीवोंकेमध्यविषे तिनसर्वजलचारीजीवोंकाराजारूप जोवरुणहै सोवरुण मैंहूं ॥ तथा सर्वपितरोंकेमध्यविषे तिनसर्वपितरोंकाराजारूप जोअर्यमानामा पितरहै सोअर्यमा मैंहूं ॥ तथा धर्मअधर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहनिग्रहरूप संयमकूंकरणेहारे जितनेक समर्थपुरुषहैं तिनसर्वनियमनकर्त्तावोंकेमध्यविषे यम मैंहूं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) प्रह्लादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम् ॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ प्रह्लादः । च । अस्मि । दैत्यानाम् । कालः । कलयताम् । अहम् । मृगाणाम् । च । मृगेंद्रः । अहम् । वैनतेयः । च । पक्षिणाम्॥३०॥इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! दैत्योंके मध्यमें प्रह्लाद मैं हूं तथा संख्यागणनकरणेहारोंकेमध्यमें काल मैंहूं तथा मृगादिकपशुवोंकेमध्यमें सिंह मैं हूं तथा सर्वपक्षि योंकेमध्यमें गरुड मैंहूं ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! दितिकेवंशविषे उत्पन्नभयेजितनेकदैत्यहैं तिनसर्वदैत्योंकेमध्यविषे आपणेसात्विकस्वभावकरिकै सर्वप्राणियोंकूं अतिशयकरिकै आनंदकी प्राप्तिकरणेहारा जोप्रह्लादहै सोप्रह्लाद मैंहूं ॥ तथा जितनेकसंख्याकेगणनकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे काल मैंहूं ॥ तथा मृगतैंआदिलेकेजितनेकपशुहैं तिनमृगादिकसर्वपशुवोंकेमध्यविषे तिनसर्वपशुवोंकाराजाजोसिंहहै सोसिंह मैंहूं ॥ तथा सर्वपक्षियोंकेमध्यविषे तिनसर्वपक्षियोंकाराजारूप तथाविनताकापुत्र जोगरुड है सोगरुड मैंहूं इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्रभृतामहम् ॥ झषाणांमकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्नवी ॥ ३१ ॥ पवनः । पवताम् । अस्मि । रामः । शस्त्रभृताम् । अहम् । झषाणां । मकरः । च । अस्मि । स्रोतसाम् । अस्मि । जाह्नवी ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! वेगवालोंकेमध्यमें वायु मैं हूं तथा शस्त्रधारियोंकेमध्यमें राम मैंहूं तथा मत्स्योंकेमध्यमें मकर मैं हूं तथा नदियोंकेमध्यमें श्रीगंगाजी मैंहूं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

सर्वअश्वोंकेमध्यमें अमृतकेमथनकरणेकालविषेउद्भवहुआ उच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान तथासर्वगजोंकेमध्यमें ऐरावतनामा गज मेरेकूंजान तथा सर्वनरोंकेमध्यमें रांजारूप मेरेकूंजान ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वअश्वों केमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्वहै जोउच्चैःश्रवसनामाअश्व अमृतकीप्राप्तिवासतै देवतावों नैं तथादैत्यों नैं मथन कियेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ऐसाउच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान ॥ तथा सर्वगजों केमध्यविषे ऐरावतनामागज मेरेकूंतूंजान ॥ जोऐरावतनामागज अमृत कीप्राप्तिवासतै देवतादैत्यों नैं मथनकरेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ॥ तथा सर्वनरों केमध्यविषे सर्वप्रजाकूं धर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा तथाअधर्म तैंनिवृत्तकरणेहारा जोराजाहै सोराजाहै मेरेकूंतूंजान इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) आयुधानामहंवज्रंधेनूनामास्मिकामधुक् ॥ प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः ॥ २८ ॥ आयुधानाम् । अहम् । वज्रम् । धेनूनाम् । अस्मि । कामधुक् । प्रजनः । च । अस्मि । कंदर्पः । सर्पाणाम् । अस्मि । वासुकिः ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! सर्वआयुधोंकेमध्यमें वज्र मैं हूं तथा सर्वधेनुवोंकेमध्यमें कामधेनु मैंहूं तथा सर्वकामोंकेमध्यमें पुत्रकीउत्पत्तिअर्थ काम मैं हूं तथा सर्वसर्पोंकेमध्यमें वासुकिनामासर्प मैं हूं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । अस्त्ररूपजितनेकआयुधहैं तिनसर्वआयुधोंकेमध्यविषे दधीचिकेअस्थियों तैंउत्पन्नहुआजोवज्रहै सोवज्र मैंहूं ॥ तथा दुग्धकीप्राप्तिकरणेहारी जितनीक धेनुहैं तिनसर्वधेनुवोंकेमध्यविषे मनवांछितकामोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथासमुद्रकेमथनतैंप्रगटहुई जावसिष्ठकीकामधेनुहै साकामधेनू मैंहूं ॥ तथा मैथुनकीअ भिलाषारूप सर्वकामोंकेमध्यविषे पुत्रकीउत्पत्तिवासतै जोकामरूपकंदर्पहै सोकामरूपकंदर्प मैंहूं ॥ इहां (प्रजनश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै सोचकार पुत्रकीउत्पत्तितैंविना व्यर्थमैथुनकेहेतुरूपकामकीनिवृत्तिकूंबोधनकरै है ॥ तथा सर्वसर्पोंकेमध्यविषे तिनसर्वसर्पोंकाराजाजोवासुकिहै सोवासुकि मैंहूं ॥ इहां सर्पजा तितैं नागजातिभिन्नहोवैहै ॥ तहां सर्पतौ विषवालेहोवैं हैं ॥ और नाग विषतैंरहितहोवैहैं इतनादोनोंविषेभेदहोवैं है ॥ यातैं (अनंतश्चास्मिनागानाम्) इसवक्ष्य माणवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहम् ॥ पितृणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् ॥ २९ ॥ अनंतः । च । अस्मि । नागानाम् । वरुणः । यादसाम् । अहम् । पितृणाम् । अर्यमा । च । अस्मि । यमः । संयमताम् । अहम् ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

(मू. श्लो.) महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरम् ॥ यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः ॥ २५ ॥ महर्षीणाम् । भृगुः । अहम् । गिराम् ! अस्मि । एकम् । अक्षरम् । यज्ञानाम् । जपयज्ञः । अस्मि । स्थावराणाम् । हिमालयः ॥२५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! महाऋषियोंके मध्यमें भृगुनामाऋषि मैं हूं तथा सर्वगिरावोंकेमध्यमें ओंकाररूप एक अक्षर मैंहूं तथा सर्वयज्ञोंकेमध्यमें जपरूपयज्ञ मैं हूं तथा सर्वस्थावरोंकेमध्यमें हिमालयपर्वत मैंहूं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्रह्माकेपुत्ररूप जितनेकमहाऋषिहैं तिनसर्व महाऋषियोंके मध्यविषे अत्यंततेजस्वी जोभृगुऋषिहै सो भृगुऋषि मैंहूं ॥ तथा अर्थकेवाचक पदरूप जितनीक गिराहैं तिनसर्व गिरावोंकेमध्यविषे ब्रह्मकावाचक जोएक अक्षररूप ओंकारपदहै सोओंकार मैंहूं ॥ तथा अश्वमेध ज्योतिष्टोम इसतैंआदिलेके जितनेवेदविषेयज्ञकथनकरे हैं तिनसर्वयज्ञोंकेमध्यविषे हिंसादिकसर्वदोषों तैंरहितहोणे तैं अत्यंतशुद्धिकरणेहाराजोजपरूपयज्ञहै सोजपरूपयज्ञ मैंहूं ॥ तथा इसलोकविषे चलायमानतातैंरहित जितनेकस्थितिवाले स्थावरपदार्थ हैं तिनसर्वस्थावरपदार्थोंकेमध्यविषे हिमालयपर्वत मैंहूं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अश्वत्थःसर्ववृक्षाणांदेवर्षीणांचनारदः ॥ गंधर्वाणांचित्ररथःसिद्धानांकपिलोमुनिः ॥ २६ ॥ अश्वत्थः । सर्ववृक्षाणाम् । देवर्षीणाम् । च । नारदः । गंधर्वाणाम् । चित्ररथः । सिद्धानाम् । कपिलः । मुनिः॥२६॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन!सर्ववृक्षोंकेमध्यमें पिप्पलवृक्षमैंहूं तथा सर्वदेवऋषियोंकेमध्यमें नारद मैंहूं तथा सर्वगंधर्वोंकेमध्यमें चित्ररथनामागंधर्व मैंहूं तथा सर्वसिद्धोंकेमध्यमें कपिल मुनि मैंहूं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वनस्पतिरूप जितनेकवृक्षहैं तिनसर्ववृक्षोंकेमध्यविषे पिप्पलनामा वृक्षमैंहूं ॥ तथा जेदेवताहुएही वेदमंत्रोंकेदर्शनकरिकेऋषिभावकूंप्राप्तहुएहैं तिनोंकानाम देवऋषिहै ऐसेदेवऋषियोंकेमध्यविषे नारदनामादेवऋषि मैंहूं ॥ तथा गायनकरणेहारे जितनेक गंधर्व हैं तिनसर्वगंधर्वोंकेमध्यविषे चित्ररथ नामा गंधर्व मैंहूं ॥ तथा जेपुरुष विनाही प्रयत्नतैं जन्ममात्रकरिकेही धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यता इत्यादिकगुणोंकूंप्राप्तहुएहोवें तथानिश्चयकऱ्याहैपरमार्थ वस्तुजिनों नें तिनपुरुषोंकानामसिद्धहै ऐसेसिद्धोंकेमध्यविषे कपिलमुनिनामासिद्ध मैंहूं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमाममृतोद्भवम् ॥ ऐरावतंगजेंद्राणांनराणांचनराधिपम् ॥ २७ ॥ उच्चैःश्रवसम् । अश्वानाम् । विद्धि । माम् । अमृतोद्भवम् । ऐरावतम् । गजेंद्राणाम् । नराणाम् । च । नराधिपम् ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

टीका । हे अर्जुन ! ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकेमध्यविषे गायनकीमधुरताकरिकै अत्यंतरमणीकजोसामवेदहै सोसामवेद मैंहूं ॥ तथा अग्नि वायुआदेस वेदेवताओंके मध्यविषे तिनसर्वदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै सोइंद्र मैंहूं ॥ तथा चक्षु श्रोत्र त्वक् रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन इनएकादशइंद्रियोंके मध्यविषे सर्वइंद्रियोंकाप्रवर्तकजोमनहै सोमन मैंहूं ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेसंबंधी जितनेकपरिणामहैं तिनोंकानामभूतहै ॥ ऐसेपरिणामरूपभूतोंकेमध्यविषे चैतन्यकीअभिव्यक्तिकरणेहारी जाबुद्धिकीवृत्तिरूपचेतनाहै साचेतना मैंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) रुद्राणांशंकरश्चास्मिवित्तेशोयक्षरक्षसाम् ॥ वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ रुद्राणाम् । शंकरः । च । अस्मि । वित्तेशः । यक्षरक्षसाम् । वसूनाम् । पावकः । च । अस्मि । मेरुः । शिखरिणाम् । अहम् ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन रुद्रोंकेमध्यमें शंकर मैं हूं तथा यक्षराक्षसोंकेमध्यमें कुबेर मैंहूं तथा वसुवोंके मध्यमें अग्नि मैं हूं तथा रत्नोंवालेपर्वतोंकेमध्यमें सुमेरु मैंहूं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! एकादशरुद्रोंकेमध्यविषे आपणेभक्तजनोंकेतांई निरतिशय मोक्षरूपआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोशंकरनामारुद्रहै सोशंकर मैंहूं ॥ तथा यक्षोंकेतथाराक्षसोंकेमध्यविषे संपूर्णधनकाअधिपतिजोकुबेरहै सोकुबेरमैंहूं ॥ तथा अष्टवसुवोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठजोअग्निहै सोअग्निमैंहूं ॥ तथा नानाप्रकारके रत्नरूपशिखरोंवाले जितनेकपर्वतहैं तिनसर्वशिखरोंकेमध्यविषे सुवर्णमयअत्यंतरमणीयजोसुमेरुहै सोसुमेरु मैंहूंइति ॥ २३ ॥ ❀ किंच ।

(मू. श्लो.) पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिम् ॥ सेनानीनामहंस्कंदःसरसामस्मिसागरः ॥ २४ ॥ पुरोधसाम् । च । मुख्यम् । माम् । विद्धि । पार्थ । बृहस्पतिम् । सेनानीनाम् । अहम् । स्कंदः । सरसाम् । अस्मि । सागरः ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन सर्वपुरोहितोंकेमध्यमें तूं मैंपरमेश्वरकूं सर्वतैंश्रेष्ठ बृहस्पतिरूप जान तथा सेनापतियोंकैं मध्यमैं स्कंद मैं हूं तथा जलाशयोंके मध्यमें सागर मैं हूं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । सर्वराजावोंविषे त्रिलोकीकापति देवराजइंद्र श्रेष्ठहै ऐसे देवराज इंद्रकाभीपुरोहितजो बृहस्पतिहै सोबृहस्पति सर्वराजावोंकेपुरोहितों तैंश्रेष्ठ है यातैं तिनसर्वपुरोहितोंकेमध्यविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं बृहस्पतिरूप जान । तथा सर्वसेनापतियोंकेमध्यविषे देवतावोंकासेनापतिजो स्कंदहै सोस्कंद मैंहूं ॥ तथा देवतावों नैं खोदेहुए जितनेक जलकेरहणेकेस्थानहैं तिनजलाशयरूप सरोवरोंकेमध्यविषे सगरकेपुत्रों नैं खोयाहुआजोसागरहै सोसागरमैंहूं इति॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ।

विष्णुः । ज्योतिषाम् । रविः । अंशुमान् । मरीचिः । मरुताम् । अस्मि । नक्षत्राणाम् । अहम् । शशी ॥२१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! आदित्योंकेमध्यमें विष्णुनामाआदित्य मैंपरमेश्वर हूं तथा प्रकाशकोंकेमध्यमें व्यापकप्रकाशवाला रवि मैंहूं तथा मरुद्गणोंके मध्यमें मरीचिनामामरुत् मैंहूं तथा नक्षत्रोंकेमध्यमें चंद्रमा मैंहूं ॥ २१॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! द्वादशआदित्योंकेमध्यमें विष्णुनामाआदित्य मैंहूं॥ अथवा विष्णुकहिये वामनअवतार मैंहूं ॥ तथा अग्नितैंआदिलैके जितनेकप्रकाशकरणेहारे हैं तिनसर्वप्रकाशकोंके मध्यविषे सर्वविश्वविषे व्यापकहैप्रकाशजिसका ऐसाजोसूर्य है सोमैं हूं ॥ तथा मरुत्नामाजेउनंचास देवताविशेषहैं तिनमरुतोंके मध्यमें मरीचिनामामरुत् मैंहूं ॥ तथा अश्विनीतैंआदिलैके जितनेक आकाशविषेस्थित तारागणरूपनक्षत्रहैं तिनसर्वनक्षत्रोंकेमध्यविषे तिनसर्वनक्षत्रोंकाअधिपतिचंद्रमा मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेद्वादशसूर्य तथाअग्निआदि सर्वज्योति तथा उनंचासमरुद्गण तथा अश्विनीआदिकसर्वनक्षत्र यहसर्वही यद्यपि सामान्यरूपतैं मैंपरमेश्वरकीही विभूतिहैं तथापि तिनोंकेमध्यविषे विष्णुनामाआदित्य तथारविनामाज्योति तथामरीचिनामामरुत् तथाचंद्रमानामानक्षत्र यहसर्वप्रभावकीअधिकताकरिके हमारी विशेषविभूतिहैं ॥ यातैं तिनद्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्य परमेश्वरही है याप्रकार परमेश्वरकीबुद्धिकरिकै सोविष्णुनामाआदित्य इनअधिकारीपुरुषोंनैं ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैंही रविमरीचि चंद्रमा यहतीनों मैंपरमेश्वररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहैं ॥ यहध्यानकीरीतिइसदशमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत सर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी इति ॥ इहां यद्यपि वामन राम इत्यादिक साक्षात् परमेश्वरकेअवतारही हैं तथा सर्वऐश्वर्यतावालेहैं आदित्यादिकोंकीन्याईं परमेश्वरकीविभूतिरूपनहीं हैं तथापि जैसे (वृष्णीनांवासुदेवोस्मि) इसवक्ष्यमाणवचनविषे श्रीभगवान्नैं तिसवासुदेवरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतै आपणाभी तिनविभूतियोंविषेही पठनकऱ्याहै ॥ तैसे वामनरामादिकोंकाभी तिसतिसरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतै श्रीभगवान्नैं आपणीविभूतियोंविषेही पठनकऱ्याहै ॥ इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः ॥ इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना ॥ २२ ॥ वेदानाम् । सामवेदः । अस्मि । देवानाम् । अस्मि । वासवः । इंद्रियाणाम् । मनः । चँ । अस्मि । भूतानाम् । अस्मि । चेतना॥२२॥इतिप॰ ॥ हे अर्जुन ! वेदोंकेमध्यमें सामवेद मैंहूं तथा देवतावोंकेमध्यमें इंद्र मैं हूं तथा इंद्रियोंकेमध्यमें मन मैं हूं तथा भूतोंकेमध्यमें चेतना मैं हूं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

इयत्तासंख्यातैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं प्रधानप्रधानभूत कोईकविभूतियांही मैंतुम्हारेताईं कथनकरताहूं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां तिनप्रधानप्रधानविभूतियों विषेभी जोप्रथमैं मुख्यवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै तिसकूं तूं श्रवणकर ।

(मू. श्लो.) अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितः ॥ अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥ अहम् । आत्मा । गुडाकेश । सर्वभूताशयस्थितः । अहम् । आदिः । च । मध्यम् । च । भूतानाम् । अंतः । एव । च ॥२०॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेगुडाकेशअर्जुन ! सर्वभूतों केहृदयदेशविषेस्थित चैतन्यआनंदघन मैंहीहूं तथा मैंपरमेश्वरही सर्वभूतोंका उत्पत्तिहूं तथा स्थितिहूं तथा विनाशहूं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे गुडाकेश अर्जुन ! सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषे अंतर्यामिरूपकरिकै तथाप्रत्यक्आत्मारूपकरिकै स्थितजोचैतन्यस्वरूप आनंदघन परमात्मादेवहै सो परमात्मावासुदेव मैंहीहूं ॥ इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै तुमनैं मैंपरमेश्वरकाध्यानकरणा ॥ इहां (हेगुडाकेश) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या गुडाकानाम निद्राकाहै ॥ तानिद्राकूं जोआपणेवशकरैहै ताकानाम गुडाकेशहै ॥ ऐसा निद्रादिकाविकारोंकूं आपणेवशकरणेहारा तूं अर्जुन अभेदरूपकरिकैमैंपरमेश्वर केध्यानकरणेविषेसमर्थ है इति ॥ इतनेकरिकै उत्तमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणेकरैं हैं (अहमादिःइति) हे अर्जुन इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोवै तौ आगेकथनकरणेयोग्यध्यान तुम्हारेकूं करणेयोग्यहै। तिनवक्ष्यमाणध्यानोंविषेभी प्रथम जोवस्तु ध्यानकरणेयोग्यहै तिसकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (अहमादिःइति) हे अर्जुन ! लोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितने कप्राणीहैं तिनसर्वप्राणियोंका मैं परमेश्वरही उत्पत्तिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरही तिनसर्वप्राणियोंकी स्थितिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरही तिनसर्वप्राणियोंकाविनाशहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वप्राणियोंकी उत्पत्तिस्थितिनाशरूपकरिकै तथातिनसर्वप्राणियोंका कारणरूपकरिकै मैंपरमेश्वरही तुम्हारेकूं ध्यानकरणेयोग्यहूं ॥ इतनेकरिकै मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकारकेध्यानकरणेविषेभी जोतूं समर्थनहींहोवै तौ आगेकथन करणेयोग्य बाह्यध्यानही तुम्हारेकूं करणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् मंदअधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकै तिनबाह्यध्यानोंकूं इसदशम अध्यायकीसमाप्तिपर्यंत विस्तारतैं कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषांरविरंशुमान् ॥ मरीचिर्मरुतामास्मिनक्षत्राणामहंशशी ॥ २१ ॥ आदित्यानाम् । अहम् ।

कन्याहै ॥ और (हे जनार्दन) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवानूकेप्रति यहअर्थ सूचनकन्या ॥ सर्वजनोंनैं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासतै तथामो क्षकीप्राप्तिवासतै जिसकेप्रति याचनाकरीतीहै ताकानाम जनार्दनहै ऐसेआपजनार्दनकेआगे यहहमारीयाचनाभी उचितहै इति ॥ शंका–हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरे हुएअर्थके पुनःकथनकरणेकीयाचना तूं किसवासतैकरताहै ॥ पूर्वकथनकरेहुएअर्थकापुनःकथनकरणा पीसेहुएअन्नकूंपुनः पीसणेकीन्याई संभवता नहीं ऐसीश्रीभ गवानूकीशंकाकेहुए अर्जुन ! तापुनःकथनकरणेकीयाचनाविषे कारणकूंकहैहै (तृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतमिति) हे भगवन् ! जिसकारणतैं अमृतकीन्याई पदपदविषेस्वादुस्वादु ऐसेजेआपकेवचनहैं ऐसेआपकेअमृतमयवचनोंकूं श्रवणइंद्रियरूपमुखकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्तिहोतीनहीं अर्थात् इनवचनोंकूं श्रवणकरिकै अबीमैं तृप्तहुआहूं याप्रकारकीअलंबुद्धिकरिकै तिनवचनोंकेश्रवणविषयक हमारीइच्छानिवृत्तहोतीनहीं ॥ जिसकारणतैं तिसआपणेयोगकूं तथाविभू तिकूं पुनःहमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्जुनकेप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ हंततेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्मविभूतयः ॥ प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यंतोविस्तरस्यमे ॥ १९ ॥ हंत । ते । कथयिष्यामि दिव्याः । हि । आत्मविभूतयः । प्राधान्यतः । कुरुश्रेष्ठ । न । अस्ति । अंतः । विस्तरस्य । मे ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकुरुवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन मैं अबी तुम्हारेताईं प्रसिद्ध तथादिव्य आपणीविभूतियां प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीविभूतियोंके विस्तारका कोईपार नहीं है ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां (हंत) यहशब्द इदानींकालकावाचकहै अर्थात् अबीही तेविभूतियां मैं तुम्हारेताईं कहताहूं ॥ अथवा हंत यहशब्द अनुमतिकावाचकहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेआगे तुमनैं जिसअर्थकेजानणेकीप्रार्थनाकरीहै सोअर्थअवश्यकरिकै तुम्हारेताईं कथनकरूंगा तूं व्याकुलमतहोउ ॥ इसप्रकार अर्जुनकूं धैर्य देकरिकै श्रीभगवान् तिसअर्थकेकथनकरणेका प्रारंभकरैंहैं ॥ हे अर्जुन मैंपरमेश्वरकी जेअसाधारणविभूतियां दिव्यरूपकरिकै प्रसिद्धहैं तेआपणीविभूतियां मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेताईं प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं अर्थात्आपणीप्रधानप्रधानविभूतियोंकूं मैंकथनकरताहूं ॥ शंका–हे भगवन् ! जितनीआपकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप विभूतियां है तेसर्वहीविभूतियां आप हमारेताईं कथनकरो ॥ केवल प्रधानप्रधानविभूतियोंकूं किसवासतैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनआपणेविभूतियोंकीअनंतताकूं कथनकरैंहैं (नास्त्यंतोविस्तरस्यमेइति) हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकी जितनीक प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप सर्वविभूतियां हैं तेसर्वविभूतियां कथनकरणेकूंअशक्यहैं ॥ जिसकाणतैं मैंपरमेश्वरके तिनविभूतियोंकेविस्तारका कोईअंतनहींहैं अर्थात् सर्वविभूतियां इतनी हैं याप्रकारकी

(मू. श्लो.) कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥ केषुकेषुचभावेषुचिंत्योसिभगवन्मया ॥ १७ ॥ कथम् । विद्याम् । अहम् । योगिन् । त्वाम् । सदा । परिचिंतयन् । केषु । केषु । च । भावेषु । चिंत्यः । असि । भगवन् । मया ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे योगिन् मैंस्थूलबुद्धिवालाअर्जुन सर्वदा तुम्हाराध्यानकरताहुआ तुम्हारेकूं किसप्रकारतें जानूं हे भगवन् किनं किनं वस्तुवोंविषे मैंअर्जुननें तूंपरमेश्वर चिंतनकरणेयोग्याहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे योगिन् ! इहां निरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिकानाम योगहै सोयोग जिसविषेविद्यमानहोवै ताकानाम योगिन्है अर्थात् हेनिरतिशयऐश्वर्यादिक शक्तिवाला कृष्णभगवान् ॥ अत्यंतस्थूलबुद्धिवाला मैंअर्जुन सर्वकालविषे तुम्हाराध्यानकरताहुआ देवादिकोंकरिकैभी जानणेकूं अशक्य तैंपरमेश्वरकूं किसप्रकारतैं जानूं ॥ शंका–हे अर्जुन ! हमारीविभूतियोंविषे मैंपरमेश्वरकूं ध्यानकरताहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूं जानैंगा ॥ यहही हमारेजानणेकाप्रकारहै ॥ ऐसीश्रीभगवान्की शंकाकेहुए जिनविभूतियोंविषेस्थितआपका ध्यानकरताहुआ मैं आपकूंजानूंगा तिनविभूतियोंकूंही मैं प्रथम जानतानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं अर्जुन कथनकरै है (केषुकेषुचभावेषुइति) हे भगवन् ! तुम्हारीविभूतिरूप किनकिन चेतनअचेतनरूपवस्तुवोंविषे मैं अर्जुन करिकै आप चिंतनकरणेयोग्यहो अर्थात् किनकिनविभूतियोंविषे मैं अर्जुन आपकाचिंतनकरूं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हे भगवन् ! जिनजिनविभूतियोंविषे आपचिंतनकरणेयोग्यहो तिनविभूतियोंकूं मैं अर्जुन जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपही कृपाकरिकै तिनआपणेविभूतियोंकूं कथनकरो ॥ इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुन करैहै ।

(मू. श्लो.) विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन ॥ भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतम् ॥ १८ ॥ विस्तरेण । आत्मनः । योगम् । विभूतिम् । च । जनार्दन । भूयः । कथय । तृप्तिः । हि । शृण्वतः । न । अस्ति । मे । अमृतम् ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे जनार्दन आप आपणे योगकूं तथा विभूतिकूं पुनः विस्तारकरिकै कथनकरो जिसकारणतैं तुम्हारेवचनरूप अमृतकूं श्रवणकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्ति नहीं होवै है ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे जनार्दन ! सर्वज्ञपणा तथासर्वशक्तिसंपन्नपणा इत्यादिकऐश्वर्यतारूपजोयोगहै तथा अधिकारीजनोंके ध्यानकाआलंबनरूपजाविभूतिहै ऐसे आपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पुनः विस्तारकरिकै कथनकरो ॥ यद्यपि तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पूर्व सप्तमअध्यायविषे तथानवमअध्याय विषे संक्षेपतैंकथनकरिआयेहो तथापि अबी तिसयोगकूं तथाविभूतिकूं विस्तारकरिकैकथनकरो ॥ यहअर्थ अर्जुननैं (भूयः) इसशब्दकेकहणेकरिकैसूचन

आराधनकरणेयोग्यहुआ भी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिहोतानहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी आराधनकरणेयोग्यहुआभी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिनहीं होवैगा किंतु तिसपरमेश्वरतैंभिन्नहीकोई इसजगत्कापतिहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकै निवृत्तकरणेवास्तै अर्जुन तिसपरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहैहै (हेजगत्पतेइति) अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति हितकाउपदेशकरिकै शुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणेहारा तथाअहितकाउपदेशकरिकै अशुभकर्मोंतैंनिवृत्तकरणेहारा ऐसाजोदेवहै तादेवकूं सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नकरिकै आपही इससर्वजगत्कूंपालनकरतेहो ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ।। इसप्रकारकेसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट आपपरमेश्वरही सर्वप्राणियोंकेपिताहो तथासर्वप्राणियोंकेगुरुहो तथासर्वप्राणियोंकेराजाहो ।। इसकारणतैंही आपसर्वप्रकारकरिकै सर्व प्राणियोंकूंआराधनकरणेयोग्यहो ॥ ऐसेमहान्प्रभाववालेआपविषे पुरुषोत्तमपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् ! जिसकारणतैं आपपरमेश्वरकी विभूतियोंकूं अन्यकोई भी देवता वाऋषि वादानव वामनुष्यजानिसकतानहीं ॥ और तेआपकी विभूतियां हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणीचाहियें ।। तिसकारणतैं तेआपकीविभूतियां आपही हमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुनकरैहै ।

(मू. श्लो.) वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः ॥ याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि ॥१६॥ वक्तुम् । अर्हसि । अशेषेण । दिव्याः । हि । आत्मविभूतयः । याभिः । विभूतिभिः । लोकान् । इमान् । त्वम् । व्याप्य । तिष्ठसि ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् ! जिनै विभूतियोंकरिकै इन सर्वलोकोंकूं व्यापकरिकै तुम स्थितहो तेविभूतियां जिसकारणतैंदिव्यहैं तिसकारणतैं आपही तेसमग्र आपणीविभूतियां कहणेकूं योग्यहो ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! जिन आपणीविभूतियोंकरिकै आप इसमनुष्यलोकतैं आदिलेकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूंव्यापकरिकै स्थितहो तेआपकी असाधारण विभूतियां जिसकारणतैं दिव्यहैं अर्थात् अस्मदादिकअसर्वज्ञपुरुषोंनैं आपेही जानणेकूंअशक्यहैं ।। तथा अवश्यकरिकै जानणीचाहिये ॥ जिसकारणतैं आप सर्वज्ञही तेआपणीसमग्रविभूतियां कहणेकूंयोग्यहो इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका--हेअर्जुन ! लोकविषे प्रयोजनतैंविना किसीभीचेतन प्राणीकी प्रवृत्तिहोतीनहीं किंतु किसीप्रयोजनकाउद्देशकरिकैही सर्वप्राणियोंकी प्रवृत्तिहोवैहै । यातैं तिनविभूतियोंकेजानणेकरिकै तुम्हारा जोप्रयोजन सिद्धहोताहोवै सोआपणा प्रयोजन तूं प्रथम हमारेप्रति कथनकर पश्चात् मैं तुम्हारेताईं तेआपणीविभूतियां कथनकरौंगा ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै ताआपणेप्रयोजनकूं कथनकरैहै ।

ऋषिआदिकसवोंकाआदिकारणहो तथा तिनेदेवतावोंकरिकैभी जानणेकूंअशक्यहो तिसकारणतैं तुमआपही आपकेप्रभावकूं यथावत्जानतेहो ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥ भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १९ ॥ स्वयम् । एँव आत्मना । आत्मा नम् । वेत्थ । त्वम् । पुरुषोत्तम । भूतभावन । भूतेश । देवदेव । जगत्पते ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेपुरुषोत्तम हेभूतभावन हेभूतेश हेदेवदेव हेजगत्पते श्रीभगवान् अन्यकेउपदेशतैंविनाँही तूं आपणेस्वरूपकरिकै आपणेआत्माकूं जानताहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेभगवन् ! अन्यकिसीकेउपदेशतैंविनाही तूं आपही आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै आपणेनिरुपाधिकस्वरूपकूं तथासोपाधिकस्वरूपकूं जानताहै ॥ तहां आपणेनिरुपाधिकशुद्धस्वरूपकूंतौ प्रत्यक्‌रूपकरिकै तथाअविषयतारूपकरिकै जानताहै और आपणेसोपाधिकस्वरूपकूंतौ निरतिशयज्ञानऐश्वर्यादिकशक्तिमत्‌रूपकरिकै जानताहै अन्यकोई देवता वाऋषि वादानव मनुष्य तिसतुम्हारेस्वरूपकूं जानतानहीं ॥ शंका—हेअर्जुन ! अन्यदेवतादिकोंकेकरिकै जानणेकूं अशक्यस्वरूपकूं मैंपरमेश्वरभी कैसेजानूंगा ॥ ऐसीभिगवान्‌कीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ अर्जुन अत्यंतप्रेमकीउत्कंठाकरिकै श्रीभगवान्‌के बहुतसंबोधनोंकूं कथनकरैहै (हेपुरुषोत्तम) अर्थात् हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ ॥ तात्पर्ययह ॥ तुम्हारीअपेक्षाकरिकै दूसरेसर्वपुरुष अपकृष्टही हैं ॥ यातैं तिनदूसरेपुरुषोंकूं जोअर्थजानणेकूं अशक्यहै सोअर्थ सर्वतैंउत्तमतैं परमेश्वरकूं जानणेकूं शक्यही है इति ॥ अब परमेश्वरविषेकथनकऱ्याजोपुरुषोत्तमपणाहै तिसपुरुषोत्तमपणेकूं पुनःच्यारिसंबोधन करिकै प्रतिपादनकरैं हैं (हेभूतभावनइति) तहां सर्वभूतोंकूं जो उत्पन्नकरै है ताकानाम भूतभावन है अर्थात् हेसर्वभूतोंकेपिता तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष पिताहुआभी पुत्रादिकोंकानियंताहोतानहीं तैसेपरमेश्वरभी तिनसर्वभूतोंकापिताहुआभी तिनसर्वभूतोंका नियंतानहींहोवैगा किंतु तापरमेश्वरतौ भिन्नही कोई तिनभूतोंकानियंताहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहैहै (हेभूतेशइति) अर्थात् हेसर्वभूतोंके नियंता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकराजादिकपुरुष आपणीप्रजादिकोंकेनियंताहुएभी तिनप्रजादिकोंकरिकै आराधन करणेयोग्यहोतेनहीं तैसे सोपरमेश्वरभी तिनसर्व भूतोंका नियंताहुआभी तिनसर्वभूतोंकरिकै आराधनकरणेयोग्यनहीं होवैगा किंतु तापरमेश्वरतैं भिन्नहीकोई आराधनकरणेयोग्यहावैगा ॥ ऐसीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधनकरैहै (हेदेवदेवइति) तहां सर्वप्राणियोंकरिकै आराधन करणेयोग्य जेइंद्रादिकेदेवताहैं तिनइंद्रादिकेदेवतावोंकरिकैभी जोआराधनकऱ्याजावैहै ताकानाम देवदेवहै अर्थात् हेदेवतावोंतैं आदिलेकेसर्वप्राणियोंकरिकै आराधन करणेयोग्य ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष

तिननारदादिकोंकीअत्यंत श्रेष्ठताकेबोधनकरणेवासतैंहै इति ॥ और (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनकरिकै जो अर्जुननैं आपणेनिश्चयविषे ऋषियोंकेवचनोंकी संमति कथनकरीहै ताकरिकैयहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ इनअधिकारीपुरुषोंनैं शास्त्रद्वारा आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहुआभी आत्माकास्वरूप ताकेविषे पुनःसंशयकीअनुत्पत्तिवासतै ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंकीसंमति अवश्यकरिकै ग्रहणकरणी इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां गुरुशास्त्रउपादिष्टअर्थविषे इस अधिकारीपुरुषनैंकदाचित्भी संशयनहींकरणा किंतु सोगुरुशास्त्रनैं उपदेशकऱ्याहुआ सर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीसत्यत्वबुद्धिहीकरणी ॥ इसअर्थकूंसूचनकर ताहुआ सोअर्जुन तिनवचनोंविषे आपणेसत्यत्वबुद्धिकूं कथनकरैहै ।

(मू. श्लो.) सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसिकेशव ॥ नहितेभगवन्व्यक्तिंविदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥ सर्वम् । एतत् । ऋतम् । मन्ये । यत् । माम् । वदसि । केशव । न । हि । ते । भगवन् । व्यक्तिम् । विदुः । देवाः । न । दानवाः ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेकेशव ! मैंअर्जुनकेप्रति जोवचन आप कथनकरतेहो यह सर्ववचन मैं सत्य मानताहूं जिसकारणतें हेभगवन् तुम्हारे प्रभावकूं देवताभी नहीं जानतेहैं तथा दानवभी नहीं जानते हैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेकेशव ! मैंअर्जुनकेप्रति जोपूर्व आपनैं आपकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तथा भृगुआदिकसर्वऋषियोंनैं जोआपकास्वरूप कथनकऱ्याहै तिनसर्व वचनोंकूं मैंअर्जुन सत्यहीमानताहूं ॥ हेभगवन् ! तुम्हारेवचनोंविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी अप्रमाणपणेकीशंकानहीं है ॥ इसहमारेहृदयकीवार्त्ताकूं सर्वज्ञहोणेतैं आप जानतेहीहो ॥ यहअर्थ अर्जुननैं केशव इससंबोधनकरिकैसूचनकऱ्या ॥ तहां (केशौवातिअनुकंप्यतयाअवगच्छतीतिकेशवः) ॥ अर्थयह ॥ क नाम ब्रह्माकाहै और ईश नामरुद्रकाहै तिनदोनोंकूं अनुग्रहकरिकैजोप्राप्तहोवै ताकानाम केशवहै ॥ इसप्रकाकीव्युत्पत्तिकूंअंगीकारकरिकै सोकेशवशब्द निरतिशयऐश्वर्यकाही प्रतिपादकहै ॥ ऐसेंकेशवनामवाले आपपरमेश्वर हमारेहृदयकेवृत्तांतकूंजानतेहीहो इति ॥ यातें हेभगवन् ! जोपूर्व आपनैं (नमेविदुःसुरगणाः प्रभवंनमहर्षयः) इत्यादिकवचन कथनकरेथे तेसर्व आपकेवचन यथार्थही हैं हेभगवन् ! अर्थात् हेसमग्रऐश्वर्यादिकषट्भगसंपन्न ! तुम्हारेप्रभावकूं बहुत बुद्धिमान इंद्रादिकदेवताभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुम्हारेप्रभावकूं मधुआदिकदानवभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुम्हारेप्रभावकूं भृगुआदिकमहान्ऋषिभी जानिसकतेनहीं ॥ जबीतिस तुम्हारेप्रभावकूं सर्वज्ञ इंद्रादिकदेवता तथामधुआदिकदानव तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानिसकते तबी इदानीं कालकेअल्पज्ञमनुष्य तिम आपकेप्रभावकूं नहींजानैंहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् ! जिसकारणतैं आपपरमेश्वर तिनदेवता

कारणरूपअज्ञानकूं नाशकरतेनहीं ॥ और आपपरब्रह्मतौ इनअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइके अज्ञानरूपकारणसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरोहो ॥ याकारणतैंही (पवित्राणांपवित्रंयोमंगलनांचमंगलम्) इत्यादिकस्मृतिवचन आपकूं पवित्रकरणेहारेतीर्थादिकसर्वपवित्रोंकाभी पवित्रकरणेहारा कथनकरें हैं ॥ तथा सर्व मंगलोंकाभी मंगलरूप कथनकरें हैं ॥ शंका–हेअर्जुन ! ऐसाहमारास्वरूप तुमनें केवल आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहै अथवा किसीप्रमाणतैं निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन तिसउक्तस्वरूपविषे परमआप्तरूपऋषियोंके तथासाक्षात्श्रीभगवान्के वचनरूपप्रमाणकूंकथनकरे है (पुरुषंशाश्वतम्) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै ॥ हे भगवन् ! ज्ञाननिष्ठावाले जेभृगुवसिष्ठादिकसर्वऋषि है तथा देवऋषिजो है तथा असितऋषिजोहै देवलऋषिजोहै तथा साक्षात्विष्णुकाअवताररूपजोव्यासमुनिहैं यहसर्वऋषिभीहमारेताईं इसीप्रकारके तुम्हारेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ तेभृगुआदिकसर्वऋषि किसप्रकारकेहमारे स्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुनकहे है (पुरुषमिति) हेभगवन् तेभृगुआदिकसर्वऋषिभी अनंतमहिमावालेआपपरमेश्वरकूं पुरुषकहैं हैं अर्थात् (पुरुषान्नपरं किंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इसश्रुतिविषे पुरुषशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो निर्विशेषपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मरूप आपकूं कथनकरैं हैं तथा तेऋषि आपकूं शाश्वत कहैं हैं अर्थात् भूत भविष्यत् वर्तमान सर्वकालविषे एकरूप कहैं हैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं दिव्य कहैं हैं ॥ तहां (परमेव्योमन्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिविषे परमव्योमशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो स्वस्वरूपहै तास्वस्वरूपकानाम दिवहै तादिवविषेजोविराजमानहोवै है ताकानाम दिव्यहै ॥ ऐसेदिव्यरूप आपकूं कहैं हैं अर्थात् सर्वप्रपंचतैंरहितकहैं हैं ।। तथा तेऋषि आपकूं आदिदेव कहैं हैं ॥ इहां सर्वजगत्केकारणकानाम आदिहै और स्वप्रकाशकानाम देवहै जोआदिहोवे तथादेवहोवे ताकानाम आदिदेवहै अर्थात् तेऋषि आपकूं सर्वजगत्काकारणरूप तथास्वप्रकाशरूप कहैं हैं ॥ इहां कारणकीस्वप्रकाशताकहणेतैं नैयायिकोंनैंकल्पनाकरेहुए परमाणुरूपकारणकी तथा सांख्यियोंनैंकल्पनाकरेहुए प्रधानरूपकारणकी व्यावृत्तिकरी ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिसर्व जडहोणेतैं परप्रकाशही हैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं अज कहैं हैं अर्थात् जन्मतैंरहित कहैं हैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं विभु कहैं हैं अर्थात् सर्वत्रव्यापककहैं हैं ॥ हेभगवन् ! केवल तेभृगुआदिकऋषिही हमारेताईं इसप्रकारकेतुम्हारेस्वरूपकूं नहींकथनकरैं हैं किंतु जिसआपपरमेश्वरकेवेदरूपवचनोंकेअनुसारीहुएही तिनभृगुआदिकऋषियोंकेवचन प्रमाणरूपहोवैं हैं ॥ ऐसेसाक्षात्आपभगवान्ही हमारेताईं (भोक्तारंयज्ञतपसाम् सर्वभूतस्थितंयोमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसीप्रकारकेआपके स्वरूपकूंकथनकरतेभयेहो इति ॥ इहां यद्यपि (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनविषेस्थितजो सर्व यहशब्दहै तासर्वशब्दकरिकैही तिननारदादिकसर्वऋषियोंकाग्रहणहोइसकैहै तथापि नारद असित देवल श्रीव्यास इनचारोंका जो अर्जुननैं नामलैके पृथक्ग्रहणकऱ्याहै सो साक्षात् परमेश्वरकेस्वरूपकेवक्तापणेकरिकै

त्मज्ञानकीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरेकिसीकर्मकी अथवा अभ्यासकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और ताआत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तितैं अनंतर पूर्वविद्यमानहुएही ब्रह्मभाव रूपमोक्षकीअभिव्यक्तिहोवैहै कोईपूर्वनहींउत्पन्नहुएमोक्षकी तिसआत्मज्ञानतैं उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जिसउत्पत्तिकरिकै तिसमोक्षविषेभी स्वर्गादिकफलोंकी न्याई नाशवत्ता अथवा कर्मादिकोंकीअपेक्षा होवै इति ॥ और (भास्वता) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे वायुतैंरहितदे शविषेस्थित प्रकाशमानदीपकविषे तीव्रपवनादिकप्रतिबंधकहोवैंनहीं तैसे मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकैप्राप्तहुए आत्मज्ञानविषे असंभावनादिकदोष प्रति बंधकहोवैंनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरके विभूतिकूं तथायोगकूं सामान्यतैं श्रवणकरिकै पुनःविशेषकरिकै ताविभूतियोगकेश्रवणकर णेकी परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ जो अर्जुन प्रथम श्रीभगवान्कीस्तुतिकूंकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंभवान् ॥ पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभुम् ॥ १२ ॥ आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षि र्नारदस्तथा ॥ असितोदेवलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे ॥ १३ ॥ परम् । ब्रह्म । परम् । धाम । पवित्रम् । परमम् । भवान् । पुरुषम् । शाश्वतं । दिव्यम् । आदिदेवम् । अजम् । विभुम् । आहुः । त्वाम् । ऋषयः । सर्वे । देवर्षिः । नारदः । तथा । असितः देवलः । व्यासः । स्वयम् । च । एव । ब्रवीषि । मे ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् ! पर ब्रह्म तथा परम धाम तथापरम पवित्र आपहीहो जिसकारणतैं भृगुआदिकसर्व ऋषि तथा देवर्षि नारद तथाअसित तथादेवल तथाव्यास यहसर्व हमारेताईं तुम्हारेकूं पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेव अज विभुरूप कथनकरैंहैं तथा साक्षात्आप ही कथनकरते हो ॥ १२ ॥ १३ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! आप परब्रह्मरूपहो अर्थात् तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसर्वउपाधियोंतैंरहितनिर्विशेषब्रह्महै सोआपहीहो ॥ इहां (परम्) इस विशेषणकरिकै उपासनाकरणेयोग्य सोपाधिकअपरब्रह्मकीव्यावृत्तिकथनकरीहै ॥ काहेतैं (तदेवब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते) यहश्रुति उपासनाकरणेयोग्य सो पाधिकअपरब्रह्मका निषेधकरिकै निर्विशेषचैतन्यकूंही ब्रह्मकहैहै ॥ पुनःकैसेहोआप परंधामहो अर्थात् स्थूलतैंआदिलैकेअव्याकृतपर्यंत सर्वप्रपंचकाआश्र यरूपहो ॥ अथवा परमप्रकाशरूपहो इहांभी (परम्) इसविशेषणकरिकै वृत्तिरूपअपरप्रकाशकीव्यावृत्तिकथनकरीहै ॥ काहेतैं (ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) यहश्रुति तिसवृत्तिरूपज्ञानकूं मनकाहीपरिणामविशेष कथनकरैहै ॥ पुनःकैसेहोआप परमपवित्रहो अर्थात् लोकशास्त्रविषेप्रसिद्ध जितनेकपावनकरणेहारे तीर्थादिकहैं तिनसर्वोंतैं आपपरम उत्तम पावनकरणहारेहो ॥ काहेतैं श्रद्धापूर्वककरेहुए तेतीर्थादिक इसपुरुषके केवलपापकर्मकूंही नाशकरैं हैं तिनपापकर्मोंके

अज्ञानकीनिवृत्तिरूपव्यापारवालाहुआ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपफलकी प्राप्तिकरै है ॥ तिसमध्यवर्त्तीव्यापारकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः ॥ नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता ॥ ११ ॥ तेषाम् । एव । अनुकंपार्थम् । अहम् । अज्ञानजम् । तमः । नाशयामि । आत्मभावस्थः । ज्ञानदीपेन । भास्वता ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तिनभक्तजनोंके ही अनुग्रहअर्थ तिन्होंकि आत्माकारवृत्तिविषेस्थितहुआ मैंपरब्रह्म चिदाभासयुक्त तिसवृत्तिज्ञानरूप दीपककरिकै तिन्होंके अज्ञानजन्य आवरणरूपतमकूं नाशकरूंहूं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्तरीतिसैं जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकाभजनकरैं हैं ॥ तिनभक्तजनोंकेही अनुकंपाअर्थ अर्थात् इनहमारेभक्तजनोंका किसीभीप्रकारकरिके श्रेयहोवै याप्रकारकेअनुग्रहवासतै मैंस्वप्रकाश चैतन्य आनंदअद्वितीयरूप प्रत्यक्‌आत्मा तिनभक्तजनोंके आत्मभावविषेस्थितहुआ अर्थात् तिनभक्तजनोंकी महावाक्यतैंजन्य जा आत्माकार अंतःकरणकीवृत्तिहै ता वृत्तिविषे विषयतारूपकरिकैस्थितहुआ तिसीही चिदाभासयुक्त अंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानदीपकरिकै अज्ञानजन्यतमकूं नाशकरूंहूं अर्थात् अज्ञानहैउपादानकारणाजिसका ऐसाजो मिथ्याज्ञानरूप आत्माविषयक आवरणरूपअंधकारहै तिसआवरणरूपतमकूं ताकेउपादानकारणरूपअज्ञानकानाशकरिकै नाशकरूंहूं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्ध सर्वभ्रमस्थलविषे तिसभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान अधिष्ठानकेज्ञानकरिकेही निवृत्तहोवैहै अन्यकिसीउपायकरिकै सोअज्ञाननिवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सर्परजतादिरूपभ्रमका उपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकेही निवृत्तहोवैहै अन्यकिसीउपायकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तथा सर्वस्थलविषे उपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपकार्यकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपघटपटादिककार्योंकाभी अवश्यकरिकैनाश होवैहै तैसे आत्माकारअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशहुएतैं तिसतमरूपउपादेयकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ इहां (ज्ञानदीपेन) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानविषे दीपककीसादृश्यतारूप रूपालंकार कथनकऱ्या ॥ तारूपालंकारकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे केवल तद्दीपककीउत्पत्तिमात्रही अपेक्षितहोवैहै तिसदीपककीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरे किसीकर्मकी अथवाअभ्यासकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ और तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर पूर्वविद्यमानघटादिकवस्तुवोंकीही अभिव्यक्तिहोवैहै पूर्वनहींउत्पन्नहुईकिसीवस्तुकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तिमात्रही अपेक्षितहोवैहै ॥ तिसआ

वान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (संतोषादनुत्तमःसुखलाभःइति) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं तिससंतोषतैंही सर्वतैंउत्तमसुखकी प्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशींकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इस लोकविषे जितनाक विषयजन्यसुखहै तथास्वर्गादिकलोकोंविषे जितनाक विषयजन्यमहान्दिव्यसुखहै तेसर्वसुख तृष्णाकीनिवृत्तिरूपसंतोषजन्यसुखके षोडशवेंभागकेतुल्यभीनहींहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! जेअधिकारीजन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं मैंपरमेश्वरकाभजनकरैंहैं तिनअधिकारीजनोंकूं मैंपरमेश्वरभी तिसबुद्धियोगकीप्राप्तिकरिकै आपणेनिर्गुणस्वरूपकीही प्राप्तिकरूंहूं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते ॥ १० ॥ तेषाम् । सततयुक्तानाम् । भजताम् । प्रीतिपूर्वकम् । ददामि । बुद्धियोगम् । तम् । येन । माम् । उपयांति । ते ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषेंहैएकाग्रबुद्धिजिन्होंकी तथा प्रीतिपूर्वक मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्त बुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वर उत्पन्नकरूंहूं जिसबुद्धियोगकरिकै तेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवैंहैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्व (मच्चित्तामद्गतप्राणाः) इसश्लोककरिकै कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेभजनकाप्रकारहै तिसप्रकारकरिकै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकाभजन करैंहैं ॥ तथा सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषेंहैएकाग्रबुद्धिजिन्होंकी ॥ इसीकारणतैंही जेपुरुष लाभ पूजा ख्याति इत्यादिक लौकिकप्रयोजनोंकीनहीं इच्छा करतेहुए अत्यंतप्रीतिपूर्वक एकमैंपरमेश्वरकाही भजनकरैं हैं ॥ तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्तबुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वरही उत्पन्नकरूंहूं अर्थात् (सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारा सम्यक्दर्शनरूपबुद्धियोगहै तिसबुद्धियोगकूं मैं परमेश्वरही उत्पन्नकरूंहूं ॥ शंका–हेभगवन् तिसबुद्धियोगकरिकै तिनअधिकारीजनोंकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धियोगकाफल कथनकरैं हैं (येनमामुपयांतितेइति) हे अर्जुन ! जिसबुद्धियोगकरिकै तेहमारेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूंही आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवैं हैं अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशकूंप्राप्तहोवैहै तथा जैसेश्रीगंगायमुनादिकनदियां आपणेआपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेअभेदभावकूं प्राप्तहोवैं हैं तैसे तेहमारेभक्तजनभी हमारीभक्तिकरिकैउत्पन्नहुए तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैं हैं अर्थात् मैंअद्वितीयनिर्गुणपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहीजानैंहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां आपणेभक्तजनोंकेप्रति परमेश्वरनैं प्राप्तकऱ्याजो तत्त्वज्ञानरूपबुद्धियोगहै सोबुद्धियोग जिस

कन्याहुआ यह सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत् आपणीआपणीमर्यादाका नहींउल्लंघनकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अथवा प्रत्यक्साक्षीआत्मारूपमैंपरमेश्वरकीसत्तास्फूर्तिकूंपाइके यहबुद्धिइंद्रियादिकसर्वप्रपंच नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरै है ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं जानिकरिकैविवेककरिकैजान्याहैतत्त्ववस्तुजिन्होंनें ऐसेबुद्धिमानपुरुष परमार्थतत्त्वकाग्रहणरूपप्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं भजैं हैं अर्थात् नित्य निरंतर मैंपरमेश्वरकाही चिंतनकरैं हैं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! सोआपका प्रेमपूर्वकभजन कैसाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसप्रेमपूर्वकभजनकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परम् ॥ कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥९ ॥ मच्चित्ताः । मद्गतप्राणाः । बोधयंतः । परस्परम् । कथयंतः । च । माम् । नित्यम् । तुष्यंति । च । रमंति । च ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषेहै चित्त जिन्होंका तथा मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुएहैंप्राणजिन्होंके तथा परस्पर मैंपरमेश्वरकाही बोधनकरतेहुए तथा नित्यही मैंपरमेश्वरकूं कथन करतेहुए तेहमारेभक्त संतोषकूं प्राप्तहोवैं हैं तथा सुखकूंअनुभवकरैं हैं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषेही हैचित्तजिन्होंका तिनोंकानाम मच्चित्तहै ॥ अथवा मैंपरब्रह्महीहूंचित्तविषेजिन्होंके तिन्होंकाना मच्चित्तहै अर्थात् जेपुरुष चित्तकरिकै मैंपरमेश्वरकाही सर्वदा चिंतनकरैं हैं और मैंपरमेश्वरकूं ही प्राप्तहुएहैं प्राण क्या चक्षुआदिकइंद्रिय जिन्होंके तिन्होंकानाम मद्गतप्राणहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकेवास्तैही है चक्षुआदिकइंद्रियोंकाव्यापार जिन्होंके तिन्होंकानाम मद्गतप्राणहै ॥ अथवा बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंपरमेश्वरविषेही लयकरैं हैं चक्षुआदिकसर्वकरणजिन्होंनें तिन्होंकानाम मद्गतप्राणहै ॥ अथवामैंपरमेश्वरके भजन अर्थ है प्राण क्या जीवन जिन्होंका अन्यकिसीप्रयोजनवास्तै जिन्होंकाजीवनहैनहीं तिन्होंकानाम मद्गतप्राणहै ॥ तथा जेपुरुष विद्वान्पुरुषोंकीसभाविषे श्रुतिवचनोंकरिकै तथाश्रुतिअनुकूलयुक्तियोंकरिकै अन्योन्य मैंपरमेश्वरकाही बोधनकरैं हैं तथा जेपुरुष नित्यप्रति आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेताईं मैंपरमेश्वरकाही ज्ञेयरूपकरिकै तथाध्येयरूपकरिकै उपदेशकरैं हैं इसप्रकार मैंपरमेश्वरविषेजोचित्तकाअर्पणहै तथाबाह्यनेत्रादिककारणोंकाअर्पणहै तथाआपणेजीवनकाअर्पणहै तथास्वसमानपुरुषोंका जोपरस्पर मैंपरमेश्वरकाबोधनहै तथा आपणेतैंन्यूनबुद्धिवालेशिष्योंकेताईं जोमैंपरमेश्वरकाउपदेशकरणाहै यहही मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकैही तेविद्वान्पुरुष तोषकूं प्राप्तहुएहैं अर्थात् इस परमेश्वरकेभजनकीप्राप्तिकरिकैही हम कृतकृत्यहुएहैं इसभगवद्भजनतैंअन्य कोईभीपदार्थ हमारेइष्टकासाधन नहींहै इसप्रकारकेज्ञानरूप संतोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तथा तिससंतोषकरिकैही तेविद्वान्जन सर्वतैंउत्तमसुखकूं अनुभवकरैं हैं ॥ संतोषकरिकैहीउत्तमसुखकीप्राप्ति होवैहै यहवार्त्ता पतंजलिभग

(मू. श्लो.) एतांविभूतिंयोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः ॥ सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥ एताम् । विभूतिम् । योगम् । च । मम । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । सः । अविकंपेन । योगेन । युज्यते । न । अत्र । संशयः ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष मैंपरमेश्वरके इसपूर्वउक्त विभूतिकूं तथा योगकूं यथावत् जानै है सोपुरुष अचल योगकरिकै युक्तहोवै है इसविषे कोईभीप्रतिबंधक नहीं है ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्व (बुद्धिर्ज्ञानम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीहुई जाबुद्धितैं आदिलेकेअयशपर्यंत मैंपरमेश्वरकीविभूतिहै तथा भृगुआदिक सप्तमहाऋषिरूप तथासनकादिकच्यारिमहाऋषिरूप तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुरूप जाहमारीविभूतिहै अर्थात् तिसतिस बुद्धिआदिरूपकरिकै तथातिसतिस महाऋषिआदिरूपकरिकै जामैंपरमेश्वरकीस्थितिहै ऐसी मैंपरमेश्वरकीविभूतिकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यथावत् जानैहै तथा जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेयोगकूं यथावत् जानै है इहां तिसतिसअर्थकेउत्पन्नकरणेकासामर्थ्यरूप जोपरमऐश्वर्यहै ताकानाम योगहै ऐसेपरमऐश्वर्यरूपयोगकूं जोपुरुष जानैहै सोअधिकारीपुरुष चलायमानतातैं रहित योगकरिकै युक्तहोवै है अर्थात् सोपुरुष तत्त्वज्ञानकीस्थिरतारूपसमाधिकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ हे अर्जुन ! इसहमारी विभूतिके तथायोगके जानणेहारेपुरुषकूं तासमाधिरूपयोगकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयनहीं है अर्थात् कोईभीप्रतिबंधकरणेहारानहीं है इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरके जिस विभूति योग दोनोंके ज्ञानकरिकै इसअधिकारी पुरुषकूं अचलसमाधिरूपयोगकी प्राप्तिहोवै है तिसज्ञानके स्वरूपकूं अब श्रीभगवान् च्यारि श्लोकोंकरिकै वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते ॥ इतिमत्वाभजंतेमांबुधाभावसमन्विताः ॥ ८ ॥ अहम् । सर्वस्य । प्रभवः । मत्तः । सर्वम् । प्रवर्त्तते । इति । मत्वा । भजंते । माम् । बुधाः । भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरही सर्वजगत्के उत्पत्तिकारणहूं तथा मैंपरमेश्वरतैंही सर्व प्रवृत्तहोवै हैं इसप्रकारतैं मानिकरिकै बुद्धिमान् जन प्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं आराधनकरैं हैं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वासुदेवनामा मैंपरब्रह्महीं इससर्वजगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं अर्थात् मैंपरमेश्वरही इससर्वजगत्का उपादानकारणरूपहूं तथानिमित्तकारण रूपहूं ॥ तथा इसजगत्के स्थितिनाशादिकसर्वव्यवहारभी मैंपरमेश्वरतैंही प्रवर्त्तहोवैं हैं अर्थात् सर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वज्ञ ऐसेमैंअंतर्यामीपरमेश्वरकरिकै प्रेरणा

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं कैसेहैं तेभृगुआदिकसप्तऋषिवेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं भलीप्रकारतैंजानंणेहारे हैं ॥ तथा सर्वज्ञहैं ॥ तथा वेदविद्याकेसंप्रदायकी प्रवृत्तिकरणेहारे हैं ॥ याकारणतैंही तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकूं शास्त्रविषे महाऋषिकहैं हैं ॥ तहां तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकेनाम तथासृष्टिकेआदिकालविषे तिन्होंकीउत्पत्ति पुराणोंविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक (भृगुंमरीचिमत्रिंचपुलस्त्यंपुलहं क्रतुम् ॥ वसिष्ठंचमहातेजाःसोसृजन्मनसासुतान्) अर्थयह ॥ भृगु मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वसिष्ठ इनसप्तऋषिरूपपुत्रोंकूं सोमहान्तेजवालाब्रह्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आपणेमनकरिकै उत्पन्नकरताभया इति ॥ तथा सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नहुएजे सावर्णिआदिकनामकरिकैप्रसिद्धच्यारिमनुहैं ॥ अथवा (महर्षयःसप्त) इसवचनकरिकैतौ भृगुआदिकसप्तमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (पूर्वेचत्वारः) इसवचनकरिकै तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंतैंभीपूर्वउत्पन्नहुए सनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (मनवस्तथा) इसवचनकरिकै स्वायंभुवआदिकचतुर्दशमनुवोंकाग्रहणकरणा इति ॥ कैसेहैं तेभृगुआदिक सर्व मद्भावहैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरविषेहै भाव क्या भावना जिन्होंकी तिन्होंकानाम मद्भावहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकाचिंतनरूपभावनाकेवशतैं आविर्भूतहुआहै मैंपरमेश्वरकाज्ञान तथाऐश्वर्य तथानानाप्रकारकीशक्तियां जिनोंकूं ॥ पुनःकैसेहैं तेभृगुआदिक मानसहैं अर्थात् ब्रह्माकेमनकेसंकल्पमात्रतैंही उत्पन्नहुएहैं ॥ अन्यमनुष्योंकीन्याईं योनितैंउत्पन्नहुएनहीं ॥ इसीकारणतैंही विशुद्धजन्मवालेहोणेतैं तेभृगुआदिकसर्वप्राणियोंतैं श्रेष्ठहैं ॥ और शास्त्रविषे (योनिंविनानशरीरम्) यहजोवचनकह्याहै सो इसवचनविषे योनिशब्द स्त्रीकेयोनिकावाचकनहींहै किंतु सोयोनिशब्द कारणकावाचकहै अर्थात् कारणतैंविना शरीर उत्पन्न नहींहोवै है इति ॥ ऐसेभृगुआदिकसप्तमहाऋषि तथासनकादिकच्यारिमहाऋषि तथास्वायंभुवादिकचतुर्दश मनु यहसर्व सृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपमैं परमेश्वरतैंही उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ जिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकी तथासनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकी तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुवोंकी इसलोकविषे जन्म करिकै तथाविद्याकरिकै यहब्राह्मणादिकसर्वप्रजा संततिरूपहैइति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ (लोकइमाः) इसवचनविषे लोकःयहप्रथमाविभक्तिअंतपद ग्रहणकरिकैयहअर्थकर्‍याहै ॥ जिनभृगुआदिकोंकीयहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथाताप्रजाकेनिवासकाआधारभूतयहलोक दोनों संततिरूपहैं इति ॥ अथवा (येषां) यहषष्ठीविभक्ति येभ्यः इसपंचमीविभक्तिकेअर्थविषेहै यातैं यहअर्थसिद्धहोवै है ॥ जिनभृगुआदिकोंतैं यहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथा यहलोक उत्पन्नहोताभयाहै ऐसेभृगुआदिकोंकाभीकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ६ ॥  ॥ इसकारणतैं सोपाधिकपरमेश्वरके प्रभावकूंकथनकरिकै अब तिसप्रभावकेज्ञानकाफल कथनकरैं हैं ।

पदच्छेदकरणा ॥ तहां असत्तानाम अभावहै ॥ और त्रासकानाम भयहै ॥ त्रासतैंरहितहोणेकानाम अभयहै ॥ इहां (भयंचाभयमेवच) इसवचनविषे स्थित प्रथमचकारतौ पूर्वउक्तबुद्धिआदिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतै है और दूसराचकारतौ पूर्वनहींकथनकरेहुए बुद्धिआदिकोंकेविरोधी अबुद्धि अज्ञान संमोह अक्षमा असत्य इत्यादिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतेहै ॥ और एव यहशब्द तिनबुद्धिआदिकोंविषे सर्वलोकप्रसिद्धताके बोधनकरणेवासतेहै अर्थात् यहबुद्धि आदिक सर्वलोकविषेप्रसिद्धही हैं इति ॥ और स्थावरजंगमसर्वप्राणियोंकीपीडातैंजानिवृत्तिहै ताकानाम अहिंसाहै अर्थात शरीरमनवाणीकरिकै जोकिसीभी प्राणीमात्रकूं पीडाकीनहींप्राप्तिकरणी ताकानाम अहिंसाहै ॥ और इष्टवस्तुके तथाअनिष्टवस्तुके प्राप्तहुएभी जाचित्तकी रागद्वेषादिकोंतैंरहितअवस्थाहै ताका नाम समताहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेवशतैं यत्किंचित्भोग्यपदार्थोंकेप्राप्तहुए इतनेपदार्थोंकरिकेही हमारेकूं तृप्तिहै यात्रकारकीजाअलंबुद्धिहै जिसकूं संतोषकहैं हैं ताकानाम तुष्टिहै ॥ और शास्त्रउपदिष्टमार्गकरिकै जोशरीरइंद्रियोंकाशोषणहै अर्थात् कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकरिकै जोशरीरइंद्रियोंके बलकीक्षीणताकरणी है ताकानाम तपहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सत्पात्रविषे श्रद्धाकरिकै यथाशक्तिपरिमाण जो अन्नसुवर्णादिकपदार्थोंकासमर्पणहै ताकानाम दानहै ॥ और धर्मरूप निमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषे प्रशंसादिरूपप्रसिद्धिहै ताकानाम यशहै ॥ और अधर्मरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषेनिंदारूपप्रसिद्धिहै ताकानाम अयशहै यह बुद्धितैंआदिलेकेअयशपर्यंत जेकार्यविशेषहैं ॥ जेबुद्धिआदिककार्य धर्मअधर्मादिकसाधनोंकीविचित्रताकरिकै नानाप्रकारके हैं ॥ ऐसेसर्वप्राणियोंके बुद्धिआदिकपदार्थ आपणेआपणेकारणोंसहित मैंपरमेश्वरतैंहीउत्पन्नहोवै हैं ॥ अन्यकिसीतैं तेबुद्धिआदिक उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ ऐसेसर्वकेकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इति ॥४॥५॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! केवलबुद्धिआदिकोंकाकारणहोणेतैं मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंका महेश्वरपणा नहीं है ॥ किंतु भृगुआदिकमहान्ऋषियोंका तथास्वायंभुवादिकमनुवोंका कारणहोणे तैंभी मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥

(मू. श्लो.) महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥ ६ ॥ महर्षयः । सप्त । पूर्वे । चत्वारः । मनवः । तथा । मद्भावाः । मानसाः । जाताः । येषाम् । लोके । इमाः । प्रजाः ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं तथा सावर्णीआदिकच्यारि मनुहैं जेभृगुआदिक मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहैं तथा मनकेसंकल्पमात्रतैं उत्पन्नहुएहै तथा जिनंभृगुआदिकोंकी इसलोकविषे यह ब्राह्मणादिकप्रजाहै तेभृगुआदिकभी मैंपरमेश्वरतेंही उत्पन्नहुएहैं ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

(लोकमहेश्वरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिसी सर्वलोकमहेश्वरपणेकूं विस्तारतैं प्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहःक्षमासत्यंदमःशमः ॥ सुखंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥ अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः ॥ भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥ ५ ॥ बुद्धिः । ज्ञानम् । असंमोहः । क्षमा । सत्यम् । दमः । शमः । सुखम् । दुःखम् । भवः । भावः । भयम् । च । अभयम् । एव । च । अहिंसा । समता । तुष्टिः । तपः । दानम् । यशः । अयशः । भवंति । भावाः । भूतानाम् । मत्तः । एव । पृथग्विधाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! बुद्धि ज्ञान असंमोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख भव भाव भय तथा अभय अहिंसा समता तुष्टि तप दान यश अयश यहलोकप्रसिद्ध नानाप्रकारके कार्यविशेष सर्व प्राणियोंके मैंपरमेश्वरतैं ही उत्पन्नहोवैं हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वप्राणियोंके यहबुद्धितैंआदिलेके अयशपर्यंत कार्यविशेष मैंपरमेश्वरतैंही उत्पन्नहोवैं हैं अन्यकिसीतैंउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ अब तिनबुद्धिआदिकोंकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ तहां अंतःकरणविषे जोसूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेकासामर्थ्य है ताकानाम बुद्धिहै और आत्मा अनात्मारूप सर्वपदार्थोंकाजोअवबोधहै ताकानाम ज्ञानहै और ज्ञातव्यतारूपकरिकै अथवा कर्त्तव्यतारूपकरिकै प्राप्तभयेजेपदार्थ हैं तिनपदार्थोंविषे व्याकुलतातैंरहितहोइकै जाविवेकपूर्वक प्रवृत्तिहै अर्थात ताकेइष्टअनिष्टरूपफलकेविचारपूर्वक जाप्रवृत्तिहै ताकानाम असंमोहहै और कठोरवाणी करिकै अथवा दंडादिकोंकरिकै ताडनकरेहुएपुरुषकेचित्तका जोनिर्विकारपणाहै अर्थात तिसताडनकरणेहारेप्राणीकेअनिष्टकानहींचिंतनकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक यातीन प्रकारकेउपद्रवोंके सहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ तहां ज्वरादिकरोग आध्यात्मिकउपद्रव कहेजावैं हैं ॥ और अतिशीत अतितप्त अतिवर्षा इत्यादिक आधिदैविकउपद्रव कहेजावैं हैं ॥ और सर्प व्याघ्र शत्रुइत्यादिकआधिभौतिकउपद्रव कहेजावैं हैं इति ॥ और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जोअर्थ जिसप्रकारतैं निश्चयकऱ्याहै तिसअर्थकूं तिसीप्रकारतैं कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकी जाशब्दादिकविषयों तैं निवृत्तिहै ताकानाम दमहै ॥ और अंतःकरणकी जा तिनशब्दादिकविषयों तैं निवृत्तिहै ताकानाम शमहै ॥ और केवलधर्म हैअसाधारणकारणजिसका तथाअनुकूलतारूपकरिकैही सर्व प्राणियोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोआनंदहै ताकानाम सुखहै ॥ और केवलअधर्म हैअसाधारणकारणजिसका तथाप्रतिकूलतारूपकरिकैही सर्वप्राणियोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोपरितापहै ताकानाम दुःखहै ॥ और उत्पत्तिकानाम भवहै ॥ और सत्तानाम भावहै ॥ अथवा (भवोभावः) इसवचनविषे भवः अभावः याप्रकारका

है ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥ अथवा ॥ शंका—हे भगवन् ! तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि जोकदाचित् आपपरमेश्वरकेप्रभावका उपदेशकरणेविषे समर्थनहीं है तौ आपही हमारेप्रति ताआपणेप्रभावकाउपदेशकरो परंतु तिसआपके प्रभावकेजानणे करिकै हमारेकूं कौनफलहोवेगा ॥ ऐसी अर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताज्ञानकाफल कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) योमामजमनादिंचवेत्तिलोकमहेश्वरम् ॥ असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥ यः । माम् । अजम् । अनादिम् । च । वेत्ति । लोकमहेश्वरम् । असंमूढः । सः । मर्त्येषु । सर्वपापैः । प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ अर्जुन ! जन्मतैंरहित तथा कारणतैं रहित तथासर्वलोकोंकामहानईश्वर ऐसेमैंपरमेश्वरकूं जोपुरुष जानैं हैं सोपुरुष सर्वमनुष्योंके मध्यविषे संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापों नैं परित्यागकरिताहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरही सर्वजगत्काकारणहूं ॥ यातैं नहींविद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताका नाम अनादिहै ऐसाअनादिरूप मैंपरमेश्वरहूं ॥ और अनादिहोणेतैंही मैंपरमेश्वर अजहूं अर्थात् उत्पत्तिरूप जन्मतैंरहितहूं ॥ तथा सर्वलोकोंकामहेश्वरहूं ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकूं जोअधिकारीपुरुष आपणेआत्मासेअभिन्नरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै सोपुरुष सर्वमनुष्योंके मध्यविषे असंमूढहुआ अर्थात् अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा आत्माअनात्माकेतादात्म्यअध्यास रूप संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापोंतैंमुक्तहोवैहै अर्थात् बुद्धिपूर्वककरेहुए तथाअबुद्धिपूर्वककरेहुए भूत भविष्यत वर्त्तमान सर्वपापोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष मुक्तहोवैहै ॥ इहां (प्रमुच्यते) इसवचनविषेस्थितजो प्र यहशब्दहै ताप्रशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या यद्यपि अज्ञानीपुरुषभी तिनपापकर्मोंके भोगकरिकै तथाप्रायश्चित्तकरिकै तिनपापकर्मों तैंमुक्तहोवैहै तथापि तेअज्ञानीपुरुष ताकरिकै तिनपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपापकर्मोंकाकारणरूप जोअज्ञानहै तथा ताअज्ञानकृतजो देहादिकोंविषे अहंममअध्यासहै सोअज्ञान तथाअध्यास तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे विद्यमानहै तिसतैं पुनः पापोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और भोगकरिकै निवृत्तहुएभी तेपापकर्म संस्काररूपतैं तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे बनेरहैं हैं ॥ याकारणतैंही तिनसंस्कारोंके वशतैं तेअज्ञानीपुरुष पुनः तिनपापकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषतो आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपमूलकारणकी तथातत्जन्यअहंममअध्यासकी तथासंस्कारसहितसर्वपापकर्मोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं सोतत्त्ववेत्तापुरुषही तिनसर्वपापकर्मों तैं अत्यंतमुक्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे (क्षीयन्तेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेनथा) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे

शंका—हे भगवन् ! ऐसेवचनतो पूर्व बहुतवार आप हमारेप्रति कथनकरि आयेहो ॥ तिनवचनोंकूं पुनः अबी किसवासतै कथनकरते हो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् दुर्विज्ञेयवस्तुका पुनःपुनः उपदेशकरणेतैंही बोधहोवैहै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै आपणेस्वरूपकीदुर्विज्ञेयताकूं कथन करैहैं ॥ अथवा ॥ शंका—हे भगवन् ! हमारेप्रति तैंपरमेश्वरकेस्वरूपकाउपदेशकरणेहारे इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि बहुतहैं तिनोंकेवचनश्रवणतैंही हमारेकूं आपकेस्वरूपकाज्ञान होवैगा ॥ इसविषे आपकेकहणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए जिनइंद्रादिकोंकेवचनतैं तूं हमारेस्वरूपकाज्ञान चाहताहै तिनइंद्रादिकोंकूंही हमारास्वरूप दुर्विज्ञेयहै इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः ॥ अहमादिर्हिदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः ॥ २ ॥ नं । मे । विदुः । सुरगणाः । प्रभवम् । नं । महर्षयः । अहम् । आदिः । हि । देवानाम् । महर्षीणाम् । च । सर्वशः॥२॥इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरके प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता नहीं । जानैंहैं तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानैं हैं जिसकारणतै मैंपरमेश्वर तिनदेवतावोंका तथा तिनमहान् ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकाजो प्रभावहै अर्थात् आकाशादिकसर्वप्रपंचके उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश नियमन निग्रह अनुग्रह इत्यादिकोंकेकरणेकाजो सामर्थ्यरूप प्रभावहै अथवा अनेकविभूतियोंकरिकै आविर्भावरूपजोप्रभवहै तिसहमारे प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि सर्वज्ञहुएभी जानतेनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि तिसआपकेप्रभावकूं किसकारणतैं नहींजानतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहैंहैं (अहमादिर्हिइति) हे अर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरतिनइंद्रादिकदेवतावोंका तथातिनभृगुआदिकमहान्ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंके तथाभृगुआदिकऋषियोंके उत्पादकपणेकरिकै तथाबुद्धिआदिकोंका प्रवर्त्तकपणेकरिकै कारणहूं अथवा मैंपरमेश्वर तिनोंका उपादानरूपकरिकै तथानिमित्तरूपकरिकै कारणहूं तिसकारणतैं तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि मैंपरमेश्वरकेकार्यहोणेतैं कारणरूपमैंपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानिसकतेनहीं ।। जैसे पिताके प्रभावकूं पुत्र जानिसकतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरही आपणाप्रभाव तुम्हारेताईं कथनकरताहूं ॥ तहां परमेश्वरतैंही सर्वदेवतावों तथासर्वऋषियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (तस्माचदेवाबहुधासंप्रसूताः यस्मिन्युक्तामहर्षयोदेवताश्च ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धही है इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां सोपरमेश्वरकेप्रभावकाज्ञान महान्फलकाहेतुहै ॥ यातैं कोईकअधिकारीजनही तिसपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानैं

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तम अष्टम नवम इन तीनअध्यायोंकरिकै तत्पदार्थरूपपरमेश्वरका सोपाधिकस्वरूप तथानिरुपाधिकस्वरूप दिखाया ॥ तिसतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकीजेविभूतियां हैं तेविभूतियां तिस सोपाधिकस्वरूपकेतौध्यानविषे उपायभूतहैं ॥ और तेविभूतियां तिसनिरुपाधिकस्वरूपकेतौ ज्ञानविषे उपायभूतहैं ॥ ऐसी परमेश्वरकीविभूतियांभी सप्तमअध्याय विषेतौ (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकरिकै और नवमअध्यायविषेतौ (अहंक्रतुरहंयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिकै संक्षेपतैं कथनकरी ॥ तिन संक्षेपतैं कथनकरीहुई विभूतियोंका विस्तार अब अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ काहेतैं कितनेकबहिर्मुखलोकोंकूंसोपरमेश्वरकास्वरूपध्यानकरणेवासतैभी अत्यंतदु र्विज्ञेयहै ॥ ऐसेस्वरूपकाजो पुनःपुनःकथनहै सोतिसस्वरूपकेज्ञानवासतैहीहै याकारणतैं श्रीभगवान्नैं यह दशमअध्याय प्रारंभकरीता है ॥ तहां प्रथम अर्जुनकेचित्तविषे उत्साहकरावणेवासतै परमकृपालु श्रीभगवान् विनाहीपूछेतैं ताअर्जुनकेप्रति कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ भूयएवमहाबाहोशृणुमेपरमंवचः ॥ यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १ ॥ भूयः । एव । महाबाहो । शृणु । मे । परमम् । वचः । यत् । ते । अहम् । प्रीयमाणाय । वक्ष्यामि । हितकाम्यया ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः भी मैंपरमेश्वरके उत्कृष्ट वचनकूं तूं श्रवणकर जोवचन मैंपरमेश्वर तुम्हारे हितकी कामनाकरिकै तैं प्रीतिवालेकेताईं कथन करताहूं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेमहानबाहुवाला अर्जुन ! तूं पुनःभी मैंपरमेश्वरके अत्यंतउत्कृष्टवचनकूं श्रवणकर ॥ जोवचन मैंपरमआप्त परमेश्वर तुम्हारेइष्टकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तुम्हारेताईं कथनकरताहूं ॥ अब अर्जुनकेप्रति तिसवचनकेउपदेशकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताअर्जुनका विशेषणकहैं हैं (प्रीयमाणायइति) हे अर्जुन ! जैसे अमृतकेपानतैं प्रीतिकाअनुभवकरीताहै तैसे मैंपरमेश्वरकेवचनरूपअमृतकेपानतैं तूं प्रीतिकूं अनुभवकरणेहाराहै ॥ यातैं तुम्हारेताईं पुनःभी मैं उपदेशकरताहूं ॥ इहां (प्रीयमाणाय) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनोंके वचनोंकूं श्रवणकरिकै हमारेइष्टकीसिद्धि अवश्यकरिकैहोवैगी यापकारकी दृढभावनाकरिकै जोपुरुष प्रीतिपूर्वक तिनवचनोंकूं श्रवणकरैहै तिस आधिकारीपुरुषकेताईंही तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ ताप्रीतितैंरहित पुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणानहीं इति ॥ और तिसवचनकाजो परमें यहविशेषणकथनकऱ्याहै तापरमविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थसूचनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारावचन अत्यंतउत्कृष्टहै तिसकारणतैं इसहमारेवचनकेश्रवणतैं तुम्हारेकूं अवश्यकरिकै इष्टअर्थकीप्राप्ति होवैगी इति ॥ १ ॥ ❀ ॥

तूंअर्जुनभी मैं परमेश्वरकीभक्तितैंउत्पन्नहुएब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकसर्वउपाधियों तैंरहितहुआ अभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुण ब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ तहां श्रुति ॥ (यथानद्यःस्यंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदियां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेजाइकै एकताभावकूंप्राप्तहोवैं हैं तैसे यहविद्वान्पुरुषभी नामरूपतैंरहितहुआ सर्वतैंउत्कृष्ट स्वयंज्योति परमात्मापुरुषकंही अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै इति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ (मामेवआत्मानमेष्यसि) इसप्रकारतैं पदोंकीयोजनाकरिकै (आत्मानम्) इसपदकरिकै परमात्माकाही ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥



यहपुरुष जबी परमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै तबीइसपुरुषकूं मोक्षरूपसत्यफलकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ और यहपुरुष जबी इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइके तिसपरमात्मादेवकूं नहींसाक्षात्कारकरैहै तबीइसपुरुषकूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकीहीप्राप्तिहोइके इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वकथनकरेहुए भजनकेप्रकारकूंकथनकरतेहुए श्रीभगवान् इसनवमाध्यायकीसमाप्तिकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्याराजगुह्ययोगोनामनवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९॥ मन्मनाः । भव । मद्भक्तः । मद्याजी । माम् । नमस्कुरु । माम् । एव । एष्यसि । युक्त्वा । एवम् । आत्मानम् । मत्परायणः ॥ ३४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! तूं मैंपरमेश्वरविषेमनवाला होउ मेराभक्त होउ तथा मेरेपूजनपारायण होउ तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकर ईसप्रकारतें मैंपरमेश्वरकेशरणहुआ तूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरविषे जोडिकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जिसपुरुषकामन केवल मैंपरमेश्वरविषेही संलग्नहै अन्यपुत्रभार्यादिकोंविषे संलग्नहैनहीं तिसपुरुषकानाम मन्मनाहै ऐसा मन्मना तूंहोउ ॥ और जोपुरुष एकमैंपरमेश्वरकाहीभक्तहै धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै अन्यराजादिकोंका भक्तहैनहीं तिसपुरुषकानाम मद्भक्तहै ऐसा मद्भक्त तूंहोउ ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे जोराजादिकोंकाभृत्यहोवैहै सोभृत्य धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै तिन राजादिकोंका भक्तहुआभी तिनराजादिकोंविषे तिसभृत्यकामन संलग्नहोवैनहीं किंतु ताभृत्यकामन आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंविषेही संलग्नहोवै है ॥ यातें सोभृत्य ताराजाका भक्तहुआभी तन्मना होवैनहीं ॥ और आपणेपुत्रस्त्रीआदिकोंविषे सोभृत्य तन्मना हुआभी तिनस्त्रीपुत्रादिकोंका भक्तहोवैनहीं ॥ तैसे तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरविषे भक्तिवालाहुआभी अन्यविषेमनवाला मत होउ तथा मैंपरमेश्वरविषे मनवालाहुआभी अन्यविषेभक्तिवाला मतहोउ किंतु तूंअर्जुनतौ मैंपरमेश्वरविषेही मनवाला तथाभक्तिवाला होउ इति ॥ तथा तूंअर्जुन मद्याजी होउ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेही पूजनपरायणहोउ तथाशरीर मनवाणी करिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंही नमस्कारकर ॥ इसप्रकारतें मत्परायणहुआतूं अर्थात् एकमैंपरमेश्वरके शरणागतकूंप्राप्तहुआतं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषेजोडिकै मैंपरमानंदघन स्वप्रकाश सर्वउपद्रवोंतें रहित अभयब्रह्मकूंही घटाकाशमहाशकी न्याईं तथानदीसमुद्रकीन्याईं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशभावकूं प्राप्तहोवैहै तथा जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदियां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैसमुद्रविषे एकताभावकूं प्राप्तहोवैं हैं तैसे

तिसपरमेश्वरकेताईं हमारा नमस्कारहै इति ॥ इहां (तेऽपि) इसवचनाविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ता अपि शब्दकरिकै (अपिचेत्सुदुराचारः) इसपूर्व श्लोकविषेकथनकरेहुए दुराचारीपुरुषोंकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां इसप्रकारके स्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी जबी परमेश्वरकेभक्तितैं परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं तबी ब्राह्मणादिक उत्तममनुष्य तिसभगवद्भक्तितैं परगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याआश्चर्य है ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै तिनउत्तममनुष्योंकूं तिसभक्तिविषेप्रवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताभगवद्भक्तिकेप्रभावकूं वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा ॥ अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमाम् ॥ ३३ ॥ किं । पुनः । ब्राह्मणाः । पुण्याः । भक्ताः । राजर्षयः । तथा । अनित्यम् । असुखम् । लोकम् । इमम् । प्राप्य । भजस्व । माम् ॥ ३३ ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मेरेभक्त उत्तमजातिवाले ब्राह्मण तथा क्षत्रिय परमगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः क्याकहणाहै यातैंतूं इस अनित्य तथादुःखयुक्त मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं आराधनकर ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जबीपूर्वउक्तस्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तबी श्रेष्ठआचारवाले तथाउत्तमजातिवाले जेब्राह्मणहैं तथासूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेहारेजेक्षत्रियहैं तेब्राह्मण तथाक्षत्रिय मैंपरमेश्वरकेभक्त तिसभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानद्वारा मोक्षरूप परमगतिकूं प्राप्तहोवैं हैं याकेविषे पुनः क्याकहणाहै किंतु इसवार्त्ताविषे किसीकूंभी संशयनहीं है ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरभक्तिका महानप्रभावहै ॥ इसकारणतैं सर्वपुरुषार्थों के सिद्धकरणेकूंयोग्य तथाअत्यंतदुर्लभ इस अधिकारी मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै तूं जितनेकालपर्यंत वहमनुष्यदेह नाशकूंनहीं प्राप्तभया तथारोगादिकोंकरिकै ग्रस्तनहींभया तितनेकालपर्यंत अतिशीघ्रतातैं महान्प्रयत्नकरिकै मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन ! यहमनुष्यदेहकैसाहै अनित्यहै अर्थात शीघ्रही नाशहोणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै यहदेह असुखहै अर्थात् गर्भवासतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैग्रस्तहै ॥ हे अर्जुन ! यहशरीर अनित्यहै तथाअसुखरूपहै ॥ यातैं तूं मैंपरमेश्वरकेभजनविषे विलंब मतकर ॥ तथा इसशरीरकेसुखवासतै उद्यमकूंमतकर ॥ हे अर्जुन ! जैसे पूर्वश्रेष्ठ आचारवालेजनकादिकराजऋषि मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकरतेभयेहैं तैसे तूं अर्जुनभी मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकर ॥ जोतूं इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरके चिंतनपरायणनहींहोवैगा तौ यहतुम्हाराअधिकारीमनुष्यशरीरही निष्फलहोवैगा ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति नचेदवेदीन्महतीविनष्टिः ॥) अर्थयह ॥ इसभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै

कोईआश्चर्यरूपनहींमानणा किंतु यहहमारेभक्तिकाप्रभाव निश्चितहीहै ॥ यातैं हे अर्जुन ! इसहमारेभक्तिकेप्रभावविषे विवादकरणेहारेजेप्रतिवादीहैं तिनप्रतिवादियोंकेसन्मुखस्थितहोइके तथाऊंचीभुजाकरिके तिनप्रतिवादियोंकीअवज्ञापूर्वक तथागर्वपूर्वक तूं यापकारकीप्रतिज्ञाकर ॥ जो मैंपरमेश्वरकाभक्त अत्यंतदुराचारी हुआभी तथाप्राणसंकटकूंप्राप्तहुआभी तथाअत्यंतमूढ तथाअशरणहुआभी नाशकूंप्राप्तहोतानहीं अर्थात् दुर्गकूंप्राप्तहोतानहीं किंतु सर्वप्रकारतें सोहमाराभक्त कृतार्थहीहोवैहे ॥ हे अर्जुन ! इसहमारे भक्तिकेप्रभावविषे अजामिलप्रह्लाद ध्रुव गजेंद्र इसतैंआदिलैकेअनेकदृष्टांत प्रसिद्धहैं ॥ तथा (नवासुदेवभक्तानामशुभंविद्यतेक्वचित्) ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरकेभक्तोंकूंकदाचित्भी अशुभकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ इत्यादिक अनेक शास्त्रकेवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ ३१ ॥

❀ ॥ तहां ॥ पूर्वश्लोकविषे आगंतुकदोषकरिकेदुष्टपुरुषोंका भगवद्भक्तिकेप्रभावतैं विस्तारकथनकऱ्या ॥ अब स्वाभाविकदोषकरिकेदुष्टपुरुषोंकाभी तिसभगवद्भक्तिकप्रभावतैं निस्तार कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युः पापयोनयः ॥ स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम् ॥३२॥ माम् । हि । पार्थ । व्यपाश्रित्य । ये । अपि । स्युः । पापयोनयः । स्त्रियः । वैश्याः । तथा । शूद्राः । ते । अपि । यांति । पराम् । गतिम् ॥ ३२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै जेपुरुष पापयोनि भी है तथा स्त्रियाँहैं तथा वैश्यहैं तथा शूद्र हैं तेसवे भी परम गतिकूं प्राप्त होवैं हैं यहवार्त्ता निश्चितहीहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइके जेप्राणी पापयोनिभीहैं अर्थात् जातिदोषकरिकेदुष्ट जेचांडालादिकभीहैं अथवा जेप्राणी सर्पादिकतिर्यक्योनिवालेभीहैं तथा वेदकेअध्ययनादिकोंतैंरहितहोणेतैं अतिनिकृष्टजेस्त्रियाँहैं तथा कृषिवाणिज्यादिक लौकिकव्यापारोंविषेतत्पर जेवैश्यहैं तथाशूद्रत्वजातितैंही वेदकेअध्ययनादिकोंकेअभावकरिके परमगतिकेअयोग्य जेशूद्रहैं तेसर्वही मैंपरमेश्वरकीभक्तिकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालेहोइके ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ यहवार्त्ता तुमनैं निश्चितहीजानणी ॥ इसवार्त्ताविषे किंचीत्मात्रभी तुमनैं संशयकरणानहीं ॥ इहां (मांहि) यावचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ताहिशब्दकरिके इसअर्थविषे शास्त्रप्रमाणकीप्रसिद्धि बोधनकरीहै सोशास्त्रप्रमाण यहहै ॥ श्लोक ॥ (किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाःखशादयः ॥ येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः ॥) अर्थयह ॥ किरात हूण अंध्र पुलिंद पुल्कस आभीर कंक यवन खश इत्यादिक जेनीचजातिवालेप्राणीहैं तथाजेअन्यभी पापआचरणवालेहैं तेसर्वप्राणी जिसपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइके शुद्धिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥

वासतै धर्मशास्त्रनें विधानकरे जितनेक कृच्छ्र अतिकृच्छ्र महाकृच्छ्रचांद्रायण इत्यादिक तपरूपप्रायश्चित्तहैं तथा जितनेक वाजपेययज्ञ राजसूययज्ञ अश्वमेधयज्ञ इत्यादिक कर्मरूपप्रायश्चित्तहैं तिनसर्वप्रायश्चित्तोंतैं श्रीकृष्णभगवान्कास्मरण अधिकहै इति ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकृच्छ्रादिकप्रायश्चित्त जिसजिसपापकीनिवृत्तिकरणेवासते करेजावैं हैं तिसतिस पापकीही निवृत्तिकरैं हैं अन्यपपापकीनिवृत्तिकरैंनहीं ॥ और यहपरमेश्वरकास्मरणतो शतकोटिकल्पोंकेपापोंकूंनाशकरैंहै यहवार्त्ताभी शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अहंब्रह्मेतिमांध्यायन्नेकाग्रमनसासकृत् ॥ सर्वंतरतिपाप्मानंकल्पकोटिशतैःकृतम्) ॥ अर्थयह ॥ जो पुरुष एकाग्रमनकरिकै एकवारभीमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं अभेदरूपकरिकैं मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैहै सोपुरुष शतकोटिकल्पोंकरिकैकरेहुए सर्वपापोंकूं नाशकरै है इति ॥ ३० ॥ ❀ तहां अनन्य चित्तहोइकै जोपरमेश्वरकास्मरणहै सोस्मरणही मोक्षकासाधनहै ॥ याप्रकारके सम्यक्निश्चयतैं सोपुरुष पूर्वलीदुराचारताकूं परित्यागकरिकै शीघ्रही धर्मात्माहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अव श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति ॥ कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति ॥ ३१ ॥ क्षिप्रम् । भवति । धर्मात्मा । शश्वत् । शांतिम् । निगच्छति । कौंतेय । प्रतिजानीहि । न । मे । भक्तः । प्रणश्यति ॥३१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोपुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होवैहै तथा नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवैहै हे कौंतेय ! मैंपरमेश्वरका भक्त नहीं नाशहोवैहै ऐसी तूं प्रतिज्ञा कर ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो पुरुष पूर्व बहुतकालका अधर्मात्माहोवैहै सोपुरुषभी मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं शीघ्रही धर्मात्माहोवैहै अर्थात् सोपुरुष तिसभजनकेप्रभावतैं पूर्वलेदुराचारपणेकूं शीघ्रही परित्यागकरिकै धर्मविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ किंवा तिसहमारेकूं केवल इतनामात्रहीफलनहींहोवैहै किंतु इसतैंअधिकभी फलहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अव श्रीभगवान् कहैं हैं (शश्वच्छांतिंनिगच्छतिइति) हे अर्जुन ! तिसहमारेभजनकेप्रभावतैं सोपुरुष नित्यशांतिकूंभी प्राप्तहोवैहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै शुद्ध अंतःकरणवालाहुआ सोपुरुष तीव्रवैराग्यवान्होइकै सर्वविषयभोगोंकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ शंका–हे भगवन् ! परमेश्वरकापूजनकरणेहाराभी कोईकभक्त पूर्वअभ्यासकेरेहुएदुराचारकूं नहींत्यागकरताहुआ धर्मात्मानहींभीहोवैगा ॥ यातैं सोभक्ततो नाशकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनभक्तजनों के ऊपरिकरुणाकेपरवशताकरिकै क्रोधवान्हुएकीन्याई ताअर्जुनकेप्रति कहैं हैं (कौंतेयइति) हे अर्जुन ! पूर्वदुराचारीहुआभी यहपुरुष मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं तादुराचारकापरित्यागकरिकै शीघ्रही धर्मात्माहोवैहै ॥ तथा नित्यशांतिकूंप्राप्तहोवैहै इसवार्त्ताकूं तूमनैं

द्वेष सिद्धहोवैनहीं ।। तैसे सर्वत्रसमानहुआभी मैंपरमेश्वर भक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तविषेही अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवौंहूं ।। अभक्तजनोंकेअत्यंतअस्वच्छचित्तविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ इतनेमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरका तिनभक्तजनोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनअभक्तजनोंविषे कोईद्वेष सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेरागद्वेषतैंरहितहुआभी अग्नि आपणेसमीपस्थितप्राणियोंकेही शीतकूंनिवृत्त करैहै दूरस्थितप्राणियोंकेशीतकूं निवृत्तकरैनहीं तथा जैसे रागद्वेषतैंरहितहुआभी कल्पवृक्ष आपणेसमीपस्थितमनुष्योंकूंही मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्ति करैहै ॥ दूरस्थितमनुष्योंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इतनेमात्रकरिकै ताअग्निविषे तथाकल्पवृक्षविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेरागद्वेषतैंरहितहुआभी मैंपरमेश्वर शरणागतकूंप्राप्तहुए भक्तजनोंकेहीबंधनकूं निवृत्तकरूंहूं ॥ अन्यप्राणियोंकेबंधनकूंनिवृत्तकरतानहीं ॥ इतनेमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन! मैंपरमेश्वरकीभक्तिकाही यहप्रभावहै जोसर्वत्रसमान मैंपरमेश्वरविषेभी विषमताकूं दिखाइदेवैहै ॥ तिसहमारीभक्तिकेप्रभावकूं तूं अब श्रवणकर ।

(मू. श्लो.) अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ॥ ३० ॥ अपि । चेत् । सुदुराचारः । भजते । माम् । अनन्यभाक् । साधुः । एव । सः । मंतव्यः । सम्यक् । व्यवसितः । हि । सः ॥ ३० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन जोकोईपुरुष अत्यंतदुराचरणवालाहुआ भी जबी अनन्यचित्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं भजैहै तबी सोपुरुष साधु ही मानणा। जिसकारणतैं सोपुरुष साधु निश्चयवालाहै ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन! जोकोई पुरुष अजामिलादिकोंकीन्याईं पूर्व अत्यंतदुराचरणवालाहुआभी जबी किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेउदयतैं अनन्यचित्तवालाहुआ मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरैहै तबी सोपुरुष पूर्वअसाधुहुआभी तिसभजनकालविषे साधुहीमानणा ।। जिसकारणतैं सोपुरुष तिसकालविषे साधुनिश्चयवालाही है ॥ तहां दुराचारीपुरुषभी परमेश्वरकेआराधनतैं साधुहीहोवैहै यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अतिपापप्रसक्तोपिध्यायन्निमिषमच्युतम् ॥ भूयस्तपस्वीभवतिपंक्तिपावनपावनः ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपःकर्मात्मिकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणांकृष्णानुस्मरणंपरम् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ अत्यंतपापकर्मोंविषेप्रसक्तपुरुषभी जबी अनन्यचित्तहोइकै एक निमेषमात्रकालपर्यंतभी परमेश्वरकाआराधनकरै है तबी तिसपरमेश्वरकेआराधनकेप्रभावतैं सोपुरुष तिनसर्व पापोंतैंरहितहोइकेपुनःतपस्वीहोवैहै ॥ तथा सोपुरुष पंक्तिकूं पावनकरणेहारे सदाचारवालेपुरुषोंकूंभी आपणेदर्शनतैंपावनकरै है इति ॥ किंवा पापकीनिवृत्तिकरणे

अर्थात् मैंपरमेश्वरका दोप्रकारकारूपहै ॥ एकतौ स्वाभाविकरूपहै और दूसरा औपाधिकरूपहै ।। तहां सत्ता स्फुरण आनंद यहतीनोंतो हमारा स्वाभाविक रूपहै ॥ और अंतर्यामीपणा औपाधिकरूपहै ।। तास्वाभाविक सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं ।। तथा औपाधिक अंतर्यामीरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं इति ।। याकारणतैंही कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहीं है ।। तथा कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके प्रीतिकाविषय नहीं है अर्थात् मैंपरमेश्वरका किसीभीप्राणीविषे द्वेष तथाप्रीति नहीं है ॥ जैसे आकाशमंडलविषे व्यापक जो सूर्यकाप्रकाशहै तिप्रकाशका किसीभीपदार्थविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहोवैहै किंतु सोसूर्यकाप्रकाश सर्वत्र समानहीहोवैहै ॥ शंका–हेभगवन् ! किसीभी प्राणीविषे जो तुम्हारा द्वेष तथाप्रीति नहींहोवै तौ तुम्हारेभक्तोंविषे तथाअभक्तोंविषे फलकीविषमता कैसेहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताफलकी विषमताविषे हेतुकहैं हैं (येभजंतिइति) हेअर्जुन ! जेपुरुष सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूप भक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरैं हैं तेभक्तजन श्रेष्ठहैं ॥ इहां (येभजंतितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द अभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै भक्तोंकीविशेषताकेबोधनकरणेवास्तैहै ॥ साविशेषता कौनहै ॥ ऐसी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताविशेषताकूं कहैं हैं (मयितेतेषुचाप्यहमिति) हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरेहुएनिष्कामकर्मोंकरिकै जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहुएहैं तेपुरुषही मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तैं हैं अर्थात् निवृत्तहोइगयाहैरजतमरूपमलजिसका तथासत्वगुणकीअधिकताकरिकै अत्यंतस्वच्छहुआ ऐसाजोअंतःकरणहै ऐसेअंतःकरणकी मैंपरमेश्वरकेआकारवृत्तिकूं उपनिषद्रूपप्रमाणकरिकैउत्पन्नकरतेहुए तेभक्तजनही मैंपरमेश्वरविषेवर्तैं हैं अभक्तजन इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्ततेनहीं ॥ और मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंविषेही वर्त्तताहूं अर्थात् मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तकीवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहुआ तिनभक्तोंविषेही वर्त्तताहूं काहेतें इसलोकविषे जोजोस्वच्छद्रव्यहै तास्वच्छद्रव्यका यहहीस्वभावहोवैहै जो जिसपदार्थकेसाथि तास्वच्छद्रव्यकासंबंधहोवै है तिसपदार्थकेआकारकूं सोस्वच्छद्रव्य आपणेविषेग्रहणकरै है ॥ और तास्वच्छद्रव्यकेसंबंधवाला जोजोपदार्थहोवैहै तिसपदार्थकाभी यह हीस्वभावहोवैहै ॥ जोतिसस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोणा ॥ और इसलोकविषे जोजो अस्वच्छद्रव्यहोवैहै ॥ तिसअस्वच्छद्रव्यकाभी यहहीस्वभावहोवै है ॥ जोआपणेसंबंधवालेपदार्थकेभीआकारकूं आपणेविषेनहींग्रहणकरणा ॥ और ताअस्वच्छद्रव्यकेसंबंधवालेपदार्थकाभी यहहीस्वभावहोवैहै ॥ जो तिस अस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ जैसे सर्वत्रसमानविद्यमानहुआभी सूर्यकाप्रकाश स्वच्छदर्पणादिकोंविषेही अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ अस्वच्छघटादिकोंविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ।। इतनेमात्रकरिकै ताप्रकाशका तिनदर्पणादिकोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ।। तथा तिनघटादिकोंविषे कोई

टीका । हेअर्जुन ! इसपूर्वउक्तप्रकारतैं विनाहीआयासतैंसिद्धजो सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूपभजनहै तिसहमारेभजनकेप्राप्तहुए इष्टरूप तथा अनिष्टरूप फलहैजिनोंका ऐसेजेबंधनरूप लौकिकवैदिककर्म हैं तिनकर्मों नैं तूंअर्जुन परित्यागकियाजावैगा अर्थात् तेसर्वकर्म मैंपरमेश्वरविषे अर्पितहोणेतैं तैं अर्जुनका तिनकर्मों केसाथि संबंधहींसंभवतानहीं ॥ यातैं तिनकर्मोंकरिकै तथातिनकर्मों केइष्टअनिष्टफलोंकरिकै तूं लिपायमानहोवैगानहीं ॥ तिसतैंअनंतर संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तूं इहांसर्वकर्मोंका जोपरमेश्वरविषेअर्पणहै ताकानाम संन्यासहै सोसंन्यासही योगकीन्याईं चित्तकाशोधकहोणेतैं योगरूपहै ॥ ऐसे संन्यासयोगकरिकै युक्तहै क्या शोधितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा तिससंन्यासयोगविषे युक्तहै क्या आसक्तहै आत्मा क्या मन जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा फलसहितसर्वकर्मों केपारित्यागकानामसंन्यासयोगहै तासंन्यासयोगकरिकैयुक्तहै चित्तजिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तआत्माहै ॥ ऐसा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तथाजीवताहुआही तिनबंधनरूपकर्मोंतैंविमुक्तहुआ तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकूं ही प्राप्तहोवैगा अर्थात् सम्यक्दर्शनकरिकै अज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै मैंपरब्रह्मकूंही अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं तूं साक्षात्कारकरैगा ॥ तिसतैंअनंतर भोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनाशहुएतैं इसशरीरकेपातहुए तूं विदेहकैवल्यरूप मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और इसवर्त्तमानकालविषेभी मैंपरब्रह्मस्वरूपहुआतूं सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै मायाकृतभेदव्यवहारकाविषय नहींहोवैगा इति ॥ २८ ॥ ❀ शंका ॥ हेभगवन् जबी तूं आपणेभक्तोंऊपरिही अनुग्रहकरताहै अभक्तोंऊपरि अनुग्रहकरतानहीं तबी अस्मादादिकजीवोंकी न्याईं तूंभी रागद्वेषवालाहोणेतैं परमेश्वर कैसेहोवैगा किंतु अस्मादादिकजीवोंकी न्याईं तूंभी कोईजीवविशेषहीहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः ॥ येभजंतितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहम् ॥ २९ ॥ समः अहं । सर्वभूतेषु । न । मे । द्वेष्यः । अस्ति । न । प्रियः । ये भजंति । तु । माम् । भक्त्या । मयि । ते । तेषु । च । अपि । अहम् ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वर सर्वप्राणियोंविषे समानहूं यातैं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहीं है तथा प्रीतिकाविषय नहीं है तौभी जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भक्तिकरिकै सेवनकरैं हैं तेपुरुष ही मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तैं है तथामैंपरमेश्वर भी तिनपुरुषोंविषेही वर्त्तताहूं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन जितनेकप्राणी मैंपरमेश्वरकेभक्तहैं तथाजितनेकप्राणी मैंपरमेश्वरतैंविमुख अभक्तहैं ॥ तिनसर्वप्राणियोंविषे मैंपरमेश्वर समानहीहूं ॥

(मू. श्लो.) यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ २७ ॥ यत् ! करोषि । यत् । अश्नासि । यत् । जुहोषि । ददासि । यत् । यत् । तपस्यसि । कौन्तेय । तत् । कुरुष्व । मदर्पणम् ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय तूं जो करताहै तथाजो भोजनकरताहै तथा जो होमकरताहै तथा जो दान करताहै तथा जो तपकरताहै सोसर्व मैंपरमेश्वरके अर्पण कर ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रकी आज्ञातैंविनाही केवलरागकरिकैप्राप्त जिसगमन आगमनरूप लौकिककर्मकूं तूं करताहै तथा आपणीतृप्तिवासतै अथवा कर्मोंकीसिद्धिवासतै जिसअन्नकूं तूं भोजनकरताहै तथा शास्त्रकेबलतैं जिसनित्य अग्निहोत्रादिकहोमकूं तूं करताहै ॥ इहां (जुहोषि) यहहोम कावाचकपद श्रौतस्मार्त्तसर्वहोमका उपलक्षणहै अर्थात श्रौतस्मार्त्तरूपजितनेकहोमोंकूं तूं करताहै तथा अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई जोतूं अन्नसुवर्णा दिकपदार्थ देताहै तथा प्रतिवर्षविषे अज्ञातपापोंकी तथाप्रमादकृतपापोंकी निवृत्तिकरणेवासतै जोतूं चांद्रायणव्रतादिकतपकूंकरताहै अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै शरीरइंद्रियोंकेसमयरूपतपकूं जोतूं करताहै यहतप सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकाउपलक्षणहै तेसर्वकर्म तूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकर अर्थात् जोतुम्हारेकूंआपणेप्राणीस्वभावकेवशतैं शास्त्रतैंविनाभी अवश्यकरणेयोग्य गमनआगमनादिक लौकिककर्म हैं तथा जोतुम्हारेकूं शास्त्रकेबलतें अवश्यकरणे योग्य होमदानादिक वैदिककर्म हैं जेलौकिकवैदिककर्म किसीअन्यहीनिमित्तकरिकैकरेहैं तेलौकिकवैदिकसर्वकर्म जैसे मैंपरमेश्वरविषेही अर्पितहोवैं तैसे तिन सर्वकर्मोंकूं तूंकर ॥ इहां (कुरुष्व) इसवचनकरिके श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वर विषेही तिनसर्वकर्मोंका समर्पण करैहै तासमर्पणका मोक्षरूपफल तिससमर्पकपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ताकरिकै मैंपरमेश्वरकूं किंचित्मात्रभीफलहोतानहींइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अवश्यकरणेयोग्य कर्मोंका जो परमगुरुरूपमैंपरमेश्वरविषे अर्पणहै सोअर्पणही मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ तिसभजनवासतै दूसराकोईजुदाव्यापार करणेयोग्य नहींहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब अधिकारीजनोंकूं तिसभजनविषे प्रवृत्तकरणेवासतै इसपूर्वउक्तभजनकेफलकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबंधनैः ॥ संन्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोमामुपैष्यसि ॥ २८ ॥ शुभाशुभफलैः । एवं । मोक्ष्यसे । कर्मबंधनैः । संन्यासयोगयुक्तात्मा । विमुक्तः । माम् । उपैष्यसि ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! ऐसे भजनकेप्राप्त हुए तूं अर्जुन इष्टअनिष्टफलवाले कर्मरूपबंधनोंनैं परित्यागकियाजावैगा तथा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआतूं तिनकर्मबंधनोंतैं विमुक्त हुआ मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैगा ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

अर्थात् तिसतिसवस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोई तिसतिसवस्तुकीसौंदर्यता वामहानता निमित्तनहींहै किंतु अत्यंतप्रीतिपूर्वक समर्पणही तावस्तुकेस्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति (इहां भक्त्याप्रयच्छति) इसवचनविषे भक्तिकाकथनकरिकै (भक्त्युपहृतम्) इसवचनविषे जो पुनःभगवान्नैं भक्तिका कथनकऱ्याहै सो इसअर्थकेसूचनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै जोपुरुषब्राह्मणहै तथाबहुततपस्वी है परंतु मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंरहितहै तिसभक्तिहीन तपस्वीब्राह्मणनैं कोईमहान् वस्तुदेईहुईभी मैं परमेश्वर तिसवस्तुकूं स्वीकारकरतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकृतवस्तुके स्वीकारकरणेविषे कोईब्राह्मणत्वादिक उत्तमजाति तथा तपस्वीपणा निमित्तनहींहै किंतुदेणेहारेपुरुषकी केवल परमप्रीतिही तास्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति ॥ अथवा जैसे अत्यंतप्रीतिपूर्वक मातानैंदियेहुएपदार्थोंकूं बालक भक्ष्याभक्ष्यविचारतैंरहितहोइकै भक्षणकरैहै तैसे भक्तजनोंकीअत्यंतप्रीतिकरिकै प्रतिबद्ध हूआहै भक्ष्याभक्ष्यवस्तुकाज्ञान जिसका ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं सोमैंपरमेश्वरभक्तिपूर्वक अर्पणकरेहुए तिनभक्तजनोंकेपत्रपुष्पादिकवस्तुवोंकूं आपणेलीलाअवतारोंकरिकै साक्षात्ही भक्षणकरूंहूं ॥ जैसे श्रीदामाब्राह्मणनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दियेहुएतंडुलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ तथा शबरीनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दियेहुए बदरीफलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ यातैं केवल अनन्यभक्तिही मैंपरमेश्वरके परितोषका निमित्तहै ॥ दूसरेइंद्रादिकेदेवतावोंके परितोषणकरणेविषे जैसे बहुतद्रव्यकाखर्च तथा शरीरकाआयास इत्यादिक निमित्तहोवैंहैं तैसे मैंपरमेश्वरकेपरितोषकरणेविषे तेनिमित्त अवश्यअपेक्षितनहींहैं किंतुकेवल एकभक्तिही अपेक्षितहै ॥ यातैं यहअधिकारीजन तिनदूसरे देवतावोंके परित्यागकरिकै एक मैंपरमेश्वरकूंही आराधनकरैं ॥ और किसीटीकाविषेतौ (पत्रंपुष्पम्) इसश्लोककायह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्य चलं चाचलमेवच ॥ चलं संन्यासिनो रूपमचलंप्रतिमादिकम्) ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरवासुदेवके चल अचल यहदोरूपहोवैं हैं ॥ तहांसंन्यासीतौ चलरूपहै ॥ और शालग्रामप्रतिमादिक अचलरूपहै इति ॥ इस शास्त्रकेवचनविषे संन्यासी तथाशालग्रामप्रतिमादिक परमेश्वरकेरूप कथनकरे हैं ॥ और (अभ्यागतःस्वयं विष्णुः) अर्थयह ॥ भोजनकेसमय गृहविषेप्राप्तहुआ अतिथि विष्णुरूपहोवैहै इति ॥ इसस्मृतिविषेभी अतिथिकूं विष्णुरूपकह्याहै ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष शालग्रामविषे अथवा प्रतिमाविषे भक्तिपूर्वक पत्रपुष्पादिक मैंपरमेश्वरकेताईं अर्पणकरैहै तिनभक्तिपूर्वक अर्पणकरेहुए पत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वरअंगीकारकरूंहूं इति ॥ अथवा भोजनकालविषे गृहविषे प्राप्तभयाजोअतिथिहै तिस अन्नार्थीअतिथिकेताईं जोपुरुष जैसे शाककफलादिक आपभोजनकरैहै तैसीही शाकफलादिक भक्तिपूर्वकदेवैहै ॥ तिसपुरुषके भक्तिपूर्वकदियेहुए तिनपत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वर साक्षात् तिसअतिथिकेमुखकरिकै भोजनकरूंहूं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जिसभजन करिकै आप प्रसन्नहोवोहो सो आपका भजन किसप्रकारका होवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसभजनकेप्रकारकूं कथनकरैं हैं ।

जोकोईपुरुष मैंपरमेश्वरकेताईं भक्तिकरिकै पत्र वापुष्प वाफल वाजल देताहै तिसंशुद्धबुद्धिवाले पुरुषके तिसं भक्तिपूर्वकअर्पणकरे हुए पत्रपुष्पादिककूं मैंपरमेश्वर अंगीकारकरूंहूं ॥ २६ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पत्र पुष्प फल जल इसतैंआदिलैके जेकेईवस्तु विनाहीप्रयत्नतैंप्राप्तहोवैं हैं तिनअत्यंतसुलभवस्तुवोंविषे जिसीकिसीपत्रपुष्पादिकवस्तुकूं जोकोईमनुष्य अनंतमहान्विभूतिवालेमैंपरमेश्वरकेताईं भक्तिकरिकै देवै है अर्थात् परमेश्वरतैंपरे दूसराकोई हैनही ॥ इसप्रकारकीबुद्धिपूर्वक जा निरतिशयप्रीतिहै ताप्रीतिकरिकै जोपुरुष भृत्यकीन्याईं मैंपरमेश्वरकेताईं तिसवस्तुकाअर्पणकरे है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाराजाकेराज्यविषेस्थित जितनेकपदार्थ हैं तेसर्वपदार्थ वस्तुगतितैं तामहाराजाकेही हैं ॥ तिनमहाराजाकेपदार्थोंकूही भृत्यलोक प्रीतिपूर्वकतिसमहाराजाकेताईं अर्पणकरें हैं ताकरिकै सोमहाराजा परितोषकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे इसजगत्विषे जितनेक पदार्थ हैं तेसर्व पदार्थ मैंपरमेश्वरकेही हैं ॥ ऐसाकोईपदार्थ इसजगत्विषे हैनहीं जोपदार्थ मैंपरमेश्वरका नहींहोवे ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकेपदार्थोंकूही जेपुरुष प्रीतिपूर्वक मैंपरमेश्वरकेताईं अर्पणकरें हैं तिन प्रीतिपूर्वकअर्पणकरे हुए शुद्धबुद्धिवालेपुरुषोंके पत्रपुष्पादिक अत्यंततुच्छपदार्थोंकूभी मैंपरमेश्वर भोजनकरूंहूं अर्थात् जैसेकोई पुरुष अन्नकूं भोजनकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवै है तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनपत्रपुष्पादिकपदार्थोंकूं प्रीतिपूर्वकस्वीकारमात्रकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ यद्यपि (अश्नामि) इसपदका मुख्यअर्थ भोजनकर्तृत्वही है तथापि तामुख्यअर्थकापरित्यागकरिकै तापदकीलक्षणावृत्तितैं जो प्रीतिपूर्वकस्वीकर्तृत्वरूपअर्थ अंगीकारकर्याहै सो प्रीतिकेअतिशयताकीहेतुताकेबोधनकरणेवासतै अंगीकारकर्याहै अर्थात् तिन भक्तिपूर्वकअर्पणयकरेहुए पत्रपुष्पादिकपदार्थोंके स्वीकारमात्रतैंही मैंपरमेश्वर अत्यंतप्रसन्नहोवूंहूं ॥ और श्रुतिविषेभी देवतावोंविषे मनुष्योंकीन्याईं भोजनकर्तृत्वकानिषेधहीकर्याहै ॥ याकारणतैंभी (अश्नामि) इसपदकी स्वीकाररूपअर्थविषे लक्षणाकरणी उचितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नहवैदेवाअश्नंतिनपिबंति एतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे यहमनुष्य अन्नादिकपदार्थोंकूंभोजनकरै है तथाजलादिकोंकूंपानकरै है तैसे देवता तिनअन्नादिकोंकूंभोजनकरते नहीं ॥ तथा जलादिकोंकूंभी पानकरतेनहीं किंतु तेदेवता केवल अमृतकेदर्शनमात्रकरिकैही तृप्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ शंका—हे भगवन् ! आप साक्षात् परमेश्वरहोइकै ऐसेपत्रपुष्पादिकतुच्छवस्तुवोंकूं किसवासतै स्वीकारकरतेहो महान्पुरुषोंकूंतौ महान्वस्तुकाही स्वीकारकरणाउचितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए तिनतुच्छवस्तुवोंकेस्वीकारकरणेविषे हेतुकूंकथनकरैं हैं (भक्त्युपहृतमिति) तेपत्रपुष्पादिकवस्तु यद्यपि तुच्छहैं तथापि तिनभक्तजनोंनैं तेपत्रपुष्पादिक अत्यंतप्रीतिरूपभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेताईं अर्पणकरे हैं ॥ याकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनपत्रपुष्पादिकतुच्छपदार्थोंकूंभी महान्पदार्थरूपकरिकै स्वीकारकरूंहूं ॥

अग्निष्वात्तादिकपितरोंका आराधनकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम पितृव्रतहै ऐसे पितरोंकाआराधनकरणेहारेपुरुष तिनपितरोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ तेपितरों काआराधनकरणेहारेपुरुष राजस कहेजावैं हैं ॥ और यक्ष रक्षस् विनायक मातृगण इत्यादिकभूतोंका पूजनकरणेहारे जेपुरुषहैं तिनोंकानाम भूतेज्यहै ऐसे भूतोंकापूजनकरणेहारेपुरुष तिनभूतोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ तेभूतोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तामस कहेजावैं हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै परमेश्वरतैंअन्यदूसरेदेवतावोंकेआराधनका तिसतिसदेवतारूपकीप्राप्तिरूप नाशवानफल कथनकऱ्या ॥ अब परमेश्वरकेआराधनका परमेश्वररूपताकीप्राप्तिरूप अविनाशीफलकूं कथनकरैं हैं ॥ (यांतिमद्याजिनोपिमाम्) हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकेहीपूजनकरणेकाहैस्वभावजिनोंका तिनोंकानाम मद्याजीहै अर्थात् जेपुरुष इंद्रादिकसर्व देवतावोंविषे मैंपरमेश्वरकूंही व्यापकदेखतेहुए निरंतर मैंपरमेश्वरकेही आराधनपरायणहोवैं हैं तेहमारेभक्तो मैंपरमेश्वरकूंही अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ जो जिसका आराधनकरैहै सो तिसभावकूंही प्राप्तहोवैहै यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंयथायथोपासतेतदेवभवति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष जिसजिस देवताकीउपासनाकरैहै मरणतैंअनंतर सोपुरुष तिसतिसदेवताभावकूंही प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीभगवान्कायहअभिप्रायहै ॥ परमेश्वरकेआराधनकरणेविषे तथाइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेअराधनकरणेविषे आयासकेसमानहुएभी यहजीव अविनाशीफलकी प्राप्तिकरणेहारेअंतर्यामीपरमेश्वरकूं नहींआराधनकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकाआराधनकरिकै नाशवान्फलकूंही प्राप्तहोवैहै यातैं इनआज्ञानीजीवोंके दुष्टअदृष्टकाप्रभाव कोईआश्चर्यरूपहै ॥ जिसदुष्टअदृष्टकेप्रभावतैं यहअज्ञानीजीव मुक्तिकरणेहारे परमेश्वरकेआराधनकापरित्यागकरिकै तुच्छफलकीप्राप्तिवासतै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकाही आराधनकरैहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ यातैं परमेश्वरतैंअन्यदेवतावोंका परित्यागकरिकै इसअधिकारीजननैं केवल परमेश्वरकाही आराधनकरणा जिसकारणतैं सोपरमेश्वरकाआराधन इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअविनाशीफलकीही प्राप्तिकरैहै ॥ तथा अन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे इसपुरुषकूं द्रव्यकेखरचतैंआदिलेके जितनाकआयासहोवैहै तितनाआयास परमेश्वरकेआराधनकरणेविषेहोतानहीं किंतु सोपरमेश्वरकाआराधन अत्यंत सुगमहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ पत्रम् । पुष्पम् । फलम् । तोयम् । यः । मे भक्त्या । प्रयच्छति । तत् । अहम् । भक्त्युपहृतम् । अश्नामि । प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

रूपहै और आपणेअंतर्यामीस्वरूपकरिकैतौ तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहै ऐसेसर्वात्मारूप परमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई आराधनकरणेयोग्यनहीं है ॥ इसप्रकारकेस्व रूपकरिकै तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूंजानतेनहीं इसप्रकारतैंही तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतिसफलतैं प्रच्युतिकूंप्राप्तहोवैंहैं अर्थात् मैंपरमेश्वरके तिसवास्तवस्वरूपकूंनहींजानतेहुए तेसकामपुरुष महान्आयासकरिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकापूजनकरतेहुएभी मैंपरमेश्वरविषे तिनकर्मोंकानहींअर्पणकरतेहुए तिन काम्यकर्मोंकेप्रभावतैं पूर्वउक्तधूमादिक मार्गकरिकै तिसतिसदेवताकेलोकोंकूंप्राप्तहोइकै तिसलोकके भोगके अंतविषे तहां तैं प्रच्युतहोवैंहैं॥ तात्पर्ययह ॥ तिसतिसलोकके भोगोंकेजनक जेपुण्यकर्म हैं तिनकर्मोंका भोगकरिकैनाशहुएतैंअनंतर तेसकामकर्मीपुरुष तिसतिसदेवतादेहादिकोंतैंवियोगवालेहुए पुनः देहकेग्रहणकरणेवा सतै इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ और जेअधिकारीजन तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे सर्वअंतर्यामीरूपभगवान्कूंही देखतेहुए तिनयज्ञादिककर्मोंकूं करैं हैं तथा तिनसर्वकर्मोंकूं अंतर्यामीपरमेश्वरविषेही अर्पणकरैं हैं तेनिष्कामपुरुष तिसउपासनासहितकर्म के प्रभावतैं पूर्वउक्तअर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोइकै तहां आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोकके भोगोंकेअंतविषे कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं इसप्रकारतैं तिनसकामपुरुषोंकेफलविषे तथानिष्कामपुरुषोंकेफलविषे महान्भेदहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहां तिनइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेपूजनकरणेहारेपुरुषोंकूं अनावृत्तिरूपफलकेअभावहुएभी तिसतिसदेवताकेपूजनकेअनुसार तिसतिसक्षुद्रफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरतेहुए श्रीभगवान् साक्षात् परमेश्वरकेपूजनकरणेहारेभक्तजनोंकी तिनअन्यदेवतावोंके भक्तोंतैं विलक्षणताकूं अथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यांतिदेवव्रतादेवान्पितृन्यांतिपितृव्रताः ॥ भूतानियांतिभूतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ॥ २५ ॥ यांति । देवव्रताः । देवान् । पितृन् । यांति । पितृव्रताः । भूतानि । यांति । भूतेज्याः । यांति । मद्याजिनः । अपि । माम् ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! देवतावोंकेपूजक तिनदेवतावोंकूंही प्राप्तहोवैंहैं तथापितरोंकेपूजक तिनपितरोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं तथाभूतोंकेपूजक तिनभूतोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं तथामैंपरमेश्वरकेपूजक मैंपरमेश्वरकूं ही प्राप्तहोवैं हैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अंतःकरणरूपउपाधिके सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंके भेदकरिकै तेअविधिपूर्वक भजनकरणेहारे पुरुषभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदक रिकै तीनप्रकारकेहोवैं हैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंका बलिप्रदान प्रदक्षिणा नमस्कार इत्यादिकपूजनरूपहैव्रत जिनोंकूं तिनपुरुषोंकानाम देवव्रतहै ॥ ऐसे देव तावोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंही प्राप्तहोवैंहैं तेदेवतावोंकापूजनकरणेहारेपुरुष सात्विक कहेजावैं हैं ॥ और श्राद्धादिककर्मोंकरिकै

श्रद्धया । अन्विताः । ते । अपि । माम् । एव । कौंतेय । यजंति । अविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे कौंतेय ! जे अन्यदेवतावोंकेभक्त भी श्रद्धाकरिके युक्तहुए पूजनकरैं हैं तेभक्त भी अज्ञानपूर्वक मैंपरमेश्वरकूं ही पूजनकरैं हैं ॥२३॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसे मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंही पूजनकरैं हैं तैसे जेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकेयुक्तहुए ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंकरिके तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरैं हैं ॥ तेअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तिसतिसदेवतारूपकरिकेस्थितहुएमैंपरमेश्वरकूंही पूजनकरैं हैं परंतु तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूं अविधिपूर्वकही पूजनकरैं हैं ॥ इहां अविधिनाम अज्ञानकाहै ताअज्ञानपूर्वकही मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरैं हैं अर्थात् यह परमेश्वरही सर्वकाआत्मारूपहै याप्रकारतैं सर्वकाआत्मारूपकरिके मैंपरमेश्वरकूंनजानिके तथातिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं मैंपरमेश्वरतैंभिन्नकल्पनाकरिके तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरैं हैं याकारणतैंही तेइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्त पुनःपुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैं हैं इति॥ और किसीटीकाविषेतौ (अविधिपूर्वकम्) इसवचनकायह अर्थकऱ्याहै अभेदबुद्धिकानाम विधिहै ताअभेदबुद्धिरूपविधितैं तेपुरुष रहितहैं ॥ यातैं तेअन्यदेवताओंकेभक्त वस्तुगतितैं मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूं पूजनकरतेहुएभी सोतिनोंकापूजन अविधपूर्वकहीहै ॥ अभेदबुद्धिपूर्वक कऱ्याहुआ मैंपरमेश्वरकापूजनही विधिपूर्वकपूजनहोवैहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥

अब श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकेभजनविषे अविधिपूर्वकपणा स्पष्टकरताहुआ तिनसकामपुरुषोंकी तिसस्वर्गादिकफलतैंभीप्रच्युतिकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितत्त्वेनातश्च्यवंतिते॥२४॥अहम् । हि । सर्वयज्ञानाम् । भोक्ता । च । प्रभुः । एव । च । न । तु । माम् । अभिजानंति । तत्त्वेन । अतः । च्यवंति । ते ॥२४॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर ही सर्वयज्ञोंका भोक्ताहूं तथा फलप्रदाताहूं यहवार्त्ता प्रसिद्ध है परंतु तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूं तिसरूपकरिके नहीं जानतेहैं इसकारणतैंही तेसकामपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अधिकारीजनोंकेप्रति शास्त्रनैंविधानकरे जितनेकश्रौतयज्ञहैं तथास्मार्त्तयज्ञहैं तिनसर्वयज्ञोंका मैंपरमेश्वरही तिसतिसइंद्रादिकदेवतारूपकरिके भोक्ताहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरही आपणेअंतर्यामीरूपकरिके अधियज्ञरूपहोणेतैं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहूं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिस्मृतियोंविषे प्रसिद्धहीहै ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकूं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतत्त्वरूपकरिकेजानतेनहीं अर्थात् यहभगवान्वासुदेवही इंद्रादिकदेवतारूपकरिके तौ तिनसर्वयज्ञोंका भोक्ता

जेध्याननिष्ठपुरुष आपणेदेहकीयात्रामात्रवासतैभी प्रयत्नकरतेनहीं ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंके योगकूं तथक्षेमकूं मैंपरमेश्वरही प्राप्तकरूंहूं ॥ तहां पूर्वअप्राप्त अन्न वस्त्रादिक पदार्थोंकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तहुए तिनपदार्थोंकाजोपरिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ यद्यपि तेतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेशरीरकी स्थितिवासतै तायोगक्षेमकीइच्छाकरतेनहीं तथापि मैंअंतर्यामीईश्वर आपही तिनोंकेयोगक्षेमकूंसिद्धकरूंहूं ॥ जैसे आपणीइच्छातैंरहितबालकके योगक्षेमकूं ताकेमातापिताही सिद्धकरैं हैं तैसे मैंपरमेश्वरही तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके योगक्षेमकूं सिद्धकरूंहूं ॥ जिसकारणतैं (प्रियोहिज्ञानिनोऽत्यर्थमहंसचमम प्रियः ॥ उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैकथनकरताभयाहूं ॥ तथाआपणा आत्मारूपहोणेतैंही सोज्ञानवान्पुरुषतौ मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ ऐसे आत्मारूप तथाअत्यंतप्रिय ज्ञानवान्पुरुषोंके योगक्षेमकूंसिद्धकरणा मैंपरमेश्वरकूं उचितहीहै ॥ यद्यपि सर्वप्राणियोंकेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरही प्राप्तकरै है केवल ज्ञानवान्पुरुषोंकेही योगक्षेमकूं प्राप्तकरतानहीं तथापि अन्यप्राणियोंकेयोगक्षेमकूं जो परमेश्वरप्राप्तकरै है सो तिनप्राणियोंकेप्रयत्नकूं प्रथमउत्पन्नकरिकै तिसप्रयत्नद्वाराही तिनप्राणियोंकूं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरैहै ॥ ताप्रयत्नतैंविना प्राप्तिकरैनहीं और ज्ञानवान्पुरुषोंकूंतौ तायोगक्षेमकी प्राप्तिवासतै प्रयत्नकूंनहींउत्पन्नकरिकैही तायोग क्षेमकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनीदोनोंविषेविशेषताहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ तायोगक्षेमका यहअर्थकऱ्याहै ॥ पूर्वअप्राप्तयोगभूमिकाकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और पूर्वप्राप्तयोगभूमिकाका जोरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (योगस्यक्षेमंयोगक्षेमम्) याप्रकारकासमासकरिकै तायोगक्षे मका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ निरंतरब्रह्मनिष्ठाकानाम योगहै तिसब्रह्मनिष्ठारूपयोगकाजोक्षेमहै अर्थात् अध्यात्मिकआदिकउपद्रवोंकरिकै जोविच्छेदतैंरहित पणाहै ताकानामयोगक्षेमहै ॥ ऐसेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरही सर्वदा सिद्धकरूंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! आपपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरीकोईवस्तु हैनहीं किंतु सर्वपदार्थ तुम्हाराहीस्वरूपहै ॥ यातैं तेइंद्रादिकअन्यदेवताभी तुम्हाराहीस्वरूप हैं ॥ तुम्हारे तैं तेइंद्रादिकदेवता जुदानहीं हैं ॥ यातैं जैसे साक्षात तुम्हारेभक्ततैं परमेश्वरकूंही भजैं हैं तैसेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तैंपरमेश्वरकूंही भजैं हैं ॥ इसरीतिसैं तुम्हारेभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तों विषे किंचित्मात्रभी विशेषता सिद्धहोतीनहीं ॥ यातैं इंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्ततौ पुनः पुनः गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं अनन्यहोइकै चिंतनकरणेहारेज्ञानवान् भक्ततौ कृतकृत्यहोवैंहै ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) येप्यन्यदेवताभक्तायजंतेश्रद्धयान्विताः ॥ तेपिमामेवकौंतेययजंत्यविधिपूर्वकम् ॥२३॥ ये । अपि । अन्यदेवताभक्ताः । यजंते ।

अदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म ॥ एतच्छ्रेयोयेऽभिनंदंतिमूढाजरामृत्युंतेपुनरेवापियांति ॥) अर्थयह ॥ षोडशऋत्विज यजमान ताकीस्त्री यहअष्टादश धीवरहैं चलावनेहारेजिनोंके ऐसेजो काम्यकर्मरूप अदृढप्लववहैं तेकाम्यकर्मरूपप्लव इसपुरुषकूं महान्संसारसमुद्रतैं पारकरतेनहीं ॥ ऐसेकाम्यकर्मोंकूं आपणेश्रेयकासाधनमानिके जेमूढपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैं हैं तेसकामपुरुष पुनःपुनःजरामरणकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेषोडशअध्याय विषे हम विस्तारतैंनिरूपण करिआयेहैं ॥ यातैं इहांसंक्षेपतैंनिरूपणकऱ्याहै और यद्यपि बहुतमूलपुस्तकोंविषे (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) याप्रकारकाही पाठहोवे है ॥ तथा श्रीशंकरानंदस्वामीनैं श्रीनीलकंठपंडितनेभी इसीप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकै व्याख्यानकऱ्याहै ॥ तथापि गीताभाष्यकाव्याख्यानकरणेहारे श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामीमधुसूदननैं (एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) याप्रकारकेपाठकूं अंगीकारकरिकैही व्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैं इसग्रंथविषेभी (एवंहि त्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) यहहीपाठराख्याहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व दोश्लोकोंकरिकै सम्यक्ज्ञानतैंरहित सकामपुरुषोंकीगति कथनकरी ॥ अब सम्यक्ज्ञानवाले निष्कामपुरुषोंकेगतिकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अनन्याश्चिंतयंतोमांयेजनाःपर्युपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहम् ॥ २२ ॥ अनन्याः । चिंतयंतः । माम् । ये । जनाः । पर्युपासते । तेषाम् । नित्याभियुक्तानाम् । योगक्षेमम् । वहामि । अहम् ॥२२॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जे अधिकारीजन अनन्यहोइके चिंतनकरतेहुए मैंपरब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैंहैं तिन नित्ययुक्तपुरुषोंके योगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरही प्राप्तकरूंहूं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन! अन्य कहिये भेददृष्टिकाविषय नहींविद्यमानहैजिनोंकूं तिनोंकानाम अनन्यहै अर्थात् जे पुरुष सर्वत्र अद्वितीयब्रह्मकूंही देखैंहैं तथासव विषयभोगोंकीइच्छातैंरहित हैं तथा मैंही भगवान्वासुदेवसर्वात्मारूपहूं हमारेतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं हैं याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिसीप्रत्यक्आत्माकूं सर्वदाचिंतनकरतेहुए जेसाधनचतुष्टयसंपन्न विरक्तसंन्यासी मैंपरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरैं हैं तेतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरिपूर्णब्रह्मकेअभेदभाव करिकै कृतकृत्यहीहोवैं हैं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! अद्वैतदर्शनविषैहैनिष्टाजिनोंकी तथाअत्यंतनिष्कामताकरिकै युक्त तथाआपणीइच्छापूर्वक नहींप्रयत्नकरतेहुए ऐसेजेतत्त्ववेत्तापुरुषहैं तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंका इसशरीरकेलक्षणवासतै योगक्षेम किसप्रकार सिद्धहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (तेषांनित्याभियुक्तानामिति) तहां निरंतर आदरपूर्वक परमेश्वरकेध्यानविषे जेतत्परहोवैं तिनोंकानाम नित्याभियुक्तहै ॥

टीका । हे अर्जुन ! तेसकामपुरुष तिसकाम्यरूपपुण्यकर्मकरिकै प्राप्तहुए विस्तारवालेस्वर्गलोककूं भोगिकै अर्थात् आपणेआपणेपुण्यकर्मकीअधिकतातैं तिस स्वर्गलोककेअधिकसुखकूंअनुभवकरिकै तिसभोगकेजनक पुण्यकर्मोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिसदेवतादेहकेनाशहुए पुनः देहकेग्रहणवासतै इसमनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैं हैं अर्थात् पुनःगर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरैं हैं ॥ और जैसेपूर्वमनुष्यदेहविषे तिनकर्मीपुरुषोंनैं त्रैधर्म्यकूं निश्चयकऱ्याथा तैसे इसमनुष्य देहविषेभी तिस त्रैधर्म्यकूंही निश्चयकरैंहैं अर्थात् तिस त्रैधर्म्यकेअनुष्ठानविषेही तत्परहोवैं हैं ॥ तहां ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकारिकैप्रतिपादित जो होताका तथाअध्वर्युका तथाउद्गाताका धर्मविशेषहैं तिनतीनधर्मोंकेयोग्यजे ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्म हैं तिनकाम्यकर्मोंकानाम त्रैधर्म्यहै ॥ और (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै तौभी इसपूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणअर्थ सिद्धहोवैनहीं किंतु सोपूर्वउक्तअर्थहीसिद्धहोवैहै ॥ तहां ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यातीनवेदोंकानाम त्रयीहै तिस तीनवेदरूपत्रयीकरिकै प्रतिपादितजो ज्योतिष्टोमादिककाम्यधर्म है ताकानाम त्रयीधर्महै ॥ तहां होता अध्वर्यु उद्गाता यहतीनोंनाम यज्ञकरावणेहारेब्राह्मणोंकेहोवैं हैं ॥ और अग्निष्टोम ज्योतिष्टोम यहयज्ञविशेषहोवैं हैं ॥ और (अनुप्रपन्नाः) इसवचनकेआदिविषेस्थितजो अनुयहशब्दहै सोअनुशब्द उत्तरउत्तरजन्मके कर्मविषयकनिश्चयविषे पूर्वपूर्वजन्मके कर्मविषयकनिश्चयकीअपेक्षाकूं सूचनकरै है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ (त्रिकर्मकृन्नरतिजन्ममृत्यू दक्षिणावंतोअमृतत्वंभजंते ॥) अर्थयह ॥ तीनवेदप्रतिपादितकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुष जन्ममृत्युतैंरहितहोवैं हैं और दक्षिणवालेपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ इत्यादिक स्तुति रूपअर्थवादोंके कथनपूर्वक ऋगादिकवेदोंनैं प्रतिपादनकरे जेज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्म हैं तेकाम्यकर्मही भोगमोक्षकीप्राप्तिविषे परमकारणहैं ॥ मनका निग्रहरूपशम तथाइंद्रियोंकानिग्रहरूपदम तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथा आत्मज्ञान तथाईश्वर इनसर्वोंविषे कोईभी साधन तिसभोगमोक्षका कारणहैनहीं ॥ इसप्रकारके पूर्वपूर्वजन्मकेनिश्चयकूंलैके उत्तरउत्तरजन्मविषेभी तेसकामपुरुष तिसीप्रकारकेनिश्चयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ इसीकारणतैंही तेसकामपुरुष पुनःभी तिनदिव्यभोगोंकीइच्छाकरतेहुए गतागतकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ तहां पुण्यकर्मकारिकै इसमनुष्यलोकतैं स्वर्गलोककूं जाणा ताकानाम गतहै और तापुण्यकर्मकेक्षयहुए तास्वर्गलोकतैं पुनःइसमनुष्यलोकविषेआवणा ताकानाम आगतहै अर्थात् तेसकामपुरुषकाम्यकर्मोंकूंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिनपुण्यकर्मोंके क्षयहुएतैंअनंतर तास्वर्गलोकतैं मनुष्यलोकविषेआइकै ते सकामपुरुष पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनःकर्मोंकूंकरैं हैं ॥ तिनकर्मोंकेभोगवासतै पुनः स्वर्गकूंजावैं हैं ॥ तहां तैं पुनःमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ इसप्रकार तिनसकामपुरुषोंकूं गर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह निरंतर बन्यारहै है ॥ यहही तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिहै इति ॥ साअनिष्टकीप्राप्तिमुंडकउपनिषद्कीश्रुतिविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ (प्लवाह्येते

यज्ञोंकरिकै इंद्र वसु रुद्र आदित्यरूप मैंमरमेश्वरकूंपूजनकरिकै अर्थात् यहपरमेश्वरही इंद्रादिरूपहै याप्रकारतैं इंद्रादिरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनहींजानते हुएभी तेसकामपुरुष वस्तुगतितैं तिनइंद्रादिक देवतावोंकेपूजनतैं मैंअंतर्यामिपरमेश्वरकूं नहींपूजनकरिकै जेपुरुष सोमपाहोवैं हैं इहां सोमवल्लीकेरसकूंनिकासिकै तारसरूपसोमकूंही वैदिकअग्निविषेहवनकरिकै परिशेषतैंरहेहुए सोमकूं जेपुरुष पानकरैंहैं तिनोंकानाम सोमपाहै तिससोमकेपानकरिकैही पूतपापहुए ॥ अर्थात् स्वर्गभोगों केप्रतिबंधकपापकर्मों तैंरहितहुए जेसकामपुरुष केवल स्वर्गलोककेप्राप्तिकीहीइच्छाकरैं हैं ॥ अंतःकरणकेशुद्धिकी तथाआत्मज्ञानकेप्राप्तिकी जे पुरुष इच्छाकरतेनहीं अर्थात् स्वर्गलोकविषे किंचित्मात्रभी भयहोतानहीं तथास्वर्गवासीदेवता अमृतभावकूं प्राप्तहोतेहैं याप्रकारकेअर्थवादवचनोंकूंश्रवणकरिकै जेसकामपुरुष सोस्वर्गलोक हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारतैं केवलस्वर्गसुखके प्राप्तिकीहीइच्छाकरैंहैं ॥ तेस्वर्गकीकामनावालेसकामपुरुष तिनअग्निष्टोमादिकपुण्यकर्मोंकेफलरूप देवराजइंद्रकेस्वर्गलोकरूपस्थानकूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्यदेवभोगोंकूं भोगेंहैं ॥ तहां जेभोग इनमनुष्योंकूं नहींप्राप्तहोवैंहैं तिन भोगोंकूं दिव्यभोग कहैंहैं ॥ और जेभोग केवल देवतादेहकरिकैही भोगेजावैंहैं तिनभोगोंकानाम देवभोगहै ॥ अथवा स्वर्गविषे देवतावोंनैं प्राप्तकरेजेभोगहैं तिनोंकानाम देवभोगहै इहां भोगशब्दकरिकै विषयसुखकाग्रहणकरणा अथवा ताभोगशब्दकरिकै तासुखकेसाधनरूपविषयोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां विषयसुखकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौ (अश्नंति) इसपदका अनुभवंति यहअर्थकरणा ॥ और विषयोंकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौ (अश्नंति) इसपदका भुंजते यहअर्थकरणा अर्थात् तेसकामपुरुष तास्वर्गलोकविषे विषयजन्यदिव्यसुखोंकूं अनुभवकरैंहैं ॥ अथवा दिव्यविषयोंकूंभोगेंहैं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

शंका—हेभगवन् ! तास्वर्गलोकविषे दिव्यभोगों केभोगणेतैं तिनसकामपुरुषोंकूं किसअनिष्टकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकूं महानअनिष्टकीप्राप्तिकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशंति ॥ एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥ २१ ॥

ते[1] । तम्[2] । भुक्त्वा[3] । स्वर्गलोकम्[4] । विशालम्[5] । क्षीणे[6] । पुण्ये[7] । मर्त्यलोकम्[8] । विशंति[9] । एवम्[10] । हि[11] । त्रैधर्म्यम्[12] । अनुप्रपन्नाः[13] गतागतम्[14] । कामकामाः[15] । लभंते[16] ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! तेसकामपुरुष तिस विशाल स्वर्गलोककूं भोगिकै तापुण्यके नाशहुए पुनः इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैंहैं इसप्रकारतैं प्रसिद्ध वेदप्रतिपादितकाम्यकर्मकूं पुनःनिश्चयकरतेहुए तथा दिव्य भोगोंकीकामनाकरतेहुए तेसकामपुरुष वारंवार गमनआगमनकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

ऐसाव्यक्तरूप जोनामरूपात्मक कार्यमात्रहै सोव्यक्तनामाकार्य सत्कह्याजावैहै ॥ और ताकार्यरूपव्यक्ततैं विलक्षण तथा नामरूपकाकारणरूप जो अव्यक्तहै सोअव्यक्त असत्कह्याजावैहै ॥ अथवा स्थूलरूपदृश्यकानाम सत्‌है और सूक्ष्मरूपअदृश्यकानाम असत्‌है सोसत्‌रूप तथा असत्‌रूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ इहां (सदसच्च) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै सोचकार ताव्यक्तअव्यक्त सत्‌असत्‌दोनोंकेनिषेधकियेहुए तानिषेधकाअवधिरूपकरिकैस्थित तथा कार्यकारणभावतैंरहित जोनिर्विशेष परब्रह्महै सोभीमैंहीहूं इसअर्थकेसूचनकरणेवासतै है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वकाआत्मारूपमैंपरमेश्वरकूंजानिकैतेअधिकारीजन आपणेआपणेअधिकारकेअनुसार पूर्वउक्तबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूप एकभावकरिकै तथाप्रतीकउपासनारूप पृथक्‌भावकरिकै तथाअन्यबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं निष्कामहोइकैचिंतनकरणेहारे जेपूर्वउक्त उत्तम मध्यम मन्द यह तीनप्रकारकेअधिकारीजनहैं तेअधिकारीजनतौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा क्रमकरिकै मुक्तिकूंही प्राप्तहोवैं हैं ।। और जेपुरुष सकामहुए किसीभीप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेनहीं किंतु आपणीआपणीकामनाके विषयभूत जेस्वर्गादिकविषयसुखहैं तिनोंकीप्राप्तिवासतै काम्यकर्मोंकूंही करैं हैं ।। तेसकामपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मोंकेअभावकरिकै आत्मज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकेअयोग्यहुए वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूंही अनुभवकरैं हैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैनिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥ तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान् ॥ २० ॥

त्रैविद्याः । माम् । सोमपाः । पूतपापाः । यज्ञैः । इष्ट्वा । स्वर्गतिम् । प्रार्थयंते । ते । पुण्यम् । आसाद्य । सुरेंद्रलोकम् । अश्नंति । दिव्यान् । दिवि । देवभोगान् ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जेऋगादिकतीनवेदोंकूंजानणेहारेपुरुष काम्ययज्ञोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरिकै सोमकूंपानकरतेहुए तथापापोंतैंरहितहुए स्वर्गकीप्राप्तिकूं चाहै तेहैं तेसकामपुरुष पुण्यकेफलरूप तिसस्वर्गलोककूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्य देवतावोंकेभोगोंकूं भोगैं हैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यज्ञविषे होताकृतजोकर्महै तथाअध्वर्युकृतजोकर्म है तथाउद्गाताकृतजोकर्महैं ताकर्मकेज्ञानकाहेतुभूतहैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यहतीनविद्या जिनपुरुषोंकी तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ।। अथवा तिनऋगादिकतीनविद्यावोंकूं जेभलीप्रकारतेजानते होवैं तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ॥ तहां तिनतीनवेदोंउक्तकर्मकेकरावणेविषे तथाआपकरणेविषे जोसामर्थ्यहै यहही तिनतीनवेदोंका भलीप्रकारजानणाहै ।। ऐसे तीनवेदोंकूंजानणेहारे याज्ञिकपुरुष अग्निष्टोमादिककाम्य

अथवा शंखपद्मादिकनिधिकानाम निधानहै सोनिधानरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और उत्पत्तिकाजोकारणहोवै ताकानाम बीजहै जोबीज अव्ययहै अर्थात् जैसे व्रीहियवादिकबीज विनाशकूंप्राप्तहोवैंहैं तैसे जोबीजविनाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ऐसा उत्पत्तिविनाशतेंरहित सर्वकाकारणरूपबीजभी मैंपरमेश्वर हीहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) तपाम्यहमहंवर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच ॥ अमृतंचैवमृत्युश्चसदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥ तपामि । अहम् । अहम् । वर्षम् । निगृह्णामि । उत्सृजामि । च । अमृतम् । च । एव । मृत्युः । च । सत् । असत् । च । अहम् । अर्जुन ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर ही तापकूंकरूंहूं तथा मैंपरमेश्वरही जलरूपरसकूं आकर्षणकरूंहूं तथा तारसकूं पुनःभूमिविषे परित्यागकरूंहूं तथा मैंपरमेश्वरही अमृतरूपहूं तथा मृत्युरूपहूं तथा सत्रूपहूं तथा असतरूपहूं ॥ १९ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! सर्वकाआत्मारूप मैंअंतर्यामीपरमेश्वरही सूर्यरूपहोइके इसलोकविषे तापकूंकरूंहूं ॥ और तिसतापकेवशतैं सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरही पूर्व करेहुएवृष्टिरूपरसकूं किसीकआपणीकिरणावोंकरिकै कार्त्तिकादिकअष्टमासोंविषे इसपृथिवीतैं आकर्षणकरूंहूं तिसतैंअनंतर सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरही तिसआकर्षणकरेहुएरसकूं आषाढादिकच्यारिमासोंविषे किसीकआपणीकिरणावोंकरिकै इसपृथिवीविषे वृष्टिरूपकरिकैपरित्यागकरूंहूं ॥ और देवतावोंकेभक्षणकरणे योग्यजोअन्नहै जिसअन्नकेभक्षणकरिकै तेदेवता मरणकूंप्राप्तहोतेनहीं ताअन्नकानाम अमृतहै ॥ अथवा सर्वप्राणियोंकेजीवनकानाम अमृतहै सोअमृतरूप भी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और सर्वप्राणियोंकूंजोनाशकरै है ताकानाम मृत्युहै अथवा सर्वप्राणियोंकाजोविनाशहै ताकानाम मृत्युहै सोमृत्युरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवै है सोवस्तु तिसआधारविषे सतकह्याजावै है ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवाला हुआ नहींविद्यमानहोवै है सोवस्तु तिसअधिकरणविषे असत्कह्याजावै है ॥ जैसे रूप पृथिवीजलतेजरूपआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवै है ॥ यातैं सो रूप तापृथिवीजलतेजरूपआधारविषे सतकह्याजावै है ॥ और सोईहीरूप वायुआकाशरूपआधारकेसंबंधवालाहुआविद्यमानहोवैनहीं ॥ यातैंसोरूप तावायुआकाशविषे असतकह्याजावै है ॥ ऐसेसत्असतरूपता अन्यपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ सोसतरूप तथाअसतरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और किसीटीकाविषेतौ सतअसत यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै शास्त्रविहितसाधुकर्मकानाम सतहै और शास्त्रनिषिद्धअसाधुकर्मकानाम असतहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषेतौ सत असत यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै जोवस्तुइदमस्ति इदमस्ति इसप्रकारकेनामरूपकरिकै कथनकऱ्याजावै है सोवस्तु व्यक्तकह्याजावै है ॥

अधिकारीजन जिसकरिकैशुद्धिकूंप्राप्तहोवैं ताकानाम पवित्रहै ॥ ऐसेशुद्धिकरणेहारे गंगास्नान गायत्रीजप आदिक हैं सोपवित्ररूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और तिसजाणणेयोग्यब्रह्मकेज्ञानका साधनरूपजो ओंकारहै सोओंकाररूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मोंकीसिद्धिविषेउपयोगी तथाताद्वेद्यब्रह्मविषे प्रमाणभूत जोऋग्वेदहै तथासामवेदहै तथायजुर्वेदहै सोऋगादिवेदरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ इहां (यजुरेवच) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ताचकार करिकै अथर्वण वेदकाभीग्रहणकरणा इति ॥ १७ ॥ ❀ ।

(मू. श्लो.) गतिर्भर्त्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् ॥ प्रभवःप्रलयःस्थानंनिधानंबीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ गतिः । भर्त्ता । प्रभुः । साक्षी । निवासः । शरणम् । सुहृत् । प्रभवः । प्रलयः । स्थानम् । निधानम् । बीजम् । अव्ययम् ॥१८॥ इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरही गतिरूपहूं तथाभर्त्तारूपहूं तथाप्रभुरूपहूं तथासाक्षीरूपहूं तथानिवासरूपहूं तथाशरणरूपहूं तथासुहृत्रूपहूं तथाप्रभव रूपहूं तथाप्रलयरूपहूं तथास्थानरूपहूं तथानिधानरूपहूं तथानाशतेंरहित बीजरूपहूं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! कर्मोंकरिकै जोफलप्राप्तहोवै है ताफलकानाम गतिहै ऐसे स्वर्गादिफलहैं सोगतिरूपभीमैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और सुखकेसाधनोंकीप्राप्तिकरिकै जो पोषणकरै है ताकानाम भर्त्ता है सोभर्त्तारूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और यहपुत्रादिकपदार्थ हमारेही हैं याप्रकारतैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंकूंस्वीकारकरणेहारा जोस्वामी हैताकानाम प्रभुहै सोप्रभुरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और सर्वप्राणियोंकेशुभअशुभकर्मोंकूं जोदेखणेहाराहै ताकानाम साक्षी है जैसे सूर्यचंद्रमादि कहैं सोसाक्षीरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और निवासकरियेजिसविषे ताकानाम निवासहै अर्थात् भोगकेस्थानकानाम निवासहै सोनिवासरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और विनाशकूंप्राप्तहोवैं दुःखजिसकेसमीप ताकानाम शरणहै अर्थात् शरणागतकूंप्राप्तहुएजनोंकेदुःखकानाशकरणेहारेकानाम शरणहै ॥ सो शरणरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं॥ और प्रतिउपकारकीनहींअपेक्षाकरिकै जोउपकारकरै है ताकानाम सुहृद्है सोसुहृद्रूपभीमैंपरमेश्वरहीहूं ॥और उत्पत्तिकानाम प्रभवहै॥ और विनाशकानाम प्रलयहै ॥ औरस्थितिकानाम स्थानहै सो प्रभवप्रलय स्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ अथवा जिसकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैहै ताकाना मप्रभवहै अर्थात् स्रष्टाकानामप्रभवहै ॥ और तेकार्य लयभावकूंप्राप्तहोवैं जिसकरिकै ताकानाम प्रलयहै अर्थात् संहर्त्ताकानाम प्रलयहै ॥ और यहकार्य स्थितहोवैं जिसविषे ताकानाम स्थानहै अर्थात् आधारकानाम स्थानहै सो प्रभव प्रलयस्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और तिसकालविषेभोगकीअयोग्यता तें कालांतरविषेभोगणेयोग्यवस्तु स्थितकरियेजिसविषे ताकानाम निधानहै अर्थात् सूक्ष्मरूपसर्ववस्तुवोंकाअधिकरणजोप्रलयस्थानहै ताकानाम निधानहै ॥

वैहे तिनवेदवचनोंकानाम मंत्रहै ॥ जैसे इंद्रायस्वाहा पितृभ्यःस्वधा इत्यादिकमंत्रहैं सोमंत्ररूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और तिनमंत्रोंकरिकै अग्निविषेपायाजोघृतहै ताघृतकानाम आज्यहै सोघृतरूपआज्य इहां व्रीहियवादिकसर्वहविष्मात्रका उपलक्षणहै सोघृतादिहविष्रूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और ताघृतादिरूपहविष्केप्रक्षेपकाअधिकरणरूप जेआहवनीयआदिकअग्निहैं सोअग्निरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और ताअग्निविषे घृतादिरूपहविष्का प्रक्षेपरूपजोहवनहै ताकानाम हुतहै सोहवनरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ इहां यद्यपि एकहीअहंशब्दकेउच्चारणतैं उक्तअर्थकीसिद्धि होइसकैहै तथापि एकएक क्रतुयज्ञादिकशब्दकेसाथि जो अहंशब्दका उच्चारणकऱ्याहै सो तिनक्रतुयज्ञादिकोंविषे एकएककाज्ञानभी मैंपरमेश्वरकीही उपासनाहै इसअर्थके बोधनकरणेवासतै उच्चारणकऱ्याहै तहां इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवै है ॥ जितनेक क्रियाहैं तथा ताक्रियाकीसिद्धिकरणेहारे कारकहैं तथाताक्रियाकरिकैसाध्य फलहैं तेसर्व क्रिया कारकफल मैंपरमेश्वरकाही स्वरूपहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैं अतिरिक्त कोईभीक्रियाकारकफलनहीं है इति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ क्रतुशब्दकरिकै देवताविषयकध्यानरूपसंकल्पका ग्रहणकऱ्याहै ॥ और यज्ञशब्दकरिकै श्रौतस्मार्त्तकर्मका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) पिताहमस्यजगतोमाताधातापितामहः ॥ वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच ॥ १७ ॥ पिता । अहम् । अस्य । जगतः । माता । धाता । पितामहः । वेद्यम् । पवित्रम् । ओंकारः । ऋक् । साम । यजुः । एव । च ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इस जगत्का पितारूप तथामातारूप तथाधातारूप तथापितामहरूप मैंपरमेश्वरहीहूं तथा वेद्यवस्तुरूप तथापवित्रवस्तुरूप तथाओंकाररूप तथाऋग्वेदरूप सामवेदरूप यजुर्वेदरूप मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहसर्वप्राणीमात्ररूपजोजगतहै इसजगत्का उत्पन्नकरणेहारा पितारूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ तथा इसजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी मातारूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ तथा इसजगत्काधातारूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं अर्थात् इसजगत्कापोषणकरणेहारा अथवा तिसतिसपुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलके देणहाराभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और इनप्राणियोंकेपिताकाभीजोपिताहोवै ताकानाम पितामहहै ॥ सोपितामहरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ इहांकिसीटीकाविषे जगत्शब्दकरिकै आकाशादिकसर्वकार्यप्रपंचका ग्रहणकरिकै मायाविशिष्टशबलब्रह्मकूं ताजगत्कापितारूपकह्याहै ॥ और अव्यक्तनामा अपराप्रकृतिकूं मातारूप कह्याहै ॥ और मायाउपहितअक्षरकूं पितामहरूप कह्याहै इति ॥ और इनअधिकारीजनोंकूं जाणणेयोग्य जोपरब्रह्मवस्तुहै ताकानाम वेद्यहै सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ अथवा सर्वप्राणिमात्रकरिकै जाणणेयोग्य जोशब्दस्पर्शरूपादिकवस्तुहैं तिनोंकानामवेद्यहै सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और यह

प्रकारोंकरिकैभी विश्वरूपमैंपरमेश्वरकूंही तिसतिसदेवताकीउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै चिंतनकरैं हैं ॥ तहां तिसतिसज्ञानयज्ञकरिकै उत्तरउत्तरपुरुषोंकूं क्रमकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाकालाभ अवश्यकरिकैहोवै है इति ।। और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ योगशास्त्रवाले पातंजलितौ निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं ।। और औपनिषदपुरुषतौ मैंहीभगवान्वासुदेवस्वरूपहूं याप्रकार अभेदरूपएकत्वकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं ।। और विचारहीनप्राकृतजनतौ यहईश्वर हमारास्वामी है मैंइसकादासहूं याप्रकार पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं ।। और दूसरेके ईकजनतौ बहुतप्रकारतैं विश्वतोमुख जैसे होवै तैसे हमारेकूं चिंतनकरैं हैं अर्थात् जोकोईवस्तु देखणेविषे आवै है सोवस्तु भगवत्काही स्वरूपहै ।। और जो जोशब्द श्रवणकरणेविषेआवै है सोसोशब्द भगवत्काहीनाम है ।। और जोकोईवस्तु किसीकूंदियाजावै है तथा जोकोईपदार्थ भोग्याजावै है सोसर्व भगवत विषेही अर्पणहोवै है ॥ इसप्रकार सर्वद्वारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकाही चिंतनकरैं हैं ।। १५ ।। ❀ ।। शंका—हेभगवन् ! जबी तेपुरुष बहुतप्रकारतैं उपासनाकरैं हैं तबी तेसर्व मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरे हैं यह आपकावचन कैसे संगतहोवैगा ।। ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै आपणेकूं विश्वरूपता वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम् ॥ १६ ॥ अहम् । क्रतुः । अहम् । यज्ञः । स्वधा । अहम् । अहम् । औषधम् । मंत्रः । अहम् । अहम् । एव । आज्यम् । अहम् अग्निः । अहम् । हुतम् ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरही क्रतुरूपहूं तथामैंही यज्ञरूपहूं तथामैंही स्वधारूपहूं तथामैंही औषधरूपहूं तथामैंही मंत्ररूपहूं तथामैं परमेश्वर हीं आज्यरूपहूं तथामैंही अग्निरूपहूं तथामैंहीं हवनरूपहूं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! श्रौतकर्महैनामजिन्होंका ऐसेजेअग्निष्टोमादिककर्म हैं तिनोंकानाम क्रतुहै सोक्रतुरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ।। और स्मार्तकर्म हैनामजिन्होंका ऐसेजे वैश्वदेवादिककर्म हैं जिनवैश्वदेवादिकोंकूं श्रुतिस्मृतियोंविषे महायज्ञरूपकरिकैकथनकऱ्याहै तिन वैश्वदेवादिकस्मार्तकर्मोंकानाम यज्ञहै सोयज्ञरूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और पितरोंकेताई दियाजोअन्नहै ताअन्नकानाम स्वधाहै सोस्वधारूपभी मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ और वनस्पतिरूपओषधियोंतैं उत्पन्नभयाजोअन्नहै जिसअन्नकूं यहसर्वप्राणी भोजनकरतेहैं ताअन्नकानाम औषधहै अथवा रोगकी निवृत्तिका उपायरूपजोभेषजहै ताकानाम औषधहै सोऔषधरूपभी मैंप मेश्वरहीहूं ॥ और स्वाहा स्वधा यह शब्दहैंअंतविषेजिन्होंके ऐसेजे वेदकेवचनहैं जिनवचनोंकाउच्चारणकरिकै देवतावोंकेताईं तथापितरोंकेताईं हविष् दियाजा

रेजे ताज्ञानकेसाधनरूप श्रवण मनन निदिध्यासनहैं तिनश्रवणादिकों केकरणेविषे जेपुरुष समर्थनहीं हैं तेपुरुषभी उत्तम मध्यम मंद इसभेदकारिके तीन प्रकारकेहीहोवें हैं॥ तेसर्व आपणीआपणीवुद्धिकेअनुसार मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्येयजंतोमामुपासते ॥ एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ ज्ञानयज्ञेन । च । अपि । अन्ये । यजंतः । माम् । उपासते । एकत्वेन । पृथक्त्वेन । बहुधा । विश्वतोमुखम्॥१५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अन्यकेईकउत्तम अधिकारीजनतौं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै मेरापूजनकरतेहुए केवल एकत्वरूपकरिके मैंपरमेश्वरकूं ही चिंतनकरैं हैं तथाकेईकमध्यमअधिकारी जनतौ भेदरूपकरिकैही चिंतनकरैं हैं तथा केईकमंद जनतौ बहुतप्रकारों करिकै में विश्वरूप परमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वश्लोकविषे कथनकरेजेश्रवणादिकसाधनहैं तिनश्रवणादिकसाधनों केअनुष्ठानकरणेविषे असमर्थ जेकेईक अधिकारीजनहैं ते अधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूंही ज्ञानरूपयज्ञकरिकै चिंतनकरैं हैं ॥ तिनअधिकारीजनोंविषेभी केईकउत्तमअधिकारीजनतौ केवल एकत्वज्ञानयज्ञकरिकैही चिंतनकरैं हैं ॥ इहां श्रुतिविषेकथनकरीजाउपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनाहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्वंवाअहमस्मिभगवो देवतेअहंवैत्वमसि) ॥ अर्थयह ॥ हे भगवन् ! सगुणदेवता तथानिर्गुणदेवता जोतूंहै सोमैंहूं ॥ और जोमैंहूं सोतूंहै ॥ तुम्हारेहमारेविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है इति ॥ याप्रकारकीअहंग्रहउपासनारूपज्ञानही परमेश्वरका यजनरूपहोणेतैं यज्ञरूपहै ॥ इहां (ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्ये) इसवचनविषेस्थितजो च अपि यहदोशब्दहैं तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथमचशब्दतौ एवकारकेअवधारणरूपअर्थकाबोधकहै ताचशब्दका माम् इसशब्दकेसाथि अन्वयकरणा और दूसरा अपिशब्दतौ दूसरेसाधनोंकीनिवृत्तिकाबोधकहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ केईकअधिकारीजनतौ दूसरेसाधनोंकीइच्छातैंरहित हुए उपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरणेहारेपुरुष उत्तमकहेजावैं हैंइति ॥ और दूसरेकेईक मध्यम अधिकारीजनतौ पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं अर्थात् (आदित्योब्रह्मेत्यादेशः मनोब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियों नैं कथनकरीजा उपास्यउपासककाभेदरूपप्रतीकउपासनाहै ताप्रतीकउपासनारूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंही चिंतनकरैं हैं इति ॥ और ताअहंग्रहउपासनाकेकरणेविषे तथाप्रतीकउपासनाकेकरणेविषे असमर्थ जेकेईक मंदपुरुषहैं तेमंदपुरुषतौ जिसीकिसीअन्यदेवताकीउपासनाकूंकरतेहुए तथाजिसीकिसीकर्मोंकूंकरतेहुए तिसतिसबहुत

ज्ञानकूं प्राप्तहोवैं हैं यहवार्त्ताश्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ।। (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तैसेही ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिस महात्माअधिकारी पुरुषकूंही यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवैं हैं इति ।। यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहै ।। तहांसूत्र ।। (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यंतरायाभावश्च) ।। अर्थयह ।। तिसपरमेश्वरकीअनन्यभक्तिरूप प्रणिधानतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनका साक्षात्कारहोवैहै ।। तथा सर्वविघ्नोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार तेमहात्माजन शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तथावेदांतशास्त्रकेश्रवणमननपरायणहुए तथापरमगुरुरूपपरमेश्वरविषे परमप्रेमकरिकै तथानमस्कारादिकोंकरिकै सर्वविघ्नों तैंरहितहुए मैंपरमेश्वरकूं उपासनाकरैं हैं अर्थात् श्रवणमननकीपरिपाकतातैं उत्तरभावी जोअनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्याधानतैंरहित मैंपरमेश्वरकेआकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकरिकै निरंतर मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरैं हैं ।। इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तत्त्वसाक्षात्कारकेसमीपहोणेतैं परमसाधनरूप निदिध्यासन दिखाया ।। इसप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकीपुष्कलताकेहुए इसअधिकारीपुरुषविषे वेदांतवाक्यकरिकैजन्य तथाअखंडवस्तुविषयक तथामैंब्रह्मरूपहूं ऐसासाक्षात्काररूप जोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै सो सर्वसाधनोंकाफलभूत आत्मज्ञान संपूर्णशंकारूपीकलंकोंतैंरहितहुआ केवल आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकै संपूर्ण अज्ञानकूं तथाताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वप्रपंचकूं नाशकरै है ।। जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैही अंधकारकूं नाशकरैहै ॥ ताअंधकारकेनाशकरणेविषे सोदीपक दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाकरतानहीं ।। किंतु सोदीपक आपणीउत्पत्तिविषेही तेलवर्त्तीआदिक साधनोंकीअपेक्षाकरैहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे दूसरेकिसीसाधनकी अपेक्षाकरतानहीं किंतु सोआत्मज्ञान आपणी उत्पत्तिविषेही तिनश्रवणादिकसाधनोंकीअपेक्षाकरैहै ।। यातैं सोआत्मज्ञान निरपेक्षहुआही साक्षात् मोक्षकाहेतुहै ।। तामोक्षकीप्राप्तिकरणेविषे सोआत्मसाक्षात्कार भूमिकावोंकेजयक्रमकरिकैभ्रुवोंकेमध्यविषेप्राणोंकेप्रवेशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यनाडीकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकी अपेक्षाकरैनहीं ।। तथा अर्चिरादि मार्गकरिकैब्रह्मलोकविषेगमनकरणेकीभी अपेक्षाकरैनहीं ।। तथा ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतकालपर्यंत विलंबकीभी अपेक्षाकरैनहीं ।। यातैं श्रीभगवान्नैं (इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ज्ञानम्) इसवचनकरिकै जोपूर्व ज्ञानकेउपदेशकीप्रतिज्ञाकरीथी सोज्ञान इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ।। और इसआत्मज्ञानकाजो अशुभसंसारतैंमुक्तिरूपफलहै सोफलतौ श्रीभगवान्नैं पूर्वही कथनकऱ्याथा ।। यातैं इहां पुनः सोफल कथनकऱ्यानहीं इसप्रकारकागंभीरअभिप्राय श्रीभगवानका इसश्लोकविषेहै ॥ और इसश्लोकका ऊपरलाअर्थतौ प्रगटहीहै इति ।। १४ ।। ❀ ।। तहां पूर्वश्लोकविषे कथनक

ख्यानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारतैं दृढहैंअहिंसादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रतहै इति ॥ और तेमहात्माजन मैंपरमेश्वरकूंही नमस्कारकरैं हैं ॥ अर्थात् तिनमहात्माजनोंका इष्टदेवतारूपकरिकै तथागुरुरूपकरिकैस्थित जो सर्वशुभगुणोंकानिधानरूप मैंभगवान्‌वासुदेवहूं तिसमैंभगवान्‌कूंही तेमहात्माजन शरीरमनवाणीकरिकै नमस्कारकरैं हैं ॥ इहां (नमस्यंतश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ताचकारकरिकै शास्त्रांतरविषे प्रसिद्धश्रवणादिकोंकाभी ग्रहण करणा ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुका श्रवणकरणा ॥ तथा कीर्तनकरणा । तथा स्मरणकरणा ॥ तथा ताकेपादोंका सेवनकरणा ॥ तथा अर्चनकरणा ॥ तथा वंदनकरणा ॥ तथा दासभावकरणा ॥ तथा सखाभावकरणा ॥ तथा आपणेआत्माका समर्पणकरणा इति ॥ इसश्लोकविषे वंदनभीकथनकऱ्याहै ॥ सोईहीवंदन श्रीभगवान्‌नैं (नमस्यंतश्च) यावचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्लोकविषे तावंदनकेसहवर्त्तणेहारे श्रवणादिकोंका तिसचकारकरिकै ग्रहणसंभवैहै ॥ यद्यपि पुष्पचंदनअक्षतादिकोंकरिकैअर्चन तथापादोंकासेवन साक्षात् ईश्वरकासंभवतानहीं तथापि सोईश्वरही गुरुरूपहोइकै शिष्यकूं उपदेशकरै है यहवार्त्ता शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ यातैं तागुरुरूपईश्वरका अर्चन तथापादों कासेवन संभवैहै ॥ अथवा (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रतिमादिकम् ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापक भगवान्‌वासुदेवके दोरूपहैं ॥ एकतौ चलणेहारारूपहै ॥ दूसरा अचलरूपहै ॥ तहां संन्यासीकास्वरूप चलरूपहै ॥ और प्रतिष्ठाकरीहुई पाषाणमय अथवाधातुमय प्रतिमाआदिक अचल रूपहै इति ॥ इत्यादिकशास्त्रवचनोंविषे प्रतिमाभी विष्णुकारूपकह्याहै ॥ यातैं ताप्रतिमारूपविष्णुकाअर्चन तथापादसेवन दोनोंसंभवैं हैं ॥ इसीकारणतैंही शास्त्रविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकूं नहींनमस्कारकरणेहारेपुरुषकूं नरककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वाचदंडिनम् ॥ प्रणिपात मकुर्वाणोरौरवंनरकंव्रजेत्) ॥ अर्थयह ॥ विष्णुशिवादिकदेवतावोंकी प्रतिमाकूंदेखिकै तथादंडयुक्तसंन्यासीकूं देखिकै जोपुरुष तिनोंकूं नमस्कारनहीं करै है ॥ सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इहां (नमस्यंतश्चमाम्) इसपूर्ववचनविषेजो मां यहपद दूसरीबार कथनकऱ्याहै ॥ सोसगुणरूपकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरिये तौ (कीर्त्तयंतोमाम्) इसवचनविषेस्थित मां शब्दकरिकैही अर्थकीसिद्धिहोइसकै है ॥ पुनः मांयहशब्दकहणा व्यर्थहोवेगा ॥ यातैं प्रथम मां यहशब्द निर्गुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ और द्वितीय मां यहशब्द सगुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ यहअर्थही अंगीकारकरणा उचितहै इति ॥ तथा तेमहात्माजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक परमप्रेमरूपभक्तिकरिकैयुक्तहोवैं हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै सर्वसाधनोंकीपुष्कलता तथाप्रतिबंधककाअभाव दिखाया अर्थात् जेअधिकारीपुरुष सर्वदा परमेश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्तहोवैं हैं तेअधिकारीपुरुष ताभक्तिकेप्रभावतैं सर्वप्रतिबंधकोंतैं रहितहोइकै शीघ्रही आत्म

तैंरहित करणेवासतैं प्रयत्नकरैं हैं ॥ अर्थात् श्रवणकरिकैनिश्चयकरेहुएअर्थके बाधकरणेहारीशंकावोंकूं निवृत्तकरणेहारीतर्कोंका अनुसंधानरूपमननपरायणहोवैंहैं ॥ इननेकहणेकरिकैमननका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताश्रवणमननकेअधिकारवासतै शमदमादिकसाधनोंका निरूपणकरैंहैं (दृढव्रताःइति) हे अर्जुन ! तेमहात्मापुरुष तिसश्रवणमननकेअधिकारकीप्राप्तिवासतै प्रथम दृढव्रतहोवैं हैं ॥ तहां दृढहैं क्या प्रतिपक्षियोंकरिकैचलायमानकरणेकूंअशक्यहैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह इत्यादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै अर्थात् तेमहात्मापुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहोवैं ॥ तहां हैं अहिंसादिकव्रतोंविषे दृढरूपता पतंजलिभगवानूनैंभी योगसूत्रोंविषे कथनकरीहै ॥ तहां सूत्रद्वयम् ॥ (अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥ जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमाः महाव्रतम्) ॥ अर्थयह ॥ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यह पंच यमकहेजावैंहैं इति ॥ तेअहिंसादिकपंचयम क्षिप्त मूढविक्षिप्त इनतीनभूमिकावोंविषेभी संभावनाकरेजोवैं हैं ॥ यातैं तेपंचयम सार्वभौम कहेजावैं हैं ॥ ऐसेअहिंसादिकपंचयम जाति देश काल समय इन चारोंकरिकै अनवच्छिन्नहुए महाव्रत कहेजावैं हैं ॥ इहां जातिशब्दकरिकै ब्राह्मणत्वादिकजातिका ग्रहणकरणा ॥ और देशशब्दकरिकै तीर्थादिकउत्तमदेशका ग्रहणकरणा ॥ और कालशब्दकरिकै एकादशीअमावास्यादिकपवित्रदिनोंकाग्रहणकरणा ॥ और समयशब्दकरिकै प्रयोजनविशेषका ग्रहणकरणा ॥ तहां ब्राह्मणादिकउत्तमप्राणियोंकूं मैं नहीं हननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनब्राह्मणादिकोंका नहींहननकरणाहै साअहिंसा जातिकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थादिकउत्तमदेशविषे मैं किसीभीप्राणीकाहनननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनतीर्थादिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै साअहिंसादेशकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीआदिकपवित्रदिनोंविषे मैं किसीभीप्राणीकानहींहननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनएकादशीआदिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै साअहिंसा कालकरिकैअवच्छिन्न कहींजावैहै और यज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना मैं किसीभीप्राणीका नहींहननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनयज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै साअहिंसा समयकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार सत्यादिकोंविषेभी यथायोग्य जातिआदिकोंकरिकैअवच्छिन्नता जानिलेणी और किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे तथाकिसीभीप्रयोजनवासतै किसीभीजातिवाले जीवका मैं हनननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो सर्वप्रकारतैं किसीभीप्राणीमात्रका नहींहननकरणाहै साअहिंसा तिनजातिआदिकचारोंकरिकै अनवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसीप्रकार सत्यादिकयमोंविषेभी जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ इसप्रकार जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नहुए ते अहिंसादिकयम महाव्रत कहेजावैं हैं इति ॥ इनदोनोंयोगसूत्रोंका विस्तारतैंअर्थतो इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे (द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः) इसश्लोककेव्या

प्रकृतिकूं आश्रयकरणेहारे तथामैंपरमेश्वरतैंअन्यविषेनहींहै मनजिन्होंका ऐसेमहात्मापुरुष तौ मैंपरमेश्वरकूं सर्वभूतोंकाकारणरूप तथानाशतैं रहित जानिकै भजैं हैं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! महान्है आत्मा क्या अंतःकरण जिन्होंका तिनपुरुषोंकानाम महात्माहै अर्थात् अनेकजन्मोंविषेकरेहुएपुण्यकर्मोंकरिकैसंस्कृत तथाक्षुद्र कामादिकविकारोंकरिकैनहीं अभिभवकऱ्याहुआहैअंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम महात्माहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहैं ॥ तिसकारणतैंही (अभयंसत्व संशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणीजा दैवीनामा सात्विकीप्रकृतिहै तादैवीप्रकृतिकूं आश्रयणकऱ्याहैजिन्होंनैं ॥ जिसकारणतैं तिनमहात्मापुरुषों नैं दैवीप्रकृतिकूंआश्रयणकऱ्याहै तिसकारणतैंही मैंपरमेश्वरतैंअन्यवस्तुविषेनहींहैमन जिन्होंका ऐसेमहात्मापुरुषतौ मैंपरमेश्वरकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसर्वजगत्काकार णरूपजानिकै तथाअविनाशिरूपजानिकै भजैं हैं अर्थात् मैंपरमेश्वरका सेवनकरैं हैं ॥ इहां (महात्मानस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वकथनकरेहुए मूढपुरुषोंतैं इनमहात्मापुरुषोंविषे महान्विलक्षणताकूं सूचनाकरैं है इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! तेमहात्मापुरुष आपपरमे श्वरकूं किसप्रकारकरिकै भजैंहैं ।। ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताभजनकेप्रकारकूं दोश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सततंकीर्त्तयंतोमांयतंतश्चदृढव्रताः ॥ नमस्यंतश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ सततं । कीर्त्तयंतः । मां । यतंतः । च । दृढव्रताः । नमस्यंतः । च । मां । भक्त्या । नित्ययुक्ताः । उपासते ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! तेमहात्मापुरुष सर्वदा मैंपरब्रह्मकूं कीर्त्तनकरतेहुए तथा प्रयत्नकरतेहुए तथादृढव्रतवालेहुए तथा मैंपरमेश्वरकी नमस्कारकरतेहुए तथामैंपरमेश्व रकी भक्तिकरिकै नित्ययुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैं हैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तेमहात्मापुरुष सर्वकालविषे मैंपरमात्मदेवकूंही कीर्त्तनकरैंहैं अर्थात् सर्वउपनिषदोंकरिकैप्रतिपाद्य जो मैंनिर्गुणपरमात्मादेवहूं तिस मैंनिर्गुणस्वरूपकूं तेमहात्मापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंके विचारकरिकै कीर्त्तनकरैंहैं ॥ और तागुरुकीसमीपतातैंभिन्नकालविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंकेजपकरिकै तथाउपनिषदोंकीआवृत्तिकरिकै कीर्त्तनकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेमहात्माजन मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे वेदांतशास्त्रके अध्ययनरूपश्रवणव्यापारका विषयकरैं हैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रवणरूपसाधनकानिरूपणकऱ्या ॥ अबमननरूपसाधनका निरूपणकरैं हैं ॥ (यतंतः इति) हे अर्जुन ! पुनः तेमहात्मापुरुष गुरुकेसमीप अथवाअन्यत्र वेदांततैं अविरोधितर्कोंकाअनुसंधानकरिकै गुरूपदिष्टमैंपरमेश्वरकेनिर्गुणस्वरूपकेनिश्चयकूं अप्रामाण्यशंक

उत्पन्नभयाज्ञानही है इसअधिकारीपुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जिनशास्त्रोंविषेपरमेश्वरका प्रतिपादननहींहै उलटापरमेश्वरकाखंडनहै ऐसेकुतर्कशास्त्रोंकेविचारतैंउत्पन्नहुआ ज्ञान इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोज्ञान निष्फलहीहै ॥ अबइसपूर्वउक्तअर्थविषेहेतुकहैं हैं (विचेतसःइति) तहां परमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै तापापकरिकै प्रतिबद्धहुआहैविवेकविज्ञान जिन्होंका तिनोंकानामविचेतस्है ऐसेविचेतस्होणेतैंही तेमूढपुरुष मोघआशा मोघकर्मा मोघज्ञाना होवैं हैं ॥ किंवा तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकेवशतैं राक्षसीप्रकृतिकूं तथाआसुरीप्रकृतिकूं तथामोहिनीप्रकृतिकूंही आश्रयणकरैहैं ॥ तहां शास्त्रअविहितहिंसाका हेतुभूतजोद्वेषहै सोद्वेषहैप्रधानजिसविषे ऐसीजातामसीप्रकृतिहै ताकानाम राक्षसीप्रकृतिहै ॥ और शास्त्रअविहित विषयभोगोंका हेतुभूतजोरागहै सोरागहैप्रधानजिसविषे ऐसीजाराजसीप्रकृतिहै ताकानाम आसुरी प्रकृतिहै ॥ और सत्शास्त्रजन्यज्ञानतैंभ्रष्टकरणेहारी जाप्रकृतिहै ताकानाम मोहिनीप्रकृतिहै ॥ इहां प्रकृतिनामस्वभावकाहै ॥ इसप्रकारकी राक्षसी आसुरी मोहिनी प्रकृतिकूंही तेमूढपुरुष आश्रयाकरैहैं ॥ इसीकारणतैंही तेमूढपुरुष नरककीप्राप्तिकेद्वारोंकाभागीहोणेतैं निरंतर नरकयातनाकूंही अनुभवकरै हैं ॥ तेनरककेद्वार शास्त्रविषेयहकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्) ॥ अर्थयह ॥ काम क्रोध लोभ यहतीनोंही इसपुरुषकूं नरककेप्राप्तिकाद्वारभूत होवैहैं ॥ यातैंयहपुरुष तिनतीनोंका परित्यागकरै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जेपुरुष परमेश्वरतैंविमुखहैं ॥ तिनपुरुषोंकी जा फलकीकामनाहै ॥ तथा ताफलकीकामनाकरिकैकन्याजो नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेअनुष्ठानविषेउपयोगीजोशास्त्रजन्यज्ञानहै ॥ तेसर्व व्यर्थहीहोवैं हैं ॥ यातैं तेपुरुष परलोककेफलतैंतथा ताफलकेसाधनेंतैं शून्यहीहोवैं हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं इसलोककाभी कोईफल प्राप्तहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष विवेकविज्ञानतैंशून्यहोणेतैं विचेतस्हैं ॥ यातैं तेपरमेश्वरतैंविमुख दीनपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सर्व प्राणियोंकूं शोचकरणेयोग्यहैं ॥ यहसर्व अर्थ पूर्वकथनकऱ्या तहां सर्वपुरुषार्थोंकूं प्राप्तहोणेहारे तथानहींशोचकरणेयोग्य ऐसेकौनपुरुषहैं ॥ ऐसेअर्जुनकीजिसाज्ञाकेहुए ॥ एकपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहुएपुरुषही इसप्रकारकेहैं इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) महात्मानस्तुमांपार्थ दैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् ॥१३॥ महात्मानः । तु । माम् । पार्थ । दैवीम् । प्रकृतिम् । आश्रिताः । भजंति । अनन्यमनसः । ज्ञात्वा । भूतादिम् । अव्ययम् ॥१३॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दैवी

टीका । हे अर्जुन ! विचारतैंरहित जेमूढपुरुषहैं तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीभी अवज्ञाकरैं हैं अर्थात् तेमूढपुरुषमैंपरमेश्वरकूं यहकृष्णभगवान् साक्षात् ईश्वरहै याप्रकारतैं आदरकरतेनहीं उलटा हमारीनिंदाकरते हैं ॥ अब तिनमूढपुरुषों नैं करीहुईअवज्ञाविषे तिनमूढपुरुषोंकीभ्रांतिरूपहेतुकूं कथनकरैं हैं (मानुषींतनुमाश्रितम्) इति । हे अर्जुन ! मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहोतीजोयहमूर्त्ति है तिसमूर्त्तिकूं मैंपरमेश्वर आपणीइच्छाकरिकै भक्तजनोंकेअनुग्रहवासतैग्रहणकरताभयाहूं अर्थात् मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहुएइसदेहकरिकै मैंपरमेश्वर व्यवहारकूंकरताहूं ॥ याकारणतैंही यहकृष्णभी हमारेसरीखा कोईमनुष्यही है ॥ याप्रकारकीभ्रांतिकरिकै आवृत हुआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरके परमभावकूं नहींजानतेहुए अर्थात् मैंपरमेश्वरके सर्व तैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्त्वकूं नहींजानतेहुए जोपरमेश्वरका आदरनहींकरैं हैं तथामैंपरमेश्वरकीनिंदाकरैं हैं सो तिनमूढपुरुषोंविषे संभवताही है ॥ हे अर्जुन ! जिसहमारेपरमभावकूंनहींजानतेहुए तेमूढपुरुष हमारीअवज्ञाकरैं हैं ॥ सोहमारा परमभावकैसाहै ॥ सर्वभूतोंका महानईश्वरहै अर्थात् तिनसर्वभूतोंका नियंताहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाक रिकैउत्पन्नभयाजोमहानपापहै तापापकरिकैप्रतिबद्धहुई हैबुद्धिजिनोंकी ऐसे तेमूढपुरुष तिरंतर नरकविषेही निवासकरणेकूं योग्यहोवैं हैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः ॥ १२ ॥ मोघाशाः । मोघक र्माणः । मोघज्ञानाः । विचेतसः । राक्षसीम् । आसुरीम् । च । एव । प्रकृतिम् । मोहिनीम् । श्रिताः ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! निष्फलहैआशाजिनोंकी तथानिष्फलहैकर्मजिनोंके तथानिष्फलहैज्ञानजिनोंका ऐसेविचारहीनपुरुष राक्षसी तथा आसुरी तथा मोहिनीप्रकृतिकूं ही आश्रयणकरैं हैं ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अंतर्यामीईश्वरतैंविना केवलकर्महीं हमारेकूंफलकीप्राप्तिकरैंगे इसप्रकारकी निष्फलही है फलकीप्रार्थनारूपआशा जिनोंकी तिनोंकानाम मोघ आशाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतर्यामीसर्वज्ञईश्वरतैंविना जडकर्मोंविषे स्वतंत्र फलदेणेकासामर्थ्य हैनहीं ऐसेअसमर्थकर्मों तैंही फलकेप्राप्तिकीइच्छाकरणी निष्फलही है ॥ इसीकारणतैंही परमेश्वरतैंविमुखहोणे तै मोघहैं क्या केवलपरिश्रममात्ररूपहैं अग्निहोत्रादिककर्म जिनोंके तिनोंकानाम मोघकर्मा है अर्थात् परमेश्वरतैंविमुख पुरुषोंके तेअग्निहोत्रादिककर्म केवलपरिश्रमकेही हेतुहैं ॥ दूसरेकिसीफलकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ और ईश्वरका नहींप्रतिपादनकरणेहारे जेकुतर्कशास्त्रहैं तिनशास्त्रों करिकै उत्पन्नहोणेतैं निष्फलहैज्ञानजिनोंका तिनोंकानाम मोघज्ञानाहै अर्थात् परमेश्वरकाप्रतिपादनहैजिनोंविषे ऐसेजेअध्यात्मशास्त्रहैं तिनशास्त्रोंके विचारतैं

माया कल्पित गजतुरंगादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई सामायाही इसकल्पितजगत्कूं उत्पन्नकरैहै ॥ मैंपरमेश्वरतौ तिसकार्यसहितमायाकूं केवल प्रकाशमात्रही करताहूं ॥ ताकार्यसहितमायाके प्रकाशमात्रतैंभिन्न दूसरेकिसीव्यापारकूं मैंपरमेश्वर करतानहीं ॥ हे अर्जुन ! तिसप्रकाशकत्वरूप निमित्तकरिके यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् विविधप्रकारतैं परिवर्त्तमानहोवैहै अर्थात् यहजगत् जन्मतैंआदिलैके विनाशपर्यंत अनेक प्रकारकेविकारोंकूं निरंतर प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं (भूतग्रामंसृजामि) अर्थ ॥ मैंपरमेश्वर इससर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताहूं यहजोवचन हमनैं पूर्वकथनकऱ्याथा सो तिसजगत्काकारणरूप मायाका प्रकाशकत्वमात्ररूपव्यापारकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और जैसे इसलोकविषे सूर्यादिकोंकेप्रकाशकरिकैहीसर्वकार्योंकी उत्पत्तिहोवैहै परंतु ताप्रकाशकत्वमात्रकरिकै तिनसूर्यादिकोंकूं कर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताकारणरूपमायाकेप्रकाशकत्वमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी सोकर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैही पूर्वहमनैं (उदासीनवदासीनम्) यहवचन कथनकऱ्याथा ॥ यातैं तिनपूर्वउक्तदोनोंका परस्पर विरोधहोवै नहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्यद्वैतेंद्रजालस्य यदुपादानकारणम् ॥ अज्ञानंतदुपाश्रित्यब्रह्मकारणमुच्यते) ॥ अर्थयह ॥ इसद्वैतप्रपंचरूपइंद्रजालका जो अज्ञानरूपउपादानकारणहै ॥ तिसअज्ञानकीप्रकाशताकरिकैही ब्रह्म जगत्काकारणकह्याजावैहै ॥ वास्तवतैं सोब्रह्म जगत्काकारणहैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका यहअभिप्राय वर्णनकऱ्याहै ॥ जैसे चुंबकपाषाण आपणीसमीपतामात्रकरिकै लोहकूं प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनही रहैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिसमायारूपप्रकृतिकूं जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनहीरहूंहूं यातैं (भूतग्रामंसृजामि उदासीनवदासीनम्) इनदोनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव तथा सर्वप्राणियोंकाआत्मारूप तथाआनंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसेभीमैंपरमेश्वरकूं यह अविवेकीलोक मनुष्यमानिकै आदरकरतेनहीं उलटेनिंदा करैंहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥११॥ अवजानंति । माम् । मूढाः । मानुषीम् । तनुम् । आश्रितम् । परम् । भावम् । अजानंतः । मम । भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! अविवेकीजन मैंपरमेश्वरके सर्वभूतोंकामहानईश्वररूप सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्त्वकूं न जानतेहुए इसमनुष्य मूर्त्तिकूं धारणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं अनादर करैंहैं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

धनकूंलेआवताभयाहै ॥ याकारणतैं तुम्हारा धनंजय यहनामहुआहै ॥ ऐसेमहान्प्रभाववाला तूं अर्जुनहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोक का यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ शंका–हेभगवन् ! इसलोकविषे कोईप्राणी सुखीहै ॥ कोईप्राणीदुःखीहै ॥ कोईधनीहै । कोईदारिद्रीहै । कोईबुद्धिमान्है । कोई मूर्ख है ॥ इसप्रकारकीविषमसृष्टिकूंकरणेहारे आपईश्वरकूं विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवेगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (नचमांतानिकर्माणि इति) हेअर्जुन ! तेविषमसृष्टिरूपकर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसविषेहेतुकहैं हैं (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन ! जैसे मेघ किसीबीजोंविषेरागकूं तथाकिसीबीजोंविषे द्वेषकूं नहींकरिकै उदासीनहुआ जलकीवृष्टिकरै है ॥ आगेतैं तिनतिनबीजोंके अनुसार भिन्नभिन्नफल उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पुण्यवान्पुरुषोंविषे रागकूंनहींकरताहुआ तथापापीपुरुषोंविषे द्वेषकूंनहींकरताहुआ इसजगत्कूं उत्पन्नभकरताहूं ॥ आगेतैं तेप्राणी आपणेआपणेपुण्यपापकर्मके अनुसार तिसतिस सुखदुःखादिरूप भिन्नभिन्नफलकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकूं विषमतादोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका– हेभगवन् ! पूर्वआपनैं (भूतग्रामंसृजामि) इसवचनकरिकै आपणेकूं सर्वभूतोंका कर्त्तापणा कथनकऱ्या ॥ और (उदासीनवदासीनम्) इसवचनकरिकै आपणेकूं उदासीनपणाकथनकऱ्या सोयहदोनों आपकेवचन परस्परविरुद्धअर्थके बोधकहोणेतैं असंगतहैं ॥ काहेतैं जिसविषेकर्त्तापणा रहै है तिसविषे उदासीनपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे उदासीनपणा रहै है तिसविषे कर्त्तापणा रहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकोनिवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे पुनः मायामयत्वकूंही कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मयाध्यक्षेणप्रकृतिः सूयतेसचराचरम् ॥ हेतुनानेनकौंतेयजगद्विपरिवर्त्तते॥ १० ॥मया । अध्यक्षेण । प्रकृतिः । सूयते । सचराचरम् । हेतुना । अनेन । कौंतेय । जगत् । विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे कौंतेय ! प्रकाशरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई मायारूपप्रकृतिही इसचरअचरसाहितजगत्कूं उत्पन्नकरै है इसीप्रकाशत्व निमित्तकरिकै यहजगत् विविधप्रकारतैंपरिवर्त्तमानहोताहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! केवलद्रष्टामात्रस्वरूप तथासर्वविकारोंतैंरहित तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैसर्वकानियंता तथासर्वप्रकाशक ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैं परमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई जामायारूपप्रकृतिहै ॥ कैसीहैसाप्रकृति ॥ सत्त्व रज तम यहतीनगुणस्वरूपहै ॥ तथा जाप्रकृति सतरूपकरिकै तथाअसत्रूपकरिकै तथासतअसतउभयरूपकरिकै कथनकरीजातीनहीं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिही इसस्थावरजंगमरूप सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरै है ॥ जैसे मायावीपुरुषनैं प्रवृत्तकरीहुई

निबध्नंति । धनंजय । उदासीनवत् । आसीनम् । असक्तम् । तेषु । कर्मसु ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! उदासीनपुरुषकीन्याई
स्थित तथा तिन कर्मोंविषे आसक्तितैंरहित मैंपरमेश्वरकूं ते सृष्टिआदिककर्म नहीं बंधायमानकरते ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसे मायावीपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करै है परंतु तेसृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसमायावीपुरुषकूं
बंधायमानकरतेनहीं ॥ और जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करैहै परंतु तेसृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसस्वप्नद्रष्टापुरुषकं बंधायमा
नकरतेनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीमायाशक्तिकेवशतैं इसआकाशादिकप्रपंचकी सृष्टि स्थिति लयकूं करूंहूं परंतु तेसृष्टिआदिककर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमान
करतेनहीं ॥ अर्थात् तेसृष्टिआदिककर्म अनुग्रहकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सुकृतकाभागीनहींकरैं हैं तथा निग्रहकरिकै हमारेकूं दुष्कृतकाभागीनहींकरैं हैं ॥ जिसकारणतैं
तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नकीन्याईमिथ्याभूतही हैं ॥ शंका–हेभगवन् ! तेसृष्टिआदिककर्म आपकूं किसवासतै नहींबंधायमानकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए
श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहैं हैं (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन ! परस्पर विवादकरणेहारेदोपुरुषोंकेजयअजयरूपकर्म के संबंधतैं रहित तथादोनोंकीउपेक्षाकरणेहारा
जो कोईउदासीनपुरुषहै सोउपेक्षकउदासीनपुरुष जैसे तिनविवादकरतापुरुषोंके जयअजयकृतहर्षविषादतैंरहितहुआ निर्विकाररूपतैंस्थितहोवैहै तैसे
मैंअसंगपरमेश्वरभी सर्वदा निर्विकाररूपकरिकैस्थितहूं ॥ यद्यपि इहां परमेश्वररूपदार्ष्टांतिकविषे उदासीनपुरुषरूपदृष्टांतकीन्याई विवादकरणेहारेदोनोंका
अभावहै तथापि तादृष्टांतविषे तथादार्ष्टांतिकविषे उपेक्षकपणा समानही है ॥ ताउपेक्षकपणेमात्रकूं लैके इहां (उदासीनवत्) इसवचनकेअंतविषे वत् यहप्रत्यय
कथनकऱ्याहै ॥ हेअर्जुन ! जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर उदासीनपुरुषकीन्याई हर्षविषादादिकविकारोंतैंरहितहुआस्थितहूं तिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनसृष्टिआदि
ककर्मोंविषे असक्तहूं अर्थात् मैंइसकर्मकूंकरताहूं तथामैं इसकर्मकेफलकूंभोगोंगा याप्रकारके कर्तृत्वअभिमानरूप तथाफलकीअभिलाषारूप संगतैं रहितहूं ॥
याकारणतैंही मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ जैसे कर्तृत्वअभिमानतैंरहित
तथाफलकीइच्छातैंरहित मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष ताकर्तृत्वअभिमानतैं तथाफलकीइच्छातैं
रहितहोइकै कर्मोंकूंकरैहै तिसपुरुषकूंभी तेलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ ताकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीइच्छा दोनोंके विद्यमानहुएही यहमूढ
पुरुष कोशकारजंतुकीन्याई तिनकर्मोंकरिकैबंधायमानहोवै है इति ॥ इहां श्रीभगवान्नैं स्वउपदिष्टअर्थकेधारणकरणेविषे अर्जुनकेउत्साहकरणेवासते
(हे धनंजय) इससंबोधनकरिकै ता अर्जुनके महानप्रभावकूं सूचनकऱ्याहै अर्थात् युधिष्ठिरराजाके राजसूयनामायज्ञवासतै तूं सर्वराजावोंकूंजीतिकरिकै

धीहोवै है सो तिसकीप्राप्तिवासतैहोवैनहीं ॥ यातैं किसीकेमोक्षवासतैभी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकी अनुपपत्तियां इससृष्टिविषे प्राप्तहोवैं हैं ॥ तेअनुपपत्तियांही इससृष्टिविषे मायामयत्वकीसिद्धि करैं हैं ॥ यातैं तेअनुपपत्तियां हमसिद्धांतियोंकूं प्रतिकूलनहीं हैं किंतु अनुकूलही हैं इसी कारणतैंही तेअनुपपत्तियां परिहारकरणेंकूं योग्यनहीं हैं ॥ इसीसर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे मायामयत्वहेतुतैं मिथ्यात्वसिद्धकरणेका आरंभ करैं हैं तीनश्लोकोंकरिकै ।

(मू. श्लो.) प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृजामिपुनःपुनः ॥ भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥ प्रकृतिम् । स्वाम् । अवष्टभ्य । विसृजामि । पुनः । पुनः । भूतग्रामम् । इमम् । कृत्स्नम् । अवशम् । प्रकृतेः । वशात् ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! मैंपरमेश्वर आपणी मायारूपप्रकृतिकूं आश्रयणकरिकै तिसमायाके प्रभावतैं उत्पन्नहुए इस संपूर्ण आकाशादिकभूतोंकेसमुदायकूं पुनः पुनः उत्पन्नकरूंहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषेकल्पित तथामैंपरमेश्वरकेअधीन ऐसीजा मायानामा अनिर्वचनीयप्रकृतिहै तिसआपणीप्रकृतिकूंआश्रयकरिकै अर्थात् ताप्रकृतिकूं आपणीसत्तास्फूर्तिकीप्राप्तिद्वाराढढकरिकै मैंमायावीपरमेश्वर प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैसिद्ध इसआकाशादिकभूतोंकेसमुदायरूपप्रपंचकूं जीवोंकेकर्मोंके अनुसार विविधप्रकारतैं उत्पन्नकरूंहूं अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकै उत्पन्नकरै है तैसे मैंपरमेश्वरभी इसआकाशादिकप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकैउत्पन्नकरूंहूं ॥ कैसाहैयहआकाशादिकभूतोंकासमुदाय प्रकृतिकेवशतैंजायमानहै अर्थात् मायारूपप्रकृतिकाजो अविद्यादिकपंचक्लेशोंका कारणीभूत आवरणविक्षेपशक्तिरूपप्रभावहै तिसप्रभावतैं उत्पन्नहुआहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (अवशंप्रकृतेर्वशात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आपणेस्वभावकानामप्रकृतिहै ॥ तास्वभावरूपप्रकृतिकेवशतैं यहप्रपंच अवशहै अर्थात् रागद्वेषादिकोंकेअधीनहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषे इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश इहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणे ॥ ताअविद्यादिपंचक्लेशरूपप्रकृतिके वशात् कहिये स्वभावतैं यहभूतसमुदाय अवशहै अर्थात् अस्वतंत्रहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं इसजगत्की सृष्टिस्थितिआदिककर्म स्वप्नकीन्याई मिथ्याभूतही हैं ॥ तिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्याई मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नचमांतानिकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ उदासीनवदासीनमसक्तंतेषुकर्मसु ॥ ९ ॥ न । च । माम् । तानि । कर्माणि ।

प्रलयकालविषे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूप जात्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं प्राप्तहोवैं हैं पुनः सृष्टिकालविषे मैंपरमेश्वर तिनभूतोंकं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूपकरिकेकल्पनाकरीहुई जात्रिगुणात्मकमायाहै जामाया (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इसश्रुतिनैं सर्वजगत्का प्रकृति रूपकरिकेकथनकरीहै ॥ ऐसीकारणरूपमायाप्रकृतिकूंही तेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे प्राप्तहोवैं हैं अर्थात् तेआकाशादिकसर्वभूत ताप्रलयकालविषे आपणेकारणभूत मायानामाप्रकृतिविषेहीसूक्ष्मरूपकरिके लयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ हेअर्जुन ! जेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे ताप्रकृतिविषे अविभागकूंप्राप्त हुएथे तिनआकाशादिकभूतोंकूंही मैंसर्वशक्तिसंपन्नसर्वज्ञपरमेश्वर सृष्टिकालविषे भिन्नभिन्न करिकै उत्पन्नकरूंहूं इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकी यहआकाशादिकप्रपंचकीसृष्टि किसप्रयोजनवासतैहै ॥ तिसपरमेश्वरकेही भोगवासतैहै अथवा अन्यकिसीकेभोगवासतैहै ॥ तहां परमेश्वरकेभोगवासतैतौ यह सृष्टि संभवती नहीं काहेतैं सर्वकासाक्षीरूप तथाचैतन्यमात्ररूप जोपरमेश्वरहै तापरमेश्वरविषे सुखदुःखकाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ जोकदाचित् परमेश्वर विषेभी सुखदुःखकाभोक्तापणा अंगीकारकरिये तौ तिसपरमेश्वरविषेभी अस्मदादिकजीवोंकीन्याईं संसारीपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं तापरमेश्वरविषे ईश्वर पणा नहींरहैगा ॥ काहेतैं जिसविषे संसारीपणा रहैहै तिसविषे ईश्वरपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे ईश्वरपणा रहैहै तिसविषे संसारीपणा रहैनहीं ॥ यातैं परमे श्वरकेभोगवासतैतौ यहसृष्टि संभवतीनहीं और परमेश्वरतैंअन्यकिसीभोक्तावासतै यहसृष्टिहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेचेतनकाअभावही कथनकर्याहै ॥ और जोकोई यहकहै तिसपरमेश्वरतैं जीवचेतनभिन्नहै सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरकीही सर्वत्र जीवरूपकरिकेस्थितिकथनकरी है ॥ याकारणतैंही तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्य इसजीवकूं ब्रह्मरूपकरिकेकथनकरैं हैं ॥ यातैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईचेतन हैनहीं जोइसजगत्काभोक्ताहोवै ॥ यद्यपि तिसचैतन्यस्वरूप परमेश्वरतैं जडपदार्थभिन्नहैं तथापि तिनजडपदार्थोंविषे सुखदुःखकाभोक्तापणाही संभवतानहीं ॥ किंवा तेसर्वजडपदार्थ भोग्यरूपही हैं ॥ तिनभोग्यपदार्थोंकूं जोभोक्तामानियें तौ भोक्ता भोग्य यहभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंकेभोगवासतै भी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे यहसृष्टि किसीभोगवासतै नहींसंभवै है ॥ तैसे यहसृष्टि किसीके मोक्षवासतैभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं जोकोई बंध वास्तवतैंहोवै तौ ताकेमोक्षवासतै यहसृष्टिसंभवैहै सो वास्तवतैं कोईबंधन ही नहीं है॥ किंवा यहसृष्टि तामोक्षका उलटा विरोधीही है ॥ जो जिसकाविरो

नाममात्रहीहोवैहै ॥ वास्तवतैं होवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प तथाशुक्तिविषेकल्पितरजत नाममात्रही है ॥ वास्तवतैं हैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मविषेअध्यस्तते आकाशादिकभूतभी नाममात्रही हैं ॥ वास्तवतैं हैंनहीं ॥ ऐसेकल्पितभूतोंके अध्यासरूपसंबंधकेहुएभी ताअधिष्ठानब्रह्मकी स्वाभाविकअसंगरूपता निवृत्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ पूर्वअष्टमअध्यायविषे किं तद्ब्रह्म अर्थयह सोब्रह्म कौनहै इसप्रश्नका (अक्षरंपरमंब्रह्म) अर्थयह अक्षरनामा शुद्धत्वंपदार्थही निरुपाधिकब्रह्महै यहउत्तर कथनकऱ्याथा ॥ सोनिरुपाधिकब्रह्महीं इहां (मयाततमिदंसर्वम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ अबतिसनिरुपाधिकब्रह्मका अक्षरनामजीवकेसाथि अभेदकूं दृष्टांतकरिकैकथनकरैं हैं (यथाकाशस्थितःइति) इहां (वायुः) इसशब्दकरिकै सूत्रात्माकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं (वायुर्वैगौतमसूत्रम्) इसश्रुतिविषे तासूत्रात्माकूं वायुनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहै सोसूत्रात्मारूपवायु सर्वत्रगहै अर्थात् समष्टिलिंगदेहरूपहोणेतैं सर्वत्रव्यापकहै ॥ पुनःकैसाहैसोवायु महान्‌है अर्थात् इसबाह्यवायुतैंविलक्षणहै ॥ ऐसासूत्रात्मारूपवायु जैसे नित्यहीस्वकारणीभूत अव्याकृतनामाआकाशविषे स्थितहै ॥ इहां (नित्यम्) इसशब्दकरिकै तासूत्रआत्माका तीनकालविषे ताअव्याकृतनामाआकाशकेसाथि संबंध कथनकऱ्या ॥ तैसे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं ॥ इहां भूतशब्दकरिकै उपाधितैंरहितत्वंपदार्थरूपजीवचेतनका ग्रहणकरणा ॥ सोजीवचेतन यद्यपि वास्तवतैं एकही है ॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै श्रीभगवान्‌नें ताजीवचेतनकाबहुतपणा कथनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सर्वकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर तथाअपणीस्थितिकालविषे आपणे उपादानकारणविषेही अभेदरूपकरिकै स्थितहोवैं हैं ॥ तैसे यहसर्वजीव अंतःकरणादिकउपाधिकी उत्पत्तितैंपूर्व तथाउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथामध्यविषे तिसपरब्रह्मतैं भिन्ननहीं हैं किंतु अभिन्नही हैं ॥ जैसे घटाकाश घटरूपउपाधिकीउत्पत्तितैंपूर्व तथाघटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथाताघटरूपउपाधिकेविद्यमानकालविषे महाकाशतैंभिन्ननहीं है किंतु सोघटाकाश तीनोंकालविषे महाकाशरूपही है ॥ तैसे यहजीवभी तीनोंकालविषे परब्रह्मरूपही है ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म । अहंब्रह्मास्मि) ॥ अर्थयह ॥ यहप्रत्यक्आतमा ब्रह्मरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे इसप्रपंचकीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे ताप्रपंचकेसाथिअसंगआत्माका असंबंध कथनकऱ्या ॥ अब प्रलयकालविषेभीताप्रपंचकेसाथि असंगआत्माकेअसंबंधकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वभूतानिकौंतेयप्रकृतिंयांतिमामिकाम् ॥ कल्पक्षयेपुनस्तानिकल्पादौविसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ सर्वभूतानि । कौंतेय । प्रकृतिं । यांति । मामिकाम् । कल्पक्षये । पुनः । तानि । कल्पादौ । विसृजामि । अहम् ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेकौंतेय

टीका । हे अर्जुन ! जैसेपूर्वादिकसर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथा उत्पत्तिस्थितिसंहारकालविषे चलनस्वभाववाला वायु असंगस्वभाववालेआकाशविषे स्थितहोवैहै परंतु सोवायु तिसअसंगआकाशकेसाथिवास्तवतैं कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे संबंधतैंविनाही यहआकाशादिकसर्वभूत स्थितहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे असंगस्वभाववाले आकाशविषे वास्तवतैं वायुकासंबंध नहींभीहै तौभी सोवायु आकाशविषेस्थित कह्याजावैहै ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे वास्तवतैं इनआकाशादिकभूतोंकासंबंध नहींभीहै तौभी यहआकाशादिकभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थित कहेजावैं हैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं संबंधकेअभावएहुभी मैंपरमेश्वरविषेतौ इसकल्पितप्रपंचकीआधारताकूं तथाइसकल्पितप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकीआधेयताकूं तूं इसआकाशकेदृष्टांतसे विचारकारिकै निश्चयकर इति किंवा ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते ।) इत्यादिकअनेकश्रुतियां प्रत्यक्अभिन्नअसंगब्रह्मविषे आकाशादिकसर्वभूतों के संबंधका निषेधकरैं हैं ॥ तिनश्रुतियोंविषे अविश्वासकरिकै जोवादी तिसब्रह्मविषे आकाशादिकभूतों के संबंधकूं अंगीकारकरै है तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तिसअसंगब्रह्मविषे तेभूत संयोगसंबंधकरिकैरहैं हैं अथवा समवायसंबंधकरिकैरहैं हैं ।। अथवा तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैं हैं ।। तहां प्रथम संयोगपक्षविषेभी ब्रह्मका तथाभूतोंका सर्वओरतैंसंयोगहै ।। अथवा एकदेशकरिकैसंयोगहै ।। तहां प्रथम सर्वओरतैं संयोगतौ बनैनहीं काहेतैं ब्रह्मतौअपरिच्छिन्नहै और तेभूत परिच्छिन्नहैं ।। तिनपरिच्छिन्नभूतोंका अपरिच्छिन्नब्रह्मकेसाथि सर्वओरतैंसंयोग बनैनहीं ।। तैसेएकदेशकरिकै संयोगहै यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ सावयवहोवैं हैं तिनपदार्थोंकाही आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहोवैहै ॥ जैसे वृक्ष वानर दोनोंका आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ और ब्रह्मतौ निरवयवहै ॥ यातैं तानिरवयवब्रह्मका तथातिनभूतोंका एकदेशकरिकैभी संयोगसंभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेआकाशादिकभूत समवायसंबंधकरिकैरहैं हैं यहद्वितीयपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीका तथाजातिव्यक्तिका तथाअवयवी अवयवकाही वादियों नैं समवायसंबंध अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोइहां तिनभूतोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव तथाजातिव्यक्तिभाव तथाअवयवीअवयवभाव हैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे तिनभूतोंकी समवायसंबंधकरिकैभीस्थिति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेभूत तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैं हैं यहतीसरापक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौ सत् चित् आनंद परिपूर्ण स्वरूपहै ॥ औरते आकाशादिकभूततौ असत् जड दुःख परिच्छिन्नस्वरूप हैं ॥ ऐसे विरुद्धस्वभाववाले तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे तादात्म्यसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे अध्यासरूपकल्पितसंबंधही अंगीकारकरणाहोवैगा सोतौ हमारेकूंभी इष्टहै ॥ काहेतैं जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ अध्यस्तहोवैहै सोकल्पितपदार्थ तिसअधिष्ठानविषे

टीका। हे अर्जुन! जैसे आकाशविषे स्थितसूर्यविषे जलकेचलनादिकविकार कल्पितहोवैं हैं तैसे मैंपरमेश्वरविषे कल्पित जेयहसर्वभूतहैं तेसर्वभूत वास्तवतैं मैंपरमेश्वरविषेहैं नहीं ॥ हे अर्जुन! तूं इसप्राकृतमनुष्यबुद्धिकूं परित्यागकरिकै सूक्ष्मविचारदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरके इसयोगऐश्वर्यकूं देख अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध मायावीपुरुषका अघटितअर्थके बनावणेकीचातुर्यतारूपप्रभावहै तैसे महामायावीरूप मैंपरमेश्वरके इस अघटितअर्थके बनावणेकी चातुर्यतारूपप्रभावकूं तूं देख ॥ जो मैंपरमेश्वर वास्तवतैं किसीवस्तुका आधेयरूपभीनहींहूं ॥ तथा किसीवस्तुका आधाररूपभी नहीं हूं ॥ तौभीमैंपरमेश्वर इनसर्वभूतोंविषेस्थितहूं तथा मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वभूतस्थितहैं ॥ यह मैंपरमेश्वरकी एकमहान्मायाहै ॥ हे अर्जुन! मैंपरमेश्वरका जोसच्चिदानंदघनएकरस परमार्थस्वरूपहै सोहमारास्वरूपही भूतभृत्‌है ॥ अर्थात् सोहमारास्वरूपहीउपादानकारणतारूपकरिकै तिनसर्वकार्यरूपभूतोंकूं धारणकरै है ॥ तथापोषणकरै है यातैं सोहमारास्वरूप भूतभृत् कह्याजावैहै ॥ और सोहमारास्वरूपही कर्त्तारूपकरिकै तिनसर्व भूतोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ यातैं सोहमारास्वरूप भूतभावन कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार तिन सर्वभूतोंका उपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूपहुआभी सोहमारा सच्चिदानंदस्वरूपवास्तवतैं असंगअद्वितीयस्वरूपहोणेतैं तिनभूतोंविषेस्थितहैनहीं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष वास्तवतैं तिनकल्पितस्वप्नपदार्थोंका संबंधीहोवैनहीं तैसे सोहमारास्वरूपभी वास्तवतैं इनकल्पितभूतोंकासंबंधीहोवैनहीं ॥ इहां (ममआत्मा) इस वचनविषे जोषष्ठीविभक्तिहै सोभेदकी कल्पनाकरिकैहै ॥ जैसे राहोःशिरः इसवचनविषे राहुशिरकेअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥५॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्‌नैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ जो मैंपरमेश्वरका तथाइनसर्वभूतोंका वास्तवतैंकोईभीसंबंधहै नहीं तौभी मैंपरमेश्वर इनभूतोंविषे स्थितहूं ॥ तथा यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषे स्थितहैं ॥ इसभगवान्‌केकहणेविषे अर्जुनकी यहशंका प्राप्तभई ॥ जो आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका वास्तवतैं कोईसंबंधनहीं है तो आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका परस्पर आधारआधेयभाव कैसेहोवैगा ऐसीअर्जुनकीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् वास्तवतैं परस्परसंबंधतैंरहितपदार्थोंकेभी आधारआधेयभावकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै कथनकरै हैं।

(मू. श्लो.) यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान्॥तथासर्वाणिभूतानिमत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥ यथा। आकाशस्थितः। नित्यम्। वायुः। सर्वत्रगः। महान्। तथा। सर्वाणि। भूतानि। मत्स्थानि। इति। उपधारय ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! जैसे सर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्‌परिमाणवाला तथासदा चलनस्वभाववालावायु आकाशविषेस्थितहै तैसें यहसर्व भूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं इसप्रकार तूं निश्चयकर ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! भूतभौतिकरूप तथातिनभूतभौतिकोंकाभीकारणरूप जितनाकयह दृश्यजगत्है जोजगत् मैंपरमेश्वरकेअज्ञानकरिकैकल्पितहै सोयहसर्वजगत् मैंअधिष्ठानरूप तथापरमार्थसत्स्वरूप परमेश्वरतैं सत्‌रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकर्‍याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जे सर्प दंड जलधारा माला आदिक हैं तेसर्पादिक तारज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणे इदम्‌अंशकरिकै व्याप्तकियेहैं ॥ तैसे मैंअधिष्ठानरूप परमेश्वरनैं आपणेसत्ता स्फुरणकरिकै यहसर्वजगत् व्याप्तकर्‍याहै ॥ शंका—हे भगवन् ! हमारेरथविषेस्थित जो वसुदेवकेपुत्र आपहो सोआप परिच्छिन्नहो ॥ ऐसेपरिच्छिन्न आपनैं यहसर्वजगत् कैसेव्याप्तकर्‍याहै किंतु नहींव्याप्तकर्‍याहै ॥ जिसकारणतैं इसआपकेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाविरोधहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (अव्यक्तमूर्तिनाइति) तहांनेत्रादिककरणोंका नहींविषयहै स्वप्रकाशअद्वितीयसत्‌चित् आनंदरूपमूर्तिजिसकी ताकानाम अव्यक्त मूर्ति है ॥ ऐसेअव्यक्तमूर्तिरूप मैंपरमेश्वरनैं नहीं यहसर्वजगत् व्याप्तकर्‍याहै ॥ और जिसहमारेइसस्थूलशरीरकूंतूं मांसमयनेत्रोंकरिकै देखताहै इसशरीरकरिकै हमनैं कोईसर्वजगत् व्याप्तकर्‍यानहीं ॥ यातैं हमारेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणका विरोधहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकर्‍याहै ॥ तिसकारणतैंही यहस्थावरजंगमरूपसर्वभूत मैंपरमेश्वरकेसत्तास्फुरणरूपकरिकै तत्कीन्याईं तथास्फुरणकीन्याईं स्थितहै ॥ तथापि मैं परमेश्वर तिनकल्पितभूतोंविषे वास्तवतैं स्थितनहींहूं काहेतैं अकल्पितरूपजोमैंपरमेश्वरहूं तथाकल्पितरूपजो यहभूतहैं तिनदोनोंका कोईसंबंधही संभवतानहीं ॥ संबंधतैंविना तिनभूतोंविषे वास्तवतैं हमारीस्थिति संभवतीनहीं ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुषोंनैं यहवचनकह्याहै ॥ (यत्रयदध्यस्तंतत्कृतेनगुणेनदोषेणवाऽणुमात्रेणापिनससंबध्यते) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिष्ठानविषे जोवस्तु कल्पितहोवैहै तिसकल्पितवस्तुकृत गुणकेसाथि अथवा दोषकेसाथिअधिष्ठान किंचित्‌मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! सर्वविकारोंतैंरहित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसेजोआप परब्रह्महो तिसआपकी तिनभूतोंविषे वास्तवतैं स्थिति मतहोवौ ॥ परंतु तेसर्वभूततौ आपपरमेश्वरविषे वास्तवतैंही स्थितहोवैंगे ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ।

(मू. श्लो.) नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ॥ ५ ॥ न । च । मत्स्थानि । भूतानि । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् । भूतभृत् । न । च । भूतस्थः । मम । आत्मा । भूतभावनः॥५॥इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन ! यहसर्वभूतमैंपरमेश्वरविषेस्थित नहींहैं मैंपरमेश्वरके इसअद्भुत प्रभावकूं तूं देख जोमैंपरमेश्वरका सच्चिदानंदस्वरूप भूतोंकूंधारणकरता हुआ तथाभूतोंकूंउत्पन्नकरताहुआ भी तिनभूतोंविषेस्थित नहींहै ॥ ५॥ इतिपदार्थः ॥

(मू. श्लो.) अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप ॥ अप्राप्यमांनिवर्त्ततेमृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ अश्रद्दधानाः । पुरुषाः । धर्मस्य । अस्य । परंतप । अप्राप्य । मां । निवर्त्तते । मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इस आत्मज्ञानरूप धर्मकी श्रद्धातैंरहित पुरुष मैंपरमेश्वरकूं नप्राप्तहोइकै मृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे निरंतरभ्रमणकरैं हैं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहआत्मज्ञान यद्यपि संपादनकरणेकं अत्यंतसुगमहै तथासर्वतैंउत्कृष्टहै तथामहान्फलकाहेतुहै तथापिइसआत्मज्ञानविषे जोसर्वप्राणियोंकीप्रवृत्तिनहींहोती ताकेविषे इनप्राणियोंकीअश्रद्धाही कारणहै हे अर्जुन ! इसआत्मज्ञानरूपधर्मका जो स्वरूपहै तथासाधनहै तथाफलहै ॥ तेतीनों यद्यपि शास्त्रकरिकैप्रतिपादितहैं तथापि तिनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरणेहारे जेपुरुषहैं अर्थात् वेदतैंविरोधी कुत्सितहेतुवोंकेदर्शनकरिकै दूषितअंतःकरणवालेहोणेतैं जेपुरुष ताआत्मज्ञानके स्वरूपसाधनफलकूं अप्रमाणरूपही मानैं हैं तथा जेपुरुष सर्वदा पापकर्मोंकूंही करणेहारेहैं तथा जेपुरुष दंभदर्पादिकआसुरसंपदकूंही धारणकरणेहारेहैं ऐसेश्रद्धाहीन पापात्मापुरुष आपणीबुद्धितैंकल्पनाकरेहुए उपायकरिकै यथाकथंचित् प्रयत्नकरतेहुएभी शास्त्रविहितप्रयत्नकेअभावतैं मैं परमेश्वरकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ तथा मैंपरमेश्वरकीप्राप्तिकेसाधनोंकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ याकारणतैंही तेश्रद्धाहीनपुरुषइसमृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे भ्रमणकरैं हैं अर्थात् तेपुरुष वारंवार कीटपतंगादिक नारकीययोनियोंविषेही भ्रमणकरैं हैं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कहणेवासतै प्रतिज्ञाकऱ्याजो आत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानकी विधिमुखकरिकै तथानिषेधमुखकरिकै स्तुतिकथनकरी ॥ तहां प्रथमदोश्लोकोंकरिकैतौ ताआत्मज्ञानकी विधिमुखकरिकैस्तुतिकरी ॥ और (अश्रद्दधानाःपुरुषाः) इसतृतीयश्लोकरिकैताआत्मज्ञानकी निषेधमुखकरिकैस्तुतिकरी तहां जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जो महान् अनर्थका कथनहै सोकथन तिसवस्तुकी विधिमुखस्तुतिहोवैहै ॥ और जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जोमहान् अर्थकेप्राप्तिका कथनहै सोकथन तिसवस्तुकी निषेधमुखस्तुतिहोवैहै ॥ इसप्रकार तीनश्लोकोंतैं तिसआत्मज्ञानकीस्तुतिकरिकै तिसआत्मज्ञानके अभिमुखकऱ्याजोअर्जुनहै तिसअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् अब दोश्लोकोंकरिकै सोआत्मज्ञान कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ मया । ततम् । इदं । सर्वं । जगत् । अव्यक्तमूर्तिना । मत्स्थानि । सर्वभूतानि । न । च । अहं । तेषु । अवस्थितः ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अव्यक्तमूर्त्तिवाले मैंपरमेश्वरनैं यह सर्व जगत् व्याप्तकऱ्याहै इसकारणतैं यहसर्वभूत मेरेविषेस्थितहै और मैंपरमेश्वरतौ तिनभूतोंविषे नहीं स्थितहूं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

कार विद्वान्लोकोंके साक्षीरूपअनुभवकरिकैसिद्धहुआभी सोआत्मज्ञान स्वधर्मकेप्रतिकूलनहीं है किंतु धर्म्यरूपहै अर्थात् अनेकजन्मोंविषेसंचयकरेहुए निष्कामधर्मका फलरूपहै ॥ शंका—हे भगवन् ! ऐसाआत्मज्ञानअत्यंतदुःखकरिकैसंपादनहोताहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (सुसुखं कर्तुमूइति) हे अर्जुन ! ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कृपाकरिकै प्राप्तकन्याजोविचारहै सोविचारहैसहकारीजिसका ऐसाजो तत्त्वमसिआदिक महावाक्यहै तामहावाक्यकरिकै सोतत्त्वज्ञान सुखेनही संपादनकरणेकूंशक्यहै ॥ सोआत्मज्ञान आपणीउत्पत्तिविषे देशकालादिकोंकेव्यवधानकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ काहेतें सोज्ञान केवल वस्तुप्रमाणकेही अधीनहोवैहै ॥ ध्यानकीन्याई सोज्ञान पुरुषकीइच्छाकेअधीनहोतानहीं वस्तुकेसाथि प्रमाणकेसंबंधहुएतैंअनंतर तावस्तुकाज्ञान अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकार विनाही आयासतैं जोआत्मज्ञानकीसिद्धि अंगीकारकरौगे तौ अल्पआयासकरिकैसाध्यक्रियाका अल्पही फलहोवे है महान्फलहोवैनहीं यातैं तिसआत्मज्ञानकाभी अल्पहीफलहोवैगा महान्फलहोवैगानहीं ॥ जिसकारणतैं महान्आयासकरिकैसाध्यजेकर्म हैं तिन कर्मोंकाही महान्फल देखणेविषेआवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अव्ययमिति) हे अर्जुन ! यहआत्मज्ञान यद्यपि अनायासकरिकैही सिद्ध होवैहै तथापि इसआत्मज्ञानके मोक्षरूपफलकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान अव्ययहै अर्थात् यह आत्मज्ञान मोक्षरूप अक्षयफलवालाहै ॥ यद्यपि अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानविषे अव्ययरूपता संभवतीनहीं तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्रापकताकरिकै ज्ञानकूं सत्यकह्याहै तैसे इहां श्रीभगवाननैंभी मोक्षरूपअव्ययफलकीप्रापकताकरिकै ताज्ञानकूं अव्ययकह्याहै ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म यद्यपिमहान्आयासकरिकैसाध्यहैं तथापि तिनकर्मोंका नाशवान्फलहीहोवै है यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति ॥) अर्थयह ॥ हे गार्गि ! जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूंनजानिकै इसलोकविषे होमकरै है तथायज्ञकरै है तथाबहुतसहस्रवर्षपर्यंत तपकूंकरै है तिसर्वकर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहीप्राप्तिकरैं हैं इसप्रकारतैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानविषे मुमुक्षुजनोंनैं अत्यंतश्रद्धाकरणीयोग्यहै इति ॥ २ ॥ ❀ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकार यहआत्मज्ञान जोकदाचित् अत्यंतसुगम होवै तथासर्व तैं उत्कृष्टहोवै तथामहान्फलकीहेतुहोवै तौ सर्वप्राणी तिसआत्मज्ञानविषे किसवासतैनहीं प्रवृत्तहोते किंतु सर्वप्राणी ताआत्मज्ञानविषेप्रवृत्तहोणेचाहिये ॥ महान्फलवाले सुगमकार्यविषेतौ सर्व लोक स्वभावतैंही प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे सर्वप्राणियोंकीप्रवृत्तिहुए कोईभीप्राणीसंसारीनहींहोवैगा ॥ यातैं संसारमार्गकाही उच्छेदहोवैगा ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं ।

टीका। हे अर्जुन ! यहआत्मज्ञानकैसाहै जितनीक लौकिक तथा शास्त्रीय वियाहैं तिनसर्ववियावोंकाराजाहै अर्थात् तिनसर्ववियावोंतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान कार्यसहित संपूर्णमूलाअवियाका नाशकरणेहाराहै ॥ और इसआत्मज्ञानतैंभिन्न दूसरीजितनीकवियाहैं तेवियातौ संपूर्णमूलाअविया कूंनाशकरतीनहीं किंतुतेविया तिसमूलाअवियाकेकिसीएकदेशकाही विरोधीहोवे हैं ॥ जिसएकदेशकूं शास्त्रविषे मूलाअविया तथाअवस्थाअज्ञान इसनामकरि केकथनकऱ्याहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान ॥ लोकशास्त्रविषे जितनेक गुह्यपदार्थहैं तिनसर्व गुह्यपदार्थोंकाराजाहै अर्थात् तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैंभी अत्यंत गुह्यहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान ॥ अनेकजन्मोंविषेकरेहुए निष्कामपुण्यकर्मोंकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ तापुण्यकर्मतैंरहितजेपुरुष हैं तेपुरुष यद्यपि आपणीबुद्धिके बलतैं अनेकगुह्यपदार्थोंकूंजानैं हैं तथापि इसआत्मज्ञानकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं यातैं यहआत्मज्ञान तिनसर्वगुह्यपदार्थों तैं अत्यंतगुह्यहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान सर्व तैंउत्तम पवित्रहै ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे पापकीनिवृत्ति करणेवासतै जितनेकप्रायश्चित्तकथनकरे हैं तेप्रायश्चित्त इसपुरुषके सर्वपापोंकीनिवृत्तिकरतेनहीं किंतु तेप्रायश्चित्त किसीएकपापकीही निवृत्तिकरैं हैं ॥ ताप्रायश्चित्तकरिकै निवृत्तहुआभी सोएकपाप आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपहोइकैरहैहै ॥ जिसपापवासनातैं यहपुरुषपुनः तिसपापकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं तेप्रायश्चित्त सर्वतैंउत्तमपवित्रनहीं हैं ॥ और यहआत्मज्ञानतौ अनेकसहस्रजन्मोंविषेसंचयकरेहुए तथास्थूल सूक्ष्मअवस्थावाले जितनेक पापहैं तिनसर्वपापोंका तथातिनपापोंकेकारणरूपज्ञानका शीघ्रही नाशकरै है ॥ यातैं यहआत्मज्ञान सर्व तैं उत्तमपवित्रहै अर्थात् शुद्धिकरणेहाराहै ॥ शंका—हे भगवन् ! जैसे अतिइंद्रियधर्मविषे लोकोंकूंसंदेहरहै है तैसे इसज्ञानविषेभी लोकोंकूं संदेहहीरहैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए यहआत्मज्ञान आपणेस्वरूपतैं तथाफलतैं प्रत्यक्षही है इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं (प्रत्यक्षावगममिति) तहां (अवगम्यतेअनेनेत्यवगमोमानम्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकैवस्तुजानीजावैहै ताकानाम अवगमहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै अवगम यहशब्द प्रमाणकावाचकहै ॥ और (अवगम्यते प्राप्यतेइत्यवगमःफलम्) ॥ अर्थयह ॥ अधिकारीपुरुषोंकूं जोप्राप्तहोवै ताकानाम अवगमहै ॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोअवगमशब्द फलवाचकहै ॥ तहां प्रथमअर्थविषेतौ प्रत्यक्षहैअवगम क्या प्रमाण जिसविषे ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिरूपज्ञानविषे स्वरूपतैं साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरेअर्थविषेतौ प्रत्यक्षहैअवगम क्या फल जिसका ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारकेबहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिज्ञानविषे फलतैंभी साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ तहां मैं नें यह वस्तु जान्याहै इसकारणतैं अभी हमारा इसवस्तुविषयकअज्ञान नष्टहुआहै ॥ याप्रकारकासाक्षीरूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ सोयहसाक्षीरूपअनुभव तावृत्तिज्ञानकूंस्वरूपतैं तथाअज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलतैं विषयकरैहै इति ॥ इसप्र

अनेकवार हमनें तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तथा आगेकथनकरणाहै ।। तथा अभीइसअध्यायविषे कथनकऱ्याजावैगा ।। सोज्ञान मैंपरमेश्वर तुम्हारेताईं कथनकरताहूं ।। तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ।। इहां (इदंतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सो तुशब्द पूर्वअध्यायविषेकथनकरेहुए सगुणब्रह्मकेध्यानतैं इसज्ञानविषे विलक्षणताकूंकथनकरै है अर्थात् यहआत्मज्ञानही साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ पूर्वकथनकऱ्याहुआ ध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं काहेतें जैसे आत्मज्ञान अज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै तैसे सोध्यान अज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं यातैं सोध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधननहीं है ॥ किंतु सोध्यान तौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा इसआत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकैही क्रमकरिकै तामोक्षकूंउत्पन्नकरैहै ।। यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषेकहआयेहैं ।। पुनः कैसाहैसोज्ञान गुह्यतमहै अर्थात् अतिरहस्यहोणेतैं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ अब ताज्ञानकीगोप्यताविषे तिसज्ञानका हेतुगर्भितविशेषण कहैं हैं (विज्ञानसहितमिति) हे अर्जुन ! कैसाहैसोज्ञान विज्ञानसहितहै अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअपरोक्षअनुभवपर्यंतहै ।। याकारणतैंही सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ।। ऐसाअतिरहस्यरूपभीयहज्ञान मैंभगवान्वासुदेव तुम्हारेताईं कथनकरताहूं ।। अब ताअर्जुनविषे तिसज्ञानकेउपदेशकरणेकीयोग्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका विशेषण कथनकरैंहैं (अनसूयवेइति) हे अर्जुन ! तूं असूयातैंरहितहै यातैं इसज्ञानकेउपदेशका तूं अधिकारीहै ।। तहां गुणोंविषेदोषदृष्टिकरणी याकानाम असूयाहै ॥ ताअसूयातैं तूंरहितहै अर्थात् यहकृष्णभगवान् हमारेसमीप सर्वदा आपणीऐश्वर्यताकथनकरिकै आपणीहीस्तुतिकरताहै याप्रकारकी असूयातैं तूं रहितहैं ।। इहां असूयातैंरहितपणा दूसरेभी आर्जवसंयमादिकशिष्यकेगुणोंका उपलक्षकहै अर्थात् शिष्यकेसर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तैं अर्जुनकेताईं मैं यहज्ञान उपदेशकरताहूं ।। शंका—हे भगवन् ऐसेज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेकूं कोनफलहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) हे अर्जुन ! जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं शीघ्रही इससर्वदुःखोंकेकारणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवैगा इति ।। १ ।। ❀ ।। अब तिसआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकीअभिमुखता करावणेवासतै श्रीभगवान्पुनः तिसज्ञानकीस्तुतिकरैं हैं ।

(मू॰ श्लो॰) राजविद्याराजगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमम्॥ प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्त्तुमव्ययम् ॥ २ ॥ राजविद्या । राजगुह्यम् । पवित्रम् । इदम् । उत्तमम् । प्रत्यक्षावगमम् । धर्म्यं । सुसुखम्।कर्त्तुम्।अव्ययम्॥२॥इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन ! यहआत्मज्ञान सर्वविद्यावोंकाराजाहै तथासर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै तथासर्वतैंउत्तम पवित्रहै तथाप्रत्यक्षहैप्रमाणजिसविषे तथासर्वधर्मकाफलरूपहै तथासुखपूर्वक ही करणेकूंशक्यहै तथाअक्षयफलवालाहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

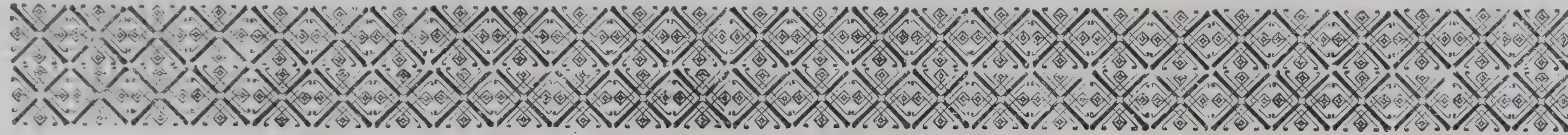
ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नवमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्वअष्टमअध्यायविषे यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यानाडीहै गमनकाद्वारजिसविषे तथा हृदय कंठ भ्रुवोंकामध्यह इत्यादिकस्थानोंविषे प्राणोंकीधारणाहै जिसविषे तथा सर्व इंद्रियद्वारोंका संयमरूपगुणहैजिसविषे ऐसाजोयोगहै तायोगकरिकै आपणीइच्छापूर्वक इसशरीरतैं उत्क्रमणकूंप्राप्तहुएहैं प्राणजिसके तथाअर्चिरादिमार्ग करिकै ब्रह्मलोकविषेप्राप्तिहुईहै जिसकी ऐसाजोउपासकपुरुषहै जिसउपासकपुरुषकूंताब्रह्मलोकविषे दिव्यभोगों केभोगतैंअनंतर ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै ताक ल्पकेअंतविषे परब्रह्मकीप्राप्तिरूप क्रममुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ।। यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषे कथनकरीथी ।। ताकेविषे पूर्व यहशंकाप्राप्तभईथी जो इसअधिकारी पुरुषकूं इसपूर्वउक्तप्रकारतैंही मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अथवा किसीअन्यप्रकारतैंभी मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुये ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान्‌कावास्तवस्वरूपकेविज्ञानतैं इहांही साक्षा त्मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ तहां तिससाक्षात्मोक्षकीप्राप्तिविषे अनन्यभगवत्भक्तिही असाधारणकारणहै ।। यहवार्त्ताभी (पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्य स्त्वनन्यया) इसवचनकरिकैकथनकरीथी ।। इत्यादिकसर्ववार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषेनिरूपणकरीथी ।। तहां पूर्वउक्तधारणापूर्वकप्राणोंकाउत्क्रमण तथा अर्चिरादि मार्गविषेमन तथाबहुतकालकाविलंब इत्यादिकक्लेशों तैविनाहीसाक्षात्मोक्षकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्‌केवास्तवरूपका तथाताकेभक्तिका विस्तारतैंनिरूपणकरणेवा स्तै इसनवमअध्यायका प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्वअष्टमध्यायविषेतौ ध्येयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ताध्येयब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुषोंकीगति कथनकरी ।। अब इस नवमअध्यायविषे ज्ञेयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ज्ञाननिष्ठपुरुषोंकीगति कथनकरीतीहै ॥ तहां वक्ष्यमाणज्ञानकीस्तुतिवासतै श्रीभगवान्‌नैं प्रथम यहतीनश्लोक कथनकरीतेहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ॥ ज्ञानंविज्ञानसहितंयज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥ इदं । तु । ते । गुह्यतमम् । प्रवक्ष्यामि । अनसूयवे । ज्ञानं । विज्ञानसहितम् । यत् । ज्ञात्वा । मोक्ष्यसे । अशुभात् ॥१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! असूयातेंरहितैंअर्जुनकेताई मैं यह अत्यंत गुह्य तथाविज्ञानसहित ज्ञान कथनकरताहूं जिसज्ञानकूं प्राप्तहोइके तूं संसारबंधनतें मुक्तहोवैगाः ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! केवलमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिकैजन्य तथाप्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोमैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै जोज्ञान पूर्वभी

वान् कहैं है ॥ (परंस्थानमुपैतिचाद्यम्) हेअर्जुन ! सोध्यानपरायणपुरुष केवल तिनस्वर्गादिकफलोंकाहीं अतिक्रमणनहींकरैंहै किंतु सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वकाकारणरूपजो ईश्वरसंबंधीस्थानहै तिसस्थानकूंभी प्राप्तहोवै है अर्थात् सोध्यानानिष्ठउपासकपुरुष सर्वकेकारणरूपब्रह्मकूंभी प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां इसअष्टमअध्याय करिकै श्रीभगवान्ने ध्येयत्वरूपकारिकै तत्पदार्थका निरूपणकऱ्या इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायामष्टमोध्यायःसमाप्तः ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



काध्यानरूपयोग अपुनरावृत्तिरूपफलकीही प्राप्तिकरणेहाराहै ।। तिसकारणतैं तूंअर्जुन तिसअपुनरावृत्तिफलवासतैं तिसयोगकर्रिके युक्तहोउ अर्थात् समाहित चित्तवालाहोउ इति ।। २७ ।। ❀ ।। अबताध्यानरूपयोगविषे अधिकारीजनोंकेश्रद्धाकीवृद्धिकरावणेवासतै श्रीभगवान् पुनः तायोगकीस्तुतिकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) वेदेषुयज्ञेषुतपः सुचैवदानेषुयत्पुण्यफलंप्रदिष्टम् ॥ अत्येतितत्सर्वमिदंविदित्वायोगीपरंस्थानमुपैतिचाद्यम् ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमहापुरुषयोगोनामाष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८॥ वेदेषु । यज्ञेषु । तपःसु । च । एव । दानेषु । यत् । पुण्यफलम् । प्रदिष्टम् । अत्येति । तत् । सर्वम् । इदम् । विदित्वा । योगी । परम् । उपैति । च । आद्यम् ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! वेदोंविषे तथायज्ञोंविषे तथा तपोंविषे तथा दानोंविषे जो पुण्यकास्वर्गादिकफलशास्त्रनैं कथनकऱ्याहै तिस सर्वकूं सोध्याननिष्ठपुरुष इसपूर्वअर्थकूं जानिके अतिक्रमणकरै है तथा सर्व तैं उत्कृष्ट कारणरूप स्थानकूंभी प्राप्तहोवै है ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वेदों केअध्ययनकालविषे शास्त्रनैं जेब्रह्मचर्यादिकनियमकथनकरे हैं तिननियमोंकेपालनपूर्वक व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित अध्ययनकरे जेऋगादिकवेदहैं तिनवेदोंकेअध्ययनकियेहुए ताअध्ययनकरतापुरुषकूं शास्त्रनैंजोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै और अंगउपअंगोंसहित तथाश्रद्धा पूर्वक सम्यक्अनुष्ठानकरेहुए जे अश्वमेधादिकयज्ञहैं तिनयज्ञोंकेकियेहुए तिनयज्ञकरतापुरुषकूं शास्त्रतैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ।। और मन बुद्धिआदिकोंकीएकाग्रताकर्रिके श्रद्धापूर्वक करेहुएजेशास्त्रविहित कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं तिनतपोंकेकियेहुए तिसतपकरतापुरुषकूं शास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै और उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेताई शास्त्रकीविधिपूर्वक तथा श्रद्धापूर्वक गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानहै ।। तादानकेकियेहुए तिसदानकरतापुरुषकूं शास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै अर्थात् सार्वभौमकेसुखतैंआदिलैके विराट्लोककेसुखपर्यंत जितनाक तैत्तिरीयश्रुतिनैं शतशतगुणा अधिकसुख कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्वपुण्यके सुखरूपफलोंकूं सोध्यानपरायणपुरुष अतिक्रमणकरे है ॥ किसअर्थकूं जानिकर्रिके अतिक्रमणकरै है ॥ ऐसीअर्जुन कीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहैहैं (इदंविदित्वाइति) हे अर्जुन ! इसअष्टमअध्यायविषे पूर्वउक्तसप्तप्रश्नोंकेनिरूपणद्वारा कथनकऱ्याजोअर्थ है तिससर्वअर्थकूं सम्यक्निश्चयकर्रिके तथाश्रद्धापूर्वक तिसअर्थकाअनुष्ठानकर्रिके सोसगुणब्रह्मकेध्यानपरायणउपासकपुरुष तिनसर्व पुण्यकर्मोंकेफलोंकूं अतिक्रमणकरै है ॥ शंका— हे भगवन् ! सोउपासकपुरुष केवल तिनपुण्यकर्मों केफलोंकूंही अतिक्रमणकरै है ॥ अथवा तिसकूं कोईदूसराभीफल प्राप्तहोवै है॥ऐसीअर्जनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभग

त्के अनादिसिद्धहैं अर्थात् यहसंसार प्रवाहरूपकरिकैअनादिहै ।। यातैं तासंसारविषेवर्त्तणेहारे तेदोनोंमार्गभी अनादिही हैं ।। यद्यपि जगत् यहशब्द प्राणीमात्रकावाचकहै तथापि इहां जगत्शब्दकरिकै सगुणविद्याकेअधिकारी तथाकर्मोंकेअधिकारी जेशास्त्रज्ञमनुष्यहैं तिनोंकाहीग्रहणकरणा प्राणीमात्रकाग्रहण करणानहीं काहेतैं तेदोनोंमार्ग सर्वप्राणिमात्रकूं प्राप्तहोतेनहीं किंतु केवल उपासककर्मीपुरुषोंकूंही प्राप्तहोते हैं ।। कर्मउपासनातैंरहित पापात्माअज्ञानीपुरुषोंकूंतौ अधोगतिकूंप्राप्तकरणेहारा तृतीयस्थाननामा मार्गही प्राप्तहोवै है ।। यातैं इहांजगत्शब्दकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंकाही ग्रहणकरणाउचित है इति ।। हे अर्जुन ! तिनदोनोंमार्गोंविषे प्रथम देवयानरूपशुक्लमार्गकरिकै ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषोंविषेकेईकउपासकपुरुष अनावृत्तिकूंही प्राप्तहोवैं हैं ।। तहांश्रुति ।। (नचपुनरावर्त्तते इति) ।। अर्थयह ।। सोक्रममुक्तिवाला उपासकपुरुष पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोतानहीं इति ।। और दूसरे पितृयाणनामा कृष्णमार्गकरिकै स्वर्गविषेप्राप्तहुए कर्मीपुरुषतौ सर्वही पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ।। तहांश्रुति ।। (प्राप्यांतंकर्मणस्तस्य यत्किंचेहकरोत्ययम् ।। तस्माल्लोकात्पुनरेति अस्मै लोकायकर्मणे) ।। अर्थयह ।। यहपुरुष इसमनुष्यलोकविषे जोजोपुण्यकर्मकरै है तिसपुण्यकर्म केवशतैं स्वर्गलोकविषेजाइके तिस पुण्यकर्मोंकूंभोगतैंनाशकरिकै तिसलोकतैं पुनः इसमनुष्यलोककीप्राप्तिवासतै आवै है इति ॥ २६ ॥ ❀ ।। तहांजैसे सगुणब्रह्मकीउपासना ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकाकारणहै तैसे तादेवयान मार्गकाचिंतनभी कारणहै ।। यातैं तामार्गकीउपासनाकरावणेवासतै श्रीभगवान् तामार्ग केज्ञानकीस्तुतिकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नैतेसृतीपार्थजानन्योगीमुह्यतिकश्चन ॥ तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोगयुक्तोभवार्जुन ॥ २७ ॥ न । एते । सृती । पार्थ । जानन् । योगी । मुह्यति । कश्चन । तस्मात् । सर्वेषु । कालेषु । योगयुक्तः । भव । अर्जुन ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे पार्थ इनपूर्वउक्त दोनोंमार्गोंकूं जानताहुआ कोईभी ध्यानपरायणपुरुष नहीं मोहकूंप्राप्त होवै है तिसकारणतैं हेअर्जुन सर्व कालविषे तूं ध्यानपरायण होउ ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहदेवयाननामा शुक्लमार्गतौ क्रममुक्तिकीही प्राप्तिकरणेहाराहै ।। और यहपितृयाणनामा कृष्णमार्गतौ पुनःसंसारकीही प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याप्रकारतैं इनदोनोंमार्गोंकूंजानणेहारा सगुणब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुष कोईभी मोहकूंप्राप्तहोतानहीं अर्थात् तापितृयाणमार्गकीप्राप्तिकरणेहारे जोइष्टपूर्त्तकर्म हैं तेकर्मही हमारेकूंकर्त्तव्यहैं अन्यकछुकर्तव्यहैनहीं याप्रकारतैं केवल तिनकर्मोंकूंही कर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरतानहीं ।। हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोसगुणब्रह्म

वैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर आकाशकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तास्वर्गनामा चंद्रलोकविषे पुण्यकर्मोंके भोगकालपर्यंतनिवास करिके पश्चात परिशेषतैं रहेहुए पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं पुनः तिसमार्गद्वारा निवृत्तहोवैं हैं इति ॥ इहांश्रीभगवान्नैंधूमकाअभिमानीदेवता रात्रिकाअभिमानीदेवता कृष्णपक्षकाअभिमानीदेवता दक्षिणायनकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताही कथनकरेहैं ॥ पितृलोककाअभिमानीदेवता आकाशकाअभिमानीदेवता चंद्रमादेवता यहतीनदेवता कथनकरेनहीं ॥ तौभी इसश्रुतिकेअनुसार तेतीनोंदेवताभी इहां ग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार धूमकेअभिमानीदेवतातैं आदिलैके चंद्रमा देवतापर्यंत कथन करेहुए सर्वदेवता जिसमार्गविषेस्थितहैं तिसपितृयाणमार्गविषे गमनकरणेहारे इष्ट पूर्त्त दत्त इनतीनप्रकारकेकर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुष ताचंद्रलोकविषे चंद्रमातैं प्राप्तहुये तिनकर्मोंकेसुखरूपफलकूंप्राप्तहोइकै तिनकर्मोंकेक्षयतैंअनंतर पुनः इसमनुष्यलोकविषे आवृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं इसपितृयाणनामा आवृत्तिकेमार्गतैं सोदे वयाननामा अनावृत्तिकामार्ग अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ इहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम इष्टकर्म है ॥ और वापी कूप तालाब धर्मशाला इत्यादिककर्मोंकानाम पूर्तकर्म है ॥ और सुपात्रकेप्रति गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरणा याकानाम दत्तकर्म है ॥ इनतीनप्रकारकेकर्मोंकास्वरूप पूर्वभी विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥

अब इनपूर्वउक्तदोनोंमार्गोंका उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) शुक्लकृष्णेगतीह्येतेजगतःशाश्वतेमते ॥ एकयायात्यनावृत्तिमन्ययावर्त्ततेपुनः ॥ २६ ॥ शुक्लकृष्णे । गती । हि । एते । जगतः । शाश्वते । मते । एकया । याति । अनावृत्तिम् । अन्यया । आवर्त्तते । पुनः ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! इनलोकोंके यह प्रसिद्ध शुक्लकृष्ण दोनों मार्ग अनादिकसिद्धहैं तिनदोनोंमार्गोंविषे एकशुक्लमार्गकरिकैतो कोई उपासकपुरुष अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं और दूसरेकृष्णमार्गकरिकैतो सर्वहीजन पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! पूर्व ब्रह्मलोककेप्राप्तिका मार्गरूपकरिकैकथनकऱ्याजो देवयानमार्ग है सोदेवयान मार्ग ज्ञानरूपप्रकाशकीअधिकतावाले अग्निआदिकदेवतावोंकरिके युक्तहै ॥ तथाप्रकाशरूप सगुणब्रह्मविद्याकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा प्रकाशमयलोकभी तिसमार्गविषे बहुतैहैं ॥ तथा स्वप्रकाशब्रह्मकेप्राप्तिकाहेतु होणेतैं उत्कृष्टहै ॥ तथाज्ञानरूपप्रकाशमयहै ॥ याकारणतैं सोदेवयानमार्ग शुक्ल इसनामकरिकै कह्याजावै है ॥ और पूर्व स्वर्गलोककेप्राप्तिका मार्गरूपकरिकै कथनकऱ्याजो पितृयाणमार्ग है सोपितृयाणमार्गतौ ज्ञानरूपप्रकाशतैंरहितहोणेतैं तमोमयहै ॥ तथा अप्रकाशरूप धूमरात्रिआदिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पुनःसंसारकाहेतुहोणेतैं निकृष्टहै ॥ याकारणतैं सोपितृयाणमार्ग कृष्ण इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार शुक्लकृष्णनामकरिकैप्रसिद्ध यहपूर्वउक्तदोनोंमार्ग इसजग

वोंका इहांग्रहणकरणा इति ॥ जिसमार्गविषे यहअग्नितैंआदिलैकेप्रजापतिपर्यंत सर्वदेवता स्थितहैं तिसदेवयानमार्गविषे गमनकरणेहारे सगुणब्रह्मकेउपासक जन तिसहिरण्यगर्भरूप सगुणब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिससगुणब्रह्मद्वाराही तेउपासकपुरुष निर्गुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यहवार्ता (कार्यबादरिरस्यगत्युपपत्तेः) इससूत्रविषे भगवान्भाष्यकारोंनें विस्तारतैं कथनकरी है ॥ इहां (एतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्तनावर्तन्ते) इसश्रुतिविषे इमं यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ ताविशेषणनैं यहअर्थ प्रतीतहोवै है ॥ इसकल्पतैंअनंतर दूसरेकल्पविषे केईकपंचाग्निविद्यावाले उपासकपुरुष तिसब्रह्मलोकतैं पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिनोंकीही श्रीभगवाननैं (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनः) इसवचनकरिकैआवृत्ति कथनकरी है इसीकारणतैंही इहां श्रीभगवान्नैंउक्तमार्गका श्रुतिप्रतिपादितमार्गकेकथन करिकैही व्याख्यानकऱ्याहै ॥ इसदेवयानमार्गका विस्तारतैंकथनतौ आत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे प्रसिद्धहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अबइसपूर्वउक्तदेवयानमार्गकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् पितृयाणमार्गकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मासादक्षिणायनम् ॥ तत्रचांद्रमसंज्योतिर्योगीप्राप्यनिवर्त्तते ॥ २५ ॥ धूमः । रात्रिः । तथा । कृष्णः । षण्मासाः । दक्षिणायनम् । तत्र । चांद्रमसम् । ज्योतिः । योगी । प्राप्य । निवर्तते ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! जिसमार्गविषे धूम तथारात्रि तथा कृष्णपक्ष तथाषट्मासरूप दक्षिणायन इत्यादिकस्थितहैं तिसमार्गविषे गमनकरणेहारे कर्मीपुरुष चंद्रमातैंप्राप्तहुए कर्मकेफलकूं प्राप्तहोइकै पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जिसपितृयाणमार्गविषे प्रथम धूम स्थितहै तिसतैंअनंतर रात्रि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्षस्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायन स्थितहै ॥ इहांभी (धूमः) इसशब्दकरिकै धूमकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (रात्रिः) इसशब्दकरिकै रात्रिकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (कृष्णः) इसशब्दकरिकै कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (षण्मासादक्षिणायनम्) इसवचनकरिकै षट्मासरूपदक्षिणायनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ इहांभी यहकथनकरेहुए धूमादिकच्यारिदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेवतावोंकेभी उपलक्षकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तेधूममभिसंभवंतिधूमाद्रात्रिंरात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्दक्षिणेतिमासांस्तान्मासेभ्यः) पितृलोकंपितृलोकादाकाशमाकाशाच्चंद्रमसंतस्मिन्यावत्संपातमुषित्वाथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्त्तन्तेइति) ॥ अर्थयह ॥ तेकर्मीपुरुष प्रथम धूमकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैं हैं तिसतैंअनंतर रात्रिकेअभिमानी देवताकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं। तिसतैंअनंतर पितृलोककेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहो

टीका। हे अर्जुन! जिसदेवयानमार्गविषे प्रथमज्योतिरूपअग्नि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर दिवसस्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर शुक्लपक्ष स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायणस्थितहै ॥ इहां (अग्निर्ज्योतिः) इसशब्दकरिकै अग्निकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ इसीअग्निकूं श्रुतिविषेआर्चिः यानामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और (अहः) इसशब्दकरिकै दिनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (शुक्लः) इसपदकरिकै शुक्लपक्षकेअभिमानीदेवताका ग्रहण करणा ॥ और (षण्मासाउत्तरायणम्) इसवचनकरिकै षट्मासरूपउत्तरायणकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ यहकथनकरेहुएदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेवताओंकेभी उपलक्षकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तेऽर्चिरभिसंभवंत्यर्चिषोऽहरह्नआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षायान्षडुदङ्ङेतिमासांस्तान्मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादादित्यमादित्याच्चंद्रमसंचंद्रमसोविद्युतंतत्पुरुषोऽमानवः सएतान्ब्रह्मगमयत्येषदेवपथोब्रह्मपथएतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्तंनावर्त्तंतेइति ॥ अर्थयह ॥ तेउपासकपुरुष प्रथम अर्चिकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर दिनकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर शुक्लपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायणकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर संवत्सरकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर आदित्यकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर विद्युतकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तहां अमानवपुरुष आइकै इनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे लेजावै है ॥ इसीकानाम देवमार्ग है तथाब्रह्ममार्ग है ॥ इसदेवयानमार्गकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुए यहउपासकपुरुष इसमानवआवर्त्तकूं नहींप्राप्तहोवैं हैं इति ॥ तहां इस श्रुतिविषे दूसरी श्रुतिकेअनुसार संवत्सरतैंअनंतर देवलोकदेवता तिसतैंअनंतर वायुदेवता तिसतैंअनंतर आदित्यदेवताका ग्रहणकरणा ॥ तथा विद्युतकेअनंतर वरुण इंद्र प्रजापति इनतीनों देवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार श्रीभाष्यकारों ने निर्णयकऱ्याहै ॥ तहां तिसउपासकपुरुषकूं प्रथमतौ अग्निदेवतालेजावैं हैं ॥ ताअग्निलोकतैं दिनकाअभिमानीदेवता आपणेलोकविषेलेजावैहै ॥ यहरीति आगेभीजानलेणी ॥ और विद्युतलोकविषे ब्रह्मलोकवासीअमानवपुरुष आइकै ताउपासकपुरुषकूं वरुणलोकविषे लेजावैहै ॥ ताउपासक तथाअमानवपुरुष दोनों केसाथि विद्युतकाअभिमानीदेवता तावरुणलोकपर्यंत जावैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोवरुणदेवता तिनदोनों केसाथि इंद्रलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्रदेवता तिनदोनों केसाथि प्रजापतिकेलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर प्रजापतिकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेकासामर्थ्य हैनहीं ॥ यातैं केवलअमानवपुरुषही ताउपासककूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ इहां प्रजापतिशब्दकरिकैविराट्काग्रहणकरणा इति ॥ तहां श्रीभगवाननैंतो अग्निकाअभिमानीदेवता दिनकाअभिमानीदेवता शुक्लपक्षकाअभिमानीदेवता उत्तरायणकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताही इहां कथनकरेहैं संवत्सर देवलोक वायु आदित्य चंद्रमा विद्युत वरुण इंद्र प्रजापति यहसर्व देवता इहांकथनकरेनहीं ॥ तौभी ताश्रुतिकेअनुसार तिनसर्व देवता

यद्यपि देवयानमार्गविषे जाणेहारे उपासकपुरुषभी पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यहवार्त्ता (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन) इसवचनविषे पूर्वकथनकरीहै ॥ तथापि पितृयानमार्गविषे जाणेहारे जितनेककर्मीपुरुषहैं तेसर्वकर्मीपुरुष नियमकरिकै आवृत्तिकूंहीप्राप्तहोवैं हैं ॥ कोईभीकर्मीपुरुष तहां क्रममुक्तिकूंप्राप्तहोता नहीं ॥ और देवयानमार्गविषे जाणेहारे जेउपासकपुरुषहैं तिनउपासकों केमध्यविषे यद्यपि केईकउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे भोगोंकूंभोगिकै अंतविषे पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ जैसे पंचाग्निविद्यादिकउपासनाकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएभी तेउपासकपुरुष पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तथापि जेउपासकपुरुष दहरविद्यादिकउपासनावोंकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुयेहैं तेउपासकपुरुषतौ पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं किंतु ब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतविषे क्रममुक्तिकूंही प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुष सर्वही आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ इसीकारणतैंही पितृयाणमार्ग नियमकरिकै आवृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और यहदेवयानमार्गतौ अनावृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ याप्रकारतैं तिसदेवयानमार्गकीस्तुति संभवैहै ॥ यद्यपि तादेवयानमार्गद्वारागयेहुए कितनेकपुरुषोंकी पुनः आवृत्तिहोवैंहै तथापि तादेवयानमार्गद्वारा गयेहुए कितनेकउपासकपुरुषोंकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तादेवयानमार्गविषे अनावृत्तिरूपफलवत्ता संभवैहै ॥ इहां (यत्रकाले तंकालम्) यावचनविषेस्थितजो काल यहशब्दहै ताकालशब्दकी दिनरात्रिआदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षितमार्गविषे जोलक्षणानहींअंगीकारकरिये किंतु ताकालशब्दका ·यहश्रुतमुख्यअर्थही अंगीकारकरिये तौ वक्ष्यमाणश्लोकविषे (अग्निर्ज्योतिर्धूमः) इनशब्दोंकीअनुपपत्तिहोवैगी ॥ जिसकारणतैं इनशब्दोंकेअर्थविषे कालरूपताहैनहीं ॥ तथा स्पष्टमार्ग के वाचकजो वक्ष्यमाण गति सृति यह दोशब्दहैं तिन्होंकीभीअनुपपत्तिहोवैगी ॥ याकारणतैं कालशब्दकी तामार्गविषेलक्षणाअंगीकारकरीहै ॥ और तिनदोनोंमार्गोंविषे कालकेअभिमानी देवताबहुतहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तामार्गकाउपलक्षक कालशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ तहां प्रथमउपासकपुरुषोंके देवयानमार्गकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लःषण्मासाउत्तरायणम् ॥ तत्रप्रयातागच्छंतिब्रह्मब्रह्मविदोजनाः ॥ २४ ॥ अग्निः । ज्योतिः । अहः । शुक्लः । षण्मासाः । उत्तरायणम् । तत्र । प्रयाताः । गच्छंति । ब्रह्म ब्रह्मविदः । जनाः ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसमार्गविषे ज्योतिरूप अग्नि तथादिनं तथाशुक्लपक्ष तथाषट्मासरूप उत्तरायण इत्यादिक स्थितहैं तिसदेवयानमार्गविषे गमनकरणेहारे सगुणब्रह्मकेउपासक जन तिससगुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

और इसजगत्‌विषे जोकोईवस्तु देखणेविषेआवैहै तथाश्रवणकऱ्याजावैहै तिससर्वजगत्‌कूं अंतरबाह्यतैंव्याप्यकरिकैही नारायणस्थितहै इति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतियां तिसपरमात्मादेवकीव्यापकताकूं कथनकरैं हैं ॥ ऐसामैंपरमात्मादेव केवलअनन्यभक्तिकरिकैही प्राप्तहोवूंहूं इहांमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाजा तत्त्वज्ञानहै सोईही तिसपरमात्मादेवकीप्राप्तिहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकीप्राप्तिका परमेश्वरकीअनन्यभक्तिही उपायहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमेश्वरविषे अनन्यभक्तिहै और जैसी परमेश्वरविषे अनन्यभक्तिहै तैसीही गुरुविषेअनन्यभक्तिहै तिसमहात्मापुरुषकूंही यहवेदांतकरिकैप्रतिपादितअर्थ अपरोक्षहोवै है ॥ ताभक्तितैंरहितपुरुषकूं ते अर्थ अपरोक्षहोतेनहीं ॥ यातैं जिज्ञासुजनकूं सापरमेश्वरकीभक्ति अवश्यकर्त्तव्यहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जोसगुणब्रह्मके उपासक तिससगुणब्रह्मकूंप्राप्तहोइके पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं किंतु तहां क्रममुक्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तहां तिससगुणब्रह्मलोकके भोगतैंपूर्व नहींउत्पन्नभयाहै आत्मसाक्षात्कारजिन्होंकूं ऐसेजेउपासकपुरुषहैं तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेवासतै मार्गकीअपेक्षा अवश्यकरिकैरहैहै ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकीन्याईं तिन उपासकपुरुषोंकूं मार्गकीअनपेक्षा नहीं है ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकूं तिसब्रह्मलोककीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान् देवयानमार्गकाकथनकरैं हैं ॥ और पितृयानमार्गका जोइहांकथनकऱ्याहै सो तिसदेवयानमार्गकीस्तुतिवासतैकथनकऱ्याहै ।

(मू. श्लो.) यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्तिंचैवयोगिनः ॥ प्रयातायांतितंकालंवक्ष्यामिभरतर्षभ ॥ २३ ॥ यत्र । काले । तु । अनावृत्तिम् । आवृत्तिम् । च । एव । योगिनः । प्रयाताः । यांति । तम् । कालम् । वक्ष्यामि । भरतर्षभ ॥२३॥ इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! जिसे मार्गविषे जाणेहारे उपासककर्मीपुरुष अनावृत्तिकूं तथा आवृत्तिकूं ही प्राप्तहोवैं हैं तिसे मार्गकूं मैं कथनकरताहूं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसशरीरतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंअनंतर जिसकालविषे जाणेहारे योगीपुरुष अर्थात् दिनरात्रि आदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षितमार्गविषे जाणेहारेयोगीपुरुष अनावृत्तिकूं तथाआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ सोकाल मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं अर्थात् ताकालकेअभिमानीदेवताओंकरिकैउपलक्षित सोअनावृत्तिकामार्ग तथाआवृत्तिकामार्ग मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ इहां (योगिनः) यापदकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंका दोनोंका ग्रहणकरणा ॥ तहां देवयानमार्गविषे जाणे हारे उपासकपुरुषतौ अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं और पितृयानमार्गविषे जाणेहारे कर्मीपुरुषतौ आवृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं

ब्रह्मास्मि इसप्रकार अभेदरूपतैंप्राप्तहोइकै तत्ववेत्तापुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोतेनहीं ।। सोअद्वितीयनिर्गुणही विष्णुका परमपदहै अर्थात् ताविष्णुका वास्तवरूपहै इति ॥ इहां (राहोःशिरःपुरुषस्यचैतन्यम्) इसस्थलविषे जैसे राहुशिरकेअभेदहुएभी तथापुरुषचैतन्यकेअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीभक्तिहै ॥ वास्तवतैं राहुशिरका तथापुरुषचैतन्यका अभेदही है ॥ तैसे (ममधाम) इसवचनविषेभी परमेश्वरके तथासत्तारूपधामके वास्तवतैंअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअक्षरअव्यक्तरूपभावकूं श्रुतियां परमगतिरूपकहैंहैं ॥ सापरमगति मैंपरमेश्वरहीहूं इति ॥ २ १ ॥ ❀ ॥ तहां (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः) इसश्लोककरिकै पूर्वकथनकऱ्याजो भक्तियोगहै सोभक्तियोगही तिसपरमगतिकेप्राप्तिकाउपायहै इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्यस्त्वनन्यया ॥ यस्यांतःस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततम् ॥ २२ ॥ पुरुषः । सः । परः । पार्थ । भक्त्या । लभ्यः । तु । अनन्यया । यस्य । अंतःस्थानि । भूतानि । येन । सर्वम् । इदम् । ततम् ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! सोपूर्वउक्त निरतिशय परमात्मापुरुष अनन्य भक्तिकरिकै ही प्राप्तहोवैहै जिसपुरुषके सर्वभूत अंतर्वर्त्तिहैं तथा जिसे पुरुषनैं यह सर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सोनिरतिशय परमात्मापुरुष मैंहीहूं ॥ ऐसा मैंपरमात्मादेव एकअनन्यभक्तिकरिकैही प्राप्तहोताहूं ॥ तहां मैंपरमेश्वरतैंविना नहींविद्यमानहै अन्यविषय जिसविषे ऐसीजाप्रेमलक्षणाभक्तिहै ताकानाम अनन्यभक्तिहै ॥ सोनिरतिशयपुरुष कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (यस्यांतःस्थानिइति) हे अर्जुन ! जिसकारणपुरुषके यहसर्वकार्यरूपभूत अंतर्वर्ती हैं काहेतें इसलोकविषेभी जोजोकार्यहोवैं हैं सोसोकार्य आपणेउपादानकारणकेही अंतर्वर्तीहोवैं हैं ॥ जैसे घटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणकेही अंतर्वर्त्तिहोवैं हैं तैसे यहसर्वकार्यप्रपंचजिसकारणरूपपुरुषके अंतर्वर्त्ती है ।। इसीकारणतैंही जिसपुरुषनैं यहसर्वकार्यप्रपंचव्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणनैं घटशरावादिकसर्वकार्य व्याप्तकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मात्परंनापरमस्तिकिंचित् यस्मान्नाणीयोनज्यायोस्तिकश्चित् ॥ वृक्षइवस्तब्धोदिवितिष्ठत्येकस्तेनेदंपूर्णंपुरुषेणसर्वम् ॥ यच्चकिंचिज्जगत्यस्मिन्दृश्यतेश्रूयतेपिवा ॥ अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्यनारायणः स्थितः ॥) अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं कोईभीवस्तु पर तथाअपर नहींहै ॥तथाजिसपरमात्मादेवतैं कोइभीवस्तु अत्यंतअणु तथाअत्यंतमहान् नहीं है तथा जोअद्वितीयपरमात्मादेव महान्वृक्षकीन्याईं चलायमानतातैंरहितहै तथा आपणेस्वयंज्योतिःस्वरूपविषेस्थितहै तिसपरमात्मादेवपुरुषनेहीयहसर्वजगत् पूर्णकऱ्याहै ॥

रहेहै ॥ इसप्रकारकाजोसत्तारूपभावहै सोसत्तारूपभाव तिसअव्यक्तनामाहिरण्यगर्भकीन्याईं तिनसर्वभूतोंकेनाशहुएभी नाशहोवैनहीं ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकेउत्पन्नहुभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और सोअव्यक्तनामा हिरण्यगर्भतौआप कार्यरूपहै तथातिनभूतोंकाअभिमानीहै ॥ यातैं तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै तिसहिरण्यगर्भका उत्पत्तिनाश युक्तहै ॥ और तिनभूतोंकानहींअभिमानी है ॥ तथाअकार्यरूप जोसत्तारूप परमात्मादेवहै तिसपरमात्मादेवका तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै उत्पत्तिनाश संभवतानहीं ॥ २० ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तोऽक्षरइत्युक्तस्तमाहुःपरमांगतिम् ॥ यंप्राप्यननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ २१ ॥ अव्यक्तः । अक्षरः । इति । उक्तः । तम् । आहुः । परमाम । गतिम् । यम् । प्राप्य । न । निवर्त्तते । तत् । धाम् । परमम् । मम ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोसत्तारूपभाव इहां अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां परम गति कहैहैं जिससत्तारूपभावकूं प्रांप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः नहीं जन्मकूं प्राप्तहोवैहै सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका सर्वतैंउत्कृष्ट स्वरूपही है ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोसत्तारूपभाव इसगीताशास्त्रविषे इंद्रियोंकाअविषयहोणेतैं अव्यक्त इसनामकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै तथा जोसत्तारूपभाव नाशतैंरहित होणे तैं अथवा सर्वत्रव्यापकहोणेतैं अक्षर इसनामकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै तथा अन्यश्रुतिस्मृतियोंविषेभी अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां परमगतिरूपकहैहैं ॥ इहां (परमाम्) इसशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितस्वप्रकाशपरमानंदरूपका ग्रहणकरणा ॥ और मुमुक्षुजनोंकूं एकआत्माज्ञानकरिकैही जोपुरुषार्थ प्राप्तहोवैहै ताकानाम गतिहै अर्थात् तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूप परमपुरुषार्थरूप कहैहैं ॥ अथवा ब्रह्मलोकपर्यंत जागतिहै सागति कार्यरूपहोणे तैं अपरमाहै ॥ और यहचैतन्यसत्तारूपगतितौ कार्यकारणभावतैंरहितहोणे तैं परमाहै इति ॥ तहांश्रुति ॥ (एषास्यपरमागतिः । पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) ॥ अर्थयह ॥ यहसत्चित्आनंदस्वरूप परमात्मादेवही इसविद्वान्पुरुषकीपरमगतिहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवतैंपरे कोईभीवस्तुनहीं है किंतु सोपरमात्मादेवही सर्वकाअवधिहै तथापरमगतिहै इति ॥ और जिससत्तारूपभावकूं यहअधिकारीजन प्राप्तहोइकै पुनः संसारविषे पतनहोते नहीं अर्थात् पुनःजन्मकूं प्राप्तहोतेनहीं सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका परमधामहै अर्थात् सोसत्तारूपभाव मैंपरिपूर्णविष्णुका सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वउपाधियों तैंरहित वास्तवस्वरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विष्णोःपरमंपदम्) ॥ अर्थयह ॥ जिससत्चित्आनंदस्वरूप अद्वितीयनिर्गुणब्रह्म कूं अहं

लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्याकामकर्म केअधीनप्राणियोंका वारंवार उत्पत्तिविनाश दिखाइकै (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ तीन्श्लोकोंकरिकै उपपादनकऱ्या ॥ अब (मामुपेत्यपुनर्जन्मनविद्यते) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् उपपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) परस्तस्मात्तुभावोन्योऽव्यक्तोव्यक्तात्सनातनः ॥ यःससर्वेषुभूतेषुनश्यत्सुनविनश्यति ॥२०॥ परः । तस्मात् । तु । भावः । अन्यः । अव्यक्तः । अव्यक्तात् । सनातनः । यः । सः । सर्वेषु । भूतेषु । नश्यत्सु । न । विनश्यति ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ! जो सत्तारूपभाव तिसै अव्यक्ततैं परहै तथाअत्यंतविलक्षणहै तथाइंद्रियोंकाअविषयहै । तथानित्यहै सोसत्तारूप भाव सर्व भूतोंकेनाशहुएभी नहीं नाशहोवै है ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वकल्पितप्रपंचविषे अनुस्यूत जोसत्तारूपभावहै सोसत्तारूपभावकैसाहै पूर्वकथनकऱ्याजो चराचरस्थूलप्रपंचकाकारणभूत हिरण्यगर्भनामा अव्यक्तहै तिसअव्यक्ततैंभी परहै अर्थात् ताअव्यक्ततैं व्यतिरिक्तहै अथवा ताअव्यक्ततैं श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोसत्तारूपभावतिसहिरण्यगर्भरूपअव्यक्तकाभी कारणरूपहै ॥ शंका—हे भगवन् ! तिससत्तारूपभावकूं तिसअव्यक्ततैंव्यतिरिक्ताहुयेभी तिसअव्यक्तकीसादृश्यता होवैगी ॥ जैसे गवयकूं गौ तैं व्यतिरिक्ताहुएभी गौकीसादृश्यताहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (अन्यःइति) हे अर्जुन ! सोसत्तारूप तिसअव्यक्ततैं अन्यहै ॥ अर्थात् अत्यंतविलक्षणहै किसीअंशविषेभी ताअव्यक्तकेसदृशनहीं है ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यप्रतिमाअस्ति ॥) अर्थयह ॥ तिससत्तारूप परमात्माकेसदृश कोईभीपदार्थ हैनहीं इति ॥ शंका—हे भगवन् ! ऐसा सत्तारूपभाव सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षक्योंनहींहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अव्यक्तः इति) । हे अर्जुन ! सोसत्तारूपभाव अव्यक्तरूपहै अर्थात् रूपादिकगुणों तैंरहितहोणे तैं चक्षुआदिकइंद्रियोंका अविषयहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचक्षुषापश्यतिकश्चिदेनम् ॥) अर्थयह ॥ इसआत्मादेवकूं चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै कोईभी देखसकतानहीं इति ॥ पुनः कैसाहैसोसत्तारूपभाव सनातनहै अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहितहोणेतैं सर्वदानित्यहै ॥ इहां (तस्मात्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द परित्यागकरणेयोग्य अनित्य अव्यक्ततैं तिससत्तारूपनित्यअव्यक्तविषे ग्राह्यत्वरूपविलक्षणताकूं सूचनकरे है ॥ अथवा सोतुशब्द नैयायिकों नैंकल्पनाकरीहुई जातिरूपसत्ताकीव्यावृत्तिकूं बोधनकरै है ॥ काहेतैं साजातिरूपसत्ता द्रव्य गुण कर्म इनतीनपदार्थोंविषेअनुगतहुईभी सामान्य विशेष समवाय अभाव इनच्यारिपदार्थोंविषेरहैनहीं ॥ और यहचैतन्यरूपसत्तातो सर्वपदार्थोंविषे अनुस्यूतहोइकै

(मू. श्लो.) भूतग्रामःसएवायंभूत्वाभूत्वाप्रलीयते ॥ रात्र्यागमेऽवशःपार्थप्रभवत्यहरागमे ॥ १९ ॥ भूतग्रामः । सः । एव । अयम् । भूत्वा । भूत्वा । प्रलीयते । रात्र्यागमे । अवशः । पार्थ । प्रभवति । अहरागमे ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपूर्वकल्पविषेथा सोई ही यह प्राणियोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोइकै उत्पन्नहोइकै परतंत्रहुआ ब्रह्माके दिनकेआगमनविषेतौ उत्पन्न होवैहै और रात्रिके आगमनविषे लयहोवैहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोस्थावरजंगमभूतोंकासमुदाय पूर्वकल्पविषेस्थितथा सोईही भूतोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ कल्पकल्पविषे अन्य अन्य नवीन भूतोंकासमुदाय उत्पन्नहोवैनहीं काहेतैं जैसे तार्किकअसत्कार्यकीउत्पत्तिकूं अंगीकारकरैं हैं तैसे वेदांतसिद्धांतविषे असत्कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारहैनहीं ॥ जोकदाचित् असत्कीभीउत्पत्तिहोतीहोवै तौ नरशृंगवंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु आपणी उत्पत्तितैंपूर्व आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपकरिकैरहेहुएकार्यकीही कारणसामग्रीके वशतैं पुनःअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ किंवा जोकदाचित् कल्पकल्पविषे अन्यअन्य नवीन प्राणियोंकीउत्पत्ति अंगीकारकरिये तौ पूर्वकल्पकेअंतविषे प्राणियोंनैं करेजेपुण्यपापकर्म हैं तिनकर्मोंका भोगतैंविनाही नाशहोवैगा ॥ और इस कल्पकेआदिविषेउत्पन्नभयेजेप्राणी हैं तिनप्राणियोंकूं पूर्वनहींकरेहुएपुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोग होवैगा ॥ इसीकूंही शास्त्रविषेकृतनाश अकृताभ्यागम कहै हैं ॥ सोआत्मज्ञानतैंरहित पुरुषोंकूं करेहुएकर्मका फलकेभोगतैंविना नाशकहणा तथानकरेहुएकर्मोंकेफलकाभोगकहणा शास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ काहेतैं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ (अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥) अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुषनैंजोशुभ कर्मकर्याहै अथवा अशुभकर्मकर्याहै सोशुभअशुभकर्म अवश्यकरिकैभोग्याजावैहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूंभोगदियेतैंविना सोशुभअशुभकर्म शतकोटिकल्पों करिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ याकारणतैंभी कल्पकल्पविषे नवीनप्राणियोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु पूर्वपूर्वकल्पविषेस्थितप्राणियोंकीही उत्तरउत्तर कल्पविषे उत्पत्तिहोवैहै ॥ किंवा यहवार्त्ता केवलयुक्तिकरिकैहीसिद्धनहींहै किंतु साक्षातश्रुतिभगवतीही इसअर्थकूं कथनकरै है ॥ तहांश्रुति ॥ (सूर्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोस्वरिति ॥) अर्थयह ॥ सूर्य चंद्रमा पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्गइसतैंआदिलेके यहसर्वजगत् जिसप्रकारका पूर्वपूर्वकल्पविषेथा तिसीतिसीप्रकारका उत्तरउत्तरकल्पविषे परमेश्वर रचताभया इति ॥ सोईही यहस्थावर जंगमरूपभूतोंकासमुदाय अविद्याकामकर्मकरिकै परतंत्रहुआ तिसब्रह्माके दिनकेआगमनविषेतौ तिसपूर्वउक्तरूपकारणतैं प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे तिसअव्यक्तरूपकारणविषे

पुरुषकूंभोगिकै सोब्रह्मा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ।। इसप्रकारतैं सोब्रह्माभी कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं अनित्यहीहै ।। यातैंक्रममुक्तितैंरहितपुरुषोंकी तिसब्रह्मलोकतैंपुनरावृत्ति युक्तहीहै ।। और जेइंद्रादिकदेवता तिसब्रह्मातैंभीनीचेहैं तेइंद्रादिकदेवतातौ तिसब्रह्माके एकदिनरूपकालकरिकैही परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेलोकोंतैं इनपुरुषोंकी पुनरावृत्तिहोवैहै याके विषेक्याकहणाहै ।। इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्ताद्व्यक्तयःसर्वाःप्रभवंत्यहरागमे ॥ रात्र्यागमेप्रलीयंतेतत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥ अव्यक्तात् । व्यक्तयः । सर्वाः । प्रभवंति । अहरागमे । रात्र्यागमे । प्रलीयंते । तत्र । एव । अव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥ इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! तिसब्रह्माके दिनके आगमनविषे अव्यक्ततैं यहसर्व व्यक्तियां उत्पन्नहोवैं हैं और रात्रिकेआगमनविषे तेसर्वव्यक्तियां तिसँ अव्यक्तनामाकारणविषे हीं प्रलयकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वजोब्रह्मकादिनकथनकर्‍याहै तादिनकेआगमविषे अर्थात् ताब्रह्माकेजाग्रत्कालविषे अव्यक्ततैं यहसर्वव्यक्तियां उत्पन्नहोवैंहैं ।। यद्यपि अन्यस्थलविषे अव्यक्तशब्द अव्याकृतअवस्थाकाही वाचकहोवैहै तथापि इहां अव्यक्तशब्दकरिकै अव्याकृतअवस्थाकाग्रहणकरणानहीं काहेतैं इहांप्रसंगविषे ब्रह्माके दिनदिनविषे सृष्टिकूं तथारात्रिरात्रिविषे प्रलयकूं कथनकरणेवास्तैंही प्रारंभकर्‍याहै ।। ताब्रह्माके दिनसृष्टिविषे तथारात्रिप्रलयविषे आकाशादिकभूतोंकी उत्पत्ति तथानाश होवैनहीं किंतु ते आकाशादिकभूत तहां ज्यौंकेत्यौं बनेरहें हैं ।। यातैं ताअव्यक्तशब्दकरिकै आकाशादिकोंकाकारणरूप अव्याकृतअवस्थाका ग्रहणकरणानहीं किंतु ताअव्यक्तशब्दकरिकै ब्रह्माकेसुषुप्तिअवस्थाका ग्रहणकरणा अर्थात् सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहुएप्रजापतिकानाम अव्यक्तहै।।ऐसेअव्यक्ततैं शरीरविषयादिरूपभोगकीभूमियां रूपव्यक्तियां उत्पन्नहोवैंहैं अर्थात् पूर्वसूक्ष्मरूपकरिकैरहीहुई तेव्यक्तियांव्यवहारकरणेविषे समर्थतारूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और तिसप्रजापतिनामा ब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे अर्थात् तिसब्रह्माकेसुषुप्तिकालविषे तेसर्वव्यक्तियां जिसअव्यक्तरूपकारणतैं पूर्व प्रादुर्भूतहुईथीं ॥ तिसीअव्यक्तनामाकारणविषे लयभावकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ १८ ॥ ❀ ।। इसप्रकार यहसंसार यद्यपि शीघ्रही विनाशकूं प्राप्तहोवैहै तथापि इससंसारकी निवृत्तिहोतीनहीं काहेतैं अविद्या काम कर्म इनतीनोंकरिकै परतंत्रहुआ यहसंसार पुनःपुनः प्रादुर्भावकूं प्राप्तहोवैहै ।। तथा ताप्रादुर्भावकूंप्राप्तहुए इससंसारका ताअविद्याकामकर्मवशतैं पुनःपुनः तिरोभावहोवैहै ।। ऐसेआगमापायीसंसारविषेवर्त्तमान जितनेकप्राणीहैं तेप्राणीभी ताअविद्याकामकर्मकरिकै परतंत्रही हैं ॥ ऐसेपरतंत्रप्राणियोंकूंही जन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं इसदुःखरूपसंसारतैं निवृत्तहोणाहीश्रेष्ठहै याप्रकारकेवैराग्यकीउत्पत्तिवास्तै तथाइससंसारका समाननामरूपकरिकैही पुनःपुनः प्रादुर्भावहोणेतैं कृतनाश अकृताभ्यागमरूपदोषकीनिवृत्तिकरणेवास्तै श्रीभगवान् कहैंहैं ।

कूं प्राप्तहुएहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तहां तत्त्वसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तेपुरुषतौ तहां भोगोंकूंभोगिकै अवश्यकरिकै पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं परंतु तेउपासकपुरुषभी जिसकल्पविषे तिसब्रह्मलोककूंप्राप्तहुएहैं तिसकल्पविषै पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं किंतु दूसरेकल्पविषे पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं (ब्रह्मलोकमभिसंपद्यतेनचपुनरावर्त्तते) इत्यादिकश्रुतियों नैं तथा (अनावृत्तिशब्दात्) इससूत्रनैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएउपासकपुरुषोंकी जोपुनरावृत्ति कथनकरीहै सो क्रममुक्तिवालेउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्ति कथनकरीहै ॥ और जेश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिकूं कथनकरैं हैं तेवचनतौ पंचाग्निवियादिकोंकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुएपुरुषों के पुनरावृत्तिकूंकथनकरैं हैं ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकी ब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका तथाताब्रह्मलोकतैं पुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं ॥ तापंचाग्निवियाकास्वरूप आत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां ब्रह्मलोकसहित सर्वलोक कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं पुनरावृत्तिवालेही हैं ।। इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सहस्रयुगपर्यंतमहर्यद्ब्रह्मणोविदुः ॥ रात्रिंयुगसहस्रांतांतेहोरात्रविदोजनाः ॥ १७ ॥ सहस्रयुगपर्यंतम् । अहः । यत् । ब्रह्मणः । विदुः । रात्रिम् । युगसहस्रांताम । ते । अहोरात्रविदः । जनाः ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जेपुरुष ब्रह्मोके चतुर्युगसहस्रपर्यंत दिनकूं जानैं हैं तथा चतुर्युगसहस्रपर्यंत रात्रिकूं जानैं हैं ते योगीजनहीं दिनरात्रिकूंजानणेहारेहैं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां सत्रहलक्ष अठावीससहस्रवर्ष १७२८००० सत्ययुगका परिणामहोवैहै और बारहलक्ष छियानवेंसहस्रवर्ष १२९६००० त्रेतायुगका परिमाणहोवैहै ॥ और आठलक्ष चौंसठसहस्रवर्ष ८६४००० द्वापरयुगका परिमाणहोवैहै और च्यारिलक्ष बत्तीससहस्रवर्ष ४३२००० कलियुगका परिमाण होवै है ॥ यहचारोंयुग जबी एकसहस्रवार व्यतीतहोवैं हैं तबी प्रजापतिनामाब्रह्माका एकदिनहोवैहै ॥ इसीप्रकार यहच्यारियुग जबी एकसहस्रवार व्यतीत होवैं हैं तबी तिसब्रह्माकी एकरात्रिहोवैहै ॥ यहही ब्रह्माकेदिनरात्रिकापरिमाण (चतुर्युगसहस्रंतुब्रह्मणोदिनमुच्यते) इत्यादिकपुराणकेवचनोंविषेभी कथनकरयाहै ॥ इसप्रकारके ब्रह्माकेदिनकूं तथारात्रिकूं जेपुरुष जानैं हैं तेयोगीजनही रात्रिदिनकेजानणेहारेकहेजावैं हैं ॥ और जेपुरुष सूर्यचंद्रमाकीगतिकरिकै दिनरात्रिकूंजानैं हैं तेपुरुष दिनरात्रिकेजानणेहारेकहेजावैंनहीं ।। जिसकारणतैं तेपुरुषअल्पदर्शी हैं ।। १७ ।। ❀ ।। इसप्रकारका ब्रह्माकादिनरात्रि जबी पंचदशहोवैं हैं तबी ताब्रह्माका एकपक्ष कह्याजावैहै ॥ ऐसे दोपक्षोंका एकमास कह्याजावैहै ॥ ऐसेद्वादशमासोंका एकवर्ष कह्याजावैहै ।। ऐसेएकशतावर्ष १०० ताब्रह्माकी परमआयुषहोवैहै ।। तहां प्रथम पचासवर्ष प्रथमपरार्द्ध कह्याजावैहै और दूसरेपचासवर्ष द्वितीयपरार्द्ध कह्याजावैहै ।। ऐसीशतवर्षआ

श्रुतिकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारों नैं तथाताभाष्यकेव्याख्यानकरतावोंनैं स्पष्टकरिकैकथनकरीहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकीउपासनातैं परमेश्वरकूं प्राप्तहोइकै तहां तत्त्वसाक्षात्कारकूंप्राप्तहुए जेउपासकपुरुषहैं तिनउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्तिकेकथनकियेहुए तिसपरमेश्वरतैंविमुख तथातत्त्वसाक्षात्कारतैं रहित ऐसेपुरुषोंकी ताब्रह्मलोकतैंपुनरावृत्ति अर्थ तैंही सिद्धहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोर्जुन ॥ मामुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते ॥ १६ ॥ आब्रह्मभुवनात् । लोकाः । पुनरावर्त्तिनः । अर्जुन । माम् । उपेत्य । तु । कौंतेय । पुनः । जन्म । न । विद्यते ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! ब्रह्मलोक सहित सर्वलोक पुनरावृत्तिवालेही हैं हेकौं तेय एकमैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोइकै पुनः जन्म नहीं होवैहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरतैंविमुख तथाअसम्यक्दर्शनवाले जितनेकपुरुषहैं तिनसर्वपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककेसहित सर्व भोगभूमिरूपलोक पुनरावृत्तिवालेही होवैं हैं अर्थात् मैंपरमेश्वरतैंविमुखपुरुष ब्रह्मलोकादिकसर्वलोकों तैं नीचेपतनहोइकै पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ शंका—हेभगवन् ! तैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुए अधिकारी जनोंकूंभी तिनपुरुषोंकीन्याईं क्यापुनरावृत्तिकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीशंकाकेहुए श्रीभगवान् पूर्वकेहेहुएअर्थकूं पुनःदृढकरावणेवास्ते कहैं हैं ॥ (मामुपेत्यतु इति) ॥ हे कौंतेय ! मैंएकपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोइकै परमआनंदकूंप्राप्तहुए जेअधिकारीपुरुषहैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःकदाचित्भी जन्मनहींहोवैहै अर्थात् तिनपुरुषोंकी कदाचित्भी पुनरावृत्ति नहींहोवैहै ॥ इहां (हे अर्जुन !) यासंबोधनकरीकै श्रीभगवान्नैं ताअर्जुनविषे स्वभावसिद्ध महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ और (हे कौंतेय !) यासंबोधनकरिकै मातातैंभी महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै आत्मज्ञानकीसिद्धिवास्तै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशुद्धि तथाकारणतैंशुद्धि सूचनकरी इति ॥ इहां (आब्रह्मभवनात्) याप्रकारका जोकिसीपुस्तकविषेपाठहोवैहै तौभी पूर्वउक्तअर्थ तैं विलक्षणतानहीं है ॥ काहेतैं (भवंत्यत्रभूतानीति भुवनम्) अर्थयह जिसविषे भूतविद्यमानहोवैं ताकानाम भुवनहै॥याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोभुवनशब्द लोककावाचकहै ॥ और निवासकेस्थानकानाम भवन है सोभवनशब्दभी लोककाहीवाचकहै इति ॥ इहां (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इसपूर्वार्द्धकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए पुरुषोंकी पुनरावृत्ति कथनकरी ॥ और (मामुपेत्यतुकौं तेयपुनर्जन्मनविद्यते) इसउत्तरार्धकरिकै तिसब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्ति कथनकरी ॥ याकेविषेयहव्यवस्थाहै ॥ क्रममुक्तिहैफलजिनोंका ऐसीजे दहरादिकउपासनाहैं तिनउपासनावोंकरिकै जेपुरुष देवयानमार्गद्वारा तिसब्रह्मलोककूं प्राप्तहुएहैं तिनउपासकपुरुषोंकूंहीं तहां उत्पन्न हुएतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्माकेसाथि मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तेउपासकपुरुष पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ और जेपुरुष पंचाग्निवियादिकोंकरिकै ताब्रह्मलोक

(मू. श्लो.) मामुपेत्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतम् ॥ नाप्नुवंतिमहात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताः ॥ १५ ॥ माम् । उपेत्य । पुनः ।
जन्म । दुःखालयम् । अशाश्वतम् । न । आप्नुवंति । महात्मानः । संसिद्धिम् । परमाम् गताः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोइकै पुनः सर्वदुःखों केस्थानभूत नाशवान् जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैं हैं जिसकारणतैं
तेमहात्माजन सर्वतैंउत्कृष्ट मोक्षकूं प्राप्तहुएहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोइकै पुनः मनुष्यादिकदेहकासंबंधरूपजन्मकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ कैसाहैसोजन्म दुःखालयहै अर्थात् गर्भवास तथा योनिद्वारतैंनिर्गमन इसतैंआदिलेके जेगर्भउपनिषद्विषे दुःखकथनकरेहैं तिनसर्वदुःखोंकास्थानहै ॥ पुनः कैसाहैसोजन्म अशाश्वतहै अर्थात् स्थिरपणेतैंरहितहै तथाआपणेदर्शनकालविषेभी नाशहुएजैसाहै ॥ ऐसेशरीरकेसंबंधरूपजन्मकूं तेपुरुष प्राप्तहोतेनहीं अर्थात् तेपुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोते नहीं इति ॥ अब तापुनरावृत्तिकेनहींहोणेविषे तिनउपासकपुरुषों के हेतुरूपदोविशेषण कथनकरेहैं (महात्मानः संसिद्धिंपरमांगताः) इति ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहैं अर्थात् रजतमरूपमलतैंरहित शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ तथा तेपुरुष परमसिद्धिकूंप्राप्तहुएहैं अर्थात् तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकेलोककूं प्राप्तहोइकै तहां अनेकप्रकारकेदिव्यभोगोंकोभोगिकै ताके अंतविषे ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै सर्व तैं उत्कृष्ट कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष पुन रावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ इहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहुएहैं इसवचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनउपासकपुरुषोंकूं क्रममुक्तिकीप्राप्ति दिखाई ॥ तहां उपासनाकेबलतैं देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताकेअंतविषे तत्त्वज्ञानकरिकै जोमुक्तिकीप्राप्तिहै ताकानाम क्रममु क्तिहै ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ (ब्रह्मणासहतेसर्वेसंप्राप्तेप्रतिसंचरे ॥ परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशंतिपरंपदम्) अर्थयह ॥ तेउपासकपु रुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांब्रह्माकेप्रलयकीप्राप्तिहुए तत्त्वसाक्षात्कारवालेहोइकै ताब्रह्माकेनाशहुएतैंअनंतर तिसब्रह्माकेसाथिही विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ इहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैंहैं इसभगवान्केवचनतैं ब्रह्मलोकतैंभिन्न कोईविष्णुलोकजानणानहीं ॥ काहेतैं जैसे पौराणिक ब्रह्मलोक विष्णुलोक रुद्रलोक इनतीनलोकोंकी भिन्नभिन्न ऊपरिऊपरिकल्पनाकरैंहैं तैसे वेदांतसिद्धांतविषे तिनलोकोंकी भिन्नभिन्नऊपरिऊपरि कल्पना हैनहीं किंतु वेदांतसिद्धांतविषे तेसर्वलोक सत्यलोकनामाब्रह्मलोकविषेही अंतर्भूतहैं ॥ तहां विष्णुकेउपासकोंकूंतौ सोब्रह्मलोक विष्णुलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ और रुद्रकेउपासकोंकूंतौ सोब्रह्मलोक रुद्रलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (पराहिसोपासनकर्मोर्जितोहिरण्यगर्भप्राप्त्यंता) इसबृहदारण्यकउपनिषद्की

करणेकूं आपणीइच्छाकरिकै समर्थनहींहोवैहै किंतु प्रारब्धकर्मों केनाशहुए तिसमरणकालविषे परवशहुआ जोपुरुष इसदेहकापरित्यागकरै है तिसपुरुषकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसफलकूं कथनकरैं हैं ॥

(मू. श्लो.) अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः ॥ १४ ॥ अनन्यचेताः । सततम् । यः । माम् । स्मरति । नित्यशः । तस्य । अहम् । सुलभः । पार्थ । नित्ययुक्तस्य । योगिनः ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष अनन्यचित्तवालाहुआ निरंतर जीवितकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरै है तिस समाहितचित्तवाले योगीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अतिसुलभहूं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैं परमेश्वरतैं अन्य किसीभीपदार्थविषे नहीं हैआसक्तचित्तजिसका ताकानाम अनन्यचेताहै ऐसाअनन्यचेताहुआ जोपुरुष निरंतर जीवितकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैहै सो निरंतर समाहिताचित्तवालापुरुष पूर्वउक्तरीतिसैं स्वाधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै अथवा पराधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै सर्वप्रकारतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतसुलभहूं अर्थात् इतरपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्लभहुआभी मैंपरमेश्वर तिसपुरुषकूंतौ सुखेनही प्राप्तहोणेयोग्यहूं ॥ हे अर्जुन ! तूंभी इसप्रकारका हमारा अनन्यभक्तहै यातैं मैंपरमेश्वर तुम्हारेकूंभी अत्यंतसुलभहूं ॥ यातैं तूं किसीप्रकारका भयमतकर इति ॥ इहां (अनन्यचेताः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपरमेश्वरकेस्मरणविषे अतिआदररूपसत्कार कथनकऱ्या ॥ और (सततम्) इसवचनकरिकैनिरंतरताकथनकरी और (नित्यशः) इसवचनकरिकै दीर्घकालता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं (सतुदीर्घकालनैरंतर्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः) इससूत्रउक्त पतंजलिकामत अनुसरणकऱ्या ॥ यद्यपि इससूत्रविषे सः इसपदकारिकै पतंजलिनैं अभ्यासका कथनकऱ्याहै और इहां श्रीभगवान्नैं (मांस्मरति) यावचनकरिकै स्मरणका कथनकऱ्याहै तथापि तिसअभ्यासका परमेश्वरकेस्मरणविषेही परिअवसानहै यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ दूसरेसर्वविक्षेपोंतैंरहितहोइकै अतिआदरपूर्वक तथा जीवितकालपर्यंत तथाव्यवधानतैंरहित जोनिरंतर परमेश्वरकाचिंतनहै सोपरमेश्वरकाचिंतनही तिसमोक्षरूपपरमगतिके प्राप्तिकाहेतुहै ॥ ऐसे परमेश्वरकेचिंतनकेप्राप्तहुए आपणीइच्छापूर्वक सुषुम्नानाडीद्वारा प्राणोंकाउत्क्रमणहोवो अथवानहींहोवो याकेविषे कोईअत्यंतआग्रहहैनहीं सर्वप्रकारतैं सोपरमेश्वरकेचिंतनकरणेहारापुरुष तिसपरमगतिकूंहीप्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! इसप्रकार सर्वदा परमेश्वरकाचिंतनकरिकै तिसपरमेश्वरकूंप्राप्तहुए तेअधिकारीजन पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैंहैं अथवानही ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तेअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूं नहींप्राप्तहोवैं हैं याप्रकारकाउत्तर कहैं हैं ।

वारंवार दोषदर्शनकेअभ्यासतैं तिनविषयोंतैंविमुखताकूंप्रातहुएश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तिनशब्दादिकविषयोंकूंनहींग्रहणकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ शंका—हेभगवन् ! श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेनिरोधकियेहुएभी अंतर मनकरिके तिनविषयोंकाचिंतन होवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैंहैं (मनोहृदिनिरुध्य चइति) हेअर्जुन ! पूर्वषष्ठअध्यायविषे विस्तारतैं कथनकऱ्याजो अभ्यासवैराग्यहै तिस अभ्यासवैराग्यदोनोंकरिकै जोपुरुष तिसमनकूं हृदयदेशविषे सर्ववृत्तियोंतेंरहितकरिकै स्थितहुआहै अथात् जोपुरुष अंतरभी विषयोंकीचिंताकूंनहींकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ इसप्रकार बाह्यअंतरज्ञानकेद्वारभूत मनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियरूपसर्वद्वारोंकूं निरोधकरिकै जोपुरुष क्रियाकेद्वारभूतप्राणकूंभी सर्वओरतैंनिग्रहकरिकै मूर्द्धा देशविषे स्थापनकरिकै स्थितहुआहै अर्थात् जोपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाजयक्रमतैं प्रथमतिसप्राणकूं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितकरिकै पश्चात् तिसतैंऊपरि मूर्द्धा देशविषे स्थापनकरिकै स्थितहुआहै ॥ तथाजोपुरुष प्रत्यक्आत्माविषयक समाधिरूपधारणाकूंकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ इहां (आत्मनः) यहपद अन्यदेवताविषयकधारणाकीव्यावृत्तिकरणेवासतेहै ॥ और ॐ यहजोएकअक्षरहै सो ॐअक्षर ब्रह्मकावाचकहोणेतैं अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्याईं ब्रह्मकाप्रतीकहोणेतैं ब्रह्मरूपहै ॥ ऐसे ब्रह्मरूप ॐइसएकअक्षरकूं उच्चारणकरताहुआ जोपुरुष स्थितहुआहै ॥ इहां यद्यपि (ॐइतिव्याहरन्) इतनेमात्रकहणेकरिकैही निर्वाहहोइसकैहै (एकाक्षरम्) इसकहणेतैं कोईअधिकअर्थ सिद्धहोतानहीं ॥ तथापि (एकाक्षरं) यहवचन अनायासताकूं कथनकरताहुआ ताप्रणवकेउच्चारणकीस्तुतिवासतैहै ॥ अथवा (ॐ इतिव्याहरन् एकाक्षरंब्रह्ममामनुस्मरन्) याप्रकारतैं पदोंकाअन्वयकरणा ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष ॐ इसप्रणवमंत्रकूं उच्चारणकरताहुआ स्थितहुआहै तथा जोपुरुष तिस ॐकारकाअर्थरूप अद्वितीय अविनाशी सर्वत्रव्यापक मैंपरमेश्वरकूं स्मरणकरताहुआ स्थितहुआहै इसप्रकार प्रणवमंत्रकाजपकरताहुआ तथाताप्रणवमंत्रकेअर्थरूपमैंपरमेश्वरकाचिंतनकरताहुआ जोपुरुष मरणकालविषे सुषुम्नानाम मूर्द्धन्यनाडीरूपमार्गकरिकै इसदेहकूंपरित्याग करताहुआगमनकरैहै सो उपासकपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तिसब्रह्मलोककेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै अंतविषे परमगतिकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै सर्वतैंउत्कृष्ट ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषाऽस्यपरमागतिरेषाऽस्यपरमासंपदेषोऽस्यपरमआनंदः ॥) अर्थयह ॥ यहअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मही इसविद्वान्पुरुषकी परमगतिहै तथापरमसंपद्है तथा परम आनंदहै इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! इसपूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष मरणकालविषे प्राणवायुकेनिरोधकेअभावतैं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषे प्राणोंकूंस्थितकरिकै मूर्द्धन्यनाडीकरिकै इसदेहकेपरित्याग

अक्षरब्रह्मकी प्राप्तिवास्तैंहीहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैं हैं (यदिच्छंतः इति) हे अर्जुन ! जिसअक्षरब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए नैष्ठिकब्रह्मचारी गुरुकुलविषे निवासकरिकै ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकोंकूंकरैं हैं ऐसाअक्षरब्रह्मरूपपद मैंभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति संक्षेपतैंकथनकरताहूं अर्थात् जिसप्रकारतैं तैं अर्जुनकूं तिसअक्षरब्रह्मका संशयतैंरहित यथार्थ बोधहोवै तिसप्रकारतैं मैंतुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यातैं तिसअक्षरब्रह्मकूं मैं अर्जुन किसप्रकारजानूंगा याप्रकारकीचिंताकरिकै तूं व्याकुलमतहोउ इति ॥ तहां यहओंकाररूपप्रणव परब्रह्मकाहीवाचकहै ॥ अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्याई तिसपरब्रह्मका प्रतीकहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकी वाचकतारूपकरिकै तथाप्रतीकतारूपकरिकै श्रुतिभगवतीनैं मंदमध्यमबुद्धिवाले पुरुषोंकेप्रति क्रममुक्तिरूपफलवाली तिसप्रणवकीउपासना कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यःपुनरेतत्त्रिमात्रेणोमित्यनेनैवाक्षरेणपरंपुरुषमभिध्यायीतसतमधिगच्छति) अर्थयह ॥ जोपुरुष अकार उकार मकार इनतीनमात्रावोंवाले ॐइसअक्षरकरिकै परमपुरुषकूं चिंतनकरैहै सोपुरुष तिसपरमपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिविषे कथनकरीजा प्रणवकीउपासनाहै साईहीउपासना इहांभगवान्कूं विवक्षितहै ॥ यातैं इसअष्टमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्नैं सायोगधारणासहित ओंकारकीउपासना तथा ताउपासनाका स्वस्वरूपकीप्राप्तिरूपफल तथातिसफलतैंअपुनरावृत्ति तथाताकामार्ग यहसर्वअर्थ कथनकरीताहै ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां (तत्तेपदंप्रवक्ष्ये) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै प्रतिज्ञाकऱ्याजोअर्थहै तिसअर्थकूं साधनसहित दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वद्वाराणिसंयम्यमनोहृदिनिरुध्यच ॥ मूर्ध्न्याधायात्मनःप्राणमास्थितोयोगधारणाम् ॥ १२ ॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ १३ ॥ सर्वद्वाराणि । संयम्य । मनः । हृदि । निरुध्य । च । मूर्ध्नि । आधाय । आत्मानः । प्राणम् । आस्थितः । योगधारणाम् । ओं । इति । एकाक्षरम् । ब्रह्म । व्याहरन् । माम् । अनुस्मरन् । यः । प्रयाति । त्यजन् । देहम् । सः । याति । परमाम् । गतिम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जोउपासकपुरुष सर्वइंद्रियद्वारोंकूं रोकिकैकरिकै तथा मनकूं हृदयविषे निरुद्धकरिकै तथा प्राणकूं मूर्द्धादेशविषे स्थितकरिकै आत्मविषयक समाधिरूपधारणाकूं करताहुआ तथाओम इस ब्रह्मरूप एकअक्षरकूं उच्चारणकरताहुआ तथा मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरताहुआ इसदेहकूं परित्यागकरताहुआ जावैहै सोउपासकपुरुष परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोउपासकपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियरूपद्वारोंकूं आपणेआपणे शब्दादिकविषयोंतैंरोकिकैस्थितहुआहै अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे

पुरुष प्रथम आपणेहृदयकमलविषे प्राणोंकूंवशकरिकै तिसतैंअनंतर तिसहृदयदेशतैंऊर्ध्वगमनकरणेहारी सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा पूर्वपूर्वभूमिकाकेजयक्रमकरिकै दोनों भ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितआज्ञाचक्रविषे तिसप्राणकूंस्थापनकरिकै सावधानहुआ दशमद्वाररूपब्रह्मरंध्रतैं उत्क्रमणकरै है सोउपासकपुरुषही कविपुराणइत्यादिक लक्षणोंकरिकैयुक्त तिसपरमदिव्यपुरुषकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहां आधारचक्र स्वाधिष्ठानचक्र मणिपूरकचक्र अनाहतचक्र विशुद्धचक्र आज्ञाचक्र इनषट्चक्रोंका स्वरूप तथा तिनोंकेस्थान तथातिनोंकेदेवता तथातिनषट्चक्रोंविषेप्राणके स्थापनकरणेकाप्रकार आत्मपुराणकेएकादशअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरि आये हैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे परमेश्वरभावकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्नैं परमेश्वरकास्मरण विधानकऱ्या ताकहणेकरिकै यहसंशय प्राप्त होवै है जो तिसध्यानकालविषे जिसीकिसीनामकरिकै तिसपरमेश्वरका स्मरणकरणा अथवा नियमतैं किसीएकनामकरिकैही तापरमेश्वरका स्मरणकरणाइति ॥ इससंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् (सर्वे वेदायत्पदमामनंति तपांसिसर्वाणिचयद्वदंति ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंति तत्तेपदंसंग्रहेणब्रवीम्योमित्येतत) इत्यादिक श्रुतियोंकरिकै प्रतिपादित जोओंकाररूपप्रणवनामहै तिसप्रणवनामकरिकैही परमेश्वरकास्मरणकरणा अन्यमंत्रादिकोंकरिकैकरणानहीं याप्रकारकेनियमकूं अब कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यदक्षरंवेदविदोवदंतिविशंतियद्यतयोवीतरागाः ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंतितत्तेपदंसंग्रहेणप्रवक्ष्ये ॥११॥ यत् । अक्षरम् ।
वेदविदः । वदंति । विशंति । यत् । यतयः । वीतरागाः । यत् । इच्छंतः । ब्रह्मचर्यम् । चरंति । तत् । ते । पदम् । संग्रहेण । प्रवक्ष्ये
॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! वेदवेत्तापुरुष जिसे अक्षरकूं कथनकरैं हैं तथानिःस्पृह संन्यासी जिसअक्षरकूं प्राप्तहोवैं हैं तथा
साधकपुरुष जिसअक्षरकूं इच्छतेहुए ब्रह्मचर्यकूं करैं हैं तिसै अक्षरकूंमैं तुम्हारेताई संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥११॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिस ओंकारनामवाले अविनाशीब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरैं हैं अर्थात् (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै स्थूलादिकसर्वविशेषधर्मोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरैं हैं हे अर्जुन ! सोअक्षरब्रह्मकेवल प्रमाणविषेकुशल वेदवेत्ता पुरुषोंनैंही प्रतिपादन नहींकरीता किंतु मुक्तपुरुषोंकूं प्राप्तहोणे योग्यहोणे तैं सोअक्षरब्रह्म तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी अनुभवकरीताहै॥इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं॥ (विशंतिइति) हे अर्जुन ! सर्वविषयसुखोंकीइच्छातैंरहित जेयत्नशीलसंन्यासी हैं तेनिष्कामसंन्यासीभी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं आपणास्वरूपभूतकरिकैप्राप्तहोवैं हैं ॥ हे अर्जुन! सोअक्षरब्रह्म तिनतत्त्ववेत्तासिद्धपुरुषों नैंही केवल अनुभवनहीकरीता किंतु साधकमुमुक्षुजनोंकाभी सर्व प्रयत्न तिस

रिकै दुर्विज्ञेयता ग्रहणकरणी ॥ अन्यथा (महतोमहीयान्) यहश्रुति असंगतहोवैगी ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव सर्वकाधारणकरणेहाराहै अर्थात् पुण्य पापकर्मोंकाजितनाकफलहै तिससर्वफलकूं सर्वप्राणियोंकेताईं आपणेआपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार विचित्ररूपतैं भिन्नभिन्नकरिकै देणेहाराहै ॥ यहवार्त्ता (फलमतउपपत्तेः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारों नैं विस्तारतैंप्रतिपादनकरी है ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव अचिंत्यरूपहै अर्थात् अपरिमितमहिमावालाहोणे तैं नहींचिंतनकरणेकूंशक्यहैंरूपजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव आदित्यवर्णहै आदित्यकीन्याईं सर्वजगत्का अवभासकहै वर्ण क्या प्रकाश जिसका ताकानाम आदित्यवर्णहै अर्थात् जोपरमात्मादेव सूर्यकीन्याई सर्वजगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहै ॥ प्रकाशरूपहोणे तैंही जोपरमात्मादेव तमतैंपरहै ॥ इहां अज्ञानरूप जोमोहअंधकारहै ताकानाम तमहै तिसतमतैं परहै अर्थात् प्रकाशरूपहोणेतैं तिसअज्ञानरूपतमकाविरोधी है ॥ ऐसे परमात्मारूपदिव्यपुरुषकूं जो अधिकारीपुरुष चिंतनकरै है सोअधिकारीपुरुष तिसअभ्यासकीदृढतातैं तिसपरमदिव्यपुरुषकूंही प्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका पूर्वलेश्लोककेसाथि अन्वयकरणा ॥ अथवा (सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) इसअगलेश्लोककेसाथि अन्वयकरणा ॥ अन्वयनाम संबंधकाहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका— हे भगवन् ! आप वारंवार परमेश्वरकेस्मरणविषेप्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो सोकिसकालविषे तापरमेश्वरकेस्मरणविषयक प्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकालका कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) प्रयाणकालेमनसाऽचलेनभक्त्यायुक्तोयोगबलेनचैव ॥ भ्रुवोर्मध्येप्राणमावेश्यसम्यक्सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम् ॥ १० ॥

प्रयाणकाले । मनसा । अचलेन । भक्त्या । युक्तः । योगबलेन । च । एव । भ्रुवोः । मध्ये । प्राणम् । आवेश्य । सम्यक् । सः । तम् । परम् पुरुषम् । उपैति । दिव्यम् ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष मरणकालविषे एकाग्र मनकरिकै तिसदिव्यपुरुषका स्मरणकरै है तथाभक्तिकरिकै युक्त है तथा योगकरिकै युक्तहै सोपुरुष दोनोंभ्रुवोंके मध्यविषे प्राणकूं भलीप्रकारतैं स्थापनकरिकै तिसे परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवै है ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोउपासकपुरुष मरणकालविषे एकाग्रमनकरिकै तिसदिव्यपुरुषकूं स्मरणकरै है ॥ तथा जोपुरुषभक्तिकरिकैयुक्तहै अर्थात् परमेश्वरविषयक परमप्रेमकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोपुरुष योगबलकरिकैयुक्तहै ॥ इहां समाधिकानाम योगहै ॥ तासमाधिरूपयोगकाजोबलहै अर्थात् तासमाधिरूपयोगकरिकेजन्य जोसंस्कारोंकासमूहहै जोसंस्कारोंकासमूह तासमाधितैंव्युत्थानकरणेहारेसंस्कारोंकाविरोधी है ऐसेयोगबलकरिकै जोपुरुष युक्तहै ॥ तथा जो

समाहितचित्तकरिकैही यहअधिकारीपुरुष तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव परमहै अर्थात् निरतिशयआनंदरूपहै ॥ पुनः कैसाहैसोपर मात्मादेव पुरुषहै अर्थात् सर्वत्रपारिपूर्णहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव दिव्यहै अर्थात् प्रकाशरूपआदित्यविषे अंतर्यामीरूपकरिकै स्थितहै ॥ तहां (यश्चा सावादित्ये) यहश्रुति तिसपरमात्मादेवकी आदित्यविषेस्थिति कथनकरै है ॥ ऐसे परमदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकै चिंतनकरताहुआ यहपुरुषनदीसमुद्रकीन्याई तिसीपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यथानद्यः स्यंदमानाः समुद्रेअस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्पुण्य पापेविधूयपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदियां आपणेनामरूपकापारित्यागकरिकै समुद्रविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवैं हैं तैसे यह विद्वान्पुरुषभी पुण्यपापकर्मकापरित्यागकरिकै सूत्रात्मातैंभीपर अंतर्यामीदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याजो अधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य जो परमदिव्यपुरुषहै तिसीपरमदिव्यपुरुषकूं पुनःभी अनेकविशेषणोंकारिकै श्रीभगवान् अब कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कविंपुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ सर्वस्यधातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात् ॥ ९ ॥
कविम् । पुराणम् । अनुशासितारम् । अणोः ।अणीयांसम् । अनुस्मरेत् । यः ।सर्वस्य । धातारम् । अचिंत्यरूपम् । आदित्यवर्णम् । तमसः ॥ परस्तात् ॥ ९॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सर्वज्ञ तथाअनादि तथासर्वकानियंता तथासूक्ष्मतैंभी अत्यंतसूक्ष्म तथा सर्वकाधारणकरणेहारा तथाअचिंत्यरूपवाला तथाआदित्यकीन्याईप्रकाशवाला तथाअज्ञानतैं परेस्थित ऐसेदिव्यपुरुषकूं जोकोई पुरुषचिंतनकरै है सोपुरुष तिसीदिव्यपुरुषकूंप्राप्तहोवै है॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मोक्षकीकामनावालेअधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य जोपरमदिव्यपुरुषहै सोपरमात्मादेव कैसाहै कविहै अर्थात् भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्ववस्तुवोंका द्रष्टाहोणेतैं सर्वज्ञहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव पुराणहै अर्थात् इससर्वजगत्काकारणहोणेतैं अनादिहै ॥ पुनःकैसाहै सोपरमात्मादेव अनुशासिताहै अर्थात् सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्कूं नियमपूर्वक चलावणेहाराहै ॥ अथवा सर्वप्राणियोंकेहृदयविषेस्थितहोइकै तिनप्राणियोंके कर्मोंकेअनुसार तिनप्राणियोंकूं शुभअशुभकार्यविषे प्रवृत्तकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ आकाशादिकसर्वप्रपंचका उपादानकारणहोणेतैं आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थों तैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ कार्यकीअपेक्षाकरिकै ताकेउपादानकारणविषेअत्यंतसूक्ष्मता पटतंतुआदिकोंविषेप्रसिद्धहीहै ॥ इहां सूक्ष्मताक

कीअशुद्धिकेवशतैं निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनकरणेविषे तूं समर्थनहींहोइसकै तौ तिसअंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासतै तूं युद्धकूंकर ॥ इहां युद्धशब्द स्ववर्णआश्रमके सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंका उपलक्षणहै ॥ प्रसंगविषेपूर्वयुद्धहीप्राप्तहै यातैं श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रतियुद्धकरणेकाविधानकऱ्याहै अर्थात् ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतै तूं युद्धादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकर ॥ इसप्रकार नित्यनैमित्तिककर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै ताअंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकऱ्याहुआहैसंकल्परूपमन तथानिश्चयरूपबुद्धि जिसतुमनैं ऐसाहुआतूं अर्थात् सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ सोयह सगुणब्रह्मकाचिंतन उपासकपुरुषकेप्रतिही भगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं तिनउपासकपुरुषोंकूं तिसमरणकालकीअंत्यभावनाकीअपेक्षा अवश्यकारिकैरहैहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहुआहै तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूंतौ तिसब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिकालविषेही अज्ञानकी निवृत्तिरूपमुक्ति सिद्धहै ॥ यातैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं तिसअंत्यभावनाकी किंचित्मात्रभीअपेक्षानहीं है ॥ इहां ध्येयवस्तुकेआकार चित्तकेवृत्तिकानाम भावनाहै ॥ इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकेसप्तप्रश्नोंकाउत्तरकहिकै मरणकालविषे परमेश्वरकेस्मरणका जोपरमेश्वरकीप्राप्तिरूपफल कथनकऱ्याहै तिसीकूंही विस्तारतैंकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसानान्यगामिना ॥ परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिंतयन् ॥ ८ ॥ अभ्यासयोगयुक्तेन । चेतसा । नान्यगामिना । परमम् । पुरुषम् । दिव्यम् । याति । पार्थ । अनुचिंतयन् ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सर्वदापरमात्मादेवकूंचिंतनकरताहुआयहपुरुष अभ्यासरूपयोगकारिकयुक्त तथाअन्याविषयोंविषेनहींगमनकरणेहारे ऐसेचित्तकरिकै परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर निरंतर परमात्मादेवकाध्यानकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष चित्तकारिकै तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब ताचित्तविषे परमेश्वरकीप्राप्तिकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतैताचित्तकेदोषविशेषणोंकूं श्रीभगवान्कथनकरैंहैं (अभ्यासयोगयुक्तेननान्यगामिनाइति) इहां मैंपरमेश्वरविषे विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जोसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अभ्यासहै जोअभ्यास पूर्वषष्ठअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं सोअभ्यासही समाधिरूपयोगहै ॥ ऐसे अभ्यासरूपयोगकारिकैयुक्तजो चित्तहै अर्थात् अनात्माकारसर्ववृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तिसअभ्यासयोगविषेही अत्यंतसंलग्नजोचित्तहै तथा जोचित्त नान्यगामीहै अर्थात् निरोधकेप्रयत्नतैंविनाभी जिसचित्तका अनात्मपदार्थोंविषे जाणेकास्वभावनहीं है ऐसे

करिकै देहांतरकीप्राप्तितैंविनाहीतामहादेवकेसमानरूपताकूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ यहवार्त्ता शास्त्रविषेप्रसिद्धहीहै ॥ जबी तिसतिसवस्तुकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं जीवते हुएही ताध्यानकेप्रभावतैं तिसतिस ध्येयवस्तुभावकीप्राप्तिहोवैहै तबी तिसतिस देवताविशेषका सर्वदा ध्यानकरणेहारे पुरुषकूं मरणतैं अनंतर तिसतिस देवताविशेषकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां मरणकालविषे यद्यपि तिसतिस देवताविशेषके स्मरणकाउद्यम संभवतानहीं तथापि पूर्वकालके अभ्यासजन्य जेसंस्काररूपवासनाहैं तेवासनाही तामरणकालविषे तिसस्मरणकाहेतुहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैंहैं (सदातद्भावभावितःइति) तहांतिसमरण तैंपूर्व सर्वकालविषे तिसतिस देवतादिकोंविषे जोभावहै अर्थात् भावनाजन्यसंस्काररूपवासनाहै ताकानामतद्भावहै ॥ सोतद्भाव संपादनकऱ्याहैजिसपुरुषनैं ताकानाम तद्भावभावितहै अर्थात् जोपुरुष पूर्वध्यानजन्यसंस्कारोंकरिकैयुक्तहै तिनसंस्कारोंकेबलतैंही तिसपुरुषकूंमरणकालविषे तिसतिसदेवतादिकोंका स्मरणहोवैहै ॥ इहां (हेकौंतेय !) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवाननैं अर्जुनविषेआपणेपिताकीभगिनीकापुत्ररूपताकहिकै स्नेहकीअतिशयतासूचनकरी ॥ तिसकरिकै मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकै तुम्हारेऊपरि अनुग्रहकरौंगा यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ताकरिकै यहभगवान् हमारेसाथि वंचनाकरताहै याप्रकारकीशंकाकाअभाव सूचनकऱ्या इति ॥ इहां किसीटीकाविषे (यंयंचापि) याप्रकारकामूलश्लोककापाठ कल्पनाकरिकै (यंयं) याशब्दकरिकैतौ तिसतिसदेवताविशेषका ग्रहण कऱ्याहै और चकारतैं अन्यभीजिसीकिसीवस्तुका ग्रहणकऱ्याहै परंतु बहुतमूलपुस्तकोंविषे (यंयंवापि) इसप्रकारकाही पाठहोवैहै ॥ यातैंसोईही इहांलिख्याहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन! जिसकारणतैं पूर्वस्मरणकेअभ्यासजन्य मरणकालकीअंत्यभावनाही तिसमरणकालविषे परवशपुरुषकूं देहांतरकीप्राप्तिविषे कारण होवैहै तिसकारणतैं तूंअर्जुन तिसअंत्यभावनाकीउत्पत्तिवासतै सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाही चिंतनकर ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुध्यच ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ ७ ॥ तस्मात् । सर्वेषु । काले
षु । माम् । अनुस्मर । युध्य । च । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । माम् । एव । एष्यसि । असंशयम् ॥ ७ ॥ इति पदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! तिसकारणतैं सर्व कालोंविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं चिंतनकर तथा युद्धकर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकरेहुएमनबुद्धिवा
लातूं मैंपरमेश्वरकूं ही प्राप्तहोवैगा याअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! जिसकारणतैं पूर्वउक्तप्रकारतैं पूर्वलेअभ्यासजन्य अंत्यभावनाही देहांतरकीप्राप्तिका कारणहोवैहै तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरविषयक ता अंत्यभावनाकीउत्पत्तिवासतै तूंअर्जुन तामरणतैंपूर्वही सर्वकालोंविषे बहुतआदरपूर्वक निरंतर मैंसगुणपरमेश्वरकूं चिंतनकर ॥ जोकदाचित् आपणेअंतःकरण

करी है ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यप्राणाउत्क्रामंत्यत्रैवसमवलीयंते) ॥ अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमण करतेनहीं किंतु इसशरीरके भीतरही अधिष्ठानचैतन्यविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैंहैं इति ।। ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं साक्षात्‌हीप्राप्तहो वै है ॥ तहांश्रुति ।। (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ।।) अर्थयह ।। सोतत्त्ववेत्तापुरुष ब्रह्मरूपहुआही ब्रह्मभावकूं प्राप्तहो वै है इति ॥ हे अर्जुन ! देहतैंभिन्नआत्माविषे तथामैंनिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयहैनहीं अर्थात् आत्मा देहतैं भिन्नहै अथवा नहीं है तथादेहतैंभिन्नहुआभी आत्मा ईश्वरतैं अभिन्नहै अथवाभिन्नहै इसप्रकारका कोईभीसंशय इहां नहीं है ।। जिस कारणतैं तत्त्वसाक्षात्कारतैं अनंतर (छिद्यंतेसर्वसंशयाः) इसश्रुतिनैं सर्वसंशयोंकीनिवृत्तिही कथनकरी है ।। इहां (कलेवरंमुक्त्वाप्रयाति) इसवचनकरिकैतौ श्रीभगवान्‌नैं जीवात्माका इसदेहतैंभिन्नपणा कथनकऱ्याहै और (मद्भावंयाति) इसवचनकरिकैतौ इसजीवात्माका ईश्वरतैं अभिन्नपणा कथनकऱ्याहै ।। इसी जीवईश्वरकेअभेदकूं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्यभीकथनकरैंहैं ।। इतिसप्तमप्रश्नोत्तरम् ।। ७ ।। इति ।। ५ ।। ❀ ।। तहां अंतकालविषे परमेश्वरकाध्यानकरणेहारेपुरुषकूं तिसपरमेश्वरकीप्राप्तिअवश्यकरिकैहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थकेही स्पष्टकरणेवासतै श्रीभगवान दूसरेदेवताओंकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं भीनियमकरिकै तिसतिसदेवताभावकीप्राप्ति कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरम्॥ तंतमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः ॥६॥ यम् । यम् । वा । अपि । स्मरन् । भावम् । त्यजति । अंते । कलेवरम् । तम् । तम् । एव । एति । कौंतेय । सदा । तद्भावभावितः ॥ ६ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सर्वकाल विषे तिसतिसदेवताविषयकभाववालाहुआ यहपुरुष मरणकालविषे जिसे जिसे भी देवताविशेषकूं स्मरणकरताहुआ इसशरीरकूं त्यागकरैहै सोपुरुष तिसे तिसे देवताभावकूं ही प्राप्तहोवैहै ॥ ६ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मरणकालविषे मैंपरमेश्वरकूंस्मरणकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेभावकूंही प्राप्तहोवैहै यहहींकेवलनियमनहीहै किंतु तामरणकालविषे यहपुरुष जिसजिसदेवताविशेषरूपभावकूं तथाअन्यभीकिसी प्रियअप्रियपदार्थरूपभावकूं स्मरणकरताहुआ इसशरीरका परित्यागकरैहै सोपुरुष तामरणतैंअनंतर तिसतिसभावकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं अन्यभावकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ जोप्राणी जिसवस्तुका निरंतर ध्यानकरैहै तिस प्राणीकूं ताध्यानकेबलतैं देहांतरकीप्राप्तितैंविना इसजीवितकालविषेही तिसवस्तुभावकीप्राप्ति किसीस्थलविषे देखणेमैं आवैहै ॥ जैसे भयकेवशतैं निरंतर भ्रमरकाध्यानकरणेहारा जोकीटविशेषहै तिसकीटकूं ताध्यानकेप्रभावतैं जीवतेहुएही तिसभ्रमररूपताकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और नंदिकेश्वर निरंतर महादेवकेध्यान

कहोणेतें परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै ।। इतनेकहणेकरिकै सोअधियज्ञ इसदेहविषेवर्त्तैहै अथवा इसदेहतैं बाह्यवर्त्तैहै ।। देहविषेरह्याभी सोअधियज्ञ बुद्धिआदिरूपहै अथवा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै इससंदेहकीभी निवृत्तिकरी ॥ अर्थात् सोअधियज्ञरूप विष्णु यज्ञरूपकरिकै इसमनुष्यदेहविषेहीरहैहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै यहउत्तर सिद्धभया ।। इहां इसमनुष्यदेहकरिकैही सोयज्ञ सिद्धहोवैहै अन्यदेहकरिकैसिद्धहोवैनहीं ।। यातैं इसमनुष्यदेहविषेही यज्ञकीस्थितिकथनकरीहै ।। तहां (हेदेहभृतांवर) अर्थात् हेसर्वप्राणियोंविषेश्रेष्ठअर्जुन ! यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैंकथनकऱ्याहै सो क्षणक्षणविषे मैंपरमेश्वरकेसंभाषणनैंकृतकृत्यहुआ तूंअर्जुन इसहमारेबोधकेयोग्यहै इसप्रकारकेउत्साहकरावणेवासतै कथनकऱ्याहै ।। इतिषष्ठप्रश्नोत्तरम् ।। ६ ॥ इति ॥ ४ ।। ❀ ।। अब (प्रयाणकालेकथंज्ञेयोसि) अर्थात् मरणकालविषे समाहित चित्तवालेपुरुषोंनैं किसप्रकारतैं तूंपरमेश्वर जानणेयोग्यहै ।। इस सप्तमप्रश्नकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम् ॥ यःप्रयातिसमद्भावंयातिनास्त्यत्रसंशयः ॥ ५ ॥अंतकाले । च । माम् । एव । स्मरन् । मुक्त्वा । कलेवरम् ।यः। प्रयाति। सः। मद्भावम्। याति । न। अस्ति। अत्र । संशयः॥ ५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूं ही चिंतनकरताहुआ इसशरीरकूं परित्यागकरिकै जावै है सोपुरुष मैंपरमेश्वरकेस्वरूपताकूंही प्राप्तहोवैहै इसअर्थविषे कोईभीसंशय नहीं है ॥ ५॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोअधिकारीपुरुष अधियज्ञरूप मैंसगुणब्रह्मकूं अथवा परमअक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे चिंतनकरताहुआ ताचिंतनकेसंस्कारोंकीदृढतातैं श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकीअसावधानतावालेमरणकालविषेभी स्मरणकरताहुआ इसकलेवरकापरित्यागकरिकै अर्थात् इसशरीरविषेअहंममअभिमानकापरित्यागकरिकैप्राणोंकेवियोगकालविषे गमनकरै है ॥ सोपुरुष मद्भावकूं प्राप्तहोवैहै अर्थात् निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांसगुणब्रह्मकेध्यानपक्षविषेतौ (अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लः) इत्यादिकवक्ष्यमाणश्लोककरिकै कथनकऱ्याजोदेवयानमार्ग है तिसदेवयानमार्गकरिकै जोउपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजावैहै सोउपासकपुरुष तिसहिरण्यगर्भलोककेभोगोंकेअंतविषे निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और निर्गुणब्रह्मस्वरूपकेस्मरणपक्षविषेतौ जोपुरुष इसकलेवरकूंपरित्यागकरिकैजावैहै यहवचन केवल लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकैजानणा ।। काहेतैं मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारका निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार जिसपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके प्राणोंका मरणकालविषे इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमणही नहींहोवैहै ॥ और शरीरतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंविना लोकांतरविषेगमनसंभवैनहीं ।। यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथन

[3]नाशवान् [4]पदार्थ [5]अधिभूत कह्याजावै है [6]तथा हिरण्यगर्भनामपुरुष अधिदेव कह्याजावैहे तथाविष्णुरूपअधियज्ञ मै [10]वासुदेव ही[11] हूं सो अधियज्ञ [12]ईस [13]मनुष्य देहविषेही वर्त्तै है ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपदार्थ विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम क्षरहै और जो पदार्थ उत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम भावहै ऐसाउत्पत्तिनाशवान् जितनाक पदार्थमात्रहै सोपदार्थमात्र सर्वप्राणीमात्ररूपभूतकूं आश्रयकणरिकैही होवै है ॥ यातैं सोउत्पत्तिनाशवान्पदार्थमात्र अधिभूत इसनामकारिकै कह्याजावैहै ॥ कोईयत्किंचित्पदार्थ ताअधिभूतशब्दकरिकै कह्याजावैनही ॥ इति चतुर्थप्रश्नोत्तरम् ॥४॥ अब (अधिदैवंकिम्) इसपंचमप्रश्नकाउत्तर कथनकरैं हैं (पुरुषश्चाधिदैवतमिति) तहां सर्वकार्यमात्र पूर्णकरेहोवैं जिसने ताकानाम पुरुषहै अथवा शरीररूपसर्वपुरोंविषेजो निवासकरैहै ताकानाम पुरुषहै ऐसापुरुष जो हिरण्यगर्भहै जोहिरण्यगर्भसमष्टिलिंगस्वरूपहै ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सूर्यादिरूपकारिकै चक्षुआदिकसर्वव्यष्टिकरणोंऊपरि अनुग्रहकरैहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (आत्मैवेदमग्रआसीत्पुरुषविधः ॥ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरैं हैं ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (सवैशरीरिप्रथमःसवैपुरुषउच्यते ॥ आदिकर्त्तासभूतानांत्रह्माग्रेसमवर्त्तत) इत्यादिकस्मृतियां कथनकरीहैं ॥ सोहिरण्यगर्भपुरुष आदित्यादिकदेवतोंकूं आश्रयणकारिकै चक्षुआदिककरणोंऊपरि अनुग्रहकरैहै ॥ यातैं सोहिरण्य गर्भपुरुष अधिदैव इसनामकरिकैकह्याजावै है ॥ देवताविषयकध्यानादिक ताअधिदैवशब्दकरिकैकहेजावैंनहीं ॥ इहां (पुरुषश्च) यावचनविषेस्थित च शब्दकरिकै ताहिरण्यगर्भविषे श्रुतिस्मृतिकरिकैसिद्ध प्रसिद्धता कथनकरी ॥ और किसीटीकाविषेतौ (पुरुषश्च) यावचनविषेस्थितचकारकारिकै श्रोत्रादिक चतुर्दशकरणोंकेप्रवर्त्तक दिक् वात अर्क आदिक चतुर्दशदेवतावोंका ग्रहणकरयाहै अर्थात् हिरण्यगर्भपुरुष तथादिक्वातअर्कादिकदेवता सर्वही अधिदैव कहेजावैं हैं इति ॥ इति पंचमप्रश्नोत्तरम् ॥ ५ ॥ अब (अधियज्ञःकः) इसषष्ठप्रश्नकाउत्तर कथनकरैं हैं ॥ (अधियज्ञोहमिति) तहां सर्वयज्ञोंकाअधिष्ठानतारूप तथासर्वयज्ञोंकेफलकाप्रदाता तथासर्वयज्ञोंकाअभिमानीरूप जोविष्णुदेवताहै सोविष्णुदेव पूर्वउक्तविसर्गरूपयज्ञकूंआश्रयणकारिकै स्थितहोवैहै ॥ यातैं सोविष्णु अधियज्ञ इसनामकारिकैकह्याजावैहै ।। जिसविष्णुकूं (यज्ञोवैविष्णुः) यहश्रुतिभी यज्ञरूपकरिकैकथनकरै है ।। ऐसाअंतर्यामीविष्णुरूपअधियज्ञमें वासुदेवहीहूं मैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुहैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै पूर्वषष्ठप्रश्नविषे (कथम्) इसशब्दकारिकै कथनकऱ्याजो सोअधियज्ञ तादात्म्यरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै अथवा अत्यंत अभेदरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै याप्रकारकासंदेहथा तासंदेहकीभी निवृत्तिकरी अर्थात् सो परब्रह्मरूपविष्णु अत्यंत अभेदरूपकरिकैही चिंतनकरणेयोग्यहै इति ।। ऐसाअधियज्ञरूपविष्णु इसमनुष्यदेहविषेही यज्ञरूपकरिकैवर्त्तै है ।। तथा सोविष्णु सर्वव्याप

इसतीसरेप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैंहैं (विसर्गः कर्मसंज्ञितः इति) हे अर्जुन ! इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै द्रव्यकात्यागरूपजोयागहै तथा वैदिकअग्निविषे घृत यवादिकपदार्थोंका प्रक्षेपरूपजोहोमहै तथा ब्राह्मणों केतांईं सुवर्णगौआदिकपदार्थोंकीदक्षिणारूपजोदानहै ता याग होम दान तीनोंविषे त्यागरूपता अनुगतहै ॥ यातैं त्यागकावाचकजोविसर्गशब्दहै ताविसर्गशब्दकरिकै याग होम दान इनतीनोंकाग्रहणकरणा ॥ ऐसा यागहोमदानरूपविसर्गही इहां कर्मशब्दकरिकैक थनकन्याहै ॥ कोई उदासीनक्रियामात्र इहां कर्मशब्दकरिकैकथनकन्यानहीं ॥ कैसाहैसोत्यागरूपविसर्ग ॥ भूतभावोद्भवकरहै अर्थात् स्थावरजंगमरूपभूतोंका जोउत्पत्तिरूपभावहै तथावृद्धिरूपउद्भवहै तिनदोनोंकू करणेहाराहै ॥ यज्ञहोमादिककर्मोंकरिकैही सर्वभूतोंकीउत्पत्ति तथावृद्धि श्रुतिस्मृतिविषेप्रसिद्धही है॥ तहांस्मृति॥ (अग्नौप्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततः प्रजाः ॥) अर्थयह ॥ वैदिकअग्निविषे श्रद्धापूर्वक पाईहुईजाआहुतिहै साआहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यमंडलविषेस्थितहोवैहै ॥ तिसआहुतिविशिष्टआदित्यतैं जलकी वृष्टिहोवैहै ॥ तिसजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिसअन्नतैं स्थावरजंगमरूपप्रजाउत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तिसीअन्नतैं ताप्रजाकीवृद्धिहोवैहै ॥ इसप्रकारकी परंपराकरिकै तेयज्ञहोमादिककर्मही सर्वभूतों के उत्पत्तिवृद्धि का कारणहैं इति ॥ इसीअर्थकूं (तेवाएतेआहुतीउत्क्रामंतः) इत्यादिकश्रुतिभी कथनकरैंहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यहअर्थकन्याहै ॥ मनुष्यादिकभूतोंका जोसात्विकराजसादिरूपभावहै तथाउत्पत्तिरूप उद्भवहै तिनदोनोंकूं जोकरैहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहै ॥ तहां तिन भूतोंकी यज्ञदानादिककर्मोंतैंउत्पत्तितौ (अग्नौप्रास्ताहुतिः) इसपूर्वउक्तस्मृतिवचनकरिकैहीसिद्धहै ॥ इसप्रकार भूतोंकेसात्विकादिकभावकी कर्मोंतैंउत्पत्तिभी (बुद्धिःकर्मानुसारिणी) अर्थयह ॥ इसपुरुषकी आपणेकर्मोंकेअनुसारही सात्विक वाराजस बुद्धिहोवैहे इत्यादिकस्मृतिवचनोंकरिकैसिद्धही है इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यह अर्थकथनकन्याहै ॥ भूतरूपजेभावहोवैं तिनोंकूं भूतभावकहैंहैं अर्थात् स्थावरजंगमरूपजेपदार्थ हैं तिनोंकानाम भूतभावहै ॥ ऐसेभूतभावोंकेउत्पत्तिरूपउद्भवकूंजोकरैहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहैइति ॥ इतितृतीयप्रश्नोत्तरम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (किंतद्ब्रह्म किमध्यात्मं किंकर्म) इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर कथनकन्या अब अधिभूतंकिम् अधिदैवंकिम् अधियज्ञःकःइनतीनप्रश्नोंकाउतर कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) अधिभूतंक्षरोभावःपुरुषश्चाधिदैवतम् ॥ अधियज्ञोहमेवात्रदेहेदेहभृतांवर ॥ ४ ॥ अधिभूतम् । क्षरः । भावः । पुरुषः । च । अधिदैवतम । अधियज्ञः । अहम् । एव । अत्र । देहे । देहभृतां । वर ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेसर्वप्राणियोंकेमध्यविषे श्रेष्ठ अर्जुन

षड्विषे अक्षरकूं अव्याकृतनामाआकाशपर्यंत सर्वजगत्का विधारकत्व कथनकऱ्याहै ॥ सोसर्वजगत्काविधारकपणा ब्रह्मविषेही संभवैहै अन्यकिसीपदार्थ विषे संभवतानहीं ॥ यातैं अक्षरशब्दकरिकै ब्रह्मकाही ग्रहणकरणा इति ॥ शंका—हे भगवन् ! (ओमित्येतदक्षरम्) इत्यादिकश्रुतिविषे तथा (ओमित्येकाक्षरंब्रह्म) इसस्मृतिविषे ओंकाररूपप्रणवकूंही अक्षरकह्याहै ॥ और लोकविषेभी अक्षरशब्द वर्णोंविषेहीरूढहै ॥ तहां (रूढिर्योगमपहरति) ॥ अर्थयह ॥ पदकी रूढिशक्ति तिसपदकेयोगाशक्तिका बाधकहोवैहै ॥ इसन्यायकरिकै तिसरूढिशक्तिकूं (नक्षरतीतिअक्षरम्) इसयोगाशक्तितैंप्रबलता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताअक्षरशब्दकरिकै ओंकाररूपप्रणवकाही ग्रहणकरणा ॥ अथवा (संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरंच) इत्यादिक श्रुतियोंविषे अव्यक्तकूंभी अक्षरकह्याहै ॥ यातैं ताअक्षरशब्दकरिकै अव्यक्तकाही ग्रहणरणा ॥ समाधान ॥ सर्वजगत्का शासितापणा तथाविधारकपणा तथाद्रष्टापणा इत्यादिक जे लिंग पूर्व अक्षरकेकथनकरेहैं तेलिंग ओंकाररूपप्रणवविषे तथामायारूपअव्यक्तविषे संभवतेनहीं ॥ तथा (तस्यप्रकृतिलीनस्य) इसश्रुतिनैं तिसप्रणवकाभी प्रलय कथनकऱ्याहै ॥ तथा (तरत्यविद्यांवितताम्) इसस्मृतिनैं तिसमायारूपअव्यक्तकाभी नाशकथनकऱ्याहै ॥ यातैं इहां अक्षरशब्दकरिकै वर्णात्मकप्रणवका तथामायारूपअव्यक्तका ग्रहणकऱ्याजावैनहीं और श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे जो प्रणवकूं अक्षरकह्याहै सोताकेनित्यपणेकूंलैके अक्षर नहींकह्या किंतु जैसे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे ज्ञानकूं श्रुतिविषेसत्यकह्याहै तैसे अक्षरब्रह्मकावाचकहोणेतैं ताप्रणवकूं अक्षरकह्याहै ॥ इसीप्रकार अव्यक्तकूंजो श्रुतिविषे अक्षरकह्याहै सो ताकेनित्यपणेकूंलैके नहींकह्या किंतु स्वकार्यकीअपेक्षाकरिकै सोअव्यक्त चिरकालपर्यंतरहैहै ॥ यातैं ताकूं अक्षरकह्याहै ॥ जिसकारणतैं (क्षरंप्रधानममृताक्षरंहरः) यहश्रुति प्रधानरूपअव्यक्तकूं नाशवान् कहिकै परब्रह्मकूंही अक्षरकहैहै ॥ और पूर्वकथनकरेहुए जगत्विधारकत्वादिकअक्षरकेलिंग वर्णात्मकप्रणवविषे संभवैनहीं ॥ यातैं इहांअक्षरशब्दकी सायोगाशक्तिही रूढशक्तितैंप्रबलहै यातैं इहां अक्षरशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितचैतन्यकाही ग्रहण करणा ॥ प्रणवका तथाअव्यक्तका ताअक्षरशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ तिसप्रणवअव्यक्तकीव्यावृत्तिकरणेवासतैहीं श्रीभगवान्नैं ताअक्षरका (परमं) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ इतनेपर्यंत (किंतद्ब्रह्म) ॥ इसप्रथमप्रश्नकाउत्तर कथनकरया ॥ १ ॥ अब (किमध्यात्मम्) इसद्वितीयप्रश्नकाउत्तर कथनकरेहैं (स्वभावोऽध्यात्ममुच्यतेइति) हेअर्जुन ! जोउत्पत्तिनाशतैंरहित अक्षर पूर्व ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै तिसअक्षरब्रह्मका जोस्वभावहै अर्थात् तिसअक्षरब्रह्मका स्वरूपभूतजोप्रत्यक्चैतन्यहै सोप्रत्यक्चैतन्यही इसदेहरूपमिथ्याआत्माकूं आश्रयणकरिकै भोक्तारूपतैंवर्त्तमानहुआ आध्यात्म इसशब्द करिकैकह्याजावै है ॥ तिसभोक्ताचैतन्यतैंभिन्न श्रोत्रादिककरणोंकासमूह अध्यात्मशब्दकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्नोत्तरम् ॥ २ ॥ अब (किंकर्म)

टीका । तहां जिसक्रमकरिकै शिष्यनैं प्रश्नकरेहोवे तिसीक्रमकरिकै जबी गुरु तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरैंहै तबी अनायासकरिकैही तिसप्रश्नकरणे हारेशिष्यकेइष्टकीसिद्धिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान इसप्रथमश्लोकविषे यथाक्रमकरिकै तीनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ इसप्रकार द्वितियिश्लोकविषेभी तीनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ और तीसरेश्लोकविषेतो एकहीप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरतेभयेहैं इति ॥ तहां ब्रह्मशब्दकरिकै निरुपाधिकब्रह्मही इहां विवक्षितहै सोपाधिकब्रह्म इहां ब्रह्मशब्दकरिकै विवक्षितनहीं है ॥ इसप्रकारका प्रथमप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ॥ तहां (नक्षरति ननश्यतीतिअक्षरम् ॥) अर्थयह ॥ ज्ञानकरिकै तथा अज्ञानकरिकै तथादेशकालकरिकै तथाकिसीअन्यकरिकै जो नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकूं अक्षर कहैंहैं ॥ अथवा ॥ (अश्नुतेसर्वमितिअक्षरम् ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्नि लोहेकेपिंडकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै तैसे अव्याकृतकूं तथाताकेसर्व कार्यकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकै जोस्थितहोवै ताकूं अक्षरकहैंहैं अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहित तथासर्वत्रव्यापक वस्तुकानाम अक्षरहै ॥ इसीअक्षरकूं बृह दारण्यकउपनिषद्विषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां याज्ञवल्क्यमुनिनैंगार्गीकेप्रति यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ (तद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वम दीर्घम्) अर्थयह ॥ हेगार्गि ! ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण इसअक्षरकूं स्थूलभावतैंरहित तथाअणुभावतैंरहित तथाह्रस्वभावतैंरहित तथादीर्घभावतैंरहित कथनकरैंहैं इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै मध्यविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि ता गार्गीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ (एतस्याक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्यचंद्रमसौविधृतौतिष्ठतः नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गि ! इसी अक्षरके प्रशासनविषे यहसूर्यचंद्रमा नियमपूर्वक स्थितहै ॥ इसअक्षरतैंभिन्नदूसराकोईद्रष्टाहैनहीं किंतु यहअक्षरही सर्वकाद्रष्टाहै इति ॥ इसप्रकारकावचन मध्यविषेकहिकै अंतविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारका उपसंहारकरताभयाहै ॥ (एतस्मिन्नुखल्वक्षरेगार्ग्याकाशश्चओत श्चप्रोतश्च) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गि ! इसीअक्षरविषे यहअव्याकृतआकाश ओतप्रोतहै इति॥इसप्रकार तात्पर्य केनिश्चयकरावणेहारे उपक्रमउपसंहारादिकलिंगोंतैं सर्वउ पाधियोंतैंरहित तथासूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्काप्रशासिता तथाअव्याकृतरूपआकाशपर्यंत सर्वप्रपंचकाधारणकरणेहारा तथाइसशरीरइंद्रियरूपसंघातविषेविज्ञाता ऐसानिरुपाधिचेतन्यही ताअक्षरशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ ऐसाचैतन्यस्वरूपअक्षरही इहां ब्रह्मशब्दकरिकैविवक्षितहै ॥ इसीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै ताअक्षरका विशेषणकहैंहैं (परममिति) अर्थात् सोअक्षर स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यचंद्रमादिकोंका शासितापणा तथासर्वजडजगत्का धारकपणा तथासर्वकाद्रष्टापणा इत्यादिकलिंग जे श्रुतिविषेअक्षरकेकहैंहैं ते सर्वलिंग ब्रह्मविषेहीसंभवैंहैं ब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषे तेलिंग संभवतेनहीं ॥ यातैं सोअक्षरब्रह्मरूपहीहै इति ॥ यहवार्ता व्यासभगवाननें ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (अक्षरमंबरांतधृतेः) ॥ अर्थयह ॥ बृहदारण्यकउपनि

धिदैव आप किसकूंकहतेहो अर्थात् देवताविषयजोध्यानहै ताकूं अधिदैव कहतेहो अथवा देवतावोंके आदित्यमंडलादिकोंविषेअनुस्यूत जोचैतन्यहै ताकूं अधिदैव कहतेहो ॥ इतिपंचमप्रश्नः॥५॥और हेभगवन्!यज्ञकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अधियज्ञहै सोअधियज्ञ इहां कौनहै अर्थात् किसीदेवताविशेषकानाम अधियज्ञहै अथवा परब्रह्मकानाम अधियज्ञहै सोअधियज्ञभी इसअधिकारीपुरुषनैं किसप्रकारकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै अर्थात् तादात्म्यरूपकरिकै चिंतनकरणे योग्यहै अथवा अत्यंतअभेदरूपकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै तथा सर्वप्रकारतैंभी सोअधियज्ञ इसदेहविषेहीरहै है अथवा इसदेहतैंबाह्यरहै है जो कहो इसदेहविषेरहै है तौभी इसदेहविषे सोअधियज्ञ कौनहै अर्थात् बुद्धि आदिरूपहै अथवा तिनबुद्धिआदिकों तैंभिन्नहै।।इतिषष्ठप्रश्नः।।६।।और हेभगवन् मरणकालविषे श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकासमूह सावधानतातैंरहितहोवैहै यातैं तिसकालविषे चित्तकीसावधानता संभवतीनहीं ॥ ऐसेमरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषों नैं किसप्रकारकरिकै तूंपरमेश्वर जानणेयोग्यहोवैहै ॥ इतिसप्तमप्रश्नः ।। ७ ।। हेभगवन् ! सर्वज्ञहोणेतैं तथापरमकृपालुहोणेतैं आप यहसर्व अर्थ मैंशरणागतशिष्यकेप्रति कथनकरौ इति॥ इहां अर्जुननैं श्रीभगवान्के (हेपुरुषोत्तम हे मधुसूदन) यहदोसंबोधनकथनकरेहैं ।। तहां हेअर्जुन ! तुम हम दोनों समानहैं ।। यातैं तूंहमारेसैं तिनअध्यात्मादिकोंका स्वरूप किसवास्तेपूछताहै ।। ऐसीभगवान्कीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुननैं हेपुरुषोत्तम यहसंबोधनकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ।। सर्वपुरुषोंविषे सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकैजोउत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ऐसेसर्वज्ञपुरुषोत्तम आपहीहो ।। यातैं आपकूं कोईभीपदार्थ अज्ञात नहीं है ।। किंतु आपकूं करामलककीन्याईं सर्वपदार्थ अपरोक्षही हैं ।। और अल्पज्ञताकरिकैमैंअर्जुनकूं तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञानहैनहीं यातैं आपही सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरौ इति ॥ और (हेमधुसूदन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकऱ्या आप परमकरुणाकरिकैयुक्तहो यातैं मधुआदिकदैत्योंकूं हननकरिकै महान् आयासकरिकैभी सर्वउपद्रवोंकीनिवृत्तिकरतेहो ।। ऐसेआपकूं विनाहीआयासकरिकै इसहमारे संशयरूपीतुच्छउपद्रवकीनिवृत्तिकरणी उचितही हैइति ॥ १ ॥ २ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरिकै अर्जुननैं करेजेसप्तप्रश्नहैं तिनसप्तप्रश्नोंकेउत्तरकूं श्रीभगवान् यथाक्रमतैं तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ अक्षरंब्रह्मपरमंस्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ॥ भूतभावोद्भवकरोविसर्गःकर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ अक्षरम् । ब्रह्म । परमम् । स्वभावः । अध्यात्मम् । उच्यते । भूतभावोद्भवकरः । विसर्गः । कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! परम अक्षर ब्रह्म कह्याजावैहै तथा स्वभाव अध्यात्म कह्याजावै है तथा भूतोंकीउत्पत्तिवृद्धिकरणेहारा यज्ञदानादिक कर्मकह्याजावैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ अष्टमाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायकेअंतविषे (ते ब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नम्) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं सप्तपदार्थ ज्ञेयत्वरूपकरिकै सूत्रितकरे तिन सूत्ररूपवचनकरिकैकथनकरेहुए सप्तपदार्थोंकाहीव्याख्यानरूप यहसमग्रअष्टमअध्याय श्रीभगवान्नैं प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्व तिससूत्ररूपवचनकरिकै सामान्यरूपतैंजानेहुए तिनसप्तपदार्थोंकूं पुनःविशेषरूपतैं जानणकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै तिनसप्तपदार्थोंकेस्वरूपका प्रश्नकरैहै ।

(म. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ किंतद्ब्रह्मकिमध्यात्मंकिंकर्मपुरुषोत्तम ॥ अधिभूतंच किंप्रोक्तमधिदैवंकिमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ञःकथंकोत्रदेहेस्मिन्मधुसूदन ॥ प्रयाणकालेचकथंज्ञेयोसिनियतात्मभिः ॥ २ ॥ किं । तत् । ब्रह्म । कम् । अध्यातमम् । किं । कर्म । पुरुषोत्तम । अधिभूतम् । च । किं । प्रोक्तम् । अधिदैवम् । किम् । उच्यते । अधियज्ञः । कथम् । कः । अत्र । दे हे । अस्मिन् । मधुसूदन । प्रयाणकाले । च । कथम् । ज्ञेयः । असि । नियतात्मभिः ॥ १ ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ ! मधुसूदन सो ब्रह्म कौनहै तथा अध्यात्म कौनहै तथा कर्म कौनहै तथा अधिभूत कौन कह्याथा तथा अधिदैव कौन कहीताहै तथा इहां अधियज्ञ कौन है सोअधियज्ञ किसप्रकारकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै तथा सोअधियज्ञ इस देहविषे वर्तै है अथवा देहतैंबाह्यवर्तै है तथा मरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषोंनैंतूंपरमेश्वर किसप्रकारकरिकै जानणेयोग्य है ॥ १ ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! पूर्वज्ञेयरूपकरिकै आपनैं कथनकऱ्याजोब्रह्महै सोब्रह्म कौनहै अर्थात् सोब्रह्म सोपाधिकहै अथवा निरुपाधिक है ॥ इतिप्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ तथा हेभगवन् ! आत्माकेसंबंधवालाहोणेतैं आत्मशब्दकरिकैप्रतिपादित जोयहदेहहै तादेहरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अध्यात्म है सोअध्यात्म कौनहै अर्थात् श्रोत्रादिककरणोंकेसमूहकानाम अध्यात्महै अथवा प्रत्यक्चैतन्यकानाम अध्यात्महै ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ और हेभगवन् ! (कर्मचाखिलम्) इसपूर्वउक्तवचनविषे आपनैं कथनकऱ्याजोकर्म है सोकर्म कौनहै अर्थात् सोकर्म यज्ञरूपहै अथवा तिसयज्ञतैंकोईअन्यवस्तुहै जिसकारणतैं (विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपिच) इसश्रुतिविषे यज्ञ कर्म दोनों भिन्नभिन्नही कथनकरे हैं ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ और हेभगवन् ! भूतोंकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकूं अधिभूतकहैं हैं सोअधिभूत आप किसकूंकहतेहो अर्थात् ताअधिभूतशब्दकरिकै आपकूं पृथिवीआदिकभूतोंकूंआश्रयणकरिकैस्थित यत्किंचितकार्य विवक्षितहै अथवा संपूर्णकार्यमात्र विवक्षितहै ॥ इतिचतुर्थप्रश्नः ॥ ४ ॥ और हेभगवन् ! दैवकूंआश्रयणकरिकै जोस्थितहोवै ताकानाम अधिदैवहै सोअ

तथा शरीरकूंआश्रयणकरिकैप्रकाशमानहोणेतैं अध्यात्मसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ तथाउपाधिकृतसर्वपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्आत्माहै तिसआत्माकूंभी तेअधिकारीजन जानैंहैं तथा तिसतत्त्वंपदार्थविषयक ज्ञानके जितनेक ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपनिवास श्रवण मनन निदिध्यासन इत्यादिक साधनहैं जेसाधन तिसज्ञानरूपफलकी नियमतैंप्राप्तिकरैंहैं तिन संपूर्णसाधनोंकूंभी तेअधिकारीपुरुष जानैंहैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञंचयेविदुः ॥ प्रयाणकालेपिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ साधिभूताधिदैवम् । माम् । साधियज्ञम् । च । ये । विदुः । प्रयाणकाले । अपि । च । माम् ते । विदुः । युक्तचेतसः ॥ ३० ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जेअधिकारीजन अधिभूतअधिदैवदोनोंसहित तथा अधियज्ञसहित मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैंहैं तेअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरविषे युक्तचित्तवालेहुए मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूंही जानैंहैं ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसप्रकारकेहमारेभक्तजनोंके मरणकालविषेभीइंद्रियादिककरणोंकी विवशताकरिकै मैंपरमेश्वरकेविस्मरणकीशंका तुमनैं करणीनहीं ॥ जिसकारणतैं अधिभूतसहित तथाअधिदैवसहित तथाअधियज्ञसहित मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन सर्वदा चिंतनकरैंहैं तेअधिकारीजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषे समाहितचित्तवालेहुए तापूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढतातैं प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषेभी मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूंहीजानैंहैं अर्थात् तामरणकालविषे इंद्रियादिककरणोंकेअसावधानहुएभी मैंपरमेश्वरकीकृपाकरिकै तथापूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढतातैं तिनपुरुषोंकेचित्तकीवृत्ति मैंपरमेश्वरकेआकारहीहोवैहै ॥ दूसरेकिसीअनात्मपदार्थकेआकारहोवैनहीं ॥ यातैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेभक्तियोगतैं कृतार्थहीहोवैंहैं तहां अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ इनशब्दोंके अर्थकूं श्रीभगवान् आपही आगलेअष्टमअध्यायविषे अर्जुनकेप्रश्नपूर्वक स्पष्टकरिकैकथनकरैंगे ॥ यातैं इहां इनशब्दोंका अर्थ कथनकऱ्यानहीं इति ॥ तहां इस सप्तमअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं उत्तमअधिकारीकेप्रतितौ लक्षणावृत्तिकरिकै तत्पदप्रतिपाद्य ज्ञेयब्रह्म कथनकऱ्या और मध्यमअधिकारीकेप्रतितौ शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै तत्पदप्रतिपाद्यध्येयब्रह्म कथनकऱ्या इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ छ ॥

ताउत्सर्गका अपवादरूपहै ॥ सामान्यतैं सर्वत्र जिसकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं उत्सर्गकहैंहैं ॥ और किसीकस्थानविशेषविषेजाकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं अपवादकहैंहैं ॥ तहां जिसस्थानविषे अपवादकीप्रवृत्तिहोवैहै तिसस्थानविषे उत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैनहीं किंतु तिसस्थानतैंभिन्नस्थानविषेही ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे (नहिंस्यात्सर्वाणिभूतानि) ॥ यहसर्वभूतोंके हिंसाकानिषेधकरणेहारावचनतौ उत्सर्गरूपहै॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत॥) यह यज्ञविषेपशुकीहिंसाकूंविधानकरणेहारावचन अपवादरूपहै ताअपवादस्थानविषे तिसउत्सर्गकी प्रवृत्तिहोवैनहीं किंतु तिसतैंभिन्नस्थानविषेही ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहै अर्थात् यज्ञतैं तथायुद्धतैं भिन्नस्थानविषेकिसीभीप्राणीकीहिंसानहींकरणी ॥ याप्रकारका ताउत्सर्गवाक्यकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तैसे (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसउत्सर्गवचनकीभी तिनआर्त्तादिकच्यारिप्रकारकेसुकृतीजनोंकूंछोडिकै अन्यत्रही प्रवृत्तिहोवैहै अर्थात् तिनहमारेभक्तोंतैंभिन्न अन्यसर्वप्राणी संमोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ इसीप्रकारकाउत्सर्ग पूर्वभी (त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदंजगत् ॥ मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम्) इसश्लोकविषे कथनकऱ्याथा ॥ यातैं (सर्वभूतानिसंमोहंयांति । चतुर्विधाभजंतेमाम्) इत्यादिकवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकेसंपादनकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं सर्वदा प्रयत्नकरणा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुनके वक्ष्यमाणप्रश्नकेउत्थापनकरणेवासतै श्रीभगवान् सूत्रभूतदोश्लोकोंकूं कथनकरैंहैं ॥ इसीसूत्रभूतदोश्लोकोंका अगलाअष्टमअध्याय व्याख्यानरूपहोवैगा ।

(मू. श्लो.) जरामरणमोक्षायमामाश्रित्ययतंतिये ॥ तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलम् ॥ २९ ॥ जरामरणमोक्षाय । माम् । आश्रित्य । यतंति । ये । ते । ब्रह्म । तत् । विदुः । कृत्स्नम् अध्यात्मम् । कर्म । च । अखिलम् ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! जेपुरुष जरामरणादिकोंकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंसगुणपरमेश्वरकूंआश्रयणकरिकै प्रयत्नकरैंहैं तेपुरुष तत्पदकेलक्ष्य अर्थरूप निर्गुणब्रह्मकूं तथाअपरिच्छिन्न त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूपआत्माकूं तथा संपूर्ण श्रवणादिकसाधनोंकूं जानैंहैं ॥२९॥ इतिपदार्थः॥

टीका । हे अर्जुन ! संसारकेजरामरणादिकदुःखातवैराग्यकूं प्राप्तहुए जेअधिकारीजन तिनजरामरणादिकनानाप्रकारकेदुःसहदुःखोंके निवृत्तकरणेवासतै तिनसर्वदुःखोंके निवृत्तकरणेहारेमैंसगुणपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै अर्थात् इतरसर्वतैंविमुखहोइकै एकमैंपरमेश्वरकेशरणकूं प्राप्तहोइ प्रयत्नकरैंहैं अर्थात् फलकीइच्छातैं रहितहोइकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरेहुए शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरैंहैं तेअधिकारीपुरुष क्रमकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहुए तिसब्रह्मकूं जानैंहैं अर्थात् इस सर्वजगतकाकारणरूपजामायाहै तामायाकाअधिष्ठानरूप तथातत्पदकालक्ष्यअर्थरूप तथासर्वउपाधियोंतैंपरे ऐसेनिर्गुणशुद्धब्रह्मकूं तेअधिकारीपुरुष जानैं हैं ॥

शंका—हे भगवन् (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकारिके पूर्व आपने सर्वभूतप्राणियोंकूं संमोहकीप्राप्ति कथनकरी ॥ और इसवचनतैंभीपूर्व (चतुर्विधाभजंतेमाम्) इसवचनकारिके आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी या च्यारिप्रकारकेभक्तजनोंकूं परमेश्वरकेभजनकीहीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ तेदोनोंवचन परस्पर विरुद्धअर्थकूंही कथनकरेंहैं ॥ यातें (चतुर्विधाभजंतेमाम्) इसवचनकूं जोआप प्रमाणभूतमानौंगे तौ (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) यह आपकावचन असंगत होवैगा ॥ और (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकूं जोआप प्रमाणभूतमानौंगे तौ (चतुर्विधाभजंतेमाम्) यहआपकावचन असंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए पुण्यकर्मोंकीअतिशयताकारिके जिनपुरुषोंके सर्वपापकर्म नाशहोइगयेहैं तेभक्तजनही मैंपरमेश्वरकाआराधनकरैंहैं ॥ ऐसेभक्तजनही (चतुर्विधाभजंतेमाम्) इसवचनकारिके पूर्व कथनकरेंहैं ॥ और (सवभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकरिकेतौ तिनपुण्यवान्भक्तजनों तैं भिन्नहीप्राणियोंका कथनकर्‍याहै ॥ यातें तिनदोनोंवचनोंका परस्परविरोध होवैनहीं याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम् ॥ तेद्वंद्वमोहनिर्मुक्ताभजंतेमांदृढव्रताः ॥२८॥ येषाम् । तु । अंतगतम् । पापम् । जनानाम् । पुण्यकर्मणाम् । ते । द्वंद्वमोहनिर्मुक्ताः । भजंते । माम् । दृढव्रताः ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पुनः जिन पुण्यकर्मवाले जनोंका पाप नाशकूंप्राप्तहुआहै तेपुरुष ताद्वंद्वमोहतैंरहितहुए दृढसंकल्पवालेहुए मैंपरमेश्वरकूं भजेंहैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मोंकासंचयकर्‍याहै जिनोंनैं याकारणतैंही सफलहैजन्मजिनोंका याकारणतैंही इतरसर्वलोकोंतैंविलक्षण ऐसेजिन अधिकारीपुरुषोंका तिसतिसपुण्यकर्मोंकारिके ज्ञानकाप्रतिबंधकपाप नाशकूंप्राप्तहुआहै तेपुरुष ताप्रतिबंधरूपपापकेअभावहुए द्वंद्वमोहनिर्मुक्तहुए अर्थात् सोपापहैनिमित्तकारणजिसका ऐसा जो रागद्वेषादिकजन्य अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकविपर्ययरूपमोहहै तिसद्वंद्वमोहनैं तेपुरुष पुनरावृत्तिकेअयोग्यदोखिके त्यागकियेहैं ऐसेद्वंद्वमोहतैंरहितपुरुष दृढव्रतहुए क्या अचलसंकल्पवालेहुए अर्थात् सर्वप्रकारतैं यहपरमेश्वरहीभजनकरणेयोग्यहै सोपरमेश्वर इसप्रकारकाहीहै याप्रकारकाजो शास्त्रप्रमाणजन्य तथाअप्रामाण्यशंकातैंरहित ज्ञानहै ताज्ञानवालेहुए मैंपरमेश्वरकूं आराधानकरैंहैं अर्थात् अनन्यशरणहुएमैंपरमेश्वरकाही सेवन करैंहैं ॥ ऐसेअधिकारीजनही (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनविषे सुकृतिशब्दकारिके कथनकरेंहैं ॥ यातें यहअर्थ सिद्धभया (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) यहवचनतौ उत्सर्गरूपहै ॥ और तिनसर्वभूतप्राणियोंकेमध्य विषे जेपुरुष पुण्यकर्मवालेहैं तेपुरुष तिससंमोहतैंरहितहुए मैंपरमेश्वरकूंभजेंहैं इस अर्थकूंबोधनकरणेहाराजो (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन) यहपूर्वउक्तवचनहै तथा (येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम्) यहवचनहै सोयहवचन

तेनहीं किंतु तेभक्तजनही हमारीमायाकरिकैनहीं मोहितहोणे तैं मैंपरमेश्वकूंवास्तवरूपकरिकैजानैं हैं ॥ इसीकारणतैंही मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं बहुत मनुष्य मैंपरमेश्वरकूंभी कोईजीवविशेषमानतेहुए मैंपरमेश्वका आराधनकरतेनहीं किंतु इंद्रादिकेदेवतावोंकाही आराधनकरैं हैं ॥ इहां (मांतु) यावचन विषेस्थितजो तु यहशब्दहै ता तुशब्दकरिकै श्रीभगवाननैं तिनअभक्तप्राणियोंविषे परमेश्वरविषयकज्ञानका प्रतिबंध सूचनकरयाहै अर्थात् किसीप्रतिबंधकेवशतैं तेअभक्तलोक मैंपरमेश्वरकूं वास्तवरूपतैं जानिसकतेनहीं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपके ज्ञानकाजो प्रतिबंधहै ता प्रतिबंधविषे पूर्व योगमायाकूं हेतुरूपता कथनकरी ॥ अब ताप्रतिबंधविषे देहइंद्रियरूपसंघातकेअभिमानकी अतिशयतापूर्वकभोगोंविषे अभिनिवेशरूप दूसरेहेतुकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) इच्छाद्वेषसमुत्थेनद्वंद्वमोहेनभारत ॥ सर्वभूतानिसंमोहंसर्गेयांतिपरंतप ॥ २७ ॥ इच्छाद्वेषसमुत्थेन । द्वंद्वमोहेन । भारत । सर्वभूतानि । संमोहम् । सर्गे । यांति । परंतप ॥२७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभारत ! हेपरंतप ! यहैंसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीरकीउत्पत्तितैं अनंतर इच्छाद्वेषदोनों तैंउत्पन्नहुए शीतउष्णादिकद्वंद्वनिमित्तकमोहकरिकै संमोहकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भरतवंशविषेउत्पन्नहुआ तथाशत्रुवोंकूंनाशकरणेहारा ॥ अर्जुन अनुकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजो यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीइच्छाहै तथा प्रतिकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजो यहवस्तु हमारेकूंमतप्राप्तहोवैयाप्रकारकाद्वेषहै ताइच्छाद्वेषदोनोंकरिकैउत्पन्नहुआ तथा शीतउष्ण सुखदुःख क्षुधापिपासा इत्यादिकद्वंद्वधर्म हैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिक विपर्ययरूपमोहहै तामोहकरिकै यहसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यतारूप संमोहकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ इहां (हे भारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे कुलकीमहिमा कथनकरी ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकरिकै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशक्ति कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया ॥ ऐसेकुलमहिमाकरिकै तथास्वरूपशक्तिकरिकै युक्त तैंअर्जुनकूं सोद्वंद्वमोहरूपशत्रु पराजयकरणेविषेसमर्थनहीं है किंतु तूं अर्जुनही तिसद्वंद्वमोहकूं पराजयकरणेविषेसमर्थ हैं इति ॥ इहां श्रीभगवानका यहतात्पर्य है ॥ ताइच्छाद्वेषतैंरहित कोईभीभूतप्राणी हैंनहीं किंतु सर्वभूतप्राणी ताइच्छाद्वेषकरिकैविशिष्टहैं ॥ और ताइच्छाद्वेषकरिकैआविष्टपुरुषकूं बाह्यवस्तुविषयकज्ञानभी संभवतानहीं तौ तिसपुरुषकूं अंतरआत्मविषयकज्ञान कैसेहोवैगा किंतु नहींहोवैगा ॥ यातैं रागद्वेषकरिकैव्याकुलहुए अंतःकरणवालेहोणेतैं तेसर्वभूतप्राणी मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानतेनहीं ॥ इसीकारणतैं भजनकरणेयोग्यभी मैंपरमेश्वरकूं भजतेनहीं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥

आवरणकरिकै तावस्तुके अविद्यमानअयथार्थस्वरूपकूंदिखावणा यहमायाकास्वभाव लौकिकऐंद्रजालिकमायाविषेभी प्रसिद्धही है इति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ (योगमाया) यावचनका यहअर्थकन्याहै ॥ आपणीआवरणशक्तिकरिकै इसपुरुषकूं जन्ममरणरूपदुःखकेप्रवाहसाथि जा जोडदेवै ताकानाम योगाहै ऐसीयोगाजामायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥ और भगवान्भाष्यकारोंनैंतौ (योगमाया) इसवचनका यहअर्थ कथन कन्याहै ॥ सत्त्वादिकतीनगुणोंकाजोसंबंधहै ताकानाम योगहै तायोगवालीजामायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (योगमायासमावृतः) इस वचनविषे योग मायासमावृतः यहदोपद निकासेहैं तहां चित्तकानिरोधरूपयोगहैविद्यमानजिसविषे ताकानाम योगहै ॥ याप्रकारका तायोगशब्दकाअर्थकरिकै योगिन्इसशब्दकीन्याई सोयोगशब्द अर्जुनकासंबोधन अंगीकारकन्याहै अर्थात् हेयोगिन् मायाकरिकै आवृतहुआ मैंपरमेश्वर तिनसर्वलोकोंकूं प्रगटहोतानहीं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार मैंपरमेश्वरकेअधीनजामाया है तास्वाधीनमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सर्वभूतोंकूं मोहकी प्राप्ति करूंहूं ॥ तथा आपभैंपरमेश्वर प्रतिबंधतैंरहितज्ञानशक्तिवालाहूं यातैं मैंपरमेश्वरतौ तिनसर्वभूतोंकूंजानताहूं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं मेरीभक्तितैंरहित कोईभीप्राणिजानतानहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) वेदाहंसमतीतानिवर्तमानानिचार्जुन ॥ भविष्याणिचभूतानिमांतुवेदनकश्चन ॥ २६ ॥ वेद । अहम् । समतीतानि । वर्त्तमानानि । च । अर्जुन । भविष्याणि । च । भूतानि । माम् । तु । वेद । न । कश्चन ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर पूर्वव्यतीतहुए तथा अबीवर्त्तमान तथा आगेहोणेहारे सर्वभूतोंकूं जानताहूं और मैंपरमेश्वरकूं तौ कोईभीअभक्त नहीं जानै है ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! प्रतिबंधतैंरहित सर्वविषयकज्ञानवाला मैंपरमेश्वर आपणीमायाकरिकै तिनसर्वलोकोंकूमोहकीप्राप्तिकरताहुआभी चिरकालकेनष्टहुए तथाअबीवर्त्तमान तथाआगेहोणेहारे जितनेक तीनकालवर्त्ति स्थावरजंगमरूपभूतहैं तिनसर्वोंकूं अपरोक्षहीजानताहूं ॥ इसीकारणतैंही मैंसर्वज्ञपरमेश्वरहूं ॥ इसअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयकरणानहीं ॥ ऐसेसर्वदर्शीभीमैंपरमेश्वरकूं मेरीमायाकरिकैमोहितहुआ कोईभीप्राणी जानतानहीं अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध ऐंद्रजालिकमायावीपुरुषकी मायाकरिकैमोहितहुएलोक तामायावीपुरुषकूं जानिसकतेनहीं किंतुतामायावीपुरुषके अनुग्रहकापात्रभूतजे तिसमायावीपुरुषकेपुत्रादिकहैं तेपुत्रादिकही तिसमायावीपुरुषकूंजानै हैं॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहकेपात्रभूत जेहमारेभक्तजनहैं तिनों तैंभिन्न दूसरेसर्वप्राणी हमारीयोगमायाकरिकैमोहितहोणे तैं मैंपरमेश्वकूंजानिसक

पदार्थोंकूं हरणकरणेहारेहो ॥ तथा श्रीदामादिकपरमरंकोंकेप्रति महान्‌वैभवकीप्राप्ति करणेहारेहो तथा एकहीकालविषे षोडशसहस्र दिव्यरूपोंकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा अपरिमितगुणोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा महान्‌महिमावालेहो ॥ तथा नारदमार्कंडेय इत्यादिकमहान्‌मुनियोंकेसमुदायकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदिव्यगुण आपकेविषेहैं ॥ जेदिव्यगुण किसीभीजीवविषेसंभवतेनहीं किंतु ईश्वरविषेही तेगुण संभवै हैं ॥ ऐसे आपपरमेश्वरविषे अविवेकीपुरुषोंकीभी सामनुष्यत्वबुद्धि तथा जीवत्वबुद्धि कैसेहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं निवृत्तकरतेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) नाहंप्रकाशःसर्वस्ययोगमायासमावृतः ॥ मूढोयंनाभिजानातिलोकोमामजमव्ययम् ॥ २५ ॥ न । अहं । प्रकाशः । सर्वस्य । योगमायासमावृतः । मूढः अयम् । न । अभिजानाति । लोकः । माम् । अजम् । अव्ययम्॥२५॥इति पदच्छेदः॥हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं प्रगट नहींहोवूंहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर योगमायाकरिकैआवृतहूं तिसकारणतैं मूढहुआ यह लोक जन्मतैं रहित तथामरणतैंरहित मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानैं हैं ॥ २५ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटनहींहोवूंहूं किंतु मैंपरमेश्वरकेजेकोईभक्तहैं तिनभक्तोंकूंही मैंपरमेश्वर आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटहोवूंहूं ॥ शंका—हे भगवन् तिनसर्वलोकोंकूं आप क्यों नहींप्रगटहोतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तानहींप्रगटहोणेविषे हेतुकूंकहैं हैं (योगमायासमावृतःइति) इहां मैं परमेश्वरकीभक्तितैंरहितप्राणी मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपकरिकैनहींजानैं याप्रकारकाजो मैंपरमेश्वरका संकल्पहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकेवशवर्त्ति जोअनादिअनिर्वचनीयअविद्यारूपमायाहै ताकानाम योगमायाहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकेसंकल्पकेअनुसारवर्त्तणेहारीमायाकानाम योगमायाहै ॥ तायोगमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सम्यक्‌आवृतहुआहूं अर्थात् हमारेस्वरूपविषयकज्ञानके कारणकेविद्यमानहुएभी तायोगमायानैं तिसज्ञानकीविषयताकेअयोग्य कऱ्याहूं ॥ इसीकारणतैं तिनसर्वलोकोंकूं मैंपरमेश्वर आपणेवास्तवस्वरूपकरिकैप्रगटहोतानहीं ॥ यातैं (परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमम्) इसवचनकरिकै जोपूर्व आपणे सोपाधिकस्वरूपका तथानिरुपाधिकस्वरूपका अज्ञान लोकोंकूं कह्याथा तास्वरूपकेअज्ञानविषे मैंपरमेश्वरका सोमायाकाप्रेरकसंकल्पही कारण है इति ॥ इसीकारणतैं तिसहमारीयोगमायाकरिकैमूढहुए अर्थात् आवृतज्ञानशक्तिवालेहुए यह पूर्वउक्तआर्त्तादिकच्यारिप्रकारकेभक्तजनोंतैंविलक्षणलोक मैंपरमेश्वरविषयकज्ञानकेकारणकेविद्यमानहुएभी उत्पत्तिनाशतैंरहितमैंपरमेश्वरकूं जानिसकतेनहीं किंतु तेमूढलोक विपरीतदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं कोईमनुष्यविशेषही मानतेहैं ॥ याकारणतैंही तेविपरीतदृष्टिवाले मूढलोक मैंपरमेश्वरकापरित्यागकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकूंही भजैं हैं ॥ तहां वस्तुकेविद्यमानयथार्थस्वरूपकूं

कहिये सर्वकाकारणरूपभीमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिमापन्नं कहिये मत्स्यकूर्मादिकअवताररूपकरिकै कार्यभावकूंप्राप्तहुआ मानैं हैं ॥ शंका—हे भगवन् ! तेमनुष्य तुम्हारेस्वरूपकाविवेक किसकारणतैंनहींकरैं हैं ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहैं हैं (अबुद्धयःइति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं तेपुरुष मेरेस्वरूपकेविवेककरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं तिसकारणतैं तेपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूंप्राप्तहुआ मानैं हैं ॥ तहां अव्यक्तरूपपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकीप्राप्तिमानणेविषे कथनकऱ्याजो (अबुद्धयः) यहहेतुहै ताहेतुकूं अब स्पष्टकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ (परंभावमजानंतइति) हे अर्जुन ! मैं परमेश्वरकाजो परअव्ययभावहै अर्थात मैंपरमेश्वरकाजो सर्वजगत्काकारणरूप तथानित्यसोपाधिकस्वरूपहै तिसहमारेसोपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं तथा मैंपरमेश्वरकाजो अनुत्तमभावहै अर्थात (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कथनकऱ्याजो सर्व तैंउत्कृष्ट तथाअतिशयतातैंरहित तथाअद्वितीयपरमानंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित मैंपरमेश्वरका निरुपाधिकस्वरूपहै ॥ तिसमेरेनिरुपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैं तेविवेकहीनपुरुष अन्यजीवोंकीन्यांई हमारेलीलामात्रकार्यकूंदेखिकै मेरेकूंभी कोईजीवविशेषही मानते हैं ॥ ईश्वररूप हमारेकूं मानतेनहीं इसकारणतैं तेअविवेकीपुरुषमैंपरमेश्वरकूंपरित्यागकरिकै प्रसिद्धइंद्रादिकदेवतावोंकाही आराधनकरैं हैं ॥ तिनअन्यदेवतावोंकेआराधनतैं तेपुरुष नाशवान्फलकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ इसीवार्ताकूं श्रीभगवान् (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम्) इसीवचनकरिकै आगेभीकथनकरैंगे इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! आप कैसेहो आपणेजन्मकालविषेभी सर्वयोगीपुरुषोंकरिकेध्यानकरणेयोग्य तथाश्रीवैकुंठविषेस्थित ऐसेदिव्य ईश्वरसंबंधीस्वरूपकूं आविर्भावकरतेभयेहो ॥ और अबी वर्त्तमानकालविषेभी श्रीवत्स कौस्तुभमणि वनमाला मुकुट कुंडल इत्यादिकदिव्यअलंकारोंकरिकै आप युक्तहो ॥ तथा शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारी च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा श्रीगरुड आपका वाहनहै ॥ तथा सर्वसुरलोकोंकरिकैसंपादित राजराजेश्वरअभिषेकआदिकमहावैभवकरिकैयुक्तहो ॥ तथा सर्वसुरअसुरोंकूं जयकरणेहारेहो ॥ तथा नानाप्रकारकेदिव्यलीलाविलासोंकूं करणेहारेहो ॥ तथा रामादिकसर्वअवतारोंविषे शिरोमणिहो ॥ तथा साक्षात् वैकुंठलोककेअधिपतिहो ॥ तथा सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतै इसभूमिलोकविषे अवतारकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा ब्रह्माकीसृष्टिविषे नहींउत्पन्नकरणेहारी निरतिशयसौंदर्यताकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा आपणीबाललीलाकरिकै साक्षातब्रह्माकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ तथा सूर्यकीकिरणावोंकेसमानउज्ज्वल दिव्यपीतांबरकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा उपमातैंरहित श्यामसुंदरस्वरूपकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा पारिजातकेवासतै साक्षातइंद्रकूंभी पराजयकरतेभयेहो ॥ तथा बाणयुद्धविषे साक्षातमहादेवकूंभी पराजयकरतेभयेहो ॥ तथा संपूर्णसुरअसुरोंकूंजयकरणेहारेदैत्योंके प्राणपर्यंत सर्व

नैं तिसतिस मनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैं हैं तिसतैंअनंतर मैंपरमेश्वरकी उपासनाकेपरिपाकतैं मैंअनंतआनंदघनपरमेश्वरकूंभीं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया मैंपरमेश्वरके आर्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंके आर्तादिकभक्तोंविषे सकामताकेसमानहुएभी नित्यफलकीप्राप्तिकरिकै तथाअनित्यफलकीप्राप्तिकरिकै तिनदोनोंका महान्भेदहै ॥ यातैं (उदाराः सर्वएवैते) यहपूर्वउक्त भगवान्कावचनयुक्तहै इति ॥ यद्यपि परमेश्वरकेआर्तादिकतीनसकामभक्तोंकूं आपणीआपणीकामनाकेअनुसार जोदुःखकीनिवृत्तितथावांछितअर्थोंकीप्राप्ति इत्यादिक सांसारिकफल प्राप्तहोवैं हैं सो सांसारिकफल अनित्यहीहै ॥ तथापि तापरमेश्वरकेआराधनका परमफलजोमोक्षहै सोनित्यहै ॥ तामोक्षरूपफलकेअभिप्रायकरिकैही तिनपरमेश्वरकेभक्तोंकूं नित्यफलकी प्राप्ति कथनकरीहै इति ॥ इहां किसीटीकाविषे (अल्पमेधसां) यावचनकायहअर्थ कथनकऱ्याहै अल्पेमेधायेषां ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिनैं अल्पशब्दकरिकै कथन कऱ्याजोयहद्वैतप्रपंचहै ता अल्पद्वैतविषेहैबुद्धिरूपमेधाजिनोंकीतिनोंकानाम अल्पमेधस्है अर्थात् बाह्यअर्थोंकीअभिलाषाकरणेहारेपुरुषोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ तहां श्रुति ॥ (अथयत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोतिअन्यन्मनुतेऽन्यद्विजानातितदल्पम् ॥) अर्थयह ॥ जिसद्वैतभावविषे यहपुरुष अन्यवस्तुकूंदेखैहै तथाअन्यवस्तुकूंश्रवणकरै है तथाअन्यवस्तुकूं मननकरै है तथा अन्यवस्तुकूंजानैं है सोसर्वद्वैतप्रपंच अल्पहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! सोसाक्षात्भगवतकाभजन जोकदाचित् नाशतैंरहित उत्तमफलकीप्राप्ति करताहोवै तो इसलोकविषे विशेषकरिकै यहमनुष्य तिसभगवतैंविमुख किसकारणतैंहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनबहुतमनुष्योंकीभगवत्विमुखताविषे कारणकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः ॥ परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥ अव्यक्त । व्यक्तिम् । आपन्नम । मन्यंते । माम् । अबुद्धयः । परम् । भावम् । अजानंतः । मम । अव्ययम् । अनुत्तमम् ॥ २४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! विवेकतैंशून्यपुरुष मैंपरमेश्वरके सर्वकाकारणरूप तथानित्य सोपाधिकस्वरूपकूं तथासर्व तैंउत्कृष्ट निरुपाधिकस्वरूपकूंनहीं जानतेहुए अव्यक्तरूप मैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिकूं प्राप्तहुआ मानैं हैं याकारणतैंही तेअविवेकीपुरुष मैंपरमेश्वरतैं विमुखरहैं हैं । ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! विवेकतैंरहितपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूं प्राप्तहुआमानैं हैं अर्थात् इसदेहग्रहणतैंपूर्व कार्यकरणेकीअसामर्थ्यतारूपकरिकैं स्थितहुए मैंपरमेश्वरकूं अबीइसकालविषे वसुदेवकेगृहविषे भौतिकशरीरकरिकै कार्यकरणेकीसामर्थ्यताकूंप्राप्तहुआ कोईकजीवविशेषही मानैं हैं ॥ अथवा अव्यक्त

तिनं अल्पंबुद्धिवालेपुरुषोंका सो फल नाशवान् हीं होवै है जिसकारणतैं देवतावोंकेआराधनकरणेहारेपुरुष तिनंदेवतावोंकूंही प्रांप्तहोवेंहैं और मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपमेश्वरकूं हीं प्रांप्तहोवैंहैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अल्पहेबुद्धिरूपमेधाजिन्होंकी अर्थात् मंदताकरिकै यथार्थवस्तुकेविवेककरणेविषेअसमर्थहै बुद्धिरूपमेधाजिन्होंकी तिनोंकानाम अल्पमेधसहै ऐसेजे तिसतिसदेवताकेभक्तहैं तिन अन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं यद्यपि मैंअंतर्यामीपरमेश्वरनैंही तिसतिसदेवताकेआराधनजन्य सोसोफल प्राप्तकऱ्याहै तथापि सोतिनोंकाफल नाशवान्हींहोवैहै अर्थात् परमार्थवस्तुकेविवेककरणेहारे मैंपरमेश्वरकेभक्तोंका मोक्षरूपफल जैसे नाशतैंरहितहोवैहै तैसे तिनअन्यदेवतावोंकेभक्तोंका सोमारणमोहनादिरूपफल नाशतैंरहितहोवैनहीं किंतु सोफल नाशवान्हहीहोवैहै ॥ परमार्थवस्तुकेविवेकतैंरहितपुरुषोंकूं कर्मों तैं नाशवान्फलकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थयह ॥ हे गार्गि ! जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूं नजानिकरिकै इसलोकविषे होमकरैहै तथायज्ञकरैहै तथा अनेकसहस्रवर्षपर्यंत तपकरैहै तेसर्वकर्म इस पुरुषकूं नाशवान्फलकीही प्राप्तिकरैहैं इति ॥ शंका--हे भगवन् अन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूंतौ नाशवान्फलकीप्राप्तिहोवैहैं और तुम्हारेभक्तोंकूंतौ अविनाशीफलकी प्राप्तिहोवैहै यांके विषेकोनकारणहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहैहैं ॥ (देवान्देवयजःइति) हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरतैंअन्य इंद्रादिकदेवतावोंका आराधनकरणेहारे तेसकामपुरुष तिन नाशवानइंद्रादिकदेवतावोंकूंही प्राप्तहोवैंहैं ॥ मैंपरमेश्वरकूं तेपुरुष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ इसप्रकार यक्षराक्षसोंकेभक्त तिनयक्षराक्षसोंकूंही प्राप्तहोवैं हैं तथा भूतप्रेतोंके भक्त तिन. भूतप्रेतोंकूंही प्राप्तहोवैंहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवता तथातिनोंकेभक्त यहदोनों सात्विकहैं और यक्षराक्षस तथातिनोंकेभक्त यहदोनों राजसहैं और भूतप्रेत तथातिनोंकेभक्त यहदोनों तामसहैं जोजोपुरुष जिसजिसका आराधनकरैहै सोसोपुरुष तिसतिसकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (कर्मणापितृलोकोविद्ययादेवलोकः ॥ देवोभूत्वादेवानप्येति) ॥ अर्थयह ॥ पितृसंबंधीकर्मकरिकै इसपुरुषकूं पितृलोक प्राप्तहोवैहै ॥ और देवतावोंकीउपासनाकरिकै इसपुरुषकूं देवलोक प्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसतिसदेवताकाआराधनकरणेहारापुरुष तिसतिसदेवताभावकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसदेवताकेलोककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचन तिसतिसदेवताकेआराधनकरणेहारे पुरुषकूं तिसतिसदेवताकीप्राप्ति कथनकरैं हैं ॥ और जेआर्त्तादिकतीनभक्त साक्षात् मैंपरमेश्वरकाही आराधनकरैहैं तेतीनोंभक्ततौ मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैंहैं ॥ इहां (मामपि) यावचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या तेहमारे आर्त्तादिकतीनसकामभक्त प्रथमतौ मैंपरमेश्वरकेप्रसाद

युक्तः । तस्य । आराधनम् । ईहते । लभते । च । ततः । कामान् । मया । एव । विहितान् । हि । तान् ॥२२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे अर्जुन ! सोसकामपुरुष तिस श्रद्धाकरिकै युक्तहुआ तिसीदेवतामूर्तिकारके पूजनकूं करैहे तथा तिसीदेवतामूर्तितें मैंपरमेश्वरनें
ही रचेहुए पूर्वसंकल्पित कामोंकूं प्रसिद्ध प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ सोसकामपुरुष मैंपरमेश्वरनें तिसतिसदेवताविषे स्थिरकरीहुईश्रद्धाकरिकैयुक्तहुआ तिसदेवतामूर्तिकाही पूजनकरैहै ॥ तादेवतामूर्तिकूंछोडिकै मैंपरमेश्वरका पूजनकरैनहीं ॥ तापूजनकरिकै सोसकामपुरुष तिसीदेवताकीमूर्तितैंही पूर्वसंकल्पक रेहुए मारणमोहनादिककाम्यमानपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ शंका—हेभगवन् ! जबी तेअन्यदेवताभी आपणेआपणेभक्तजनोंकेप्रति तिसतिसकर्मकेफलदेणेविषे स्वतंत्रहीहुए तबी आपपरमेश्वरविषे सर्वकर्मों केफलकादातापणा सिद्धनहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (मयैवविहितानइति) हे अर्जुन ! सर्वजीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंजानणेहारा तथातिनसर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता तथातिनसर्वदेवतावोंकाअंतर्यामी ऐसाजो मैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरनैंही तिसतिसकर्म केफलविपाकसमयविषे तेमारणमोहनादिकअर्थ उत्पन्नकरेहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैं विना तेदेवता तिसतिस अर्थकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थ हैंनहीं ॥ ऐसे मैंअंतर्यामीपरमेश्वरनैं उत्पन्नकरेहुए तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकूंही तेसकामपुरुष तिसतिसदेवतातैं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं मैंअंतर्यामीपरमेश्वरही साक्षात् अथवा किसीअन्यद्वारा सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाताहूं ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वदेवतावोंविषे आपणीआज्ञाकेवशवर्तिपणा बोधनकऱ्या इति ॥ अथवा मूल श्लोकविषे (हितान्) यहएकहीपद जानणा अर्थात् वास्तवतैं अहितरूपहुएभी तेमारणमोहनादिकअर्थ तिनसकामपुरुषोंकूं हितरूपकरिकैप्रतीतहुएहैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ यद्यपि तसर्वहीदेवता सर्वात्मारूपमैंपरमेश्वरकीही मूर्ति हैं यातैं तिनदेवतावोंकाआराधनभी वास्तवतैं मैंपरमेश्वरकाही आराधनहै ॥ तथासर्वत्र फलप्रदाताभी मैंअंतर्यामीईश्वरहीहूं तथापि साक्षात् मैंपरमेश्वरके भक्तोंकूं तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं जोविषमफलकीप्राप्तिहोवैहै सोवस्तुकेविवेकरिकै तथावस्तुकेअविवेककरिकैही होवैहै ॥ तहां मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषेतौ सोवस्तुकाविवेकरहैहै और अन्यदेवतावोंकेभक्तोंविषे सोवस्तुकाअविवेकरहै है ॥ याकारणतैंही तिनोंकूं विषमफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अंतवत्तुफलंतेषांतद्भवत्यल्पमेधसाम् ॥ देवान्देवयजोयांतिमद्भक्तायांतिमामपि ॥ २३ ॥ अंतवत् । तु । फलम् । तेषाम् । तत् । भवति । अल्पमेधसाम् । देवान् । देवयजः । यांति । मद्भक्ताः । यांति । माम् । अपि ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

दिकविषय भगवत्‌कीसेवाकरिकै प्राप्तहोणेकूं लोकोंनें अशक्यमानेहैं ॥ ऐसेक्षुद्रअभिलाषारूपजेकामहैं तिनतिनकामोंकरिके अपहृतहुआहै क्या भगवान् वासुदेवतैंविमुखकरिकै तिसतिसमारणादिकफलकादातारूपकरिकैमानेहुएक्षुद्रदेवतावोंकेअभिमुखकऱ्याहुआहै ज्ञान क्या अंतःकरण जिन्होंका तिनोंकानाम हृत ज्ञानहै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखपुरुष मैंपरमेश्वरतैंअन्य क्षुद्रदेवतावोंकूं तिसतिसदेवताकेआराधनविषेप्रसिद्धजे जप उपवास प्रदक्षिणा नमस्कार इत्यादि कनियमहैं तिसतिसनियमकूंआश्रयणकरिकै तिसतिस मारणमोहनादिकक्षुद्रफलकेप्राप्तिकी इच्छाकरिकै भजैहैं ॥ तिनक्षुद्रदेवतावोंकेमध्यविषेभी केईकपुरुष पूर्वअभ्यासजन्य आपणीआपणी असाधारण वासनाकेवशहुए किसीदेवताकूंही भजैहैं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् जेपुरुष अन्यक्षुद्रदेवतावोंका भजनकरैहैं तिनपुरुषोंकूंभी तिसतिसदेवताकेप्रसादतैं सर्वकेईश्वररूप भगवान्‌वासुदेवविषे अवश्यकरिकै भक्तिहोवैगी ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहै ।

(मू. श्लो.) योयोयांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितुमिच्छति ॥ तस्यतस्याचलांश्रद्धांतामेवविदधाम्यहम् ॥ २१ ॥ यः । यः । याम् । याम् । तनुम् । भक्तः । श्रद्धया । अर्चितुम् । इच्छति । तस्य । तस्य । अचलाम् । श्रद्धाम् । ताम् । एव । विदधामि । अहम्॥२१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जो जो सकामपुरुष भक्तियुक्तहुआ जिस जिस देवतामूर्तिकूं श्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेकूं प्रवृत्तहोवैहै तिस तिसपुरुषकी तिस देवतामूर्तिप्रति ही स्थिर भक्तिकूं मैंअंतर्यामी करूंहूं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तिनअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारेपुरुषोंकेमध्यविषे जोजोसकामपुरुष भक्तिकरिकैयुक्तहुआ जिसजिसदेवतामूर्त्तिकूं पूर्वलेजन्मकीवासना वोंकेबलतैं प्रादुर्भूतहुईश्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै तिसतिस सकामपुरुषकी तिसतिसदेवतामूर्त्तिविषेही पूर्ववासनावोंकेवशतैंप्राप्तहुई भक्तिरूप श्रद्धाकूं मैंअंतर्यामी स्थिरकरूंहूं ॥ तिसपुरुषकी तिसदेवतातैं श्रद्धाहटाइकै आपणेविषे तिसकीश्रद्धाकूंमैं करावतानहीं इति ॥ इहां किसीटीकाविषे (ताम्) इसपदकरिकै श्रद्धाकाही ग्रहणकऱ्याहै परंतु इसव्याख्यानविषे पूर्वकथनरेहुए (यांयां) इसदेवतावाचक यत्‌शब्दका अन्वयनहींहोवैगा ॥ अथवा तत् इसशब्दकाअध्याहारकरिकैही तायत्‌शब्दकाअन्वयहोवैगा काहेतैं यत्‌शब्दकूं तत्‌शब्दकीआकांक्षा अवश्यकरिकै होवैहै ॥ यातैं इहां तां इसशब्दकेआगे प्रति इसशब्दकाअध्याहारकरिकै तां इसशब्दकरिकै पूर्व (यांयां) इसयत्‌शब्दउक्तदेवताकाही परामर्शकऱ्याहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) सतयाश्रद्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते ॥ लभतेचततःकामान्मयैवविहितान्हितान् ॥ २२ ॥ सः । तया श्रद्धया ।

सोज्ञानपूर्वकहमारीभक्तिकरणेहारा विद्वान्पुरुष महात्माहै अर्थात् अत्यंतशुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्व तैंउत्कृष्टहै ॥ तिसजीवन्मुक्तविद्वान् केसमान दूसराकोइहैनहीं ॥ जबीताजीवन्मुक्तपुरुषके समानभी कोईनहींभया तबी ताजीवन्मुक्तपुरुषतैं अधिक कहांतैंहोवैगा ॥ इसीकारणतैं सो जीवन्मुक्तविद्वान्पुरुष सुदुर्लभहै अर्थात् सोविद्वान्पुरुष अनेकसहस्रमनुष्योंविषे दुःखकरिकैभी प्राप्तहोणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकीदुर्लभता (मनुष्याणांसहस्रेषु) इसवचनविषे श्रीभगवान्नें स्पष्टकरिकैकथनकरीहै ॥ यातैं सोजीवन्मुक्तपुरुष मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहीहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें आर्त्तादिकतीनभक्तोंकी अपेक्षाकरिकैज्ञानवान्भक्तके उत्कृष्टताकी प्रतिज्ञाकरीथी साप्रतिज्ञा इतनेपर्यंत सिद्धकरी ॥ और सकामत्व तथाभेददर्शित्वयादोनोंकेसमानहुएभी दूसरेदेवतावोंकेभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै मैंपरमेश्वरके आर्त्तादिकतीनोंभक्त उत्कृष्टहैं याप्रकारकी जाप्रतिज्ञा श्रीभगवान्नें (उदाराःसर्वएवैते) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकरीथी ॥ अब इससप्तमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान् तिसप्रतिज्ञाकी सिद्धिकरैंहैं ॥ इहां परमकृपालु श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै हमारे आर्त्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंके आर्त्तादिकभक्तोंविषे यद्यपि आयास तथासकामत्व तथाभेददर्शित्वइत्यादिक धर्मसमानही हैं तथापि मैंपरमेश्वरकेभक्ततो भूमिकावोंकेक्रमकरिकै सर्व तैंउत्कृष्ट मोक्षरूपफलकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ और क्षुद्रदेवतावोंकेभक्ततो पुनः पुनः जन्ममरणकीप्राप्तिरूप क्षुद्रफलकूंही प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैंसर्वआर्त्तभक्त तथाजिज्ञासुभक्त तथाअर्थार्थीभक्त मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै विनाहीआयासतैं सर्वतैं उत्कृष्टमोक्षरूपफलकूं प्राप्तहो वैं हैं इति ॥ तहां मोक्षरूपपरमपुरुषार्थरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरकाभजनहै तामेरेभजनकीउपेक्षाकरिकै क्षुद्रफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकेभजनविषे जोलोकोंकीप्रवृत्ति होवैहै ताप्रवृत्तिविषे पूर्वलेसंस्काररूपवासनाविशेषही असाधारणकारणहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यंतेऽन्यदेवताः ॥ तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियताःस्वया ॥ २०॥ कामैः । तैः । तैः । हृतज्ञानाः । प्रपद्यंते । अन्यदेवताः । तम् । तम् । नियमम् । आस्थाय । प्रकृत्या । नियताः । स्वया ॥२०॥ इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन ! तिनं तिनं कामनावोंकरिकै मैंपरमेश्वरतैंविमुखहुआहैअंतःकरणजिन्होंका ऐसेपुरुष आपणी पूर्ववासनारूपप्रकृतिनें वशिकरे हुए तिस तिसे नियमकूं आश्रयणकरिकै अन्यदेवतावोंकूं भजैं हैं॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मारण मोहन उच्चाटन स्तंभन आकर्षण वशीकरण इत्यादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेअभिलाषारूपकामहैं ॥ जिनकामोंके मारणमोहना

अर्थही विवक्षितहै ताकारिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ज्ञानवान्पुरुषतौमैंपरमेश्वरकूं अतिशयकरिकैप्रियहै और ताज्ञानतैंरहित आर्त्तादिकभक्तभी मैंपरमेश्वरकूंप्रियतौहैही ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवाननैं ताज्ञानवान्विषे अत्यर्थ यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तथा इसअर्थकूं श्रीभगवान् (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम्) इसवचनकरिकै आपही कथनकरताभयाहै ॥इसकारणतैं मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा सोज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहींहै मैंपरमेश्वरतैं सोज्ञानवान्भक्त भिन्ननहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्मातैंअभेदरूपकारिकै ब्रह्मकूंजानणेहारा ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै इति ॥ इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै ॥ इहां (ज्ञानीतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्द है सोतुशब्द सकाम तथाभेददर्शी आर्त्तादिकतीनभक्तोंकेअपेक्षाकारिकै ताज्ञानवान्भक्तविषे निष्कामतारूप तथाअभेददर्शित्वरूप विशेषताके बोधनकरणवासतैहै ॥ अब ताज्ञानीके आत्मरूपताविषे श्रीभगवान् हेतुकैंहैंहैं (सहियुक्तात्मा इति) हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोज्ञानवान्भक्त युक्तात्मा हुआ अर्थात् मैंहीभगवानवासुदेवहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरविषे सर्वदा समाहितचित्तवालाहुआ मैंआनंदघनपरमेश्वरकूंही सर्वतैंउत्कृष्ट परमफलरूपकरिकै अंगीकारकरताभयाहै ॥ मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसरोकिसीफलकूं सोज्ञानवान्पुरुष मानतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्मज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरका आत्मारूपही है इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सो ज्ञानवान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूंही परमफलरूपकरिकैमानैहै तिसकारणतैं सोज्ञानवान् मैंपरमेश्वरकूंही अभेदरूपकारिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सोज्ञानवान् रुषही अत्यंतदुर्लभहै इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः ॥ १९ ॥ बहूनाम् । जन्मनाम् । अंते । ज्ञानवान् । माम् । प्रपद्यते । वासुदेवः । सर्वम् । इति । सः । महात्मा । सुदुर्लभः ॥ १९॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोज्ञानवान्पुरुष बहुतं जन्मोंके अंतविषे यहसर्वजगत् वासुदेवरूपही है याप्रकारकेज्ञानवालाहुआ मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै भजैहै सो महात्मा अत्यंतदुर्लभहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! किंचित्किंचित्पुण्यकेसंपादनकाहेतुरूप जेपूर्वव्यतीतहुएबहुतजन्महैं तिनबहुतजन्मोंके अंतविषे अर्थात् सर्वसुकृतोंकेफलभूत अंत्यजन्मविषे सोज्ञानवान्पुरुष यहसर्वजगत् वासुदेवरूपहै याप्रकारकेज्ञानवालाहुआ निरुपाधिकप्रीतिकाविषयरूप मैंपरमेश्वरकूंही सर्वदा संपूर्णप्रेमकाविषयरूपकरिकै भजैहै काहेतैं मैं तथा यहसर्वजगत् परमेश्वरवासुदेवरूपहीहै याप्रकारकीदृष्टिकरिकै तिसज्ञानवान्पुरुषके सर्वप्रेमोंका मैंपरमेश्वरविषेहीपारिअवसानहोवैहै ॥ इसीकारणतैं

एते । ज्ञानी । तु । आत्मा । एव । मे । मतम् । आस्थितः । सः । हि । युक्तात्मा । माम् । एव । अनुत्तमाम् । गतिम् ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यह आर्त्तादिकतीनोंभी उत्कृष्ट ही है परंतु ब्रह्मज्ञानीतौ हमारा आत्मा ही हैं याप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै जिसकारण तैं सोब्रह्मज्ञानी मैंपरमेश्वरविषे समाहित चित्तवालाहुआ मैंपरमेश्वरकूं ही सर्वतें उत्कृष्ट परमफलरूप अंगीकारकरैहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनों हमारेभक्त हयपि सकामहैं तथापि हमारीभक्तितैंरहितप्राणियों तैं तेतीनोंभक्त उत्कृष्टही हैं काहेतैं पूर्वजन्मोंविषे तिनपुरुषों नैं अनेकसुकृतकरेहैं जिसकरिकै इसजन्मविषेतौ तिनोंकूं हमारीभक्तिप्राप्तभई है ॥ पूर्वसुकृतों तैंविना साहमारीभक्ति प्राप्तहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनों के पूर्वलेजन्मों के अनेकसुकृत नहींहोवैं तौ तेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी भजैंनहीं ॥ जिसकारणतैं इसलोकविषे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखहुए कितनेक आर्त्त तथाजिज्ञासुअर्थार्थी अन्यक्षुद्रदेतावोंकाही भजनकरतेहुए देखणेविषेआवैंहैं ॥ यातैं इसजन्मविषे मैंपरमेश्वरकेभजनतैं तिनपुरुषों के पूर्वलेजन्मों केसुकृत अनुमानकरे जावैंहैं ॥ ऐसे पूर्वजन्मों केपुण्यकर्मों केप्रभावतैं मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे जेआर्त्तजिज्ञासु अर्थार्थीपुरुषहैं तेतीनोंभी हमारेकूं प्रियहीहैं ॥ कोईभीहमाराभक्तज्ञानवान् अथवाअज्ञानी हमारेकूं अप्रियनहींहै परंतु जिसपुरुषकी जिसप्रकारकी मैंपरमेश्वरविषे प्रीतिहै मैंपरमेश्वरकीभी तिसपुरुषविषे तिसीप्रकारकीप्रीति होवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषे स्वभावसिद्धही है ॥ तहां आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनोंसकामभक्तोंकूंतौ केवल मैंपरमेश्वरही प्रियहोवौंनहीं किंतु कामनाकेविषय पदार्थभी प्रियहोवैंहैं तथामैंपरमेश्वरभी प्रियहोवौंहूं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकूंतौ मैंपरमेश्वरतेविना दूसराकोईभीपदार्थ प्रियहोवैनहीं किंतु तिसज्ञानवान पुरुषकूं एक मैंपरमेश्वरही निरतिशयप्रीतिकाविषयहूं ॥ इसकारणतैं सोनिष्कामज्ञानीभक्तभी मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै जोकदाचित् मैंपरमेश्वर तिस ज्ञानवान्भक्तविषे निरतिशयप्रीति नहींकरौंगा तौ मैंपरमेश्वरविषे कृतज्ञता नहींसिद्धहोवेगी ॥ तथा कृतघ्नता प्राप्तहोवेगी ॥ यातैं आपणेविषे ताकृतज्ञताकी सिद्धिवास्तै तथाकृतघ्नताकीनिवृत्तिकरणेवास्तै मैंपरमेश्वरभी ताज्ञानीभक्तविषे निरतिशय प्रीति करूंहूं ॥ इसीकारणतैंही पूर्वश्लोकविषे (अत्यर्थं) यहविशेषण कथनकर्‍याहै ॥ जैसे (यदेवविद्ययाकरोतिश्रद्धयोपनिषदातदेववीर्यवत्तरंभवति) इसश्रुतिविषे विद्याश्रद्धादिकोंकरिकैकरेहुएकर्मकूं वीर्यवत्तरं कथनकर्‍याहै ॥ इहां वीर्यवत्तरं यावचनकेअंतविषेस्थितजो तर प्रत्ययहै ताका अतिशयतारूपअर्थही विवक्षितहै ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै विद्यादिकोंकरिकैकर्‍याहुआकर्म तैं अतिशयकरिकैवीर्यवालाहोवेहै ॥ और तिनविद्यादिकों तैंविना कर्‍याहुआकर्मभी वीर्यवालातौहोवैही है ॥ तैसे ज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकूं (अत्यर्थंप्रियः) इसभगवान्केवचनविषेस्थित जो अत्यर्थ यहपदहै ताका अतिशयतारूप

तिसज्ञानवान्पुरुषकूं मैंप्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेव अत्यंतप्रियहूं अर्थात् निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहूं ॥ तिसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुष एकभक्तिहै ॥ इसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुषभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहै ॥काहेतैं आपणाआत्मा अत्यं प्रियहोवैहै यहवार्ता श्रुतिविषे तथालोकविषे प्रसिद्धहीहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतो इसश्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै तिनच्यारोंकेमध्यविषे एकज्ञानीहीश्रेष्ठहै ॥ जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै अर्थात् सर्वदा हमारे भजनविषेयुक्तहै ॥ और आर्त्तादिकभक्ततौ जबपर्यंत कामनाकीपूर्णतानहींभई तबपर्यंतहीं मेरेभजनविषेयुक्तहोवैहैं कामनाकीपूर्णतातैंअनंतर मेरेभजनविषे युक्तहोंदैनहीं ॥ यातैं तेआर्त्तादिकभक्त नित्ययुक्त कहेजावैंनहीं ॥ तथा सोज्ञानी एकभक्तिहै अर्थात् मैंपरमश्वरकाहीएकभावकरिकै भजनकरेहै ॥ अन्यकिसीका भजनकरैनहीं ॥ औरआर्त्तादिकतौ एकभावकरिकैभजनकूंकरतेनहीं ॥ तहां रोगग्रस्तआर्त्तपुरुषतौ सूर्यकाभजनकरेहैं ॥ और जिज्ञासुजन सरस्वतीका भजन करैं हैं ॥ और अर्थार्थीपुरुष कुबेरादिकोंकाभजनकरैं हैं ॥ इसप्रकार तिनआर्त्तादिकोंविषे तिसतिसकामकीप्राप्तिवासते अनेकोंकीभक्ति देखणेविषेआवैहै ॥ अब तिसज्ञानीपुरुषकेनित्ययुक्तपणेविषे तथाएकभक्तिपणेविषे हेतु कहैं हैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ काहेतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषका आत्मारूपहीहूं ॥ और आपणाआत्मा निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहोणेतैं सर्वकूं प्रियहीहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रीतिदोप्रकारकीहोवैहै एकतौ सोपाधिकप्रीतिहोवैहै और दूसरीनिरुपाधिकप्रीतिहोवैहै तहां जाप्रीति जिसवस्तुविषे अन्यवासतैंहोवैहै साप्रीति सोपाधिकप्रीति कहीजावैहै ॥ जैसे आपणे आत्माकेसुखवासतै स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे प्रीतिहै ॥ और जाप्रीति जिसवस्तुविषे किसीअन्यवासतै नहीं होवैहै साप्रीति निरुपाधिकप्रीति कहीजावैहै ॥ जैसे आपणेआत्माविषेप्रीति अन्यकिसीवासतैहैनहीं ॥ यातैं सा आत्मविषयकप्रीति निरुपाधिकप्रीतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेतत्प्रेयःपुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदयमात्माइति) अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघाततैंअंतर जोयहआत्मादेवहै सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभी अत्यंतप्रियहै ॥ तथा धनतैंभी अत्यंतप्रियहै ॥ तथा अन्यसर्वपदार्थोंतैंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ और ऐसानिष्कामज्ञानीभक्त अत्यंतदुर्लभहै तथामैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहै ॥ यातैं सोज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! (सचममप्रियः) इसआपकेवचनतैं यहजान्याजावैहै जोएकज्ञानीभक्तही आपकूं प्रियहै दूसरे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यह तीनोंभक्त आपकूं प्रियनहीं हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए तेआर्तादिकभक्तभीहमारेकूं प्रियहीहैं परंतु तेआर्त्तादिकभक्त हमारेकूं अत्यंतप्रियनहींहैं ॥ और ज्ञानवान्भक्ततौ हमाराआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम् ॥ आस्थितःसहियुक्तात्मामामेवानुत्तमांगतिम् ॥ १८ ॥ उदाराः । सर्वे । एव ।

चकारहै सोचकार जिसीकिसीनिष्कामप्रेमभक्तका ताज्ञानीविषे अंतर्भाव बोधनकरणेवासतै है अर्थात् निष्कामप्रेमभक्तोंका ताज्ञानीविषेही अंतर्भावहै ॥ यातैं श्रीभगवान्‌कूं पं चप्रकारकेभक्तही कथनकरणेयोग्यथे याप्रकारकीन्यूनताशंका संभवैनहीं इति ॥ और (हेभरतर्षभ) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या तूंअर्जुनभी जिज्ञासुभक्तहै अथवा ज्ञानीभक्तहै ॥ यातैं तिनच्यारोंभक्तोंविषे मैंअर्जुन कौनभक्तहूं याप्रकारकीशंका तुमनैं करणीनहीं इति ॥ तहां निष्कामज्ञानीभक्ततौ जैसेसनकादिकहैं तथा नारदहै तथा प्रह्लादहै तथापृथुराजाहै तथाशुकदेवहै इत्यादिकसर्व निष्कामज्ञानीभक्त होतेभये हैं ॥ और निष्काम शुद्ध प्रेमभक्ततौ जैसे व्रजवासीगोपिकाहैं तथाअक्रूरयुधिष्ठिरादिकहैं और कंसशिशुपालादिकतौ यद्यपि भयतैं अथवा द्वेषतैं निरंतर भगवत्‌काचिंतनकरतेभये हैं तथापि तेकंसशिशुपालादिक भक्तकहेजावैंनहीं ॥ जिसकारणतैं तिनकंसादिकोंकीपरमेश्वरविषे भगवत्‌अनुरक्तिरूपभक्ति हैनहीं तिसकारणतैं द्वेषभयतैं भगवतकाचिंतनक रतेहुएभी तेकंसादिक भगवत्‌भक्त कहेजावैंनहीं इति ॥ १६ ॥ ❁ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारोंविषे भगवान्‌नैं सुकृतीपणा कथनकऱ्या यातैं श्रीभगवान्‌कूं तिनच्यारोंकी तुल्यताही अभिमतहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए तिनच्यारोंविषे यद्यपि सुकृतीपणा निश्चितही है तथापि सुकृतकीअधिकताकरिकै प्राप्तहुई निष्कामताकरिकै प्रेमकी अधिकतातैं सोज्ञानीही सर्व तैंश्रेष्ठहै याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते ॥ प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः ॥ १७ ॥ तेषाम् । ज्ञानी । नित्ययुक्तः । एकभक्तिः । विशिष्यते । प्रियः । हि । ज्ञानिनः । अत्यर्थम् । अहम् । सः । च । मम । प्रियः ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः । हे अर्जुन ! तिनच्यारोंकेमध्यविषे नित्ययुक्त तथाएकभक्तिवाला ज्ञानी उत्कृष्टहै जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानीकूं अत्यंत प्रियहूं तैसा सोज्ञानी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रिय है ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारिप्रकारकेभक्तोंकेमध्यविषे सर्वत्रपरिपूर्णअद्वितीयब्रह्मरूपमैंहूं याप्रकारकेतत्त्वज्ञानवालाजोज्ञानी है जोज्ञानी सर्वकामनावों तैंरहितहै सोज्ञानी सर्व तैंउत्कृष्टहै ॥ अब ताज्ञानीकीउत्कृष्टताविषे ताज्ञानीके हेतुगर्भितदोविशेषणकथनकरैं हैं (नित्ययुक्तःएकभक्तिःइति) जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै अर्थात् सर्वविक्षेपकेअभावतैं प्रत्यक्‌अभिन्नपरमात्मादेवविषे सर्वदा समाहितहैचित्तजिसका ताकानाम नित्ययुक्तहै ॥ नित्ययुक्तहोणेतैंही सोज्ञानीएकभक्तिहै अर्थात् एकप्रत्यक्‌अभिन्नपरमात्माविषेही है अनुरक्तिरूपभक्तिजिसकी अन्यकिसीविषे साभक्ति जिसकीहैनहीं ताक नाम एकभक्तिहै ॥ इसप्रकार नित्ययुक्तहोणेतैंतथाएकभक्तिहोणे तैं सोज्ञानवान् सर्व तैंश्रेष्ठहै ॥ अब ताएकभक्तिपणेविषेहेतुकहैं हैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं

तिनों तेभिन्नपुरुष निष्फलजन्मवालेही हैं ॥ ऐसेसुकृतीजनही मैंपरमेश्वरकूं भजैं हैं अर्थात् मैंपरमेश्वरका आराधनकरैं हैं ॥ तेहमारेभजनकरणेहारेजनभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इसभेदकरिकैच्यारिप्रकारकेहीहोवैं हैं ॥ तिनच्यारोंविषेभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनतौ सकामहोवैं हैं और एकज्ञानी निष्काम होवै है ॥ तहां शत्रुव्याघ्रादिरूपआपदाकानाम आर्त्ति है ताआर्त्तिकरिकैजोग्रस्तहोवै ताकानाम आर्त्त है ॥ ऐसाआर्त्तजन ताआपदारूपआर्त्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंपरमेश्वरकाआराधनकरै है ॥ जैसे यज्ञकेभंगकरिकै क्रोधकूंप्राप्तहुआइंद्र व्रजभूमिविषे महान्‌वर्षाकरताभया ॥ ताकरिकैदुःखीहुए व्रजवासीजन मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभये हैं ॥ तथा जैसे जरासंधराजाकेबंधनगृहविषेप्राप्तहुए सर्वराजे आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभये हैं ॥ तथा जैसे दुर्योधनकीसभाविषे वस्त्रोंकेउतारणेकरिकै आर्त्तहुईद्रौपदी मैंपरमेश्वरका आराधनकरतीभई है ॥ तथा जैसे ग्राहकरिकैग्रस्तहुआ गजेंद्र आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरताभयाहै ॥ इसतैं आदिलेके दूसरेभीअनेकजन आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभये हैं इति ॥ और जिसपुरुषकूं सर्वदा आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहै ताकानाम जिज्ञासुहै सोजिज्ञासुभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरैं हैं ॥ जैसे मुचुकुंद तथाजनकराजा तथाउद्धव इत्यादिकजिज्ञासुजन आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभये हैं इति ॥ और इसलोकविषेस्थित तथापरलोकविषेस्थित जेधनस्त्रीपुत्रादिक भोगकेसाधनहैं तिन्होंकानाम अर्थ है ताअर्थकीइच्छाकरणेहारेपुरुषकानाम अर्थार्थी है ॥ ऐसाअर्थार्थीजनभी ताधनादिरूपअर्थकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरै है ॥ तहां सुग्रीव विभीषण उपमन्यु इत्यादिक अर्थार्थीजनतौ इसलोकके भोगसाधनोंकीइच्छाकरतेहुए मैंपरमेश्वरकाआराधनकरतेभये हैं ॥ और ध्रुवादिकअर्थार्थीजनतौ परलोककेभोगसाधनोंकीइच्छा करतेहुए मैंपरमेश्वरकाआराधनकरतेभये हैं इति ॥ तहां जैसे तत्त्ववेत्तापुरुष मायाकूंतरै है तैसे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनोंभी भगवत्‌केभजनकरिकै तामायाकूंतरैं हैं ॥ तिनतीनोंविषेभी जिज्ञासुजनतौ आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै साक्षात्‌ही तामायाकूंतरै है ॥ और आर्त्त तथाअर्थार्थी यहदोनोंतौ जिज्ञासुपणेकूंप्राप्तहोइकैही तामायाकूंतरैं हैं ॥ इतनीतिन्होंविषेविशेषताहै ॥ तहां आर्त्तकूं तथा अर्थार्थीकूं जिज्ञासुपणा संभवहोइसकैहै ॥ और जिज्ञासुकूंभी आर्त्तपणा तथा आत्मज्ञानकेसाधनरूपअर्थोंकाअर्थीपणा संभवहोइसकैहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्‌नैं आर्त्त अर्थार्थी यादोनोंकेमध्यविषे जिज्ञासुका कथनकऱ्याहै ॥ इतनेकरिकै आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनसकामभक्तोंका कथनकऱ्या ॥ अब चतुर्थनिष्कामभक्तका कथनकरैं हैं (ज्ञानीचइति) तहां सर्वत्रपरिपूर्ण अद्वितीय परमात्मा देव मैंहूं याप्रकारकाजो भगवत्‌के वास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ताज्ञानकरिकैजोनित्ययुक्तहोवै ताकानाम ज्ञानी है ॥ जोज्ञानी तिसज्ञानकरिकै मेरीमायाकूंतऱ्याहै तथा सर्वकामोंतैंरहितहै ऐसा ज्ञानीभी निरंतर मैंपरमात्मादेवका आराधन करै है ॥ इहां (ज्ञानीच) यावचनविषे स्थितजो

शरीरइंद्रियादिकसंघातविषेतादात्म्यभ्रांतिरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तभईजामायाहै तामायाकरिकै प्रतिबद्धहुआहै ताविवेककरणेकासामर्थ्यरूपज्ञानजिनोंका तिनोंकानाम माययाऽपहृतज्ञानहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष मायथापहृतज्ञानहैं तिसकारणतैं तिसकार्यअकार्यकेविवेककूंकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंही (दंभोदर्पोऽभिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणाजोआसुरभावहै तिसहिंसाअनृतादिरूपआसुरस्वभावकूंही आश्रयणकऱ्याहै जिन्होंनैं ॥ इसप्रकार मैंपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकेअयोग्यहुएतेदुष्कृतीपुरुषमैं परमेश्वरकूं भजतेनहीं ॥ यातैं तिनदुष्कृतीपुरुषोंका कोईआश्चर्यरूप दौर्भाग्यहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतो इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै जिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृतीहैं तिसकारणतैं चित्तकीशुद्धिकेअभावतैं तेपुरुष मूढहैं अर्थात् आत्मअनात्मविवेकतैंरहितहैं इसीकारणतैंही तेपुरुष मनुष्योंविषेअधमहैं ॥ ऐसेदुष्कृतीनराधमपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभजतेनहीं ॥ तेपुरुष दुष्कृतीक्यों हैं ॥ ऐसीशंकाकेहुए कहैंहैं (माययाऽपहृतज्ञानाःइति) जिसकारणतैं अविद्यारूपमायाकरिकै तिनपुरुषोंका अखंडसंविद्ब्रह्मरूपज्ञान आच्छादितहोइगयाहै तिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृती हैं इतनेकहणेकरिकै मायाकीआवरणशक्ति कथनकरी॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष आसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिन्होंनैं अर्थात् यहदेहइंद्रियरूपसंघातही आत्माहै यातैं इससंघातकूंही सर्वप्रकारतैंतृप्तकरणा इसप्रकारकाजो आसुरविरोचनकेचित्तकाअभिप्रायहै ताकानाम आसुरभावहै ॥ ऐसेआसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिन्होंनैं ॥ इतनेकहणेकरिकैतामायाकीविक्षेपशक्ति कथनकरी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया इसमायानैंस्वरूपानंदकूंआवरणकरिकै उत्पन्नकऱ्याजो देहविषेआत्मत्वबुद्धिरूपभ्रमहै तादेहात्मअभिमानतैं तिनदेहादिकोंकीपुष्टिकरणेवासतै तेपुरुष अनेकप्रकारकेदुष्कृतोंकूंकरैं हैं ॥ तिनपापकर्मोंकरिकै मूढहुए तथासर्वमनुष्योंविषेअधमहुए तेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहींभजैं हैं ॥ यातैं यहअविद्यारूपमायाही सर्वअनर्थोंकामूलभूतहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ किंवा जेपुरुष तिसआसुरभावतैंरहितहैं तथा सर्वदा पुण्यकर्मवाले हैं तथाइष्टअनिष्टवस्तुकेविवेकवालेहैं तेपुरुष तिसपुण्यकर्मकीन्यूनअधिकताकरिकै च्यारिप्रकारकेहुए मैंपरमेश्वरकूंभजैंहैं ॥ तथा यथाक्रमकरिकै कामनातैंरहितहुए तेपुरुष मैंपरमेश्वरकेप्रसादतैं तिसमायाकूं तरैं हैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन ॥ आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ ॥ १६ ॥ चतुर्विधाः । भजंते । माम् । जनाः । सुकृतिनः । अर्जुन । आर्त्तः । जिज्ञासुः । अर्थार्थी । ज्ञानी । च । भरतर्षभ ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभरतवंशविषेश्रेष्ठ अर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी तथा ज्ञानी यहच्यारिप्रकारके सुकृति जन मैंपरमेश्वरकूं भजैंहैं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जेपुरुष सुकृती हैं अर्थात् जिनपुरुषोंनैं पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मकासंचयकऱ्याहै तेपुरुषही जनहैं अर्थात् सफलजन्मवाले हैं ॥

भेदकाबोधकनहीं है ॥ और (मामेवयेप्रपद्यंते) यावचनकेस्थानविषे (मामेवयेप्रपश्यंति) यहसाक्षात्कारकावाचक वचनही भगवान्कूंकहणेयोग्यथा काहेतैं साक्षात्कारकरिकेही तामायाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ कर्मउपासनादिकोंकरिके तामायाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तावचनकूंनकहिके श्रीभगवान्नैंजो (मामेवयेप्रपद्यंते) यहवचन कथनकऱ्याहै ताकरिके यहअर्थ सूचनकऱ्याहै जेअधिकारीपुरुष मैं एकपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोइके परमानंदघनपरिपूर्ण मैं भगवान्वासुदेवकूंचिंतनकरतेहुए दिवसोंकूंव्यतीतकरैंहैं तेअधिकारीपुरुष मैं परमेश्वरकेप्रेमजन्यमहान्आनंदसमुद्रविषेमग्नमनवालेहोणेतैं इसमेरीमायाकेसंपूर्णगुणविकारोंनें अभिभवन हींकरीतेहैं किंतु उलटा साहमारीमाया यहभगवत्शरणपुरुष हमारेविलासविनोदविषेअकुशलहोणेतैं हमारे नाशकरणेविषेसमर्थहैं याप्रकारकीशंकाकरतीहुई तिनभक्तजनोंतैं आपेहीनिवृत्तहोइजावै है ॥ जैसे क्रोधवान्तपस्वीपुरुषोंतैं वारांगना निवृत्तहोइजावै है ॥ यातैं यह अधिकारीपुरुष तिसहमारीमायाकेतरणवासतै मैंपरिपूर्णभगवान्वासुदेवकूं निरंतर चिंतनकरै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् ! इसप्रकार आपपरमेश्वरकेशरणागतहोइके आपकेनिरंतरचिंतनतैं जोइसमायाकीनिवृत्तिहोतीहोवै तौ सर्वअनर्थोंकामूलभूत इसमायाकेनाशकरणेवासतै यहसर्वमनुष्य आपकेशरणकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए अनेकजन्मोंविषेसंचयकरेहुए पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं यहसर्वमनुष्य हमारेशरणकूं प्राप्तहोतेनहीं याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नमांदुष्कृतिनोमूढाःप्रपद्यंतेनराधमाः ॥ माययापहृतज्ञानाआसुरंभावमाश्रिताः ॥ १५ ॥ न । माम् । दुष्कृतिनः । मूढाः । प्रपद्यंते । नराधमाः । मायया । अपहृतज्ञानाः । आसुरम् । भावम् । आश्रिताः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जेपुरुष पापकर्मोंवालेहैं तथामूढहैं तथानरोंविषेअधमहैं तथामायाकरिके निवृत्तहुआहैज्ञानजिनोंका तथादंभदर्पादिरूपआसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिन्होंनें ऐसेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहीं भजैंहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जेपुरुष पापकर्मोंकरिके नित्यहीयुक्तहैं ।। जिसकारणतैं पापकरिकैयुक्तहैं तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वमनुष्योंविषेअधमहैं अर्थात् तेपापात्मापुरुष इस लोकविषेतो श्रेष्ठपुरुषोंकरिके निंदाकरणेयोग्यहोवैहैं और परलोकविषे सहस्रअनर्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ।। याकारणतैं तेपापात्मापुरुष सर्वमनुष्योंविषे अधमहैं ।। शंका–हेभगवन् ! तेपुरुष अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारे पापकर्मकूंही सर्वदा किसकारणतैंकरतेहैं ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं ।। (मूढाःइति) हेअर्जुन ! जिसकारणतैं तेपुरुष मूढहैं अर्थात् यहकार्य हमारेअर्थकासाधनहै तथायहकार्य हमारेअनर्थकासाधनहै याप्रकारके इष्टअनिष्टकेविवेकतैंशून्यहैं तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वदा पापकूंहीकरैंहैं शंका–हेभगवन् ! शास्त्रप्रमाणकेविद्यमानहुए तेपुरुष तिसविवेककूं किसवासतै नहींकरतेहैं ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (माययापहृतज्ञानाः इति)

बंधरूपापोंतैंरहितहोवैहै तथा ज्ञानकेअनुकूलपुण्योंकरिकै युक्तहोवैहै तबी जैसे अत्यंतनिर्मल दर्पणविषे मुख स्पष्टप्रतीतहोवैहै तैसे सर्व कर्मों केत्यागपूर्वक तथा शमदमादिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुके समीपजाइकै करेहुए श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकैसंस्कृत अत्यंतस्वच्छअंतःकरणविषे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीसाक्षात्काररूप वृत्ति उत्पन्न होवैहै जासाक्षात्काररूपवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुनैंउपदेशकरेहुए तत्त्वमसि इसवेदांतवाक्यकरिकैजन्यहै तथा जावृत्ति अनात्माकारतातैंरहितहै तथा सर्वउपाधियोंतैंरहित शुद्धचैतन्यकेआकारहै ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहुआ चैतन्य उसीकालविषे स्वआश्रयविषयअविद्याकूं नाशकरैहै ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिकालविषेही अंधकारकूंनाशकरैहै ॥ ताअविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर तिसवृत्तिसहित सर्वकार्यप्रपंचका नाशहोवैहै ॥ काहेतैं उपादानकारणकेनाशहुएतैं अनंतर उपादेयकार्यकेनाशकूं सर्वशास्त्रवालेअंगीकारकरैं हैं ॥ इसीसर्वअर्थकूं श्रीभगवान्‌कहैं हैं (मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतितेइति) तहां । (आत्मेत्येवोपासीत । तदात्मानमेवावेत् । तमेवधीरोविज्ञाय । तमेवविदित्वातिमृत्युमेति ।) इत्यादिकश्रुतियोंविषेस्थितजो एव यहशब्दहै सोएवकारजैसे प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंरहितपणेकूं बोधनकरैहै तैसे (मामेवयेप्रपद्यंते) इसगीतावचनविषेस्थित एवकारभी तिसप्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंरहितपणेकूंबोधनकरैहै अर्थात् स्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वउपाधियोंतैंरहित सच्चिदानंदअखंड अद्वितीयरूप मैंपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरैं हैं तेअधिकारीपुरुषही इस अविद्यारूपमायाकूं नाशकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जाअंतःकरणकीवृत्ति तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्योंकरिकैजन्यहै तथा निर्विकल्पक साक्षात्काररूपहै तथा निर्वचनकरणेकूंअयोग्य शुद्धचिदाकारत्वधर्मकरिकै विशिष्टहै तथासर्वसुकृतोंकाफलरूपहै तथा निदिध्यासनकेपरिपाकतैं उत्पन्नहुई है तथा सर्वकार्यसहितअज्ञानकाविरोधीहै ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैं हैं तेअधिकारीपुरुषही इसहमारीअविद्यारूपमायाकूं विनाही आयासतैं नाशकरैं हैं ॥ कैसीहैसामाया मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारके हमारेसाक्षात्कारतैंविना दूसरेअनेकउपायोंकरिकैभी नाशकरीजावैनहीं तथाजामाया सर्वअनर्थोंकेजन्मकाभूमिरूपहै ऐसीअविद्यारूपमायाकूं तेअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकै सुखेनही नाशकरैं हैं अर्थात् सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै तेपुरुष सच्चिदानंदघनरूपकरिकैस्थितहोवैं हैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंका कोईभी प्रतिबंध करिसकै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्चनाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति ।।) अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेअभिभवकरणेविषे इंद्रादिकदेवताभी समर्थहोवैनहीं ॥ तिसकाकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष तिनसर्वदेवतावोंका आत्मारूपही है इति ॥ तहां (ये ते) यादोनोंविषे बहुत पुरुषोंकावाचक जोबहुवचनभगवानैंनें कथनकर्‌याहै सोबहुवचन देहइंद्रियरूपसंघातकेभेदकरिकैअल्पनाकरेहुए आत्माकेभेदभ्रमका अनुवाद करैहै ॥ कोईसोबहुवचन वास्तवतैं आत्माके

होवैनहीं किंतुताबिंबचैतन्यविषे उपाधिस्थत्वमात्रही कल्पितहोवैहै ॥ और आभासपक्षविषेतो यद्यपि सोचिदाभासशुक्तिरजतादिकोंकीन्याई अनिर्वचनीयहीउत्पन्न होवैहै तथापि सोचिदाभास घटादिकजडपदार्थों तैं विलक्षणहीहोवे है ॥ यातैं ताचिदाभासविषेभी आपणाज्ञान तथापरकाज्ञान संभवैहै ॥ ऐसाप्रतिबिंबरूपजीव जबपर्यंत आपणे परमेश्वररूपबिंबकेसाथि आपणीएकताकूं नहीं जानैहै तबपर्यंत जैसे जलविषेस्थितसूर्य ताजलकेकंपादिकविकारोंकूं प्राप्तहोवैहै तैसे सोप्रतिबिंबरूपजीवभी ताअविद्यारूप उपाधिके सहस्रविकारोंकूं अनुभवकरैहै॥इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान्‌कथनकरैहैं (ममभायादुरत्ययाइति) हे अर्जुन ! बिंबभूतमैंपरमेश्वरके ऐक्यसाक्षात्कारतैंविना यह मेरीमाया तरणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं यहमाया दुरत्ययाहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदाचर्मवदाकाशंवेष्टयिष्यंति मानवाः ॥ तदादेवमविज्ञायदुःखस्यांतोभविष्यति) ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहमनुष्य चर्मकीन्याईं इस आकाशकूं इकट्ठाकरिलेवैंगे तिसकालविषे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं परमात्मादेवकूंनजानिकैभी अविद्यादिकसर्वदुःखका नाश होवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चर्मकीन्याईं निरवयवआकाशका इकट्ठाकरणा अत्यंतअशक्यहै तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारतैंविना अविद्यादिकदुःखकानाशकरणाभी अत्यंतअशक्यहै इति ॥ इसीकारणतैं सोजीव अंतःकरणावच्छिन्नहोणेतैं ताअंतःकरणसैंसंबद्ध पदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियद्वारा प्रकाशकरताहुआ अल्पज्ञकह्याजावैहै ॥ तिसकारणतैंही सोजीव मैंजानताहूं मैंकरताहूं मैंभोक्ताहूं इत्यादिकअध्यासरूपसहस्रअनर्थोंका पात्रहोवैहै और सोईहीप्रतिबिंबरूपजीव जबीआपणेबिंबभूतईश्वरका आराधनकरै है अर्थात् जोबिंबरूपईश्वर अनंतशक्तिवालाहै तथा अविद्यारूपमायाका नियंताहै तथा सर्वप्रपंचकूंजानणेहाराहै तथा सर्वशुभअशुभकर्मकेफलका प्रदाताहै तथा परिपूर्णआनंदघनमूर्तिहै तथा भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै अनेकअवतारोंकूंधारणकरैहै तथा सर्वका परमगुरुरूपहै ऐसेबिंबभूतपरमेश्वरकूं यहप्रतिबिंबरूपजीव जबी सर्वकर्मोंकासमर्पणकरिकै आराधनकरैहै तबी बिंबविषे समर्पणकरेहुएगुणोंका प्रतिबिंबविषेभानहोणे तैं यहजीव सर्वपुरुषार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता प्रह्लादनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नैवात्मनःप्रभुरयंनिजलाभपूर्णोमानंजनादविदुषःकरुणोवृणीते ।। यद्यज्जनोभगवतेविदधीतमानंतच्चात्मनेप्रतिमुखस्ययथामुखश्रीः ॥) अर्थयह ॥ दर्पणविषेप्रतिबिंबितमुखविषे जबी तिलकादिरूपश्री अपेक्षितहोवैहै तबी बिंबभूतमुखविषेही तेतिलकादिकचिह्न करेजावैं हैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषेकरेहुए तेतिलकादिकचिह्न आपेही ताप्रतिबिंबविषे प्रतीतहोवैं हैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषे तिनतिलकादिकों के कियेतैंविना ताप्रतिबिंबविषे तिनतिलकादिकोंकेप्राप्तिकरणेका दूसराकोईउपायहैनहीं तैसे बिंबभूतईश्वरविषे समर्पणकरेहुए धर्मादिकपुरुषार्थोंकूंही सोप्रतिबिंबरूपजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तिसबिंबभूतईश्वरविषे तिनधर्मादिकोंकेअर्पणकियेतैंविना तिसप्रतिबिंबरूपजीवकूंपुरुषार्थकीप्राप्तिविषे दूसराकोईउपायहैनहीं इति ॥ इसप्रकार सर्वत्रपरिपूर्णभगवान्‌वासुदेवकूं आराधनकरणेहारे अधिकारीपुरुषका अंतःकरण जबीज्ञानकेप्रति

अवियाहै जाअविया सत्त्वगुणकीप्रधानताकरिकै अत्यंतस्वच्छहै ॥ ऐसीस्वच्छअविया जैसेस्वच्छदर्पण मुखकेआभासकूंग्रहणकरैहै तैसे चेतनकेआभासकूंग्रहण करैहै ॥ तहां जैसे दर्पणरूपउपाधिके श्यामतादिकदोष मुखरूपबिंबकूं स्पर्शकरैंनहीं तैसेताअवियारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैअसंबद्धहोणेतै परमेश्वरतौ बिंब स्थानीयहै और जैसे दर्पणविषेस्थितप्रतिबिंब तादर्पणकेश्यामतादिकदोषोंकरिकै संबद्धहोवैहै तैसे ताअवियारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैसंबद्धहोणेतैं जीवात्मा प्रतिबिंबस्थानीयहै ॥ तहां तिसबिंबरूपईश्वरतैंही ताजीवकेभोगवासतै आकाशादिकक्रमकरिकै शरीरइंद्रियादिकसंघात तथातासंघातका भोग्यरूपसंपूर्णप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकीकल्पना करीजावैहै तहां जैसे बिंब प्रतिबिंब यादोनोंविषे शुद्धमुख अनुगतहोवैहै तैसे ईश्वर जीव यादोनोंविषेअनुगत जो मायाउपहितचैतन्यहै सोचैतन्य साक्षी कह्याजावैहै ॥ तिससाक्षीचैतन्यनैंही आपणेविषेअध्यस्तमाया तथातामायाकाकार्यरूप सर्वप्रपंच प्रकाशकरीताहै ॥ यातैं तासाक्षीचैतन्यकेअभिप्रायकरिकै तौ श्रीभगवान्नैं ताअवियारूपमायाकूं दैवी या नामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और ताबिंबरूपईश्वरकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं तामायाकूं ममभाया यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि ताएकअवियाविषेप्रतिबिंबरूप एकहीजीव संभवैहै तथापिताएक अवियाविषेस्थित अंतःकरणकेसंस्कार भिन्नभिन्नहैं तिनसंस्कारोंकेभेदकरिकै अंतःकरणरूपउपाधिवालेजीवका इहांगीताविषे तथाश्रुतिविषे भेदकथनकऱ्याहै ॥ तहां इसगीताविषेतौ (मांयेप्रपद्यंते । दुष्कृतिनोमूढानप्रपद्यंते । चतुर्विधाभजंतेमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और श्रुतिविषेतौ । (तद्योयो देवानांप्रत्यबुध्यतसएवतदभवत्तथाऋषीणांतथामनुष्याणाम् ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और ताअंतःकरणरूपउपाधिकेभेदकानहींविचारकरिकैतौ जीवत्वकाप्रयोजकअवियारूपउपाधिकेएकत्वहोणेतैं ताजीवकाभी एकत्वरूपकरिकेही इसगीताविषे तथाश्रुतिविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहांइसगीताविषेतौ (क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत । प्रकृतिंपुरुषं चैवविद्ध्यनादीउभावपि । ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्याहै ।। और श्रुतिविषेतौ । (ब्रह्मवाइदमग्रआसीत्तदात्मानमेवावेदहंब्रह्मास्मीतितस्मात्सर्वमभवत् । एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः । अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य । वालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यच ॥ भागोजीवःसविज्ञेयःसचानंत्यायकल्पते ।।) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि दर्पणविषेस्थित जोचैत्रनामापुरुषका प्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जाणतानहीं काहेतैं जडचेतनकासमुदायरूप जोचैत्रनामापुरुषहै ताचैत्रपुरुषकेशरीररूपअचेतनअंशकाही तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैहै चेतनअंशका तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैनहीं ।। यातैंजडहोणेतैं सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जाणतानहीं तथापि अवियाविषे जोचेतनकाप्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंबचेतनरूपहोणेतैं आपणेकूं तथापरकूं जाणताहीहै काहेतैं प्रतिबिंबपक्षविषे सोप्रतिबिंब मिथ्या

माया । दुरत्यया । माम् । एवं । ये । प्रपद्यंते । मायाम् । एताम् । तरंति । ते ॥१४॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकी यह सत्त्वादिगुणरूप प्रसिद्ध देवी माया दुरतिक्रमाहै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूंही साक्षात्कारकरें हैं तेपुरुषही इस मायाकूं नाशकरें हैं ॥ १४ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) इत्यादिकश्रुतियों नैं प्रतिपादनकन्याजो स्वप्रकाशचैतन्यआनंदस्वरूपदेवहै जोदेव जीवईश्वरविभागतैंरहितहै ताशुद्धचैतन्यमात्रदेवके आश्रयरूपकरिकै तथाविषयरूपकरिकै जामायाकल्पनाकरीजावैहै ताकानाम देवी है अर्थात् जैसे अंधकार जागृहकेआश्रितरहे है तागृहकूंही आवृतकरै है तैसे यहमायाभी जिस शुद्धचैतन्यदेवकेआश्रितरहे है तिसीशुद्धचैतन्यदेवकूं विषयकरै है ॥ इसप्रकार चैतन्यदेवके आश्रित तथाचैतन्यदेवविषयकहोणेतैं सामाया देवी कहीजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आश्रयत्वविषयत्वभागिनीनिर्विभागचितिरेवकेवला । पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमोनाश्रयोभवतिनापिगोचरः ॥) अर्थयह ॥ जीवईश्वरविभागतैंरहित केवलचैतन्यमात्रही अनादिसिद्धअज्ञानके आश्रयत्वकूं तथाविषयत्वकूं प्राप्त होवैहै ॥ जिसकारणतैं ताअनादिसिद्धअज्ञानका ताअज्ञानकेपश्चात्भावीकोईभीपदार्थ आश्रय तथाविषयहोवै नहीं इति ॥ जादेवीमाया (मामहंनजानामि) अर्थ मैंआपणेकूंनहींजानताहूं याप्रकारकेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैसिद्धहोणेतैं अपलापकरीजावैनहीं ॥ तथा जामाया स्वप्नभ्रमादिकोंकीअन्यथाअनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ यहमायाकीप्रसिद्धि (एषा हि) यादोनोंशब्दोंकरिकैकथनकरीहै तहां एषा याशब्दकरिकैतो साक्षीप्रत्यक्षसिद्धता कथनकरीहै ॥ और हि याशब्दकरिकै अर्थापत्तिप्रमाणसिद्धता कथनकरी है ॥ तथा जामाया गुणमयी है अर्थात् सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे त्रिगुणकरीहुईरज्जु अत्यंतदृढहोणेतैं पुरुषोंकेबंधनकाहेतुहोवैहै तैसे अत्यंतदृढहोणेतैं यहत्रिगुणात्मकमायाभी इनजीवोंकेबंधनकाहेतुहै ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवास्तेही श्रीभगवाननैं तामायाका गुणमयी यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ ऐसीजा मैंपरमेश्वरकीमायाहै अर्थात् सर्वजगत्काकारणरूप तथासर्वज्ञ तथासर्वशक्तिसंपन्न तथामायावी ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं तिसहमारे गृहीपुरुषकेगृहादिकोंकीन्याईं ममत्वकाविषयीभूत जामायाहै जामाया मैंपरमेश्वरकेअधीनहोणेतैं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंका निर्वाहकरणेहारीहै तथा जामाया तत्त्ववस्तुकेभानकाप्रतिबंधकरिकै अतत्त्ववस्तुकेभानकाहेतुरूप आवरणविक्षेपशक्तिवालीअविद्यारूपहै ॥ तथा जामाया सर्वजगतकीप्रकृतिरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥) अर्थयह ॥ इससर्वजगत्का माया उपादानकारणहै ॥ और तामायावाला महेश्वर कह्याजावैहैइति ॥ इहां यहप्रक्रियाहै ॥ जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकविभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्यहै ताशुद्धचैतन्यविषेअध्यस्त जाअनादि मायारूप

एभिः । सर्वम् । इदम् । जगत् । मोहितम् । न । अभिजानाति । माम् । एभ्यः । परम् । अव्ययम् ॥ १३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इनपूर्व उक्त गुणमय तीनप्रकारके भावोंनें यह सर्व जगत् मोहितकऱ्याहै याकारणतें इनगुणमयभावोंतें पर तथाअविक्रिय मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानताहै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरेजे सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकेविकाररूप तीनप्रकारकेभावपदार्थ हैं तिन तीनप्रकारकेपदार्थोंनेंही यहसर्वप्राणीमात्र मोहित करेहैं अर्थात् नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यताकूं प्राप्तकरेहैं ॥ याकारणतेंही यहप्राणी मैंपरमात्मादेवकूं जानतेनहीं ॥ कैसाहूं मैंपरमेश्वर इनतीन प्रकारकेभावोंतें परहूं अर्थात् तिनसर्वभावोंकेकल्पनाका अधिष्ठानरूपहूं ॥ तथा तिनसर्वभावोंतें अत्यंत विलक्षणहूं ॥ ताविलक्षणताविषे हेतुगर्भितविशेषणकहेहैं ॥ (अव्ययमिति) अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारों तें रहितहूं ॥ तथा इसदृश्यप्रपंचतेंरहितहूं ॥ तथा आनंदघनहूं ॥ तथा आपणेस्वयंज्योतिरूप करिकैप्रकाशमानहूं ॥ तथा सर्वप्राणियोंका आत्मारूपहूं ॥ ऐसे अत्यंतसमीपभी मैंपरमेश्वरकूं यहप्राणी जानतेनहीं ॥ ताप्रत्यक्अभिन्न मैंपरमेश्वरकेअज्ञानतेंही यहसर्वप्राणी वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातें इनअविवेकीजनोंके बहुतदौर्भाग्यहैं इति ॥ तहां सत्त्वादिकगुणमय भावोंनें यहसर्वप्राणी मोहकूंप्राप्तकरीतेहैं यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (इंद्रियाभ्यामजय्याभ्यांद्वाभ्यामेवहतंजगत् ॥ अहोउपस्थजिह्वाभ्यांब्रह्मादिमशकावधि) ॥ अर्थयह ॥ अल्पयत्नकरिकैजयकरणेकूंअशक्यजोउपस्थइंद्रियहै तथाजिह्वाइंद्रियहै तिनदोनोंइंद्रियोंनेंही ब्रह्मातैंआदिलैकेमशकपर्यंत यहसर्व जगत् हननकऱ्याहै ॥ यहबडाआश्चर्यहै ॥ यद्यपि आपणेआपणेविषयोंविषेप्रवृत्तहुए नेत्रादिकसर्वइंद्रिय इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहैं तथापि तिनसर्वइंद्रियों विषे उपस्थ जिह्वा यहदोनोंइंद्रिय अत्यंतप्रबलहैं ॥ यातें तिनदोनोंइंद्रियोंकाही इहांग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् ! पूर्वकथन करेजे अनादिसिद्धिमायाके सत्त्वादिकतीनगुणहैं तिन तीनगुणोंकरिकैसंबद्धहुए इसजगत्कूं स्वतंत्रताकेअभावहोणेतें तिसात्रिगुणात्मकमायाकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य हैनहीं॥ यातें कदाचित्भी तामायाकीनिवृत्ति नहींहोवैगी ॥ काहेतें यथार्थवस्तुकेविवेकका जोअसामर्थ्यहै ताअसामर्थ्यकाहेतुरूप सात्रिगुणात्मकमाया सनातनहीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए अन्यउपायकरिकै यद्यपि तामायाकीनिवृत्तिनहींहोवैहै तथापि एकभगवत्कीशरणताकरिकै प्राप्तहुएतत्त्वज्ञानतें तामायाकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतिते ॥ १४ ॥ दैवी । हि । एषा । गुणमयी । मम ।

सात्विकाः । भावाः । राजसाः । तामसाः । च । ये । मत्तः । एव । इति । तान् । विद्धि । न । तु । अहम् । तेषु । ते । मयि॥ १२॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जे कोई अन्यभी सात्विक पदार्थहैं तथा जेकोई राजसपदार्थ हैं तथा तामस पदार्थ हैं तिनंसर्वपदार्थोंकूं मैंपरमेश्वरतें ही पूर्वउक्तरीतिसैं उत्पन्न हुआ जानें तौ भी मैंपरमेश्वर तिनंपदार्थोंविषे नहींहूं तेपदार्थतों मैंपरमेश्वरविषेही हैं ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्तपदार्थोंतैंभिन्न जेकोईदूसरेभी अंतःकरणकेपरिणामरूप शमदमादिक सात्विकभावहैं तथा हर्षदर्पादिक राजसभावहैं तथा शोकमोहादिक तामसभावहैं जेसात्विकराजसतामसभाव इनप्राणियोंकूं विद्याकर्मादिकोंकेवशतें उत्पन्नहोवैं हैं तिनसर्वभावोंकूं (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवः) इत्यादिकवचनउक्तरीतिसैं मैं परमेश्वरतैंही उत्पन्नहुआ जान ॥ अथवा सत्त्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेसात्त्विकभावहैं ॥ जैसे देव ऋषि ब्राह्मण शर्करा इत्यादिकपदार्थ हैं तथा रजोगुणहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजेराजसभावहैं जैसे गंधर्व यक्ष क्षत्रिय मिरच इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तथा तमोगुणहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजे तामसभावहैं ॥ जैसे राक्षस क्रव्याद शूद्र गृंजन इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतैंही उत्पन्नहुएजान ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतैं उत्पन्नभीहुएहैं तौभी मैंपरमेश्वर तिनजडपदार्थोंविषे आधेयरूपकारिकैस्थितनहींहूं अर्थात् जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकल्पितसर्पादिकोंकेविकल्पोंकारिकै दूषितहोवैनहीं तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनअनात्मपदार्थोंके वशवर्ति तथातिनोंकेविकारोंकारिकैदूषित होतानहीं ॥ जैसे संसारीजीव तिनोंकेवशवर्ति तथातिनोंके विकारोंकरिके दूषित होवैं हैं तैसे मैंपरमेश्वरदूषितहोतानहीं ॥ और तेसर्वजडपदार्थतौ जैसे रज्जुविषे सर्पादिककल्पितहोवैं हैं तैसे मैंपरमेश्वरविषेही कल्पितहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरतैं सत्तास्फूर्तिकूंप्राप्तहुए तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरकेही अधीनहैं ॥ इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् ! (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकारिकै आपनैं सर्वजगत्कूं आपणास्वरूपकह्या ॥ तथा आपणेकूं स्वतंत्रकह्या तथानित्यशुद्धमुक्तस्वभावकह्या ॥ ऐसे स्वतंत्र नित्यशुद्धमुक्तस्वभाव आपपरमेश्वरतैंअभिन्न जोयहजगत्है तिसजगत्विषे संसारीपणा कैसेसंभवैगा किंतु नहींसंभवैगा ॥ तहां तिसहमारे स्वतंत्रनित्यशुद्धमुक्तस्वरूपके अज्ञानतैंही इसजगत्विषे सोसंसारीपणाहोवैहै वास्तवतैंनहीं ॥ ऐसावचन जोआपकहो तौभी तिसआपकेस्वरूपकाअज्ञान इसजगत्विषे किसकारणतैं है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताआपणेस्वरूपकेअज्ञानविषे कारणकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिःसर्वमिदंजगत् ॥ मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम् ॥ १३ ॥ त्रिभिः । गुणमयैः । भावैः ।

रूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वभूतोंकाप्रोतपणा युक्तहै किंवा तत्त्वअतत्त्ववस्तुविवेककाजोसामर्थ्य है ताकानाम बुद्धिहै तिसबुद्धिवालेपुरुषोंकानाम बुद्धिमत्‌हे ॥ ऐसे बुद्धिमानपुरुषोंकी साबुद्धि मैंहूं अर्थात् ताबुद्धिरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेबुद्धिमान्‌पुरुष प्रोतहैं ॥ और अन्यशत्रुवोंके अभिभवकरणेकाजोसामर्थ्य है जिससामर्थ्य करिके यह पुरुष अन्यप्राणियोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहोतानहीं तासामर्थ्यकानाम तेजहै ऐसेतेजवालेपुरुषोंकानाम तेजस्वी है तिनतेजस्वीपुरुषोंका सोतेज मैंहूं अर्थात् ता तेजरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेतेजस्वीपुरुष प्रोत हैं इति ॥ १० ॥ ❀ किंच ।

(मू. श्लो.) बलंबलवतांचाहंकामरागविवर्जितम् ॥ धर्माविरुद्धोभूतेषुकामोऽस्मिभरतर्षभ ॥११॥ बलम् । बलवताम् । च । अहम् । काम रागविवर्जितम् । धर्माविरुद्धः । भूतेषु । कामः । अस्मि । भरतर्षभ ॥ ११ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! बलवान्‌पुरुषोंका काम रागतैंरहित जोबलहै सोबल मैं हूं तथा सर्वप्राणियोंविषे धर्मतैं अविरुद्ध जोकामहै सोकाम मैंहूं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । अप्राप्तजोविषयहै ताविषयकीप्राप्तिकरणेहारेकारणकेअभावहुएभी यहविषय हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकी जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम कामहै और प्राप्तजोविषयहै ताविषयके नाशकरणेहारेकारणकेविद्यमानहुएभी यहविषय नाशकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकी जा रंजनात्मकचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम रागहै ऐसेकामरागतैंरहित जोबलहै अर्थात् सर्वप्रकारतैं ताकामरागकूंनहीं उत्पन्नकरणेहारा तथारजतमतैंरहित जोस्वधर्मकेअनुष्ठानवासतै देहइंद्रियादिकोंकेधारणकासामर्थ्यरूपबलहै ऐसेसात्विकबलवालेपुरुषोंकानाम बलवत्‌हे ऐसेसंसारतैंपराङ्मुख बलवान्‌पुरुषोंका सोबल मैंहूं अर्थात् तासात्विकबलरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेबलवान्‌पुरुष प्रोतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोकामरागतैंरहितबलही मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ ताकाम रागकूंउत्पन्नकरणेहारा जोविषयासक्तपुरुषोंकाबलहै सोबल मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिकै ध्यानकरणेयोग्यनहींहै इति ॥ अथवा (कामरागविवर्जितम्) यावचनविषेस्थितजोरागशब्दहै तारागशब्दकरिकै क्रोधकाहीग्रहणकरणा ॥ किंवाधर्मशास्त्रकानाम धर्म है ताधर्मशास्त्रतैंअविरुद्ध अर्थात् ताधर्मशास्त्रतैंनहींनिषेध कऱ्याहुआ अथवा धर्मकेअनुकूलऐसाजो सर्वभूतप्राणियोंविषे शास्त्रकेअनुसार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थविषयक अभिलाषारूपकामहै सोकाम मैंहूं अर्थात् ताशास्त्रअविरुद्धकामरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेकामयुक्तसर्वप्राणी प्रोतहैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार बहुतपदार्थोंके गणनेसेक्याप्रयोजनहै यहसर्वजगत् मैंपरमेश्वरतैंहीउत्पन्नहुआ मैंपरमेश्वरविषेहीप्रोतहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) येचैवसात्विकाभावाराजसास्तामसाश्चये ॥ मत्तएवेतितान्विद्धिनत्वहंतेषुतेमयि ॥ १२ ॥ ये । च । एव ।

नाशीतस्पर्शरूप मैंपरमेश्वरविषेही सोवायु प्रोतहै इति ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणियोंविषेस्थितजो प्राणोंकाधारणरूप आयुषरूपजीवनहै सोआयुषरूपजीवन मैं हूं अर्थात् ताआयुषरूपमेंपरमेश्वरविषेही तेसर्वप्राणी प्रोतहैं ॥ अथवा (जीवत्यनेनेतिजीवनम्) ॥ अर्थयह ॥ जीवनकूंप्राप्तहोवैजिसकरिकै ताकानाम जीवनहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोजविनशब्द विराट्रूपसमाष्टिअन्नकावाचकहै ॥ तिसअन्नरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेसर्वभूतप्रोतहैं ॥ और दिनदिनविषे तपकरिकै युक्तजेवानप्रस्थादिकहैं तिनवानप्रस्थादिक तपस्वियोंविषे स्थितजो शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिकद्वंद्वोंकेसहनकरणेकासामर्थ्यरूपतपहै सोतप मैंहूं ॥ अर्थात् तिस तपरूपमेंपरमेश्वरविषेही तेतपस्वीपुरुष प्रोतहैं ॥ इहां (तपश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ताचकारकरिकै अंतरबाह्य सर्वतपोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां चित्तकीएकाग्रतारूप अंतरतपहै ॥ और जिह्वाउपस्थादिकइंद्रियोंकानिग्रहरूप बाह्यतपहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! (आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनैं आकाशतैंवायुकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और वायुतैंअग्निकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और अग्नितैंजलकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और जलतैंपृथिवीकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और कार्यका आपणेआपणेकारणविषेही प्रोतपणाहोवैहै यातैं तेसर्वभूतआपणेआपणेकारणविषेही प्रोतहैं ॥ अकारणरूपतुम्हारेविषे कोईभीपदार्थ प्रोतनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए (आत्मनआकाशःसंभूतःयतोवाइमानिभूतानिजायंते) इत्यादिकश्रुतियों मैंपरमेश्वरतैंही सर्वभूतोंकीउत्पत्तिकूंकथनकरैं हैं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरही सर्वभूतोंकाकारणहूं याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) बीजंमांसर्वभूतानांविद्धिपार्थसनातनम् ॥ बुद्धिर्बुद्धिमतामास्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ बीजम् । माम् । सर्वभूतानाम् । विद्धि । पार्थ । सनातनम् । बुद्धिः । बुद्धिमताम् । अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहम् ॥ १० ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन ! उत्पत्तितैंरहित मैं परमेश्वरकूं तूं सर्वभूतोंका कारण जान तथा बुद्धिमान्पुरुषोंकी जाबुद्धिहै साबुद्धिमैं हूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका जोतेजहै सोतेज मैं हूं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंका जोएकसनातनबीजहै अर्थात् आपणीउत्पत्तिविषेबीजांतरकीअपेक्षातैंरहित जोसर्वभूतोंका एकनित्यकारणहै जोकारण व्यक्तिव्यक्तिविषे भेदवालाहैनहीं तथाअनित्यहैनहीं ऐसा अव्याकृतनामा सर्वजगत्काबीजकारणरूप मैंपरमेश्वरकूंही तूंजान ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु सर्वभूतोंकाबीजरूपहैनहीं ॥ और श्रुतिविषे आकाशादिकों तैं जोवायुआदिकोंकीउत्पत्तिकथनकरीहै सोभी केवल जड आकाशादिकोंतैंही वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीनहीं किंतु आकाशादिउपहित मैंपरमेश्वरतैंही वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं सर्वभूतोंका अव्याकृतनामाबीज

कारेणसर्वावाक्संतृष्णाइति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वपर्ण शंकुकरिकैग्रथितहैं तैसे सर्ववेदोंकेवचन ॐकारकरिकैग्रथितहैं इति ।। और संपूर्णआकाशविषे अनुस्यूत तथाताआकाशकाकारणरूप जोशब्दतन्मात्रारूप पुण्यशब्दहै सोशब्द मैंहूं अर्थात् ताशब्दरूप मैंपरमेश्वरविषेही सोआकाश प्रोतहै ॥ और सर्वपुरुषों विषे अनुस्यूत होइकैरह्याहुआजो पुरुषत्वसामान्यरूप पौरुषहै सोपौरुष मैंहूं अर्थात् तापौरुषरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेसर्वपुरुष प्रोतहैं ॥ इहां यहतात्पर्य है ॥ जैसे सर्वशब्दोंविषे अनुगत शब्दत्वसामान्यविषे दुंदुभिशब्दत्वादिकविशेष प्रोतहोवैं हैं तैसेरसादिसामान्यरूप मैंपरमेश्वरविषेही जलादिकसर्वविशेष प्रोतहैं ॥ याप्रकारकीरीति अगलेच्यारिश्लोकोंविषेभी सर्वत्रजानणी ।। तहां दुंदुभि शंख वीणा यहतीनदृष्टांत आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ।। इहां (रसोहमप्सु) इत्यादिकपंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं जो आपणीविभूति कथनकरी है ॥ सोकेवल . ध्यानकरणेवासतैकथनकरीहै ॥ यातैंइसध्येयस्वरूपविषे अत्यंतअभिनिवेशकरणानहीं इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) पुण्योगंधःपृथिव्यांचतेजश्चास्मिविभावसौ ॥ जीवनंसर्वभूतेषुतपश्चास्मितपस्विषु ॥ ९ ॥ पुण्यः । गंधः । पृथिव्याम् । च । तेजः । च । अस्मि । विभावसौ । जीवनम् । सर्वभूतेषु । तपः । च । अस्मि । तपस्विषु ॥९॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! पृथिवी विषे जोपुण्य गंधहैसोगंध मैं हूं तथा अग्निविषे जोतेजहै सोमैंहूं तथा सर्वभूतोंविषे जोजीवनहै सोमैंहूं तथा तपस्वीपुरुषोंविषे जोतपहै सो मैं हूं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सर्वपृथिवीविषेसामान्यरूप तथासर्वपृथिवीविषेअनुस्यूत तथातापृथिवीकाकारणरूप ऐसाजोतन्मात्रारूपपुण्यगंधह अर्थात् विकारभावतैं रहित जोसुरभिगंधहै सोपुण्यगंध मैंहूं अर्थात् तापुण्यगंधरूप मैंपरमेश्वरविषेही सापृथिवी प्रोतहै ।। इहां (पुण्योगंधःपृथिव्यांच) यावचनविषेस्थितजोचकार है सोचकार रसादिकोंविषेभी तापुण्यत्वके समुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंविषे स्वभावतैंतौ पुण्यत्वहीरहेहैं और प्राणियोंकेअधर्मविशेषतैं तिनशब्दादिकोंविषे अपुण्यत्व होवैहै ॥ स्वभावतैं सो अपुण्यत्व तिनशब्दादिकविषयोंविषे होवैनहीं ॥ इहां असुरभिआदिकविकार भावतैंरहितपणेकानाम पुण्यत्वहै इति ॥ और अग्निविषेजोतेजहै सोतेज सर्वपदार्थोंके दहनप्रकाशनका सामर्थ्यरूपहै तथाउष्णस्पर्शसहितहै तथाश्वेतभास्वररूपहै तथासर्वअग्निविषेअनुस्यूतहै सोतेज मैंहूं अर्थात् तिसतेजरूप मैंपरमेश्वरविषेही सोअग्नि प्रोतहै ॥ इहां (तेजश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ता चकारतें वायुकेस्पर्शकाभी ग्रहणकरणा अर्थात् उष्णस्पर्शकरिकैआतुरपुरुषोंकूं शीतलताकीप्राप्तिकरणेहारा जोवायुकाशीतस्पर्श है सोशीतस्पर्शभी मैंहीहूं ॥

यातैं मृत्तिकादिरूपकारणतैं घटादिरूपकार्य परहै अर्थात् पृथक्है ॥ और जैसे घटादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारणहै तैसे गौअश्वादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारण हैनहीं ॥ यातैं तेगौअश्वादिककार्य तामृत्तिकातैं परतरहैं ॥ तैसे मैंपरमात्मादेवतैं कोईभीकार्य परतर नहींहै अर्थात् जिस कार्यवस्तुका मैंपरमेश्वर उपादानकारणनहींहूं ऐसाकोईकार्यवस्तु हैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै प्रपंचविषे ब्रह्मकाअव्यतिरेकपणादिखाया ॥ अब ताब्रह्मविषे प्रपंचकेअव्यतिरेकपणेकूं दृष्टांतसहित कथनकरैं हैं (मयिसर्वमिति) हेअर्जुन ! जैसे परस्परव्यावृत तथासूत्रतैंव्यावृत जेमणियां हैं तेमणियां तिनसर्वमणियोंविषे अनुस्यूतसूत्रविषे ग्रथितहोवैं हैं ॥ तैसे सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै सर्वत्रअनुस्यूत जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषे यहपरस्परव्यावृतप्रपंच ग्रथितहै ॥ और जैसे व्यावृतमणियोंतैं सर्वत्रअनुस्यूतसूत्र भिन्नहोवैहै तैसे इसव्यावृतप्रपंचतैं सर्वत्रअनुस्यूतमैंपरमेश्वरभी भिन्नहूं ॥ इसप्रकार सर्वप्रपंच तैंरहित मैंपरमेश्वरविषे विकारिपणा संभवतानहीं इति ॥ इसीव्याख्यानकेअनुसार श्लोककेप्रारंभविषे अथवा इत्यादिकअवतरण कथनकऱ्याथा इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥

शंका—हे भगवन् ! जलादिकोंकातौ रसादिकोंविषेही प्रोतपणा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषेही यहसर्वजगत् प्रोतहै यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए मैंपरमेश्वरही रसादिरूपकरिकैस्थितहुआहूं ॥ यातैं रसादिकोंविषे जोजलादिकोंकाप्रोतपणाहै सो मैंपरमेश्वरविषेही प्रोतपणाहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं पंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.)रसोहमप्सुकौंतेयप्रभास्मिशशिसूर्ययोः ॥ प्रणवःसर्व वेदेषुशब्दःखेपौरुषंनृषु ॥ ८ ॥ रसः। अहम् । अप्सु । कौंतेय ।
प्रभा । अस्मि । शशिसूर्ययोः । प्रणवः । सर्ववेदेषु । शब्दः । खे । पौरुषम् । नृषु ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जलों
विषे जोरसहै सोरस मैं हूं तथा चंद्रसूर्यविषे जाप्रभाहै साप्रभा मैंहूं तथा सर्ववेदोंविषे जोप्रणवहैसो प्रणव मैंहूं तथाआकाशविषे
जोशब्दहै सोशब्द मैंहूं तया सर्वनरोंविषे जोपौरुषहैसोपौरुष मैंहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सर्वजलोंविषेस्थित जोरसतन्मात्रारूप पुण्य मधुररसहै जोरस तिनसर्वजलोंका सारभूतहै तथा तिनसर्वजलोंका कारणभूतहै तथा तिनसर्व जलोंविषेअनुस्यूतहै सोरस मैंहूं अर्थात् ऐसेरसरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेसर्वजल प्रोतहैं ॥ और चंद्रमाविषे तथासूर्यविषे जोप्रभारूपप्रकाशहै जिसप्रकाश करिकै सर्वलोकोंकाव्यवहार सिद्धहोवैहै सोप्रकाश मैंहूं अर्थात् तासामान्यप्रकाशरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेचंद्रमासूर्य प्रोतहैं ॥ और सर्व वेदोंविषेअनुस्यूत जोॐकाररूपप्रणवहै सोप्रणव मैंहूं अर्थात् ताप्रणवरूप मैंपरमेश्वरविषेही तेसर्ववेद प्रोतहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्यथाशंकुनासर्वाणिपर्णानिसंतृण्णानिएवमों

अन्य कोईभीपदार्थ परमार्थ सत्य नहीं है जैसे सूत्रविषे मणियोंकासमूहग्रथितहै तैसे मैंपरमेश्वरविषे यह सर्वजगत् ग्रथितहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सर्वदृश्यप्रपंचाकारपरिणामकूंप्राप्तहुईमायाकाअधिष्ठानरूप तथासर्वजगत्‌काप्रकाशक तथा सत्तास्फुरणरूपकरिकै सर्वजगत्‌विषेअनुस्यूत तथास्वप्रकाशपरमानंदचैतन्यघन तथापरमार्थतैंसत्यस्वरूप ऐसाजोमैं परमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईभीपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैनहीं ॥ जैसे स्वप्नद्रष्टातैंभिन्न स्वप्नकेपदार्थपरमार्थतैंसत्यहैंनहीं तथा मायावीपुरुषतैंभिन्न मायिकपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैंनहीं तथा शुक्तिअवच्छिन्नचैतन्यतैंभिन्न कल्पितरजत परमार्थतैंसत्यहै तैसे मैंपरमेश्वरविषेकल्पित यहसर्वजगत् वास्तवतैं मेरेतैंभिन्ननहीं है यह सर्ववार्त्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतैंनिरूपणकरीहै इति ॥ और व्यवहारदृष्टिकरिकैतौ यहसर्वजडप्रपंचभैंसत्‌रूप तथास्फुरणरूप परमेश्वरविषेही ग्रथितहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकी सत्ताकरिकै यहसर्वजगत् सत्‌कीन्याईं प्रतीतहोवैहै तथामेरेस्फुरणरूपकरिकै स्फुरणकीन्याईं प्रतीतहोवैहै ॥ तहां यहसर्वप्रपंच चैतन्यविषेग्रथितहै इतनेअंशमात्रविषे दृष्टांतकूंकथनकरैंहैं (सूत्रेमणिगणाइवइति) हेअर्जुन! जैसे सूत्रविषे मणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै तैसे सत्तास्फुरणरूपमैं परमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहैइति ॥ अथवा (सूत्रेमणिगणाइव) इसवचनका यहअर्थकरणा हिरण्यगर्भरूप जोस्वप्नकाद्रष्टा तैजसआत्माहै ताकानाम सूत्रहै ऐसे सूत्रहै ऐसेसूत्रआत्माविषे ॥ जैसे स्वप्नविषेप्राप्तमणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै तैसे मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहै इति ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे कारणकार्यभाव तथाद्रष्टादृश्यभाव इत्यादिकसर्वअंशोंविषे दृष्टांतकासंभवहोइसकैहै ॥ और प्रथमव्याख्यानविषेतौ केवल ग्रथितपणेमात्रविषे सोदृष्टांतसंभवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका याप्रकारकाअर्थ कथनकऱ्याहै हेअर्जुन ! सर्वज्ञ तथासर्वशक्तिवाला तथासर्वकारणरूप ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्‌केउत्पत्तिसंहारकास्वतंत्रकारण प्रसिद्धहैनहीं किंतु मैंपरमेश्वरही इसजगत्‌केउत्पत्तिसंहारकाकारणहूं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरही इससर्वजगत्‌का कारणहूं तिसकारणतैं सर्वजगत्‌केकारणरूपमैंपरमेश्वरविषेही यहकार्यरूपसर्व जगत् ग्रथितहै मेरेतैंभिन्नअन्यकिसीविषे यहजगत् ग्रथितहैनहीं ॥ जैसे मणियोंकासमूह सूत्रविषेही ग्रथितहोवैहै अन्यकिसीविषे ग्रथितहोवैनहीं इहां सूत्रमणियोंकादृष्टांत केवल ग्रथितत्वमात्रविषेहीहै कारणपणेविषे यहदृष्टांत संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोसूत्र तिनमणियोंका कारणरूपहैनहीं ताकारणपणेविषेतौ सुवर्णविषे कुंडलकंकणादिकभूषणोंकादृष्टांतही संभवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इसश्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै ॥ व्यवहारकालविषेतौ मृत्तिकादिरूपकारणका तथाघटादिरूपकार्यका परस्परभेद प्रतीतहोवैहै

(मू. श्लो.) एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्युपधराय ॥ अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥६॥ एतद्योनीनि । भूतानि । सर्वाणि । इति । उपधारय । अहं । कृत्स्नस्य । जगतः । प्रभवः प्रलयः । तथा ॥ ६ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! यहसर्व एक भूत इनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यरूपहैं इसप्रकार निश्चयकर यातैं मैंपरमेश्वरही संपूर्ण जगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं तथा प्रलयकाकारणहूं ॥ ६ ॥
॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वअपरत्वरूपकरिकै कथनकरीजा क्षेत्रनामाप्रकृति तथापरत्वरूपकरिकैकथनकरीजा क्षेत्रज्ञनामाप्रकृतिहै तेदोनोंप्रकृति हैं कारणाजिनोंका तिनोंकानाम एतद्योनिहै ऐसाएतद्योनिरूप इनउत्पत्तिधर्मवाले चेतनअचेतनरूपसर्वभूतोंकूं तूंजाण ॥ तात्पर्ययह ॥ यहसर्वकार्य चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपहैं ॥ यातैं ताकार्यरूपहेतुतैंतिनोंकेप्रकृतिरूपकारणकूंभी चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकरिकैअनुमानकर जिसकारणतैं कार्यकारणका समानस्वभावही लोकविषेदेखणेमैंआवैहै तिसकारणतैं चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकार्य तैं ताके चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकारणकाअनुमान संभवहोइसकैहै ॥ इसप्रकार सर्वभूतोंकाकारणरूप क्षेत्र क्षेत्रज्ञनामा दोप्रकारकीप्रकृति मैंपरमेश्वरकाउपाधिरूपहै ॥ यातैं सर्वज्ञ तथा सर्वकाईश्वर तथाअनंतशक्तिवाला मायाउपहित मैंपरमेश्वरही तिसपूर्वउक्तप्रकृतिद्वारा इसचराचररूप सर्वजगतकेउत्पत्तिकाकारणहूं तथा तासर्वजगत्केविनाशकाकारणहूं अर्थात् जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाउपादानकारण तथाद्रष्टा एकहीहोवैहै तैसे मायाका आश्रयविषयहोणेतैं मैंमायावीपरमेश्वरही आपणीमायिकजगत्का उपादानकारणहूं तथाद्रष्टारूपहूं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरही आपणीमायाशक्तिकरिकै इससर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाहेतुहूं तिसकारणतैं परमार्थ तैं मैं परमेश्वरतैंभिन्न कोईभीपदार्थ है नहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (मत्तःपरतरमिति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै पूर्व एकआत्मवस्तुकेज्ञानतैं सर्वजगत्केज्ञानकीप्रतिज्ञाकरीथी ताप्रतिज्ञाकेउपपादनकरणेवासतै आत्माकूं सर्वजगत्काउपादानकारण कथनकऱ्या ॥ ताउपादानकारणपणेकरिकै आत्माकेनिर्विकारत्वरूपकीहानिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीभगवान् कहैंहैं ।

(मू. श्लो.) मत्तःपरतरंनान्यत्किंचिदस्तिधनंजय ॥ मयिसर्वमिदंप्रोतंसूत्रेमणिगणाइव ॥ ७ ॥ मत्तः । परतरम् । न । अन्यत् । किंचित् । अस्ति । धनंजय । मयि । सर्वम् । इदं । प्रोतं । सूत्रे । मणिगणाः । इव ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरतैं

सामायारूपप्रकृति पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टप्रकारोंकरिकै भेदकूंप्राप्तहुई है ॥ ताअष्टप्रकारकीप्रकृतिविषेही यहसंपूर्णजडप्रपंच अंतर्भूतहै ॥ यहव्याख्यानसांख्यशास्त्रकीरीतिसैंकथनकऱ्या ॥ और वेदांतशास्त्रविषेतौ भूमिः आपः अनलः वायुः खं यापंचशब्दोंकरिकै अपंचीकृत पृथिवीआदिक पंचभूतों काही ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धिशब्दकरिकै सृष्टिकेआदिकालविषे परमेश्वरकीमायाकापारिणामरूपईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकै तामाया कापरिणामरूपसंकल्पका ग्रहणकरणा इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा क्षेत्ररूप अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै ताप्रकृतिविषे अपरपणेकूंकथनकर तेहुए श्रीभगवान् अब क्षेत्ररूप पराप्रकृतिकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमेपराम् ॥ जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ॥५॥ अपरा।इयम्।इतः । तु । अन्याम् । प्रकृतिम् । विद्धि । मे । पराम् । जीवभूताम् । महाबाहो । यया । इदम् । धार्यते । जगत्॥५॥इतिपद०॥हे अर्जुन ! यहपूर्वउक्तअष्ट प्रकारकीप्रकृति अपराकहीजावै है अब इसअपराप्रकृतितैं विलक्षण मैंपरमेश्वरकी जीवरूप परा प्रकृतिकूं तूं जान जिसैंपराप्रकृतिनैं यह सर्वजगत् धारणकरीताहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा अचेतनवर्गरूप क्षेत्रनामा अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै सायहप्रकृति अपराजानणी अर्थात् साप्रकृति जडहोणेतैं तथा परकेअर्थहोणे तैं तथासंसारबंधरूपहोणे तैं निकृष्टही है ॥ और ताअचेतनवर्गरूप तथा क्षेत्ररूप अपराप्रकृतितैं विलक्षण तथामैंतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकाआत्मारूप जा चेतनजीवात्मकक्षेत्रज्ञरूपप्रकृतिहै ताक्षेत्रज्ञरूपविशुद्धप्रकृतिकूं तूं पराप्रकृति जान अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टजान ॥ इहां (इतस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यह शब्दहै सो तुशब्द पूर्वउक्तक्षेत्ररूपजडप्रकृतितैंइसक्षेत्रज्ञरूपचेतनप्रकृतिविषेअत्यंतविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै है अर्थात् इनक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूपदोनोंप्रकृतियोंकी किसीअंश विपरीतएकताहोइसकैनहीं ॥ हे अर्जुनसर्वसंघातोंविषे प्रविष्टहुईजा क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिहै ताप्राप्रकृतिनैंही यहदेहइंद्रियादिरूपजडजगत् धारणकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि ॥) अर्थयह ॥ मैंपरमात्मादेवइसआपणेजीवरूपतैं प्रवेशकरिकै नामरूपकूंप्रगटकरौं इति ॥ ऐसी क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिनैंही यहसर्वजगत् धारणकऱ्या है ॥ ताचेतनजीवतैंरहित कोईभीवस्तु किसीवस्तुकेधारणकरणेविषे समर्थहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै अपराप्रकृति तथापराप्रकृति यहदोप्रकारकीप्रकृति कथनकरी ॥ अब तादोप्रकारकी प्रकृतिविषे कार्यलिंगकअनुमानप्रमाणकूंदिखावतेहुए श्रीभगवान् आपणेकूं ताप्रकृतिद्वारा सर्वजगतकेउत्पत्तिआदिकोंकीकारणता कथनकरैं हैं ।

श्रीभगवान् एकब्रह्मकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकेज्ञानकीप्रतिज्ञा करताभयाहै साप्रतिज्ञा तबी सिद्धहोवै जबी ब्रह्मकूं सर्वजगत्काकारण अंगीकारकरिये काहेतैं लोकविषे उपादानकारणकेज्ञानकरिकेही ताकेसर्वकार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ जैसे एकमृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहुएही तामृत्तिकाकेकार्यरूप घटशरावादिकसर्वकाज्ञान होवैहै कारणकेज्ञानतैंविनाताकेसर्वकार्यकाज्ञानहोवैनहीं ।। यातैं तापूर्वलीप्रतिज्ञाकेउपपादनकरणेवासते श्रीभगवान् ताज्ञानस्वरूपब्रह्मतैं जडअजडरूपसर्वप्रपंचकीउत्पत्तिकूं (भूमिरापः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ भूमिः । आपः । अनलः । वायुः । खम् । मनः । बुद्धिः । एव । च । अहंकारः । इति । इयम् । मे । भिन्ना । प्रकृतिः । अष्टधा ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! पृथिवी जल तेज वायु आकाश मन बुद्धि निश्चय करिके तथा अहंकार ईसप्रकारतैं मैं परमेश्वरकी यह प्रकृति अष्टप्रकार भेदवाली है ॥४॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तहां सांख्यशास्त्रवाले पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टोंकू प्रकृति कहैंहैं ॥ और पंचमहाभूत पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय एकमन इन षोडशोंकू विकार कहैंहैं ॥ तेअष्टप्रकृति तथाषोडशविकार दोनोंमिलिकै चौवीसतत्त्व कहेजावैंहैं ॥ तहां भूमिआदिकपंचशब्दोंकरिकै लक्षणावृत्तितैं पृथिवी आदिकपंचमहाभूतोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप गंधादिकपंचतन्मात्रावोंकाग्रहणकरणा अर्थात् भूमि याशब्दकरिकैतौ गंधतन्मात्राका ग्रहणकरणा और आपःयाशब्दकरिकै रसतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और अनल याशब्दकरिकै रूपतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और वायु याशब्दकरिकै स्पर्शतन्मात्राका ग्रहणकरणा और खं याशब्दकरिकै शब्दतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धि अहंकार यहदोनोंशब्द तौ आपणे प्रसिद्धअर्थकूंही बोधनकरैंहैं ॥ और मन याशब्दकरिकै परिशेषतैंरहेहुएअव्यक्तकाग्रहणकरणा काहेतैं तामनशब्दका प्रकृतिशब्दकेसाथि सामानाधिकरण्य है ॥ यातैं तामनशब्दकेस्वार्थकापरित्यागकरिकै अव्यक्तविषेलक्षणाकरणी उचितहै ॥ अथवा लक्षणावृत्तितैं तामनशब्दकरिकै तामनकेकारणरूप अहंकारका ग्रहणकरणा काहेतैं पूर्व गंधादिकपंचतन्मात्रावोंका कथन करयाहै ॥ तिनतन्मात्रावोंकीअहंकारतैंहीउत्पत्तिहोवैहै यातैं तन्मात्रावोंकीसमीपतातैं इहां मनशब्दकरिकै अहंकारकाहीग्रहणकरणाउचितहै ॥ और बुद्धिशब्दतौ ताअहंकारकेकारणरूप महत्तत्वकूं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकैही कथनकरैहै ॥ और अहंकारशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै सर्ववासनावोंयुक्तअविद्यारूपअव्यक्तका ग्रहणकरणा काहेतैं प्रवर्त्तकत्वादिकअसाधारणधर्म अहंकारअव्यक्तदोनोंविषे तुल्यहीरहैंहैं ॥ यातैं अहंकारशब्दकरिकै ताअव्यक्तकाग्रहणकरणा उचितहै ॥ इसप्रकार साक्षीआत्माकरिकैभास्यमानहोणेतैं अपरोक्षरूप तथापरमेश्वरकीशक्तिरूप तथाअनिर्वचनीयस्वभाववाली तथात्रिगुणात्मक ऐसीजामायारूपप्रकृतिहै

साक्षात्कारकरिकैही तूंअर्जुन कृतार्थहोवैगा इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! ऐसेमहान्‌फलकीप्राप्तिकरणेहारा यहहमारेस्वरूपकाज्ञान मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना अत्यंतदुर्लभहै इसप्रकार ताज्ञानकीदुर्लभताकूंकथनकरिकै अधिकारीजनोंकूं ताज्ञानविषे प्रवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताज्ञानकीस्तुतिकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) मनुष्याणां सहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ ३ ॥ मनुष्याणाम् । सहस्रेषु । कश्चित् । यतति । सिद्धये । यतताम् । अपि । सिद्धानाम् । कश्चित् । माम् । वेत्ति । तत्त्वतः ॥ ३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मनुष्यों के अनेकसहस्रोंविषे कोईएकमनुष्यही ज्ञानकीउत्पत्तिवासतै प्रयत्नकरै है और तिनंप्रयत्नकरणेहारे अधिकारीमनुष्यों केमध्य विषे भी कोईएकमनुष्यही मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपतैं जानै है ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रनैंप्रतिपादन कऱ्याजो ज्ञानहै तथाकर्म है ताज्ञानकर्म के अनुष्ठानकरणेकूंयोग्य जितनेक ब्राह्मणादिक अधिकारीमनुष्यहैं तिनअनेक सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही पूर्वले अनेकजन्मों केपुण्यकर्मों केवशतैं नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहुआ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकीउत्पत्तिवासतै प्रयत्नकरैहै ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकरणेहारेभी जेसाधकमनुष्यहैं तिनसाधकमनुष्यों केअनेकसहस्रोंविषेभी कोईएकसाधकमनुष्यही श्रवण मनननिदिध्यासनकेपरिपाकतैं अनंतर मैंपरमेश्वरकंसाक्षात्कारकरैहै ॥ शंका—हे भगवन् ! विष्णुकूं तथारामकं तथाआपकृष्णकूं देवता असुर मनुष्य आदिक बहुतप्राणी जानतेहैं यातैं अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही हमारेकूंजानताहै यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (तत्त्वतः इति) हे अर्जुन ! यद्यपि शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारे इसहमारे स्थूलचतुर्भुजस्वरूपकूं ते देवतामनुष्यादिकबहुतलोकजानते हैं तथापि यहहमारा वास्तवस्वरूपहैनहीं किंतु मायाकृतहै ॥ यातैं तेसर्वपुरुष हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानतेनहीं ॥ और जेपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेप्रत्यक्आत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंजानते हैं तेपुरुषही हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानते हैं ॥ इसप्रकार वास्तवस्वरूपतैंहमारेकूंजानणेहारा पुरुष अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकहीनिकसेगा यातैंयहअर्थसिद्धभया प्रथमतो अनेकमनुष्यों केमध्यविषे आत्मज्ञानकेसाधनोंकूं अनुष्ठानकरणेहारा पुरुषही परमदुर्लभहै और तिन ज्ञानसाधनों केअनुष्ठानकरणेहारेपुरुषों केमध्यविषेभी ज्ञानरूपफलकूंप्राप्तहुआपुरुष परमदुर्लभहै ॥ ऐसेब्रह्मज्ञानकामाहात्म्य कौन वर्णनकरिसकैगा इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकीस्तुतिकरिकै श्रोतापुरुषकं ताज्ञानकेअभिमुखकरिकै अब सर्वात्मत्वरूपहेतुकरिकै आत्माके परिपूर्णत्वकूंकथनकरणेवासतै प्रथम अपरप्रकृतिकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं (भूमिरापः इति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै

कूंकरताहुआ जिसप्रकार कोईभीसंशयरहैनहीं इसप्रकार बलशक्तिऐश्वर्यादिकसर्वविभूतिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं जानैंगा तिसप्रकारकूं मैंभगवान् तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं तूं सावधानहोइकैश्रवणकर इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे (मांज्ञास्यसि) यहवचन भगवान्नैं कथनकऱ्या तावचनतैं यह जान्याजावैहै सो भगवत्विषयकज्ञान परोक्षहीहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं निवृत्तकरतेहुए श्रीभगवान् श्रोतापुरुषकूं ताज्ञानकेअभिमुखकरणेवासतै ताज्ञानकीस्तुति करैंहैं ।

(मू. श्लो.) ज्ञानंतेहंसविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषतः ॥ यज्ज्ञात्वानेहभूयोन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥ ज्ञानम् । ते । अहम् । सविज्ञानम् । इदम् । वक्ष्यामि । अशेषतः । यत् । ज्ञात्वा । न । इह । भूयः । अन्यत् । ज्ञातव्यम् । अवशिष्यते ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेप्रति इस विज्ञानसहित ज्ञानकूं साधनफलादिकोंसहित कथनकरताहूं जिसचैतन्यरूपज्ञानकूं जानिकै इहांपुनःकोईअन्यपदार्थ जानणेयोग्य नहीं बाकीरहैहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन मेरेअद्वितीयपरिपूर्णस्वरूपकूंविषयकरणेहारा जोयहज्ञान है सोयहज्ञान स्वभावतैंअपरोक्षहुआभी असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधके वशतैं आपणेफलकूंनहींउत्पन्नकरताहुआ परोक्ष कह्याजावैहै ॥ और श्रवणमननादिरूपविचारकेपरिपाककरिकै ताअसंभावनादिरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर तिसीवाक्यप्रमाणकरिकैउत्पन्नहुआ जोज्ञान प्रतिबंधकके अभावतैं आपणेफलकूंउत्पन्नकरताहुआ अपरोक्ष कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं श्रवणमननरूपविचार करिकैजन्यहोणेतैं सोईहीज्ञान विज्ञान कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारकेविज्ञानसहित तथामहावाक्यतैंजन्य इसअपरोक्षज्ञानकूं मैंयथार्थवक्ता कृष्णभगवान् तुम्हारे ताई अशेषतैं कथनकरताहूं अर्थात् ताअपरोक्षज्ञानकेजितनेकसाधन तथाफलहैं तिनसाधनफलादिकोंसहित तिसज्ञानकूं मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जिस नित्यचैतन्यस्वरूपज्ञानकूं जानिकै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि यावेदांतवाक्यजन्य मनकीवृत्तिकाविषयकरिकै इसव्यवहारभूमिविषे पुनःदूसराकोईवस्तु तुम्हारेकूं जानणेयोग्यरहैगानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति ॥ कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदंविज्ञातंभवति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे एक परमात्मादेवकेज्ञानकरिकैही सर्वजगत्काज्ञानहोणा कथनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अज्ञानतैं रज्जुविषेप्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं तिन कल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर बाधहोइजावैहै तिसतैंअनंतर एकरज्जुही परिशेषतैंरहैहै ॥ तैसे अधिष्ठानसत् ब्रह्मविषेकल्पित जोयहसर्वप्रपंचहै ताप्रपंचकाभी तिसअधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर बाधहोइजावैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोअधिष्ठानब्रह्मही परिशेषतैंरहैहै ॥ ऐसेअधिष्ठानब्रह्मके

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तमाध्यायप्रारंभः ॥ श्लोक ॥ यद्भक्तिंनविनामुक्तिर्यः सेव्यःसर्वयोगिनाम् ॥ तंवंदेपरमानंदघनंश्रीनंदनंदनम् ॥ अर्थयह ॥ भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासते श्रीनंदकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाजो श्रीकृष्णभगवान्है जिसकृष्णभगवान्कीभक्तितैंविना इनअधिकारीजनाकं मक्तिकोप्राप्तिहोवैनहीं तथा जोकृष्णभगवान् सर्वयोगीपुरुषोंका सेव्यहै अर्थात् सर्वयोगीपुरुष जिसका सेवनकरैं हैं तथा जोकृष्णभगवान् परमानंदघनह तिसकृष्णभगवान्कूं मैं वारंवार वंदन करूं हूं इति ॥ तहां सर्वकर्मोंकासंन्यासरूपसाधनहैप्रधानजिसेविषे ऐसाजोप्रथमषट्क है ताप्रथमषट्ककरिकैश्रीभगवाननैं योगसहित त्वंपदकालक्ष्यरूप ज्ञेयवस्तु प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब ध्येयब्रह्मकाप्रतिपादनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो यहमध्यका द्वितीयषट्कहै ताद्वितीयषट्ककरिकै श्रीभगवान् तत्पदार्थरूपपरमात्माकूं प्रतिपादनकरैगा ॥ ताद्वितीयषट्कविषेभी (योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः ॥) इसश्लोककरिकै पूर्व कथनकऱ्याजोभगद्भजनहै ताभगवद्भजनकेव्याख्यानकरणेवास्तै श्रीभगवान्नैं यहसप्तमअध्यायप्रारंभकरीताहै ॥ तहां किसप्रकारका भगवत्कास्वरूप भजनकरणेकूंयोग्यहै ॥ तथातिसभगवत्केस्वरूपविषे यहमन किसप्रकारतैं स्थित होवै ॥ यहदोनाप्रश्न अर्जुनकूं करणेयोग्यथे परंतु यहदोनोंप्रश्न अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति करेनहीं तौभी परमकृपालुश्रीभगवान् विनाहीपूछेतैं अर्जुनके प्रति तिन दोनोंप्रश्नोंका उत्तर कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यासक्तमनाःपार्थयोगंयुंजन्मदाश्रयः ॥ असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसितच्छृणु ॥ १ ॥ मयि । आसक्तमनाः । पार्थ । योगं । युंजन् । मदाश्रयः । असंशयं । समग्रं । मां । यथा । ज्ञास्यसि । तत् । शृणु ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ।
हेअर्जुन ! मैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका तथामैंएकपरमेश्वरकेशरण ऐसातूं पूर्वउक्तयोगकूं करताहुआ संशयतैंरहित सर्वविभू तिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारनैं जानैगा तिसप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः ।

टीका । हे अर्जुन ! सर्वजगतकी उत्पत्तिस्थितिलयतैंआदिलेके नानाप्रकारकीविभूतियोंकरिकैयुक्त जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका ऐसाजोतूंअर्जुनहै ॥ इसीकारणतैंही मैंएकपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तभयाजोतूंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेराजाकाभृत्यताराजाकेआश्रिततौहोवैहै परंतु ताराजाविषे आसक्तमनवालाहोवैनहीं किंतु आपणे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषेही आसक्तमनवालाहोवैहै ॥ इसप्रकारका तूं अर्जुनहैनहीं किंतु तूंअर्जुन तौ मैंएकपरमेश्वरकेही आश्रितहै तथामैंएकपरमेश्वरविषेही आसक्तमनवालाहै ॥ ऐसामुमुक्षु तंअर्जुन अथवा तुम्हारेसरीखादूसराभीकोईमुमुक्षु षष्ठअध्यायउक्तरीतिसैं मनके निरोधरूपयोग

अंतरात्मना । श्रद्धावान् । भजते । यः । मां । सः । मे । युक्ततमः । मतः ॥ ४७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष श्रद्धावान्हुआ मेरेविषेस्थित अंतःकरणकरिकै मैंपरमेश्वरकूं भजै है सोपुरुष सर्व योगियोंकेविषे भी अत्यंतश्रेष्ठ मैंपरमेश्वरकूं संमतहै ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! मैंभगवान्वासुदेवविषे पुण्यकर्मोंकेपरिपाकविशेषतैं उत्पन्नहुईप्रीतिकेवशतैं प्राप्तभयाजोअंतःकरणहै ताअंतःकरणकरिकै जोपुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तथामहात्माजनोंकेसत्संगतैं मेरेभजनविषेही अत्यंतश्रद्धावान्हुआ मैंपरमेश्वरकूंभजैहै अर्थात् ईश्वरोंकाभीईश्वररूप मैंनारायणकूं सगुणकूं अथवा निर्गुणकूं यहकृष्णभगवान् मनुष्यहै तथादूसरेईश्वरोंकेसमानहै याप्रकारकेभ्रमकूंपरित्यागकरिकै जोपुरुष निरंतर चिंतनकरै है सोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं वसुरुद्रआदित्यादिकअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारे सर्वयोगियोंतैं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहै अर्थात् संपूर्णसमाहितचित्तवालेयुक्तपुरुषोंतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतश्रेष्ठकरिकैमानताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ योगाभ्यासकेक्लेशकेसमानहुएभी तथाभजनकेआयासकेसमानहुएभी मेरीभक्तितैंरहितयोगीपुरुषोंतैं मेराभक्त अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और तूंअर्जुनभी हमारापरमभक्तहै यातैं तूंअर्जुन विनाहीआयासतैं युक्ततम होणेकूंसमर्थहै इति ॥ तहां इसषष्ठअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं इतनाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तहांप्रथम चित्तशुद्धिकेहेतुभूत कर्मयोगकीमर्यादा कथनकरी ॥ तिसतैंअनंतर कऱ्याहुआहैसर्वकर्मोंकासंन्यासजिसनैं ऐसेपुरुषकूंकरणेयोग्य अंगोंसहित योग कथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनंतर अर्जुनकेआक्षेपकेनिराकरणपूर्वक मनकेनिग्रहकाउपाय कथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनंतर योगभ्रष्टपुरुषके पुरुषार्थके शून्यताकी शंकाकूं शिथिलकऱ्या ॥ इतनेसर्वअर्थकूंकथनकारिकै श्रीभगवान्नैं प्रथमषट्करूपकर्मकांडकूं तथात्वंपदार्थकेनिरूपणकूं समाप्तकरया ॥ इसतैंअनंतर (श्रद्धावान्भजतेयोमाम्) इसवचनकरिकै सूचनकऱ्याजोभक्तियोगहै तथा ताभक्तियोगकाविषय जोतत्पदार्थरूपभगवान्वासुदेवहै तिनदोनोंकेनिरूपणकरणेवासते अगलेषट्अध्यायरूपउपासनाकांड आरंभकऱ्याजावगा इति ॥ ४७ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपुज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायांषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ प्रथमंचकांडंसमाप्तम् ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

इतिषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

(मू. श्लो.) तपस्विभ्योधिकोयोगीज्ञानिभ्योपिमतोधिकः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिकोयोगीतस्माद्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥ तपस्विभ्यः । अधिकः । योगी । ज्ञानिभ्यः । अपि । मतः । अधिकः । कर्मिभ्यः । च । अधिकः । योगी । तस्मात् । योगी । भव । अर्जुन ॥ ४६ ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोतत्ववेत्तायोगी तपस्वीयातभी हमारेकूं अधिक संमतहै तथापरोक्षज्ञानीयोंतें भी अधिक संमतहै तथा सोयोगी कर्मीपुरुषोंतैंभी अधिक संमतहै तिसकारणतैं तूंअर्जुन ऐसायोगी होउ ॥ ४६ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैं अनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाशवासनाक्षयकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुषहै सोयोगीपुरुषकृच्छचांद्रायणादिकतपकूंकरणेहारेतपस्वीपुरुषोंतैंभी हमारेकूं अधिकसंमतहै अर्थात् तिसयोगीपुरुषकूं मैं तिनतपस्वीयों तैंभी उत्कृष्टमानताहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्ययातदारोहंतियत्र कामाः परागता नतत्रदक्षिणायंति नाविद्वांसस्तपस्विनः) ॥ अर्थयह ॥ यहतत्त्ववेत्तापुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीब्रह्मविद्याकरिकै तिसपदकूं प्राप्तहोवै है जिसपदविषेसर्वकामपरिअवसानकूंप्राप्तहुएहैं तथाजिसपदविषे यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे पुरुषभीप्राप्तहोतेनहीं तथाअविद्वान्तपस्वीभी प्राप्तहोतेनहीं इति ॥ इसकारणतैंही दक्षिणासहित ज्योतिष्टोमादिकर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुषों तैं भी सो योगीपुरुष हमारेकूं अधिक संमतहै ॥ काहेतैं तेकर्मीपुरुष तथातपस्वीपुरुष तत्त्वज्ञानतैं रहितहोणेतैंमोक्षकेयोग्यहैंनहीं ॥ और आत्माकेपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं तिनपरोक्षज्ञानियोतैंभी सो अपरोक्षज्ञानवाला योगीपुरुष हमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ इसप्रकार आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं जेअपरोक्षज्ञानवालेपुरुष मनोनाशवासनाक्षयकेअभावतैंजीवन्मुक्तिके सुखकूंप्राप्तहुएनहीं ऐसेजीवन्मुक्तितैंरहित अपरोक्षज्ञानियोंतैं मनोनाशवासनाक्षयवाला जीवन्मुक्तयोगीपुरुषहमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्ता जीवन्मुक्तयोगीपुरुष हमारेकूं सर्वतैंअधिकसंमतहै तिसकारणतैं तूंयोगभ्रष्ट अर्जुन इसकालविषे अधिकप्रयत्नकेबलतैंतत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंकूंसंपादनकरिकेजीवन्मुक्तयोगीहोउ सोजीवन्मुक्तयोगी (सयोगीपरमोमतः) इसवचनकरिकै पूर्वहमनैं तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ इहां (हेअर्जुन !) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धताबोधनकरी ॥ ताकरिकै तिसअर्जुनविषे तायोगकेसंपादनकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ अव सर्वयोगियों तैं श्रेष्ठयोगीका कथनकरतेहुए श्रीभगवान् इसषष्ठअध्यायका उपसंहारकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः ॥ ४७ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआत्मसंयमयोगोनामषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ योगिनाम् । अपि । सर्वेषां । मद्गतेन ।

करिकैभी ज्ञानकर्मदोनोंकासमुच्चय खंडनहुआजानणा काहेतैं ज्ञानकर्मकेसमुच्चयपक्षविषे ज्ञानवान्पुरुषकूंभी कर्मकापरित्याग संभवतानहीं इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ जबीइसप्रकारतैं प्रथमभूमिकाविषेमरणकूंप्राप्तहुआभी तथाअनेकभोगवासनावोंकरिकैव्यवहितहुआभी तथानानाप्रकारकेप्रमादोंकेकरणेवाले महाराजाकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोइकैभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकरेहुए ज्ञानसंस्कारोंकीप्रबलताकरिकै कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाहीअधिकारीहोवै है तबी द्वितीयभूमिकाविषे अथवा तृतीयभूमिकाविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै उत्तमलोकोंविषे नानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगिकै पश्चात् महाराजाकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै सोयोगभ्रष्टपुरुष ताकर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाही अधिकारीहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ अथवा जोपुरुष तिनभूमिकावोंविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै तिनउत्तमलोकोंविषेभोगोंकूंनहींभोगिकैही ब्रह्मवियावालेब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तभयाहै सोनिःस्पृहयोगभ्रष्टपुरुष कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै केवल ज्ञानकाही अधिकारीहोइकै तिसज्ञानके श्रवणादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै तिनसाधनोंकेज्ञानस्वरूपफलकरिकै संसारबंधनतैंमुक्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकैसिद्धअर्थकूं अब श्रीभगवान्कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसंशुद्धकिल्बिषः ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ ४५ ॥ प्रयत्नात् । यतमानः । तु । योगी । संशुद्धकिल्बिषः । अनेकजन्मसंसिद्धः । ततः । याति । पराम् । गतिम् ॥ ४५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोयोगीपुरुष पूर्वप्रयत्नतैं भी अधिकप्रयत्नकरैहै तथाधोयेगयेहैंपापरूपकिल्बिषजिसके तथा अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तभयाहै अंत्यका जन्मजिसकूं सोयोगीपुरुष तिनसाधनोंकेपरिपाकतैं परम मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ४५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वजन्मविषेकन्याजोप्रयत्नहै तिसप्रयत्नतैंभी अधिकअधिकप्रयत्नकूंकरताहुआ जोयोगीपुरुषहै अर्थात् पूर्वजन्मविषेसंपादनकरेहुए ज्ञानसंस्काररूपयोगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै तथा तिसीयोगकेप्रयत्नरूपपुण्यकरिकै जोपुरुष संशुद्धकिल्बिषहै अर्थात् तिसपुण्यरूपजलकरिकै धोयेगयेहैंज्ञानकेप्रतिबंधकपापरूपमलजिसके ॥ इसीकारणतैंही ज्ञानसंस्कारोंकीवृद्धितैं तथापुण्यकीवृद्धितैं जोपुरुष अनेकजन्मोंकरिकैसंसिद्धहुआहै अर्थात् तिनपूर्वलेअनेक जन्मोंके ज्ञानसंस्कारोंकेप्रभावतैं तथातिनपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं प्राप्तभयाहै अंत्यजन्मजिसकूं ऐसा सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनश्रवणादिकसाधनोंकेपरिपाकतैं ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै पुनरावृत्तितैंरहित परममुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुनकेप्रति श्रद्धाअतिशयकेउत्पादनपूर्वक तिसपूर्वउक्तयोगकेविधानकरणेवासतै श्रीभगवान् तापूर्वउक्तयोगकीस्तुतिकरैं हैं ।

करताहुआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष आपणेवशकरीताहै अर्थात् तिनपूर्वलेज्ञानसंस्कारोंनैं अकस्मात्तैंही भोगवासनातौंनिवृत्तकरिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मोक्षकेसाधनोंविषेप्रवृत्तकरीताहै ।। हे अर्जुन ! यद्यपि तेज्ञानवासना अल्पकालकी अभ्यासकरीहैं और तेभोगवासना बहुतकालकीअभ्यासकरीहैं तथापि तेज्ञानवासनातौ वस्तुविषयकहैं और तेभोगवासना अवस्तुविषयकहैं॥ यातैं तेअल्पकालकीअभ्यासकरीहुईभीज्ञानवासना तिनबहुतकालकीअभ्यासकरीहुईभोगवासनावोंतैं अत्यंतप्रबलहैं ॥ तिन प्रबल ज्ञानवासनावोंकेरिकै अप्रबलभोगवासनावोंकाअभिभवसंभवैहै ॥ आकाशविषेनीलताज्ञानजन्यवासना यद्यपि बहुतकालकीअभ्यासकरीह तथापि आकाशरूप रहितहै इत्यादिकशास्त्रजन्य अल्पकालकीअभ्यासकरीहुईवासनावोंनैं तिनवासनावोंकाअभिभवकरीताहै ॥ यातैं वासनावाकीप्रबलताविषेबहुत कालकेअभ्यास कीविषयता प्रयोजकनहीं है ॥ तथावासनावोंकीदुर्बलताविषे अल्पकालकेअभ्यासकीविषयताप्रयोजकनहीं है किंतुवस्तुविषयत्व तिनवासनावोंकीप्रबलताविषे प्रयोजकहै ।। और अवस्तुविषयत्वतिनवासनावोंकीदुर्बलताविषे प्रयोजकहै सोवस्तुविषयत्व ज्ञानवासनावोंविषेही है भोगवासनावोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तेज्ञानवासनाही भोगवासनातैंप्रबलहैं ।। हेअर्जुन ! यहवार्त्ता तूं अन्यत्र मतदेख किंतु आपणेविषेही देख ॥ जोतूंपूर्व केवल युद्धकरणेविषेहीप्रवृत्तहुआथा कोईज्ञानके वास्ते प्रवृत्तहुआनहींथा परंतुपूर्वली ज्ञानवासनावोंकीप्रबलतातैं अकस्मात्तैंही तूं इसरणभूमिविषे युद्धतैंउपरामहोइकै ज्ञानविषेही प्रवृत्तहोताभयाहै ।। इसीकारणतैंही पूर्वहमनैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) यहवचन तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकसहस्रजन्मोंकेव्यवधानवालाहुआभी सोज्ञानसंस्कार सर्वविरोधियोंकानाशकरिकै आपणेकार्यकूंअवश्यकरिकै सिद्धकरै है इति ।। यद्यपि ताक्षत्रियराजाकूं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकाअभावहै तथापि ताक्षत्रियराजाकूं ज्ञानकाअधिकारतौ प्राप्तहीहै ॥ इहां (ह्रियते) याशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैंयहअर्थ सूचनकऱ्या ।। जैसेबहुतरक्षक पुरुषों केमध्याविषेविद्यमान जो गौ अश्वादिकद्रव्यहैं सोद्रव्य आप जाणेकीइच्छानहींकरताहुआभी किसी चौरपुरुषनैं तिनसर्वरक्षकपुरुषोंकाअभिभव करिकैआपणेसामर्थ्यविशेषतैंही हरणकरीताहै तैसे बहुत ज्ञानकेप्रतिबंधकोंविषे विद्यमानजोयोगभ्रष्टपुरुषहै सोयोगभ्रष्टपुरुष आपज्ञानकीइच्छानहींकरताहुआभी पूर्वजन्मकेबलवान्ज्ञानसंस्कारोंनैंआपणेसामर्थ्यविशेषतैं सर्वप्रतिबंधकोंकाअभिभवकरिकै आपणेवशकरीताहै अर्थात् पुनः ज्ञानविषेप्रवृत्तकरीताहैइति ।। इसकारणतैंही संस्कारोंकीप्रबलतातैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरताहुआभी अर्थात शुभइच्छारूपप्रथमभूमिकाविषेस्थितहुआभीजोसंन्यासीहै सोप्रथमभूमिकावालासंन्यासीभी तिसप्रथमभूमिकाविषेही मरणकूंप्राप्त होइकै मध्यविषे बहुतप्रकारकेविषयोंकूंभोगकरिकै महाराजाचक्रवर्त्तियोंकेकुलविषे उत्पन्नहुआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकरेहुएज्ञानसंस्कारोंकीप्रबलतातैं तिसीहीजन्मविषे कर्म केप्रतिपादकवेदभागकूं अतिक्रमणकरिकै स्थितहोवैहै अर्थात् कर्मकेअधिकारकापरित्यागकरिकै ज्ञानकाअधिकारीहोवैहै ॥ इसकहणे

कूंही संपादनकरेंहैं ॥ ४ ॥ तहांपूर्वजन्मविषे अभ्यासकऱ्याहुआ जोभूमिकाक्रमहै ताक्रमकूं विचारकरिकै तेबुद्धिमान्पुरुष तिसतैंउत्तरभूमिकावोंकेक्रमकूं प्रयत्नतैंसंपादनकरेंहैं इति ॥ ५ ॥ इहां पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहुई भोगवासनाओंकीप्रबलतातैं अल्पकालविषेअभ्यासकरीहुई वैराग्यवासनावोंकीदुर्बलताकरिकै प्राणोंके उत्क्रमणकालविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहुईहै भोगोंकीस्पृहाजिसकूं ऐसाजोसर्वकर्मोंकासंन्यासीहै सोईही वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरयाहै ॥ और जोपुरुष वैराग्यवासना वोंकीप्रबलतातैं प्रकृष्टपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तपरमेश्वरकेप्रसादकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे भोगोंकी स्पृहातैंरहितहै सोसंन्यासीतौ विषयभोगोंकेव्यवधानतैं विनाही ब्रह्मविद्यावालेदरिद्रीब्राह्मणोंके सर्वप्रमादकेकारणोंतैंरहितकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ऐसेयोगभ्रष्टपुरुषकूं पूर्वसंस्कारोंकीअभिव्यक्ति विनाहीप्रयत्नतैं होवैहै ॥ यातैं पूर्वयोगभ्रष्टपुरुषकीन्याई इसद्वितीययोगभ्रष्टपुरुषकूं मोक्षविषे किंचित्मात्रभी शंकानहीं है ॥ सोयह द्वितीययोगभ्रष्टपुरुष वसिष्ठभगवान्नैं कथन कऱ्यानहीं किंतु परमकृपालुश्रीकृष्णभगवान्नैंही (अथवायोगिनामेव) इसपक्षांतरकूं अंगीकारकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! जोपुरुष ब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे उत्पन्नहोवैहै तिसपुरुषकूं मध्यविषे विषयभोगोंकाव्यवधानहै यातैं व्यवधानतैंरहित पूर्वलेसंस्कारोंकेउद्बोधतैं तिसपुरुषकूं पुनःभी सर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक ज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकालाभहोवौ परंतु जोपुरुष श्रीमान्महाराजेचक्रवर्तियों के कुलविषे बहुतप्रकारकेविषयभोगों के व्यवधान करिकै उत्पन्नहुआहै तिस पुरुषकूं विषयभोगों के वासनावोंकी प्रबलतातैं तथाधनादिकप्रमादकेकारणोंकासंभवहोणेतैं व्यवधानतैंरहित पूर्वलेज्ञानसंस्कारोंकाउद्बोध कैसे होवैगा ॥ तथा क्षत्रियराजाहोणेतैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेविषेअयोग्य तिसपुरुषकूं ज्ञानकेसाधनोंकालाभ कैसे होवैगा किंतु नहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकेंहैंहैं ।

(मू. श्लो.) पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोपिसः ॥ जिज्ञासुरपियोगस्यशब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥ ४४ ॥ पूर्वाभ्यासेन । तेन । एव । ह्रियते । हि । अवशः । अपि । सः । जिज्ञासुः अपि । योगस्य । शब्दब्रह्म । अतिवर्त्तते ॥ ४४ ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन ! सोयोगभ्रष्टपुरुष नेहींप्रयत्नकरताहुआभी तिस पूर्वअभ्यासनैं ही प्रवृत्तकरीताहै जिसकारणतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मका जिज्ञासुहुआ भी कर्मकांडरूप वेदकूं अतिक्रमणकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! उत्तमलोकोंविषे भोगोंकूंभोगके श्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जन्मकूंप्राप्तभयाजोयोगभ्रष्टपुरुषहै तिसयोगभ्रष्टपुरुषका अत्यंतव्यवधानयुक्तजो पूर्वलाजन्महै तिसपूर्वलेजन्मविषे संपादनकरेजेज्ञानकेसंस्कारहैं ताकानाम पूर्वअभ्यासहै तिसपूर्वलेअभ्यासनैं इसजन्मविषे मोक्षकेसाधनोंवासतै नहींप्रयत्न

जोपुरुषहै तिसपुरुषकी तामरणतैंअनंतर किसप्रकारकीगति होवैहै इति ॥ तेसप्तभूमिका इसगीताकेतृतीयअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआये हैं ॥ इसरामचंद्रकेप्रश्नका यहअभिप्रायहै नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकपूर्वक तथाइसलोकपरलोकविषयभोगों तैं वैराग्यपूर्वक तथाशमदमादिषट्संपत्तिपूर्वक तथासर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक जाउत्कटमोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुताहै ताकानाम शुभइच्छाहै साशुभइच्छा प्रथमभूमिकाहै ॥ यहशुभइच्छा विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचारकरणा यहविचारणानामा दूसरीभूमिकाहै यहदूसरीभूमिका श्रवणमननरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर श्रवणमननतैंसिद्धभयाजोतत्त्वज्ञानहै तातत्त्वज्ञानविषे संशयतैंरहितहोणा यह तनुमानसानामा तीसरीभूमिकाहै यहतीसरीभूमिका निदिध्यासनरूपहै ॥ यहतीनोंभूमिका तत्त्वसाक्षात्कारका साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामा चतुर्थीभूमिकातौ तत्त्वसाक्षात्काररूपही है और असंसक्तिनामा पंचमीभूमिका तथापदार्थाभावनीनामा षष्ठीभूमिका तथा तुरीयानामा सप्तमीभूमिका यहतीनभूमिकातौ जीवन्मुक्तिकेहीअवांतरभेदहैं ॥ तहां चतुर्थीभूमिकाकूंप्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तभया जोपुरुषहै तिसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकेअभावहुएभी विदेहमुक्तिकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है॥और पंचमी षष्ठी सप्तमी यातीनभूमिकावोंकूं प्राप्तभयाजो पुरुषहै सोपुरुषतौ जीवताहुआभी मुक्तही है जबी सोपुरुष जीवताहुआभी मुक्तही है तबी तापुरुषके विदेहमोक्षविषेक्याकहणाहै॥ यातै चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी याच्यारिभूमिकावोंविषेतौकिंचित्मात्रभी शंकानहीं है ॥ परंतु प्रथमा द्वितीया तृतीया यहजोतीनसाधनभूमिकाहैं तिनतीनभूमिकावोंविषेतौ इसपुरुषनैं सर्वकर्मोंकापरित्यागकर्‍याहै तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईनहीं यातैं शंकासंभवै है ॥ इसीकारणतैं श्रीरामचंद्रनैं तिनसाधनरूप तीनभूमिकावोंविषेही प्रश्नकर्‍याहै इति ॥ इसप्रश्नकावसिष्ठभगवाननैं यहउत्तरकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (योगभूमिकयोत्क्रांतजीवितस्यशरीरिणः ॥ भूमिकांशानुसारेणक्षीयतेसर्वदुष्कृतम् ॥ १ ॥ ततःसुरविमानेषु लोकपालपुरेषुच ॥ मेरुपर्वतकुंजेषुरमतेरमणीसखः ॥ २ ॥ ततःसुकृतसंभारेदुष्कृतेचपुराकृते ॥ भोगक्षयात्परिक्षीणेजायंतेयोगिनोभुवि ॥ ३ ॥ शुचीनांश्रीमतां गेहेगुप्तेगुणवतांसताम्॥ जनित्वायोगमेवैतेसेवंतेयोगवासिताः॥ ४ ॥ तत्रप्राग्भावनाभ्यस्तंयोगभूमिक्रमंबुधाः॥ दृष्ट्वापरिपतंत्युच्चैरुत्तरंभूमिकाक्रमम् ॥ ५ ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष ज्ञानयोगकीभूमिकाकूंसंपादनकरिकै मरणकूंप्राप्तभयाहै तिसपुरुषके पूर्वलेपापकर्म तायोगभूमिकाकेअनुसार नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ १ ॥ तिसमरणतैंअनंतर सोपुरुषमेरुपर्वतकीकुंजोंविषे तथाइंद्रादिकलोकपालोंकीपुरियोंविषे देवतावोंके विमानोंविषेआरूढहोइकै अप्सरावोंकेसाथिरमणकरै है ॥ २ ॥ तिसतैंअनंतर पूर्वसंपादनकरेहुए सुकृतोंकेसमूहका तथादुष्कृतोंका भोगकरिकैक्षयहुए तेयोगभ्रष्टपुरुष पुनःभूमिलोकविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ ३ ॥ तहां इसभूमिलोकविषे जेपुरुष पवित्रहैं तथाश्रीमानहैं तथाविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंकरिकैसंपन्नहैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकेगृहविषे तेयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूंप्राप्तहोइकै पूर्वले योगभूमिकावोंकेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनयोगभूमिकावों

तायोगभ्रष्टपुरुषका शुचिश्रीमान्राजावोंकेगृहविषेजोजन्महै तथाब्रह्मविद्यावालेदरिद्रीब्राह्मणोंकेगृहविषेजोजन्महै तिनदोनोंजन्मोंकूं दुर्लभता किसहेतुतें है ॥ ऐसी अर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताजन्मकीदुर्लभताविषे हेतु कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) तत्रतंबुद्धिसंयोगंलभतेपौर्वदेहिकम् ॥ यततेचततोभूयःसंसिद्धौकुरुनंदन ॥ ४३ ॥ तत्र । तम् । बुद्धिसंयोगम् । लभते । पौर्वदेहिकम् । यतते । च । ततः । भूयः । संसिद्धौ । कुरुनंदन ॥ ४३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारकेजन्मोंविषे पूर्वदेहविषेप्रारंभकरेहुए तिस ज्ञानकेश्रवणादिकसाधनकूं प्राप्तहोवै है तिसतैंअनंतर मोक्षकेनिमित्त पुनः अधिक प्रयत्नकूंकरै है ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तिसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वदेहविषेप्रारंभकरेजे विवेकादिकसाधनचतुष्टय तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन तथातागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवण तथामनन तथानिदिध्यासन इत्यादिकसाधनथे ॥ तिनसाधनोंकेमध्यविषे जिसजिससाधनकूं जितनेपर्यंत अनुष्ठानकरिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणकूंप्राप्तहुआथा तिसतिससाधनकूं तितनेपर्यंतही सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारके जन्मोंविषेप्राप्तहोवै है ॥ कोई तिसजन्मविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष पुनःआदिसैंलैकेतिनसाधनोंकाप्रारंभकरैनहीं ॥ जैसे तीर्थकरणेकाउद्देशकरिकै आपणेग्रामसैंनिकस्याहुआपुरुष मार्गविषे किसी स्थानविषे रात्रिकूंशयनकरिकै प्रातःकालमें तिसीस्थानतैं आगेचलैहै कोईपुनःआपणेग्रामतैंचलैनहीं ॥ हे अर्जुन ! सोयोगभ्रष्टपुरुष ताजन्मकूंपाइकै केवल तिनपूर्वलेसाधनमात्रकूंही प्राप्तनहींहोवै है किंतु तिनपूर्वलेसाधनोंकीप्राप्तितैं अनंतर मोक्षकीप्राप्तिनिमित्त तिनपूर्वलेसाधनोंतैंभी पुनःअधिकसाधनोंकेसंपादन करणेकूं प्रयत्नकरै है अर्थात् इसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वजन्मविषे जाभूमिका संपादनकरी है उत्तरजन्मविषे मोक्षकीप्राप्तिपर्यंत तिसतैं अगलीभूमिकावोंकूंहीसंपादनकरै है ॥ इहां (हेकुरुनंदन) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या लोकविषे महान्प्रभाववाला तथाअत्यंतशुद्ध तथाअत्यंतश्रीमान् ऐसाजोकुरुराजाहै ताकुरुराजाकेकुलविषे तुम्हाराजन्महुआहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है तूंअर्जुनभी कोईयोगभ्रष्टही है ॥ यातैं पूर्वजन्मोंकेसंस्कारोंकेवशतैं इसजन्मविषे तुम्हारेकूं थोड़ेहीप्रयत्नतैं आत्मज्ञानकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी इति ॥ यहसर्ववार्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरी है ॥ तहां श्रीरामचंद्रनैं यहप्रश्नकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकामथद्वितीयांवातृतीयांभूमिकामुत ॥ आरूढस्यमृतस्याथकीदृशीभगवन्गतिः ॥) अर्थयह ॥ हे भगवन् ! एकभूमिकाकूं अथवा द्वितीयभूमिकाकूं अथवा तृतीयभूमिकाकूं प्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तभया

न्याहे अर्थात् जेपवित्रश्रीमान्होवेंहैं ते पापकर्मोंविषे धनादिकोंकूंखर्चकरतेनहीं किंतु शुभकार्योंविषे धनादिकोंकूंखर्चकरतेहुए पूर्वस्थानकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतमहान्स्थानकूं संपादनकरैंहैं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ अब विषयोंकीइच्छातैंरहितदूसरेयोगभ्रष्टकी मरणतैं अनंतरगतिकूं कथनकरैंहैं।

(मू. श्लो.) अथवायोगिनामेवकुलेभवतिधीमताम् ॥ एतद्धिदुर्लभतरंलोकेजन्मयदीदृशम् ॥ ४२ ॥ अथवा । योगिनाम् । एव । कुले । भवति । धीमताम् । एतत् । हि । दुर्लभतरम् । लोके । जन्म । यत् । ईदृशम् ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! अथवा सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मविद्यावाले दरिद्रीब्राह्मणोंके कुलविषे ही जन्मलेवैहै जिसकारणतैं इसलोकविषे इसप्रकारका जोयह जन्महै सोयहजन्म अत्यंतदुर्लभहै ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोपुरुष श्रद्धावैराग्यादिकशुभगुणोंकीअधिकताकरिकै विषयभोगवासनातैंरहितहै सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणतैंअनंतर तिनपुण्यकारीपुरुषोंके लोकोंकूंनहींप्राप्तहोइकैही ब्रह्मविद्यावाले तथायोगाभ्यासवाले दरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ श्रीमान्राजाओंकेकुलविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेअर्जुन ! ऐसेब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जोतिसयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै सोजन्म सर्वप्रमादकेकारणों तैंरहितहोणेतैं दुर्लभतरहै ॥ तात्पर्य यह ॥ इसलोकविषे पवित्रश्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जोयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै सोजन्मभी अनेकसुकृतोंकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथामोक्षविषेपरिअवसानवालाहै यातैं सोजन्मभी दुर्लभहै ॥ और पवित्र तथाब्रह्मविद्यावाले ऐसेदरिद्रब्राह्मणोंकेकुलविषेजोजन्महै सोजन्म प्रमादकेहेतुभूत धनादिकपदार्थों तैंरहितहोणेतैंता दुर्लभजन्मतैंभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं यहजन्मदुर्लभतरहै ॥ इसरीतिसैं यहदूसरायोगभ्रष्ट स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीमानपुरुषोंकेगृहविषेजन्मकूं प्राप्तभयाजो प्रथमयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ तिसकूंचित्तकेविक्षेपकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिमित्तप्राप्तहैं तेसर्वनिमित्त इसदूसरेयोगभ्रष्टकूं स्वभावतैंही अप्राप्तहैं ॥ तेचित्त केविक्षेपकरणेहारेनिमित्त शास्त्रविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (मनोहराणांभोज्यानांयुवतीनांचवाससाम् ॥ वित्तस्यापिचसान्निध्याच्चलेच्चित्तंसतामपि ॥ तत्सान्निध्यंततस्त्यक्त्वामुमुक्षुर्दूरतोवसेत्) ॥ अर्थयह ॥ मनोहर भोजनकरणेयोग्यपदार्थोंकीसमीपतातैं तथामनोहरस्त्रियोंकीसमीपतातैं तथामनोहर वस्त्रोंकीसमीप तातैं तथाधनकीसमीपतातैं श्रेष्ठपुरुषोंकाचित्तभी चलायमानहोइजावैहै ॥ तिसकारणतैं मुमुक्षुजन तिनसर्वपदार्थोंकीसमीपताकापरित्यागकरिकै दूरनिवासकरैइति ॥ यातैं सर्वभोगवासनावों तैंरहितहोणेतैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकूंयोग्य सोद्वितीययोगभ्रष्टपुरुष प्रथमयोगभ्रष्टतैंश्रेष्ठहै इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् !

राचमनुद्भुताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौयस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यंमनःप्राप्नुयात् ॥) अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन एकक्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थिरताकूं प्राप्तहुआहै तिसपुरुषनैं संपूर्णतीर्थोंकेजलविषेभी स्नानकऱ्याहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सर्वपृथ्वीभी दानकरीहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सहस्रयज्ञभीकरे हैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं ब्रह्मादिकसर्व देवताभी पूजनकरे हैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं आपणेपितरभी संसारसमुद्रतैं उद्धारकरे हैं ॥ तथा सोपुरुष तीनलोकोंकरिकैभीपूज्यहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् ! इसप्रकारतैं तायोगभ्रष्टपुरुषकूं शुभकारिताकरिकै दोनोंलोकविषे नाशकेअभावहुएभी दूसरा कौनफलप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुएश्रीभगवान् कहैहैं ।

(मू. श्लो.) प्राप्यपुण्यकृताँल्लोकानुषित्वाशाश्वतीःसमाः ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते ॥ ४१ ॥ प्राप्य । पुण्यकृतान् । लोकान् । उषित्वा । शाश्वतीः । समाः । शुचीनाम् । श्रीमताम् । गेहे । योगभ्रष्टः । अभिजायते ॥४१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोयोगभ्रष्टपुरुष पुण्यात्मापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे लोकोंकूं प्राप्तहोइकै तहां बहुत संवत्सरपर्यंत निवासकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र श्रीमान्पुरुषोंके गृहविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोपुरुष योगमार्गविषे प्रवृत्तहुआहै तथा जिसपुरुषनैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकऱ्याहै तथा जोपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकेश्रवणादि कोंकूंकरैहै इसप्रकारतैं श्रवणमननादिकोंकूंकरताहुआ जोपुरुष मध्यविषेही मरणकूंप्राप्तहुआहै ॥ ताकेविषेभी कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतौ पूर्वअनुभवकरेहुएभोगों कीवासनाकेप्रादुर्भावतैंविषयोंकीइच्छाकरैहै ॥ और कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतो वैराग्यभावनाकीदृढतातैं तिनविषयोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेयोगभ्रष्टों विषे प्रथमयोगभ्रष्टकावृत्तांत इसश्लोकविषेकथनकरैं हैं ॥ तहां उपासनासहित अश्वमेधादिकयज्ञोंकूंकरणेहारेपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै ताब्रह्मलोक कूं सोयोगभ्रष्टपुरुष अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेआयुषपरिमाणसंवत्सरपर्यंत निवासकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र तथाविभूतिवाले महाराज चक्रवर्तिपुरुषोंकेकुलविषे भोगवासनाशेषकेसद्भावतैं अजातशत्रुजनकादिकोंकीन्याई जन्मकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् भोगवासनाकीप्रबलतातैं सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मलो ककेअंतविषे सर्वकर्मोंके संन्यासकरणेकूंअयोग्य महाराजाहोवैहै इति ॥ इहांएकहीब्रह्मलोकविषे (लोकान्) यहजोबहुवचन कथन कऱ्याहै सो ताब्रह्मलोक विषेस्थितभोगस्थानोंकेभेदकूंलेके कथनकऱ्याहै ॥ और श्रीमान्पुरुष धनकरिकैअनेकपापकर्मोंकूंकरतेहुए अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोयोगभ्रष्टपुरुषभीश्रीमान पुरुषोंकेगृहविषे जन्मकूंलेके अधोगतिकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्ते श्रीभगवान्नैं तिनश्रीमानपुरुषोंका शुचि यहविशेषण कथनक

तापुत्रकूंभी तातकहैंहैं ॥ और शिष्यभी पुत्रकेसमानहीहोवैहै ॥ यातैं तिसपुत्रकेस्थानविषे शिष्यका जोतातयहसंबोधनहै सोतिसाशिष्यऊपरि कृपाकीअतिशयताके सूचनवासतै है इति ॥ तहां पूर्वप्रश्नविषेजोयहवचनकह्याथा सोयोगभ्रष्टपुरुष कष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै अज्ञानीहुआ देवयानपितृयाणमार्गकेअसंबंधवालाहोणेतैं स्वधर्म तैं भ्रष्टपुरुषकीन्याई सोयहकहणाभीअयुक्तहै काहेतैं सोयोगभ्रष्टपुरुष तादेवयानमार्गकेअसंबंधवालानहीं है ॥ किंतु तादेवयानमार्गके संबंधवालाही है ॥ यातैं ताअनुमानविषे सोहेतुही असिद्धहै अर्थात् तायोगभ्रष्टपुरुषविषे सोहेतुरहैनहीं काहें तैं पंचाग्निविद्याविषे यह वचन कह्याहै ॥ (इयत्थंविदुर्येचामीअरण्येश्रद्धांसत्यमुपासतेतेर्ऽचिरभिसंभवंतीति) ॥ इसश्रुतिविषे पंचाग्निकेजानणेहारेपुरुषोंकीन्याई श्रद्धावाले तथासत्यवाले मुमुक्षुजनोंकूंभी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककीप्राप्तिकथनकरीहै और श्रवणमननादिकोंकूंकरणेहारा जोयोगभ्रष्टहै तिसयोगभ्रष्टपुरुषकूं (श्रद्धावित्तोभूत्वा) इसपूर्वउक्तश्रुतिकारिकै साश्रद्धाभी प्राप्तहीहै ॥ तथा (शांतोदांतः) इसश्रुतिवचनकारिकै मिथ्याभाषणरूपजोवाक्इंद्रियकाव्यापारहै ताकानिरोधरूपसत्यभी तायोगभ्रष्टकंप्राप्तहीहै काहेतैं श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेव्यापारका जोनिरोधहै ताहीकूं दमकहैं हैं ॥ तादमकंकेप्राप्तहुए सोसत्यभीप्राप्तही हैं ॥ अथवा योगशास्त्रविषे योगके अंगरूपकारिकै कथनकरेजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहयहपंचयमहै ताकेप्राप्तहुए सोसत्यभी प्राप्तही है ॥ और पूर्वउक्तस्थितिविषे स्थित सत्य शब्दकारिकै जोब्रह्मकाहीग्रहणकरिये तौभीकोईहानिनहींहै काहेतैं वेदांतशास्त्रकेजेश्रवणादिकहैं तेश्रवणादिकभी तासत्यब्रह्मकाचिंतनरूपहीहैं ॥ यद्यपि जिस पुरुषकी जिसवस्तुविषे बुद्धिकीस्थितिहोवैहै सोपुरुष मरणतैंअनंतर तिसीहीवस्तुकूंप्राप्तहोवैहै यहनियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सत्यब्रह्मकेचिंतन करणेहारेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकहणीसंभवैनहीं तथापि यहनियम सर्वत्रनहींसंभवैहै ॥ जिसकारणतैं पंचाग्निविद्याविषेही तानियमकाव्यभिचारहै ॥ यातैं जैसे पंचाग्निविद्यावालेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैह ॥ तैसे तिन सत्यब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूंभी ब्रह्मलोककीप्राप्तिसंभवैहै ॥ और (संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानम्) इसस्मृतिनें संन्यासतैंभी ब्रह्मलोककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और दिनदिनविषे भक्तिश्रद्धापूर्वक जोवेदांतशास्त्रकाविचार है ताविचारकूं अतिकृच्छ्रकेफल कीतुल्यता स्मृतिविषेकथनकरीहै यातैं यहअर्थसिद्धभया श्रद्धा सत्य ब्रह्मविचार संन्यास याच्यारोंविषे एकएककूंभी ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपता है ॥ जबी एकएककूंभी ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै तबी तायोगभ्रष्टपुरुषविषेस्थित तिनच्यारोंकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै याकेविषेक्या कहणाहै इसीकारणतैं तैत्तिरियशाखावालेब्राह्मण (तस्यहवाएवंविदुषोयज्ञस्य) इत्यादिकवचनोंकारिकै तायोगीपुरुषकेचारितकूं सर्वसुकृतरूप कथनकरतेभये हैं ॥ तथा स्मृतिविषेभी यहवार्त्ता कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेसर्वापिदत्तावनिर्यज्ञानांचकृतंसहस्रमखिलादेवाश्चसंपूजिताः ॥ संसा

इसयोगभ्रष्टपुरुषकेपरलोकगतिविषयक हमारेसंशयके सम्यक्उत्तरदेकरिकै नाशकरणेहारा संभवतानहीं ॥ यातैं सर्वकापरमगुरु तथासर्वअर्थकूंप्रत्यक्षदेखणेहारा आप ईश्वरही इसहमारेसंशयके निवृत्तकरणेकूंयोग्यहो इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकी योगीपुरुषकेनाशकीशंकाकूं निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्यते ॥ नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतातगच्छति ॥ ४० ॥ पार्थ । न । एव । इह । न । अमुत्र । विनाशः । तस्य । विद्यते न । हि । कल्याणकृत् । कश्चित् । दुर्गतिं । तात । गच्छति ॥ ४० ॥ (इति पदच्छेदः) हेपार्थ तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे कदाचित्भी विनाश नहीं होवैहै तथा परलोकविषेभी विनाश नहीं होवैहै जिसकारणतैं हेतात शास्त्रविहितकारी कोईभीपुरुष दुर्गतिकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! उभयभ्रष्टहुआ सोयोगीपुरुष नाशकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोवचन पूर्वतुमनैं कथनकऱ्याथा तिसवचनकाक्याअर्थ है क्यासोपुरुष वेदविहितकर्मोंकेपरित्यागकरणेतैं इसलोकविषे किसीप्रमादीपुरुषकीन्याई श्रेष्ठपुरुषोंकरिकै निंदाकरणेयोग्यहोवैहै ॥ अथवा सोपुरुष परलोकविषे निकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जापरलोकविषेनिकृष्टगति श्रुतिनैं कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनतेकीटाःपतंगायदिदंदशूकम्) ॥ अर्थयह ॥ देवलोककेप्राप्तिकाजो देवयानमार्ग है तथापितृलोककेप्राप्तिकाजो पितृयाणमार्ग है तिनदोनोंमार्गोंविषे एकमार्गविषेभी जेपुरुष प्रवृत्तनहींहोवैं हैं तेअज्ञानीपुरुष कीटपतंगमशकादिकक्षुद्रशरीरोंकूं वारंवार प्राप्तहोवैंहैं इति ॥ सोयहदोनोंप्रकारकानाश तिसयोगभ्रष्टपुरुषका होवैनहीं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान्कहैं हैं ॥ हे पार्थ ! जिसपुरुषनैं शास्त्रउक्तविधिपूर्वकसर्वकर्मोंकापरित्यागरूपसंन्यासकऱ्याहै तथा जोपुरुष सर्व तैं विरक्तहुआहै तथा जोजोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूं करैहै तथा जोपुरुष तिनश्रवणमननादिकोंकेकरतेहुएही मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहुआहै ऐसाजोयोगभ्रष्टपुरुष तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे तथापरलोकविषे विनाशहोवैनहीं ॥ इसीअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहैंहैं (नहिकल्याणकृत्इति) हेतात ! जोकोईपुरुष किंचित्मात्रभी शास्त्रविहितअर्थका अनुष्ठानकरैहै सोपुरुष इसलोकविषेतौ अपकीर्तिरूपदुर्गतिकूं नहींप्राप्तहोवै है और परलोकविषे कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूपदुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ जबी सामान्यतैं शास्त्रविहितअर्थकेअनुष्ठानकरणेहारापुरुषभीतादुर्गतिकूंप्राप्तहोवैनहीं तबी सर्वतैंउत्कृष्ट सोयोगभ्रष्ट तादुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्या कहणाहै ॥ इहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं हे तात ! यासंबोधनकरिकै जोकथनकऱ्याहै ताकायहअभिप्रायहै ॥ तनोत्यात्मानंपुत्ररूपेणेतितातः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेआत्माकूंही पुत्ररूपकरिकै विस्तारकरै ताकूं तातकहैं हैं इसरीतिसैं तातशब्द पिताकावाचकहै ॥ सोपिताही पुत्ररूपहोवैहै ॥ यातैं

रणतैं उपासनासहितसर्वकर्मोंका तिसपुरुषनैं पूर्वही परित्यागकऱ्याहै ऐसाजोउभयभ्रष्टपुरुषहै अर्थात् कर्ममार्ग तैं तथाज्ञानमार्ग तैं दोनों तैं भ्रष्टहै ऐसापुरुष छिन्नअभ्रकीन्याईं क्यों नाशकूंनहींप्राप्तहोइके अर्थात् जैसे वायुनैं पूर्वमेघतैंपृथक्कऱ्याजोअभ्रहै सोअभ्र जैसे पूर्व मेघतैंभ्रष्टहोइके तथाउत्तरमेघकूंनप्राप्तहोइके वृष्टि केअयोग्यहुआ मध्यविषेही नाशकूंप्राप्तहोवैहै तैसे सोयोगभ्रष्टपुरुषभी पूर्वकर्ममार्ग तैंविच्छिन्नहुआ तथाउत्तरज्ञानमार्गकूंनहींप्राप्तहुआ मध्यविषेही नाशकूंप्राप्त होवैगा ॥ ऐसायोगभ्रष्टपुरुष कर्म केफलकूं तथाज्ञानके फलकूं प्राप्तहोणेवासतै अयोग्यनहीं है क्या इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै ज्ञान कर्म दोनोंका समुच्चयभी निराकरण कऱ्या काहेतैं इससमुच्चयपक्षविषे ज्ञानकेफलकेअलाभहुएभी कर्म केफलकालाभ संभवहोइसकैहै ॥ यातैं तासमुच्चयकूंकरणेहारेपुरुषविषे उभयभ्रष्टपणा संभवता नहीं ॥ इहांजेकोईयहशंकाकरै तिसपुरुषकं कर्मों केसंभवहुएभी तिसपुरुषनैं कर्मों केफलकीकामना परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं कर्मकरतेहुएभी तिसपुरुषविषे उभयभ्रष्टपणा संभवहोइसकैहै सोयहशंकाभीसंभवैनही काहेतैं जैसे सकामकर्मोंकाफल होवैहै तैसे निष्कामकर्मोंकाभी फलहोवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व आप स्वंवऋषिकावचनप्रमाणदेकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ज्ञान कर्म दोनों के समुच्चयकूं अनुष्ठानकरणेहारेपुरुषऊपरि यहप्रश्ननहींहै किंतु सर्वकर्मों केत्यागीसंन्यासी ऊपरिही यहप्रश्नहै ॥ जिसकारणतैं अनर्थ केप्राप्तिकीशंका तिससर्वकर्मों केत्यागीसंन्यासीविषेही संभवहोइसकैहै इति ॥३८॥ ❀ अब इसपूर्वउक्तसंशयकेनिवृत्तक रणेवासतै सोअर्जुन अंतर्यामीकृष्णभगवानकेप्रति प्रार्थनाकरैहै ।

(मू. श्लो.) एतन्मेसंशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ त्वदन्यःसंशयस्यास्यच्छेत्तानह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ एतत् । मे । संशयम् । कृष्ण । छेत्तुम् । अर्हसि । अशेषतः । त्वदन्यः । संशयस्य । अस्य । छेत्ता । न । हि । उपपद्यते ॥ ३९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे कृष्ण ! हमारे इस संशयकूं अशेषतैं निवृत्तकरणेकूं आपही योग्यहो जिसकारणतैं तुम्हारेतैं अन्यकोईभी इस संशयके छेदनकरणेहारा नहीं संभवैहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे कृष्णभगवन् ! पूर्वदोश्लोकोंकरिकै हमनैं दिखायाजोआपणासंशयहै तिसहमारे संशयकूं अशेषतैंनिवृत्तकरणेकूं अर्थात् तासंशयकेमूलभूत जेअधर्मादिकहैं तिनअधर्मादिकों केउच्छेदनपूर्वक तासंशयकेनिवृत्तकरणेकूं एकआपही योग्यहो ॥ शंका–हे अर्जुन ! मेरेतैंअन्य कोईऋषि अथवा कोई देवता तुम्हारे इससंशयकूंनिवृत्तकरेगा ऐसीभगवानकीशंकाकेहुए अर्जुनकहैहै (त्वदन्यः इति) हे भगवन् ! सर्वज्ञ तथा सर्वशास्त्रोंकाकर्त्ता तथापरमगुरुरूपतथापरमकृपालु ऐसेजोआप परमेश्वरहो तिसआपतैंभिन्न जितनेकऋषिहैं तथाजितनेकदेवताहैं तेसर्व अनीश्वरहोणेतैं असर्वज्ञही हैं यातैं कोईऋषि तथा कोई देवता

श्रद्धा समाधान यहषट्संपत्ति तथामोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंकरिकै संपन्नहुआ जोपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्यों के श्रवणमननादिकोंकूंकरताभीहै परंतु आयुष्यकीअल्पताकरिकै तथामरणकालविषेइंद्रियोंकीव्याकुलताकरिकै तिनश्रवणादिकसाधनों के दृढअनुष्ठानकेअसंभवतैं जोपुरुष योगतैं चलितमनवालाहुआहै इहां श्रवणमननादिकोंकेपरिपाककरिकै उत्पन्नभयाजोतत्त्वसाक्षात्कारहै ताकानाम योगहै तायोगतैं चलितहुआहै क्या तिसयोगकेफलकूंहीप्राप्तहुआहै मनजिसका ऐसाजोपुरुषहै सोपुरुष तायोगसंसिद्धिकूं नप्राप्तहोइकै अर्थात् तत्त्वसाक्षात्काररूपयोगकरिकै प्राप्तहोणेहारी जाअपुनरावृत्तिसहित कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहै ताकानाम योगसंसिद्धिहै ताकूं नप्राप्तहोइकै अतत्त्वज्ञहुआही मध्यविषेमृत्युकूंप्राप्तहुआ किसगतिकूंप्राप्तहुआ किसगतिकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् सोपुरुष सुगतिकूं प्राप्तहोवैहै अथवा दुर्गतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसपुरुषनैं नित्यनैमित्तिककर्मोंकातो परित्यागकऱ्याहै तथाज्ञानकीउत्पत्तिहुईनहीं यातैं तिसपुरुषकूं दुर्गतिकेप्राप्तिकीभीसंभावनाहोवैहै ॥ और तिसपुरुषनैं शास्त्रउक्तमोक्षसाधनोंकाअनुष्ठानकऱ्याहै तथाशास्त्रप्रतिषिद्धकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै यातैं तिसपुरुषकूं सुगतिकेप्राप्तिकीभीसंभावनाहोवैहै इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब इसीपूर्वउक्तसंशयकेबीजकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिवनश्यति ॥ अप्रतिष्ठोमहाबाहोविमूढोब्रह्मणःपथि ॥ ३८ ॥ कच्चित् । न । उभयविभ्रष्टः । छिन्नाभ्रम् । इव । नश्यति । अप्रतिष्ठः । महाबाहो । विमूढः । ब्रह्मणः । पथि ॥ ३८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहान्बाहुवाले कृष्ण ब्रह्मप्राप्तिके ज्ञानरूपमार्गविषे विमूढ तथाकर्मउपासनातैंरहित ऐसाउभयभ्रष्टपुरुष विच्छिन्नहुएअभ्रकी न्याई क्यों नहीं नाशकूंप्राप्तहोवैगा ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेमहाबाहो ! अर्थात् सर्वभक्तजनों के सर्वउपद्रवों के निवृत्तकरणेविषे समर्थ हैंच्यारोंभुजाजिसकी अथवा सर्वभक्तजनों केप्रति धर्म अर्थ काम मोक्ष याच्यारिप्रकारकेपुरुषार्थ देणेविषे समर्थ हैंच्यारिभुजाजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ इहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषें स्वप्रश्ननिमित्तकक्रोधकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ तथा तिसप्रश्नकेउत्तरदेणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ॥ और (कच्चित्) यहपद अभिलाषासहितप्रश्नकावाचकहै सोदिखावें हैं ॥ हे भगवन् ! जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिके आत्मज्ञानरूपमार्गविषे विमूढहै अर्थात् ताब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैंरहितहै तथा जोपुरुष अप्रतिष्ठ है अर्थात् पितृयाणमार्गविषे गमनकासाधनरूपजोकर्म है तथादेवयानमार्गविषे गमनकासाधनरूपजाउपासनाहै ता कर्म उपासना दोनों तैंरहितहै जिसका

कर्म तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंके नाशहोइगयेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेविद्वान्पुरुषोंकूं विदेहकैवल्यकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी शंकानहीं है परंतु जोपुरुष पूर्वकरे हुएनिष्कामकर्मोंकरिकै विविदिषापर्यंत चित्तशुद्धिकूंप्राप्तहुआहै तिसतैंअनंतर शास्त्रविधिपूर्वक तिनसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै विविदिषारूप परमहंससंन्यासकूं प्राप्तहुआहै ॥ तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठजीवन्मुक्तसंन्यासीगुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुतैं वेदांतमहावाक्यकेउपदेशकूंप्राप्तहोइकै ताउपदेशविषे असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिवासतै (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इससूत्रतैंआदिलैके (अनावृत्तिःशब्दात्) इससूत्रपर्यंत समग्र च्यारिअध्यायरूप उत्तरमीमांसाशास्त्रकरिकै श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनोंकूं गुरुकेप्रसादतैं करणेकाआरंभकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष श्रद्धावान्हुआभी आयुष्कीअल्पताकरिकै अल्पप्रयत्नवालाहोणेतैं इसजन्मविषे आत्मज्ञानकूंप्राप्तहुआनहीं किंतु ताश्रवणमनननिदिध्यासनकेकरतेहुएही मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहोइगया सोपुरुष आत्मज्ञानतैंरहितहोणेतैं अज्ञानकेनाशतैंरहितहै यातैं सोपुरुष मोक्षकूंतो प्राप्तहोवैनहीं ॥ और तिसपुरुषनैं कर्मोंका तथाउपासनाका पूर्व परित्यागकऱ्याहै यातैं सोपुरुष अर्चिरादिमार्गकरिकै उपासनासहितकर्मके देवलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथासोपुरुष धूमादिकमार्गकरिकै केवलकर्मोंके पितृलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं किंतु सोयोगभ्रष्टपुरुष कीटपतंगादिकभावकीप्राप्तिकरिकै कष्टगतिकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ आत्मज्ञानतैंरहितहुआ देवयानपितृयाणमार्गके असंबंधवालाहोणेतैं वर्णआश्रमकेआचारतैंभ्रष्टहुएपुरुषकीन्याई अथवा सोपुरुष ताकष्टगतिकूंनहींप्राप्तहोवैगा ॥ शास्त्रनिषिद्धकर्मोंकेअभाववालाहोणेतैं वामदेवकीन्याई इसप्रकारकेसंशयकरिकै व्याकुलहुआहैमनजिसका ऐसाजोअर्जुनहै सोअर्जुनतासंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः ॥ अप्राप्ययोगसंसिद्धिंकांगतिंकृष्णगच्छति ॥ ३७ ॥

अयतिः । श्रद्धया । उपेतः । योगात् । चलितमानसः । अप्राप्य । योगसंसिद्धिम् । काम् । गतिम् । कृष्ण । गच्छति ॥ ३७ ॥

इतिपद० ॥ हे कृष्ण ! जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै तथाश्रद्धाकरिकै युक्तहै तथातत्त्वसाक्षात्कारतैं चलायमानहुआहै मनजिसका सोपुरुष तत्त्वज्ञानकेफलकूं न प्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तहुआ किसं गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे कृष्णभगवन् ! आयुषकीअल्पताकरिकै जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै तथा गुरुवेदांतवाक्योंविषे विश्वासबुद्धिरूपजाश्रद्धाहै ताश्रद्धाकरिकैयुक्तहै ॥ इहां श्रद्धा आपणेसहवर्तिशमदमादिकोंकाभी उपलक्षणहै ॥ तेश्रद्धासहितशमदमादिक (शांतोदांतउपरतस्तितिक्षुःश्रद्धावित्तोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति) इसश्रुतिविषे कथनकरेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक तथाइसलोकपरलोककेफलभोगोंविषेवैराग्य तथा शम दम उपरति तितिक्षा

प्रयत्नतैं सर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाकोईपदार्थहैनहीं जोपुरुषप्रयत्नकरिकैनहींप्राप्तहोवै ॥ १ ॥ हेरामचंद्र ! सोपुरुषप्रयत्नरूपपौरुष दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ उत्शास्त्रहोवैहै दूसराशास्त्रितहोवैहै ॥ तहां शास्त्रकरिकैंप्रतिषिद्धपौरुषकूं उत्शास्त्रकहैंहैं ॥ और शास्त्रकरिकैंविहितपौरुषकूं शास्त्रितकहैंहैं ॥ तहां उत्शास्त्रपौरुषतौ नरककीप्राप्तिवासतैंहीहोवैहै ॥ और शास्त्रितपौरुषतौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा मोक्षकीप्राप्तिवासतैंहीहोवैहै ॥ २ ॥ हे रामचंद्र ! यहवासनारूपनदी शुभ अशुभ यादोनोंमार्गोंतैंवहनकरैहै ॥ तहां इसअधिकारीपुरुषनैं पुरुषप्रयत्नकरिकै यहवासनारूपनदी अशुभमार्गतैंरोकिकै शुभमार्गविषेप्रवृत्तकरणी ॥ ३ ॥ हेसर्वबलवान्पुरुषोंविषेश्रेष्ठरामचंद्र ! अशुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहुएआपणेमनकूं तूं पुरुषप्रयत्नकरिकैं तिनअशुभकर्मों तैंनिवृत्तकरिकै शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकर ॥ ४ ॥ हेशत्रुवोंकूंनष्टकरणेहारारामचंद्र ! पूर्वलेअभ्यासकेवशतैं जबी तुम्हारीशुभवासना उत्पन्नहोवै तबीही तुमनैं आपणे अभ्यासकीसफलताजानणी ॥ ५ ॥ तावासनाके अनिर्णयहुएभी तूं निरंतर शुभवासनाकूंही संपादनकर ॥ हे पुत्र ! ताशुभवासनाकीवृद्धिहुए किंचित्मात्रभी दोषहोवैनहीं ॥ अशुभवासनाकीवृद्धितैंही दोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ६ ॥ हे रामचंद्र ! जबपर्यंत तूं अव्युत्पन्नमनवालाहै तथा परमपदकेज्ञानतैंरहितहै तबपर्यंत गुरुशास्त्रप्रमाणकरिकैनिर्णीतअर्थकूंही तूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अनुकरणकर ॥ ७ ॥ हे रामचंद्र ! इसप्रकारकेउपायतैं जबी तुम्हारेपापरूपकषाय निवृत्तहोवैं तथा आत्मवस्तुकानिश्चयहोवै तथा मनकानिरोध होवै तबी तुमनैं ताशुभवासनाकाभी परित्यागहीकरणा इति ॥ ८ ॥ इत्यादिकअनेकवचनोंकरिकै वसिष्ठभगवान्नैं पुरुषप्रयत्नकीप्रबलताकथनकरीहै ॥ यातैं सोशास्त्रीयपुरुषप्रयत्न सर्वतैंप्रबलहै ॥ तापुरुषप्रयत्नकरिकै तिसप्रारब्धकर्मकाअभिभव संभवैहै ॥ इतनेकहणेकरिकै पूर्वउक्त अर्जुनकेप्रश्नका यहउत्तर सिद्धभया ॥ साक्षीआत्माविषेस्थित जोअविवेकसिद्धसंसारबंधहै तासंसारबंधकी विवेकसाक्षात्कारतैं निवृत्तिहुएभी प्रारब्धकर्मनैं स्थितकरेहुएचित्तकी स्वाभाविकभीवृत्तियोंकूं जोपुरुष योगाभ्यासकेप्रयत्नकरिकै निवृत्तकरैहै सोजीवन्मुक्तपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ और तिनचित्तवृत्तियोंकेनहींनिरोधकियेहुए यहपुरुष तत्त्वज्ञानवालाहुआभी परमयोगी कह्याजावैनहीं किंतु अपरमयोगी कह्याजावैहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वग्रंथकरिकै यहवार्त्ता कथनकरी जिसपुरुषकूं तत्त्वज्ञानकीतौप्राप्तिहुईहै परंतु जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहुईनहीं सोपुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ और जिसपुरुषकूं तत्त्वज्ञानकीभी प्राप्तिहुईहै तथाजीवन्मुक्तिकीभी प्राप्तिहुईहै सोपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै इति ॥ तहां अपरमयोगी तथा परमयोगी दोनोंका तत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानकेनाशहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्म विद्यमानहै तबपर्यंत देहइंद्रियसंघात बन्यारहैहै ॥ और ताप्रारब्धकर्मका जबी भोगतैंनाशहोवैहै तबी तिनदोनोंका देहइंद्रियसंघातभी नाशहोइजावैहै ॥ और एकवार नाशकूंप्राप्तहुआ सोसंघातपुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं तासंघातकेउत्पादक अविद्याका

अत्यंतबलवान् जेप्रारब्धकर्म हैं तिनप्रारब्धकर्मोंकाअभिभव किसप्रकारतैंहोवैहै ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (उपायतःइति) हेअर्जुन ! पुरुषप्रयत्नरूपजोउपायहै तिसउपायतैंही तिसप्रारब्धकर्मकाअभिभवहोवैहै ।। काहे तैं सोलौकिकपुरुषप्रयत्न तथावैदिकपुरुषप्रयत्न ताप्रारब्धकर्मकीअपेक्षाकरिकै प्रबलहै ।। जोकदाचित् तापुरुषप्रयत्नकूं प्रारब्धकर्मतैंप्रबल नहींअंगीकारकरियै तौ लौकिकपुरुषोंके कृषिआदिक प्रयत्नकूं तथावैदिकपुरुषोंकेज्योतिष्टोमादिकप्रयत्नकूं व्यर्थताप्राप्तहोवैगी ।। और सर्वकार्यविषे प्रारब्धकर्मके सत्त्वकातथाअसत्त्वका विकल्पही प्राप्तहोवैगा ।। ताकरिकै किसीभीकार्यविषेप्रवृत्तिनहींहोवैगी।। काहे तैं प्रारब्धकर्मकेसत्त्वहुए तिसतैंहीफलकीप्राप्तिहोइजावैगी ताफलकीप्राप्तिविषेपुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजननहीं है ।। और प्रारब्धकर्मके असत्त्वहुएतैं सर्वप्रकारतैं फलकीप्राप्तिहोणीअसंभवहै यातैंभी पुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजन नहीं है ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै कोईभीपुरुष किसीभीलौकिकवैदिककार्यविषेप्रवृत्तहोवैगानहीं ।। शंका—सोप्रारब्धकर्म आप अदृष्टरूपहै ।। जोअदृष्टकारणहोवैहै सो दृष्टकारणतैंविना कार्यका जनकहोवैनहीं किंतु दृष्टकारणकीसहायताकरिकैही सोअदृष्टकारण कार्यकाजनकहोवैहै ।। यातैं अदृष्टकारणरूप सोप्रारब्धकर्मभी दृष्टसाधनसंपत्तितैंविना फलकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ।। यातैं कृषिआदिकलौकिककार्योंविषे तथाज्योतिष्टोमादिकवैदिककार्योंविषे ताप्रारब्धकर्मकूं सोपुरुषप्रयत्न अवश्यअपेक्षितहै ॥ समाधान यहवार्त्तातौ योगाभ्यासविषेभी समानहीहै ।। काहे तैं तायोगाभ्यासकरिकैसाध्यजाजीवन्मुक्तिहै ताजीवन्मुक्तिकूंभी सुखातिशयरूपताहोणे तैं प्रारब्धकर्मकेफलविषेहीअंतर्भावहै ।। याकारणतैंही अध्यात्मशास्त्रोंविषे ताजीवन्मुक्तिकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकाफलरूप कथनकऱ्याहै ।। यातैं ताजीवन्मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिवासतैदृष्टकारणरूप योगाभ्यासकासंपादनकरणा संभवै है ।। अथवा तत्त्ववेत्तापुरुषके देहइंद्रियादिकसंघातकीस्थितिकूंदेखिकै जैसे प्रारब्धकर्मकूं तत्त्वज्ञानतैंप्रबलताकल्पनाकरीजावैहै तैसे तिसप्रारब्धकर्मतैंभी सोयोगाभ्यास प्रबलहोवै ।। काहे तैं शास्त्रप्रतिपादितयत्नकूं सर्वतैंप्रबलताही देखणेविषेआवैहै ।। यहवार्त्ता वसिष्ठभगवाननैंभी कथनकरीहै ।। तहांश्लोक ।। (सर्वमेवेहहिसदासंसारेरघुनंदन ।। सम्यक्प्रयुक्तात्सर्वेणपौरुषात्समवाप्यते ॥ १ ॥ उच्छास्त्रंशास्त्रितंचेतिपौरुषंद्विविधंस्मृतम् ।। तत्रोच्छास्त्रमनर्थायपरमार्थायशास्त्रितम् ।। २ ॥ शुभाशुभाभ्यांमार्गाभ्यांवहंतीवासनासरित् ॥ पौरुषेणप्रयत्नेनयोजनीयाशुभेपथि ॥ ३ ॥ अशुभेषुसमाविष्टंशुभेष्वेवावतारय ।। स्वमनःपुरुषार्थेनबलेनबलिनांवर ॥ ४ ।। प्रागभ्यासवशाद्यातियदातेवासनोदयम् ॥ तदाभ्यासस्यसाफल्यंविद्धित्वमरिमर्दन ॥ ५ ॥ संदिग्धायामपिभृशंशुभामेवसमाहर ॥ शुभायांवासनावृद्धौ तातदोषोनकश्चन ।। ६ ।। अव्युत्पन्नमनायावद्भवानज्ञाततत्पदः ।। गुरुशास्त्रप्रमाणैस्त्वंनिर्णीतंतावदाचर ।। ७ ॥ ततः पक्वकषायेणनूनंविज्ञातवस्तुना ।। शुभोप्यसौत्वयात्याज्योवासनौघोनिरोधिना ।। ८ ।।) ॥ अर्थयह ॥ हेरघुनंदन ! इसलोकविषे सर्वपुरुष सम्यक्करेहुएपुरुष

करिकै त्रिगुणात्मकप्रधानतैं पृथक्करेहुएपुरुषका साक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर संपूर्णतीनगुणोंकेव्यवहारोंविषे जोवैतृष्ण्यहोवैहै सोपरवैराग्य कह्याजावैहै अर्थात् सर्वतैंश्रेष्ठ फलभूतवैराग्य कह्याजावैहै ॥ तिसपरवैराग्यकी परिपाकतातैं चित्तकेउपशमकीपरिपाकताहोइकै शीघ्रही कैवल्यकी प्राप्तिहोवैहै॥ इती सर्वअभिप्रायकूंलेके श्रीभगवान्नें (अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन ! पूर्वतुमनैं जोयहक ह्याथा तत्त्वज्ञानतैंभी प्रबलजोप्रारब्धकर्म है सोप्रारब्धकर्म आपणेफलकेदेणेवासतै मनकेवृत्तियोंकूं अवश्यकरिकैउत्पन्नकरैगा वृत्तियोंतैंविना सोफलकाभोग बनतानहीं ॥ ऐसीमनकीवृत्तियोंकेउत्पन्नहुए तिनवृत्तियोंकानिरोध कऱ्याजावैनहीं इति ॥ सोइसकाउत्तर अब तूंश्रवणकर ।

(मू. श्लो.) असंयतात्मनायोगोदुष्प्रापइतिमेमतिः ॥ वश्यात्मनातुयतताशक्योवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥ असंयतात्मना । योगः । दुष्प्रापः । इति । मे । मतिः । वश्यात्मना । तु । यतता । शक्यः । अवाप्तुम् । उपायतः ॥ ३६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! असंयतात्मा पुरुषनें सोयोग दुःखकरिकैभीनहींपाइसकीताहै यहवार्त्ता हैमारेकूंभी संमतहै तौभी यतमान वश्यात्मापुरुषनें उपायतें प्राप्तहोणेकूं शक्यहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तत्वसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुएभी वेदांतशास्त्रकेव्याख्यानादिकोंविषे चित्तकीसंलग्नतातैं अथवा आलस्यादिकदोषों तैं अभ्यासवैराग्यकरिकै नहींनिरुद्धकऱ्याहैअंतःकरणजिसनें ताकानाम असंयतात्माहै ॥ ऐसाअसंयतात्मापुरुष यद्यपि तत्त्साक्षात्कारवालाभीहै तथापि सोअसंयतात्मापुरुष प्रारब्धकर्मकृतचित्तकीचंचलतातैं मनकीसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं दुःखकरिकैभी प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ इसप्रकारकावचन जोतुमनैं कह्याहै सोतुम्हाराकहणा हमारेकूंभी संमतहै अर्थात् सोतुम्हाराकहणा यथार्थ है ॥ शंका—हेभगवन् ! असंयतात्मापुरुष जबी तिसयोगकूंनहींप्राप्तहोवैहै तबी दूसराकौनपुरुष तिसयोगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कैहैहैं (वश्यात्मनातुइति) वैराग्यकेपरिपाककरिकै वासनाकेक्षयहुए वश्यहुआहै क्या स्वाधीनहुआहै अर्थात् विषयोंकीपरतंत्रतातैंशून्यहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम वश्यात्माहै ॥ इहां (वश्यात्मनातु) यावचनकेअंतविषे स्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वउक्त असंयतात्मापुरुषतैं इसवश्यात्मापुरुषविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैंहै अथवा निश्चयार्थकहै ॥ तथा जोपुरुष वैराग्यकरिकै चित्तरूपनदीकेविषयाभिमुखप्रवाहकूंरोकिकै प्रत्यक्आत्माकेअभिमुखताकाप्रवाहकरणेवासतै पूर्वउक्तअभ्यासकूंकरैहै ताकानाम यततहै ॥ ऐसावश्यात्मायतमानपुरुषही चित्तकीचंचलताकरणेहारेप्रारब्धकर्मोंकाभी अभिभवकरिकै तासर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं प्राप्तहोणेवासतै समर्थहोवैहै ॥ शंका—

रूपयत्नहै अर्थात् आपणेचंचलस्वभावतैं बाह्यप्रवाहवालेइसाचित्तकूं मैं सर्वप्रकारतैंनिरोधकरौंगा याप्रकारकाजो मनविषेउत्साहविशेषहै सोउत्साहरूपयत्न वारंवार आवृत्तिकऱ्याहुआ अभ्यास कह्याजावैहै इति ।। अन्यसूत्र ।। (सतुदीर्घकालनैरंतर्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः) ॥ अर्थयह ।। सोपूर्वउक्तअभ्यास उद्वेगतैं रहितहोइकै दीर्घकालपर्यंत सेवनकऱ्याहुआ तथाव्यवधानकेअभावकरिकै निरंतरसेवनकऱ्याहुआ तथाश्रद्धाअतिशयरूपसत्कारकरिकै सेवनकऱ्याहुआ दृढभूमिहोवैहै अर्थात् सोअभ्यास विषयसुखकीवासनावोंकरिकै चलायमानहोइसकैनहीं ।। तहां तिसअभ्यासका अदीर्घकालपर्यंत सेवनाकियेहुए तथा दीर्घकालपर्यंत सेवनकियेहुएभी बीचमेंव्यवधानराखिकै सेवनाकियेहुए तथा दीर्घकालनिरंतरसेवनाकियेहुएभी श्रद्धाअतिशयकेअभावहुए लय विक्षेपकषाय सुखास्वाद याच्यारोंकेनहीं निवृत्तहुए व्युत्थानसंस्कारोंकीप्रबलतातैं अदृढभूमिहुआ सोअभ्यास फलकीप्राप्तिवासतै होवैगानहीं ॥ इसीकारणतैं पतंजलिभगवान्नैं दीर्घकाल नैरंतर्य सत्कार यहतीनोंकथनकरे हैं इति ।। इतनेकहणेकारिकै अभ्यासकास्वरूप कथनकऱ्या ।। अब वैराग्यकास्वरूप कथनकरैं हैं ॥ तहां वैराग्य दोप्रकारकाहोवैहै एकतौ अपरवैराग्यहोवैहै और दूसरा परवैराग्यहोवै है ।। तहां यतमान व्यतिरेक एकेंद्रिय वशीकार याभेदकारिकै सोअपरवैराग्य च्यारिप्रकारकाहोवै है । तहां पूर्वभूमिकाकेजयकरिकै उत्तरभूमिकाकेसंपादनकीविवक्षाकारिकै सोपतंजलिभगवान् चौथावशीकारनामावैराग्यही कथनकरताभयाहै ।। तहांसूत्र (दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्यवशीकारसंज्ञावैराग्यम्) ।। अर्थयह ।। स्त्री अन्न पान मैथुन ऐश्वर्य इत्यादिकविषय सर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षहोणेतैं दृष्टविषय कहेजावैं हैं ।। और स्वर्ग विदेहता प्रकृतिलय इत्यादिकविषय केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै गम्यहोणे तैं आनुश्रविकविषय कहेजावैंहैं ।। तिनदोनोंप्रकारके विषयोंकीतृष्णाकेहुएभी विवेकीन्यून अधिकताकरिकै यतमानादिकतीव्रवैराग्य सिद्धहोवैंहैं ।। तहां इसजगत्विषे कौनवस्तु सारहै तथाकौनवस्तु असारहै इसवार्त्ताकूं मैंगुरुशास्त्रतैं निश्चयकरौं याप्रकारकाजोउद्योगहै ताकूं यतमाननामावैराग्य कहेंहैं ॥ और आपणेचित्तविषे पूर्वविद्यमानजेदोषहैं तिनदोषोंके मध्यविषे अभ्यस्यमानविवेककारिकै इतनेदोष पकहुए इतनेदोष बाकीरहतेहैं इसप्रकारतैं चिकित्साकीन्याईं जोविवेचनहै ताकूं व्यतिरेकनामावैराग्य कहेहैं ॥ और दृष्टआनुश्रविकविषयोंकीप्रवृत्तिकूं दुःखरूपजानिकै बाह्यइंद्रियोंके प्रवृत्तिकूंनहींउत्पन्नकरतीहुईभी तृष्णाका जोऔत्सुक्यमात्रकारिकै मनविषेअवस्थानहै ताकानाम एकेंद्रियनामावैराग्यहै ॥ और तिसमनविषेभी तृष्णाकेअभावकारिकै जोसर्वप्रकारतैं वैतृष्ण्यहै अर्थात् तृष्णाकीविरोधी ज्ञानप्रसादरूप जाचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वशीकारनामावैराग्यहै ।। सोवशीकारनामावैराग्य संप्रज्ञातसमाधिकातौ अंतरंगसाधनहोवैहै और असंप्रज्ञातसमाधिका बहिरंगसाधनहोवैहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकातौ परवैराग्यही अंतरंग साधनहोवैहै ॥ सोपरवैराग्यकास्वरूप पतंजलिभगवान्नैं योगसूत्रोंविषे यहकह्याहै ॥ तहांसूत्र ॥ (तत्परंपुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्)॥ अर्थयह ॥ संप्रज्ञातसमाधिकीदृढता

रूपउपाय दूसरा वासनाकेपरित्यागवासतै वैराग्यरूपउपाय और साधुसमागम तथाअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति यहदोनोंउपायतौ अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेउपपाद कहोणे तैं अन्यथासिद्धहैं ॥ यातैं यहदोनोंउपाय अभ्यासवैराग्यदोनोंविषेही अंतर्भूतहैं ॥ इस कारणतैंही श्रीभगवान्नैं अभ्यास वैराग्य यहदोउपायही कथन करेहैं ॥ इसीअर्थकूं भगवान्पतंजलिभी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्र ॥ (अभ्यासवैराग्याभ्यांतन्निरोधः ॥) ॥ अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीजे प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृति यहपांचप्रकारकीवृत्तियांहै तेपांचवृत्तियां असुरत्वरूपकारिकै क्लिष्टकहीजावैं हैं और देवत्वरूपकारिकै अक्लिष्टकहीजावैं हैं ॥ ऐसीसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै अर्थात् इंधनतैंरहितअग्निकीन्यांई जोउपशमरूप परिणामविशेषहै सोनिरोध अभ्यासवैराग्य यादोनोंउपायोंकारिकैहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषे श्रीव्यासभगवाननैंभी कथनकरीहै ॥ तहांभाष्यवचन ॥ (चित्तनदीनामोभयतोवाहिनीवहतिकल्याणायवहतिपापायच ॥) अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकप्रसिद्धनदियां निम्नभूमीविषेचालिके समुद्रविषेजाइकै परिअवसानकूंप्राप्तहोवैं हैं तैसे जाचित्तरूपनदी विवेकरूपनिम्नभूमि विषेचलिकै कैवल्यरूपफलविषे परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै साचित्तरूपनदी कल्याणवहा कहीजावै है ॥ और जाचित्तरूपनदी अविवेकरूपानिम्नभूमि विषेचलिकै संसार विषेपरिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै साचित्तरूपनदी पापवहा कहीजावैहै ॥ इसप्रकारतैं साचित्तरूपनदी दोनोंतरफचलै है ॥ तहां विषयोंविषे वारंवार दोषदृष्टिकरिकै उत्पन्नभयाजोवैराग्यहै तावैराग्यनैंतौ तिसचित्तरूपनदीका विषयोंकीतरफकाप्रवाह रोकताहै ।। और विवेकदर्शनरूपअभ्यासनैंतौ ताचित्तरूपनदीका प्रत्यक्आत्माविषे प्रवाहकरीताहै ।। इसप्रकारतैं वैराग्य अभ्यास दोनोंकेअधीनही चित्तवृत्तियोंकानिरोधहै ॥ केवलवैराग्यतैं अथवा केवलअभ्यासतैं सोनिरोधहोवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ।। जैसे तीव्रवेगकारिकैयुक्तजोनदीकाप्रवाहहै ताप्रवाहकूं काष्ठमृत्तिकादिकोंकासेतुबांधिकै निवृत्तकारिकै तहांसैंकुल्याखोदकै क्षेत्रकेसन्मुख दूसराएकवक्रप्रवाह उत्पन्नकऱ्याजावैहै तैसे वैराग्यकारिकै चित्तरूपनदीके विषयाभिमुखप्रवाहकूं निवृत्तकारिकै समाधिकेअभ्यासकरिकै प्रत्यक्प्रवाह उत्पन्न कऱ्याजावैहै ।।इसप्रकार वैराग्य अभ्यास दोनोंका चित्तकेनिरोधविषे भिन्नभिन्नद्वाराहोणेतैं तिनदोनोंका समुच्चयहीसंभवैहै॥ जोकदाचित तिनदोनोंका एकहीद्वारहोवै तौ जैसे एकहीहोमविषे व्रीहि यव दोनोंका एकहीद्वारहोणे तैं विकल्पहै ।। तैसे वैराग्य अभ्यास यादोनोंकाभी विकल्पहीहोवैगा इति ।। शंका—मंत्र तप देवताध्यान आदिक क्रियारूपहैं यातैंतिनमंत्रादिकोंकातौ पुनःपुनः आवृत्तिरूपअभ्यास संभवैहै परंतु सर्वव्यापारोंकाउपरामरूपजोसमाधिहै ताकाकोईअभ्यास संभवतानहीं ऐसीशंकाकेनिवृत्त करणेवासतै सोपतंजलिभगवान् इसप्रकारका अभ्यासकास्वरूप कहतेभये हैं ॥ तहांसूत्र ॥ (तत्रस्थितौयत्नोऽभ्यासः) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपविषेस्थित जोद्रष्टाशुद्धचिदात्माहै ताशुद्धचिदात्माविषे सर्ववृत्तियों तैंरहितचित्तकी जा प्रशांतवाहितारूप निश्चलस्थितिहै तास्थितिकेवासतै जोमानसउत्साह

ताहुआ यथाप्रयोजनवाले परमार्थसत्यपरमानंदस्वरूपद्रष्टाविषे स्वप्रकाशतारूपहेतुतैं आपणेअविषयताकूंनिश्चयकरताहुआ इंधनों तैंरहितअग्निकीन्याईं सोमनआपे ही शांतिकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं साअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति मनकेनिग्रहका उपायरूपहै ॥ और जोपुरुष बोधनकरेहुएतत्त्वकूंभी सम्यक् जानिसकतानहीं अथवा जो पुरुष बोधनकरेहुएतत्त्वकूं विस्मरणकरिदेवै है तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूंतामनकेनिग्रहविषे साधुसमागमही उपायरूपहै ॥ काहे तैं तेमहात्माजन इसअधिकारीपुरुषकूं पुनःपुनःतत्त्वकाबोधनकरैं हैं ॥ तथा पुनः पुनः तिसतत्त्वकास्मरणकरावैं हैं और जोपुरुष विद्यामदादिकदुर्वासनाकरिकैपीडितहुआ तिससाधुसमागमकूंकरतानहीं तिसपुरुषकूंतौ पूर्वउक्तविवेककरिकै तावासनाकापरित्यागही मनकेनिग्रहविषेउपायहै ॥ और तिनवासनावोंकूंभीअतिप्रबलहोणे तैं जोपुरुष तिन वासनावोंकेत्यागकरणेकूंभी समर्थनहीं है तिसपुरुषकूंतौ प्राणोंकेस्पंदनकानिरोधही तामनकेनिग्रहका उपायहै ॥ काहे तैं प्राणोंकास्पंदतथावासना यहदोनोंहीचित्तकेप्रेरकहैं ॥ तिनदोनोंकेनिरोधहुएचित्तकीशांति अवश्यकरिकेहोवै है ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वेबीजेचित्तवृक्षस्यप्राणस्पंदनवासने ॥ एकस्मिंश्चतयोःक्षीणेक्षिप्रंद्वेपिविनश्यतः ॥ १ ॥ प्राणायामदृढाभ्यासैर्युक्त्याचगुरुदत्तया ॥ आसनाशनयोगेनप्राणस्पंदोनिरुध्यते ॥ २ ॥ असंगव्यवहारित्वाद्भवभावनवर्जनात् ॥ शरीरनाशदर्शित्वाद्वासनानप्रवर्तते॥ ३ ॥ वासनासंपरित्यागाचित्तंगच्छत्यचित्तताम् ॥ प्राणस्पंदनिरोधाच्चयथेच्छसितथाकुरु ॥ ४ ॥ एतावन्मात्रकंमन्येरूपंचित्तस्यराघव ॥ यद्भावनंवस्तुनोंतर्वस्तुत्वेनरसेनच ॥ ५ ॥ यदानभाव्यतेकिंचिद्धेयोपादेयरूपियत् ॥ स्थीयतेसकलंत्यक्त्वातदाचित्तंनजायते ॥ ६ ॥ अवासनत्वात्सततंयदानमनुतेमनः ॥ अमनस्तातदोदेतिपरमात्मपदप्रदा ॥ ७ ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र ! इसचित्तरूपवृक्षके दोबीजहैं एकतौ प्राणोंका स्पंद दूसरा वासना तिनदोनोंबीजोंविषे एककेनाशहुए दोनों नाशहोइजावैं हैं ॥ १ ॥ तहांप्राणायामकेदृढअभ्यासकरिकै तथागुरुनैंबताईयुक्तिकरिकैतथा आसनभोजनादिकोंके नियमकरिकै सोप्राणोंकास्पंद निरोधकऱ्याजावै है ॥ २ ॥ और असंगव्यवहारकेराखणे तैं तथाप्रपंचकेचिंतनकेपरित्यागतैं तथाशरीरकूंनाशवान्देखणे तैं इसअधिकारीपुरुषकी वासना प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ ३ ॥ और वासनाकेपरित्यागतैं तथाप्रस्पंदकेनिरोधतैं सोचित्त अचित्तभावकूंप्राप्तहोवै है आगे जोतुम्हारीइच्छाहोवैसोकरो ॥ ४॥ हे राघव! बाह्यअनात्मपदार्थोंका जोवस्तुत्वरूपकरिकै तथारागकरिकै अंतरचिंतनहै इतनामात्रही मैं चित्तकास्वरूपमानताहूं ॥ ५॥ और जिसकालविषे यहपुरुष परित्यागकरणेयोग्य तथाग्रहणकरणेयोग्य किंचित्मात्रवस्तुकाभी चिंतनकरतानहीं किंतु सर्वकापरित्यागकरिकै स्थितहोवै है तिसकालविषे सोचित्त उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ६ ॥ और जिसकालविषे यहमनसर्ववासनावों तैंरहितहोणे तैं किंचित्मात्रभीवस्तुका मननकरतानहीं तिसकालविषे अमनस्ता उत्पन्नहोवै है जाअमनस्ता परमात्मपदकेदेणहारी है इति ॥ ७ ॥ इतनेकहणेकरिकै यहदोउपाय सिद्धभये ॥ एकतौ प्राणस्पंदकेनिरोधवासते अभ्यास

तथापि संयतात्मापुरुषनैंतौ समाधिमात्ररूपउपायकरिकै तथायोगीपुरुषनैं अभ्यासवैराग्यरूपउपायकरिकै सोमन निग्रहकरीताहै अर्थात् सोमन सर्ववृत्तियों तैं शून्य करीताहै ॥ इहां मनकेनहींनिग्रहकरणेहारे असंयतात्मापुरुषतैं मनकेनिग्रहकरणेहारे संयतात्मापुरुषविषे विशेषताकेबोधनकरणेवास्तै श्लोकविषे तु यह शब्दकथनकऱ्याहै ॥ और तामनकेनिग्रहविषे अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेसमुच्चयबोधनकरणेवास्तै च यहशब्द कथनकरयाहै ॥ और (हेकौंतेय !) यासंबोधन करिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया हमारेपिताकीभगिनीका तूं पुत्रहै यातैं मैं भगवान् तुम्हारेकूं अवश्यकरिकैसुखकीप्राप्तिकरौंगा ॥ इहां इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै श्रीभगवान्नैं चित्तका हठनिग्रह नहींसंभवैहै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ और श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै ताचित्तकाक्रमनिग्रहसंभवैहै यहअर्थ कथनकरया ॥ इहांभगवान्का यहअभिप्रायहै तामनकानिग्रह दोप्रकारतैंहोवैहै ॥ एकतौ हठकरिकैमनकानिग्रहहोवैहै और दूसरा क्रमकरिकै मनकानिग्रहहोवैहै ॥ तहां चक्षुश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाक्पाणिआदिकपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रिय जैसे गोलकमात्रकेनिरोधकरिकै हठतैं निग्रहकरेजावैं हैं तैसे इसमनकूंभी मैं हठकरिकैनिग्रहकरौंगा ॥ इसप्रकारकीभ्रांति मूढपुरुषोंकूं होवैहै परंतु तिनइंद्रियोंकीन्याईं मनका हठमात्रतैंनिग्रहहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं तामनकेरहणेका गोलक जोहृदयकमलहै सोहृदयकमल निरोधकरणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं तिसमनकाक्रमकरिकैनिग्रहकरणाही युक्तहै ॥ यहवार्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (उपविश्योपविश्यैव चित्तज्ञेनमुहुर्मुहुः ॥ नशक्यतेमनोजेतुंविनायुक्तिमनिंदिताम् ॥ १ ॥ अंकुशेनविनामत्तोयथादुष्टमतंगजः ॥ अध्यात्मविद्याधिगमःसाधुसंगमएवच ॥ २ ॥ वासनासंपरित्यागःप्राणस्पंदनिरोधनम् ॥ एतास्तायुक्तयःपुष्टाःसंतिचित्तजयेकिल ॥ ३ ॥ सतीषुयुक्तिष्वेतासुहठान्नियमयंतिये ॥ चेतस्तेदीपमुत्सृज्यविनिघ्नंतितमोंजनैः ॥ ४ ॥) ॥ अर्थयह ॥ चित्तकेस्वभावकूंजानणेहारेपुरुषनैं उत्तमयुक्तिर्तैंविना केवल वारंवार आसनऊपरिस्थितहोइकै यहमन जयकरिसकीतानहीं ॥ १ ॥ जैसे महामत्तदुष्टहस्ती अंकुशतैंविना वशहोइसकैनहीं तैसेयहमनभी उत्तमयुक्तियोंतैं विना वशहोइसकैनहीं तेयुक्तियांयहहैं एकतौ अध्यात्मविद्याकीप्राप्ति दूसरा महात्माजनोंकासमागम ॥ २ ॥ तीसरा वासनावोंकापरित्याग चौथा प्राणोंकेस्पंदका निरोध यहच्यारियुक्तियांही तिसचित्तकेजयका उपायरूपहैं ॥ ३ ॥ इनच्यारोंयुक्तियोंकेविद्यमानहुएभी जेपुरुष चित्तका हठतैंनिग्रहकरैं हैं तेपुरुष दीपककापरित्यागकरिकै तमकूं अंजनोंकरिकैनिवृत्त करैं हैं ॥ ४ ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ तहां क्रमकरिकैमनकेनिग्रहविषे एकतौं अध्यात्मविद्याकीप्राप्ति उपायहै ॥ काहेतैं साअध्यात्मविद्या दृश्यप्रपंचविषेतौ मिथ्यात्वकूंबोधनकरैहै और द्रष्टासाक्षीआत्माविषेतौ परमार्थसत्यरूपताकूं तथापरमानंदस्वप्रकाशताकूं बोधनकरैहै ॥ ऐसेबोधहुएतैंअनंतर यहमन आपणेविषयभूतदृश्यपदार्थोंविषे मिथ्यात्वहेतुतैं प्रयोजनकेअभावकूंनिश्चयकर

चैतन्यआत्मातैंभिन्न जितनेकअनात्मपदार्थ हैं ते सर्वअनात्मपदार्थ क्षणक्षणविषेपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ किंवा प्रारब्धकर्मरूप प्रतिबंधकेविद्यमानहुए ताबंधकी निवृत्ति संभवैनहीं ॥ काहेतैं अविद्याके तथा ताअविद्याकेकार्यके नाशकरणेविषेप्रवृत्तभयाजोतत्त्वज्ञानहै तातत्त्वज्ञानकाभीप्रतिबंधकरिकै सोप्रारब्ध कम आपणेफलदेणेवासतै इसदेहइंद्रियादिकसंघातकूं स्थितकरैहै अर्थात् तासंघातकूं निवृत्तहोणेदेवैनहीं और चित्तकीवृत्तियों तैंविना सोप्रारब्धकर्म आपणे सुखदुःखकेभोगरूपफलकूं संपादनकरिसकैनहीं ॥ काहेतैं सुखाकार तथादुःखाकार जाचित्तकीवृत्तिहै ताहीकूं शास्त्रविषेभोगकहें हैं ॥ ताचित्तकीवृत्तितैंविना सुखदुःखकाभोग संभवैनहीं ॥ यातैं यद्यपि स्वाभाविकभी चित्तकेपरिणामोंका योगकरिकै यथाकथंचित् अभिभव होइसकैहै तथापि जैसे तत्त्वज्ञानतैं सोप्रारब्धकर्म प्रबलहै तैसे सोप्रारब्धकर्म योगतैंभी प्रबलहै ॥ ऐसेप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए साचित्तकीचंचलताभी अवश्यकरिकैरहैगी ॥ यातैं योगकरिकै ताचित्तकीचंचलताकेनिवृत्तकरणेकूं मैंअर्जुन आपणेज्ञानतैं अशक्यमानताहूं ॥ यातैं आपणेआत्माकीन्यांई सर्वत्रसमदर्शीपुरुष परमयोगीहै यहआपकावचन अनुपपन्नहै ॥ यहअर्जुनकाआक्षेप दोश्लोकोंकरिकै सिद्धभया इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसअर्जुनके आक्षेपकूं निवृत्तकरतेहुए कहैं हैं।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ असंशयंमहाबाहोमनोदुर्निग्रहंचलम् ॥ अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते ॥ ३५ ॥ असंशयम्। महाबाहो। मनः। दुर्निग्रहं। चलम्। अभ्यासेन। तु। कौंतेय। वैराग्येण। च। गृह्यते ॥३५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमहाबाहो यहमन दुर्निग्रहहै तथाचंचलहै यहवार्त्ता संशयतैंरहितहै तौभी हेकौंतेय सोमन अभ्यासकरिकै तथा वैराग्यकरिकै निग्रहकऱ्याजावैहै ॥३५॥

॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! तुम्हारेवचनतैं तुम्हारेचित्तकावृत्तांत हमनैं सम्यक्जान्याहै परंतु तूं अर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणेविषे समर्थहै इसप्रकार ताअर्जुनका संतोष करणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका संबोधनकहैं हैं (हेमहाबाहोइति) साक्षात्महादेवसेभी युद्धकरणेतैं महान्हैंदोनोंबाहुजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ इननेकहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनविषे निरतिशयउत्कृष्टता सूचनकरी ॥ अर्थात् ऐसीनिरतिशयउत्कृष्टतावाला तूंअर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणेविषे अवश्य करिकै समर्थहोवैगा इति ॥ हेअर्जुन ! पूर्वजो तुमनैं यहवचनकह्याथा जोयहमन दुर्निग्रहहै अर्थात् प्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं असंयतात्मापुरुषकूं सोमन दुःखकरिकैभी निग्रहकरणेकूंअशक्यहै तथा यहमन स्वभावतैंही चंचलहै ॥ इहां (दुर्निग्रहम्) यहजोमनकाविशेषण कथनकऱ्याहै सोपूर्वउक्त (प्रमाथि बलवद्दृढम्) यातीनविशेषणोंकूं इकट्ठाकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोइसतुम्हारेकहणेविषे किंचित्मात्रभी संशयहैनहीं अर्थात् सोतुम्हाराकहणा सत्यहै ॥

वृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्थितकरणेकूं मैं अर्जुन दुष्करमानताहूं अर्थात् सर्वप्रकारतैंरोकणेकूं अशक्य मानताहूं ॥ तामनकेनिग्रहकी अशक्यताविषे अर्जुन दृष्टांत तकूंकहैहै (वायोरिवइति) हे भगवन् ! जैसें आकाशविषेचलायमानहोइरह्याजोवायुहै तावायुकी निश्चलताकूंसंपादनकरिकैं तावायुकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्य है ।। तैसे सर्वथा चंचलमनकीनिश्चलताकूं संपादनकरिकैं तामनकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्यहै यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ।। तहांश्लोक ॥ (अप्यब्धिपानान्महतःसुमेरून्मूलनादपि ॥ अपिवह्न्यशनात्साधोविषमश्चित्तनिग्रहः ॥) अर्थयह ॥ हेसाधो ! महान्समुद्रके पानकरणेतैंभी तथासुमेरुपर्वतकेमूलतैं उखाड़नेतैंभी तथाअग्निकेभक्षणकरणेतैंभी यहचित्तकानिग्रहकरणा अत्यंतकठिनहै इति ॥ इहाँ हेकृष्ण ! यासंबोधनकरिकैं अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ दोषान्कृषतिनिवारयतीतिकृष्णः ॥ अथवा पुरुषार्थानाकर्षतिप्रापयतीतिकृष्णः ॥ अर्थयह ॥ भक्तजनोंके जेपापादिकदोष निवृत्तकरणेकूंअशक्यहैं तिनपापादिकदोषोंकूंभी जोनिवृत्तकरैहै ताकानाम कृष्णहै ॥ अथवा तिनभक्तजनोंकूं सर्वप्रकारतैं प्राप्तहोणेकूंअशक्य जेपुरुषार्थहैं तिनपुरुषार्थोंकूंभी जोप्राप्तकरैहै ताकानाम कृष्णहै ऐसेकृष्णनामवाले आपहो ॥ यातैं आपणेनामकूं सार्थककरणेवासतै दुर्निवारभीहमारेचित्तकीचंचलताकूं आप अवश्यकरिकै निवृत्तकरौगे ॥ तथा दुःप्रापभीसमाधिसुखकूं आप अवश्यकरिकैप्राप्तकरौगे इति ॥ इहां अर्जुनका यह अभिप्रायहै ॥ तत्त्वज्ञानके उत्पन्नहुएभी पारब्धकर्मके भोगवासतै जीवतेहुएविद्वान्पुरुषके कर्तृत्व भोक्तृत्व सुख दुःख राग द्वेष इत्यादिकचित्तकेधर्म बाधितानुवृत्तिकरिकैविद्यमानहुएभी क्लेशकेहेतु होणेतैं बंधरूपहीहोवैंहैं ॥ और सर्वचित्तवृत्तियोंके निरोधरूपयोगकरिकै जोतिसबंधकीनिवृत्तिहै ताकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ जिस जीवन्मुक्तिकेसंपादन करणेकरिकै सोविद्वान्पुरुष परमयोगी कह्याजावैहै॥ यहवार्त्ता आपनैं पूर्व कथनकरीहै ॥ याअर्थविषे हमारा यहकहणाहै सोबंध साक्षीचेतननैं निवृत्तकरतेहो अथवा चित्तनैं सोबंध विवृत्तकरतेहो ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वउत्पन्नहुए तत्त्वज्ञाननैंही तासाक्षीकेबंधकीनिवृत्तिकरीहै ॥ तिसबंधकीनिवृत्ति विषे तायोगका किंचित्मात्रभीउपयोगनहीं है ॥ और सो बंधचित्तनैं निवृत्तकरीताहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकाकरौ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोबंध साक्षीचे तनविषे जैसे आरोपितहै तैसे जोचित्तविषे आरोपितहोता तौ सोबंध चित्तनैं निवृत्तकऱ्याजाता ॥ परंतु सोबंध ताचित्तविषे आरोपितनहीं है किंतु सोबंध चित्तका स्वभावहीहै ॥ और जोजिसकास्वभावहोवैहै तिसस्वभावकी सहस्रउपायोंकरिकैभी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसेजलकास्वभावजोआर्द्रपणाहै तथाअग्निका स्वभावजो उष्णपणाहै सोस्वभाव ताजलतैं तथा अग्नितैं अनेकउपायोंकरिकैभी निवृत्तकऱ्याजावैनहीं ॥ तैसे सोचित्तकास्वभावभी निवृत्तकऱ्याजावैनहीं ॥ और शास्त्रविषे ताचित्तकूं क्षणक्षणविषे परिणामस्वभाववाला कथनकऱ्याहै ॥ तहां शास्त्रवचन ॥ (प्रतिक्षणपरिणामिनोहिभावाऋतेचितिशक्तेः ॥) अर्थयह ॥

दीर्घकालपर्यंतरहणेहारी विद्यमानतारूपस्थितिकूं मैं अर्जुन देखतानहीं अर्थात् ऐसेसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकी दीर्घकालपर्यंतस्थितिहोती है ॥ याप्रकारकी संभावना हमारेकूं होतीनहीं ॥ शंका—हेअर्जुन ! ऐसीसंभावना तुम्हारेकूं किसवासतैनहींहोती ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाकेहुए अर्जुन ताकेविषेहेतुकहैहै (चंचलत्वात् इति) ॥ हेभगवन् ! यहमन अत्यंतचंचलहै एकक्षणमात्रभी स्थिरहोतानहीं याकारणतैं तिसअर्थकीसंभावना हमारेकूं होतीनहीं इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिसमनकेचंचलस्वभावकूं सर्वलोकशास्त्रकीप्रसिद्धताकरिकै उपपादनकरैहै ।

(मू. श्लो.) चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबलवद्दृढम् ॥ तस्याहंनिग्रहंमन्येवायोरिवसुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ चंचलं । हि । मनः । कृष्ण । प्रमाथि । बलवत् । दृढम् । तस्य । अहम् । निग्रहम् । मन्ये । वायोः । इव । सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे कृष्ण ! यहमन प्रसिद्ध चंचलहै तथाप्रमाथिहै तथाबलवान्‌है तथादृढहै तिसमनके निग्रहकूं मैंअर्जुन वायुकेनिग्रहकी न्याईं अत्यंतकठिन मानताहूं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे कृष्णभगवन् ! यहमन चंचलहै अर्थात् अत्यंत चलनस्वभाववालाहै कदाचित्‌भी स्थिरहोतानहीं ॥ ऐसामनकाचंचलस्वभाव सर्वलोकोंकूं अनुभव सिद्धहै ॥ हे भगवन् ! यहमन केवल चंचलही नहीं हैं किंतु प्रमाथिभीहै ॥ तहां शरीरकूं तथाइंद्रियोंकूं क्षोभकीप्राप्तिकरणेका जिसकास्वभावहोवैहै ताकानाम प्रमाथिहै अर्थात् यहमन तिनशरीरइंद्रियोंकाक्षोभकहोणेतैं तिनशरीरइंद्रियोंके विवशताकाहेतुहै यातैं प्रमाथिहै ॥ हे भगवन् ! यह मन केवल चंचल तथाप्रमाथि नहीं किंतु यहमन बलवान्‌भीहै अर्थात् यहमन अभिप्रेतविषयतैं किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरणेकूं अशक्यहैं ॥ इसलोकविषेभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहुए जिसपुरुषकूं कोईभी निवृत्तकरणेमैंसमर्थनहींहोवैहै तिसपुरुषकूं बलवान्‌कहैहैं ॥ तैसे किसीविषयविषेप्रवृत्तहुआयहमन तिसविषयतैं निवृत्तकरयाजातानही ॥ यातैं यहमन अत्यंत बलवान्‌है ॥ तथा यहमन दृढहै अर्थात् अनेकजन्मोंकी अनेकसहस्र सहस्रविषयवासनावोंकरिकै युक्तहोणेतैं भेदनकरणेकूं अशक्यहै ॥ अथवा तंतुनागकीन्याईं अच्छेद्यहोणेतैं यहमन दृढहै ॥ इहां नागपाशकानाम तंतुनागहै अथवा जलकेमहाह्रदविषेरहणेहारे किसीजंतुविशेषकानाम तंतुनागहै जिसजंतुविशेषकूं गुर्जरादिकदेशोंविषे तांतनी यानामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ इहां अर्जुननैं (चंचलं प्रमाथि बलवद्दृढम्) यहच्यारिविशेषणमनकेकथनकरे ॥ तिनच्यारोंविशेषणोंविषे पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषण हेतुरूपहै ॥ जैसे यहमन अत्यंतदृढहोणेतैं बलवान्‌है ॥ तथा बलवान्‌होणेतैं यहमन प्रमाथिहै ॥ तथा प्रमाथिहोणेतैं यहमन अत्यंत चंचलहै ॥ हे भगवन् ! जैसे महामत्त वनहस्तिका निग्रहकरणा अत्यंतकठिनहोवैहै ॥ तैसे इसमनकेनिग्रहकूं अर्थात् सर्व

तिसीअद्वितीयब्रह्मका जोवारंवार चिंतनहै तथा तिसीब्रह्मका जोवारंवार कथनहै तथा तिसीब्रह्मका जोपरस्पर बोधनहै तथा निरंतर तिसीएकब्रह्मपरताजो है ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्माभ्यासकहैं हैं इति ॥ १ ॥ और यहदृश्यप्रपंच सृष्टिकेआदिकालविषेही उत्पन्नहुआनहीं ॥ यातैं यहदृश्यप्रपंच तीनकालविषैहैनहीं ॥ और मैंस्वयंज्योतिअधिष्ठानआत्मा सर्वदा विद्यमानहूं याप्रकारका जोनिरंतरविचारहै ताकूं बोधाभ्यासकहैं हैं इति ॥ २ ॥ और दृश्यप्रपंचकेअवभासकाविरोधी जो योगाभ्यासहै ताकूं मनोनिरोधाभ्यासकहैं हैं यहवार्त्ताभि शास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अत्यंताभावसंपत्तौज्ञातुर्ज्ञेयस्यवस्तुनः ॥ युक्त्याशास्त्रैर्यतंतेयेते प्यत्राभ्यासिनःस्थिताः) अर्थयह ॥ ज्ञाता ज्ञेयवस्तु यादोनोंविषे जोमिथ्यात्वबुद्धिहै ताकानाम अभावसंपत्तिहै ॥ और तिनदोनोंकीजास्वरूपतैंही अप्रतीति है ताकानाम अत्यंताभावसंपत्तिहै ॥ ताअत्यंताभावसंपत्तिकेवास्तै जेपुरुष योगकरिकै तथाशास्त्रोंकरिकै प्रयत्नकरैं हैं ॥ तेपुरुष मनोनिरोधकेअभ्यासवालेकहेजावैं हैं इति ॥ और दृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै जोरागद्वेषादिकोंकी क्षीणताकरणी है ताकूं वासनाक्षयकाअभ्यास कहैं हैं ॥ यहवार्त्ताभी अन्यशास्त्रविषेकथन करीहै ॥ तहांश्लोक (दृश्यासंभवबोधेनरागद्वेषादितानवे ॥ रतिर्घनोदितायासौब्रह्माभ्यासः उसच्यते ॥) अर्थयह ॥ इसदृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै इनरागद्वे षादिकोंकीक्षीणताकरणेविषे जादृढरति उत्पन्नहोवैहै सोब्रह्माभ्यासकहाजावै है इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष तत्त्वज्ञानकेअभ्यासकरिकै तथा मनो नाशकेअभ्यासकरिकै तथावासनाक्षयकेअभ्यासकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहुआ आपणेपराये सुखदुःखादिकोंविषे समदृष्टिहै सोपुरुषतौ परमयोगीहै और जोपुरुष विषमदृष्टिवालाहै सोपुरुषतौ तत्त्वज्ञानवालाहुआभी अपरमयोगीही है इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं पूर्व विस्तारतैंकथनकरयाजो मनकानिरोधरूपयोगहै ताका निषेधकरताहुआ अर्जुनप्रश्न करैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ योयंयोगस्त्वयाप्रोक्तःसाम्येनमधुसूदन ॥ एतस्याहंनपश्यामिचंचलत्वात्स्थितिंस्थिराम् ॥ ३३ ॥

यः । अयम् । योगः । त्वया । प्रोक्तः । साम्येन । मधुसूदन । एतस्य । अहम् । न । पश्यामि । चंचलत्वात् । स्थितिम् । स्थिराम् ॥

॥ ३३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेमधुसूदन तुमनैं जो यह योग समत्वकरिकै कथनकरयाहै सोइसयोगके स्थिर स्थितिकूं मैंअ र्जुन नहीं देखताहूं मनकूं अतिचंचलहोणेतैं ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे मधुसूदन अर्थात् ! हेसर्ववैदिकसंप्रदायकाप्रवर्त्तकतैं सर्वज्ञईश्वरने जो यह सर्वत्रसमदृष्टिरूप परमयोगपूर्व समभावकरिकै कथनकर्याहै अर्थात् चित्तविषेस्थित विषमदृष्टिकेहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं तिनरागद्वेषादिकोंका निराकरणकरिकै जोयहयोग कथनकरयाहै इस सर्वमनोवृत्तिनिरोधरूपयोगकी

शुक्लकर्म कह्याजावैहै ऐसाशुक्लकर्म वेदाध्ययनपरायणब्रह्मचारीपुरुषोंका तथातपस्वीपुरुषोंका होवैहै ॥ औरजोकर्म केवल दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै सोकर्म कृष्णकर्म कह्याजावैहै ऐसाकृष्णकर्मतौदुरात्मापुरुषोंकाहोवैहै ॥ और जो कर्म सुखदुःखमिश्रितफलकीप्राप्तिकरैहै तथाव्रीहियवादिकबाह्यसाधनोंकरिकैसाध्यहोवैहै सोकर्म शुक्लकृष्ण कह्या जावैहै सोशुक्लकृष्णकर्मतौ सोमयागादिकोंविषेप्रीतिमान्पुरुषोंकाहोवैहै ॥ काहेतैं तिन सोमयागादिकोंविषे व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै पिपीलिकादिकजंतुवोंकूं पीडाकीप्राप्तिहोवैहै और दक्षिणादिकोंकेदेणेकरिकै ब्राह्मणादिकोंकीप्रसन्नताभीहोवैहै ॥ यातैं तिनयागिकपुरुषोंका सोकर्म शुक्लकृष्णहोवैहै यहतौ नरकारकाकर्म अयोगीपुरुषोंकाही होवैहै ॥ और संन्यासीयोगीपुरुषनैंतौ व्रीहियवादिकबाह्यसाधनोंकरिकैसिद्धहोणेहारे यागादिकर्मोंका परित्यागकर्‍याहै यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सो शुक्लकृष्णकर्महोवैनहीं ॥ और तेयोगीपुरुष अविद्यादिकसर्व क्लेशों तैं रहितहैं ॥ यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोकृष्णकर्मभीहोवैनहीं ॥ और तेयोगीपुरुष योगजन्यधर्मके फलकीइच्छाकूंनकरिकैताधर्मकाईश्वरविषे अर्पकरैंहैं यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोशुक्लकर्मभीहोवैनहीं किंतु चित्तकीशुद्धिद्वारा तथा विवेकख्यातिद्वारा एकमोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा अशुक्लकृष्णनामा पुण्यकर्म तिनयोगीपुरुषोंकाहोवैहै इति ॥ और जोअधिकारीपुरुष पापात्मापुरुषोंविषे उपेक्षाकरैहै सोअधिकारीपुरुष तिसवासनावालाहुआ आपभी तिनपापकर्मों तैंनिवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पुण्यवान्पुरुषोंविषेमुदिताकरणेहारेपुरुषकूं तथा पापीपुरुषोंविषे उपेक्षाकरणेहारेपुरुषकूं पुण्यकर्मोंके नकरणनिमित्तक पश्चात्ताप तथापापकर्मोंकेकरणनिमित्तक पश्चात्ताप प्राप्तहोवै नहीं ॥ तापश्चात्तापकेअभावहुए तिसपुरुषकाचित्त निर्मलताकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा इसप्रकार सुखीप्राणियोंविषे मैत्रीभावनाकरणेहारेपुरुषका केवल एकरागही निवृत्तनहींहोवै है किंतु तामैत्रीभावनाकरिकै असूया तथाईर्ष्याआदिकभी निवृत्तहोवैहैं ॥ तहां अन्यपुरुषोंकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै ताकानाम असूयाहै ॥ और परके गुणोंका जो नहीं सहनकरनाहै ताकानाम ईर्ष्याहै ॥ जबी मैत्रीभावनाकेवशतैं यहअधिकारीपुरुष सर्वप्राणियोंकेसुखकूं आपणाहीकरिकैमानैं है तबी तापुरुषकी परगुणोंविषे असूया तथाईर्ष्या कदाचित्भी होवैनहीं ॥ इसप्रकार दुःखीप्राणियोंविषे करुणाभावनाकरणेहारेपुरुषका शत्रुआदिकोंकेवधकरणेहाराद्वेष जबी निवृत्तहोइजावैहै तबी दूसरेकूंदुःखीदेखिकै तथाआपणेकूंसुखीदेखिकै जोदर्प उत्पन्नहोवै है सोदर्प भी निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकारतैं दूसरेदोषोंकीनिवृत्तिभी जानिलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया इसअधिकारीपुरुषनैं जीवन्मुक्तिकेसुखवास्तै तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका अभ्यासकरणा ॥ तहां जिसीकिसीप्रकारतैं पुनःपुनः जोतत्त्वकास्मरणहै ताकूं तत्त्वज्ञानाभ्यास कहैहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ तच्चिंतनंतत्कथनमन्योन्यंतत्प्रबोधनम् ॥ एतदेकपरत्वंचब्रह्माभ्यासंविदुर्बुधाः ॥ १ ॥ सर्गादावेवनोत्पन्नंदृश्यंनास्त्येवतत्सदा ॥ इदंजगदहंचेतिबोधाभ्यासंविदुःपरम् ॥ २॥) अर्थयह ॥

हमारेकूं कदाचित्भी मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीजा तमोगुणमिलितरजोगुणकापरिणामरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ तहां दुःखकेहेतुरूप शत्रुव्याघ्रादिकोंकेविद्यमानहुए सोदुःख निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ।। और तिनसर्वदुःखोंकेहेतुवोंकूं हननकरणेविषेभीकोईसमर्थनहीं है ।। यातैं सोद्वेष इसपुरुषके चित्तकूं सर्वदा दाहकरैहै ।। और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वदुःखी प्राणियोंविषे आपणेकीन्याईं इनसर्वप्राणियोंकूं यहदुःख मतप्राप्तहोवे याप्रकारकीकरुणाकरैहै तबी इसपुरुषका वैरीआदिकोंविषे सोद्वेष निवृत्तहोइजावैहै ।। ताद्वेषकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकाचित्त निर्मलहोवैहै ।। यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ।। तहांश्लोक ।। (प्राणायथात्मनोभीष्टाभूतानामपितेतथा ॥ आत्मौपम्येनभूतेषुदयांकुर्वंतिसाधवः ।।) ॥ अर्थयह ।। जैसे इसपुरुषकूं आपणेप्राण अत्यंत प्रियहोवैं हैं तैसे सर्वभूतोंकूं तेआपणेआपणेप्राण अत्यंतप्रियहोवैं हैं याप्रकारकाविचारकरिकै श्रेष्ठमहात्मापुरुष आपणेआत्माकीन्याईं सर्वभूतप्राणियोंविषे दयाकूंहीकरैं हैं इति ।। इसीअर्थकूं श्रीभगवान् इहां (आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन) इसश्लोकविषे कथनकरताभयाहै इति ।। और यहप्राणी स्वभाव तैंही पुण्यकर्मोंकूं अनुष्ठानकरतेनहीं तथा पापकर्मोंकूंअनुष्ठानकरैं हैं यहवार्त्ताभी शास्त्रविषेकथनकरी है ।। तहां श्लोक ॥ (पुण्यस्यफलमिच्छंतिपुण्यंने च्छंतिमानवाः ॥ नपापफलमिच्छंतिपापंकुर्वंतियत्नतः ॥) ॥ अर्थयह ॥ यहमनुष्य पुण्यकर्म के सुखरूपफलकीतौ इच्छाकरैं हैं परंतु तापुण्यकर्मकीइच्छाकरते नहीं ॥ और यहमनुष्यपापकेःदुखरूपफलकीतौ इच्छाकरतेनहीं और तिसपापकर्मकूंतौ प्रयत्नतैंकरैं हैं इति ॥ तहां तेपुण्यकर्मतौ नहींकरेहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरैं हैं और पापकर्मतौ करेहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (किमहंसाधु नाकरवंकिमहंपापमकरम् ॥)अर्थयह ॥ जोपुरुषपुण्यकर्मोंकूंनहींकरैहै सोपुरुष दूसरेपुण्यवान्पुरुषोंकूं सुखीहुआदेखिकै ऐसेसुखकीप्राप्तिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकूं मैं किसवास्तै नहींकरताभया याप्रकारकेपश्चात्तापकूंकरैहै यातैं पुण्यकर्मतौ नहींकरेहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और जोपुरुष पापकर्मकूं करैहै सोपुरुष जबी तिसपापकर्मदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै तबी सोपुरुष ऐसेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेपापकर्मोंकूं मैं किसवास्तैकरताभया याप्रकारकेपश्चा त्तापकूंकरैहै ॥ यातैं तेपापकर्म करेहुए इसपुरुषकं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरैं हैं इति ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी पुण्यवान्पुरुषोंविषे मुदिताकरैहै तबी ताशुभवासनावालाहुआ सोपुरुष आपभी साधनहुआ अशुक्लकृष्णनामा पुण्यविशेषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ यह वार्त्ता योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवा नूनेंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (कर्माशुक्लकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम् ॥) अर्थयह ॥ योगीपुरुषोंकाकर्मतौ अशुक्लकृष्णहोवैहै और अयोगीपुरुषों काकर्मतौ शुक्ल कृष्ण शुक्लकृष्ण यहतीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोकर्म केवल मनवाणीकरिकैही साध्यहोवैहै तथाएक सुखरूपफलकीही प्राप्तिकरैहै सोकर्म

तहांश्लोक ॥ (मानसीवासनाःपूर्वंत्यक्त्वाविषयवासनाः ॥ मैत्र्यादिवासनारामगृहाणामलवासनाः ॥) अर्थयह ॥ हे रामचंद्र ! लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यातीनोंवासनावोंकानाम विषयवासनाहै ॥ ऐसीमलिनविषयवासनावोंकापरित्यागकरिकै तथाकामक्रोधदंभदर्पादिकआसुरसंपत्तरूप मलिन मानसवासनावोंकूंपरित्यागकरिकै मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिकशुभवासनावोंकूं तूंग्रहणकर ॥ अथवा इसश्लोकविषेस्थित विषयवासनाः मानसीवासनाः यादोनोंपदोंका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकानाम विषयहै तिनशब्दादिकविषयोंकी दोदशाहोवैहैं ॥ एकतौ भुज्यमानत्वदशाहोवैहै ॥ दूसरी काम्यमानत्वदशाहोवैहै तहां भोगकीविषयताकानाम भुज्यमानत्वहै और कामनाकीविषयताकानाम काम्यमानत्वहै ॥ तहां तिनशब्दादिकविषयोंकेभुज्यमानत्वदशाजन्यसंस्कारोंकानाम विषयवासनाहै ॥ और काम्यमानत्वदशाजन्यसंस्कारोंकानाम मानसवासनाहै ॥ इसपक्षविषे पूर्वकथनकरीहुई च्यारि प्रकारकीवासनावोंका इन दोनोंवासनावोंविषेही अंतर्भावहै ॥ जिसकारणतें बाह्य अभ्यंतर यादोनोंप्रकारकीवासनावोंतें भिन्न दूसरीकोईवासनाहैनहीं ॥ सर्ववासनावोंका इनदोवासनावोंविषेही अंतर्भावहै ॥ तहां तिनमलिनवासनावोंतैंविरुद्ध मैत्रीकरुणादिकशुभवासनावोंकाजोउत्पादनहै यहही तिनमलिनवासनावोंका परित्यागहै ॥ तेमैत्रीआदिकशुभवासना पतंजलिभगवान्नें योगसूत्रोंविषेकथनकरीहैं ॥ तेमैत्रीआदिक शुभवासना यद्यपि पूर्व संक्षेपतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं तथापि तिसपूर्वउक्तअर्थकी दृढता करणेवासतै पुनः तिनमैत्रीआदिकोंकास्वरूप कथनकरैहैं ॥ तहां इसपुरुषके चित्तकूं रागद्वेषपुण्य अपुण्य यहच्यारोंही मलिनकरैहैं तहां किसीसुखकेअनुभवहुएतें अनंतर तिससुखकास्मरणकरिकै तिससुखकेसजातीयदूसरेसुखोंविषे तथातिनसुखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वविषयसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकी अंतःकरणकीराजसवृत्तिविशेषरूप जातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ तहां तिनसर्वसुखोंकीप्राप्तिकरणेहारीजादृष्टअदृष्टरूपकारणसामग्रीहै तामसग्रीकेअभावहोणेतैं तिनसर्वसुखोंकासंपादनकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्तितैंरहितहुआ सोराग इसपुरुषकेचित्तकूं मलिनकरैहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वसुखी प्राणियोंविषे यहसर्वसुखीप्राणी हमारेहीहैं याप्रकारकीमैत्रीसंपादनकरैहै तबी सोसर्वप्राणियोंकासुख आपणाही सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारकीभावनाकरणेहारेपुरुषका तिनसुखोंविषे सोराग निवृत्तहोइजावैहै ॥ जैसे किसीराजाकूं आपतौ राज्यतैंवैराग्यकीप्राप्तिहुएभी आपणेपुत्रादिकोंकेराज्यकूंही आपणाराज्यकरिकैमानेहै ॥ तैसे सोपुरुषभी आपणे सुखविषयकरागकेनिवृत्तहुएभी दूसरेप्राणियोंकेसुखकूंही आपणाकरिकैमानैहै ॥ इसप्रकार मैत्रीभावना करिकै जबी तारागकीनिवृत्तिहोवैहै तबी वर्षाकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर जैसे जलशुद्धहोवैहै तैसे सोचित्त शुद्धहोवैहै इति ॥ और किसीदुःखकेअनुभवहुएतैंअनंतर तादुःखकास्मरणकरिकै तिसदुःखकेसजातीयदूसरेदुःखोंविषे तथातिनदुःखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वदुःख

क्यहै ॥ तथा सालोकवासना पुरुषार्थका उपयोगीभीनहीं है ॥ याकारणतैं सालोकवासना मलिनहै इति ॥ और दूसरी शास्त्रवासना तीनप्रकारकीहोवै है ॥ एकतौ पाठकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और दूसरी बहुतशास्त्रकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और तीसरी शास्त्रअर्थकेअनुष्ठानका व्यसनरूपहोवैहै ॥ तहां पाठकाव्यसनरूपशास्त्रवासनातौ भारद्वाजकूं होतीभई है ॥ और बहुतशास्त्रका व्यसनरूपशास्त्रवासनातौ दुर्वासाकूंहोतीभई है ॥ और अनुष्ठानकाव्यसन रूपशास्त्रवासनातौनिदाघकूं होतीभईहै ॥ सात्रिविधशास्त्रवासना बहुतक्लेशोंकरिकैव्यातहै तथापुरुषार्थकाभी अनुपयोगीहै तथाअभिमानकाहेतुहै तथाजन्मकाभीहेतुहै ॥ याकारणतैं साशास्त्रवासनाभी लोकवासनाकीन्याईं मलिनही है इति ॥ और तीसरी देहवासनाभी तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां एकतौ देहविषेआत्मत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवै है ॥ और दूसरी गुणाधानत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवै है ॥ और तीसरी दोषापनयनत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवै है ॥ तहां देहविषे आत्मत्वभ्रांतिरूपदेहवासना विरोचनादिकोंविषे तथातिनोंकेअनुयायी इदानींकालकेबहुतलोकोंविषे प्रसिद्धही है ॥ और दूसरा गुणाधान दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ लौकिक गुणाधानहोवै है और दूसरा शास्त्रीयगुणाधानहोवैहै ॥ तहां समीचीनशब्दादिकविषयोंकासंपादनकरणा याकानाम लौकिकगुणाधानहै ॥ और गंगास्नान शालिग्रामतीर्थ आदिकोंकासंपादनकरणा याकानाम शास्त्रीयगुणाधानहै ॥ और तागुणाधानकीन्याईं तीसरा दोषापनयनभी दोप्रकरकाहोवै है ॥ एकतौ लौकिक दोषापनयनहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रीय दोषापनयनहोवै है ॥ तहां चिकित्साकरणेहारेपुरुष उक्तऔषधोंकरिकै ज्वरादिकव्याधियोंकीनिवृत्तिकरणी याकानाम लौकिकदोषापनयन है ॥ और शास्त्रउक्त स्नानआचमनादिकोंकरिकै अशौचादिकोंकी निवृत्तिकरणी याकानाम शास्त्रीयदोषापनयनहै ॥ यहत्रिविधदेहवासना अप्रामाणिकहै तथाकरणेकूंभीअशक्यहै तथापुरुषार्थविषेभी अनुपयोगीहै तथापुनः जन्मकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ याकारणतैं इसदेहवासनाविषे मलिनपणा शास्त्रविषेप्रसिद्धही है ॥ इसप्रकार मलिनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेलोकवासना तथाशास्त्रवासना तथादेहवासना यहतीनप्रकारकीवासनाहैं तेतीनोंवासना यद्यपि अविवेकीपुरुषोंकूं उपादेयरूपकरिकै प्रतीतहोवैं हैं तथापि यहतीनोंवासना जिज्ञासुपुरुषकूंतौ ज्ञानकीउत्पत्तिविषे विरोधीहैं ॥ और विद्वान् पुरुषकूंतौ ज्ञाननिष्ठाकाविरोधी हैं ॥ यातैं जिज्ञासुपुरुषनैंतौ ज्ञानकीप्राप्तिवासतै यहतीनों वासना परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और विद्वान्पुरुषनैंतौ ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै यहतीनोंवासना परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ इतनेकहणेकरिकै बाह्यविषयवासना तीनप्रकारकी निरूपणकरी ॥ और अंतर मलिनवासनातौ कामक्रोध दंभ दर्प इत्यादिकआसुरसंपतरूपहोवै है ॥ साआसुरसंपतरूपवासना सर्वअनर्थोंकामूलभूत मानसवासना कहीजावै हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यहतीनोंबाह्यवासनातथाआसुरसंपतरूप अंतरवासना याच्यारोंमलिनवासनावोंका इसअधिकारीपुरुषनैं शुभवासनाकरिकैनाशकरणा॥यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै।

इति ॥ और जोपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारजानै है सोपुरुष इससर्वजगत्‌काआत्माहोवै है इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वबंधकीनिवृत्तिकूं प्रतिपादनकरैं हैं ॥ इसप्रकारकेसर्वबंधोंकीनिवृत्तिरूप जाविदेहमुक्तिहै साविदेहमुक्ति इसदेहकेवियमानहुएभी तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तिकेसमानकालही जानणी ॥ काहेतें ब्रह्मविषे अवियाकरिकैआरोपित जोपूर्वउक्तबंधहै सोसर्वबंध तत्त्वज्ञानतैंपूर्वही रहैहै ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै अवियाकेनाकहुएतैंअनंतर सोबंधभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकै एकवार नाशकूं प्राप्तहुआ सोअवियासहितबंध पुनः उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानकीशिथिलताकरणेहारेकारणकेअभावतैं सोतत्त्वज्ञानतौ तिसविद्वान्‌पुरुषका तिसीप्रकारकाबन्यारहैहै और पूर्व तिसतत्त्वज्ञानकीशांतिवासते जो तात्कालिक मनोनाश वासनाक्षय संपादनकियेथे सो मनोनाश तथा वासनाक्षयतौ दृढअभ्यासकेअभावतैं तथाभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकरिकैबाध्यमानहोणेतैं वायुवालेदेशविषेस्थित प्रदीपकीन्याईशीघ्रही निवृत्तहोइजावैं हैं ॥ इसीकारणतैं इदानींकालके अकृतोपास्ति तत्त्वज्ञानवालेपुरुषकूं सर्वसिद्धतत्त्वज्ञानविषेतौ किंचित्‌मात्रभी प्रयत्नकीअपेक्षानहीं है किंतु तिसविद्वान्‌पुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यहदोनों प्रयत्नकरिकै साध्यहैं ॥ तहां मनकानाशतौ पूर्व असंप्रज्ञातसमाधिकेनिरूपणकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं अब वासनाक्षयकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां वासनाकेजानेतैंविना तावासनाक्षय कन्याजावैनहीं ॥ यातैं प्रथम वासनाकास्वरूप जान्याचाहिये ॥ तहां वासनाकास्वरूप वसिष्ठभगवान्‌नें यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (दृढभावनयात्यक्तपूर्वापरविचारणम् ॥ यदादानंपदार्थस्यवासनासाप्रकीर्तिता) ॥ अर्थयह ॥ दृढभावनाकरिकै पूर्वअपरकेविचारतैंरहितहोइकै जोपदार्थकाग्रहणकरणाहै ताकानाम वासनाहै इति ॥ इहां आपणेआपणेदेशकेआचारविषे तथाआपणेकुलकेधर्मविषे तथाआपणेआपणेस्वभावविषे तथाआपणेआपणेदेशादिकोंविषेस्थित जेअपशब्दहैं तथासाधुशब्दहैं तिनशब्दोंविषे जोप्राणियोंकाअभिनिवेशहै ताकानाम वासनाहै ॥ यहसामान्यतैं वासनाकास्वरूपकह्या अब विशेषतैं कहैहैं ॥ सावासना दोप्रकारकीहोवैहै एकतौ शुद्धवासनाहोवैहै और दूसरी मलिनवासनाहोवैहै ॥ तहां अमानित्व अदंभित्व इत्यादिक वक्ष्यमाणदेवीसंपत् शुद्धवासना कहीजावैहै साशुद्धवासना तत्त्वज्ञानकासाधनरूपहोणेतैं एकरूपहीहोवैहै और दूसरी मलिनवासना तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौलोकवासनहोवैहै ॥ दूसरी शास्त्रवासनाहोवैहै ॥ तीसरी देहवासनाहोवैहै ॥ तहां यहसर्वलोक जैसे हमारीनिंदा नहींकरै किंतु यहसर्वलोक हमारीस्तुतिहीकरैं तिसीप्रकारकेआचरणकूं मैंकरौं याप्रकारका जोअशक्यअर्थकाअभिनिवेशहै ताकूं लोकवासनाकहैं हैं ॥ सालोकवासना संपादनकरणेकूंअशक्यहै ॥ काहेतें पूर्व जेरामकृष्णादिकअवतारहुएहैं तिनोंकीभीसर्वलोकोंनें स्तुतिकरीनहीं किंतु केईकदुष्टलोक तिनोंकीभीनिंदाकरतेरहैं हैं ॥ जबी साक्षात्‌ईश्वरोंकीभी सर्वलोकोंनें स्तुतिनहींकरी तबी इदानींकालकेजीवोंकी सर्वलोक स्तुतिकैसेकरैंगे किंतु नहींकरैंगे ॥ यातैं सालोकवासना संपादनकरणेकूंअश

नकरोंगा यानकारकाजो उत्साहविशेषहै ताकानाम पौरुषयत्नहै ॥ और तिनतीनोंकेपृथक्पृथक्करिकैसाधनोंकानिश्चयहै ताकानाम विवेकहै ॥ जैसे तत्त्वज्ञानके तौश्रवणादिक साधनहैं ॥ और मनोनाशका योग साधनहै ॥ और वासनाक्षयका प्रतिकूलवासनावोंकीउत्पत्ति साधनहै ॥ ऐसेविवेकयुक्तपौरुषयत्नकरिकै भोगके इच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै तत्त्वज्ञान मुनोनाश वासनाक्षय इनतीनोंकूं आश्रयणकरै ॥ तहां जैसे घृतादिकहविष् अग्निकेवृद्धिकाहेतुहोवै है तैसे अत्यंतअल्प भी भोगोंकीइच्छा वासनाकेवृद्धिकाही हेतुहोवै है यातैं ताभोगकीइच्छाका दूरतैंही त्यागकथनकऱ्याहै इति ॥ २ ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मविद्याकाअधिकारी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ कृतोपास्तिहोवै है और दूसरा अकृतोपास्तिहोवै है ॥ तहां जोपुरुष उपास्यदेवताकेसाक्षात कारपर्यंत उपासनाकूं करिकै पश्चात् तत्त्वज्ञानवास्तै प्रवृत्तहुआहै सोपुरुष कृतोपास्ति कह्याजावै है ॥ तिसकृतोपास्तिपुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यह दोनों तत्त्वज्ञानतैंपूर्वही दृढहैं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैं उत्तर तिसकृतोपास्तिपुरुषकूं साजीवन्मुक्ति स्वतःहीसिद्धहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्व साउपासनानहींकरीहै सोपुरुष अकृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ सोइदानींकालकेमुमुक्षुजन विशेषकरिकैतौ अकृतोपास्तिहीहोवैहैं ॥ सोअकृतोपास्तिमुमुक्षु औत्सुक्यमात्रतैं शीघ्रही विद्याविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगतैंविनाही चेतनजडवस्तुकेविवेकमात्रकरिकैही तात्कालिक मनोनाशवासनाक्षयकूंसंपादनकरिकै शमदमादिसंपत्तिकरिकै श्रवणमनननिदिध्यासनकूं संपादनकरैहैं तिन दृढअभ्यासकरेहुए श्रवणादिकोंकरिकै सर्वबंधोंकानाशकरणेहारा तत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवै है ॥ तिसतत्त्वज्ञानतैं अविद्याग्रंथि अब्रह्मत्व हृदयग्रंथि संशय कर्म असर्वकामत्व मृत्यु जन्म असर्वत्व इत्यादिकसर्वबंध निवृत्तहोवैं हैं ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्योवेदनिहितंगुहायांसोऽविद्याग्रंथिंविकिरतीतिहसोम्य ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्सोऽश्नुतेसर्वान्कामान्सह ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति ॥ यस्तुविज्ञानवान्भवत्यमनस्कःसदाशुचिः ॥ सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते ॥ यएवंवेदाहंब्रह्मास्मीतिसइदंसर्वंभवति) अब यथाक्रमतैं इनसर्वश्रुतियोंकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेप्रियदर्शन जोपुरुष हृदयरूपगुहाविषेस्थित इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै सोपुरुष अविद्याग्रंथिकूं नाश करैहै इति ॥ और जोपुरुष ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै सोपुरुष ब्रह्मरूपहोवैहै इति ॥ और परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए इसविद्वानपुरुषकी हृदयग्रंथि भेदनकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा सर्वसंसयभी छेदनकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तथाप्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्त सर्वकर्मभी नाशकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ और परमव्योमरूप हृदयगुहाविषेस्थित सत्यज्ञानअनंतब्रह्मकूं जोपुरुष साक्षात्कारकरैहै सो पुरुष सर्वकामोंकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकै यहविद्वान्पुरुष मृत्युतैंरहितहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष विज्ञानवालाहै तथामनकेनिरोधवाला है तथासर्वदाशुचिहै ॥ सोपुरुष तिसपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसतैं पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं

यथाक्रमतैंअभ्यासकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरणा इति ॥ अब तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय या तीनोंकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ॥ तहां यह सर्वद्वैतप्रपंच अद्वितीयसच्चिदानंदरूप परमात्मादेवविषे मायाकरिकै कल्पितहोणेतैं मिथ्याभूतही है ॥ एकपरमात्मादेवही परमार्थसत्यरूपहै ॥ ऐसाअद्वितीयपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारके ज्ञानकूं तत्त्वज्ञानकहैंहैं ॥ और प्रदीपकीज्वालावोंकेसंतानकीन्याईं वृत्तियोंकेसंतानरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभया जो अंतःकरणरूप द्रव्यहै सोअंतःकरण मननरूपताकरिकै मनकह्याजावैहै ॥ और तिसवृत्तिरूपपरिणामकापरित्यागकरिकै तिनसर्ववृत्तियोंकाविरोधी जो निरोधाकारकरिकै परिणामहै यहही तिसमनकानाशहै और पूर्वअपरकेविचारतैंविना शीघ्रही उत्पन्नहुई जेक्रोधादिकवृत्तिविशेषहैं तिनोंके हेतुभूत जे चित्तविषेस्थित संस्कारविशेषहैं तिनसंस्कारोंकानाम वासनाहै ॥ तहां विवेककरिकैजन्य जे चित्तकेप्रशमकीदृढवासनाहैं तिनोंकीप्रबलतातैं क्रोधादिकोंकीउत्पत्तिकरणेहारे बाह्यनिमित्तोंके वियमानहुएभी जेतिनक्रोधादिकोंकी नहींउत्पत्तिहै ताकानाम वासनाक्षयहै ॥ अब इनतीनोंका परस्पर कार्यकारणभाव दिखावैंहैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकेउत्पन्न हुएतैं अनंतर मिथ्याभूतजगत्विषे नरविषाणादिकोंकीन्याईं बुद्धिकीवृत्ति उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और तिसकालविषे आत्माअपरोक्षहै यातैं आत्माविषेभी वृत्तिका कोई उपयोगनहींहै ॥ परिशेषतैं इंधनोंतैं रहितअग्निकीन्याईं सोमन नाशकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ इसरीतिसैं सोतत्त्वज्ञान मनोनाशकाकारणहै और तामनकेनाशहुएतैंअनंतर संस्कारोंकेउद्बोधकबाह्यनिमित्तोंकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ तिसतैं तेसंस्काररूपवासनाभी क्षयहोइजावैं हैं ॥ इसरीतिसैं सोमनोनाश वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहुएतैंअनंतर कारणकेअभावहोणेतैं तेक्रोधादिकवृत्तियां उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ तिसतैं सो मनभी नाशहोइजावैहै ॥ इसरीतिसैं सोवासनाक्षयमनोनाशविषेकारणहै ॥ और तामनकेनाशहुएतैं अनंतर शमदमादिकसाधनोंकीसंपत्तिकरिकै सोतत्त्वज्ञानं उत्पन्नहोवैहै ॥ इसरीतिसे सोमनोनाश तत्त्वज्ञानका कारणहै ॥ और तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर तेरागद्वेषादिरूपवासनाभी क्षयहोइजावैं हैं ॥ यातैं सोतत्त्वज्ञान वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहुएतैं अनंतर प्रतिबंधककेअभावहुएतैं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सोवासनाक्षय तत्त्वज्ञानकाहेतुहै ॥ इसरीतिसे तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षयका तीनोंकापरस्पर कार्यकारणभावहै ॥ यहवार्त्ता वासिष्ठग्रंथविषेवसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तत्त्वज्ञानंमनोनाशोवासनाक्षयएवच ॥ मिथःकारणतांगत्वादुःसाध्यानिस्थितानिहि ॥ १ ॥ तस्माद्राघवयत्नेनपौरुषेणविवेकिना ॥ भोगेच्छांदूरतस्त्यक्त्वात्रयमेतत्समाश्रयेत ॥ २ ॥) अर्थ यह ॥ तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यहतीनों परस्पर कार्यकारणभावकूं प्राप्तहोइके इहां दुःसाध्यहुए स्थितहैं ॥ १ ॥ तिसकारणतैं हे रामचंद्र ! विवेकयुक्त पौरुपयत्नकरिके भोगकीइच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष इनतीनोंकूंआश्रयणकरे ॥ इहां जिसीकिसउपायकरिकै इनतीनोंकूं मैं अवश्यकरिकैसंपाद

मर्थनहींभये तबी अन्यक्षुद्रजीव ताकाप्रतिबंधनहींकरैहैं याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ यद्यपि निषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेहारे जेरागद्वेषहैं तेरागद्वेष तिसब्रह्मवेत्तापुरुषविषे हैंनहीं ॥ यातैं तिसविद्वान्पुरुषको निषिद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तिसंभवतीनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तापुरुषकी निषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तिकूं अंगीकारकरिकै आत्मज्ञानकी स्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ जैसेपूर्व (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) यहवचन ज्ञानकीस्तुतिवासते कथनकऱ्याथा ॥ तैसे (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचनभी ज्ञानकीस्तुतिवासतैही है ॥ और दत्तात्रेयभगवान्‌कीजोनिषिद्धकर्मविषे प्रवृत्तिहुईहै सोकोई रागद्वेषते नहीं हुई किंतु बहिर्मुखलोकोंकेसहवासकीनिवृत्तिकरणेवासतै साप्रवृत्तिहुईहै ॥ यहसर्ववार्त्ता आत्मपुराणके एकादशअध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं इति ॥ ३१ ॥ ❀ इसप्रकार ब्रह्मसाक्षात्कारके उत्पन्नहुएभी कोईकविद्वान्पुरुष मनोनाश वासनाक्षय यादोनोंके अभावतैं जीवन्मुक्तिकेसुखकूं अनुभवकरतानहीं ॥ तथा चित्तकेविक्षेपकरिकै दृष्टदुःखकूंअनुभवकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ जिसप्रकारणतैं सोविद्वान्पुरुष इसदेहकेपाततैंअंनतरतौ विदेहकैवल्यकूं अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और इसशरीरके विद्यमानकालपर्यंततौ विक्षेपकरिकै दृष्टदुःखका अनुभवकरैहै तिसकारणतैं सोविद्वान् अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ और जोविद्वान्पुरुष तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका एककालविषे अभ्यासतैं दृष्टदुःखकीनिवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिकेसुखकूं अनुभवकरताहुआ प्रारब्धकर्मकेवशतैं समाधितैंव्युत्थानकालविषे सर्वप्राणियोंकूं आपणेआत्माकेतुल्यदेखैहै सोईही विद्वान्पुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥ ३२ ॥ आत्मौपम्येन । सर्वत्र । समं । पश्यति । यः । अर्जुन । सुखम् । वा । यदिवा । दुःखम् । सः । योगी । परमः । मतः ॥ ३२ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन जोपुरुष सर्वप्राणियोंविषे आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै सुखकूं अथवा दुःखकूं तुल्यही देखैहै सो ब्रह्मवेत्तायोगी श्रेष्ठ मान्याजावैहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोविद्वान्पुरुष सर्वप्राणीमात्रविषे सुखकूं अथवा दुःखकूं आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै तुल्यही जानैहै अर्थात् जोविद्वान्पुरुष द्वेषतैं रहितहोणेतैं जैसे आपणेअनिष्टकूं नहींसंपादनकरैहै तैसे अन्यप्राणियोंकेभी अनिष्टकूं संपादन करतानहीं ॥ इसप्रकार जोविद्वान्पुरुष रागतैंरहितहोणेतैं जैसे आपणेइष्टकूं संपादनकरैहै तैसे अन्यप्राणियोंकेभी इष्टकूं संपादनकरैहै ॥ सो निर्वासनताकरिकै शांतमनवाला ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष पूर्वउक्त अपरम योगीतैं श्रेष्ठहै अर्थात् मनोनाशवासनाक्षयतैं रहित केवल तत्त्ववेत्तापुरुषतैं सोमनोनाशवासनाक्षयसहित तत्त्ववेत्तापुरुष श्रेष्ठहै ॥ यातैं तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका

हीहे ॥ तथापि अज्ञातहुआसोपरमात्मादेव इसजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षणकरतानहीं ॥ जैसे गृहविषेस्थितहुईभीनिधि अज्ञातहुई इसगृहीपुरुषकेदरिद्रताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं इति ॥ और विद्वान्पुरुषतौ सर्वदा अत्यंतसमीप भगवान्केअनुग्रहका पात्रहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकारिकै शुद्ध त्वंपदार्थका तथा शुद्धतत्पदार्थका निरूपणकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिन शुद्धतत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप तत्त्वमसिवाक्यकाअर्थ निरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वभूतस्थितंयोमांभजत्येकत्वमास्थितः ॥ सर्वथावर्त्तमानोपिसयोगीमयिवर्त्तते ॥ ३१ ॥ सर्वभूतास्थितं । यः । मां । भजति । एकत्वम् । आस्थितः ॥ सर्वथा । वर्त्तमानः । अपि । सः । योगी । मयि । वर्त्तते ॥३१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोयोगी पुरुष सर्व भूतोंविषेस्थित मैंतत्पदार्थकूं आपणेत्वंपदार्थके साथि अभेदकूं निश्चयकरताहुआ अपरोक्षकरै है सो योगीपुरुष जिसकिंस प्रकारतें व्यवहारकरताहुआ भी मैंपरमात्माविषेही अभेदरूपकारिकै वर्त्ते है ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वभूतोंविषेअधिष्ठानरूपकारिकै स्थित तथा सर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरणरूपकारिकैअनुस्यूत जोसत्तामात्र तत्पदकालक्ष्यअर्थरूप मैंईश्वरहूं तिस मैंईश्वरका आपणेत्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्साक्षीकेसाथि अभेदनिश्चयकरताहुआ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिके परित्यागकियेहुए घटाकाश महाकाशरूप हीं है ॥ तैसे अविद्याअंतःकरणादिकउपाधियोंका परित्यागकारिकै मैंपरमेश्वरका आपणेआत्माकेसाथि अभेदनिश्चयकरताहुआ जोअधिकारीपुरुष मैं परमेश्वरकूं भजै है अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसवेदांतवाक्यकारिकैजन्य साक्षात्कारकारिकै जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरैहै सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्याकी निवृत्तिकारिकै जीवन्मुक्तहुआ कृतकृत्यहीहोवैहै ॥ तिसजीवन्मुक्तपुरुषकूं बाधितानुवृत्तिकारिकै जितनेककालपर्यंत शरीरादिकोंकादर्शन विद्यमानहै तितनेकाल पर्यंत विलक्षणप्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष याज्ञवल्क्यादिकोंकीन्यांई सर्वकर्मोंकापरित्यागकारिकै वर्त्तमानहुआ अथवा वसिष्ठजनकादिकोंकी न्यांई अग्निहोत्रादिकविहितकर्मोंके अनुष्ठानकारिकै वर्त्तमानहुआ अथवा दत्तात्रेयादिकोंकीन्यांई प्रतिषिद्धकर्मोंकारिकै वर्त्तमानहुआ जिसकिसीरूपकारिकै व्यवहारकूंकरताहुआ सोब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार जानताहुआ मैंपरमात्माविषेही अभेदरूपकारिकै वर्त्ते है ॥ तिसमेरेपरमानंदस्वरूपतैं सोविद्वान्पुरुष कदाचि तभी प्रच्युतहोवैनहीं अर्थात् तिसाविद्वान्पुरुषकूं सर्वप्रकारतैंमोक्षकेप्रतिबंधककीशंका हैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्च नाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति) ॥ अर्थयह ॥ महान्प्रभाववालेजेइंद्रादिकदेवताहैं तेइंद्रादिकदेवताभी तिसविद्वान्पुरुषकेमोक्षविषे प्रतिबंधकरणेमें समर्थनहीं हैं जिसकारणतैं सोविद्वान्पुरुष तिनदेवतावोंका आत्मारूपही है ॥ और आपणेआत्माकी कोईभी हानि करतानहीं ॥ जबी इंद्रादिकदेवताभी प्रतिबंधकरणेकूंस

सर्वं । चं । मयि पश्यति । तस्य । अहम् । न । प्रणश्यामि । सः । च । मे न । प्रणश्यति ॥३०॥इतिपद०॥हेअर्जुन ! जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकूं देखैहै तथा तिससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषे देखै है तिसयोगीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर नहीं परोक्षहोवोंहूं तथा सोयोगीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी नहीं परोक्षहोवै है ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! तत्त्वमसि इसवाक्यविषे स्थित तत्पदकाअर्थरूप जो मैं परमेश्वरहूं कैसाहूंसोमैं मायाउपाधिवालाहुआ सर्वप्रपंचकाकारणरूपहूं ॥ तथा वास्तवतैंसर्वउपाधियोंतैं रहितहूं ॥ तथा परमार्थसत्य आनंदघनहूं ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूपहूं ॥ तथा सर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरण रूपकरिके अनुस्यूतहूं ॥ ऐसेपरमेश्वरकूं जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे व्यापकदेखैहै अर्थात् योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिके मैं परमेश्वरकूं अपरोक्षकरैहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष इससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषेदेखैहै अर्थात् मैंपरमेश्वरविषे मायाकरिके आरोपित जो यह सर्वप्रपंचहै तिसप्रपंचकूं मैं अधिष्ठानपरमेश्वरतैं पृथक् मिथ्यारूपकरिकेही देखैहै ॥ इसप्रकार मैं परमेश्वरकेस्वरूपकूं तथाप्रपंचकेस्वरूपकूं यथार्थजानणेहारा जोयोगीपुरुषहै तिसयोगीपुरुषकूं मैंतत्पदार्थरूप परमेश्वर कदाचित्भी परोक्षहोतानहीं अर्थात् सोईश्वर हमारेतैं भिन्नहै याप्रकारतैं तायोगीपुरुषकेपरोक्षज्ञानकाविषय मैंपरमेश्वर होतानहीं किंतु तिसयोगी पुरुषके योगजन्यअपरोक्षज्ञानकाविषयही मैंपरमेश्वर होताहूं ॥ यद्यपि तत्पदार्थईश्वरविषे जोवाक्यजन्यअपरोक्षज्ञानकीविषयताहै सा त्वंपदार्थजीवकेसाथि अभेदरूपकरिकेहीहै केवल ईश्वरविषे वाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानकी विषयता संभवतीनहीं ॥ तथापि योगजन्यअपरोक्षज्ञानकी विषयता केवल ईश्वरविषेभी संभवहोइसकैहै ॥ इसप्रकार योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरताहुआ सोयोगीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी परोक्षहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान् पुरुष मैं परमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपही है । तथा अत्यंतप्रियहै यहसर्ववार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेभीस्पष्टहोवैगी ॥ और आपणाआत्मा किसीकूंभी परोक्षहोतानहीं किंतुस्वतैं सर्वकूंअपरोक्षहीहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष सर्वदा हमारेअपरोक्षज्ञानकाही विषयहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम्) इसगीताणीवचनतैंही सिद्धहै और यहवार्त्ता महाभारतविषे युधिष्ठिर केप्रति भगवान्नैंभी कथनकरीहै (अविद्वांस्तुस्वात्मानमपिसंतंभगवंतंनपश्यति अतोभगवान्पश्यन्नपितंनपश्यतीति इति) ॥ अर्थयह ॥ हेयुधिष्ठिर ! आत्मज्ञानतैंरहित जो अविद्वान्पुरुष है सोअविद्वान्पुरुषतौ आपणा आत्मारूपकरिके विद्यमानहुएभी परमेश्वरकूंभी देखतानहीं ॥ इसकारणतैं सोपरमेश्वरभी आपणेसर्वज्ञस्वभावतैं सर्वप्रपंचकूं देखताहुआभी ताअविद्वान्पुरुषकूं देखतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएनमविदितोनभुनक्ति) ॥ अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव यद्यपि इसजीवकाआत्मारूप

क्षिआत्मातैंपृथक्करिके जोतिससाक्षिआत्माकादर्शनहै यहही तिसचित्तकानाशहै ॥ ऐसे चित्तनाशके दोउपायहैं एकतौ योगउपायहै दूसरा ज्ञान उपायहै ॥ तहां सर्व वृत्तियोंकानिरोधरूप जोअसंप्रज्ञातसमाधिहै ताकानाम योगहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकीप्राप्ति संप्रज्ञातसमाधितैंहोवैहै ॥ तहां संप्रज्ञातसमाधिविषेतौ एकआत्माकारवृत्तियोंकेप्रवाहयुक्त अंतःकरणसत्त्व साक्षिचैतन्यनैं अनुभवकरीताहै ।। और असंप्रज्ञातसमाधिविषेतौ सर्ववृत्तियोंकेनिरोधयुक्त सोअंतःकरणसत्त्व उपशांतहोणेतैं तासाक्षीचैतन्यनैं अनुभवकरीतानहीं ।। इतनीही तिनदोनोंसमाधियोंविषे विशेषताहै इति ॥ और साक्षीआत्माविषे कल्पित यह साक्ष्यप्रपंच मिथ्याहोणेतैं: तीनकालविषेनहींहै एकसाक्षीआत्माहीहै परमार्थसत्यहै याप्रकारके सम्यक्विचारकानाम ज्ञानहै ॥ १ ॥ तहां किसी अधिकारीपुरुषकूं तो सोयोग कठिनपड़ैहै विचार सुगमपड़ैहै ॥ और किसीअधिकारीपुरुषकूंतौ सोयोग सुगमपड़ैहै विचार कठिनपड़ैहै ॥ इसीकारणतैं परमात्मादेवशिव तिनदोप्रकारोंकूं कथनकरता भयाहै इति ॥ २ ॥ तहां इनदोनोंउपायोंविषे प्रथमयोगरूपउपायकूंतौ प्रपंचकूंपरमार्थसत्यमानणेहारे हैरण्यगर्भादिकपुरुष अंगीकारकरैहैं ॥ तिनोंकेमतविषे परमार्थसत्यचित्तकेअदर्शनविषे साक्षीआत्माकेदर्शनविषे चित्तनिरोधतैंअतिरिक्त दूसराकोईउपायहैनहीं किंतु केवल सोचित्तकानिरोधही तासाक्षीआत्माकेदर्शनका उपायहै इति ॥ और श्रीमत्शंकराचार्यकेमतकूंअनुसरणकरणेहारे जे प्रपंचकूंमिथ्यामानणेहारे औपनिषदपुरुषहैं ॥ तेऔपनिषदपुरुषतौ दूसरेविचाररूपउपायकूंही अंगीकारकरैहैं ।। तिन औपनिषदपुरुषोंकूंतौ अधिष्ठानचेतनकेदृढसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर तिसअधिष्ठानविषे कल्पितचित्तका तथादृश्यप्रपंचका अदर्शन अनायासतैंही संभवहोइसकैहै ॥ ताप्रपंचकेअदर्शनविषे तिनोंकूं योगकीअपेक्षा रहैनहीं ।। इसीकारणतैं श्रीमत्शंकराचार्यनैं किसीभीस्थलविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषोंकं तायोगकीअपेक्षा प्रतिपादन करीनहीं ॥ इसीकारणतैं तेऔपनिषद परमहंससंन्यासी ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइके वेदांतवाक्योंके श्रवणमननरूपविचारविषेही प्रवृत्तहोवैं हैं योगविषे प्रवृत्त होतेनहीं ॥ काहेतैं तिसयोगकरिकै जेचित्तकेकामक्रोधादिकदोष निवृत्तकरेजावैहैं तेचित्तकेदोष जोकदाचित् तायोगतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै नहींनिवृत्तहोते तौ सोयोग ही अवश्य अपेक्षितहोता परन्तु तेचित्तकेदोषतौ विचारकरिकैभी निवृत्तहोइसकैहैं ॥ यातैं तिनऔपनिषदपुरुषोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै सोयोग अवश्यअपेक्षितनहींहै किंतु सोवेदांतवाक्योंकाविचारही अवश्यअपेक्षितहै इसीकारणतैं तैत्तिरीयउपनिषदविषे वरुणऋषि भृगुपुत्रकेप्रति वारंवार विचाररूपतपकाही विधानकरताभयाहै इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे शुद्धत्वंपदार्थका निरूपणकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे शुद्धतत्पदार्थका निरूपणकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति ॥ तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ ३० ॥ यः । माम् । पश्यति । सर्वत्र ।

अधिकारीपुरुष अपरिच्छिन्न ब्रह्मरूपसुखकूं अनुभवकरैहै ॥ इससर्वअर्थकूं अब तीन श्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् प्रतिपादनकरैं हैं तहां इसप्रथमश्लोककरिकै प्रथम त्वंपदकेलक्ष्यअर्थका निरूपणकरैंहैं।

(मू. श्लो.) सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥ ईक्षतेयोगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः ॥ २९ ॥ सर्वभूतस्थम् । आत्मानम् । सर्वभूतानि । च । आत्मनि । ईक्षते । योगयुक्तात्मा । सर्वत्र । समदर्शनः । ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! योगयुक्तआत्मा सर्वप्रपंचविषे समबुद्धिवालाहुआ सर्वभूतोंविषेस्थित आत्माकूं तथा आत्माविषे सर्वभूतोंकूं देखैहै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। स्थावरजंगमशरीररूप जितनेकभूतहैं तिनसर्वभूतोंविषे भोक्तारूपकरिकैस्थितहुआजो एकअद्वितीय विभु सच्चिदानंदरूप प्रत्यक्साक्षीआत्माहै तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं अनृतजडपरिच्छिन्नदुःखरूपसाक्ष्यपदार्थोंतैंपृथक्करिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ तथा तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे आध्यासिकसंबंधकरिकैस्थित जे मिथ्याभूत परिच्छिन्न जड दुःखरूप सर्वभूतहैं तिनसाक्ष्यरूपसर्वभूतोंकूं तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे कल्पितरूपकरिकै साक्षात्कारकरै है ॥ कौन पुरुष तिन्होंकूं साक्षात्कारकरैहै ऐसीजिज्ञासाकेहुए कहैं हैं (योगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः इति) तहां वस्तुकेविचारकीपरमकुशलतारूपयोगकरिकै युक्तहुआहै क्यासप्रसादकूंप्राप्तहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम योगयुक्तात्माहै ॥ तथा तायोगजन्य ऋतंभरनामाप्रत्यक्षकरिकै एकहीकालविषे सर्व सूक्ष्म वस्तुवोंकूं तथाव्यहितवस्तुवोंकूं तथाविप्रकृष्टवस्तुवोंकूं तुल्यहीदेखैहै ॥ इसप्रकारतैं सर्ववस्तुवोंविषे समानहैदर्शनजिसकूं ताकानाम समदर्शनहै ॥ ऐसासमदर्शनहुआ सोयोगयुक्तआत्मा प्रत्यक्आत्माकूं तथाताकेविषेकल्पित अनात्मप्रपंचकूं पूर्वउक्तरीतिसैं यथावत् जानै है यहवार्त्तायुक्तहै इति ॥ अथवा इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जो पुरुष योगयुक्तात्माहै तथा जोपुरुष सर्वत्रसमदर्शनहै सोपुरुषही इसप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ इतनेकहणेकरिकै योगीपुरुष तथासमदर्शीपुरुष दोनोंही आत्मसाक्षात्कारकेअधिकारी कथनकरे ॥ तात्पर्ययह जैसे चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूपयोग साक्षी आत्माकेसाक्षात्कारकाहेतुहै तैसे जडप्रपंचकाविवेककरिकै सर्वत्रअनुस्यूतचैतन्यआत्माका ताजडप्रपंचतैंपृथक्करणारूपविचारभी तासाक्षीआत्माके साक्षात्कारकाहेतुहै ताआत्मासाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे केवल योगही अवश्यअपेक्षितनहींहै ॥ इसी अभिप्रायकूंलेकै श्रीवसिष्ठभगवान्नैं रामचंद्रकेप्रतियहवचनकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वौक्रमौचित्तनाशस्ययोगोज्ञानंचराघव ॥ योगोवृत्तिनिरोधोहिज्ञानंसम्यगवेक्षणाम् ॥ १ ॥ असाध्यःकस्यचिद्योगः कस्यचित्तत्त्वनिश्चयः ॥ प्रकारौद्वौततोदेवोजगादपरमःशिवः ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ हे रामचंद्र ! साक्षीआत्माकाउपाधितभूतजोचित्तहै ताचित्तकूं तिससा

सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरेहुए विघ्नरूपअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोयोगी पुरुष किसी एकइष्टतत्त्वविषे चित्तका पुनःपुनःनिवेशरूप अभ्यासकूंकरै इति ॥ १ ॥ इहां सुहृदताकानाम मैत्रीहै ॥ और कृपाकानाम करुणाहै ॥ और हर्षकानाम मुदिताहै ॥ और उदासीनताकानाम उपेक्षाहै ॥ और सुख दुःख पुण्य अपुण्य यह च्यारिशब्द यथाक्रमतैं सुखवालेका तथादुःखवालेका तथापुण्यवालेका तथाअपुण्यवालेका वाचकहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ सुखभोगकरिकेसंपन्नजेप्राणीहैं तिनसर्वप्राणियोंविषे इनहमारेमित्रोंकूं जोयहसुख प्राप्तभयाहै सोसर्वदाबनारहे याप्रकारकीमैत्रीकूं सोअधिकारीपुरुषकरै ॥ तिनसुखीपुरुषोंकूंदेखिकै यहसुख इन्होंकूंक्यूंप्राप्तभयाहै याप्रकारकीईर्षाकूं सो अधिकारीपुरुष करैनहीं ॥ और इसलोकविषेजेदुःखीप्राणीहैं तिनदुःखीप्राणियोंविषे सोअधिकारीपुरुष किसीप्रकारकरिकै इन्होंकेदुःखकीनिवृत्तिहोवैतौश्रेष्ठहै याप्रकारकी कृपाकूंहीकरै ॥ तिनदुःखीप्राणियोंविषे उपेक्षाबुद्धिकरैनहीं तथाईर्षाकूंभी करैनहीं ॥ और जेपुरुष पुण्यवान्हैं तिनपुण्यवानोंविषेतौ तिन्होंकेपुण्यकीस्तुतिकथनपूर्वकहर्षकूंहीकरै ॥ तिनपुण्यवानोंविषे द्वेषकूंभी नहींकरै तथा उपेक्षाकूंभी नहींकरै ॥ और जेपापात्मादुष्टपुरुषहैं तिन्होंविषेतौ उदासीनतारूपउपेक्षाकूंहीकरै ॥ तिनपापियोंविषे हर्षकूं तथा द्वेषकूंकरैनहीं ॥ इसप्रकार मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा याच्यारोंकेसेवनकरणेहारेपुरुषविषे एकशुक्लधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसधर्मविशेषकेप्रभावतैं रागद्वेषादिकमलतैंरहितचित्त प्रसन्नहुआ एकाग्रताकेयोग्यहोवै है इति ॥ २ ॥ इहांमैत्रीआदिकच्यारिधर्म दूसरे दैवीसंपत्‌रूपधर्मोंकेभी उपलक्षणहैं ।। तेदूसरेधर्म (अभयंसत्त्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनकरिकै तथा (अमानित्वमदंभित्वम्) इत्यादिकवचनकरिकै श्रीभगवान् आपही आगेकथन करैंगे ।। तेसर्वधर्म शुभवासनारूपहोणेतैं मलिनवासनाकेनिवर्त्तकही हैं ॥ यातैं सर्वपुरुषार्थकेप्रतिबंधकहोणेतैं परमशत्रुरूप जेरागद्वेषादिकहैं तेरागद्वेषादिक इसअधिकारीपुरुषनैंमहान्प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणे ॥ और पतंजलिभगवान्नैं योगशास्त्रविषे इसचित्तकेप्रसादनवासतै जैसे मैत्रीकरुणादिकउपाय कथनकरेहैं ।। तैसे प्राणायामादिक दूसरेउपायभी कथनकरैं हैं ॥ सो ऐसा चित्तकाप्रसादन भगवत्‌केअनुग्रहकरिकै जिसपुरुषकूं उत्पन्नभयाहै तिसी भगवत्‌अनुगृहीत पुरुषकेप्रतिही (सुखेन) यहवचन भगवान्नैंकथनकऱ्याहै ॥ ताभगवत्‌अनुग्रहणतैंविना इसमनकानिग्रह होइसकतानहीं इति ।। २८ ।। ❀ ।। इसप्रकार निरोधसमाधिकरिकै त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप तथाततपदकेलक्ष्यअर्थरूप शुद्धचेतनकेसाक्षात्कारहुएतैं अनंतर तान्लक्ष्यचेतनकेएकताकूंविषयकरणेहारी तथातत्त्वमसि इत्यादिकवेदांतवाक्यकरिकैजन्य निर्विकल्पकसाक्षात्काररूप अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ।। जिसवृत्तिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मविद्या इसनामकरिकैकथनकरैहैं ।। तिसतत्त्वसाक्षात्काररूपब्रह्मविद्यातैंसर्वअविद्याकी तथाताकेकार्यप्रपंचकी निवृत्तिकरिकै यह

नैंहीप्रवृत्तहोवैहै ।। तिनसंस्कारोंकेउद्भवतैंविना तिसतिसशरीरकाजीव संभवैनही ।। ऐसेचित्तविषेस्थितक्लेशादिकोंकारिकै यहसंसारीपुरुषही संबद्धहोवैहै ।। तेक्लेशादिक तीनकालविषे जिसमैं हैंनहीं ऐसापुरुषविशेष ईश्वरकह्याजावैहै ।। इहां सूत्रविषेस्थितजो विशेषयहशब्दहै सो तीनकालविषेअसंबंधरूपअर्थ कावाचकहै ।। ऐसेविशेषपदकारिकै ताईश्वरविषे मुक्तपुरुषोंतैंभीव्यावृत्तिकथनकरी ।। तिनमुक्तपुरुषोंविषे यद्यपि तिसकालविषे सोक्लेशादिरूपबंधनहीं है ।। तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वकालविषे सोबंध तिनमुक्त पुरुषोंविषेभी विद्यमानथा ।। यातैं तीनकालविषे तिनक्लेशादिकोंकेसंबंधकाअभाव तिनमुक्तपुरुषोंविषे संभवतान हीं ।। किंतु (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैप्रतिपादित जोसर्वज्ञईश्वरहै ताईश्वरविषेही सोसंभवैहै इति ।। २ ।। अब ताईश्वरकीसर्वज्ञताविषे अनुमानप्रमाणका कथनकरैंहैं ।। तहां अस्मदादिकजीवोंकाजो ज्ञानहै सोज्ञान सातिशयहोणेतैं निरतिशयज्ञानकरिकैव्याप्तहै ।। जोजोपदार्थ सातिशयहोवैहै सोसोपदार्थ आपणेसमानजातीय निरतिशयपदार्थकरिकैव्याप्तहीहोवैहै जैसे घटकापरिमाण सातिशयहै यातैं परिमाणत्वरूपतैंआपणेसमानजातीय विभुपरिमाणक रिकैव्याप्तहै ॥ ऐसानिरतिशयज्ञान केवल ईश्वरविषेहीरहैहै अन्यकिसीविषेरहैनहीं ॥ और सोनिरतिशयज्ञानही सर्वज्ञताका ज्ञापकहोवैहै ।। अर्थात् जहां निरतिशयज्ञानहोवैहै तहां सर्वज्ञताहीजानीजावैहै ॥ यातैं निरतिशयज्ञानवालाहोणेतैं सोईश्वर सर्वज्ञहै इति ॥ ३ ॥ अब ताईश्वरविषेब्रह्मादिकदेवतावोंतैं विशेषता कथनकरैंहैं सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नभयेयेब्रह्मादिकदेवताहैं तेसर्व कालपरिच्छेदवालेहैं ॥ ऐसेकालपरिच्छिन्नब्रह्मादिकोंकाभी सोईश्वर गुरुरूपहै काहेतैं सोईश्वर कालकरिकै अपरिच्छिन्नहै अर्थात् आदिअंततैंरहितहै ॥ तहां श्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै ॥) अर्थयह ॥ जोईश्वरसृ ष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथा जोईश्वर तिसब्रह्माकेताई सर्ववेद देताभया इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं तिसईश्वरविषे ब्रह्मादिकोंकागुरुपणा सिद्धहोवैहै इति ॥ ४ ॥ तहांपूर्वतीनसूत्रोंकरिकैकथनकऱ्याजोईश्वर ताईश्वरकेप्रणिधानकूं अब दोसूत्रोंकरिकै कथनकरैंहैं ॥ तिन पूर्वउक्तईश्वरकावाचक ॐकाररूपप्रणवहैइति ॥ ५ ॥ तिसईश्वरकेवाचकप्रणवकाजो निरंतरजपहै तथाताप्रणवकेअर्थरूपईश्वरकाजोध्यानहै ताकानाम ईश्वरप्रणि धानहै इति ॥ ६ ॥ और तिसप्रणवकेजपरूप तथाताप्रणवकेअर्थकाध्यानरूप ईश्वरप्रणिधानतैं तिसयोगीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ।। तथा पूर्व (व्याधि स्त्यान) इत्यादिकदोसूत्रोंकरिकैकथनकरेहुए चतुर्दशविघ्नरूपअंतरायोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ ७ ॥ जैसे ताईश्वरप्रणिधानतैं तिनअंत रायोंकीनिवृत्तिहोवैहै तैसे अभ्यासवैराग्यकरिकैभी तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अभ्यासवैराग्यकरिकै तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेविषे ताअभ्यास कीदृढताकरणेवासतै पतंजलिभगवाननैं यहदोसूत्र कथनकरे हैं ॥ तहांसूत्र ॥ (तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्वाभ्यासः ॥ १ ॥ मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां

कहें हैं सोअंगमेजयत्व आसनकेस्थिरताकाविरोधीहोवैहै ॥ ३ ॥ और प्राणकरिकै बाह्यवायुकाजोअंतरप्रवेशहै ताकानाम श्वासहै सोश्वास समाधिकेअंगभूत रेचकका विरोधीहोवैहै ॥ ४ ॥ और प्राणकरिकै भीतरलेवायुका जोबाह्यनिकासणाहै ताकानामप्रश्वास है सोप्रश्वास समाधिकेअंगभूतपूरकका विरोधीहोवैहै इति ॥ ५ ॥ यहपूर्वउक्तदोसूत्रोंकरिकै कथनकरेजेचतुर्दशअंतरायहैं तेविघ्नरूपअंतराय अभ्यासवैराग्यकरिकै निवृत्तहोवैं हैं ॥ अथवाईश्वरप्रणिधानकरिकै निवृत्तहोवैं हैं ॥ तहां योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान् (तीव्रसंवेगानामासन्नः) इससूत्रविषे तीव्रवैराग्यवान्पुरुषोंकूं अत्यंतसमीम असंप्रज्ञातसमाधिकालाभकथनकरिकै (ईश्वरप्रणिधानाद्वा) इससूत्रविषे पक्षांतरकूंकहिकै तिसप्रणिधेयईश्वरकेस्वरूपकूं (क्लेशकर्मविपाकाशयैरपामृष्टःपुरुषविशेषईश्वरः । तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजम् । सपूर्वेषामपिगुरुःकालेनानवच्छेदात्) इनतीनसूत्रोंतैंप्रतिपादनकरिकै ताईश्वरकेप्रणिधानकूं (तस्यवाचकः प्रणवः । तज्जपस्तदर्थभावनम्) यादोसूत्रोंकरिकै कथनकरताभयाहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपतंजलिभगवान् (इतःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च) यहसूत्र कथनकरताभयाहै ॥ अब ॥ (ईश्वरप्रणिधानाद्वा ॥ १ ॥ क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषईश्वरः ॥ २ ॥ तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजम् ॥ ३ ॥ सपूर्वेषामपिगुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥ ४ ॥ तस्यवाचकः प्रणवः ॥ ५ ॥ तज्जपस्तदर्थभावनम् ॥ ६ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥ ७ ॥) इनसप्तसूत्रोंका यथाक्रमतैंअर्थ निरूपणकरैं हैं ॥ ईश्वरविषे जो कायिक वाचिक मानस यहतीनप्रकाकीभक्तिविशेषहैं ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ तिसईश्वरप्रणिधानतैं इसयोगीपुरुषकूं अत्यंतसमीप असंप्रज्ञातसमाधिकालाभहोवैहै ॥ तहांसूत्रकेअंतविषेस्थितजो वा यहशब्दहै सो वा शब्द पूर्वउक्त तीव्रवैराग्यरूपउपायकेसाथि इसईश्वरप्रणिधानरूपउपायका विकल्पबोधनकरणेवासतै है अर्थात जैसे तीव्रवैराग्यतैं तासमाधिकालाभहोवै है तैसे ईश्वरप्रणिधानतैंभी तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ जिसकारणतैं ताभक्तिकरिकैप्रसन्नहुआ ईश्वर यहइष्टवस्तु इसभक्तजनकूंप्राप्तहोवो याप्रकारकाअनुग्रह अवश्यकरिकैकरै है इति ॥ १ ॥ अब जिसईश्वरकेप्रणिधानतैं अंतरायकीनिवृत्तिपूर्वक तासमाधिकालाभहोवैहै ताईश्वरकेस्वरूपकूं तीनसूत्रोंकरिकैवर्णनकरैं हैं ॥ क्लेश कर्मविपाक आशय या च्यारोंकरिकै तीनकालविषे असंबद्ध जोपुरुषविशेषहै ताकानाम ईश्वरहै ॥ तहां अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापांचोंकानाम क्लेशहै इनक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषेनिरूपणकरिआयेहैं ॥ और विहितप्रतिषिद्धक्रियातैंजन्य जोधर्मअधर्म है ताकानाम कर्म है ॥ और ताधर्मअधर्मकाजोफलहै ताकानाम विपाकहै ॥ और ताफलभोगकेअनुकूल जेसंस्कारहैं तिन्होंकानाम आशयहै जैसे इसपुरुषकूं जबी पापकर्मकेवशतैं उष्ट्रकाजन्महोवै है तबी वह कंटकभक्षणकरणेकेसंस्कार उद्भवहोवैं हैं ॥ इसप्रकार यहजीव जिसजिसजातिवालेशरीरकूं प्राप्तहोवैहै तिसतिसजातिवालेशरीरकेभोगोंविषे जो प्रवृत्त होवैं है सोपूर्वले संस्कारोंकेवश

योगशास्त्रवेत्तागुरुषनैं सिखाएहुएभीशिष्यविषे जोआसनादिककर्मोंकी अयोग्यताहै ताकानाम स्त्यानहै ॥ १२ ॥ और यहयोग हमारेकूं सिद्धकरणेयोग्यहै अथवानहीं इसप्रकारभाव अभावरूपदोकोटियोंकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ताकानाम संशयहै ॥ यद्यपि तत्अभाववालेविषे तत्बुद्धिरूपताविपर्ययकीन्याई संशयविषेभीहै ॥ यातैं सोसंशय विपर्ययकेअंतर्भूतनही होइसकैहै ॥ तथापि संशयविषेतो दोकोटियोंकाभानहोवैहै ॥ और विपर्ययविषे एकहीकोटीकाभानहोवैहै ॥ इतनी अवांतरविशेषताकूंअंगीकारकरिकै इहां संशयकूंविपर्ययतैंभिन्न कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और समाधिकेसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जोतिनसाधनोंकाअनुष्ठाननहींकरणाहै ताकानाम प्रमादहै अर्थात् दूसरेविषयोंविषे प्रवृत्तिपणेकरिकै जोयोगसाधनोंविषेउदासीनताहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ४ ॥ और तिसउदासीनताकेनिवृत्तहुएभी कफादिकधातुवोंकीवृद्धिकरिकैअथवा तमोगुणकीवृद्धिकरिकै जोशरीरविषे तथाचित्तविषे गुरुत्वहै ताकानाम आलस्यहै ॥ सोआलस्य व्याधिरूपकरिकैअप्रसिद्धहुआभी योगविषे प्रवृत्तिका विरोधीहीहै ॥ ५ ॥ और किसीविशेषविषयविषे जोचित्तकी निरंतर अभिलाषाहै ताकानाम अविरतिहै ॥ ६ ॥ और योगके असाधनोंविषेभी जायोगसाधनत्वबुद्धिहै तथायोगकेसाधनोंविषेभी जायोगसाधनत्वबुद्धिहै ताकानाम भ्रांतिदर्शनहै ॥ ७ ॥ और समाधिकीजाएकाग्रताभूमिकाहै ताभूमिकाका जोअलाभहै अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्तरूपताकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अलब्धभूमिकत्वहै ॥ ८ ॥ औरतासमाधिकीभूमिकाकेप्राप्तहुएभी आपणेप्रयत्नकीशिथिलताकरिकै जोचित्तकी तिसभूमिकाविषे नहींस्थितिहै ताकानाम अनवस्थितत्वहै ॥ ९ ॥ यहनवप्रकारके चित्तविक्षेप योगमलकहेजावैहैं तथा योगप्रतिपक्ष कहेजावैहैं तथायोगअंतराय कहेजावैं हैं इति ॥ किंवा इसतैंअन्य दूसरेभीविघ्नरूप अंतराय पंतजलिभगवान्नैं कथनकरेहैं ॥ तहां सूत्र ॥ (दुःखदौर्मनस्यांगमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः) ॥ अर्थयह ॥ दुःख १ दौर्मनस्य २ अंगमेजयत्व ३ श्वास ४ प्रश्वास ५ यहपंचअंतराय समाहितचित्तकूंहोवैंनहीं किंतु विक्षिप्तचित्तकूंही होवैहैं ॥ यातैं यहपांचों विक्षेपसहभुवःअंतराय कहेजावैहैं ॥ तहां चित्तका बाधनारूप जोराजसपरिणामहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोदुःखआध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै॥तहां ज्वरादिकव्याधियोंकरिकैउत्पन्नभयाजोशारीर दुःखहै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयाजोमानसदुःखहै तेदोनोंप्रकारकेदुःख आध्यात्मिकदुःख कहेजावैं हैं ॥ और व्याघ्र सर्प चौर आदिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सोदुःख आधिभौतिकदुःख कह्याजावैहै ॥ और ग्रहपीडादिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सो आधिदैविकदुःख कह्याजावैहै ॥ सोयहत्रिविधदुःख द्वेषरूप विपर्ययकाहेतुहोणेतैं समाधिका विरोधीहीहै ॥ १ ॥ औरइच्छाविघातादिक बलवान्दुःखकेअनुभवकरिकैजन्य जोचित्तका तामसपरिणाम विशेषहै ताकूं क्षोभकहैं हैं तथास्तब्धीभावभीकहैंहैंताकानाम दौर्मनस्यहै ॥ सोदौर्मनस्यकषायरूपहोणेतैं लयकीन्याई समाधिकाविरोधीहीहै॥२॥और हस्तपादादिकअंगोंकाजोकंपनहै ताकूं अंगमेयजत्व

(मू. श्लो.) युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीविगतकल्मषः ॥ सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतंसुखमश्नुते ॥२८॥ युंजन् । एवम् । सदा । आत्मानम् । योगी । विगतकल्मषः । सुखेन । ब्रह्मसंस्पर्शम् । अत्यंतम् । सुखम् । अश्नुते ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! इसप्रकार सर्वदा आपणे मनकूं आत्माविषेसमाहितकरताहुआ धर्मअधर्मतैंरहित सोयोगीपुरुष अनायासतैं ब्रह्मस्वरूप अपरिच्छिन्न सुखकूंही अनुभव करैहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । (मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोक्रमहै तिसपूर्वउक्तक्रमकरिकै जोयोगीपुरुष आपणेमनकूं सर्वदा प्रत्यक्‌आत्माविषे समाहितकरताहुआ स्थितहै तथा जो गीपुरुषविगतकल्मषहै अर्थात् संसारकीप्राप्तिकरणेहारे जेधर्मअधर्मरूपकल्मषहैं तेकल्मष निवृत्तहोगयेहैंजिसके ऐसायोगीपुरुष ईश्वरकेप्रणिधानतैं सर्वअंतरायोंकीनिवृत्तिकरिकै अनायासतैंही सुखकूं अनुभवकरैहै ॥ अब जन्यसुखकीव्यावृत्तिकरणेवासतै तासुखकेदोविशेषण कथनकरैं हैं (ब्रह्मसंस्पर्शम्‌अत्यंतमिति) विषयकेस्पर्शतैंरहित ब्रह्मका तादात्म्यरूपसंस्पर्श है जिससुखविषे ताकानाम ब्रह्मसंस्पर्श है अर्थात् जोसुख ब्रह्मरूपही है तथा जोसुख अत्यंतहै इहां देशकालवस्तुपरिच्छेदकानाम अंतहै तापरिच्छेदरूपअंतकूं जोसुख अतिक्रमणकरिकैवर्त्तै है तासुखकानाम अत्यंतहै ॥ इसीअपरिच्छिन्नब्रह्मरूपसुखकूं (योवैभूमातत्सुखम्) यहश्रुति प्रतिपादनकरै है ॥ ऐसेनिरतिशयब्रह्मानंदकूं सोयोगीपुरुष सर्वओरतैं निर्वृत्तिकचित्तकरिकै लयविक्षेपतैंविलक्षण अनुभव करैहै ॥ तहां विक्षेपकेवियमानहुए वृत्ति अवश्यहोवैहै और लयकेहुए मनका स्वरूपतैंहीअसत्त्वहोवै है ॥ यातैंतासुखके अनुभवकूं लयविक्षेपतैंविलक्षणकह्याहै और सर्ववृत्तियों तैंराहितसूक्ष्ममनकरिकै सुखकाअनुभव केवल असंप्रज्ञातसमाधिविषेही होवैहै अन्यत्रहोवैनहीं ॥ ॥ इहां (सुखेन याशब्दकरिकै प्रतिबंधकअंतरायोंकीनिवृत्तिकथनकरी ॥ तेअंतराय योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान्‌नैं कथनकरे हैं ॥ तहांसूत्र ॥ (व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रांतिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानिचित्तविक्षेपास्तेंऽतरायाः) ॥ अर्थयह ॥ व्याधि १ स्त्यान २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अविरति ६ भ्रांतिदर्शन ७ अलब्धभूमिकत्व ८ अनवस्थितत्व ९ यहनवप्रकारकेचित्तविक्षेप अंतरायकहेजावैं हैं ॥ तहां जे चित्तकूं योगतैं विक्षिप्तकरैं हैं अर्थात् तायोगतैंबहिर्मुखकरैं हैं ते चित्तविक्षेप कहेजावैं हैं ॥ तेहीचित्तविक्षेप योगकेविरोधीहोणेतैं अंतरायकहेजावैं हैं ॥ तिन्होंविषेभी संशय भ्रांतिदर्शन यहदोनोंतो तावृत्तिनिरोधरूपयोगके साक्षात्‌ही विरोधीहोवैं हैं ॥ और व्याधिआदिकदूसरेनिमित्ततो सर्वदा वृत्तिकेसहचरितहोणेतैं तावृत्तिकेहीविरोधी होवैं हैं ॥ तहां वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमताहैनिमित्तजिन्होंविषे ऐसे जेज्वरादिकविकारहैं तिन्होंकानाम व्याधिहै ॥ १ ॥ और अकर्मण्यताकानाम स्त्यानहै अर्थात्

ज्ञानानिमनसासह ॥ बुद्धिश्चनविचेष्टते तामाहुः परमांगतिम् ॥ तांयोगमितिमन्यंते स्थिरामिंद्रियधारणांम् ॥ अप्रमत्तस्तदाभवति योगोहिप्रभवाप्ययौइति) ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे मनसहित पंचज्ञानइंद्रिय निरोधकूंप्राप्तहोवैं हैं तथा बुद्धिभी किसीचेष्टाकूंकरतीनहीं तिस स्थिरइंद्रियोंकीधारणाकूं योगशास्त्रवेत्तापुरुष परमगतिकहैं हैं तथायोंगकहैं हैं ॥ तिसकालविषे विनाहीप्रयत्नतैं सोचित्त ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इसीमूलभूतश्रुतिकूंअंगीकारकरिकै पतंजलिभगवानूंनैं (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) यहसूत्र कथनकऱ्याहै ॥ यातैं (ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत्) यहजोवचन श्रीभगवानूंनैं कथनकऱ्याहै सो श्रुतिसूत्रकेअनुसारहोणेतैंयथार्थ है इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं तिसयोगीपुरुषकामन प्रत्यक्आत्माविषेही निरोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं तायोगीपुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ताकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) प्रशांतमनसंह्येनंयोगिनंसुखमुत्तमम् ॥ उपैतिशांतरजसंब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥ प्रशांतमनसम् । हि । एनम् । योगिनम् । सुखम् । उत्तमम् । उपैति । शांतरजसम् । ब्रह्मभूतम् । अकल्मषम् ॥२७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! प्रशांतहैमनजिसका तथानिवृत्त हुआहैरजोगुणजिसका तथानिवृत्तहुआहैतमोगुणजिसका तथाब्रह्मरूप ऐसेइंस योगीपुरुषकूं निरतिशय सुख प्राप्तहोवैहै॥२७॥इतिपदार्थः॥

टीका । प्रशांतहुआहैमनजिसका अर्थात् सर्ववृत्तियोंतैंरहिततांकरिकै निरुद्धहुआहै संस्कारमात्रअवशेष मनजिसका ताकानाम प्रशांतमनसहै ॥ इसीकूंही शास्त्रविषे निर्मनस्कभी कहैं हैं ॥ अब तायोगीपुरुषकी निर्मनस्कताविषे हेतुगर्भितदोविशेषण कथनकरैं हैं (शांतरजसम् अकल्मषमिति) शांतहुआहै क्या निवृत्त हुआहै विक्षेपकाहेतुरजोगुण जिसका ताकानाम शांतरजसहै अर्थात् जोयोगीपुरुष विक्षेपदोषतैंरहितहै तथा नहींविद्यमानहै कल्मष क्या लयकाहेतुतमोगुण जिसविषे ताकानाम अकल्मषहै अर्थात् जोयोगीपुरुष लयदोषतैंरहितहै ।। इहां (शांतरजसम्) इसपदकूंही जो तमोगुणकाउपलक्षण अंगीकारकरियेतौ (अकल्मषम्) इसपदका यहअर्थकरणा ॥ संसारकाहेतुभूतजो धर्मअधर्मादिरूपकल्मषहै ताकल्मषतैंरहितजोयोगीपुरुषहै ताकानाम अकल्मषहै ॥ तथा जो योगीपुरुष ब्रह्मभूतहै अर्थात् यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपही है याप्रकारकेनिश्चयकरिकै तासमब्रह्मकूंप्राप्तहुआ जोजीवन्मुक्तपुरुषहै ॥ इसप्रकारकेयोगीपुरुषकूं निरतिशयसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तहां मन तथामनकीवृत्ति यादोनोंकेअभावहुएभी सुषुप्तिविषेस्वरूपसुखकाअनुभव प्रसिद्धही है ॥ ताप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवास्तै मूलश्लोकविषे ही यहशब्दकथनकऱ्याहै सोयहवार्ता (सुखमात्यंतिकंयत्तत्) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब तिसयोगीपुरुषके कथनकरेहुएसुखकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैं हैं ।

यद्यपिपरमसुखका अभिव्यंजकहै तथापि सोयोगीपुरुष तानिरोधसमाधिविषे तासुखकूं आस्वादननहींकरै ॥ अर्थात् इतनैंकालपर्यंत मैं सुखीहुआस्थितहूं इसप्रकारकी सुखकाआस्वादनरूपवृत्तिकूं सोयोगीपुरुष नहींउत्पन्नकरै ॥ जोकदाचित् तासुखाकारवृत्तिकूंकरैगा तौ तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकाही भंगहोवैगा ॥ यह वार्ता पूर्वहीकथनकरिआयेहैं ॥ किंवा प्रज्ञाकरिकै जोसुख प्रतीतहोवै है सोसुख अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीं है याप्रकारकी भावनाकरिकै सोयोगीपुरुष सर्वसुखोंविषे निःसंग होवै ॥ अर्थात् तासुखंकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ अथवा ॥ (निःसंगः प्रज्ञया भवेत्) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सविकल्पसुखाकारवृत्तिरूपजाप्रज्ञाहै तिसप्रज्ञाकेसाथि सोयोगीपुरुष संगकापरित्यागकरै ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकरिकै जोस्वरूपसुखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवकातौ सोयोगीपुरुष कदाचित्भी परित्यागकरैनहीं ॥ जिसकारणतैं वृत्तिर्तैविना स्वभावतैंहीप्राप्तजो स्वरूपसुखका अनुभवहै सो निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ इसप्रकार सर्वओरतैंनिवृत्तकारिकै प्रत्ययकेबलतैं निश्चलकऱ्याजोचित्तहै सोचित्त जोकदाचित् आपणेचंचलस्वभावतैं विषयोंकीअभिमुखताकरिकै बाह्यगमनकरै तौभी सोयोगीपुरुष निरोधकेप्रयत्नतैं तिसचित्तकूं पुनः ता समब्रह्मविषे एकताकूंप्राप्तकरै इति ॥ ४ ॥ तासमब्रह्मविषे प्राप्तहुआसोचित्तकिसप्रकारकाहोवै है ऐसीजिज्ञासाकेहुए ताकास्वरूप कथनकरैं हैं (यदानलीयतेइति) जिसकालविषे सोचित्त लयकूंभी नहींप्राप्तहोवै है ॥ तथा स्तब्धभावरूपकषायकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शब्दादिकविषयाकारवृत्तिरूप विक्षेपकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तासमाधिकेसुखकूंभी वृत्तिकरिकैनहींआस्वादनकरै है ॥ यद्यपि श्लोकविषे लय विक्षेप यादोनोंकाहीकथनकऱ्याहै ॥ कषाय सुखास्वाद यादोनोंका कथनकऱ्यानहीं तथापि लय कषाय यहदोनोंदोष तमोगुणकेकार्य तैंहोवैं हैं ॥ यातैं तामसत्वधर्मकीसमानताकूंलेकेसोलयशब्द ताकषायकाभी उपलक्षकहै ॥ इसप्रकार विक्षेप सुखास्वाद यहदोनोंदोष रजोगुणकेकार्य हैं ॥ यातैं राजसत्वधर्मकीसमानताकूंलेके सोविक्षेपशब्द तासुखास्वादकाभी उपलक्षकहै ॥ इसीसुखास्वादकूं योगशास्त्रविषे रसास्वादभीकहैं हैं ॥ और पूर्वजो तिनच्यारोंदोषोंकूं पृथक्पृथक् कथनकरचाथा सो तिन लयादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासते पृथक्पृथक् प्रयत्नकेकरणेवासते कथनकऱ्याथा ॥ इसप्रकार लय कषाय यादोनोंदोषोंतैंरहित तथाविक्षेप सुखास्वाद यादोनोंदोषोंतैं रहित जोचित्त अनिंगनहै ॥ इहां इंगननाम चलनकाहै ॥ जैसे वायुविषेस्थितदीपक लयकी अभिमुखतारूपइंगनवालाहोवैहै तैसे लयकीअभिमुखतारूपजोइंगनहै॥ तिसइंगनतैंरहितजोचित्तहै सोअनिंगन कह्याजावैहै ॥ अर्थात् वायुतैंरहितदेशविषेस्थितदीपककीन्याईजोचित्त ताचलनरूपइंगनतैंरहितहै ॥ तथा जोचित्त अनाभासहै ॥ अर्थात् जोचित्त किसीभीविषयाकारकरिकै नहीं प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार जिसकालविषे सोचित्त लय कषाय विक्षेप सुखास्वाद याच्यारोंदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोचित्त तिससमब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै इति॥५॥इसीप्रकारकायोग साक्षात् श्रुतिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदापंचावतिष्ठंते

विषेसुखरूपता होवैनहीं ॥ जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहै सोसोपदार्थ नाशवान्है तथादुःखरूपहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकेअर्थकूं गुरुकेउपदेशतैं अनंतर निश्चयकरिकै सोयोगीपुरुष कामभोगोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै अर्थात् चिंत्यमानअवस्थावालेविषयोंकूं तथाभुज्यमान अवस्थावालेविषयोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै ॥ अथवा तिसकामभोगतैं आपणेमनकूं निवृत्तकरै ॥ इतनैंकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचकेस्मरणकालविषे वैराग्यभावनामैं तामनकेनिग्रहीतउपायरूपता कथनकरी ॥ अब सर्वद्वैतप्रपंचकाविस्मरणरूप परमउपायकूं कथनकरैं हैं (अजंसर्वमनुस्मृत्यइति) जन्मतैंरहितजोब्रह्महै तद्रूपही यहसर्वजगत्है ॥ तिसब्रह्मतैं अतिरिक्त किंचित् मात्रभीवस्तुहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरु शास्त्रके उपदेशतैंअनंतर बिचारकारिकै तिसअद्वितीयब्रह्मतैंविपरीत इसद्वैतमात्रकूं सोयोगीपुरुष देखतानहीं ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानकेज्ञानहुए ताकेविषेकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभावहीहोवैहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुए ताकेविषेकल्पित सर्पदंडादिकोंकाअभावहीहोवैहै तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए ताकेविषेकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभावहीहोवैहै ॥ तहां वैराग्यभावनारूप पूर्वउक्तउपायकी अपेक्षाकरिकै इससर्वद्वैतकीनिवृत्तिरूपउपायविषे विलक्षणताबोधनकरणेवास्तै श्लोकविषे तु यहशब्दकथनकऱ्याहैइति ॥ २ ॥ इसप्रकार वैराग्यभावना तथा तत्त्वदर्शन यादोनोंउपायोंकरिकै विषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहुआ जोचित्तहै सोचित्त जोकदाचित् दिनदिनविषेलयहोणेकेअभ्यासवशतैं तालयकेअभिमुखहोवै तौ निद्राशेषबहुअन्नभोजन अतिपरिश्रम इत्यादिकजे लयकेकारणहैं तिनकारणोंकानिरोधकरिकै सोयोगीपुरुष उत्थानकेप्रयत्नकरिकै ताचित्तकूं तिसलयतैं प्रबोधनकरै ॥ इसप्रकार तिसलयतैं प्रबोधनकऱ्याहुआ सोचित्त जो कदाचित् दिनदिनविषे ताप्रबोधनके अभ्यासवशतैं पुनः ताकामभोगविषे विक्षिप्तहोवै तौ पूर्वउक्त वैराग्यभावनाकरिकै तथातत्त्वसाक्षात्कारकरिकै पुनः ताचित्तकूं निरुद्धकरै ॥ इसप्रकार पुनःपुनः अभ्यासकेबलतैं तालयतैंप्रबोधनकऱ्याहुआ तथाशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहुवाजोचित्तहै ॥ अर्थात् लय विक्षेप यादोनोंदोषोंतैंरहितकऱ्याहुआ जोचित्तहै सोचित्त जबी ब्रह्मरूपसमभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु मध्यविषेस्थितहुआ सोचित्त स्तब्धहोइजावैहै तास्तब्धभावकूं कषायदोष कहैंहैं सोकषायदोष रागद्वेषादिकोंकीप्रबलवासनारूपरागकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकषायदोषकरिकै युक्तजोचित्तहै ताकूं सकषायकहैंहैं ॥ ऐसे सकषायचित्तकूं सोयोगीपुरुष समाहितचित्ततैं विवेककरिकैजानैं ॥ तिसतैंअनंतर यहहमाराचित्त अबी समाहितनहींभयाहै इसप्रकारकानिश्चयकरिकै सोयोगीपुरुष जैसे लयविक्षेपदोषतैं ताचित्तकूंनिवृत्तकऱ्याथा तैसे ताकषायदोषतैंभी तिसचित्तकूं निवृत्तकरै ॥ तिसतैंअनंतर लयविक्षेपकषायदोषतैंरहितहुआ सोचित्त परिशेषतैं तिस समरूपब्रह्मकूंही प्राप्त होवैहै ॥ तासमब्रह्मविषेप्राप्तहुए चित्तकूं सोयोगीपुरुष कषायलयकीभ्रांतिकरिकै नहींचलायमानकरै ॥ किंतु धैर्य अनुगृहीतबुद्धिकरिकै तालयकषायकीभ्रांतितैं विवेचनकरिकै तिससमब्रह्मकीप्राप्तिविषेही अत्यंत प्रयत्नकरिकै तिसचित्तकूंस्थापनकरै इति ॥ ३ ॥ किंवा सोनिरोधसमाधि

यां हैं तिनवृत्तियोंविषे किसीभीवृत्तिकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथालयकेहेतुरूपजे निद्राशेष बहुअन्नभोजन परिश्रम इत्यादिकनिमित्तहैं ॥ तिन्होंकेमध्यविषे जिसजिसनिमित्ततैं लयकेअभिमुखहुआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्थात् लीनहुआ समाधिकीविरोधिनिद्रारूपवृत्तिकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिसतिस विक्षेपकेनिमित्ततैं तथा लयकेनिमित्त इसमनकूं नियम करिकै अर्थात्सर्ववृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्वप्रकाशपरमानंदघनआत्माविषेही निरुद्धकरै ॥ जिसआत्माविषे निरुद्धहुआ यहमन विक्षेपकूंभी प्राप्तहोवैहैनहीं तथा लयकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहसर्वअर्थ श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उपायेननिगृह्णीयाद्विक्षिप्तंकामभोगयोः ॥ सुप्रसन्नंलयेचैवयथाकामोलयस्तथा ॥ १ ॥ दुःखंसर्वमनुस्मृत्य कामभोगान्निवर्त्तयेत् ॥ अजंसर्वमनुस्मृत्यजातं नैवतुपश्यति ॥ २ ॥ लयेसंबोधयेच्चित्तंविक्षिप्तंशमयेत्पुनः ॥ सकषायंविजानीयाच्छमप्राप्तंन चालयेत् ॥ ३ ॥ नास्वादयेत्सुखंतत्रनिःसंगःप्रज्ञयाभवेत् ॥ निश्चलंनिश्चलंचित्तमेकीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ४ ॥ यदानलीयतेचित्तंनचविक्षिप्यतेपुनः ॥ अलिंगनमनाभासंनिष्पन्नंब्रह्मतत्तदा ॥ ५ ॥ अब यथाक्रमतैं इनपंचश्लोकोंकाअर्थनिरूपणकरैं हैं ॥ कामभोग यादोनोंविषे विक्षिप्तजोमनहै ॥ अर्थात् प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति याच्यारिवृत्तियोंविषे किसीभीवृत्तिरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजोमनहै तिसमनकूं यहयोगीपुरुष वक्ष्यमाणवैराग्यअभ्यासरूप उपायकरिकै प्रत्यक्आत्माविषेही निरुद्धकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकी दोप्रकारकी अवस्थाहोवैं हैं॥एकतौ चिंत्यमान अवस्थाहै॥और दूसरी भुज्यमान अवस्थाहोवैहै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकाचिंतनकरणायाकानाम चिंत्यमान अवस्थाहै ॥ और तिनशब्दादिविषयोंकाजोभोगणाहै ताकानाम भुज्यमान अवस्थाहै ।। तिनदोनोंअवस्थावोंकेबोधनकरणेवासतै (कामभोगयोः) यावचनविषे द्विवचनकथनकऱ्याहै ॥ तेदोनोंअवस्था मनकेविक्षेपकाही हेतुहोवैहैं ॥ और लयभावकूंप्राप्तहोवैजिसविषे ताकानाम लयहै ऐसीसुषुप्तिहै तासुषुप्तिरूपलयविषे यहमन सुप्रसन्नहोवै है अर्थात् सर्वआयासतैंरहितहोवैहै ॥ ऐसे सुप्रसन्नमनकूंभीसोयोगीपुरुष निग्रहकरै ॥ शंका—सुषुप्तिविषे सर्वविक्षेपरूपआयासतैं जोमन रहितहोवैहै तौ किसवासतै तामनकानिग्रहकरणा ऐसीशंकाकेहुए कहैंहैं (यथाकामोलयस्तथाइति) जैसे काम विषयगोचर प्रमाणादिकवृत्तियोंकूं उत्पन्नकरिकैसमाधिकाविरोधीहोवै है ।। तैसे सोलयभी निद्रारूपवृत्तिकूंउत्पन्नकरिकै समाधिकाविरोधीहीहोवै है ॥ जिसकारणतैं सर्ववृत्तियोंकानिरोधही समाधिकह्याजावैहै।।यातैं कामादिककृतविक्षेपतैं जैसे सोमन निरोधकरणेयोग्यहै ।। तैसे परिश्रमादिकृतलयतैंभी सोमन निरोधकरणेयोग्यहैइति ।। १ ।। तहांप्रथम श्लोकविषे । उपायेननिगृह्णीयात् । यावचनकरिकैसामान्यतैं उपाय कथनकऱ्या ।। सोमनकेनिग्रहकरणेकाउपाय कौनहै ऐसीशंकाकेहुए ताउपायकाकथनकरैं हैं ।। (दुःखंसर्वमनुस्मृत्येति) ।। अविद्याकरिकैरचित जितनाकयहद्वैतप्रपंचहै सोसर्वद्वैतप्रपंच परिच्छिन्नहोणेतैंदुःखरूपही है इसप्रकारकानिरंतर चिंतनकरिकै ।। अर्थात् (योवैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति अथयदल्पंतन्मर्त्यंतद्दुःखमिति) ।। अर्थयह ।। जोचेतन देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै सोईही सुखरूपहै ।। परिच्छिन्नपदार्थों

वैनहीं ॥ तथा ताघटकेमुखकेबंदकियेहुएभी सोआकाश ताघटकेअंतरहीरहैहै ॥ तैसे यहचित्तभी उत्पन्नहुआही चैतन्यआत्माकरिकैपूर्णहीउत्पन्नहोवैहै ॥ उत्पन्नहुए तिस चित्तविषे पश्चात् मूषाविषेपायेहुएद्रुततात्रकीन्याईं घटदुःखादिरूपता भोगकेहेतुधर्मअधर्मसहकृतसामग्रीकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां योगाभ्यासकेबलतैं तिस चित्तैं ताघटदुःखादिकअनात्माकारताकेनिवृत्तकियेहुएभी विनाहीनिमित्ततैं जोचित्तविषेचिदाकारताहै साचिदाकारता ताचित्तैं निवृत्तकरी जावैनहीं ॥ यातैं निरोधसमाधिकरिकैसर्ववृत्तियों तैंरहित तथासंस्कारमात्ररूपहोणेतैं अत्यंतसूक्ष्म ऐसाजो निरुपाधिकचेतनआत्माकेअभिमुख चित्तहै ॥ तानिरुद्धचित्तकरिकै वृत्तितैंविनाही निर्विघ्नआत्माकाअनुभव संभवहोइसकैहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ॥ (आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत्) सर्वउपाधितैंरहित प्रत्यक्आत्माविषेहै संस्था क्या समाप्ति जिसकी ताकानाम आत्मसंस्थहै ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकीवृत्तियोंतैंरहित स्वभावसिद्धआत्माकारमात्रजोमनहै ॥ ऐसेआत्मसंस्थमनकूं पूर्वउक्तधैर्यकरिकैअनुगृहीतबुद्धितैं संपादनकरिकै असंप्रज्ञातसमाधिविषेस्थितहुआ यहयोगीपुरुष किसीभी वस्तुका चिंतनकरैनहीं ॥ अर्थात् किसीअनात्मपदार्थकूं अथवा प्रत्यक्आत्माकूं वृत्तिकरिकैविषयकरैनहीं ॥ काहेतैं तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकालविषे जोकदाचित् अनात्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैगा तौ तिससमाधितैं व्युत्थानही प्राप्तहोवैगा और कदाचित् आत्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैगा तौ संप्रज्ञातसमाधिही प्राप्तहोवैगी ॥ असंप्रज्ञातसमाधि रहैगीनहीं ॥ यातैं सोयोगीपुरुष ताअसंप्रज्ञातसमाधिकी स्थिरताकरणेवासतै किसीभी आत्माकारवृत्तिकूं अथवा अनात्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैनहीं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार निरोधसमाधिकूंकरताहुआ योगीपुरुष आपणेमनकूं सर्वओरतैंरोकिकै अंतरआत्माविषे निरुद्धकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यतोयतोनिश्चरतिमनश्चंचलमस्थिरम् ॥ ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत् ॥ २६ ॥ यतः । यतः । निश्चरति । मनः । चंचलम् । अस्थिरम् । ततः । ततः । नियम्य । एतत् । आत्मनि । एव । वशम् । नयेत् ॥२६॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसजिसनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहुआ तथालयकेअभिमुखहुआ यहमन विषयाकारवृत्तिकूंउत्पन्नकरै है तिस तिसनिमित्ततैंइसमनकूंरोकिकै आत्माविषेही निरोधकूं प्राप्तकरै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! चित्तकूंविक्षेपकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दादिकविषयहैं तिनशब्दादिकविषयोंकेमध्यविषे जिसजिसशब्दादिकविषयरूपनिमित्ततैं तथारागद्वेषादिकनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहुआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्थात् विषयकेअभिमुखहुई जेप्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति यहसमाधिकीविरोधि च्यारिप्रकारकीवृत्ति

तापुरुषतैंपरे कोईभीपदार्थहैनहीं ॥ किंतु सोपुरुषही सर्वकीअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहैइति ॥ तहां जैसे गोमहिषादिक पशुवोंविषे वाक्‌इंद्रियकानिरोधरहैहै ॥ तैसे वाकइंद्रियकानिरोधकरणा यहप्रथमभूमिका कहीजावैहै ॥ और जैसे बालकविषे तथामूढपुरुषविषे निर्मनस्त्वरहैहै तैं से निर्मनस्त्ववालाहोणा यहदूसरीभूमिका कहीजावैहै ॥ और जसे तंद्राअवस्थाविषे मैंब्राह्मणहूं मैंमनुष्यहूं याप्रकारका अहंकार रहतानहीं ॥ तैसे सर्वदा अहंकारतैंरहितहो यहतृतीयभूमिका कही जावैहै और जैसे सुषुप्तिविषे महत्तत्त्वनहींरहैहै ॥ तैसे जोमहत्तत्त्वतैंरहितपणाहै ॥ सोचतुर्थभूमिका कहीजावैहै ॥ इनच्यारिभूमिकावोंकीअपेक्षाकरिकैही श्रीभगवान्नैं (शनैःशनैरुपरमेत्) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ इहां यद्यपि महत्तत्त्व तथाशांतआत्मा यादोनोंकेमध्यविषे (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाः) इसश्रुतिनैं तामहत्तत्त्वकाउपादानकारण अव्याकृतनामातत्त्व कथनकऱ्याहै ॥ तथापि जैसे वागादिकतत्त्वोंका मनादिकतत्त्वोंविषे लयश्रुतिनैं कथनकऱ्याहै तैसे तिसमहत्तत्त्वनामा तत्त्वका अव्याकृत नामा तत्त्वविषे लय श्रुतिनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ जोकदाचित् तामहत्तत्त्वका तिसअव्याकृतविषेलय करिये ॥ तौसुषुप्तिकीन्याईं स्वरूपलयकीही प्राप्तिहोवैगी ॥ और सोअव्याकृतविषेमहत्तत्त्वकालय भोगप्रदकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर पुरुषप्रयत्नतैंविना स्वतःहीसिद्धहै ॥ तथा सोअव्यक्तविषेमहत्तत्त्वकालय तत्त्वदर्शनविषे उपयोगीभीहैनहीं और (दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः) याप्रकारकावचन पूर्वकथनकरिकै तिससूक्ष्मताकीसिद्धिवासतै (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञः) इसश्रुतिनैं निरोधसमाधिकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं सोनिरोधसमाधि जिज्ञासुजनकूंतौ तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै ॥ औरतत्त्ववेत्तापुरुषकूंतौ सर्वक्लेशोंकीनिवृत्तिरूपजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै ॥ यातैं जिज्ञासुजननैं तथातत्त्ववेत्तापुरुषनैं सोनिरोधसमाधि अवश्य करिकैसंपादनकरणा ॥ शंका—हे भगवन् ! शांतआत्माविषे अवरुद्धजोचित्तहै सोचित्त तिसकालविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितहै ॥ यातैं सुषुप्तचित्तकीन्याईं तिसचित्तविषे आत्मदर्शनकीहेतुताही संभवतीनहीं ॥ समाधान—तिसनिरोधकालविषे सर्ववृत्तियोंकेअभावहुएभी तिसनिरुद्धचित्तकरिकै स्वतःसिद्धजोआत्माकादर्शनहै ताकूं कोईभीवादी निवृत्तकरणेविषे समर्थहैनहीं यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (आत्मानात्माकारंस्वभावतोऽवस्थितंसदाचित्तम् ॥ आत्मैकाकारतयातिरस्कृतानात्मदृष्टिंविदधीत) ॥ अर्थयह ॥ यहचित्त आपणेसविषयस्वभावतैंही सर्वदा आत्माकार अथवा अनात्माकार हुआही स्थितहोवै है ॥ तहां यहअधिकारीपुरुषताचित्तकी आत्मैकाकारताकूंसंपादनकरिकै अनात्मदृष्टिकापरित्यागकरिकै ताचित्तकानिरोधकरै ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे उत्पन्नहुआघट स्वतः आकाशकरिकैपूर्णहुआही उत्पन्नहोवैहै ॥ किसीपुरुषप्रयत्नकरिकै सोघट आकाशकरिकैपूर्णकऱ्याजावैनहीं ॥ और ताघटविषे जलतंडुलादिकपदार्थोंकाजो पूरणहोवैहै सोतौ ताघटकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर पुरुषकेप्रयत्नकरिकैहोवैहै ॥ तहां तिसघटतैं जलतंडुलादिकोंकेनिकास्येहुएभी सोआकाश ताघटतैंबाहरिनिकास्याजा

लौकिक तथा वैदिक जितनीकशब्दहै ॥ तिसवाचाकूं यहबुद्धिमान् अधिकारी सव्यापारसनविषेलयकरै ॥ अर्थात् वाक्इंद्रियकेसर्वव्यापारकापरित्याग करिकै केवल मनकेव्यापारमात्रवालाहोवै ॥ तहांश्रुति ॥ (नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितत) ॥ अर्थयह ॥ अनात्मपदार्थोंकेवाचक बहुतशब्दोंकूं यहअधिकारीपुरुष नहींउच्चारणकरै ॥ जिसकारणतैं तेशब्द वाक्इंद्रियकूं केवल परिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ और वागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाश्रोत्रादि कपंचज्ञानइंद्रिय यहदशइंद्रियहैं सहकारीजिसके तथानानाप्रकारकेसंकल्पविकल्पोंकासाधनरूप ऐसाजोकारणरूपमनहै तिसमनकूं ज्ञानरूपआत्माविषेलयकरै इहां (जानातीतिज्ञानम्)॥ अर्थयह॥ जो वस्तुकूं जानैं ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ज्ञानशब्द ज्ञाताकावाचकहै ॥ ऐसाज्ञाताआत्माविषेतामनकूंलय करै ॥ अर्थात् आत्माविषे ज्ञातृपणेकाउपाधिजोअहंकारहै ताअहंकारविषे तिसमनकालयकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसमनकेसंकल्पविकल्पादिकसर्वव्यापारोंकूंपरित्या गकरिकै ताअहंकारमात्रकूं परिशेषतैं राखै ॥ तिसतैंअनंतर तिसज्ञातृपणेकाउपाधिअहंकाररूपज्ञानकूं सर्वत्रव्यापकमहत्तत्त्वआत्माविषे लयकरै ॥ तहां सोअहंकार दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ विशेषरूपअहंकारहोवैहै ॥ दूसरा सामान्यरूपअहंकार होवैहै ॥ तहां यहदेवदत्तनामामैं इसयज्ञदत्तकापुत्रहूं इसप्रकारजो स्पष्टअभि मानहै सोविशेषरूपअहंकारहै ॥ यहहीविशेषरूपअहंकार व्यष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ और अहमस्मि इतनामात्रजोअभिमानहै सोअभिमान सामान्यअहंकार है ॥ सोसामान्यअहंकारही समष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ सोसमष्टिअहंकार सर्वत्र अनुस्यूतहोणेतैं हिरण्यगर्भ तथा महान्आत्मा कह्याजावैहै ॥ तिसदोनोंप्रकारके अहंकारतैं पृथक्कऱ्याहुआ जोसर्वकेअंतर चिदेकरसआत्माहै ताकानाम शांतआत्माहै तिसशांतआत्माविषे तिस समष्टिबुद्धिरूपमहान्आत्माकूं लयकरै ॥ इसप्र कार तासमष्टिबुद्धिरूपमहत्तत्त्वका कारणरूपजो अव्यक्तहै तिसअव्यक्तकूंभी ताशांतआत्माविषे लयकरै ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरूपसंघातकेलयकियेतैं अनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं सर्वउपाधियोंतैंरहित त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप शुद्धआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तहां तिस शुद्धचिदेकरसप्रत्यक्आत्माविषे जडशक्तिरूप अनिर्वचनीयअव्यक्तनामा प्रकृति उपाधिरूपहै ॥ साप्रकृति प्रथम तासामान्यअहंकाररूप महत्तत्त्वनामकूंधारणकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर बाह्यविशे षअहंकाररूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसतैंभीबाह्य मनरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसमनतैंभीबाह्य वाक्इंद्रियरूपकरिकै प्रगटहोवैहै इति ॥ यहसर्वअर्थ साक्षात्श्रुतिनैंही कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (इंद्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तम व्यक्तात्पुरुषःपरः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिःइति) ॥ अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं॥ और तिनअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और तामनतैंव्य ष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्त्वनामसमष्टिबुद्धि परहै ॥ और तामहत्तत्त्वतैं अव्यक्त परहै ॥ और ताअव्यक्ततैं अधिष्ठानरूप परमात्मापुरुष परहै ॥

करिके मनकानिरोधकरै ॥ अर्थात् अध्यात्मशास्त्रकेविचारतैं उत्पन्नभयाजो तिनविषयोंविषे अशोभनत्वनिश्चयहै ॥ ताअशोभनत्वनिश्चयकरिकै तिसशोभनत्वअध्यासकेबाधहुएतैं अनंतरस्त्रक्चंदनवनिताआदिकदृष्टविषयोंविषे तथा चंद्रलोक पारिजात अमृत अप्सरा इत्यादिकअदृष्ट विषयोंविषे श्वानकेवांतग्रासकी न्याईं सर्वकर्मोंका सूक्ष्मवासनासाहित परित्यागकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ और ताविषयकीअभिलाषारूपकामपूर्वकही नेत्रादिकइंद्रियोंकी तिनविषयोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ कामनैंविना तिनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकामके अभावहुए विवेकयुक्तमनकरिकै चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमूहकूं रूपादिकसर्वविषयोंतैं निवृत्तकरिकै यहअधिकारी पुरुष शनैःशनैःकरिकै आपणेमनकानिरोधकरै ॥ इसप्रकार अगलेश्लोककेसाथि इसश्लोककाअन्वयकरणा ॥ इहां (अशेषतः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकन्या ॥ जैसे किसीपात्रविषे तैलकूं पाइकै तिसपात्रतैं पुनःसोतैल निकासिदइये ॥ तिसतैंअनंतर तापात्रविषे जोलेपरूपकरिकै तैलरहै है ताकानाम शेषहै ॥ तैसे विषयअभिलाषारूपकामके परित्यागकियेहुएभी जबपर्यंत तिसकामका वासनारूपशेषरहै है ॥ तबपर्यंत तिनवासनावोंकरिकै आकर्षणकूंप्राप्तहुआ सो मन समाधिविषेस्थिरहोवैनहीं ॥ यातैंवासनारूपशेष जैसेबाकीनहींरहै तैसे तिनसर्वकामोंका परित्यागकरै ॥ और (मनसैव) यावचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकन्या ॥ यहनेत्रादिकइंद्रिय मनकेसंबंधतैंविना किसीभीविषयविषे स्वतंत्र प्रवृत्तहोवैंनहीं ॥ किंतु मनकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकैही यहनेत्रादिक आपणेआपणेविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ यातैं तिननेत्रादिकइंद्रियों केसाथि जोमनकासंबंध नहींकरणाहै यहही तिननेत्रादिकइंद्रियोंका नियमहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥

(मू. श्लो.) शनैःशनैरुपरमेद्बुद्ध्याधृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत् ॥ २५ ॥ शनैः । शनैः । उपरमेत् । बुद्ध्या । धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थम् । मनः । कृत्वा । न । किंचित् । अपि । चिंतयेत् ॥ २५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! सोयोगीपुरुष धैर्ययुक्त बुद्धिकरिकै शनैः शनैःकरिकै मनकानिरोधकरै तथा प्रत्यक् आत्माविषेस्थित मनकूं करिकै किंचिंतमात्र भी नहीं चिंतनकरै ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । धैर्यरूपजाधृतिहै ताधृतिकरिकैअनुगृहीत जाअवश्यकर्त्तव्यताकानिश्चयरूपबुद्धिहै ॥ अर्थात् जिसीकिसीकालविषे यहयोग अवश्यकरिकैसिद्धहोवैगा याकेविषेबहुतशीघ्रताकरणेकाक्याप्रयोजनहै याप्रकारके धैर्यकरिकैअनुगृहीतजाबुद्धिहै ताबुद्धिकरिकै यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै भूमिकावोंके जयक्रमतैं शनैःशनैःकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्व योगकासाधनरूपकरिकैकथनकन्येजे अनिर्वेद तथानिश्चय तेदोनों दिखाए ॥ यहवार्त्ताश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ॥ ज्ञानमात्मनिमहतिनियच्छेत्तद्यच्छेच्छांतआत्मनीति) ॥ अर्थयह ॥

समुद्रकूं मैं अवश्यकरिकैसुकावौंगा याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिससमुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहोताभया ॥ तहां आपणेमुखकेअग्रभागकरिकै एकजलकेबिंदुकूंग्रहणकरिकै तासमुद्रतैंबाहरिजाइकै छोडताभया ॥ तिसकालविषे ताटिटिभपक्षीकूं आपणेबांधव बहुतपक्षी तासमुद्रसुकावणेतैं निवृत्तकरतेभये ॥ तौभी सोटिटिभपक्षी तिसतैं उपराम नहींहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसस्थानविषे दैवयोगतैं नारदमुनि आवताभया ॥ सोनारदमुनि भी तिसटिटिभपक्षीकूं तासमुद्रके सुकावणेतैं निवृत्तकरताभया ॥ तौभी सोटिटिभपक्षी तिसतैंनिवृत्त नहींहोताभया ॥ किंतु इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे मैं इससमुद्रकूं अवश्य करिकैसुकावौंगा याप्रकारकीप्रतिज्ञा सोटिटिभपक्षी नारदकेआगेकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर दैवकी अनुकूलतातैं सोकृपालुनारद गरुडकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेगरुड ! यहसमुद्र तुम्हारेसजातीयपक्षियोंकाद्रोहकरिकै तुम्हाराही अपमानकरैहै ॥ याप्रकारकावचन कहिकै सोनारदमुनि तागरुडकूं तहांलेजाताभया ॥ तिसगरुडके पक्षों के पवनकरिकै सूकताहुआ सोसमुद्रभी भयभीतहोइकै तिनअंडोंकूं तिसटिटिभपक्षीकेताईं देताभयाइति ॥ इसप्रकार जोयोगीपुरुष खेदतैंरहितहोइकै तिसमनकेनिरोधरूप परमधर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसयोगीपुरुषऊपरि साक्षात् आपईश्वरही अनुग्रहकरैहै ताईश्वरकेअनुग्रहकरिकै तिसटिटिभपक्षीकीन्याईं तिसयोगीपुरुषकाभी सोमनकानिरोधरूपवांच्छित अर्थ अवश्यकरिकैसिद्धहोवैहै ॥ यहटिटिभपक्षीआख्यान आत्मपुराणके एकादशअध्यायविषे हम विस्तारतैं कथनकरिआयेहैंइति ॥२३॥ ❀ ॥ तहां किसउपायकरिकै सोयोगअभ्यासकरणेयोग्यहै ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाके हुए श्रीभगवान् तायोगके उपायकावर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वासर्वानशेषतः ॥ मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः ॥ २४ ॥ संकल्पप्रभवान् । कामान् । त्यक्त्वा । सर्वान् । अशेषतः । मनसा । एव । इंद्रियग्रामम् । विनियम्य । समंततः ॥२४॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहअधिकारी पुरुष संकल्पजन्य सर्व कामोंकूं वासनासहित परित्यागकरिकै तथा मनकरिकै ही इंद्रियोंकेसमूहकूं सर्वविषयोंतैं रोकिकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । जेविषय इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनर्थकाहेतुहोणेतैं अत्यंतदुष्टहैं ॥ ऐसेदुष्ट विषयोंविषेरह्याहुआजोअशोभनपणाहै ॥ ताअशोभनपणेकूं नदेखिकै जो तिनविषयोंविषे यह विषय बहुतरमणीकहैं याप्रकारका शोभनपणेकाअध्यासहै ताकानाम संकल्पहै ॥ तासंकल्पतैंउत्पन्नभयेजे यह विषय हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकीविषयअभिलाषारूपकामहैं ॥ तिन शोभनअध्यासजन्य विषयकीअभिलाषारूप सर्वकामोंकूं अशेषतैं परित्यागकरिकैयहअधिकारी पुरुष शनैःशनैः

गवियोगम् । योगसंज्ञितम् । सः । निश्चयेन । योक्तव्यः । योगः । अनिर्विण्णचेतसा ॥२३॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दुःखके संबंधतैंरहित तिसनिरोधअवस्थाकूंही योगशब्दकाअर्थ जानणा सो योग निश्चयकरिके तथा उद्वेगतैंरहितचित्तकरिकैही अभ्यास करणेयोग्यहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । (यत्रोपरमतेचित्तम्) इसवचनतैंआदिलेके बहुतविशेषणोंकरिकै कथनकऱ्याजो सर्ववृत्तियोंतैंरहित तथापरमानंदकाअभिव्यंजक चित्तकीनिरोधनामा अवस्थाविशेषहै सोचित्तवृत्तियोंकानिरोध चित्तवृत्तिमयसर्वदुःखोंकाविरोधिहोणेतैं तिनदुःखोंकेसंबंधकावियोगरूपहीहै ॥ अर्थात् अध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक जितनेकदुःखहैं ॥ तिनसर्वदुःखोंकेसंबंधका जिसनिरोधविषे अभावहै ॥ यातैं सोसर्ववृत्तियोंकानिरोध यद्यपि वियोग इस नामकरिकेकहणेकूंयोग्यहै ॥ तथापि विरोधिलक्षणाकरिकै तिसनिरोधकूं योगशब्दकाअर्थ जानणा ॥ तायोगशब्दकेअनुसारतैं सोनिरोध किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इसीअर्थकूं भगवान्पतंजलिनेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) ॥ अर्थयह ॥ सर्वचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै ताकानाम योगहैइति ॥ इतनैंकहणेकरिके (योगोभवतिदुःखहा) इसवचनकरिकै जोपूर्व योगकाफल कथनकऱ्याथा ताकाउपसंहारकऱ्या ॥ अब निश्चयविषे तथानिर्वेदतैं रहितपणेविषे तिसयोगकीसाधनरूपताकूं श्रीभगवान कथनकरैं हैं ॥ (सनिश्चयेनयोक्तव्यःइति) इसप्रकारकेमहान्फलकीप्राप्तिकरणेहारासोयोग इसअधिकारीपुरुषनैं निश्चयकरिके अभ्यासकरणेकूंयोग्यहै ॥ इहां आचार्यकेवचनोंके तथाशास्त्रकेवचनोंके तात्पर्यका विषयीभूत जो जो अर्थ है सोसर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीदृढबुद्धिकानाम निश्चयहै ॥ ऐसेनिश्चयकरिके सोयोगाभ्यासकरणा ॥ तथा इसअधिकारीपुरुषनैं निर्वेदतैंरहितहोइकेभी तायोगाभ्यासकूंकरणा ॥ इहां इतनैंकालपर्यंत अभ्यासकरतेहुएभी हमारेकूं योगसिद्धहुआनहीं तौइसतैंआगे कैसेसिद्धहोवैगा याप्रकारकेअनुतापकानाम निर्वेदहै ॥ ऐसेनिर्वेदतैंरहितचित्तकरिकै तायोगाभ्यासकूं करै अर्थात् निरंतरअभ्यासकरतेहुए इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे अवश्यकरिकैयोगासिद्धहोवैगा याकेविषे अतिशीघ्रताकरणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ याप्रकारकेधैर्ययुक्तमनकरिके तिसयोगाभ्यासकूंकरै ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्सेकउदधेर्यद्वत्कुशाग्रेणैकबिंदुना ॥ मनसोनिग्रहस्तद्वद्भवेदपरिखेदतः) ॥ अर्थयह ॥ जैसे कोईटिटिभपक्षी समुद्रकेसुकावणेकानिश्चयकरिकै कुशाकेअग्रभागसमान आपणीचंचुसे समुद्रकेजलकेबिंदुकूंग्रहणकरिके तीरऊपरि पावताभया ॥ तैसे खेदतैंरहितहोइके अभ्याकरणेतैंही इसमनकानिग्रह होवैहै ॥ इहां वेदांतसंप्रदायकेवेत्ता वृद्धपुरुष याप्रकारकीआख्यायिकाकूं कहतेभयेहैं ॥ समुद्रकेतीरविषेस्थित किसीटिटिभनामापक्षीकेअंडोंकूं समुद्र आपणेतरंगकेवेगकरिकै हरणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्होइके इस

(मू. श्लो.) यंलब्ध्वाचापरंलाभंमन्यतेनाधिकंततः ॥ यस्मिन्स्थितोनदुःखेनगुरुणापिविचाल्यते ॥ २२ ॥ यम् । लब्ध्वा । च । अपरम् । लाभम् । मन्यते । न । अधिकम् । ततः । यस्मिन् । स्थितः । न । दुःखेन । गुरुणा । अपि । विचाल्यते ॥ २२ ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन ! जिसअवस्थाविशेषकूं प्राप्तहोइकै सोयोगीपुरुष दूसरे लाभकूं तिसतें अधिक नहीं मानताहै तथा जिस अवस्थाविषे स्थितहुआ सोयोगीपुरुष महान् दुखनें भी नहीं चलायमानकरीताहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! निरतिशय आत्मास्वरूपनित्यसुखका अभिव्यञ्जक जा सर्ववृत्तियोंतैंरहिताचित्तकीनिरोधनामा अवस्थाविशेषहै ॥ ऐसीजिसअवस्थाविशेषकूं निरंतर योगाभ्यासकीपरिपक्वतातैं संपादनकरिकै योगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषतैंपरे दूसरेकिसीलाभकूं अधिकमानतानहीं ॥ किंतु तिसअवस्थाविशेषकीप्राप्ति करिकेही सोयोगीपुरुष आपणेकूं कृतकृत्य मानेहै ॥ तथा प्राप्तप्रापणीय मानेहै ॥ अनेकउपायोंकरिकैप्राप्तहोणेहारेसुख जिसकूं एकहीकालविषेप्राप्तहोवें ताकूं प्राप्तप्रापणीय कहेहैं ॥ तहांस्मृति (आत्मलाभान्नपरंविद्यते) ॥ अर्थयह ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेक स्वर्गलोक वैकुंठलोक गोलोक ब्रह्मलोक इत्यादिकलोकहैं तेसर्वलोक सातिशयता तथादीनता तथानीचैपतनकाभय तथाईर्षा इत्यादिकदोषोंकरिकै सर्वदाग्रस्तहैं ॥ यातैं तेसर्वलोक अलाभरूपहीहैं ॥ यद्यपि वेदांतसिद्धांतविषे प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मसाक्षात्कारही परमलाभकह्याहै ॥ यातैं चित्तकीनिरोधअवस्थाकूंपरमलाभरूपता संभवतीनहीं ॥ तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे महावाक्यजन्यवृत्तिरूपज्ञानकूंभी सत्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै तैसे इहां श्रीभगवान्नैंभी तापरमलाभरूपआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति करणेहारी चित्तकीनिरोधअवस्थाकूं परमलाभरूपकरिकै कथनकऱ्याहै इति ।। तहां श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै तायोगीपुरुषकातिससमाधितैं विचलन नहींहोवैहै यहवार्त्ता कथनकरी ।। अब शीत आतप वायु मशक इत्यादिकोंनैंकऱ्याजोउपद्रवहै ताउपद्रवकेनिवृत्तकरणेवास्तैंभी तायोगीपुरुषका तिससमाधितैंविचलन नहींहोवैहै इसअर्थकूं श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै कथनकरेहै (यस्मिन्स्थितः) इति । जिसआत्मास्वरूपसुखकाअभिव्यंजक सर्ववृत्तियोंतैंरहित चित्तकीअवस्थाविशेषविषे स्थितहुआ योगीपुरुष शस्त्रप्रहारादिकनिमित्तजन्य महान्दुःखनैंभी चलायमान करीतानहीं तौ शीत आतपादिकोंके उपद्रवजन्यअल्पदुःख तायोगीपुरुषकूं कैसेचलायमानकरिसकैंगे ।। किंतु तेदुःख नहींचलायमानकरिसकैंगे इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ (तहां यत्रोपरमतेचित्तं) इसलोकतैंलेकेतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीजाचित्तकीअवस्थाविशेषहै ताअवस्थाविशेषविषे योगशब्दकीअर्थरूपताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू. श्लो.) तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितम् ॥ सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ तम् । विद्यात् । दुःखसंयो

पुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरैहै ॥ तथा जिसअवस्थाविशषेविषेस्थितहुआ यह विद्वान्पुरुष आपणे परिपूर्णअद्वितीयआत्मस्वरूपतैं कदाचित्भी चलायमानहोतानहीं ॥ तिसनिरोधपरिणामरूपअवस्थाकूं ही योगशब्दकाअर्थरूप जानणा इहां श्रीभगवान्नैं तास्वरूपसुखके (आत्यंतिकम् अतिइंद्रियं बुद्धिग्राह्यं) यहतीनविशेषणकथनकरे हैं तहां (आत्यंतिकं) याविशेषणकरिकैतौ ताब्रह्मरूपसुखका (योवैभूमातत्सुखम्) इसश्रुतिकरिकै सिद्ध देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंर हित अनंतस्वरूप कथनकऱ्या ॥ और (अतींद्रियं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुखविषे विषयजन्यसुखतैंभिन्नपणा कथनकऱ्या ॥ जिस कारणतैं सोविषयजन्यसुख विषयइंद्रियकेसंबंधकीअपेक्षा अवश्यकरिकैकरेहैं और (बुद्धिग्राह्यं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुख विषे सुषुप्तिकेसुखतैंभिन्न पणा कथनकऱ्या ॥ काहे तैं सुषुप्तिअवस्थाविषे बुद्धिकेलयहोणेतैं सोसुषुप्तिकासुखबुद्धिकरिकैग्रहणहोवैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषेतौ साबुद्धि सर्ववृत्तियों तैंरहितहुई स्थितहोवैहै ॥ यातैं समाधिअवस्थाविषे सोब्रह्मरूपसुख बुद्धिकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ यहवार्त्ता गौडपादाचार्य नैंभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोकार्द्धम् ॥ (लीयतेतुसुषुप्तौतन्निगृहीतंनलीयते ॥) अर्थयह ॥ सोमन सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ अज्ञानमें लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समाधिविषेतौ सोनिगृहीतमन लयभावकूं प्राप्तहोवैनहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (समाधिनिर्धूतमलस्यचेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् ॥ नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदायदे तदंतःकरणेनगृह्यते ॥) अर्थयह ॥ समाधिकरिकै निवृत्तहोइगयाहै रजतमरूपमल अथवा पापरूपमलाजिसका ऐसाजो आत्माविषेस्थितचित्तहै ॥ ताचित्तकूं तिस कालविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै सोसुख वाणीकरिकै वर्णकऱ्याजावैनहीं ॥ किंतु निरुद्धहुईहैंसर्ववृत्तियाँजिसकी ऐसेअंतःकरणकरिकैही सोसुख ग्रहणकऱ्याजावैहै इति ॥ किंवा तासमाधिअवस्थाविषे वृत्तियोंकरिकै सुखका आस्वादनकरणा श्रीगौडपादाचार्य नैंही निषेधकऱ्याहै ॥ तहांश्लोकार्द्ध ॥ (नास्वादयेत्सुखंतत्रनिःसंगः प्रज्ञयाभवेत्) अर्थयह ॥ इससमाधिविषे मैं इसमहान्सुखकूं अनुभवकरताहूं याप्रकारकीसविकल्पकवृत्तिकानाम प्रज्ञाहै ॥ ताप्रज्ञाकरिकै जोसुखकाआस्वादनहै सोव्युत्थानरूपहोणेतैं समाधिकाविरोधीहीहै ॥ यातैं ताप्रज्ञाकरिकै सुखकेआस्वादनकूं योगीपुरुष कदाचित्भी नहींकरै ॥ इसीकारणतैं सोयोगीपुरुष ताप्रज्ञाकेसाथि संगतैंरहितहोवे ॥ अर्थात् तावृत्तिरूपप्रज्ञाकूं निरोधकरैइति ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहिताचित्तकरिकै तास्वरूपसुखकाअनुभवतौ तिसीगौडपादाचार्य नैंही (स्वस्थंशांतंसनिर्वाणमकथ्यंसुखमुत्तमम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ इसअर्थकूं आगेस्पष्टकरैंगे इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे (यत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः) इसवचनकरिकै जिसअवस्थाविशेषविषेस्थितहुआ यहयोगीपुरुष आपणे अद्वितीयआत्मस्वरूपतैं चलायमानहोतानहीं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै तिसीअर्थका उपपादनकरे हैं ।

टीका। हे अर्जुन ! निरंतर श्रद्धापूर्वक तायोगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहुए यहनिरुद्धहुआचित्त एकवस्तुकूं विषयकरणेहारीवृत्तियोंकाप्रवाहरूप एकाग्रताकूंपरित्यागकरिकै इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्याई उपशमकूंप्राप्तहोवै है ॥ अर्थात् सोचित्त सर्ववृत्तियोंतैंरहितहोणेतैं सर्ववृत्तियोंके निरोधरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहुए रजतमकरिकैनहींपराभवकूंप्राप्तहुएशुद्धसत्त्वमात्ररूपअंतःकरणकरिकैपरमात्मातैंअभिन्न सत् चित् आनंदघन अनंत अद्वितीय प्रत्यक्आत्माकूं वेदांतप्रमाणजन्यवृत्तिकरिकै साक्षात्कारकरताहुआ तिसपरमानंदघनआत्माविषेही तोषकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआत्मातैंभिन्न देहइंद्रियादिरूपसंघातविषे तथातासंघातके भोग्यपदार्थोंविषे तुष्टिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तहांश्रुति ॥ (समोदतेमोदनीयंहिलब्ध्वा) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मातैं आदिलैकेस्तंबपर्यंत सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोपरमात्मादेव है तापरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकै सोविद्वान्पुरुष मैंकृतार्थहूं याप्रकारकेमोदकूंप्राप्तहोवै है इति ॥ तिससर्ववृत्तियोंके निरोधरूप अंतःकरणकेपरिणामकूंही योगशब्दका अर्थरूप जानणा ॥ इसप्रकार (तांविद्यादुःखसंयोग) इसतेवीसवेंश्लोककेसाथि इसवीसवेंश्लोकका तथावक्ष्यमाण एकवीसवें बावीसवें श्लोकका अन्वयकरणा ॥ और किसीटीकाविषेतौ (यत्रउपरमतेचित्तम्) इसवचनविषेस्थित यत्र इसशब्दका जिसकालविषे याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै सोइसव्याख्यानविषे (तांविद्यात्) इसवक्ष्यमाणवचनविषेस्थिततत्शब्दका ताकालकेसाथि अन्वय संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं कालविषे योगशब्दकीअर्थरूपतासंभवतीनहीं यातैं यहव्याख्यान समीचीननहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे प्रत्यक्आत्माविषेही तोषकूंप्राप्तहोवैहै यहअर्थकथनकऱ्या ॥ अब ताअर्थकीसिद्धिविषे हेतुका कथनकरे हैं।

(मू. श्लो.) सुखमात्यंतिकंयत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियम् ॥ वेत्तियत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः ॥२१॥ सुखम्। आत्यंतिकम्। यत्। तत्। बुद्धिग्राह्यम्। अतींद्रियम्। वेत्ति। यत्र। न। च। एव। अयम्। स्थितः। चलति। तत्त्वतः ॥२१॥ इ० प०॥हे अर्जुन ! जो सुख अनंतहै तथा इन्द्रियका अविषयहै तथाकेवलशुद्धबुद्धिकरिकैग्रहणहोवै है तिससुखकूं यहयोगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरैहै तथा जिसविषे स्थितहुआ यहविद्वान् आपणेआत्मास्वरूपत कदाचित्भी नहीं चलायमानहोवैहै तिसकूंही योगशब्द का अर्थरूपजानणा ॥ २१ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! जो सुख आत्यंतिक है अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित निरतिशयब्रह्मरूपहै ॥ तथा जोसुख अतिइंद्रियहै ॥ अर्थात् नेत्रादिक इंद्रियोंके संबंधजन्यज्ञानका विषयनहीं है ॥ तथा जोसुख रजतमरूपमलतैंरहित केवल सत्त्वप्रधानबुद्धिकरिकैही ग्रहणकऱ्याजावैहै ऐसेस्वरूपसुखकूं यहयोगी

तथासत्त्वगुणकीअधिकताकरिकै प्रकाशकहै ॥ यातैं तायोगीपुरुषके अंतःकरणका योगशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं सोनिश्चलदीपकरूपदृष्टांत कथनकऱ्या अर्थात् जैसे सोदीपक चलायमानतातैंरहितहोवैहै तैसे तायोगीपुरुषका अंतःकरणभी चलायमानतातैंरहितहोवैहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (आत्मनः) यापदकरिकै अंतःकरणकाग्रहणकऱ्यानहीं किंतु ताआत्मशब्दकरिकै प्रत्यक्‌आत्मकाहीग्रहणकऱ्याहै ॥ तहां (आत्मनःयोगंयुंजतः) याप्रकारतैं पदोंकाअन्वयकरिकै आत्माविषयकयोगकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुषहै ॥ याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै ॥ सोइसव्याख्यानविषे दीपकरूपउपमानका कोईउपमेय सिद्धहोतानहीं ॥ दृष्टांतकानाम उपमानहै ॥ और दार्ष्टांतिककानाम उपमेयहै ॥ किंवा इसव्याख्यानविषे (आत्मनः) यहपदही व्यर्थहोवैहै ॥ काहे तैं सर्वअवस्थाविषे ताचित्तकूं आत्माकारता स्वभावतैंहीसिद्धहै ॥ कोईयोगनैं ताचित्तकीआत्माकारता संपादनकरीतीनहीं किंतु ताचित्तविषे कर्मजन्य जा कादाचित्क अनात्माकारताहै साअनात्माकारता तायोगनैं निवृत्तकरीतीहै ॥ यहवार्त्ता संक्षेप शारीरकविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (स्वाभाविकीहिवियदन्वितताघटादेःक्षीरादिवस्तुघटनापुनरन्यहेतुः ॥ एवंधियामपिचिदन्वितताऽनिमित्तंशब्दादिवस्तुघटनाखलुकर्म हेतुः ॥) अर्थयह ॥ घटादिकोंका आकाशकेसाथि जोसंबंध है सोतौ स्वाभाविकही है ॥ किसीकेप्रयत्नकरिकेकऱ्यानहीं ॥ और तिसीघटादिकोंका क्षीरादिकपदार्थोंकेसाथिजोसंबंधहै सोसंबंधतौ स्वाभाविकहैनहीं किंतु कर्मजन्यहै ॥ तैसे बुद्धियोंका जो चेतनकेसाथिसंबंधहै सोसंबंध किसी कर्मजन्यनहीं है ॥ किंतु सोसंबंध स्वभावसिद्धहै ॥ तिनबुद्धियोंका जोविषयोंकेसाथिसंबंधहै ॥ सोसंबंधतो केवल कर्मजन्यही है ॥ स्वभावसिद्धहैनइति ॥ यातैं (आत्मनः) यहपद प्रत्यक्‌आत्माकावाचकनहीं है ॥ किंतु अंतःकरणरूप दार्ष्टांतिकका बोधकहै ॥ अथवा इस व्याख्यानविषे दार्ष्टांतिककेलाभवासतै (यतचित्तस्य) यापदविषे (यतंचतत्‌चित्तंच) अर्थयह निरुद्धहुआ ऐसाजोचित्तहै याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरिकै ताचित्तकाही ग्रहणकरणाइति ॥ १९ ॥  ॥ इसप्रकार सामान्यरूपतैं समाधिकाकथनकरिकै अब तिसीअसंप्रज्ञातनामा निरोधसमाधिकूं विस्तारतैं निरूपणकरताहुआ श्रीभगवान् प्रारंभकरैं हैं ॥

(मू. श्लो.) यत्रोपरमतेचित्तंनिरुद्धंयोगसेवया॥यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति॥२०॥ यत्र । उपरमते । चित्तम् । निरुद्धम् । योगसेवया । यत्र । च । एवम् । आत्मना । आत्मानम् । पश्यन् । आत्मनि । तुष्यति॥२०॥इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! योगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहुए यहनिरुद्धहुआ चित्त उपशमकूं प्राप्तहोवैहै तथा जिसपरिणामकेहुए शुद्धअंतःकरणकरिकै प्रत्यक्‌चैतन्यआत्माकूं साक्षात्कारकरताहुआ ताआत्माविषे ही तोषकूंप्राप्तहोवैहै ताकूं योगजानणा ॥ २० ॥ इ० प० ॥

जाग्रत्का तथा निद्राका नियमहै ।। इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेनियमयोगशास्त्रविषेकथनकरेहैं इति ।। १७ ।। ❀ ।। तहांपूर्वप्रसंगकरिकै एकाग्रभूमिका विषे संप्रज्ञातसमाधिकाकथनकऱ्या अब निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिकेकहणेवासते प्रारंभकरैं हैं ।।

(मू. श्लो.) यदाविनियतंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निःस्पृहःसर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा ॥ १८ ॥ यदा । विनियतम् । चित्तम् । आत्मनि । एव । अवतिष्ठते । निःस्पृहः । सर्वकामेभ्यः । युक्तः । इति । उच्यते । तदा ॥ १८॥ इतिपद०॥ हे अर्जुन ! जिसकालविषे विरुद्धहुआ चित्त आत्माविषे हीं स्थितहोवै तथा सर्वविषयों तैं निस्पृहहोवैहै तिसकालविषे युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ १८॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसकालविषे यह अंतःकरणरूपचित्त आपणेस्वच्छस्वभावकेवशतैं स्वविषयकेआकारकूंग्रहणकरणेविषेसमर्थहुआभी परवैराग्यकेवशतैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधवालाहुआ तथारजतमतैंरहितहुआ प्रत्यक्चैतन्यस्वरूपआत्माविषेही सर्वदा अचलस्थितहोवैहै ॥ तिससर्ववृत्तियोंकेनिरोधकालविषे समाधिरूपयोगकरिके युक्त कह्याजावैहै ॥ कौन युक्तकह्याजावैहै ऐसीशंकाकेहुए कहैं हैं (निःस्पृहःसर्वकामेभ्यः) इति ॥ इसलोकके तथापरलोकके जितनेकविषय हैं तिन्होंकानाम कामहै॥ तिनविषयरूपसर्वकामोंतैं निवृत्तहुई है तृष्णारूपस्पृहाजिसकी ताकानाम निःस्पृहहै ॥ ऐसा निःस्पृहपुरुष युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै दोषदृष्टिपूर्वकपरवैराग्यविषेअसंप्रज्ञातसमाधिकीसाधनरूपता कथनकरी इति ॥ १८ ॥ ❀ अब समाधिविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितहुएचित्तकेउपमानकूंकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यथादीपोनिवातस्थोनेंगतेसोपमास्मृता ॥ योगिनोयतचित्तस्ययुंजतोयोगमात्मनः ॥ १९ ॥ यथा । दीपः । निवातस्थः । न । इंगते । सा । उपमा । स्मृता । योगिनः । यतचित्तस्य । युंजतः । योगम् । आत्मनः ॥१९॥ इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! जैसे वायुतैंरहितदेशविषेस्थित दीपक नहीं चलायमानहोवैहै सोईही दृष्टांत निरुद्ध चित्तवाले तथायोगकूं अनुष्ठानकरणेहारे योगी पुरुषके अंतःकरण कथनकऱ्याहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! दीपककेचलनकाहेतुजोवायुहै तिसवायुतैंरहितदेशविषेस्थित जोदीपकहै सोदीपक जैसे चलावणेहारेवायुकेअभावहोणे तैं चलायमानहोता नहीं तैसे जोयोगीपुरुष एकाग्रभूमिकाविषे संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगवालाहै ॥ तथा अभ्यासकीबाहुल्यताकरिकै निरुद्धकरीहैसर्वचित्तकीवृत्तियांजिसनैं तथा जोयोगीपुरुष निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगकूं अनुष्ठानकरणेहाराहै ऐसेयोगीपुरुषकाजोअंतःकरणहै सोअंतःकरणतादीपककीन्याई निश्चल है ।

केनियमविषे योगकीकारणता कथनकरी ॥ अब तिनआहारादिकोंकेनियमवालेपुरुषकूं तायोगकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै याप्रकारके अन्वयकरिकैभी तिनआहारादिकोंकेनियमविषे तायोगकीकारणताकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु ॥ युक्तस्वप्नावबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा ॥ १७ ॥ युक्ताहारविहारस्य । युक्तचेष्टस्य । कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य । योगः । भवति । दुःखहा ॥ १७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! नियमतेंहैआहारतथाविहारजिसका-तथाप्रणवजपादिकर्मोंविषे नियमतेंहैप्रवृत्तिजिसकी तथानियमतेंहैनिद्रातथाजाग्रत्जिसका ऐसेपुरुषकाही सोसमाधिरूपयोग दुःखकेनाशकरणेहारा सिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! अन्नरूपजोआहारहै तथा गमन आगमनरूपजोविहारहैं तेआहारविहारदोनों युक्तहैं क्या नियमपूर्वकहैं जिसके तथाप्रणवादिकमंत्रोंकाजप तथाउपनिषदोंकापाठ इत्यादिकजेकर्म हैं तिनकर्मोंविषेयुक्तहै क्या कालकेनियमपूर्वकहै चेष्टा क्या प्रवृत्ति जिसकी ॥ तथा निद्रारूप जोस्वप्नहै तथाजाग्रत्रूपजो प्रबोधहै तेदोनों युक्तहैं क्या कालकेनियमपूर्वकहैं जिसके ऐसेसाधनसंपन्नपुरुषकाही तिनसाधनोंकी दृढताकरिकै सोसमाधिरूपयोग सिद्धहोवैहै ॥ तिनआहारविहारादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषका सोसमाधिरूपयोगसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकारकेप्रयत्नविशेषकरिकै संपादनकऱ्याजोयोगहै तायोगकरिकै तिसयोगीपुरुषकूं कौनफल प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (दुःखहाइति) हे अर्जुन ! संसारसंबंधीसर्वदुःखोंकाकारण जाअविद्याहै ता अविद्याकेनाशकरणेहारीजाब्रह्मविद्याहै ताब्रह्मविद्याकेउत्पन्नकरणेहारा यहयोगहै ॥ यातैं यहसमाधिरूपयोग ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिद्वारा मूलअविद्यासहित सर्व दुःखोंकनिवृत्तिकाहेतुहै ऐसेमहान्फलवाले इससमाधिरूपयोगकूं यह अधिकारीपुरुष अवश्यकरिकै संपादनकरै ॥ तहां आहारकानियमतौ पूर्वश्लोकविषे (यदुदवा) इसश्रुतिवचनकरिकै तथा (पूरयेदशनेनार्द्धम्) इसयोगशास्त्रकेवचनकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ और गमनआगमनरूपविहारकानियमतौ (योजनान्नपरंगच्छेत) अर्थयह योजनपरिमाणतैं अधिक नहींचले किंतु योजनपरिमाणके भीतर भीतर चलै इत्यादिकवचनोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और वाक्आदिकइंद्रियों केचपलताकाजोपरित्यागहै यहही तिनजपादिकर्मोंविषे चेष्टाका नियम है ॥ और सूर्यकेअस्तकालतैंलेके पुनःउदयकालपर्यंत जितनीकरात्रिहै तासंपूर्णरात्रिके समान तीनविभागकरणे तिन तीनोंविभागोंविषे प्रथमविभागविषे तथाअंत्यकेविभागविषेतौ जागरणकरना ॥ और मध्यकेविभागविषे निद्राकरणी ॥ यहही

सिद्धहोइसकैनहीं ॥ यहवार्ता शतपथकीश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदुहवाआत्मसंमितमन्नंतदवतितन्नहिनस्तियद्भूयोहिनस्तितद्यत्कनीयोनतदवति इति) ॥ अर्थयह ॥ जोआत्मसंमितअन्न भोजनकऱ्याजावैहे सोअन्न ताभोक्तापुरुषविषे वेदअर्थकेअनुष्ठानकीयोग्यतासंपादनकरिकै ताअनुष्ठानद्वारा ताभोक्तापुरुषका रक्षणकरैहै ॥ सोआत्मसंमितअन्न धातुवोंकीविषमताकूंकरिकै ज्वरशूलादिकव्याधियोंकीउत्पत्तिद्वारा ताभोक्तापुरुषका हननकरैनहीं ॥ और ताआत्मसंमितअन्नतैं जोअधिकअन्नभोजनकऱ्याजावैहे सोअधिकअन्नतौ धातुवोंकीविषमताद्वारा ज्वरशूलादिकव्याधियोंकूंउत्पन्नकरिकै ताभोक्तापुरुषकूं हननकरैहै ॥ तथा तापुरुषके धर्मकाभीनाशकरैहै ॥ और जोअत्यंतअल्पअन्न भोजनकऱ्याजावैहे सोअल्पअन्नतौ ताभोक्तापुरुषकूं रक्षणकरैनहीं अर्थात् क्षुधाकीनिवृत्तिकरणे वासते तथाधर्मकेनिर्वाहकरणेवासते समर्थहोवैनही ॥ यातैं योगाभ्यासवान्पुरुषनैं अत्यंतअधिकअन्नका तथाअत्यंतअल्पअन्नका तथाअत्यंतनहींभोजनका या तीनोंका परित्यागकरिकै सो आत्मसंमितअन्नही भोजनकरणाइति ॥ अथवा ॥ (पूरयेदशनेनार्द्धं तृतीयमुदकेनतु ॥ वायोः संचरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेउदरके दोभागोंकूंतौ अन्नकरिकैपूरणकरै और तीसरेभागकूं जलकरिकै पूरणकरै और प्राणवायुके सुखपूर्वकसंचारवास्तै चतुर्थभागकूं खालीराखै इति ॥ इसप्रकार योगशास्त्रविषे अन्नकेभोजनकरणेका परिमाण कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरिमाणतैं न्यूनपरिमाण अथवा अधिकपरिमाण अन्नकेभोजनकरणेतैं सोयोग सिद्धहोवैनहीं किंतु तिसयोगशास्त्रउक्तपरिमाण अन्नकेभोजनतैंही सोयोग सिद्धहोवैहै ॥ और जोपुरुष अत्यंतनिद्रावालाहीहोवैहै तिसपुरुषकाभी सो योगसिद्धहोवैनही ॥ जिसकारणतैं सानिद्रा योगका प्रतिबंधकही है और जो पुरुष अत्यंत जाग्रतकूंहीकरैहै तिसपुरुषकाभी सो योगसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अत्यंत जागरणकरणेतैं तायोगाभ्यासकालविषे अवश्यकरिकै निद्राकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां (नैवचार्जुन) यावचनविषेस्थितजोचकारहै सोचकार इहांनहींकथनकरेहुएदोषोंके ग्रहणकरावणेवासते हैं ॥ तेदोष मार्कंडेयपुराणविषेकथनकरे हैं ॥ तहांश्लोक ॥ (नाध्मातःक्षुधितःश्रांतोनचव्याकुलचेतनः ॥ युंजीतयोगंराजेंद्रयोगीसिद्ध्यर्थमात्मनः ॥ १ ॥ नातिशीतेनचैवोष्णेनद्वंद्वेअनिलान्विते ॥ कालेष्वेतेषुयुंजीतनयोगंध्यानतत्परः ॥ २) ॥ अर्थयह ॥ हे राजेंद्र यहयोगीपुरुष अत्यंतअन्नखाइकैफूल्याहुआ अत्यंत क्षुधातुरहुआ तथाअत्यंतश्रमयुक्तहुआ तथाव्याकुलचित्तवालाहुआ योगकूं करैनहीं ॥ १ ॥ तथा अत्यंतशीतकालविषे तथाअत्यंतउष्णकालविषे तथाअत्यंतपवनकालविषे यहध्यानपरायणपुरुष तायोगकूं करैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आहारादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषकूं तायोगकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकेव्यतिरेककरिकै तिनआहारादिकों

रुपकूं पुनः अनिष्टरूपसंसारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तासंगस्मयदोनोंकाजोनहींकरणाहै सोकैवल्यमोक्षकेविघ्नकेनिवृत्तिकाउपायहै इति ॥ २ ॥ तहां (युंजन्नेवंसदात्मानम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं एकाग्रभूमिकाविषेसंप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (नियतमानसः) इसवचनकरिकै निरोधभूमिकाविषे तासंप्रज्ञातसमाधिकाफलभूत असंप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (शांतिं) यापदकरिकै तानिरोधसमाधिजन्यसंस्कारोंकाफलभूत प्रशांतवाहिता कथनकरी और (निर्वाणपरमां) यावचनकरिकै धर्ममेघनामासमाधिकूं तत्त्वज्ञानद्वारा कैवल्यमुक्तिकीहेतुता कथनकरी ॥ और (मत्संस्थाम्) यावचनकरिकै वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकृत कैवल्यमोक्ष कथनकऱ्या इनसमाधियोंका योगशास्त्रविषे विस्तारतेनिरूपणकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकेमहान् फलकीप्राप्तिकरणेहारा यह योगहै ॥ तिसकारणतैं यह अधिकारीपुरुष महान्प्रयत्नकरिकैभी तायोगकासंपादनकरै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै तायोगाभ्यासवान्पुरुषके आहारादिकोंकेनियमकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नात्यश्नतस्तुयोगोस्तिनचैकांतमनश्नतः ॥ नचातिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन ॥ १६ ॥ न । अति । अश्नतः । तु । योगः । अस्ति । न । च । एकांतम् । अनश्नतः । न । च । अति । स्वप्नशीलस्य । जाग्रतः । न । एव । च । अर्जुन ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अत्यंत अन्नकेभोजनकरणेहारेका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत नहींभोजनकरणेहारेकाभी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत निद्रालुपुरुषकाभी सोयोग नहीं सिद्धहोवै हे तथा अत्यंतजागणेहारेपुरुषका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो अन्न भोजनकऱ्याहुआ जठराग्निकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै तथाशरीरविषे कार्यकरणेकी सामर्थ्यताकूं संपादनकरैहै सोअन्न शास्त्रविषे आत्मसंमित कह्याजावैहै ॥ ताआत्मसंमितअन्नकूं नहींभोजनकरिकै जोपुरुष लोभकेवशतैं अधिकअन्नकूं भोजनकरैहै तिसपुरुषकूंभी सोसमाधिरूपयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोभोजनकऱ्याहुआअधिकअन्न अजीर्णभावकूंप्राप्तहोइकै तिसपुरुषविषे धातुवोंकीविषमताद्वारा नानाप्रकारकी ज्वरशूलादिकव्याधियोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिनज्वरशूलादिकव्याधियोंकरिकैपीडितहुए पुरुषतैं सोयोगाभ्यास कऱ्याजावै नहीं ॥ और जोपुरुष अत्यंत अन्नकाभोजनही नहींकरैहै अथवा अत्यंत अल्पअन्नकाभोजनकरैहै तिसपुरुषकाभी सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अन्नकेनहींभोजनकरणेतैं अथवा अत्यंतअल्पभोजनकरणेतैं शरीरका रसादिकधातुवोंकरिकै पोषणहोवैनहीं ॥ ताकरिकै सोशरीर किसीभीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तथा क्षुधाकरिकैपीडितपुरुषकी वृत्तिभी एकाग्रहोवैनहीं ॥ ऐसे असमर्थशरीरतैं सोयोगाभ्यास

नासिकाकेअग्रभागकेदेखणेकरिकेंही दिशादिकसवपदार्थों केदेखणेकानिषेध सिद्धहोवैहै ॥ यातैं पृथक् तिनदिशावों केदेखणेकानिषेधकरणा संभवतानहीं ॥ तथापि कदाचित् तिनपूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे किसीभयानक विपरीतशब्दकेउत्पन्नहुए तिनदिशावों के देखणेकी संभावना होइसकैहै सो ऐसेविपरीतशब्दकेउत्पन्न हुएभी तिनदिशावोंकूंदेखेनहीं ॥ और (दिशश्च) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ताचकारकरिकैं आपणेशरीरकाग्रहणकरणा अर्थात् सोयोगाभ्यासवा नूपुरुष तिसकालविषे आपणेशरीरकूंभी नहीं देखै ॥ जिसकारणतैं तिनदिशावोंकादेखणा तथाशरीरकादेखणा योगकाप्रतिबंधकही है ॥ इसप्रकार सर्ववृत्ति योंकानिरोधकरिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष तिसआसनऊपरिस्थितहोवै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) प्रशांतात्माविगतभीर्ब्रह्मचारिव्रतेस्थितः ॥ मनःसंयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः ॥ १४ ॥ प्रशांतात्मा । विगतभीः । ब्रह्मचारिव्रते । स्थितः । मनः । संयम्य । मच्चित्तः । युक्तः । आसीत । मत्परः ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोअभ्यासवान् पुरुष प्रशांतआत्माहुआ तथाभयतैंरहितहुआ तथाब्रह्मचारीकेव्रतविषे स्थितहुआ तथा मनकूं निग्रहकरिकै मेरेविषेचित्तवालाहुआ तथा मैंपरमेश्वरपरायणहुआ संप्रज्ञातसमाधिमानहुआस्थितहोवै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । रागद्वेषादिकों केकारणकीनिवृत्तिकरिकै प्रशांतहुआहै क्या रागद्वेषादिकों तैंरहितहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम प्रशांतात्मा है ॥ तथाशास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहैभय जिसका ताकानाम विगतभीहै ॥ तहां सर्वकर्मोंकात्यागकरणा हमारेकूं युक्त है अथवा नहींयुक्तहै याप्रकारकी ताकर्मोंकेत्यागविषे जाशंकाहै ताशंकाकानाम भयहै ॥ सोशंकारूपभय जिसका शास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहै तथा ब्रह्मचर्य गुरुशुश्रूषा भिक्षा भोजन इत्यादिक जोब्रह्मचारीकाव्रतहै ताव्रतविषेस्थितहोइकै आपणेमनकूं विषयाकारवृत्तियोंतैंशून्यकरिकै मैंप्रत्यक्चैतन्यरूपपरमेश्वरकेसगुणरूपविषे अथवा निर्गुणरूपविषे चित्तहै जिसका ताकानाम मच्चित्तहै अर्थात् जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकही चित्तवृत्तियों केप्रवाहवालाहै ॥ शंका—हे भगवन् ! चिंतनकरणेयो ग्यस्त्री पुत्र धनादिक प्रियपदार्थों के विद्यमानहुए सो मच्चित्तपणा कैसेहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (मत्परः इति) मैंपरमेश्वरही परमानंद स्वरूपहोणेतैं परमपुरुषार्थरूपहूं अर्थात् परमप्रियरूपहूं जिसकूं ताकानाम मत्परहै ॥ ऐसामत्परपुरुष अन्यपदार्थोंकूं प्रियरूपजाणतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेत त्प्रेयः पुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदयमात्माइति ॥) अर्थयह ॥ जो आनंदस्वरूपआत्मा देहइंद्रियप्राणमनबुद्धिआदिकसर्वपदार्थों तैं अत्यंत अंतरहै सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभीप्रियहै ॥ तथाधनतैंभीप्रियहै तथाअन्यसर्वपदार्थों तैंभीप्रियहै इति ॥ इसप्रकार विषयाकारसर्ववृत्तियोंकानिरोधकरिकै एकभगवत्आकार

गाभ्यासकेवासतै बाह्यआसनका कथनकन्या ॥ अब ताबाह्यआसनऊपरिबैठिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष किसप्रकार आपणेशरीरका धारणकरै याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) समंकायाशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः ॥ संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ समम् । कायशिरोग्रीवम् । धारयन् । अचलम । स्थिरः । संप्रेक्ष्य । नासिकाग्रम् । स्वं । दिशः । च । अनवलोकयन् ॥ १३ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! सोयोगाभ्यासवान्पुरुष दृढप्रयत्नवालाहोइकै कायशिरग्रीवायातीनोंकूं समान तथाअचल धारण करताहुआ तथा आपणे नासिकाकेअग्रकूं देखताहुआ तथा दिशावोंकूं नहींदेखताहुआ स्थितहोवै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सोयोगाभ्यासवान्पुरुष अत्यंतदृढप्रयत्नवालाहोइकै आपणे शरीरकेमध्यदेशरूपकायकूं तथाशिरकूं तथाग्रीवाकूं समान धारणकरताहुआ अर्थात् वक्रभावतैंरहित दंडकीन्याईं ऋजु धारणकरताहुआ तथाशिरकूं तथा ग्रीवाकूं अचल धारणकरताहुआ अर्थात् कंपतैंरहित धारणकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ यद्यपि ताकायशिरग्रीवाकेऋजुधारणकियेहुए वामदक्षिणभागविषेस्थित तथापृष्ठदेशविषेस्थित कोईभीवस्तु देखीजावैनहीं तथास्पर्शकरीजावैनहीं ॥ तथापि मशकपिपीलिकादिकजिवोंकृत उपद्रवकेहुए कदाचित्शरीरके चलायमानताकी संभावनाहोइसकैहै ॥ ताकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं अचल यह विशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेनासिकाके अग्रभागकूं चक्षुकरिकैदेखताहुआ स्थितहोवै ॥ इहां चक्षुकरिकै नासिकाकेअग्रभागका जो दर्शन कथनकऱ्याहै सो चक्षुकरिकैरूपादिकविषयोंकूं नहींग्रहणकरै इसनियमकेवास्तै कथनकऱ्याहै ॥ कोई नासिकाकेअग्रभागकेदेखणेवासतै सोवचन कथनकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् तावचनकरिकै नासिकाकेअग्रभागका दर्शनही भगवान्कूं विवक्षितहोवै तौ मन तदाकारताकरिकै तानासिकाकेअग्रभागविषेही स्थितहोवैगा ॥ ताकरिकै चित्तकी ब्रह्मविषेस्थिति नहींहोवैगी ॥ और ब्रह्मविषे जोचित्तकास्थापनहै ताकानामही समाधिहै ॥ यहहीसमाधिस्वरूप श्रीभगवान्नैं (आत्मसंस्थंमनःकृत्वा) इसवचनकरिकै कथकऱ्याहै ॥ यातैं नासिकाकेअग्रभागकादेखणा रूपादिकोंके अग्रहणकूं लखावैहै ॥ तथा चक्षुइंद्रियके चंचलताकीनिवृत्तिवासतैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया जैसे (संप्रेक्ष्यनासिकाग्रम्) यावचनकरिकै श्रीभगवान्कूं चक्षुकरिकै रूपादिकविषयोंकाअग्रहण विवक्षितहै तैसेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकाअग्रहणभी विवक्षितहै काहेतैं जैसे चक्षुइंद्रियकाव्यापार योगकाप्रतिबंधकहै तैसे श्रोत्रिकइंद्रियोंकव्यापारभी तायोगकेप्रतिबंधकहैंइति ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंकूं नहीं देखताहुआ स्थितहोवै ॥ यद्यपि

तिसे आँसनऊपरि बैठकरिकै चित्तइंद्रियोंकीक्रियाकेजयवालापुरुष आँपणेमनकूं एकाग्र करिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै समाधिविषयक अभ्यासकरै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष तापूर्वउक्तआसनऊपरिबैठिकरिकें निग्रहकरीहै चित्तकीक्रिया तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रिया जिसनैं ऐसाहुआ समाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकास्मरणकरणा यहचित्तकीक्रियाहै ॥ और तिनशब्दादिकविषयोंकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रियाहै ॥ तेदोनोंप्रकारकीक्रिया तासमाधिरूपयोगका प्रतिबंधकहोवें हैं ॥ यातैं ताअभ्यासवान्‌पुरुषनैं तिनक्रियावोंकानिग्रहअवश्यकरिकें कऱ्याचाहिये शंका—हे भगवन् ! सोयोगकेअभ्यासवाला पुरुष किसप्रयोजनकीसिद्धिवासतै तासमाधिकाअभ्यासकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (आत्मविशुद्धयेइति) इहां आत्मशब्दकरिकै अंतःकरणकाग्रहणकरणा ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतै ताअभ्यासकूंकरै ।। इहां ताअंतःकरणविषे सर्वविक्षेपोंकीनिवृत्तिकरि जोअत्यंतसूक्ष्मताहै तासूक्ष्मताकरिकै प्राप्तभई जाब्रह्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै यहही ताअंतःकरणकीशुद्धिजानणी ।। यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ।। तहांश्रुति ॥ (दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः) ।। अर्थयह ।। सूक्ष्मदर्शीपुरुषों नैं एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैही यहप्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्म साक्षात्कारकरीताहैइति ॥ शंका—हेभगवन् ! सोअधिकारीपुरुष क्याकरिकै तायोगाभ्यासकूंकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहैं हैं (एकाग्रंमनःकृत्वाइति) पूर्वकथनकरीहुईजे राजसतामसरूप क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यहव्युत्थानरूप तीनभूमिकाहैं तिन्होंकापरित्यागकरिकै विजातीय वृत्तियोंकेव्यवधानतैं रहित एकप्रत्यक्‌ब्रह्मविषयक जोअनेकसजातियवृत्तियोंकाप्रवाहहै तावृत्तियोंके प्रवाहकारिकैयुक्त जोसत्त्वगुणप्रधानमनहै ताकूं एकाग्रमनकहैं हैं ॥ ऐसीमनकी एकाग्रताकूं दृढभूमिकायुक्तप्रयत्नैंसंपादनकरिकै ताएकाग्रताकीवृद्धिवासतै संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ सोब्रह्माकार मनकेवृत्तियोंकाप्रवाहही निदिध्यासन कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ।। तहां श्लोक (ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहंकृतिंविना ॥ संप्रज्ञातसमाधिःस्याद्ध्यानाभ्यासप्रकर्षतः) ॥ अर्थयह ॥ अहंकृतितैंविनाही जो ब्रह्माकारमनकेवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै सासंप्रज्ञातसमाधि ध्यानाभ्यासकी अधिकताकरिकै सिद्धहोवैहैइति ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततं । युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये । युक्तआसीतमत्परः) इत्यादिकअनेक वचनोंकरिकै ताध्यानाभ्यासकेअधिकताकूं कथनकरताभया है इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां (शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्य) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै पूर्व तायो

प्रतिष्ठाप्य । स्थिरम् । आसनम् । आत्मनः । न । अति । उच्छ्रितम् । न । अति । नीचम् । चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ इतिपद० ॥
हे अर्जुन ! सोयोगारूढपुरुष पवित्र देशविषे आपणे निश्चल आसनकूं स्थापनकरै जोआसन नहीं तौ अत्यंत ऊंचाहोवै तथा नहीं अत्यंत नीचाहोवै तथाकुशोंकेऊपरिमृगचर्मतथावस्त्रकरिकैयुक्तहोवै ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोदेश स्वभावतैंहीशुद्धहोवै अथवा मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं जोदेश शुद्धकऱ्याहोवै तथा जोदेश जनोंकेसमुदायतैंरहितहोवै ॥ तथा भयतैंरहितहोवै ऐसे गंगातट अथवा पर्वतकीगुहा आदिक समानस्थलविषे यहअधिकारीपुरुष आपणे निश्चलआसनकूं स्थापनकरै ॥ इहां (स्थिरम्) यापदकरिकै ताआसनकी निश्चलता कथनकरी ॥ सानिश्चलता मृत्तिकामयस्थलरूपआसनविषेही संभवैहै काष्ठमयआसनविषे सानिश्चलतासंभवतीनहीं ॥ यातैं स्थिरं याआसनकेविशेषणकरिकै काष्ठमयआसनकीव्यावृत्ति कथनकरी ॥ कैसाहोवैसोआसन ॥ अत्यंत ऊंचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंत नीचाभीनहींहोवै ॥ काहेतैं अत्यंतऊंचेआसनविषेतौ कदाचित् परवशताकरिकै नीचेभीपतनहोइजावैहै ॥ औरअत्यंतनीचेआसनविषेभी शीत उष्ण वर्षाजलकाप्रवेश पाषाणादिकोंका घर्षण आदिकहोवैंहैं ॥ ताकरिकै योगाभ्यासविषेविघ्न प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंअत्यंतऊंचा तथाअत्यंतनीचा आसन करणानहीं किंतु दोनोंतैंविलक्षणकरणा तथा तामृत्तिकामयस्थलरूप आसनऊपरि प्रथम कुशा बिछावणे ॥ तिनकुशावोंऊपरि अत्यंतकोमल मृगकाचर्म अथवा व्याघ्रकाचर्म बिछावणा ॥ और तामृगादिचर्मऊपरि कोमलवस्त्र बिछावणा ॥ यद्यपि (वस्त्रंदारिद्र्यदुःखायदारुरोगायचोपलः) इसस्मृतिवचननैं वस्त्रकानिषेधकऱ्याहै तथापि सोनिषेध केवल गृहस्थविषयकहै संन्यासीविषयक सोनिषेध हैनहीं ॥ इहां (आत्मनः) यापदकरिकै अन्यपुरुषकृतआसनकीनिवृत्ति कथनकरी ॥ जिसकारणतैं अन्यपुरुषकेइच्छाका कोईनियमनहीं हे ॥ कदाचित् ताअन्यपुरुषकीइच्छाकृतकार्य आपणे अनुकूलभीहोवैहै कदाचित् प्रतिकूलभीहोवैहै ॥ यातैं अन्यपुरुषकृतआसनभी योगकेविक्षेपकाहीहेतुहोवैहै ॥ यातैं यहअभ्यासवान्पुरुष आपणाआसन आपहीस्थापनकरै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकारकेआसनकूंस्थापनकरिकैसोयोगाभ्यासवान्पुरुष क्या कार्यकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकीकर्तव्यता कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) तत्रैकाग्रंमनः कृत्वायतचित्तेंद्रियक्रियः ॥ उपविश्यासनेयुंज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ १२ ॥ तत्र । एकाग्रम् । मनः । कृत्वा । यतचित्तेंद्रियक्रियः । उपविश्य । आसने । युंज्यात् । योगम् । आत्मविशुद्धये ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

इनसर्वोंविषे तथाअन्यसर्वप्राणियोंविषे जोपुरुष समबुद्धिकरैहै अर्थात् कौनपुरुष किसकर्मवालाहै याप्रकार बुद्धिविषे न ल्याइकै सर्वत्र रागद्वेषतैंरहितहै ऐसासमबुद्धिवालापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ और किसीपुस्तकविषे (विशिष्यते) इसपदकेस्थानविषे (विमुच्यते) यहभीपाठहोवैहै तापक्षविषे यह अर्थकरणा सोसर्वत्रसमबुद्धिवालापुरुष इससंसारबंधनतैं मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकोंविषे श्रीभगवान्नैं योगारूढपुरुषका लक्षण तथाफल कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततम्) इसवचनतैंआदिलेकै (सयोगीपरमोमतः) इसवचनपर्यंत तेईसश्लोकोंकरिकै तिसयोगारूढपुरुषकूं अंगोंसहितयोगकूं कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) योगीयुंजीतसततमात्मानंरहसिस्थितः ॥ एकाकीयतचित्तात्मानिराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥ योगी । युंजीत । सततम् । आत्मानम् । रहसि । स्थितः । एकाकी । यतचित्तात्मा । निराशीः । अपरिग्रहः ॥ १० ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! सोयोगारूढ पुरुष एकांतदेशविषे स्थितहोइकै तथाएकाकी होइकै तथायतचित्तात्माहोइकै तथानिराशीहोइकै तथाअपरिग्रहतैंरहितहोइकै आपणेचित्तकूं निरंतर समाहितकरै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूंनिरंतर समाहितकरै अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकापरित्यागकरिकै एकाग्र निरोध यादोनोंभूमिकावोंकरिकै ताचित्तकूं समाहितकरै ॥ किसप्रकारकाहुआसोयोगारूढपुरुष ताचित्तकूंसमाहितकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताप्रकारकूं वर्णनकरैं हैं (रहसि स्थितःइति) हेअर्जुन ! सोयोगारूढपुरुष योगकीसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेदुष्टजनहैं तिनदुर्जनादिकोंतैंरहित किसीपर्वतकी गुहादिक एकांतदेशविषेस्थितहोवै ॥ तथाएकाकीहोवै अर्थात् गृहकेसर्वपरिजनोंकापरित्यागकरिकै संन्यासीहोवै ॥ तथा यतचित्तात्माहोवै ॥ इहां चित्तनाम अंतःकरणकाहै और आत्मनाम इंद्रियसहितशरीरकाहै तेदोनों योगकेप्रतिबंधकव्यापारतैंरहितहुएहैंजिसके ताकानाम यतचित्तात्माहै ॥ तथा निराशीहोवै अर्थात् दोषदृष्टिपूर्वकवैराग्यकीदृढताकरिकै सर्वपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहोवै ॥ तथा अपरिग्रहहोवै अर्थात् योगकीसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेपदार्थ हैं तिनपदार्थोंकेसंग्रहतैंरहितहोवै ॥ इसप्रकारकाहोइकै सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूं समाहितकरै ॥ इहां (सततं) यापदकरिकै तायोगाभ्यासकेकरणेविषे निरंतरता कथनकरी ॥ और (निराशीः) यापदकरिकै सत्कार कथनकऱ्या अर्थात् निरंतर सत्कारपूर्वक कऱ्याहुआयोगाभ्यासही फलकाहेतुहोवै है इति ॥ १० ॥ तहां तिसयोगकी सिद्धिवास्तै प्रथम आसनकानियम अवश्यकरिकैचाहिये ॥ यातैं ताआसनकेनियमकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः ॥ नात्युच्छ्रितंनातिनीचंचैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ शुचौ । देशे ।

फलजिसका ऐसाजोविचारहै ताविचारकरिकै तिसीप्रकार तिनशास्त्रउक्तपदार्थोंका जो आपणेअनुभवकरिकै अपरोक्षकरणाहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ ऐसे ज्ञान विज्ञान दोनोंकरिकै तृप्तहुआहै आत्मा क्या चित्त जिसका ताकानाम ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माहै ॥ याकारणतैंही जोपुरुष कूटस्थहै अर्थात् जैसे लुहारपुरुषका कूट चलायमानतातैंरहितहोवैहै तैसे जोपुरुष विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथातिनविषयों केभोगणेविषेसमर्थहुआभी चलायमानहोतानहीं ॥ याकारणतैंही जोपुरुष विजितेंद्रियहै तहां रागद्वेषपूर्वक जोशब्दादिकविषयोंकाग्रहणहै तिसतैं निवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकइंद्रियजिसनैं ताकानाम विजितेंद्रियहै विजितेंद्रिय होणेतैंही जोपुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै अर्थात् यहवस्तु हमारेकूं ग्रहण करणेयोग्यहै यहवस्तु हमारेकूं परित्यागकरणेयोग्यहै याप्रकारकी ग्रहणत्यागबुद्धितैंर हितहोणेतैं समानहै लोष्ट क्या मृत्पिंड तथाअश्म क्या पाषाण तथाकांचन क्या सुवर्ण जिसकूं ऐसा परमहंसपरिव्राजक योगी परवैराग्यरूपयोगकरिकैयु क्तहुआ योगारूढ इसनामकरिकै कह्याजावैहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंवा जिसपुरुषकी शत्रुमित्रादिकोंविषे समबुद्धिहै सोपुरुषतौ सर्वयोगीजनों तैं श्रेष्ठहै ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु ॥ साधुष्वपिचपापेषुसमबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥ सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थ द्वेष्यबंधुषु । साधुषु । अपिच । पापेषु । समबुद्धिः । विशिष्यते ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सुहृदमित्रअरिउदासीनमध्य स्थद्वेष्यबंधुइनसर्वोंविषे तथासाधुवोंविषे तथापापियोंविषे तथा अन्यसर्वप्राणियोंविषेसमबुद्धिकरणेहारापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । प्रतिउपकारी नहींअपेक्षाकरिकै पूर्वस्नेहतैंविनाही तथापूर्वसंबंधतैंविनाही जोपुरुष उपकारकरैहै ताकानाम सुहृदहै ॥ और पूर्वस्नेहकीअपेक्षाकरिकैही जो पुरुष उपकारकरैहै ताकानाम मित्रहै ॥ और स्वकृत अपकारकी नहींअपेक्षाकरिकै केवल आपणे क्रूरस्वभावतैंही जोपुरुष अपकारकरैहै ताकानाम अरिहै ॥ और परस्परविवादकरतेहुएजेदोपुरुषहैं तिनदोनोंपुरुषोंके हितकी तथा अहितकी नहींइच्छाकरताहुआ जोपुरुष तिनदोनोंकीउपेक्षाहीकरै है ताकानाम उदासीनहै ॥ और परस्पर विवादकरतेहुएजेदोपुरुषहैं तिनदोनोंकेहितकीइच्छाकरणेहारा जोपुरुषहै ताकानाम मध्यस्थहै ॥ और स्वकृतअपकारकी अपेक्षाकरि कैही जोपुरुष अपकारकरैहै ताकानाम द्वेष्य है ॥ और किंचित्संबंधकरिकै जोपुरुष उपकारकरैहै ताकानाम बंधुहै ॥ और जेपुरुष शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूं करैं हैं तिनोंकानाम साधुहै और जेपुरुष शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरैं हैं तिनोंकानाम पापहै ॥ इसप्रकार सुहृद मित्र अरि उदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बंधु साधु पाप

त्त्वभावविषे वर्तेहै ॥ तात्पर्यंयह ॥ जैसे शृंखलारूपबंधनतैंरहितपुरुष आपणीइच्छापूर्वक विचरैहै तैसे जिसआत्मानैं विवेकयुक्तमनकरिकै ता देहइन्द्रियादिरूपसंघा तकूं आपणेवशनहींकर्‌याहै सोआत्माभी यथाइच्छापूर्वक शब्दादिकविषयों विषे विचरैहै ॥ ताविषयपरायणप्रवृत्तिकरिकै सोआत्मा आपही आपणाशत्रुहोवैहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ अब तासंघातकेवशकरणेहारेआत्माकूं आपणाबंधुपणा स्पष्टकरिकै कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) जितात्मनःप्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः ॥ ७ ॥ जितात्मनः । प्रशांतस्य । परमात्मा । समाहितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । तथा । मानापमानयोः ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! शीतउष्णसुखदुः खकेप्राप्तहुएभी तथा मानअपमानकेप्राप्तहुएभी जोआत्मा जितात्माहै तथा प्रशांतहै तिसआत्माकाही परमात्मा समाधिकाविष यहोवैहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! चित्तकूं विक्षेपकीप्राप्तिकरणेहारे जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्म हैं तिनद्वंद्वधर्मोंके विद्यमानहुएभी तथा चित्तकूं विक्षेपकीप्राप्ति करणेहाराजो पूजारूपमानहै तथापराभवरूपअपमानहै तामानअपमानके विद्यमानहुएभी तिनशीतउष्णादिकोंकीप्राप्ति विषे समत्वबुद्धिकरिकै जोआत्मा जितात्मा है अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियजिसने आपणेवशकरे हैं तथा जोआत्मा प्रशांतहै अर्थात् सर्वत्रसमबुद्धिकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहै ऐसेजीवा त्माका स्वप्रकाशज्ञानस्वभाव आत्मा समाहित क्या समाधिकाविषयहोवैहै अर्थात् योगारूढहोवैहै ॥ अथवा (परमात्मा) इसवचनविषे परम् आत्मा यहदोपद पृथक्‌करणे ॥ तहां परं यापदका केवल यहअर्थकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थ सिद्धहोवै है ॥ जोआत्मा जितात्मा है तथाप्रशांतहै तिसआत्माकाहीं केवलआत्मा समाहितहोवै है तिसतैंभिन्नआत्माका सोआत्मा समाहितहोवैनहीं ॥ यातैं यहजीवात्मा जितात्मा तथाप्रशांत अवश्यकरिकै होवै इति ॥ ७ ॥

(मू. श्लो.) ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थो विजितेंद्रियः ॥ युक्तइत्युच्यतेयोगीसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥ ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा । कूटस्थः । विजितेंद्रियः । युक्तः । इति । उच्यते । योगी । समलोष्टाऽश्मकांचनः ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! ज्ञानवि ज्ञानकरिकैतृप्तहुआहै चित्तजिसका तथासर्व विक्रियातैंरहित तथाजीतेहुएहैंइंद्रिय जिसनैं तथासमानहैंमृत्पिंडपाषाणकांचनजिसकूं ऐसायोगीपुरुष योगारूढ इसनामकरिकै कह्याजावै है ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। गुरुकेउपदेशतैंउत्पन्नभई जाशास्त्रउक्तपदार्थोंकूं विषयकरणेहारीबुद्धिहै ताबुद्धिकानाम ज्ञान है ॥ और ताबुद्धिविषयक अप्रामाण्यशंकाकीनिवृत्तिहै

निमग्नहुआ जोयहजीवात्माहै तिसआपणेजीवात्माकूं यहअधिकारीपुरुष विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै तासंसारसमुद्रतैं बाह्यनिकासे अर्थात् विषयासक्तिकाप रित्यागकरिकै तिसयोगारूढताकूं संपादनकरै यहही जीवात्माका तासंसारसमुद्रतैं उद्धरणहै ॥ परंतु यहअधिकारीपुरुष तिनविषयोंविषेआसक्तिकरिकै आपणेआत्माकूं तासंसारसमुद्रविषे निमग्नकरैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मा आपही आपणा हितकारीबंधुहै अर्थात् इससंसारबंधनतैं मुक्तकरणेहाराहै ॥ आत्मातैंभिन्न दूसराकोईबंधु इसआत्माका हितकारीनहीं है ॥ काहे तैं इसलोकविषेप्रसिद्ध जितनेक स्त्री पुत्र भ्राता आदिकबांधव हैं तेबांधवतौ आपणेविषे स्नेहकीउत्पत्तिद्वारा तथाभरणपोषणकीचिंताद्वारा इसजीवके बंधनकेहीहेतुहो वैं हैं ॥ यातैं तिन्होंविषे बंधुरूपता संभवतीनहीं ॥ और जैसे कोशकारजंतु आपही आपणा अहितकारीहोवै है तैसे विषयरूपबंधनग्रहविषेप्रवेशकरणे तैं यहआत्मा आपही आपणा अहितकारीशत्रु होवै है ॥ दूसराकोई इसआत्माका शत्रुहै नहीं ॥ और जेलोकप्रसिद्धबाह्यशत्रुहैं तिनोंविषेभीइसआत्मानैंही शत्रुताकरीहै ॥ यातैं यहजीवात्मा आपही आपकाशत्रुहैइति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका–हेभगवन् ! किसप्रकारकाआत्मा आपणा बंधुहोवै है तथाकिसप्रकारकाआत्माआपणा शत्रुहोवै है ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् बंधुआत्माका तथाशत्रुआत्माका लक्षण कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) बंधुरात्मात्मनस्तस्ययेनात्मैवात्मनाजितः ॥ अनात्मनस्तुशत्रुत्वेवर्त्तेतात्मैवशत्रुवत् ॥ ६ ॥ बंधुः । आत्मा । आत्मानः । तस्य । येन । आत्मा । एव । आत्मना । जितः । अनात्मनः । तु । शत्रुत्वे । वर्त्तेत । आत्मा । एव । शत्रुवत् ॥ ६ ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन ! जिस आत्मानैं यहसंघात विवेकयुक्तमनकरिकै ही जीत्याहै तिसआत्माका स्वस्वरूपही आत्माका बंधुहै और अजितआत्माके शत्रु भावविषे बाह्यशत्रुकीन्याई आपणाआत्मा ही वर्त्तै है ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जिसआत्मानैं यहदेहइंद्रियादिरूपसंघातकेवल विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकैही आपणेवशकऱ्याहै ॥ दूसरेकिसीशास्त्रादिकउपायोंकरिकै तासंघातकूंवशकऱ्यानहीं तिसआत्माका आपणाआत्माहीआत्माका बंधुहै ॥ काहेतैं जैसे शृंखलारूपबंधनयुक्तपुरुषकी यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे तिसआत्माकीभी यथाइच्छापूर्वककहांभीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और इसजीवात्माकी नेत्रादिकइंद्रियद्वारा जारूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्ति है साप्रवृत्तिहीइसआत्माके अनेकप्रकारकेअनर्थकाहेतुहै ॥ साप्रवृत्ति तिनदेहइंद्रियादिकोंकेवशकरणेतैं निवृत्तहोइजावै है ॥ यातैंविवेकयुक्तमनकरिकै तासंघातकूंवशकरणेहाराआत्मा आपही आपणाबंधु है ॥ औरजिसआत्मानें तादेहइंद्रियादिरूपसंघातकूं विवेकयुक्तमनकरिकै आपणेवशनहींकऱ्याहै तिसआत्माका आपणा आत्मास्वरूपही बाह्यशत्रुकीन्याईं श

टीका० अ० ६

टीका । हे अर्जुन ! जिस चित्तकेनिरोधकालविषे यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंके शब्दादिकविषयोंविषेअनुषंगकूं नहींकरैहे तथा नित्यकर्म नैमित्तिककर्म काम्यकर्म लौकिककर्म प्रतिषिद्धकर्म इत्यादिककर्मोंविषे अनुषंगकूं नहींकरैहै अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे तथातिनकर्मोंविषे मिथ्यात्वबुद्धि करिकै तथा अकर्त्ताअभोक्ताअद्वितीयपरमानंदस्वरूपआत्माकेदर्शनकरिकै तिनविषयोंतैं तथातिनकर्मोंतैं स्वप्रयोजनकेअभावकानिश्चयकरिकै जोपुरुष इनकर्मोंका मैंकर्त्ताहूं तथामेरेकूं यहशब्दादिकविषय भोगणेयोग्यहैं याप्रकारकेअभिनिवेशरूप अनुषंगकूंनहींकरैहे ॥ याकरणतैंही जोपुरुष सर्वसंकल्पोंकासंन्यासीहै अर्थात् यहकर्म हमने करणाहै यहफल हमने भोगणाहै इसप्रकारके मनकीवृत्तिविशेषरूप जेसंकल्पहैं तथा तिनसंकल्पोंकेविषयभूत जेनानाप्रकारके कामहैं तथा तिनकामोंकेसाधनरूप जितनेककर्म हैं तिनसर्वोंका त्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाआसक्तितैंरहितपुरुष तिसकालविषे समाधिरूपयोगविषेआरूढहोणेतैं योगारूढ कह्याजावैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंविषे तथाकर्मोंविषे जोअभिनिवेशरूप अनुषंगहे तथा ताअनुषंगकाकारणरूपजोसंकल्पहै यहदोनोंही तायोगारूढपणेकेप्रतिबंधकहैं ॥ तिसप्रतिबंधकका जिसकालविषे अभावहोवैहै ॥ तिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष योगारूढ कह्याजावैहे इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ किंवा जोअधिकारीपुरुष जिसकालविषे इसप्रकारका योगारूढहोवैहे सोअधिकारीपुरुष तिसकालविषे आपणेआत्माकूं आत्माकरिकैही इससंसारसमुद्रतैं उद्धारकरैहे ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष योगारूढहोइकै आपणेआत्माकूं इससंसारसमुद्रतैं अवश्यकरिकै उद्धारकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) उद्धरेदात्मनात्मानंनात्मानमवसादयेत् ॥ आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥ ५ ॥ उद्धरेत् । आत्मना । आत्मानम् । नं । आत्मानम् । अवसादयेत् । आत्मा । एव । हि । आत्मनः । बंधुः । आत्मा । एव । रिपुः । आत्मनः ॥ ५ ॥ इतिपद० ॥

हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष आपणेजीवात्माकूं विवेकयुक्तमनकरिकै इससंसारतैं उद्धारकरै ताजीवात्माकूं संसारसमुद्रविषे नहीं डुबावै जिसंकारणतैं आपणाआत्मा ही आत्माका बंधुहै तथाआत्मा ही आत्माका शत्रुहै ॥ ५ ॥ इतिप० ॥

टीका । हे अर्जुन ! लोकप्रसिद्धसमुद्रकीन्याई यहसंसारसमुद्रभी स्त्री पुत्र धन मित्र इत्यादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे महामोहरूप अनेकआवर्त्तोंकरिकैयुक्तहे ॥ तथा काम क्रोध लोभ अहंकार ममकार इत्यादिकचित्तकेविकाररूप अनेकमहाग्राहोंकरिकैयुक्तहे ॥ तथा अनेकप्रकारके महारोगरूप तिमिंगिलोंकरिकैयुक्तहे ॥ तथा अशनायापिपासादिरूप महान्कल्लोलोंकरिकैयुक्तहे ॥ तथा तीनतापरूप वडवानलकरिकैयुक्तहे ॥ तथा प्रियपदार्थोंकेवियोगजन्य अनेकप्रकारकेप्रलापरूप महाध्वनिरूपशब्दकरिकैयुक्तहे ॥ तथा नित्यनिरंतर दुर्वासनारूप शैवालपटलकरिकैयुक्तहे ॥ तथा विषयरूपविषकरिकै परिपूर्णहे ॥ इसप्रकारकेसंसारसमुद्रविषे

ढहोणेकीइच्छावान् मुनिकूं तायोगकीप्रातिविषे निंत्यकर्महीं संमाधानरूप कंथनकऱ्याहे तथा तायोगंविषेआरूढहुए तिसीहीपुरुषको ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासते संन्यास हीं सांधनरूप कथनकंऱ्याहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक जोसर्वविषयसुखों तैं तीव्रवैराग्यहै ताकानाम योगहै ऐसेयोगविषेआरूढहोनेकीइच्छावाला जोपुरुषहै ताकानाम आरुरुक्षु है और सोआरुरुक्षुपुरुष अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर आगे सर्व कर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासवालाहोणाहै यातैं अबी ताकूं मुनिकह्याहै ॥ अथवा अबीही फलकीतृ ष्णातैंरहितहै यातें ताकूं मुनिकह्याहै ॥ ऐसे आरुरुक्षुमुनिकेप्रति तायोगविषेआरुढहोणेवास्ते अर्थात् तायोगकीप्राप्तिवास्ते वेदविहित निष्काम अग्निहोत्रादि कनित्यनैमित्तिककर्महीं साधनरूपकरिकै हमने तथावेदभगवान्ने विधानकरयाहै ॥ और सोईहीकर्मीपुरुष जबी तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिरू पयोगकूंप्राप्तहोवैहै तबी सोपुरुष योगारूढकह्याजावै है ॥ ऐसेयोगारूढपूरुषकूं पुनः तेकर्म कर्त्तव्यनहीं हैं ॥ किंतु तायोगारूढपुरुषकूं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्ते सर्वकर्मोंकासंन्यासरूपशमहीं साधनरूपकरिकै विधानकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जितनेकालपर्यंत इसअधिकारीपुरुषकूं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक वैराग्यकीप्राप्तिन हींभई तितनेकालपर्यंत यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकी प्राप्तिवास्ते फलकीइच्छातैंरहितहोइके शास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंहींकरै ॥ और जिसकाल विषे यहअधिकारीपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तावैराग्यकूंप्राप्तहोवै तिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष पुनःतिनकर्मोंकूंकरैनहीं किंतु तिसकालविषे श्रवणमननादिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्ते सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंहीकरै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपर्यंतही तेकर्म कर्त्तव्यहैं जीवितकालपर्यंत तेकर्म कर्त्तव्यनहीं हैं ॥ और यावज्जीवं यहश्रुतितौ वैराग्यहीनपुरुषऊपरिहै वैराग्यवान्पुरुषऊपरि यहश्रुतिहैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥

शंका—हे भगवन् ! जिसयोगारूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेका अधिकारीहोवै है ॥ तिसयोगारूढअवस्थाकूं यह अधिकारी पुरुष किसकालविषे प्राप्तहोवैहै ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकालका निरूपणकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) यदाहिनेंद्रियार्थेषुनकर्मस्वनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ यदा । हि । न । इंद्रियार्थेषु । न । कर्मसु । अनुषज्जते । सर्वसंकल्पसंन्यासी । योगारूढः । तदा । उच्यते ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे नहीं आसक्तहोवै है तथा कर्मोंविषे नहीं आसक्तहोवै है तथा सर्वसंकल्पों तैंरहितहोवै है तिसकालविषे योगारूढ कह्याजावै है ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवै है ॥ और तावृत्तिकाविषयरूप वंध्यापुत्र तथानरशृंग अत्यंतअसतहैं ॥ यातैं असत्अर्थविषयक तेवृत्तियां विकल्परूपकहीजावैं हैं ॥ सोयहविकल्प विषयरूपवस्तुतैंरहितहोणेतैं प्रमारूपभी कह्याजावैनहीं ।। तथा यहविकल्प बाधज्ञानकेविद्यमानहुएभी अवश्यकरिकैउत्पत्तिवालाहोणे तैं तथाव्य वहारकाहेतुहोणे तैं विपर्ययरूपभीनहीं है ।। जैसे चैतन्यहीपुरुषहोवै है याप्रकारतैं चैतन्यपुरुष दोनोंके अभेदकेनिश्चयहुएभी पुरुषकाचैतन्यहै याप्रकारकेशब्दश्रवण तेअनंतर चैतन्यपुरुषकेभेदकूंविषयकरणेहाराविकल्पज्ञानहोवैहै यातैं सोविकल्पज्ञान विपर्ययरूपभीनहीं हैं ।। बाधज्ञानकेविद्यमानहुए सोविपर्ययज्ञान उत्पन्नहोता नहीं किंतु सोविकल्पज्ञान प्रमाज्ञानतैं तथाभ्रमज्ञानतैं विलक्षणहीहोवै है ।। यहहींविकल्पकास्वरूप (शब्दज्ञानानुपातीवस्तुशून्योविकल्पः) इससूत्रविषे पतं जलिभगवान्नैं कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति याच्यारिप्रकारकीवृत्तियों केअभावकाकारणरूपजोतमोगुणहै तिसतमोगुणकूं विषयकरणेहारी जावृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै ॥ इतनेकहणेकरिकै ज्ञानादिकोंकेअभावमात्रकानाम निद्राहै यामतकाभी खंडनकऱ्या ॥ यहहीनिद्राकास्वरूप (अभावप्रत्ययालंबनावृत्तिर्निद्रा) इससूत्रविषे पतंजलिभगवान्नैं कथनकऱ्याहैइति ॥ ४ ॥ और पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारमात्रतैं जोज्ञान उत्पन्नहोवै है ताकानाम स्मृतिहै सास्मृति सर्ववृत्तियोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं पतंजलिभगवान्नैं तास्मृतिकूं सर्ववृत्तियोंकेअंतविषेकथनकऱ्याहैइति ॥ ५ ॥ यद्यपि लज्जादिक अनेकप्रकारकी वृत्तियांहोवै हैं तथापि तिनलज्जादिकसर्ववृत्तियोंकाइनप्रमाणादिकपंचवृत्तियोंविषेही अंतर्भावहै ॥ इसप्रकारकी सर्वचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै सोनिरोधही योगकह्याजावैहै तथा समाधिकऱ्याजावैहै ॥ और कर्मोंकेफलकाजोसंकल्प सो संकल्पभी पंचप्रकारकेविपर्ययविषे रागनामा तीसराविपर्ययविशेषहै तिसरा गरूपफलसंकल्पकेनिरोधमात्रकूंही इहां गौणीवृत्तिकरिकै योगनामकरिकै तथासंन्यासनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ यातैं किंचित्मात्रभी इहां विरोधहोवैनही इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् पूर्व आपने कर्मयोगकी श्रेष्ठताकथनकरी यातैं यहजान्याजावै है ॥ श्रेष्ठहोणेतैं सोकर्मयोगही इसअधिकारीपुरुषकूं जीविनकालपर्यंत करणेयोग्यहै ॥ और (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) यहश्रुतिभी जीवितकालपर्यंत अग्निहोत्रादिककर्मोंकीकर्त्तव्यताकूंही कथनकरैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकर्मयोगकेअवधिकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ आरुरुक्षोः । मुनेः योगम् । कर्म । कारणम् । उच्यते । योगारूढस्य । तस्य । एव । शमः । कारणम् । उच्यते ॥३॥ इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन ! योगविषे आरू

योगीभवतिकश्चनइति ॥ जिसकारणतैं फलसंकल्पकेत्यागतैंरहित कोईभीपुरुष योगीहोवैनहीं किंतु सर्वयोगीजन फलसंकल्पकेत्यागवालेहीहोवैं हैं ॥ तिस कारणतैं फलकात्यागरूप समानधर्मतैं तथातृष्णारूपचित्तवृत्तिकेनिरोधकसमानतातैं गौणीवृत्तिकरिकै सोकर्मीपुरुषहीहै संन्यासीहै तथायोगीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संन्यासीशब्दका मुख्यअर्थजो फलसहितसर्वकर्मोंकात्यागीहै ताकेविषे जैसे स्वर्गादिकफलोंकात्यागरहैहै तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोस्वर्गादिक फलोंकात्याग रहैहै ॥ यातैं सोसंन्यासीशब्द गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तथायोगीशब्दका मुख्यअर्थजो सर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोध वालाहै ॥ ताकेविषे जैसे फलकीतृष्णारूपचित्तवृत्तिकानिरोधरहैहै तैसे निष्कामकर्मीविषेभी सो फलकीतृष्णारूपचित्तवृत्तिकानिरोध रहैहै ॥ यातैं सोयोगी शब्दभी गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै इति ॥ अब इसीअर्थकूं योगसूत्रोंकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ तहांसूत्र ॥ (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥ प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयःइति ॥) अर्थयह ॥ चित्तकीसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै ताकानाम योगहैइति ॥ तेचित्तकीवृत्तियां प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति ५ यहपंचप्रकारकीहोवैं हैं ॥ तहां प्रमाकाजोकरणहोवै ताकूं प्रमाणकहैं हैं ॥ सोप्रमाणभी प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमान अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहषट्प्रकारकाहोवैहै ॥ याप्रकारका वैदिकपुरुष अंगीकारकरैं हैं ॥ और प्रत्यक्ष अनुमान आगम यहतीनप्रकारकाप्रमाणहोवै है याप्रकार योगशास्त्रवालेअंगीकारकरैं हैं ॥ तहां किसीप्रमाणका किसीप्रमाणविषे अंतर्भावहोवैहै ॥ और किसीप्रमाणका किसीप्रनाणतैंबहिर्भावहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनप्रमाणोंका परस्पर अंतर्भाव तथा बहिर्भाव अंगीकारकरिकै किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकासंकोचकऱ्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकाविस्तारकऱ्याहै ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द यहच्यारिही प्रमाणहोवैं हैं ॥ तहां नैयायिकोंनैं अर्थापत्तिप्रमाणका केवलव्यतिरेकीअनुमानविषेही अंतर्भावकऱ्याहै ॥ और अनुपलब्धिप्रमाणका प्रत्यक्षप्रमाणविषेही अंतर्भावकऱ्याहै ॥ इसप्रकार अन्यमतोंविषेभी तिनप्रमाणोंकीन्यूनअधिकताजानिलेणी ॥ यद्यपिनैयायिकादिकोंकेमतविषेप्रत्यक्षादिक प्रमाकेकरणहोणेतैं इंद्रियादिकही प्रत्यक्षादिप्रमाणरूपहैं तथापि योगशास्त्रकेमतविषे इंद्रियादिकोंकरिकैउत्पन्नहुईजेचित्तकीवृत्तियांहैं तेवृत्तियांही प्रत्यक्षादिप्रमाणरूपहैं ॥ और तिन वृत्तियोंविषे जोचेतनकाप्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंब प्रत्यक्षादिप्रमारूपहै ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं चित्तकीवृत्तिरूपकथनकऱ्याहैइति ॥ १ ॥ और मिथ्याज्ञानकानाम विपर्ययहै सोविपर्ययभी अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश इसभेदकरिकैपंचप्रकारकाहोवैहै ॥ तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैंइति ॥ २ ॥ और शब्दश्रवणतैंअनंतरउत्पन्नहोणेहारी तथाअर्थरूपवस्तुतैंरहित ऐसीजाचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम विकल्पहै जैसे वंध्यापुत्रोऽस्ति नरशृंगोऽस्ति इत्यादिक शब्दोंकेश्रवणतैंअनंतर ताश्रोतापुरुषकी वंध्यापुत्रविषयक तथानरशृंगविषयक चित्तकीवृत्ति

नणा इति ॥ अथवा (ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः) यावचनका यहअर्थकरणा श्रौतअग्नितैंरहितपुरुष कोईसंन्यासी कह्याजावैनहीं तथा क्रियातैंरहितपुरुष कोईयोगी कह्याजावैनहीं ; किंतु ताश्रौतअग्निवाला तथाताक्रियावाला जोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारापुरुषहै सोकर्मीपुरुषही संन्यासीजानणा तथायोगीजानणा ॥ इसप्रकारतैं सोनिष्कामकर्मीपुरुष स्तुतिकऱ्याजावैइति ॥ इहां यद्यपि अक्रिय याशब्दकरिकैही सर्वकर्मोंकेसंन्यासीकी प्रतीतिहोइसकैहै यातैं निरग्निः यहपदव्यर्थहै तथापि अग्निशब्दतैं सर्वकर्मोंकाग्रहणकरिकै निरग्निः याशब्दकरिकै संन्यासीका कथनकऱ्याहै ॥ तथा क्रियाशब्दतैं सर्वचित्तकेवृत्तियों काग्रहणकरिकै अक्रिय याशब्दकरिकै निरुद्धचित्तवृत्तिवालेयोगीका कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै सोनिरग्निपुरुष संन्यासीकह्याजावैनहीं तथा अक्रियपुरुष योगीकह्याजावैनहीं किंतु सोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारा कर्मीपुरुषही संन्यासी तथायोगी कह्याजावैहैइति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां जैसे (सिंहो देवदत्तः ॥ इसवचनविषे पशुरूपसिंहतैंभिन्न मनुष्यरूपदेवदत्तविषे तासिंहकेसदृशशूरताक्रूरताआदिकगुणोंकूंग्रहणकरिकै सोसिंहशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे असंन्यासविषे संन्यासशब्दकेप्रवृत्तिका तथाअयोगविषे योगशब्दकेप्रवृत्तिका निमित्तरूपजोसमानगुणहै तागुणकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) यंसंन्यासमितिप्राहुर्योगंतंविद्धिपांडव ॥ नह्यसंन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकश्चन ॥ २ ॥ यंम् । संन्यासम् । इति । प्राहुः । योगम् तम् । विद्धि । पांडव । न । हि । असंन्यस्तसंकल्पः । योगी । भवति । कश्चन ॥ २ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जिसकूं श्रुतियां संन्यास ईसनामकरिकै कथनकरैंहैं तिसकूंही तूं योगरूप जान जिसकारणतैं संकल्पकेत्यागतैंरहित कोईभीपुरुष योगी नहीं होवैहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । (न्यासएवातिरेचयत् । ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति) इत्यादिकअनेकश्रुतियां जिसफलसहित सर्वकर्मोंकेत्यागकूं संन्यास यानामकरिकैकथनकरैंहैं तिससंन्यासकूंही तूं अर्जुन योगरूप जान ॥ इहां फलकीइच्छाका तथा कर्तृत्वअभिमानका परित्याग करिकै जोशास्त्रविहितशुभकर्मोंकाअनुष्ठानहै ताकानाम योगहै अर्थात् तासंन्यासकूं तूं निष्कामकर्मयोगरूप जान ॥ शंका—हे भगवन् ! जैसे अब्रह्मदत्तकूं यहब्रह्मदत्तहै याप्रकार जोकोईकहैहै ताकहणेकरिकै यहजान्याजावैहै ॥ यह ब्रह्मदत्तकेसदृशहै ॥ काहेतैं किसीअन्यवस्तुकावाचकजोशब्दहै ताशब्दका जबी किसीअन्यवस्तुकेजनावणेवास्ते उच्चारणहोवैहै तबी सोशब्द गौणीवृत्तिकरिकै अथवा तद्भावकेआरोपकरिकै तिसअन्यवस्तुविषे स्ववाच्यार्थके सादृश्यताकूंही बोधनकरैहै ॥ सो इहां प्रसंगविषे कौनसादृश्यधर्महै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तासदृश्यधर्मकूं कथनकरैंहैं (नह्यसंन्यस्तसंकल्पो

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षष्ठाध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रारंभका श्लोक॥ योगसूत्रंत्रिभिः श्लोकैः पंचमांतेयदीरितम् ॥ षष्ठआरभ्यतेऽध्यायस्तद्व्याख्यानायविस्तरात् ॥ अर्थयह ॥ पंचमअध्यायकेअंतविषे तीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्याजो योगसूत्र है तिसयोगसूत्रके विस्तारतैं व्याख्यानकरणेवासतै यहषष्ठाध्याय प्रारंभकरीताहै इति ॥ तहां सर्वकर्मोंकेत्यागकाकथनकरिकै श्रीभगवान्नैं योगकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं तेसर्वकर्म त्यागणेयोग्यहोणेतैं संन्यासतैं तथायोगतैं अत्यंत निकृष्टहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ता अर्जुनकूं युद्धरूपकर्मविषे प्रवृत्तकरणेवासतै दोश्लोकोंकरिकै पुनः ताकर्मयोगकी स्तुति करैं हैं।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ अनाश्रितःकर्मफलंकार्यंकर्मकरोतियः ॥ ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥ अनाश्रितः। कर्मफलम्। कार्यम्। कर्म। करोति। यः। सः। संन्यासी। च। योगी। च। न। निरग्निः। न। च। अक्रियः॥१॥इतिपदच्छेदः॥
हे अर्जुन! जोपुरुष कर्मकेफलकूं नहींइच्छताहुआ अवश्यकरणेयोग्य नित्यकर्मकूं करै है सोपुरुष यद्यपि अग्नितैंरहित नहीं है तथा क्रियातैंरहित नहीं है तथापि सोपुरुष संन्यासी है तथा योगी है ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन! जोपुरुष कर्मकेस्वर्गादिकफलोंकीइच्छातैंरहितहोइकै शास्त्रनैंकर्त्तव्यतारूपकारिकैविधानकरेजे अग्निहोत्रादिक नित्यनैमित्तिककर्म हैं तिन नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरै है सोपुरुष कर्मीहुआभी संन्यासीही है तथायोगीही है ॥ याप्रकारतैं सोकर्मीपुरुष स्तुतिकऱ्यावै है काहेतैं त्यागकानाम संन्यासहै और चित्तविषे स्थितविक्षेपकेअभावकानाम योगहै इसप्रकारका संन्यास तथायोग दोनों इसनिष्कामपुरुषविषेविद्यमानहैं अर्थात् यह निष्कामपुरुष फलकेत्यागवालाहोणेतैं संन्यासी है तथा फलकीतृष्णारूपविक्षेपकेअभाववालाहोणेतैं योगी है इहां सकामपुरुषोंकी अपेक्षाकरिकै तिसनिष्काम पुरुषविषे श्रेष्ठताकथनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं संन्यासशब्दकी गौणीवृत्तिकूंअंगीकारकरिकैतासंन्यासशब्दकरिकै कर्मकेफलकात्यागकथनकऱ्याहै तथायोगशब्दकी गौणी वृत्तिकूंअंगीकारकरिकै तायोगशब्दकरिकै फलकीतृष्णाकात्याग कथनकऱ्याहै ॥ और तासंन्यासशब्दका फलसहितसर्वकर्मोंकात्यागरूप जोमुख्यअर्थ है तथा तायोगशब्दका सर्वचित्तवृत्तियोंकानिरोधरूप जोमुख्यअर्थ है तेदोनों तानिष्कामपुरुषकूं आगे अवश्यकरिकैउत्पन्नहोणेहारे हैं ॥ यातैं सोनिष्कामकर्मोंकूं करणेहारापुरुष यद्यपि अग्नितैं रहितनहीं है अर्थात् अग्निकरिकैसिद्धहोणेहारे अग्निहोत्रादिकश्रौतकर्मोंकेत्यागवाला नहीं है तथा सोकर्मीपुरुष क्रियातैंरहितभी नहीं है अर्थात् ताअग्निकीअपेक्षातैंरहित स्मार्तक्रियाकेत्यागवालाभी नहीं है तथापि सोनिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारा कर्मीपुरुष संन्यासीहीजानणा तथा योगीहीजा

(मू. श्लो.) भोक्तारंयज्ञतपसांसर्वलोकमहेश्वरम् ॥ सुहृदंसर्वभूतानांज्ञात्वामांशांतिमृच्छति ॥ २९ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णाऽर्जुनसंवादेसंन्यासयोगोनामपंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ५ ॥ भोक्तारम् । यज्ञतपसाम् । सर्वलोकमहेश्वरम् । सुहृदम् । सर्वभूतानाम् । ज्ञात्वा । माम् । शांतिम् । ऋच्छंति ॥ २९ ॥ इतिपद० । हे अर्जुन ! सर्वयज्ञतपोंका भोक्तारूप तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वररूप तथासर्वभूतप्राणियोंका सुहृद्रूपऐसा जोमैंभगवान्हूं तिसहमारेकूं आत्मारूपजानिकैही सोयोगयुक्त पुरुष मुक्तिकूं प्राप्तहोवे है ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वेदकरिकैप्रतिपादित जितनेक ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहैं तथाजितनेक कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं तिनसर्वयज्ञोंका तथासर्वतपोंका यजमानादिककर्त्तारूपकरिकै तथाइंद्रादिकेदेवतारूपकरिकै भोक्तारूप तथापालनकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरहूं तथा सर्वलोकोंका महान्ईश्वररूपजोमैंहूं अर्थात् हिरण्यगर्भादिकईश्वरोंकूंभी आपणीआज्ञाविषेचलावणेहारा जोमैंपरमेश्वरहूं तथा सर्वप्राणियोंकासुहृद्रूपजोमैंहूं अर्थात् प्रतिउपकारकीअपेक्षातैंविनाही तिनसर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरणेहारा जोमैं परमेश्वरहूं ऐसे सर्वांतर्यामी सर्वकेप्रकाशक परिपूर्ण सत्चितआनंद स्वरूप एकरस परमार्थसत्य सर्वकाआत्मारूप मैंनारायणकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरिकैही तेयोगयुक्तपुरुष सर्वसंसारकीनिवृत्तिभूत मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ इहां हे भगवन् ! शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारी जोयहआपकी चतुर्भुजव्यक्तिहै जाव्यक्ति वसुदेवदेवकीतैं उत्पन्नहुई है तथाहमारेरथविषेस्थितहै ऐसीआपकीव्यक्तिकूंजानताहुआभी मैं अर्जुन मुक्तिकूं क्योंनहींप्राप्तहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्तै श्रीभगवान्नैं आपणेस्वरूपके (यज्ञतपसांभोक्तारं सर्वलोकमहेश्वरं सर्वभूतानांसुहृदम्) यहतीनविशेषण कथनकरे हैं अर्थात् इसप्रकारकेहमारेस्वरूपकाज्ञानही मुक्तिकाकारणहै ॥ केवल इसहमारेस्थूल व्यक्तिकाज्ञान तामुक्तिकाकारणहोवैनहीं इति ॥ अब इसपंचमअध्यायकेसर्वअर्थकूं संक्षेपतैंप्रतिपादनकरणेहारा श्लोककहैं हैं ॥ (अनेकसाधनाभ्यासनिष्पन्नंहरिणेरितम्)॥ स्वस्वरूपपरिज्ञानं सर्वेषांमुक्तिसाधनम् इति॥ अर्थयह ॥ अनेकप्रकारकेसाधनोंकेअभ्यासकरिकैउत्पन्नहुआ तथासर्वअधिकारीजनोंकेमुक्तिकासाधनरूप ऐसाजोस्वस्वरूपकाज्ञानहै सोज्ञान श्रीभगवाननैं इसपंचमअध्यायविषेकथनकऱ्याहै इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां पंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः । श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

अंतःकरणकीवृत्तिकूंद्वारकरिकै अंतरचित्तविषे प्रवेशकरैहै ॥ ऐसेशब्दादिकविषयोंकूं जोपुरुष पुनःबाह्यहीकरै है अर्थात् जोपुरुष परवैराग्यकेप्रभावतैं तिसतिस शब्दाकारवृत्तिकूं उत्पन्नहीकरैहै ॥ इहां श्रीभगवान्नैं शब्दादिकविषयोंका जो (बाह्यान्) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ताकायहअभिप्रायहै यहशब्दादिकविषय जो कदाचित् स्वभावतैंही अंतरहोते तौ सहस्रउपायोंकरिकैभी तेविषय पुनः बाह्यकरेजातेनहीं ॥ जो स्वभावतैंअंतरस्थितविषयभीबाह्यकरेजाते तौ तिनविषयोंकेस्वभावकीहीहानिहोती सो वस्तुकेस्वभावकीहानिहोतीनहीं ॥ जैसे अग्निकेउष्णस्वभावकी कदाचित्भीहानिहोतीनहीं ॥ और तिनशब्दादिकविषयोंकूं जोस्वभावतैंही बाह्यअंगीकारकरिये तौ रागकेवशतैं अंतरचित्तविषेप्रविष्टहुएभी तिनशब्दादिकविषयोंका परवैराग्यकेवशतैं पुनःबाह्यनिकसणा संभवहोईसकै जैसे स्वभावतैंशुद्धवस्त्रविषे बाह्यतैंप्राप्तभईजामृत्तिका सामृत्तिका क्षारजलकेप्रक्षालनकरणे तैं निवृत्तकरीजावैहै इति ॥ इतनेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वैराग्यका कथन करचा ॥ अब अभ्यासका कथनकरैं हैं (चक्षुश्चैवांतरेभ्रुवोःइति) हे अर्जुन ! यहअधिकारीपुरुष आपणेचक्षुकीदृष्टिकूं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितकरै ॥ ताभ्रुवोंके मध्यविषे चक्षुकीस्थिति ताचक्षुके अर्धनिमीलनकरिकैहीहोवैहै॥ ताचक्षुके अत्यंत निमीलनकरिकै तथा अत्यंत उन्मीलन करिकै साभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितिहोवैनहीं । तात्पर्ययह ॥ यहअभ्यास करणेहारापुरुष जो कदाचित् आपणेचक्षुकूं अत्यंत निमीलनकरैगा तौ इसपुरुषकूं निद्रारूपलयवृत्तिही होवैगी ॥ और यहअधिकारीपुरुष जो कदाचित् तिस आपणे चक्षुकूं अत्यंत प्रसारणकरैगा तौ प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति यहच्यारिप्रकारकी विक्षेपरूपवृत्तियां उत्पन्नहोवैंगी ॥ और तेनिद्रादिकपांचोंवृत्तियां योगाभ्यासकेविरोधीहीहोवैं हैं ॥ यातैं इसअधिकारीपुरुषनैं तेपांचोंवृत्तियां निरोधकरणेकूंयोग्यहैं ॥ सोतिनपांचोंवृत्तियोंकानिरोध ताभ्रुवोंकेमध्यविषे चक्षुकेस्थितकरणेतैंहीहोवै है । तथा सोअधिकारीपुरुष आपणे प्राण अपानदोनोंकूं समकरिकै अर्थात् प्राणकेऊर्ध्वगतिका तथाअपानकेअधोगतिका विच्छेदकरिकै कुंभककरिकै तिसप्राण अपानकूं हृदयादिकस्थानविषेहीस्थितकरै इसप्रकारकेउपायकरिकै निरोधकूंप्राप्तहुएहैं इंद्रिय मन बुद्धि जिसके ऐसाजो मोक्षपरायणपुरुषहै अर्थात् सर्वविषयोंतैंविरक्तहै सोपुरुष मुनिहोवै अर्थात् मननशीलहोवै ॥ तथा जोपुरुष विगतेच्छाभयक्रोध है अर्थात् इच्छाभयक्रोध यातीनोंतैंरहितहै (विगतेच्छाभयक्रोधः) इसवचनकाअर्थ (वीतरागभयक्रोधः) इसवचनकेव्याख्यानविषेपूर्व विस्तारतैंकथनकरिआये हैं ॥ इसप्रकारके लक्षणोंयुक्त जो संन्याससर्वदा होवैहै सो संन्यासी मुक्तहीहै तिससंन्यासीकूं सोमोक्ष कर्त्तव्यनहींहै ॥ अथवा (सदा) इसपदका (मुक्तएव) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थसिद्धहोवै ॥ इसप्रकारका सोसंन्यासी जीवताहुआभी मुक्तहीहै इति ॥ २७ ॥ २८ ॥ ❀ शंका— हे भगवन् ! इसप्रकारकेयोगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै सोअधिकारीपुरुष किसवस्तुकूंजानिकरिकै मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ॥

टीका । हेअर्जुन ! जेयत्नशीलसंन्यासी कामक्रोधदोनोंकीअनुत्पत्तिकरिकैयुक्तहैं अर्थात् जिन्होंकूं सोकामक्रोध उत्पन्नहीनहींहोवैहै ॥ इसीकारणतैं जेपुरुष चित्तकेसंयमकरिकै युक्तहैं तथा तत्पदार्थरूप परमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कार कन्याहैजिन्हों नैं ऐसेविद्वान्संन्यासीयोंकूं जीवतकालविषे तथा मरणकालविषे सोनिर्वाणब्रह्मरूपमोक्ष सर्वदाप्राप्तहीहै ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मरूपमोक्ष नित्यहै स्वर्गादिकोंकीन्याईं साध्यहैनहीं ॥ यातैं तिनविद्वान्पुरुषोंकूं सोब्रह्म रूपमोक्ष आगेप्राप्तहोवैगा याप्रकारकाभविष्यत्व्यवहार तामोक्षविषेहोवैनहीं इति ॥ २६ ॥ ❁ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे यहवार्त्ता कथनकरीथी ईश्वरविषे अर्पणकरे हैं सर्वकर्मजिसनैं ऐसाजोअधिकारीपुरुषहै ताअधिकारीपुरुषके तानिष्कामकर्मयोगकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिहोवैहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासहोवैहै ॥ तासंन्यासतैंअनंतर श्रवणमननादिकोंविषेतत्परपुरुषकूं मोक्षकासाधनरूपतत्त्वज्ञान प्राप्तहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता पूर्वकथनकरीथी अब (सयोगीब्रह्मनिर्वाणम्) इसपूर्ववचनविषे श्रीभगवानूनैं सूचनकरयाजो ध्यानयोगहै सोध्यानयोगही तिसतत्त्वसाक्षात्कारका अंतरंगसाधनहै इसअर्थकूं विस्तारतैंकथनकरणेवासतै श्रीभगवान् सूत्ररूपतीनश्लोकोंकूं कथनकरैं हैं ॥ इनसूत्ररूपतीनश्लोकोंकाही समग्रषष्ठाध्यायव्या ख्यानरूपहै ॥ तिन तीनश्लोकोंविषेभी प्रथमदोश्लोकोंकारिकैतौ संक्षपतैं तायोगका कथनकरयाहै और तीसरेश्लोककरिकैतौ ताध्यानयोगकाफलरूप आत्म ज्ञानका कथनकरयाहै ।

(मू. श्लो.) स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवांतरेभ्रुवोः ॥ प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ ॥ २७ ॥ यतेंद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ॥ विगतेच्छाभयक्रोधोयःसदामुक्तएवसः ॥ २८ ॥ स्पर्शान् । कृत्वा । बहिः । बाह्यान् । चक्षुः । च । एव । अंतरे । भ्रुवोः । प्राणापानै । समौ । कृत्वा । नासाभ्यंतरचारिणौ ॥ यतेंद्रियमनोबुद्धिः । मुनिः । मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधः । यः । सदा । मुक्तः । एव । सः ॥ २७ ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! बाह्यस्थित शब्दादिकविषयोंकूं पुनःबाह्य करिकै तथा चक्षुकूं दोनोंभ्रुवोंके मध्यविषे ही स्थितकरिकै तथा प्राण अपानदोनोंकूं समान नासिकाकेभीतरहीनिरुद्ध करिकै जीतेहुएहैंइंद्रियमनबुद्धिजिसनैं तथानिवृत्तहुएहैंइच्छाभयक्रोधजिसके तथासर्वविषययोंतैंविरक्त ऐसाजोमननशीलसंन्यासीहै सोसंन्यासी सर्वदा मुक्त ही है ॥ २७ ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! स्वभावतैं बाह्यदेशविषेरहणेहारे जे शब्दादिकविषयहैं तेशब्दादिकविषय बाह्यहुएभी श्रोत्रादिकइंद्रियद्वारा तिसतिसशब्दादिआकारकूंप्राप्तहुई

(मू. श्लो.) लभंतेब्रह्मनिर्वाणमृषयःक्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वैधायतात्मानःसर्वभूतहितेरताः ॥ २५ ॥ लभंते । ब्रह्म । निर्वाणम् । ऋषयः । क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधाः । यतात्मानः । सर्वभूतहिते । रताः ॥२५॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जेपुरुष पापों तैंरहित हैं तथासंन्यासयुक्तहैं तथासंशयतैंरहितहैं तथाएकाग्रचित्तवालेहैं तथासर्वभूतोकेहितविषे प्रीतिवालेहैं ऐसेपुरुषही तानिर्वाण ब्रह्मकूं प्रातहोवें हैं ॥ २५ ॥इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जेपुरुष प्रथम यज्ञदानादिक निष्कामकर्मोंकरिकै पापरूपकल्मषों तैंरहितहुएहैं तिसतैंअनंतर अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै जेपुरुष ऋषिभावकूं प्रातहुएहैं अर्थात् सूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेविषेसमर्थ संन्यासीहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर जेपुरुष वेदांतशास्त्रके श्रवणमननकीपरिपक्वताकरिकै छिन्नद्वैधाहुएहैं अर्थात् प्रमाणगतसंशयप्रमेयगतसंशय इत्यादिकसर्वसंशयोंतैंरहितहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर निदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै यतात्माहुएहैं अर्थात् विपरीतभावनाकीनिवृत्तिपूर्वक एकपरमात्माविषेही एकाग्रचित्तवालेहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर द्वैतदर्शनकेअभावकरिकै जेपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषे प्रीतिवालेहुएहैं अर्थात् शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वभूतप्राणियोंकीहिंसातैंरहितहुएहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषही तासर्वद्वैतकीनिवृत्तिरूप परमानंदस्वरूपब्रह्मकूं अभेदरूपकरिकैप्रातहोवें हैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतःइति) ॥ अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं यहसर्वभूत आपणाआत्मारूपहीहोतेभयेहैं तिसज्ञानअवस्थाविषे एकअद्वितीयआत्माकूंदेखणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं द्वैतदर्शनकेअभावहुए किसीमोहकीप्राप्ति तथाकिसी शोककीप्राप्ति कदाचित्भी होवैनहींइति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (शक्नोतीहैवयः सोढुम्) इसश्लोकविषे उत्पन्नहुएभी कामक्रोधकेवेगकूं इसपुरुषनैं सहनकरणा यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ अब इसअधिकारीपुरुषनैं कामक्रोधकेउत्पत्तिकाही प्रतिबंधकरणा अर्थात् ताकामक्रोधकूं उत्पन्नहीनहींहोणेदेणा इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कामक्रोधवियुक्तानांयतीनांयतचेतसाम् ॥ अभितोब्रह्मनिर्वाणंवर्त्ततेविदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ कामक्रोधवियुक्तानाम् । यतीनाम । यतचेतसाम् । अभितः । ब्रह्म । निर्वाणम् । वर्त्तते । विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जेपुरुष कामक्रोधकीउत्पत्तितैंरहितहैं तथाचित्तकेनिग्रहवालेहैं तथाआत्मसाक्षात्कारवालेहैं ऐसेसंन्यासियोंकूं सर्वअवस्थाविषे सोनिर्वाणरूप ब्रह्म प्रातहै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

हेभगवन् ! तापुरुषकूं बाह्यविषयसुखकाअभाव किसकारणतैं है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अंतरारामःइति) हेअर्जुन ! जिसकारणतैं ॥ सोपुरुष अंतरारामहै तिसकारणतैं सोपुरुष बाह्यविषयसुखोंतैंरहितहै ॥ अंतरआत्माविषेहीक्रीडारूपआरामजिसकूं बाह्यविषयसुखकेसाधनरूपस्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे सोक्रीडारूप आराम जिसकूंहैनहीं ताकानामअंतरारामहै ॥ अर्थात् जोपुरुष सर्वपरिग्रहतैंरहितहोणेतैं बाह्यविषयसुखकेसाधनोंतैंरहितहै ॥ शंका—हेभगवन् ! सर्वपरिग्रहतैंरहित जोविरक्तसंन्यासीहै तिससंन्यासीकूंभी यदृच्छातैंप्राप्तहुए कोकिलादिकोंकेमधुरशब्दकेश्रवणकरिकै तथामंदमंदपवनकेस्पर्शकरिकै तथाचंद्रमाके दर्शनकरिकै तथमयूरनृत्यकेदर्शनकरिकै तथाअत्यंतमधुरशीतलगंगाजलकेपानकरिकै तथाकेतककीकुसुमकीसुगंधिके ग्रहणकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवहोइसकैहै ॥ यातैं तासंन्यासीकूं बाह्यसुखकाअभाव तथातासुखकेसाधनोंकाअभाव कहणासंभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (तथांतर्ज्योतिरेवयः) हे अर्जुन ! जैसे ताविद्वान्पुरुषकूं अंतरआत्माविषेही सुखहै बाह्यविषयोंकरिकै सुखहैनहीं ॥ तैसे अंतरआत्माविषेहीहै ज्योतिः क्या वृत्तिरूपविज्ञान जिसका बाह्यइंद्रियोंकरिकै सोविज्ञानरूपज्योति जिसका हैनहीं ताकानाम अंतर्ज्योतिहै अर्थात जोपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियजन्य शब्दादिकविषयोंकेज्ञानतैंरहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं समाधिकालविषेतौ तिनशब्दादिकविषयोंकी प्रतीतिही नहींहोवैहै ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानकालविषे यद्यपि ताविद्वान्पुरुषकूं तिनशब्दादिकोंकीप्रतीति होवैहै तथापि सोविद्वान्पुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकूं मृगतृष्णाकेजलकीन्याईं मिथ्याहीजानैहै ॥ यातैं ताविद्वानपुरुषकूं बाह्यविषयोंकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवतीनहीं इति ॥ हेअर्जुन ! इसप्रकार जोपुरुष अंतःसुखहै तथाअंतरारामहै तथाअंतर्ज्योतिहै सोविद्वान्पुरुषही मन सहितसर्वइंद्रियोंकेनिरोधरूपयोगवाला होणेतैं योगीहै ॥ ऐसायोगीपुरुषही तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्यारूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै परमानंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्त होवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म निर्वाणहै अर्थात कल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिरूपहै ॥ जिसकारणतैं कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानरूपहीहोवैहै ताअधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचरूपअनर्थकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूप मोक्षका कथनकऱ्या ॥ ऐसेनिर्वाणब्रह्मकूंभी यहविद्वान्पुरुष आप अब्रह्मरूपहुआ प्राप्तहोवैनहीं किंतु सोविद्वान्पुरुष आप सर्वदा ब्रह्मरूपहुआही ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् नित्यप्राप्तब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति) ॥ अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष ज्ञानतैं पूर्वही वास्तवतैं ब्रह्मरूपहुआभी अज्ञानकृतविस्मृतिकेहुए आत्मज्ञानकरिकै पुनः ताब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहां मोक्षकेप्राप्तिकाकारणरूप जो आत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानके पूर्वअनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहैं ॥ अबताआत्मज्ञानके दूसरेसाधनोंकूंभी श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

कऱ्याहै ॥ जैसे मरणतैंउत्तर विलापकरतीहुई सुंदरस्त्रियोंनैं आलिंगनकऱ्याहुआभी तथापुत्रादिकोंनैं अग्निविषेदाहकऱ्याहुआभी यहपुरुष प्राणोंतैंरहितहोणेनैं ताकामक्रोधकेवेगकूंसहनकरैहै तैसे मरणतैंपूर्व जीवितअवस्थाविषेभी जोपुरुष ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरैहै सोपुरुषही युक्तहै तथासुखीहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (प्राणेगतेयथादेहःसुखंदुःखंनविंदति ॥ तथा चेत्प्राणयुक्तोपिसकैवल्याश्रमेवसेत् ॥) अर्थयह ॥ जैसे प्राणोंकेगयेतैंअनंतर यहदेह सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे प्राणोंकरिकेंयुक्तहुआभी जोपुरुष तासुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं सोपुरुषही कैवल्यमोक्षविषेस्थित होवैहै इति ॥ परंतु याप्रकारकाव्याख्यान तबी सिद्धहोवै जबी मरणअवस्थाकीन्याई जीवितअवस्थाविषे ताकामक्रोधकीउत्पत्तिमात्रही नहींअंगीकारकरिये ॥ और इहांप्रसंगविषे ताकामक्रोधकेवेगकीअनुत्पत्तिमात्र प्राप्तहैनहीं ॥ किंतु अंतरउत्पन्नहुए कामक्रोधकेवेगकासहनही इहांप्राप्तहै ॥ यातैं ताकामक्रोधकीअनुत्पत्तिमात्रकूं दृष्टांतरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तव्याख्यानही समीचीनहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यहअर्थ कऱ्याहै ॥ इहां शरीरपदकरिकै शरीरकेआश्रितरहणेहारा गृहस्थआश्रम ग्रहणकरणा ॥ तागृहस्थआश्रमकेपरित्यागरूपसंन्यासतैंपूर्वही जोअधिकारीपुरुष विवेकवैराग्यकरिकै ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरणेविषेसमर्थहोवैहै सोईहीपुरुष पश्चात् संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकै ब्रह्मयोगयुक्तहोणेकूं तथा ब्रह्मानंदीहोणेकूं योग्यहोवैहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यासतैंपूर्व ताकामक्रोधकेवेगकूंनहींसहनकरैहै अर्थात् ताकामक्रोधकूंजयनहींकरैहै ॥ सोअशुद्धचित्तवालापुरुष संन्यासआश्रमकूंकरिकै श्रवणादिकोंकूंकरताहुआभी आत्मज्ञानकूं तथाज्ञानकेफलरूप मोक्षरूपसुखकूं प्राप्त होवैनहीं इति ॥ २३ ॥ तहां यह अधिकारी पुरुष केवल ताकामक्रोधके वेगके सहनमात्रकरिकैही मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैं अधिक भी किंचित् कर्त्तव्यहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) योंऽतःसुखोंऽतरारामस्तथांतर्ज्योतिरेवयः ॥ सयोगीब्रह्मनिर्वाणंब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ यः । अंतःसुखः । अंतरारामः । तथा । अंतर्ज्योतिः । एव । यः । सः । योगी । ब्रह्म । निर्वाणम् । ब्रह्मभूतः । अधिगच्छति ॥२४॥इतिप०॥हेअर्जुन ! जोपुरुष अंतरसुख हीहै तथा अंतरारामहीहै ॥ तथा जोपुरुष अंतर्ज्योतिहीहै सो योगीपुरुष ब्रह्मरूपहुआही निर्वाण ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । बाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंविनाही अंतर स्वरूपभूतसुख प्राप्तहैजिसकूं ताकानाम अंतःसुखहै ॥ अर्थात् जोपुरुष बाह्यविषयजन्यसुखतैंरहितहै ॥ शंका—

धनहैं ॥ तिनदुःखकेसाधनोंविषे वारंवार दोषोंकेचिंतनकरणेकरिकै उत्पन्नभयाजो प्रज्वलनरूपद्वेषहै जिसद्वेषकूं मन्युभीकहैं हैं ताकानाम क्रोधहै ताकामक्रोध्र दोनोंकी जोउत्कटअवस्थाहै जाउत्कटअवस्था लोकवेदके विरोधज्ञानका प्रतिबंधकहोणेतैं लोकवेदतैंविरुद्धअर्थविषे प्रवृत्तिकीउन्मुखतारूपहै ॥ साकाम क्रोधकीउत्कटअवस्था प्रसिद्धनदीकेवेगकेसमानहोणेतैं वेदशब्दकरिकैकहीजावैहै ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदीकावेग वर्षाकालविषे अत्यंतप्रबलताकरिकै लोकवेद केविरोधज्ञानतैं गर्त्तादिकोंविषे नहींपडनेकीइच्छाकरतेहुएपुरुषकूंभी बलात्कारतैं तागर्त्तविषेप्राप्तकरिकै डुबावै है ॥ तथाअधोदेशकूंलेजावै है ॥ तैसे सोकाम क्रोधकावेगभी निरंतर विषयोंकाचिंतनरूपवर्षाकालकरिकै अत्यंतप्रबलताकूंप्राप्तहुआ लोकवेदकेविरोधज्ञानतैं तिनविषयोंकीनहींइच्छाकरतेहुएपुरुषकूंभी ताविषयरूपगर्त्तविषे प्राप्तकरिकै संसाररूपसमुद्रविषेडुबावै है तथामहान्नरकरूपअधोदेशकूं लेजावै है ॥ यहसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं (वेगम्) याशब्दकरिकैसूचनकरयाहै ॥ यहसर्वअर्थ (अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारका अंतःकरणकाक्षोभरूप जोकामकावेगहै तथाक्रोधकावेगहै जोकमक्रोधकावेग अनेकप्रकारके बाह्यविकाररूपलिंगोंकरिकै जान्याजावैहै ॥ तहां रोमांचोंकाखड़ाहोणा तथामुखकीप्रसन्नताहोणी तथानेत्रोंकी प्रसन्नताहोणी इत्यादिक बाह्यचिन्होंकरिकै सोकामवेग अनुमानकरयाजावै है ॥ और शरीरविषेकंपहोणा तथाप्रस्वेदकानिकसणा तथाआपणेओष्ठोंकूंदांतोंसैंदबावणा तथानेत्रोंकीरक्तता इत्यादिकबाह्यचिन्होंकरिकै सोक्रोधकावेग अनुमानकऱ्याजावैहै ॥ तथा जो कामक्रोधकावेग शरीरकेनाशपर्यंत अनेकप्रकारकेनिमित्तोंकेवशतैं सर्वदा संभावनाकरया जावैहै ताअंतरउत्पन्नहुए कामक्रोधकेवेगकूं जोधैर्यवान्संन्यासी बाह्यइंद्रियोंकेव्यापाररूपगर्त्तकेपाततैंपूर्वही विषयोंविषे वारंवार दोषचिंतनजन्यवशीकारनामावैराग्यकरिकैसहनकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे तिमिंगिलनामा मत्स्यआपणेबलकरिकै नदीकेवेगकूंसहनकरै है ॥ तैसे जोधैर्यवान्पुरुषरूप वैराग्यकेबलतैं ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरैहै ॥ तहांकामक्रोधकेवेगकरिकै जोबाह्यअनर्थविषेप्रवृत्तिहै ताप्रवृत्तिरूपकार्यकूं नसंपादनकरिकै जो तिसकामक्रोधकेवेगकूं निष्फलकरणाहै यहही ताकामक्रोधकेवेगकासहनकरणाहै ॥ सोईहीपुरुष योगीहै ॥ तथा सोईहीपुरुष सुखीहै ॥ तथा सोईही परमपुरुषार्थकासंपादकहोणेतैं पुरुषरूपहै ॥ तिसतैंभिन्न जितनेक विषयासक्तपुरुषहैं ते सर्व आहार निद्रा भय मैथुन इत्यादिकपशुवोंकेधर्मविषेप्रीतिवालेहोणेतैं मनुष्यकेआकारवालेहुएभी पशुरूपहीं हैं ॥ यह वार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आह्लादरूपतायस्यसुषुप्तेसर्वसाक्षिकी ॥ तत्रोपेक्षाभवेयस्यतदन्यःस्यात्पशुःकथम्) ॥ अर्थयह ॥ जिसआत्मादेवकी आनंदरूपता सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणियोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै तिसआनंदस्वरूपआत्माविषे जिसविषयासक्तपुरुषकी उपेक्षाहीरहै है तिसबहिर्मुखपुरुषतैंपरे दूसराकौन पशुहै किंतु सोविषयासक्तबहिर्मुखपुरुषही पशुहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यह अर्थ

त्मकूंविषयकरणेहारा जोअनादिभावरूपअज्ञानहै ताकानाम अविद्याहै ॥ और सुखदुःखादिकधर्मसहित अहंकारका जो आत्माविषेअध्यासहै ताकानाम अस्मिताहै ॥ और राग द्वेष अभिनिवेश यहतीनोंतो ताअहंकारकी वृत्तिविशेषहैं ॥ इसप्रकार संसार अविद्यामूलकहोणे तैं अविद्यारूपहीहै ॥ यातैं तेसर्वविषयभोग मिथ्यारूपहुयेभी रज्जुविषेसर्पअध्यासकीन्याई दुःखकेहीकारणहैं ॥ तथा स्वप्नपदार्थोंकीन्याई दृष्टिसृष्टिमात्रहोणेतैं आदिअंतवालेभी हैं ॥ जिसपुरुका अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सोअज्ञानसहितभ्रम निवृत्तहोइगयाहै ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै सोविद्वान्पुरुष तिनमिथ्याविषयभोगोंविषे रमणकरतानहीं ॥ जैसे मृगतृष्णाकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहाराजोपुरुषहै सोपुरुष जलकेप्राप्तिकीइच्छाकारिकै तहांप्रवृत्तहोतानहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकूं मिथ्याजानणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनविषयभोगोंविषे प्रीतिकरैनहीं ॥ किंतु इससंसारविषे सुखकागंधमात्रभी नहीहै याप्रकारकानिश्चयकारिकै सोविद्वान्पुरुष तिससंसारतैं सर्वइंद्रियोंकूंनिवृत्तकरैहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहां सर्वअनर्थोंके प्राप्तिकाहेतुरूप तथाश्रेयमार्गकाविरोधी तथाअल्पप्रयत्नकारिकै दुर्निवार ऐसाजो यहअत्यंतकष्टरूपदोषहैसो दोष महान्प्रयत्नकरिकैभी मुमुक्षुजनोंनैं निवृत्तकरणेकूंयोग्यहै ॥ इसप्रकार प्रयत्नकीअधिकता विधानकरणेवासतै श्रीभगवान् पुनःकथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) शक्नोतीहैवयःसोढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात् ॥ कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तः ससुखीनरः ॥ २३ ॥ शक्नोति । इह । एव । यः । सोढुम् । प्राक् । शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवम् । वेगम् । सः । युक्तः । सः । सुखी । नरः ॥ इतिपदार्थः ॥२३॥ हे अर्जुन ! जोधीरपुरुष शरीरकेनाशपर्यंतसंभाव्यमान तथाकामक्रोधजन्यऐसेवेगकूंबाह्यइंद्रियोंकीप्रवृत्तितैं पूर्व हीं सहनकरणे विषे समर्थहोवैहै सोईहींपुरुष युक्तहै तथासोईहीपुरुष सुखी है तथासोईही पुरुषहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! प्रत्यक्षदेखेहुए तथा श्रवणकरेहुए तथास्मरणकरेहुए जितनेक आत्माकेअनुकूल विषयसुखकेसाधनहैं ॥ तिनसुखसाधनोंके सौंदर्यतादिकगुणोंका वारंवार चिंतनकरणेकारिकै तिनविषयसुखकेसाधनों विषे उत्पन्नभयाजो रतिनामा अभिलाषाहै जिस अभिलाषाकूं तृष्णा लोभ कहैहैं ताकानाम कामहै ॥ यद्यपि स्त्रीपुरुषदोनोंकी जापरस्पर विषयसंबंधविषे अभिलाषाहै ताअभिलाषाविषेही सोकामशब्द निरूढहै ॥ इसअभिप्रायकरिकैही (कामः क्रोधस्तथालोभः) इसवचनविषे धनकीतृष्णाकानाम लोभहै और स्त्रीकेसंसर्गकीतृष्णाकानाम कामहै इसप्रकार काम लोभ यहदोनों भिन्नभिन्न कथन करैहैं ॥ तथापि इहांतो काम लोभ दोनों विषेअनुगत जोतृष्णारूप सामान्यहै तातृष्णारूपसामान्यकेअभिप्रायकारिकै केवल कामशब्दहीकथनकऱ्याहै ॥ ताकामशब्दतैंपृथक् लोभ शब्द कथनकऱ्यानहीं इति ॥ और प्रत्यक्षदेखेहुए तथाश्रवणकरेहुए तथास्मरणकरेहुए जितनेक आत्माकेप्रतिकूल दुःखकेसा

ग्यकूंप्राप्तहुआनहीं किंतु तिसकालविषे सोचैत्रपुरुषकाराग ताएकस्त्री विषे वृत्तिकूंप्राप्तहुआ है और अन्यस्त्रियोंविषे सोराग आगेवृत्तिकूंप्राप्तहोवैगा यातैं तिसकालविषे सोराग विच्छिन्न कह्याजावैहे ॥ इसप्रकारकीरीति दूसरेक्लेशोंविषेभी जानिलेणी और जेक्लेश जिसकालविषे विषयोंविषे वृत्तिकूंप्राप्तहुएहैं तेक्लेश तिसकालविषे सर्वरूपकरिकै प्रादुर्भूतहुए उदार कहेजावैं हैं ॥ तेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले दोनोंप्रकारकेक्लेश अत्यंतस्थूलहैं ॥ यातैं तेदोनों प्रकारकेक्लेश शुद्धसत्त्वमय भगवत्केध्यानकरिकैही निवृत्तहोवैं हैं ॥ तेदोनोंस्थूलक्लेश आपणीनिवृत्ति विषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ सूक्ष्मक्लेशही आपणीनिवृत्तिविषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरैं हैं ॥ जैसेलोकविषे वस्त्रकाजोस्थूल मल है सोस्थूलमल जलकेप्रक्षालनतैं निवृत्तहोइजावैहे और तावस्त्रविषे जोसूक्ष्म मल है सो सूक्ष्म मल क्षारसंयोगादिकोंकरिकै निवृत्तहोवैहे ॥तैसे तेस्थूलक्लेशतौ भगवत्केध्यानकरिकै निवृत्तहोवैंहैं और तेसूक्ष्मक्लेशतौ तामनकेनिरोधकरिकै निवृत्तहोवैं हैं यातैं यहअर्थसिद्धहुया पूर्वउक्त परिणामदुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंविषे प्रसुप्त तनु विच्छिन्न यातीनरूपोंकरिकै तेसर्व क्लेश सर्वदा रहैं हैं ॥ और उदारअवस्थातौ किसीकालविषे किसीक्लेशकीहीहोवैहे ॥ यहअविद्यादिकपंच बाधनारूपदुःखकूंउत्पन्नकरतेहुए क्लेशशब्दकावाच्यहोवैं हैं इति ॥ ९ ॥ औरधर्म अधर्मरूप जोकर्माशयहै सोक्लेशमूलकहीहोवैहे अर्थात् ताकर्माशयका तेक्लेशहीमूलभूतहैं ॥ सोक्लेशमूलक कर्माशयभी दोप्रकारकाहोवैहे ॥ एकतौ दृष्टजन्मवेदनीय होवैहे ॥ दूसरा अदृष्टजन्मवेदनीय होवैहे ॥ तहां जिसदेहकरिकै तेधर्मअधर्मरूपकर्मकरेजावैं हैं तिसदेहकरिकै जो तिनकर्मोंकेफलका भोग भोगणाहै ताकानाम दृष्टजन्मवेदनीयहै ॥ और जिसकर्माशयकाफल इसशरीरविषेभोग्याजावैनहीं किंतु जन्मांतरविषेभोग्याजावैहे सोकर्माशय अदृष्टजन्मवेदनीय कह्याजावैहे इति ॥ १० ॥ तहां मूलभूतक्लेशोंके विद्यमानहुए ताधर्मअधर्मरूपकर्माशयकाफल अवश्यकरिकैहोवैहे ॥ सोकर्माशयकाफलभी जाति आयुष भोग याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहे ॥ तहां जन्मकानाम जातिहै ॥ अथवा ब्राह्मणत्व देवत्व आदिकोंकानाम जातिहै ॥ और देह प्राण यादोनोंका जोचिरकालपर्यंतसंबंधहै ताकानामआयुषहै ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकाजोअनुभवहै ताकानाम भोगहै ॥ तिनतीनों विषेभी भोगतौ मुख्यहै ॥ और जाति आयुष यहदोनों ताभोगका शेषरूपहैंइति ॥ ११ ॥ इसप्रकार तिनअविद्यादिकक्लेशोंकी संतति निरंतर प्रवृत्तहोइरहीहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअभिप्रायकूं मनविषेराखिकै श्रीभगवान्नैं (येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते आद्यंतवंतः) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तहां तिनविषयभोगोंविषे दुःखयोनित्वतो (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ और तिनविषयभोगोंविषे आदिअंतवत्त्वतौ (चलंहिगुणवृत्तम्) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ यहसर्वव्याख्यान योगशास्त्रकेमतकेअनुसार कथनकऱ्याहै ॥ औरवेदांतमतविषेतौ ताकायहअर्थहै ॥ ब्रह्मकेआश्रित तथाब्र

कूंकोईप्रकारकादुःख नहींप्राप्तहोवै याप्रकारका जोविपर्ययविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ।। इसीद्वेषकूंशास्त्रविषे तामिश्र यानामकरिकेकथनकरैंहैं इति ।। ६ ।। और जीवनकाहेतुजोआयुष्है ताआयुष्केअभावहुएभी इनअनित्यभीदेहइंद्रियादिकोंसाथि हमारा कदाचित्भी वियोगनहींहोवै याप्रकारकाजो विद्वान्अविद्वान् सर्वप्राणियोंविषेसाधारण मरणकात्रासरूपविपर्ययहै ताकानाम अभिनिवेशहै इसीअभिनिवेशकूं शास्त्रविषे अंधतामिस्र यानामकरिकेकथनकऱ्याहैइति ।। ७ ।। यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ।। तहांश्लोक ।। (तमोमोहोमहामोहस्तामिस्रोह्यंधसंज्ञितः ।। अविद्यापंचपर्वैषाप्रादुर्भूतामहात्मनः) ।। अर्थयह ।। इसपुरुष कीअविद्या तम मोह महामोह तामिस्र अंधतामिस्र इनपंचप्रकारोंकरिकै प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहअविद्यादिकपंचक्लेश प्रसुप्तअवस्था तनुअवस्थाविच्छिन्न अवस्था उदारअवस्था याच्यारिअवस्थावोंवालेहोवैं हैं ॥ तहां असत्कार्यकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकी आपणी उत्पत्तितैंपूर्व जाअनभिव्यक्तरूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम प्रसुप्तअवस्थाहै ॥ और अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुएभी तिनक्लेशोंविषे दूसरेसहकारीकारणकेअलाभतैं जोकार्यकीअजनकताहै ताकानाम तनुअवस्थाहै ॥ और जे क्लेश अभिव्यक्तिकूंभी प्राप्तहुएहैं तथाजिनक्लेशोंनैं आपणेआपणेकार्यकूंभी उत्पन्न कऱ्या है ऐसेक्लेशोंकाभी जोकिसीबलवान्प्रत्ययकरिकै अभिभवहै ताकानाम विच्छिन्नअवस्थाहै ॥ और जेक्लेश अभिव्यक्तिकूंभीप्राप्तहुएहैं तथा दूसरेसहकारी कारणोंकीसंपत्तिकूंभीप्राप्तहुएहैं ऐसेक्लेशोंविषे जोप्रतिबंधतैंरहितपणेकरिकै आपणेआपणेकार्यकीजनकताहै ताकानाम उदारअवस्थाहै ॥ इस प्रकारकी च्यारिअवस्थावोंकरिकैविशिष्ट तथाविपर्ययबुद्धिरूप ऐसेजे अस्मितादिक च्यारिक्लेशहैं तिनच्यारोंक्लेशोंका सामान्यरूपअविद्याही क्षेत्ररूपहै अर्थात् साअविद्या तिनच्यारोंक्लेशोंकेउत्पत्तिकाभूमिरूपहै ॥ तिनसर्वक्लेशोंविषे विपरीतबुद्धिरूपता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताअविद्याकीनिवृत्तिकरिकेही तिनअस्मितादिकसर्वक्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहैइति ॥ तेक्लेशभी सूक्ष्म स्थूल याभेदकरिकै दोप्रकारकेहोवैं हैं ॥ तहां प्रकृतिविषेलीनपुरुषोंके जेप्रसुप्तक्लेशहैं तथा विरोधीभावनाकरिकै तनुकरेहुए जेयोगीपुरुषोंके तनुक्लेशहैं तेप्रसुप्तअवस्थावालेक्लेश तथातनुअवस्थावालेक्लेश दोनों सूक्ष्म कहेजावैं हैं ॥ तेसूक्ष्मक्लेशतौ मनका निरोधरूपनिर्बीजसमाधिकरिकेही निवृत्तहोवैं हैं ॥ इसीमनकेनिरोधकूं सूत्रविषे प्रतिप्रसव इसनामकरिकेकथनकऱ्याहैइति ॥ ८ ॥ और तिनसूक्ष्मक्लेशोंकाकार्यरूप जेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले क्लेशहैं तेदोनोंप्रकारकेक्लेश स्थूल कहेजावैं हैं ॥ तहां जे क्लेश बीचमैंविच्छेदकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसरूपकरिकै पुनः पुनः प्रादुर्भावकूं प्राप्तहोवैं हैं तेक्लेश विच्छिन्न कहेजावैं हैं ॥ जैसे रागकालविषे क्रोध विद्यमानहुआभी प्रादुर्भूतहोवैनहीं किंतु कालांतरविषे सोक्रोध प्रादुर्भूतहोवैहै ॥ यातैं सोक्रोध विच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसीप्रकार जिसकालमें चैत्रनामा पुरुष एकस्त्रीविषेरागवालाहै तिसकालविषे सोचैत्रनामापुरुष अन्यस्त्रियोंविषे कोईवैरा

तहां अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धिकरणी यहप्रथम अविद्याहै ॥ जैसे पृथिवी चंद्र सूर्य तारागण स्वर्ग देवता इत्यादिक अनित्यपदार्थोंविषे यहसर्वपदार्थनित्यहैं ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरणीइति ॥ और अशुचिपदार्थोंविषे शुचिबुद्धिकरणी यहदूसरीअविद्याहै ।। जैसे अशुचिस्त्रीकेशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी ॥ यह वार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्पंदान्निधनादपि ।। कायमाधेयशौचत्वात्पंडिताह्यशुचिंविदुः) ।। अर्थयह ।। शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेविद्वान्पुरुष इसशरीरकूं स्थान बीज उपष्टंभ निष्पंद निधन आधेयशौच इतनें हेतुवोंतैं अशुचिही जानैं हैं ॥ तहां विष्ठामूत्रादिकोंकरिकैयुक्त जोमाताकाउदरहै ताकानाम स्थानहै ऐसेमलिनस्थानविषे इसशरीरकीस्थितिहोवै है ।। यातैं यहशरीर स्थानतैंभी अशुचिहीहै ।। और पिताकाजो सप्तमधातुरूपशुक्रहै तथामाताकाजो सप्तमधातुरूपशोणितहै याकानाम बीजहै ऐसेबीजतैं इसशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै यातैं यहशरीर बीजतैंभी अशुचिहीहै ।। और अन्नकापरिणामरूप जो श्लेष्मरुधिरादिकहैं याकानामउपष्टंभहै ताउपष्टंभतैंभी यहशरीर अशुचिहीहै ।। और मुख नासिका कर्ण नेत्र पायु उपस्थ इनसर्व द्वारोंतैं जेमलका बाहरिनिकसणाहै याकानाम निष्पंदहै तानिष्पंदतैंभी यहशरीर अशुचिही है ॥ और मरणका नाम निधनहै जिसमरणकरिकै विद्वान्ब्राह्मणकाशरीरभी अशुचिहोवैहै तानिधनतैंभी यहशरीर अशुचिही है ॥ और स्नानचंदन लेपादिकोंकरिकै जोइसशरीरविषे शुचित्वकाआपादनकरणाहै याकानाम आधेयशौचहै ताआधेयशौचताकरिकैभी यहशरीर अशुचिही है इति ।। ऐसेअशुचिस्त्रीशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी दूसरीअविद्याहैइति ।। और दुःखरूप विषयभोगोंविषे सुखबुद्धिकरणी यहतीसरीअविद्याहै ।। सोदुःखविषेसुखबुद्धितो (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे पूर्वकथनकरिआयेहैंइति ।। और अनात्मवस्तुविषे आत्मबुद्धिकरणी यहचतुर्थअविद्याहै ।। जैसे अनात्मरूपइसस्थूलशरीरविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारकीआत्मबुद्धिकरणीइति ।। इसप्रकार च्यारिप्रकारकेभेदकरिकैस्थितजाअविद्याहै साअविद्याही अस्मितादिकसर्वक्लेशोंका मूलभूतहै ॥ इसीअविद्याकूं शास्त्रविषे तम यानामकरिकैकथनकरैं हैं इति ।। ३ ।। और दृक्शक्ति जोपुरुषहै तथादर्शनशक्ति जाबुद्धिहै तेदोनों भोक्ताभोग्यरूपकरिकै अत्यंतभिन्नहैं ऐसे पुरुष बुद्धि दोनोंका जोअविद्याकृत अभेदअभिमानहै याकानाम अस्मिताहै इसीअस्मिताकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष हृदयग्रंथि इसनामकरिकैकथनकरैं हैं और इसीअस्मिताकूं शास्त्रविषे मोह यानाम करिकैकथनकरैं हैंइति ।। ४ ॥ और तिसतिससुखकीप्राप्तिकेजेसाधनहैं, तिनसर्वसाधनोंतैं रहित पुरुषका जो सर्वप्रकारकेसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारका विपर्ययविशेषहै ताकानाम रागहै ।। इसीरागकूं शास्त्रविषे महामोह यानामकरिकै कथनकरैंहैं ।। ५ ।। और दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंकेविद्यमानहुएभी हमारे

सत्त्वगुणका सोप्रत्यय कार्यहैनहीं ॥ यातैं सोसुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी त्रिगुणात्मकहीहै यातैं तासुखकाउपभोगरूपप्रत्ययविषे सुखरूपतातथादुःखरूपता तथाविपादरूपता यहतीनोंही वियमानहैं ॥ याकारणतैंही विवेकीपुरुषकूं तेसर्वविषयकमुखोंके अनुभव दुःखरूपहीहैं ॥ ऐसादुःखरूपविषयसुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी कोईस्थिरनहीं हैं किंतु सोप्रत्यय शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसकारणतैं (चलंद्रिगुणवृत्तम्) इसवचनकारकैं चित्तकूं शीघ्रपरिणामी कथनकऱ्याहै ॥ शंका— एकही सोप्रत्यय एकहीकालविषे परस्परविरुद्ध सुखदुःखमोहरूपताकूं कैसेप्राप्तहोवैगा किंतु नहीप्राप्तहोवैगा ॥ समाधान—उद्भूत अनुद्भूत यादोनोंका परस्परविरोधहोवैनहीं किंतु समवृत्तिवालेगुणोंकाही एककालविषे परस्पर विरोधहोवैहै ॥ विषमवृत्तिवालेगुणोंका एककालविषे परस्पर विरोधहोतानही ॥ जैसे इसपुरुषविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तएहुजे धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य यहच्यारोंहैं तेअभिव्यक्तधर्मादिकच्यारों आपणेसमान अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुएजे अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य यहच्यारिहैं तिनच्यारोंकेसाथिही यथाक्रमतैं विरोधकूंकरैंहैं ॥ अनभिव्यक्तअधर्मादिकोंकेसाथि अभिव्यक्तधर्मादिक विरोधकूंकरते नहीं ॥ इसलोकविषेभी एकप्रधानपुरुषका दूसरे प्रधानपुरुषकेसाथिही विरोधहोवैहै दुर्बलपुरुषकेसाथि ताप्रधानपुरुषका विरोधहोतानही । तैसे सत्त्व रज तम यहतीनोंगुणभी एककालविषे परस्पर प्रधानतामात्रकूं नहींसहनकरैंहैं ॥ एकदूसरेके सद्भावमात्रकूंअसहनकरतेनहीं ॥ इसीप्रकार परिणाम दुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंविषेभी एकहीकालविषे राग द्वेष मोह यातीनोंकासद्भावभीजानिलेणा ॥ जिसकारणतैं तेरागद्वेषादिकक्लेश प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार इनच्यारिरूपोंकरिकै च्यारिअवस्थावोंवालेहीहोवैंहैं ॥ अब तिनक्लेशोंकास्वरूप योगशास्त्रकीरीतिसैंवर्णनकरैंहैं ॥ तहांयोगसूत्र ॥ (अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःपंचक्लेशाः ॥ १ ॥ अविद्याक्षेत्रमुत्तरेषांप्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥ २ ॥ अनित्याशुचिदुःखाऽनात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ ३ ॥ दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता ॥ ४ ॥ सुखानुशयीरागः ॥ ५ ॥ दुःखानुशयीद्वेषः ॥ ६ ॥ स्वरसवाहीविदुषोऽपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ७ ॥ तेप्रतिप्रसवहेयाःसूक्ष्माः ॥ ८ ॥ ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः ॥ ९ ॥ क्लेशमूलः कर्माशयोदृष्टाऽदृष्टजन्मवेदनीयः ॥ १० ॥ सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः ॥ ११ ॥) अब यथाक्रमतैं इनएकादशसूत्रोंकाअर्थ निरूपणकरैंहैं ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेशहोवैंहैं ॥ तहां कर्मके तथाताकेफलके प्रवर्त्तकहुएजे इस पुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं तिन्होंकानाम क्लेशहै ॥ याप्रकारकालक्षण तिनअविद्यादिकपांचोंविषेघटै है ॥ यातैं तेअविद्यादिकपांचों क्लेशकहेजावैंहैं इति ॥ १ ॥ तिनपंचक्लेशोंविषेभी प्रथमक्लेशरूप जाअविद्याहै साअविद्याही प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार याच्यारिअवस्थावाले अस्मितादिकच्यारिक्लेशोंका कारणरूपहै ॥ तहां ततअभाववालेविषेतत्वचाबुद्धि विपर्यय मिथ्याज्ञान अविद्या यहच्यारोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैंइति ॥ २ ॥ साअविद्या च्यारि प्रकारकी होवैहै ॥

यह पुरुष द्वेषकरैहै ॥ और तिन दुःखकेसाधनरूपभूतोंका नहींहननकरिकै सोविषयसुखकाभोग संभवतानहीं ॥ यातैं ताविषयसुखवासतै सोपुरुष तिनप्रतिकूलभूतोंकूं अवश्यकरिकै हननकरैहै तहां जितनेकदुःखहैं तेसर्वदुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्त होवैं याप्रकारका जो संकल्पविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ताद्वेषकेविषयरूप जितनेक दुःखकेसाधनहैं तिनसर्वोंकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभी प्राणी समर्थहोवैनहीं ॥ यातैं ताविषयसुखकेअनुभवकालविषेभी तासुखकेविरोधी विषयकद्वेष सर्वदा बन्यारहैहै तिसद्वेषके विद्यमानहुए सोतापदुःख निवृत्तकरणेकूं अशक्यहै इहां तापकूंही द्वेषकहैहैं ॥ इसप्रकार तिनदुःखसाधनोंकेनिवृत्तकरणेविषे असमर्थजोपुरुषहै सोपुरुष तिसकालविषे मोहकूंभी अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तापदुःखताकीन्याई संमोहदुःखताभी निवृत्तकरणेकूं अशक्य है ॥ तहां तिसतापरूपद्वेषतैं कर्माशय उत्पन्नहोवैहै ॥ काहेतैं जोपुरुष विषयसुखकेसाधनोंकीइच्छाकरैहै सोपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै अवश्य प्रवृत्तहोवैहै ।। ताप्रवृत्तितैंअनंतर आपणेअनुकूलप्राणियोंऊपरि अनुग्रहकरैहै ।। और आपणेप्रतिकूलप्राणियोंका हननकरैहै ।। तानुकूलप्राणियोंके अनुग्रहतैं तथा प्रतिकूलप्राणियोंकेहननतैं सोपुरुष धर्मअधर्मकूं संपादनकरैहै ।। याकानाम कर्माशयहै ।। सोकर्माशय लोभतैं तथामोहतैं होवैहै इति ।। इतनेकरिकै तिनविषयसुखोंविषे तापदुःखता कथनकरी ।। अब संस्कारदुःखता कथनकरैं हैं ।। तहां वर्तमानकालविषेजोविषयसुखकाअनुभवहै सोविषयसुखका अनुभव आपणेनाशकालविषे इसपुरुषकेचित्तविषे संस्कारोंकूंउत्पन्नकरिजावैहै ।। आगेतैं तेसंस्कार तासुखविषयकस्मरणकूं उत्पन्नकरैंहैं तिसतैंअनंतर सोसुखविषयक स्मरण तिनसुखोंविषे रागकूंउत्पन्नकरैहै ।। तिसतैंअनंतर सोसुखविषयकराग तासुखकीप्राप्तिवासतै शरीरमनवाणीकीचेष्टाकूं उत्पन्नकरैहै ।। तिसतैंअनंतर साशरीरादिकोंकीचेष्टा पुण्यपापरूपकर्माशयकूं उत्पन्नकरैहै ।। तिसतैंअनंतर तेपुण्यपापकर्म जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरैं हैं ।। इसकानाम संस्कारदुःखताहै इसप्रकार तापमोहकेसंस्कारभीजानिलेणे ।। इतनेकरिकै भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनोंकालविषे दुःखकरिकैयुक्तहोणेतैं यहसर्वविषयसुख दुःखरूपहीहै यहअर्थ कथनकऱ्या ।। अब तिनविषयसुखोंविषे स्वरूपतैंभी दुःखरूपता कथनकरैं हैं (गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै इहां सुखरूपजोसत्त्वगुणहै तथादुःखरूपजोरजोगुणहै तथामोहरूपजोतमोगुणहै यातीनोंका गुणशब्दकरिकै ग्रहणकरणा ॥ ते सत्त्व रज तम तीनोंगुण परस्पर विरुद्धस्वभाववालेहुएभी जैसे तेल वर्त्ति अग्नि यहतीनों मिलिकै एकही दीपकरूपकार्यकूं उत्पन्नकरैं हैं तैसे इस पुरुषकेभोगवासतै तीनगुणात्मककार्यकूं उत्पन्नकरैं हैं ।। तिसत्रिगुणात्मककार्यविषेभी एकगुणकीतो प्रधानताहोवैहै ॥ और दूसरेदोगुणोंकी गौणताहोवैहै ॥ ताएकप्रधानगुणकूंअंगीकारकरिकैही सोत्रिगुणात्मककार्यभी सात्त्विक राजस तामस याप्रकार एकएकगुणकरिकै कथनकऱ्याजावैहै ।। तहां सुखकाउपभोगरूपजोप्रत्ययहै सोप्रत्यय उद्भूतसत्त्वगुणकाकार्यहुआभी अनुद्भूतरजतमकाभी कार्यहोवैहै ।। केवल

याकारणतैंहीशास्त्रविषे ताविवेकीपुरुषकूं अक्षिपात्रकेतुल्य कथनकऱ्याहै ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतुकृतजोतंतुहै सोतंतु अत्यंतसूक्ष्महोवैहै तथा अत्यंतकोमलहोवैहै ऐसा तंतुभी नेत्रविषेपड्याहुआ आपणेस्पर्शकारिकै तानेत्रकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तानेत्रतैंभिन्न दूसरेमुखनासिकादिकअंगोंविषेपड्याहुआ सोतंतुदुःखकीप्राप्ति करैनहीं ॥ तैसे मधु विष दोनोंकरिकै मिलित अन्नभोजनकीन्याई तीनकालोंविषे क्लेशकरिकैव्याप्त जेविषयभोगकेसाधनहैं तेविषयभोगके साधन ताविवेकीपुरुषकूंही दुःखकी प्राप्तिकरैहैं॥ अर्थात् सोविवेकीपुरुषही तिनोंकूं दुःखरूपमानैं हैं ॥ और रात्रि दिनविषे बहुतप्रकारकेदुःखोंकूंसहनकरणेहारा जो अविवेकीमूढपुरुषहै ॥ तिसअविवेकी मूढपुरुषकूं तेविषयभोगके साधन दुःखकीप्राप्तिकरैंनहीं अर्थात् सोअविवेकीपुरुष तिनभोगकेसाधनोंकूं दुःखरूपमानतानहीं तहां तापतंजलिसूत्रविषे (परिणामताप संस्कारदुःखैः) यापदकरिकै भूत वर्तमान भविष्यत् यातीनकालोंविषेभी दुःखकरिकै मिश्रितहोणेतैं तिनविषयसुखोंविषे औपाधिकदुःखरूपता कथनकरीहै और (गुणवृत्तिविरोधात) यापदकरिकै तिन विषयसुखोंविषे स्वरूपतैंभीदुःखरूपता कथनकरीहै ॥ (तहां परिणामतापसंस्कारदुःखैः) यावचनकेअंतविषेस्थित जो दुःख यहशब्दहै तादुःखशब्दका परिणाम ताप संस्कार यातीनोंशब्दोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ याकरिकै यह अर्थसिद्धहोवैहै परिणामदुःख तापदुःख संस्कार दुःख यातीनोंरूपताकरिकै तेविषयसुख दुःखरूपहीं हैं ॥ सोयह प्रकार अब दिखावैं हैं ॥ जितनाक विषयसुखकाअनुभवहोवैहै सोसर्व रागकरिकैयुक्तहीहोवैहै रागतैंविना सोविषयसुखकाअनुभवहोवैहैनहीं ॥ काहेतैं जिसपुरुषका जिसवस्तुविषे रागहोवैहै सोपुरुषही तिसवस्तुकीप्राप्तिकरिकै सुखीहोवैहै और जिस पुरुषका जिसवस्तुविषे रागनहींहोवैहै सोपुरुष तिसवस्तुकीप्राप्तिकरिकै सुखीहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्तितैंपूर्व उद्भवहुआ जोरागहै सोरागही ताविषयकीप्राप्तिकालविषे सुखरूपकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै और सोराग क्षणक्षणविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ तारागकाविषयजोपदार्थहै तापदार्थकी जबी अप्राप्तिहोवैहै तबी अवश्यकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं सोराग दुःखरूपहीहै ॥ तहां भोगोंविषे परितृप्तताकरिकै जा इंद्रियोंकीउपशांतिहै ताकानाम सुखहै ॥ और तिनभोगोंविषे लौल्यताकरिकै जा तिनइंद्रियोंकी अनुपशांतिहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोबहुतभोगोंकेभोगणेकरिकै तिनइंद्रियोंकूं तृष्णातैंरहितकरणेविषे कोईभीप्राणी समर्थनहींहै ॥ उलटा बहुतभोगणेकरिकै तृष्णाकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ जैसे घृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै अग्निकीवृद्धिहोती जावैहै यातैं दुःखरूपरागकापरिणामहोणेतैं सोविषयसुखभी दुःखरूपहीहोवैहै जिसकारणतैं कार्यकारणकाअभेदहीहोवैहै ॥ तिसकारणतैं दुःखरूपरागका परिणामहोणेतैं सोविषयसुखभी दुःखरूपहीहै ॥ इतनेकरिकै ताविषयसुखविषे परिणामदुःखरूपता कथनकरी ॥ अब तापदुःखरूपता कथन करैं हैं ॥ तहां यहपुरुष जिसकालविषे ताविषयसुखकाअनुभवकरैहै तिसकालविषे ताविषयसुखकेप्रतिकूल जितनेकदुःखकेसाधनहैं तिनसर्वदुःखोंकेसाधनोंविषे

आभयता प्राप्तहोवैहै तिनपदार्थोंविषे एकभी पदार्थ सिद्धहोतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकैही तिनविषयोंकेभीतिकीनिवृत्तिहोवैहै यातैं ताअन्योन्यआश्रयतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकाउत्तरकथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते ॥ आद्यंतवंतःकौंतेयनतेषुरमतेबुधः ॥ २२ ॥ ये[3] । हि[2] । संस्पर्शजाः[4] । भोगाः[5] । दुःखयोनयः[7] । एव[6] । ते[8] । आद्यंतवंतः[9] । कौन्तेय[1] । न[12] । तेषु[11] । रमते[13] । बुधः[10] ॥२२॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जिसंकारणतैं जितनेक विषयइंद्रियकेसंबंधजन्य भोगहैं तेसर्वभोग दुःखकेहेतु होहैं तथा आदिअंतवाले हैं तिसकारणतैं विवेकी[10] पुरुष तिनभोगोंविषे नहीं प्रीतिकरैं हैं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शब्दादिकविषयोंकेसाथि जेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहैं तिनोंकानाम संस्पर्शहै तासंस्पर्शकरिकैजन्य जितनेक अत्यंतक्षुद्रलेशमात्रसुखकेअनुभवरूप भोगहैं तेसर्वभोग इसलोकविषे तथापरलोकविषे रागद्वेषकरिकैव्याप्तहोणेतैं दुःखकेहीहेतुहैं अर्थात् इसमनुष्यलोकतैं आदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकभोगहैं तेसर्वभोग तीनकालविषे दुःखकेहीहेतुहैं ॥ यहवार्त्ता विष्णुपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यावतःकुरुतेजंतुःसंबंधान्मनसःप्रियान् ॥ तावंतोऽस्यनिखन्यंतेहृदयेशोकशंकवः) ॥ अर्थयह ॥ यहजीव जितनेक मनके प्रियसंबंधोंकूं करैहै तितनेही शोकरूपीशंकु इसपुरुषके हृदयविषे छिद्रकरैंहैंइति ॥ इसप्रकारके तेभोगभी कोईस्थिरहैंनहीं किंतु आदिअंतवालेहैं ॥ इहां विषयइंद्रियकेसंयोगकानाम आदिहै और ताकेवियोगकानाम अंतहै तेआदिअंतदोनों जिनोंविषे विद्यमानहोवैं तिनोंकानाम आदिअंतवत्है अर्थात् तेभोग ताआदिकालविषेभीनहींहैं तथाअंतकालविषेभीनहींहैं किंतु स्वप्नपदार्थोंकीन्याईं तेभोग केवल मध्यकालविषेही प्रतीतहोवैं हैं ॥ यातैं तेभोग स्वप्नपदार्थोंकीन्याईं क्षणिकहैं तथामिथ्यारूपहैं ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ (आदावंतेचयन्नास्तिवर्त्तमानेपितत्तथाइति ॥) अर्थयह ॥ जोपदार्थ आदिकालविषेभीनहींहोवैहै तथाअंतकालविषेभी नहींहोवैहै सोपदार्थ वर्तमान कालविषेभी वास्तवतैंनहींहोवैहै॥जैसे स्वप्नकेपदार्थहैंइति॥हेअर्जुन ! जिसकारणतैं यहविषयजन्यभोगइसप्रकारकेहैं तिसकारणतैं विवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे नहींरमणकरैहै अर्थाततिनभोगोंकूं प्रतिकूलजानिके सोविवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे प्रीतिकूं अनुभवकरैनहींइति॥यहवार्त्ता पतंजलिभगवानूनैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाचदुःखमेवसर्वंविवेकिनःइति ॥) अर्थयह ॥ भलीप्रकारतैंनिश्चियकऱ्याहै क्लेशादिकोंकास्वरूप जिसनैं ऐसाजोविवेकीपुरुषहै तिस विवेकीपुरुषकूं इसलोकके तथापरलोकके सर्वविषयसुख दुःखरूपहीप्रतीतहोवैं हैं ॥ अविवेकीपुरुषकूं तेविषयसुख दुःखरूपप्रतीतहोवैंनहीं॥

करी है ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैतेनार्हतःषोडशींकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इसलोकविषे जेकामजन्यसुखहैं तथा स्वर्गादिकलोकोंविषे जेमहान् दिव्यसुखहैं तेसर्वसुखतृष्णाकीनिवृत्तिजन्यसुखके षोडशवेंभागकेतुल्यभीनहींहोवैं हैंइति ॥ अथवा (आत्मनि) यापद करिकै प्रत्यक्आत्माका ग्रहणकरणा ॥ यापक्षविषे तावचनका यहअर्थकरणा ॥ त्वंपदार्थरूप प्रत्यक्आत्माविषेविद्यमानजोस्वरूपभूतसुखहैजोसुख सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणियोंकूं अनुभवहोवैहै ॥ तथा जोसुख बाह्यविषयोंकीआसक्तिरूपप्रतिबंधकेवशतैं प्रतीतहोतानहीं ॥ तिसीस्वरूपभूतसुखकूं सोविद्वान्पुरुष बाह्यविषयोंकीआसक्तिकेअभावतैं प्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा सोविद्वान्पुरुष केवल त्वंपदार्थआत्माकेसुखकूंही नहींप्राप्तहोवैहै किंतु तत्पदार्थकीएकताके अनुभवकरिकै पूर्णसुखकूंभी अनुभवकरै है ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैंहैं (सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुतेइति) परमात्मारूपब्रह्मविषे जोसमाधिरूपयोगहै ताकानाम ब्रह्मयोगहै ताब्रह्मयोगकरिकै युक्तहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका अर्थात् ताब्रह्मयोगविषे संलग्नहैअंतःकरणजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा ब्रह्मशब्दकरिकै तत्पदार्थका ग्रहणकरणा ॥ तिसतत्पदार्थरूपब्रह्मविषे महावाक्यार्थकाअनुभवरूपसमाधियोगकरिकै युक्तहुआहै क्या एकताकूंप्राप्तहुआहै त्वंपदार्थरूपआत्माजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ ऐसाब्रह्मयोगयुक्तात्माविद्वान्पुरुष उत्पत्तिनाशतैंरहित स्वस्वरूपभूत नित्यसुखकूंही प्राप्तहोवैहै अर्थात् सोविद्वान्पुरुष सर्वदा सुखानुभवरूपहीहोवैहै ॥ यद्यपि सोआत्मास्वरूपनित्यसुख वास्तवतैं इसपुरुषकूं तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी प्राप्तही है ॥ यातैं ताकीप्राप्तिकहणीसंभवतीनहीं ॥ पूर्वअप्राप्तवस्तुकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्व सोनित्यसुख अविद्याकरिकैआवृतहै ॥ यहही तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोइजावै है यहही तासुखकी प्राप्तिहै अर्थात् तानित्यसुखकाजो अज्ञानहै सोईही तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तानित्यसुखकाजोअपरोक्षज्ञानहै सोईही तानित्यसुखकीप्राप्तिहैइति ॥ यातैं प्रत्यक्आत्माविषेअभेदरूपकरिकैस्थितजोनित्यसुखहै तानित्यसुखकेअनुभवकीइच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष महान्नरकोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथाक्षणिक जाबाह्यविषयोंकीप्रीतिहै ताप्रीतितैं आपणे इंद्रियोंकूंनिवृत्तकरै ॥ ताकरिकैही इसपुरुषकी प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे स्थितिहोवैहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! बाह्यविषयोंकेप्रीतिकी जबी निवृत्तिहोवै तबी आत्माकेनित्यसुखका अनुभवहोवै ॥ और आत्माकेनित्यसुखका जबी अनुभवहोवै तबी ताअनुभवकेप्रसादतैं बाह्यविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्ति होवैहै । इसप्रकार नित्यसुखकाअनुभव तथाबाह्यविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्ति इनदोनोंकी अन्योन्यआश्रयता प्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदोपदार्थोंविषे अन्योन्य

दिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ और देहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिकानाम विपरीतभावनाहै ॥ तेअसंभावनाविपरीतभावना आत्मज्ञानके प्रतिबंध कहेवैं हैं ॥ ताअसंभावनाविपरीतभावनाकी जबी श्रवणमननिदिध्यासनतैं निवृत्तिहोवैहै तबी सर्वप्रतिबंधोंतैंरहितहुआ सोपुरुष ब्रह्मवित्होवै है अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर समाधिकीपरिपक्वताकरिकै सोविद्वान् पुरुष तानिर्दोषसमब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकैस्थिनहोवैहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषेस्थितहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मविषेस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्त कह्याजावैहै तथा स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ ऐसेजीवन्मुक्तपुरुषविषे द्वैतप्रपंचकादर्शन हैनहीं यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं प्रियअप्रियवस्तुकीप्राप्तिहुएभी जोहर्षविषादकाअभावकथनकऱ्याहै सोउचितहीहै और साधकमुमुक्षुजननैंतौ ताद्वैतदर्शनकेविद्यमानहुएभी तिनविषयोंविषेदोषदृष्टिकरिकै सोहर्षविषाद प्रयत्नकरिकैपरित्यागकरणाइति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! बाह्यशब्दादिकविषयोंविषेजाप्रीतिहै साप्रीति पूर्वअनेकजन्मोंविषेअनुभूतहोणेतैं अत्यंतप्रबलहै ॥ यातैं तिनबाह्य विषयोंविषे आसक्तहुआहैचित्तजिसका ऐसेपुरुषकी सर्वदृष्टसुखोंतैंरहित अलौकिकब्रह्मविषे स्थिति किसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी और जोआप यहकहो सोब्रह्म परमआनंदरूपहै यातैं बाह्यविषयोंकेप्रीतिकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मविषे तिसपुरुषकीस्थिति संभवहोइसकैहैइति ॥ सोयहआपका कहणा भीसंभवतानहीं काहेतैं सोब्रह्मकाआनंदअनुभवहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मानंदकूं चित्तकेस्थितिकीहेतुतासंभवतीनहीं ॥ अनुभवकऱ्याहुआ आनंदही चित्तकेस्थितिकाहेतुहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्माविंदत्यात्मनियत्सुखम् ॥ सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥ बाह्यस्पर्शेषु । असक्तात्मा । विंदति । आत्मनि । यत् । सुखम् । सः । ब्रह्मयोगयुक्तात्मा । सुखम् । अक्षय्यम् । अश्नुते॥२१॥इतिपदच्छेदः । हे अर्जुन ! बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितपुरुष अंतःकरणविषेस्थित जो सुखहै तिसकूं प्राप्तहोवैहै तथा सोतृष्णारहित ब्रह्मयोगविषेयुक्तचित्तवाला नाशतैंरहित सुखकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकेग्रहणकरणेयोग्य जेशब्दादिकविषयहैं तेशब्दादिकविषय अनात्मवस्तुकाधर्महोणेतैं बाह्यकहेजावैंहैं ॥ ऐसेबाह्यः शब्दादिकविषयोंविषे नहींआसक्तिकूंप्राप्तभयाहैचित्तजिसका ऐसाजोनिष्कामपुरुषहै सोनिष्कामपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं अत्यंतविरक्तहुआ आपणेअंतःकरणविषेस्थित जोबाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंरहित उपशमरूपसुखहै तिससुखकूंही निर्मलअंतःकरणकीवृत्तिकरिकै अनुभवकरैहै ॥ यहवार्ता भारतविषेभीकथन

(मू॰ श्लो॰) नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम् ॥ स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितः ॥ २० ॥ न । प्रहृष्येत् । प्रियम् । प्राप्य । न । उद्विजेत् । प्राप्य । च । अप्रियम् । स्थिरबुद्धिः । असंमूढः । ब्रह्मवित् । ब्रह्मणि । स्थितः ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोविद्वान् पुरुष प्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइकै नहीं हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अप्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइकै नहीं उद्वेगकूंप्राप्तहोवैहै जिसकारणतैं सोविद्वान्स्थिरबुद्धिहै तथासंमोहतैंरहितहै तथाब्रह्मवित्है तथाब्रह्मविषेही स्थितहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सो समदर्शीविद्वान्संन्यासी सुखकेकरणेहारेप्रियपदार्थकूंप्राप्तहोइकै हर्षकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथादुःखकेकरणेहारेअप्रियपदार्थकूं प्राप्तहोइकै विषादकूंनहींप्राप्तहोवैहै किंतु तिनदोनोंकूं आपणेप्रारब्धकर्मकाफलरूपजानिकै सर्वदा एकरसही रहैहै ॥ यहसर्वअर्थ (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः) इसश्लोकविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआये हैं ॥ और प्रियअप्रियपदार्थोंकूंप्राप्तहोइकैभी हर्षविषादतैंरहितहोणा इत्यादिक जो जीवन्मुक्तपुरुषोंका स्वाभाविकच रितहै तास्वाभाविकचरितकूं मुमुक्षुजननैं प्रयत्नपूर्वक संपादनकरणा ॥ इसअर्थके बोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (नप्रहृष्येत्नोद्विजेत्) यादोनोंपदोंविषे विधिकावाचक लिङ् प्रत्ययकथनकर्याहै ॥ कोई जीवन्मुक्तपुरुषउपरि सोविधिवचन नहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वत्र अद्वितीयआत्माकूंदेखणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै तिसविद्वान्पुरुषकूं आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै किसीभीप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ और लोकविषे आपणेतैंभिन्नकरिकै जान्याहुआपदार्थही हर्षविषादका हेतुहोवैहै आपणाआत्मा किसीकेहर्ष विषादकाहेतुहोवै नहीं ॥ याकारणतैं ताप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति संभवतीनहीं इति ॥ अब जिसअद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति नहींहोवैहै ताआत्मज्ञानका साधन पूर्वक निरूपणकरैं हैं (स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितःइति) स्थिरा कहिये संन्यासपूर्वक वेदांतवाक्योंके विचारकीपरिपक्कताकरिकै संशयतैंरहितहुई है ब्रह्मविषेबुद्धिजिसकी ताकानामस्थिरबुद्धिहै अर्थात् श्रवणका फलरूपजा प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिहै तथामनका फलरूप जा प्रमेयगतअसंभावनाकी निवृत्ति है तेदोनोंफलजिसपुरुषकूं प्राप्तहुएहैंइति ॥ शंका—हे भगवन् ! ताप्रमाणगतअसंभावनातैं तथाप्रमेयगतअसंभावनातैं रहितजोपुरुषहै तिसपुरुषकूंभी विपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्माकासाक्षात्कार नहींहोवैगा ॥ एसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् निदिध्यासनकूंकथनकरैंहैं (असंमूढइति) तहां अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहितजो आत्माकार सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहहै ताकानाम निदिध्यासनहै तानिदिध्यासनकीपरिपक्कताकरिकै विपरीतभावनारूप संमोहतैंरहित जोपुरुषहैताकानाम असंमूढहै ॥ इहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै यापकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै ॥ और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहै अथवानहींहै इत्या

काहेतें तेकामादिक जोआत्माकेधर्महोते तौ तिनकामादिकोंकरिकै आत्माविषे स्वतःहीं सोदुष्टपणाहोता । परंतु तेकामादिक आत्माकेधर्म हैंनहीं किंतु (कामः संकल्पोविचिकित्सा) इसश्रुतिविषे तेकामादिकसर्व अंतःकरणकेहीधर्म कथनकरे हैं । आत्माका कोईभीधर्म कथनकऱ्यानहीं । किंतु (साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च यहश्रुति आत्माकूं सर्वधर्मों तैंरहित निर्गुणकहैहै । इसप्रकार सर्वदोषोंतैंरहितजोब्रह्महै ताब्रह्मकूंहीआपणाआत्मारूपकरिकैजाणणेहारेजेजीवन्मुक्तसंन्यासी हैं तिनजीवन्मुक्तसंन्यासियोंकूं पापकीउत्पत्ति तथातपरूपधनकीहानि तथाधर्मकीहानी इत्यादिकदोषोंकरिकेदुष्टकहणा अत्यंतविरुद्धहै । और (समासमाभ्यां विषमसमेपूजातः) यहजोपूर्व स्मृतिवचनकथनकऱ्याथा । सोस्मृतिवचनतौ अज्ञानीगृहस्थविषयकहीहै । ब्रह्मवेत्तासंन्यासी विषयक सोस्मृतिवचननही है । काहेतें तास्मृतिविषे (तस्यान्नमभोज्यम्) याप्रकारका प्रथम उपक्रमकऱ्याहै । तिसतैं अनंतर मध्यविषे (समासमाभ्यांविषमसमेपूजातः) यहवचनकथन कऱ्याहै । तिसतैंअनंतर (पूजयिताप्रतिपत्तिविशेषमकुर्वन्धनाद्धर्माच्चहीयते) याप्रकारका उपसंहारकऱ्याहै । ताउपक्रमउपसंहारवचनतें अविद्वान्गृहस्थही प्रतीतहोवेहै । काहेतें जोवस्तु जहां प्राप्तहोवैहै तिसवस्तुकाही तहां निषेधहोवैहै अप्राप्तवस्तुका निषेधहोतानहीं । और अन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह गृहस्थ पुरुषकूंही प्राप्तहै संन्यासीकूं ताअन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं समोंकी विषमपूजाकरणेहारेपुरुषका तथाविषमकी समपूजाकरणेहारेपुरुषका अन्न भोजनकरणे योग्यनहींहै तथाइसप्रकारकी पूजाकरणेहारापुरुष धनतैं तथाधर्मतैं रहितहोवैहै याप्रकारकानिषेध ताअविद्वान्गृहस्थविषेहीघटैहै ॥ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीविषे सोनिषेध घटतानहीं।और (अन्नमभोज्यम्) इसवचनका मुख्यअर्थछोडिकै तावचन करिकै पापकीउत्पत्तिका ग्रहणकरणा तथाधनशब्दका सुवर्णादिरूपमुख्य अर्थछोडिकै ताधनशब्दकरिकै तपकाग्रहणकरणा यहभी अत्यंतअसंगतहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सुवर्णमयजादेवताकीप्रतिमाहै तथा सुवर्णमयजो ताप्रतिमाका सिंहासनहै तिनदोनों विषे सुवर्णद्रष्टापुरुषतौ समानताकूंही देखैहै ॥ और तासुवर्णदृष्टितैंरहित केवलआकारदृष्टिवाला जोपूजाकरणेहारापुरुषहै ॥ सोपूजकपुरुषतौ तिनदोनों विषे महान् विषमताकूंहीदेखै है ॥ तैसे सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतौ तिन ब्राह्मण गो हस्ति श्वान चांडाल आदिकपदार्थों विषे एकपरिपूर्णब्रह्मकूंही देखैहै और अज्ञानीपुरुषतौ तिनपदार्थोंविषे महान् विषमताकूं देखै है ॥ यातैं सापूजास्मृतितौ भ्रांतिकृतन्यूनअधिकताकूं विषयकरैहै ॥ और (विद्याविनयसंपन्ने) यहभगवान्कावचनतौ परमार्थवस्तुकूं विषयकरैहै ॥ यातैं तास्मृतिवचनका इहां विरोधहोवैनहीं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ जिसकारण तैं सोपरब्रह्म निर्दोषहै तथासर्वत्रसमहै ॥ तिसकारणतैं तानिर्दोषसमब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानताहुआ सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष आपभी रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहुआ स्थितहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) इहैवतैर्जितःसर्गोयेषांसाम्येस्थितंमनः ॥ निर्दोषंहिसमंब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणितेस्थिताः ॥ १९ ॥ इह । एवं । तैः । जितः । सर्गः । येषाम् । साम्ये । स्थितम् । मनः । नि र्दोषम् । हि । समम् । ब्रह्म तस्मात् । ब्रह्मणि । ते । स्थिताः ॥ १९ ॥ ॥ इतिप० ॥

हे अर्जुन ! जिनपुरुषोंका मन ब्रह्मभावविषे स्थितहुआहै तिनपुरुषों नैं इसजीवितदशाविषे ही यहद्वैतप्रपंच अतिक्रमणकऱ्याहै जिस कारणतैं सोब्रह्म निर्दोषहै तथासमहै तिसकारणतैं तेसमदर्शीपुरुष ताब्रह्मविषेही स्थितहैं ॥ १९ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! परस्पर विषमभाववालेभी सर्वभूतोंविषे जोब्रह्म अस्ति भाति प्रियरूपकरिकै तुल्यहीवर्त्तमानहै ऐसेब्रह्मकेसमभावविषे जिनविद्वान्पुरुषोंका शुद्धमन निश्चलहुआहै ऐसे समदर्शीपंडितपुरुषोंनैं इसजीवितदशाविषेही यहसर्वद्वैतप्रपंच अतिक्रमणकऱ्याहै अर्थात् इससर्वद्वैतप्रपंचका बाधकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी जीवितदशाविषेही तिनविद्वान्पुरुषों नैं यहद्वैतप्रपंच अतिक्रमणकऱ्याहै तबी इसशरीरकेपाततैंअनंतर तेविद्वान्पुरुष इसद्वैतप्रपंचका अतिक्रमणकरैंहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ जिसकारणतैं सोपरब्रह्म निर्दोषहै तथासमहै अर्थात् सोपरब्रह्म जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै तथाकूटस्थ नित्य एकरस अद्वितीयरूपहै ॥ तिसकारणतैं तेसमदर्शीविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकैस्थितहैंइति ॥ इहां श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै वस्तुविषे जोदुष्टपणाहोवैहै ॥ सोदुष्टपणा दोप्रकारकाहोवैहै एकतौ स्वभावतैंअदुष्टवस्तुकूंभी किसदुिष्टवस्तुकेसंबंधतैं दुष्टपणाहोवैहै ॥ जैसे स्वभावतैं अदुष्ट जोगंगाजलहै तागंगाजलकूं मूत्रकीगर्त्तविषेपावणेतै दुष्टपणाहोवैहै ॥ और दूसरा वस्तुविषे स्वभावतैंहीदुष्टपणा होवैहै ॥ जैसे मूत्रादिकमलिनपदार्थोंविषे स्वभावतैंही दुष्टपणा होवैहै ॥ तहां स्वभावतैं दोषवाले जेश्वानचांडालादिकहैं तिनश्वानादिकोंविषे स्पर्शकूंकरिकैस्थितहुआजो ब्रह्महै सोब्रह्म तिनश्वानादिकों केदोषोंकरिके अवश्य दुष्टताकूंप्राप्तहोवैगा ॥ इसप्रकारतैं विचारहीनमूढपुरुषोंनैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे सोदुष्टपणा संभावनाकऱ्याहुआभी सोब्रह्म तिनसर्वदोषोंकोसंबंधतैंरहितहीहै॥ जिसकारणतैं सोब्रह्म आकाशकीन्याईं असंगहीहै ताअसंगब्रह्मकूं किसीभीदोषका स्पर्शहोवैनहीं ॥ तहां श्रुति ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः इति ॥ असंगोनहिसज्जतेइति ॥ सूर्योयथासर्वलोकस्य चक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मानलिप्यतेलोकदुःखेनबाह्यइति) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव असंगहै इति ॥ और असंगहोणेतैं यहआत्मादेव किसीभीपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ और जैसे सर्वलोकोंकाप्रकाशकसूर्यभगवान् प्रकाश्यरूपघटापिकपदार्थोंकेदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं तैसे सर्वभूतोंका अंतरआत्मारूप एकअद्वितीयब्रह्मभी, देहादिकोंकेदुःखादिकधर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहींइति ॥ यातैं दुष्टउपाधियोंकोसंबंधतैं आत्माविषे दुष्टतासंभवैनहीं ॥ तथा कामादिकधर्मवत्ताकरिकै ताआत्मादेवविषे स्वतःभी सोदुष्टपणासंभवतानहीं ॥

नाम रूप यहपंचअंशही सर्वत्रव्यापकहैं ॥ तहांआद्यकेतीन अंशतौ ब्रह्मरूपहैं और अंतकेदोअंशजगत् रूपहैंइति ॥ इसप्रकार तेविद्वान्पुरुष सर्वत्र अस्ति भातिप्रियरूपब्रह्मकूंही देखैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अत्यंतपवित्रगंगाजलविषे ॥ तथातलावकेजलविषे तथाअत्यंतनिषिद्ध मदिराविषे तथाअत्यंतमलिन मूत्रविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तभयाजो सूर्य है तिससूर्यकूं तिनगंगाजलादिकोंके गुणदोषोंकासंबंध होवैनहीं ॥ तैसे आपणेचिदाभासद्वारा सर्वऊंचनीचउपाधियोंविषे प्रतिबिंब भावकूंप्राप्तभयाजोब्रह्महै ताब्रह्मकूं तिनऊंचनीचउपाधियोंके गुणदोषोंकासंबंधहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका निरंतरविचारकरतेहुए तेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष सर्वत्रसमदृष्टि करिकै रागद्वेषतैंरहितहुए परमानंदकीस्फूर्तिकरिकै जीवन्मुक्तिकेसुखकूंही सर्वदा अनुभवकरैं हैं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! परस्पर विषमस्वभाववाले जे सात्त्विक राजस तामस प्राणीहैं तिनविषमस्वभावालेप्राणियोंविषे समत्वबुद्धिकरणेका धर्मशास्त्रविषेनिषेधकऱ्याहै ॥ तहांगौतमस्मृति ॥ (तस्यान्नमभोज्यं भवनिसमासमाभ्यांविषमसमेपूजातःइति) अर्थयह ॥ च्यारेवेदोंकेज्ञातारूपकारिकैतुल्य तथासदाचारविषे प्रवृत्तिरूपताकरिकेतुल्य जेदोब्राह्मणहैं तिनदोनोंब्राह्म णोंविषे एकब्राह्मणका जोपुरुष वस्त्र अलंकार अन्न आदिकोंकेदानपूर्वक जिसप्रकारकापूजनकरै है तिसीप्रकारकापूजन तादूसरेब्राह्मणकाकरतानहीं किंतु तिस ब्राह्मणका तिसतैंन्यूनपूजनकरैहै ॥ और एकब्राह्मणतौ च्यारिवेदोंकावक्ताहै तथासदाचारकरिकेयुक्तहै और दूसराब्राह्मणतौ तिसतैंअल्पवेदका वक्ताहै तथासा दाचारतैंरहितहै तिनअधिकन्यूनदोनोंब्राह्मणोंका जोपुरुष तिनवस्त्रअलंकारअन्नादिकपदार्थोंकेदानपूर्वक समानही पूजनकरै है तिसपूजनकरणे हारेपुरुषकाअन्न शिष्टपु रुषोंनैं भोजनकरणानहींइति ॥ किंवा समपुरुषोंकीविषमपूजाकरणेहारेपुरुषकूं तथाविषमपुरुषोंकीसमपूजाकरणेहारेपुरुषकूं धर्मशास्त्रनैं दोषकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहां धर्मशास्त्र ॥ (पूजयिताप्रतिपत्तिविशेषमकुर्वन्धर्माद्धनाचहीयतेइति) ॥ अर्थयह ॥ पूजनकरणेहारापुरुष समविषमभावकेविचारकूंनहींकरताहुआ धर्मतैं तथा धनतैं रहितहोवैहैइति ॥ यद्यपि ब्राह्मण गौ हस्ति श्वान चांडाल इत्यादिक सर्वऊँचनीचपदार्थोंविषे समबुद्धिकरणेहारे जेब्रह्मवेत्तासंन्यासीहैं ॥ तेसंन्यासी धनकेसंग्रहतैं तथाअन्नकेसंग्रहतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनसंन्यासियोंविषे अभोज्यान्नत्व तथाधनहीनत्व स्वतःहीविद्यमानहै ॥ तथापि तासमबुद्धितैं तिनसंन्या सियोंविषेभीधर्मकीहानिरूपदोष अवश्यकरिकैहोवैगा ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ (तस्यान्नमभोज्यम्) इसवचननैं जो अभोज्यान्नत्व कथनकऱ्याहै सोअभोज्यान्नत्व तिनसमबुद्धिवालेपुरुषोंविषे अशुचिपणेकरिकै पापकेउत्पत्तिकाही उपलक्षकहै ॥ सापापकीउत्पत्ति तिनसंन्यासियोंविषेभी संभवहोइसकैहै ॥ और तपस्वीपुरुषोंका सोतपहीधनहोवैहै ॥ यातैं तिसतपरूपधनकीहानिभी तिनसंन्यासियोंविषे संभवहोइसकैहै ॥ यातैं सर्वत्रसमदर्शीपंडितपुरुष जीवन्मुक्तही है यहआपकावचन असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ।

साक्षात्कारविषेतौ निदिध्यासनकूं हेतुताहै और निदिध्यासनविषे श्रवणमननरूपवेदांतविचारकूं हेतुताहै और तावेदांतविचारविषे वैराग्यकूं हेतुताहैइति ॥ इसप्रकार (तद्बुद्धयः तदात्मानः तन्निष्ठाः तत्परायणाः) याच्यारिविशेषणोंकरिकैयुक्त जेसंन्यासीहैं तेसंन्यासी पुनःशरीरकेसंबंधकाअभावरूप अपुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं अर्थात विदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैं हैं इति ॥ शंका--हे भगवन् ! एकवार मुक्तहुएभी तिनविद्वान् पुरुषोंकूं पुनःशरीरकासंबंध किसवासतै नहींहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः इति) मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै समूलतैं निवृत्तहोइगयेहैं पुनः देहकेसंबंधकारणरूप पुण्यपापरूपकल्मष जिन्हाक तिनपुरुषोंकानाम ज्ञाननिर्धूतकल्मषहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुष पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्म साक्षात्कारकरिकै तिनविद्वान्पुरुषोंके अनादिअज्ञानकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ ताअज्ञानकेनिवृत्तहुए अज्ञानकेकार्यरूपपुण्यपापकर्मभी निवृत्तहोइजावैं हैं और तिनपुण्यपापकर्मोंकेवशतैंही इनजीवोंकूं पुनःदेहांतरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनपुण्यपापकर्मोंकेनाशहुए तिनविद्वान्पुरुषोंकूं पुनःदूसरेशरीरकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैगी किंतु नहींहोवैगी इति ॥ १७ ॥ ❀ तहां (तद्बुद्धयस्तदात्मानः) इसपूर्वलेश्लोकविषे देहकेपाततैंअनंतर ताआत्मज्ञानका विदेहकैवल्यरूपफल कथन कऱ्या ॥ अब प्रारब्धकर्मकेवशतैं तादेहकेविद्यमानहुएभी ताअज्ञानके जीवन्मुक्तिरूपफलकूं श्रीभगवान् कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि ॥ शुनिचैवश्वपाकेचपंडिताःसमदर्शिनः ॥ १८ ॥ विद्याविनयसंपन्ने । ब्राह्मणे । गवि । हस्तिनि । शुनि । च । एव । श्वपाके । च । पंडिताः । समदर्शिनः ॥ १८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! ज्ञानवान् पुरुष विद्याविनययुक्त ब्राह्मणविषे तथागौविषे तथाहस्तिविषे तथा श्वानविषे तथा चांडालविषे समदर्शी ही होवैहैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! वेदकेअर्थकासम्यक्ज्ञानरूपजाविद्याहै अथवा अद्वितीयब्रह्मकाप्रतिपादनकरणेहारी ब्रह्मविद्यारूप जाविद्याहै और तिनविद्यादिकोंकूंप्राप्तहोइकेभी निरहंकारतारूपजो विनयहै ताविद्या विनय दोनोंकरिकै संपन्न जे सर्व तैं उत्तम सात्विकब्राह्मणहैं और तिनब्राह्मणोंकीअपेक्षाकरिकै मध्यम तथासंस्कारोंतैंरहित ऐसीजोराजसगौहै तथा अत्यंततमोगुणयुक्त तथासर्वतैंअधम ऐसेजेहस्ति श्वान चांडालहैं अर्थात् यथाक्रमतैं उत्तममध्यम अधम रूप जितनेक सात्विक राजस तामस प्राणीहैं तिनसर्वऊंचनीचप्राणियोंविषे तेज्ञानवान्पुरुष समदर्शीही होवैं हैं अर्थात् तिनसत्त्वादिकगुणों करिकै तथातिनगुणोंजन्यसंस्कारोंकरिकै नहींस्पर्शकऱ्याहुआजोपरब्रह्महै तापरब्रह्मकानाम समहै तापरब्रह्मकूंही तेविद्वान्पुरुष सर्वत्रदेखैं हैं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्तिभातिप्रियंरूपंनामचेत्यंशपंचकम् ॥ आद्यंत्रयंब्रह्मरूपंजगद्रूपंततोद्वयम्) ॥ अर्थयह ॥ अस्ति भाति प्रिय

रूपआवरणकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मकीअभिव्यक्तिमात्रजानणी ॥ जिसकूं वेदांतशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्ति यानामकरिकैकथनकरैं हैंइति ॥ और (अज्ञानेनावृतंज्ञानं ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः) यादोनोंवचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअज्ञानविषे आवरणरूपता तथाज्ञानकरिकैनाश्यता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअज्ञानविषे नैयायिकोंनैंअंगीकारकरीहुई ज्ञानाभावरूपता निवृत्तकरी ॥ काहेतैं अभाव किसीवस्तुकाआवरण करतानहीं ॥ तथा ज्ञानका अभाव ताज्ञानकरिकैनाशभीहोइसकैनहीं ॥ जिसकारणतैं विद्यमानवस्तुवोंकाही परस्पर नाश्यनाशकभावहोवै है ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञाननहीं है ॥ किंतु मैं अज्ञानीहूं मैं आपणेकूं तथाअन्यकूं जानतानहीं इत्यादिकसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैसिद्धभावरूपहीअज्ञानहैइति ॥ और (येषां तेषां) याबहुवचनांत सामान्यअर्थकेवाचक यत् तत् यादोनोंशब्दोंकरिकै श्रीभगवान्नैं इसब्राह्मणत्वादिक उत्तमजातिविषेही तथाइसउत्तमआश्रमविषेही आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवै है तथाताज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है इसतैंअन्यजातिविषे तथाइसतैंअन्यआश्रमविषे ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं तथाताज्ञानकरिकैअज्ञानकीनिवृत्तिभी होवैनहीं याप्रकारकेनियमकाअभाव कथनकऱ्या ॥ किंतु सर्वजातियोंविषे तथासर्वआश्रमोंविषे श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकीप्राप्ति तथाताज्ञान करिकैअज्ञानकीनिवृत्ति होवैहैइति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्योयोदेवानांप्रत्यबुध्यतसएवतदभवत्तथर्षीणांतथामनुष्याणामिति) अर्थयह ॥ देवतावोंकेमध्यविषे जोजोदेवता इसअद्वितीयब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकै जानताभयाहै सोसोदेवता अज्ञानकीनिवृत्ति पूर्वक ब्रह्मरूपहीहोताभया है ॥ तथा ऋषियोंकेमध्यविषे जोजोऋषि तिसअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानताभयाहै सोसोऋषि अज्ञानकीनिवृत्ति पूर्वक ब्रह्मरूपहीहोताभयाहै ॥ तथा मनुष्योंकेमध्यविषे जोजोमनुष्य तिसअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानताभयाहै सोसोमनुष्य अज्ञानकी निवृत्तिपूर्वक ब्रह्मरूपहीहोताभयाहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं मनुष्यमात्रकूंही आत्मज्ञानकीप्राप्ति तथाताआत्मज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे तथाताज्ञानकरिकैमोक्षकीप्राप्तिविषे उत्तमजातिआश्रमका किंचित्मात्रभी नियमनहीं है ॥ किंतु ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकासाधनरूप जोश्रवणहै ताश्रवणविषेहीनियमहै ॥ तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकपुरुषोंनैंतौ वेदवचनोंकेश्रवणतैं आत्मज्ञानकूं संपादनकरणा ॥ और शूद्रादिकोंनैं अद्वैतकेप्र तिपादकपुराणादिकोंकेश्रवणकरिकै ताआत्मज्ञानकूं संपादनकरणा ॥ यहश्रवणकेनियमकीप्रक्रिया आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं इति ॥ इहां (अज्ञानेनावृतंज्ञानम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्माविषे अज्ञानकृतआवरण कथनकऱ्याहै ।। और (ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः) याव चनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानकरिकै ताआवरणकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ सोअज्ञानकृतआवरणदोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ असत्त्वापादक आवरणहोवैहै और

(मू. श्लो.) ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ॥ तेषामादित्यवज्ज्ञानंप्रकाशयतितत्परम् ॥ १६ ॥ ज्ञानेन। तु। तत्। अज्ञानम्। येषाम्। नाशितम्। आत्मनः। तेषाम्। आदित्यवत्। ज्ञानम्। प्रकाशयति। तत्। परम् ॥१६॥ इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन! पुनः जिनपुरुषोंका सो अज्ञान आत्माके ज्ञाननें नाशकऱ्याहै तिनपुरुषोंका सो आत्मज्ञान सूर्यकीन्याई परब्रह्मकूं प्रकाशकरै है ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन! जोअज्ञान आवरणविक्षेपशक्तिवालाहै तथाअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैंरहितहै तथा जोअज्ञान अनिर्वचनीयहै अर्थात् सत् असत् सत्असत् यातीनोंपक्षोंतैं रहितहै ॥ तथाजोअज्ञान सर्वअनर्थोंकामूलकारणहै ॥ तथा जोअज्ञान स्वाश्रयअभिन्नविषयकहै अर्थात् जैसे अंधकार जिसगृहकेआश्रितरहैहै तिसीगृहकूं आवृतकरैहै तैसे यहअज्ञानभी जिसआत्मादेवके आश्रितरहैहै तिसीआत्मादेवकूं आवृतकरैहै ॥ तथा जिसअज्ञानकूं शास्त्रविषे माया अविद्या प्रकृति प्रधान अव्यक्त शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकऱ्याहै ऐसाअज्ञान जिनअधिकारीपुरुषोंके आत्मविषयकज्ञाननैं नाशकऱ्याहै ॥ अर्थात् जोज्ञान ब्रह्मवेत्तापुरुषनैंउपदेशकऱ्येहुए वेदांतमहावाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा जोज्ञान श्रवण मनन निदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै निर्मलहुएअंतःकरणकी वृत्तिरूपहै ॥ तथा जोज्ञानशोधिततत्त्वंपदार्थोंकाअभेदरूपजो शुद्धसच्चिदानंदअखंडएकरसवस्तुहै तावस्तुमात्रकूं विषयकरणेहाराहै ऐसेनिर्विकल्पक आत्मसाक्षात्कारनैं जिनअधिकारीपुरुषोंका सोअज्ञान बाधकूंप्राप्तकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शुक्तिविषेरजतभ्रमतैंअनंतर उत्पन्नभयाजो यहशुक्तिहीहै रजत नहीं है याप्रकारका शुक्तिविषयकज्ञानहै सोशुक्तिकाज्ञान ताशुक्तिविषे तारजतका त्रैकालिकअसत्त्वरूपबाधकूंकरैहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे ताअज्ञानका त्रैकालिकअसत्त्वरूपबाधकूं करैहै ॥ कोई जैसे मुद्गरकाप्रहार घटकेसूक्ष्मअवस्थारूपध्वंसकूंकरैहै तैसे यहआत्मज्ञान ताअज्ञानकेसूक्ष्म अवस्थारूपध्वंसकूंकरतानहींइति ॥ ऐसा सोअधिकारीजनोंकाआत्मज्ञान लोकप्रसिद्धसूर्यकीन्याई सत्यज्ञानअनंतआनंदरूपएकअद्वितीयपरमात्मभावकूं प्रकाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे यहसूर्य आपणे उदयमात्रकरिकैही निरवशेषअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै घटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरैहै ताअंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे सोसूर्य अन्यकिसीकेसहायताकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ तैसे शुद्धसत्त्वकापरिणामरूपहोणेतैं व्यापक प्रकाशरूप जोब्रह्मज्ञानहै सोब्रह्मज्ञानभी आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैही ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरताहुआ अद्वितीयपरमात्मतत्त्वकूं प्रकाशकरैहै ॥ ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे सोब्रह्मसाक्षात्कार अन्यकिसीकेसहायताकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ इहां (तत्ज्ञानंपरंप्रकाशयति) इसवचनकरिकै अद्वितीय स्वप्रकाशब्रह्मविषे जो ज्ञानकृतप्रकाश्यता कथनकरीहै सो अज्ञान

शमचिदानंदअद्वितीयरूप तथापरमार्थसत्यरूप: ज्ञानहै ॥ ताज्ञानस्वरूपआत्माकेआवरणकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपकूंनहींजानणेहारे यहसंसारीजीव मोहकूं प्राप्तहोवैं हैं अर्थात् प्रमाता प्रमाण प्रमेय कर्त्ता कर्म करण भोक्ता भोग्य भोग यहनवप्रकारकासंसारभ्रमरूपजोविक्षेपहै ताविक्षेपरूपमोहकूं तेजीव प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया वास्तवतैं अकर्त्ता अभोक्तारूप जोपरमानंदअद्वितीयआत्माहै ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानकरिकैही अविवेकीमूढपुरुषोंकूं यहजीवहै यहईश्वरहै यहजगत्‌है इत्यादिकभेदभ्रम प्रतीतहोवैहै अर्थात् यहजीव पुण्यपापकर्मोंका कर्त्ता है और ईश्वर तिनपुण्यपापकर्मोंकेकरावणेहाराहै इत्यादिकभेदभ्रम प्रतीतहोवैहै ॥ तिनअज्ञानीमूढपुरुषोंकेभ्रांतिज्ञानकूंही (एषउह्येवसाधुकर्मकारयति) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन अनुवादमात्रकरैं हैं ॥ कोईतिनश्रुतिस्मृतिवचनोंका ताभेदभ्रमकेबोधनविषे तात्पर्यनहीं हैं ॥ यातैं वास्तवतैंअद्वितीयआत्माकेबोधकजे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं तिनमहावाक्योंकेही तेश्रुतिस्मृतिवचन शेषरूपहैं ॥ यातैं तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी इहां विरोधहोवैनहींइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः) इसवचनका यहअभिप्राय कथनकऱ्याहै ॥ जैसे चक्रवर्त्तीमहाराजाकूं जाग्रत्‌अवस्थाविषे मैं सर्वप्रजाकाईश्वरहूं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै सोताकाज्ञान जबी निद्रारूप अज्ञानकरिकैआवृतहोवैहै तबी सोचक्रवर्त्तीराजा तास्वप्नअवस्थाविषे अनेकप्रकारकेसंकटोंकूंदेखैहै तथा मैंअत्यंतदीनहूं मैं अत्यंतदुःखीहूं इसप्रकारके मोहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहजीवभी 'अहंब्रह्मास्मि' इत्यादिकवेदकेवचनों तैं आपणेब्रह्मभावकूंनहींजानतेहुए तथाईश्वरतैंआपणेकूं जुदामानतेहुए अर्थात् ईश्वरकूं स्वामीमानतेहुए तथा आपणेकूं ताईश्वरका सेवकमानतेहुए वारंवार जन्ममरणरूपमोहकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथ योऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योहमितिनसवेदयथापशुरेवसदेवानामिति ॥ उदरमंतरंकुरुतेअथतस्यभयंभवतिइति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष यहदेवता भिन्नहै तथामैं भिन्नहूं याप्रकार देवतातैं आपणेकूंभिन्नमानिकै तिसदेवताका ध्यानकरैहै सोभेददर्शीपुरुष देवताकेस्वरूपकूं तथा आपणेस्वरूपकूं यथार्थजानतानहीं । जैसेलोकप्रसिद्धअश्वमहिषादिकपशु किंचित्‌मात्रभी जानतेनहीं तैसे सोभेददर्शीपुरुषभी तिनदेवतावोंका पशुहीहै ॥ भेददर्शीअज्ञानीपुरुष देवतावोंकापशुहै यहवार्त्ता आत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्अथर्वण देवताराजइन्द्रकेसंवादविषे हमविस्तारतैंकथनकरिआये हैंइति ॥ और जोपुरुषईश्वरतैं आपणा किंचित्‌मात्रभीभेदअंगीकारकरै है तिसभेददर्शीपुरुषकूं महान्‌भयकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ और जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे नानाभावकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष मृत्युतैंमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जबी सर्वहीजीव ताअनादिअज्ञानकरिकैआवृतहुएतबी इसजन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्ति किसप्रकारतैंहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

श्रुतिविषे तथा स्मृतिविषे कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (एषउह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषते एषउह्येवासाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषतइति) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर जिसपुरुषकूं इसलोकतैंऊपरि स्वर्गादिकलोकोंविषेलेजाणेकीइच्छाकरै है तिसपुरुषकूंतौ प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और यह परमेश्वर जिसपुरुषकूं नरकादिकनीचलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरैहै तिसपुरुषकूं प्रेरणाकरिकै पापकर्म करावैहै इति ॥ यहश्रुति ईश्वरविषेतौ पुण्यपापकर्मोंका कारयितृत्वकथनकरैहै ॥ और जीवविषे तिनपुण्यपापकर्मोंका कर्तृत्व कथनकरैहै इसीअर्थकूं स्मृतिभी कथनकरैहै ॥ तहांस्मृति ॥ (असोजंतुरनीशोयमात्मनःसुखदुःखयोः ॥ ईश्वरप्रेरितोगच्छेत्स्वर्गंवाश्वभ्रमेववा ॥) अर्थयह ॥ यहअज्ञानीजीव आपणे सुखविषे तथा दुःखविषे असमर्थहीहै ॥ किंतु ईश्वर करिकै प्रेरणाकऱ्याहुआ यह जीव आपणेपुण्यपापकेवशतैं स्वर्गनरकादिकोंकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष पुण्यपापकर्मोंकाकर्ताहोवैहै तथा जोपुरुष प्रेरणाकरिकैतापुण्यपापकर्मकेकरावणेहाराहोवैहै ॥ तिन दोनोंकूंही तापुण्यपापकर्मकालोप अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं जीवविषेतौ कर्तापणेकरिकै तथाईश्वरविषे कारयितापणेकरिकै तापुण्यपापकर्मकालेप अवश्यकरिकै होवैगा ॥ यातैं यहआत्मादेव नकरताहै नकरावताहै ॥ किंतु यहप्रकृतिरूपस्वभावही सर्वकार्योंविषे प्रवृत्तहोवैहै यहआपकाकहणा श्रुतिस्मृतितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) नादत्तेकस्यचित्पापंनचैवसुकृतंविभुः ॥ अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः ॥१५॥ न । आदत्ते । कस्यचित् । पापम् । न । च । एव । सुकृतम् । विभुः । अज्ञानेन । आवृतम् । ज्ञानम् । तेन । मुह्यंति । जंतवः ॥१५॥ इतिपद०॥ हे अर्जुन परमेश्वर किसी भीजीवके पापकूं नहीं ग्रहण करैहै तथा पुण्यकूं भी नहीं ग्रहणकरैहै किंतु अज्ञानकरिकै आवृत जोज्ञानहै तिसकरिकै यहजीव मोहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १५॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वत्रव्यापकहोणेतैं निष्क्रियजोपरमेश्वरहै सोपरमेश्वर किसीभीजीवके पापकूं तथापुण्यकूं ग्रहणकरतानहीं ॥ काहेतैं परमार्थदृष्टिकरिकै इसजीवविषेतौ तिनपुण्यपापकर्मोंका कर्तापणानहींहै और ईश्वरविषे तिनपुण्यपापकर्मोंका करायितापणा नहींहै ॥ शंका—हे भगवन् ! जोकदाचित् परमेश्वरविषे वास्तवतैं कर्मोंका कारयितृत्वनहींहोवैहै तथाजीवविषे तिनकर्मोंका कर्तृत्वनहींहोवै तौ परमेश्वरविषे कर्मोंके करायितृत्वकूं तथाजीवविषे कर्मोंके कर्तृत्वकूं कथनकरणेहारी पूर्वउक्तश्रुतिस्मृति असंगतहोवैगी ॥ और इसलोकविषेभी शिष्टपुरुष ईश्वरकीप्रसन्नतावासतै शुभकर्मोंकूंकरैहै और तिनशुभकर्मोंके नहींकरणेतैं भयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहलोकोंकाव्यवहारभी असंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै (अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः । इति) हे अर्जुन ! आवरणविक्षेपशक्तिवाला जोमायारूपमिथ्याअज्ञानहै ताअज्ञानरूपतमकरिकै आवृतहुआ जो जीवईश्वरजगतभेदभ्रमकाअधिष्ठानरूप तथानित्यस्वप्रका

(मू. श्लो.) नकर्तृत्वंनकर्माणिलोकस्यसृजातिप्रभुः ॥ नकर्मफलसंयोगंस्वभावस्तुप्रवर्त्तते ॥१४॥ नं । कर्तृत्वम् । नं । कर्माणि । लोकस्य । सृजति । प्रभुः । नं । कर्मफलसंयोगम् । स्वभावः । तु । प्रवर्तते ॥ १४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! यहआत्मादेव देहादिकोंके कर्तृत्वकूं नहीं उत्पन्नकरैहै तथाकर्मोंकूभी नहीं उत्पन्नकरैहै तथाकर्मोंकेफलकेसंबंधकूंभी नहीं उत्पन्नकरैहै किंतु अज्ञानरूप मायाही सर्वकार्यकेकरणेविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! देहइंद्रियादिकसर्वसंघातकास्वामीरूप जोयहआत्मादेवहै सोयहआत्मादेव तिनदेहइंद्रियादिकोंकेकर्तृत्वकूं उत्पन्नकरतानहीं अर्थात् तुम इसकार्यकूं करो याप्रकारकीप्रेरणाकरिकै यहआत्मादेव किसीभीकार्यकूं करावतानहीं ॥ यातें इसआत्मादेवविषे प्रयोजककर्त्तापणारूप कारयितृत्व संभवै नहीं ॥ और तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं वांछित जेघटादिरूपकर्म हैं तिनघटादिकरूपकर्मोंकूंभी यहआत्मादेव उत्पन्नकरतानहीं अर्थात् यहआत्मादेव तिनघटादिकपदार्थोंका कर्त्ताभीहोवैनहीं ॥ यातें इसआत्मादेवविषे कर्तृत्वभीहैनहीं ॥ और कर्मोंकूंकरणेहारेलोकोंका जोतिसतिसकर्मफलकेसाथि संबंधहै तिसकर्मफलकेसंबंधकूंभी यहआत्मादेव उत्पन्नकरतानहीं अर्थात् यहआत्मादेव नहींतौ किसीकूं फलकेभोगावणेहाराहै ॥ तथा नहीं आप फलकूंभोक्ता है ॥ यातें इसआत्मादेवविषे भोजयितृत्व तथाभोक्तृत्वभी संभवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं (शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते) यहगीताकावचनभी कथनकऱ्याहै ॥ शंका—हे भगवन् ! यहआत्मादेव जबी आप किंचित्मात्रभीकार्यकूं करतानहीं तथाकरावताभीनहीं तबी दूसराकौन कार्यकूंकरताहुआ तथा करावताहुआ प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (स्वभावस्तुप्रवर्त्ततेइति) हे अर्जुन ! अज्ञानरूपजादैवीमायाहै जिसमायाकूं प्रकृतिभीकहैंहैं सामायारूपप्रकृतिही कार्यकेकरणेविषे तथाकरावणेविषे प्रवृत्तहोवैहैइति ॥ इहां किसीटीकाविषे (स्वभावस्तुप्रवर्त्तते) इसवचनका यहअर्थ कथन कऱ्याहै ॥ यहचैतन्यस्वरूपआत्मा सूर्यकीन्याई सर्वकाप्रकाशमात्रहीहै ॥ किसीकर्मादिकोंविषे प्रवर्त्तकहैनहीं किंतु जिसजिसवस्तुका जैसाजैसा स्वभाव होवैहै सोस्वभावही तिसतिसप्रकार प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे एकहीसूर्यके उदयहुए कमलोंकातौ स्वभावतैंही विकासहोवैहै और कुमुदोंका स्वभावतैंही संकोचहोवैहै सोसूर्य किसीका विकास तथासंकोच करतानहीं ॥ तैसे एकहीआत्माकेप्रकाशमानहुए घटादिकपदार्थतौ चेष्टाकूंकरैंनहीं और मनुष्यादिकतौ नानाप्रकारकी चेष्टाकूंकरैं हैं सोआत्मादेव किसीभीपदार्थकूं प्रवृत्त तथा निवृत्त करतानहीं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! ईश्वरतौ प्रेरणाकरिकै जीवके प्रति कर्मोंकेकरावणेहाराहै और जीवतौ तिनकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं ताईश्वरविषेतौ कारयितृत्वहै ॥ और ताजीवविषे कर्तृत्वहै ॥ यहवार्त्ता

नहीं ॥ तैसे सोविद्वान्संन्यासीभी इसशरीरकेपूजनपराभवकरिकै हर्षविषादकूंप्राप्त होवै नहीं ॥ किंतु अहंताममतातैं रहित हुआ इस देहविषे स्थित होवै है ॥ और अज्ञानीपुरुषतौ तादेहकेतादात्म्यअभिमानतैं आपणेकूं देहरूपहींमानैहै ॥ देहरूप आपणेकूंमानतानहीं ॥ याकारणतैंहीं सोअज्ञानीपुरुष इस देहके अधिकरणकूंहीं आत्माका अधिकरणमानता हुआ मैं इस गृहविषेस्थितहूं मैं इस भूमिविषेस्थितहूं मैं इस आसनविषेस्थितहूं याप्रकारही आपणेकूंमानै है इसनैं देहविषे स्थितहूं याप्रकार सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं मानतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअज्ञानीपुरुषनैं इस देहतैंभिन्नकरिकै आपणे आत्माकूंजान्या नहीं ॥ और इस संघाततैं भिन्नकरिकै आत्माकूंजाणणेहारा जोसर्वकर्मोंकासंन्यासी है सोविद्वान्संन्यासी तौ मैं इस देहविषेस्थितहूं याप्रकारही आपणेकूंमानैहै ॥ देहरूप आपणेकूं मानतानहीं ॥ याकारणतैंही अविक्रियआत्माविषे अविद्याकरिकै आरोपित जो देहादिकोंके व्यापारहैं तिनसर्वव्यापारोंका जोतत्त्वसाक्षात्कारकरिकैबाधहै सोईही सर्वकर्मोंकासंन्यास कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारकी अज्ञानीपुरुषतैंविलक्षणताकूं अंगीकारकरिकैही श्रीभगवान्नैं ताविद्वान्पुरुषका (नवद्वारेपुरेआस्ते) यह विशेषण कथनकरयाहै ॥ शंका—हेभगवन् जैसे नौकाकेचलनरूपव्यापारका तीरस्थवृक्षविषे आरोपणहोवैहै तैसे आत्माविषेआरोपित जे देहादिकोंकेव्यापार हैं तिनव्यापारोंका विद्याकरिकैबाधहुएभी आत्माविषे आपणेव्यापारकरिकै करतापणाहोवैगा तथादेहादिकोंकेव्यापारविषे प्रयोजककरतापणा होवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (नैवकुर्वन्नकारयन्इति) हेअर्जुन यहआत्मादेव आप किसीव्यापारकूंकरताहुआ स्थितहोवैनहीं ॥ तथा प्रेरणा करिकै देहइंद्रियादिकोंतैं किसीव्यापारकूंकरावताहुआभी स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु उदासीनहुआस्थितहोवैहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (नवद्वारेपुरे) या वचनका यहअर्थकरयाहै ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण प्राण बुद्धि अहंकार चित्त यहनवद्वारहैजिसविषे ऐसेइसशरीररूपपुरविषे सोविद्वान्पुरुषस्थित होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्धपुरकेराजाकूं तापुरकेद्वारोंकरिकैही बाहरलेविषयप्राप्तहोवैहैं तैसे इसशरीररूपपुरकाअधिपति जोयहजीवात्मारूपराजा है ताजीवात्माकेभोगवासतै बाहरलेशब्दादिकविषय तिनश्रोत्रादिकद्वारोंकरिकैही भीतरप्रवेशकरैहैं ॥ यातैं तेश्रोत्रादिक प्रसिद्धपुरकेद्वारोंकीन्यांइ द्वाररूपहैं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् जैसे देवदत्तनामापुरुषविषे वास्तवतैंस्थित जा गमनरूप क्रिया है सागमनरूपक्रिया तादेवदत्तपुरुषकेस्थितिकालविषे होतीनहीं तैसे आत्माविषे वास्तवतैंस्थित जोकर्तृत्व तथाकारयितृत्वहै सोकर्तृत्व तथाकारयितृत्व संन्यासकालविषे ताआत्माविषेहोता नहीं ॥ यहआपकेकहणेकातात्पर्यहै ॥ अथवा जैसे आकाशविषे तलमलिनतादिक वास्तवतैंहैंनहीं तैसे आत्माविषेभी सोकर्तृत्व तथाकारयितृत्व वास्तवतैंहैंहीनहीं ॥ यहआपकेकहणेकातात्पर्यहै ॥ इसप्रकारके अर्जुनकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् अंत्यकोटीकूंअंगीकारकरिकैकहैहैं ।

इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां अशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं केवलसंन्यासतैं कर्मयोगही श्रेष्ठ है ॥ इस पूर्वउक्तअर्थकूं इतनेपर्यंत विस्तारकरिकै कथनकरचा ॥ अब शुद्धचित्तवालेपुरुषकूं सोसर्वकर्मोंकासंन्यासही श्रेष्ठ है इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करैं हैं ॥

(मू. श्लो.) सर्वकर्माणिमनसासंन्यस्यास्तेसुखंवशी ॥ नवद्वारेपुरेदेहीनैवकुर्वन्नकारयन् ॥ १३ ॥ सर्वकर्माणि । मनसा । संन्यस्य । आस्ते । सुखं । वशी । नवद्वारे। पुरे। देही। न । एव । कुर्वन् । न । कारयन्॥१३॥इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! सर्वकर्मोंकूं मनकरिकै परित्यागकरिके देहतैंभिन्नआत्मदर्शी वशीपुरुष नवद्वरवाले इसदेहविषे सुखपूर्वक स्थितहोवै है तथा नहीं किसीकार्यकूंकरता हुआ तथा नहीं किसीकार्यकूंकरावताहुआ स्थितहोवै है ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! नित्य नैमित्तिक काम्य प्रतिषिद्ध यहच्यारिप्रकारकेकर्महोवैं हैं तिनसर्वकर्मोंका (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) इसश्लोकविषेकथन करचा जो अकर्त्ताआत्मस्वरूपकासम्यक्दर्शन है तासम्यक्दर्शनयुक्तमनकरिकै परित्यागकरिकै प्रारब्धकर्मकेवशतैं सोसंन्यासी स्थित होवैहै ॥ तहां सोसंन्यासी क्यादुःखपूर्वकस्थित होवै है ऐसी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (सुखमिति) हे अर्जुन शरीरकाव्यापार तथा वागादिकइंद्रियोंकाव्यापार तथामनकाव्यापार यह तीन व्यापारही इन प्राणियोंकूं आयासकीप्राप्ति करैं हैं ॥ ते आयासकेहेतुरूपतीनोंव्यापार तिससंन्यासीविषे हैं नहीं ॥ यातैं सोसंन्यासी ताआयासतैंरहितहुआही स्थित होवै है ॥ शंका—हे भगवन् तासंन्यासीके शरीरइंद्रिय मन यह तीनों स्वतंत्र होइकै आपणे आपणे व्यापारविषे किसवासतै नहीं प्रवृत्त होते ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (वशीइति) हे अर्जुन तिससंन्यासीनैं यह कार्यकारणरूपसंघात आपणेवशकऱ्या है ॥ यातैं तासंन्यासीकेशरीर इंद्रिय मन यह तीनों स्वतंत्रहोइकै किसीव्यापारविषे प्रवृत्त होवैं नहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! ऐसा सर्व व्यापारतैं रहित संन्यासी किसस्थानविषे स्थित होवै है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (नवद्वारेपुरे इति) दोश्रोत्र दोचक्षु दोनासिका एकमुख यह सप्तद्वारतौ उपरिशिरविषे रहैं हैं ॥ और पायु उपस्थ यह दोद्वार नीचे रहैं हैं ॥ इन नवद्वारोंकरिकैविशिष्ट जो यह स्थूलशरीरहै तास्थूलशरीररूपपुरविषे सोसंन्यासी रहै है ॥ शंका—हे भगवन् ! संन्यासी असंन्यासी विद्वान् अविद्वान् इत्यादिकसर्वप्राणीमात्र इस नव द्वारवाले देहविषेही रहैं हैं ॥ केवल सोसंन्यासीही इस देहविषे रहै नहीं ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (देही) हे अर्जुन ! सोविद्वान् संन्यासी इसनवद्वारवाले देहविषे स्थित हुआभी इसदेहतैं आपणे आत्माकूं भिन्नरूपकरिकै देखै है ॥ देहरूप आत्माकूं देखतानहीं ॥ याकारणतैंही जैसे प्रवासीपुरुष किसीपरगृहविषे निवासकरे है ॥ परंतु तागृहकीवृद्धिहानि करिकै सोप्रवासी पुरुष हर्षशोककूं प्राप्त होवै

इच्छाकूं परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासते केवल शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथाइंद्रियोंकरिकै कर्मकूं ही करैहैं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका – हेअर्जुन ! मोक्षकीइच्छावालेअधिकारीजन आपणेअंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासते स्वर्गादिकफलकीइच्छाका परित्यागकरिकै केवल शरीरकरिकै तथाकेवल मनकरिकै तथाकेवल बुद्धिकरिकै तथाकेवल इंद्रियोंकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंही करै हैं ॥ इहां इनकर्मोंकूंही करैहैं ॥ इहां इनकर्मोंकूं मैं ईश्वरकीप्रसन्नतावासतैही करताहूंकोई आपणे स्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिवासते मैं इनकर्मोंकूं करतानहीं यात्प्रकारका जो ममताका अभावहै यहही शरीर मन बुद्धि इंद्रिय इन च्यारोंविषे केवलरूपताहै इति ॥ ११ ॥ ❀ शंका–हे भगवन् ! कर्तृत्वअभिमानके समानहुएभी तिसीहीकर्मोंकरिकै कोईकपुरुषतौ मुक्तहोवै है और कोईकपुरुष बंधायमानहोवै है याप्रकारकीविषमताविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू.श्लो.) युक्तःकर्मफलंत्यक्त्वाशांतिमाप्नोतिनैष्ठिकीम् ॥ अयुक्तःकामकारेणफलेसक्तोनिबध्यते॥ १२ ॥ युक्तः। कर्मफलम्। त्यक्त्वा। शांतिम्। आप्नोति। नैष्ठिकीम्। अयुक्तः। कामकारेण। फले। सक्तः। निबध्यते ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! युक्तपुरुष कर्मकेफलकूं परित्यागकरिकै कर्मोंकूंकरताहुआ सत्त्वशुद्धिक्रमतैंउत्पन्नहुई मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवैहै और अयुक्तपुरुषतौ कामनाकरिकै फलविषे आसक्तहुआ बंधायमानहोवै है ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यहसर्वकर्म परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतैही हैं हमारेफलवासते यहकर्म नहीं हैं याप्रकारकेअभिप्रायवान्पुरुषकानाम युक्तहै ॥ याप्रकारकायुक्तपुरुष तिनकर्मोंके स्वर्गादिकफलोंका परित्यागकरिकै तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरताहुआ मोक्षरूपशांतिकूंही प्राप्तहोवै है ॥ कैसी हैसामोक्षरूपशांति नैष्ठिकी है अर्थात् प्रथम अंतःकरणकीशुद्धि तिसतैंअनंतर नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक तिसतैंअनंतर संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा इसक्रमकरिकै जामोक्षरूपशांति उत्पन्नहुई है ऐसी नैष्ठिकीमोक्षरूपशांतिकूं सोयुक्तपुरुष प्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष अयुक्तहै अर्थात् यहसर्वकर्म परमेश्वरवासतैही हैं हमारेफलवासते नहीं हैं याप्रकारकेअभिप्रायतें जो पुरुष रहितहै सोअयुक्तपुरुषतौ कामनाकरिकै तिनकर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे मैं इसस्वर्गादिकोंकीप्राप्तिवासते कर्मोंकूंकरताहूं याप्रकारआसक्तहुआ तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहींहोवै है अर्थात् तिनसकामकर्मोंकरिकै सोअयुक्तपुरुष संसाररूपबंधकूंही प्राप्तहोवै है ॥ यातैं हे अर्जुन तूंभी युक्तहुआ तिनकर्मोंकूं कर

रूपव्यापारहै सोव्यापार नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय यापांचोंप्राणोंकेव्यापारोंकाभी उपलक्षकहै ॥ और (स्वपन्) यापदकरिकैकथनकऱ्याजो बुद्धिका निद्रारूपव्यापारहै । सोव्यापार मन बुद्धि चित्त अहंकार याच्यारिअंतःकरणेव्यापारोंकाभी उपलक्षकहै इति ॥ इसप्रकार सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वव्यापारोंविषे आत्माकूं अकर्त्तारूपही देखैहै ॥ इसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनइंद्रियादिकोंकरिकै तिनसर्वव्यापारोंकूंकर्ताहुआभी तिनव्यापारोंकरिकै बंधायमान होवैनहीं इति ॥ ८ ॥ ९ ॥ ❀ शंका–हे भगवन् ! विद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानकेअभावतैं सर्वकर्मोंकूंकरताहुआभी लिपायमानहोवैनहीं यहअर्थ पूर्वआपनैं कथनकऱ्या यातैं यहजान्याजावैहै अविद्वानपुरुषतौ कर्तृत्वाभिमानकेवशतैं तिनकर्मोंकूंकरताहुआ अवश्यकरिकैलिपायमानहोताहोवैगा यातैं तिनकर्मोंविषे प्रवृत्तहुए ताविद्वान् पुरुषकूं सा संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा किसप्रकार प्राप्तहोवैगी किंतु नहीं प्राप्तहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) ब्रह्मण्याधायकर्माणिसंगंत्यक्त्वाकरोतियः ॥ लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा ॥ १० ॥ ब्रह्मणि । आधाय । कर्माणि । संगम् । त्यक्त्वा । करोति । यः । लिप्यते । न । सः । पापेन । पद्मपत्रम् । इव । अंभसा ॥१०॥ इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष परमेश्वर विषे समर्पणकरिकै तथाफलकीइच्छाकूं परित्यागकरिकै कर्मोंकूं करैहै सोपुरुष जलकरिकै पद्मपत्रकी न्याईं कर्मकरिकै नहीं लिपायमानहोवैहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ।

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष परमेश्वरविषे लौकिकवैदिकसर्वकर्मोंका समर्पणकरिकै तथा तिनकर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंकीइच्छाका परित्यागकरिकै जैसे भृत्य आपणेस्वामिवासतै सर्वकर्मोंकूंकरैहै तैसे मैंभी केवलपरमेश्वरकी प्रसन्नतावासतैही सर्वकर्मोंकूंकरताहूं याप्रकारके अभिप्रायकरिकै जोपुरुष तिनलौकिकवैदिक सर्व कर्मोंकूंकरैहै सोपुरुषभी तिसविद्वान्पुरुषकीन्याईं तिनपुण्यपापकर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ जैसे पद्मकेपत्रऊपरि पायाजोजलहै ताजलकरिकै सोपद्म कापत्र लिपायमानहोवैनहीं तैसे भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरेहुएजेकर्म हैं तिनकर्मोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष लिपायमानहोवैनहीं ॥ अर्थात् तेनिष्कामकर्म इसअधिकारीपुरुषकेबंधकाहेतुहोवैंनहीं किंतु तेनिष्कामकर्म इसअधिकारीपुरुषकेअंतःकरणकीशुद्धिकाही हेतुहोवैं हैं ॥ १० ॥ अब इसीअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकै प्रतिपादनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कायेनमनसाबुद्ध्याकेवलैरिंद्रियैरपि ॥ योगिनःकर्मकुर्वंतिसंगंत्यक्त्वात्मशुद्धये ॥११॥ कायेन । मनसा । बुद्ध्या । केवलैः । इंद्रियैः । अपि । योगिनः । कर्म । कुर्वंति । संगम् । त्यक्त्वा । आत्मशुद्धये ॥ ११ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अधिकारीजन फलकी

युक्तः । मन्येत । तत्त्ववित् । पश्यन् । शृण्वन् । स्पृशन् । जिघ्रन् । अश्नन् । गच्छन् ! स्वपन् । श्वसन् । प्रलपन् । विसृजन् । गृह्णन् । उन्मिषन् । निमिषन् । अपि । इंद्रियाणि । इंद्रियार्थेषु । वर्तंते । इंति । धारयन् ॥८॥९॥ इ० प० ॥ हे अर्जुन ! सोयोगयुक्त परमार्थदर्शीपुरुष देखताहुआ भी तथाश्रवणकरताहुआभी तथास्पर्शकरताहुआभी तथागंधकूंग्रहणकरताहुआभी तथाभक्षण करताहुआभी तथा गमनकरताहुआभी तथानिद्राकरताहुआभी नथाश्वासकूंउठावताहुआभी तथाशब्दकूंउच्चारणकरताहुआभी तथामलकापरित्यागकरताहुआभीतथाग्रहणकरताहुआभी तथाउन्मेषकूंकरताहुआभी तथानिमेषकूंकरताहुआभी यहइंद्रियांदिकही आपणेआपणेरूपादिकअर्थोंविषे प्रवर्त्तहोवेंहैं इसप्रकार मानताहुआ मैं किंचित्मात्र भी नहीं करताहूं यांप्रकार मानेहैं ॥ ८ ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोपुरुष युक्तहै अर्थात् निरुद्धचित्तवालाहै ॥ तथा जोपुरुष तत्त्ववितहै अर्थात् परमार्थदर्शी है ॥ अथवा जोपुरुष प्रथमतौ निष्कामकर्मयोगकरिकैयुक्तहै ॥ तिसतैंअनंतर अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तत्त्ववेत्ताहुआहै ॥ ऐसापरमार्थदर्शीपुरुष चक्षुआदिपंचज्ञानइंद्रियोंकरिकै तथावागादिकपंचकर्मइंद्रियोंकरिकै तथाप्राणादिकपंचप्राणोंकरिकै तथाबुद्धिआदिकच्यारिअंतःकरणोंकरिकै शास्त्रविहितरूपादिकविषयोंकूं ग्रहणकरताहुआभी तिनरूपादिकविषयोंविषे यहइंद्रियादिकही प्रवर्त्तहोवेंहैं मैं असंगआत्मा इनरूपाहिकविषयोंविषे कदाचितभी प्रवर्त्तहोतानहीं इसप्रकार निश्चयकरताहुआ मैंअसंगआत्मा किंचितमात्रभी नहींकरताहूं याप्रकार सो तत्ववेत्तापुरुष सर्वदा मानैहैइति ॥ इहां (पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन्) यापंचशब्दोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं चक्षु श्रोत्र त्वक् घ्राण रसन यापंचज्ञानइंद्रियों केव्यापार कथनकरेहैं ॥ तहां रूपादिकोंकादर्शन चक्षुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और शब्दश्रवण श्रोत्रइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वकइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियकाव्यापारहैइति ॥ और (गच्छन् प्रलपन् विसृजन् गृह्णन्) याच्यारिपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं पाद वाक् पायु हस्त याच्यारिकर्मइंद्रियोंकेव्यापार कथनकरेहैं ॥ तहां गमन पादइंद्रियका व्यापारहै ॥ और वचनकाउच्चारण वाक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ और मलकाविसर्गपायुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और ग्रहण हस्तइंद्रियकाव्यापारहै ॥ यहच्यारोंव्यापार उपस्थइंद्रियके विषयआनंदरूप व्यापारकाभी उपलक्षकहैं ॥ और श्वसन् यापदकरिकैकथनकरयाजो प्राणका श्वासरूप व्यापार है सोश्वासरूप व्यापार प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्राणों केव्यापारोंकाभी उपलक्षकहै ॥ और (उन्मिषन् निमिषन्) यापदकरिकै कथनकऱ्याजो उन्मेषनिमेष

आत्माहोइकै यहअधिकारीपुरुष जितेंद्रियहोवै ।। इहां आपणेवशकरेहैं सर्वबाह्यइंद्रियजिसनैं ताकानाम जितेंद्रियहै ॥ इहां (विशुद्धात्मा विजितात्मा जितें द्रियः) यातीनपदोंकरिकैं श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं मनोदंड कायदंड वाक्दंड यातीनदंडोंयुक्त त्रिदंडीका कथनकऱ्या ।। यहवार्ता मनुनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ।। (वाग्दंडोथमनोदंडः कायदंडस्तथैवच)।। यस्यैतेनियतादंडाः सत्रिदंडीतिकथ्यते ॥) अर्थयह ।। वाक्दंड मनोदंड कायदंड यहतीनदंड जिसपुरुषकूं नियमपूर्वकहैं सोपुरुष त्रिदंडी यानामकरिकैकह्याजावैहैइति ॥ इहां वाक्शब्द सर्वबाह्यइंद्रियोंका उपलक्षकहै ।। ऐसेत्रिदंडीपुरुषकूं सर्वात्मज्ञान अवश्यक रिकैहोवैहै इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैं हैं (सर्वभूतात्मभूतात्माइति) ब्रह्मातैंआदिलेकेस्तंबपर्यंत जितनेकचेतनभूतहैं तथाआकाशादिकजितनेकअचेतनभूतहैं ॥ तिनचेतनअचेतनरूप सर्वभूतोंका स्वरूपभूतहै प्रत्यक्चेतनआत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्माहै ।। तात्पर्ययह ।। जैसे कुंडलकंकणादिक भूषणोंका सुवर्णही वास्तवस्वरूपहोवैहै तैसे सर्वजडअजडप्रपंचका मैंहींवास्तवस्वरूपहूं याप्रकार जोपुरुष सर्वप्रपंचकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै सोपरमार्थ दर्शीविद्वानपुरुष अन्यपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै तिनकर्मोंकूंकरताहुआभी कर्तृत्वअभिमानके अभावतैं तिनकर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ।। अर्थात् तेकर्म तिस विद्वानपुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरैंनहीं ।। जिसकारणतैं स्वदृष्टिकरिकै तिसविद्वान्पुरुषविषे सोकर्मोंकाकरतापणाहैनहींइति ॥ इहां किसीटीकाविषे (सर्वभूतात्मभू तात्मा) इसपदका यहअर्थकथनकऱ्याहै सर्व यहशब्दआकाशादिकजडप्रपंचकावाचकहै और आत्मयहशब्द अजडप्रपंचकावाचकहै और सर्व आत्म यादोनोंशब्दों तैं उत्तर जो भूत यहशब्दहै सोभूतशब्द स्वरूपकावाचकहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया सर्वभूत तथाआत्मभूतहै आत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्मभूतात्माहै ॥ याप्रकारकाअर्थ जोनहींअंगीकारकरिये ॥ किंतुसर्वभूतोंका आत्माभूतहै आत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्मभूतात्माहै याप्रकारका जोअर्थ अंगीकारकरिये तौ सर्वभूतात्मा इतनेमात्रकहणेकरिकैही वांछितअर्थकीसिद्धिहोइसकै है ॥ यातैं आत्मभूत यहपद अधिकहोवैगाइति ॥ इसप्रकार प्रथम व्याख्यानविषे आत्मभूत इसप दकीअधिकतारूपदूषणदेकरिकै किसीटीकाकारनैं यह अर्थकथनकऱ्याहै सोआत्मभूत यापदकी अधिकतारूपदूषण इसटीकाविषेभीप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं सर्व इसप दकरिकैही संपूर्णजडअजड प्रपंचकाग्रहणहोसकै है ॥ तासर्वपदकासंकोचकरिकै केवलजडप्रपंचमात्रका तासर्वशब्दकरिकैग्रहणकरणा संभवतानहींहै ॥ यातैं (सर्व भूतात्मभूतात्मा) यापका भाष्यकारोंके अनुसारी प्रथम व्याख्यानही समीचीनहै इति॥ ७॥ ❀ ॥अब इसीपूर्वउक्तअर्थकूं दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्स्पष्टकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) नैवकिंचित्करोमीतियुक्तोमन्येततत्त्ववित् ॥ पश्यञ्श्रृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥ ८ ॥
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषुवर्त्ततइतिधारयन् ॥ ९ ॥ न[२४] । एव[२३] । किंचित्[२२] । करोमि[२५] । इति[२६] ।

तौं दुःखकूंही प्राप्तकरैहै और कर्मयोगयुक्त पुरुषतौ संन्यासीहोइकै ब्रह्मकूं शीघ्रही साक्षात्कारकरैहै ॥ ६ ॥ इतिप० ॥

टीका। हे अर्जुन ! अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे जेशास्त्रविहित नित्यनैमित्तककर्महैं तिनकर्मोंकूं नकारिकै जोपुरुष केवलहठमात्रतैं प्रथम संन्यासकूंहीकरैहै सोहठपूर्वक कऱ्याहुआ संन्यास इसपुरुषकूं केवलदुःखकीहीप्राप्तिकरैहै। तासंन्यासतैं इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी सुखहोवैनहीं काहेतैं तापुरुषका अंतःकरण शुद्धहुआनहीं यातैं संन्यासकाफलरूप जाज्ञाननिष्ठाहै साज्ञाननिष्ठातौ ताअशुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासीकूं कदाचित्भी प्राप्तहोवैनहीं । और जेनिष्कामकर्म अंतःकरणकीशुद्धिकरैहैं तिनकर्मोंकेकरणेविषे तासंन्यासीका अधिकारहैनहीं । यातैं कर्मनिष्ठा तथाज्ञाननिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सोअशुद्धअंतःकरणवालासंन्यासी महान् संकटकूंप्राप्तहोवैहै इति । और जोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मयोगकरिकैयुक्तहै सोपुरुषतौ शुद्धअंतःकरणवाला होणेतैं मननशीलसंन्यासीहोइकै सत्चित्आनंदस्वरूप प्रत्यक्अभिन्न ब्रह्मकूं शीघ्रही साक्षात्कारकरैहै । यहसर्व अर्थ (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते । नचसंन्यसनादेवसिद्धिंसमधिगच्छति) इसश्लोककरिकै पूर्वही कथनकरिआयेहैं यातैं कर्मयोग तथाकर्मोंकासंन्यास यादोनोंकूं एकफलकीहेतुताकेहुएभी अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकृतसंन्यासतैं सोकर्मयोग अत्यंतश्रेष्ठहै यहजो पूर्वकथनकऱ्या सोयुक्तहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! (कर्मणाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकवचनोंविषे तिनकर्मोंकूं बंधनकाहीहेतुकथनकऱ्याहै । यातैं कर्मयोगयुक्तपुरुष ब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरैहै यहआपकावचन असंगतहै । एसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) योगयुक्तोविशुद्धात्माविजितात्माजितेंद्रियः ॥ सर्वभूतात्मभूतात्माकुर्वन्नपिनलिप्यते ॥ ७ ॥ योगयुक्तः । विशुद्धात्मा । विजितात्मा । जितेंद्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा । कुर्वन् । अपि । न । लिप्यते ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष योगकरिकै युक्तहै तथाविशुद्धआत्माहै तथाविजितात्माहै तथाजितइंद्रियहै तथा सर्वभूतोंकाआत्मारूपहैआत्माजिसका ऐसापुरुष तिन कर्मोंकूं करताहुआ भी नहीं लिपायमानहोवै है ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! भगवत्अर्पणता तथाफलकीइच्छातैंरहितपणा इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्तजेशास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्महै ताकानाम योगहै ता योगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै सोयोगयुक्तपुरुष प्रथम विशुद्धात्मा होवै है। इहां विशुद्धहै क्या रजतमतैंरहितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम विशुद्धात्माहै । एसाविशुद्धात्माहोइकै यहपुरुष विजितात्माहोवै । इहां आत्मानाम देहका है सोदेह वशकरयाहै जिसनैं ताकानाम विजितात्माहै । ऐसाविजि

योगहै। सोनिष्कामकर्मरूपयोग जिनअधिकारीपुरुषों विषेविद्यमानहोवै तिनअधिकारीपुरुषोंकानाम योगीहै । ऐसेयोगीपुरुषोंनेंभी इसजन्मविषे अथवा दूसरे जन्मविषे अंतःकरणकीशुद्धिकारिकै संन्यासपूर्वक श्रवणादिकोंकारिकैप्राप्तभईजाज्ञाननिष्ठाहै ताज्ञाननिष्ठाकारिकै तिसीमोक्षरूपस्थानकं प्राप्तहोईताहै । इसप्रकार सर्वकर्मोंके त्यागरूपसंन्यासका तथानिष्कामकर्मयोगका एकहीमोक्षरूपफलहै । यातें जोअधिकारीपुरुष तासांख्यनामासंन्यासकूं तथानिष्कामकर्मयोगकूं एकरूपकरिकै देखे है । सोअधिकारीपुरुषही यथार्थ देखै है। और जोपुरुष तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्न देखैहै सोपुरुष यथार्थदर्शी कह्याजावैनहीं किंतु सोपुरुष विपरीतदर्शी कह्याजावैहै । इहांश्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै । जिनअधिकारीपुरुषोंविषे अबी संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा देखणेमैंआवै है और कर्मनिष्ठा देखणेविषेआवतीनहीं तिनपुरुषोंविषे तासंन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठारूपलिंगकरिकै पूर्वअनेकजन्मोंविषे भगवत्अर्पितकर्मनिष्ठा अनुमानकरीजावै है । काहेतें कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवै नहीं सोकारण जो कदाचित् प्रत्यक्षप्रतीत नहींहोताहोवै तौ ताकार्यरूपलिंगतें ताकारणका अनुमानक्याजावैहै। जैसे वर्षाकाकार्यरूप जानदीकेजलकी वृद्धिहै ताजलकी वृद्धिरूपहेतुतें देशांतरविषे वर्षारूपकारणका अनुमानकरचा जावैहै तैसे इसजन्मके संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठारूपहेतुकारिकै इसतैंपूर्वजन्मोंविषे साकर्मनिष्ठा अनुमानकरीजावैहै । और जिनअधिकारीपुरुषोंविषे अबी भगवत् अर्पितकर्मनिष्ठा देखणेमैं आवैहै और संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा देखैणेमैंआवतीनहीं तिनपुरुषों विषे ताकर्मनिष्ठारूपलिंगकरिकै आगेहोणेहारी संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा अनुमानकरीजावैहै काहेतें जहां कारणसामग्रीहोवैहै तहां कार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै । यातें ताकारणसामग्रीतें भावीकार्यका अनुमान क्याजावैहै जैसे मेघोंकीरचनाविशेषकरिकै भावीवर्षाका अनुमानहोवैहै। तैसे ताभगवत्अर्पितकर्मनिष्ठाकरिकै भावीज्ञाननिष्ठा अनुमानकरीजावैहै । यातें अज्ञानीमुमुक्षुजननें अंतःकरणकीशुद्धिवास्तै प्रथम निष्कामकर्महीकरणे संन्यास प्रथम करणानहीं। सोसंन्यासतौ तीव्रवैराग्यकेप्राप्तहुए आपेही सिद्धहोवैगा इति । ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! ज्ञाननिष्ठाकाहेतुहोणेतें सोसंन्यासतौ अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहीहै। यातें जैसे शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनें ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्तैसोसंन्यास करीताहै तैसे अशुद्धअंतःकरणवाले पुरुषनैंभी सोसंन्यासही प्रथम किसवास्तै नहींकरीताहै । किंतु ताअशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैंभी ताज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्तै प्रथम संन्यासही कऱ्याचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू.श्लो.)संन्यासस्तुमहाबाहोदुःखमाप्तुमयोगतः॥ योगयुक्तोमुनिर्ब्रह्मनचिरेणाधिगच्छति॥६॥संन्यासः। तु। महाबाहो। दुःखम्। आप्तुम्। अयोगतः योगयुक्तः। मुनिः। ब्रह्म। नचिरेण। अधिगच्छति॥६॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! कर्मयोगतैंविना कऱ्याहुआसंन्यास

केहेतुहैं याप्रकारकेवचनकूं शास्त्रअर्थकेविवेकविज्ञानतैंरहितपुरुषही कथनकरैं हैं शास्त्रअर्थकेविवेकविज्ञानवालेपंडितपुरुष तावचनकूं कथनकरतेनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! तेपंडितपुरुष जोइसप्रकारकावचन नहींकहते तौ तिनपंडितपुरुषोंका कौनमतहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनपंडितपुरुषोंकेमत का कथनकरैं हैं (एकमप्यास्थितःइति) हे अर्जुन ! तिनपंडितपुरुषोंकातौ यहमतहै तेनिष्कामकर्म तथातिनकर्मोंकासंन्यास यादोनोंविषे एकहीं कर्मयोगकूं अथवा संन्यासकूं जोपुरुष आपणेअधिकारकेअनुसार शास्त्रकीविधिपूर्वक करै है ॥ सोअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा तिनदोनोंकेएकहीमोक्षरूपफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तानिष्कामकर्मकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवहोइसकैहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! संन्यास तथाकर्मयोगयादोनोंविषे एककेअनुष्ठानकरणेतैं यहअधिकारीपुरुष तिनदोनोंकेफलकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते ॥ एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति ॥ ५ ॥ यत् । सांख्यैः प्राप्यते । स्थानं । तत् । योगैः । अपि । गम्यते ॥ एकं । सांख्यं । च । योगं । च । यः । पश्यति । सः । पश्यति ॥ ५ ॥ इतिप० ॥
हे अर्जुन ! सांख्यपुरुषोंनैं जिसै स्थानकूं प्राप्तहोईताहै तिसस्थानकूं योगिपुरुषों नैं भी प्राप्तहोईताहै यातैं जो अधिकारीपुरुष सांख्यकूं तथा योगकूं एकरूप देखैताहै सोईहीपुरुष सम्यक्देखैहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ज्ञाननिष्ठाकरिकैयुक्त जेसंन्यासीहैं तेसंन्यासी इसजन्मविषे कर्मोंकेअनुष्ठानतैंरहितहुएभी पूर्वजन्मकेकर्मोंकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ ऐसेशुद्धअंतः करणवालेसंन्यासियों नैं श्रवणमननादिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकरिकै जिसमोक्षरूपस्थानकूंप्राप्तहोईताहै ॥ इहां जिसविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष कदाचित्भी पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ताकानाम स्थानहै ॥ ऐसास्थानरूप अविद्याकीनिवृत्तिपूर्वक अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षहीहै तामोक्षतैंभिन्न जितने ब्रह्मलोक वैकुंठलोक गोलोक स्वर्गलोक इत्यादिकलोकहैं तिनलोकोंकूंप्राप्तहुआभी यहपुरुष पुनः जन्ममरणादिरूपआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवाननैं आपही (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोर्जुन) इसवचनकरिकै स्पष्टकरीहै ॥ यातैं तिनब्रह्मलोकादिकोंका इहां स्थानशब्दकरिकैग्रहणहोइसकै नहीं ॥ ऐसाब्रह्मरूपमोक्ष यद्यपि इसअधिकारीपुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहै तथापि अज्ञानकीआवरणशक्तिकरिकै अप्राप्तहुएकीन्याई होइरह्याहै ॥ महावाक्यजन्य तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै जबी ताआवरणकीनिवृत्तिहोवैहै तबीसोमोक्ष प्राप्तहुएकीन्याई प्राप्तकह्याजावैहै ॥ जैसे कंठविषेस्थित विस्मरणहुएभूषणकी ताकेज्ञान करिकै पुनःप्राप्तिकहीजावैहैइति ॥ और फलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवल भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरेहुए जेशास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्महैं तिनकर्मोंकानाम

द्वेषकरैहै तथा नहीं स्वर्गादिक फलोंकीइच्छाकरैहै तथा रागद्वेषतैंरहितहै सोपुरुष नित्यहीसंन्यासी जांनना जिसकारणतैं सोपुरुष सुखपूर्वकही बंधतैं मुक्तहोवैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरेहुए नित्यनैमित्तिककर्मोंविषे यहसर्वकर्म निष्फलहीहैं ऐसीनिष्फलपणेकीशंकाकरिकै द्वेषकरता नहीं ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष तिनकर्मोंकेस्वर्गादिफलोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहै ऐसाअधिकारीपुरुष आपणेनित्य नैमित्तिककर्मोंविषेप्रवृत्तहुआभी नित्यहीसंन्यासीजानणा जिसकारणतैं सोनिष्कामकर्मोंकूंकरणेहाराअधिकारीपुरुष अंतःकरणकीअशुद्धिरूप ज्ञानकेप्रतिबंधतैं नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककरिकै अनायासतैंही मुक्तहोवैहै अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालाहोवैहै इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जोपुरुष आपणे नित्यनैमित्तिककर्मोंविषेप्रवृत्तहुआहै सोपुरुष किसप्रकार नित्यहीसंन्यासीजानणा किंतु ताकर्मकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवतानहीं काहेतैं नित्यनैमित्तिककर्म तथातिनकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यहदोनों तेजतिमिरकीन्याईं स्वरूपतैंहीविरोधीहैं ॥ जहां कर्मीपणा रहैहै तहां संन्यासीपणारहैनहीं ॥ और जहां संन्यासीपणा रहैहै तहां कर्मीपणा रहैनहीं ॥ और जोआप यहवचनकहो कर्म तथाकर्मोंकासंन्यास यादोनोंका फलएकहींहै यातैं तानिष्कामकर्मोंकेकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवहोइसकैहै ॥ सोयह आपकाकहणाभी संभवतानहीं काहेतैं जेसाधन स्वरूपतैंविरुद्धहोवैहैं तिनसाधनोंकेफल विषेभी विरोधहीहोवैहै तिनविरुद्धसाधनोंके फलकीएकतासंभवैनहीं ॥ यातैं कर्मयोग तथाकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासयहदोनोंएकनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन असंगतही है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ।

(मू. श्लो.) सांख्ययोगौपृथग्बालाःप्रवदंतिनपंडिताः ॥ एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विंदतेफलम् ॥ ४ ॥ सांख्ययोगौ । पृथक् । बालाः । प्रवदंति । न । पंडिताः । एकम् । अपि । आस्थितः । सम्यक् । उभयोः । विंदते । फलम् ॥ ४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! विचारहीनपुरुष संन्यासकर्मयोगदोनोंकूं विरुद्धफलवाला कथनकरैहै विचारवान्पंडित ऐसानहींकथनकरैहै जिसकारणतैं तिन दोनोंविषे एककूं भी भलीप्रकार करताहुआ यहपुरुष तिनदोनोंके निःश्रेयसरूपफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! संशयविपरीतभावनातैंरहित जा यथार्थ आत्माकारबुद्धिहै ताकानाम संख्याहै ताआत्माकारबुद्धिरूपसंख्याकी जोप्राप्तिकरैहै ताका नाम सांख्यहै ऐसाअत्मज्ञानकाअंतरंग साधनहोणेतैं संन्यासहीहै ऐसा सांख्यनामासंन्यास तथापूर्वकथनकऱ्या कर्मयोग यहदोनों भिन्नभिन्नफल

इहां यद्यपि कर्मोंकेसंन्यासकूं तथाकर्मयोगकूं आप इसगीतावचनकरिकै कथनकरतेहो इतनामात्रही कहणासंभवैहै ॥ इसश्रुतिवचनकरिकै कहतेभयेहो यह कहणासंभवतानहीं ॥ तथापि (पुनर्योगंचशंससि) यावचनविषे स्थितजो पुनः यहशब्दहै तापुनःशब्दकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ जैसे अबी इसगीताकेवचनोंकरिकै एकहीमुमुक्षुजनकेप्रति कर्मोंकेसंन्यासकूं तथाकर्मयोगकूं कथनकरोहो तैसे सृष्टिकेआदिकालविषे वेदोंकेकर्त्ताआपनैं तिनवेदोंविषेभी इसी प्रकार कथनकऱ्याहैइति ॥ हे भगवन् ! इसप्रकार एकहीअज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति आपनैं कर्मोंका तथातिनकर्मोंकेत्यागका दोनोंका विधानकऱ्याहै सोतिनदोनोंका एकहीकालविषे एकहीअधिकारीपुरुषनैं अनुष्ठानकरणा संभवतानहीं ॥ जैसे एकहीकालविषे एकहीपुरुषविषे स्थिति तथागमन यहदोनों संभवतेनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यादोनोंविषे जिसएक कर्मकूं अथवा संन्यासकूं आप अत्यंतश्रेष्ठ मानतेहोवो तिसकर्मयोगकूं अथवा संन्यासकूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ तिस आपके निश्चितमतकूं मैंअर्जुन आपणे श्रेयकासाधनरूपमानिकै अनुष्ठानकरौंइति ॥ १ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारके अर्जुनके प्रश्नकूंश्रवणकरिकै श्रीभगवान् अब ताप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ संन्यासःकर्मयोगश्चनिःश्रेयसकरावुभौ ॥ तयोस्तुकर्मसंन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ २ ॥ संन्यासः । कर्मयोगः । च । निःश्रेयसकरौ । उभौ । तयोः । तु । कर्मसंन्यासात् । कर्मयोगः । विशिष्यते ॥ २ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन ! संन्यास तथा कर्मयोग यहदोनों मोक्षकेहेतुहैं तिनदोनोंविषे भी कर्मकेसंन्यासतैं कर्मयोगही श्रेष्ठ है ॥ २ ॥ इतिप० ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकात्यागरूपजोसंन्यासहै तथा आपणेआपणे वर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकाअनुष्ठानरूप जोकर्मयोगहै यहदोनों आत्मज्ञानकाउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं मोक्षकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ तथापि तिनदोनोंविषे अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित अनधिकारीपुरुषनैं कराजो कर्मोंका संन्यासहै तासंन्यासतैं सोकर्मयोगही श्रेष्ठहै काहेतैं अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैं कऱ्याजो संन्यासहै सोसंन्यास ताअशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषविषे आत्मज्ञानकेअधिकारीपणेका संपादक होवैनहीं ॥ और सोनिष्कामकर्मयोगतौ इसपुरुषविषेताआत्मज्ञानकेअधिकारीपणेका संपादकहीहोवै है ॥ यातैं सोकर्मयोग तासंन्यासतैं श्रेष्ठहै इति ॥ २ ॥ ❀ अब अधिकारीपुरुषोंकूं ताकर्मयोगविषे प्रवृत्तकरणेवास्तै तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् तानिष्कामकर्मयोगकी स्तुतिकूंकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) ज्ञेयःसनित्यसंन्यासीयोनद्वेष्टिनकांक्षति ॥ निर्द्वंद्वोहिमहाबाहोसुखंबंधात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ ज्ञेयः । सः । नित्यसंन्यासी । यः । न । द्वेष्टि । न । कांक्षति । निर्द्वंद्वः । हि । महाबाहो । सुखम् । बंधात् । प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष नहीं तौ

भया ॥ एकहीअज्ञानीमुमुक्षुजनकूं वैराग्यतैंरहित दशाविषेतौ निष्कामकर्मोंकाहीं अनुष्ठानकरणेयोग्यहै ॥ और तिसीही अज्ञानीमुमुक्षुजनकूं वैराग्यदशाविषे तिनकर्मोंका संन्यासहीकरणेयोग्यहै ॥ सोईहीसंन्यास श्रवणमननकेकरणेवासतै अवसरकीप्राप्तिकरिकै तिसपुरुषकेज्ञानवासतैहोवै है ॥ इसप्रकार अविरक्तादशा तथाविरक्तादशा यादोनोंदशावोंकेभेदकरिकै एकहीअज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति कर्मोंकीकर्त्तव्यता तथातिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकीकर्त्तव्यता कहणेवासतै श्रीभगवान्नैं इसपंचमअध्यायका तथावक्ष्यमाणषष्ठअध्यायका प्रारंभकऱ्याहै ॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तितैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेआनंदवासतै करणेयोग्यजोविद्वत्संन्यासहै सोविद्वत्संन्यासतौ आत्मज्ञानकेबलतैं अर्थतैंहीसिद्धहै ॥ यातैं ताकेविषे संदेहकेअभावहोणेतैं ताविद्वत्संन्यासका इहां विचारकऱ्यानहीं किंतु विविदिषासंन्यासकाही इहां विचारकऱ्याहैइति ॥ इस पूर्वउक्तश्रीभगवान्केअभिप्रायकूं नजानिकरिकै सोअर्जुन याप्रकारके संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ श्रीभगवान्नैं एकही अज्ञानीमुमुक्षुकेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोंका तथातिनकर्मोंकेत्यागका विधानकऱ्याहै ॥ और तेकर्म तथातिनकर्मोंकात्याग यहदोनों तेजतिमिरकीन्याईं परस्परविरोधीहोणेतैं एककालविषे एकअधिकारीपुरुषकरिकैअनुष्ठानकरेजावैंनहीं ॥ यातैं मैं मुमुक्षुअर्जुननैं इसकालविषे तेकर्मही करणेयोग्यहैं ॥ अथवा तिनकर्मोंका त्यागरूपसंन्यासही करणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयकरिकैयुक्तहुआ सो अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ संन्यासंकर्मणांकृष्णपुनर्योगंचशंससि ॥ यच्छ्रेयएतयोरेकंतन्मेब्रूहिसुनिश्चितम्॥१॥ संन्यासम्। कर्मणाम्। कृष्ण। पुनः। योगम्। च। शंससि। यत्। श्रेयः। एतयोः। एकम्। तत्। मे। ब्रूहि। सुनिश्चितम्॥ १ ॥ इतिप० ॥ हेकृष्णभगवन्! आप कर्मोंके संन्यासकूंभी कथनकरतेहो तथा पुनः कर्मयोगकूंभी कथनकरतेहो इनदोनोंविषे जो एक श्रेष्ठहोवै सो हमारेप्रति निश्चयकरिकै कथनकरो ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे कृष्ण! क्या हेसत्यआनंदरूप! अथवा हेभक्तजनोंके दुःखकूंनष्टकरणेहारा! ॥ (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) इसश्रुतिकरिकै तथा (कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतꣳसमाः) इसश्रुतिकरिकै विधानकरेजेनित्यनैमित्तिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंभी आप अज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति (एतमेवप्रव्राजिनो लोकमिच्छंतःप्रव्रजंति) इसश्रुतिवचनकरिकै अथवा (निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम्) इसपूर्वउक्तगीतावचनकरिकै कथनकरतेहो तथा तिसकर्मकेत्यागरूपसंन्यासतैं अत्यंतविरुद्ध जोकर्मोंकाअनुष्ठानरूपकर्मयोगहै तिसकर्मयोगकूंभी आप तिसीअज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इसश्रुतिवचनकरिकै अथवा (छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत) इसपूर्वउक्तगीतावचनकरिकै कथनकरतेहो ॥

संन्यासकरिकैही तिसपुरुषकूं ज्ञानकेअधिकारकीप्राप्तिहोजावैहै ॥ तिससंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा व्यर्थहीहै ॥ यातैं संन्यासतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषनैं कर्मोंकाअनुष्ठान कदाचित्भीनहींकरणा किंतु इसअधिकारीपुरुषनैं प्रथम भगवदर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ ताकरिकैअंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर तीव्रवैराग्यकरिकै जबी दृढआत्मज्ञानकीइच्छाहोवै ॥ जिसइच्छाकूं श्रुतिविषे विविदिषाशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तबीही वेदांतवाक्योंके श्रवणमननादिरूपविचारकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं सोसंन्यासकरणा यहही श्रीकृष्णभगवान्कामतहै ॥ तथा सर्ववेदोंकामतहै ॥ इसआपणेमतकूं श्रीकृष्णभगवान् (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरताभयाहै ॥ और इसीआपणेमतकूं श्रीभगवान् (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते) इसश्लोककरिकै आगेकथनकरैगा ॥ इहां योगशब्दकरिकै तीव्रवैराग्यपूर्वक विविदिषाका ग्रहणकरणा ॥ यहवार्ता वार्त्तिककारनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (प्रत्यग्विविदिषासिद्ध्यैवेदानुवचनादयः ॥ ब्रह्मावाप्त्यैतुतत्त्यागईप्सतीतिश्रुतेर्बलात्) ॥ अर्थयह ॥ (तमेतंवेदानुवचनेन) इसश्रुतिनैं विधानकरेजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तप आदिककर्म हैं तेवेदाध्ययनादिककर्मतौ प्रत्यक्आत्माके जानणेकीइच्छारूप विविदिषाकीप्राप्तिवासतैही हैं ॥ और प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकीप्राप्तिवासतैतौ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति) इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादित सर्वकर्मोंकात्यागही हैइति ॥ तहां स्मृतिभी ॥ (कषायेकर्मभिःपक्वेततोज्ञानंप्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकेशुद्ध हुएतैंअनंतर सर्वकर्मोंकेत्यागतैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ तहां सोआत्मज्ञानकीप्राप्तिकाहेतुभूत विविदिषासंन्यासभी क्रमसंन्यास अक्रमसंन्यास याभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकूंधारणकरणा ॥ याकानाम क्रमसंन्यासहै ॥ और संसारतैंअत्यंततीव्रवैराग्यकेप्राप्तहुए ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंतैंअनंतरही तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरणा याकानाम अक्रमसंन्यासहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मचर्यंसमाप्यगृहीभवेद्गृहाद्वनीभूत्वाप्रव्रजेत् ॥ यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहाद्वावनाद्वायदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्इति) ॥अर्थयह॥ अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यकीसमाप्तिकरिकै ता गृहस्थहोवै ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थहोइकै संन्यासकूंग्रहणकरै इति ॥ और जोकदाचित् इसअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं प्रथमही तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै तो यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतै अनंतरही संन्यासआश्रमकूंधारणकरै ॥ अथवागृहस्थआश्रमतैं अनंतर संन्यासआश्रमकूंधारणकरै ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतैं अनंतर संन्यासआश्रमकूंधारण करै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी क्रमनहीं ॥ किंतु जिसदिनविषे यहअधिकारीपुरुष तीव्रवैराग्यकूं प्राप्तहोवै तिसीदिनविषे संन्यासकूंकरैइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्ध

न्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति ॥ शांतोदांतउपरतस्तितिक्षःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानंपश्येत् ॥) अर्थयह ॥ संन्यासीपुरुषों कूंप्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोकहै ताआत्मारूपलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए यहअधिकारीजन सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंकरैंहैंइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तियुक्तहोइके आपणेहृदयदेशविषे प्रत्यक्आत्माकूंदेखैइति ॥ इहां उपरतिशब्दकरिकै संन्यासकाहीग्रहणकऱ्याहै ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनें सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंही आत्मज्ञानकाहेतुकह्याहै ॥ तहां जैसे ज्ञान कर्म यादोनोंका समुचय संभवैनहीं तैसेकर्म तथाकर्मोंकात्यागइनदोनोंकाभी समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतें जेपदार्थ एकहीकालविषे एकठेस्थितहोवें हैं तिनपदार्थोंकाही परस्पर समुचयहोवैहै ॥ भिन्नदेशकाल वृत्तिपदार्थोंका परस्पर समुचयसंभवैनहीं ॥ और कर्म तथाकर्मोंकात्याग यह दोनोंभी तेजतिमिरकीन्याईं परस्पर विरुद्धहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहीकालविषे एकहीवर्तणासंभवैनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंकासमुचय संभवतानहीं ॥ शंका—कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंका आत्मज्ञानही फलहै ॥ यातैं एकार्थताहोणेतैं तिनदोनोंका विकल्प किसवासते नहींहोवै ॥ समाधान—आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणे विषे कर्मका तथाकर्मकेत्यागका द्वार भिन्न भिन्नही है ॥ यातैं तिनदोनोंका विकल्पभी संभवैनहीं ॥ जहां दोपदार्थोंकाएककार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे एकहीद्वार होवैहै ॥ तहांही तिनदोनोंपदार्थोंक विकल्प होवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे प्रतिबंधक जेपापकर्महैं तिनपापकर्मोंकीनिवृत्ति नित्यनैमित्तिककर्मों करिकैहीहोवैहै ॥ यातैं तिननित्यनैमित्तककर्मोंकातौ तिनपापोंकानाशरूप अदृष्टहीद्वारहै ॥ और जिसपुरुषकाचित्त लौकिकवैदिककर्मोंकरिकै अत्यंतविक्षिप्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और साविक्षेपकीनिवृत्ति संन्यासकरिकैहीहोवैहै ॥ यातैं ताकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकातौ विक्षेपकीनिवृत्तिकरिकै आत्मविचारकेअवसरकीप्राप्तिरूप दृष्टहीद्वारहै यातैं एकआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतेहुएभी तेकर्म तथाकर्मोंकात्याग यहदोनों ताअदृष्ट तथादृष्ट द्वारकेभेदकरिकै विकल्पकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैं समुचयके तथाविकल्पके असंभवहुए तेकर्म तथातिनकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यहदोनों यथाक्रमतैंही अनुष्ठानकरणे ॥ ताक्रमपक्षविषेभी संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ अथवा कर्मोंकेअनुष्ठानतैंअनंतर संन्यासकरणा ॥ तहांसन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ यहप्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरैगा तो परित्यागकरेहुए पूर्वलेआश्रमका पुनःअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ताकरिकै सोसंन्यासी आरूढ पतितहोवैगा ॥ और सोसंन्यासी तिनकर्मोंकाअधिकारीभीहैनहीं ॥ यातैं संन्यासकूंधारणकरिकै सोपुरुष जोपुनःकर्मोंकूंकरैगा तौ पूर्वग्रहणकऱ्याहुआ संन्यासही ताका व्यर्थहोवैगा ॥ जिसकारणतैं सोसंन्यास कर्मोंकीन्याईं अदृष्टार्थक नहींहै किंतु विक्षेपकीनिवृत्तिरूपदृष्टार्थकहीहै ॥ और प्रथमकरेहुए

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व तृतीय चतुर्थ यादोनोंअध्यायोंकरिकैं कर्म ज्ञान यादोनोंका निरूपणकर्‍या ॥ अब पंचम षष्ठ यादोनोंअध्यायोंकरिकै कर्म तथाअकर्मका त्यागरूपसंन्यास यादोनोंका निरूपणकरैंहैं ॥ तहां पूर्व तृतीयअध्यायविषे (ज्यायसीचेत्कर्मणस्ते) इत्यादिकवचनोंकरिकै अर्जुननैंपूछाहुआ श्रीभगवान् ज्ञान कर्म यादोनोंका विकल्पका तथा समुच्चयका असंभव कथनकरिकै अधिकारीपुरुषकेभेदकीव्यवस्थाकरिकै (लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्तामयानघ) इत्यादिकवचनोंकरिकै निर्णयकरताभया ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया॥अज्ञपुरुषहैअधिकारीजिसकाऐसाजोकर्महै सोकर्म आत्मज्ञानकेसाथि समुच्चयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे प्रकाशरूपतेज तथाअंधकाररूपतिमिर यादोनोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं तैसे ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकाभी परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं काहेतैं तिनकर्मोंकाहेतुरूप जाभेदबुद्धिहै ताभेदबुद्धिका सोआत्मज्ञान नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञान तिनकर्मोंका विरोधीहीहै ॥ और विरोधीपदार्थोंका एकदेशविषे एककालविषे एकठाहोणा कदाचित्भीसंभवता नहीं ॥ और सोकर्म ताज्ञानकेसाथि विकल्पकूंभी प्राप्तहोवैनहीं काहेतैं जेदोपदार्थ एकहीकार्यकीसिद्धिकरणेवासते होवैं हैं तिनपदार्थोंकाही परस्पर विकल्पहोवैहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे ज्ञान तथाकर्म यहदोनों एककार्यकीसिद्धिवासतेहैंनहीं काहेतैं आत्मज्ञानकार्यजोअज्ञानकाकानाशहै सोअज्ञानकानाश कर्मकरिकेहोइसकै नहीं किंतु केवलज्ञानकरिकैही सोअज्ञानकानाशहोवैहै तहांश्रुति ॥ (तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेयनाय) ॥ अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवकूंजानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरैहै ॥ तथा अविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसरा कोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहैइति ॥ और ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर तिनकर्मोंकाकार्य किंचित्मात्रभी अपेक्षित नहींहै ॥ यहअर्थ (यावानर्थ उदपाने) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ज्ञानवान्पुरुषविषे कर्मोंकेअनधिकारकानिश्चयहुए प्रारब्धकर्मकेवशतैं वृथाचेष्टारूपकरिकै तिनकर्मोंकाअनुष्ठानहोवै अथवा तिनसर्वकर्मोंकासंन्यासहोवै ॥ यहवार्त्ता निर्विवाद चतुर्थअध्यायविषे निर्णयकरी ॥ और जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींभईहै ऐसेअज्ञानीपुरुषनैंतौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणेवासतै तिनकर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥) इसश्रुतिनैं वेदाध्ययन यज्ञ दान तप इत्यादिक सर्वकर्मोंका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकर्‍याहै और (सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं आपही तिनसर्वकर्मोंका आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकर्‍याहै और जैसे श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकाअनुष्ठानकथनकर्‍याहै तैसे श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासभी कथनक

रैंनहीं अर्थात् तेकर्म देवतादिरूपइष्टशरीरका तथापशुआदिरूपअनिष्टशरीरका तथा मनुष्यादिरूप मिश्रितशरीरका आरंभकरैंनहीं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आत्मज्ञानकरिकैनष्टहुआहैसंशयजिसका ऐसेविद्वान्पुरुषकूं यहलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनही ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी ताआत्मज्ञान करिकै तासंशयकूंछेदनकरिके स्वधर्मविषेतत्परहोउ ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) तस्मादज्ञानसंभूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः ॥ छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥ ४२ ॥ इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेयज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः॥ ४ ॥ तस्मात् । अज्ञानसंभूतम् । हृत्स्थम् । ज्ञानासिना । आत्मनः । छित्त्वा । एनम् । संशयम् । योगम् । आतिष्ठ । उत्तिष्ठ । भारत ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! तिसकारणतैं अज्ञानतैं उत्पन्नहुए तथाबुद्धिविषेस्थित इस संशयकूं आत्माके ज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदन करिकै तूं निष्कामकर्मकूं कर इसप्रकारतैं तूंअब युद्धकरणेवासतै उठखडाहोउ ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! अविवेकरूपअज्ञानतैंउत्पन्नहुआ तथाबुद्धिरूपहृदयविषेस्थित ऐसाजोयह सर्वअनर्थोंकामूलभूत संशयहै इससंशयकूं आत्माकूंविषय करणेहारे निश्चयरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तूं सम्यक्दर्शनकेउपायभूत निष्कामकर्मयोगकूंकर इसकारणतैं तूं इसकालविषे इसयुद्धकरणेवासतै उठखडा होउइति ॥ इहां (अज्ञानसंभूतम्) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं तासंशयकेकारणका कथनकरया ॥ और (हृत्स्थं) यापदकरिकै तासंशयके आश्रयकाकथन करया ॥ ताकहणेकरिकै यहअर्थबोधनकरया ॥ जैसे लोकविषे जिसशत्रुकेकारणका तथाआश्रयका ज्ञानहोवैहै सोशत्रु सुखेनही हननकरऱ्याजावैहै ॥ तैसे इससंशयरूपशत्रुके कारणके तथाआश्रयके ज्ञानहुएतैंअनंतर यहसंशयरूपशत्रूभी ताकेकारणादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै सुखेनही नाशकरऱ्याजावैहैइति ॥ और (हे भारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या भरतवंशविषेउत्पन्नभयाजोतूंअर्जुनहै तिसतुम्हारा यहयुद्धकाउद्यम निष्फलनहीं है ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकाहेतुहोणेतैं सफलहैइति ॥ इसचतुर्थअध्यायकेसर्वअर्थकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारायहश्लोकहै ॥ (स्वस्यानीशत्वबाधेन भक्तिश्रद्धेदृढीकृते ॥ धीहेतुःकर्मनिष्ठाचहरिणेहोपसंहृता) ॥ अर्थयह ॥ इसचतुर्थअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं आपणेअनीश्वरपणेकीनिवृत्तिकरिकै आपणेविषे अर्जुनकेभक्तिकूं तथाश्रद्धाकूं दृढकऱ्या ॥ तथा आत्मज्ञानकाकारणरूपजाकर्मनिष्ठाहै साकर्मनिष्ठा उपसंहारकरी इति ४२ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामि--उद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

यात्मापुरुषकूं यहमनुष्यलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं वेदकेवचनोंविषेभी सर्वदा संशयबन्यारहैहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषतैं धर्मका तथा ज्ञानका संपादनहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं तासंशयात्मापुरुषकूं स्वर्गमोक्षादिरूपपरलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकोंविषेभी यह भोजनादिक मैं करौं अथवा नहीं करौं याप्रकारकासंशय सर्वदा बन्यारहैहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकृतविषयसुखभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताअज्ञपुरुषकूं तथाअश्रद्दधानपुरुषकूं यद्यपि सोपरलोकप्राप्तहोवैनहीं तथापि यहमनुष्यलोक तथाभोजनादिकृतविषयसुख यहदोनोंप्राप्तहोवैंहैं ॥ याकारणतैंही शास्त्रवेत्तापुरुषों नैं ताअज्ञपुरुषकूं सुसाध्य कह्याहै ॥ और ताअश्रद्दधानपुरुषकूं प्रयत्नसाध्य कह्याहै ॥ और तासंशयात्माकूं असाध्य कह्याहै ॥ इहां जिसपुरुषकी सतमार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकूं सुसाध्यकहैंहैं ॥ और जिसपुरुषकी बहुतप्रयत्नकरिकै तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकूं प्रयत्नसाध्यकहैंहैं ॥ और किसीप्रकारकैभी जिसपुरुषकी तासतमार्गविषेप्रवृत्तिनहींहोइसकै तापुरुषकूं असाध्यकहैंहैं ॥ यातैं सोसंशयात्मापुरुष सर्वतैंअत्यंत पापिष्ठहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ तहां ऐसेसर्वअर्थोंकेमूलभूतसंशयकै निवृत्तकरणेवासतै आत्माकानिश्चयरूपउपायकूं कथनकरतेहुए श्रीभगवान् दोअध्यायोंकरिकै कथनकरी जापूर्वउत्तरभूमिकाकेभेदकरिकै कर्मज्ञानमय दोप्रकारकीब्रह्मनिष्ठाहै ताका अब उपसंहारकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) योगसंन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयम् ॥ आत्मवंतंनकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ ४१ ॥ योगसंन्यस्तकर्माणम् । ज्ञानसंछिन्नसंशयम् । आत्मवंतम् । न । कर्माणि । निबध्नंति । धनंजय ॥ ४१ ॥ इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! समत्वबुद्धिरूपयोगकरिकैभगवत् अर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं तथाआत्मज्ञानकरिकै छेदनकन्याहैसंशय जिसनैं ऐसेप्रमादतैंरहितपुरुषकूं कर्म नहीं बंधायमान करैंहैं ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ।

टीका । हे अर्जुन ! भगवत्आराधनरूपजासमत्वबुद्धिहै ताकानामयोगहै ॥ ऐसेयोगकरिकै मैंश्रीभगवानविषे समर्पणकरे हैंकर्मजिसनैं अथवा परमार्थवस्तुके दर्शनकानाम योगहै तायोगकरिकै त्यागकरेहैंसर्वकर्मजिसनैं ताकानाम योगसंन्यस्तकर्मा है ॥ शंका—हे भगवन् ! तासंशयकेविद्यमानहुए सोयोगसंन्यस्त कर्मपणाही किसप्रकारसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहे हैं ॥ (ज्ञानसंछिन्नसंशयमिति) हे अर्जुन ! आत्माकानिश्चयरूपजो ज्ञानहै ताज्ञानकरिकै छेदनकन्याहैसंशयजिसपुरुषनैं ॥ शंका—हे भगवन् ! विषयोंकीपरवशतारूपप्रमादकेविद्यमानहुए ताज्ञानकीउत्पत्तिहीसंभवैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् कहैंहैं (आत्मवंतमिति) हे अर्जुन ! जोपुरुष तापरवशतारूपप्रमादतैंरहितहै अर्थात् जोपुरुष सर्वदा सावधानहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष अप्रमादि होणेतैं ज्ञानवानहै तथा ज्ञानसंछिन्नसंशयहोणेतैं योगसंन्यस्तकर्माहै ताविद्वान्पुरुषकूं लोकसंग्रहवासतैकरेहुएशुभकर्म अथवा व्यर्थचेष्टारूपकर्म बंधायमानक

करिके यह अधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइके कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप कैवल्यमुक्तिकूं व्यवधानतैं विनाही प्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकेही अंधकारकीनिवृत्तिकरै है ताअंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे सोदीपक किसीभीसहकारीकारणकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे यहआत्मज्ञानभी आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकेही अज्ञानकीनिवृत्तिकरै है ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे सोआत्मज्ञान दूसरेकिसीभी प्रसंख्यानादिकउपायोंकीअपेक्षाकरैनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तअर्थविषे तुमनैं कदाचित्भीसंशयकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं संशयवान्पुरुष महान्अनर्थकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसअर्थकं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति ॥ नायंलोकोस्तिनपरोनसुखंसंशयात्मनः ॥ ४० ॥ अज्ञः । च । अश्रद्दधानः । च । संशयात्मा । विनश्यति । न । अयम् । लोकः । अस्ति । न । परः । न । सुखम् । संशयात्मनः ॥ ४० ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! अज्ञानीपुरुष तथा अश्रद्धावान्पुरुष तथा संशययुक्तपुरुष विनाशकूंहीप्राप्तहोवैहै तिससंशययुक्तपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा स्वर्गादिरूपपरलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा भोजनादिकृतसुखभी नहींप्राप्तहोवै है ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष वेदांतशास्त्रकेअध्ययनतैंरहितहोणेतैं आत्मज्ञानतैंशून्यहै तापुरुषकानाम अज्ञहै ॥ और ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कथनकऱ्याजो अर्थहै तथा वेदांतशास्त्रनैं कथनकऱ्याजोअर्थहै ताअर्थविषे यह अर्थ इसप्रकारकाहैनहीं याप्रकारकी विपर्ययरूपजानास्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम अश्रद्धाहै ॥ ताअश्रद्धा करिके जोपुरुष युक्तहै तापुरुषकानाम अश्रद्दधानहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वअर्थोंविषे यहअर्थ इसप्रकारकाहै अथवा अन्यप्रकारकाहै याप्रकारकेसंशय करिके जिसपुरुषकाचित्त युक्तहै तापुरुषकानाम संशयात्माहै ॥ ऐसा अज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष तथासंशयात्मापुरुष यहतीनोंपुरुष नाशकूंहीप्राप्तहोवैं हैं ॥ अर्थात् आपणेअर्थतैंभ्रष्टहोवैं हैं ॥ इहां सोसंशयात्मापुरुष जिसप्रकारकेअनर्थकूं प्राप्तहोवै है तिसप्रकारकेअनर्थकूं सोअज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंन्यूनअनर्थकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ इसप्रकार तासंशयात्मापुरुषतैं अज्ञपुरुषविषे तथाअश्रद्दधानपुरुषविषे न्यूनताबोधनकरणेवास्तेतिनदोनोंकेवाचकपदोंके अंतविषे चकार कथनकऱ्याहै ॥ शंका—हे भगवन् ! सोसंशयात्मापुरुष अज्ञपुरुषतैं तथाअश्रद्दधानपुरुषतैं अधिक अनर्थकूंप्राप्तहोवै है यहवार्त्ता किसप्रकार जानीजावै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहें हैं (नायंलोकःइति) हे अर्जुन ! जोपुरुष सर्वदासंशयकरिकैयुक्तहै सोसंशयआत्मापुरुष आपणेमित्रादिकोंविषेभी यहहमारोमित्रहै अथवाशत्रुहैयाप्रकारका संशयहीकरै है और सोसंशयात्मापुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेविषेभीप्रवृत्तहोवैनहीं यातैंतिससंश

प्राप्त होवै नहीं ॥ तथा अन्य किसी पुरुषके दिये हुए ज्ञानकूं आपणे विषे स्थित रूप करिकैभी प्राप्त होवै नहीं ॥ तथा अन्य किसी पुरुषविषेस्थितज्ञानकं आपणा करिकैभी प्राप्त होवै नहीं किंतु सो शुद्धचित्तवालापुरुष आपही आपणे अंतःकरणविषेही ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ ३८ ॥ तहां जिस उपायकरिकै नियमपूर्वक आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै सोउपायपूर्वउक्तप्रणिपातसेवादिकउपायोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतसमीप है ॥ ऐसे अत्यंतसमीपउपायकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेंद्रियः ॥ ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ श्रद्धावान् । लभते । ज्ञानं । तत्परः । संयतेंद्रियः । ज्ञानं । लब्ध्वा । परां । शांतिम् । अचिरेण । अधिगच्छति ॥ ३९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! जो पुरुष श्रद्धावान् है तथागुरुकीउपासनाविषेतत्परहै तथाजितइंद्रियहै सोपुरुषही आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवै है ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइके शीघ्रही कैवल्यं मुक्तिकूं प्राप्त होवै है ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनोंविषे तथा वेदांतशास्त्रकेवचनोंविषे यह वचन यथार्थ अर्थकेहीकहणेहारे हैं याप्रकारकी प्रमाणरूपजाआस्तिक्यबुद्धि है ताकानाम श्रद्धा है । ऐसी श्रद्धावाला पुरुषही ताआत्मज्ञानकूं प्राप्त होवै है ॥ शंका—ऐसा श्रद्धावान् हुआभी जो पुरुष अत्यंत आलसी होवै है ताआलसीपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (तत्परः इति) हे अर्जुन!जो पुरुष श्रद्धावान् होवै है तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकाउपायभूत जे ब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकहैं तिनउपायोंविषे जो पुरुष आलस्यतैं रहित हुआ अत्यंत तत्पर होवै है सोपुरुषही ताआत्मज्ञानकूं प्राप्त होवै है ॥ तिस तत्परतातैंविना केवलश्रद्धावान् पुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका—हे भगवन् जो पुरुष श्रद्धवान्भी है तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकोंविषे तत्परभी है परंतु श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं आपणे आपणे शब्दादिकविषयोंतैं जिसने निवृत्तकऱ्यानहीं ऐसे अजितइंद्रियपुरुषकेभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (संयतेंद्रियः इति) हे अर्जुन जो पुरुष श्रद्धावान्भी है तथातत्परभी है परंतु जिसपुरुषनैं आपणेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तनहींकऱ्या सोअजितइंद्रियपुरुषभी ताआत्मज्ञानकं प्राप्त होवै नहीं किंतु जोपुरुष श्रद्धावान् होवै है तथातत्परहोवैहै तथाजितइंद्रियहोवैहै सोपुरुषही ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै और (तद्विद्धिप्रणिपातेन) याश्लोकविषे जेपूर्व प्रणिपात प्रश्न सेवा यहतीन उपाय आत्मज्ञानके कथनकरेथे ॥ तिनतीनों बाह्यउपायतौ दांभिक मायाकी पुरुषविषेभी संभवहोइसकैं हैं ॥ यातैं ते प्रणिपातादिकबाह्यउपाय नियमकरिकै ताआत्मज्ञाननकी प्राप्तिविषेहेतुहोवैं नहीं॥ और इस श्लोकविषे कथनकरेजे श्रद्धा तत्परता जितइंद्रियता यह अंतरतीनउपाय हैं तेयहतीनउपायतौ नियमपूर्वक ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिकरैं हैं ॥ ऐसेश्रद्धादिकतीनउपायों

दूसरे शरीरोंकाभी आरंभ करैं हैं ॥ तात्पर्य यह॥अनेक शरीरोंका आरंभ करणेहारा जो बलवान् प्रारब्ध कर्म है ताकानाम अधिकार है सो ऐसा अधिकार वसिष्ठादिक उपासक पुरुषोंकाही होवै है अन्यजीवोंका होवै नहीं ॥ सो ऐसा अधिकार जब पर्यंत रहे है ॥ तब पर्यंतही तिन वसिष्ठादिक अधिकारक पुरुषोंकी स्थिति होवै है यातें यह अर्थ सिद्ध भया जिन कर्मोंनें आपने फलका आरंभ नहीं कऱ्या है ते कर्म तौ आत्मज्ञानरूप अग्नि करिकै नाश होइजावें हैं और जिनकर्मोंनें आपणे फलका आरंभ कऱ्या है ते कर्म तौ भोगकी समाप्तिपर्यंत स्थित होवै हैं ॥ तिन प्रारब्धकर्मोंका भोग अस्मदादिक तत्त्ववेत्ताजीवोंविषे तौ एकही देहकरिकेहोवै है ।। और वसिष्ठादिक अधिकारक पुरुषोंविषे तौ अनेक देहों करिकै सो भोग होवै है इति ।।३७।। ❀ ॥ जिस कारण तैं इस आत्मज्ञानका ऐसा महान् प्रभाव है तिस कारण तैं इस आत्मज्ञानके समान दूसरा कोई पदार्थ है नहीं ।। इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविंदति ॥ ३८ ॥ न । हि । ज्ञानेन सदृशं । पवित्रम् । इह । विद्यते । तत् । स्वयं । योगसंसिद्धः । कालेन । आत्मनि । विंदति ॥ ३८ ॥ इति पद०॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं इसवेदलोकविषे ज्ञानके समान पवित्र नहीं विद्यमान है तिसज्ञानकूं महान्कालकरिकै कर्मयोगकरिकैशुद्धचित्तवालापुरुष आपही अंतःकरणविषे प्राप्तहोवै है ॥ ३८ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन! वेदोंविषे अथवा इस लोकव्यवहारविषे इस आत्मज्ञानकेसमान दूसरा कोई पदार्थ शुद्धिकरणेहारा है नहीं किंतु यह एक आत्मज्ञानही शुद्धिकरणेहारा है॥काहे तैं इस आत्मज्ञानतेभिन्न जितनेक दूसरेकर्म उपासनादिक उपाय हैं तेउपाय अज्ञानकीनिवृत्तिकरैं नहीं ॥ यातैं तेभिन्नउपाय अज्ञानरूपमूलसहित पापोंकीनिवृत्तिकरैं नहीं किंतु यत्किंचित् पापकी निवृत्तिकरैं हैं ॥ जैसे प्रायश्चित्त यत्किंचित पापकीनिवृत्तिकरै है ॥ और जबपर्यंत तिनसर्वपापोंका मूलकारणरूप अज्ञान विद्यमान है तबपर्यंत किसीप्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै एकपापके नाश हुएभी पुनः दूसरेपाप अवश्यकरिकै उत्पन्न होवैंगे ॥ और आत्मज्ञानकरिकै तौ अज्ञानके निवृत्तहुए मूलसहित सर्वपापोंकीनिवृत्ति होवै है ॥ यातैं इस आत्मज्ञानके समान दूसराकोई शुद्धिकरणेका उपाय है नहीं इति ॥ शंका— हे भगवन्! सो आत्माकाज्ञान इन सर्व प्राणियोंकूं शीघ्रही किसवास्ते नहीं उत्पन्न होता ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (तत्स्वयंयोगसंसिद्धः इति) हे अर्जुन ! जो अधिकारी पुरुष बहुत कालपर्यंत ता पूर्व उक्तकर्मयोग करिकै अंतःकरणकी शुद्धिपूर्वक आत्मज्ञानके योग्यताकूं प्राप्त हुआ है सोअधिकारी पुरुषही आपही ता आपणे अंतःकरणविषे तिस आत्मज्ञानकूं प्राप्त होवै है ॥ तिस अंतःकरणकी शुद्धिरूपयोग्यताकूं नहीं प्राप्त हुआ पुरुष ता आत्मज्ञानकूं

अग्निः । भस्मसात् । कुरुते । अर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि । भस्मसात् । कुरुते । तथा ॥ ३७ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जैसे प्रज्वलित अग्नि काष्ठोंकूं भस्मीभूत करैहै तैसै ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मीभूत करैहै ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसेअत्यंतप्रज्वलितअग्नि बहुतकाष्ठोंकूंभी भस्मीभूत करिदेवै है तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोआत्मज्ञानरूप अग्निहै सोज्ञानरूपअग्निभी प्रारब्धकर्मतैंभिन्न सर्वपुण्यपापकर्मोंकूं भस्मीभूत करिदेवै है अर्थात् सोज्ञानरूपअग्नि तिनपुण्यपापकर्मोंकेकारणभूतअज्ञानकूं नाशकरिकैतिनकर्मोंकूंभी नाशकरैहै इति ॥ तहांश्रुति (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरेइति ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंतैंभी अत्यंतउत्कृष्टजोपरमात्मादेवहै तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकी आत्माअनात्माकाअध्यासरूपहृदयग्रंथि नाश कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्मा देहादिकोंतैंभिन्नहै अथवा देहादिरूपहै तहां देहादिकोंतैंभिन्नहुआभी आत्मा ब्रह्मरूपहै अथवा ब्रह्मतैंभिन्नहै इसतेआदिलेके जितनेंकी आत्मविषयकसंशयहैं तेसर्वसंशयभीनाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तथा जिन पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदियाहै तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछोडिकै दूसरेसर्वकर्मनाश कूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्ने ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेहुए इसविद्वान्पुरुषके पूर्वसंचितकर्मोंका तौ नाशहोजावैहै औरजैसे जलविषेस्थितपद्मपत्रकोजलकास्पर्शहोवैनहीं तैसे आत्मज्ञानतैं उत्तरकेरहुएकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषको स्पर्शहीहोवैनही ॥ यहवार्त्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहैइति ॥ और जिसशरीरविषे इसविद्वान्पुरुषको आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहुई है तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्म हैं तिनप्रारब्धकर्मोंकातौ तिसशरीरकेनाशकालविषेही नाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये) ॥ अर्थयह ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनेकालपर्यंतही विलंबहै जितनेकालपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकेभोगपूर्वक इसशरीरकीनिवृत्ति नहींहुई ॥ इसशरीरकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकोप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नैंभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यन्ते ॥) अर्थयह ॥ संचितक्रियमाणकर्मोंतैंभिन्न पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंका भोगतैंनाशकरिकै यह विद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्त होवैहै इति ॥ और वसिष्ठसनकादिकजेअधिकारकपुरुषहैं तिनअधिकारकपुरुषोंकूंतो ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतरभी दूसरेशरीरोंकीप्राप्तिशास्त्रों विषेदेखणेमेंआवैहै ॥ यातैं (यावदधिकारमवस्थितिराधिकारकाणां) इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनैं याप्रकारकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ तिनवसिष्ठादिकोंकूं जिसशरीरविषे आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईहै तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेप्रारब्धकर्म हैं तेप्रारब्धकर्मही बिनवसिष्ठादिकोंके

योंकूं जिसआत्मज्ञानकरिकै तूं आपणेत्वंपदार्थआत्माविषे तथावास्तवतैं भेदतैंरहित सर्वकाअधिष्ठानभूत मैंतत्पदार्थपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगा ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नकरिकै कल्पितवस्तुका अभावहीहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंभगवान् वासुदेवकूं अपनाआत्मारूपजानिकै अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर ताअज्ञानकेकार्यरूप यहसर्वभूतप्राणीभीस्थितहोवैंगेनहींइति ॥ इहां किसीटीकाविषेतौ (आत्मनि मयि) यादोनोंपदोंका समानाधिकरणअंगीकारकरिकैआत्मारूपमैंपरमेश्वरविषे तिन सर्वभूतोंको तूं देखैगा इसप्रकारकाअर्थ कथनकऱ्याहै इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकैभी मैंअर्जुन भीमद्रोणादिकगुरुवोंके तथादुर्योधनादिकबांधवोंके वधजन्यपापतैं मुक्तनहींहोवौंगा । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानका परममाहात्म्य कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥ सर्वज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ अपि । चेत् । असि । पापेभ्यः । सर्वेभ्यः । पापकृत्तमः । सर्वं । ज्ञानप्लवेन । एव । वृजिनम् । संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जोकदाचित् तूं सर्व पापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारी भी होवे तौभी तूं तासर्व पापरूपसमुद्रकूं ज्ञानरूपनौकाकरिकै ही तरैगा ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । इहां अपि चेत् यहदोनोंपद असंभावितअर्थके अंगीकारके बोधकहैं अर्थात् सर्वपापकारीपुरुषों तैं ताअर्जुनविषे अत्यंतपापकारीपणा यद्यपि हैनहीं तथापि ज्ञानकेफलका कथनकरणेवास्ते ताअर्जुनविषे सोअत्यंतपापकारीपणा अंगीकारकरिकै श्रीभगवान् कहैं हैं ॥ हे अर्जुन ! जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषों तैं अत्यंतपापकारीभीहोवै तौभी तिस सर्वपापरूप समुद्रकूं तूं इसज्ञानरूपनौकाकरिकैही तरैगा ॥ ताआत्मज्ञानते भिन्नउपायकरिकै यहपापरूपसमुद्र तऱ्याजावै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तरतिशोकमात्मवित्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुषसर्वसंसाररूपशोककूंतरेहैइति ॥ इहां (वृजिनं) याशब्दकरिकै संसाररूपफलकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वधर्मअधर्म रूपकर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं मोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषकूं पापकर्मकीन्याईं सोपुण्यकर्मभी अनिष्टही है इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै पुण्यपापरूपसमुद्रकूं तरै है यहवार्त्ता पूर्वआपने कथनकरी ॥ तहां जैसेनौकाकरिकैसमुद्रकेतरेहुएभी तासमुद्रकानाशहोवैनहीं तैसेआत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै इसपुण्यपापरूपसमुद्रकेतरेहुएभी तापुण्यपापरूपकर्मकानाशहोवैगानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् आत्मज्ञानकरिकै तिनकर्मोंकेनाशविषे दूसरादृष्टांतकथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥ ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ॥ ३७ ॥ यथा । एधांसि समिद्धः ।

पूर्वक तुम्हारेदंडवत्प्रणामकरिकै तथासेवाकरिकै प्रसन्नहुए तेतत्त्वदर्शीज्ञानवान्गुरु तुम्हारेताई आत्मज्ञानका उपदेशकरैंगे ॥ जोआत्मज्ञान साक्षात् मोक्षरूप फलकीप्राप्तिकरणेहारा है ॥ इहांपदों केज्ञानविषे तथावाक्यों केज्ञानविषे तथानानाप्रकारकीयुक्तियों केज्ञानविषे जेपुरुष अत्यंतकुशलहोवैं हैं तिनोंकानाम ज्ञानी है ॥ और जिनपुरुषोंकूं संशयविपरीतभावनातैंरहित आत्माका साक्षात्कारहुआहै तिनोंकानाम तत्त्वदर्शी है ॥ ऐसे ज्ञानवान् तथातत्त्वदर्शीपुरुषों नैं उपदेशकऱ्या जोआत्मज्ञानहै सो आत्मज्ञानही मोक्षरूपफलकी प्राप्तिकरैहै ॥ तातत्त्वदर्शीपणेतैंरहित केवल पदवाक्ययुक्तिआदिकोंकेज्ञानविषेकुशल पुरुषनैं उपदेशकऱ्या हुआ सो आत्मज्ञान तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं अर्थात् श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेशकऱ्याहुआ आत्मज्ञानही तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैहैइति ॥ तहां (ज्ञानिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नै श्रोत्रियका कथनकऱ्याहै ॥ और (तत्त्वदर्शिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मनिष्ठका कथनकऱ्याहै इसीअर्थकूं साक्षात् श्रुतिभगवतीभी कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठमिति) ॥ अर्थ यह तिसपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारवास्ते यहअधिकारीपुरुष यथाशक्ति भेटाहस्तविषैलेके श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजावैइति ॥ इहां (ज्ञानिनःतत्त्वदर्शिनः) इस आचार्यकेवाचक दोनोंपदोंविषे जो बहुवचन भगवान्ने कथन कऱ्याहै सो आचार्यकी महानताकेबोधनकरणेवास्ते कथनकऱ्याहै कोई ताबहुवचनकरिकै बहुतआचार्य भगवान्कूं विवक्षितनहीं हैं काहेतैं श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठएकहीआचार्य तैं इसअधिकारी शिष्यकूं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्ति होइसकैहै ॥ तातत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्ते बहुतआचार्योंकेसमीपजानेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहीं है इति ॥ ३४ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् इसप्रकारके अत्यंतदृढउपायकरिकै ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नकियेहुएभी ताज्ञानकरिकै कौन फलप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानकेफलका वर्णनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव ॥ येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥ यत् । ज्ञात्वा । न । पुनः । मोहं । एवं । यास्यसि । पांडव । येन । भूतानि । अशेषेण । द्रक्ष्यसि । आत्मनि अथो । मयि ॥ ३५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जिसपूर्वउक्तज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं पुनः इसप्रकारके मोहकूं नहीं प्राप्तहोवैगा जिसकारणतैं जिस ज्ञानकरिकै इनसर्व भूतोंकूं आपणेआत्माविषे तथा मैंपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगा ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुने उपदेशकऱ्याजो आत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै इनबांधवों के वधादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसेभ्रमरूप शोककूं तूं पुनःकदाचित्भी नहींप्राप्तहोवैगा काहेतैं आत्माकेअज्ञानकरिकैजन्य जितनेक ब्रह्मातैंआदिलैके स्तंबपर्यंत पितापुत्रादिकभूतप्राणी हैं तिनसर्व भूतप्राणि

टीका । हे अर्जुन ! द्रव्यमययज्ञतैं आदिलेके जितनेकज्ञानतेशून्ययज्ञहैं तिनसर्वयज्ञों तैं सोज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं तेज्ञानतैंशून्यसर्वयज्ञतौ संसाररूपफल कीहीं प्राप्तिकरणेहारेहैं और सोज्ञानयज्ञतौ साक्षात् मोक्षरूपफलकीही प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ज्ञानादेवतुकैवल्यम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं ज्ञानतैंही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ अब ताज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठताविषे श्रीभगवान् हेतुकैहैंहैं (सर्वकर्माखिलमिति) हेअर्जुन अग्निहोत्र ज्योतिष्टोम सोमयज्ञ चयनयज्ञ इमतैं आदिलेके जितनेकश्रौतकर्म हैं ॥ तथा उपासनादिरूप जितनेकस्मार्तकर्म हैं तेसर्वकर्म निरवशेषहुए ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानविषेही समाप्तहोवैहैं अर्थात् तेसर्वश्रौतस्मार्तकर्म पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मज्ञानविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणा विविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥ धर्मेणपापमपनुदति) अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण वेदकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञकरिकै तथादानकरिकै तथा तपकरिकै इसआत्मादेवके जानणेकीइच्छा करैहैइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष धर्मकरिकै पापकूं निवृत्तकरैहैइति ॥ सर्वशुभकर्मोंका प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेही उपयोगहै ॥ इस अर्थकूं श्रीव्यासभगवान्नैं तथाभाष्यकारोंनैं (सर्वापेक्षायज्ञादिश्रुतेरश्ववत्) इससूत्रविषे विस्तारतैं कथनकर्‍याहै यातें यहज्ञानरूपयज्ञही सर्वयज्ञोंसे श्रेष्ठहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जिसआत्मज्ञानविषे सर्वशुभकर्मोंका परिअवसानहै तिसआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे अत्यंत समीपउपाय कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताउपायका कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ तत् । विद्धि । प्रणिपातेन । परिप्रश्नेन । सेवया । उपदेक्ष्यंति । ते । ज्ञानं । ज्ञानिनः । तत्त्वदर्शिनः॥३४॥इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! तिसआत्मज्ञानकूं तूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेआगेदंडवत्प्रणामकरिकै तथाप्रश्नकरिकै तथासेवाकरिकै प्राप्तहोउ ताकरिकैप्रसन्नहुए तेतत्त्वदर्शी ज्ञानीगुरु तुम्हारेतांई ज्ञानकूं उपदेशकरैंगे ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वशुभकर्मोंकाफलभूतजो आत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकूं तू अवश्यकरिकैप्राप्तहोउ ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्तै तू याप्रकारकाउपायकर ॥ तहां (आचार्यवान्पुरुषोवेद) याश्रुतिनैं ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेउपदेशतैंही ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरीहै यातैं तूंअर्जुनभी ब्रह्मवेत्ताआचार्यों केसमीपजाइकै प्रथम दंडवत्प्रणामकर ॥ तथा सर्वप्रकारतैं तिनआचार्योंकीअनुकूलताकासंपादकजोव्यापारविशेषहै ताकानाम सेवाहै ऐसीसेवाकूंकर ॥ तिसतेअनंतर हे भगवन् ! मैं कौनहूं तथामैं किसप्रकार बंधायमानहुआहूं तथाकिसउपायकरिकै मैं इससंसारतैं मुक्तहोवौंगा याप्रकारकाप्रश्न तिनगुरुवों केआगेकर ॥ इसप्रकार भक्तिश्रद्धा

विषे कोईभी यज्ञ जिसपुरुषकूंनहीं है ताकानाम अयज्ञहै ऐसे अयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोअयज्ञपुरुष सर्व शिष्टपुरुषोंकरिकैनिंद्यहोणेतैं दुःखीहीहै ॥ जबी तिसअयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवालामनुष्यलोकभी नहींप्राप्तहुआ ॥ तबी महान्पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोणेहारा स्वर्गादिरूपलोक तिसअयज्ञपुरुषकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैगा किंतु ताअयज्ञपुरुषकूं कोईभीलोक नहींप्राप्तहोवैगा इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! पूर्व आपने जोफलसहित यज्ञोंकाकथनकऱ्याहै सो केवल आपणीकल्पनाकरिकैहीकथनकऱ्याहै ॥ तिनफलसहितयज्ञोंविषे दूसराकोई प्रमाणहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् साक्षात् वेदही तिनयज्ञोंविषे प्रमाणहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे ॥ कर्मजान्विद्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥ एवम् । बहुविधाः । यज्ञाः । वितताः । ब्रह्मणः । मुखे । कर्मजान् । वि द्धि । तान् । सर्वान् । एवम् । ज्ञात्वा । विमोक्ष्यसे॥३२॥इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार बहुतप्रकारके यज्ञ वेदके मुखविषे विस्तृतहैं तिनँ सर्वयज्ञोंकूं तूंकर्मजन्यही जान इसप्रकार जानिकरिके तूं इससंसारतें मुक्तहोवैगा ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! (दैवमेवापरेयज्ञभ्) इसवचननतैंआदिलैके पूर्वकथनकरेजेद्वादशयज्ञहैं तेयज्ञ सर्ववैदिकश्रेयके साधनरूपहैं ॥ तेसर्वयज्ञ ऋगादिकवेदकेमुख विषे विस्तृतहैं ॥ अर्थात् ऋगादिक वेदद्वाराही तेसर्वयज्ञ जानेजांवेहैं ॥ केवल आपणीकल्पनाकरिकै हमने तेयज्ञ कथनकरेनहीं ॥ हे अर्जुन ! तिनसर्वयज्ञोंकूं तूं कायिकवाचिकमानसिककर्मोंतैंही उत्पन्नहुआजान ॥ तिनयज्ञोंकूं आत्मातैंउत्पन्नहुआ जानणानहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वव्यापारोंतैं रहितहै ॥ तिसकारणतैं तेयज्ञ मैंआत्माकेव्यापाररूपनहीं हैं ॥ किंतु मैंआत्मा सर्वव्यापारोंतैंरहित असंगउदासीनहूं ॥ इसप्रकार आत्मादेवकूं असंग उदासीन जानिकै तूंअर्जुन इससंसारबंधतैं मुक्तहोवैगा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवाननैं सर्वयज्ञोंका तुल्यही कथनकऱ्या ॥ यातैं कर्मयज्ञ ज्ञानयज्ञ यहदोनोंयज्ञ समानहीहोवैंगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनदोनोंयज्ञोंकीसमानताकेनिवृत्तकरणेवास्ते ज्ञानयज्ञकी श्रेष्ठताकूंकहैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप ॥ सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥३३॥ श्रेयान् । द्रव्यमयात् । यज्ञात् । ज्ञानयज्ञः । परंतप । सर्वं । कर्म । अखिलम् । पार्थ । ज्ञाने । परिसमाप्यते॥३३॥इतिपदच्छेदः॥हेअर्जुन ! द्रव्यमय यज्ञतैं ज्ञानयज्ञ अत्यंत श्रेष्ठहै जिसकारणतैं हे पार्थ ! सर्व निरवशेष कर्म ज्ञानविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवै है ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

भकहोवैहे ॥ और तिसरेचकपूरकदोनोंकीनअपेक्षाकरिकैही केवल कुंभकके‌अभ्यासकीदृढताकरिकै अनेकवार तिसतिसप्रयत्नकेवशतैं चतुर्थकुं भकहोवैहेइति ॥ अथवा इससूत्रका यह दूसराव्याख्यान करणा ॥ पूर्व कथनकरयाजो द्वादशअंगुलपर्यंत तथा चौबीस अंगुलपर्यंत तथा छत्तीसअंगुल पर्यंत प्राणकेजाणेका बाह्यदेशहै सोबाह्यदेशही बाह्यविषयशब्दकारिकैग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषयशब्दकारिकैतौ हृदयनाभिचक्रआदिकोंका ग्रहणकरणा ॥ तिनदोनोंविषयोंकूं सूक्ष्मदृष्टिसैंनिश्चयकरिकै जोस्तंभरूप गतिकाविच्छेदहै सो चतुर्थ प्राणायाम कह्याजावैहै ॥ और तीसराकुंभकनामा प्राणायामतौ बाह्यवि षय अभ्यंतरविषय यादोनोंविषयोंके निश्चयतैंविनाही शीघ्रही होवै है ॥ इतनीही तीसरे कुंभकनामा प्राणायामविषे तथाचतुर्थ कुंभकनामा प्राणायामविषे विशेष ताहै इति ॥ यहही च्यारिप्रकारका प्राणायाम श्रीभगवानूनैं (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इत्यादिक सार्धश्लोककरिकै कथनकरयाहै इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहां (दैव मेवापरेयज्ञम्) इसतैंआदिलेके साढेपंचश्लोकोंकरिकै द्वादशयज्ञ कथनकरे ॥ अब तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथा तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेकर णेहारेपुरुषोंकूं जोफलप्राप्तहोवैहे ताफलकूं श्रीभगवान कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ सर्वे । अपि । एते । यज्ञविदः । यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजः । यांति । ब्रह्म । सनातनम् । न । अयम् । लोकः । अस्ति । अयज्ञस्य । कुतः । अन्यः । कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः॥हेअर्जुन ! तिनयज्ञकूंकरणेहारे तथातिन यज्ञोकरिकैनाशहुएहैंकल्मषजिनोंके तथातिनयज्ञोंकेउत्तरकालविषेअमृतरूपअन्नकूंभोजनकरणेहारे यह सर्वही अधिकारीजननि त्यं ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहे हेअर्जुन ! तिनयज्ञोंतैंरहितपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं प्राप्तहै तौस्वर्गादिलोक कहां तैंहोवैं॥३१॥इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकूं जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैं हैं अथवा तिनद्वादशयज्ञोंकूं जे प्राप्तहोवैं हैं अर्थात् तिनयज्ञोंकूं जेपुरुष श्रद्धापूर्व ककरैं हैं तिन्होंकानाम यज्ञविद्है ॥ ऐसे तिनयज्ञोंकेजानणेहारे तथा तिनयज्ञोकेकरणेहारे जेपुरुषहैं तथा तिनपूर्वउक्तयज्ञोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहुएहैं पापकर्म रूपकल्मषजिन्होंके तथा तिनयज्ञोंकूकरिकै बाकीरहेहुएकालविषे अमृतरूपअन्नकूं भोजनकरणेहारेजेपुरुषहैं तेसर्वही अधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा नित्यब्रह्मकूंही प्राप्तहोवै हैं अर्थात् इसजन्ममरणादिरूपसंसारतैं तेपुरुष मुक्तहोवैं हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै तिनयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब तिनयज्ञोंकेनहींकरणेहारेपुरुषोंकूं दोषकीप्राप्ति कथनकरैं हैं (नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यइति) हे अर्जुन ! पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकेमध्य

गतिरूपजोश्वासहै सोश्वासतौ हृदयदेशतैंनिकसिकै नासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख द्वादशअंगुलपर्यंतदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ और अपानकीगतिरूप जोप्रश्वासहै सोप्रश्वासतौ ताश्वासकीसमाप्तिदेशतैं पुनः उलटिकरिकै ताहृदयदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ यहसर्वमनुष्योंके प्राणअपानकी स्वाभाविकगति होवैहै ॥ और अभ्यासकरिकेतौ सोप्राणवायु यथाक्रमतैं नाभिदेशतैंनिकसिकै अथवा आधारदेशतैंनिकसिकै तानासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख चौबीसअंगुलपर्यंत देशविषे अथवा छत्तीसअंगुलपर्यंतदेशविषे जाइकै समाप्तहोवैहै ॥ पुनःतिससमाप्तिदेशतैंही उलटिकरिकै तानासिकाद्वारातानाभिदेशविषे अथवा आधारदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहां बाह्यदेशविषे तावायुकासंबंधतौ वायुतैंरहितदेशविषे आपणीनासिकाकेसन्मुख किंसीइषीकाकेसूक्ष्मतूलकूंराखिकै तातूलकीचलनरूप क्रियातैं अनुमान कऱ्याजावैहै ॥ और शरीरकेअंतरदेशविषे ताप्राणवायुकासंबंधतौ पिपीलिकाकेस्पर्शकेसमानस्पर्शकरिकै अनुमान कऱ्याजावैहै ॥ सोयह देशपरीक्षाकहीजावैहैइति ॥ और नेत्रोंकीजानिमेषक्रियाहै तानिमेषक्रियावच्छिन्नकालकाजोचतुर्थभागहै ताकानाम क्षणहै ॥ तिनक्षणोंके इयत्ताकानिश्चय करणा याकानाम कालपरीक्षाहैइति ॥ और आपणेजानुमंडलकूं आपणेहस्तसैं प्रदक्षिणाकीन्याई तीनवारस्पर्शकरिकै छोटिकामुद्राकरणी ताछोटिकामुद्रा अवच्छिन्नजोकालहै ताकानाम मात्राहै ॥ तिनछत्तीसमात्रावोंकरिकै जोप्रथम उद्घातहै सो मंदकह्याजावैहै ।। और सोईहीउद्घात पूर्वतैंद्विगुणकऱ्याहुआ द्वितीय मध्यकह्याजावैहै ।। और सोईहीउद्घात त्रिगुणकऱ्याहुआ तृतीय तीव्रकह्याजावैहै ।। तहां नाभिदेशतैंउठाइकै विरेचनकरेहुए प्राणवायुका जोशिर विषेअभिहननहै ताकानाम उद्घातहै ।। सोयह संख्यापरीक्षाकहीजावैहै ।। अथवा प्रणवमंत्रकेजपकीआवृत्तिकेभेदकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ।। अथवा श्वासप्रदेशोंकीगणनाकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ इसप्रकार काल संख्या यादोनोंका यत्किंचित्भेदअंगीकारकरिकै भिन्नभिन्न कथनकऱ्याहै ।। यद्यपि कुंभकविषे पूरकरेचककीन्याई देशव्याप्ति प्रतीतहोवैनहीं तथापि कालव्याप्ति तथासंख्याव्याप्ति ताकुंभकविषेभी जानीजावैहै ।। सोयहतीनप्रकारका प्राणायाम तीनदिनविषेअभ्यासकऱ्याहुआ दिवस पक्षमास इत्यादिकक्रमकरिकै अधिकदेशकालविषेव्यापकहोणेतै दीर्घकह्याजावैहै ।। तथा परमनै पुण्यसमाधिकरिकै गम्यहोणेतैं सूक्ष्मकह्याजावैहै ॥ इतनेकरिकै पूरक रेचक कुंभक यहतीनप्रकारकाप्राणायाम कथनकऱ्या ॥ अब फलरूपचतुर्थ प्राणायामका निरूपणकरैहैं ॥ तहांपतंजलिसूत्र । (बाह्याभ्यंतरविषयाक्षेपीचतुर्थःइति) अर्थयह ।। बाह्यविषयजोश्वासहै सो रेचककह्या जावैहै ।। और अंतरविषयजोप्रश्वासहै सो पूरक कह्याजावैहै ।। अथवा बाह्यविषयशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ।। और अभ्यंतरविषय शब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरना तारेचकपूरकदोनोंकीअपेक्षाकरिकै एकहीबलवान् विधारकप्रयत्नकेवशतैं बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकातृतीयकुं

अपानके प्रश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ औरकुंभकविषेतो तिनदोनोंगतियोंका निरोधहोवैहै ।। इसप्रकार क्रमकरिकै तथाएकहीकालविषे ताप्राणअपानके श्वास प्रश्वास रूपगतिकूं रोकिकरिकै त्रिविधप्राणायामपरायणहुए तथाआहारनियमादिक योगकेसाधनोंकरिकैविशिष्टहुए केईकअधिकारीजन बाह्यअंतरकुंभककेअभ्यास करिकै निग्रहकरेहुएप्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियरूपप्राणोंकूं होमकरैं हैं ॥ अर्थात् चतुर्थकुंभकके अभ्यासकरिकै तिनइंद्रियोंकूं निगृहीतप्राणोंविषे लयकरैं हैं इति ॥ यह सर्व अर्थ भगवान्पतंजलिने योगसूत्रोंविषे संक्षेपकरिकै तथाविस्तारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहां संक्षेपसूत्र । (तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदलक्षणःप्राणायामइति) ॥ अर्थयह ॥ तिसआसनकेस्थिरहुए प्राणायाम करणेकूंयोग्यहै ॥ कैसाहैसोप्राणायाम ॥ श्वासप्रश्वासकीगतिका निरोधरूपहै अर्थात् प्राण अपान यादोनोंके यथाक्रमतैं धर्मरूपजे श्वास प्रश्वास यहदोनों हैं ताश्वासप्रश्वासदोनोंकी पुरुषप्रयत्नतैंविनाही जा स्वाभाविक चलनरूपगतिहै तागतिका क्रमकरिकै तथाएकहीकालविषे जोपुरुषयत्नविशेषकरिकै निरोधहै सोनिरोधहैस्वरूपजिसका ताकूं प्राणायामकहैं हैं इति ॥ इससंक्षिप्तअर्थकूं अब विस्तारतैंकथनकरैं हैं तहांसूत्र ॥ (बाह्याभ्यंतरस्तंभवृत्तिर्देशकालसंख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घःसूक्ष्मइति) अर्थयह ॥ सोप्राणायाम बाह्यवृत्ति आभ्यंतरवृत्ति स्तंभवृत्ति तुरीय याभेदकरिकैच्यारिप्रकारकाहोवै है ॥ तहां बाह्यगतिकानिरोधरूपहोणेतैं पूरक बाह्यवृत्ति कह्याजावै है ।। और अंतर्गतिकानिरोधरूप होणेतैं रेचक अंतरवृत्ति कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यवृत्तिशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा । और आभ्यंतरवृत्तिशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ।। और एकहीकालविषेतिनदोनोंगतियोंकाजोनिरोधहै ताकानामस्तंभहै ॥ तास्तंभरूपहोणेतैं कुंभक स्तंभवृत्तिकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जहां श्वास प्रश्वास दोनोंका एकही विधारकप्रयत्नतैं अभावहोवै है ॥ पूर्वकीन्याईं पूरणकेप्रयत्नकाभीविधारणहोवैनहीं तथारेचनकेप्रयत्नकाभी विधारणहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे अग्निकरिकैतप्तपाषाणऊपरिपायाहुआजल परिशोषणकूंप्राप्तहुआ सर्वओरतैंसंकोचकूंप्राप्तहोवै है तैसे सर्वदा चलनस्वभाववाला यहप्राणवायुभी बलवान्विधारकप्रयत्नकरिकै ताचलनक्रियातैंरहितहुआ शरीरविषेही सूक्ष्महुआस्थितहोवै है ॥ तिसकालविषे सोसूक्ष्मप्राणवायु पूरणकूंभी प्राप्तहोवैनहीं यातैं पूरकभीहोवैनहीं ॥ तथा सोसूक्ष्मप्राणवायु रेचनकूंभीप्राप्तहोवैनहीं यातैं रेचकभीकह्याजावैनहीं ।। किंतु परिशेषतैं सो निरुद्धहुआ सूक्ष्मप्राणवायु कुंभकही कह्याजावैहैइति ॥ सोयह पूरक रेचक कुंभक तीनप्रकारकाप्राणायाम देशकरिकै तथाकालकरिकै तथासंख्याकरिकै परीक्षाकऱ्याहुआ सूक्ष्मसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे घनीभूततूलकापिंड प्रसारणकऱ्याहुआ विरलताकरिकैदीर्घहोवै है तथासूक्ष्महोवै है ।। तैसे यहप्राणवायुभी देशकालसंख्याकीअधिकताकरिकै अभ्यासकऱ्याहुआ दीर्घहोवै है तथा दुर्लक्ष्यताकरिकै सूक्ष्मभीहोवै है ॥ सोप्रकार अबदिखावैं हैं ॥ तहां प्राणकी

करिकै तथा वस्तुकेविचारकरिकै कामकीनिवृत्तिहोवैहै । और अस्तेयअपरिग्रहरूप संतोषकरिकै लोभकीनिवृत्तिहोवैहै । और सत्यकरिकै तथायथार्थज्ञान रूपविवेककरिकै मोहकीनिवृत्तिहोवैहै । इसप्रकार तिनकामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर तिनकामक्रोधादिकोंके कार्यरूप सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै । तिन आहिंसादिकोंके दूसरेभीअनेकफल सकामपुरुषोंवास्तै योगशास्त्रविषे कथनकरेहैं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अब प्राणायामरूपयज्ञकूं सार्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरैहैं ।

(मू. श्लो.) अपानेजुह्वतिप्राणंप्राणेपानंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरुद्ध्वाप्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति॥अपाने । जुह्वति। प्राणम् । प्राणे । अपानम्।तथा।अपरे । प्राणापानगती।रुद्ध्वा । प्राणायामपरायणाः।अपरे । नियताहाराः। प्राणान । प्राणेषु । जुह्वति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! अन्यअधिकारीपुरुषतौ अपानविषे प्राणकूं होमकरैहैं तथा प्राण विषेअपानकूं होमकरैहैं और नियतआहारवाले दूसरेअधिकारीजनतौ प्राणअपानकीगतिकूं रोकिकरिकै प्राणायामपरायणहुए प्राणोंविषे ज्ञानकर्म इंद्रियोंकूं होमकरैहैं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! केईकअधिकारीपुरुषतौ अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिविषे प्राणकीश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरैहैं अर्थात् बाह्यवायुका शरीरके भीतर प्रवेशकरिकै पूरकनामाप्राणायामकूंकरैहैं । तथा ते अधिकारीपुरुष प्राणकीश्वासरूपवृत्तिविषे अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरैहैं । अर्थात् शरीरकेभीतरलेवायुकूं बाह्यदेशविषेनिर्गमनकरिकै रेचकनामाप्राणायामकूंकरैहैं । इहां पूरक रेचक यादोप्रकारकेप्राणायामकेकथनकरिकै श्रीभगवानूनैं दोप्रकारकेकुंभककाभी अर्थतैंहीकथनकऱ्या । जिसकारणतैं तापूरकरेचकतैंविना सोदोप्रकारकाकुंभक सिद्धहोवैनहीं । तहां अंतर कुंभक बाह्यकुंभक याभेदकरिकै सोकुंभक दोप्रकारकाहोवैहै तहां यथाशक्तिपरिमाण बाह्यवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर पूर्णकरिकै तिसतेअनंतर जोश्वासप्रश्वासका निरोधकऱ्याजावैहै सोअंतरकुंभक कह्याजावैहै । और यथाशक्तिपरिमाणशरीरकेअंतरलेवायुका तानासिकाद्वारा बाह्यपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर जोश्वासप्रश्वासका निरोध कऱ्याजावैहै सो बाह्यकुंभक कह्याजावैहइति । अब पूर्वकथनकरे हुए पूरक रेचक कुंभक यातीनप्रकारकेप्राणायामकेअनुवादपूर्वक चतुर्थकुंभककूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं (प्राणापानगतीरुद्ध्वाइति) हे अर्जुन ! मुखनासिकाद्वारा शरीरकेअंतरलेवायुका जो बाह्यनिर्गमनहै ताकानाम श्वासहै सोश्वासतौ प्राणकीगतिहै । और बाह्यनिकसेहुएवायुका जो तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरप्रवेशहै ताकानाम प्रश्वासहै सोप्रश्वास अपानकीगतिहै तहां पूरकविषेतो प्राणकेश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै और रेचकविषे

दिकपंचयमोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम तिनअहिंसादिकोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकै अवच्छिन्नता निरूपणकरैं हैं। तहां एकमृगकूंछोडिकै दूसरे गौअश्वादिकप्राणियोंकूं मैं कदाचित्भी हनन नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जोतिनगौअश्वादिकप्राणियोंकीअहिंसाहै सा अहिंसा जातिअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतीर्थमात्रविषे किसीप्राणीकीहिंसानहींकरणीहै साअहिंसा देशावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीविषे तथाअन्यकिसीपवित्रदिनविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतिन एकादशी आदिकोंविषे किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणी है साअहिंसा कालावच्छिन्न कहीजावै है। और देवताब्राह्मणोंकेप्रयोजनतैंविना अथवा युद्धतैंविना मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो तिसप्रयोजनतैंविना किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणी है साअहिंसा समयावच्छिन्न कहीजावै है। इहां समयनाम प्रयोजन विशेषकाहैइति। इसप्रकार विवाहादिकप्रयोजनतैंविना मैं मिथ्याभाषण नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोविवाहादिप्रयोजनतैंविना मिथ्याभाषणकापारित्यागरूप सत्यहै सोसत्य समयावच्छिन्न कह्याजावैहै। इसप्रकार आपत्तिकालतैंविना क्षुधाकेनिवर्तकपदार्थतैंअतिरिक्तपदार्थकी मैं चोरीनहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जो चोरीतैंनिवृत्तिरूप अस्तेयहै सोअस्तेय कालावच्छिन्न कह्याजावै है। इसप्रकार ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे मैं आपणीस्त्रीविषे गमननहींकरौंगा। याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो ऋतुकालतैंभिन्नकालविषेमैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्य है सोब्रह्मचर्य कालावच्छिन्न कह्याजावै है। इसप्रकार गुरुदेवता आदिकोंकेप्रयोजनतैंविना मैं अधिकपदार्थोंकापरिग्रह नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोअधिकपदार्थोंके परिग्रहतैंनिवृत्तिरूप अपरिग्रहहै सोअपरिग्रह समयावच्छिन्न कह्याजावैहै। इसरीतिसैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचोंयमोंविषे यथायोग्य जातिअवच्छिन्नता तथादेशावच्छिन्नता तथाकालावच्छिन्नता तथासमयावच्छिन्नता जानिलेणी। तहां जाति देश काल समय याच्यारोंअवच्छेदकोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम सर्वजातियोंविषे तथा सर्वदेशोंविषे तथा सर्वकालोंविषे तथासर्वप्रयोजनों विषे होवै है। अर्थात् किसीदेशविषे किसीकालविषे किसीप्रयोजनवास्तै किसीभीजीवकी मैं हिंसाकरौंगानहीं तथामिथ्याभाषण तथाचोरी तथामैथुन तथापरिग्रह करौंगानहीं। याप्रकारकेसंकल्पपूर्वक जबी तेअहिंसादिकपंचयम निरवच्छिन्न सिद्धहोवैं हैं। तिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम महाव्रत यानामकरिकै कहेजावैं हैं इसप्रकार काष्ठमौनादिकव्रतभीजानिलेणे। इसप्रकार अहिंसादिकव्रतकी दृढताकेहुए नरककेद्वारभूत काम क्रोध लोभ मोह याच्यारोंकीनिवृत्तिहोवैहै। तहां अहिंसाकरिकै तथा क्षमाकरिकै क्रोधकीनिवृत्तिहोवै है। और ब्रह्मचर्य

उपेक्षा इत्यादिकगुणोंकरिकै चित्तके मदमानादिरूपमलकीनिवृत्तिकरणी यह अंतरशौच कह्याजावे है ॥ तहां सुखीप्राणियोंविषे मित्रभावकरणा याकानाम मैत्री है ॥ और दुःखीप्राणियोंऊपरि कृपाकरणी याकानाम करुणाहै ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहोणा याकानाम मुदिताहै ॥ और पापीदुष्टजनोंके संगका परित्यागकरणा याकानाम उपेक्षाहै ॥ १ ॥ और आपणेसमीपविद्यमान जेभोगकेसाधनहैं ॥ तिन्हों तैंअधिक भोगसाधनोंकेनहींसंपादनकरणेकीइच्छा रूप जोचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम संतोषहै ॥ २ ॥ और क्षुधातृषा शीतउष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंका सहनकरणा तथाकाष्ठमौन आकारमौन इत्यादिकजेव्रतहैं इनसर्वोंकानाम तपहै ॥ तहां हस्तादिकअंगोंकीचेष्टाकरिकैभी आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरणा याकानाम काष्ठमौनहै ॥ और तिनहस्तादिक अंगोंकीचेष्टाकरिकैतौ आपणेअभिप्रायकूं प्रगटकरणा परंतु मुखसेवचनउच्चारणकरणानहीं याकानाम आकारमौनहै ॥ ३ ॥ और मोक्षकेप्रतिपादक वेदांत शास्त्रका जोअध्ययनहै ॥ अथवाप्रणवमंत्रकाजोजपहै याकानाम स्वाध्यायहै ॥ ४ ॥ और तिसतिसफलकीइच्छातैंरहितहोइकै सर्वकर्मोंका परमगुरुरूपईश्वरविषे जोअर्पणकरणाहै याकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ ५ ॥ इतिपंचनियमनिरूपणम् ॥ यहयोगशास्त्रकीरीतिसैं पंचप्रकारके यमनियमका निरूपणकर्याहै ॥ औरपुराणोंविषेतौ स्तेयकर्मनिवृत्ति १ करुणा २ आर्जव ३ शांति ४ शौच ५ धृति६ मिताहार७सत्यभाषण८जीवाहिंसन ९ ब्रह्मचर्य १० इसभेदकरिकै दशप्रकारकेयमकथन करे हैं ॥ और आस्तिकत्व १ हर्ष २ तप ३ सुरार्चन ४ दान ५ लज्जा ६ सद्ज्ञान ७ होम ८ सत्श्रवण ९ जप १० याभेदकरिकै दशप्रकारकेनियम कथन करे हैं ॥ तेअधिकपंचयमनियम पूर्वउक्तपंचयमनियमोंकेअंतर्भूतही हैं ॥ इसप्रकारके यमनियमादिकअष्टअंगोंकेअभ्यासपरायण जेअधिकारीपुरुषहैं तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावैं हैं ॥ ३ ॥ और जेअधिकारीपुरुष विधिपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरिकै ऋगादिकवेदोंका अभ्यासकरैं हैं तेअधिकारीपुरुष स्वाध्याययज्ञा कहेजावैं हैं अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपयज्ञकूंही करैं हैं ॥ ४ ॥ और जेअधिकारीपुरुष अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै वेदकेअर्थकानिश्चयकरै हैं तेअधिकारीपुरुष ज्ञानयज्ञा कहेजावैं हैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदकेअर्थकानिश्चयरूपयज्ञकूंहीकरैं हैं ॥ ५ ॥ अब यज्ञांतरका कथनकरै हैं (यतयःसंशितव्रताःइति) हे अर्जुन ! केईक यत्नशील अधिकारीपुरुषतौ संशितव्रतरूपयज्ञकूंहीकरैं हैं ॥ तहां भलीप्रकारतैंअत्यंतदृढहुएहैं अहिंसादिकव्रत जिन्होंके तेअधिकारीपुरुष संशितव्रता कहेजावैं हैं ॥ यहवार्त्ता भगवान्पतंजलिनैंभी योगशास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ (जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमामहाव्रताःइति ॥) अर्थयह ॥ जेपूर्व अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचयम कथनकरेथे तेअहिंसादिक पंच यमही जाति देश काल समय इनच्यारोंकरिकैअनवच्छिन्नहोणेतैं अत्यंतदृढभूमिकारूपहुए महाव्रत याशब्दकरिकैकहेजावैं हैंइति ॥ अब तिनअहिंसा

तर दियाजावैहै सोदानभी तिसश्रौतकर्मकेअंतर्भूतही है इति ॥ १ ॥ और कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै सोतपही हैयज्ञरूपजिन्होंका तेअधिकारीपुरुष तपोयज्ञा कहेजावैं हैं अर्थात् केईकतपस्वीपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपरूपयज्ञकूंहीकरैं हैं ॥ २ ॥ और चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूप जोअष्टांगयोगहै सो अष्टांगयोग ही है यज्ञरूपजिन्होंका तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावैं हैं । अर्थात केईकअधिकारीपुरुष अष्टांगयोगरूपयज्ञकूंहीकरैं हैं । तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगकेअष्टअंगकहेजावैं हैं । तहां प्रत्याहारकास्वरूपतौ (श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये) इसवचनविषे पूर्वक थनकरिआये हैं । और धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकास्वरूपतौ (आत्मसंयमयोगाग्नौ) इसवचनविषे पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ और प्राणायामकास्वरूपतौ (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इसअगलेश्लोकविषे कथनकरैंगे । यातैं अब यम नियम आसन यातीनोंकास्वरूप कथनकरैं हैं । तहां अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यहपंचप्रकारका यमहोवैहै । तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यहपंचप्रकारका नियमहोवैहै । और आसनतौ पद्मक स्वस्तिक भद्र इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकाहोवै है ॥ तहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित जोकिसीप्राणीकावधकरणाहै ताकानाम हिंसाहै । इहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित इतनेकहणेकरिकै (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिकशास्त्रनैं विधानकऱ्या जो यज्ञविषेपशुकावधहै ताके विषे हिंसापणेकी निवृत्तिकरी साहिंसाभी कृत कारित अनुमोदितयाभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवै है ॥ तहां जाहिंसा इसपुरुषनैं आपेही करीती है ताहिंसाकूं कृत कहैं हैं ॥ और जाहिंसा इसपुरुषनैं किसी अन्यद्वारा कराईती है ताहिंसाकूं कारित कहैं हैं और इसपुरुषनैं जिसहिंसाकी प्रशंसा करीती है ताहिंसाकूं अनुमोदित कहैं हैं ॥ इसप्रकारकी हिंसातैं निवृत्तिरूप जोउपरामताहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ १ ॥ और अयथार्थभाषणकरणा तथा नहींहननकरणेयोग्यप्रा णीकीहिंसाकेअनुकूलसत्यभाषणकरणा तादोनोंकानाममिथ्याभाषणहै ॥ तादोनोंप्रकारके मिथ्याभाषणतैंनिवृत्तिरूपजाउपरामताहै ताकानाम सत्यहै ॥ २ ॥ और शास्त्रकरिकैनहींप्रतिपादितमार्गकरिकै जोपराएद्रव्यका स्वीकारकरणाहै याकानाम स्तेयहै तास्तेयतैं निवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अस्तेयहै ॥ ३ ॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोस्त्रीपुरुषका संबंधरूप मैथुनहै तामैथुनतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ ४ ॥ और शास्त्रनिषि द्धमार्गकरिकै शरीरयात्राकेनिर्वाहकभोगकेसाधनों तैं जोअधिकभोगसाधनोंकास्वीकारकरणाहै याकानाम परिग्रहहै तापरिग्रहतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अपरिग्रहहै ॥ ५ ॥ इतिपंचयमनिरूपणम् ॥ अब पंचप्रकारकेनियमकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ बाह्यशौचहोवै है और दूसरा अंतरशौचहोवै है तहांमृत्तिकाजलादिकोंकरिकै शरीरका प्रक्षालनकरणा तथा हित मित मेध्य अन्नादिकोंकोभोजनकरणा यह बाह्यशौच कह्याजावै है ॥ और मैत्री करुणा मुदिता

तावृत्तिकीउपरामतावासतै जोपुरुषकाप्रयत्नहै तापुरुषप्रयत्नकाजो पुनःपुनःसंपादनरूप अभ्यासहै ताअभ्यासकरिकैजन्य संप्रज्ञातसमाधितैंविलक्षण असंप्रज्ञात समाधिहोवैहैइति ॥ इसप्रकारका निरोधसमाधिरूप जोआत्मसंयमयोगहै सोईही अग्निरूपहै ॥ कैसाहैसो आत्मसंयमयोगरूपअग्नि ज्ञानकरिकैदीपितहै अर्थात् वेदांतवाक्यकरिकैजन्यजो ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारहै तासाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनाशद्वाराअत्यंतउज्ज्वलितहै ॥ ऐसे ज्ञानकरिकैदीपित आत्मसंयम योगाग्निरूप बाधपूर्वकसमाधिविषे अन्यकेईविद्वान्पुरुष समष्टिलिंगशरीरकूं होमकरैंहैं ॥ अर्थात् तासमाधिविषे तालिंगशरीरकूं प्रविलापनकरैंहैंइति ॥ इहां (सर्वाणि आत्मज्ञानदीपिते) यातीनविशेषणोंकेकहणेकरिकै तथा (अग्नौ) याएकवचनकेकहणेकरिकै पूर्वकथनकरेहुएयज्ञतैं इसयज्ञविषेविलक्षणता सूचनकरी ॥ यातैं इहांपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (दैवमेवापरेयज्ञम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं पंचयज्ञोंकूंकथनकऱ्या ॥ अब इसएकहीश्लोककरिकै श्रीभगवान् षट्यज्ञोंकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे॥स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःसंशितव्रताः ॥२८॥ द्रव्ययज्ञाः।तपोयज्ञाः।योगयज्ञाः। तथा। अपरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः । च। यतयः। संशितव्रताः ॥२८॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन! केईक अधिकारीपुरुष द्रव्यकेत्याग रूपयज्ञकूंकरैं हैं तथाकेईकअधिकारीपुरुष तपरूपयज्ञकूं करैं हैं तथा केईकअधिकारीपुरुष योगरूपयज्ञकूंकरैंहैं तथा केईकअधिकारी पुरुष वेदाभ्यास रूपयज्ञकूंतथाज्ञानरूपयज्ञकूंकरैंहैं तथाकेईक यत्नशीलपुरुष अत्यंतदृढव्रतरूपयज्ञकूंकरैं हैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रकीविधिप्रमाण जोद्रव्यकात्यागहै सोद्रव्यकात्यागहीहै यज्ञरूपजिन्होंका तेअधिकारीपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैंहैं अर्थात् पूर्त्तदत्त नामा स्मार्त्तकर्मकूंकरणेहारेपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैं हैं तहां पूर्त्तदत्त यादोनोंकर्मोंकास्वरूप स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (वापीकूपतडागादिदेवता यतनानिच ॥ अन्नप्रदानमारामः पूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ शरणागतसंत्राणंभूतानांचाप्यहिंसनम् ॥ बहिर्वेदिचयद्दानंदत्तमित्यभिधीयते ॥) अर्थयह ॥ बावडी बनावणी तथाकूप बनावणा तथातलाव बनावणा तथाविष्णुशिवादिकदेवतावोंकेमंदिर बनावणे तथाक्षुधातुरप्राणियोंकूं अन्नप्रदानकरणा तथालोकोंकेनिवा सकरणेवासतै धर्मशाला बगीचा बनावणा ॥ इत्यादिकसर्वकर्म पूर्त्त यानामकरिकैकहेजावैंहैं इति ॥ और शरणागतप्राणियोंकीरक्षाकरणी तथा किसीभी भूतप्राणीकीहिंसानहींकरणी तथावेदीतैंबाह्यजोदानहै इत्यादिकसर्वकर्म दत्त यानामकरिकैकहेजावैंहैं इति ॥ इसप्रकारके पूर्त्तदत्त नामा स्मार्त्तकर्मोंकूंकरणेहारे पुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैंहैं ॥ और इष्टनामा जोश्रौतकर्म है ताश्रौतकर्मकूंतौ (दैवमेवापरेयज्ञम्) यावचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ और जोदान वेदीकेअं

इंद्रिय कहेजावैं हैं ॥ तिनबाह्यअंतर सर्वइंद्रियोंके जितनेक स्थूलरूप तथासंस्काररूप कर्म हैं तहां शब्दकाश्रवण श्रोत्रइंद्रियका कर्म है ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वक् इंद्रियका कर्महै ॥ और रूपकादर्शन चक्षुइंद्रियका कर्महै ॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियका कर्महै ॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियका कर्महै ॥ और वचनकाउच्चारण वाक्इंद्रियका कर्म है ॥ और वस्तुकाग्रहण पाणिइंद्रियका कर्म है ॥ और गमनआगमन पादइंद्रियका कर्म है॥ और विषयानंद उपस्थइंद्रियका कर्म है ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियका कर्म है ॥ और संकल्प मनका कर्महै ॥ और निश्चय बुद्धिका कर्महै इति ॥ इसप्रकार प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जितनेककर्महैं तहां बहिर्गमन प्राणका कर्महै ॥ और अधोगमन अपानका कर्म है ॥ और हस्तपादादिकअंगोंका आकुंचनप्रसारणआदिक व्यानका कर्महै ॥ और भोजनकरेहुएअन्नजलकासमानकरणा समानका कर्महै ॥ और ऊर्ध्वगमन उदानका कर्म है ॥ इतनेकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण दोमनबुद्धि यासप्तदशतत्त्वोंकासमुदायरूपलिंगशरीर कथनकऱ्या सोसूक्ष्मशरीरभी इहां सूक्ष्मभूतोंकासमष्टिरूप हिरण्यगर्भही विवक्षितहै ॥ इसी अर्थकेजनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं तिनइंद्रियोंकेकर्मोंका तथाप्राणोंकेकर्मोंका (सर्वाणि) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेसप्तदशतत्त्वरूपलिंगशरीरकूं अन्यकेई विद्वान्पुरुष आत्मसंयमयोगाग्निविषे होमकरैंहैं ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहाराजोधारणाध्यान संप्रज्ञातसमाधिरूप संयमहै तासंयमकेपरिपाकहुएतैं सिद्धभयाजो निरोधसमाधिरूपयोगहै ताकानाम आत्मसंयमयोगहै ॥ इसीनिरोधसमाधिरूपयोगकूं पतंजलिभगवान्भी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहां सूत्र ॥ (व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौनिरोधक्षणचित्तान्वयोनिरोधपरिणामः इति) ॥ अर्थ यह ॥ क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकानाम व्युत्थानहै ॥ ताव्युत्थानकेसंस्कार समाधिकेविरोधीहो वैंहैं तेविरोधिसंस्कारतौ योगीपुरुषके प्रयत्नकरिकै दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे अभिभवकूं प्राप्तहोवैं हैं ।। और तिनव्युत्थान संस्कारोंकेविरोधीरूप जेनिरोधकेसंस्कारहैं तेनिरोधकेसंस्कार दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवै हैं ।। तिसतैंअनंतर निरोधमात्रक्षणकेसाथि जो चित्तका अन्वयहै सोनिरोधपरिणाम कह्याजावैहै इति ।। इसीनिरोधसमाधिकेफलकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्र ॥ (तस्य प्रशांतवाहितासंस्कारादिति) ॥ अर्थयह ।। तानिरोधपरिणामतैंअनंतर निरोधसंस्कारोंकीदृढताकरिकै तिसचित्तकूं प्रशांतवाहिता होवैहै ।। अर्थात्तमोगुण रजोगुण यादोनोंगुणोंकेनाशहुएतैंअनंतर लयविशेषदोषतैंरहितपणेकरिकै शुद्धसत्त्वरूपजोचित्तहै सोचित्त प्रशांत कह्याजावैहै ।। और पूर्वपूर्व ताप्रशमकेसंस्कारोंकी बाहुल्यताकरिकै जो तिसतैंभी अधिकताहै ताकूं प्रशांतवाहिता कहैं हैंइति ।। तानिरोधसमाधिकेकारणकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ।। तहांसूत्र ।। (विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वःसंस्कारशेषोन्यः) इति ।। अर्थयह ।। वृत्तिकीउपरामतारूपजोविरामहै ताविरामकाजोप्रत्ययहै क्या कारणहै अर्थात्

टीका । तहां समाधि दोप्रकारकाहोवैहै एकतौ लयपूर्वक समाधिहोवैहै और दूसरा बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ।। तहां (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवानूनैं करणतैंभिन्नकरिकै कार्यकाअसत्त्व कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यजोव्यष्टिरूपहै सोव्यष्टिरूप समष्टिरूपविराट्का कार्यहोणेतैं ताविराट्रूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसमष्टिरूपपंचीकृतपंचभूतात्मककार्यभी अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूपहोणेतैं तिनअपंचीकृतपंचमहाभूतरूपकारणतैं भिन्ननहीं है ॥ और तिनपंचभूतोंविषेभीशब्द स्पर्श रूप रस गंध या पंचगुणोंवाली जापृथिवीहै ॥ सापृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस या च्यारिगुणोंवालेजलकाकार्यहोणे तैं ताजलरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोच्यारिगुणोंवालाजलभी शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालेतेजकाकार्यहोणेतैं तातेजरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोतीनगुणोंवालातेजभी शब्द स्पर्श यादोगुणोंवालेवायुकाकार्यहोणेतैं तावायुरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोदोगुणोंवालावायुभी एकशब्दगुणवालेआकाशकाकार्यहोणेतैं ताआकाशरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोशब्दगुणवालाआकाशभी (बहुस्यां) याश्रुतिनैंकथनकऱ्याजो परमेश्वरकासंकल्परूपअहंकारहै ताअहंकारकाकार्यहोणेतैं ताअहंकाररूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसंकल्परूपअहंकारभी (तदैक्षत) याश्रुतिकरिकैकथनकऱ्याजो मायाईक्षणरूप महत्तत्त्वहै तामहत्तत्त्वकाकार्यहोणेतैं तामहत्तत्त्वरूपकारणतैं भिन्ननहीं है ॥ और सोईक्षणरूपमहत्तत्त्वभी मायाकापरिणामहोणेतैं तामायारूपकारणतैं भिन्ननहीं है ॥ और सोमायारूपकारणभी जडरूपहोणेतैं चैतन्यरूपब्रह्मविषे अध्यस्तहै ॥ यातैं ताचैतन्यब्रह्मतैं सोमायारूपकारण भिन्ननहीं है ॥ इसप्रकार निरंतर चिंतनकरिकै कार्यकारणरूपसर्वप्रपंचकेविद्यमानहुएभी जोचैतन्यब्रह्ममात्रविषयकसमाधिहै सोसमाधि लयपूर्वकसमाधि कह्याजावैहै ॥ तालयपूर्वकसमाधिविषे ताअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवेदांतमाहावाक्योंकेअर्थकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं कार्यसहितअविद्याकानाशहुआनहीं ॥ किंतु साअविद्या तालयचिंतनकालविषेविद्यमानहीं है ॥ ताअविद्याकेविद्यमानहुए ताअविद्यारूपकारणतैं पुनः संसाररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहलयपूर्वकसमाधि सुषुप्तिकीन्याईं सबीजसमाधिहीहै मुख्य निर्बीजसमाधिहैनहीं ॥ और जिसकालविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै तथा उत्पत्तिक्रमतैं ताअविद्याकेमहत्तत्त्वादिक सर्वकार्योंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुई साअनादिअविद्या पुनः कदाचित्भी उत्थानकूं प्राप्तहोवैनहीं तथा ताअविद्याकाकार्यभी पुनः उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूं मुख्य निर्बीज बाधपूर्वकसमाधिहोवैहै ॥ सोबाधपूर्वकसमाधिही इसश्लोककरिकै श्रीभगवाननैं कथनकरीताहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं तहां अंतर बाह्य याभेदकरिकै इंद्रिय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रियतो बाह्यइंद्रिय कहेजावैहैं ॥ और मन बुद्धि यह दोनों अंतर

और ताचित्तविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारी धारावाहिकवृत्तियोंका जोसामर्थ्यहै ताकानाम एकाग्रहै ॥ तहां सत्त्वगुणकीवृद्धिकरिकै तमोगुणकृत तंद्रादिरूपलयके अभावहुए आत्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ साआत्माकारवृत्ति रजोगुणकृतचंचलतारूपविक्षेपकेअभावतैं एकवस्तुविषयकहीहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धसत्त्वगुणकेहुएही सोचित्त एकाग्रहोवै है ताएकाग्रचित्तविषेही सोसंप्रज्ञातनामासमाधिहोवै है ॥ तासंप्रज्ञातनामासमाधिविषे सा ध्येयाकारवृत्तिभी प्रतीतहोवै है ॥ और जिसकालविषे साध्येयाकारवृत्तिभी निरोधकूंप्राप्तहोवै है तिसकालविषे सोचित्त निरुद्ध कह्याजावै है ॥ तानिरुद्धचित्तविषे असंप्रज्ञातनामासमाधिहोवै है ॥ यहहीअसंप्रज्ञातसमाधि सर्व सुखोंतैंविरक्तयोगीपुरुषका दृढभूमिकारूपनहुआ धर्म मेघ यानामकरिकै कह्याजावै है इति ॥ इसप्रकार अनेकरूपकरिकै तिनधारणादिकसंयमोंकाभेदहै ॥ यातैं (संयमाग्निषु) यावचनविषे श्रीभगवान्नैं बहुवचनकथनकरयाहै ॥ ऐसेसंयमरूपअग्नियोंविषे केईकअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं होमकरै हैं ॥ अर्थात् धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकीसिद्धिवास्तै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेविषयों तैं प्रत्याहरणकरैं हैं ॥ तहां आपणेआपणेविषयोंतैं निग्रहकूंप्राप्तहुए तेइंद्रिय चित्तरूपहीहो वैं हैं ॥ इसीकूंही शास्त्रविषे प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ तिसप्रत्याहारतैंअनंतर विक्षेपके अभावतैं सोचित्त तिन धारणादिकोंकूंसंपादनकरै है ॥ इतनेकहणेकरिकै प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यहच्यारिअंग योगके कथनकरे ॥ ताकरिकै समाधिअवस्थाविषे सर्वइंद्रियजन्यवृत्तियोंके निरोधकूं यज्ञरूपकरिकै वर्णनकरया ॥ अब तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे रागद्वेषतैंरहितहोइकै जोशास्त्रविहितविषयोंकाभोगहै सोभोगभी एकयज्ञरूपही है इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरै हैं (शब्दादीन्विषयानन्यइंद्रियाग्निषुजुह्वतीति) हेअर्जुन ! तासमाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहुए जेयोगीपुरुषहैं तेयोगीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोके ताव्युत्थानकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शास्त्रतैं अविरुद्धशब्दादिकविषयोंकूं ग्रहणकरै हैं यहही तिनशब्दादिकविषयोंका श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेहोमहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे पातंजलमतकेअनुसारकरिकै लयपूर्वकसमाधिरूप तथातासमाधितैंव्युत्थानदशारूप यादोनोंयज्ञोंकूं कथनकरया ॥ अब इसश्लोकविषे ब्रह्मवादीपुरुषोंके मतकेअनुसारकरिकै सर्वसाधनोंकाफलरूप तथाकारणकेनाशकरिकैव्युत्थानतैंरहित ऐसाजोनिरोधपूर्वकसमाधिहै तासमाधिरूपयज्ञांतरकूं श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) सर्वाणींद्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ सर्वाणि । इंद्रियकर्माणि । प्राणकर्माणि । च । अपरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ । जुह्वति । ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दूसरेकेईअधिकारीतौ सर्व इंद्रियोंकेकर्मोंकूं तथा प्राणोंकेसर्वकर्मोंकूंज्ञान करिकैदीपित आत्मसंयमयोगरूपअग्निविषे होमकरैंहैं ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

के ताज्ञानयज्ञकी स्तुतिकरणेवास्तैं ताज्ञानयज्ञकेसाधनरूपयज्ञोंकेमध्यविषे श्रीभगवान्नैं सोज्ञानयज्ञ कथनकऱ्याहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ ॥ इतनेकहणेक रिकै श्रीभगवान्नैं मुख्ययज्ञ तथागौणयज्ञ यहदोयज्ञ कथनकरे। अब वेदविषे जितनेकश्रेयकेसाधन कथनकरे हैं । तिनसर्व साधनोंकूं श्रीभगवान् यज्ञरूपकरिकै प्रतिपादनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥ शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वति ॥ २६ ॥ श्रोत्रादीनि । इंद्रियाणि । अन्ये । संयमाग्निषु । जुह्वति । शब्दादीन् । विषयान् । अन्ये । इंद्रियाग्निषु । जुह्वति ॥२६॥ इतिप०॥ हे अर्जुन! दूसरे पुरुषतौ श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं संयमरूपअग्नियोंविषे होमकरैंहैं तथाकईअन्यपुरुषतौ शब्दादिक विषयोंकूं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपअग्नियोंविषे होमकरैंहैं ॥ ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! यम नियम आसन प्राणायाम याच्यारोंकूंसिद्धकरिकै केवलप्रत्याहारपरायण जेकेईकअधिकारीपुरुषहैं तेअधिकारीपुरुषतौ श्रोत्रादिकपंच ज्ञानइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयों तैं निवृत्तकरिकै संयमरूपअग्निविषे होमकरैं हैं । इहां (त्रयमेकत्रसंयमः) इसपतंजलिभगवान्केसूत्रविषे एकवस्तुकूंवि षयकरणेहारे धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकूं संयम याशब्दकरिकै कथन कऱ्याहै । तहां हृदयकमलादिकस्थानोंविषे चिरकालपर्यंत जोमनकास्थापनकरणा है ताकानाम धारणाहै । इसप्रकार एकस्थानविषेधारणकऱ्याजोचित्तहै ताचित्तका उत्तरउत्तर विजातीयवृत्तियोंकृतव्यवधानसहित जोभगवत्आकार सजातीयवृत्ति योंकाप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै । और. तांचित्तका विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित केवल ताभगवत् आकार सजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम समाधिहै सोसमाधिभी चित्तकीभूमिकावोंकेभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै। तहां एकतौ संप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै और दूसरा असंप्रज्ञातनामासमाधि होवै है । तहां क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र विरुद्ध यहपंचभूमिका चित्तकीहोवैं हैं । भूमिकानाम अवस्थाविशेषकाहै । तहां रागद्वेषादिकोंकेवशतैं विषयोंविषे अत्यन्तअभिनिवेशवाला जोचित्त है सोचित्त क्षिप्त कह्याजावैहै । और निद्रातंद्रादिकोंकरिकै ग्रस्तहुआजोचित्तहै सोचित्त मूढ कह्याजावै है । और सर्वकालविषे विषयोंविषे आसक्तहुआभी जोचित्त कदाचित् दैवयोगतैं ध्याननिष्ठभीहोवैहै सोचित्त ताक्षिप्ततैं श्रेष्ठहोणेतैं विक्षिप्त कह्याजावै है । तहां क्षिप्तचित्तविषे तथामूढचित्तविषे तासमाधिहोणेकी शंकाहीनहीं होवै है और विक्षिप्तचित्तविषेतौ कादाचित्कसमाधि होवैभी है । परंतु विक्षेपकीप्रधानतातैं सोस माधि योगपक्षविषे वर्त्ततानहीं किंतु जैसे महान्पवनकरिकैविक्षिप्तहुआ दीपक आपेही नाशहोइजावैहै तैसे सोकादाचित्कसमाधिभी आपेही नाशकूंप्राप्तहोवैहै

जानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहीहोवे है इति । इसीकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष स्वर्गादिकतुच्छफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं । जिसकारणतैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषके ब्रह्मविद्याकरिकै अविद्याकृत सर्वकारकव्यवहार नाशकूंप्राप्तहुएहैंइति । यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (कारकव्यवहारेहिशुद्धंवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धेवस्तुनिसिद्धेचकारकव्यापृतिः कुतः) ॥ अर्थयह ॥ कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेव्यवहारहुए आत्मारूपशुद्धवस्तु देख्याजावैनहीं और ताशुद्धवस्तुकेसाक्षात्कारहुए तिनकारकोंकाव्यापार होवैनहीं इति । और किसीटीकाकारनैंतौ इसश्लोकका यहव्याख्यानकरयाहै जैसे नाम वाक् मन इत्यादिकोंकेस्वरूपका नबाधकरिकै तिननामादिकोंविषे श्रुतिनैंब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहै तैसे इहां श्रीभगवान्नैंभी अर्पणादिककारकोंकेस्वरूपका नबाधकरिकै तिनअर्पणादिककारकोंविषे ब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहै इति । सोइसव्याख्यानकूं श्रीभाष्यकारोंनैं तात्पर्यकेनिश्चयके उपक्रमादिकोंके विरोधकरिकै तथाब्रह्मविद्याकेप्रकरणविषे संपत्उपासनामात्रकीप्राप्तिहीनहीं है इत्यादिकयुक्तियोंकरिकै विस्तारतैंखंडनकरयाहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (ब्रह्मार्पणं) यामंत्ररूपश्लोकविषे सर्वत्रब्रह्मदृष्टिरूपसम्यक्दर्शनकीयज्ञरूपकरिकैस्तुति कथनकरी । अब तिसीसम्यक्दर्शनकी पुनःस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेयज्ञोंकाभी कथनकरैं हैं ।

मू. श्लो.) दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥ दैवम् । एवं । अपरे । यज्ञं । योगिनः । पर्युपासते । ब्रह्माग्नौ । अपरे । यज्ञं । यज्ञेन । एव । उपजुह्वति ॥ २५ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! दूसरे कर्मीपुरुषतौ दैवं यज्ञकूं ही सर्वदा करैंहैं और दूसरेतत्त्ववेत्तापुरुषतौ ब्रह्मरूपअग्निविषे आत्माकूं आत्मारूपकरिकै ही होमकरैंहैं ॥ २५ ॥ पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवता जिसकर्मकरिकै संतुष्टकरेजावैंहैं ताकानाम दैवहै ऐसाजो दर्शपूर्णमास ज्योतिष्टोम आदिकयज्ञहै तादैवयज्ञकूंही दूसरेकर्मीपुरुष सर्वदाकरैं हैं । तेकर्मीपुरुष ज्ञानयज्ञकूं कदाचित्भी करतेनहीं इति । इसप्रकार कर्मयज्ञकूंकथनकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताकर्मयज्ञकाफलभूत जोज्ञानयज्ञहै ताज्ञानयज्ञकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं (ब्रह्माग्नौ इति) हे अर्जुन सत्य ज्ञान अनंत आनंदरूप तथासर्वविशेषोंतैंरहित ऐसाजो तत्पदार्थरूपब्रह्महै । सोब्रह्मही ज्ञातहुआ सर्वकर्मोंकादाहकहोणेतैं अग्निकीन्यांई अग्निरूपहै । ऐसे तत्पदार्थब्रह्मरूपअग्निविषे दूसरेतत्त्ववेत्तासंन्यासी त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं अभिन्नरूपकरिकै होमकरैं हैं । अर्थात् तत्त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं ताब्रह्मरूपकरिकैदेखैंहैं । इहां (यज्ञेनैव) यावचनविषेस्थित जो एव यह शब्दहै सोएवकार जीवब्रह्मकेभेदकीनिवृत्तिकरणेवासतैहै । इहां जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं यज्ञरूपतैसंपादनकरिकै (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरि

यह सोघृतादिरूपहविष् अर्पणकरियेजिसविषे ताकानाम अर्पण है ।। याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणशब्द देशकालादिरूप अधिकरणका वाचकहै ।। इस प्रकार एकही अर्पणपद करण संप्रदान अधिकरण यातीनकारकोंका वाचकहै ।। यातैं जुहूमंत्रादिरूप करणकारक तथादेवतादिरूप संप्रदानकारक तथादेशकालादिरूप अधिकरणकारक यहसर्व ब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं ब्रह्मरूपहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक ताररज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्नताकरिकै असतहीहोवैं हैं तैसे तेकारकभी अधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नताकरिकै असतहीहैंइति ॥ और यजमानकर्तृक त्यागरूपक्रियाका तथा अध्वर्युकर्तृक प्रक्षेपरूपक्रियाका साक्षात्कर्मरूप जोघृतादिकहविषहै सोहविषरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहीं है ॥ और जिस आहवनीयादिकअग्निविषे सोघृतादिरूपहविष पायाजावै है ॥ सोअग्निरूपअधिकरणकारकभी ब्रह्मरूपहीं है ॥ और जिसयजमाननैं देवताकाउद्देशकरीकै सोघृतादिरूपहविष् त्यागकरीताहै तथा जिसअध्वर्युनै सोघृतादिरूपहविष अग्निविषे प्रक्षेपकरीताहै ॥ सोयजमानरूप कर्त्ताकारक तथाअध्वर्युरूप कर्त्ताकारक दोनों ब्रह्मरूपही हैं ।। और हुतं याशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो त्यागक्रियारूप तथाप्रक्षेपक्रियारूप हवनहै सोक्रियारूपहवनभी ब्रह्मरूपहीं है ।। और तिसहवनरूपक्रियाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो स्वर्गादिरूप व्यवहितकर्म है ।। सोस्वर्गादिरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपही है और इसप्रकार ताकर्मविषे ब्रह्मदृष्टिरूपसमाधि है जिसकी ताकानाम कर्मसमाधिहै ॥ ऐसाजो कर्मोंकेअनुष्ठानकरणेहारा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी परमानंदस्वरूप अद्वितीयब्रह्महीं गंतव्यहै ।। इहां (कर्मसमाधिना) यावचनतैंउत्तर (ब्रह्मगंतव्यं) यादोनोंपदोंका पूर्ववाक्यतैं अनुषंगकरणाइति ।। अथवा ।। (अर्प्यतेअस्मैफलायतदर्पणं) ।। अर्थयह ।। जिसफलकीप्राप्तिवासतै सोहविष अर्पणकरियेहै ताकानाम अर्पण है ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ताअर्पणपदकरिकैही तिनस्वर्गादिकफलोंकाभी ग्रहण करणा (गंतव्यं) यापदकरिकै तिनस्वर्गादिकोंका ग्रहणकरणानहीं ॥ यातैं (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यह श्लोककाउत्तरार्द्ध ज्ञानकेफलकथनकरणेवासतैही है ॥ यहहीव्याख्यान समीचीनहै ॥ तहां इसद्वितीयव्याख्यानविषे (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहएकही समस्त पदहै ॥ अथवा (ब्रह्मैवतेन) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ताब्रह्मपदकातौ पूर्व (हुतं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ताब्रह्मपदकातौ (गंतव्यं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ यातैं (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहदोनोंपद भिन्नभिन्नहीं हैं ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे पूर्वव्याख्यानकीन्याईं (ब्रह्म गतव्यं) यादोनोंपदोंकेअनुषंगरूपक्लेशकीप्राप्तिहोवैनहीं इति । इहां ॥ (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनकरिकै श्रीभगवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं जोब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरी है सो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै ब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरी है ॥ कोईस्वर्गादिकोंकी न्याईं भिन्नरूपकरिकै अथवा स्वामीसेवकभावकरिकै साप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं

ब्रह्मणा । हुतं । ब्रह्म । एव तेन । गंतव्यम् । ब्रह्म । कर्मसमाधिना ॥२४॥इतिपदच्छेदः॥ हे अर्जुन! अर्पणभी ब्रह्म ही है तथा हविभी ब्रह्महीहै तथा ब्रह्मरूप अग्निविषे ब्रह्मरूपकर्त्तानें जोहवनकरयाहैसोहवनभी ब्रह्महीहै तथा तिसंहवनकरिके प्राप्तहोणेयोग्यस्वर्गा दिकभी ब्रह्मरूपहीहै तथा कर्मविषेब्रह्मबुद्धिवालेपुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपब्रह्मही गंतव्यहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । कर्ता कर्म करण संप्रदान अधिकरण यापंचप्रकारकेकारकोंकरिकै यज्ञादिरूपक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जो घृतादिरूपद्रव्यका त्यागकरयाहै ताकानाम यागहै सोयागही त्यागकरणे योग्यघृतादिकद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेपकरणेतैं होम इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां उद्दिश्यमानइंद्रादिकदेवतातौ संप्रदानकारकरूपहैं और त्यागकरणेयोग्यजेघृतादिकहैं तेघृतादिक हविष याशब्दकरिकैकहेजावैंहैं ॥ सोघृतादिकरूपहविषतौ त्यागप्रक्षेपरूप धातु अर्थका साक्षात् कर्मरूपहै ॥ और ताकाफलभूत स्वर्गादिक व्यवहित भावनाकाकर्मरूपहै॥ और अग्निविषे ताघृतादिरूप हविष्केप्रक्षेपविषे ताहविष्केधारकहोणेतैं जुहुआदिक करणरूपहैं ॥ तथा इंद्रादिरूपअर्थकीप्रकाशताकरिकै (इंद्रायस्वाहा) यहमंत्रादिकभी करणरूपहीहैं। इसप्रकारकारकज्ञापक याभेदकरिकै सोकरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ इसप्रकार देवताकाउद्देशकरिकै घृतादिकद्रव्यकात्याग तथाताद्रव्यकाअग्निविषेप्रक्षेप यहदोप्रकारकीक्रिया होवैहै ॥ तहां प्रथम त्यागरूपक्रियाविषेतौ यजमानपुरुषही कर्त्ताहोवैहै ॥ और दूसरी प्रक्षेपरूपक्रियाविषेतौ तौयजमानपुरुषनैं दक्षिणादेकरिकैस्थापनकरयाहुआ अध्वर्यु कर्त्ताहोवैहै ॥ और आहवनीयादिकअग्नि ताहविष्केप्रक्षेपका अधिकरणरूपहोवैहै ॥ इसप्रकार देशकालादिकभी सर्वक्रियावों केप्रति साधारण अधिकरणरूपजानणे ॥ इसप्रकार जितनेक क्रियाकारकव्यवहारहैं तेसर्वव्यहार ब्रह्मकेअज्ञानकरिकैकल्पितहैं ॥ यातैं जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकैकल्पितजे सर्प दंड माला आदिकहैं तिनकल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै बाधहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तेक्रियाकारकादिकसर्वव्यवहार बाधकूंप्रातहोवैहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै सोक्रियाकारकादिरूपव्यवहाराभास प्रतीतहुआभी दग्धपटकीन्याईं किसीफलकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् इसश्लोककरिकैकथनकरैं हैं ॥ तथा साब्रह्मदृष्टिही सर्वयज्ञरूपहै याप्रकार ताब्रह्मदृष्टिकीस्तुतिकरैं हैंइति ॥ अब सोप्रकार दिखावैं हैं ॥ (अर्प्यते अनेन तदर्पणं) अर्थयह । जिसकरिकै घृतादिरूपहविष् अग्निविषे अर्पणकरयाजावैहै ताकानाम अर्पणहै ॥ या प्रकारकी करण व्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद जुहुआदिककरणोंका तथामंत्रादिककरणोंका वाचकहै ।। और (अर्प्यतेअस्मैतदर्पणं) अर्थयह सोघृतादिरूपहविष् जिसकेताईं अर्पणकरियेहै ताकानाम अर्पणहै ।। याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद इंद्रादिकदेवतारूप संप्रदानका वाचकहै । और (अर्प्यतेअस्मिन् तदर्पणं) अर्थ

तथा अध्यासतैंरहित तथा ज्ञानविषेस्थितहै चित्तजिसका तथा यज्ञादिकोंकेसंरक्षणवासतै आचरजकरताहुआ जोविद्वान्पुरुषहै ता विद्वानपुरुषके तेयज्ञादिककर्म फलसहित नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जोपुरुष गतसंगहै अर्थात् स्वर्गादिकफलोंकीअभिलाषातैंरहित है । तथा जोपुरुष मुक्तहै अर्थात् मैं कर्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहै । तथा जोपुरुष ज्ञानावस्थितचेतसहै अर्थात् तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैंजन्यनिर्विकल्पकरूप जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानविषे अवस्थितहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोस्थितप्रज्ञपुरुषहै । इहां (गतसंगस्यमुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः) यातीनपदोंकरिकै ताविद्वान्पुरुषके तीनविशेषण कथनकरे । तहां पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषणहेतुरूपहै । ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैंहैं । सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूपसंगतैंरहितहै कर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहोणेतैंजोपुरुष तासंगतैंरहितनहींहोवै है सोपुरुष ताअध्यासतैंरहितभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति । और सोविद्वान्पुरुष ताअध्यासतैंरहितहैस्थितप्रज्ञहोणेतैंजोपुरुष ताअध्यासतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष स्थितप्रज्ञभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति । ऐसाब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं वेदविहितयज्ञदानादिकोंके संरक्षणकरणेवासतै अर्थात् ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंविषे श्रेष्ठाचारताकरिकै लोकोंकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै अथवा (यज्ञोवैविष्णुः) इत्यादिकवचनोंविषे यज्ञशब्दकरिकैकथनकऱ्याजोविष्णुहै ताविष्णुकीप्रसन्नतावासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैहै परंतु ताविद्वान्पुरुषके तेयज्ञदानादिकसर्वकर्म समग्र नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं । इहां अग्रनाम फलकाहै ताफलरूपअग्रकेसहितजोविद्यमानहोवै ताकानाम समग्रहै। अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकेबलतैं अविद्यारूपकारणकेनिवृत्तहुए ताविद्वान्पुरुषके तेफलसहितकर्म नाशकूंहीप्राप्तहोवैं हैं । तहांश्रुति । (तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपाप्मनः प्रदूयंतेइति) । अर्थयह । जैसे प्रज्वलितअग्निविषे प्राप्तहुआ इषिकातूल नाशकूंप्राप्तहोवैहै तैसे इसब्रह्मवेत्ता विद्वान्पुरुषके सर्व पुण्यपापकर्म ज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैंहैंइति । इसीअर्थकूं श्रीभगवान् आपही (ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुते तथा) इसश्लोकविषे कथनकरैंगे इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् सोक्रियमाण कर्म फलकूंउत्पन्नकरिकै कैसेनाशकूंप्राप्तहोवैगा किंतु फलकेदियेतैंविना सोकर्म नाशनहींहोवैगा । काहेतैं (नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि) अर्थयह फलकेभोगतैंविना यहशुभअशुभकर्मकल्पकोटशितकरिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहींइति । इत्यादिकवचनोंविषे फलकेभोगतैंविना तिनकर्मोंकेनाशका निषेधहीकऱ्याहै । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताकर्मकेकारणकानाशहोणेतैं सोकर्मभी नाशकूंहीप्राप्तहोवैहै याप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतत् ॥ ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥ब्रह्म । अर्पणं । ब्रह्म । हविः । ब्रह्माग्नौ ।

रिकेपीडितहुआ सोसंन्यासी किसप्रकार जीवैगा ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (द्वंद्वातीतः इति) हे अर्जुन ! क्षुधापिपासा शीतउष्ण वातवर्षा इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मोंते सोसंन्यासीरहितहै । तात्पर्ययह । समाधिदशाविषेतौ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीकूं तेद्वंद्वधर्म स्फुरणहीहोवैंनहीं । और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे यद्यपि तेद्वंद्वधर्मस्फुरणहोवैं हैं तथापि परमानंदस्वरूप अद्वितीयअकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंका बाधहोइजावैहै । यातैं तिनबाधितद्वंद्वधर्मोंकारिकै हन्यमानहुआभी सोसंन्यासी चित्तकेक्षोभतैंरहितहीहोवै हैं इति । जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी द्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अन्यपुरुषकूं किसीवस्तुकी प्राप्तिविषे तथा आपणेकूं किसीवस्तुकीअप्राप्तिविषे विमत्सरहै । इहां परकीउत्कृष्टताके नसहनपूर्वक जोआपणी उत्कृष्टताकीइच्छाहै ताकानाम मत्सरहै तामत्सरतैंजोरहितहोवै ताकानाम विमत्सरहैइति । और जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तामत्सरतैंरहितहै । तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे समानहै अर्थात् तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषेतौ हर्षतैंरहितहै और अप्राप्तिविषे विषादतैंरहितहैइति । ऐसाब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेअनुभवकरिकैतौ अकर्त्ताहीहै परंतु अन्यपुरुषोंनैं ताकेविषे आरोपणकरयाजोकर्तृत्वहै ताआरोपितकर्तृत्वकरिकै सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिक शास्त्रविहितकर्मोंकूं करताहुआभी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं । जिसकारणतै बंधकेहेतुरूपअज्ञानसहितकर्मोंका पूर्वउक्तज्ञानरूपअग्निकरिकै दाहहोइगयाहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् पूर्वआपनैं यहकह्याथा । त्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसनैं तथायदृच्छालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोसंन्यासीहै तासंन्यासीके शरीरमात्रकीस्थितिविषेउपयोगी जोभिक्षाअटनादिककर्महैं तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंकूं करताहुआभी सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति । याआपकेकहणेनैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहै गृहस्थआश्रमविषेस्थित जे जनकअजातशत्रुआदिक ब्रह्मवेत्ताहैं तिनजनकादिकोंके जेयज्ञादिककर्महैं तेयज्ञादिककर्म तिनजनकादिकोंके अवश्यकरिकै बंधकेहेतुहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ताशंकाकी निवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् (त्यक्त्वाकर्मफलासंगम्) इत्यादिकवचनकरिकेकथनकरेहुएअर्थकूं अब स्पष्टकरिकै कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥ गतसंगस्य । मुक्तस्य । ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञाय । आचरतः । कर्म । समग्रं । प्रविलीयते ॥ २३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! फलकीअभिलाषातैंरहित

तात्कालिक ४ उपपन्न ५ यह पंचप्रकारका भिक्षाअन्न संन्यासीकेवास्ते होवैहै ॥ तहां मनकेसंकल्पका अविषयभूत जेतीनगृहहैं अथवा पंचगृहहैं अथवा सप्तगृहहैं तिनगृहोंतैं जोअन्न प्राप्तहोवैहै ताकानाम माधुकरहै ॥ १ ॥ और शयनकेउत्थानतैंपूर्व किसीभक्तजननैं करीजाभिक्षाअन्नकीप्रार्थनाहै सो भिक्षाअन्न प्राक्प्रणीत कह्याजावैहै ॥ २ ॥ और भिक्षाअटनकेउद्यमतैंपूर्व किसीभक्तजननैं भिक्षाअन्नका निमंत्रणदिया सोभिक्षाअन्न अयाचित कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और भिक्षाकेअटनवासतैउद्यमाकियेतैंअनंतर जोकिसीभक्तजननैं भिक्षावासतैप्रार्थनाकरी सोभिक्षाअन्न तात्कालिककह्याजावैहै ॥ ४ ॥ और भिक्षाकेसमयविषे आपणेआसनऊपरिही कोईभक्तजन पक्वअन्नलेआया सोअन्न उपपन्न कह्याजावैहै इति ॥ ५ ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचन तासंन्यासीकेप्रति भिक्षाअन्नकेनियमकाविधानकरतेहुए तिनयाचनादिकप्रयत्नोंकीनिवृत्तिकूं कथनकरैं हैं यहवार्त्ता मनुभगवान्नेंभी कथन करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नचोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया ॥ नानुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतकर्हिचित् ॥) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी उत्पातकरिकै तथा निमित्तकरिकै तथा नक्षत्रविद्याकरिकै तथा अंगविद्याकरिकै तथाअनुशासनकरिकै तथावादकरिकै कदाचित्भी भिक्षाग्रहणकरणेकीइच्छा नहींकरै । इहां भूकंपादिकोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम उत्पातहै ॥ और चक्षुआदिकोंकीस्पंदरूपक्रियाके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम निमित्तहै ॥ और अश्विनीआदिकनक्षत्रोंके शुभअशुभ फलका कथनकरणो याकानाम नक्षत्रविद्याहै ॥ और हस्तादिकोंकीरेखाओंके शुभअशुभफलका कथनकरना याकानाम अंगविद्याहै ॥ और यहनीतिमार्ग इसप्रकारकाहै इसप्रकार तुमनैं इसनीतिमार्गविषेवर्त्तणा याप्रकारकेउपदेशकानाम अनुशासनहै ॥ और शास्त्रकेअर्थकाकथनकरणा याकानाम वादहै इत्यादिकउपायोंकरिकै संन्यासीने आपणेशरीरका निर्वाह कदाचित्भीनहींकरणा किंतु पूर्व उक्तरीतिसे भिक्षाअन्नसे शरीरकानिर्वाहकरणाइति ॥ और (यतयोभिक्षार्थंग्रामंप्रविशंति) इत्यादिकशास्त्रने विधानकर्‍या जो संन्यासीका भिक्षाकेवासतै प्रयत्नहै सोशास्त्रविहितप्रयत्नतो संन्यासीने अवश्यकरिकैकरणा ताशास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य अन्नवस्त्रादिकपदार्थभी शास्त्रकरिकैनियतहीहोवैंहैं ॥ यातैं शास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै जोसंन्यासीकूं शास्त्रविहितअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहै सोयदृच्छालाभरूपहीहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै तहांश्लोक (कौपीनयुगलंवासःकंथांशीतनिवारिणीम् ॥ पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहम्)॥ अर्थयह॥ यहसंन्यासी दोकौपीनोंकूं तथा ताकौपीनऊपरिबांधणेवासतै दोकटीवस्त्रोंकूं तथा शीतकीनिवृत्तिकरणेवास्ते कंबलादिरूपकंथाकूं तथापादुकाकूं ग्रहणकरै इसतैंअधिक द्रव्यादिकपदार्थोंकासंग्रह नहींकरैइति ॥ इसप्रकार दूसरेभी विधिनिषेधरूपवचन जानिलेणे ॥ शंका–हे भगवन् ! तिनयाचनादिक आपणेप्रयत्नतैं विना अन्नवस्त्रादिकोंकेअप्राप्तहुए क्षुधा शीत उष्ण आदिकोंक

सोपुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैहै इति॥ सोयहवार्त्ता शास्त्रतैंविरुद्धहीहै॥ और सोकर्मपद विहितनिषिद्धसाधारणकर्ममात्रका वाचकहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरियै तौ यहअर्थ सिद्धहोवैगा शास्त्रविहित तथानिषिद्ध शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं इति ॥ सोयह कहणाभी पूर्वकीन्याई अत्यंतविरुद्धही है यातैं यहशारीरपदकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे त्यागकऱ्याहैसर्वपरिग्रहजिसनैं ऐसेसंन्यासीकूं शरीरकीस्थितिमात्रविषे उपयोगकर्मोंकी कर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ तहां अन्नवस्त्रादिकों तैंविना शरीरकीस्थितिही संभवतीनहीं यातैं याचनाआदिक आपणेप्रयत्नकरिकैभी तासंन्यासीनैं तिनअन्नवस्त्रादिकोंका संपादनकरणा याप्रकारके अर्थ केप्राप्तहुए श्रीभगवान् ताकेविषे नियमकूं कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः ॥ समः सिद्धावसिद्धौचकृत्वापिननिबध्यते ॥ २२ ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टः । द्वंद्वातीतः । विमत्सरः । समः । सिद्धौ । असिद्धौ । च । कृत्वा । अपि । न । निबध्यते ॥२२॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! जोपुरुष यदृच्छा लाभकरिकै संतुष्टहै तथाद्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै तथा मत्सरतैंरहितहै प्राप्तिविषे तथा अप्राप्तिविषे समानहै सोपुरुष तिनभिक्षाटनादिक कर्मोंकूं करिकै भी नहीं बंधकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकऱ्याजो शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी प्रयत्नहै ताशास्त्रविहितप्रयत्नतैं भिन्न जितनेक याचना कृषि सेवा वाणिज्य आदिकप्रयत्नहैं जेप्रयत्न संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं निषेधकरेहैं तिनशास्त्रनिषिद्धप्रयत्नोंकूंनहींकरणा याकानाम यदृच्छाहै ॥ तायदृच्छाकरिकै जोशास्त्रविहित अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकालाभहै तालाभकरिकै जोसंन्यासी संतुष्टहै अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहै तासंन्यासीकानाम यदृच्छालाभसंतुष्टहै ॥ तहां शास्त्रविषे (भैक्ष्यंचरेत्) यावचनतैं संन्यासीकूं भिक्षाकाविधानकरिकै पश्चात् यहवचन कथनकऱ्याहै (अयाचितमसंक्लृप्तमुपपन्नंयदृच्छया) अर्थयह ॥ भिक्षाअटनकरणेवासतै जोउद्यमहै ताउद्यमतैं पूर्वकालविषे तासंन्यासीकेप्रति किसीश्रेष्ठगृहस्थनैं निमंत्रणकऱ्याजोभिक्षाअन्नहै ताभिक्षा अन्नकानाम अयाचितहै ताअयाचित भिक्षाअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और संकल्पतैंविनाही पंचगृहोंतैं अथवासप्तगृहोंतैं माधुकरीवृत्तितैंप्राप्तभयाजोअन्नहै ताअन्नका नाम असंक्लृप्तहै ताअसंक्लृप्तअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और आपणेप्रयत्नतैंविनाही तासंन्यासीकेसमीप भक्तजनोंनैं प्राप्तकऱ्याजोपक्वअन्नहै ताअन्नका नाम उपपन्नहै ऐसेउपपन्नअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरैइति ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (माधुकरमसंक्लृप्तंप्राक्प्रणीतमयाचितम् ॥ तात्कालिकोपपन्नंचभैक्ष्यंपंचविधंस्मृतमिति) ॥ अर्थयह ॥ माधुकर १ प्राक्प्रणीत २ अयाचित ३

त्मा । त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शारीरम् । केवलम् । कर्म । कुर्वन् । न । आप्नोति । किल्बिषम् ॥२१॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! जोपुरुष तृष्णातैं रहितहै तथा जीतेहैंचित्तआत्माजिसने तथा त्यागकरे हैं सर्वपरिग्रहजिसने सोपुरुष कर्तृत्वअभिमानतैंरहित शरीरकीस्थितिविषे उपयोगी भिक्षाअटनादिककर्मकूं करताहुआ किल्बिषकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोपुरुष स्वर्गादिकफलकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतःकरणरूपचित्तकूं तथा बाह्यइंद्रियसहितदेहरूपआत्माकूं प्रत्याहारकरिकै निग्रहकऱ्याहै जिसकारणतैं सोपुरुष जितइंद्रियहै तिसकारणतैंही सोपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ इहां विषयभोगकेसाधनरूप जेधनादिक उपकरणहैं तिनोंकानाम परिग्रहहै ते विषयभोगकेउपकरणरूप सर्वपरिग्रह त्यागकरे हैंजिसनैं ताकानाम त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ऐसानिराशी तथा यतचित्तात्मा तथा त्यक्तसर्वपरिग्रह संन्यासी प्रारब्धकर्मकेवशतैं शारीरकर्मकूंकरताहुआ किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ इहां शरीरकीस्थितिमात्रहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे कंथाकौपीनादिकोंकाग्रहणरूप तथा भिक्षाअटनादिरूप कायिक वाचिक मानस कर्महैं जेकर्म संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकरेहैं तिनकर्मोंकानाम शारीरकर्महै ॥ ऐसेशारीरकर्मोंकूं कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै अन्यारोपितकर्तृत्वरूपकरिकै करताहुआ सोसंन्यासी धर्मअधर्मकाफलभूत अनिष्टसंसाररूपकिल्बिषकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥ यद्यपि पापकूंही किल्बिषकहैं हैं तथापि पापकीन्याईं सकामपुण्यभी अनिष्टफलकाहीहेतुहोवैहै ॥ यातैं सोपुण्यभी किल्बिषरूपहीहै इति ॥ और किसी टीकाविषे (शारीर) इसपदका यहअर्थकऱ्याहै शरीरकरिकै जोकर्म सिद्धहोवैहै ताकर्मकानाम शारीरहैइति ।। सोइसव्याख्यानविषे (केवलंकर्मकुर्वन्) इतनेवचनमात्रकहणेतैं जोअर्थ सिद्धहोवैहै तिसतैंअधिकअर्थ ताशारीरपदकेकहणेतैं सिद्धहोवैनहीं ।। यातैं इतरकर्मका अव्यावर्त्तकहोणेतैं सोशारीरपद व्यर्थहीहोवैगा ।। और सोटीकाकार जोयहकहै वाचिक मानस कर्मकी व्यावृत्तिकरणेवासतै सोशारीरपदहै यातैं सोशारीरपद व्यर्थनहींहै इति ।। सोयहकहणाभी संभवतानहीं काहेतैं (शारीरंकेवलंकर्म) यावचनविषेस्थितजोकर्मपदहै सोकर्मपद विहितकर्मकावाचकहै अथवा विहितनिषिद्धसाधारण कर्ममात्रकावाचकहै तहां सोकर्मपद विहितकर्मका वाचकहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरियै तौ तावचनका है ॥ यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ तहां विहितकर्मविषे किल्बिषकीहेतुता कहांभीप्राप्तहैनहीं ॥ और प्राप्तअर्थकाही प्रतिषेधहोवैहै अप्राप्तअर्थका प्रतिषेध होवैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधकहोणेतैं सोवचन अनर्थकहोवैगा ॥ और शास्त्रविहित शारीरकर्मकूं करताहुआ सोविद्वान्पुरुष किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकहणेतैं अर्थतैंयहसिद्धहोवै है शास्त्रविहित वाचिक मानस कर्मकूं करताहुआ

(मू. श्लो.) त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः ॥ २० ॥ त्यक्त्वा । कर्मफलासंगं । नित्यतृप्तः । निराश्रयः । कर्मणि । अभिप्रवृत्तः । अपि । न । एव । किंचित् । करोति । सः ॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन कर्मफलकेआसंगकूं परित्याग करिकै नित्यतृप्तहुआ तथानिराश्रयहुआ कर्मविषे प्रवृत्तहुआ भी सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी नहीं करैहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! नित्यनैमित्तिककर्मोंविषे जो मैंइनकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहै ताकर्तृत्वअभिमानकानाम कर्मआसंगहै ॥ और तिनकर्मोंके स्वर्गादिकफलोंविषे जाभोगकीअभिलाषाहै ताअभिलाषाकानामफलआसंगहै ॥ ताकर्मआसंगका तथाफलआसंगका परित्यागकरिकै अर्थात् अकर्त्ताअभोक्ता आत्माकेयथार्थज्ञानकरिकै ताआसंगका बाधकरिकै जोपुरुष नित्यतृप्तहुआहै अर्थात् परमानंदस्वरूपकेलाभकरिकै जोपुरुष सर्वपदार्थोंविषे निराकांक्षहुआहै ॥ तथा जोपुरुष निराश्रयहुआहै अर्थात् अद्वैतआत्मदर्शनकरिकै जोपुरुष देहइंद्रियादिरूपआश्रयकेअभिमानतैं रहितहुआहै ऐसाजीवन्मुक्तपुरुष समाधितैंव्युत्थानदशाविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं लोकदृष्टिकरिकै लौकिकवैदिककर्मोंके सांगोपांगअनुष्ठानकरणेवासतै प्रवृत्तहुआभी सोविद्वान्पुरुष आपणीपरमार्थदृष्टिकरिकै किंचित्मात्रभी कर्मकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं निष्क्रियआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै ताविद्वान्पुरुषकेतेसर्वकर्म बाधभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इहां ताविद्वान्पुरुषके (नित्यतृप्तःनिराश्रयः) यहजो दोविशेषणकथनकरेहैं तेदोनोंविशेषण हेतुरूपहैं ॥ तहां फलआसंगकीनिवृत्तिविषेतौ नित्यतृप्तः यहहेतुहै और कर्मआसंगकी निवृत्तिविषे निराश्रयः यहहेतुहै ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैंहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूप फलआसंगतैंरहितहै नित्यतृप्तहोणेतैं जोपुरुष ताफलआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष नित्यतृप्तभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानरूप कर्मआसंगतैंरहितहै निराश्रयहोणेतैं जोपुरुष ताकर्मआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष निराश्रयभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहै इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंतविक्षेपकेहेतुजे ज्योतिष्टोमादिककर्महैं तिनकर्मोंकूंभी जबी तासम्यक्ज्ञानकेवशतैं बंधकीहेतुताहोवैनहीं ॥ तबीशरीरकीस्थितिमात्रकेहेतु तथाविक्षेपकीनहींप्राप्तिकरणेहारे जेभिक्षाअटनादिकयतिकेकर्महैं तिनकर्मोंकूं तासम्यक्दर्शनकेबलतैं बंधकीहेतुता नहींहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ याप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंविषे बंधकीहेतुताकाअभाव कथनकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ २१ ॥ निराशीः । यतचित्ता

(मू. श्लो.) यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥ १९ ॥ यस्य । सर्वे । समारंभाः । कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् । तम् । आहुः । पंडितं । बुधाः ॥ १९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! जिसें पुरुषके सर्वे कर्म कामसंकल्पतैंरहितहैं तथा ज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहुएहैंकर्मजिसके तिसपुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष पंडित कहैं हैं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! पूर्वश्लोकविषेकथनकरेहुए जिसपरमार्थदर्शीपुरुषके सर्व लौकिकवैदिककर्म कामतैंरहितहुएहैं तथासंकल्पतैंरहितहुएहैं ॥ इहां स्वर्गादिकफलोंकीजातृष्णाहै ताकानाम कामहै ॥ और मैं कर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारका जो कर्तृत्वअभिमानहै ताकानामसंकल्पहै ताकामसंकल्प दोनोंतैं जिसपुरुषके तेकर्मरहित हुएहैं अर्थात् · जिसपुरुषके तेसर्वकर्म केवल लोकसंग्रहवासतै अथवा शरीरकेजीवनमात्रवासतै प्रारब्धकर्मकेवेगतैं व्यर्थचेष्टारूपहुएहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे कथनकरयाजो प्रपंचरूपकर्मविषे सत्तास्फूर्तिरूपकरिकै चैतन्यब्रह्मरूपअकर्मकादर्शन तथा ताब्रह्मरूपअकर्मविषे कल्पितरूपकरिकै प्रपंचरूपकर्मकादर्शन तादर्शनकानामज्ञानहै सोज्ञान प्रसिद्धअग्निकीन्याईं सर्वकर्मोंका दाहकहोणेतैं अग्निरूपहै ॥ ताज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहोइगयेहैं शुभअशुभकर्मजिसके ॥ तहां श्रीव्याससूत्रं (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुये तासाक्षात्कारतैंउत्तर करेहुए पुण्यपापकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं संबंधही नहींहोवैहै ॥ और तासाक्षात्कारतैंपूर्वकरेहुए संचितकर्मोंका ताज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ यहवार्ता बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे देखणेमैंआवैहैइति ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष वास्तवतैं पंडित कहैं हैं ॥ इहांसर्वत्र चैतन्यब्रह्ममात्रकूंविषयकरणेहारी जाअंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिकानाम पंडाहै सापंडानामावृत्ति जिसपुरुषके अंतःकरणविषेउत्पन्नहोवै तापुरुषकानाम पंडितहै ॥ और लोकविषेभी सम्यक्दर्शीपुरुषही पंडित कह्याजावैहै ॥ भ्रांतपुरुष पंडित कह्याजावैनहीं ॥ सोसम्यक्दर्शीपणा विद्वान्पुरुषविषेहीहै ॥ अज्ञानीपुरुषोंविषे सोसम्यक्दर्शीपणा हैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषही पंडितहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! ताज्ञानरूपअग्निकरिकै पूर्वआरंभकरेहुए प्रारब्धकर्मतैंभिन्नकर्मोंकादाहहोवो तथा आगामिकर्मोंकीअनुत्पत्तिभीहोवो परंतु ताज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे कऱ्याहुआजोकर्म है सोकर्म तिनपूर्वकर्मोंविषे तथा उत्तरकर्मोंविषे अंतर्भूतहोइसकैनहीं ॥ यातै सोकर्मतौ ताज्ञानवान्पुरुषकूं अवश्यकरिकै फलकीप्राप्तिकरैगा । ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरैं हैं ।

तहां जोपुरुष तासाधनसहितयज्ञादिकरूपअकर्मविषे कूटस्थब्रह्मरूपकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात (अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम्) ॥ इसभगवतवचनउक्तरीतिसैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे तथातिनकर्मोंके द्रव्य देवतादिकअंगोंविषे जोपुरुष ब्रह्मदृष्टिकरैहै ताब्रह्मदृष्टितैंविना जोकर्म करयाजावैहै सो कर्म व्यर्थचेष्टारूपहीहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंकीगति अत्यंतगहनहैइति ॥ शंका—हे भगवन् जोअकर्म कर्मविषे आरोपणकरीताहै सोअकर्म क्यावस्तुहै ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अकर्मणिचकर्मयः इति) हे अर्जुन ! जिसवस्तुविषे पुण्यपापरूपकर्म (पुण्योवैपुण्येनकर्मणाभवतिपापःपापेन) इसश्रुतिकेबलतैं प्रतीतहोवैं हैं। तथा जिसवस्तुविषे तापुण्यपापकर्मका सुखदुःखरूपफल अहंसुखी अहंःदुखी याप्रतीतिकेबलतैं प्रतीत होवैहै।सोप्रत्यक्‌चेतनही अकर्मरूपहै ॥ और जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्प अध्यस्तहोवैहै तैसे तास्पंदभावतैंरहित चेतनरूपअकर्मविषे यहस्पंदरूपकर्म अध्यस्त है ॥ याप्रकार जोपुरुष ताअकर्मविषे कर्मकूंदेखैहै ॥ इहांयहतात्पर्य है ! जैसे रज्जुविषेअध्यस्तसर्पकूं देखताहुआजोपुरुषहै तापुरुषकूं यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुही है याप्रकारके आप्तवक्तापुरुषकेवचनतैं जोकदाचित् विक्षेपकीप्रबलतातैं रज्जुत्वकाज्ञाननहींहोवैहै । तौ सोआप्तवक्तापुरुष ताभ्रांतपुरुषकेप्रति इससर्पकूं तूं रज्जुदृष्टिकरिकै उपासनाकर याप्रकारका जबी उपदेशकरैहै तबी सोभ्रांतपुरुष ताउपासनाकीदृढतातैं तासर्पकाविस्मरणकरिकै तारज्जुत्वकूंही साक्षात्कारकरैहै ॥ और जोपुरुष यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहीहैयाप्रकारकेवचनतैंही तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकूं जानैं है तिसपुरुषकूं यहसर्प रज्जुहीहै याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतर प्रवाहरूपउपासना करणेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै ॥ इसप्रकार कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मविषे अध्यस्तजो कर्त्ताक्रियादिक प्रपंचरूपकर्महै ताप्रपंचरूपकर्मकूं तत्त्वमसि इसवचनतैं बाधकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं ताकूटस्थब्रह्मरूपअकर्मका बोधहोइसकैहै ॥ और जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहै सोपुरुष जबी ताकर्मकूं अकर्मदृष्टिकरिकैउपासनाकरैहै तबी ताउपासनाकीदृढतातैं सोपुरुषभीताकर्मकेतिरोधानकरिकै ताअकर्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरैइति ॥ इसप्रकारका विलक्षणव्याख्यानकरिकै ताटीकाकारने श्रीभाष्यकारभगवान्‌केआगे याप्रकारकीप्रार्थना करीहै ॥ तहांश्लोक (व्याख्यातुरपिमेनास्तिभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुहाउद्द्योतिनोप्यस्तिकिंदीपस्यार्कतुल्यता) अर्थयह ॥ इसप्रकार विलक्षणव्याख्यानकूंभी करणेहाराजोमैंहूं तिसहमारेकूं भगवान्‌भाष्यकारोंकीतुल्यता होवैनहीं ॥ जैसे किसीगुहाविषेप्रकाशकरणेहारेभीदीपककूं सूर्यभगवान्‌कीतुल्यता होवैनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वउक्तपरमार्थदर्शीपुरुषकूं कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं कर्मोंकरिकैअलिप्तपणा श्रीभगवान् (यस्यसर्वे) इसवचनतैंआदिलेके (ब्रह्मकर्मसमाधिना) इसवचनपर्यंत विस्तारतैं कथनकरैं हैं।

विषेकर्मका दर्शन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ परोक्षदर्शनहोवैहै ॥ दूसरा अपरोक्षदर्शनहोवैहै ॥ तहां परोक्षदर्शनवालातौ ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयका अनुष्ठानकरताहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै ॥ और दूसरा अपरोक्षदर्शनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ उपास्यसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ और दूसरा तत्त्वसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ तहां जिसवस्तुकीउपासनाकरिये ताकानाम उपास्यहै सोउपास्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ व्याकृतरूपहोवैहै ॥ और दूसरा अव्याकृतरूपहोवैहै ॥ ताउपास्यकेभेदकरिकै सोउपास्यविषयक साक्षात्कारभीदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यरूपसूत्रआत्माकानाम व्याकृतहै ॥ और सर्वजगत्केकारणकानाम अव्याकृतहै ॥ तहां ता सूत्ररूपव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष देहाभिमानतैं रहितहोणेतैं योगशास्त्रविषे विदेह यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ताकारणरूपअव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष प्रकृतिलय यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ यादोनोंउपासनावोंका (अन्यदेवाहुःसंभवात्) इत्यादिकश्रुतिनैं संभव असंभव यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै समुच्चयविधानकऱ्याहै ताउपासनावालापुरुष युक्त यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ इसउपासक युक्तपुरुषकूंभी आगेबाकीकर्त्तव्य रहैं हैं ॥ यातैं यहयुक्तपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् होइसकैनहीं किंतु जिसपुरुषकूं ताप्रपंचरूपकर्मकाबाधकरिकै कूटस्थआत्मारूपअकर्मका मुख्य दर्शन प्राप्तभयाहै सोतत्त्वसाक्षात्कारवान्पुरुषही कृतकृत्यहोणेतैं मुख्य कृत्स्नकर्मकृत् कह्याजावैहै ॥ इनसर्वोंविषे प्रथम ज्ञानकर्मकेसमुच्चयकाअनुष्ठानकरणेहारापुरुषतो देहाभिमानीमनुष्योंविषेही बुद्धिमान्है ॥ यातैं अक्रांतदर्शीहोणेतैं सो पुरुष अकविहीहै ॥ और व्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् तथाअव्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् यहमध्यकेदोनों क्रांतदर्शीहोणेतैं यद्यपि कविहैं तथापि तत्त्ववस्तुविषे मूढहोणेतैं तेदोनों (कवयोप्यत्रमोहिताः) इसवचनकरिकैकथनकरे हैं ॥ इनदोनोंको व्यवधानकरिकै अशुभ संसारतैमुक्तहोवैहै ॥ और तत्वसाक्षात्कारवान् उत्तमपुरुषतो जीवताहुआही ताअशुभसंसारतैं मुक्तहोवै है ॥ इहां सूक्ष्मदर्शीपुरुषकानाम क्रांतदर्शीहै इति ॥ अथवा (कर्मण्यकर्मयः पश्येत) याश्लोकका यह अर्थकरणा पूर्व (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे श्रीभगवान्नें कर्म अकर्म दोनोंकूं वक्तव्यरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यम्) यावचनविषे तिनदोनोंकूं बोद्धव्यरूपकरिकै अथनकऱ्याथा सोकर्मअकर्मकाबोध लक्षणतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं इसश्लोकविषे तिनदोनोंका लक्षणकथनकरणाही उचितहै तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत) यावचनकरिकै जो अकर्मकरिकैविशेषितहोवैहै सोईही कर्महोवैहै अन्यकर्महोवैनहीं यहकर्मका लक्षण कथनकऱ्या है और (अकर्मणिचकर्मयः) यावचनकरिकै जो कर्मकरिकै विशेषितहोवैहै सोईही अकर्महोवैहै यहअकर्मकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ इसव्याख्यानविषे श्लोककेअक्षरोंकाअर्थ याप्रकार करणा ॥ द्रव्यदेवतादिकसाधनोंसहितजेयज्ञादिकहैं तिनोंकानाम कर्महै और स्पंदतैंरहितकूटस्थब्रह्मकानाम अकर्म है ॥

श्लोकविषे जिस कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे कविपुरुषोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ तथा (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनविषे जिस कर्मअकर्मकाज्ञान अशुभसंसारतें मोक्षकाहेतु कथनकऱ्याथा ताकर्मअकर्मदोनोंकास्वरूप मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्नें अर्जुनकेप्रति कथनकऱ्याथा तिसीहीवचनकाव्याख्यानरूप (अकर्मणिचकर्मयःपश्येत्सयुक्तः) यहवचनहै तहां इसवचनविषेस्थितजो चकारहै सोचकार कर्मविषेअकर्मदर्शन तथा अकर्मविषेकर्मदर्शन यादोनोंदर्शनोंके समुचयकरावणेवासतेहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवे है जोपुरुष बुद्धिमान्है तथायुक्त है सोईहीपुरुष कृत्स्नकर्मकृत् है ॥ और जोपुरुष केवल बुद्धिमान्ही है युक्तनहीं है सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहीं है ॥ और जोपुरुष केवल युक्तही है बुद्धिमान्नहीं है सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहीं है ॥ इसीअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूंदेखै है सोपुरुष युक्त कह्याजावै है ॥ तहां स्पंदतैंरहितजो कूटस्थआत्मा है ताका नाम अकर्म है ॥ और स्पंदसहित जोआकाशादिकबाह्यप्रपंचहै तथामनबुद्धि आदिकजो अंतरप्रपंच है तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकानाम कर्म है ॥ ताकूटस्थवस्तुरूप अकर्मविषे ताप्रपंचरूपकर्मकूं आधारआधेयभावकरिकै अथवा उपादानउपादेयभावकरिकै अथवा अधिष्ठानअध्यस्तभावकरिकै देखतेहुए शास्त्रवेत्तापुरुष कर्मोंकूं करैं हैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रवालातौ जैसे जपाकुसुमकीरक्तता स्फटिकविषेप्रतीतहोवै है तैसे संघातके कर्तृत्वादिकधर्म मैंअसंगकूटस्थविषे अविवेकतैं प्रतीत हो वैं हैं याप्रकारकीभावनाकरताहुआ कर्मोंकूंकरै है ॥ और दूसरा उपनिषद्शास्त्रकावेत्तापुरुषतौ जैसे सुवर्णतेउत्पन्नहुए कुंडलकंकणादिककार्य सुवर्णरूपहीहो वैं हैं तैसे ब्रह्मतैंउत्पन्नभया यहसर्वजगत्भी ब्रह्मरूपही है यातैं यज्ञादिककर्म तथा वाकर्मके द्रव्यदेवतादिकसाधन तथामैंकर्मकाकर्त्ता सर्व ब्रह्मरूपहीं हैं याप्रकारकीभावना करताहुआ कर्मोंकूंकरै है यहदोनों युक्त कहेजावैं हैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुषबुद्धिमान्भी है परंतु इसप्रकारकायुक्त हैनहीं सोबुद्धिमान्युक्त पुरुष जिसजिसकर्मकूंकरै है तेसर्वकर्म तिसपुरुषके असतही हो वैं हैं ॥ यातैं तेकर्म तिसपुरुषकूं अशुभसंसारतैं मुक्तकरैं नहीं तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्मिँलोकेजुहोतियजते तपस्तप्यते बहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थ यह ॥ हेगार्गी ! जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूं नजानिकरिकै इसमनुष्यलोकविषे जिसजिस होमकूंकरै है तथाजिसजिस यज्ञकूंकरै है तथाअनेकसहस्रवर्षपर्यंत जिसजिस तपकूंकरै है तेसर्वहोमयज्ञादिककर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्ति करैं हैं इति ॥ और जोपुरुष युक्ततौ है परंतु बुद्धिमान्हैनहीं सोपुरुष नहींकरणेयोग्यकर्मोंकूंभी करै है ताकरिकै सोपुरुष प्रत्यवायकूंही प्राप्तहो है है काहे तैं पापकेअस्पर्शकाकारण जोआत्माकाअपरोक्षज्ञानहै सोअपरोक्षज्ञान ता निर्बुद्धियुक्तपुरुषकूंहैनहीं किंतु तिसयुक्तपुरुषकूं केवलपरोक्षज्ञानहीहै ॥ इसी कर्मकूं तथापरोक्षज्ञानकूं (विद्यांचाविद्यांच) याश्रुति नैं अविद्या विद्या यादोनोंशब्दों तैं कथनकरिकै तिनदोनोंका समुच्चय कथनकरयाहैइति ॥ अथवा ॥ सो अकर्म

द्धयाहुतंदत्तंतपस्ततंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह) इसश्लोकविषे आगे कथनकरैंगे ॥ इसप्रकार सर्वव्यापरतैंरहित उदासीनता यद्यपि अकर्मरूपहै तथापि दुःखीपुरुषोंकीरक्षाकरणे विषे समर्थ जोपुरुष है सोसमर्थपुरुष ताऔदासीनताकूं अंगीकारकरिकै जो तिनदुःखीपुरुषोंकीरक्षा नहींकरै है तौ तिससमर्थपुरुषका सोउदासीनतारूपअकर्म विकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा पितृयज्ञादिक पंचयज्ञोंका जो अपणे आपणेविहितकालविषे नहींकरणाहै सो पंचयज्ञोंकानहींकरणा यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि तिसकालविषे ईश्वरकेआराधनविषे अत्यंतआसक्तजोपुरुषहै तापुरुषका सोपंचयज्ञादिकोंका नहींकरणारूपअकर्मभी कर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै यहवार्त्ता (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) याश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं आपही कथन करीहै ॥ और नित्यकर्मकेपरित्यागतैं जो पापकीप्राप्ति कथनकरीहै सोभी तानित्यकर्मकेकरणेकालविषे शास्त्रनिसिद्ध लौकिकव्यवहारकेकरणेतैंही पापकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतु ताकालविषे ईश्वरकेआराधनविषेआसक्तहुआपुरुष ताप्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणेतैंही पूर्व जलादिकोंकेभीतरस्थितहोइके तपकूंकरतेहुएऋषि ताकालविषे नित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसप्रकार किसीपशुकी हिंसाकरणी यद्यपि विकर्मरूपहै तथापि (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इसवचनतैं यज्ञविषेकरीहुई सापशुकीहिंसा कर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और व्यर्थहीतापशुकेनष्टहुए जा सापशुकीहिंसाहै तिस हिंसातैं कोई धर्मरूप अपूर्व उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सापशुकीहिंसा कर्मरूपभीनहींहै ॥ और किसीकानामवालेपुरुषनैं सापशुकीहिंसाकरीनहीं यातैं साहिंसा विकर्मरूपभीनहीं हैं ॥ किंतु परिशेषतैं करीहुईभीसापशुकीहिंसा नहींकरेकेतुल्यहोवैहै ॥ यातैं साव्यर्थहिंसा अकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार चौरपुरुषकाजोछोडिदेणाहै सो यद्यपि ताचौरपुरुषकेसहवर्त्तीपुरुषोंका कर्मरूपहीहै तथापि सोचौरपुरुषकाछोडना राजाका विकर्महीहै ॥ काहेतैं (स्तेनःप्रमुक्तोराजनिपापमार्ष्टी) इत्यादिकवचनोंविषे चौरपुरुषकाछोडना राजाकूं पापकीप्राप्तिकाहेतु कह्याहै और सोईही चौरपुरुषकाछोडना निष्कामसंन्यासियोंका उपेक्षाविषयहोणेतैं अकर्मरूपहीहै ॥ इसप्रकार सत्यवचनकहणा यद्यपि कर्मरूपहै तथापि जिससत्यवचनतैं किसीप्राणीकीहिंसाहोवैहै सोसत्यवचनरूपकर्मभी विकर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार मिथ्यावचनकहणा यद्यपि विकर्मरूपहै तथापि जिसमिथ्यावचनकेकहणेतैं किसीप्राणीकीरक्षाहोवैहै तामिथ्यावचनरूपविकर्मका कर्मविषेही परिअवसानहोवैहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं कर्मविषेतौ अकर्मरूपताकूं तथा विकर्मरूपताकूं देखैहै और अकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथा विकर्मरूपताकूं देखैहै ॥ और विकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथा अकर्मरूपताकूं देखैहै ॥ सो कार्यअकार्यकेविभागकूंजानणेहारापुरुष तिनकर्मादिकोंके वास्तवस्वरूपकेबोधवालाहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै इति ॥ और पूर्व (किंकर्मकिमकर्मेति) इस

इसप्रकारकाअर्थ मानणेविषे पूर्व (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) इत्यादिक उपक्रमादिकवचनोंकाविरोध कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारका नित्यकर्मोंकानहीं करणारूप अकर्मभी स्वरूपतैंही तानित्यकर्मतैंविरुद्धकर्मकीलक्षकताकरिकै उपयोगीहोवैहै ॥ तिसअकर्मविषे कर्मदृष्टि किसीभीअर्थविषेउपयोगीहोवैनहीं ॥ तथा तानित्यकर्मकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायभी होवैनहीं ॥ काहेतैं सोनित्यकर्मकानहींकरणा अभावरूपहै और प्रत्यवाय भावरूप है ॥ ताअभावतैं भाव कीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित् अभावतैंभी भावकार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै तौ अभावतो सर्वदेशकालविषे विद्यमान है ॥ यातैं सर्वदेशविषे तथा सर्वकालविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं यातैं अभावतैंभावकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा भावरूपअर्थही धर्मअधर्मरूपअपूर्वका जनकहोवैहै ॥ अभावरूपअर्थ ताअपूर्वकाजनकहोवैनहीं ॥ यातैं नित्यकर्मकाअभाव ताप्रत्यवायकाजनक हैनहीं ॥ किंतु तानित्यक र्मकेअनुष्ठानकालविषे जो तानित्यकर्मकाविरोधी शयनउपवेशनादि कर्महैं सो नित्यकर्मकेअकरणउपलक्षितभावरूपकर्मही ताप्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यह सर्ववैदिकपुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ यातैं मिथ्याज्ञानकेनिवृत्तिप्रसंगविषे मिथ्याज्ञानकाहीव्याख्यानकरणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और जोकोई वादी यहकहै सो भग वानकावचन नित्यकर्मोंकेअनुष्ठानपरहै सो यहकहणाभी संभवतानहीं काहेतैं यह अधिकारीपुरुष नित्यकर्मोंकूंकरै याप्रकारकेअर्थकूं (कर्मण्यक र्मयःपश्येत्) यहवचन कथनकरतानहीं ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेवासतै जोकदाचित् श्रीभगवान् तावचनकूंकथनकरैंगे तौ श्रीभगवान्विषेही मिथ्या वादीपणा सिद्धहोवैगा इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्या है ॥ तहां पूर्व (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यम्) या श्लोकविषे कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका जापारिअवसानरूपगतिहै साअत्यंत गहनहै यातैं इसअधिकारीपुरुषकूं साकर्मादिकोंकीगति अवश्यकरिकैजान णेयोग्यहै यह अर्थ श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याथा ॥ तिसीअर्थकाहीव्याख्यानरूप (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्समनुष्येषुबुद्धिमान्) यहवचनहै ॥ सोदिखावैं हैं ॥ (कर्मणि) यापदकरिकै कर्म अकर्म विकर्म या तीनोंका ग्रहणकरणा ॥ और (अकर्म) यापदकरिकै ताकर्म अकर्म विकर्म यातीनों तैं विपरीतभावका ग्रहणकरणा ॥ तहां जो पुरुष ताकर्मविषे अकर्मकूंदेखै है अर्थात् कर्मतैं विपरीतभावकूं देखै है · तहां कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंविषे तिनकर्मादिकों तैंविपरीतरूपता शास्त्रप्रमाणतैं देखणेविषेआवैं है ॥ जैसे कर्मविषे श्रद्धातैंरहितजोपुरुष है ताश्रद्धाहीन पुरुषनैं कऱ्याजो कोईयज्ञरूपकर्महै सोयज्ञरूपकर्म फलका अहेतुहोणे तैं कऱ्याहुआभी नकरेकेसमानहोवै है ॥ यातैं सो श्रद्धाहीनपुरुषकृत यज्ञरूपकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और दांभिकपुरुषनैं कऱ्याहुआ सोई यज्ञरूपकर्म विकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवे है ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् आपही (अश्र

नभी परमार्थदर्शी होउ ॥ तापरमार्थदर्शीपणेकरिकैही तुम्हारेविषे सोसर्वकर्मकाकर्त्तापणा सिद्धहोवैगा ॥ यातैं जिसकर्मअकर्मकेस्वरूपकूंजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्त होवैगा ॥ यहजो पूर्व कथनकर्‍याथा तथा कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका वास्तवस्वरूप तुम्हारेकूं जानणेयोग्यहै यहजो पूर्व कथनकर्‍याथा तथा सोईहीपुरुष बुद्धिमान्है इत्यादिक जोस्तुति कथनकरीहै यहसर्ववार्त्ता परमार्थवस्तुकेदर्शनहुएही संभवहोइसकै है अन्यवस्तुकेदर्शनतैं संभवैनहीं काहेतैं ताचैतन्यरूपपरमार्थवस्तुतैंभिन्न जितनेक अनात्मपदार्थहैं तिनआत्मपदार्थोंकेज्ञानतैं अशुभसंसारतैं मुक्ति संभवतीनहीं उलटा बंधकीहीप्राप्ति होवैहै ॥ तथा तापरमार्थवस्तुतैंभिन्न सर्वपदार्थअतत्त्वरूपहैं ॥ यातैं ते अतत्त्वरूपपदार्थ इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेयोग्यभीनहीं है ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानहुए इसपुरुषविषे सोबुद्धिमान्पणाभी संभवतानहीं ॥ यातैं परमार्थदर्शीपुरुषोंका यहपूर्वउक्तव्याख्यान युक्तहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थ कथन कर्‍याहै ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै करेंजे अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्म हैं तेनित्यकर्मबंधकेहेतुहोवैंनहीं ॥ यातैं तानित्यकर्मविषे जोपुरुष यह नित्यकर्मबंधका अहेतुहोणे तैं अकर्मरूपहीहै याप्रकार देखै है ॥ और तिन नित्यकर्मोंका जोनहींकरणाहै ताकानाम अकर्म है ॥ सोनित्यकर्मोंकानहींकरणारूपअकर्म इसअधिकारीपुरुषके प्रत्यवायकाहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताअकर्मविषे जोपुरुष यहअकर्म प्रत्यवायकाहेतुहोणे तैं कर्मरूपही है याप्रकारदेखै है सोपुरुषही सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथा योगयुक्तहै तथा सर्व कर्मोंकाकर्ता इति ॥ सोयहअर्थ असंगतहै काहे तैं तानित्यकर्मविषे यहअकर्म है याप्रकारका जो ज्ञानहै सोज्ञानरज्जुविषे सर्पज्ञानकीन्याईं भ्रांतिरूपही है ॥ यातैं ता ताभ्रांतिज्ञानविषे (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनकारिकै कथनकरीजा अशुभसंसारतैंमोक्षकी हेतुताहै साहेतुता संभवैनहीं किंतु सोज्ञान मिथ्यारूपहोणेतैं आपही अशुभरूपहै ॥ तथा सोभ्रांतिज्ञान (बोद्धव्यम्) यावचन करिकै कथनकर्‍याजानणेयोग्यतत्त्वरूपभीनहीं है ॥ तथा ताभ्रांतिज्ञानकेप्राप्तहुए बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व इत्यादिकस्तुतिभी संभवतीनहीं ॥ उलटा सो भ्रांतिज्ञानवालापुरुष मिथ्यादर्शीही कह्याजावैहै ॥ और तानित्यकर्मोंका जोअनुष्ठानहै सोअनुष्ठानतौ स्वरूपतैंही अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोगीहै ॥ तानित्यकर्मविषे अकर्मबुद्धितौ किसीविषेभी उपयोगी हैनहीं काहे तैं जो अर्थ शास्त्रकारिकैविदितहोवे है सोईहीअर्थ अंतःकरणकीशुद्धिविषे तथाज्ञानविषे उपयोगीहोवै है ॥ जैसे वाक् मन इत्यादिकोंविषे शास्त्रने ब्रह्मदृष्टि विधानकरी है यातैं तादृष्टिका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानविषेउपयोगहै ॥ तैसे नित्यकर्म अकर्मरूपहै याप्रकारकीदृष्टि किसीशास्त्रनैं विधानकरीनहीं ॥ यातैं तादृष्टिका किसीभीअर्थविषे उपयोगसंभवैनहीं ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यहगीताकावचनही ताकर्मविषे अकर्मदृष्टिका विधानकरैहै ॥ याप्रकारकावचन जोकोईकथनकरैहै सोभी संभवतानहीं ॥ काहे तैं इसगीतावचनका

कर्तृत्वअभिमान जबपर्यंत इसपुरुषकूं होवै है तबपर्यंतही तेविहितकर्म तथानिषिद्धकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ ताकर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके केवल देहइंद्रियादिकोंकेधर्समानिकै करेहुए तेकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं (नमांकर्माणिलिंपंति) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व हम कथनकार आये हैं ॥ हे अर्जुन ! ताकर्तृत्वअभिमानकेविद्यमानहुए मैंतूष्णींहुआस्थितथा याप्रकारका उदासीनताकाअभिमानमात्ररूपजोकर्म है सोकर्मभी इसपुरुषकेबंधकाहीहेतु होवैहै ॥ जिसकारणतैं इसकर्तृत्वअभिमानीपुरुषनैंवस्तुका वास्तवस्वरूप जान्यानहीं ॥ यातैं हे अर्जुन ! कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंके पूर्वउक्त वास्तवस्वरूपकूंजानि करिकै तथा विकर्म अकर्म यादोनोंकापरित्यागकरिकै तथा कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके तथा फलकीइच्छातैंरहितहोइके तूं शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंहीकर इति ॥ अथवा इसश्लोकका यहदूसराअर्थ करणा ॥ प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानकाजोविषयहोवै ताकानामकर्म है ॥ ऐसा यहदृश्यरूप तथाजडरूप प्रपंचहै ॥ और जोवस्तु प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानका विषयनहींहोवै तावस्तुकानाम अकर्म है ॥ ऐसा स्वप्रकाशरूप तथा सर्वभ्रमकाअधिष्ठानरूप चैतन्यहै ॥ तहां जोपुरुष ताजगत्रूपकर्म विषे आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत स्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मकूं परमार्थदृष्टिकरिकैदेखै है तथा जो पुरुष तास्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूप अकर्म विषे इसमायामयदृश्यप्रपंचरूपकर्मकूं कल्पितदेखै है अर्थात् द्रष्टाचैतन्यका तथा दृश्यप्रपंचका कोईभीसंबंधसंभवतानहीं ॥ यातैं यहदृश्यप्रपंच ताद्रष्टाचैतन्यविषे वास्तवतैं है नहीं ॥ याप्रकार जोपुरुष देखै है ॥ तहांश्रुति (यस्तुसर्वाणिभूतानिआत्मन्येवानुपश्यति ॥ सर्वभूतेषुचात्मानंततोनविजुगुप्सते ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्व अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखै है तथा तिनसर्वभूतोंविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकै आत्माकूं अनुस्यूतदेखै है सोपरमार्थदर्शीपुरुषही सर्वतैंश्रेष्ठ है इति ॥ इसप्रकार चैतन्यआत्माका तथा दृश्यजगत्का परस्पर अध्यासहुएभी जोपुरुष वास्तवतैं शुद्ध चैतन्यकूंहीं देखैहै ॥ सोविद्वान् पुरुषही सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे अत्यंतबुद्धिमान् है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न कोईभीपुरुष बुद्धिमान्नहीं है ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी यथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुषही बुद्धिमान्कह्याजावै है ॥ अयथावत वस्तुकेस्वरूपकूं जानणेहारापुरुष बुद्धिमान्कह्याजावैनहीं ॥ जैसे रज्जूकूं रज्जुरूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैहै और तिसीरज्जुकूं सर्परूपकरिकैजान णेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैनहीं ॥ तैसे सर्वकेअधिष्ठानपुरुषशुद्धचैतन्यकूं देखणेहारापुरुषही परमार्थदर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्है ॥ और अनात्मप्रपंचकूंदेखणेहारा अज्ञानीपुरुषतो मिथ्यादर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्होवैनहीं ॥ और सोपरमार्थदर्शीपुरुषही ताबुद्धिकेसाधनरूपयोगकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै एकाग्रचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैं सोईहीपुरुषता अंतःकरणकीशुद्धिकेसाधनरूप सर्वकर्मोंका कर्ता है ॥ इसप्रकार बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व या वारत वतीनधर्मोंकरिकै सोपरमार्थदर्शीपुरुष स्तुतिकऱ्याजावैहै ॥ हे अर्जुन ! जिसकारणतैं सोपरमार्थदर्शीपुरुष इसप्रकारके महान्पणेकूं प्राप्तहोवैहै तिसकारणतैं तूं अर्जु

सर्वकालविषे ताव्यापाररूपकर्मवालेजेदेहइंद्रियादिकहैं तिनेदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभाव रहै नहीं ॥ किंतु तिनेदेहइंद्रियादिकोंविषेताकर्मके अभावका आरोपणहोवैहै ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशाविषेस्थित जेगमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं तिनपुरुषोंका यद्यपि वास्तवतैं तागमनरूपक्रियाकाअभाव हैनहीं तथापि दूरत्वदोषकेवशतैं तिनपुरुषोंविषे तामनरूपक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै तथा जैसे आकाशविषेस्थित जेचंद्रतारकादिकनक्षत्रहैं तिननक्षत्रों विषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाकाअभावहैनहीं ॥ किंतु सर्वदा तिन्होंविषे गमनरूपक्रियाहै ॥ तथापि दूरत्व दोषकेवशतैं तिननक्षत्रों विषे तागमनक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै तैसे सर्वदा व्यापाररूपकर्मवाले जेदेहइंद्रियादिकहैं तिनेदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभावहैनहीं किंतु मैंतूष्णींहुआ किंचित्मात्रभीकर्म नहींकरताहूं याप्रकारकीअध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं तिनेदेहइंद्रियादिकोंविषे ताकर्मकेअभावका आरोपणकरयाजावैहै ॥ ऐसे देहइंद्रियादिकोंविषे आरोपणकरयाजो व्यापारकीउपरामतारूप अकर्महै ताअकर्मविषे जोपुरुष तिनेदेहइंद्रियादिकोंके सर्वदा व्यापारवन्त्वरूप वास्तवस्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतौ कर्मकूंदेखैहै अर्थात् ताआरोपित अकर्मविषे कर्मनिवृत्तिहैनामजिसका ऐसाजोप्रयत्नरूपव्यापारहै जिसकूंनिग्रहभीकहैहैं ताप्रयत्नरूपकर्मकूं जोपुरुषदेखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशाविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं तथा आकाशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेनक्षत्रहैं तिनपुरुषोंविषे तथानक्षत्रोंविषे यद्यपि दूरत्वदोषतैंतागमनरूपक्रियाकाअभाव प्रतीतहोवैहै तथाथि तेपुरुष तथानक्षत्र वास्तवतैं तागमनरूपक्रियावालेहीहैं ॥ तैसेतूष्णींस्थितहुआ मैं किंचित्मात्रभीनहींकरताहूं याप्रकारकी अध्यासरूपप्रतीतिके बलतैं यद्यपि तिनेदेहइंद्रियादिकोंविषे ताव्यापाररूपकर्मकाअभाव प्रतीतहोवैहै तथापि तेदेहइंद्रियादिक वास्तवतैं ताकर्मवालेहीहैं ॥ और उदासीनअवस्थाविषेभी मैं उदासीनहुआस्थितथा इसप्रकारकाअभिमानही एककर्महै इति ॥ इसप्रकार कर्मविषेअकर्मकूं देखणेहारा तथा अकर्मविषे कर्मकूं देखणेहारा जोपरमार्थदर्शीपुरुषहै सोपुरुषही सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथासोपुरुषही योगयुक्तहै तथासोपुरुषही सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ इहां बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्वयातीनधर्मोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तापरमार्थदर्शीपुरुषकीस्तुति कथनकरीहै तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याप्रथमपादकरिकै श्रीभगवान्नैं कर्मका तथाविकर्मका वास्तवस्वरूप दिखाया ॥ जिसकारणतैं कर्मशब्द विहितकर्म तथानिषिद्धकर्म दोनोंकाही वाचकहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) याद्वितीयपादकरिकै श्रीभगवान्नैं अकर्मका वास्तवस्वरूप दिखायाइति ॥ यातैं हेअर्जुन! जो तूं यहमानताहै ॥ यहसर्वकर्म बंधकेहेतुहैं ॥ यातैं तेकर्म हमारेकूं करणे योग्यनहीं है ॥ किंतु हमारेकूं तूष्णींभावतैंही सुखपूर्वकस्थितहोणायोग्यहै ॥ सोयहतुम्हारामानणा मिथ्याहीहै ॥ काहेतैं मैं कर्मोंकाकर्ताहूं याप्रकारका

तैंरहितहोइकै जोतूष्णींस्थितहोणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ ताअकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुम्हारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकावास्तवस्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ इहां (गहनाकर्मणोगतिः) यावचनविषेस्थितजो कर्मशब्दहै सोकर्मशब्दविकर्म अकर्म यादोनोंकाभीउपलक्षकहै ॥ अर्थाततताकर्मशब्दकरिकै कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकाग्रहणकरणा ॥ और (कर्मणः विकर्मणः अकर्मणः) यातीनोंपदोंतैंउत्तर तत्त्वं इस पदका अध्याहारकरणा ॥ तथा (बोद्धव्यम्) यातीनोंपदोंतैंउत्तर अस्ति यापदका अध्याहारकरणा ताकरिकै (कर्मणस्तत्त्वंबोद्धव्यमेस्ति) इसप्रकारकेतीनवाक्यसिद्धहोवैंहैं ॥ तहां कर्मोंकाभीवास्तवस्वरूप तुम्हारेकूं जानणेयोग्यहै इसप्रकारका तिनवाक्योंकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! कर्म विकर्म अकर्म या तीनोंका जोवास्तवस्वरूप हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ सो कर्मादि तीनोंकावास्तवस्वरूप किसप्रकारकाहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् तिनकर्मादिकोंकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ कर्मणि । अकर्म । यः । पश्येत् । अकर्मणि । च । कर्म । यः । सः । बुद्धिमान् । मनुष्येषु । सः । युक्तः । कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूं देखैहै तथा जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूं देखैहै सोपुरुषही सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथा सोपुरुषही योगयुक्त है तथा सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! देह इंद्रिय बुद्धि आदिकोंका जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित व्यापारहै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्ध व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै सोकर्म वास्तवतैंतौ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेहीरहैहै असंगआत्माविषे सोकर्म रहैनहीं ॥ तौभी सोव्यापाररूपकर्म (अहंकरोमि) इसधर्माध्यासरूपप्रतीतिके बलतैं आत्माविषे आरोपणकऱ्याजावैहै ॥ जैसे नदीकेतीरविषेस्थितजेवृक्षहैं तिनवृक्षोंविषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाहैनहीं तथापि नौकाविषेस्थितपुरुष तानौकाकेचलणे करिकै तिनवृक्षोंविषे गमनरूपक्रियाकाआरोपणकरैं हैं ॥ तैसे शास्त्रविचारतैं रहितमूढपुरुष अक्रियआत्माविषे तादेहइंद्रियादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरैं हैं ॥ ताआत्माविषेआरोपितकर्मविषे जोपुरुष आत्माकेअकर्त्तास्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मके अभावकूंही देखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नौकाविषेस्थितपुरुषोंनैं यद्यपि तीरस्थवृक्षोंविषे गमनरूपकर्मकाआरोपणकरीताहै तथापि वास्तवते तिनवृक्षोंविषे तागमनरूपकर्मकाअभावहीहै ॥ तैसे मूढपुरुषोंनैं यद्यपि अक्रियआत्माविषे तादेहादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरीताहै ॥ तथापि ताअक्रिय आत्माविषे वास्तवतैं तिनकर्मोंकाअभावहीहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूंदेखैहै इति ॥ और सत्त्वादितीनगुणोंवालीमायाकापरिणामहोणेतैं

और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ नहींविधानकरयाहोवै ताअर्थकानाम अकर्म है ।। इसप्रकार केईकपंडितपुरुष ताकर्मअकर्मकास्वरूपकथनकरैं हैं ।। और दूसरेकेईकपंडितजनतौ यहकहैं हैं श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकरयाहोवै ताअर्थकानाम कर्म है ।। और तिनकर्मोंकेसंन्यासकानाम अकर्म है ।। और दूसरेकेईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ यहकहैं हैं गमनआगमनादिकक्रियावोंकानाम कर्म है ।। और तिनगमनादिकक्रियावोंतैंरहितहोइकै तूष्णीं स्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार ताकर्मअकर्मकेस्वरूपविषे बहुतप्रकारकाविवाद देखणेविषे आवताहै ।। यातैं कर्मशब्दकावाच्यार्थ कौनहै तथाअकर्मशब्दकावाच्यार्थ कौनहै इसप्रकारके अर्थविषेशास्त्रवेत्तापुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ।। अर्थात् ताकर्मअकर्मकेवास्तवस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ।। तिसकारणतैं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति ताकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं संशयकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरताहूं ।। शंका--हे भगवन् ! ताकर्मअकर्मकेजानणेकरिकै किस फलकीप्राप्तिहोवैहै ।। ऐसीअर्जुनकीशंकाहुए श्रीभगवान् ताकाफल कथनकरैं हैं (यज्ज्ञात्वाइति) हे अर्जुन ! जिसकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं यथार्थ जानिकै तूं इससंसारतैंमुक्तहोवैगा ।। अर्थात् इस संसारतैंमुक्तिही ताकर्मअकर्मज्ञानकाफलहै ।। यद्यपि (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे केवल कर्मफलहीहैतथापि तत्ते इसपदतैंआगे अकारनिकासिकै अकर्मकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! ताकर्मकास्वरूप सर्वलोकविषेप्रसिद्धहीहै ॥ यातैं मैंअर्जुनभी ताकर्मअकर्मकेस्वरूपकूं जानताहीहूं ॥ तहां देहइंद्रियादिकोंकाजो व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्म है ॥ और सर्वव्यापारोंतैंरहितहोइकै तूष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्म है ॥ ऐसे सर्वलोकोंविषेप्रसिद्ध कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे आपनैं दूसराक्याकहणाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू० श्लो०) कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यं चविकर्मणः ॥ अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाकर्मणोगतिः ॥ १७ ॥ कर्मणः । हि । अपि । बोद्धव्यम् । बोद्धव्यम् । च । विकर्मणः । अकर्मणः । च । बोद्धव्यम् । गहना । कर्मणः । गतिः ॥ १७॥ इतिपद० ॥ हे अर्जुन ! शास्त्रविहितकर्मका भी तत्त्व जानणे योग्यहै तथा निषिद्धकर्मकाभी तत्त्वजानणेयोग्यहै तथा अकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहै जिसकारणतैं कर्मविकर्म अकर्मका तत्त्व अत्यंतदुर्बोध्यहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो अर्थ है ताकानामकर्म है । ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुम्हारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै । जिसकारणतैं ताकर्मकेस्वरूपजानेतैंविना ताकर्मकाअनुष्ठान होइसकैनहीं । और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं निषेधकऱ्याजो अर्थ है ताकानाम विकर्म है । ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुम्हारेकूं अवश्यकरिकेजानणेयोग्यहै । जिसकारणतैं तानिषिद्धकर्मकेजानेतैंविना तानिषिद्धकर्मतैंनिवृत्तहुआजावैनहीं । औरसर्वव्यापार

अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूहीकर ॥ तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं तूं मतकर ॥ हे अर्जुन ! जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्तानहींहो वै तौ तूं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकर ॥ और जो कदाचित् तूं तत्त्ववेत्ताहो वै तौ तूं लोकसंग्रहकेवासतै तिनकर्मोंकूं कर ॥ सर्वप्रकारतैं तुम्हारेकूं तेकर्म करणेयोग्य हैं। शंका–हे भगवन् ! इसद्वापरयुगविषे पूर्व ययातियदुआदिकराजे कर्मोंकूंकरतेभये हैं याप्रकारकावचन आपनैं कथनकरथा ताकरिकैयहजान्याजावै है केवल इसद्वापरयुगविषेही तिनकर्मोंकेकरणेकाअधिकारहै अन्यत्रेतादिकयुगोंविषे तिनकर्मोंकेकरणेका अधिकारनहीं है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (पूर्वैःपूर्वतरंकृतमिति) हे अर्जुन ! केवल इसीद्वापरयुगविषेही पूर्व ययातिराजा यदुराजा आदिकराजे तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभये हैं किंतु इसयुगतैंपूर्व त्रेतादिकयुगोंविषे जनकादिकराजेभी इसआत्मदेवकूं अकर्त्ता अभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंनहीं करतेभये हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसयुगविषे तथादूसरेयुगोंविषे मुमुक्षु राजे तथातत्त्ववेत्ताराजे अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अथवा लोकसंग्रहकेवासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरतेभये हैं ॥ यातैं तिनराजावोंकीन्याईं तैंअर्जुनकूंभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्म अवश्यकरिकैकरणेचाहियें इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! क्या तिनकर्मोंविषे कोईसंशयभीहै जिसकरिकै आप (पूर्वैःपूर्वतरंकृतम्) यावचनकरिकै तिसकर्मकूं अत्यंतदृढ करतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकर्मविषे संशयहै याकारणतैंही तिसकर्मविषे बुद्धिमान् पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहो वै है या प्रकारका उत्तरकहै हैं ।

(मू. श्लो.) किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः॥तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्॥१६॥किम् । कर्म । किम् । अकर्म । इति । कवयः । अपि । अत्र । मोहिताः । तत् । ते । कर्म । प्रवक्ष्यामि । यत् । ज्ञात्वा । मोक्ष्यसे । अशुभात् ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! कर्म क्याहै तथा अकर्म क्याहै इस अर्थविषे बुद्धिमान्पुरुष भी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारण तैं तुम्हारताईं ताकर्म अकर्मकूं मैं कहताहूं जिसकूं जानिकरिकै तूं संसारतैं मुक्तहोवैगा ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! नौकाविषेस्थितजोपुरुषहै तिसपुरुषकूं तीरविषेस्थितगमनरूपक्रियातैंरहितवृक्षोंविषेभी गमनरूपक्रियाकाभ्रम देखणेविषेआवै है ॥ तथागमनरूपक्रियावालेपुरुषोंविषेभी दूरतैं तागमनक्रियाकेअभावकाभ्रम देखणेविषेआवै है यातैं वास्तवतैं सोकर्म क्यावस्तुहै ॥ तथा वास्तवततैं सोअकर्म क्यावस्तुहै ॥ इसप्रकारअर्थविषे बुद्धिमानपुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभये हैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः) याअर्धश्लोकका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जो अर्थ विधानकरयाहो वै ताअर्थकानाम कर्म है ॥

कर्मोंकूं करताहुआभीवास्तवतैं अकर्त्तारूपहीहूं ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणेविषे कर्त्तापणेकानिषेधकरिकै अब भोक्तापणेकाभी निषेधकरैंहैं (नमेकर्मफले स्पृहाइति) हे अर्जुन ! जैसे अज्ञानीजीवोंकूं कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे यह फल हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीतृष्णा होवै है ॥ तैसे मैंआप्तकामईश्वरकूं तिनकर्मोंके फलोंविषे तृष्णाहैनहीं ॥ तहांश्रुति (आप्तकामस्यकास्पृहाइति ॥ अर्थयह ॥ सर्वात्मदृष्टिकरिकै जिसपुरुषकूं सर्वपदार्थप्राप्तहुएहैं तिसपुरुषकानाम आप्तकामहै ॥ ऐसेआप्तकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभी किसीफलकीतृष्णाहोवैनहींइति ॥ तात्पर्ययह इसलोकविषे अज्ञानीजीवोंकूं जो कर्म बंधायमानकरैंहैं ॥ सो मैं इनकर्मोंका कर्त्ताहूं तथा मैं इनकर्मोंकेफलकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारका कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंकरिकैहीं बंधायमानकरैहैं ॥ कर्तृत्वअभिमान तथाफलकी तृष्णा यादोनोंतैंविनातेकर्म किसीकूंभी बंधायमानकरतेनहीं ॥ और सोकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यहदोनों मैंआप्तकामईश्वरविषेहैंनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्म मैंईश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसप्रकार कर्मोंकूंकरताहुआभीमैंईश्वर वास्तवतैं अकर्त्तारूपहीहूं ॥ शंका—हे भगवन् ! इसप्रकार आपईश्वरविषे अकर्त्ता पणा तथा अभोक्तापणा सिद्धहुएभी ताकेजानणेकरिकै हमलोकोंकूं कौनफलप्राप्तहो वै है ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (इतिमांयोऽभिजानातिइति) हे अर्जुन ! इस प्रकार जोकोईअन्यपुरुषभी अकर्त्ताअभोक्तामैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है ॥ सोपुरुषभी हमारेन्याईं तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहो वै नहीं ॥ अर्थात् अकर्त्ता आत्माकेज्ञानकरिके सोपुरुषभी तिनकर्मों तैंमुक्तहीहो वै है इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं मैं कर्त्ता नहींहूं तथामेरेकूं कर्मों केफलकी तृष्णाभीनहीं है याप्रकारके अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके ज्ञानतैं यह पुरुष तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोतानहीं ॥ तिसकारणतैं पूर्वअनेकमहानपुरुष आत्मा कूं अकर्त्ताअभोक्ताजानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकरतेभये हैं तिसप्रकार तूं अर्जुनभीतिनकर्मोंकूंहींकर ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥ कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैः पूर्वतरंकृतम् ॥१५॥ एवं । ज्ञात्वा । कृतं । कर्म । पूर्वैः । अपि । मुमुक्षुभिः । कुरु । कर्म एव । तस्मात् । त्वं । पूर्वैः । पूर्वतरं । कृतं ॥१५॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! इसप्रकार आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकैपूर्व ले मुमुक्षुवोंनैं भी कर्मही करचाहै तथा तिसतैंभीपूर्व मुमुक्षुवों नैं युगांतरविषे सोकर्मही करचा है तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी ताकर्मकूं ही कर ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसद्वापरयुगविषे पूर्व मोक्षकीइच्छावाले जे ययातिराजा यदुराजा इत्यादिकराजाहोतेभयेहैं ॥ तेराजाभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहीं करतेभये हैं ॥ तिनकर्मोंकापरित्यागकरिकै तेराजा तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं नहींकरतेभये हैं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी आत्माकूं

व्यवहारदृष्टिकरिकै ताविषमस्वभाववालेच्यारिवर्णोंका करताहूं ॥ तथापि परमार्थदृष्टिकरिकै तूं हमारेकूं अकर्त्तारूपही जान ॥ तथा अव्ययरूपजान अर्थात् निरहंकारताकरिकै अबाधितमहिमावालाजानइति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (गुणकर्मविभागशः) यावचनविषे गुणकर्म विभागशः यहदोपदअंगीकारकरिकै यह अर्थकथनकरयाहै ॥ च्यारिवर्णोंके जेहितरूपहोवैं तिन्होंकानामचातुर्वर्ण्यहै ॥ ऐसेजे द्रव्यदेवतादिकगुणहैं तथाअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तेच्यारिवर्णोंकेहितरूपगुणकर्म मैंपरमेश्वरनैं (विभागशःसृष्टं) क्या साधारणअसाधारणभेदकरिकै उत्पन्नकरेहैं तहां दानजपादिककर्म सर्ववर्णोंका साधारणधर्म हैं ॥ और अग्निहोत्र वेदाध्ययन संध्योपासन इत्यादिककर्मतौ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णकेही हैं ॥ शूद्रके तेअग्निहोत्रादिककर्महैंनहीं ॥ तिन तीनवर्णोंविषेभी बृहस्पतिसवादिककर्म ॥ केवल ब्राह्मणकेही असाधारणधर्महैं अन्यक्षत्रियादिकोंकेतेधर्मनहींहैं ॥ और राजसूयादिकर्म केवल क्षत्रियकेहीं असाधारणधर्महैं ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहीं हैं ॥ और वैश्यस्तोमादिककर्म केवल वैश्यकेही असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवाकरणी इत्यादिककर्म केवल शूद्रकेही असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंकेतेधर्मनहींहैं ॥ इसप्रकार तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंकेभेदहुए तिनकर्मोंविषे अंगभूतद्रव्यदेवतादिकगुणोंकाभी भेदहोवैहै इसप्रकार तिनच्यारिवर्णोंके गुण तथाकर्म मैंपरमेश्वरनैंही साधारणअसाधारणरूपकरिकै उत्पन्नकरेहैं यातैं जैसे पुत्रकीप्रसन्नताकरिकै पिताकीप्रसन्नताहोवैहै ॥ तैसे तिनइंद्रादिक देवतावोंकीप्रसन्नताकरिकै मैंपरमेश्वरकीभी प्रसन्नताहोवैहै ॥ इसप्रकार प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी तिसतिसकर्मकेफलकी प्राप्तिकरौंहूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! पूर्वआपनैं कर्तारूपमैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूपजान याप्रकारकावचन कथनकरया सो कर्त्ताकूं अकर्त्तारूपता किसप्रकार संभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैंहैं ।

(मू. श्लो.) नमांकर्माणिलिंपंतिनमेकर्मफलेस्पृहा ॥ इतिमांयोभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते ॥ १४ ॥ न । माम् । कर्माणि । लिंपंति । न । मे । कर्मफले । स्पृहा । इति । माम् । यः । अभिजानाति । कर्मभिः । न । सः । बध्यते ॥१४॥ इतिपद०॥ हे अर्जुन ! मैंपरमेश्वरकूं यहकर्म नहीं लिंपायमानकरैंहैं तथाहमारेकूं ताकर्मकेफलविषे तृष्णाभी नहींहै इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं जानताहै सोपुरुषभी कर्मोंकरिकै नहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १४ ॥

टीका । हे अर्जुन ! निरहंकारताकरिकै कर्तृत्वअभिमानतैंरहित जोमैंभगवानूहूं ॥ तिसहमारेकूं यह जगत्केउत्पत्ति स्थितिआदिककर्म नहीं लिपायमानकरते ॥ अर्थात् जैसे अन्यअज्ञानीपुरुषोंकूं यहकर्म देहकीआरंभताकरिकैबंधायमानकरैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकूं तेकर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ यातैं व्यवहारदृष्टिकरिकै मैं

आत्मज्ञानका जोमोक्षरूपफलहै तो सोफलहै ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंविना प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञानकाफल आपणीप्राप्तिविषे अंतःकरणकेशुद्धिकीअपेक्षा अवश्यकरेंहै ॥ और साअंतःकरणकीशुद्धि अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकैहोवैहै ॥ यातैं कर्मकेफलकीन्याईं सोज्ञानकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां मनुष्य लोकविषे सोकर्मकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवै है यावचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थसूचनकऱ्या ॥ इसमनुष्यलोकतैंभिन्न दूसरेलोकोंविषेभी वर्णआश्रमके धर्मोंतेभिन्न अन्यकर्मोंकेकरणैं तैं फलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैइति ॥ यातैं हेअर्जुन ! जिसकारणतैं मोक्षतैंविमुखहुए तेसकामपुरुष तिसतिसतुच्छफलकीप्राप्तिवासते अन्यइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेंहैं ॥ तिसकारणतैं जैसे मुमुक्षुजन साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीपूजनकरेंहैं ॥ तैसे तेसकामपुरुष साक्षात् मैंपरमेश्वरकापूजन करतेनहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सकामताके तथानिष्कामताके भेदकरिकै सर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकऱ्या ॥ अब शरीरके आरंभकरणेहारे सत्त्वादिकगुणोंकीविषमताकरिकैभीतिनसर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः ॥ तस्यकर्त्तारमपिमांविद्ध्यकर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ चातुर्वर्ण्यम् । मया । सृष्टम् । गुणकर्मविभागशः । तस्य । कर्त्तारम् । अपि । माम् । वि द्धि । अकर्त्तारम् । अव्ययम् ॥ १३ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन! मैंपरमेश्वरनैं गुणकर्म विभागकरिकै च्यारिवर्ण उत्पन्नकरेंहैं तिसच्याविवर्णका कर्त्तारूप भी मैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूप तथाअव्ययरूप जान ॥ ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! मैंईश्वरने सृष्टिकेआदिकालविषे सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै तथाशमदमादिककर्मोंकेभेदकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण भिन्न भिन्नकरिकै उत्पन्नकरे हैं ॥ तहां सत्वगुणहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेतौ तासत्त्वगुणकेकार्यरूप शमदमादिकही कर्महै और सत्त्वगुणउनसर्जनरजोगुणहै प्रधानजिन्होंविषे ऐसेजेक्षत्रिय हैं तिनक्षत्रियोंकेतौ तासत्त्वगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप शौर्य तेजआदिकही कर्म हैं ॥ और तमोगुणउपसर्जनरजोगुणहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजेवैश्यहैं ॥ तिनवैश्योंकेतौ तातमोगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप कृषिवाणिज्यादिकही कर्म हैं ॥ और तमोगुणहैप्रधानजिन्होंविषे ऐसेजेशूद्र हैं ॥ तिनशूद्रोंकेतौ तिसतमोगुणकाकार्यरूप त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवादिकही कर्महैं ॥ इहां उपसर्जननाम गौणका है ॥ इसप्रकार गुणोंकेभेदकरिकै यहच्यारिवर्ण स्थितहैं ॥ शंका—हे भगवन् इसप्रकार ! गुणकर्मकेभेदकरिकै विषमस्वभाववाले च्यारिवर्णोंकूंउत्पन्नकरणेहारे आपईश्वरविषे वि षमतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहैं (तस्यकर्तारमपिमांविद्ध्यकर्तारमव्ययमिति) हे अर्जुन ! यद्यपि मैं परमेश्वर

करिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और ज्ञानवान्भक्तोंकूंतौं मोक्षकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरौं ॥ अन्यवस्तुकीकामनावालेभक्तजनकूं अन्यवस्तुकीप्राप्ति मैंकरतानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषोंके भावनाकेअनुसार फलकेदेणेहारेमैंपरमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! यद्यपि आप लोकोंकेभावनाकेअनुसारही तिसतिसफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ तथापि आपणे भक्तजनोंकेप्रतिही ताफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूं आप तिस फलकीप्राप्ति करतेनहीं ॥ यातैं आपकेविषे सोविषमतादोष तथा निर्दयतादोष तिसीप्रकारस्थितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहे हैं (ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशःइति) हे अर्जुन ! जेकर्मोंकेअधिकारीमनुष्य इंद्र अग्नि सूर्य इत्यादिकदेवतावोंकाभी भजनकरे हैं ॥ तेमनुष्यभी मैंअंतर्यामीवासुदेवकेहीं ज्ञानकर्मरूपमार्गकूं अनुसरणकरैं हैं ॥ अर्थात् तेमनुष्यभी मैंपरमेश्वरकाहीभजनकरैं हैं ॥ और तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी मैंपरमात्मादेवहीं तिसतिस इंद्रादिरूपकरिकै तिसतिस फलकीप्राप्तिकरौंहूं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं (फलमतउपपत्तेः) इस सूत्रकरिकै श्रीव्यासभगवान्भीकथनकरताभयाहै ॥ इसीअर्थकूं (येप्यन्यदेवताभक्ताः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान् आपही आगे स्पष्टकरिकैकथनकरैंगे ॥ तथा इसीअर्थकूं (इंद्रमित्रंवरुणमग्निमाहुः) इत्यादिकवेदकेमंत्रकथनकरैं हैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! इसप्रकारसे आपईश्वरहीं जोकदाचित्इंद्रादिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरणेहारेहोवो ॥ तौ तेसर्वजन साक्षात् आपपरमेश्वरकूंही किसवातै नहींभजतेहैं ॥ साक्षात आपईश्वरकूंछोडिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं किसवासतैंभजतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं ।

(मू. श्लो.) कांक्षंतःकर्मणांसिद्धिंयजंतइहदेवताः ॥ क्षिप्रंहिमानुषेलोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा ॥ १२ ॥ कांक्षंतः । कर्मणाम् । सिद्धिम् । यजंते । इह । देवताः । क्षिप्रम् । हि । मानुषे । लोके । सिद्धिः । भवति । कर्मजा ॥ १२ ॥ इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन ! इसलोकविषे कर्मोंके फलकी इच्छाकरतेहुए सकामपुरुष इंद्रादिकदेवताओंकूं पूजनकरैं हैं जिस कारणतैं इसमनुष्यलोकविषे तिनसकामपुरुषोंकूं कर्मजन्य फल शीघ्रही प्राप्तहोवै हैं ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जेपुरुष इसलोकविषे यज्ञादिकर्मोंके धनपुत्रादिकफलोंकीइच्छाकरैं हैं ॥ तेसकामपुरुषतौ इंद्र अग्नि सूर्य आदिकदेवतावोंकूंही पूजनकरैं हैं ॥ तेपुरुषनिष्कामहोइकै कदाचित्भी मैंपरमेश्वरका पूजनकरतेनहीं ॥ काहेतें जेपुरुष तिसतिसफलकीइच्छाकरतेहुए तिनइंद्रादिकदेवताओंका पूजनकरैं हैं अर्थात यज्ञादिककर्मोंकरिकैतिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं प्रसन्नकरैं हैं ॥ तिनसकामपुरुषोंकूं तिसतिसकर्मजन्यफलकीप्राप्ति इसमनुष्यलोकविषे शीघ्रहीहोवै है ॥ और

भयक्रोधहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालेजेपुरुषहैं ॥ पुनःकैसेहैं तेपुरुष (मन्मयाः) क्यामैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपआपणेआत्माकेसाथि अभेद करिकै साक्षात्कारकर्याहै जिनोने ॥ अथवा (मन्मयाः) क्यामैंएकपरमात्मादेवविषेही है चित्तजिनोंका ॥ पुनः कैसेहैं ते पुरुष (मामुपाश्रिताः) क्या अनन्य प्रेमभक्तिकरिकै मैंपरमात्मादेवकेही जेशरणकूंप्राप्तहूएहैं ॥ ऐसेअनेकशुकवामदेवादिकपुरुष ज्ञानरूपतपकरिकै सर्वपापोंतैंरहितहुए अर्थात् कार्यसहित अज्ञानरूप मलतैंरहितहुए हमारे सत्चित्आनंदस्वरूपभूतमोक्षकूं प्राप्तहोतेभये हैं ॥ अथवा (ज्ञानतपसापूताः) क्याज्ञानरूपतपकरिकै जीवन्मुक्तरूपवे पुरुष (मद्भावमागताः) क्यामैंपरमात्माविषयक रतिनामाप्रेमरूपभावकूं प्राप्तहोते हैं इसीअर्थकूंश्रीभगवान् आपही (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिकै आगेकथनकरैगा इति ॥ १० ॥ शंका—हे भगवन् ! जेपुरुष ज्ञानरूपकरिकै पवित्रहुएहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतौं आपके भावकूं प्राप्तहोवैहैं और जेपुरुषताज्ञानरूपतपकरिकै पवित्रनहींहूएहैं ॥ तेसकामपुरुष ताआपकेभावकूं नहींप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार निष्कामपुरुषोंकूंतौ आपणे भावकीप्राप्ति करणेहारा तथासकाम पुरुषोंकूं आपणे भावकीनहींप्राप्तिकरणेहारा जोआपईश्वरहो ॥ तिसआपकूं विषमता दोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहे हैं ।

(मू. श्लो.) येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् । ममवर्त्मानुवर्ततेमनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ ये । यथा । मां । प्रपद्यंते । तान् । तथा । एव । भजामि । अहं । मम । वर्त्म । अनुवर्त्तंते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः॥ ११॥इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ जेपुरुष जिस प्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं भजतेहैं तिनपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर तिसीप्रकार ही अनुग्रहकरूंहूं यहकर्मकेअधिकारीमनुष्य सर्वप्रकार करिकै मैंपरमेश्वरके भजनमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥ ११ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! इसलोकविषे दुःखकरिकैपीडितजेआर्त्तपुरुषहैं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे जे अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तथा आत्माके जाणणेकीइच्छावाले जेजिज्ञासुपुरुषहैं ॥ तथा तत्त्वसाक्षात्कारवाले जेज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनच्यारिप्रकारकेपुरुषोंविषे जेजेपुरुष सकामपणेकरिकै तथानिष्काम पणेकरिकै सर्वकर्मोंकेफलप्रदातामैंईश्वरकूं भजतेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसातिसमनवांछितफलकीप्राप्तिकरिकै मैंपरमेश्वरअनुग्रहकरूंहूं ॥ तिनभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर विपरीतफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तहां मोक्षकीइच्छातैंरहित जेआर्त्तभक्तहैं ॥ तिनआर्त्तभक्तोंकूंतौं तिनोंकेपीडाकीनिवृत्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं और मोक्षकी इच्छातैंरहित जेअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तिनअर्थार्थीपुरुषोंकूंतौं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेन दानेनतपसाऽनाशकेन ।) इसश्रुतिनैंविधानकर्‍येजोनिष्कामकर्महैं ॥ तिननिष्कामकर्मोंकूं करणेहारेजे जिज्ञासुजनहैं ॥ तिनजिज्ञासुभक्तोंकूंतौ आत्मज्ञानकी प्राप्तिक

टीका । हे अर्जुन ! नित्यसिद्धजों मैं सत्‌चित् आनंदघनहुं ॥ ऐसेमैं परमात्मादेवका आपनीलीलामात्रकरिके लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकी न्यांई जोजन्मकाअनुकरणमात्ररूप जन्महे ॥ तथा मैंनित्यसिद्धपरमेश्वरका वेदविहितधर्मकीस्थापनाकरिके जगत्‌कापारिपालनरूपजोकर्म है ॥ ते हमारे जन्म कर्म दोनो दिव्य हैं ॥ अर्थात् दूसरेप्राकृतपुरुषोंकूंकरणेविषेआवश्यकहैं केवल मैं ईश्वरकेहीं असाधारणधर्मरूपहैं ॥ ऐसेहमारे दिव्यजन्मकर्मदोनोंकूं जोपुरुष (अजोपिसन्नव्ययात्मा) इत्यादिकवचनोक्तरीतिसे तत्त्वतेजाने हे ॥ अर्थात् मूढपुरुषोंनेही श्रीभगवान्‌विषे मनुष्यत्वकीभ्रांतिकरकेइतरजीवोंकीन्यांई गर्भवासादिरूपजन्म आरोपणकऱ्याहे तथा आपणेस्वार्थवास्ते सोकर्म आरोपणकऱ्याहे ताआरोपित जन्मकर्मकूं वास्तवतैं शुद्धसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकेज्ञानतैं निवृत्तकरिके जन्मतैं रहितपरमेश्वरकाभी आपणीमायाकरिके लीलामात्रतैं लोकप्रसिद्धजीवोंके जन्मकीन्यांई जन्मका‌अनुकरणमात्र संभवे है ॥ तथा वास्तवतैंअकर्तापरमेश्वरकाभी दूसरेलोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवास्ते लोकप्रसिद्धजीवों केकर्मकीन्यांई कर्मकाअनुकरणमात्र संभवहोइसकेहे ॥ इसप्रकार जोपुरुष हमारेजन्मकर्मकूं वास्तवरूपतैंजानेहे ॥ तथा इसीप्रकार आपणेवास्तवस्वरूपकूंभीजानेहे ॥ सोपुरुष इसवर्त्तमानशरीका परित्यागकरिके पुनः दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष सत्‌चित् आनंदघनभैंभगवान्‌वासुदेवकूंही प्राप्तहोवे है ॥ अर्थात् सत्‌चित् आनंदरूप परमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानतै सोपुरुष इससंसारते मुक्तहो वे हैं इति ॥ ९ ॥ ❀ तहां पूर्वश्लोकविषे (मामेतिसोऽर्जुन) यहवचनकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वमुक्तपुरुषोंकेप्राप्तिकापदरूपकरिके परमपुरुषार्थ रूपताका तथाइसमोक्षमार्गकूं अनादिपरंपराकरिकेप्राप्तपणेका कथनकरे है ।

(मू. श्लो.) वीतरागभयक्रोधामन्मयामामुपाश्रिताः । बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः ॥ १० ॥ वीतरागभयक्रोधाः । मन्मयाः । माम् । उपाश्रिताः । बहवः । ज्ञानतपसा । पूताः । मद्भावम् । आगताः ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन रागभयक्रोधतैं रहित तथामेरेविषेचित्तवाले तथाहमारे शरणकूंप्राप्तहुए तथाज्ञानरूपतपकरिके पापोंतैंरहितहुए ऐसेबहुतपुरुष मेरेस्वरूपकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । तिसतिसस्वर्गादिकफलोंकेप्राप्तिकीजातृष्णाहे ताकानाम रागहे ॥ और ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकसर्वविषयोंकापरित्यागकरिके ज्ञानमार्गविषेस्थितहुए हमारा किसप्रकार जीवनहोवेगा याप्रकारकाजो त्रासहे ताकानाम भयहे ॥ और सर्वविषयोंका मूलतैंउच्छेदकरणेहाराजोज्ञानमार्ग है सोज्ञानमार्ग किसप्रकार हमारा हितहोवेगा किंतु हितनहींहोवेगा याप्रकारकाजोद्वेषहे ताकानाम क्रोधहे ॥ तेरागभयक्रोधतीनों विवेककरिके निवृत्तहुएहैं जिनपुरुषोंके तिनपुरुषोंकानाम वीतराग

परितोषकाकारणहोवैंगे जिसकरिके आपतिसीकालविषेहीं अवतारकूंधारणकरोहो यातैं आपका अवतार उलटा लो अनर्थकीप्राप्तिकरणेहाराहींहुआ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ।

(मू. श्लो.) परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥ त्राणाय । साधूनां । विनाशाय । च । दुष्कृतां । धर्मसंस्थापनाथाय । सभंवामि । युगे । युगे ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन धुपुरुषोंके रक्षणाकरणे वासतें तथा पापीपुरुषोंके नाशकरणेवासतैं तथा धर्मकेसंस्थापनकरणेवासतैं मैंपरमेश्वर युग युग अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! धर्मकीहानिकरिके हानिकूंप्राप्तहुए तथा निरंतरवेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित ऐसेजेवेदविहितपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे श्रेष्ठपुरुषहैं जे श्रेष्ठपुरुष आपणेप्राणोंकेनाशहुएभी आपणेधर्मकूंपरित्यागकरतेनहीं तिन श्रेष्ठपुरुषोंकानाम साधुहे ॥ ऐसेसाधुओंकेरक्षणकरणेवास्ते ॥ और अधर्मकीवृद्धि करिकैवृद्धिकूंप्राप्तहुए तथावेदमार्गकेविरोधी तथाशरीरमनवाणीकरिके सर्वदा वेदनिषिद्धपापकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेजे दुष्टपुरुषहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंका नाम दुष्कृतहै ॥ ऐसेदुष्कृतपुरुषोंका समूलतै नाशकरणेवासते मैंपरमेश्वर युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ का–हे भगवन् ! साधुपुरुषोंकारक्षण तथादुष्टपुरुषोंकाविनाश यादोनोंकूं आप किसप्रकारकरोहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्कहेहैं (धर्मसंस्थापर्यायइति) हे अर्जुन पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहुआजोअधर्महे ॥ ताअधर्मकीनिवृत्तिकरिके जोधर्मका सम्यक्स्थापनहै अर्थात् वेदमार्गकापरिरक्षणहै ताकाना धर्मस्थापनहै ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरणेवास्तेहीं मैंपरमात्मादेव अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरिकै साधुपुरुषोंका रक्षण तथा दुष्टपुरुषोंकाविनाशरि अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ याते हमाराअवतार किसीकूं अनर्थकीप्राप्ति करणेहारानहीं है इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

सो

(मू. श्लो.) जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्वतः॥त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन॥९॥जन्म । कर्म । च । मे दिव्यम् । एवम् । यः । वेत्ति । तत्वतः । त्यक्त्वा । देहम् । पुनः । जन्म । न । एति । मां । एति । सः । अर्जुन ॥ ९ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन ! जोपुरुष हमारे दिव्य जन्मकूं तथा कर्मकूं इसप्रकार यथार्थ जानेहे सोपुरुष इसदेहकूं परित्यागकरिके पुनः जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवेहै किंतु मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

कसाम् ॥ यन्मित्रंपरपानंदपूर्णब्रह्मसनातनम् ॥) अर्थयह ॥ इसकृष्णभगवान्कूं तूं सर्वभूतप्राणियोंका आत्मारूपजान ॥ ऐसासर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहुआभी
जोकृष्णभगवान् इसलोकविषे भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवास्तैं आपणीमायाकरिकै देहवालेजीवोंकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ किंवा व्रजभूमिविषेरहणेहारेजे नंदगोप
गोपियांहैंतिनसर्वोंकेअहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं ॥ जिसव्रजवासीलोकोंके यहपरमानंदपरिपूर्णसनातनब्रह्म कृष्णरूपकरिकै मित्रभावकूंप्राप्तहुआहैइति ॥ और कोईकपु
रुषतौ तिसपरमात्मादेवकूं नित्य निरवयव निर्विकार परमानंदरूपमानिकरिकैभीतापरमात्मादेवविषेअवयवअवयवीभाव वाच्यवहींअंगीकारकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकाक
हणा अत्यंत निर्युक्तिकहै इति ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! इसप्रकार सत्‌चित्‌आनंदघनरूपजोआपहो तआपका किसकालविषे तथाकिसप्रयो
जनवास्तैं देहवालेजीवकीन्याईं व्यवहारहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहे हैं ।

(मू. श्लो.) यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७

धर्मस्य । ग्लानिः । भवति । भारत । अभ्युत्थानम् । अधर्मस्य । तदा । आत्मानम् सृजामि । अहम् ॥ ७ । यदा । यदा । हि । इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन !

जिस जिसकालविषे धर्मकी हानि होवैहै तथा अधर्मकी वृद्धिहोवैहै तिसकालविषे मैंपरमात्मादेव देहकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ इतिप० ॥

टीका । हे अर्जुन ! वेदकरिकैविधानकऱ्याहुआ जो प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपधर्महै ॥ जो धर्म कामनापूर्वककऱ्याहुआ इनप्राणियोंके स्वर्गादिरूपअभ्युदयका साधनहोवै है ॥
तथा जोधर्म निष्कामकऱ्याहुआ इनप्राणियोंके मोक्षरूपनिःश्रेयसका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र या च्यारिवर्णोंका तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ
वानप्रस्थ संन्यास या च्यारिआश्रमोंका अभिव्यंजकहै अर्थात् जनावणेहाराहै ॥ तहांश्रद्धाभक्तिपूर्वक अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं करणा याकानाम प्रवृत्तिरूपधर्म है ॥
और परस्त्रीगमनादिकनहींकरणे याकानाम निवृत्तिरूपधर्महै ॥ ऐसेधर्मकी जिसजिसकालविषेहानिहोवै है ॥ और वेदकरिकै निषिद्धकऱ्याहुआ तथानानाप्रकारके
दुःखोंकासाधनरूप तथाधर्मकाविरोधी ऐसाजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकीजिसजिसकालविषे वृद्धिहोवैहै ॥ तिसतिसकालविषे मैंपरमात्मादेव आपणेदेहकूंसृजताहूं ॥
अर्थात् नित्यसिद्धआपणेदेहकूं मायाकरिकै रचेहुएकीन्याईं दिखावताहूं ॥ ईहां (हे भारत !) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्ने यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥
भरतवंशविषेजोउत्पन्नहोवैहै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नामज्ञानकाहै ताकेविषे जोरतहोवै अर्थात् ज्ञानविषेजोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसे
भारतनामवालातूंअर्जुन धर्मकीहानिकूं सहारणेविषेसमर्थनहीं है इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! साधर्मकीहानि अधर्मकीवृद्धि यहदोनों आपके

इसआपकेशरीरविषे किसवास्तै प्रतीतहोते हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहे हैं (आत्ममाययाइति) हे अर्जुन ! हमारे विषे जेमनुष्यत्वादिकधर्म प्रतित होवै हैं ॥ तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेकोईवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु लोकों ऊपरिअनुग्रहकरणेवास्तै हमारी मायाकरिकैही तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेप्रतीतहो वै हैंइति ॥ यह वार्त्ता मोक्षधर्मविषेभी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (मायाह्येषामयासृष्टायन्मांपश्यसिनारद ॥ सर्वभूतगुणैर्युक्तंनतुमांद्रष्टुमर्हसि ॥) अर्थयह ॥ हे नारद ! जिसशरीरविशिष्टमेरेकूं तूंइनचर्मक्षुवोंकरिकैदेखताहै ॥ सोयहशरीर हमनै मायाकरिकैरच्याहै ॥ और कारणमायारूपशरीरवालाजोमैंहूं तिसहमारेकूं तूं इनचर्मचक्षुवोंकरिकै देखणेकूंसमर्थनहीं है इति ॥ तहांअनेकशक्तियोंवाला तथामायानामवाला ऐसाजो नित्यकारणउपाधि है ॥ सोमायारूपकारणउपाधिहीं परमेश्वरका देहहै ॥ यह भगवान्भाष्यकारों कामत कथनकरचा ॥ और दूसरेकईशास्त्रवालेतौ परमेश्वरविषे देहदेहीभावकूंमानतेनहीं ॥ किंतु जो सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेव परिपूर्ण निर्गुण परमात्माहैं सोईहीं तापरमेश्वरका शरीरहै ॥ दूसराकोईभौतिकशरीर तथामायिकशरीर तापरमेश्वरकाहैनहींइति ।। तहांश्रुति (सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितः स्वेमहिम्नि ।) अर्थयह ।। हेभगवन् ! सोपरमात्मादेव किसविषेस्थितहै ऐसीशंकाकेहुए ।। सोपरमात्मादेव आपणे सत्चित् आनंदरूपमहिमाविषेहीं स्थितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तिसपरमात्मादेवकी आपणेस्वरूपविषेही स्थितिकथनकरी है किसीमायिकशरीरविषे तथाभौतिकशरीरविषे स्थितिकथनकरीनहींइति ॥ इसपक्षविषेतौ इसश्लोककी इसप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ (आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ॥ अविनाशीवाअरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा ।) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांईसर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै ॥ हेमैत्रेयी यह आत्मादेवस्वरूपतैंभी नाशतैंरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशप्रयुक्तनाशतैंभी रहितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणोंतैं मैंपरमात्मादेव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहुआभी तथा सर्वजगत्काप्रकाशहुआभी तथा सर्व जगत्काकारणरूपमायाका अधिष्ठानहोणेतें सर्वभूतोंकाईश्वरहुआभी (स्वांप्रकृतिं) आपणास्वरूपभूत सत् चित्आनंदघन एकरस स्वभावरूपप्रकृतिकूं (अधिष्ठाय) क़ाआश्रण करिकै अर्थात् ता आपणेस्वरूपविषेस्थितहोइकै (संभवामि) क्या देहदेहीभावतैंविनाहीं लोकप्रसिद्ध देहवालेजीवोंकीन्यांई यहपरमेश्वर देहवालाहै याप्रकारकेव्यवहारकाविषयहोवूंहूंइति ॥ शंका— हे भगवन् ! मायिकदेहतैं तथाभौतिकदेहतैं रहित सत्चित्आनंदघनजोआपहो ॥ ऐसेआपविषे इसमनुष्यदेहत्वकीप्रतीति किसवास्तै होती है ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहे हैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन ! देहदेहीभावतैंरहित जोमैं नित्य शुद्ध सत् आनंदघन भगवान् वासुदेवहूं ॥ ऐसेमैंपरमात्मादेवविषे जोदेहदेहीरूपकरिकैप्रतीति है ॥ सामायामात्रही है ॥ वास्तवतैं हमारेविषे सोदेहदेहीभावहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषभी अथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोप्यत्रदेहीवाभातिमायया ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यंनंदगोपव्रजौ

जिसजीवकरिकैयुक्त जिसभौतिकशरीरविषे ताईश्वरनैं प्रवेशकऱ्याहै ॥ तिसशरीरकरिकै तिसजीवकूं सुखदुःखकाभोग होताहै अथवा नहींहोताहै ॥ तहां प्रथम पक्ष जोअंगिकारकरो तौ अंतर्यामीरूपकरिकै ताईश्वरकाप्रवेश सर्वशरीरोंविषे विद्यमानहै ॥ यातैं ताईश्वरके शरीरविशेषकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरो तौ सो शरीर ताजीवका नहींसंभवैगा ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ईश्वरका भौतिकशरीर संभवतानहीं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै अंगीकारकरेहैं (अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्इति) हे अर्जुन ! अपूर्वदेहकाग्रहणरूपजोजन्महै ताजन्मतैंभी मैंकृष्ण भगवान् रहितहूं ॥ तथा पूर्वदेहकापरित्यागरूपजो व्ययहै तामरणरूपव्ययतैंभी मैंकृष्णभगवान् रहितहूं ॥ तथाब्रह्मातैंआदिलैकेस्तंबपर्यंत जितनैंकीभूतहैं तिनसर्व भूतोंका मैंकृष्णभगवान् ईश्वरहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे धर्मअधर्मकावशपणा निवृत्तकऱ्या ॥ जिसकारणतैं जन्ममरणवालापराधीनजीवहीं ताधर्मअधर्मकेवशहोवैहै ॥ स्वतंत्रईश्वर ताधर्मअधर्मकेवशहोवैनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! ऐसेजन्ममरणादिकविकारोतैंरहित आपईश्वरकूं देहकाग्रहण किसप्रकार संभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै समाधानकरेहै (प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवामिइति) हे अर्जुन ! यद्यपि वास्तवतैं मैंकृष्णं भगवान् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहूं ॥ तथापि मैं परमेश्वरकीउपाधिरूप तथाविचित्रअनेकशक्तियोंवाली तथाअघटितघटनापटीयसीनामवाली तथासत्वर जतम या त्रिगुणरूप ऐसी जा मायाप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिकूं आपणेचिदाभासद्वारा वशकरिकै तिसमायाकेपरिणामविशेषोंकरिकेहीं देहवालेकीन्याईं तथाजन्मेहूएकीन्याईं प्रतीतहोताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्पत्तितैंरहितहोणेतैं अनादिरूपजामायाहै ॥ सा अनादिमायाहीं मैंपरमात्मादेवकी उपाधिहै ॥ सामाया व्यवहारकालपर्यंत स्थायीहोणेतैंनित्यहै ॥ तथा मैंपरमात्मादेवविषे सर्व जगत्केकारणपणेकासंपादकहै तथा मैंपरमात्मादेवकीइच्छाकरिकैहीं सामाया प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीमायाहीं विशुद्धसत्वरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवकी मूर्त्तिहै ॥ तामायारूपमूर्त्तिविशिष्टमैंपरमात्मादेवविषे जन्मतैंरहितपणा तथामरणतैंरहितपणा तथासर्वभूतोंकाईश्वरपणा संभवहोईसकेहै ॥ यातैं ताशुद्धसत्त्वप्रधानमायारूपानित्यदेहकरिकेहीं मैंपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेतौ सूर्यकेप्रति तथाइदानींकाल विषे तैंअर्जुनकेप्रति यहज्ञानयोग उपदेशकरताभयाहूं ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी पूर्वउक्तदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आकाशशरीरंब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ आकाशहैनामजिसका ऐसाजो मायारूपअव्याकृतहै ॥ ताअव्याकृतरूपशरीरवाला ब्रह्महैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मका मायाहींशरीर कथन कऱ्याहै ॥ तामायारूपशरीरकरिकै मैंपरमात्मादेवकी जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथाप्रलयकालविषे सर्वदा स्थितिसंभवहोइसकेहै इति ॥ ॥ शंका—हे भगवन् ! जो कदाचित् आपका केवलमायाहीं शरीरहोवैं ॥ भौतिकशरीर होवैनहीं ॥ तौ भौतिकशरीरकेधर्मजेमनुष्यत्वादिकहैं तेमनुष्यत्वादिकधर्म

तीतहुए अनेकजन्म ता ईश्वरके कैसेसंभवैंगे किंतु नहींसंभवैं गे ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोकदाचित् आप जीवहो ॥ तौ हमोरेन्याईं आपविषेसर्वज्ञतानहींसंभवैंगी ॥ और जोकदाचित् आप ईश्वरहो ॥ तो आपविषे देहकाग्रहणरूपजन्मनहींसंभवैगाइति ॥ ऐसीअर्जुनकीदोनोंशंकावोंकूंनिवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् पूर्वकथनकरचेहुए अनित्यत्वपक्षकेभीपरिहारकूं कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ अजः । अपि । सन् । अव्ययात्मा । भूतानाम् । ईश्वरः । अपि । सन् । प्रकृतिम् । स्वाम् । अधिष्ठाय । संभवामि । आत्ममायया ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! मैंकृष्णभगवान् जन्मतैंरहित हुआ भी तथामरणतैंरहितहुआभी तथा सर्वभूतोंका ईश्वर हुआ भी आपणी मायाकूं आश्रयण करिकै ताआपणीमायाकरिकै जन्मवालाहोताहूं ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकाजोग्रहणहै ताकानाम जन्महै ॥ और पूर्वग्रहणकरचेहुए देहइंद्रियादिकोंका जोवियोगरूपमरणहै ताकानाम व्ययहै ॥ ता जन्ममरणदोनोंकूहीं नैयायिक प्रेत्यभाव यानामकरिकैकथनकरेहैं तिनजन्ममरणदोनोंकूं (जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच) इसवचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ तेजन्ममरणदोनोंइसजीवकूं धर्मअधर्मकेवशतैं प्राप्तहोवै हैं ॥ और सोधर्मअधर्मकावशपणा देहाभिमानीअज्ञानीजीवकूं कर्मोंकेअधिकारीपणेकरि केहीं होवै हैं ॥ तहां सर्वकेकारणरूपसर्वज्ञईश्वरकूं इसप्रकारका देहकाग्रहणरूपजन्म नहींसंभवताहै यह जो पूर्वकथनकरचाथा सोयथार्थहीं है काहेतैं जोकदाचित तिसईश्वरकाशरीर स्थूलभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तिनस्थूलभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौ जाग्रत् अवस्थाविषेस्थितअस्मदादिकविश्वनामाजीवोंकेतुल्यही सोईश्वरहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् सोईश्वरकाशरीर समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौ ताईश्वरविषे विराट्नामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्हींहोवै है ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तहां सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहुआभी सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौ ताईश्वरविषे स्वप्नअवस्थाविषेस्थितहमतैजसनामाजीवोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैंगी ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौ ताईश्वरविषे हिरण्यगर्भनामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भहीहोवै है ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप तथाकिसीभीजीवनैंनहींआश्रयणकऱ्याहुआ ऐसाभौतिकशरीर ताईश्वरकासंभवतानहीं इति ॥ और जेकोई यहकहै ॥ किसीजीवकरिकैयुक्त जोभौतिकशरीरहै ॥ ताभौतिकशरीरविषे भूतावेशकीन्याईं सोईश्वर प्रवेशकरै है ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहे तैं

कन्या परंतमशत्रुकाहै । ताशत्रुकूं भेददृष्टितैंकल्पनाकरिकै ताशत्रुकेहननकरणेविषे तूं प्रवृत्तहुआहै जैसे कोईमूढबालक आपणेशरीरकूंहीं पिशाचकल्पना करिकै ताकेहननकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै । यातैं विपरीतदर्शीहोणेतैं तूं अर्जुन भ्रांतहै इति । ईहां (हे अर्जुन ! हेपरंतप ।) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं आवरण विक्षेप यादोनोंविषे अज्ञानकीधर्मरूपताकथनकरी इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! जोकदाचित् पूर्वव्यतीतहुए आपणेअनेकजन्मोंकूं आप स्मरणकरतेहो तौ आपभी जातिस्मरनामा कोई जीवविशेष होवैंगे काहेतैं जातिस्मरयोगीपुरुषोंकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै दूसरेजन्मोंकाज्ञानभी संभवहोइसकताहै । जैसे वामदेवकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वअनेकजन्मोंका स्मरणहोताभयाहै । तहां सोवामदेव माताकेउदरविषे स्थितहोइकै याप्रकारकावचन कहताभयाहै । हेअधिकारीजनो मैंवामदेव जीवहुआभी पूर्व मनुहोताभयाहूं तथासूर्यहोताभयाहूं तथाकक्षीवान्ऋषि होताभयाहूंइति । इस प्रकार सोवामदेवनामजीव सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वलेअनेकजन्मोंकूं स्मरणकरताभयाहै तिनजन्मोंकेस्मरणकरिकै जैसे वामदेवविषै मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धहोतानहीं तैसे पूर्वजन्मोंकेस्मरणकरिकै आपविषेभी मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं ईश्वरभावतैंरहितहुआ तूंकृष्णभगवान् पूर्व सर्वज्ञसूर्यके प्रति सोज्ञानयोग किसप्रकार उपदेशकरताभयाहै किंतु सर्वज्ञसूर्यके प्रति आपकाउपदेश संभवतानहीं ॥ हेभगवन् ! जीवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा संभवतानहीं काहेतैं व्यष्टिउपाधिवालेकानाम जीवहै सोव्यष्टिउपाधिवालाजीव परिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तापरिच्छिन्नजीवका भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधहीनहींसंभवताहै ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधतैंविना तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ हे भगवन् ! व्यष्टिउपाधिवालेजीवकीक्यावार्त्ता है ॥ परंतु समष्टिउपाधिवालाजोविराट्है तथासमष्टिउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिनदोनोंकूंभी सर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं काहेतैं समष्टिस्थूलभूतरूपउपाधिवालाजोविराट्है तिसविराट्कूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेकार्यविषयकज्ञान संभवैहै तथापि ताविराट्कूं सूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथा मायाकेपरिणामविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ इसप्रकार समष्टिसूक्ष्मभूतरूपउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भ है ताहिरण्यगर्भकूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथासूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ तथापि ताहिरण्यगर्भकूं तिनसूक्ष्मभूतोंकाकारणरूपमायाकेपरिणामरूप आकाशादिकसृष्टिक्रमादिकविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ यातैं विराट्विषे तथाहिरण्यगर्भविषेभीमुख्यसर्वज्ञतासंभवैनहीं तौ व्यष्टिउपाधिवालेजीवोंविषे सामुख्यसर्वज्ञताकैसे संभवैगी ॥ किंतु नहींसंभवैगी यातैं मायारूपकारणउपाधिवालाहोणेतैं भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाजोईश्वरहै सोमायाउपहितईश्वरहीमुख्यसर्वज्ञहै ॥ ऐसे जन्ममरणतैंरहित नित्य सर्वज्ञईश्वरविषेपुण्यपापकर्महैंनहीं ॥ यातैं ताईश्वरका प्रथमतौ जन्महोणाही संभवतानहीं तौ पूर्वव्य

स्मरणनहींहोवैगाइति ॥ और इसवर्तमानदेह करिकैही पूर्व सूर्यकेप्रति हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकऱ्या है यहदूसरापक्ष जोआप अंगीकारकरो सोभीसं भवतानहीं काहेतैं इसवर्तमानकालविषे वसुदेवपितातैं उत्पन्नभयाजो यहतुम्हारादेहहै सोयहदेह पूर्वसृष्टिकेंआदिकालविषेविद्यमानथानहीं ॥ यातैं इसवर्त्त मानदेहकरिकैभी आपका सूर्यकेप्रतिउपदेश संभवैनहीं यातैं यहअर्थसिद्धभया इसदेहतैं भिन्न दूसरेकिसीदेहकरिकैं तासृष्टिकेआदिकालविषे आपकोस्थितिकेसंभवहुएभी तादेहकरिकै अनुभवकरेहुएअर्थकाइसवर्त्तमानदेहविषे स्मरणनहींसंभवैगा ॥ और इसवर्त्तमानदेहकरिकै तास्मरणकीसिद्धिहुएभी सृष्टिकेआदिकालविषेइसवर्त्तमानदेहकीस्थितिसंभवतीनहीं ॥ इसप्रकार असर्वज्ञ अनित्यत्व यादोनोंहेतुवों करिकै अर्जुनके दोपूर्वपक्षसिद्धहोवैंहैं इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान् आपणेविषसर्वज्ञपणाकथनकरिकै प्रथमपूर्वपक्षके परिहारकूं कथनकरैं हैं।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानितव चार्जुन ॥ तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ॥ ५ ॥ बहूनि । मे । व्यतीतानि । जन्मानि । तव । च । अर्जुन । तानि । अहं । वेद ! सर्वाणि । न । त्वं । वेत्थ । परंतप ॥५॥ इतिप०॥हेअर्जुन!हमारे तथा तुम्हारे बहुत जन्म व्यतीतहोतेभयेहैं तिनं सर्वजन्मोंकू मैंकृष्णभगवान् जानताहूं हेपरंतप तूं तिनजन्मोंकू नहीं जानताहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन ! जैसे यहलोक सर्वदाविद्यमानसूर्यकाभी उदयमानैंहैं तैसे वास्तवतैंजन्मतैंरहितहुएभी मैंकृष्णभगवान्‌के लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकै लीला मात्रतैंदेहकाग्रहणरूप अनेकजन्म पूर्व व्यतीतहोतेभये हैं और आत्मज्ञानतैंरहितजोतूंअर्जुन है तिसतुम्हारेभी पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं देहकाग्रहणरूपअनेक जन्मपूर्व होतेभयेहैं ॥ इहां (तव) यहएकअर्जुनकावाचकपद दूसरेजवोंकाभी उपलक्षकहै अथवा (तव) यहपद एकजीववादकेअभिप्रायकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ हे अर्जुन ! तिनआपणेसर्वजन्मोंकू तथातुम्हारेसर्वजन्मोंकू तथाअन्यजीवोंके सर्वजन्मोंकू मैंसर्वज्ञसर्वशक्तिसंपन्नईश्वरही जानताहूं तूंआवृतज्ञानशक्तिवाला अज्ञानी अर्जुन तिनसर्वजन्मोंकू जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह । तूंअर्जुन अज्ञानदोषकेवशतैं जबी पूर्वव्यतीतहुए आपणेजन्मोंकूभी नहींजानता है तबी पूर्वव्यतीतहुए हमारे जन्मोंकू तथाअन्यजीवोंकेजन्मोंकूं तूं कैसेजानिसकैगा किंतु नहींजानिसकैगाइति ॥ इहां (हे अर्जुन !) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या शास्त्रविषे किसीवृक्षविशेषकूंभी अर्जुन यानामकरिकैकथनकरैंहैं ताअर्जुननामावृक्षकी ज्ञानशक्ति जैसे आवृतरहैहै तैसे तैंअर्जुनकीभी साज्ञानशक्तिआवृत होइरहीहै ॥ यातैं तिन आपणेजन्मोंकूं तथाहमारेजन्मोंकू तूं जानिसकतानहींइति ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचन

तुमने कदाचित्‌भी नहींकरणा । किंतु अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणा । जिसकरिके मेंब्रह्मविद्या फलकाहेतुहोवेंइति । इसश्रुतिका विस्तार तैंअर्थतो आत्मपुराणकेद्वितीयअध्याय विषे हम कथनकरिआयेहैं यातें इहां संक्षेपतैंकह्याहैइति ॥ ३ ॥ तहां शास्त्रविचारतैंरहितमूर्खलोकोंकूं वसुदेवके पुत्ररूपश्रीकृष्णभगवान्‌विषे मनुष्यत्वरूपहेतुकरिकै जो असर्वज्ञपणेकी तथाअनित्यपणेकी शंकाहोवे है ताशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते ताशंकाका अनुवादकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति प्रश्नकरै है ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ अपरंभवतोजन्मपरंजन्म विवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयांत्वमादौप्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥ अपरं । भवतः । जन्म । परं । जन्म । विवस्वतः । कथम् । एतत् । विजानीयां । त्वम् । आदौ । प्रोक्तवान् । इति ॥४॥ इतिप० ॥ हेभगवन्! आपका जन्मतो अबीहुआहै और सूर्यका जन्मतो पूर्वहुआ है यातें तूं कृष्णभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति यहज्ञानयोग कहतभयाहै यह वार्ता में अर्जुन किसप्रकार निश्चयकरों ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! आपकृष्णभगवान्‌का शरीरकाग्रहणरूपजन्मतो इसद्वापरकेअंतकालविषे वसुदेवकेगृहविषेहुआ है सोजन्मभी मनुष्यत्वजातिवालाहोणेतैं निकृष्टहै । और सूर्यकाजन्मतो सृष्टिकेआदिकालविषे हुआ है और सोसूर्यकाजन्म देवत्वजातिवालाहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ इहां (नजायतेम्रियतेवाकदाचित्) इत्यादिवचनोंकरिके पूर्व आत्माकेजन्मकाअभाव विस्तारतैं कथनकरिआये हैं यातें आत्माकेजन्मविषेतो अर्जुनकाप्रश्न संभवतानहीं किंतु स्थूलदेहके जन्मकेअभिप्रायकरिकैही अर्जुनका यहप्रश्नहैइति ॥ यातें हे भगवन् ! अबीइसकालविषेउत्पन्नहुआ तथा सर्वज्ञ मनुष्यतूं पूर्व सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए सर्वज्ञसूर्यकेतांई यहज्ञानयोग कथनकरताभया है ॥ इसअर्थकूं मैं अर्जुन अविरुद्धरूपकरिकै किसप्रकार निश्चयकरौं किंतु यहआपकेवचनकाअर्थ हमारेकूं अत्यंतविरुद्धप्रतीतहोताहै ॥ इहांअर्जुनका यहअभिप्राय है सूर्यकेप्रति जोआपनैं इसज्ञानयोगकाउपदेशकऱ्याथा सोइसवर्त्तमानदेहतैंभिन्न किसीदूसरेदेह करिकै उपदेशकऱ्याथा अथवा इसवर्त्तमानदेहकरिकैही उपदेशकऱ्याथा ॥ तहां प्रथमपक्ष जोआप अंगीकारकरो सोसंभवतानहीं काहेतैं पूर्वजन्म विषे अनुभवकऱ्याजोअर्थहै ताअर्थका उत्तरदूसरेजन्मविषे असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं जोकदाचित् पूर्वजन्मविषेअनुभवकरेहुएअर्थका दूसरेजन्म विषेभी असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोताहोवै तो मैं अर्जुनकूंभी पूर्व जन्मविषेअनुभवकरेहुएअर्थका इसजन्मविषे स्मरणहोणाचाहिये सोस्मरण हमारेकूंहोता नहीं॥ और तुम्हारेविषे तथा हमारेविषे मनुष्यरूपताकरिकै असर्वज्ञपणा तुल्यहीहै ॥ यातें हमारेन्यांईतुम्हारेकूंभी जन्मांतरविषेअनुभवकरेहुएपदार्थोंका इसजन्मविषे

त्रुवोंकानाम परहै ॥ तिनकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं जोपुरुष आपणे शौर्यताकरिकै अथवा बलवानविवेककरिकै अथवा तपकरिकै सूर्यकीन्याई तपाया । मानकरैहै तापुरुषकानाम परंतपहै ॥ अर्थात् जितइंद्रियपुरुषकानाम परंतपहै ॥ ऐसातुम्हारा जितइंद्रियपणा स्वर्गकीउर्वशी आदिकअप्सरावोंकीउपेक्षाकरणेतैं शास्त्रविषेप्रसिद्धही है ॥ ऐसाजितइंद्रियहोणेतैं तूंअर्जुन इसज्ञानयोगविषेअधिकारीहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच–

(मू. श्लो.) सएवायंमयातेद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः ॥ भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ सः । एवं । अयम् । मया । ते । अद्य । योगः । प्रोक्तः । पुरातनः । भक्तः । असि । मे । सखा । च । इति । रहस्यं । हि । एतत् । उत्तमम् ॥३॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! सोई ही यह अनादि ज्ञानयोग इसकालविषे मैंकृष्णभगवान्नैं तुम्हारेताई कथनकर्‍याहै जिसकारणतैं तूं अर्जुन हमारा भक्तहै तथा सखाहै जिसकारणतैं यहज्ञानयोग उत्तमहै तथा अत्यंतगोप्यहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! जोज्ञानयोग पूर्वहमनैं सूर्यादिकशिष्योंके प्रति उपदेशकरयाहुआभी इदानींकालविषे अधिकारी पुरुषोंकेअभावतैं विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभया है ॥ तथा जिसज्ञानयोगतैंविना इनपुरुषोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं सोईही गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैअनादि ज्ञानयोग इससंप्रदायकेविच्छेदकालविषे अतिस्नेहयुक्तमैंकृष्णभगवान्नैं तैंअर्जुनकेताई विस्तारतैं कथनकरयाहै ॥ दूसरे जिसीकिसीपुरुषकेताई हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकरयानहीं ॥ जिसकारणतैं तूं अर्जुन हमाराभक्तहै अर्थात् मेरेशरणागतकूंप्राप्तहुआ तूं मेरेविषेअत्यंतप्रीतिमान्है ॥ तथा तूंअर्जुन हमारासखाहै अर्थात् हमारे समानअवस्थावालाहै तथाहमारेविषेस्नेहवालाहै तथाहमारीसहायताकरणेहाराहै ॥ इसकारणतैं यहज्ञानयोग हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकर्‍याहै ॥ शंका–हेभगवन् यहज्ञानयोग हमारेतैंभिन्न दूसरेपुरुषोंकेप्रति आपनैं किसवासतै नहींकथनकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (रहस्यंह्येतदुत्तममिति) हेअर्जुन ! जिसकारणतैं यहज्ञानयोग अत्यंतउत्तमहै ॥ तथा अत्यंतगोप्यराखणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं हमनैं यहज्ञानयोग अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरयानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (वियाहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेयताय नमाब्रूयावीर्यवंतीतथास्याम् ।) अर्थयह ॥ एककालविषे ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमीपजातीभई तहांजाइके तिनब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई हेब्राह्मणो तुम हमारेकूं अत्यंतगोप्यराखो ताकरिकै मैं तुम्हारेप्रति भोगमोक्षदोनोंकीप्राप्तिकरेंगी और जोकदाचित् कृपाकेवशहुए तुम हमारेकूं गोप्यनहींराखिसको तौभी विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारियोंकेप्रति हमाराउपदेशकरो ॥ और जोपुरुष असूयावालाहै तथाऋजुभावतैंरहितहै तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ऐसे अनधिकारीपुरुषकेप्रति हमाराउपदेश

स्वायंभुवमनुआदिकसर्वमनुवोंकेप्रति साधारणहीं है तथापि इदानींकालविषेवियमान जो वैवस्वतमन्वंतरहै तावैवस्वतमन्वंतरकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं सूर्यतैंलेके वियाकासंप्रदाय गणनकरयाहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ किंच–

(मू. श्लो.) एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोऽविदुः॥ सकालेनेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥ एवम् । परंपराप्राप्तम् । इमम् । राजर्षयः । अविदुः । सः । कालेन । इह । महता । योगः । नष्टः । परंतप ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ! इसप्रकार परंपराकरिकैप्राप्त इसे ज्ञानयोगकूं राजऋषि जानतेभयेहैं सो ज्ञानयोग इदानींकालविषे दीर्घ कालकरिकै नष्टहोइरह्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसप्रकार सूर्यतैंआदिलेके गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकै प्राप्तभयाजो यहज्ञानयोगहै ताज्ञानयोगकूं निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिक राजऋषि सूक्ष्मअर्थकेजानणेहारे आपणे आपणे आचार्य पिता आदिकोंतैं जानतेभयेहैं । राजेहोवैं तेईहीऋषिहोवैं तिन्होंकानाम राजऋषिहै अर्थात् क्षत्रियराजावोंकानाम राजऋषिहै । अथवा (राजर्षयः) यापदकरिकै राजावोंका तथा ऋषियोंका भिन्नभिन्न ग्रहणकरना । तहां राजाशब्दकरिकैतौ निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिक राजाओंकाग्रहणकरणा । और ऋषिशब्दकरिकै सनक वसिष्ठ इत्यादिकऋषियोंकाग्रहणकरना याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाविषे कथनकरयाहै । और किसीटीकाविषेतौ (राजर्षयः) यापदकरिकै पूर्वउक्तरीतितैं क्षत्रियराजावोंकाहीग्रहणकरयाहै । परंतु तापदकूं सनक वसिष्ठ इत्यादिकब्राह्मणऋषियोंकाभी उपलक्षक अंगीकारकऱ्याहैइति । यातैं यहज्ञानयोग अनादिवेदमूलकहोणेतैं तथा नाशतैंरहितमोक्षरूपफलकाजनकहोणेतैं तथाअनादि गुरुशिष्योंकी परंपराकरिकैप्राप्तहोणेतैं कृत्रिमशंकाका विषयहोवैनहीं । तात्पर्ययह । यह ज्ञानयोग पूर्वनहींथा किंतु इदानींकालविषेहीहुआहै याप्रकारकी कृत्रिमशंकाताज्ञानयोगविषे संभवतीनहीं इति ॥ ऐसामहान्प्रभाववाला यहज्ञानयोगहै ॥ इसप्रकार ताज्ञानयोगविषे मुमुक्षुजनोंकी अत्यंतश्रद्धाकरावणेवासतै श्रीभगवान्नैं ताज्ञानयोगकीस्तुति कथनकरीहैइति ॥ हे अर्जुन ! सोऐसा महान्प्रयोजनवालाभी ज्ञानयोग धर्मकीन्यूनताकरणेहारेदीर्घकालकरिकै इसद्वापरकेअंतमैं तुम्हारेहमारेव्यवहारकालविषे दुर्बलअजितइंद्रियअनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइकै कामक्रोधादिकविकारोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहुआ विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै ॥ और ताज्ञानयोगतैंविना अधिकारीजनोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इनलोकोंकेअत्यंतदुर्भाग्यहैं । इहां (हे परंतप !) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या परंशत्रुंतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकश

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थोऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे यद्यपि उपायकरिकैप्राप्तहोणेकूंयोग्य जोउपेयरूपज्ञानयोगहै तथाताज्ञानयोगकाउपायरूप जोकर्मयोगहै तिनदोनोंयोगोंकूं यथाक्रमतैं उपेयरूपकरिकै तथाउपायरूप करिकै श्रीभगवान्कथनकरताभयाहैं तथापि (एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति) इसवक्ष्यमाणवचनकीरीतिसैं साध्यरूपज्ञानयोग तथा ताकासाधनरूपकर्मयोग यादोनोंयोगोंकेफलकीएकतातैं एकताकथनकरिकै ता साधनरूपकर्मयोगकी तथा साध्यरूपज्ञानयोगकी अनेकप्रकारकेगुणोंकेआधानअर्थ श्रीभगवान् विद्यावंशकेकथनकरिकै स्तुतिकरैं हैं ।

(मू० श्लो०) ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमंविवस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मनवेप्राहमनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥ इमम् । विवस्वते । योगं । प्रोक्तवान् । अहम् । अव्ययम् । विवस्वान् । मनवे । प्राह । मनुः । इक्ष्वाकवे । अब्रवीत्॥१॥इतिप०॥ हे अर्जुन ! मैंकृष्णभगवान् इसे नाशतैंरहित ज्ञानयोगकूं प्रथम सूर्यकेताईं कहताभया और सोसूर्य आपणे मनुपुत्रकेताईं कहाताभया और सोमनु आपके इक्ष्वाकुपुत्रकेताईं कथनकरताभया ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! द्वितीय तृतीय यादोनोंअध्यायोंकरिकै कथनकऱ्याजो ज्ञाननिष्ठारूप ज्ञानयोगहै जोज्ञानयोगकर्मनिष्ठारूपकर्मयोगरूपउपायकरिकै प्राप्तहोवै है॥ ऐसे ज्ञाननिष्ठारूपज्ञानयोगकूं मैंसर्वजगतकापालक वासुदेवसृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति कथनकरताभया जोसूर्यक्षत्रियवंशका बीजरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ता ज्ञानयोगकीप्राप्तिद्वारा तिनराजावोंविषे बलकाआधानकरिकै तिनराजावोंकेअधीन सर्वजगत्कापालनकरणेवास्ते मैंकृष्णभगवान् तिनराजावोंकेप्रति ताज्ञानयोगका कथनकरताभया इति ॥ शंका–हे भगवन् इसज्ञानयोगकरिकै तिनराजावोंविषे किसप्रकार बलकाआधानहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ता ज्ञानयोगविषे विशेषणकरिकै ताबलकेआधानकीकारणताकूं निरूपणकरैं हैं (अव्ययमिति) हे अर्जुन ! नाशतैंरहितजोवेदभगवान्है सोवेदभगवान्ही इसज्ञानयोगका मूलरूपहै ॥ याकारणतैं यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ अथवाताज्ञानयोगकाफलरूपजोमोक्षहै सोमोक्ष नाशतैंरहितहै ॥ याकारणतैंभी यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार वेदरूपमूलकरिकै तथामोक्षरूपफलकरिकै नाशतैंरहित जोज्ञानयोगहै ताज्ञानयोगविषे तिनराजावोंकेबलकीआधानकता संभवैहै इति ॥ हे अर्जुन ! सोहमाराशिष्य सूर्य आपणे वैवस्वतमनुनामापुत्रकेताईंसोज्ञानयोग कथनकरताभया ॥ और सोवैवस्वतमनु आपणे इक्ष्वाकुनामापुत्रकेताईं सोज्ञानयोग कथनकरताभया जोइक्ष्वाकु सर्वराजावोंतैं आदिराजाहै ॥ यद्यपि यहश्रीभगवान्काउपदेश मन्वंतरमन्वंतरविषे

(मू. श्लो.) एवंबुद्धेःपरंबुद्ध्वासंस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ जहिशत्रुंमहाबाहोकामरूपंदुरासदम् ॥ ४३ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनामतृतीयोऽध्यायःसमाप्तः॥ ३ ॥ एवम्। बुद्धेः। परम्। बुद्ध्वा। संस्तभ्य। आत्मानम्। आत्मना। जहि। शत्रुम्। महाबाहो। कामरूपम्। दुरासदम् ॥४३॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे महान्बाहुवालाअर्जुन ! इस प्रकार आत्मादेवकूं बुद्धितैं पर जानिकरिकै तथा मनकूं निश्चयरूपबुद्धिकरिकै स्थिरकरिकै इसतृष्णारूप तथा दुःखकरिकै व शहोणेहारे कामरूपशत्रुकूं तूं नाशकर ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका। हे अर्जुन! (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसश्लोकविषे जोआत्मादेव परशब्दकरिकैकथनकरयाहै तिसपरिपूर्णआत्मादेवकूं बुद्धितैंपर साक्षात्कारकरिकै तथा यह साक्षी आत्मा बुद्धितैं भीपरहै याप्रकारकी निश्चयरूपबुद्धिकरिकै मनकूं स्थिरकरिकै तूं सर्वपुरुषार्थकेनाशकरणेहारे इसकामरूपशत्रुकूंनाशकर कैसाहै यहकामरूप शत्रु इच्छातृष्णाहैस्वरूपजिसका। तथा ता परआत्माकेसाक्षात्कारतैंविना बहुतदुःखकरिकैभी नाशकरणेकूंअशक्यहै। ऐसेकामकेनाशहुएतैं अनंतर सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै। ताकामकेनाशतैंविना जन्ममरणादिकअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवै नहीं इहां (दुरासदम्) यहजोकामका विशेषणकथनकरयाहै सो इसकामकेनाशकरणेवास्तै इसअधिकारीपुरुषनैं अत्यंतअधिकप्रयत्नकरणा याअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकरयाहै। और (हे महाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरया महापराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इसकामरूपशत्रुकानाशकरणा अत्यंतसुगमहैइति। इसतृतीयअध्यायकेसर्वअर्थका संक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै। (उपायःकर्मनिष्ठात्रप्राधान्येनोपसंहृता। उपेयाज्ञाननिष्ठातुतद्गुणत्वेनकीर्त्तिता)। अर्थयह। ज्ञाननिष्ठाकाउपायरूप जो निष्कामकर्मनिष्ठाहै साकर्मनिष्ठा इसतृतीयअध्यायविषे प्रधानरूपकरिकैकथनकरीहै। और फलरूपज्ञाननिष्ठातौ ताकागौणरूपकरिकै कथनकरीहै इति। ४३ ॥ ❋ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां तृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कीप्रवृत्तिहोवैनही याकारणतैंही मनकीसावधानतातैंविना समीपवस्तुकाभी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणहोतानहीं । यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं सोसंकल्प विकल्परूप मनपरहै । और निश्चयरूपबुद्धिपूर्वकही सो मनका संकल्परूपधर्म उत्पन्नहोवैहै । तानिश्चयतैंविना सौंसंकल्प होवैनहीं । यातैं सासं कल्परूपमनतैं सानिश्चयरूपबुद्धि परहै । और जो आत्मादेव ताबुद्धिकाप्रकाशकहोणेतैं ताबुद्धितैंभी परैस्थितहै । और जिसदेहीरूपआत्माकूं इंद्रियादिक आश्रयोंकरिकैयुक्तहुआ यहकाम ज्ञानकेआवरणद्वारा मोहकीप्रातिकरैहै सोबुद्धिद्रष्टासाक्षीआत्माही ता परशब्दकाअर्थ है । इहां (बुद्धेःपरतस्तुसः) यावचनविषेस्थित जो सः यहपदहै ता सःपदकरिकै यद्यपि व्यवधानतैंरहितवस्तुकाही परामर्शहोवै है व्यवधानयुक्तवस्तुका परामर्शहोवैनहीं तथापि जैसेश्रुतिविषे (आत्मैवेदमग्रआसीत) यावचनकरिकै आत्माका प्रतिपादनकरिकै तिसतैं अनंतर अनेकपदार्थोंकाप्रतिपादनकरिकै तिसतैंअनंतर (सएषइहप्रविष्टः) याप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै । यावचनविषेस्थितजो सःयहपदहै । ता सःपदकरिकै पूर्व (आत्मैवेदमग्रआसीत) यावचन विषेकथनकरेहुए व्यवहितआत्माकाभी परामर्शकऱ्याहै । तैसे इहांभी चालीसवेंश्लोकविषे (देहिनं) या पद करिकै कथन कऱ्याजो आत्माहै ताव्यवहितआत्माका ता सःपदकरिकै परामर्श संभवहोइसकैहै इति । तहां श्रुति इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनमस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ॥) अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ पर हैं ॥ औरतिनअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और ता मनतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ता व्यष्टिबुद्धितैं हिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि परहै ॥ और ता समष्टिबुद्धितैं मायारूपअव्याकृत परहै ॥ और ता मायारूप अव्याकृततैं सर्वजडपदर्थोंकाप्रकाशकरणेहारापूर्णआत्मा परहै ॥ शंका—ऐसेपरिपूर्णआत्मातैंभी कोई परहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए साक्षात्श्रुतिभगवती उत्तरकहेहै ॥ (पुरुषान्नपरंकिंचित्इति) तापरमात्मादेवतैंपरे कोईभीवस्तुनहींहै ॥ जिसकारणतैं सोपरमात्मादेवहीकाष्ठारूपहै अर्थात् सर्वकाअधिष्ठानहोणेतैं समानिरूपहै ॥ तथा (सोऽध्वनःपरमाप्नोतितद्विष्णोः परमंपदम्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैसिद्धजो परागति है तापरागतिरूपभी सोपरमात्मादेवही है इति ॥ यहसर्व अर्थ (योबुद्धेः परतस्तुसः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्या है ॥ इहां श्रुतिका तथाभगवत्वचनका आत्माकेपरत्वविषेही तात्पर्य है ॥ कोईइं द्रियादिकोंकेपरत्वविषे तात्पर्यनहीं है ॥ और श्रुतिविषे (इंद्रियेभ्यः पराह्यर्थाः) यहजोवचन स्थितहै ॥ तावचनकेस्थानविषे श्रीभगवान्नैंअर्थेभ्यः पराणींद्रियाणि यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तहां जैसे शब्दादिकअर्थोंविषे इंद्रियोंतैं परत्वसंभवैहै तैसे पूर्वउक्तहेतुवोंतैं तिनइंद्रियोंविषेभी देहादिक अर्थोंतैं परत्वसंभवैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनकेसाथि भगवानकेवचनका विरोधहोवैनहीं ॥ इनदोनों श्रुतियोंकाअर्थ आत्मपुराणकेनवमें अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ अब पूर्ववचनोंकेकहणेकरिकै सिद्धभयाजोअर्थहै ताफलितार्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ।

(हेभरतर्षभ) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरचा महान्भरतवंशविषे तूं उत्पन्न भयाहै । यातैं तिनइंद्रियोंकेवशकरणेविषे तूंसमर्थहै इति । शंका- हेभगवन् ! इसलोकविषे जोकोईपुरुषकिसीमहान् अपराधकूंकरै है तिसपुरुषकाही राजादिक नाशकरैं हैं अपराधतैंविनाकिसी कामी कोई नाशकरतानहीं । सो ऐसाअपराध इसकामनैं कौनकरचाहै जिसअपराधकरिकै मैं इसकानाशकरौं । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकामकृतअपराधका वर्णनकरैं हैं (पाप्मानंज्ञानविज्ञाननाशनमिति) हेअर्जुन यहजीव ताकामकेवशहुएही सर्वपापोंकूंकरैं हैं। कामरहितपुरुष किसीभीपापकूंकरतेनहीं । यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहकामही सर्वपापकर्मोंकामूलरूपहै । पुनः कैसाहैसोकाम गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभया जो आत्माकापरोक्षज्ञानहै तथा तापरोक्षज्ञानकाफलरूपजो आत्माकाअपरोक्षज्ञानरूपविज्ञानहै जेज्ञानविज्ञानदोनों इसपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारेहैं । तिनज्ञानविज्ञानदोनोंका यहकाम नाशकरणेहाराहै । ऐसेमहान्अपराधवालेकामका अवश्यकरिकैनाशकरचाचाहिये इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥

॥ शंका–हेभगवन् ताकामकेनाशकरणेवास्ते पूर्व आपनैं इंद्रियोंकावशकरणा कथनकरचा । सो यद्यपि जिसीकिसीप्रकारतैं बाह्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंका वशकरणातौ संभवहोइसकै है तथापि अंतरकीतृष्णाकात्यागकरणा बहुतदुर्घटहै । समाधान । हेअर्जुन ! (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसवचनविषे पूर्व हम परवस्तुकेदर्शनकूंही तारसरूपतृष्णाकीनिवृत्तिविषेकारणरूप कथनकरिआये हैं । शंका--हेभगवन् ! जिसपरवस्तुकेदर्शनतैं तिस तृष्णाकीनिवृत्तिहोवैहै । सोपरवस्तु कौनहै । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसपरशब्दकाअर्थरूप शुद्धआत्माकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकै निरूपणकरैंहैं ।

(मू० श्लो०) इंद्रियाणिपराण्याहुरिंद्रियेभ्यःपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्योबुद्धेःपरतस्तुसः ॥ ४२ ॥ इंद्रियाणि ॥ पराणि । आहुः । इंद्रियेभ्यः । परं । मनः । मनसः । तु । परा बुद्धिः । यः । बुद्धेः । परतः । तु । सः ॥ ४२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! वेदकी श्रुतियां इसस्थूलशरीरतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं परे कहैं हैं तथा तिनइंद्रियों तैं मन परहै तथा तामनतैं बुद्धि परहै और जो बुद्धि तैंभी परेस्थितहै सोई ही परआत्माहै ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हेअर्जुन ! स्थूल तथा जड तथा परिच्छिन्न तथा बाह्य ऐसेजेयहदेहादिकअर्थ हैं तिनदेहादिकअर्थोंकीअपेक्षाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय सूक्ष्महैं तथाप्रकाशकहै तथाव्यापकहैं तथाअंतरास्थितहैं । यातैं वेदवेत्तापुरुष अथवा वेदकीश्रुतियां तिनदेहादिकअर्थों तै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं परकहै हैं अर्थात् उत्कृष्टकहै हैं । इसप्रकार आगेभी जानिलेणा । और संकल्पविकल्परूपमनही तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका प्रवर्त्तकहै । मनतैंविना तिनइंद्रियों

रूपजोमनहै तथा निश्चयरूपजोबुद्धिहै येतीनोंहीं इसकामके अधिष्ठान कहेजावैं हैं। इनतीनोंकरिकैही यहकाम ताविवेक (ज्ञानकूं) आवृतकरिकै देहाभिमानीपुरुषकूं नानाप्रकारकेमोहकीप्राप्तिकरै है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रितहुआही यह काम देहाभिमानीजीवोंकूं अनेकप्रकारकेमोहकी प्राप्तिकरै है । तिसकारणतैं तूं प्रथम तिनइंद्रियादिकोंकूंही जयकर । तिनइंद्रियादिकोंकेजयहुए ताकामकाभी सुखेनही जयहोवैगा। याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरै है।

(मू. श्लो.) तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौनियम्यभरतर्षभ ॥ पाप्मानंप्रजहिह्येनंज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥ तस्मात् । त्वम् । इंद्रियाणि । आदौ । नियम्य । भरतर्षभ । पाप्मानं । प्रजहि । हि । एनं । ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! तिसकारणतैं तूं अर्जुन प्रथम तिनइंद्रियोंकूं वशकरिकै सर्वपापकेमूलभूत तथाज्ञानविज्ञानकेनाशकरणेहारे इसकामकूं हीं नाशकर ॥ ४१ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका। हेअर्जुन ! जिसकारणतैं इसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियही अधिष्ठानरूपहैं । जैसे किसीराजाके पर्वत दुर्गआदिक अधिष्ठानहोवैं हैं तैसे इसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियही अधिष्ठानरूपहैं तिसकारणतैं तू अर्जुन ताकामकृतमोहतैंपूर्व अथवा ताकामकेनिरोधतैंपूर्व तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंवशकरिकै इस कामकूंनाशकर ॥ तिनइन्द्रियोंकेवशकियेतैंविना ताकामकानाश करयाजावैनहीं जैसे किसीपर्वतविषे तथाकिसीदुर्गादिकोंविषे स्थितजो कोईराजाहै ताराजाके तिनपर्वत दुर्गादिकोंकूं आपणेवशकरिकैही दूसरेराजे ताराजाकूंनाशकरैं हैं ॥ तिनपर्वतदुर्गादिकोंकेवशकियेतैंविना ताराजाकूं दूसरेराजे नाशकरिसकैंनहीं ॥ तैसे तिनइंद्रियोंकेवशकियेतैंविना ताकामका नाशहोवैनहीं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशकियेतैंअनंतर मन बुद्धि यादोनोंकाभीवशकरणा सिद्धहोवै है काहेतैं संकल्परूपजोमनहै तथानिश्चयरूपजोबुद्धिहै यहदोनों बाह्यइंद्रियजन्यवृत्तिद्वाराही अनर्थके कारणहोवैं हैं। ताबाह्यइंद्रियजन्यवृत्तितैंविना तिनदोनोंविषे अनर्थकीकारणता संभवैनहीं ॥ यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशहुएतैं अनंतर सो मन बुद्धिभी अवश्यकरिकै वशहोवैं हैं ॥ याकारणतैंही पूर्वश्लोकविषे (इंद्रियाणिमनोबुद्धिः) यावचनकरिकै इंद्रिय मनबुद्धि यातीनोंका भिन्नभिन्न कथनकरिकैभी इसश्लोकविषे (इंद्रियाणि) यावचनकरिकै केवल श्रोत्रादिकइंद्रियोंकाही कथनकरयाहै ॥ अथवा जैसे बाह्यशब्दादिकोंकेज्ञानविषे श्रोत्रादिकोंकूं इंद्रियरूपताहै तैसे अंतरसुखदुःखादिकोंकेज्ञानविषे मनबुद्धिकूंभी इंद्रियरूपताहै ॥ यातैं (इंद्रियाणि) यापदकरिकै तामनबुद्धिकाभी ग्रहणहोइसकेहैइति ॥ इहां

श्रीभगवान्कहैंहैं (कामरूपेणइति) हेअर्जुन ! इच्छातृष्णारूपकामही है रूपजिसका ऐसायहकामहै ॥ शंका—हेभगवन् ! यद्यपि सोकाम विवेकीपुरुषका नित्यही वैरीही है। यातैं विवेकीपुरुषोंनैंतौ ताकामकाअवश्यकरिकै हननकरणा । तथापि अविवेकीपुरुषोंका सोकाम नित्यवैरीहैनहीं । यातैं तिनअविवेकीपुरुषोंनैं तौ ता कामका अवश्यकरिकैग्रहणकरणा । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (दुष्पूरेणानलेनचइति) हे अर्जुन ! जैसे यह अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकरिकै तृप्तहोवैनहीं । तैसे यहकामभी अनेकप्रकारकेभोगोंकरिकैभी तृप्तहोवैनहीं । याकारणतैं यहकाम निरंतर संतापकाहीहेतुहै । यातैं विवेकीपुरुषकीन्यांई अविवेकीपुरुषनैंभी ता कामकापरित्यागहीकरणाइति ॥ अथवा ॥ शंका—हेभगवन् ! इसलोकविषे जोजोइच्छाहोवै है सोसोइच्छा आपणेआपणेविषयकीप्राप्तितैंनिवृत्ति होइजावै है। और यहकामभी इच्छारूपही है। यातैं यहकामभी तिसतिसविषयोंकेभोगकरिकै आपहीनिवृत्तिहोइजावैगा ताकामकीनिवृत्तिकरणेवासतै दूसरेउपायका कछुप्रयोजननहीं है। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैं हैं (दुष्पूरेणानलेनचइति) हेअर्जुन ! विषयकी प्राप्तिकालविषे यद्यपि ताविषयकीइच्छाकातिरोधानहोवै है तथापि कालांतरविषेपुनःताइच्छाका प्रादुर्भावहोवै है । यातैं विषयकीप्राप्ति ताइच्छाकानिवर्त्तक नहींहै किंतु विषयोंविषे वारंवार दोषदृष्टिही ताइच्छाकानिवर्त्तकहै इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ शंका—हेभगवन् ! इसलोकविषेजिसशत्रुकेस्थानकाज्ञानहोवै है सोईहीशत्रु जीत्याजावैहै । ताशत्रुके स्थानके ज्ञानतैंविना सोशत्रु जीत्याजावैनहीं । यातैं इसकामशत्रुके जीतणेवासतै प्रथम इसकामका अधिष्ठानजान्या चाहिये ॥ जिसअधिष्ठानकेआश्रितहुआयहकाम लोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरै है । सोकामकाअधिष्ठान कौन है । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकामके अधिष्ठानका कथनकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) इंद्रियाणिमनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ॥ एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्यदेहिनम् ॥ ४० ॥ इंद्रियाणि । मनः। बु । द्धिः । अस्य । अधिष्ठानम् । उच्यते । एतैः । विमोहयति । एषः । ज्ञानम् । आवृत्य । देहि नम् ॥४०॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन! इंद्रिय मन बुद्धि यहतीनोंही इसकामके अधिष्ठान कहेजावैं हैं इनतीनोंकरिकैही यहकाम ताज्ञानकूं आवृतकरिकै देहाभिमानी जीवकूं मोहकीप्राप्तिकरैहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंयथाक्रमतैं विषयकरणेहारे जे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं । तथा वचन आदान गमन आनंद विसर्ग यापंचक्रियावोंके यथाक्रमतेजनक जे वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रियजो हैं यह दशइंद्रियजो हैं तथा संकल्प

आवृतकरीताहै । इहां इनतीनदृष्टांतोंविषे परस्पर इतनीविशेषताहै । ताधूमकरिकैआवृतहुआभीअग्नि दाहादिरूपआपणेकार्यकूंकरतानहींहै । और रजरूप मलकरिकैआवृतहुआजोदर्पणहै सोदर्पणतो प्रतिबिंबकाग्रहणरूपआपणेकार्यकूंकरतानहीं । जिसकारणतैं तादर्पणकेस्वच्छतामात्रकातारजरूपमलकरिकै तिरोधानहोइरह्याहै । परंतु सोदर्पण स्वरूपतैंतौ प्रतीतहोतारहैहै । और जरायुनामाचर्मकरिकैआवृतजोगर्भहै सोगर्भ तो हस्तपादादिकोंकाप्रसारणरूप आपणे कार्यकूंभी करतानहीं तथा आपणेस्वरूपतैं भी प्रतीतहोतानहीं । या प्रकारकी तिनदृष्टांतोंकीविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकैही ताकामकी स्थूल स्थूलतर स्थूलतमयातीनअवस्थावोंविषे यथाक्रमतैं ते तीनदृष्टांत कथनकरें हैं इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तथाबेनेदमावृतम्) यहजोसंग्रहवचनकह्याथा तासंग्रहवचनकेअर्थकूं अब विस्तारकरिकै कथनकरें हैं ।

(मू. श्लो.) आवृतंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा॥कामरूपेणकौंतेयदुष्पूरेणानलेनच॥३९॥आवृतम् । ज्ञानम् । एतेन । ज्ञानिनः । नित्यवैरिणा । कामरूपेण । कौंतेय । दुष्पूरेण । अनलेन । च ॥३९॥ इतिपदच्छेदः॥ हे कौंतेय! इसकामनैंही यहज्ञान आवृतकरयाहै कैसाहैयहकाम ज्ञानीपुरुषका नित्यही वैरी है तथाइच्छा तृष्णारूपहै तथा अग्निकी न्याई पूरिततैंरहितहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिसकरिकै वस्तुकूं जानिये ताकानाम ज्ञानहै ऐसा अंतःकरण करिकैही वस्तु जान्याजावैहै । अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूप जोविवेकविज्ञानहै ताकानाम ज्ञानहै । ऐसाज्ञान इसकामनैंही आवृतकरयाहै ॥ शंका—हे भगवन् ! यद्यपि इसकामनैं सोज्ञान आवृतकरयाहै तथापि अविचारसिद्धसुखकाहेतुहोणेतैंयहकाम ग्रहणकरणेकूंयोग्यहै । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुये श्रीभगवान्कहैं हैं (ज्ञानिनोनित्यवैरिणाइति) हे अर्जुन ! यहकाम ज्ञानीपुरुषोंकातौ नित्यही वैरीहै काहेतैंअज्ञानीपुरुषतौ विषयभोगकालविषे ताकामकूं मित्रकीन्याईही जानते हैं । और ताअज्ञानीपुरुषकूं जबी ताकामका कार्यरूपदुःख आइकेप्राप्तहोवैहै तबी सोअज्ञानीपुरुषइसकामनैंही हमारेकूं इसदुःखकीप्राप्तिकरीहै इसप्रकार ता कामकूं शत्रुरूपकरिकैजानैहै यातैं ताअज्ञानीपुरुषका सोकाम नित्यही वैरीनहींहै किंतु दुःखरूपपरिणामकालविषे वैरीहै । और ज्ञानवान्पुरुषतौ ताविषयभोगकालविषेभी इसकामनैंही हमारेकूं इसअनर्थविषेप्रवृत्तकर्‍याहै याप्रकार ताकामकूं वैरीही जानै है । यातैं सोज्ञानवान्पुरुष विषयभोगकालविषे तथाताकेदुःखरूपपरिणामकालविषे इसकामकरिकै दुःखीहीहोवैहै । याकारणतैं यहकामताज्ञानवान्पुरुषका नित्यहीवैरीहै । ऐसेनित्यवैरीरूपकामकूं ताज्ञानवान्पुरुषनैं अवश्यकरिकैहननकरणा ॥ शंका— हे भगवन् ! ताकामकेस्वरूपजानेतैंविना ताका हननसंभवैनहीं यातैं ताकामका स्वरूपकह्याचाहिये । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए

यहकामरूपशत्रु वशहोवैनहीं । जिसकारणतैं यहकामरूपशत्रु महापाप्मा है क्या अत्यंतउग्रहै । याकारणतैंही इसकामकरिकै प्रेरणाकरयाहुआ यहपुरुष पापकर्मों तैं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकूंजानताहुआभी पुनः तिनपापकर्मोंकूं हीकरैहै । ऐसाअत्यंतउग्र यहकामरूपशत्रु साम भेद या दोनोंउपायोंकरिकै वशहोइ सकै नहीं । जिसकारणतैं लोकविषेऋजुस्वभाववालेशत्रुही ता साम भेदरूपउपायकरिकैवशहोवैं हैं यातैं हे अर्जुन ! इससंसारविषे तूं इसकामकूंहीशत्रुरूप जान इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे अत्यंतउग्ररूपकरिकै ताकामविषे कथनकरया जो शत्रुपणा ता शत्रुपणेकूं अब तीनदृष्टांतोंकरिकै स्पष्टकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) धूमेनाव्रियतेवह्निर्यथादर्शोमलेनच ॥ यथोल्बेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमावृतम् ॥ ३८ ॥ धूमेन । आव्रियते । वह्निः । यथा । आदर्शः । मलेन । च । यथा । उल्बेन । आवृतः । गर्भः । तथा । तेन । इदम् । आवृतम ॥३८॥ इतिपदच्छेदः हेअर्जुन ! जैसे धूमनैं अग्नि आवृतकरीताहै तथा जैसे रजरूपमलनैं दर्पण आवृतकरीताहै तथा जैसे जरायुचर्मनैं गर्भ आवृत करताहै तैसे तिसकामनैं यह ज्ञान आवृतकरीताहै ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसस्थूलशरीरकेआरंभतैंपूर्व अंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूं प्राप्तहोवैनहीं।यातैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व सोअंतःकरणसूक्ष्म कहाजावै है और शरीरकेआरंभकरणेहारेपुण्यपापकर्मोंकरिकैरचित जोयहस्थूलशरीर है तास्थूलशरीरविषे स्थितहोइकै सोअंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूंप्राप्तहोवै है यातैं तास्थूलशरीरावच्छिन्नअंतःकरणविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ सोकाम स्थूल कह्याजावै है । और सोईहीकाम विषयोंके चिंतनअवस्थाविषे पुनःपुनः वृद्धिकूंप्राप्त हुआ स्थूलतर कह्याजावैहै । और सोईहीकाम तिनाविषयोंकेभोग अवस्थाविषे अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहुआ स्थूलतम कह्याजावै है । यहां स्थूलतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतरहै । और स्थूलतरतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतमहै । इसप्रकार सोएकहीकाम स्थूल स्थूलतर स्थूलतम यातीनअवस्थावोंवालाहोवै है । तहांताकामके प्रथम स्थूलअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरे हैं (धूमेनाव्रियतेवह्निः इति) हे अर्जुन ! जैसे अग्निकेसाथि उत्पन्नभयाजो अप्रकाशरूपधूम है ताअप्रकाशरूपधूमनैं प्रकाशरूपअग्नि आवृतकरीता है । तैसे इसस्थूलकामनैं यहज्ञान आवृतकरीताहै । अब ताकामकी दूसरीस्थूलतरअवस्थाविषे दृष्टांत कथनकरैंहैं (यथादर्शोमलेनचइति) हे अर्जुन ! जैसे दर्पणतैंश्वासउत्पन्नभयाजो रजरूपमलहै तिस रजरूपमलनैं सोदर्पण आवृतकरीताहै । तैसे इस स्थूलतरकामनैंभी यहज्ञान आवृतकरीताहै । अब ताकामकीतीसरी स्थूलतमअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरैं हैं (यथोल्बेनावृतोगर्भः इति) हे अर्जुन! जैसे माताकेउदरविषे स्थितगर्भकूं सर्वओरतैंवलेटरह्याहुआ जो जरायुनामाचर्म है ताजरायुनामाचर्मनैं सोगर्भ आवृतकरीताहै तैसे इसस्थूलतमकामनैं यहज्ञान

गुणभी ताकामकाकारणहै यातैं (रजोगुणसमुद्भवः) यावचनकीन्यांई तमोगुणसमुद्भवः यहभीवचनकहणाउचितथा । तथापि दुःखविषे तथाप्रवृत्तिविषे रजोगुणकूंही प्रधानताहै । तमोगुणकूंप्रधानताहैनहीं । यातैं इहां रजोगुणकाहीकथनकरयाहै । इतनेकहणेकरिकेश्रीभगवान्नैं यहअर्थबोधनकऱ्या सात्विकवृत्तिकरिकै जभी तारजोगुणरूपकारणकीनिवृत्तिहोवैहै तभी कारणकेनिवृत्तहुए सोकामरूपकार्य आपहीनिवृत्तहोइजावैहै यातैं सा सात्विकवृत्ति ही रजोगुणकीनिवृत्तिद्वारा ताकामकेनिवृत्तिकाउपायहै इति । अथवा । हे भगवन् ! ताकामकूं किसप्रकारतैं अनर्थविषेप्रवर्त्तकताहै ऐसीअर्जुनकीशंका केहुए श्रीभगवान् कहैं हैं (रजोगुणसमुद्भवःइति) हे अर्जुन ! दुःखप्रवृत्ति आदिरूपजोरजोगुण है तारजोगुणकाहै समुद्भवनाम उत्पत्तिजिसतैं ताकानाम रजोगुण समुद्भव है । ऐसारजोगुणकाकारणरूप यहकामहै । तात्पर्ययह । विषयोंकीअभिलाषारूपजोयहकाम है । सोयहकाम आपप्रगटहोइके तारजोगुणकूं प्रवर्त्तकरताहुआ इसपुरुषकूं दुःखरूपकर्मोंविषे प्रवृत्तकरैहैइति । यातैं अधिकारीपुरुषों नैं यहकामरूपशत्रु अवश्यकरिकै जयकरणेयोग्य है ॥ शंका—हेभगवन् ! इस लोकविषे शत्रुकेजयकरणेवास्तै साम दान भेद दंड यह च्यारि उपायहोवैं हैं तहां साम दान भेद यातीनउपायोंकरिकै जो शत्रु वशनहींहोता होवै तौ ताशत्रुकेजयकरणेवास्तै चौथा दंडरूप उपायकरणा । परंतु तिन तीनउपायोंकेकियेतैं विनाही प्रथमही सोदंडरूपउपायकरणा उचितनहीं है ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकामरूपशत्रुकेजीतणेविषे प्रथम तीनउपायोंकेअसंभवकहणेवास्तै ताकामरूपशत्रुके दोविशेषण कहैं हैं (महाशनोमहापाप्माइति) महान्है अशन क्या आहार जिसका ताकानाम महाशनहै ऐसायहकामहै । तात्पर्ययह । अनेकप्रकारकेमहान् भोगोंकीप्राप्तिकरिकैभी यहकाम कदाचित्भी तृप्तहोवैनहीं । यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै । तहांश्लोक । (नजातुकामःकामानामुपभोगेनशाम्यति । हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते ॥ १ ॥ यत्पृथिव्यांव्रीहियवंहिरण्यंपशवःस्त्रियः । नालमेकस्यतत्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत् ॥ २॥ अर्थ यह । यह काम पदार्थोंकेभोग करिकै कदाचित्भी शांतिकूंप्राप्तहोतानहीं । किंतु जैसे अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकेपावणेकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोता जावै है तैसे यहकामभी बहुतपदार्थोंके भोगकरिकैदिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै । और इसपृथिवीविषे जितनेकव्रीहियवादिकअन्नहैं । तथा जितनेकसुवर्णादिकधनहैं । तथा जितनेक गोअश्वादिकपशुहैं । तथा जितनीक सुंदरस्त्रियां हैं । तेसर्वपदार्थ जोकदाचित् कामनावालेकिसीएकपुरुषकूंभी प्राप्तहोवैं तौभी तेसर्व पदार्थ तापुरुषकेकामकूं तृप्तकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं तौ अल्पभोगोंकरिकै ताकामकीशांति कैसेहोवैगी किंतुनहींहोवैगी । याप्रकारकावि चारकरिकै यहपुरुष शांतिकूंप्राप्तहोवै ॥ १ ॥ २ ॥ यातैं ता दानरूपउपायकरिकै यहकामरूप शत्रु वशहोवैनहीं । इसप्रकार साम भेद यादोनोंउपायोंकरिकैभी

अथकर्मकुर्वीय) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै सिद्ध तथा । (अकामस्यक्रियाकाचिद्दृश्यतेनेहकर्हिचित् । यद्यद्धिकुरुतेजंतुस्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्) इत्यादिक स्मृतियोंकरिकैसिद्ध उत्तरकूं कहताभया । तिनश्रुतियोंका तथास्मृतिवचनका यह अर्थहै यहपुरुष काममयहीहै इति । इस जगत्कीउत्पत्तितैं पूर्व एक आत्माहीहोताभया सो आत्मादेव याप्रकारकीकामना करताभया हमारेकूं जाया प्राप्त होवै तथा हमारेकूं प्रजाप्राप्तहोवै तथा हमारेकूं धनप्राप्तहोवै तथा मैं कर्मोंकूं करौं इति । और यालोकविषे कामनातैंरहित पुरुषकी कोईभीक्रिया देखणेविषेआवतीनहीं यातैं यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरैहै सोसर्व इसकामकीहीचेष्टाहैंइति । इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकैसिद्धउत्तरकूं श्रीभगवान् कहैंहैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ कामएषक्रोधएषरजोगुणसमुद्भवः ॥ महाशनोमहापाप्माविद्ध्येनमिहवैरिणम् ॥ ३७॥ कामः । एषः । क्रोधः । एषः । रजोगुणसमुद्भवः । महाशनः । महापाप्मा । विद्धि । एनम् । इह । वैरिणम् ॥ ३७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सोअनर्थ मार्गविषेप्रवृत्तकरणेहारा यह कामहीहै यहकामही क्रोधरूपहै तथारजोगुणतैंउत्पन्नभया है तथामहान् आहारवाला है तथाअत्यंत उग्रहै यातैं इससंसारविषे इसकामकूंही तूं वैरीरूप जान ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! इसपुरुषकूं बलात्कारसे अनर्थमार्गविषेप्रवृत्तिकरणेकाकारण जो तुमनैं पूछाथा सोकारण यहकामरूपमहान्शत्रुहीहै । इसकामकरि केही इनप्राणियोंकूं सर्वअनर्थोंकीप्राप्तिहोवैहै । शंका— हे भगवन् ! जैसे यहकाम प्राणियोंकूं अनर्थविषे प्रवृत्तकरै है तैसे क्रोधभी इनप्राणियोंकूं सर्व अनर्थविषेप्रवृत्तकरै है यातैंकेवलकामविषेही प्रवर्तकता संभवैनहीं ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैंहैं (क्रोधएषः इति) हे अर्जुन ! यह विष योंकीअभिलाषारूपजोकामहै ता कामतैं सोक्रोध भिन्ननहीं है किंतु यहकामहीक्रोधरूपहोवैहै । तात्पर्ययह । जोकोईपुरुषकिसीधनादिकपदार्थोंकीइच्छा करिकै जबी किसीधनीपुरुषकेसमीपजावैहै आगेतैंकोईदुष्टपुरुष तापुरुषकीइच्छा पूर्णहोणेदेवैनहीं तबी तापुरुषका सोइच्छारूपकामही तादुष्टपुरुषऊपरि क्रोधरूप होइकै परिणामकूंप्राप्तिहोवैहै । यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै । यातैं सोकामहीक्रोधरूपहै इति । ताकामरूपमहाशत्रुके निवृत्तिकि येहुए इसपुरुषकूं सर्वपुरुषार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै । अबताकामरूपशत्रुकेनिवृत्तकरणेहारेउपायकेजनावणेवास्तै ताकामरूपशत्रुकेकारणकूं कथनकरैहैं (रजोगुण समुद्भवः इति) हे अर्जुन ! दुःखप्रवृत्तिबलरूपजोरजोगुणहै सोरजोगुणहै समुद्भवनाम कारणजिसका ऐसायहकाम है । और लोकविषेकारणकेसमानस्वभाववाला हीकार्यहोवैहै यातैं जैसे सोरजोगुणरूपकारण दुःखप्रवृत्तिआदिरूपहै । तैसे यह कामरूपकार्यभीदुःखप्रवृत्तिआदिरूपहीहै । यद्यपि रजोगुणकीन्याईं तमो

इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतप्रकारका सोअनर्थकामूल कथनकऱ्याहै। तहां तेसर्वही समानप्रधानताकरिकै अनर्थकेकारणहैं। अथवा तिनसर्वोंविषे एकहीमुख्य कारणहै दूसरे सर्व गौणहैं तहां प्रथमपक्षविषेतौ तिनसर्वकारणोंकूं भिन्नभिन्न निवृत्तकरणेविषे महान्परिश्रमहोवैगा । और दूसरेपक्षविषेतौ ताएकही प्रधानकारणके निवृत्तकिये हुए इसपुरुषकूं कृत्यकृत्यभावकीप्राप्ति होवैगी यातैं हे भगवन्! आप यहवार्त्ताकहो । तुम्हारेमतकूंनहींअंगीकारकरणेहारा तथासर्वज्ञानोंविषेमूढ यहपुरुष किसबलवान्कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहुआ अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिषिद्धकर्मोंकूं तथाकाम्यकर्मोंकूं करै है इहां परस्त्रीगमनादिक निषिद्धकर्म हैं । और शत्रुकेनाशकरणेहारेश्येनयज्ञादिक काम्यकर्महैं तेदोनोंप्रकारकेकर्म इसपुरुषकूं अनर्थकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं यातैं तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका पापशब्दकरिकै ग्रहणकऱ्याहै इति । हेभगवन्! यहपुरुष आप तिनपापकर्मोंकेकरणेकी नहीं इच्छाकरताहुआभी बलात्कारतैं तिनपापकर्मोंकूंहीकरै है। और परमपुरुषार्थकासाधनरूप करिकै आपनैं उपदेशकऱ्याजोकर्म है ताकर्मकेकरणेकीइच्छाकरताहुआभी यहपुरुष ताकर्मकूंकरतानहीं यातैं यहजान्याजावैहै यहपुरुष परतंत्रहै स्वतंत्रतानहींहै । परतंत्रतातैंविना यहवार्त्ता संभवतीनहीं । यातैं हे भगवन्! जैसे महाराजानैं किसीकार्यविषे बलात्कारसैं प्रवृत्तकऱ्याजोकोईभृत्यहै सोभृत्य ताकार्यकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआभी ताकार्यकूं अवश्यकरिकै करै है तैसे जिसबलवान्कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहुआ यहपुरुष तुम्हारेमतकेविरोधीपापकर्मोंकूं सर्वअनर्थोंकामूलभूतजानताहुआभी तिनपापकर्मोंकूंहीकरै है। तिस अनर्थविषेप्रवृत्तकरणेहारेकारणका स्वरूप आप हमारेप्रति कथनकरो । जिसकारणकेस्वरूपकूंजानिकरिकै मैंअर्जुन तिसकारणकेनाशकरणेवासतै प्रयत्नकरौं इति। इहां (अनिच्छन्नपि) यावचनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या । पूर्वकथनकरेहुए रागद्वेषविषेभी प्रवृत्तिकीकारणतासंभवैनहीं काहेतैं रागके वियमानहुए इच्छा अवश्यकरिकैहोवैहै यातैं यापुरुषविषे इच्छाकेअभावहुए तारागकाभीअभावहीहै । जबी तारागविषे अप्रवर्त्तकतासिद्धभई तबी ताराग जन्यसंस्कारोंकरिकैजन्यजोधर्मअधर्म है ताधर्म अधर्म विषेभी साप्रवर्त्तकता संभवैनहीं। और ताधर्मअधर्मविषे अप्रवर्त्तकताहुए ताधर्मअधर्मकीअपेक्षाकरणेहारेईश्वर विषेभी सा प्रवर्त्तकता संभवैनहीं इति। और (हे वार्ष्णेय) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्याहै हमारे मातामहकाकुल जोवृष्णिवंशहै तावृष्णिवंशविषे आपणेभक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै आपनैं अवतारधारणकऱ्याहै । और मैं अर्जुनभी तावृष्णिवंशविषेउत्पन्नहुई कुंतीमाताकापुत्रहूं । यातैं हमारेकूं आपणा जानिकरिकै आपनैं हमारीउपेक्षानहीं करणी। किंतु इसहमारेप्रश्नका आपनैं यथार्थउत्तरकहणा इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार अर्जुनकरिकैपूछाहुआ श्रीभगवान्। (काममयएवायंपुरुषःइति आत्मैवेदमग्रआसीदेकएव सोकामयत जायामेस्यात् अथप्रजामेस्यात् अथवित्तंमेस्यात

धर्मविगुणकह्याजावैहै । इसप्रकारका विगुणजोस्वधर्महै सोस्वधर्म तिनसर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वककरेहुएपरधर्मतैंअत्यंतश्रेष्ठहै काहेतैं एकवेदप्रमाणकूंछोडिकै दूसराकोईप्रमाण धर्मविषैहैनहीं किंतु ता धर्मविषे एकवेदहीप्रमाणहै । यहवार्त्ता (चोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः) इसपूर्वमीमांसाकेसूत्रविषे विस्तारतैंकथनकरीहै यातैं परधर्मजोहै सोभीअनुष्ठानकरणेकूंयोग्यहै धर्महोणेतैं स्वधर्मकी न्याई याप्रकारकाअनुमान ताधर्मविषे प्रमाणहोइसकैनहीं यातैं यत्किंचित्अंगोंकीन्यूनताकरिकै विगुणभावकूंप्राप्तभयाजो स्वधर्महै ताविगुणस्वधर्मविषेभी स्थितजोपुरुषहै तास्वधर्मनिष्ठपुरुषका परधर्मविषेस्थितपुरुषकेजीवनतैं मरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै काहेतैं स्वधर्मविषेस्थित पुरुषकाजोमरणहै सोमरण इसलोकविषेतौ तापुरुषकूं कीर्तिकीप्राप्तिकरणेहाराहै । और परलोकविषे स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै यातैं सोमरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै । और परधर्मतौ इसपुरुषकूं इसलोकविषेतौ अकीर्तिकीप्राप्तिकरैहै और परलोकविषे नरकादिकोंकीप्राप्तिकरैहै यातैं जैसे रागद्वेषकरिकै जन्य स्वाभाविकप्रवृत्ति इसपुरुषकूं परित्यागकरणेयोग्यहै । तैसे यहपरधर्मभी परित्यागकरणेकूंयोग्यहै इति । तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्केमतकूंअंगीकार करणेहारेपुरुषोंकूं श्रेयकीप्राप्ति कथनकरी । और ताभगवान्केमतकूंनहींअंगीकारकरणेहारेपुरुषोंकूं ताश्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टपणा कथनकऱ्या । और ताश्रेयकेमार्गतैं भ्रष्टहोणेविषे तथाफलकीइच्छापूर्वककाम्यकर्मोंकेकरणेविषे तथाकेवलपापकर्मोंकेकरणेविषे (येत्वेतदभ्यसूयंतः) इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतकारण कथनकरे । तिनसर्वकारणोंकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै । (श्रद्धाहानिस्तथासूयादुष्टचित्तत्वमूढते । प्रकृतेर्वशवर्त्तित्वंरागद्वेषौचपुष्कलौ । परधर्मरुचित्वं चेत्युक्तादुर्मार्गवाहकाः) । अर्थयह । श्रद्धातैंरहितहोणा तथाअसूयाकरणी तथाचित्तकीदुष्टता तथामूढतातथाप्रकृतिकेवशवर्तिहोणा तथापुष्कलरागद्वेष तथापरधर्मविषेप्रीतिकरणी यहसर्व दुर्मार्गकीप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ तहां इसपुरुषकी काम्यकर्मोंविषेप्रीतिकरावणेहारा तथानिषिद्धकर्मोंविषे प्रीतिकरावणेहारा जोकोई कारणहै ताकारणकूंनिवृत्तिकरिकै श्रीभगवान्के तापूर्वउक्तमतकूं आश्रयणकरणेवासतै अर्जुन प्रथम ताकारणकास्वरूपपूछैहै ।

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ अथकेनप्रयुक्तोऽयंपापंचरतिपूरुषः ॥ अनिच्छन्नपिवाष्र्णेयबलादिवनियोजितः ॥ ३६ ॥ अथ । केन । प्रयुक्तः । अयम् । पापम् । चरति । पूरुषः । अनिच्छन् । अपि । वाष्र्णेय । बलात् । इव । नियोजितः ॥ ३६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेवाष्र्णेय ! यह पुरुष पापकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआ भी बलात्कारतैं प्रवृत्तकरेहुएपुरुषकी न्याई किसंकरिकै प्रवृत्तकऱ्या हुआ पापकर्मकूं करैहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे भगवन् ! (ध्यायतोविषयान्पुंसः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वभी आपनैं अनर्थकामूल कथनकऱ्याथा । और अबीभी आपनैं (प्रकृतेर्गुणसंमूढाः)

यहपुरुष तारागद्वेषकेअधीनहोइकै नहींतौ किसीकर्मविषेप्रवृत्तहोवै तथानहीं किसीकर्मतौंनिवृत्तहोवै । किंतुशास्त्रजन्यज्ञानकरिकै तारागद्वेष तारागद्वेषके नाशद्वारातारागद्वेषकूं नाशहीकरै । जिसकारणतैं स्वाभाविकदोषजन्यतेरागद्वेषदोनों इसमोक्षरूपश्रेयकीइच्छावान्पुरुषके शत्रुहीहैं । तात्पर्ययह । जैसे मार्गविषेचलणेहारेपुरुषोंकूं दुष्टचोर अनेकप्रकारकेविघ्नकरैंहैं तैसे मोक्षरूपश्रेयके आत्मज्ञानरूपमार्गविषेप्रवृत्तहुए इसअधिकारीपुरुषकूं ते रागद्वेषदोनों अनेकप्रकारके विघ्नकरणेहारेहैं । यातैं यहअधिकारीपुरुषतारागद्वेषकूं अवश्यकरिकैनाशकरै इति ॥ ३४ ॥ शंका—हे भगवन् ! स्वाभाविकरागद्वेषकरिकैजन्य जा पशुमनुष्यादिक सर्वप्राणियोंकी साधारणप्रवृत्तिहै तासाधारणप्रवृत्तिकीनिवृत्तिकरिकै जबी इसपुरुषकूं शास्त्रविहितकर्महीं करणेयोग्यहुआ तबी जैसे इसयुद्धविषेशास्त्रविहितकर्मरूपताहै । तैसे संन्यासपूर्वक भिक्षाअन्नकेभोजनविषेभी शास्त्रविहितकर्मरूपताहै यातैं अत्यंतसुगम तथाहिंसादिकोंतैंरहित जोभिक्षाअन्नकाभोजनहै सोईही हमारेकूं करणेयोग्यहै । अत्यंतदुःखरूप तथाहिंसादिकोंकाकारणरूप इसयुद्धकेकरणेविषेहमारा क्याप्रयोजन है । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्उत्तर कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रेयान्स्वधर्मोविगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥ स्वधर्मेनिधनं श्रेयःपरधर्मोभयावहः ॥ ३५ ॥ श्रेयान् । स्वधर्मः । विगुणः । परधर्मात् । स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे । निधनम् । श्रेयः । परधर्मः । भयावहः ॥ ३५ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! सर्वअंगोंकीसंपूर्णता पूर्णतापूर्वककरेहुए परकेधर्मतैं किंचित् अंगोंकीन्यूनतापूर्वककरचाहुआ आपणाधर्म अत्यंत श्रेष्ठहै इसकारणतैं ताआपणे धर्मविषे मरणभी श्रेष्ठहै और परकाधर्मतौ भयकीहीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ३५ ॥ इति पदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह जे च्यारिवर्णहैं । तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासयह जेच्यारिआश्रमहैं तिनच्यारिवर्णोंविषे तथाच्यारिआश्रमविषे जिसजिसवर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति धर्मशास्त्रनैं जोजोधर्म विधानकरचा सोसोधर्म तिसतिसवर्णका तथातिसतिसआश्रमका तथा स्वधर्म कह्याजावैहै । दूसरेवर्णका तथादूसरेआश्रमका सोसोधर्म परधर्म कह्याजावैहै । जैसे बृहस्पतिसवनामायज्ञ शास्त्रने एकब्राह्मणकेप्रतिही विधान करचाहै । क्षत्रियादिकोंकेप्रति विधानकरचानहीं यातैं सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ ब्राह्मणकातौ स्वधर्महै क्षत्रियादिकोंका परधर्महै । इसप्रकार राजसूयनामायज्ञ शास्त्रनैं एकक्षत्रियकेप्रतिही विधानकरचाहै ब्राह्मणादिकोंकेप्रति विधानकरचानहीं । यातैं सोराजसूयनामायज्ञ क्षत्रियकातौ स्वधर्महै ब्राह्मणादिकोंका परधर्महै । इसप्रकार सर्वअसाधारणधर्मविषे स्वधर्मता तथा परधर्मता जानिलेणी । ईश्वरनामस्मरणादिकसाधारणधर्मोंविषेतौ सर्वप्राणीमात्रकी स्वधर्मताहीरहेहै किसीभीप्राणीकी परधर्मतारहेनहीं याकारणतैं असाधारणधर्मकह्याहै ॥ तहां द्रव्य मंत्र देवता इत्यादिकजेकर्मके अंगहैं तिनसर्वअंगोंकी संपूर्णतातैंविनाही जोधर्म करचाजावैहै सो

है । यहपरस्त्रीगमनादिककर्ममहान्नरककीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारकाजो बलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानहै । ताज्ञानकेअभावसहकृत जो यहपरस्त्रीगमनादिककर्म हमारेविषयसुखरूपइष्टकेसाधनहैं याप्रकारका इष्टसाधनताज्ञानहै ता इष्टसाधनताज्ञानकरिकै जन्यजो तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे रागहै । तारागकूं अंगीकारकरिकैही साप्रकृति इसपुरुषकूं तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तकरै है इसीप्रकार यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारकाजो इष्टसाधनताज्ञानहै ताज्ञानकेअभावसहकृतजो यहसंध्यावंदनादिककर्म हमारे दुःखरूप अनिष्टकेसाधनहैं याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहै। ताअनिष्टसाधनताज्ञानकरिकैजन्यजो तिनसंध्यावंदनादिककर्मोंविषेजोद्वेषहै ताद्वेषकूंअंगीकारकरिकैही साप्रकृति तापुरुषकूं तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मों तैं निवृत्तकरैहै ॥ तहां जिसकालविषे धर्मशास्त्र तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे यहपरस्त्रीगमनादिककर्म नरककीप्राप्तिकरणेहारे हैं याप्रकारबलवत्अनिष्टसाधनताकूं बोधनकरैं हैं तिसकालविषे बलवत् अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावरहैनहीं जैसे घटरूपप्रतियोगीवियमानहुए घटाभावरहैनहीं । और तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकीउत्पत्तिकरणेमैंताइष्टसाधनताज्ञानका सोबलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावही सहकारीकारणथा । तासहकारीकारणकेअभावहुए सो केवल इष्टसाधनताज्ञान तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं। जैसे मधुविषयादोनोंकरिकैयुक्तजोअन्नहै ताअन्नविषे यहअन्न हमारेक्षुधाकेनिवृत्तिकासाधनहै याप्रकारके इष्टसाधनताज्ञानकेहुएभी जिसपुरुषकूं ताअन्नविषे यहअन्न हमारेमरणकासाधनहै याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहुआहै तिसपुरुषके सो केवलइष्टसाधनताज्ञान ताअन्नविषे रागकूं उत्पन्नकरिसकैनहीं । इसीप्रकार जिसकालविषे धर्मशास्त्रसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकसुखकेप्राप्तिकासाधनहैं याप्रकार बलवतइष्टसाधनताकूं बोधनकरै है । तिसकालविषे तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे बलवतइष्टसाधनताज्ञानकाअभाव रहैनहीं । जैसे घटरूपप्रतियोगीकेवियमानहुए घटाभाव रहैनहीं। और तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकीउत्पत्तिकरणेमैं ताअनिष्टसाधनताज्ञानका सोबलवतइष्टसाधनताज्ञानकाअभावही सहकारीकारणथा । तासहकारीकारणकेअभावहुए सोकेवलअनिष्टसाधनताज्ञानका तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं यातैंयहअर्थसिद्धभया प्रतिबंधतैंरहितहुआ सोशास्त्र इसपुरुषकूं संध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषेतौ प्रवृत्तकरै है औरपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंतैं निवृत्तकरै है । इसप्रकार शास्त्रकेविचारजन्यज्ञानकीप्रबलताकरिकै जबी तास्वाभाविकरागद्वेषकेकारणकी निवृत्तिहोवै है तबी ताकारणकीनिवृत्तिकरिकै सोस्वाभाविकरागद्वेषरूपकार्यभी निवृत्तहोइजावैहै । यातैं साप्रकृति विपरीतमार्गविषे शास्त्रदृष्टिवाले पुरुषकूं प्रवृत्तकरिसकैनहीं । यातैं शास्त्रकूं तथापुरुषार्थकूं व्यर्थताकीप्राप्तिहोवैनहींइति । इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (तयोर्नवशमागच्छेत्) यहवचनकह्या है अर्थात्

विद्वान्पुरुषकी पश्वादिकोंकेसाथि तुल्यताहीहै इति । ऐसाब्रह्मवेत्ताज्ञानवान् अथवा गुणदोषकेजानणेहारा ज्ञानवान्भी जबी आपणे संस्कारररूपप्रकृतिकेअनुसार ही चेष्टाकैंरहैं तबी दूसरेअज्ञानीमूर्खपुरुष आपणेप्रकृतिकेअनुसारही चेष्टाकैंरहैं याकेविषेक्याकहणाहै । यातैं साप्रकृति यद्यपि अविवेकीप्राणियोंकूं पुरुषार्थतैं भ्रष्टकरणेहारीहै तथापि तेसर्वप्राणी ताप्रकृतिकूंही अनुसरणकैंरहैं । तिसविषे मैंपरमेश्वरकृतनिग्रह तथाराजकृतनिग्रह क्याकरैगा । अर्थात् उत्कटरागकरिकै पापकर्मोंविषेप्रवृत्तहुएपुरुषोंकूं सोनिग्रह तापापकर्मतैंनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहै । तात्पर्ययह । जेपुरुष पापकर्मोंविषे महान्नरककीसाधनाकूंजानिकरिकैभी दुर्वासनाकीप्रबलतातैं पुनः तिनपापकर्मोंविषेही प्रवृत्तहोवैंहैं तेपुरुष मेरीआज्ञाकेउल्लंघनजन्यदोषतैं कदाचित्भयनहींकरैंगे इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका— हे भगवन् ! जोकदाचित् सर्वप्राणी आपणीआपणी प्रकृतिकेहीवशवर्तीहोवैं तौ लौकिकपुरुषार्थका तथा वैदिकपुरुषार्थका कोईभीविषयहोवैगानहीं । यातैं (स्वर्गकामोयजेत) इत्यादिकविधिवाक्योंविषे तथा (परदारान्नगच्छेत) इत्यादिकनिषेधवाक्योंविषे अनर्थकताप्राप्तहोवैगी । काहेतैं इसलोकविषे पूर्वसंस्काररूपप्रकृतितैंरहित कोईभीप्राणीहैनहीं । जिसकेप्रति तिनविधिनिषेधवाक्योंकूं अर्थवेत्ताहोवै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकैंहैं ।

(मू. श्लो.) इंद्रियस्येंद्रियस्यार्थेरागद्वेषौव्यवस्थितौ ॥ तयोर्नवशमागच्छेत्तौह्यस्यपरिपंथिनौ ॥ ३४ ॥ इंद्रियस्य । इंद्रियस्य ! अर्थे । रागद्वेषौ । व्यवस्थितौ । तयोः । न । वशम् । आगच्छेत् । तौ । हि । अस्य । परिपंथिनौ॥३४॥इतिप० ॥ हे अर्जुन ! इंद्रिय इंद्रियके शब्दादिकविषयविषे रागद्वेषदोनों नियमपूर्वकस्थितहैं तिनरागद्वेषदोनोंके वशकूं यहप्राणीनहीं प्राप्तहोवै जिसकारणतैं तेराग द्वेषदोनों इसप्राणीके शत्रुहीहैं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यह जेपंचज्ञानइंद्रियहैं । तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यह जे पंचकर्मइंद्रियहैं तिनज्ञानइंद्रियों के तथा कर्मइंद्रियोंके जे यथाक्रमतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध वचन आदान गमन आनंद मलविसर्जन यह दश विषयहैं तिनशब्दस्पर्शादिकविषयोंविषे तथा वचनआदानादिकविषयोंविषेजोजोविषय इसपुरुषकेअनुकूलहोवैंहैं सोसोविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकै निषिद्धभी होवैंहैं तौभी तिसतिसविषयविषे इसपुरुषकारागही होवै है । और तिनविषयोंविषे जोजोविषय इसपुरुषके प्रतिकूलहोवैंहैं सोसोविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकै विहितभीहोवैंहैं तौभी तिसतिसविषयविषे इसपुरुषका द्वेषहीहोवैहै । इसप्रकार श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंके शब्दादिकसर्वविषयोंविषे अनुकूलताकरिकै तथाप्रतिकूलताकरिकै तेरागद्वेषदोनों नियमपूर्वकही स्थितहैं । कोईतिनसर्वविषयोंविषे नियमतैं विनाही तेरागद्वेषस्थितहैं नहीं । तहां इसपुरुषनैंता रागद्वेषकेवशकूंनहींप्राप्तहोणा यहही आपणेपुरुषार्थका तथाशास्त्रका विषयहै । इहां तात्पर्य यह

(मू. श्लो.) येत्वेतदभ्यसूयंतोनानुतिष्ठंतिमेमतम् ॥ सर्वज्ञानविमूढाँस्तान्विद्धिनष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥ ये । तु । एतत् । अभ्यसूयंतः । न । अनुतिष्ठंति । मे । मतम् । सर्वज्ञानविमूढान् । तान् । विद्धि । नष्टान् । अचेतसः॥ ३२ ॥॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! पुनः जेपुरुष दोषकूंआरोपणकरेहुए हमारे इसपूर्वउक्त मतकूं नहीं अंगीकारकरैंहैं तिनपुरुषोंकूं तूं दुष्टचित्तवाला जांन तथा सर्वज्ञानविषे मूढ जान तथा सर्वपुरुषार्थतैंभ्रष्टजान ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! जेकोईपुरुष नास्तिकपणेतैं गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरतेहुए तथा गुणोंविषेदोषोंका कथनरूपअसूयाकूंकरतेहुए यापूर्वउक्त हमारेमतकूं नहींअंगीकारकरैंहैं तिनपुरुषोंकूं तूं अत्यंत दुष्टचित्तवालाजान । याकारणतैंही कर्मविषयक जेज्ञानहैं तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मविषयक जेज्ञानहैं तिन सर्वज्ञानोंविषे प्रमाणतैं तथाप्रमेयतैं तथाप्रयोजनतैं तेपुरुष विशेषकरिकै मूढहुएजान । तात्पर्ययह । तेकर्मविषयकज्ञान तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मविषयकज्ञान किसप्रमाणकारिकै जन्यहैं तथा तिनज्ञानोंका प्रमेय कौनहै तथा तिनज्ञानोंका प्रयोजन कौनहै याअर्थकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं । याकारणतैंही तिनपुरुषोंकूं तूं सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहुआजान इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जैसे इसलोकविषे जेपुरुष महाराजाकेआज्ञाका उल्लंघनकरैंहैं तिनपुरुषोंकूं महान् भयकीप्राप्तिहोवैहै तैंसे आप ईश्वरकीआज्ञाकेउल्लंघनकरणेविषे महान्भयकीप्राप्तिकूं देखतेहुएभीतेपुरुष किसकारणतैं असूयाकरतेहुए ता आपकेमतकूं नहींअंगीकारकरैंहैं । तथा किसकारणतैं तिनसर्वपुरुषार्थोंके साधनोंविषे प्रतिकूलताबुद्धिकरैंहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैंहैं ।

(मू. श्लो.) सदृशंचेष्टतेस्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ॥ प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहः किंकरिष्यति ॥ ३३ ॥ सदृशम् । चेष्टते । स्वस्याः । प्रकृतेः । ज्ञानवान् । अपि । प्रकृतिम् । यांति । भूतानि । निग्रहः । किम् । करिष्यति ॥ ३३ ॥ ॥इति पच्छेदः ॥

हे अर्जुन ! ज्ञानवान्पुरुष भी आपणी प्रकृतिके अनुसारही चेष्टाकरैं हैं यातैं सर्वप्राणी ताप्रकृतिकूंही अनुसरणकरैं हैं तिसविषे हमारानिग्रह क्यों करैगा ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वजन्मोंविषेकरेहुए धर्म अधर्मके तथा ज्ञानइच्छादिकोंके जे संस्कारहैं तेसंस्कार इसवर्त्तमानजन्मविषे अभिव्यक्तिकूं प्राप्तभयेहैं । तिन अभिव्यक्तसंस्कारोंकानाम प्रकृति है । साप्रकृति सर्वप्रकारतैं बलवान्है । ऐसी बलवान्प्रकृतिके अनुसारही ब्रह्मवेत्तापुरुषभी चेष्टाकरैहै । अथवा (ज्ञानवान्) यापदकरिकै केवल गुणदोषके जानणेहारेपुरुषकाग्रहणकरणा । तहां आचार्यवचनम् । (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) । अर्थयह । खानपानादिकव्यवहारकालविषे

(मू. श्लो.) येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठंतिमानवाः॥श्रद्धावंतोनसूयंतोमुच्यंतेतेऽपिकर्मभिः॥३१॥ये । मे । मतम् । इदम् । नित्यम् । अनुतिष्ठंति । मानवाः । श्रद्धावंतः । अनसूयंतः । मुच्यन्ते । ते । अपि । कर्मभिः॥३१॥इतिपदच्छेदः॥हे अर्जुन ! जेकोई मनुष्य श्रद्धावानहुए तथाअसूयातैंरहितहुए हमारे इस नित्य मतकूं अंगीकार करैं हैं तेपुरुष भी पुण्यपापकर्मोंनैं परित्यागकरीतेहैं ॥३१॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! फलकीइच्छातैंरहितहोइकै तथाश्रीभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै या अधिकारीपुरुषनैं शास्त्रविहितशुभकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा यहजो हमारा मतहै सोहमारामतनित्यवेदकरिकैबोधितहोणेतैं अनादिपरंपराकरिकैप्राप्तहै यातैं नित्य है अथवा सोहमारामत अधिकारीपुरुषोंकूंअवश्यकरिकै करणेयोग्यहै यातैं नित्यहै ऐसेहमारेनित्यमतकूंजेकोईमनुष्य श्रद्धावालेहुए तथाअसूयातैंरहितहुए अंगीकार करैंहैं । इहां शास्त्रनैंतथागुरुनैं उपदेशकर्याजोअर्थहै सोअर्थ जोकदाचित् आपणे अनुभवविषे नहींभीआवताहोवै तौभीताअर्थविषे यहअर्थइसीप्रकारहै याप्रकारकाजो विश्वासहै ताविश्वासकानाम श्रद्धाहै । और किसीपुरुषकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै याकानाम असूयाहै साअसूया इहांप्रसंगविषे याप्रकारकीप्राप्तहै । इसदुःखरूपयुद्धधर्मविषे मैं अर्जुनकूं प्रवृत्तकरताहुआ यह भगवान् करुणातैं रहितहै इति । ऐसी असूयाकूं सर्वप्राणियोंकेसुहृद्रूप तथागुरुरूप मैं भगवान् वासुदेवविषे नहीं करते हुए जेमनुष्य हमारेइसमतकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अंगीकार करैं हैं । तेमनुष्यभी अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तथा ज्ञानकीप्राप्तिद्वारा यथार्थज्ञानीकीन्याईं पुण्यपापकर्मोंनैं परित्याग करते हैं अर्थात् पुण्यपापकर्मोंतैंरहितहोवैंहैं ॥ तात्पर्य यह ताज्ञानवान्पुरुषके भावीशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेकपुण्यपापरूपसंचितकर्महैं तेसंचितकर्मतौ ज्ञानरूप अग्निकरिकैदग्धहोइजावैंहैं ॥ और जिन प्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदियाहै तेप्रारब्धकर्म भोगकरिकै क्षयहोवैंहैं । और सो ज्ञानवान् इस वर्त्तमानशरीरविषे जेपुण्यपापकर्म करै है तेपुण्यपाप कर्म ताज्ञानवान् पुरुषकी सेवाकरणेहारे भक्तजन तथा निंदाकरणेहारे दुष्टजन लेजावैं हैं । तहांश्रुति । (तस्यपुत्रादायमुपयांतिसुहृदःसाधुकृत्यांद्विषंतःपापकृत्याम्) । अर्थ यह । तिसज्ञानवान्पुरुषके धनादिकपदार्थोंकूंतौ पुत्रशिष्यादिक लेजावैंहैं । और तिसज्ञानवान् पुरुषके पुण्यकर्मोंकूंतौ सेवाकरणेहारे भक्तजन लेजावैं हैं । और तिसज्ञानवान्के पापकर्मोंकूंतौ निंदाकरणेहारे दुष्टजन लेजावैं हैं इति । इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष सर्वपुण्यपापकर्मोंतैंरहितहोवैहै । इहां शास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्मोंका मनुष्यकूंही अधिकार है अन्य किसीकूंअधिकारहैनहीं यातैं श्रीभगवान्नैं (मानवाः) यहवचन कथनकर्याहै इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥

तहां पूर्वश्लोकविषे भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानरूपजोभगवत्का मतहै तामतके अंगीकाररूपअन्वयविषे अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तथा ज्ञानकीप्राप्तिद्वारा सर्वकर्मोंतैंरहिततारूपगुणका कथनकर्या । अब इसश्लोकविषे ताभगवत्मतकेनहीं अंगीकाररूपव्यतिरेकविषे दोषकेप्राप्तिका कथनकरैंहैं ।

नकी समानताके हुएभी अज्ञानी पुरुषविषे तो कर्तृत्वका अभिमान रहै है और ज्ञानी पुरुषविषे ताकर्तृत्व अभिमानका अभाव रहै है याप्रकारतैं दोनोंकी विलक्षणता कथन करी। अब अज्ञानी पुरुषभी दोप्रकार होवै है। एक तौ मोक्षकी इच्छावाला मुमुक्षु अज्ञानीहोवै है। और दूसरा मोक्षकी इच्छातैं रहित अमुमुक्षु अज्ञानी होवै है। तहां अमुमुक्षु अज्ञानीकी अपेक्षाकरिकै मुमुक्षु अज्ञानीविषे सर्वकर्मोंका श्रीभगवत् अर्पण तथा फलकी इच्छाका अभाव याप्रकारकी विलक्षणताकूं कथन करता हुआ श्रीभगवान् अर्जुनविषेभी मुमुक्षु अज्ञानीपणे करिकै कर्मोंके अधिकारकूं दृढ करैं हैं।

(मू. श्लो.) मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्मचेतसा॥ निराशीर्निर्ममोभूत्वायुध्यस्वविगतज्वरः॥ ३०॥ मयि। सर्वाणि। कर्माणि। संन्यस्य। अध्यात्मचेतसा। निराशीः। निर्ममः। भूत्वा। युध्यस्वं। विगतज्वरः॥ ३०॥ इतिप०॥ हे अर्जुन! तूं मैंपरमेश्वरविषे अध्यात्मचित्तकरिकै सर्व कर्मोंकूं समर्पणकरिकै कामनातैंरहित तथाममतातैंरहित तथाशोकतैंरहित होइकै इसयुद्धकूंकर॥ ३०॥ इतिपदार्थः॥

टीका। हे अर्जुन! सर्वज्ञ तथा सर्वजगत्‌कानियंता तथा सर्वका आत्मारूप ऐसा जो मैं परमेश्वरवासुदेवहूं ऐसेमैं परमेश्वरविषे तूं सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकूं अध्यात्मचित्तकरिकै समर्पण कर। इहां आत्माके प्रतिपादनकरणेवासतै जो शास्त्र प्रवृत्त होवै ताशास्त्रकानाम अध्यात्म है ऐसा उपनिषद्‌रूप वेदांतशास्त्र है तो अध्यात्मशास्त्रकेविचारविषे जो चित्त तत्र होवै ता चित्तका नाम अध्यात्मचेतस् है। अर्थात् आत्मा अनात्माके विवेकवाले चित्तकानाम अध्यात्मचेतस् है। ऐसे अध्यात्मचित्तकरिकै तूं सर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषे समर्पणकर। तात्पर्य यह। मैं अर्जुन कर्त्तारूपअंतर्यामीईश्वरके अधीन हूं। और जैसे भृत्य महाराजकेवासतैंही सर्वकर्मोंकूं करैं हैं तैसे मैंभी तिसईश्वरकेवासतैंही सर्वकर्मोंकूं करता हूं। याप्रकारकीबुद्धिकरिकै तिनसर्वकर्मोंका मैंईश्वरविषे अर्पणकरिकै तथासर्वकामनावोंतैंरहितहोइकै तथा देहपुत्रभ्रातादिकोंविषे ममताअभिमानतैंरहितहोइकै तथाइसलोकविषे अपकीर्तिकाहेतुरूप तथापरलोकविषेनरककेप्राप्तिकाहेतुरूप जो शोकरूपज्वरहै ताशोकरूपज्वरतैंरहितहोइकै तूं मुमुक्षुअज्ञानीअर्जुन इसयुद्धकूंकर अर्थात् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकर। इहां श्रीभगवत्‌अर्पण तथा निष्कामपणा यह दोनोंयुद्धविषेहीकथन करेहैं काहेतैं तायुद्धतैंभिन्नकिसीकर्म विषे ताअर्जुनका ममता यथाशोक प्राप्तहै नहीं किंतु तायुद्धविषेहीप्राप्तहै इति॥ ३०॥ ❀॥ तहां स्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितहोइकै तथाश्रीभगवत्‌अर्पणबुद्धिकरिकै वेदविहितशुभकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै सोशुभकर्मोंकाअनुष्ठानही अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै याअर्थकूं अभी श्रीभगवान् कथनकरैंहैं।

करिकैसंमूढहुए जेअज्ञानीजीव तिनँगुणोंकेकर्मोंविषे आँसक्तिकरैंहैं तिनं अनात्मवेत्ता अनँधिकारी पुरुषोंकूं आँत्मवेत्ताविद्वान् शुभकर्मकीश्रद्धातैं नहीं चँलायमानकरै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्वकथनकरी जा मायारूपप्रकृतिहै ता प्रकृतिका कार्यरूपहोणेतैं धर्मरूप जे देहइंद्रियअंतःकरणादिकविकारहैं तिनविकाररूपगुणोंकरिकै संमूढहुए अर्थात् स्वरूपकेअस्फुरणकरिकै तिनदेहादिकोंकूंही आत्मरूपकरिकैमानतेहुए जेअज्ञानीपुरुष तिनदेहइंद्रियअंतःकरणादिकोंकेव्यापारोंविषेही हम स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकूंकरैंहैं यापकारकी अत्यंतदृढ आत्मीयत्वबुद्धिकरैंहैं । तिन कर्मोंके अधिकारी तथाअनात्मपदार्थोंके अभिमानवाले तथा अशुद्धचित्तवाले होणेतैं ज्ञानकेअधिकारकूंनहींप्राप्तहुए अज्ञानीपुरुषोंकूं यहपरिपूर्णआत्माकेजाणनेहारा विद्वान्पुरुष आप फलकीकामनाकरिकैकर्मनहींकरणे अथवा इनकर्मोंकाफल असतहै अथवा कर्मोंकेकर्तादिक मिथ्याहीहैं अथवा तूं ब्रह्मरूपहै तेरेकूं किंचित्मात्रभीकर्त्तव्यनहींहै इत्यादिकउपदेशकरिकै तिनशुभकर्मोंकीश्रद्धातैं चलायमाननहींकरै । किंतु उलटा तिनशुभकर्मोंकीस्तुतिकरिकै सोविद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंतिनशुभकर्मोंविषेहीप्रवृत्तकरै । और जेपुरुष शुद्धअंतःकरण वालेहोणेतैं अधिकारीहैं तेपुरुषतौ उपदेशतैंविनाआपही विवेककीउत्पत्तिकरिकै चलायमान तातैंरहित ज्ञानकेअधिकारकूंप्राप्तहोवैंहैं इति । इहां जिसवस्तु केज्ञानहुएभी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं तथा जिसवस्तुके नहींज्ञानहुएभी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोइजावै तावस्तुकानामअकृत्स्नहै । जैसेएकघटके ज्ञानहुएभी तावटतैंभिन्नपटादिकोंकाज्ञानहोवै नहीं । और ताघटकेंनहीं ज्ञानहुएभी तावटतैंभिन्नपटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै । यातैं तेघटादिकसर्वअनात्म पदार्थ अकृत्स्न यानामकरिकैकेहजावैंहैं । और जिसएकवस्तुकेज्ञानहुए सर्ववस्तुकाज्ञानहोजावै तथाजिसएकवस्तुके नहींज्ञानहुए सर्ववस्तुकाज्ञानहोवैनहीं तावस्तुकानाम कृत्स्नहै । जैसे एकअद्वितीय आत्माकेज्ञानहुए सर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै । और ताअद्वितीय आत्माकें नहींज्ञानहुए तिनसर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोवैनहीं यातैं सोअद्वितीयआत्मा कृत्स्न यानामकरिकैकह्याजावैहै । तहांश्रुति । (आत्मनोवाअरेदर्शनेनश्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वंविदितम्) अर्थ यह । हे मैत्रेयी ! अधिष्ठानरूपआत्माके दर्शनकरिकै तथाश्रवणकरिकै तथामननकरिकै तथाविज्ञानकरिकै यहसर्वअनात्मजगत् जान्याजावैहैइति । याप्रकारका अकृत्स्न कृत्स्न या दोनोंशब्दोंकाअर्थ वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यनै कथनकऱ्याहैइति । और किसीटीकाविषेतौ (प्रकृतेः) यापदका (गुणकर्मसु) यापदके साथि अन्वयकरिकै यह अर्थकऱ्याहै अहंकारादिकगुणोंकरिकैसंमूढहुए अज्ञानीपुरुष प्रकृतिके देहादिकगुणोंविषे तथागमनादिककर्मोंविषे मैं ब्राह्मणहूं मेरा यहयज्ञादिककर्महै याप्रकारका अंहममअभिमानकरैंहैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ पूर्वप्रसंगविषे अज्ञानीपुरुष तथाज्ञानवान्पुरुष दोनोंविषे शुभकर्मोंकेअनुष्ठा

वाक्पाणिआदिक इंद्रियोंकीही वचन आदानादिकक्रियाहैं । और बुद्धिकीही अहंकरणरूपक्रियाहै । और मनकीही संकल्परूप क्रियाहै । आत्माकी कोईभीक्रिया नहींहै । किंतु यह आत्मादेव सर्वदा कूटस्थअसंगचिद्रूपकरिकैस्थित है इस प्रकारका जो गुणविभागहै तथा कर्मविभागहै तिनदोनोंविभागोंके तथाआत्माके यथार्थस्वरूपकूं जोभली प्रकारतैंजानैहैताकानाम तत्ववित्है ऐसातत्ववेत्ताविद्वान्पुरुषतौ सर्वकर्मोंविषे यह चक्षुआदिकइंद्रियही रूपादिकविषयोंविषैप्रवृत्तहोवैं हैं तथावाक्आदिकइंद्रियही वचनादिकोंविषेप्रवृत्तहोवैंहैं तथाबुद्धिही तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंके कर्मोंविषे मैं कर्त्ताहूं याप्रकारकाअभिमानकरैहै मैं आत्मातौ न श्रवणकरताहूं न देखताहूं न बोलताहूं न करताहूं न चालताहूं किंतु कूटस्थअसंगचेतनरूपकरिकै सर्वदा तूष्णीं हीस्थितहूं याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिनइंद्रियादि ोंके कर्मविषे अहंममअभिमानकरतानहींइति । औरकिसीटीकाविषेतौ (तत्त्ववित्तु) याश्लोकके पदोंकी इसप्रकारतैं योजनाकरिकै याप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै (यस्तत्त्ववित्सगुणागुणेषुवर्त्ततेइतिमत्वागुणविभागेकर्मविभागेचनसज्जते) इतियोजना । अर्थयह । आत्मा अनात्मा या दोनोंके यथार्थस्वरूपकूं जानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै सोविद्वान्पुरुषतौ बुद्धिचक्षुआदिकगुणही सुखरूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तहोवैहै आत्मातौ किसीभीविषयविषेप्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारकानिश्चयकरिकै गुणविभागविषे तथाकर्मविभागविषे अहंममअभिमानकरैनहीं । इहां सत्त्व रज तम यातीनोंगुणोंका जो बुद्धि अहंकार ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय विषयरूपकरिकै भिन्नभिन्न अवस्थानहै ताकानाम गुणविभागहै तागुणविभागविषे मैं बुद्धि अहंकारादिरूपहूं याप्रकारकाअहंअभिमान सोतत्त्ववेत्तापुरुष करैनहीं । और तिनबुद्धिअहंकारादिकोंके जे भिन्नभिन्न कर्म हैं तिन्होंकानाम कर्मविभागहै । ताकर्मविभागविषे यहकर्ममेराहैयाप्रकारका ममअभिमान सोतत्त्ववेत्तापुरुष करैनहींइति । इहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नै यहअर्थ सूचनकरचा जानुपर्यंत जिसकादीर्घबाहुहोवैहैं ताकानाम महाबाहुहै । और सामुद्रिकशास्त्रविषे महाबाहुपणा श्रेष्ठपुरुषकालक्षणकह्या यातैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषों केलक्षणवालाहोइकै तूं अन्यपुरुषोंकीन्याईं अविवेकीहोणेकूंयोग्यनहींहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे विद्वान् तथा अविद्वान् यादोनोंविषे कर्मोंकेअनुष्ठानकी समानताकथनकरिकैसोविद्वान्पुरुषअविद्वान्पुरुषकेबुद्धिभेदकूं नहींउत्पन्नकरै यहअर्थ कथनकरचा ताअर्थका अबउपसंहारकरैहैं ।

(मू. श्लो.) प्रकृतेर्गुणसंमूढाःसज्जंतेगुणकर्मसु ॥ तानकृत्स्नविदोमंदान्कृत्स्नविन्नविचालयेत् ॥ २९ ॥ प्रकृतेः । गुणसंमूढाः । सज्जंते । गुणकर्मसु । तान् । अकृत्स्नविदः । मंदान् । कृत्स्नवित् । न । विचालयेत् ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे अर्जुन ! प्रकृतिके गुणों

तत्वबुद्धिरूपजोअहंकारहै ताअहंकारकरिकै विमूढहुआहै क्या विवेककरणेविषेअसमर्थहुआहै आत्मा क्या अंतःकरणजिसका ताकानाम अहंकारविमूढात्माह ऐसा अनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वअभिमानकरणेहारा अज्ञानीपुरुष तिनदेहादिकोंकेअध्यासकरिकै तिनसर्वकर्मोंका मैंहीकर्त्ताहूं याप्रकार आपणे आत्माकूंही कर्त्ता मानें है। तिनप्रकृतिकेगुणोंकूं कर्मोंका कर्त्ता मानतानहीं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अबजैसे अज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंहीमानेहैं। तैसे विद्वानज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंमानतानहीं या अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरैंहैं ॥

(मू. श्लो.) तत्त्ववित्तुमहाबाहोगुणकर्मविभागयोः ॥ गुणागुणेषुवर्त्ततइतिमत्वानसज्जते ॥२८॥ तत्त्ववित् । तु । महाबाहो । गुणकर्मविभागयोः । गुणाः । गुणेषु । वर्त्तते । इति । मत्वा । न । सज्जते ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) हे महान्बाहुवालाअर्जुन ! गुणकर्मविभागके यथार्थस्वरूपकूंजानणेहाराविद्वान् पुरुष तौ इंद्रियादिककरणही रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैंहै न असंगआत्मा ईसप्रकार मानि करिकै नहीं कर्तृत्वअभिमानकरैहै ॥ २८ ॥ (इति पदार्थः)

टीका । तत्त्वनाम यथार्थस्वरूपकाहै तिसकूंजोजानैहै ताकानाम तत्त्ववित्है । इहां (तत्त्ववित्तु) यावचनविषे स्थितजो तु यह शब्दहै । सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकरेहुए अज्ञानीपुरुषतैं तातत्त्ववेत्तापुरुषविषे विलक्षणताकूं कथनकरैहै ॥ शंका—हे भगवन् ! सोविद्वान्पुरुष किसवस्तुकेतत्त्वकूंजानै। ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहैं (गुणकर्मविभागयोःइति) अहंअभिमानकेविषयरूप जेदेहइंद्रियअंतःकरणहैं तिन्होंकानाम गुणहै । और मम अभिमानकेविषयरूप जे तिनदेहइंद्रिय अंतःकरणकेव्यापारहैं तिनव्यापारोंकानाम कर्म है। और जो वस्तु सर्वजड विकारोंकाप्रकाशकहोणे तैं तिनसर्वजड विकारोंतैं पृथक्होवै ताकानाम विभागहै। ऐसास्वप्रकाशकज्ञानरूपअसंग आत्माहै। तहां तेगुणकर्मतो भास्य जडविकारी रूपहैं । और यहविभागरूपआत्मादेवतो भासक चेतन निर्विकाररूपहै । इसप्रकार गुणकर्म तथाविभाग यादोनोंकेयथार्थस्वरूपकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै सोविद्वान्पुरुषतो यहइंद्रियादिककरणही विकारीहोणे तैं आपणेआपणे रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैं हैं निर्विकार आत्मा तिनरूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारकानिश्चयकरिकै अज्ञानीपुरुषकीन्याई आपणेआत्माविषे कर्तृत्व अभिमान करैनहीं इति । और किसीटीकाविषे तो (तत्त्ववित्तुमहाबाहो) याश्लोकका याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै । चक्षुआदिकपंचज्ञानइंद्रिय तथा वागादिपंचकर्मइंद्रिय बुद्धि मन इनसर्वकानाम गुणहै । और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकेजेव्यापारहैं तिन्होंकानाम कर्महै । विभाग यापदका गुणपदकेसाथि तथाकर्मपदकेसाथि दोनोंकेसाथि संबंध करणा ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवै है चक्षुश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीही दर्शन श्रवणादिकक्रियाहैं । और

शुभकर्मोंके अनुष्ठानतैं जिसपुरुषकाअंतःकरणशुद्धहुआहै सोपुरुषही अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकाअधिकारीहोवैहै । अशुद्धअंतःकरणवालापुरुष अकर्त्ताआत्माकेउपदेशका अधिकारीहोवैनहीं । ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकरिकै तिन्होंकीबुद्धिकूं शुभकर्मोंतैंचलायमानकियेहुएतिनपुरुषोंकी शुभकर्मोंविषे श्रद्धानिवृत्तहोइजावैहै यातैंतिनअज्ञानीपुरुषोंकूंस्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीभी प्राप्तिहोवैनहीं । तथाअशुद्धअंतःकरणविषे आत्माकाज्ञानभी उत्पन्नहोवैनहीं यातैं ते अज्ञानीपुरुष भोग मोक्षदोनोंतैंभ्रष्टहोवैं हैं । यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ "अज्ञस्यार्द्धप्रबुद्धस्यसर्वंब्रह्मेतियोवदेत् ॥ महानिरयजालेषुसतेनविनियोजितः ॥ " ॥ अर्थ यह ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसा जो केवलकर्मोंकाअधिकारी अर्धप्रबुद्ध अज्ञानीपुरुषहै तिसअज्ञानीपुरुषकेप्रति जोविद्वान्पुरुष तूं मैं यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहै याप्रकारकाउपदशकेरैहै तिसविद्वान्पुरुषनैं सोअज्ञानीपुरुष महारौरवनरकादिकोंविषे प्राप्तकरया इति । यातैं यह विद्वान्पुरुष आप शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोइकै तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंभी शुभकर्मविषेहीप्रवृत्तकरै । तिनशुभकर्मोंकेकरणेतैं जभी तिन अज्ञानीपुरुषोंकेअंतःकरणकीशुद्धिहोवै तभी यह विद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताअभोक्ताआत्माकाउपदेशकरै इति ॥ २६ ॥ ॥ तहांअज्ञानीपुरुष तथाज्ञानीपुरुष दोनोंविषे शुभकर्मोंकेअनुष्ठानकीसमानताहुएभी कर्तृत्वअभिमान तथा ता कर्तृत्वअभिमानकाअभाव यादोनोंहेतुवोंकरिकै अज्ञानी तथा ज्ञानी दोनोंकीविलक्षणताकूं दिखावताहुआ श्रीभगवान् (सक्ताःकर्मण्यविद्वांसो) यापूर्वउक्तश्लोककेअर्थकूं दोश्लोकोंकरिकैस्पष्टकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः ॥ अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते ॥ २७ ॥ प्रकृतेः । क्रियमाणानि । गुणैः । कर्माणि । सर्वशः । अहंकारविमूढात्मा । कर्त्ता । अहम् । इति । मन्यते ॥ २७॥ (इतिपदच्छेदः) हे अर्जुन ! मायाके गुणोनैं सर्वप्रकारतैं सर्वकर्म करीतेहैं अहंकारकरिकैविमूढहुआहैअंतःकरणजिसका ऐसाअज्ञानीपुरुष मैं कर्मोंका कर्त्ताहूं याप्रकार मानेंहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका । हे अर्जुन ! जा माया सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै तथामिथ्याज्ञानरूपहै तथा (देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्) इस श्वेताश्वतरउपनिषद्कीश्रुतिविषे जिस मायाकूं परमेश्वरकी शक्तिरूपकरिकै कथनकरयाहै तामायाकानाम प्रकृतिहै । तहांश्रुति । (मायांतुप्रकृतिं वियान्मायिनंतुमहेश्वरम्) अर्थ यह । मायाकूं जगत्का प्रकृति जानणा तथा मायाउपाधिवालेकूं महेश्वरजानणाइति । ऐसीमायारूपप्रकृतिके विकाररूप जितनैंकी देहइंद्रियअंतःकरणादिक कार्यकारणरूप गुणहैं तिनगुणोंनैंहीसर्वप्रकारतैं लौकिकवैदिककर्मकरिते हैं । यह असंगआत्मा तिनकर्मोंकूंकरता नहीं तथापि कार्यकारणरूपसंघातविषे आत्म

अभिनिवेशवालेहुए तिसकर्मकूं करैहैं तैसैं लोकसंग्रहके करणेकीइच्छावाला विद्वांन्पुरुष अभिनिवेशतैंरहितहुआ ताकर्मकूं करै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका । हे भारत ! आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुष मैंकर्मोंकाकर्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषे अभिनिवेशवालेहुए जिसप्रकार श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनयज्ञादिककर्मोंकूंकरैहैं तिसीप्रकार लोकसंग्रहकरणेकीइच्छावाला विद्वान्पुरुषभी श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिन यज्ञादिककर्मोंकूंकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानतेरहितहुआ तथास्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितहुवातिनशुभकर्मोंकूंकरै ॥ ईहां (हे भारत !) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषे जाकीउत्पत्तिहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नाम ज्ञानकाहै ताज्ञानविषे जोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसेभारतनामवाला तूंअर्जुनहै यातैं अज्ञानीपुरुषकीन्याईं विद्वान्पुरुषभी लोकसंग्रहवास्तै शुभकर्मोंकूंकरै याप्रकारका जोशास्त्रकाअर्थहै तिसअर्थकेधारणकरणेकूं तूं योग्यहै ॥ ताअर्थकेधारणकरणेतैंही तुम्हारेविषे सोभारतनाम सार्थकहोवैगा इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ शंका– हे भगवन् ! विद्वान्पुरुषने शुभकर्मोंका अनुष्ठानकरिकैंही लोकसंग्रहकरणा ॥ तत्त्वज्ञानकेउपदेशकरिकै सोलोकसंग्रह नहींकरणा याकेविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तर कहैहैं ।

(मू. श्लो.) नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥ जोषयेत्सर्वकर्माणिविद्वान्युक्तःसमाचरन् ॥ २६ ॥ न । बुद्धिभेदम् । जनयेत् । अज्ञानाम् । कर्मसंगिनाम् । जोषयेत् । सर्वकर्माणि । विद्वान् । युक्तः । समाचरन् ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हे अर्जुन ! यह विद्वान् पुरुष कर्मकेसंगी अविवेकीपुरुषोंके बुद्धिभेदकूं नहीं उत्पन्नकरै किंतु सोविद्वान्पुरुष आदरपूर्वक सर्वकर्मोंकूं करताहुआ तिन अविवेकी पुरुषोंकूंभी तिनकर्मोंविषेही जोडै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका । हे अर्जुन ! कर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषे अभिनिवेशवालेजेअज्ञानीपुरुषहैं तिनअज्ञानीपुरुषोंकी मैं इस कर्मकूंकरौंगा तथामैं इसफलकूंभोगौंगा याप्रकारकीजाबुद्धिहै ताबुद्धिकेभेदकूं यह विद्वान पुरुष नहींउत्पन्नकरै । अर्थात् तूंआत्मा अकर्ता है तथाअभोक्ताहै याप्रकारकाउपदेशकरिकै तिनअज्ञानी पुरुषोंके बुद्धिकूं तिनशुभकर्मोंतैं चलायमाननहींकरै किंतु लोकसंग्रहकरणेकीइच्छावाला सोविद्वान्पुरुष आप श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनशुभकर्मोंकूंकरताहुआ तिनअज्ञानीपुरुषोंकीभी तिनशुभकर्मोंविषेश्रद्धाउत्पन्नकरिकै तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं तिनशुभकर्मोंविषेहीनिरंतरजोडै काहेतैं शास्त्रविहित

(मू. श्लो.) उत्सीदेयुरिमेलोकानकुर्यांकर्मचेदहम् ॥ संकरस्यचकर्त्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः ॥ २४ ॥ उत्सदियुः । इमे । लोकाः । न । कुर्याम् । कर्म । चेत् । अहम् । संकरस्य । च । कर्त्ता । स्याम् । उपहन्याम् । इमाः । प्रजाः ॥२४॥(इतिपदच्छेदः) ।हे अर्जुन ! जो कदाचित् मैं ईश्वर शुभकर्मकूं नहीं करौंगा तौ यह सर्वलोकं नाशकूंप्रातहोवैंगे तथा मैंही वर्णसंकरका कर्त्ता होवौंगा तथा इस सर्वप्रजाकूं मैंही हननकरौंगा ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका । हे अर्जुन ! सर्वकाईश्वर मैं कृष्ण भगवान् जो कदाचित् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूं नहींकरौंगा तौ हमारेअनुसारवर्त्तणेहारे मनुआदिक श्रेष्ठपुरुषभी तिन शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तनहींहोवैंगे यातैं जलकी वृष्टिद्वारा सर्वलोकोंकेस्थितिकाकारणरूपजेयज्ञादिककर्महैं तिनसर्वकर्मोंकालोपहोवैगा । तिनसर्वकर्मोंकेलोपहुए यह सर्वलोक नाशकूंप्राप्त होवैंगे । तिन सर्वलोकोंकेनाशतैं अनंतर जोवर्णसंकरहोनाहै तिसवर्णसंकरकाभी मैंही करणेहाराहोवौंगा । तिसकरके मैंही इससर्वप्रजाकूं हननकरणेहाराहोवौंगा । सोयहवार्त्ता हमारेकूंअत्यंतअनुचितहै काहेतैं सर्वप्रजाकेअनुग्रहकरणेवासते प्रवृत्तहुआ जो मैं कृष्णभगवानहूं तिसहमारेकूं धर्मकालोपकरिकै सर्वप्रजाकाहननकरणा उचितनहीं है इति । अथवा (यद्यदाचरतिश्रेष्ठः) इत्यादिकच्यारिश्लोकोंका यह दूसरा अर्थ करना । हे अर्जुन ! केवललोकसंग्रहकूं देखताहुआही तूं कर्मकरणेकूंयोग्यनहीं है किंतु श्रेष्ठाचारतैंभी तूं कर्मकरणेकूंयोग्यहै । इस अर्थकूं श्रीभगवान् कहैंहैं (यद्यदाचरतिश्रेष्ठःइति) यातैंसर्वप्राणियों तैं श्रेष्ठ जोमैंकृष्णभगवानहूंतिसहमारा जिसप्रकारका आचारहै तिसीप्रकारका आचार हमारे अनुसारवर्त्तणेहारे तैं अर्जुननैंभी करणे योग्यहै । हमारेतैंस्वतंत्रहोइके किंचित्मात्रभीआचारतुम्हारेकूं करणेयोग्य नहीं है । शंका—हे भगवन् ! सो आपकाआचार किसप्रकारकाहै जो आचार हमारेकूं अवश्यकरिकै अंगीकारकरणेकूंयोग्यहै । ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् (नमेपार्थास्तिकर्त्तव्यम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ताआपणेआचारका कथनकरताभया इति ॥ २४ ॥ ❀ शंका—हे भगवन् ! आप ईश्वरहो यातैंलोकसंग्रहवास्तै शुभकर्मोंकूंकरतेहुएभी मैं सर्वदा अकर्त्ताहूं याप्रकारके कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं आपकी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं । और मैं अर्जुनतौ जीवहूं यातैंलोकसंग्रहवास्तै तिनशुभकर्मोंकेकरणेतैं मैंकर्मोंकाकर्त्ताहूंयाप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकरिकैहमारेज्ञानका अभिभव अवश्यकरिकैहोवैगा ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं ।

(मू. श्लो.) सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वंति भारत॥कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्॥२५॥सक्ताः।कर्मणि।अविद्वांसः।यथा। कुर्वंति । भारत । कुर्यात् । विद्वान् । तथा । असक्तः । चिकीर्षुः । लोकसंग्रहम् ॥२५॥ (इतिप०) हे भारत ! जैसे अज्ञानीपुरुष कर्मविषे

टीका। जैसे गृहकेस्वामीकूं तागृहविषे स्थितसर्व पदार्थ प्राप्तही हैं तैसे सर्वब्रह्मांडका स्वामी जो मैं कृष्णभगवान्हूं तिस हमारेकूं ताब्रह्मांडविषेस्थितसर्वपदार्थ प्राप्तहीहैं। कोईभीपदार्थ हमारेकूं अप्राप्तनहीं है ॥ और लोकविषेपूर्वअप्राप्तवस्तुकी प्राप्तिवास्तैही प्रयत्नकरैं है। पूर्वप्राप्तवस्तुकीप्राप्ति वास्तै कोईभी प्रयत्नकरतानहीं॥ यातैं तीन लोकोंविषे किसी पदार्थकेप्राप्तिका उद्देशकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभी कर्तव्यनहीं है ॥ तौभी मैंकृष्णभगवान् वेदविहितशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोताही हूं ॥ तिनशुभकर्मोंका मैं कदाचित्भी परित्यागकरतानहीं। तिनशुभकर्मोंविषेहमारी प्रवृत्ति तुमारेकूंभी प्रत्यक्षही सिद्धहै । इसीप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवास्तै श्रीभगवान्नैं (वर्त्तएवच) यावचनविषेस्थित च यहशब्दकथनकरयाहै । और (हे पार्थ) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकरया। शुद्धक्षत्रियवंशविषे उत्पन्न होणेतै तूं अर्जुन! हमारेसमानही शूरवीर है। यातै हमारेन्यांई तुमारेकूं भी शुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोणाहीउचित है इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन्! आप शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोइकै दूसरेलोकोंकूंभी तिनशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणा याप्रकारके लोक संग्रहकरणेका कोईफलहैनहीं । यातैं सोलोकोंकासंग्रहभी तुमारेकूंकरणे योग्यनहीं है। ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं।

(मू. श्लो.) यदिह्यहंनवर्त्तेयंजातुकर्मण्यतंद्रितः ॥ ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ २३ ॥ यदि। हि। अहं। न। वर्त्तेयं जातु। कर्मणि। अतंद्रितः। मम। वर्त्म। अनुवर्त्तते। मनुष्याः। पार्थ। सर्वशः ॥ २३ ॥ इतिप० ॥ हे अर्जुन! जो कदाचित् मैं कृष्णभगवान् अलसतैंरहितहोइकै शुभकर्मविषे नहीं प्रवर्त्तहोवौं तो कर्मकेअधिकारीमनुष्य हमारे मार्गकूंही सर्वप्रकारककरिकै अंगीकारकरैंगे ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका–हे अर्जुन! मैं अभी कृतार्थहुआहूं कर्मोंकेकरणेकरिकै अभी हमारेकूं किंचित्मात्रभीअर्थ सिद्धकरणेयोग्यनहींरह्या याप्रकारकी कृतकृत्यबुद्धिकरि कै जो कदाचित् मैं कृष्णभगवान् आलसतैंरहित होइकै शुभकर्मोंविषेनहीं प्रवृत्तहोवौंगा तो जितनेककर्मोंके अधिकारी मनुष्यहैं तेंसर्वमनुष्य हमारेकूं शुभकर्मोंतैंरहितहुआ देखिकै आपभी शुभकर्मोंतैं रहितहोवैंगे । काहेतैं यहकृष्ण भगवान् सर्वज्ञहैं याप्रकारकी हमारेविषेसर्वज्ञत्वबुद्धि करिकै यहसर्व अधिकारीमनुष्य सर्वप्रकारतैं हमारेहीमार्गकूं अंगीकारकरैं हैं इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् सर्वमनुष्योंविषेश्रेष्ठ जो आपहो तिस आपके शुभकर्मोंकेत्यागरूपमार्गकूं अंगीकारकरणा इनअधिकारीमनुष्योंकूं उचितहीहै । ताकरिकै तिनअधिकारीमनुष्योंकूं कौनदोषहै । ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैं हैं ॥

(मू. श्लो.) यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः ॥ सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते ॥ २१ ॥ (पदच्छेदः) यत् । यत् । आचरति । श्रेष्ठः । तत् । तत् । एव । इतरः । जनः । सः । यत् । प्रमाणम् । कुरुते । लोकः । तत् । अनुवर्त्तते ॥ २१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! श्रेष्ठपुरुष जिसे जिसेकर्मकूं करे है तिसी तिसीकर्मकूं ही दूसरे जनभी करैहैं और सोश्रेष्ठपुरुष जिसकूं प्रमाण करै है तिसकूंही दूसरेलोग भी प्रमाणकरैं हैं ॥ २१ ॥

टीका । हे अर्जुन ! सर्वलोकोंविषेप्रधानभूत जेराजादिक श्रेष्ठपुरुष हैं तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसजिस शुभकर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं करैं हैं तिसी तिसी शुभ कर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं तिनराजादिकोंकेआज्ञाविषेचलणेहारेदूसरेजनभी करैं हैं ॥ तिनराजादिकोंतैंस्वतंत्रहोइकै तेदूसरे जन किंचित्मात्रभीकार्यकूं करैंनहीं ॥ शंका—हे भगवन् ! तेदूसरेलोक शास्त्रकूंभलीप्रकारतैंविचारकरिकै शास्त्रतैंविरुद्ध राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंके आचारकूं परित्यागकरिकै केवलशास्त्रविहितआचारकूं किसवासतैनहींकरते ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तिन दूसरेलोगोंकूं श्रेष्ठाचारकीन्यांई प्रमाणताकानिश्चयभी तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेअनुसारहीहोवैहै याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथन करैं हैं (सयत्प्रमाणंकुरुतेइति) हे अर्जुन ! तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसलौकिकपदार्थकूं अथवा वैदिकपदार्थकूं प्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरैं हैं तिसीही लौकिकपदार्थकूं तथा वैदिकपदार्थकूं दूसरेलोकभी प्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरैं हैं ॥ तेदूसरेलोक तिनराजादिकश्रेष्ठपुरुषोंतैं स्वंतत्रहोइकै किसीभीपदार्थकूं प्रमाणरूपकरिकैअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं हे अर्जुन ! सर्वलोकोंविषे प्रधानभूतजोतूंराजाहै तिसतुमनैं लोकोंकेसंरक्षणवासतैं अवश्यकरिकै कर्म करणेकूं योग्य हैं ॥ तुम्हारी शुभकर्मविषेप्रवृत्तिकूं देखिकारिकै दूसरेलोकभी अवश्यकरिकै तिनशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैंगे । जिसकारणतैं राजादिकप्रधानपुरुषोंके अनुसारही दूसरेसर्वलोकों केव्यरहारहोवैं हैं इति॥ २१ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन ! दूसरेलोकोंकूं शुभकर्मविषे प्रवृत्तकरणेवासतै राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंने अवश्यकारिकै शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोणा याअर्थविषे मैं कृष्णभगवानही दृष्टांतहूं इसअर्थकूं तीनश्लोकोंकारिकै श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) नमे पार्थास्तिकर्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिंचन ॥ नानवाप्तमवाप्तव्यंवर्त्तएवचकर्माणि ॥ २२ ॥ न । मे । पार्थ । अस्ति । कर्त्तव्यम् । त्रिषु । लोकेषु । किंचन । न । अनवाप्तम् । अवाप्तव्यम् । वर्ते । एव । च । कर्माणि ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) हे अर्जुन ! हमारेकूं तीनं लोकोंविषे किंचित् मात्रभी करणेयोग्य नहीं है जिसकारणतैं हमारेकूं पूर्वअप्राप्तफल किंचित्मात्रभी प्राप्तहोणेयोग्य नहींहै तौभी मैं कर्मविषे प्रसिद्ध वर्त्तता ही हूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः)

न्यास यह च्यारि आश्रम ब्राह्मणकेहीहोवैं हैं। ओर संन्यासकंछोडिके तीन आश्रम क्षत्रियराजाकेहोवैं हैं । और ब्रह्मचर्य गृहस्थ यह दोआश्रम वैश्यकेहोवैं हैं इति । इत्यादिक अनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकेअभावका कथन कऱ्याहै । तिनश्रुतिवचनोंके तात्पर्यकूंजानणेहारे ते जनकादिकक्षत्रियराजे नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैही ज्ञाननिष्ठाकंप्राप्तहोतेभयेहैं । तिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिके ते जनकादिक ज्ञाननिष्ठाकूं नहीं प्राप्तहोते भयेहैं इति । किंवा । (सर्वेराजाश्रिताधर्माराजाधर्मस्यधारकः) । अर्थ यह । श्रुतिस्मृतिकरिकैप्रतिपादितसर्वधर्म राजाकेआश्रितरहैं हैं । तथा यहराजाही सवधर्म काधारणकरणेहाराहोवैहै इति । यास्मृतिवचनतैं सर्ववर्णआश्रमकेधर्मोंकाप्रवर्त्तकपणा क्षत्रियराजाविषेसिद्धहोवैहै याकारणतैंभी यहक्षत्रियराजा अवश्यकरिकै कर्मोंकूंकरै । याअर्थकूं श्रीभगवान् कहैंहैं (लोकसंग्रहमेवापीति) लोकोंकूं आपणेआपणेधर्मविषे प्रवर्त्तकरणा तथा अधर्मतैंनिवृत्तकरणा याका नाम लोकसंग्रहहै । ता लोकसंग्रहकूंदेखताहुआभी तथा पूर्वजनकादिकक्षत्रियराजावोंकेशिष्टाचारकूं देखताहुआभी तूं अर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकूंहीयोग्यहै । तात्पर्य यह । क्षत्रियजन्मकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंनैं आरंभकऱ्याहै शरीरजिसका ऐसाजो तूअर्जुनहै सो तूं अर्जुन विद्वान्हुआभी जनकादिकोंकीन्याई प्रारब्धकर्म के बलकरिकै तालोकसंग्रहकेवासतै कर्मकरणेकूंहीयोग्यहै । कोईकर्मोंकेत्यागकरणेकेयोग्य तूं नहींहै । जिसकारणतैं कर्मोंकेसंन्यासकरणेयोग्यब्राह्मणशरीर तुम्हारेकूंप्राप्तभयानहीं इति । इसीप्रकारके श्रीभगवान् के अभिप्रायकूं जानणेहारे भगवान्भाष्यकारोंनेब्राह्मणकूंही संन्यासविषेअधिकारहै अन्यक्षत्रियादिकोंकूं संन्यासविषेअधिकारनहीं है याप्रकारकानिर्णयकऱ्याहै । और (सर्वाधिकारविच्छेदिज्ञानंचेदभ्युपेयते । कुतोऽधिकारनियमोव्युत्थानेक्रियतेबलात्) अर्थ यह । सर्व अधिकारका विच्छेदकरणेहाराज्ञान जबी क्षत्रियवैश्यकूं अंगीकारकरतेहो तबी संन्यासविषे ब्राह्मणकाही अधिकारहै क्षत्रियवैश्यका नहींहै याप्रकारका संन्यासकेअधिकारकानियम बलात्कारसैं किसवासतै अंगीकार करतेहो किंतु यह नियमभी नहीं मान्याचाहियेइति । इत्यादिकवचनोंकरिकै जो वार्तिककारनैं क्षत्रियवैश्यकूंभी संन्यासका अधिकार सिद्धकऱ्याहै सोप्रौढिवादतैं सिद्धकऱ्याहै । सर्वथाअनुपपन्नअर्थकूंभी आपणीप्रज्ञाके बलतैं सिद्धकरदेणा याकानाम प्रौढिवादहै । अथवा क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकाप्रतिपादनकरणेहारेवचनोंका भरतऋषभादिकोंकीन्याई अलिंगविद्वत्संन्यासविषे तात्पर्यहै इति । सर्व प्रकारतैं दंडादिकचिह्नपूर्वक विविदिषासंन्यासविषे एकब्राह्मणकाही अधिकार है । क्षत्रियादिकोंकाहैनहीं इति ॥ २० ॥ शंका—हेभगवन् ! जोकदाचित् मैं अर्जुन तिनकर्मोंकूंकरौंभी तोभी दूसरेलोक तिनकर्मोंकूं किसप्रकारकरैंगे । ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् दूसरे लोक श्रेष्ठपुरुषोंकेआचारके अनुसारही प्रवृत्तहोवैंहैं याप्रकारकाउत्तर कहैंहैं ।

दिक श्रुतियोंनैं विधानकरेहुए तथा (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इस श्रुतिनैं आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकरयाहै जिन्होंका ऐसे जे नित्यनैमित्तिक कर्महैं तिन कर्मोंकूं तूं फलकीइच्छातैं रहितहोइकै श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकर जिसकारणतैं यह पुरुष फलकीइच्छातैंरहितहोइकै निरंतर तिन नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं करताहुआ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंहीप्राप्तहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ॥ शंका—हे भगवन् ! ज्ञानके प्राप्तिकी इच्छावान् पुरुषकूंभी ताज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्तै श्रवणमनननिदिध्यासनकेअनुष्ठानअर्थ सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास शास्त्रविषे विधानकरयाहै यातैं केवल ज्ञानवान्पुरुषकूंही तिनकर्मोंका अनधिकारनहींहै किंतु ताज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्विरक्तपुरुषकूंभी तिनकर्मोंकाअनधिकारहीहै यातैं ज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान् तथा विरक्त ऐसाजो मैं अर्जुनहूं तिस मैं अर्जुननेभी तेकर्म परित्यागकरणेकूंही योग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं श्रीभगवान् क्षत्रियराजाकूं संन्यासका अनधिकार प्रतिपादनकरिकै निवृत्तकरैं हैं ।

(मू. श्लो.) कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः ॥ लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥ (पदच्छेदः) कर्मणा । एव । हि । संसिद्धिम् । आस्थिताः । जनकादयः । लोकसंग्रहम् । एव । अपि । संपश्यन् । कर्तुम् । अर्हसि ॥ २० ॥ (पदार्थः) हेअर्जुन ! जिसकारणतैं पूर्व जनकादिकक्षत्रियराजे कर्मकरिकै ही ज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारणतैं तूंभी कर्महीकरणेकूंयोग्यहै। किंवा लोकसंग्रहकूं देखताहुआ भी तूं कर्मकरणेकूं ही योग्यहैं ॥ २० ॥

टीका । हेअर्जुन ! श्रुतिस्मृतिविषे प्रसिद्धजे जनकराजा अजातशत्रुराजा अश्वपतिराजा भगीरथराजा इत्यादिकक्षत्रियराजेहैं ते जनकादिक विद्वान्राजेभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैही अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा श्रवणमननादिकों करिकै साध्य ज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं । कोईकर्मोंकेत्यागकरिकैना ज्ञाननिष्ठाकूं नहींप्राप्त होतेभयेहैं यहवार्त्ताजिसकारणतैं यथार्थहै तिसकारणतैं तूंक्षत्रियअर्जुनभी ज्ञानकीइच्छावालाहुआ अथवा विद्वान्हुआ सर्वप्रकारतैंकर्महीकरणेकूंयोग्यहै ॥ कर्मोंकेत्यागकरणेकूं तूं योग्यनहींहैं काहेतैं (ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्चव्युत्थायाथ भिक्षाचर्यंचरंति) यह जो संन्यासआश्रमकाविधायकश्रुतिवचनहै तावचनविषे ब्राह्मणकाही संन्यासविषेअधिकार कथनकर्‍याहै क्षत्रियवैश्यकाअधिकार कथनकर्‍यानहीं । जैसे (स्वाराज्यकामोराजाराजसूयेनयजेत) इसवचनविषे राजसूययज्ञविषे क्षत्रियराजाकाहीअधिकार कथनकर्‍याहै ब्राह्मणादिकोंकाअधिकार, कथनकरया नहीं । और (चत्वारआश्रमाब्राह्मणस्यत्रयोराजन्यस्यद्वौवैश्यस्य) अर्थ यह। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सं

जिस समाधि अवस्थातैं यह योगी पुरुष आपभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं। तथा अन्य शिष्यादिकोंकरिकेभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं किंतु सर्वथा भेददर्शनके अभावतैं तद्रूपही होवै है। तथा आगे प्रयत्नतैं विनाही परमेश्वरकरिकै प्रेरणा करे हुए प्राणवायुके वशतैं तथा प्रारब्धकर्मके वशतैं जिस विद्वान् पुरुषके देहका व्यवहार अन्य लोकही सिद्ध करैं हैं। तथा जो विद्वान् पुरुष सर्वदा परिपूर्ण परमानंदघन हुआ स्थित होवै है। ऐसी अवस्था तुरीया नामा सप्तमी भूमिका कही जावै है ॥ ७ ॥ ता सप्तमी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ सो योगी पुरुष ब्रह्मविद्वरिष्ठ या नामकरिकै कह्या जावै है। इन सप्त भूमिकावोंके संग्रहका यह श्लोक है। "चतुर्थी भूमिका ज्ञानं तिस्रः स्युः साधनं पुरा। जीवन्मुक्तेरवस्थास्तु परास्तिस्रः प्रकीर्तिताः"। अर्थ यह। शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा यह पूर्वली तीन भूमिका तौ साधनरूप हैं। और सत्त्वापत्ति नामा चतुर्थी भूमिका ज्ञानरूप है। और असंसक्ति, पदार्थाभावनी, तुरीया यह तीन भूमिका जीवन्मुक्तिकी अवस्थाविशेष हैं इति। इन सप्त भूमिकावोंके कहणेका इहां प्रसंगविषे यह प्रयोजन है। जो पुरुष शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा या साधनरूप प्रथम तीन भूमिकावोंकूंभी प्राप्त भया है। सो पुरुषभी जबी कर्मोंका अधिकारी नहीं है तबी चतुर्थी भूमिकावाला ज्ञानवान् पुरुष तथा उत्तर तीन भूमिकावाला जीवन्मुक्त पुरुष तिन कर्मोंका अधिकारी नहीं है याकेविषे क्या कहणा है इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ जिस कारणतैं तूं अर्जुन इस प्रकारका ज्ञानवान् है नहीं किंतु केवल कर्मोंकाही तूं अधिकारी है तिस कारणतैं फलकी इच्छातैं रहित होइके तूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूंही कर या प्रकारके अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ॥ असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) तस्मात्। असक्तः। सततम्। कार्यम्। कर्म। समाचर। असक्तः। हि। आचरन्। कर्म। परम्। आप्नोति। पूरुषः ॥ १९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! तिस कारणतैं तूं फलकामनातैं रहित होइकै सर्वदा अवश्य करणेयोग्य नित्यनैमित्तिक कर्मकूं भली प्रकारतैं कर जिस कारणतैं यह पुरुष फलकी कामनातैं रहित होइके तिस कर्मकूं करता हुआ मोक्षकूंही प्राप्त होवै है ॥ १९ ॥

टीका। हे अर्जुन! जिस कारणतैं तूं ज्ञानवान् है नहीं किंतु केवल कर्मोंकाही अधिकारी है। तिस कारणतैं "यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात्" इत्या

प्तिका साधनरूप है । और या तीनों भूमिकावोंविषे यह सर्व जगत् भेदकारिके विशिष्ट हुआ प्रतीत होवै है यातैं यह तीनों भूमिका जाग्रत् अवस्था या नामकरिकै कही जावै हैं । यह वार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथन करी है । तहां श्लोक । " भूमिकात्रितयं त्वेतद्राम जाग्रदिति स्थितम् । यथावद्भेदबुद्ध्येदं जगज्जाग्रति दृश्यते " । अर्थ यह । हे रामचंद्र ! जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे यह जगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकै देख्या जावै है तैसे या तीन भूमिकावोंविषेभी यह सर्व जगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकै देख्या जावै है यातैं शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा यह तीनों भूमिका जाग्रत अवस्था या नामकरिकै कही जावै है इति । तिसतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषकूं ' तत्त्वमसि ' आदिक वेदांतवाक्यैंतैं निर्विकल्पक ब्रह्मात्मैक्यविषयक साक्षात्कार होवै है याका नाम सत्त्वापत्ति है ॥ ४ ॥ और ता सत्त्वापत्ति नामा चतुर्थ भूमिकाविषे यह सर्व जगत् स्वमकी न्याईं मिथ्यारूपकरिकै प्रतीत होवै है । या कारणतैं सा फलरूप सत्त्वापत्ति स्वप्न अवस्था या नामकरिकै कही जावै है । यह वार्त्ताभी वसिष्ठ भगवान्नैं कथन करी है । तहां श्लोक । "अद्वैते स्थैर्यमायाते द्वैते प्रशममागते । पश्यति स्वप्नवल्लोकं चतुर्थी भूमिका मता " । अर्थ यह । जिस कालविषे अद्वैतकी स्थिरता प्राप्त होवै है तथा द्वैतकी निवृत्ति होवै है तथा यह विद्वान् पुरुष सर्व जगतकूं स्वमकी न्याईं मिथ्या देखै है । तिस काल विषे चतुर्थी भूमिका कही जावै है इति । ता चतुर्थी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ योगी पुरुष ब्रह्मवित् या नामकरिकै कह्या जावै है । और पंचमी, षष्ठी, सप्तमी यह तीन भूमिका तौ जीवन्मुक्तिकेही अवांतर भेद हैं । तहां सविकल्पक समाधिके अभ्यासकरिकै निरुद्ध हुआ जो मन है ता निरुद्ध मनविषे जो निर्विकल्पक समाधि अवस्था है ताका नाम असंसक्ति है ॥ ५ ॥ ता असंसक्ति नाम पंचमी भूमिकाकूं सुषुप्ति या नामकरिकै कथन करैं हैं । और ता पंचमी भूमिकावाला योगी पुरुष आपही समाधितैं व्युत्थानकं प्राप्त होवै है यातैं सो पंचमी भूमिकावला योगी पुरुष ब्रह्मविद्वर या नामकरिकै कह्या जावै है । तिसतैं अनंतर ता असंसक्ति नामा पंचमी भूमिकाके परिपक्वताकरिकै चिरकाल पर्यंत स्थिर हुई जो सा निर्विकल्पक समाधि अवस्था है ताका नाम पदार्थाभावनी है ॥ ६ ॥ सा पदार्थाभावनी नाम षष्ठी भूमिका गाढ सुषुप्ति या नामकरिकै कही जावै है । ता पदार्थाभावनी नामा षष्ठी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ सो योगी पुरुष आपही समाधितैं उठै नहीं । किंतु दूसरे शिष्यादिकोंके प्रयत्नकरिकैही सो योगी पुरुष समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त होवै है । सो षष्ठी भूमिकावाला योगी पुरुष ब्रह्मविद्वरीयान् या नामकरिकै कह्या जावै है । यह वार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथन करी है । तहां श्लोक । "पंचमीं भूमिकामेत्य सुषुप्ति पदनामिकाम् । षष्ठीं गाढसुषुप्त्याख्यां क्रमात्पतति भूमिकाम्" । अर्थ यह । यह योगी पुरुष सुषुप्ति नामा पंचमी भूमिकाकूं प्राप्त होइकै क्रमतैं गाढ सुषुप्ति नामा षष्ठी भूमिकाकूं प्राप्त होवै है इति । और

करणे योग्य हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (नाकृतेनेह कश्चन इति) हे अर्जुन ! तिस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं नित्यनैमित्तिक कर्माके न करणेकरिकै इस लोकविषे किंचित्मात्रभी निंदारूप अनर्थ तथा प्रत्यवायकी प्राप्तिरूप अनर्थ होवै नहीं इति । तहां इस श्लोकके पूर्वार्द्धकरिके कथन करे हुए सर्व अर्थ विषे (न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः) या उत्तरार्द्धकरिकै युक्तिका कथन करैं हैं । हे अर्जुन ! जिस कारणतैं इस ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं ब्रह्मातैं आदिलेके स्थावरपर्यंत सर्व भूतोंविषे कोईभी प्रयोजनका संबंध नहीं है । अर्थात् किसीभी भूतविशेषकूं आश्रयण करिकै कोई क्रिया साध्य अर्थ है नहीं । तिस कारणतैं इस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंका करणा तथा तिन कर्मोंका नहीं करणा यह दोनों निष्प्रयोजन हैं । तहां श्रुति । " नैनं कृताऽकृते तपतः इति " । अर्थ यह । इस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं कर्मोंका करणा तथा कर्मोंका नहीं करणा यह दोनों तपायमान करैं नहीं इति । शंका--हे भगवन् ! तिस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं भी मोक्षकी प्राप्तिविषे इंद्रादिक देवता नाना प्रकारके विघ्न करैंगे यातैं तिन विघ्नोंकी निवृत्ति करणेवासतै ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषनैं भी तिन देवतावोंका आराधनरूप कर्म अवश्य करना चाहिये । समाधान—हे अर्जुन ! आत्मज्ञानतैं पूर्वही ते देवता विघ्न करैं हैं । आत्मज्ञानकी प्राप्तितैं उत्तर मोक्षकी प्राप्तिविषे ते देवता विघ्न करणेविषे समर्थ होवैं नहीं । तहां श्रुति । " तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशत आत्मा ह्येषां स भवति " । अर्थ यह । जिस कारणतैं सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष इन देवतावोंका आत्मारूप है तिस कारणतैं यह इंद्रादिक देवता तिस ब्रह्मवेत्ता पुरुषके पराभव करणेविषे समर्थ होवैं नहीं इति । यातैं ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं विघ्नोंकी निवृत्ति करणेवासतै सो देवतावोंका आराधनरूप कर्मभी कर्त्तव्य नहीं है इति । ऐसा ब्रह्मवेत्ता पुरुष सप्त भूमिकावांके भेदकरिकै वसिष्ठभगवान्नैंभी निरूपण करा है । तहां श्लोक । " ज्ञानभूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा परिकीर्तिता । विचारणा द्वितीया स्यात्तृतीया तनुमानसा । सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसंसक्तिनामिका । पदार्थाभावनी षष्ठी सप्तमी तुर्यगा स्मृता ॥ " । अर्थ यह । शुभइच्छा १, विचारणा २, तनुमानसा ३, सत्त्वापत्ति ४, असंसक्ति ५, पदार्थाभावनी ६ और तुरीया ७ यह भूमिकाज्ञानकी होवैं हैं । तहां नित्यअनित्यवस्तुका विचार तथा इस लोक परलोकके विषयसुखोंतैं वैराग्य तथा शमदमादि षट्कसंपत्ति या तीनों साधनपूर्वक जो फलपर्यंत मोक्षकी इच्छा है जिसकूं मुमुक्षुता कहे हैं ताका नाम शुभइच्छा है ॥ १ ॥ तिसतैं अनंतर श्रोत्रिय ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप जाइके वेदांतवचनोंका श्रवण करणा तथा श्रवण करे हुए अर्थका मनन करणा याका नाम विचारणा है ॥ २ ॥ तिसतैं अनंतर निदिध्यासनरूप अभ्यासनैं मनकी एकाग्रता करिके ता मनविषे जो सूक्ष्म वस्तुके ग्रहण करणेकी योग्यता है याका नाम तनुमानसा है ॥ ३ ॥ यह तीनों भूमिका ज्ञानके

विषे ब्राह्मणत्व आदिक उत्तम जातिका किंचित्मात्रभी उपयोग नहीं है इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! आत्मसाक्षात्कारवान् पुरुषकूं भी स्वर्गादिक सुखोंकी प्राप्तिवासतै अथवा मोक्षकी प्राप्तिवासतै अथवा प्रत्यवायकी निवृत्तिवासतै अवश्यकरिकै ते कर्म करणे योग्य हैं ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं।

(मू. श्लो.) नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ॥ न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥ (पदच्छेदः) न । एव । तस्य । कृतेन । अर्थः । न । अकृतेन । इह । कश्चन । न । च । अस्य । सर्वभूतेषु । कश्चित् । अर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! तिस विद्वान् पुरुषकूं कर्मकरिकै कोईभी प्रयोजन नहीं है तथा कर्मके न करणेकरिकै इस लोकविषे कोईभी अर्थ नहीं है जिस कारणतैं इस विद्वान् पुरुषकूं सर्व भूतोंविषे कोईभी प्रयोजनका संबंध नहीं है ॥ १८ ॥

टीका। हे अर्जुन! जो पुरुष आत्मरति है तथा आत्मतृप्त है तथा आत्मसंतुष्ट है तिस आत्मवेत्ता पुरुषकूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकरिकै कोई भी अभ्युदयरूप प्रयोजन तथा निःश्रेयसरूप प्रयोजन है नहीं काहेतैं तिस विद्वान् पुरुषकूं स्वर्गादिरूप अभ्युदयके प्राप्तिकी तौ इच्छामात्रभी नहीं है। और मोक्षरूप निःश्रेयस तौ कर्मोंकरिकै साध्यही नहीं है। तहां श्रुति। "परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन इति"। अर्थ यह। यह अधिकारी ब्राह्मण पुण्यकर्मकरिकै रचित स्वर्गादिक लोकोंकूं अनित्यता सातिशयता आदिक दोषोंवाला जाणिकै तिन स्वर्गादिक लोकोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै। जिस कारणतैं आत्मरूप नित्यमोक्ष नित्यनैमित्तिक कर्मोंकरिकै प्राप्त होवै नहीं इति। इहां (नैव तस्य) या वचनविषे स्थित जो एव यह शब्द है सो एव शब्द ता आत्मरूप नित्यमोक्षविषे ज्ञानसाध्यताकीभी निवृत्ति सूचन करै है अर्थात् सो आत्मरूप नित्यमोक्ष जैसे कर्मोंकरिकै साध्य नहीं है तैसे ज्ञानकरिकै भी साध्य नहीं है काहेतैं सो आत्मरूप मोक्ष वास्तवतैं तौ या जीवोंकूं नित्यही प्राप्त है तथापि ता आत्माका जो अज्ञान है सो अज्ञानही ता मोक्षकी अप्राप्ति है। सो अज्ञान तत्त्वज्ञानमात्रकरिकै निवृत्त होवै है ता तत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानके निवृत्त हुए ता विद्वान् पुरुषकूं कर्मोंकरिकै सिद्ध होणेहारा तथा तत्त्वज्ञानकरिकै सिद्ध होणेहारा कोई भी प्रयोजन बाकी रहै नहीं इति। शंका—हे भगवन्! नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणे तैं शास्त्रविषे प्रत्यवायकी प्राप्ति कथन करी है यातैं ता विद्वान् पुरुषनैं भी प्रत्यवायकी निवृत्ति करणेवासतै ते नित्यनैमित्तिक कर्म अवश्य

क्रमतैं अरति, अतृप्ति, अतुष्टिही देखणेविषे आवै है इहां रति, तृप्ति तुष्टि यह तीनों मनकी वृत्तिविशेष हैं ते तीनों साक्षीरूप अनुभवकरिकैं सिद्ध हैं । और जिस विद्वान् पुरुषकूं परमानंदस्वरूप परमात्मा देवकी प्राप्ति भई है सो विद्वान् पुरुष द्वैतदर्शनके अभावतैं तथा विषयसुखोंविषे तुच्छबुद्धिवाला होणेतैं तिन विषयसुखोंकी इच्छा करता नहीं । यह वार्त्ता (यावानर्थ उदपाने) इस श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं या कारणतैं सो ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुष आनंदस्वरूप आत्माविषेही रति करै है स्त्री आदिक विषयोंविषे रति करै नहीं । शंका—हे भगवन् ! आनंदस्वरूप आत्माविषे तौ सर्व प्राणीमात्रकी निरुपाधिक प्रीति है ता अपणे आत्माके वासतैही स्त्रीपुत्रादिकोंविषे प्रीति होवै है यातैं ता आत्मरति विद्वान् पुरुषविषे अज्ञानी पुरुषोंतैं विलक्षणता सिद्ध होवै नहीं ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (आत्मतृप्तः इति) हे अर्जुन ! सो विद्वान् पुरुष परमानंदस्वरूप आत्माकरिकैही तृप्त होवै है अज्ञानी पुरुषकी न्याई सो विद्वान् पुरुष कोई मनोरम स्त्रियोंकरिकै तथा मिष्ट अन्नकरिकै तृप्त होवै नहीं । शंका—हे भगवन् ! जिस पुरुषका जठराग्नि रोगादिकोंकरिकै मंद हुआ है तथा धातुक्षय होइ गया है सो पुरुष मिष्ट अन्नकरिकै तृप्त होवै नहीं तथा मनोरम स्त्रियोंविषेभी रमण करता नहीं यातैं तिस रोगी पुरुषतैं ता विद्वान् पुरुषविषे विलक्षणता सिद्ध नहीं होवैगी ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (आत्मन्येव च संतुष्टः इति) हे अर्जुन ! सो विद्वान् पुरुष केवल आनंदस्वरूप आत्माविषेही संतोषकूं प्राप्त हुआ है दूसरे किसी अनात्म पदार्थोंविषे सो विद्वान् पुरुष संतोषकूं प्राप्त होवै नहीं । और रोगादिकोंकरिकै जिस पुरुषका जठराग्नि मंद हुआ है तथा धातुक्षय हुआ है सो पुरुष तौ ता जठराग्निके प्रज्वलित करणेवासतै तथा धातुकी वृद्धि करणेवासतै नाना प्रकारके औषधोंके अर्थ जहां तहां भ्रमण करै है आनंदस्वरूप आत्माविषे सो अज्ञानी पुरुष संतोषकूं प्राप्त होवै नहीं इति । इसी विलक्षणताके बोधन करणेवासतै श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिः) या वचनविषे तु यह शब्द कथन करा है । तहां श्रुति । " आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः " । अर्थ यह । ब्रह्मवेत्तावोंविषे श्रेष्ठ यह विद्वान् पुरुष आनंदस्वरूप आत्माविषेही क्रीडा करै है तथा ता आत्माविषेही रति करै है तथा ता आत्माविषेही क्रियावान् होवै है इति । ऐसे ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंके अधिकारीपणेका कोई हेतु है नहीं या कारणतैं ता विद्वान् पुरुषकूं कोईभी लौकिक, वैदिक, कार्य कर्तव्य नहीं हैं किंतु सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष कृतकृत्यही है । इहां (मानवः) या पदकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचन करा जो कोईभी मनुष्यमात्र इस प्रकार आत्मरति होवै है तथा आत्मतृप्त होवै है तथा आत्मसंतुष्ट होवै है सोईही मनुष्य कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होवै है ता कृतकृत्यभावकी प्राप्ति

करे है तो पुरुष पापरूप जीवनवाला होणेतें व्यर्थही जीवता है अर्थात् तिस पुरुषके जीवनतें मरणही श्रेष्ठ है काहेतें तो शरीरका परित्याग करिकै दूसरे जन्मविषे ता पुरुषकूंभी कदाचित् धर्मका अनुष्ठान संभव होइ सकै है । तथा इस जन्मविषे वेदविहित कर्मोंके न करणेतें जो पापका संग्रह होवै है तिसतैंभी रहित होवै है यातें ता पुरुषके जीवनेतें मरणही श्रेष्ठ है । शंका—हे भगवन् ! ता पूर्व उक्त चक्रकूं नहीं अंगीकार करणेहारा जो ब्रह्मवेत्ता पुरुष है तिसकाभी जीवन निष्फल होवैगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासते श्रीभगवान् ता अज्ञानी पुरुषका विशेषण कहैं हैं (इंद्रियाराम इति) श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै शब्दादिक विषयोंविषे जो पुरुष रमण करै है ताका नाम इंद्रियाराम है ऐसा विषयलंपट पुरुष केव कर्मोंकाही अधिकारी होवै है तिन कर्मोंका अधिकारी हुआभी जो पुरुष तिन कर्मोंकूं नहीं करै है सो पुरुष तिन विहित कर्मोंके न करणेतें केवल पापकाही संग्रह करता हुआ व्यर्थही जीवै है । और जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुष इंद्रियाराम है नहीं यातें तिन कर्मोंके न करणेतें सो विद्वान् पुरुष प्रत्यवायकूं प्राप्त होवै नहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ किंवा । जो पुरुष इंद्रियाराम नहीं है तथा परमार्थ वस्तुकूं सर्वदा देखणेहारा है सो विद्वान् पुरुष इस जगत्रूप चक्रके हेतुभूत कर्मोंका नहीं अनुष्ठान करता हुआभी प्रत्यवायकूं प्राप्त होवै नहीं जिस कारणतें सो विद्वान् पुरुष कृतकृत्यभावकूं प्राप्त हुआ है या अर्थकूं श्रीभगवान् दो श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ॥ आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥ (पदच्छेदः) यः । तु । आत्मरतिः । एव । स्यात् । आत्मतृप्तः । च । मानवः । आत्मनि । एव । च । संतुष्टः । तस्य । कार्यम् । न । विद्यते ॥ १७ ॥

(पदार्थः) हे अर्जुन ! पुनः जो मनुष्य आत्माविषे प्रीतिवाला ही होवै है तथा आत्माकरिकैही तृप्त होवै है तथा आत्माविषे ही संतुष्ट होवै है तिस पुरुषकूं किंचित्मात्रभी कार्य नहीं कर्तव्य होवै है ॥ १७ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो पुरुष इंद्रियाराम होवै है सो विषयलंपट पुरुष स्रक्, चंदन, वनिता आदिक विषयोंकी प्राप्ति करिकैही रतिकूं अनुभव करै है तथा सो पुरुष मनोहर अन्नपानादिक पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकैही तृप्तिकूं अनुभव करै है तथा सो इंद्रियाराम पुरुष सुवर्ण, पुत्र, पशु आदिक पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकै तथा रोगादिकोंकी अप्राप्तिकरिकैही तुष्टिकूं अनुभव करै है तिन पदार्थोंके अप्राप्त हुए तिन इंद्रियाराम रागी पुरुषोंविषे यथा

ग्य अर्थकूंभी नहीं करणा याका नाम प्रमाद है। और नेत्रादिक करणोंविषे वस्तुके यथार्थ ग्रहण करणेकी नहीं शक्ति होणी याका नाम करणाऽपाटव है। अन्य लोकोंके वंचन करणेकी इच्छाका नाम विप्रलिप्सा है इति । तहां अक्षरपरमात्मा देवतैंही वेदोंका प्रादुर्भाव होवै है यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कही है । तहां श्रुति । " अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतयदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानि इति "। अर्थ यह। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद यह चारि वेद इस महान् परमात्मा देवके निःश्वासरूप हैं ते चारों वेद, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद्, श्लोकसूत्र, अनुव्याख्यान, व्याख्यान या भेदकरिकै अष्ट प्रकारके हैं इति । इतिहास, पुराण आदिक अष्टोंका अर्थ आत्मपुराणके सप्तम अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं। इस प्रकार साक्षात्परमात्मा देवतैंही उत्पन्न होणे तैं सर्व अर्थका प्रकाशक तथा अविनाशी जो वेद है सो वेद अतिइंद्रिय धर्मरूप यज्ञविषे अपणे तात्पर्यकरिकै स्थित होवै है यातैं पाखंडशास्त्रकरिकै प्रतिपादित निकृष्ट धर्मका परित्याग करिकै या अधिकारी पुरुषनैं वेदप्रतिपादित धर्मही अनुष्ठान करणा इति ॥ १५ ॥ ❀ शंका– हे भगवन् ! इस प्रकार वेदादिकोंकी उत्पत्ति होवो ता कहणेकरिकै इहां प्रसंगविषे क्या फल सिद्ध होवै है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ॥ अघायुरिंद्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ १६ ॥ (पदच्छेदः) एवम् । प्रवर्तितम् । चक्रम् । नँ । अनुवर्तयति । इह । यः । अघायुः । इंद्रियारामः । मोघम् । पार्थ । सः । जीवति ॥ १६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! इस लोकविषे जो अधिकारी पुरुष इस प्रकार प्रवृत्त हुए चक्रकूं नहीं अंगीकार करै हैं सो पाप जीवन इंद्रियाराम पुरुष व्यर्थही जीवता है ॥ १६ ॥

टीका । हे अर्जुन ! प्रथम सर्वज्ञ परमेश्वरतैं सर्व अर्थकूं प्रकाश करणेहारे नित्य निर्दोष वेदका प्रादुर्भाव होवै है तिसतैं अनंतर ता वेदउक्त कर्मोंका ज्ञान होवै है। ता कर्मोंके ज्ञानतैं अनंतर तिन कर्मोंके अनुष्ठानतैं अपूर्वरूप धर्मकी उत्पत्ति होवै है । तिस धर्मकी उत्पत्तितैं अनंतर जलकी वृष्टि होवै है। तिस जलकी वृष्टितैं व्रीहियवादिक अन्न उत्पन्न होवैं हैं ता अन्नतैं मनुष्यादिक भूत उत्पन्न होवैं हैं तिसतैं अनंतर तिन मनुष्यादिकोंकी पुनः कर्मोंविषे प्रवृत्ति होवै है । इस प्रकार सर्व जगत्के निर्वाह करणेवासते परमेश्वरनैं प्रवृत्त करा जो यह चक्र है तिस चक्रकूं जो अधिकारी पुरुष नहीं

ता धर्मरूप यज्ञतैं सा जलकी वृष्टि उत्पन्न होवै है । तहां मनुस्मृति । "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते । आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः" । अर्थ यह । वैदिक अग्निविषे प्रातःसायंकालमैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक पाई हुई जो घृतादिक पदार्थोंकी आहुति है सा आहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यविषे स्थित होवै है ता आहुतिविशिष्ट आदित्यतैं मेघोंद्वारा जलकी वृष्टि उत्पन्न होवै है ता जलकी वृष्टितैं व्रीहियवादिक अन्न उत्पन्न होवैं हैं। और ता अन्नतैं यह मनुष्यादिक शरीर उत्पन्न होवैं हैं इति । और सो धर्मरूप यज्ञ अग्निहोत्र कारीरी इष्टि आदिक कर्मोंतैं उत्पन्न होवै है इति ॥ १४॥ ❀ किंच।

(मू. श्लो.) कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ॥ तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ (पदच्छेदः) कर्म । ब्रह्मोद्भवम् । विद्धि । ब्रह्म । अक्षरसमुद्भवम् । तस्मात् । सर्वगतम् । ब्रह्म । नित्यम् । यज्ञे । प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! ता अग्निहोत्रादिक कर्मकूं तूं वेदतैं उत्पन्न हुआ जान और ता वेदकूं परमात्मादेवतैं उत्पन्न हुआ जान तिसे कारणतैंही सर्व अर्थका प्रकाशक तथा नाशतैं रहित सो वेद ता धर्मरूप यज्ञविषे स्थित है ॥ १५ ॥

टीका । ब्रह्म नाम वेदका है सो वेदरूप ब्रह्म है प्रमाण जिसविषे ताका नाम ब्रह्मोद्भव है तिस अग्निहोत्रादिक कर्मकूं तूं ब्रह्मोद्भव जान । तात्पर्य यह । वेदनैं विधान करा जो अग्निहोत्रादिक कर्म है ता कर्मकूंही तूं अपूर्वरूप धर्मका साधन जान दूसरे पाखंडशास्त्रोंनैं प्रतिपादन करे हुए कर्मोंकूं तुमनैं ता अपूर्वरूप धर्मका साधन जाणना नहीं इति । शंका—हे भगवन् ! तिन पाखंडशास्त्रोंकी अपेक्षाकरिकै वेदविषे कौन विलक्षणता है जिस विलक्षणताकरिकै वेदप्रतिपादित अर्थही धर्मरूप होवै है । दूसरे पाखंडशास्त्रप्रतिपादित अर्थ धर्मरूप नहीं होवैं हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्री भगवान् ता वेदविषे दूसरे पाखंडशास्त्रोंतैं विलक्षणता कथन करैं हैं । (ब्रह्माक्षरसमुद्भवं इति) हे अर्जुन ! भ्रम, प्रमाद, करणाऽपाटव, विप्रलिप्सा इत्यादिक सर्व दोषोंतैं रहित जो परमात्मा देव है ता अक्षर परमात्मादेवतैंही पुरुषके निःश्वासोंकी न्याईं विनाही प्रयत्नतैं सो ऋग्, यजुष्, साम, अथर्वणरूप वेद प्रादुर्भाव हुआ है या कारणतैं भ्रम प्रमाद आदिक दोषोंकी शंकातैं रहित हुए ते अपौरुषेय वेदोंके वचनही धर्मरूप अतिइंद्रिय अर्थविषयक प्रमाकी जनकताकरिकै प्रमाणरूप हैं । भ्रम प्रमाद आदिक दोषोंवाले पुरुषोंकरिकै रचित पाखंडवाक्य ता अतिइंद्रिय धर्मविषयक प्रमाकूं उत्पन्न करैं नहीं यातैं ते पाखंडशास्त्र ता धर्मविषे प्रमाणरूप हैं नहीं । इहां अन्य पदार्थविषे अन्य बुद्धिका नाम भ्रम है और अवश्य करणेयो

स्वाध्यायं च व्रतानि च । हृदयं कल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयो हि सः ॥" अर्थ यह । जो पुरुष दूर मार्गतैं चलिके आया होवे तथा थक्या होवै तथा वैश्वदेव के करणेके कालविषे प्राप्त होवे ताकूं अतिथि जानणा । और जो अपने पुरोहितादिक पूर्वही तहां प्राप्त हैं ते पुरोहितादिक अतिथि नहीं कहे जावैं हैं इति । और वैश्वदेव करणेके कालविषे ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुषोंके गृहविषे जो कोई अन्नार्थी चौर आवै अथवा चांडाल आवै अथवा शत्रु आवै अथवा पिताके हनन करणेहारा आवै सो अन्नार्थी पुरुष अतिथि जानणा तथा सर्व सत्संगादिकोंका कारण जानणा इति । किंवा यह गृहस्थ पुरुष गृहविषे प्राप्त हुए ता अन्नार्थी अतिथिका गोत्र नहीं पूछे तथा वेदकी शाखादिकभी नहीं पूछै तथा ऋग्वेदादिकोंका अध्ययनभी नहीं पूछे । तथा ब्रह्मचर्यादिक व्रतभी नहीं पूछे किंतु सो गृहस्थ पुरुष ता अतिथिविषे यह अतिथि सर्वदेवमय विष्णुरूप है या प्रकारकी भावना कारिकै ता अतिथिके प्रति अन्नादिक देवै इति । यातैं जे ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुष पूर्व उक्त पंचयज्ञोंकूं न करिकै केवल अपणे उदर भरणेवासतैही अन्नकूं पकावैं हैं ते पुरुष अन्नरूप पकारिकै स्थित पापकूंही भोजन करैं हैं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंवा केवल पूर्व उक्त प्रजापतिके वचनमात्रतैंही ते यज्ञादिक कर्म करणेकूं योग्य नहीं हैं किंतु या जगत्‌रूप चक्रके प्रवृत्तिका हेतु होणेतैंभी ते यज्ञादिक कर्म करणेकूं योग्य हैं या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति तीन श्लोकों करिकै कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) अन्नात् । भवंति । भूतानि । पर्जन्यात् । अन्नसंभवः । यज्ञात् । भवति । पर्जन्यः । यज्ञः । कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! अन्नतैं शरीर उत्पन्न होवे है और ता अन्नका जन्म जलकी वृष्टितैं होवे है और सा जलकी वृष्टि अपूर्वरूप धर्मतैं उत्पन्न होवे है और सो अपूर्वरूप धर्म कर्मतैं उत्पन्न होवे है ॥ १४ ॥

टीका । हे अर्जुन ! भोजनद्वारा पुरुष स्त्रियोंके शरीरविषे प्राप्त होइके शुक्रशोणितरूपकारिकै परिणामकूं प्राप्त भया जो व्रीहियवादिक अन्न है तिस अन्नतैंही सर्व मनुष्यादिक प्राणियोंके शरीर उत्पन्न होवैं हैं। और ता व्रीहियवादिकं अन्नकी उत्पत्ति जलकी वृष्टितैं होवे है । यह वार्त्ता सर्व प्राणियोंकूं प्रत्यक्ष सिद्ध है और कारीरीइष्टि अग्निहोत्र आदिकोंतैं उत्पन्न भया जो धर्म है जिस धर्मकूं शास्त्रविषे अपूर्व अदृष्ट या नामकारिकै कथन करैं है ।

रा। जे पुरुष तिन पंचयज्ञोंकूं न कारिके केवल अपणे उदरके भरण करणेवासतैही अन्नकूं पकावैं हैं ते पुरुष पूर्वही पंचसूनाकृत पापवाले तथा प्रमादकृत हिंसाजन्य पापवाले हुएभी पुनः वैश्वदेवादिक नित्यकर्मोंके नहीं करणेजन्य दूसरे पापकूं प्राप्त होवैं हैं इति। तहां स्मृति। "कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी। पंचसूना गृहस्थस्य ताभिः स्वर्गं न विंदति। पंचसूनाकृतं पापं पंचयज्ञैर्व्यपोहति"। अर्थ यह। गृहस्थ पुरुषोंके गृहविषे जीवोंकी हिंसा होणेके पंचस्थान होवैं हैं एक तौ ऊखलविषे अन्नके कूटणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है और दूसरा पाषाणकी चक्कीविषे अन्नके पीसणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और तीसरा अन्नके पकावणेवासतै चुल्हेविषे अग्निके जगावणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और चौथा पात्रोंविषे जलके भरणे तैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और पंचमाँ मृत्तिकाजलादिकोंसैं घरके मार्जन करणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है ता पंच प्रकारकी जीवहिंसाकरिकै यह गृहस्थ पुरुष स्वर्गकूं प्राप्त होता नहीं। और तिन पंच हिंसास्थानोंतैं उत्पन्न भये जो पाप हैं ते पाप पंचयज्ञोंकरिकै निवृत्त होवैं हैं इति। ते पंचयज्ञ यह हैं। तहां श्लोक। "ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्"। अर्थ यह। यह ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुष दिनदिनविषे ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ यह पंच यज्ञ यथाशक्ति करैं इन पंच यज्ञोंका परित्याग कदाचित्भी नहीं करैं इति। तहां वेदका पठन पाठन करणा तथा संध्योपासन करणा याका नाम ऋषियज्ञ है। और अग्निहोत्रादिकोंका करणा याका नाम देवयज्ञ है। और बाले, वैश्वदेवकूं करणा याका नाम भूतयज्ञ है। और गृहविषे प्राप्त हुए अतिथिका अन्नादिकोंकरिकै संतोष करणा याका नाम मनुष्ययज्ञ है। और श्राद्ध तर्पणकूं करणा याका नाम पितृयज्ञ है इति। तिन यज्ञोंके नहीं करणेहारे गृहस्थ पुरुषोंकूं दोषकी प्राप्ति पाराशरस्मृतिविषेभी कथन करी है। तहां श्लोक। "वैश्वदेवविहीना ये आतिथ्येन विवर्जिताः। सर्वे ते नरकं यांति काकयोनिं व्रजंति ते। काष्ठभारसहस्रेण घृतकुंभशतेन च। अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः"। अर्थ यह। जे ब्राह्मणादिक गृहस्थ वैश्वदेव करणेतैं रहित हैं तथा अतिथिके प्रति भोजन देणेतैं रहित हैं ते पुरुष मरिकरिकै नरककूं प्राप्त होवैं हैं तिसतैं अनंतर काकयोनिकूं प्राप्त होवैं हैं इति। किंवा जिस गृहस्थ पुरुषके गृहतैं अतिथि पुरुष अन्नादिकोंकी प्राप्तितैं विना निराश चल्या जावै है तिस गृहस्थ पुरुषने काष्ठोंके सहस्र भारोंकरिकै तथा घृतके शत कुंभोंकरिकै करा हुआ जो होम है सो होम ता पुरुषकूं किंचित्मात्रभी फलकी प्राप्ति करै नहीं इति। अतिथिका लक्षण पाराशरस्मृतिविषे यह कह्या है। तहां श्लोक। "दूराध्वोपगतं श्रांतं वैश्वदेव उपस्थितम्। अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः॥ चौरो वा यदि चांडालः शत्रुर्वा पितृघातकः। वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोऽतिथिः सर्वसंगमः॥ न पृच्छेद्गोत्रचरणे

हियवादिक पदार्थोंका त्यागरूप जो वैश्वदेव, अग्निहोत्र, जातेष्टि इत्यादि नित्यनैमित्तिक याग हैं तिन्होंकूं न करिकै जो पुरुष केवल अपणे देहइंद्रियादिकोंकी पुष्टि करणेवासतै तिन अन्नादिक पदार्थोंकूं भोगै है सो पुरुष तिन देवतावोंका चौरही है तथा कृतघ्न है काहेतैं तिस पुरुषनैं देवतावोंके अन्नादिक पदार्थोंकूं तौ हरण करा है और यज्ञादिकोंकरिकै तिन देवतावोंके ऋणकी निवृत्ति करी नहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ किंवा तिन यज्ञादिक कर्मोंके न करणेतैं या अधिकारी पुरुषकूं केवल चौरभावकी तथा कृतघ्नताकी प्राप्ति होवै नहीं किंतु तिन यज्ञादिक कर्मोंके नहीं करणेतैं या अधिकारी पुरुषकूं प्रत्यवायकीभी प्राप्ति होवै है या अर्थकूं अन्वयव्यतिरेक करिकै निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) यज्ञशिष्टाशिनः संतो मुच्यंते सर्वकिल्बिषैः ॥ भुंजते ते त्वघं पापा ये पचंत्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) यज्ञशिष्टाशिनः । संतः । मुच्यंते । सर्वकिल्बिषैः । भुंजते । ते । तु । अघम् । पापाः । ये । पचंति । आत्मकारणात् ॥ १३ ॥ (पदार्थः) जे पुरुष यज्ञके शेष अन्नकूं भोजन करैं हैं ते शिष्ट पुरुष सर्व पापोंनैं परित्याग करते हैं तथा जे पापात्मा पुरुष केवल अपणे वासतैही अन्नकूं पकावैं हैं ते पुरुष पापकूंही भोजन करैं हैं ॥ १३ ॥

टीका । जे अधिकारी पुरुष ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, भूतयज्ञ या पंच यज्ञोंकूं करिकै परिशेषतैं रहे हुए अमृतरूप अन्नकूं भोजन करैं हैं ते पुरुषही शिष्ट कहे जावैं हैं काहेतैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक वेदविहित कर्मोंके करणेहारे पुरुषकूंही शास्त्रविषे शिष्ट कह्या है ऐसे शिष्ट पुरुष सर्व पापोंनैं परित्याग करते हैं । तात्पर्य यह । प्रमादकरिकै करे हुए जो पाप हैं तथा पंचसूनारूप निमित्ततैं उत्पन्न हुए जो पाप हैं तथा विहित कर्मोंके न करणेकरिकै प्राप्त भये जो पाप हैं तिन सर्व पापोंतैं ते पुरुष रहित होवैं हैं इति । इतनैं कहणेकरिकै तिन यज्ञादिकोंके करणेहारे पुरुषकूं पापके प्राप्तिका अभाव कथन करा । अब तिन यज्ञादिक कर्मोंके नहीं करणेहारे पुरुषकूं प्रत्यवायके प्राप्तिका कथन करैं हैं (भुंजते ते तु इति) तिन पंच महायज्ञोंकूं नहीं करते हुए जे पापात्मा पुरुष केवल अपणे उदरके भरण करणे वासतैही अन्नकूं पकावैं हैं देवता, अतिथि आदिकोंके वासतै अन्नकूं पकावते नहीं ते पुरुष केवल पापकूं ही भोजन करैं हैं अन्नकूं भोजन करते नहीं । यद्यपि तिन पापात्मा पुरुषोंकी दृष्टिकरिकै तौ सो अन्न है तथापि शास्त्रकी दृष्टिकरिकै तथा देवतावोंकी दृष्टिकरिकै सो अन्न पापरूपही है इति । इहां (पापाः अघं भुंजते) या वचनकरिकै यह अर्थ बोधन क

(मू. श्लो.) देवान्भावयतानेन ते देवा भावयंतु वः ॥ परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ (पदच्छेदः) देवान् । भावयत । अनेन । ते । देवाः । भावयंतु । वः । परस्परम् । भावयंतः । श्रेयः । परम् । अवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ (पदार्थः) हे प्रजा तुम अधिकारी इस यज्ञादिरूप धर्म करिकै इंद्रादिक देवतावोंकूं संतुष्ट करो तिसतैं अनंतर ते इंद्रादिक देवता तुम्हारेकूं संतुष्ट करैं इस प्रकार परस्पर संतुष्ट करते हुए तुम दोनों परम श्रेयकूं प्राप्त होवोगे॥ ११ ॥

टीका । हे प्रजा ! तुम सर्व यजमान इस यज्ञादिरूप धर्मकरिकै इंद्रादिक देवताओंकूं संतुष्ट करो । और ता यज्ञविषे हविर्भागोंकरिकै तुम्होंनैं संतुष्ट करे हुए जो इन्द्रादिक देवता हैं ते इंद्रादिक देवता जलकी वृष्टि आदिकोंतैं अन्नकी उत्पत्तिद्वारा तुम यजमानोंकूं संतुष्ट करैं । इस प्रकार परस्पर संतुष्ट करते हुए तुम प्रजा तथा इंद्रादिक देवता दोनोंही मनवांछित अर्थ रूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवोगे तहां तुम्हारेकूं संतुष्ट करणेतैं इंद्रादिक देवता तौ तृप्तिरूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवैंगे । और इन्द्रादिक देवतावोंकूं संतुष्ट करणेतैं तुम प्रजा स्वर्गरूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवोगे इति ॥ ११ ❀ ॥ किंवा ता यज्ञादिकरूप धर्म करिकै तुम्हारेकूं केवल परलोकविषे स्थित स्वर्गादिरूप फलकीही प्राप्ति नहीं होवैगी किंतु इस लोकविषे स्थित अन्न, सुवर्णपशु, आदिक फलकीभी प्राप्ति होवैगी या अर्थकूं प्रजापति कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यंते यज्ञभाविताः ॥ तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः) इष्टान् । भोगान् । हि । वः । देवाः । दास्यंते । यज्ञभाविताः । तैः । दत्तान् । अप्रदाय । एभ्यः । यः । भुंक्ते । स्तेनः । एव । सः ॥ १२ ॥ (पदार्थः) जिस कारण तैं यज्ञकरिकै संतुष्ट हुए यह देवता तुम्हारे ताईं मनवांछित भोगोंकूं देवैंगे तिस कारणतैं तिन देवतावोंनैं दिये हुए भोगोंकूं इन देवतावोंके ताईं न देकरिकै जो पुरुष भोगै है सो पुरुष चोर ही है ॥ १२ ॥

टीका । हे प्रजा ! इस प्रकार श्रौत स्मार्त यज्ञरूप धर्मकरिकै संतुष्ट हुए जो इंद्रादिक देवता हैं ते इंद्रादिक देवता तुम कर्मकर्त्ता यजमानोंके ताईं अन्न, पशु, सुवर्ण इत्यादिक मनवांछित भोगोंकूं देवैंगे । और जैसे कोई पुरुष किसी अन्य पुरुषके प्रति ऋण देवै है तैसे तिन इंद्रादिक देवतावोंनैं तुम्हारे ताईं दिये जो अन्नादिक भोग हैं तिन भोगोंकूं तिन इंद्रादिक देवतावों के ताईं न देकरिकै अर्थात् इंद्रादिक देवतावोंके उद्देशकरिकै वी

करणी है। सा प्रत्यवायकी प्राप्ति नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैंही होवे है काम्य कर्मोंके नहीं करणे तैं कोई प्रत्यवायकी प्राप्ति होवै नहीं। किंवा इस गीताशास्त्रविषे तिन काम्य कर्मोंके कहणेका कोई प्रसंगभी है नहीं उलटा (मा कर्मफलहेतुर्भूः) इस वचनकरिकै तिन काम्य कर्मोंका निषेधही करा है यातैं निष्काम कर्मोंके प्रसंगविषे यह यज्ञादिरूप धर्म तुम्हारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करैगा यह फलका कथन असंगत है। समाधान—काम्य कर्मोंकी न्याईं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकाभी सो आनुषंगिक फल संभव होइ सकै है या वार्त्ता आपस्तंब ऋषिनैंभी कथन करी है। "तद्यथाम्रे फलार्थे निर्मितेच्छाया गंधे इत्यनूत्पद्येते एवं धर्मं चर्यमाणमर्था अनूत्पद्यंते नोचेदनूत्पद्यं ते न धर्महानिर्भवतीति" । अर्थ यह। जैसे किसी पुरुषनैं फलोंकी प्राप्तिवासते लगाया हुआ जो आम्रका वृक्ष है ता आम्रवृक्षके छाया सुगंध यह दोनों आनुषंगिक फल ता लगावणेहारे पुरुषकूं अवश्य प्राप्त होवैं हैं तैसे या अधिकारी पुरुषनैं स्वधर्म जानिकरिकै करे जो नित्यनैमित्तिक कर्म हैं तिन कर्मोंतैं अनंतर ता कर्मकर्त्ता पुरुषकूं मन वांछित पदार्थोंकी प्राप्तिरूप आनुषंगिक फल अवश्य होवै है जो कदाचित् ता कर्मकर्त्ता पुरुषकूं सो आनुषंगिक फल नहींभी प्राप्त होवै तौभी ता नित्यनैमित्तिकरूप धर्मकी हानि होवै नहीं जिस कारणतैं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा मोक्षरूप परम फल ता पुरुषकूं अवश्यकरिकै प्राप्त होवै है इति। शंका—काम्यकर्मोंकी न्याईं जो कदाचित् नित्यकर्मोंकाभी फल अंगीकार करौगे तौ काम्यकर्मों तैं नित्यकर्मोंविषे विलक्षणता सिद्ध नहीं होवैगी। समाधान—काम्यकर्म तथा नित्यकर्म या दोनोंविषे फलकी कारणताके समान हुएभी फलकी इच्छाकरिकै करे हुए कर्मकूं काम्यकर्म कहैं हैं। और फलकी इच्छातैं रहित होइकै करे हुए कर्मकूं नित्यकर्म कहैं हैं या रीतिसैं तिन काम्यकर्मों तैं नित्यकर्मोंविषे विलक्षणता संभवै है। और अनिच्छित फलकीभी वस्तुके स्वभावतैंही उत्पत्ति अंगीकार किये हुए तिन दोनोंविषे विशेषता संभवै नहीं इस वार्त्ताकूं आगे विस्तारकरिकै निरूपण करैंगे यातैं यह यज्ञादिरूप धर्म तुम्हारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो यह वचन असंगत नहीं है किंतु यथार्थ है। तहां स्मृति। "संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः। विधूतपापास्ते यांति ब्रह्मलोकमनामयम्"। अर्थ यह। जे पुरुष निरंतर श्रद्धाभक्तिपूर्वक संध्याकूं उपासना करैं हैं ते पुरुष सर्व पापोंतैं रहित होइकै रोगादिक विकारोंतैं रहित ब्रह्मलोककूं प्राप्त होवैं हैं इति। इत्यादिक अनेक वचनोंकरिकै संध्याउपासनादिक नित्यकर्मोंका ब्रह्मलोकादिकोंकी प्राप्तिरूप आनुषंगिक फल कथन करा है इति ॥ १० ॥ ॥ शंका—हे भगवन्! यज्ञादिरूप धर्मकूं मनवांछित फलोंके प्राप्तिकी हेतुता किस प्रकार है ऐसी शंकाके हुए सो प्रजापति ता प्रकारकूं निरूपण करैं हैं।

वासते जो नित्यनैमित्तिक कर्म करते हैं तिन कर्मोंका नाम यज्ञार्थ कर्म है। ऐसे निष्काम कर्मोंतैं भिन्न जो स्वर्गादिक फलोंकी प्राप्तिवासते काम्य कर्म हैं तिन काम्य कर्मोंविषे प्रवृत्त हुए यह कर्मोंके अधिकारी जनही तिन काम्य कर्मोंकरिकै बंधायमान होवैं हैं। और परमेश्वरके आराधनअर्थ करे जो कर्म हैं तिन निष्काम कर्मोंकरिकै यह अधिकारी जन बंधायमान होवै नहीं यातैं "कर्मणा बध्यते जंतुः" यह पूर्व उक्त स्मृतिभी केवल काम्यकर्मोंविषेही बंधनकी हेतुता कथन करे है निष्काम कर्मोंविषे बंधनकी हेतुता कथन करे नहीं यातैं हे अर्जुन तूं स्वर्गादिक फलोंकी इच्छातैं रहित होइकै केवल परमेश्वरके आराधनअर्थ श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं कर इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ किंवा भगवान् प्रजापतिके वचनतैंभी या अधिकारी पुरुषनैं ते कर्मही करणेकूं योग्य हैं या अर्थकूं श्रीभगवान् चारि श्लोकोंकरिकै अर्जुनके प्रति कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ॥ अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥ (पदच्छेदः) सहयज्ञाः। प्रजाः। सृष्ट्वा। पुरा। उवाच। प्रजापतिः। अनेन। प्रसविष्यध्वम्। एषः। वः। अस्तु। इष्टकामधुक् ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन कल्पके आदिविषे प्रजापति यज्ञके अधिकारी प्रजाकूं उत्पन्न करिकै यह वचन कहता भया है प्रजा इस यज्ञकरिकै तुम वृद्धिकूं प्राप्त होवो जिस कारणतैं यह यज्ञही तुम्हारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो ॥ १० ॥

टीका। श्रुतिस्मृतियोंकरिकै विधान करे जो स्ववर्णआश्रमके यज्ञादिरूप कर्म हैं तिन कर्मोंके सहित जे वर्त्तमान होवैं तिन्होंका नाम सहयज्ञ है अर्थात् कर्मोंके अधिकारियोंका नाम सहयज्ञ है। ऐसे यज्ञादिरूप कर्मोंके अधिकारी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या त्रैवर्णिक प्रजाकूं सृष्टिके आदिकालविषे रचिकरिकै परम कृपालु भगवान् प्रजापति ता त्रैवर्णिक प्रजाके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया। हे प्रजा ! अपणे अपणे वर्ण आश्रमकरिकै उचित जो यह यज्ञादिरूप धर्म है ता यज्ञादिरूप धर्मकरिकै तुम उत्तरउत्तरकालविषे वृद्धिकूं प्राप्त होवो। शंका—इस यज्ञादिरूप धर्मकरिकै किस प्रकार वृद्धि होवै है ऐसी शंकाके हुए प्रजापति कहैं हैं (एष वोऽस्त्विष्टकामधुक् इति) हे प्रजा ! यह यज्ञादिरूप धर्मही तुम अधिकारी जनोंकूं मन वांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो इति। शंका—(सहयज्ञाः) या वचनविषे करा जो यज्ञका ग्रहण है सो यज्ञका ग्रहण अवश्य करणे योग्य नित्यनैमित्तिक कर्मोंकाही उपलक्षक है काम्यकर्मोंका उपलक्षक है नहीं काहेतैं तिन कर्मोंके नहीं करणे तैं प्रत्यवायकी प्राप्ति आगे कथन

त्याग करिकै वैराग्यवान् ब्राह्मण संन्यासपूर्वक भिक्षावृत्तिकूं करैं हैं इति । तहां स्मृति । "चत्वार आश्रमा ब्राह्मणस्य त्रयो राजन्यस्य द्वौ वैश्यस्य इति"। अर्थ यह। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चारि आश्रम ब्राह्मणके होवैं हैं । और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ यह तीन आश्रम क्षत्रियके हो वैं हैं। और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ यह दो आश्रम वैश्यके होवैं हैं इति । तहां अन्य स्मृति । "मुखजानामयं धर्मो वैष्णवं लिंगधारणम् । बाहुजातोरुजातानां नायं धर्मो विधीयते" । अर्थ यह । परमेश्वरके मुखतैं उत्पन्न भये जो ब्राह्मण हैं । तिन ब्राह्मणोंकाही यह दंडादिकचिह्नधारणपूर्वक संन्यास धर्म है । परमेश्वरके बाहुतैं उत्पन्न भये जो क्षत्रिय हैं । तथा परमेश्वरके ऊरुस्थलतैं उत्पन्न भये जो वैश्य हैं तिन क्षत्रिय वैश्योंकूं यह लिंगसंन्यास विधान नहीं करा है इति । इत्यादिक अनेक श्रुतिस्मृतिवचनोंविषे ब्राह्मणकूंही संन्यास आश्रमका अधिकार कथन करा है क्षत्रियवैश्यकं संन्यासका अधिकार कथन करा नहीं । या प्रकारके अभिप्रायकरिकेही श्रीभगवान्नैं अर्जुनके प्रति युद्धादिक कर्मोंतैं विना तुम्हारे शरीरके खानपानादिक व्यवहारभी सिद्ध नहीं होवैंगे या प्रकारका वचन कथन करा है इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवान् ! "कर्मणा बध्यते जंतुर्विद्यया च विमुच्यते"। अर्थ यह। यह जीव कर्मोंकरिकै तौ संसारविषे बंधायमान होवै है । और विद्याकरिकै ता संसारतैं मुक्त होवै है इति । या स्मृति वचनकरिकै तिन सर्व कर्मोंविषे बंधकी हेतुताही सिद्ध होवै है यातैं मुमुक्षु जननैं ते बंधके हेतुभूत कर्म करणेकूं योग्य नहीं हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति काम्यकर्मोंकूंही बंधकी हेतुता है ईश्वर अर्पण बुद्धिकरिकै करे हुए कर्मोंकूं बंधकी हेतुता नहीं है या प्रकारका उत्तर कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधनः ॥ तदर्थं कर्म कौंतेय मुक्तसंगः समाचर ॥ ९ ॥ (पदच्छेदः) यज्ञार्थात् । कर्मणः । अन्यत्र । लोकः । अयम् । कर्मबंधनः । तदर्थम् । कर्म । कौंतेय । मुक्तसंगः । समाचर ॥ ९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! यह लोक परमेश्वरके आराधनअर्थ कर्मतैं अन्य कर्मविषेही कर्मकरिकै बंधायमान होवै है यातैं तूं फलकी इच्छातैं रहित होइकै तां परमेश्वर आराधन अर्थ कर्मकूं भली प्रकार कर ॥ ९ ॥

टीका । "यज्ञो वै विष्णुः"। अर्थ यह। विष्णुभगवान् यज्ञरूप हैं । या श्रुतितैं यज्ञ नाम परमेश्वरका वाचक सिद्ध हो वै है ता परमेश्वरके आराधन

हे अर्जुन ! तूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूंही कर जिस कारणेंत कर्मोंके न करणेतैं कर्महीं श्रेष्ठ है तथा कर्मों तैं रहित तुम्हारे शरीरकी यात्रा भी नहीं सिद्ध होवैगी ॥ ८॥

टीका । हे अर्जुन ! अंतः करणकी शुद्धि करणेहारे कर्मोंके अनुष्ठानतैं रहित जो तूं है सो तूं स्वर्गादिक फलोंकी इच्छातैं रहित होइकै श्रुतिकारिकै प्रतिपादित तथा स्मृतिकरिकै प्रतिपादित संध्या उपासनादिक नित्यकर्मोंकूं तथा ग्रहण श्राद्धादिक नैमित्तिक कर्मोंकूंही कर । शंका—हे भगवन् ! अशुद्ध अंतःकरणवाले पुरुषनैं किस कारणतैं कर्मही करणेकूं योग्य है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः इति) जिस कारणतैं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंका कारणही अत्यंत श्रेष्ठ है तिस कारणतैं अशुद्ध अंतःकरणवाले पुरुषनैं फलकी इच्छातैं रहित होइके ते तित्यनैमित्तिक कर्मही अवश्यकरिकै करणे । यद्यपि " संन्यास एवात्यरेचयत् " या श्रुतिनैं धर्मादिक सर्व साधनोंतैं संन्यासकूंही श्रेष्ठ रूपकरिकै कथन करा है यातैं संन्यासतैं कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करणी संभवै नहीं तथापि जीवन्मुक्तिके सुखवासतै ब्रह्मवेत्ता पुरुषनैं करा जो विद्वत्संन्यास है । तथा आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै शुद्धचित्तवाले मुमुक्षु जननैं करा जो विविदिषा संन्यास है ता दोनों प्रकारके संन्यासविषेही सा श्रुति धर्मादिक सर्व साधनोंतैं श्रेष्ठता कथन करै है । और इहां प्रसंगविषे जो संन्यासतैं कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करी है सो अशुद्धचित्तवाले पुरुषनैं केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै करा जो संन्यास है ता संन्यासतैं निष्काम कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करी है कोई संन्यासकी निंदाविषे भगवान्का तात्पर्य नहीं है । तहां धर्म, सत्य, तप, दम, शम, दान, प्रजनन, आहिताग्नि, अग्निहोत्र, यज्ञ और मानस या एकादश साधनोंतैं संन्यासकी अधिकता आत्मपुराणके दशम अध्यायके अंतविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं इति । किंवा । हे अर्जुन ! तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेकरिकै केवल तुम्हारे अंतःकरणके शुद्धिका अभावही नहीं होवैगा किंतु युद्धादिक कर्मोंके नहीं करणेतैं तुम्हारे शरीरके खानपानादिक व्यवहारभी नहीं सिद्ध होंवैंगे । इहां भगवान्का यह अभिप्राय है । तूं अर्जुन क्षत्रिय है यातैं संन्यास आश्रमकूं धारण करिकै भिक्षावृत्तितैं शरीरके निर्वाह करणेविषे तुम्हारा अधिकार है नहीं काहेतैं श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्राह्मणकूंही संन्यास करणेका अधिकार कथन करा है । तहां श्रुति । "ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरंति इति " । अर्थ यह पुत्रएषणाका तथा वित्तएषणाका तथा लोकएषणाका परि

(मू. श्लो.) यस्त्विंद्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ॥ कर्मेंद्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥ (पदच्छेदः) यः । तु । इंद्रियाणि । मनसा । नियम्य । आरभते । अर्जुन । कर्मेंद्रियैः । कर्मयोगम् । असक्तः । सः । विशिष्यते ॥ ७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जो पुरुष मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकेंकरिके फलइच्छातें रहित हुआ वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै निष्काम कर्मोंकूं करै है सो पुरुष अशुद्धचित्तवाले संन्यासीतैं अत्यंत श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो अधिकारी पुरुष श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना और घ्राण या पंच ज्ञानइंद्रियोंकूं मनसहित रोकिकरिके क्या पापके उत्पत्तिका हेतु जो शब्दादिक विषयोंकी आसक्ति है ता विषयासक्तितैं तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं निवृत्त करिकै अथवा विवेकयुक्त मनकरिके तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं रोकिकरिकै वाक्, पाणि आदिक कर्मइंद्रियोंकरिकै शास्त्रविहित कर्मोंकूं करै है परंतु ता कर्मोंके फलकी इच्छा करता नहीं सो निष्काम कर्मोंके करणेहारा अधिकारी पुरुष पूर्व उक्त अशुद्ध अंतःकरणवाले मिथ्याचार संन्यासी तैं बहुत श्रेष्ठ है । इसी विलक्षणताके जनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं मूलश्लोकविषे (यस्तु) यह तु शब्द कथन करा है । तात्पर्य यह । हे अर्जुन ! या महान् आश्चर्यकूं तूं देख । तिन दोनों पुरुषोंकूं यद्यपि परिश्रम तौ तुल्यही होवै है तथापि एक पुरुष तौ वाकादिक कर्मइंद्रियोंकूं रोकिकरिके मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं विषयोंविषे प्रवृत्त करता हुआ परम पुरुषार्थरूप फलतैं रहित होवै है । और दूसरा पुरुष तौ मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयों तैं निवृत्तकरिकै वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै कर्मोंकूं करता हुआभी परम पुरुषार्थकूं प्राप्त होवै है यातैं चित्तशुद्धितैं रहित संन्यासी तैं सो निष्काम कर्मोंके करणेहारा पुरुष बहुत श्रेष्ठ है इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ जिस कारणतैं अशुद्ध अंतःकरणवाले संन्यासीतैं निष्काम कर्मोंके करणेहारा पुरुष बहुत श्रेष्ठ है । तिस कारणतैं तूं मनसहित ज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं कर । या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ॥ शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥८॥ (पदच्छेदः) नियतम् । कुरु । कर्म । त्वम् । कर्म । ज्यायः । हि । अकर्मणः । शरीरयात्रा । अपि । च । ते । न । प्रसिद्ध्येत् । अकर्मणः ॥ ८ ॥ (पदार्थः)

निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानतैं अपणे चित्तकूं शुद्ध नहीं करा है किंतु औत्सुक्यमात्रकरिकै प्रथम संन्यासकूंही ग्रहण करा है ऐसा अशुद्ध चित्तवाला पुरुष ता संन्यासके फलकूं प्राप्त होवै नहीं या अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करै हैं ।

(मू. श्लो.) कर्मेंद्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ॥ इंद्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥ (पदच्छेदः) कर्मेंद्रियाणि । संयम्य । यः । आस्ते । मनसा । स्मरन् । इंद्रियार्थान् । विमूढात्मा । मिथ्याचारः । सः । उच्यते ॥ ६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जो मूढात्मा पुरुष वाकादिक कर्मइंद्रियोंकूं निग्रह करिकै शब्दादिक विषयोंकूं मनकरिकै स्मरण करता हुआ स्थित होवै है सो पुरुष मिथ्या आचारवाला कह्या जावै है ॥ ६ ॥

टीका । रागद्वेषकरिकै दूषित है अंतःकरण जिसका ऐसा अशुद्ध अंतःकरणवाला जो पुरुष केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै वाक् पाणि पाद आदिक कर्म इंद्रियोंका निरोध करिकै क्या बाह्यइंद्रियोंकरिकै तिन कर्मोंकूं नहीं करता हुआ रागद्वेषकरिकै प्रेरित मनकरिकै शब्दस्पर्शादिक विषयोंकूं स्मरण करता हुआ स्थित होवै है । आत्मतत्त्वकूं स्मरण करता हुआ स्थित होता नहीं । क्या हमनैं सर्व कर्मोंका संन्यास करा है या प्रकारके अभिमान करिकै जो पुरुष सर्व कर्मोंतैं रहित हुआ स्थित होवै है सो पुरुष मिथ्या आचारवाला कह्या जावै है । तात्पर्य यह । तिस पुरुषका अंतःकरण शुद्ध हुआ नहीं यातैं ज्ञाननिष्ठारूप फलकी प्राप्तिके अयोग्य हुआ सो पुरुष पापआचरणवाला कह्या जावै है इति । यह वार्त्ता धर्मशास्त्रविषेभी कही है । तहां श्लोक । " त्वंपदार्थविवेकाय संन्यासः सर्वकर्मणाम् । श्रुत्येहविहितो यस्मात्तत्त्यागी पतितो भवेत् " । अर्थ यह । जिस कारणतैं इस अधिकारी लोकविषे श्रुतिभगवतीनैं त्वंपदार्थ आत्माके विचार करणेवासतैही सर्व कर्मोंका संन्यास विधान करा है तिस कारणतैं जो अशुद्धचित्तवाला पुरुष औत्सुक्यमात्रतैं ता संन्यासकूं ग्रहण करिकै त्वंपदार्थ आत्माका विचार करता नहीं सो बहिर्मुख संन्यासी पतित होवै है इति । यातैं अशुद्ध अंतःकरणवाला पुरुष ता संन्यासतैं ज्ञाननिष्ठारूप सिद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं यह जो वार्त्ता श्रीभगवान्नैं कथन करी है सो यथार्थ है इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां चित्तशुद्धितैं विना केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै जो सर्व कर्मोंका संन्यास है ता संन्यासकूं न करिकै यह अधिकारी पुरुष अपणे चित्तकी शुद्धिवासतै शास्त्रविहित निष्काम कर्मोंकूंही करै । या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करै हैं ।

शुद्धचित्तवाले पुरुषपरि हैं। अशुद्धचित्तवाले पुरुषपरि हैं नहीं इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहां निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानकरिकै जिस पुरुषका चित्त शुद्ध नहीं भया है सो पुरुष सर्वदा बहिर्मुखही रहै है या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहैं हैं।

(मू. श्लो.) न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ॥ कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥ (पदच्छेदः) न । हि । कश्चित् । क्षणम् । अपि । जातु । तिष्ठति । अकर्मकृत् । कार्यते । हि । अवशः । कर्म । सर्वः । प्रकृतिजैः । गुणैः ॥ ५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! जिस कारणतैं कोईभी अज्ञानी पुरुष कदाचित् क्षणमात्र भी कर्मोंकूं नहीं करता हुआ नहीं स्थित होवै है जिस कारणतैं प्रकृतिजन्य सत्त्वादिक गुणों नैं अस्वतंत्र सर्व अज्ञानी जनोंकेप्रति लौकिक वैदिक कर्म कराईते हैं ॥ ५ ॥

टीका। हे अर्जुन ! जिस पुरुषनैं मनसहित इन्द्रियोंकूं अपणे वश नहीं करा है ऐसा अजित इंद्रिय कोई भी पुरुष जिस कारणतैं कदाचित् एक क्षणमात्र कालपर्यंतभी खानपानादिक लौकिक कर्मोंकूं तथा अग्निहोत्रादिक वैदिक कर्मोंकूं नहीं करता हुआ स्थित होवै नहीं किंतु ऐसा अजित इन्द्रिय पुरुष तिन लौकिक वैदिक कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है तिस कारणतैं ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सर्व कर्मोंका संन्यास करणा संभवता नहीं इति । शंका—हे भगवन् ! सो अशुद्धचित्तवाला अविद्वान् पुरुष तिन लौकिक वैदिक कर्मोंकूं नहीं करता हुआ नहीं स्थित होवै है किंतु तिन कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है याकेविषे क्या कारण है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (कार्यते हि इति) हे अर्जुन ! मूलप्रकृतितैं उत्पन्न भये जो सत्त्व, रज, तम, यह तीन गुण हैं । अथवा प्रकृति नाम स्वभावका है ता स्वभावरूप प्रकृतितैं उत्पन्न भये जो रागद्वेषादिक गुण हैं तिन प्रकृतिजन्य गुणोंने जिस कारणतैं चित्तशुद्धितैं रहित अस्वतंत्र सर्व प्राणियोंके प्रति ते लौकिक वैदिक सर्व कर्म कराईते हैं । अथवा कायिक वाचिक मानसिक यह सर्व कर्म कराईते हैं। तिस कारणतैं अशुद्धचित्तवाला कोईभी अविद्वान् पुरुष तिन कर्मोंकूं नहीं करता हुआ स्थित होवै नहीं किंतु तिन प्रकृतिजन्य गुणोंकरिकै चलायमान करा हुआ यह पराधीन अज्ञानी पुरुष सर्व कालविषे तिन कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है । ऐसे अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सर्व कर्मोंका संन्यास करणा संभवता नहीं। जभी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सो संन्यासही नहीं संभवै है। तभी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं ता संन्यासजन्यज्ञाननिष्ठा नहीं संभवै है याकेविषे क्या कहणा है इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ किंवा जिस पुरुषनैं

पुरुषका अंतःकरण शुद्ध होवै नहीं । और अंतःकरणकी शुद्धितैं विना यह पुरुष आत्मज्ञानकी प्राप्तिके योग्य होवै नहीं यातैं निष्काम कर्मोंके नहीं करणेतैं सो अशुद्धचित्तवाला पुरुष सर्व कर्मोंतैं रहिततारूप नैष्कर्म्यकूं प्राप्त होवे नहीं । क्या ज्ञानरूप योग करिके ता निष्ठाकूं प्राप्त होवे नहीं इति । शंका–हे भगवन् ! श्रुतिविषे सर्व कर्मोंके संन्यासतैंही ता ज्ञाननिष्ठाकी प्राप्ति कथन करी है तथा तिन कर्मोंकरिके ज्ञाननिष्ठाके प्राप्तिका निषेध भी कथन करा है । तहां श्रुति । "एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छंतः प्रव्रजंति इति न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः" । अर्थ यह । संन्यासियोंकूं प्राप्त होणेयोग्य जो अद्वितीयब्रह्मरूप लोक है ता ब्रह्मके प्राप्तिकी इच्छा करते हुए यह अधिकारी पुरुष संन्यासकूं ग्रहण करै है इति । और पूर्व कोईक विद्वान् पुरुष ब्रह्मभावकी प्राप्तिरूप मोक्षकूं अग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै तथा पुत्रादिक प्रजाकरिकै तथा सुवर्णादिक धनकरिकै नहीं प्राप्त होते भए हैं किंतु एक त्यागकरिकैही ता मोक्षरूप अमृतकूं प्राप्त होते भए हैं इति । यातैं सर्व कर्मोंके संन्यासतैंही सा ज्ञाननिष्ठा प्राप्त होई सकै है । ता ज्ञाननिष्ठाकी प्राप्तिवास्तै कर्मोंकूं करणा व्यर्थ है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (न च संन्यसनात् इति) हे अर्जुन ! निष्काम कर्मोंके अनुष्ठान करिकै अंतःकरणकी शुद्धि करे तैं विनाही किया हुआ जो संन्यास है ता संन्यासतैं सो अशुद्ध अंतःकरणवाला पुरुष मोक्षरूप फलकी प्राप्ति करणेहारी ज्ञाननिष्ठारूप सिद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं । तात्पर्य यह । निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानकरिकै जन्य जो चित्तकी शुद्धि है ता चित्तशुद्धितैं विना प्रथम संन्यासही नहीं संभवै है । काहे तैं "यदहरेव विरजेततदहरेव प्रव्रजेत्" अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष जिस दिनविषे सर्व विषयसुखोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै तिसी दिनविषे संन्यासकूं ग्रहण करै इति । या श्रुतिनैं वैराग्यवान् पुरुषकूंही संन्यासका अधिकारी कह्या है । सो वैराग्य अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं होवै नहीं । और सो अशुद्धचित्तवाला पुरुष जो कदाचित् 'दंडग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्' । अर्थ यह । दंडादिक चिह्नोंके ग्रहणमात्रकरिकै यह पुरुष नारायणरूप होवै है इत्यादिक प्ररोचक वचनोंकूं श्रवण करिकै औत्सुक्यमात्रकरिकै संन्यासकूं ग्रहण भी करै है । तौभी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सो संन्यास ज्ञाननिष्ठारूप फलकी प्राप्ति करै नहीं । उलटा प्रत्यवायकीही प्राप्ति करै है । इहां कार्यके अधिकारका तथा फलका न विचार करिकै ता कार्यविषे प्रवृत्त करणेहारा जो आह्लादविशेष है ताका नाम औत्सुक्य है तिसी औत्सुक्यकूं कुतूहल कहैं हैं इति । और पूर्व सर्व कर्मोंके त्यागरूप संन्यासकरिकै मोक्षकी प्राप्तिकूं कथन करणेहारे जो श्रुतिवचन कहे थे ते श्रुतिवचन

इत्यादिक वचनोंकारिकै सा दो प्रकारकी निष्ठा कथन करीहै यातैं भूमिकाके भेदकरिकै एकही पुरुषके प्रति ज्ञान और कर्म या दोनोंका उपयोग संभव होइ सके है यातैं ज्ञान और कर्म या दोनोंके अधिकारके भेद हुए भी उपदेशकी व्यर्थता होवै नहीं इति । इसी अर्थके जनावणेवासते श्रीभगवान् इस तृतीय अध्यायविषे अशुद्धचित्तवाले पुरुषकं ता चित्तकी शुद्धिपर्यंत निष्कामकर्मोंके अनुष्ठानकी कर्त्तव्यता (न कर्मणामनारंभात्) इसतैं आदिलैकै (मोघं पार्थ स जीवति) इस वचनपर्यंत त्रयोदश श्लोकोंकरिकै कथन करैगा । और जिन पुरुषोंका चित्त शुद्ध हुआ है ऐसे ज्ञानवान् पुरुषोंकूं तौ ते कर्म किंचित्मात्र भी अपेक्षित नहीं हैं या अर्थकूं (यस्त्वात्मरतिः) इत्यादिक दो श्लोकोंकरिकै कथन करैंगे । और तिसतैं अनंतर (तस्मादसक्तः) इत्यादिक वचनोंकारिकै तौ बंधके हेतुरूप कर्मोंकूंभी फलकी इच्छातैं राहित्यरूप कौशल्यताकारिकै अंतःकरणकी शुद्धि तथा ज्ञानकी उत्पत्तिद्वारा मोक्षकी ही कारणता संभवै है यह अर्थ कथन करैंगे तिसतैं अनंतर (अथ केन प्रयुक्तोयम्) या अर्जुनके प्रश्नका उत्थापन करिकै कामदोषकरिकैही काम्य कर्मोंकूं अंतःकरणके शुद्धिकी कारणता नहीं है यातैं ता कामतैं रहित होइके कर्मोंकूं करता हुआ तूं अर्जुन अंतःकरणकी शुद्धिकारिकै ज्ञानका अधिकारी होवैगा। यह अर्थ श्रीभगवान् इस तृतीय अध्यायकी समाप्तिपर्यंत कथन करैगा इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां जैसे मृत्तिका, दंड, चक्र और कुलाल आदिक कारणोंके अभाव हुए घटरूप कार्यकी उत्पत्तिही होवै नहीं। तैसे निष्काम कर्मरूप कारणके अभाव हुए ज्ञानरूप कार्यकी उत्पत्तिही होवै नहीं या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) न कर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ॥ न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥ (पदच्छेदः) न । कर्मणाम् अनारंभात्। नैष्कर्म्यम्। पुरुषः । अश्नुते । न । च। संन्यसनात्। एव । सिद्धिम्। समधिगच्छति ॥ ४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! यह अधिकारी पुरुष निष्काम कर्मोंके न करणे तैं निष्कर्मभावकूं नहीं प्राप्त होवै है तथा संन्यासतैं भी ज्ञाननिष्ठाकूं नहीं प्राप्त होवै है ॥ ४ ॥

टीका। " तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषंति यज्ञेन दानेन तपसा नाशकेन "। या श्रुतिनैं आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै कथन करे जो अपणे अपणे वर्ण आश्रमके अनुसार वेदाध्ययन, यज्ञ, दान, तप इत्यादिक कर्म हैं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं जो पुरुष निष्काम होइकै करै है तिस

क्या हे पापोंतैं रहित ! या संबोधनकरिकै श्रीभगवानूनैं ता अर्जुनविषे ब्रह्मविद्याके उपदेशकी योग्यता सूचन करी काहे तैं (ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः) इत्यादिक शास्त्रोंके वचनोंनैं पापकर्मतैं रहित पुरुषोंविषेही आत्मज्ञानके उत्पत्तिकी योग्यता कथन करी है इति । और सा एकही स्थितिरूप निष्ठा साध्य अवस्था तथा साधन अवस्था या दोनों अवस्थावोंके भेदकरिकै दो प्रकारकी होवै है कोई दोनोंही निष्ठा स्वतंत्र हैं नहीं । या अर्थके बोधन करणेवासतै श्रीभगवानूनैं (निष्ठा) या पदविषे एकवचन कथन करा है जो कदाचित् स्वतंत्र दोनों निष्ठा भगवानूकूं अभिमत होतीयां तौ निष्ठे या प्रकारके द्विवचनकूं भगवान् कथन करता । इसी अर्थकूं (एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति) या वचन करिकै श्रीभगवान् आगे कथन करैगा इति । अब तिसीही स्थितिरूप निष्ठाकूं दो प्रकारतारूपकरिकै वर्णन करैं हैं । (ज्ञानयोगेन सांख्यानां इति) प्रत्यक् अभिन्न ब्रह्मकूं विषय करणेहारी जो बुद्धि है ताका नाम सांख्या है ता सांख्या नामा बुद्धिकूं जो प्राप्त हुए हैं तिन्होंका नाम सांख्य है । क्या जिन पुरुषोंनैं ब्रह्मचर्य आश्रमतैंही संन्यासकूं धारण करा है । तथा जिन पुरुषोंनैं वेदांतके श्रवणमननादिकोंकरिकै आत्मवस्तुकूं निश्चय करा है तथा जे पुरुष ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ हुए हैं ऐसे शुद्धअंतःकरणवाले सांख्यनामा पुरुषोंकूं (तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व ज्ञानरूप योगकरिकैही सा निष्ठा कथन करी है । इहां " युज्यते ब्रह्मणा अनेन स योगः " । अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष जिस करिकै ब्रह्मके साथि जुडै है ताका नाम योग है इति । और यह अधिकारी पुरुष ता ज्ञानकरिकै ही ब्रह्मके साथि अभेदभावकूं प्राप्त होवै है यातैं सो ज्ञानही योगरूप है इति । और जिन पुरुषोंका अंतःकरण शुद्ध नहीं भया है तथा जे पुरुष ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ नहीं भए हैं ऐसे कर्मोंके अधिकारीरूप योगी पुरुषोंकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ होणेवासतै (धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते) इत्यादिक वचनोंकरिकै कर्मरूप योगकरिकैही पूर्व सा निष्ठा कथन करी है इहां ' युज्यते अंतःकरणशुद्ध्या अनेन स योगः ' । अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष जिसकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिके साथि जुडै है ताका नाम योग है इति । ऐसे अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे निष्काम कर्म हैं यातैं ते निष्काम कर्मही योगरूप हैं या कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध भया । ज्ञान और कर्म या दोनोंका पूर्व उक्त प्रकारतैं समुच्चय तथा विकल्प संभवै नहीं किंतु प्रथम निष्काम कर्मोंकरिकै शुद्ध हुआ है अंतःकरण जिन्होंका ऐसे अधिकारी पुरुषोंकूं सर्व कर्मोंके संन्यासकरिकै ही आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवै है यातैं चित्तकी शुद्धिरूप तथा चित्तकी अशुद्धिरूप दो अवस्थावोंके भेदकरिकै एकही तैं अर्जुनके प्रति हमनैं (एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु)

नोंका जो कदाचित् एकही पुरुष अधिकारी होवै तौ परस्पर विरुद्ध होणे तैं ता ज्ञान तथा कर्म दोनोंका समुच्चय नहीं संभवैगा । और ज्ञान तथा कर्म यह दोनों एक अर्थके हेतु हैं नहीं यातैं तिन दोनोंका विकल्पभी संभवै नहीं । और पूर्व उक्त रीतिसैं जो कदाचित् आप ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके अधिकारीका भेद मानते होवौ तौ एकही मैं अर्जुनके प्रति परस्पर विरुद्ध ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंका उपदेश संभवता नहीं । और जैसे एकही पुरुष एकही कालविषे परस्पर विरुद्ध स्थिति तथा गमन या दोनोंके करणेविषे समर्थ होवैं नहीं तैसे एकही मैं अर्जुन एकही कालविषे परस्पर विरुद्ध ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंके अनुष्ठान करणेविषे समर्थ नहीं हूं यातैं ज्ञानका अधिकार तथा कर्मका अधिकार या दोनोंविषे एक अधिकारकूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रति कथन करो । जिस अधिकार निश्चयपूर्वक आपके वचनकरिकै मैं अर्जुन ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके मध्यविषे एक ज्ञानका अथवा कर्मका अनुष्ठान करिकै मोक्षरूप श्रेयकूं प्राप्त होवौं । इहां ज्ञाननिष्ठा और कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंका जो एक अधिकारी अंगीकार करियें तौ तिन दोनों निष्ठावोंका विकल्प तथा समुच्चय संभवै नहीं यातैं तिन दोनों निष्ठावोंके अधिकारीके भेद जानणेवासतै यह दो श्लोकोंकरिकै अर्जुनका प्रश्न है यह सिद्ध भया इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार जबी अर्जुननैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंके अधिकारीके भेदका प्रश्न करा तबी सो श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रश्नके अनुसार उत्तरकूं कहता भया ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच । लोकेस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ॥ ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥
॥ ३ ॥ (पदच्छेदः) लोके । अस्मिन् । द्विविधा । निष्ठा । पुरा । प्रोक्ता । मया । अनघ । ज्ञानयोगेन । सांख्यानाम् । कर्मयोगेन । योगिनाम् ॥ ३ ॥ (पदार्थः) हे पापतैं रहित अर्जुन ! इस लोकविषे पूर्व अध्यायविषे हमनैं दो प्रकारकी निष्ठा कथन करी थी तहां तत्त्ववेत्ता पुरुषोंकूं ज्ञानरूप योगकरिकै सा निष्ठा कही थी और कर्मयोगवान् पुरुषोंकूं कर्मरूप योगकरिकै सा निष्ठा कथन करी थी ॥ ३ ॥

टीका । हे अर्जुन ! अधिकारीरूपकरिकै अंगीकार करे जो शुद्ध अंतःकरणवाले तथा अशुद्धअंतःकरणवाले दो प्रकारके जन हैं ता दो प्रकारके जनरूप इस लोकविषे ज्ञानपरतारूप तथा कर्मपरतारूप दो प्रकारकी स्थितिरूप निष्ठा पूर्व अध्यायविषे मैं कृष्णभगवाननैं तुम्हारेप्रति स्पष्टरूपकरिकै कथन करी थी यातैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंविषे एक अधिकारीकी शंकाकरिकै तूं ग्लानिकूं मत प्राप्त होउ । इहां (हे अनघ!)

मैं कृष्णभगवान् किसीभी प्राणीके साथि वंचना करता नहीं तौ तैं अत्यंत प्रिय भक्तके साथि मैं किस प्रकार वंचना करौंगा किंतु नहीं करौंगा। और तूं अर्जुन हमारेविषे ता वंचना करणेका कौन चिह्न देखता है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन श्रीभगवान्के प्रति कहे है ।

(मू. श्लो.) व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ॥ तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोहमाप्नुयाम् ॥ २ ॥ पदच्छेदः) व्यामिश्रेण । इव । वाक्येन । बुद्धिम् । मोहयसि । इव । मे । तत् । एकम् । वद । निश्चित्य । येन । श्रेयः । अहम् । आप्नुयाम् ॥ २ ॥

(पदार्थः) हे भगवन् ! मिले हुए वचनकी न्याई वंचनकरिकै आप हमारे बुद्धिकूं मोहकर्त्ताकी न्याई मोहकी प्राप्ति करते हो तिसं एक अधिकारकूं आप निश्चयकरिकै कथन करो जिसकरिकै मैं अर्जुन मोक्षकूं प्राप्त होवौं ॥ २ ॥

टीका । हे भगवन् ! (त्रैगुण्यविषयावेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन) इत्यादिक वचनोंकरिकै आप पूर्व किसी स्थलविषे तो वेदनिष्ठाका परित्याग करावते भये हो । और (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप तिसी वेदनिष्ठाका ग्रहण करावते भये हो और (निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप निवृत्तिमार्गका उपदेश करते भये हो । और (धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप प्रवृत्तिमार्गका उपदेश करते भये हो । इस प्रकार ज्ञाननिष्ठाकूं तथा कर्मनिष्ठाकूं प्रतिपादन करणेहारे जो आपके वचन हैं ते आपके वचन यद्यपि मिले हुए अर्थकूं कथन करते नहीं किंतु भिन्न भिन्न अर्थकूं कथन करते हैं तथापि मैं अर्जुनकूं अपणे बुद्धिके दोषतैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंका एकही अधिकारी है अथवा भिन्न भिन्न अधिकारी है या प्रकारके संशयकरिकै मिल्ये हुए अर्थके वाचक प्रतीत होवैं हैं यह अर्थ अर्जुननैं (व्यामिश्रेणेव) या वचनविषे स्थित इव या शब्दकरिकै सूचन करा इति । हे भगवन् ! ऐसे ज्ञान तथा कर्मनिष्ठाके प्रतिपादक व्यामिश्रित वाक्योंकरिकै आप मैं मंदबुद्धि अर्जुनके अंतःकरणकूं मानों मोहकी प्राप्ति करते हो । इहां (मोहयसीव) या वचनविषे स्थित जो इव यह शब्द है ता इव शब्दकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । आप परम कृपालु हो यातैं आप हमारे मोहके निवृत्त करणेवासतेही प्रवृत्त हुए हो कोई हमारेकूं मोह करणेवासते आप प्रवृत्त हुए नहीं तथापि आपके वचनोंकूं श्रवण करिकै हमारेकूं जो भ्रमरूप मोह भया है सो अपणे अंतःकरणके दोषतैं भया है इति । हे भगवन् ! ज्ञान तथा कर्म या दो

पुरुषके प्रति तिन दोनों निष्ठावोंका उपदेश संभवै नहीं । और तिन दोनों निष्ठावोंका जो कदाचित् एकही अधिकारी मानियें तो परस्पर विरुद्ध तिन दोनों निष्ठावोंका समुच्चय नहीं संभवैगा । तथा कर्मकी अपेक्षाकरिकै ता आत्मज्ञानविषे श्रेष्ठताभी नहीं सिद्ध होवैगी । और ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका जो कदाचित् विकल्प अंगीकार करियें तौ सर्वतैं उत्कृष्ट तथा परिश्रमतैं विनाही सिद्ध होणेहारा जो आत्मज्ञान है ता आत्मज्ञानका परित्याग करिकै बहुत परिश्रमकरिके सिद्ध होणेहारा तथा अत्यंत निकृष्ट ऐसे कर्मका अनुष्ठान कोईभी पुरुष करैगा नहीं इस प्रकारका विचारकरिकै अत्यंत व्याकुल हुइ है बुद्धि जिसकी ऐसा सो अर्जुन श्रीभगवान्के प्रति या प्रकारका वचन कहता भया ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ॥ तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ १ ॥

(पदच्छेदः) ज्यायसी । चेत् । कर्मणः । ते । मता । बुद्धिः । जनार्दन । तत् । किम् । कर्मणि । घोरे । माम् । नियोजयसि । केशव ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन तुम्हारेकूं जबी निष्कामकर्मतैं आत्माविषयक बुद्धि श्रेष्ठरूपकरिकै अभिमत है तबी हे केशव ! हिंसारूप घोर कर्मविषे तूं हमारेकूं किसवासतै प्रेरणा करता है ॥ १ ॥

टीका । हे जनार्दन ! जो कदाचित् तुम्हारेकूं निष्काम कर्मोंतैं आत्मतत्त्वविषयक बुद्धि अत्यंत श्रेष्ठरूपताकरिकै अभिमत है तौ हे केशव ! हिंसादिक अनेक आयासोंकरिकै युक्त इस युद्धरूप घोर कर्मविषे मैं अत्यंत भक्तकूं (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिक वचनोंकरिकै आप वारंवार किस वास्तै प्रेरणा करते हो तहां सर्वैर्जनैरर्द्यते याच्यते स्वाभिलषितसिद्धये इति जनार्दनः । अर्थ यह अपणे मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्तिवासतै सर्व जनोंनैं जिसके प्रति याचना करीती है ताका नाम जनार्दन है । अथवा जनं जननं तत्कारणमज्ञानं च स्वसाक्षात्कारेणार्दयति हिनस्तीति जनार्दनः । अर्थ यह । जन्मकूं तथा जन्मके कारण अज्ञानकूं जो अपने साक्षात्कारकरिकै नाश करै है ताका नाम जनार्दन है । इहां (हे जनार्दन!) या संबोधनकरिकै अर्जुननें यह अर्थ सूचन करा । ऐसे याचना करणेहारे भक्तजनोंके प्रति आप मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्ति करणेहारे हो यातैं अपने श्रेयके निश्चय करणेवासतै जो हमारी आपके प्रति याचना है सो कोई अनुचित नहीं है इति । और (हे केशव!) या संबोधनकरिकै अर्जुननें यह अर्थ सूचन करा । सर्वका ईश्वर तथा सर्व इष्ट पदार्थोंकी प्राप्ति करणेहारे जो आप भगवान् हो तिस एक आपकेही (शिष्यस्तेहं शाधि मम्) इत्यादि प्रार्थनापूर्वक शरणकूं प्राप्त भया जो मैं भक्त अर्जुन हूं तिस हमारेसाथि वंचना करणी आपकूं उचित नहीं है इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ शंका– हे अर्जुन !

के फलविषे सर्व कर्मोंके फलका अंतरभाव दिखाया है । और स्थितप्रज्ञ पुरुषका लक्षण कहि करिकै श्रीभगवान्नैं (एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ) या वचन करिकै प्रशंसासहित ज्ञानके फलका उपसंहार करा है । और (या निशा सर्वभूतानाम्) इत्यादिक वचनों करिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानवान् पुरुषकूं द्वैतदर्शनके अभावतैं कर्मोंके अनुष्ठानका असंभव कथन करा है। और जैसे लोकविषे अंधकारकी निवृत्तिविषे केवल प्रकाशमात्रकूंही कारणता होवै है तैसे अविद्याकी निवृत्तिरूप मोक्षफलविषेभी केवल ज्ञानमात्रकूंही कारणता है और श्रुतिभी ज्ञानमात्रतैंही मोक्षकी प्राप्तिका कथन करै है। तहां श्रुति। "तमेव विदित्वातिमृत्युमेति न्यायः। पंथा विद्यतेऽयनाय"। अर्थ यह। यह अधिकारी पुरुष आनंदस्वरूप आत्माकूं साक्षात्कारकरिकै संसाररूप मृत्युकूं नाश करै है और मोक्षकी प्राप्तिवासतै आत्मसाक्षात्कारतैं विना दूसरा कोई मार्ग है नहीं इति। यातैं ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं तथा एक अधिकारिकताभी संभवै नहीं । शंका—जैसे प्रकाश तथा अंधकार यह दोनों परस्पर विरोधी हैं यातैं तिन दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं । तैसे आत्मज्ञान तथा कर्म यह दोनोंभी परस्पर विरोधी हैं यातैं तिन दोनोंकाभी समुच्चय संभवै नहीं यातैं ज्ञान तथा कर्म इन दोनोंका भिन्न भिन्नही अधिकारी होवै है । समाधान— ज्ञान तथा कर्म इन दोनोंका भिन्न भिन्नही अधिकारी होवै है यह वार्त्ता यद्यपि सत्य है तथापि एकही अर्जुनके प्रति ज्ञान और कर्म इन दोनोंका उपदेश करणा संभवता नहीं काहेतैं जो देहाभिमानी पुरुष कर्मका अधिकारी होवै है तिस पुरुषके प्रति ज्ञाननिष्ठाका उपदेश करणा योग्य नहीं होवै है । और जो देहाभिमानतैं रहित पुरुष ज्ञानका अधिकारी होवै है तिस पुरुषके प्रति कर्मनिष्ठाका उपदेश करणा योग्य नहीं होवै है । शंका—एकही पुरुषके प्रति विकल्पकारिकै ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका उपदेश संभव होइ सकै है। समाधान—समान स्वभाववाले पदार्थोंकाही विकल्पकरिकै विधान होवै है जैसे होमविषे समान स्वभाववाले व्रीहियवादिक पदार्थोंका विकल्पकारिकै विधान होवै है परंतु उत्कृष्ट निकृष्ट पदार्थोंका विकल्पकारिकै विधान होवै नहीं। और आत्मज्ञानकी अपेक्षाकारिकै कर्मोंविषे निकृष्टता तथा कर्मोंकी अपेक्षाकरिकै आत्मज्ञानविषे उत्कृष्टता (दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय) इत्यादिक वचनोंकारिकै स्पष्टही है यातैं ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका विकल्प संभवै नहीं । किंवा कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिकारिकै उपलक्षित जो ब्रह्मानंदरूप मोक्ष है ता मोक्षविषे कर्मोंके स्वर्गादिक फलकी न्याई न्यून अधिकता संभवै नहीं या कारणतैंभी ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंका जो कदाचित् भिन्न भिन्न अधिकारी मानियें तौ एक

तिसतैं अनंतर (वेदा विनाशिनं नित्यम्) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो तत्त्वंपदार्थका अभेद ज्ञानरूप तत्त्वज्ञाननिष्ठा है सा तत्त्वज्ञाननिष्ठा इस गीताके त्रयोदशे अध्यायविषे प्रकृतिपुरुषके विवेकद्वारा निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करा जो त्रैगुण्यनिवृत्तिरूप ता ज्ञाननिष्ठाका फल है सो फल इस गीताके चतुर्दश अध्यायविषे विरूपण करा है सो त्रैगुण्यकी निवृत्तिही जीवन्मुक्ति है यह वार्त्ता गुणातीत पुरुषके लक्षणोंके कथनकरिकै निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (तदा गंतासि निर्वेदम्) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो परवैराग्यनिष्ठा है सा परवैराग्यनिष्ठा इस गीताके पंचदशे अध्यायविषे संसाररूप वृक्षके उच्छेदनद्वारा निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः) इत्यादिक वचनोंविषे स्थितप्रज्ञ पुरुषके लक्षणकरिकै सूचन करी जो तिस परवैराग्यकी उपयोगी दैवी संपदा है सा दैवीसंपदा तौ ग्रहण करणे योग्य है । और (यामिमां पुष्पितां वाचम्) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचनकरिकै जो ता परवैराग्यकी विरोधी आसुरी संपदा है सा आसुरी संपदा परित्याग करणे योग्य है यह सर्व वार्त्ता इस गीताके षोडशैं अध्यायविषे कथन करी है । तिसतैं अनंतर (निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थः) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो ता दैवी संपदाका असाधारणकारणरूप सात्विकी श्रद्धा है सा सात्विकी श्रद्धा इस गीताके सप्तदश अध्यायविषे राजसी तामसी श्रद्धाकी निवृत्तिपूर्वक कथन करी है इस प्रकार त्रयोदश अध्यायतैं आदिलैके सप्तदश अध्यायपर्यंत पंच अध्यायोंविषे फलसहित ज्ञाननिष्ठा निरूपण करी है तिसतैं अनंतर इस गीताके अष्टादशे अध्यायविषे पूर्व कथन करे हुए सर्व अर्थका उपसंहार करा है इस प्रकारसैं सर्व गीताके अर्थका परस्पर संबंध सिद्ध होवै है इति । तहां पूर्व द्वितिय अध्यायविषे सांख्यबुद्धिकूं आश्रयण करिकै श्रीभगवान्नैं (एषा तेऽभिहिता सांख्ये) इत्यादिक वचनोंकरिकै ज्ञाननिष्ठा कथन करी थी तथा योगबुद्धिकूं आश्रयण करिकै श्रीभगवान्नैं (योगे त्विमां शृणु) इसतैं आदि लैके (कर्मण्येवाधिकारस्ते मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि) इस वचनपर्यंत सर्व वचनोंकरिकै कर्मनिष्ठा कथन करी थी परन्तु ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंके अधिकारीका भेद श्रीभगवान्नैं स्पष्ट करिकै कथन करा नहीं । शंका–तिन दोनों निष्ठावोंका एकही अधिकारी है काहे तैं ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चयही मोक्षके प्राप्तिका हेतु है । समाधान–ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय अंगीकार करिकै तिन दोनोंकी एक अधिकारिता श्रीभगवान्कूं वांछित है नहीं । काहेतैं (दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय) इस वचन करिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञाननिष्ठाकी अपेक्षा करिकै कर्मनिष्ठाविषे निकृष्टता कथन करी है । और (यावानर्थ उदपाने) या वचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञान

ॐ श्रीगणेशाय नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः । श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः । अथ तृतीयोऽध्यायप्रारंभः । तहां इस भगवद्गीताके प्रथम अध्यायकरिकै उपोद्घात करा जो संपूर्ण गीताशास्त्रका अर्थ है सो संपूर्ण गीताशास्त्रका अथ सूत्ररूप द्वितिय अध्यायकरिकै सूचन करा है सो प्रकार दिखावैं हैं । या अधिकारी पुरुषकूं प्रथम निष्काम कर्मनिष्ठा होवै है । तिसतैं अनंतर अंतःकरणकी शुद्धिं होवै है । तिसतैं अनंतर शमदमादिक साधनपूर्वक सर्व कर्मोंका संन्यास होवै है । तिसतैं अनंतर वेदांतवाक्योंके विचारसहित भगवद्भक्तिनिष्ठा होवै है । तिसतैं अनंतर तत्त्वज्ञाननिष्ठा होवै है । तिसतैं अनंतर तिस तत्त्वज्ञाननिष्ठाका त्रिगुणात्मक अविद्याकी निवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिरूप फल होवै है । सो जीवन्मुक्तिरूप फल प्रारब्धकर्मके फलभोगपर्यंत रहैं है । ता प्रारब्धकर्मके समाप्त हुएतैं अनंतर विदेहमुक्ति होवै है । तहां जीवन्मुक्तिदशाविषे परम पुरुषार्थके आलंबन करिकै इस पुरुषकूं पर वैराग्यकी प्राप्ति होवै है । ता परवैराग्यकी प्राप्तिविषे दैवीसंपदनामा शुभ वासना उपयोगी होवै है । यातैं सा शुभवासना तौ ग्रहण करणे योग्य है । और आसुरी संपदनामा अशुभ वासना ता परवैराग्यकी प्राप्तिविषे विरोधी है । यातैं सा अशुभ वासना परित्याग करणे योग्य है । तहां दैवी संपदाका असाधारण कारण सात्विकी श्रद्धा है । और आसुरीक संपादका असाधारण कारण राजसी तथा तामसी श्रद्धा है । इस प्रकार ग्रहण करणेके योग्य तथा परित्याग करणेके योग्य पदार्थोंका विभाग करिकै सर्व गीताशास्त्रके अर्थकी परिसमाप्ति होवै है सो सर्व अर्थ इस गीताके सूत्ररूप द्वितीय अध्यायविषे सूचन करा है । तहां इस गीताके द्वितीय अध्यायविषे (योगस्थः कुरु कर्माणि) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो अंतःकरणके शुद्धिका साधनरूप निष्काम कर्मनिष्ठा है सा निष्काम कर्मनिष्ठा सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै इस गीताके तृतीय और चतुर्थ या दोनों अध्यायोंविषे निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (विहाय कामान्यः सर्वान्) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूं शमदमादिक साधनसंपत्तिपूर्वक सर्व कर्मोंके संन्यासकी निष्ठा है सा सर्व कर्मसंन्यासनिष्ठा इस गीताके पंचम और षष्ठ या दोनों अध्यायोंविषे निरूपण करी है । इतनैं करिकै त्वंपदार्थका निरूपण सिद्ध भया । तिसतैं अनंतर (युक्त आसीत मत्परः) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो वेदांतवाक्योंके विचार सहित अनेक प्रकारकी भगवद्भक्तिनिष्ठा है । सा भगवद्भक्तिनिष्ठा इस गीताके सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, और द्वादश या षट् अध्यायोंविषे निरूपण करी है । इतनैं करिकै तत्पदार्थका निरूपण सिद्ध भया । तहां पूर्व पूर्व अध्यायका उत्तरोत्तर अध्यायके साथि संबंधरूप जो अवांतर संगति है तथा अवांतर प्रयोजनोंका भेद है ते दोनों तिस तिस अध्यायके व्याख्यानविषे हम निरूपण करैंगे ।

ब्रह्मनिर्वाणकूं प्राप्त होवै है क्या ब्रह्मविषेही आनंदकूं प्राप्त होवै है । अथवा ब्रह्मरूप आनंदकूं मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकार अभेदरूपकरिकै प्राप्त होवै है । इहां (निर्वाणं) यह पद आनंदका बोधक है । और किसी टीकाविषे तौ (ब्रह्मनिर्वाणं) यह दोनों पद भिन्न मानिकरिकै यह अर्थ करा है ता ब्राह्मीस्थितिविषे स्थित होइकै सो विद्वान् पुरुष ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है । शंका–जैसे स्वर्गादिक लोक गमनरूप क्रियाकरिकै प्राप्त होवैं हैं तैसे सो ब्रह्मभी गमनरूप क्रियाकरिकै प्राप्त होता होवैगा । ऐसी शंकाके हुए ता शंकाके निवृत्त करणेवासतै ता ब्रह्मका विशेषण कहैं हैं (निर्वाणम् इति) " निर्गतं वानं गमनं यस्मिन्प्राप्ये ब्रह्मणि तन्निर्वाणम् " । अर्थ यह । निवृत्त होइ गई है गमनरूप क्रिया जिस ब्रह्मविषे ताका नाम निर्वाण है । तहां श्रुति " न तस्य प्राणा उत्क्रामंत्यत्रैव समवलीयंते ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्येति " अर्थ यह । मरणकालविषे जैसे अज्ञानी पुरुषोंके प्राण इस शरीरतैं उत्क्रमण करैं हैं तैसे तिस ब्रह्मवेत्ता ज्ञानी पुरुषके प्राण इस शरीरतैं बाहिर उत्क्रमण करते नहीं किंतु ते प्राण इस शरीरके भीतरही लयभावकूं प्राप्त होवैं हैं । और यह विद्वान् पुरुष ब्रह्मरूप हुआही ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है इति । इहां (अंतकालेपि) या वचनविषे स्थित जो (अपि) यह शब्द है । ता अपि शब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यह कैमुतिक न्याय सूचन करा । यह अधिकारी पुरुष जबी अंत्य अवस्थाविषेभी ता ब्रह्मनिष्ठाविषे स्थित होइकै ता आनंदस्वरूप ब्रह्मकूंही प्राप्त होवै है तबी जो पुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंही संन्यासकूं करिकै मरणपर्यंत ता ब्राह्मीस्थितिविषे स्थित हुआ है सो पुरुष ता ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है याके विषे क्या कहणा है । तहां श्लोक । " विज्ञाय चरमावस्थां देवताभ्यो नृपोत्तमः । खटांगो नामराजर्षिर्मुहूर्ते मुक्तिमेयिवान् इति " । अथ यह । सर्व राजावोंविषे श्रेष्ठ खटांग नामा राजऋषि अपणी अंत्य अवस्थाकूं देखिकै देवतावोंके उपदेशतैं एक मुहूर्तमात्रविषे कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्त होता भया इति । अब इस द्वितीय अध्यायविषे विस्तारतैं निरूपण करा जो अर्थ है ता सर्व अर्थका संक्षेपतैं निरूपण करणेहारा श्लोक कथन करैं हैं । " ज्ञानं तत्साधनं कर्म सत्वशुद्धिश्च तत्फलम् । तत्फलं ज्ञाननिष्ठैवेत्यध्यायेऽस्मिन्प्रकीर्तितम् " । अर्थ यह । इस भगवद्गीताके द्वितीय अध्यायविषे आत्मज्ञानका कथन करा है तथा ता ज्ञानका परंपरा साधनरूप निष्काम कर्म कथन करा है । और ता निष्काम कर्मका अंतःकरणकी शुद्धिरूप फल कथन करा है । और ता अंतःकरणके शुद्धिका ज्ञाननिष्ठारूप फल कथन करा है इतने पदार्थ इस द्वितीय अध्यायविषे कथन करे हैं इति ॥ ॥ ७२ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सर्वगीतार्थसूत्रं नाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥

पुरुष निमम है क्या शरीरके निर्वाहवासतै प्रारब्धकर्मनैं प्राप्त करे जो कंथा कौपीनादिक हैं तिनोंविषेभी यह हमारे हैं या प्रकारके अभिमानतैं जो पुरुष रहित है इस प्रकार सर्व पदार्थोंकी उपेक्षाकरिकै तथा निःस्पृह होइकै तथा निरहंकार होइकै तथा निर्मम होइकै जो पुरुष प्रारब्धकर्मके वशतैं शास्त्रविहित भोगोंकूं भोगै है अथवा अपणी इच्छापूर्वक जहां तहां विचरै है सो इस प्रकारका स्थितप्रज्ञ पुरुष सर्व संसारदुःखोंकी उपरामतारूप कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप शांतिकूं आत्मज्ञानके बलतैं प्राप्त होवै है। या प्रकारका व्रजन ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका होवै है। इतने कहणेकरिकै (किं व्रजेत) या चतुर्थ प्रश्नका उत्तर सिद्ध भया इति ॥ ७१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व ग्रंथविषे चारि प्रश्नोंके चारि उत्तरोंके व्याजकरिकै स्थितप्रज्ञ पुरुषके सर्व लक्षणोंकूं मुमुक्षु जननैं अवश्य संपादन करणा यह अर्थ निरूपण करा। अब निष्कामकर्मयोगका फलरूप जो सांख्यनिष्ठा है ता सांख्यनिष्ठाकी फलके निरूपणकरिकै स्तुति करता हुआ श्रीभगवान् ताका उपसंहार करैं हैं।

(मू. श्लो.) एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ॥ स्थित्वास्यामंतकालेपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ ७२ ॥ इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां श्रीभीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगोनाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) एषा । ब्राह्मी । स्थितिः । पार्थ । न । एनाम् । प्राप्य । विमुह्यति । स्थित्वा । अस्याम् । अंतकाले । अपि । ब्रह्मनिर्वाणम् । ऋच्छति ॥ ७२ ॥ (पदार्थः) हे पार्थ यह जो ब्रह्मविषयक स्थिति है इसकूं प्राप्त होइकै कोईभी पुरुष नहीं मोहकूं प्राप्त होवै है इस स्थितिविषे अंत्य अवस्थाविषे स्थित होइकै भी यह पुरुष ब्रह्मनिर्वाणकूं प्राप्त होवै है ॥ ७२ ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्व हमनैं तुम्हारे प्रति स्थितप्रज्ञ पुरुषके लक्षणोंके व्याजकरिकै कथन करी हुई तथा (एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिः) इस वचनकरिकै कथन करी हुई जो सर्व कर्मोंके संन्यासपूर्वक परमात्माकी ज्ञानरूप स्थिति है । कैसी है सा स्थिति । प्रत्यक् अभिन्न ब्रह्मकूं विषय करणेहारी है यातैं ता स्थितिकूं ब्राह्मी कहैं हैं । ऐसी ब्रह्मनिष्ठारूप स्थितिकूं जो कोई पुरुष प्राप्त होवै है सो पुरुष पुनः कदाचित्भी अज्ञानरूप मोहकूं प्राप्त होवै नहीं काहेतैं सो अज्ञान अनादि है क्या उत्पत्तितैं रहित है यातैं आत्मज्ञानकरिकै एकवार नाशकूं प्राप्त हुआ सो अज्ञान पुनः कदाचित्भी उत्पन्न होवै नहीं । ऐसी ब्रह्मनिष्ठारूप स्थितिविषे जो कोई पुरुष अंत्य अवस्थाविषेभी स्थित होवै है सो पुरुषभी

अचलप्रतिष्ठ है। इतने कहणेकरिकै ता समुद्रके गंभीरताकी अधिकता वर्णन करी। ऐसे महान् गंभीर समुद्रविषेही ते सर्व जल प्रवेश करैं हैं परंतु तिन जलोंके प्रवेश करणेतैं सो समुद्र किंचित्मात्रभी क्षोभकूं प्राप्त होवै नहीं। यह वार्त्ता सर्व लोकोंकूं अनुभवसिद्ध है। तैसे निर्विकाररूपकरिकै स्थित जिस स्थितप्रज्ञ पुरुषकूं यह अज्ञानी पुरुषोंकी कामनाके विषय शब्दादिक विषय प्रारब्धकर्मके वशतैं प्राप्त होवैं हैं परंतु ते शब्दादिक विषय जिस विद्वान् पुरुषकूं विकारकी प्राप्ति करि सकते नहीं। ऐसा महान् समुद्रके समान सो स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषही लौकिक वैदिक सर्व कर्मोंकी निवृत्तिरूप तथा कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप शांतिकूं प्राप्त होवै है। और जो पुरुष तिन शब्दादिक विषयोंके प्राप्तिकी इच्छावाला है सो पुरुष ता शांतिकूं प्राप्त होवै नहीं किंतु सो विषयासक्त पुरुष सर्व कालविषे ता लौकिक वैदिक कर्मरूप विक्षेपकरिकै महान् क्लेशरूप समुद्र विषे मग्न होवै है। इतनेकरिकै यह अर्थ कह्या गया जिस पुरुषकं गुरुशास्त्रके उपदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति भई है। तिस ज्ञानवान् पुरुषकूंही फलरूप विद्वत्संन्यास प्राप्त होवै है तथा तिस ज्ञानवान् पुरुषकंही सर्व विक्षेपकी निवृत्तिरूप जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवै है। तथा विषय भोगोंके प्राप्त हुएभी निर्विकारताही होवै है इति ॥ ७० ॥ ❀ ॥ जिस कारणतैं विषयोंकी कामनावाला पुरुष ता शांतिकूं प्राप्त होवे नहीं तिस कारणतैं प्राप्त हुएभी तिन विषयोंकूं यह विवेकी पुरुष परित्यागही करै या अर्थकूं श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ॥ निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥ (पदच्छेदः)
विहाय। कामान्। यः। सर्वान्। पुमान्। चरति। निःस्पृहः। निर्ममः। निरहंकारः। सः। शांतिम्। अधिगच्छति ॥
॥ ७१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो पुरुष सर्व कामोंकूं परित्याग करिकै निःस्पृह हुआ तथा निर्मम हुआ तथा निरहंकार हुआ
विचरै है सो स्थितप्रज्ञ तां शांतिकूं प्राप्त होवै है ॥ ७१ ॥

टीका। गृह, क्षेत्र, धन आदिक जितनेक बहिरले काम हैं तथा मनोराज्यरूप जितनेक अंतरले काम हैं तथा वासनामात्ररूप जितनेक काम हैं ऐसे तीन प्रकारके कामोंकूं जो पुरुष मार्गविषे चलते हुए तृणोंके स्पर्शकी न्याईं तुच्छ जानिकै उपेक्षा करि देवै है तथा जो पुरुष अपणे शरीरके जीवनमात्रकी इच्छातैंभी रहित है तथा जो पुरुष शरीर इंद्रियादिक संघातविषे यहही मैं हूं या प्रकारके अभिमानरूप अहंकारतैं रहित है अथवा विद्या, उत्तम आश्रम आदिकोंकी प्राप्तिकरिकै जन्य जो अपणेविषे उत्कृष्टता बुद्धिरूप अहंकार है ता अहंकारतैं रहित है निरहंकार होणेतैं जो

वा अन्यदिव स्यात्तत्रान्योऽन्यत्पश्येत इति । यत्रत्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन कं पश्येत् इति " । अर्थ यह । जिस अविद्याकालविषे यह अद्वितीय आत्मा द्वैतकी न्याइ होवै है तिस अविद्याकालविषे यह पुरुष अपणेकूं अन्य मानिकै अपणेतैं भिन्न अन्य पदार्थोंकूं देखै है इति । और जिस विद्याकालविषे इस विद्वान् पुरुषकूं यह सर्व जगत् अपणा आत्मारूपही होता भया है तिस विद्याकालविषे यह विद्वान् पुरुष किस कारणकरिकै किस पदार्थकूं अपणेतैं भिन्न देखै किंतु सो विद्वान् पुरुष अपणेतैं भिन्न किसी पदार्थकूंभी देखता नहीं इति । यह दोनों श्रुतियां यथाक्रमतैं अविद्याकी व्यवस्थाकूं तथा विद्याकी व्यवस्थाकूं कथन करैं हैं यातैं तत्त्वदर्शी विद्वान् पुरुषविषे अविद्याकृत क्रियाकारकादिक व्यवहार कदाचित्भी संभवै नहीं यातैं ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका सो इंद्रियोंका संयम स्वभावतैंही सिद्ध है मुमुक्षुकी न्याईं कोई प्रयत्नसाध्य नहीं है इति ॥ ६९ ॥ तहां ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका इंद्रियोंका संयम जैसै स्वभावतैंही सिद्ध है तैसे ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषके सर्व विक्षेपोंकी शांतिभी स्वभावतैंही सिद्ध है। या अर्थकूं श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकै निरूपण करैं हैं।

(मू. श्लो.) आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशंति यद्वत् ॥ तद्वत्कामायं प्रविशंति सर्वे स शांतिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥ (पदच्छेदः) आपूर्यमाणम् । अचलप्रतिष्ठम् । समुद्रम् । आपः । प्रविशंति । यद्वत् । तद्वत् । कामाः । यं । प्रविशंति । सर्वे । सः । शांतिम् । आप्नोति । न । कामकामी ॥ ७० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिस प्रकार सर्व नदियोंकरिकै पूर्ण करे हुए तथा अचल प्रतिष्ठावाले समुद्रकूं वर्षाके जल प्रवेश करैं हैं तिस प्रकार जिस स्थितप्रज्ञ पुरुषकूं सर्व शब्दादिक विषय प्रवेश करैं हैं सो स्थितप्रज्ञ पुरुषही सर्व विक्षेपकी निवृत्तिरूप शांतिकूं प्राप्त होवै है विषयोंकी कामनावाला पुरुष ता शांतिकूं नहीं प्राप्त होवै है ॥ ७० ॥

टीका । श्रीगंगा, यमुना, गोदावरी, सिंधु, सरस्वती इत्यादिक सर्व नदियोंके जलोंकरिकै सर्व ओरतैं पूर्ण हुआ जो समुद्र है ता समुद्रकूंही वृष्टि आदिकोंतैं उत्पन्न हुए सर्व जल प्रवेश करैं हैं। तिन सर्व जलोंके प्रवेश हुएभी सो समुद्र अचलप्रतिष्ठही रहै है। नहीं परित्याग करी है अपणी मर्यादा जिसनैं ताका नाम अचलप्रतिष्ठ है अथवा मैनाकादिक पर्वतोंका नाम अचल है तिन मैनाकादिक पर्वतोंकी है स्थिति जिसविषे ताका नाम

एतैं अनंतर स्वप्नोंका दर्शन होवै नहीं काहेतैं बाधपर्यंतही भ्रमकी विद्यमानता होवै ह । बाधके उत्तर कालविषे सो भ्रम रहै नहीं जैसे यह सर्प नहीं है किंतु रज्जु है या प्रकारके बाधपर्यंतही ता सर्पभ्रमकी स्थिति होवै ता बाधके हुए सो सर्पभ्रम रहै नहीं तैसे या अधिकारी पुरुषकूं ज बपर्यंत तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति नहीं भई । तबपर्यंतही यह संसारभ्रम रहै है । और तत्त्वज्ञानके प्राप्त हुए सो संसारभ्रम निवृत्त होइ जावै है यातैं ता ज्ञानकालविषे ता विद्वान् पुरुषका ता भ्रमजन्य कोईभी व्यवहार होवै नहीं इति । यह वार्ता वार्तिक ग्रंथके कर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथन करी है । तहां श्लोक त्रयम् । "कारकव्यवहारे हि शुद्धं वस्तु न वीक्ष्यते । शुद्धे वस्तुनि सिद्धे च कारकव्यावृतिस्तथा ॥ १ ॥ काकोलूकनिशेवायं संसारोऽज्ञात्मवेदिनोः।या निशा सर्वभू तानामित्यवोचत्स्वयं हरिः॥ २ ॥ बुद्धतत्त्वस्य लोकोयं जडोन्मत्तपिशाचवत् । बुद्धतत्त्वोपि लोकस्य जडोन्मत्तपिशाचवत् ॥ अर्थ यह । कर्त्ता करण इत्यादिक कारकोंके व्यवहार हुए शुद्ध आत्मवस्तु देखी जावै नहीं । और ता शुद्ध आत्मवस्तुके सिद्ध हुए तिन सर्व कारकोंकी निवृत्ति होइ जावै है इति ॥ १ ॥ किंवा जैसे काकपक्षीकी जो यह लोकप्रसिद्ध रात्रि है सा रात्रि उलूकपक्षीकी है नहीं किंतु उलूकपक्षी ता लोकप्रसिद्ध रात्रिविषे नानाप्रकारके खान पानादिक व्यवहार करै है । और ता उलूकपक्षीकी जो यह लोकप्रसिद्ध दिनरूप रात्रि है सो दिन ता काकपक्षीकी रात्रि नहीं है किंतु ता दि नविषे सो काक नानाप्रकारके खानपानादिक व्यवहार करै है तैसेही अज्ञानी पुरुषकूं तथा आत्मवेत्ता पुरुषकूं यह संसार है । यह वार्ता (या नि शा सर्वभूतानां) या वचनकरिकै श्रीकृष्णभगवान् आपही कहता भया है इति ॥ २ ॥ किंवा जिस पुरुषनैं अपणे वास्तव स्वरूपकूं जान्या है तिस विद्वान् पुरुषकूं यह सर्व लोक जड उन्मत्त पिशाचकी न्याईं प्रतीत होवै है । और तिन सर्व लोकोंकूंभी सो विद्वान् पुरुष जड उन्मत्त पिशाचकी न्याईं प्रतीत होवै है इति ॥ ३ ॥ यातैं यह अर्थ सिद्ध भया जिस पुरुषकूं जिस वस्तुका विपरीत दर्शन होवै है तिस पुरुषकूं तिस वस्तुका स म्यक्दर्शन होवै नहीं काहेतैं सो वस्तुका विपरीतदर्शन ता वस्तुके सम्यक् दर्शनके अभावकरिकैही जन्य होवै है । और जिस पुरुषकूं जिस वस्तुका स म्यक्दर्शन होवै है तिस पुरुषकूं तिस वस्तुका विपरीतदर्शन होवै नहीं काहेतैं ता विपरीतदर्शनका कारणरूप जो ता वस्तुका अदर्शन है सो वस्तुका अदर्शन ता वस्तुका सम्यक्दर्शनकरिकै निवृत्त होइ जावै है जैसे जिस पुरुषकूं रज्जुविषे यह सर्प है या प्रकारका विपरीतदर्शन हुआ है तिस पुरुषकूं तिस कालविषे यह रज्जु है या प्रकारका सम्यक्दर्शन होवै नहीं । और जिस पुरुषकूं यह रज्जु है या प्रकारका सम्यक्दर्शन हुआ है तिस पुरुषकूं तिस कालविषे यह सर्प है या प्रकारका विपरीतदर्शन होवै नहीं तैसे आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारे विद्वान् पुरुषकूं प्रपंच विषयक विपरीतदर्शन होवै नहीं । और प्रपंचविषयक विपरीतदर्शनवाले अज्ञानी पुरुषोंकूं आत्माका सम्यक्दर्शन होवै नहीं । तहां श्रुति । "यत्र

पुरुषकीही सा आत्मविषयक प्रज्ञा स्थिर होवै है । इंद्रियोंके निग्रहतैंरहित पुरुषकी सा प्रज्ञा स्थिर होवै नहीं । इहां (हे महाबाहो) या संबोधन करिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचन करा तूं अर्जुन सर्व बाह्य शत्रुवोंके निवारण करणेविषे समर्थ है यातैं अंतर इंद्रियरूप शत्रुवोंके निवृत्त करणे विषेभी तूं समर्थ है इति । तहां मनसहित इंद्रियोंका संयम तत्त्ववेत्ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका तौ लक्षणरूप है । और मुमुक्षु जनके प्रति सो मनसहित इंद्रियोंका संयम ता प्रज्ञाकी प्राप्तिका साधनरूप है या कारणतैंही (तस्य) या शब्दकारिकै तत्त्ववेत्ताका तथा मुमुक्षुका दोनोंका ग्रहण करा है यातैं मुमुक्षु जननैं अपणे प्रज्ञाकी स्थिरता करणेवासतै अत्यंत प्रयत्नपूर्वक तिन इंद्रियोंका संयम करणा इति ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ अब ता स्थितप्रज्ञके सर्व इंद्रियोंका संयम स्वतःही सिद्ध है इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ॥ यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥
(पदच्छेदः) या । निशा । सर्वभूतानाम् । तस्याम् । जागर्ति । संयमी । यस्याम् । जाग्रति । भूतानि । सा । निशा । पश्यतः । मुनेः ॥ ६९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जा साक्षात्काररूप प्रज्ञा सर्व अज्ञानी जनोंकी रात्रि है ता प्रज्ञारूप रात्रिविषे इंद्रियोंके संयमवाला पुरुष जागता है और जिस अविद्यारूप निद्राविषे यह सर्व अज्ञानी पुरुष जागते हैं सा अविद्या साक्षात्कारवान् स्थितप्रज्ञकी रात्रि है ॥ ६९ ॥

टीका । वेदांतवाक्योंकरिकै जन्य जो मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारकी साक्षात्काररूप प्रज्ञा है सा प्रज्ञा अज्ञानी पुरुषोंके प्रति अप्रकाशरूप है यातैं सा आत्मसाक्षात्काररूप प्रज्ञा तिन अज्ञानी पुरुषोंकेप्रति लोकप्रसिद्ध रात्रिकी न्याईं रात्रिरूप है ता ब्रह्मविद्यारूप सर्व अज्ञानी जनोंकी रात्रिविषे मनसहित इंद्रियोंके संमयवाला स्थितप्रज्ञ पुरुष अज्ञानरूप निद्रातैं जाग्रत् हुआ सावधान वर्तै है । और जिस द्वैतदर्शनरूप अविद्यारूप निद्राविषे सोये हुए यह अज्ञानी पुरुष स्वप्नकी न्याईं नानाप्रकारके व्यवहारोंकूं करैं हैं सा अविद्या आत्मसाक्षात्कारवान् स्थितप्रज्ञकी लोकप्रसिद्ध रात्रिकी न्याईं रात्रिरूप है । तात्पर्य यह । जबपर्यंत यह पुरुष निद्रातैं जाग्रत् नहीं होता तबपर्यंतही नानाप्रकारके स्वप्नका दर्शन होवै है ता निद्रातैं जाग्रत् हु

इंद्रियके अनुसारी हुआभी यह मन प्रवृत्त होवै है । सो मन सकृत् एक इंद्रियभी इस साधक पुरुषकी अथवा तिस मनकी शास्त्रजन्य आत्मविषयक प्रज्ञाकूं निवृत्त करि देवै है । जैसे जलविषे स्थित नौकाकूं प्रतिकूल वायु पाषाणादिकोंविषे ले जाइके नाश करि देवै है तैसे सो एक इंद्रियभी या अधिकारी पुरुषके प्रज्ञाकूं बहिर्मुखताकरिकै नाश करि देवै है । तात्पर्य यह । राग द्वेषयुक्त मनकी सहायताकूं लैके अपणे विषयविषे प्रवृत्त हुआ एक इंद्रियभी जबी इस अधिकारी पुरुषकी ता प्रज्ञाकूं नाश करै है तबी ते सर्व इंद्रिय इस अधिकारी पुरुषके प्रज्ञाकूं नाश करैं हैं याकेविषे क्या कहणा है । तहां प्रतिकूल वायुकूं जलविषेही नौकाके हरण करणेका सामर्थ्य है पृथिवीविषे स्थित नौकाके हरण करणेका सामर्थ्य है नहीं । इस अर्थके सूचन करणेवासतै दृष्टांतविषे (अंभसि) यह पद कथन करा है । इस प्रकार दार्ष्टांतिकविषे जलके समान जो मनकी चंचलता है ता चंचलताके विद्यमान हुएही ता इंद्रियकूं तिस प्रज्ञाहरण करणेका सामर्थ्य होवै है । और पृथिवीके समान जो मनकी स्थिरता है ता स्थिरताके विद्यमान हुए ता इंद्रियकूं तिस प्रज्ञाके हरण करणेका सामर्थ्य होवै नहीं इति । इहां अन्य टीकावोंविषे (यत् तत्) या दोनों शब्दोंतैं मनका ग्रहण करिकै यह अर्थ करा है । विषयोंविषे प्रवृत्त इंद्रियोंकूं लक्ष्यकरिकै जो मन तिन इंद्रियोंके अनुसारी वर्तै है सो मन इस पुरुषके प्रज्ञाकूं हरण करै है इति ॥ ६७ ॥

(मू. श्लो.) तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ (पदच्छेदः) तस्मात् । यस्य । महाबाहो । निगृहीतानि । सर्वशः । इंद्रियाणि । इंद्रियार्थेभ्यः । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ (पदार्थः) तिसे कारणतैं हे महान् बाहुवाला अर्जुन जिसे पुरुषके ते सर्व इंद्रिय अपणे शब्दादिक विषयों तैं निवृत्त हुए हैं तिसे पुरुषकीही सा प्रज्ञा स्थिर होवै है ॥ ६८ ॥

टीका । हे महान् बाहुवाले अर्जुन ! जिस कारणतैं बहिर्मुख हुए यह इंद्रिय इस पुरुषकी प्रज्ञाकूं नाश करैं हैं तिस कारणतैं जिस पुरुषके यह मनसहित श्रोत्रादिक सर्व इंद्रिय अपणे अपणे शब्दादिक विषयोंतैं निग्रहकूं प्राप्त हुए हैं । तिस तत्त्ववेत्तारूप सिद्ध पुरुषकीही अथवा मुमुक्षुरूप साधक

किंचितमात्रभी विरोधकी प्राप्ति होवै नहीं इति ॥ ६५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे अन्वयमुखकरिके कथन करा जो अर्थ है तिसी अर्थकूं अब व्यतिरेकमुखकरिके दृढ करैं हैं ॥

(मू. श्लो.) नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शांतिरशांतस्य कुतः सुखम् ॥ ६६ ॥ (पदच्छेदः) न । अस्ति । बुद्धिः । अयुक्तस्य । न । च । अयुक्तस्य । भावना । न । च । अभावयतः । शांतिः । अशांतस्य । कुतः । सुखम् ॥ ६६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन चित्तके जयतें रहित पुरुषकूं बुद्धि नहीं उत्पन्न होवै है तथा ता अयुक्त पुरुषकूं भावना नहीं उत्पन्न होवै है तथा ता भावनातें रहित पुरुषकूं शांति नहीं उत्पन्न होवै है तौ शांतिरहित पुरुषकूं सुख कहांतें होवै ॥ ६६ ॥

टीका । जिस पुरुषनें अपणे चित्तकूं नहीं वशि करा है ता पुरुषका नाम अयुक्त है । ऐसे अयुक्त पुरुषकूं श्रवणमननरूप वेदांतविचारकारिके जन्य आत्मविषयक बुद्धि उत्पन्न होवै नहीं । और ता बुद्धिके अभाव हुए तिस अयुक्त पुरुषकूं विजातीय वृत्तियोंके व्यवधानतें रहित सजातीय वृत्तियोंका प्रवाहरूप निदिध्यासनरूप भावना उत्पन्न होवै नहीं । और ता निदिध्यासनरूप भावनातें रहित पुरुषकूं कार्यसहित अविद्याके निवृत्त करणेहारी तथा तत्त्वमसि आदिक वेदांतवाक्योंतें जन्य तथा जीवब्रह्मके अभेदकूं विषय करणेहारी साक्षात्काररूप शांति नहीं उत्पन्न होवै है । और ता आत्म साक्षात्काररूप शांतितें रहित पुरुषकूं मोक्षानंदरूप सुख प्राप्त होवै नहीं इति ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवान् ! ता अयुक्त पुरुषविषे सा बुद्धि किस कारणतें नहीं उत्पन्न होती । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता बुद्धिकी न उत्पत्तिविषे कारण कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) इंद्रियाणां हि चरतां यन्मनोनुविधीयते ॥ तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवांभसि ॥ ६७ ॥ (पदच्छेदः) इंद्रियाणां । हि । चरतां । यत । मनः । अनुविधीयते । तत् । अस्य । हरति । प्रज्ञाम् । वायुः नावम । इव । अंभसि ॥ ६७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिस कारणतें अपणे अपणे विषयोंविषे प्रवर्त्तमान इंद्रियोंके मध्यविषे जिस एक इंद्रियकूंभी लक्ष्य करिके यह मन प्रवर्त्त होवै है सो एक इंद्रियभी इस साधक पुरुषकी प्रज्ञाकूं हरण करै है जैसे जलविषे स्थित नौकाकूं प्रतिकूल वायु हरण करै है ॥ ६७ ॥

टीका । अपणे अपणे शब्दादिक विषयोंविषे प्रवर्त्तमान ऐसे जो नहीं वश करे हुए श्रोत्रादिक इंद्रिय हैं तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंके मध्यविषे जिस एक

भोग तौ महान् अनर्थका कारण होवैगा। यातैं अपणे प्राणोंकी रक्षा करणे वासतै तिन शब्दादिक विषयोंकूं भोगता हुआ सो विद्वान् पुरुष ता अनर्थकूं क्यों नहीं प्राप्त होवेगा किंतु सो विद्वान् पुरुषभी अवश्यकरिकै अनर्थकूं प्राप्त होवैगा इति। शंका—यातैं (किं व्रजेत) या चतुर्थ प्रश्नका यह उत्तर सिद्ध भया रागद्वेषतैं रहित तथा अपणे वशवर्त्ती ऐसे श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै सो विद्वान् पुरुष शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकूं प्राप्त होवै है इति ॥ ६४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे सो मनके निग्रहवाला पुरुष प्रसादकूं प्राप्त होवै है। यह वार्त्ता कथन करी। तहां ता चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुए कौन फल प्राप्त होवै है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता प्रसादके फलका कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ॥ प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ (पदच्छेदः) प्रसादे। सर्वदुःखानाम्। हानिः। अस्य। उपजायते। प्रसन्नचेतसः। हि। आशु। बुद्धिः। पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! ता प्रसादके प्राप्त हुए इस विद्वान् संन्यासीके सर्व दुःखोंका नाश होवै है जिस कारणतें ता स्वच्छचित्तवाले संन्यासीकी बुद्धि शीघ्रही स्थिर होवै है ॥ ६५ ॥

टीका। ता चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुए इस विद्वान् संन्यासीके अज्ञानजन्य अध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक सर्व दुःखोंका नाश होवै है। जिस कारणतैं ता स्वच्छचित्तवाले संन्यासीकी ब्रह्म आत्मा या दोनोंके अभेदकूं विषय करणेहारी बुद्धि शीघ्रही स्थिर होवै है। काहेतैं असंभावना तथा विपरीतभावना यह दोनोंही ता बुद्धिकी स्थिरताविषे प्रतिबंधक होवैं हैं। ते असंभावना विपरीतभावना दोनों ता विद्वान् पुरुषविषे हैं नहीं। यातैं प्रतिबंधतैं रहित हुई सा बुद्धि शीघ्रही स्थिरभावकूं प्राप्त होवै है। इहां यद्यपि चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुएभी साक्षात् आध्यात्मिकादिक दुःखोंकी निवृत्ति होवै नहीं किंतु परंपराकरिकै तिन दुःखोंकी निवृत्ति होवै है। तहां चित्तके प्रसादतैं बुद्धिकी स्थिरता होवै है। ता बुद्धिकी स्थिरतातैं ता बुद्धिके विरोधी अज्ञानकी निवृत्ति होवै है। तिस अज्ञानकी निवृत्तितैं ता अज्ञानके कार्यरूप सकल दुःखोंकी हानि होवै है। इस प्रकारकी परंपरकरिकै तिन दुःखोंकी निवृत्ति होवै है। यातैं चित्तके प्रसाद हुए सर्व दुःखोंका नाश कथन करणा संभवता नहीं। तथापि ता चित्तके प्रसादकी प्राप्तिवासतै प्रयत्नकी अधिकता बोधन करणेवासतै ता चित्तके प्रसादविषे सर्व दुःखोंके नाशकी कारणता कथन करी है यातैं

है। यातैं यह अधिकारी पुरुष महान् प्रयत्नकरिकैभी ता मनका निग्रह करै ता मनके निग्रहतैं विना केवल बाह्य इंद्रियोंके निग्रहमात्रकरिकै सा स्थितप्रज्ञता प्राप्त होवै नहीं इति ॥ ६३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे बाह्य इंद्रियोंके निग्रह किये हुएभी मनके नहीं निग्रह किये हुए दोषकी प्राप्ति कथन करी। अब मनके निग्रह किये हुए बाह्य इंद्रियोंके नहीं निग्रह हुएभी ता दोषकी प्राप्ति होवै नहीं या अर्थकूं कथन करते हुए श्रीभगवान् (किं व्रजेत) या चतुर्थ प्रश्नके उत्तरकूं अष्ट श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ (पदच्छेदः) रागद्वेषवियुक्तैः। तु। विषयान्। इंद्रियैः। चरन्। आत्मवश्यैः। विधेयात्मा,। प्रसादम्। अधिगच्छति ॥ ६४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन मनके विग्रहवाला पुरुष तौ रागद्वेषतैं रहित तथा मनके अधीन ऐसे इंद्रियोंकरिकै विषयोंकूं ग्रहण करता हुआभी चित्तके स्वच्छताकूंही प्राप्त होवै है ॥ ६४ ॥

टीका। जिस पुरुषनैं मनका निग्रह नहीं करा है। सो पुरुष बाह्य श्रोत्रादिक इंद्रियोंका निग्रह करिकैभी रागद्वेषयुक्त मनकरिकै शब्दादिक विषयोंका चिंतन करता हुआ जैसे पुरुषार्थतैं भ्रष्ट होवै है तैसे मनके निग्रहवाला पुरुष ता पुरुषार्थतैं भ्रष्ट होवै नहीं या प्रकारकी विलक्षणता बोधन करणे वासतै श्रीभगवान्नैं (रागद्वेषवियुक्तैस्तु) या वचनविषे स्थित तु यह शब्द कथन करा है। हे अर्जुन! जिस पुरुषनैं अपणे मनका निग्रह करा है सो पुरुष तौ ता वशीकृत मनके अधीन बर्तणेहारे तथा रागद्वेषतैं रहित ऐसे श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकूं ग्रहण करता हुआभी प्रसादकूंही प्राप्त होवै है। इहां परमात्माके साक्षात्कारकी योग्यतारूप जो चित्तकी स्वच्छता है ताका नाम प्रसाद है। जे इंद्रिय रागद्वेषकरिकै युक्त होवैं हैं ते इंद्रियही दोषके कारण होवैं हैं। और यह विद्वान् पुरुष जबी मनकूं अपणे वशि करै है तबी रागद्वेष दोनों निवृत्त होइ जावैं हैं और तिस रागद्वेषके अभाव हुए ता रागद्वेषके अधीन इंद्रियोंकी प्रवृत्ति होवै नहीं। और प्रारब्धकर्मोंके विद्यमान हुए तिन शब्दादिक विषयोंकी प्रतीति निवृत्त करी जावै नहीं यातैं शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकी प्रतीति मात्र ता विद्वान् पुरुषकूं दोषकी प्राप्ति करै नहीं। इतने कहणेकरिकै या शंकाकीभी निवृत्ति करी तिन शब्दादिक विषयोंका स्मरणमात्रभी जबी अनर्थका कारण है तबी तिन शब्दादिक विषयोंका

गः । तेषु । उपजायते । संगात् । संजायते । कामः । कामात् । क्रोधः । अभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधात् । भवति । संमोहः । संमोहात् । स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशात् । बुद्धिनाशः । बुद्धिनाशात् । प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन शब्दादिक विषयोंकूं मनकरिके ध्यान करते हुए पुरुषका तिनं विषयोंविषे संग उत्पन्न होवै है ता संगतैं काम उत्पन्न होवै है तां कामतैं क्रोध उत्पन्न होवै है ॥ ६२ ॥ तां क्रोधतैं संमोह होवै है तां संमोहतैं स्मृतिका विभ्रंश होवै है ता स्मृतिके भ्रंशतैं बुद्धिका नाश होवै है तां बुद्धिके नाशतैं नाशकूं प्राप्त होवै है ॥ ६३ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो पुरुष अपणे श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयोंतैं निरोध करिकैभी मनकरिके वारंवार तिन शब्दादिक विषयोंका चिंतन करै है तिस पुरुषका तिन विषयोंविषे अवश्यकरिके संग उत्पन्न होवै है । इहां यह विषय हमारे सुखके साधन हैं या प्रकारका शोभन अध्यासरूप जो प्रीतिविशेष है ताका नाम संग है । और ता सुख साधनताज्ञानरूप संगतैं तिस पुरुषका तिनं विषयोंविषे काम उत्पन्न होवै है । इहां यह विषय हमारेकूं कब प्राप्त होवैगा या प्रकारकी तृष्णाविशेषका नाम काम है । और किसी अन्य पुरुषकरिके हननकूं प्राप्त हुआ जो सो तृष्णारूप काम है तिस कामतैं ता हनन करणेहारे अन्य पुरुषविषयक अभिज्वलनरूप क्रोध उत्पन्न होवै है और ता अभिज्वलनरूप क्रोधतैं कार्य अकार्यके विवेकका अभावरूप संमोह उत्पन्न होवै है और ता संमोहतैं गुरुशास्त्रकरिके उपदिष्ट अर्थका अनुसंधानरूप स्मृतिका विभ्रंश होवै है। और ता स्मृतिके विभ्रंशतैं अद्वितीय आत्माकार मनकी वृत्तिरूप बुद्धिका नाश होवै है । तात्पर्य यह । विपरीतभावनाकी वृद्धिरूप दोषकरिके प्रतिबंध होणेतैं ता बुद्धिकी उत्पत्तिही नहीं होवै है । तथा उत्पन्न हुई ता बुद्धिका फलकी प्राप्ति करणेविषेअयोग्यताकरिके विलय होइ जावै है । यहही ता बुद्धिका नाश है इति । और ता बुद्धिके नाशतैं सो पुरुष नाशकूं प्राप्त होवै है क्या सर्व पुरुषार्थके अयोग्य होवै है । काहेतैं इस लोकविषेभी जो पुरुष पुरुषार्थके अयोग्य होवै है । सो पुरुष यह मरा हुआ है या प्रकारके लोकोंके व्यवहारका विषय होवै है । तैसे सर्व पुरुषार्थके अयोग्य हुआ यह पुरुष मृत हुआही जानणा यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जो पुरुष मनके निग्रहकूं न करिकै केवल बाह्य इंद्रियोंकाही निग्रह करै है । तिस पुरुषकूंभी जबी महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है तबी मन इंद्रिय दोनोंके निग्रहतैं रहित पुरुषकूं महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है याकेविषे क्या कहणा

कार्यविषे अशुभकी प्राप्ति होवै नहीं किंतु सर्व कार्य ताके निर्विघ्न समाप्त होवैं हैं इति । यह वार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्ध है जैसे इस पुरुषनैं जबपर्यंत किसी बलवान् महाराजाका आश्रय नहीं लिया है तबपर्यंतही तिस पुरुषकूं अन्य शत्रु दुःखकी प्राप्ति करैं हैं । और यह पुरुष जबी ता बलवान् महाराजाके आश्रयकूं प्राप्त होवै है तबी यह पुरुष अबी महाराजाके आश्रयकूं प्राप्त भया है या प्रकार मानिकरिकै ते शत्रु आपही तिस पुरुषके वशि होइ जावैं हैं तैसे यह अधिकारी पुरुषभी जबपर्यंत सर्वांतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त नहीं भया है तबपर्यंतही यह श्रोत्रादिक इंद्रिय ता अधिकारी पुरुषकूं बहिर्मुख करैं हैं और यह अधिकारी पुरुष जबी ता अंतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त होवै है तबी यह अधिकारी पुरुष अबी अंतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त भया है या प्रकार मानिकरिकै ते इंद्रिय आपही ता अधिकारी पुरुषके वशिभावकूं प्राप्त होवैं हैं । यह सर्व अर्थ (वशे हि) या वचनविषे स्थित हि या शब्दकरिकै भगवान्नैं सूचन करा ऐसे भगवद्भक्तिके महान् प्रभावकूं आगे विस्तार करिकै निरूपण करैंगे । अब श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंके वशि करनेका फल कथन करैं हैं । (वशे हि इति) हे अर्जुन ! जिस विद्वान् पुरुषके ते श्रोत्रादिक इंद्रिय वशि होवैं हैं तिसी विद्वान् पुरुषकी सा शास्त्रजन्य प्रज्ञा स्थिरताकूं प्राप्त होवै है यातैं (किमासीत) या तृतीय प्रश्नका यह उत्तर सिद्ध भया । सो विद्वान् पुरुष श्रोत्रादिक सर्व इंद्रियोंकूं अपणे वशि करिकै स्थित होवै है इति ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! मनविषे जो अनर्थकी कारणता है सो बाह्य इंद्रियोंकी प्रवृत्तिद्वाराही है स्वभावतैं मनविषे अनर्थकी कारणता है नहीं यातैं जिस पुरुषनैं श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका निग्रह करा है तिस पुरुषकूं दांतोंतैं रहित करे हुए सर्पकी न्याईं मनके नहीं निग्रह किये हुएभी किसी अनर्थकी प्राप्ति होवै नहीं किंतु बाह्य प्रवृत्तिके अभावकरिकैंही सो पुरुष कृतकृत्य होवै है यातैं पूर्व श्लोकविषे (युक्त आसीत) या वचनकरिकै आपनैं कथन करा जो मनका निग्रह है सो व्यर्थही कथन करा है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् सर्व इंद्रियोंके निग्रहवान् पुरुषकूंभी मनके नहीं निग्रह किये हुए सर्व अनर्थोंकी प्राप्ति दो श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ॥ संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ (पदच्छेदः) ध्यायतः । विषयान् । पुंसः । सं

समर्थ हैं । यातैं ता विचारवान् पुरुषरूप स्वामीके देखते हुए तथा ता विवेकरूप रक्षकके विद्यमान हुएभी तिन सर्वोंका पराभव करिके यह श्रोत्रादिक इंद्रिय ता विवेकजन्य प्रज्ञाविषे प्राप्त हुए मनकूं ता प्रज्ञातैं निवृत्त करिके अपणे शब्दादिक विषयोंविषेही बलात्कारतैं प्राप्त करैं हैं । इहां (यततो हि) या वचनविषे स्थित जो हि यह शब्द है ता हिशब्दकरिकै भगवानूनैं यह लोकप्रसिद्धि बोधन करी । यह वार्ता लोकविषेभी प्रसिद्ध है । जैसे कोई बलवान् शत्रु धनी पुरुषोंकूं तथा ता धनके रक्षक पुरुषोंकूं तिरस्कार करिकै तिन्होंके देखते हुएही बलात्कारसैं तिन्होंके धनादिक पदार्थ ले जावैं हैं तैसे यह श्रोत्रादिक इंद्रियभी शब्दादिक विषयोंके समीपताकूं प्राप्त होइकै तिन विवेकादिकोंका पराभव करिकै बलात्कारसैं मनकूं तिन विषयों विषे ले जावैं हैं इति ॥ ६० ॥ ❀ शंका—हे भगवन् ! ते श्रोत्रादिक इंद्रिय जो ऐसे बलवान् हैं तौ तिन इंद्रियोंका निरोध हमारेसैं कैसे होइ सकैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंके निरोधका उपाय कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ॥ वशे हि यस्येंद्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ (पदच्छेदः) तानि । सर्वाणि । संयम्य । युक्तः । आसीत । मत्परः । वशे । हि । यस्य । इंद्रियाणि । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन हमारा अन्य भक्त तिनै सर्व इंद्रियोंकूं वशिकरिकै निगृहीतमनवाला हुआ स्थित होवै जिस पुरुषके यह इंद्रिय वशि वर्त्ति हैं तिसै पुरुषकी सो प्रज्ञा स्थिर होवै है ॥ ६१ ॥

टीका । ज्ञानके साधनरूप जो श्रोत्रादिक पंच ज्ञानइंद्रिय हैं तथा क्रियाके साधनरूप जो वागादिक पंच कर्मइंद्रिय हैं तिन सर्व इंद्रियोंकूं अपणे वशि करिकै क्या शब्दादिक विषयोंतैं तिन इंद्रियोंका निरोध करिकै यह विवेकी पुरुष मनके निग्रहवाला हुआ स्थित होवै क्या बाह्य अंतर सर्व व्यापारोंतैं रहित हुआ स्थित होवै । शंका—हे भगवन् ! पूर्व आपनैं तिन इंद्रियोंकूं महान् बलवान् कह्या था ऐसे बलवान् इंद्रियोंकूं अपणे वशि करणा कैसे संभवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (मत्परः इति) हे अर्जुन ! सर्व प्राणीमात्रका आत्मारूप जो मैं वासुदेव हूं सो मैं वासुदेवही सर्वतैं उत्कृष्ट हूं जिस पुरुषकूं ता पुरुषका नाम मत्पर है ऐसा मेरा अनन्य भक्तही तिन इंद्रियोंकूं अपणे वशि करै है । तहां श्लोक । " न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् " अर्थ यह । सर्व प्राणीमात्रका आत्मारूप जो वासुदेव है ता वासुदेवके अनन्य भक्तोंकूं किसीभी

टीका । श्रोत्रादिक इंद्रियोंकारिकै शब्दादिक विषयोंके ग्रहण करणेविषे असमर्थ ऐसा जो देहाभिमानवाला रोगी मूढ पुरुष है । अथवा काष्ठकी न्याईं सर्व इंद्रियोंकी चेष्टातैं रहित जो तपस्वी है तिन रोगी आदिक मूढ पुरुषोंकेभी ते शब्दादिक विषय निवृत्त होइ जावैं हैं परंतु तिन अज्ञानी पुरुषोंका तिन शब्दादिक विषयोंका राग निवृत्त होवै नहीं किंतु सो विषयोंका राग तिस कालविषेभी तिन अज्ञानी पुरुषोंकूं बन्या रहै है । और इस स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका तो परमानंदस्वरूप ब्रह्म मैं हूं या प्रकारके साक्षात्कारकारिकै ते शब्दादिक विषय तथा तिन विषयोंका राग दोनों निवृत्त होइ जावैं हैं । यह वार्त्ता (यावानर्थ उदपाने) या श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं । यातैं रागसहित विषयोंकी निवृत्तिही ता स्थित प्रज्ञका लक्षण है । ता लक्षणकी रोगादिग्रस्त मूढ पुरुषविषे अतिव्याप्ति होवै नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया जिस कारणतैं परमात्मादेवके यथार्थ साक्षात्कारतैं विना रागसहित विषयोंकी निवृत्ति होवै नहीं तिस कारणतैं यह अधिकारी पुरुष तिन रागसहित विषयोंके निवृत्त करणेहारी यथार्थज्ञानरूप जो प्रज्ञा है ता प्रज्ञाकी स्थिरताकूं अवश्यकारिकै संपादन करै इति ॥ ५९ ॥ ❀ ॥ तहां तिस प्रज्ञाकी स्थिरताविषे बाह्य इंद्रियोंका निग्रह तथा अंतर मनका निग्रह यह दोनों असाधारण कारण हैं । तिन दोनोंके अभाव हुए ता प्रज्ञाका नाश देखणेविषे आवै है । इस अर्थके कहणेवासतै प्रथम बाह्य इंद्रियोंके नहीं निग्रह करणेविषे दोषका वर्णन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) यततो ह्यपि कौंतेय पुरुषस्य विपश्चितः ॥ इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ (पदच्छेदः) यततः । हि । अपि । कौंतेय । पुरुषस्य । विपश्चितः । इंद्रियाणि । प्रमाथीनि । हरंति । प्रसभम् । मनः ॥६०॥ (पदार्थः) हे कुंतीके पुत्र अर्जुन यत्न करणेहारे विवेकी पुरुषके मनकूं भी यह अत्यंत बलवान् श्रोत्रादिक इंद्रिय बलात्कारतैं विकारकूं प्राप्त करैं हैं ॥ ६० ॥

टीका । हे अर्जुन ! वारंवार शब्दादिक विषयोंविषे दोषदर्शनरूप यत्नकूं करणेहारा जो अत्यंत विवेकी पुरुष है । ता विवेकी पुरुषके क्षणमात्र निर्विकार किये हुए मनकूंभी यह श्रोत्रादिक इंद्रिय नाना प्रकारके विकारोंकी प्राप्ति करैं हैं । शंका--हे भगवन् ! ता विकारका विरोधी जो विवेक है ता विवेकके विद्यमान हुए तिस विवेकी पुरुषके मनकूं ते इंद्रिय विकारकी प्राप्ति नहीं करि सकैंगे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंका प्रभाव कथन करैं हैं (प्रमाथीनि इति) हे अर्जुन ! यह श्रोत्रादिक इंद्रिय अत्यंत बलवान् हैं । यातैं यह इंद्रिय ता विवेकके पराभव करणेविषे

प्राप्त भये जो इंद्रिय हैं। तिन इंद्रियोंकूं पुनः अंतर्मुख करिकै समाधिवास्तैही ता स्थितप्रज्ञ पुरुषको स्थिति होवै है या अर्थके निरूपण करणेवास्तै श्रीभगवान् कहै हैं।

(मू. श्लो.) यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ (पदच्छेदः) यदा । संहरते । च । अयं । कूर्मः । अंगानि । इव । सर्वशः । इंद्रियाणि । इंद्रियार्थेभ्यः । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जैसे कूर्म अपणे शिरपादादिक अंगोंकूं संकोच करे है तैसे यह विद्वान् पुरुष जिस कालविषे अपणे सर्व इंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयोंतें पुनः संकोच करे है तिस कालविषे तिस विद्वान् पुरुषकी प्रज्ञा स्थित होवै है ॥ ५८ ॥

टीका। हे अर्जुन ! जैसे कूर्म दूसरेके भयतें अपणे शिरपादिक सर्व अंगोंकूं अपणे शरीरविषेही संकोच करि लेवै है। तैसे समाधितें उत्थानकूं प्राप्त हुआ यह विद्वान् पुरुष जिस कालविषे रागादिक दोषोंकी प्राप्तिके भयतें तथा समाधिके विघ्नोंके भयतें अपणे श्रोत्रादिक सर्व इंद्रियोंकूं शब्दादिक सर्व विषयोंतें पुनः संकोच करि लेवै है तिस कालविषे तिस विद्वान् पुरुषकी सा प्रज्ञा प्रतिष्ठित होवै है। तहां पूर्वले दो श्लोकोंकरिकै समाधितें व्युत्थानदशाविषेभी ता विद्वान् पुरुषविषे सर्व तामस वृत्तियोंका अभाव कथन करा। और अबी इस श्लोककरिकै पुनः समाधिअवस्थाविषे तिन सकल वृत्तियोंका अभाव कथन करा है। इतनी पूर्वतें इहां विलक्षणता है इति ॥ ५८ ॥ ❋ ॥ शंका—हे भगवन् ! शब्दादिक विषयोंतें जो श्रोत्रादिक इंद्रियोंकी निवृत्ति है सा निवृत्ति जो कदाचित् स्थितप्रज्ञताका हेतु होवै तौ रोगादिक निमित्तके वशतें मूढ पुरुषोंके श्रोत्रादिक इंद्रियोंकीभी शब्दादिक विषयोंतें निवृत्ति देखणे विषे आवै है यातें ते रोगादिकोंवाले सर्व मूढ पुरुष स्थितप्रज्ञ होणे चाहियें। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः ॥ रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥ (पदच्छेदः) विषयाः । विनिवर्तंते । निराहारस्य । देहिनः । रसवर्जं । रसः । अपि । अस्य । परं । दृष्ट्वा । निवर्तते ॥ ५९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! इंद्रियोंकरिकै विषयोंके ग्रहण करणेविषे असमर्थ रोगी पुरुषके शब्दादिक विषय निवृत्त होइ जावैं हैं परंतु तिन विषयोंका राग निवृत्त होवै नहीं और इस स्थितप्रज्ञ पुरुषका तौ परब्रह्मकूं साक्षात्कार करिकै सो राग भी निवृत्त होइ जावै है ॥ ५९ ॥

पुण्यकर्मरूप प्रारब्धनैं प्राप्त करे जो सुखके कारणरूप विषय हैं तिन प्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै हर्षविशेषपूर्वक तिन विषयोंकी प्रशंसा नहीं करै है । और पापकर्मरूप प्रारब्धनैं प्राप्त करे जो दुःखके कारणरूप विषय हैं तिन अप्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै सो विद्वान् पुरुष असूयापूर्वक तिन अप्रिय विषयोंकी निंदा नहीं करै है । तात्पर्य यह । अज्ञानी पुरुषोंके सुखके हेतुरूप जो अपणे स्त्रीपुत्रादिक पदार्थ हैं ते पदार्थ तिन अज्ञानी पुरुषोंके प्रति शुभ विषय हैं तिन शुभ विषयोंके गुण कथन करणेविषे प्रवृत्त करणेहारी जो तिन अज्ञानी पुरुषोंके अंतःकरणकी भ्रांतिरूप तामसी वृत्तिविशेष है ताका नाम अभिनंदन है । तहां तिन स्त्रीपुत्रादिक पदार्थोंके गुणोंका कथन अन्य पुरुषोंके प्रीतिवासतै है नहीं यातैं व्यर्थही है । इस प्रकार अन्य पुरुषके जो विद्याप्रतिष्ठादिक गुण हैं । ते विद्यादिक गुण ईर्षाकी उत्पत्तिद्वारा तिन अज्ञानी पुरुषोंके दुःखकेही कारण हैं । यातैं ते अन्य पुरुषके विद्यादिक गुण तिन अज्ञानी पुरुषोंके प्रति अशुभ विषय हैं । तिन अशुभ विषयोंकी निंदादिकोंविषे प्रवृत्त करणेहारी जो तिस अज्ञानी पुरुषके अंतःकरणकी भ्रांतिरूप वृत्तिविशेष है ताका नाम द्वेष है सो द्वेषभी तमोगुणकाही परिणाम है । और ता अज्ञानी पुरुषनैं करी जो निंदा है सा निंदा ता अन्य पुरुषके विद्यादिक उत्कृष्टताकूं निवारण करि सकै नहीं । यातैं सा निंदा व्यर्थही है । यातैं सो अभिनंदन तथा द्वेष दोनों भ्रांतिरूप हैं तथा तमोगुणका परिणाम हैं । ऐसा अभिनंदन तथा द्वेष दोनों ता भ्रांतितैं रहित तथा शुद्ध अंतःकरणवाले स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे कैसे संभवैंगे किंतु नहीं संभवैंगे । और ते द्वेषादिक तामसी वृत्तिही अंतःकरणकूं चलायमान करणेहारी हैं । तिन द्वेषादिकोंके अभाव हुए ता स्नेहतैं रहित तथा हर्ष विषादतैं रहित विद्वान् मुनिकी सा आत्मतत्त्वविषयक प्रज्ञा प्रतिष्ठितही होवै है क्या मोक्षरूप फलविषे पर्यवसानवाली होवै है । सोईही मुनि स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है । इस प्रकार दूसराभी मुमुक्षु सर्व पदार्थोंविषे स्नेहतैं रहित होवै । तथा प्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै तिनोंकी प्रशंसा नहीं करै । तथा अप्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै तिनोंकी निंदा नहीं करै । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जैसे अज्ञानी पुरुष शुभ अशुभ पदार्थोंकी प्राप्तिकालविषे प्रशंसारूप वचनोंकूं तथा निंदारूप वचनोंकूं कथन करै है तैसे सो विद्वान् पुरुष ता शुभ अशुभ पदार्थोंकी प्राप्तिकालविषे प्रशंसारूप वचनोंकूं तथा निंदारूप वचनोंकूं कथन करता नहीं । किंतु ता शुभ अशुभ दोनोंकी प्राप्तिविषे सो विद्वान् पुरुष उदासीनही रहै है इति ॥ ५७ ॥  ॥ अब (किमासीत) या तृतीय प्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् षट् श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं । तहां प्रारब्धकर्मके वशतैं समाधितैं उत्थानकरिकै विक्षेपकूं

अत्यंत अभिनिवेश कहैं हैं ताका नाम राग है । और ता रागका विषय जो पदार्थ है ता पदार्थके नाश करणेहारे किसी कारणके प्राप्त हुए ता कारणके निवृत्त करणेविषे अपणेकूं असमर्थ मानणेहारे पुरुषकी जो दीनतारूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम भय है । और ता रागके विषयरूप प्रिय वस्तुके नाश करणेहारे किसी कारणके प्राप्त हुए ता कारणके निवृत्त करणेविषे अपणेकूं असमर्थ मानणेहारे पुरुषकी जो प्रज्वलनरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम क्रोध है । ते राग, भय, क्रोध तीनों भ्रमरूपही हैं । ऐसे भ्रमरूप राग, भय, क्रोध तीनों निवृत्त होइ गये हैं जिसतैं ताका नाम वीतरागभयक्रोध है । इस प्रकारका मननशील संन्यासी स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया इस प्रकारका स्थितप्रज्ञ पुरुष अपणे अंतर अनुभवकूं प्रगट करिकै अपणे शिष्योंके प्रति शिक्षा करणेवासतै उद्वेगतैं रहितपणेकूं तथा स्पृहातैं रहितपणेकूं तथा रागभयक्रोधतैं रहितपणेकूं कथन करणेहारे जो वचन हैं तिन वचनोंकूंही कथन करै है । क्या हमारे न्याईं दूसराभी मुमुक्षु दुःखोंविषे उद्वेग नहीं करै तथा सुखोंविषे स्पृहा नहीं करै तथा रागभयक्रोधतैं रहित होवै इति ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ॥ नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥ (पदच्छेदः) यः । सर्वत्र । अनभिस्नेहः । तत् । तत् । प्राप्य । शुभाशुभं । न । अभिनंदति । न । द्वेष्टि । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता ॥५७॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जो विद्वान् पुरुष देहादिक सर्व पदार्थोंविषे स्नेहतैं रहित है तथा तिसै तिसै प्रिय अप्रिय विषयकूं प्राप्त होइकै नहीं प्रशंसा करै है नहीं द्वेष करै है तिसै विद्वान् पुरुषकी प्रज्ञा स्थित होवै है ॥ ५७ ॥

टीका । जो विद्वान् मुनि अपणे देहजीवनादिक सर्व पदार्थोंविषे अनभिस्नेह है । इहां जिसके विद्यमान हुए अन्य वस्तुकी हानि तथा वृद्धि अपणेविषे आरोपण करी जावै ऐसी जो ता अन्य वस्तुविषयक अंतःकरणकी तामसी वृत्तिविशेष है जिसकूं प्रेम कहैं हैं ताका नाम स्नेह है ता स्नेहके वशतैंही यह लोक अपणे स्त्री पुत्र धनादिक पदार्थोंकी हानिवृद्धिकूं अपणेविषे मानै है । ता स्नेहतैं सर्व प्रकारतैं जो रहित होवै ताका नाम अनभिस्नेह है । ऐसा अनभिस्नेह विद्वान् पुरुषभी परमानंदस्वरूप आत्मादेवविषे तौ सर्व प्रकारतैं स्नेहवाला होवै । काहेतैं देहादिक अनात्मपदार्थोंके स्नेहका जो परित्याग है सो अंतरआत्माके स्नेहवासतैही है । आत्माके स्नेहतैं विना बाह्य पदार्थोंके स्नेहका परित्याग करणा निष्फल है इति । और जो विद्वान् पुरुष

और मंद मंद पवन, वृष्टि आदिकोंकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आधिदैविक सुख कहैं हैं । अथवा इसी गीताशास्त्रके अष्टादशाध्यायविषे कथन करी रीतिसैं सात्विक, राजस, तामस या भेदतैं सो सुख तीन प्रकारका होवै है । अथवा अन्य शास्त्र उक्त रीतिसैं वैषयिक आभिमानिक, मानोरथिक, आभ्यासिक या भेदकरिकै सो सुख चारि प्रकारका होवै है । तहां विषयके संबंधतैं जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं वैषयिक सुख कहैं हैं । और राज्यपांडित्यादिकोंके अभिमानकरिकै जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं आभिमानिक सुख कहैं हैं । और प्रिय विषयोंके ध्यान करणेतैं जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं मानोरथिक कहैं हैं । और सूर्यभगवान्के नमस्कारादिकोंकरिकै जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं आभ्यासिक सुख कहैं हैं । या प्रकार अनेक प्रकारके सुखोंके जनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सुखेषु) यह बहुवचन कथन करा है । ते सर्व सुख पुण्यकर्मरूप प्रारब्धतैं प्राप्त होवैं हैं । तिन सर्व सुखोंविषे सो विद्वान् पुरुष स्पृहातैं रहित होवैं हैं । तहां तिस तिस सुखके अनुभवकालविषे तिस तिस सुखके सजातीय दूसरे सुखकी प्राप्ति करणेहारा जो धर्म है ता धर्मका नहीं अनुष्ठान करिकै तिस तिस सुखके प्राप्तिकी आकांक्षारूप जो तामसी अंतःकरणी वृत्तिविशेष है ताका नाम स्पृहा है सा स्पृहा भ्रांतिरूप है । ऐसी भ्रांतिरूप स्पृहा अविवेकी पुरुषोंविषेही उत्पन्न होवै है । विवेकी पुरुषोंविषे सा भ्रांतिरूप स्पृहा उत्पन्न होवै नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जैसे पापकर्मरूप कारणके विद्यमान हुएभी दुःखरूप कार्य हमारेकूं मत प्राप्त होवै या प्रकारकी व्यर्थ आकांक्षारूप उद्वेग विवेकी पुरुषविषे संभवता नहीं । तैसे पुण्यकर्मरूप कारणके नहीं विद्यमान हुएभी सुखरूप कार्य हमारेकूं प्राप्त होवै या प्रकाकी व्यर्थ आकांक्षारूप जो स्पृहा है जिस स्पृहाकूं तृष्णा कहैं हैं सा तृष्णारूप स्पृहाभी ता विवेकी पुरुषविषे संभवै नहीं । और प्रारब्ध पुण्यकर्म तौ ता विद्वान् पुरुषकूं केवल सुखमात्रकीही प्राप्ति करैं हैं । कोई ता भ्रांतिरूप स्पृहाकी प्राप्ति करैं नहीं इति । अथवा । हर्षरूप जो अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम॰स्पृहा है । तहां जिस हमारेकूं ऐसा उत्कृष्ट सुख प्राप्त भया है सो मैं धन्य धन्य हूं । तीन लोकोंविषे हमारेसमान सुखवाला कोईभी प्राणी नहीं है । किसीभी उपायकरिकै यह हमारा सुख नाशकूं नहीं प्राप्त होवै । इत्यादिरूप जो उत्फुल्लतारूप अंतःकरणकी तामसी वृत्तिविशेष है ताका नाम हर्ष है सा हर्षरूप स्पृहाभी भ्रांतिरूपही है । यहही स्पृहाशब्दका अर्थ श्रीभगवान् (न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्) या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे । सो हर्षरूप भ्रांतिभी ता विद्वान् पुरुषविषे संभवै नहीं । पुनः कैसा है सो विद्वान् पुरुष निवृत्त होइ गये हैं राग भय क्रोध जिसके तहां यह विषय बहुत सुंदर है या प्रकारके शोभनबुद्धिरूप अध्यासकरिकै जन्य जो रंजनरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है जिसकूं अ

है ता भ्रांतिरूप जो तमोगुणका परिणामरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम उद्वेग है सो उद्वेग तिन अविवेकी पुरुषोंकूं दुःखरूप फलकी प्राप्तिकालविषे जैसे होवै है तैसे जो कदाचित् सो उद्वेग तिन अविवेकी पुरुषोंकूं पापकर्मोंके करणकालविषे होता तौ तिन पापकर्मोंके प्रवृत्तिका प्रतिबंधक होणेतैं सो उद्वेग सफल होता परंतु तिन पापकर्मोंके करणकालविषे तिन अविवेकी पुरुषोंकूं सो उद्वेग होता नहीं । और तिन पापकर्मोंके दुःखरूप फलके भोगकालविषे उत्पन्न हुआभी सो उद्वेग जैसे गृहकूं अग्निके लागे हुए ता अग्निके शांति करणेवासतै कूपका खोदणा निष्फल होवै है तैसे निष्फलही होवै है काहेतैं तिन पापरूप कारणके विद्यमान हुए सो दुःखरूप कार्य अवश्यकरिकै उत्पन्न होवै है । ता कालविषे उद्वेगमात्रकरिकै ता दुःखकी निवृत्ति होइ सकै नहीं । और ता दुःखके पापरूप कारणके विद्यमान हुएभी हमारेकूं किसवासतै दुःख उत्पन्न होवै है । या प्रकारका जो अविवेक है सो अविवेक भ्रमरूप है। यातैं सो भ्रमरूप अविवेक ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे संभवता नहीं । और ता विद्वान् पुरुषका शरीरभी पुण्यपापकर्मोंकरिकै रचित है । यातैं ते प्रारब्ध पापकर्म ता विद्वान् पुरुषकूं केवल दुःखकमात्रकीही प्राप्ति करैं हैं परंतु ता दुःखकी प्राप्तिके उत्तरकालविषे ता अविवेकरूप भ्रमकी प्राप्ति करैं नहीं । शंका—हे भगवन् ! दुःखकी प्राप्तितैं उत्तरकालविषे उत्पन्न भया जो अविवेकरूप भ्रम है सो अविवेकरूप भ्रमभी दूसरे दुःखका कारण होवै है । यातैं सो अविवेकरूप भ्रमभी दूसरे प्रारब्धकर्मोंकरिकैही प्राप्त होवै है यातैं विद्वान् पुरुषकूंभी ता प्रारब्धकर्मके वशतैं सो अविवेकरूप भ्रम अवश्य होवैगा । समाधान हे अर्जुन ! ता भ्रमका उपादानकारण जो अज्ञान है सो अज्ञान ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका नाश होइ गया है. यातैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे सो अविवेकरूप भ्रम संभवता नहीं । तथा ता विद्वान् पुरुषविषे ता भ्रमजन्य दुःखकी प्राप्ति करणेहारे प्रारब्धकर्मभी हैं नहीं और जिस किसी प्रकारतैं ता विद्वान् पुरुषके देहकी यात्रामात्रका निर्वाह करणेहारा जो प्रारब्धकर्मोंका फल है ता फलका भोग भ्रमके अभाव हुएभी बाधितानुवृत्तिकरिकै ता विद्वान् पुरुषविषे संभव होइ सकै है यह वार्त्ता आगे विस्तारकरिकै कथन करैंगे इति । किंवा सो विद्वान् पुरुष जैसे दुःखोंकी प्राप्तिविषे उद्वेगतैं रहित होवै है । तैसे सुखोंकी प्राप्तिविषे स्पृहातैंभी रहित होवै है । तहां सत्वगुणका परिणामरूप जो अंतःकरणकी प्रीतिरूप वृत्तिविशेष है ताका नाम सुख है । सो सुखभी दुःखकी न्यांई आध्यात्मिक सुख, आधिभौतिक सुख, आधिदैविक सुख या भेदकरिकै तीन प्रकारका होवै है । तहां प्रिय वस्तुके ध्यानकरिकै तथा पांडित्यादिकोंके अभिमानकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आध्यात्मिक सुख कहैं हैं । और स्त्री पुत्र मित्रादिकोंकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आधिभौतिक सुख कहैं हैं ।

संभव होइ सकै है। तहां श्रुति। "यदा सर्वे प्रमुच्यंते कामा येस्य हृदि श्रिताः। अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते"। अर्थ यह। इस पुरुषके मनविषे स्थित जे कामसंकल्पादिक हैं ते सर्व कामसंकल्पादिक जिस कालविषे निःशेषतैं निवृत्त होवे हैं। तिस कालविषे यह जीव अमृतभावकूं प्राप्त होवै है। तथा इसी शरीरविषे आनंदस्वरूप ब्रह्मकूं अनुभव करै है इति। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया सो समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुष इस प्रकारके लक्षणवाचक शब्दोंकरिकै कथन करा जावे है यह प्रथम प्रश्नका उत्तर सिद्ध हुआ इति ॥ ५५ ॥ ❀ ॥ अब समाधितैं उत्थानकूं प्राप्त हुए स्थितप्रज्ञके भाषण, आसन, गमन या तीनोंविषे मूढ पुरुषोंके भाषणादिकोंतैं विलक्षणताकूं कथन करता हुआ श्रीभगवान् (किं प्रभाषेत) या द्वितीय प्रश्नके उत्तरकूं दो श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ॥ वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥ (पदच्छेदः) दुःखेषु। अनुद्विग्नमनाः। सुखेषु। विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः। स्थितधीः। मुनिः। उच्यते ॥ ५६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन दुःखोंविषे नहीं उद्वेगकूं प्राप्त हुआ है मन जिसका तथा विषयसुखोंविषे निवृत्त हुई है स्पृहा जिसकी तथा निवृत्त हुए हैं रागभयक्रोध जिसके ऐसा मननशील पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्या जावे है ॥ ५६ ॥

टीका। आध्यात्मिक दुःख आधिभौतिक दुःख, आधिदैविक दुःख यह तीन प्रकारके दुःख होवैं हैं। तहां शोकमोहादिक आधियोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तथा ज्वरशूलादिक व्याधियोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुखोंकूं आध्यात्मिक दुःख कहैं हैं और व्याघ्रसर्पादिकोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुखोंकूं आधिभौतिक दुःख कहैं हैं। और अति वायु अति वृष्टि अग्नि आदिकोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुःखोंकूं आधिदैविक दुःख कहैं हैं। ते सर्व दुःख रजोगुणका परिणामरूप तथा संतापरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेषरूप होवैं हैं। तथा पापकर्मरूप प्रारब्धकरिकै प्राप्त होवैं हैं। ऐसे दुखोंके प्राप्तिविषे तिन दुखोंके निवृत्त करणेकी असामर्थ्यताकरिकै नहीं प्राप्त हुआ है उद्वेगकूं मन जिसका ताका नाम अनुद्विग्नमना है। और जे अविवेकी पुरुष हैं तिन अविवेकी पुरुषोंकूं तौ ता दुःखकी प्राप्तिकालविषे या प्रकारका उद्वेग होवै है मैं बहुत पापात्मा हूं ऐसे दारुण दुःखोंकूं भोगणेहारा मैं दुरात्माकूं धिक्कार है। ऐसे मेरे दुःखकूं कौन निवृत्त करैगा इति। इस प्रकारकी अनुतापरूप जो भ्रांति

(पदच्छेदः) प्रजहाति । यदा । कामान् । सर्वान् । पार्थ । मनोगतान् । आत्मनि । एव । आत्मना । तुष्टः । स्थितप्रज्ञः । तदा । उच्यते ॥ ५५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिस कालविषे सो समाधिस्थ पुरुष अपणे मनविषे स्थित सर्व कामोंकूं परित्याग करै है तथा आत्माविषे आत्माकरिकै ही तृप्त होवै है तिसै कालविषे सो समाधिस्थ पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है ॥ ५५ ॥

टीका । हे अर्जुन ! कामसंकल्प आदिक जो मनकी वृत्तियां विशेष हैं जिन कामसंकल्पादिक वृत्तियोंकूं अन्य शास्त्रविषे प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति या भेदकरिकै पंच प्रकारका कथन करा है तिन कामसंकल्पादिक सर्व वृत्तियोंकूं जिस कालविषे यह विद्वान् पुरुष कारणके बाधकरिकै परित्याग करै है क्या जिस कालविषे तिन कामसंकल्पादिक सर्व वृत्तियोंतैं रहित होवै है तिस कालविषे सो समाधिस्थ विद्वान् पुरुष स्थित प्रज्ञ कह्या जावै है। अब तिन कामसंकल्पादिकोंविषे अनात्मवस्तुकी धर्मरूपता कथन करिकै परित्याग करणेकी योग्यता निरूपण करैं हैं (मनोगतान् इति) हे अर्जुन ! ते कामसंकल्पादिक सर्व धर्म मनकेही हैं आत्माके धर्म हैं नहीं । जो कदाचित् ते कामसंकल्पादिक आत्माकेही स्वाभाविक धर्म होवैं तौ जैसे अग्निका स्वाभाविक धर्म जो उष्णता है सो उष्णताधर्म अग्निके विद्यमान हुए कदाचित्भी निवृत्त होवै नहीं तैसे आत्माके विद्यमान हुए ते कामसंकल्पादिक धर्म कदाचित्भी निवृत्त होवैंगे नहीं । यातैं ते कामसंकल्पादिक आत्माके धर्म नहीं हैं किंतु मनकेही धर्म हैं। यातैं ता कारणरूप मनके परित्यागकरिकै ते कामसंकल्पादिक धर्म परित्याग करणेकूं शक्य हैं। ते कामसंकल्पादिक मनकेही धर्म हैं या अर्थविषे "कामः संकल्पो विचिकित्सा" इत्यादिक श्रुतिही प्रमाणरूप हैं। इतने कहणेकरिकै बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म इन अष्टोंकूं आत्माका धर्म मानणेहारे नैयायिकोंका मतभी खंडन करा इति। शंका—हे भगवन् ! ता समाधिस्थ स्थितप्रज्ञ विद्वानका मुख प्रसन्न हुआ प्रतीत होवै है। और सा मुखकी प्रसन्नता अंतरके संतोषतैं विना होवै नहीं यातैं ता मुखकी प्रसन्नतारूप हेतुतैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका संतोषविषे अनुमान करा जावै है । सो संतोषविशेष सर्व वृत्तियोंके परित्याग किये हुए किस प्रकार संभवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं। (आत्मन्येवात्मनातुष्टः) इति । हे अर्जुन सो विद्वान् पुरुष परमानंदस्वरूप आत्माविषेही परमपुरुषार्थकी प्राप्तितैं तृप्तिकूं प्राप्त हुआ है। कोई अनात्म तुच्छ पदार्थोंविषे सो विद्वान् पुरुष तृप्तिकूं प्राप्त हुआ नहीं। ता परमानंदस्वरूपआत्माविषेभी स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै भासमान आत्माकरिकैही तृप्तिकूं प्राप्त हुआ है कोई मनकी वृत्तिविशेषकरिकै तृप्तिकूं प्राप्त हुआ नहीं। यातैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे मनकी वृत्तितैंविनाभी सो संतोषविशेष

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ॥ स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥
(पदच्छेदः) स्थितप्रज्ञस्य । का । भाषा । समाधिस्थस्य । केशव । स्थितधीः । किं । प्रभाषेत । किम् । आसीत । व्रजेत । किम् ॥ ५४ ॥ (पदार्थः) हे केशव समाधिविषे स्थितप्रज्ञ पुरुषका लक्षण क्या है तथा समाधितैं उठ्या हुआ सो स्थितप्रज्ञ किस प्रकार भाषण करै है तथा किस प्रकार बाह्य इंद्रियोंका निग्रह करै है तथा किस प्रकार विषयोंकूं प्राप्त होवै है ॥ ५४ ॥

टीका । निश्चल हुई है मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारकी प्रज्ञा जिसकी ताका नाम स्थितप्रज्ञ है। सो स्थितप्रज्ञ पुरुष दो प्रकारकी अवस्थावाला होवै है एक तौ समाधिविषे स्थित होवै है और दूसरा ता समाधितैं उत्थान हुए चित्तवाला होवै है । या कारणतैंही ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका समाधिस्थ यह विशेषण कथन करा है । ऐसे समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुषका कौन लक्षण है क्या सो समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुष किस लक्षणकरिकै दूसरे पुरुषोंनैं जानीता है । इति प्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ और ता समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त हुआ है चित्त जिसका ऐसी दूसरी अवस्थावाला सो स्थित प्रज्ञ पुरुष अपणी स्तुतिविषे तथा निंदाविषे हर्षपूर्वक तथा द्वेषपूर्वक वचनकूं किस प्रकार कथन करै है । इति द्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ और ता समाधितैं उत्थानकूं प्राप्त हुए चित्तके निग्रह करणेवासतै सो स्थितप्रज्ञ पुरुष नेत्रादिक बाह्य इंद्रियोंके निग्रहकूं किस प्रकार करे है । इति तृतीयप्रश्नः । ॥ ३ ॥ और तिन बाह्य इंद्रियोंके निग्रहके अभावकालविषे सो स्थितप्रज्ञ पुरुष किस प्रकार विषयोंकूं प्राप्त होवै है । इति चतुर्थप्रश्नः ॥ ४ ॥ तात्पर्य यह । ता व्युत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञ पुरुषके भाषण, आसन, व्रजन यह तीनों अज्ञानी पुरुषोंके भाषणादिकोंतैं किस प्रकारके विलक्षण हैं इति । इस प्रकार अर्जुनके चारि प्रश्न सिद्ध होवैं हैं । तहां समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञविषे तौ प्रथम एक प्रश्न है । और समाधितैं उत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञविषे तीन प्रश्न हैं। तहां (हे केशव) या संबोधनके कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा सर्वका अंतर्यामी होणेतैं आपही इस रहस्य अर्थके कहणेविषे समर्थ हो इति ॥ ५४ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इन चारि प्रश्नोंके यथाक्रमतैं उत्तरोंकूं इस द्वितीय अध्यायकी समाप्तिपर्यंत कथन करैं हैं तहां एक श्लोककरिकै प्रथम प्रश्नका उत्तर कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

अंतःकरणकूं मलिनही जानणा इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥ शंका—हे भगवन् ! तिन निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानतैं अंतःकरणकी शुद्धिकरिकै उत्पन्न हुआ है वैराग्य जिसकूं ऐसा जो कोईक अधिकारी पुरुष है तिस अधिकारी पुरुषकूं किस कालविषे आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवे है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ॥ समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ (पदच्छेदः) श्रुतिविप्रतिपन्ना । ते । यदा । स्थास्यति । निश्चला । समाधौ । अचला । बुद्धिः । तदा । योगम् । अवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! पूर्व नाना फलोंके श्रवण करिकै संशयकूं प्राप्त हुई तुम्हारी बुद्धि जिस कालविषे परमात्मादेवविषे निश्चल हुई तथा अचल हुई स्थित होवैगी तिस कालविषे तूं जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं प्राप्त होवैगा ॥ ५३ ॥

टीका । हे अर्जुन ! नहीं विचार करा है वास्तव तात्पर्य जिनोंका ऐसे जो स्वर्गादिक नाना प्रकारके फलोंके श्रवण हैं तिन श्रवणोंकारिकै प्राप्त हुए जो नाना प्रकारके संशयविपरीतभावना हैं तिन संशयविपरीतिभावनावोंकारिकै पूर्व विक्षेपकूं प्राप्त हुई जो तुम्हारी बुद्धि है सा तुम्हारी बुद्धि जिस कालविषे अंतःकरणकी शुद्धितैं प्राप्त हुए विवेकजन्य पदार्थोंविषे दोषदर्शन करिकै ता विक्षेपका परित्याग करिकै अंतरपरमात्मा देवविषे निश्चल हुई क्या जाग्रत् स्वप्नदर्शनरूप विक्षेपतैं रहित हुई तथा ता परमात्मादेवविषे अचल हुई क्या सुषुप्ति, मूर्च्छा, स्तब्धभाव इत्यादिक लयरूप चलनतैं रहित हुई स्थित होवैगी क्या लयविक्षेपरूप दोनोंका परित्याग करिकै जबी ता परमात्मादेवविषे एकाग्रभावकूं प्राप्त होवैगी । अथवा (निश्चला अचला) या दोनों पदोंका यह अर्थ करणा (निश्चला) क्या असंभावना विपरीतभावनातैं रहित हुई । तथा (अचला) क्या दीर्घकाल, आदर, निरंतर, सत्कार इन चारोंके सेवन करिकै विजातीय वृत्तियोंकरिकै नहीं दूषित हुई ऐसी सा बुद्धि जिस कालविषे वायुतैं रहित दीपककी न्याईं ता परमात्मादेवविषे स्थित होवैगी तिसी कालविषे तत्त्वमसि आदिक वाक्योंतैं जन्य जीवब्रह्मके अभेदसाक्षात्काररूप योगकूं तूं प्राप्त होवैगा । तिस ज्ञानकालविषे दूसरा कोई कर्त्तव्य है नहीं । यातैं तिस कालविषे तूं कृतकृत्य होवैगा । तथा स्थितप्रज्ञ होवैगा इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ तहां इस प्रकारके अवसरकूं प्राप्त होइके सो अर्जुन जीवन्मुक्त पुरुषके जे लक्षण हैं तेही लक्षण मुमुक्षुजनोंके मोक्षका उपायरूप हैं या प्रकार मानता हुआ ता स्थितप्रज्ञके लक्षणके जानणेवासते या प्रकारका प्रश्न करै है ।

निवृत्तिपूर्वक परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्षकूं प्राप्त होवैं हैं। जिस मोक्षकूं शास्त्रविषे विष्णुका परमपदरूपकरिकै कथन करा है। तिस कारणतैं तूं अर्जुनभी (यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे) इस पूर्व उक्त वचनतैं मोक्षरूप श्रेयकी इच्छावाला प्रतीत होता है। यातैं तूंभी ता मोक्षकी प्राप्तिवासतै इस प्रकारके निष्काम कर्मयोगकूं कर इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन्! इस प्रकार निष्कामकर्मोंके अनुष्ठान करते हुए किस कालविषे हमारे अंतःकरणकी शुद्धि होवैगी। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ताकेविषे कालके नियमका अभाव कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ॥ तदा गंतासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥ (पदच्छेदः) यदा। ते। मोहकलिलम्। बुद्धिः। व्यतितरिष्यति। तदा। गंता। असि। निर्वेदम्। श्रोतव्यस्य। श्रुतस्य। च॥५२॥(पदार्थः) हे अर्जुन! जिस कालविषे तुम्हारा अंतःकरण अविवेकरूप कालुष्यकूं परित्याग करैगा तिस कालविषे श्रवण करणेयोग्य कर्मफलके तथा श्रवण करे हुए कर्मफलके वैराग्यकूं प्राप्तिवाला तूं होवैगा ॥ ५२ ॥

टीका। हे अर्जुन! तिन निष्काम कर्मोंके करते हुए इतने कालतैं पीछे अंतःकरणकी शुद्धि होवै है या प्रकारके कालका नियम इहां नहीं किंतु तिन निष्काम कर्मोंके करते हुए जिस कालविषे तुम्हारा अंतःकरण यह मैं हूं यह मेरे हैं इत्यादिक अहंममअभिमानरूप अविवेकरूप कालुष्यकूं परित्याग करैगा क्या रजोगुण तमोगुणरूप मलकूं परित्याग करिकै केवल शुद्ध सत्वभावकूं प्राप्त होवैगा तिस कालविषे अभी श्रवण करणेयोग्य अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंके वैराग्यकूं तथा पूर्व श्रवण करे हुए कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंके वैराग्यकूं तूं प्राप्त होवैगा। क्या तिन स्वर्गादिक फलोंकूं मिथ्यारूप जानिकै तिनोंके प्राप्तिकी तृष्णातैं तूं रहित होवैगा। तहां श्रुति। "परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायात्"। अर्थ यह। ब्रह्मके प्राप्तिकी इच्छावान् अधिकारी पुरुष कर्मोंकरिकै रचित स्वर्गादिक लोकोंकूं अनित्य दुःखरूप जानिकै तिनोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै है इति। इहां भगवान्का यह तात्पर्य है। अशुद्ध अंतःकरणविषे वैराग्य होवै नहीं किंतु शुद्ध अंतःकरणविषेही सो वैराग्य होवै है। यातैं जिस कालविषे तुम्हारेकूं इस लोकके विषयसुखोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक तीव्र वैराग्यकी प्राप्ति होवै तिसी कालविषे ता वैराग्यरूप फलकरिकै तुमनैं अपणे अंतःकरणकी शुद्धि जानणी। जबपर्यंत तिन विषयोंतैं वैराग्य नहीं भया। तबपर्यंत तुमनैं अपणे

है। और तूं अर्जुन तौ चेतनरूप हुआभी अपणे सजातीय दुर्योधनादिक दुष्टोंका नाश करता नहीं। यातैं तूं कुशल नहीं है इति। अथवा इस श्लोकका यह दूसरा अर्थ करणा। बुद्धियुक्तः। जहाति। इह। उभे। सुकृतदुष्कृते। तस्मात्। योगाय। युज्यस्व। योगः। कर्मसु। कौशलम् इति। इनै समत्वबुद्धियुक्त कर्मोंके किये हुए अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा परमात्मसाक्षात्कारकरिकै युक्त हुआ यह पुरुष जिस कारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं परित्याग करे है तिस कारणतैं तूं समत्वबुद्धियुक्त कर्मयोगकी प्राप्तिवासतै उद्यमवाला होउ जिस कारणतैं सर्व कर्मोंके मध्यविषे सो समत्वबुद्धियुक्त कर्मयोग दुष्ट कर्मोंके निवृत्त करणेविषे बहुत चतुर है इति ॥ ५० ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन्! इस अधिकारी पुरुषकूं पापकर्मकी निवृत्ति तौ अपेक्षित है परंतु पुण्यकर्मोंकी निवृत्ति अपेक्षित है नहीं। जो पुण्यकर्मोंकीभी निवृत्ति होवैगी तौ पुरुषार्थकीही हानि होवैगी। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् स्वर्गादिक तुच्छ फलके त्याग कियेतैं परम पुरुषार्थकी प्राप्तिरूप फलका कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ॥ जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छंत्यनामयम् ॥ ५१ ॥ (पदच्छेदः) कर्मजम्। बुद्धियुक्ताः। हि। फलम्। त्यक्त्वा। मनीषिणः। जन्मबंधविनिर्मुक्ताः। पदम्। गच्छंति। अनामयम् ॥ ५१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कारणतैं ते समत्वबुद्धियुक्त पुरुष कर्मजन्य फलकूं त्यागिकरिकै आत्मसाक्षात्कारवाले होवैं हैं तथा जन्मरूप बंधतैं रहित हुए अविद्यादिक रोगोंतैं रहित मोक्षरूप पदकूं प्राप्त होवैं हैं तिस कारणतैं तूंभी ऐसा होउ ॥ ५१ ॥

टीका। हे अर्जुन! ता समत्वबुद्धिवाले पुरुष अग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै जन्य स्वर्गादिरूप फलकूं परित्याग करिके केवल ईश्वरके आराधनवासतै तिन कर्मोंकूं करते हुए अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तत्त्वमसि आदिक वाक्यजन्य आत्माकारबुद्धिरूप मनीषावाले होवैं हैं। इस आत्मज्ञानरूप मनीषाकूं प्राप्त होइकै ते अधिकारी पुरुष जन्मरूप बंधतैं अत्यंत मुक्त हुए कार्यसहित अविद्यारूप रोगतैं रहित तथा सर्व भयतैं रहित जो परम आनंदस्वरूप ब्रह्मरूप मोक्ष है ता मोक्षरूप पुरुषार्थकूं अभेदकरिकै प्राप्त होवैं हैं इति। इहां श्रीभगवान्का यह अभिप्राय है जिस कारणतैं फलकी कामनाका परित्याग करिकै ता समत्वबुद्धिकरिकै अपणे वर्णआश्रमके कर्मोंका अनुष्ठान करणेहारे पुरुष तिन निष्काम कर्मोंके प्रभावतैं शुद्ध अंतःकरणवाले होवैं हैं। ता अंतःकरणकी शुद्धितैं अनंतर ते अधिकारी पुरुष तत्त्वमसि आदिक प्रमाणतैं उत्पन्न हुए आत्मज्ञानके प्रभावतैं कार्यसहित अविद्यातैं रहित हुए सर्व अनर्थकी

णतैं ते कृपण पुरुष ता धनके दानादिकोंकरिकै जन्य महान् सुखकूं अनुभव करि सकते नहीं । किंतु ता धनके इकट्ठे करणेविषे करे जो पापकर्म हैं तिन पापकर्मोंके नरकादिक दुःखोंकूंही ते कृपण पुरुष अनुभव करैं हैं । यातैं ते कृपण पुरुष अपणी हानि आपही करैं हैं । तैसे यह सकाम पुरुषभी महान् दुःखोंकूं सहन करिकै तिन कर्मोंकूं करैं हैं परंतु स्वर्ग, धन, पुत्र, पशु इत्यादिक अल्प फलोंके लोभकरिकै ते सकाम पुरुष तिन कर्मोंकरिकै मोक्षरूप परमानंदकूं प्राप्त होवैं नहीं किंतु अनेक दुःखोंकरिके मिले हुए तिन स्वर्गादिक तुच्छ फलोंकूंही प्राप्त होवैं हैं । या कारणतैं ते सकाम पुरुष अपणी हानि आपही करैं हैं । ऐसे सकाम पुरुषोंकी दौर्भाग्यताका तथा मूढताका बुद्धिमान् पुरुषोंकूं बहुत शोक होवे है । यह सर्व अर्थ श्रीभगवान्नैं कृपणपदकरिकै सूचन करा इति ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार ता बुद्धियोगके अभाव हुए दोषका निरूपण करा । अब ता बुद्धियोगके वियमान हुए गुणका निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ॥ तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ (पदच्छेदः) बुद्धियुक्तः । जहाति । इह । उभे । सुकृतदुष्कृते । तस्मात् । योगाय । युज्यस्व । योगः । कर्मसु । कौशलम् ॥ ५० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिस कारणतैं इन कर्मोंविषे समत्वबुद्धियुक्त पुरुष पुण्य पाप दोनोंकूं परित्याग करै है तिस कारणतैं ता समत्वबुद्धिरूप योगके वासते तूं उद्यमवाला होउ जिस कारणतैं सो योगही तिन कर्मोंविषे कुशलपणा है ॥ ५० ॥

टीका । हे अर्जुन ! शास्त्रनैं विधान करे जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं तिन कर्मोंके फलकी प्राप्तिविषे तथा फलकी अप्राप्तिविषे हर्षविषादतैं रहिततारूप समत्वबुद्धिकरिकै युक्त जो अधिकारी पुरुष है । सो अधिकारी पुरुष जिस कारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं अंतःकरणकी शुद्धि ज्ञानकी प्राप्तिद्वारा परित्याग करै है तिस कारणतैं ता समत्वबुद्धिरूप योगकी प्राप्तिवासतै तूं दृढ उद्यमवाला होउ । जिस कारणतैं सो समत्वबुद्धिरूप योगही तिन कर्मोंविषे प्रवर्त्तमान पुरुषका कुशलपणा है । तात्पर्य यह । वास्तवतैं बंधके हेतुरूप जो कर्म हैं तिन कर्मोंकाभी जो समत्वबुद्धिरूप योग मोक्षविषे उपयोग सिद्ध करै है । यहही ता समत्वबुद्धिरूप योगविषे महान् कुशलता है इति । इतने कहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । समत्वबुद्धिकरिके युक्त जो कर्मयोग है सो कर्मयोग आप कर्मरूप हुआभी अपणे सजातीय दुष्ट कर्मोंका नाश करै है । यातैं सो कर्मयोग महान् कुशल

यातैं फलकी कामनातैं विना निष्फल कर्मोंके करणेतैं फलकी कामनाकरिकै कर्मोंका अनुष्ठान करणाही श्रेष्ठ है।ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं।

(मू. श्लो.) दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ॥ बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ (पदच्छेदः) दूरेण । हि । अवरं । कर्म । बुद्धियोगात् । धनंजय । बुद्धौ । शरणम् । अन्विच्छ । कृपणाः । फलहेतवः ॥ ४९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिसै कारणतैं निष्काम कर्मतैं सो सकाम कर्म अत्यंत दूरताकरिकै अधम है तिस कारणतैं परमात्मबुद्धिनिमित्त निष्काम कर्मयोगके करणेकूं तूं इच्छा कर जे पुरुष फलकी कामनावाले हैं ते पुरुष कृपण हैं ॥ ४९ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जिस कारणतैं आत्मज्ञानरूप बुद्धिका साधनरूप जो निष्काम कर्मयोग है ताका नाम बुद्धियोग है ता बुद्धियोगतैं सो जन्ममरणका हेतुरूप सकाम कर्म अत्यंत दूरताकरिकै अधम है । अथवा परमात्माविषयक जो बुद्धिरूप योग है ताका नाम बुद्धियोग है ता बुद्धियोगतैं यह संपूर्ण कर्म अधम है । तिस कारणतैं सर्व अनर्थोंकी निवृत्ति करणेहारी जो परमात्माविषयक बुद्धि है ता बुद्धिकी प्राप्तिवास्तै प्रतिबंधक पापकर्मोंकी निवृत्तिद्वारा जो निष्काम कर्मयोग है ताके करणेकी तूं इच्छा कर इति । हे अर्जुन ! स्वर्गादिक फलकी कामनावाले जे पुरुष तिन सकाम कर्मोंकूं करैं हैं ते पुरुष कृपण हैं । क्या ते सकाम पुरुष सर्वदा जन्ममरणादिरूप घटीयंत्रके भ्रमणकरिकै नाना प्रकारकी दीन दशावोंकूं प्राप्त होवैं हैं । तहां श्रुति । "यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः" । अर्थ यह । हे गार्गि इस भारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं पाइकै जो पुरुष इस अक्षर परमात्मादेवकूं न जानिकरिकै इस मनुष्यलोकतैं जावै है सो पुरुष कृपणही जानणा इति । हे अर्जुन ऐसे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं पाइकै तूंभी ऐसा कृपण मत होउ किंतु जन्ममरणादिक सर्व अनर्थोंकी निवृत्ति करणेहारा जो आत्मज्ञान है ता आत्मज्ञानकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा उत्पन्न करणेहारा जो निष्कामकर्मरूप योग है ता निष्काम कर्मयोगकूंही तूं कर । इहां । (कृपणाः) या पदके कहणेकरिकै श्रीभगवाननें अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा जैसे इस लोकविषे कोईक कृपण पुरुष अनेक प्रकारके दुःखोंकूं सहन करिकै तथा नानाप्रकारके छल कपटकरिकै धनकूं एकठा करैं हैं ते कृपण पुरुष इस लोकके यत्किंचित् विषयजन्य सुखके लोभकरिकै ता धनका दान करते नहीं । या कार

(मू. श्लो.) योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ (पदच्छेदः) योगस्थः । कुरु । कर्माणि । संगं । त्यक्त्वा । धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः । समः । भूत्वा । समत्वं । योगः । उच्यते ॥ ४८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! तूं योगविषे स्थित हुआ फलकी इच्छाकूं परित्याग करिकै तथा फलकी प्राप्ति अप्राप्ति दोनोंविषे हर्षविषादतैं रहित होइकै कर्मोंकूं कर सो हर्षविषादतैं रहितपणाही योग कह्या जावै है ॥ ४८ ॥

टीका । हे अर्जुन! तूं योगविषे स्थित होइकै स्वर्गादिक फलकी इच्छारूप संगका परित्याग करिकै तथा मैं इस कर्मका कर्ता हूं या प्रकारके कर्तृत्व अभिनिवेशका परित्याग करिकै कर्मोंकूं कर । अब ता संगके त्यागका उपाय कथन करैं हैं (सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा इति) हे अर्जुन तिन वेदउक्त कर्मोंके स्वर्गादिक फलकी प्राप्तिविषे तूं हर्षका परित्याग करिकै तथा तिन स्वर्गादिक फलोंकी अप्राप्तिविषे विषादका परित्याग करिकै केवल ईश्वरआराधन बुद्धिकरिकै तिन कर्मोंकूं कर । शंका—हे भगवन्! पूर्व आपनैं योगशब्दकरिकै कर्मोंका कथन करा था और अबी आपनैं योगविषे स्थित होइकै तूं कर्मोंकूं कर या प्रकारका वचन कह्या है यातैं आपके पूर्वउत्तर वचनोंका अभिप्राय मैं जानि सकता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं (समत्वं योग उच्यते) हे अर्जुन! कर्मोंके फलकी प्राप्तिविषे तथा कर्मोंके फलकी अप्राप्तिविषे जो हर्षविषादतैं रहितपणारूप समत्व है । सो समत्वही इहां (योगस्थः कुरु कर्माणि) या वचनविषे स्थित योगशब्दकरिकै कथन करा है । ता योगशब्दकरिकै कोई कर्मोंका कथन करा नहीं । यातैं पूर्वउत्तर वचनोंका विरोध होवै नहीं इति । तहां पूर्व (सुखदुःखे समे कृत्वा) या श्लोकविषे जय अजय दोनोंकी समता करिकै केवल युद्धमात्रकी कर्त्तव्यता कथन करी थी । जिस कारणतैं पूर्वप्रसंगविषे युद्धकीही कर्त्तव्यता प्राप्त थी । और इहां तौ दृष्टअदृष्टरूप सर्व फलोंका परित्याग करिकै अपणे वर्णआश्रमके सर्व कर्मोंकी कर्त्तव्यता कथन करी है यातैं पूर्वउत्तर वचनोंविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! क्या केवल कर्मोंका अनुष्ठानही पुरुषार्थरूप है । जिस कारणतैं सर्वकालविषे निष्काम कर्मोंकूंही पुरुषनैं करणा या प्रकारका उपदेश वारंवार आपनैं किया है । किंवा । " प्रयोजनमनुद्दिश्य मंदोऽपि न प्रवर्तते " । अर्थ यह । किंचित् फलरूप प्रयोजनकूं न उद्देशकरिकै मूढ पुरुषभी किसी कार्यविषे प्रवृत्त होवै नहीं इति । इस लोकप्रसिद्ध न्यायतैंभी तिन निष्काम कर्मोंविषे प्रवृत्ति संभवै नहीं ।

(मू. श्लो.) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ॥ मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥ (पदच्छेदः) कर्मणि । एव अधिकारः । ते । मा । फलेषु । कदाचन । मा । कर्मफलहेतुः । भूः । मा । ते । संगः । अस्तु । अकर्मणि ॥ ४७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तुम्हारा कर्मविषेही अधिकार होवो कर्मके फलोंविषे कदाचित्भी तुम्हारा अधिकार मत होवो तूं कर्मोंके फलका उत्पादक मत होउ तथा कर्मके नहीं करणेविषे तुम्हारी प्रीति मत होवै ॥ ४७ ॥

टीका । हे अर्जुन ! आत्मज्ञानकी उत्पत्तिके अयोग्य अशुद्ध अंतःकरणवाला जो तूं हैं तिस तुम्हारेकूं अबी अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे निष्काम कर्मोंविषेही अधिकार होवो । क्या हमारेकूं अबी यह निष्काम कर्मही करणेयोग्य हैं या प्रकारका बोध होवो । ज्ञाननिष्ठारूप वेदांतवाक्योंके विचारविषे सो कर्त्तव्यताका बोध अबी तुमारेकूं मत होवो इस प्रकार कर्मोंके करणेहारे तुम्हारेकूं तिन कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंविषे तिन कर्मोंके अनुष्ठानतैं पूर्वकालविषे तथा तिन कर्मोंके अनुष्ठानके उत्तरकालविषे तथा तिन कर्मोंके अनुष्ठानकालविषे कदाचित्भी अधिकार मत होवै । क्या इन कर्मोंके स्वर्गादिक फल हमनैं भोगणे हैं या प्रकारका बोध कदाचित्भी तुम्हारेकूं मत होवै । शंका—हे भगवन् ! हमनैं इस कर्मके स्वर्गादिक फलकूं भोगणा है या प्रकारकी बुद्धिके अभाव हुएभी ते कर्म अपणे सामर्थ्यतैंही स्वर्गादिक फलोंकी प्राप्ति करैंगे ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् फलकी कामनातैं विना ते कर्म ता फलकी प्राप्ति नहीं करैं हैं या प्रकारका उत्तर कहैं हैं (मा कर्मफलहेतुर्भूः इति) हे अर्जुन ! फलकी कामनाकरिकै तिन कर्मोंकूं करता हुआ यह पुरुष तिन फलोंका उत्पादक होवै है । और तूं अर्जुन तौ ता फलकी कामनातैं रहित होइकै ता कर्मके फलका उत्पादक मत होउ । जिस कारणतैं निष्काम पुरुषोंनैं भगवत् अर्पणबुद्धिकरिकै करे हुए कर्म स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करते नहीं । यह वार्त्ता पूर्व कथन करि आये हैं इति । शंका—हे भगवन् ! जो कदाचित् ते कर्म अपणे सामर्थ्यतैं फलकी प्राप्ति नहीं करते होवैं तौ ऐसे निष्फल कर्मोंके करणेकाही क्या प्रयोजन है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि इति) जो कदाचित् स्वर्गादिक फलके प्राप्तिकी इच्छा नहीं होवै तौ दुःखरूप कर्मोंके करणेकाही क्या प्रयोजन है या प्रकारकी तिन कर्मोंके न करणेविषे तुम्हारी प्रीति मत होवै इति ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्व कथन करे हुए अर्थकाही विस्तारतैं निरूपण करैं हैं ।

सिद्ध भया निष्काम कर्मोंकरिकै जबी तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध होवैगा तबी तुम्हारेकूं आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवैगी। ता आत्मज्ञानकरिके तुम्हारेकूं ब्रह्मानंदकी प्राप्ति होवैगी। ता ब्रह्मानंदविषेही हिरण्यगर्भादिक सर्व आनंदोंका अंतर्भाव है। यातैं ता ब्रह्मानंदकी प्राप्तिकरिकै तुम्हारेकूं तिन सर्व आनंदोंकी प्राप्ति होवैगी। यातैं तिन विषयजन्य क्षुद्र आनंदोंकी प्राप्तिवासतै तुम्हारेकूं तिन काम्य कर्मोंके करणेका कछु प्रयोजन नहीं है। यातैं ता ब्रह्मानंदकी प्राप्ति करणेहारे आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतैं तूं निष्काम कर्मोंकूं कर इति। और किसी टीकाकारनैं तौ इस श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करिकै यह अर्थ करा है। (यावान्। अर्थः। उदपाने। सर्वतः। संप्लुतोदके। तावान्। सर्वेषु। वेदेषु। ब्राह्मणस्य। विजानतः इति) जैसे सर्व ओरतैं महान् जेलवाले महान् तैलावविषे इस पुरुषके स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन एक घटमात्र जलकरिकैही सिद्ध होवैं हैं। कोई ता महान् तलावके सर्व जलके खरच करणेतैं ते स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन सिद्ध होवैं नहीं। इस प्रकार शुद्ध चित्तवाले मुमुक्षु जनका सो सर्व प्रयोजन सर्व वेदोंविषे उपनिषद्रूप वेदके एकदेशके श्रवणमात्रकरिकैही सिद्ध होवै है। तिन मुमुक्षु जनोंकूं ता अपणे प्रयोजनकी सिद्धिवासतै कोई सर्व वेदोंके अर्थके अनुष्ठानकी अपेक्षा रहै नहीं। जिस कारणतैं एक जन्मकरिकै सर्व वेदोंके अर्थका अनुष्ठान करणा संभवता नहीं इति। या दोनों व्याख्यानोंविषे प्रथम व्याख्यान बहुत टीकाकारोंकूं संमत है। और यह दूसरा व्याख्यान किसी एक टीकाकारनैं करा है। परंतु ता प्रथम व्याख्यानविषे श्लोकके पूर्वार्धविषे 'अनेकस्मिन् यथा तथा भवति' या चारि पदोंका अध्याहार करणा होवै है। और श्लोकके उत्तरार्द्धविषे स्थित दार्ष्टांतिक भागविषे पूर्वार्धतैं यावान् तावान् या दोनों पदोंका अनुषंग करणा होवै है। सो पदोंका अध्याहार तथा अनुषंग इस दूसरे व्याख्यानविषे करणा होवै नहीं। तहां पूर्व अश्रुत पदका जो वाक्यविषे संबंध करणा है याका नाम अध्याहार है। और पूर्व वाक्यविषे स्थित पदका उत्तरवाक्यविषे संबंध करणा याका नाम अनुषंग है इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! ते निष्काम कर्म स्वतंत्र होइके तौ ता ब्रह्मानंदकी प्राप्ति करते नहीं किंतु अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा आत्मज्ञानका संपादन करिकैही ते निष्काम कर्म ता ब्रह्मानंदकी प्राप्ति करैं हैं। यातैं जिस आत्मज्ञानकरिकै साक्षातही ब्रह्मानंदकी प्राप्ति होवै है। सो आत्मज्ञानही हमारेकूं प्रथम संपादन करणे योग्य है। ता आत्मज्ञानकूं छोडिकै बहुत प्रयत्न करिकै सिद्ध होणहारे तथा बहिरंग साधनरूप ऐसे निष्काम कर्मोंके करणेका कछु प्रयोजन नहीं है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् अबी तुम्हारेकूं तिन निष्काम कर्मोंविषेही अधिकार है या प्रकारका उत्तर कहैं हैं।

स्वर्गादिक आनंदोंकी प्राप्ति होती नहीं। यह वार्ता पूर्व आप कथन करि आये हो। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ब्रह्मानंदके प्राप्त हुएतैं सर्व आनंद प्राप्त होवैं हैं या प्रकारका उत्तर कहैं हैं।

(मू. श्लो.) यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ॥ तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥ (पदच्छेदः) यावान्। अर्थः। उदपाने। सर्वतः। संप्लुतोदके। तावान्। सर्वेषु। वेदेषु। ब्राह्मणस्य। विजानतः ॥ ४६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे अल्प जलवाले स्थानोंविषे जितनोंकी स्नानपानादिरूप प्रयोजन सिद्ध होवै है सर्व ओरतैं महान् जलवाले तलावविषे ते स्नानपानादिक सर्वही प्रयोजन सिद्ध होवैं हैं तैसे सर्व वेदउक्त काम्यकर्मोंविषे जितनेक हिरण्यगर्भके लोकपर्यंत आनंद प्राप्त होवैं हैं तितने सर्व आनंद ब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं होवै है ॥ ४६ ॥

टीका। हे अर्जुन! जैसे पर्वततैं निकसे हुए जो अनेक जलके झरणे हैं ते सर्व जलके झरणे किसी नीची भूमिविषे जाइकै एकठे होवै हैं ताकी तलाव संज्ञा होवै है। तहां एक एक झरणेके जलतैं यथाक्रमतैं सिद्ध होणेहारे जो स्नान, पान, वस्त्रप्रक्षालन आदिक प्रयोजन हैं ते स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन तिन झरणोंके जलोंके समूहरूप महान् तलावविषे सिद्ध होवैं हैं काहेतैं तिन सर्व झरणोंके जलोंका तिस तलावविषेंही अंतर्भाव है। तैसे वेदोंविषे कथन करे हुए जितनेक अग्निहोत्र, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध आदिक काम्य कर्म हैं तिन अग्निहोत्रादिक काम्य कर्मोंकरिकै इस सकाम पुरुषकूं क्रमतैं प्राप्त होणेहारे जो स्वर्गलोकतैं आदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत विषयजन्य आनंद हैं ते सर्व आनंद इस ब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं एकही कालविषे प्राप्त होवैं हैं काहेतैं भूमिलोकतैं आदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेक विषयजन्य क्षुद्र आनंद हैं ते सर्व आनंद ब्रह्मानंदके अंशरूप हैं यातैं ते सर्व क्षुद्र आनंद ता ब्रह्मानंदके अंतर्भूतही हैं। तहां श्रुति। "एतस्यैवानंदस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवंति"। अर्थ यह। ब्रह्मातैं आदिलैके सर्व प्राणिमात्र इस ब्रह्मानंदके अंशमात्रकूं अंगीकारकरिकै आनंदपूर्वक जीवते हैं इति। यद्यपि एक अद्वितीय ब्रह्मानंदविषे अंशअंशीभाव संभवता नहीं तथापि जैसे एकही आकाशविषे घटादिक उपाधियोंके वशतैं अंशअंशीभावव्यवहार होवै है तैसे एकही ब्रह्मानंदविषे अविद्याकृत अंतःकरणादिक उपाधियोंके वशतैं अंशअंशीभावव्यवहार होवै है। वास्तवतैं सो अंशअंशीभाव है नहीं। यातैं यह अर्थ

द्वः इति) इहां (निस्त्रैगुण्यो भव) या वचनविषे स्थित जो भव यह शब्द है ता भवशब्दका उत्तरपदोंविषे सर्वत्र संबंध करणा । हे अर्जुन (मात्रास्पर्शास्तु) या श्लोकविषे पूर्व कथन करी जो युक्ति है ता युक्तिकरिकै शीत उष्ण, सुख दुःख, मान अपमान, शत्रु मित्र इत्यादिक सर्व द्वंद्वधर्मोंतैं तूं रहित होउ । क्या तिन सर्व द्वंद्वधर्मोंके सहनस्वभाववाला तूं होउ इति । शंका—हे भगवन् ! नहीं सहारणे योग्य जो दुःख है सो दुःख किस प्रकार सहारा जावैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (नित्यसत्वस्थः इति) नित्य क्या अचल ऐसा जो धैर्यनामा सत्व है ता सत्वविषे जो स्थित होवै ताका नाम नित्यसत्वस्थ है । ऐसा नित्यसत्वस्थ तूं होउ । तात्पर्य यह । जिस पुरुषका सो सत्व, रज,तम दोनोंकारिकै तिरस्कारकूं प्राप्त होवै है सो पुरुष शीतउष्णादिजन्य पीडाकरिकै मैं अभी मरौंगा या प्रकारका अपणेकूं मानता हुआ स्वधर्मतैं विमुख होवै है ! तू अर्जुन तौ ता रज, तम दोनोंका तिरस्कार कारिकै केवल ता सत्वधर्मकूं आश्रयण कर इति । शंका--हे भगवन् ! शीतउष्णादिकोंके सहन किये हुएभी क्षुधा तृषाकी निवृत्ति करणेवासतै पूर्व नहीं प्राप्त हुए अन्नादिक पदार्थोंके प्राप्तिवासतै तथा पूर्व प्राप्त हुए अन्नादिक पदार्थोंके रक्षण करणेवासतै अवश्य प्रयत्न करणा होवैगा ता प्रयत्नके विद्यमान हुए सो नित्य सत्वस्थपणा कैसे होवैगा किंतु नहीं होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (निर्योगक्षेमः इति) हे अर्जुन ! पूर्व अप्राप्त वस्तुकी जो प्राप्ति है ताका नाम योग है और पूर्व प्राप्त वस्तुकी जो रक्षण है ताका नाम क्षेम है ता योग क्षेम दोनोंतैं तूं रहित होउ । क्या चित्तके विक्षेपका हेतु जो पदार्थोंका परिग्रह है ता परिग्रहतैं तूं रहित होउ । शंका—हे भगवन् ता योग क्षेमतैं जो मैं रहित होवोंगा तौ मैं किस प्रकार जीवोंगा । किंतु हमारा जीवन नहीं होवेगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तूं अपणे जीवनकी चिंता मत कर सर्वका अंतर्यामी परमेश्वरही तुम्हारे योगक्षेमादिकोंका निर्वाह करैगा या प्रकारका उत्तर कहैं हैं । (आत्मवान् इति) आत्मा क्या परमात्मा ध्येयतारूपकारिकै तथा योगक्षेमादिकोंका निर्वाहकरतारूपकारिकै विद्यमान है जिस पुरुषका ताका नाम आत्मवान् है ऐसा आत्मवान् तूं होउ । क्या सर्व कामनावोंका परित्याग करिके परमेश्वरका आराधन करणेहारा जो मैं हूं तिस हमारे देहकी यात्रामात्रवासतै अपेक्षित जो अन्नवस्त्रादिक पदार्थ हैं तिन सर्व पदार्थोंकं सो अंतर्यामी ईश्वरही संपादन करैगा या प्रकारका निश्चय कारिकै तूं निश्चित होउ इति । अथवा आत्मवान् होउ क्या अप्रमत्त होउ इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! स्वर्गादिक फलविषयक सर्व कामनावोंका परित्याग करिकै कर्मोंकूं करता हुआ मैं अर्जुन तिस तिस कर्मकारिकै प्राप्त होणेयोग्य जो स्वर्गादिक आनंद हैं तिन सर्व आनंदोंतैं रहित होवौंगा । जिस कारणतैं कामनातैं विना तिन

संपादन करैं हैं । यातैं निष्काम विपश्चित् पुरुषोंके फलविषे तथा सकाम अविपश्चित् पुरुषोंके फलविषे महान् विलक्षणता सिद्ध होवै है । इसी वार्त्ताकूं आगे विस्तारकरिकै निरूपण करैंगे इति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ शंका--हे भगवन् तिन सकाम पुरुषोंकूं अपणे अंतःकरणके दोषतैं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि मत प्राप्त होवै । परंतु ता व्यवसायात्मिका बुद्धिकारिकै अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं करणेहारे जो निष्काम पुरुष हैं तिन निष्काम पुरुषोंकूं तिन अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वभावतैं स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति अवश्य होवैगी । यातैं आत्मज्ञानका प्रतिबंध सकाम निष्काम दोनोंविषे समा नहीं है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ॥ निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥ (पदच्छेदः) त्रैगुण्यविषयाः । वेदाः । निस्त्रैगुण्यः । भव । अर्जुन । निर्द्वंद्वः । नित्यसत्वस्थः । निर्योगक्षेमः । आत्मवान् ॥ ४५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! यह कर्मकांडरूप वेदं त्रैगुण्यकूं विषय करणेहारे हैं तूं तिस त्रैगुण्यतैं रहित होउ तथा द्वंद्वधर्मोंतैं रहित होउ तथा नित्यं सत्वविषे स्थित होउ तथा योगक्षेमतैं रहित होउ तथा आत्मवान् होउ ॥ ४५ ॥

टीका । सत्त्व, रज, तम या तीन गुणोंका जो कार्य होवै ताका नाम त्रैगुण्य है ऐसा यह काममूलक संसार है सो काममूलक संसार है प्रकाश्य तारूपकरिकै विषय जिनोंका तिनोंका नाम त्रैगुण्यविषया है ऐसे यह कर्मकांडरूप वेद हैं । क्या जो पुरुष जिस फलके प्राप्तिकी कामनावाला है तिस पुरुषके प्रति यह वेद तिसी फलके बोधन करणेहारे हैं । तात्पर्य यह । जो पुरुष जिस फलकी इच्छा करिकै जिस कर्मका अनुष्ठान करै है । तिस पुरुषकूं सो कर्म तिसी फलकी प्राप्ति करै है । तिस तिस फलकी कामनातैं विना कोईभी कर्म तिस तिस फलकी प्राप्ति करै नहीं । यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै या पुरुषकी कामनाही फलकी प्राप्तिविषे कारण है । यातैं हे अर्जुन ! तूं निस्त्रैगुण्य होउ क्या स्वर्गादिक फलकी कामनातैं रहित होउ । ता फलकी कामनातैं रहित तुम्हारेकूं संसारकी प्राप्ति होवैगी नहीं । इतने कहणेकरिकै निष्काम पुरुषोंकंभी अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वभावतैं ही स्वर्गादिक संसारकी प्राप्ति होवैगी ऐसी अर्जुनकी शंकाका खंडन करा इति । शंका--हे भगवन् ! शीत उष्णादिकोंकी निवृत्ति करणेवासते वस्त्रादिक पदार्थोंकी अपेक्षा अवश्य संभवै है ता अपेक्षाके विद्यमान हुए निष्कामता कैसे होवैगी ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । श्रीभगवान् कहै हैं (निर्द्वं

विषे किसवासतै द्वेष करैं हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (कामात्मानः इति) हे अर्जुन ! कामनावोंके विषयरूप जो अनेक प्रकारके विषय हैं तिन विषयोंकरिकै जिनोंका चित्त सर्वदा व्याकुल होइ रह्या है या कारणतैं ते काममय पुरुष साक्षात् मोक्षविषेभी द्वेष करैं हैं । शंका—हे भगवन् ! ते सकाम पुरुष जैसे दूसरे विषयोंकी कामना करैं हैं तैसे निरतिशय आनंदरूप मोक्षकी कामना किसवासतै नहीं करते । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (स्वर्गपराः इति) हे अर्जुन ! उर्वशी, नंदनवन, अमृत इत्यादिक विषयोंकरिकै युक्त जो स्वर्ग है सो स्वर्गही है सर्वतैं उत्कृष्ट जिनोंकूं ता स्वर्गतैं भिन्न दूसरा कोई पुरुषार्थ है नहीं । इस प्रकार मानणेहारे भ्रांत पुरुषोंविषे विवेकवैराग्यादिक साधनोंका अभाव है । यातैं ते भ्रांत पुरुष मोक्षकी कथामात्रकूंभी सहारि नहीं सकते तौ तिन मूढ पुरुषोंविषे मोक्षकी इच्छा कहांतैं होणी है इति । इस प्रकार पूर्व उक्त भोग ऐश्वर्य दोनोंविषे क्षयपणा सातिशयता इत्यादिक दोषोंके अदर्शनकरिकै अत्यंत आसक्त हुआ है अंतःकरण जिनोंका तथा ता कर्मकांडरूप वाणीकरिकै आच्छादित होइ गया है विवेकज्ञान जिनोंका तथा 'अक्षयं ह वै' इत्यादिक अर्थवादवचन केवल स्तुतिपर हैं । प्रमाणांतरकरिकै अबाधित जो तात्पर्यका विषयभूत अर्थ है ता अर्थ विषेही वेदोंकू प्रमाणरूपता है या प्रकारके प्रसिद्ध अर्थकूंभी जे पुरुष जानणेविषे समर्थ नहीं हैं ऐसे सकाम पुरुषोंके समाधि नामा अंतःकरणविषे सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं होवै है । अथवा समाधि या शब्दकरिकै परमात्माका ग्रहण करणा ता परमात्माविषयक सा व्यवसायात्मिका बुद्धि तिन पुरुषोंकी होवै नहीं इति । "समाधीयतेऽस्मिन् सर्वं स समाधिः" या प्रकारकी व्युत्पत्ति करिकै अंतःकरणविषे तथा परमात्माविषे ता समाधिशब्दकी अर्थरूपता संभव होइ सकै है । और किसी टीकाकारनैं तौ समाधिशब्दका यह अर्थ करा है मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारके स्थितिका नाम समाधि है । ता समाधिके निमित्त तिन पुरुषोंकी सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं उत्पन्न होवै है इति । इहां यह अभिप्राय है यद्यपि स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करणेहारे जो काम्य अग्निहोत्रादिक हैं ते अग्निहोत्रादिक कर्म अंतःकरणकी शुद्धि वासतै करणेयोग्य अग्निहोत्रादिकोंतैं विलक्षण नहीं हैं । तथापि स्वर्गादिक फलकी इच्छारूप दोषके वशतैं ते काम्य अग्निहोत्रादिक कर्म अंतःकरणके शुद्धिकूं संपादन करै नहीं । यद्यपि भोगोंके अनुकूल जो अंतःकरणकी शुद्धि है सा अंतःकरणकी शुद्धि तिन सकाम कर्मोंतैंभी होइ सकै है । तथापि सा अंतःकरणकी शुद्धि आत्मज्ञानके उपयोगी है नहीं । इसी अर्थके बोधन करणेवासतै श्रीभगवान्नैं (भोगैश्वर्यप्रसक्तानां) यह वचन पुनः कथन करा है । और फलकी इच्छातैं विना करे हुए जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं ते निष्काम कर्म तौ आत्मज्ञानके उपयोगी अंतःकरणके शुद्धिकूंही

कारण है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (जन्मकर्मफलप्रदाम् इति) अपूर्व शरीरइंद्रियादिकोंका संबंधरूप जो जन्म है। तथा ता जन्मके अधीन तिस तिस वर्णआश्रमके अभिमानजन्य जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं । तथा तिन कर्मोंके अधीन जो पुत्रपशुस्वर्गादिरूप नाशवान फल हैं ता जन्मकर्मफल तीनोंकूंही घटीयंत्रकी न्याई विच्छेदतैं रहित यह कर्मकांडरूप वाणी प्राप्त करै है इति । शंका—हे भगवान्! सा वाणी तिन जन्मादिकोंकीही प्राप्ति करै है यह वार्त्ता कैसे जानी जावै । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं । (भोगैश्वर्यगतिं प्रति क्रियाविशेषबहुलां इति) अमृतका पान तथा उर्वशी आदिक अप्सरावोंके साथि विहार तथा पारिजातवृक्षका सुगंध इत्यादिक पदार्थोंकी प्राप्तिजन्य जो भोग है। तथा ता भोगका कारणरूप जो देवतादिकोंका स्वामीपणारूप ऐश्वर्य है। ता भोग ऐश्वर्य दोनोंकी प्राप्ति केप्रति साधनभूत जो अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, ज्योतिष्टोम इत्यादिक क्रियाविशेष हैं । तिन क्रियाविशेषोंकरिकै जा वाणी बहुत विस्तारकूं प्राप्त होइ रही है । क्या भोग ऐश्वर्य या दोनोंके साधनभूत क्रियाविशेषोंकूं जा वाणी अत्यंत विस्तारतैं प्रतिपादन करणेहारी है । सो कर्मकांडविषे ज्ञानकांडकी अपेक्षाकरिकै अत्यंत विस्तारपणा सर्वत्र प्रसिद्धही है। ऐसी कर्मकांडरूप वाणीकूं परमार्थरूप स्वर्गादिक फलपरता अंगीकार करैं हैं । शंका—हे भवगन्! ता कर्मकांडरूप वाणीकूं स्वर्गादिरूप फलपरता कौन अंगीकार करैं हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (अविपश्चितः इति) जे पुरुष विचारजन्य तात्पर्यज्ञानतैं रहित हैं ते पुरुषही ता वाणीकूं स्वर्गादिरूप फलपरता मानैं हैं । या कारणतैंही ते सकाम पुरुष वेदविषे स्थित जो "अक्षयं ह वै चातुर्मास्ययाजिनः सुकृतं भवति"। अर्थ यह । चातुर्मास्ययज्ञके करणेहारे पुरुषकूं अक्षय सुकृत होवै है इत्यादिक अर्थवाद हैं ते अर्थवाद यथार्थही हैं या प्रकारका मिथ्या विश्वास करिकै संतोषकूं प्राप्त हुए हैं। या कारणतैंही ते सकाम पुरुष या प्रकारके वचन कहैं हैं कर्मकांडकी अपेक्षाकरिकै कोई ज्ञानकांड भिन्न नहीं है किंतु सो ज्ञानकांड कर्मकांडकाही शेषरूप है। तहां ज्ञानकांडविषे स्थित जो तत्पदार्थके बोधक वचन हैं ते वचन तौ देवताके स्वरूपकूं बोधन करैं हैं और त्वंपदार्थके बोधक जो वचन हैं ते वचन तौ कर्मकर्त्ता यजमानके स्वरूपकूं बोधन करैं हैं । और तत्त्वंपदार्थके अभेदकूं बोधन करणेहारे जो वचन हैं ते वचन तौ कर्मकर्त्ता पुरुष साक्षात् ईश्वररूप है या प्रकार ता कर्मकर्त्ता पुरुषकी स्तुति करैं हैं । इस प्रकार संपूर्ण वेद कर्मपरही हैं। और कर्मका फलरूप जो स्वर्गादिक हैं तिन स्वर्गादिकोंकी अपेक्षाकरिकै दूसरा कोई ज्ञानका निरतिशय आनंदरूप फल है नहीं । इस प्रकार ते सकाम पुरुष अनेक प्रकारकी कल्पना करिकै सर्व प्रकारतैं ज्ञानकांडतैं विरुद्ध अर्थकेही कहणेहारे हैं। शंका—हे भगवन् ! ते बहिमुर्ख सकाम पुरुष निरतिशय आनंदरूप मोक्ष

अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् प्रतिबंधके वशतैं तिन सकाम पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं प्राप्त होवै है या प्रकारका उत्तर तीन श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदंत्यविपश्चितः ॥ वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ ४२ ॥ कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति॥४३॥भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्॥व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥४४ ॥ (पदच्छेदः) याम् । इमाम् । पुष्पिताम् । वाचम् । प्रवदंति । अविपश्चितः । वेदवादरताः । पार्थ । न । अन्यत् । अस्ति । इति । वादिनः॥४२॥कामात्मानः । स्वर्गपराः । जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषबहुलाम् । भोगैश्वर्यगतिंप्रति । । ४३ । भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम् । तया । अपहृतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका । बुद्धिः । समाधौ । न । विधीयते ॥ ४४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! ते विचारहीन पुरुष जिसै प्रसिद्ध कर्मकांडरूप वाणीकूं कथन करैं हैं कैसी है सा वाणी अविचारतें रमणीक है तथा जन्मकर्मफलके देणेहारी है तथा भोगऐश्वर्यके प्रातिवासतै अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं विस्तारतें प्रतिपादन करणेहारी है ऐसी वाणीकूं कहणेहारे ते विचारहीन पुरुष कैसे हैं वेदके अर्थवादोंविषे प्रीतिमान् हैं तथा कर्मके फलतें भिन्न कोई ज्ञानका फल नहीं है याप्रकार कथन करणेहारे हैं तथा कामरूप हैं तथा स्वर्गही है उत्कृष्ट जिन्होंकूं तथा भोगऐश्वर्यविषे है आसक्ति जिन्होंकी तथा तां वाणीकरिकै आच्छादित हुआ है चित्त जिन्होंका ऐसे बहिर्मुख पुरुषोंके अंतःकरणविषे सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं होवै है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

टीका । हे अर्जुन ! " स्वाध्यायोऽध्येतव्यः "। अर्थ यह । या अधिकारी पुरुषनैं वेद अध्ययन करणा इति । या अध्ययनविधितैं प्राप्त होणेकरिकै अत्यंत प्रसिद्ध जो यह कर्मकांडरूप वाणी है कैसी है सा वाणी जैसे निर्गंध पुष्पोंकरिकै युक्त पलाशका वृक्ष दूरसैं रमणीक लागै है तैसे यह वाणी अविचारतैंही रमणीक लागै है काहेतैं ता वाणीकरिकै केवल स्वर्गादिक फलोंका तथा यज्ञादिक साधनोंका तथा तिन दोनोंके परस्पर संबंधकाही ज्ञान होवै है । कोई निरतिशय आनंदरूप फलकी प्राप्ति होवै नहीं । शंका—हे भगवन् ! ता कर्मकांडरूप वाणीतैं निरतिशयानंदरूप फलकी प्राप्ति नहीं होती याकेविषे क्या

आश्रमोंकूं आत्मतत्त्वकी निश्चयरूप बुद्धि एकही सिद्ध करणेकूं विवक्षित है । काहेतैं वेदानुवचनेन, यज्ञेन, दानेन, तपसा, अनाशकेन या पदोंके अंतविषे स्थित जो तृतीयाविभक्ति है ता तृतीयाविभक्तिनैं तिन वेदानुवचनादिकोंविषे परस्पर निरपेक्षसाधनरूपता बोधन करी है । तहां गुरुके मुखतैं वेदोंके अध्ययन करणेका नाम वेदानुवचन है । सो वेदोंका अध्ययन ब्रह्मचारीके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म है । यातैं ता वेदानुवचनकरिकै ब्रह्मचारीके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा तथा यज्ञ, दान, यह दोनों गृहस्थके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म हैं । यातैं ता यज्ञदानकरिकै गृहस्थके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा और कृच्छ्रचांद्रायणका नाम तप है सो तप वानप्रस्थके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म है । यातैं ता तपकरिकै वानप्रस्थके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा । तहां मृत्युका कारण जो अनशनव्रत है ताकी निवृत्ति करणेवासतै तिस तपका अनाशक यह विशेषण दिया है । इस प्रकार सर्व भूतप्राणियोंकूं अभय दान तथा प्रणवादिक मंत्रोंका जप इत्यादिक संन्यासीके धर्मभी जानि लेणे इति । और भगवान् भाष्यकारों नैं तौ या श्लोकका यह व्याख्यान करा है । सांख्यविषयक तथा योगविषयक जो बुद्धि है सा बुद्धि एकही फलका जनक होणेतैं एक है । और सा बुद्धि निर्दोषवेदवाक्योंतैं जन्य होणेतैं व्यवसायात्मिका है । क्या सर्व विपरीतबुद्धियोंका बाधक है और अव्यवसायी अज्ञानी पुरुषोंकी जो बहुत शाखावाली अनंत बुद्धियां हैं ते सर्व बुद्धियां विपरीत होणेतैं ता व्यवसायात्मिक बुद्धिकरिकै बाध्य हैं इति । और किसी टीकाविषे तौ यह अर्थ करा है । परमेश्वरके आराधनकरिकैंही मैं इस संसारसमुद्रकूं तरौंगा या प्रकारकी निश्चयरूपा एकनिष्ठा बुद्धिही इस कर्मयोगविषे होवै है इति । सर्व प्रकारतैं ज्ञानकांडके अनुसारकरिकै (स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्) या वचनका अर्थ भली प्रकारतैं सिद्ध होवै है । और कर्मकांडविषे तौ तिस तिस स्वर्गादिक फलकी कामनावाले अव्यवसायी पुरुषोंकी बुद्धियां तौ बहुत शाखावाली होवै है । क्या कामनावोंके अनेक भेदतैं ते बुद्धियांभी अनेक भेदवाली होवै हैं । तथा कर्मफल गुणफल आदिकोंकूं विषय करणेहारी उपशाखावोंके भेदतैं ते बुद्धियां अनंत होवै हैं इति । तहां (अनंता हि) या वचनविषे स्थित जो हि यह शब्द है सो हि शब्द तिन सकाम पुरुषोंके बुद्धियोंविषे अनंतरूपताकी प्रसिद्धि बोधन करणेवासते है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । अंतःकरणकी शुद्धि करणेवासतै जो निष्काम कर्म हैं तिन निष्माम कर्मोंविषे सकाम कर्मोंकी अपेक्षाकरिकै महान् विलक्षणता है इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन ! जैसे निष्काम अधिकारी पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि प्राप्त होवै है तैसे सकाम पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि क्यूं नहीं प्राप्त होती ? किंतु तिन सकाम पुरुषोंकूंभी सा व्यवसायात्मिका बुद्धि प्राप्त होणी चाहिये । जिस कारणतैं शास्त्ररूप प्रमाण तौ तिन दोनोंकूं तुल्यही प्राप्त है । ऐसी

प्राप्ति नहीं करैंगे । और फलकी इच्छातैं रहित होइके केवल अंतःकरणकी शुद्धिवासतै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं तिन यज्ञदानादिक निष्काम कर्मोंकी तो यजमानरूप कर्त्तातैं भिन्न प्रतिनिधि आदिकोंकारिकैभी समाप्ति होइ सकै है । यातैं तिन निष्काम कर्मोंविषे अंगोंका वैगुण्यजन्य प्रत्यवाय होवै नहीं इहां यजमान पुरुष किसी रोगादिक निमित्ततैं जिस कर्मके करणेविषे समर्थ नहीं होवै । तिस कर्मकूं जिस ब्राह्मणद्वारा समाप्त करावै है ता ब्राह्मणका नाम प्रतिनिधि है इति । किंवा । 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिनैं विधान करे जो अंतःकरणकी शुद्धिवासतै यज्ञदानादिक धर्म हैं ता धर्मके मध्यविषे संख्याकारिकै अथवा अंगोंकारिकै अत्यंत स्वल्प जो धर्म भगवत्के आराधनवासतै अनुष्ठान करा है सो स्वल्प धर्मभी या अधिकारी पुरुषकूं जन्ममरणरूप संसारके महान् भयतैं रक्षा करे है । यह वार्त्ता स्मृतिविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । "सर्वपापप्रसक्तोपि ध्याय न्निमिषमच्युतम् । भूयस्तपस्वी भवति पंक्तिपावनपावनः" । अर्थ यह । सर्व पापकर्मोंविषे प्रीतिवाला हुआभी यह पुरुष अनन्य होइकै एक निमेषमात्रभी अच्युतपरमात्मादेवका ध्यान करता हुआ ता ध्यानके प्रभावतैं पुनः तपस्वी होवै है । तथा पंक्तिके पवित्र करणेहारे पुरुषोंकाभी पवित्र करणेहारा होवै है इति । और 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिवचनविषे सर्व कर्मोंके समुच्चयका विधान करणेहारा कोई वचन है नहीं । यातैं अंतःकरणके अशुद्धिकी न्यून अधिकताकारिकै तिन यज्ञदानादिक कर्मोंके अनुष्ठानकी न्यूनअधिकताभी संभव होइ सकै है । यातैं (कर्मबंधं प्रहास्यसि) यह हमारा वचन यथार्थ है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्वश्लोकविषे कथन करे हुए अर्थके स्पष्ट करणेवासतै 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिनैं विधान करे जो यज्ञदानादिक कर्म हैं तिन कर्मोंविषे एक अर्थता निरूपण करे हैं ।

(मू. श्लो.) व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनंदन ॥ बहुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयो व्यवसायिनाम् ॥ ४१ ॥ (पदच्छेदः) व्यवसायात्मिका । बुद्धिः । एका । इह । कुरुनंदन । बहुशाखाः । हि । अनंताः । च । बुद्धयः । अव्यवसायिनाम् ॥ ४१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! इस श्रेयके मार्गविषे आत्मतत्त्वका निश्चयरूप बुद्धि एकही विवक्षित है और सकाम पुरुषोंकी बुद्धियां तो बहुत शाखावाली हैं तथा अनंत हैं ॥ ४१ ॥

टीका । हे अर्जुन ! इस मोक्षरूप श्रेयके मार्गविषे अथवा 'तमेतं वेदानुवचनेन' इस श्रुतिवचनविषे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास या चारि

फलका स्वर्गादिकोंकी न्याई क्षय संभवै नहीं । किंवा तत्त्वसाक्षात्कारपर्यंत रहणेहारी जो विविदिषा है सा विविदिषाही तिन यज्ञदानादिक कर्मोंका फलरूप है । और सो तत्त्वसाक्षात्कार व्यवधानतैं विनाही अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलका जनक है । जैसे सूर्यादिकोंका प्रकाश व्यवधानतैं विनाही अंधकारकी निवृत्ति करे है । यातैं सो तत्त्वसाक्षात्कार अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलकूं न उत्पन्न करिकै नाश होवे नहीं । किंतु अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलकूं उत्पन्न करिकैही सो तत्त्वसाक्षात्कार नाश होवै है । जैसे सूर्यादिकोंका प्रकाश अंधकारकूं नाश करिकैही निवृत्त होवै है । या प्रकारके अभिप्रायकरिकैही श्रीभगवान्नैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) या प्रकारका वचन कह्या है । यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । " तद्यथेहेति या निंदा सा फले नतु कर्मणि । फलेच्छां तु परित्यज्य कृतं कर्म विशुद्धिकृत् " । अर्थ यह । " तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते " या श्रुतिवचननैं कथन करी जो निंदा है सा निंदा स्वर्गादिक फलविषयकही है । कोई यज्ञदानादिक कर्मविषयक सा निंदा नहीं है । जिस कारणतैं फलकी इच्छाका परित्याग करिकै करे हुए ते यज्ञदानादिक कर्म या अधिकारी पुरुषके अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे हैं इति । तथा तिन यज्ञदानादिक कर्मोंके अंगोंकी न्यूनअधिकतारूप वैगुण्यकरिकै करा हुआ जो तिन कर्मोंका वैगुण्यरूप प्रत्यवाय है सो प्रत्यवायभी इस निष्कामकर्मरूप योगविषे है नहीं । काहेतैं ' तमेतं वेदानुवचनेन ' या श्रुतिनैं यज्ञदानादिक नित्यकर्मोंकाही प्रतिबंधक पापोंकी निवृत्तिद्वारा विविदिषाविषे उपयोग कथन करा है । तिन नित्यकर्मोंविषे सर्व अंगोंकी संपूर्णताका नियम होवै नहीं । और ' तमेतं वेदानुवचनेन ' या श्रुतिनैं यज्ञदानादिक काम्यकर्मोंकाभी ता विविदिषाविषे उपयोग कथन करा है । या पक्षके अंगीकार किये हुएभी फलकी इच्छातैं रहित होणेतैं तिन यज्ञदानादिक काम्यकर्मोंकूंभी नित्य कर्मकीही तुल्यता है काहेतैं काम्यकर्मरूप जो अग्निहोत्र है तथा नित्यकर्मरूप जो अग्निहोत्र है । तिन दोनों अग्निहोत्रोंविषे स्वरूपतैं तौ कोई विशेषता है नहीं । किंतु जो अग्निहोत्र स्वर्गादिक फलकी इच्छापूर्वक करा जावै है । ता अग्निहोत्रविषे काम्यकर्मरूपताका व्यवहार होवै है । और जो अग्निहोत्र स्वर्गादिक फलकी इच्छातैं विना करा जावै है ता अग्निहोत्रविषे नित्यकर्मरूपताका व्यवहार होवै है । इस प्रकार स्वर्गादिक फलकी इच्छा करिकै तथा ता इच्छाके अभावकरिकैही ता अग्निहोत्रविषे काम्यकर्मरूपता तथा नित्यकर्मरूपता सिद्ध होवै है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । स्वर्गादिक फलकी प्राप्तिवासतै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं तिन सकाम कर्मोंविषे तौ यथाविधिपूर्वक सर्व अंगोंकी पूर्णता करणेकाही नियम है । जो कदाचित् यह सकाम पुरुष यथाविधिपूर्वक तिन कर्मोंके सर्व अंगोंकी पूर्णता नहीं करैगा तौ ते यज्ञदानादिक कर्म वैगुण्यभावकूं प्राप्त हुए ता फलकी

नाशवान् कह्या है। तहां श्रुति। " तद्यथेह कर्मजितो लोकःक्षीयते एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते "। अर्थ यह। जैसे इस लोकविषे कर्मकरिकै जन्य होणेतैं यह गृहादिक पदार्थ नाशकूं प्राप्त होवै हैं। तैसे परलोकविषे पुण्यकर्म करिकै जन्य होणेतैं स्वर्गादिक पदार्थभी नाशकूं प्राप्त होवै हैं इति। किंवा जैसे स्वर्गकी प्राप्तिवासते करे हुए ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ हैं ते यज्ञ काम्यकर्मरूपही होवै हैं। तैसे ज्ञानकी प्राप्तिवासते अथवा ज्ञानकी इच्छारूप विविदिषाकी प्राप्तिवासितै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं ते कर्मभी काम्यकर्मरूपही होवैंगे। और जो जो काम्यकर्म होवै हैं सो सो सर्व अंगोंकी संपूर्णतापूर्वक अनुष्ठान करा हुआही फलका हेतु होवै है। किंचित् अंगकी वैगुण्यताकारिकै सो काम्यकर्म फलकी प्राप्ति करै नहीं। यातैं यत्किंचित् अंगोंकी न्यूनअधिकताकरिकै तिन यज्ञदानादिक कर्मोंविषे वैगुण्यदोषकी प्राप्तिभी संभवै है। और " यज्ञेन दानेन " या श्रुतिनैं विधान करे जो यज्ञदानादिक कर्म हैं ते सर्व कर्म एक पुरुषनैं अपणे शत वर्ष आयुषकी समाप्तिपर्यंतभी करणेकूं अशक्य हैं। यातैं (कर्मबंधं प्रहास्यसि) या वचनकरिकै आपनैं कथन करा जो कर्मयोगका फल है ता फलके प्राप्तिकी आशा हमारेकूं होती नहीं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहै हैं।

(मू. श्लो.) नेहाभिक्रमनाशोस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ॥ स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ४० ॥ (पदच्छेदः) न। इह। अभिक्रमनाशः। अस्ति। प्रत्यवायः। न। विद्यते। स्वल्पम्। अपि। अस्य। धर्मस्य। त्रायते। महतः। भयात् ॥ ४० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! इस निष्कामकर्मयोगविषे कर्मके फलका नाश नहीं होवै है तथा प्रत्यवायभी नहीं होवै है तथा इस निष्कामधर्मका यत्किंचित् धर्म भी इस पुरुषकूं महान् भयतें रक्षा करै है ॥ ४० ॥

टीका। यज्ञदानादिक कर्मों नैं जिस फलका प्रारंभ करीता है ता फलका नाम अभिक्रम है। तहां 'तद्यथेह' या श्रुतिवचनकारिकै कथन करा जो ता फलका नाश है सो फलका नाश इस निष्काम कर्मरूप योगविषे कदाचित्भी होवै नहीं। काहेतैं 'तद्यथेह कर्मजितो' या श्रुतिनैं तौ कर्मकरिकै प्राप्त लोकका नाश कथन करा है। तहां लोकशब्द केवल भोग्यपदार्थोंकाही वाचक है। और निष्कामकर्मरूप योगका फलरूप जो चित्तकी शुद्धि है सा चित्तकी शुद्धि पापोंका क्षयरूप है यातैं ता चित्तकी शुद्धिरूप फलविषे ता लोकशब्दकी अर्थरूपता है नहीं। या कारणतैं ता चित्तशुद्धिरूप

त्तिकरिकै आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै तुम्हारेकूं निष्कामकर्मयोगही अनुष्ठान करणे योग्य है । तिस कर्मयोगविषे करणे योग्य जो (सुखदुःखे समे कृत्वा) या श्लोकविषे कथन करी हुई फलकी इच्छाका त्यागरूप बुद्धि है ता बुद्धिकूं अभी मैं विस्तारकरिकै कथन करता हूं । तूं तिस बुद्धिकूं श्रवण कर । इहां (योगे तु) या वचनविषे स्थित जो तु यह शब्द है सो तुशब्द पूर्व कथन करी हुई ज्ञानरूप बुद्धिविषे कर्मयोगविषयत्वके अभावकूं सूचन करे है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जिस अधिकारी पुरुषका अंतःकरण शुद्ध हुआ है ता अधिकारी पुरुषकें प्रति तौ आत्मज्ञानकाही उपदेश करणा योग्य है । और जिस पुरुषका अंतःकरण शुद्ध नहीं भया है ता पुरुषके प्रति तौ कर्मकाही उपदेश करणा योग्य है । यातैं ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके समुच्चयकी शंकाकरिकै विरोधकी प्राप्ति होंवे नहीं इति । अब फलका कथन करिकै ता कर्मयोगविषयक बुद्धिकी स्तुति करे हैं (बुद्ध्या यया इति) जिस व्यवसायात्मक बुद्धिकरिकै तिन निष्काम कर्मोंविषे जुड्या हुआ तूं कर्मजन्य अंतःकरणकी अशुद्धिरूप बंधकूं परित्याग करैगा । इहां यह तात्पर्य है । पापकर्मजन्य जो अंतःकरणकी अशुद्धिरूप ज्ञानका प्रतिबंध है सो प्रतिबंध तौ धर्मरूप कर्मकरिकैही निवृत्त होवे है । दूसरे किसी उपायकरिकै सो प्रतिबंध निवृत्त होवै नहीं । तहां श्रुति । " धर्मेण पापमपनुदति " । अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष निष्कामकर्मरूप धर्म करिकै पापकूं निवृत्त करे है इति । और श्रवणमननादिरूप जो विचार है सो विचार तौ पापकर्मरूप प्रतिबंधतैं रहित पुरुषके असंभावना विपरीतभावनारूप प्रतिबंधकूं निवृत्त करे है । यातैं पापकर्मरूप प्रतिबंधकी निवृत्ति करणेवासतैं सो श्रवणादिरूप विचार उपदेश करा जावै नहीं । और इदानीं कालविषे तुम्हारा अंतःकरण अत्यंत मलिन है यातैं अभी तुमनैं बहिरंगसाधनरूप कर्मही करणे योग्यहै । इस कालविषे तुम्हारेमें श्रवणादिकोंकी योग्यताभी उत्पन्न भई नहीं तौ ज्ञानकी योग्यता तुम्हारेविषे किस प्रकार होवेगी ? किंतु इस कालविषे ज्ञानकी योग्यता तुम्हारे में है नहीं । यहही वार्त्ता (कर्मण्येवाधिकारस्ते) या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे । इतने कहणेकरिकै सांख्यबुद्धिके श्रवणादिरूप अंतरंगसाधनोंकूं छोंडिकै भगवानूनैं अर्जुनके प्रति कर्मरूप बहिरंगसाधन किसवासतैं उपदेश करिते हैं या प्रकारकी शंकाकाभी खंडन करा इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! " तमेतं वेदानुवचने ब्राह्मणा विविदिषंति यज्ञेन दानेन तपसा नाशकेन " इति । या श्रुतिनैं विविदिषाकी प्राप्तिवासतै तथा ज्ञानकी प्राप्तिवासतै यज्ञ दान तपादिक कर्मोंका विधान करा है । तहां यज्ञदानादिक कर्मोंकरिकै साक्षात् तौ विविदिषाकी तथा ज्ञानकी प्राप्ति होवे नहीं । किंतु अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा ता विविदिषाकी तथा ज्ञानकी प्राप्ति होवे है । या कारणतैं आपनैं हमारे प्रति कर्मोंका अनुष्ठान विधान करया है । और श्रुतिनैं तौ कर्मके फलकूं

विरोध है। एक अधिकरणविषे एक कालमैं ते दोनों बुद्धि होवैं नहीं और जैसे प्रकाश तथा अंधकार] या दोनोंका समुच्चय होवै नहीं। तैसे ज्ञान तथा कर्म या दोनोंकाभी समुच्चय होवै नहीं। यह अर्जुनका अभिप्राय (ज्यायसीचेत्) या श्लोकविषे आगे स्पष्ट होवैगा। यातैं एकही मैं अर्जुनके प्रति ज्ञानका उपदेश तथा कर्मका उपदेश संभवता नहीं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् विद्वत् अवस्थाके तथा अविद्वत् अवस्थाके भेदकरिकै एकही पुरुषके प्रति ज्ञानका उपदेश तथा कर्मका उपदेश संभव होइ सकै है या प्रकारका उत्तर कहै हैं।

(मू. श्लो.) एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमाम् शृणु ॥ बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबंधं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥ (पदच्छेदः) एषा। ते। अभिहिता। सांख्ये। बुद्धिः। योगे। तु। इमां। शृणु। बुद्ध्या। युक्तः। यया। पार्थ। कर्मबंधम्। प्रहास्यसि ॥ ॥ ३९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! हमनैं तुम्हारे तांई यह पूर्व उक्त बुद्धि ब्रह्मविषे कथन करी अभी कर्मयोगविषे इस वक्ष्यमाण बुद्धिकूं तूं श्रवण कर जिस बुद्धिकरिकै युक्त हुआ तूं कर्मबंधकूं परित्याग करैगा ॥ ३९ ॥

टीका। देहादिक सर्व उपाधियोंतैं भिन्न करिकै परमात्माका वास्तव स्वरूप प्रतिपादन करिये जिसकरिकै ताका नाम संख्य है ऐसा उपनिषद्रूप शास्त्र है। ता उपनिषद्करिकै जो वस्तु प्रतिपादन करिये ता वस्तुका नाम सांख्य है ऐसा जीवका वास्तव स्वरूप परमात्मा देव है। ऐसे सांख्य नामा परमात्मादेवविषे (नत्वेवाहं जातु नासम्) इस श्लोकतैं आदिलेके (स्वधर्ममपि चावेक्ष्य) इस श्लोकतैं पूर्व एकविंशति (२१) श्लोकोंक रिकै ज्ञानरूप बुद्धि हमनैं तुम्हारेप्रति कथन करी। कैसी है सा बुद्धि जन्ममरणादिक सर्व अनर्थोंके निवृत्तिका कारण है। ऐसी आत्म ज्ञानरूप बुद्धि जिस अधिकारी पुरुषकूं प्राप्त भई है। तिन विद्वान् पुरुषके प्रति कदाचित्भी हमनैं कर्मोंकी कर्त्तव्यता कथन करी नहीं। काहेतैं (तस्य कार्यं न विद्यते) या वचनकरिकै तिस विद्वान् पुरुषविषे सर्व कर्मोंके कर्त्तव्यताका अभाव आगे हमनैं कथन करणा है। जो कदाचित् अभी तौ मैं ता विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंकी कर्त्तव्यताका कथन करौं और आगे ता विद्वान् पुरुष सर्व कर्मोंकी कर्त्तव्यताका अभाव कथन करौं तौ हमारे पूर्व उत्तर वचनोंका विरोध होवैगा। यातैं विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंकी कर्त्तव्यतामें हमारा तात्पर्य नहीं है किंतु हमारा यह तात्पर्य है। इस प्रकार आत्माके उपदेश किये हुएभी जो कदाचित् अपणे चित्तके दोषतैं तुम्हारेकं सा ब्रह्मात्माकारबुद्धि नहीं उत्पन्न होवै तौ ता चित्तके दोषकी निवृ

टीका । इष्ट अनिष्ट पदार्थोंकी प्राप्तिविषे जो रागद्वेषतैं रहित होणा है याका नाम समताभाव है । तहां सुखविषे तथा ता सुखके कारणरूप लाभविषे तथा ता लाभके कारणरूप जयविषे रागकूं न करिकै इस प्रकार दुःखविषे तथा ता दुःखके कारणरूप अलाभविषे तथा ता अलाभके कारणरूप अजयविषे द्वेषकूं न करिकै तूं इस युद्ध करणेवासतै तयार होउ । इस प्रकार सुखकी कामनाका परित्याग करिकै तथा दुःखके निवृत्तिकी कामनाका परित्याग करिकै केवल स्वधर्मबुद्धिकरिकै जो तूं इस युद्धकूं करैगा तौ इन गुरुब्राह्मणोंके हननजन्य पापकूं तथा नित्यकर्मके नहीं करणेजन्य पापकूं तूं प्राप्त होवैगा नहीं । और जो पुरुष इस लोकके फलकी अथवा परलोकके फलकी कामनाकरिकै युद्धकूं करै है सो पुरुष गुरुब्राह्मणादिकोंके नाशजन्य पापकूं अवश्य प्राप्त होवै है । और जो पुरुष ता युद्धकूं नहीं करै है सो पुरुष ता नित्यकर्मके न करणेजन्य पापकूं प्राप्त होवै है । यातैं फलकी इच्छातैं विना केवल स्वधर्म जानिकै युद्धके करणेतैं यह पुरुष ता दोनों प्रकारके पापकूं प्राप्त होवै नहीं । और "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्" या वचनकरिकै जो हमनैं पूर्व युद्धके फलका कथन करा है सो आनुषंगिक फलका कथन करा है । यातैं ता पूर्व वचनकाभी विरोध होवै नहीं । यह वार्त्ता आपस्तंबऋषिनैंभी कथन करी है । "तद्यथाऽऽम्रे फलार्थे निर्मिते छाया गंध इत्यनूत्पद्येते एवं धर्मं चर्यमाणमर्था अनूत्पद्यंते नोचेदनूत्पद्यंते न धर्महानिर्भवतीति" । अर्थ यह । जैसे इस लोकविषे आम्रफलोंकी प्राप्तिवासतै लगाया हुआ जो आम्रका वृक्ष है ता वृक्षकी छाया तथा सुगंध अवश्य करिकै प्राप्त होवै है । तहां छाया सुगंधकी प्राप्ति ता वृक्षका आनुषंगिक फल है । तैसे यह धर्म हमारेकूं अवश्य करणेयोग्य है । या प्रकार स्वधर्मबुद्धिकरिकै करा हुआ जो धर्म है ता धर्मकरिकै राज्यस्वर्गादिक अर्थभी अवश्यकरिकै प्राप्त होवै हैं परंतु ते राज्यस्वर्गादिक पदार्थ ता धर्मका आनुषंगिक फलरूप हैं । जो कदाचित् ते राज्यस्वर्गादिक अर्थ नहींभी प्राप्त होवैं तौभी ता करे हुए धर्मकी हानि होवै नहीं इति । यातैं युद्धकूं विधान करणेहारा शास्त्र अर्थशास्त्ररूप नहीं है । किंतु धर्मशास्त्ररूप है । इतनै कहणेकरिकै श्रीभगवान्नें (पापमेवाश्रयेदस्मान्) इत्यादिक अर्जुनके वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! स्वधर्मबुद्धिकरिकै युद्ध करणेहारे पुरुषकूं जो आपनैं पापका अभाव कह्या सो सत्य है । तथापि हमारेप्रति युद्ध करणेका उपदेश करणा आपकूं उचित नहीं है । काहेतैं पूर्व आपनैं (य एनं वेत्ति हंतारं कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हंति कम्) इत्यादिक वचनोंकरिकै विद्वान् पुरुषविषे सर्व कर्मोंका निषेध कथन करा है । और अकर्त्ता अभोक्ता शुद्धस्वरूप मैं हूं तथा इस युद्धकूं करिकै मैं ताके फलकूं भोगौंगा या प्रकारका ज्ञानभी संभवता नहीं । जिस कारणतैं अकर्तृत्वबुद्धिका तथा कर्तृत्वबुद्धिका परस्पर

(मू. श्लो.) हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ॥ तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ (पदच्छेदः) हतः । वा । प्राप्स्यसि । स्वर्गम् । जित्वा । वा । भोक्ष्यसे । महीम् । तस्मात् । उत्तिष्ठ । कौंतेय । युद्धाय । कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ (पदार्थः) हे कुंतीके ! पुत्र अर्जुन जो कदाचित् तूं युद्धविषे मृत होवैगा तौ स्वर्गकूं प्राप्त होवैगा अथवा इन शत्रुवोंकूं जीतिकै तूं इस पृथिवीकूं भोगैगा तिस कारणतैं निश्चययुक्त होइकै तूं इस युद्धवासतै उठि खडा होउ ॥ ३७ ॥

टीका । हे अर्जुन ! इस युद्धविषे जो कदाचित् तूं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंतैं मृत्युकूं प्राप्त होवैगा तौ तूं अवश्यकारिकै स्वर्गकूं प्राप्त होवैगा और जो कदाचित् तूं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं जीतैगा तौ तूं शत्रुरूप कंटकोंतैं रहित इस पृथिवीके राज्यकूं भोगैगा । जिस कारणतैं पराजयपक्षविषे तथा जयपक्षविषे या दोनों पक्षविषे तुम्हारेकूं लाभकीही प्राप्ति है । तिस कारणतैं के तौ मैं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं जीतौंगा के तौ मैं मृत्युकूं प्राप्त होवौंगा या प्रकारका दृढ निश्चय करिकै तूं इस युद्ध करणेवासतै उठि खडा होउ । इतनै कहणेकारिकै अर्जुनके "न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयः" इत्यादिक सर्व वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जो कदाचित मैं स्वर्गकी प्राप्तिवासतै इस युद्धकूं करौंगा तौ ज्योतिष्टोमादिक यज्ञोंकी न्याई इस युद्धकूं नित्य कर्मरूपता नहीं संभवैगी । किंतु काम्यकर्मरूपता होवैगी । और जो कदाचित् मैं इस पृथिवीके राज्यकी प्राप्तिवासतै इस युद्धकूं करौंगा तौ ता युद्धके विधान करणेहारे शास्त्रकूं अर्थशास्त्ररूपता प्राप्त होवैगी । ताकारिकै तिस शास्त्रविषे धर्मशास्त्रकी अपेक्षाकारिकै दुर्बलता सिद्ध होवैगी । यातैं काम्यकर्मरूप युद्धके न करणेकारिकै हमारेकूं कैसे पाप होवैगा किंतु नहीं होवैगा । तथा राज्यरूप दृष्ट अर्थकी प्राप्ति करणेहारे तिन गुरुब्राह्मणोंके हननरूप युद्धविषे कैसे धर्मरूपता होवैगी किंतु नहीं होवैगी । यातैं (अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यम्) या पूर्व श्लोकका अर्थ असंगत है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) सुखदुःखे समे कृत्वा लाभा लाभौ जयाजयौ ॥ ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥ (पदच्छेदः) सुखदुःखे । समे । कृत्वा । लाभालाभौ । जयाजयौ । ततः । युद्धाय । युज्यस्व । न । एवम् । पापम् । अवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! सुखदुःख दोनोंकूं तथा लाभअलाभ दोनोंकूं तथा जय अजय दोनोंकूं समान करिकै तिसतैं अनंतर तूं युद्ध करणेवासतै तयार होउ इस प्रकार युद्ध करता हुआ तूं पापकूं नहीं प्राप्त होवैगा ॥ ३८ ॥

हुआ मानैंगे। यातैं जिन भीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुम्हारेकूं श्रेष्ठ करिकै मान्या था। अभी इस युद्धतैं निवृत्त होईके तूं तिन भीष्मद्रोणादिकोंकेही अनादर रूप लाघवकूं प्राप्त होवैगा इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै यह भीष्मद्रोणादिक महारथी हमारेकूं श्रेष्ठ मत मानैं। परंतु हमारी युद्धतैं निवृत्ति होणी हमारे दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं बहुत अनुकूल है। यातैं ते दुर्योधनादिक शत्रु तौ हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै श्रेष्ठ करिकै मानैंगे। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यंति तवाहिताः ॥ निंदंतस्तवसामर्थ्यं ततोदुःखतरं नुकिम् ॥३६॥ (पदच्छेदः) अवाच्य वादान्। च। बहून्। वदिष्यंति। तव। अहिताः। निंदंतः। तव। सामर्थ्यम्। ततः। दुःखतरं। नुकिम् ॥ ३६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तुम्हारे दुर्योधनादिके शत्रुभी तुम्हारे सामर्थ्यकूं निंदते हुए नहीं कहणेयोग्य अनेक प्रकारके वचनोंकूं कथन करैंगे तिसतैं परे अधिक दुःख क्या है ॥ ३६ ॥

टीका। हे अर्जुन! जभी तूं इस युद्धतैं निवृत्त होवैगा तभी सर्व लोकविषे प्रसिद्ध जो तुम्हारा सामर्थ्य है ता सामर्थ्यकी निंदा करते हुए यह दुर्योधन कर्ण विकर्णादिक तुम्हारे शत्रुभी नहीं कथन करणेकूं योग्य जो अनेक प्रकारके धिक्कारशब्द हैं तिन शब्दोंकूं कथन करैंगे। शंका—हे भगवन्! भीष्म द्रोणादिकोंके नाश होणेकरिकै उत्पन्न होणेहारा जो अत्यंत कष्टरूप दुःख है ता दुःखकूं नहीं सहन करता हुआ इस युद्धतैं निवृत्त हुआ मैं अर्जुन तिन शत्रुवोंनैं करी हुई जो हमारे सामर्थ्यकी निंदा है ता निंदाजन्य दुःखकूं सहारि सकौंगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं। (ततो दुःखतरं नुकिं) इति हे अर्जुन! लोकनिंदातैं प्राप्त भया जो दुःख है ता दुःखतैं कौन अधिक दुःख है? किंतु ता निंदाजन्य दुःखतैं अधिक कोईभी दुःख नहीं है। यातैं ता निंदाजन्य दुःखकूं तूं नहीं सहारि सकैगा इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! जो मैं इस युद्धविषे भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं हनन करौंगा तौ मध्यस्थ पुरुष हमारी निंदा करैंगे। और जो मैं इस युद्धतैं निवृत्त होवौंगा तौ यह दुर्योधनादिक शत्रु हमारी निंदा करैंगे। यातैं इस युद्धके करणेपक्षविषे तथा इस युद्धके नहीं करणेपक्षविषे ता निंदाजन्य दुःखकी प्राप्ति तुल्यही है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् जयपक्षविषे तथा पराजयपक्षविषे तुम्हारेकूं निश्चयकरिकैही लाभकीही प्राप्ति है यातैं युद्ध करणेवासतेही तुम्हारेकूं उठ्या चाहिये या प्रकारका वचन अर्जुनके प्रति कथन करैं हैं।

(संभावितस्य इति) हे अर्जुन ! यह पुरुष अत्यंत धर्मात्मा है तथा अत्यंत शूरवीर है इत्यादिक अनेक गुणोंकरिकै जिस पुरुषकूं लोकोंनैं श्रेष्ठ मान्या है । तिस पुरुषका नाम संभावित है । ऐसे संभावित पुरुषकी जो लोकविषे अकीर्त्ति है । सा अकीर्त्ति मरणतैंभी अधिक है । यातैं तिस अकीर्त्तितैं ता संभावित पुरुषका मरणही श्रेष्ठ है । और तूं अर्जुनभी धर्मनिष्ठाकरिकै तथा महादेवादिक ईश्वरोंके साथि युद्ध करिकै लोकविषे बहुत संभावित है । यातै तूं अकीर्त्तिजन्य दुःखकूं नहीं सहन करि सकैगा और पूर्व कथन करा जो शांतिपर्वका वचन है । सो वचन तौ अर्थआवरूप है । यातैं ' न निवर्तेत संग्रामात् ' इत्यादिक धर्मशास्त्रतैं सो वचन दुर्बल है इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! या लोकविषे शत्रुमित्रभावतैं रहित जे उदासीन पुरुष हैं ते उदासीन पुरुष हमारेकूं युद्धतैं विमुख हुआ देखिकै हमारी निंदा करैंगे सो करते रहैं । परंतु यह भीष्मद्रोणादिक जो महारथी पुरुष हैं ते भीद्रोणादिक पुरुष हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै यह अर्जुन बहुत करुणायुक्त है या प्रकार हमारी स्तुतिही करैंगे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहै हैं ।

(मू. श्लो.) भयाद्रणादुपरतं मंस्यंते त्वां महारथाः ॥ येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ ३५ ॥ (पदच्छेदः) भयात् । रणात् उपरतं । मंस्यंते । त्वाम् । महारथाः । येषाम् । च । त्वं । बहुमतः । भूत्वा । यास्यसि । लाघवम् ॥ ३५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! यह भीष्मद्रोणादिक महारथी तुम्हारेकूं भयतैं रणतैं उपराम हुआ मानैंगे तथा जिनं भीष्मादिकोंकूं तूं बहुत गुणयुक्त होता भया ऐसा होइक तिन भीष्मद्रोणादिकोंकेही लाघवताकूं प्राप्त होवैगा ॥ ३५ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो तूं युद्धकूं नहीं करैगा । तौ यह भीष्मद्रोणादिक महारथी यह अर्जुन कर्णादिक शूरवीरोंकी भयतैं इस युद्धतैं निवृत्त हुआ है कोई दयाकरिकै युद्धतैं निवृत्त नहीं भया है या प्रकार तुम्हारेकूं मानैंगे । शंका—हे भगवन् ! ते भीष्मद्रोणादिक पूर्व हमारेकूं धर्म पराक्रम धैर्य इत्यादिक गुणोंकरिकै श्रेष्ठ मानते हैं । यातैं अबी ते भीष्मद्रोणादिक हमारेकूं कर्णादिक शूरवीरोंकी भय करिकै युद्धतैं निवृत्त हुआ कैसे मानैंगे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहै हैं (येषां त्वं बहुमतः) इति । हे अर्जुन जिन भीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुम्हारेकूं यह अर्जुन धर्म, पराक्रम, धैर्य इत्यादिक अनेक गुणोंकरिकै युक्त है या प्रकार मान्या है ते भीष्मद्रोणादिक महारथीही अबी तुम्हारेकूं कर्णादिकोंके भयकरिकै युद्धतैं उपराम

(मू. श्लो.) अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यंति तेऽव्ययाम् ॥ संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ (पदच्छेदः) अकीर्तिं । च । अपि । भूतानि । कथयिष्यंति । ते । अव्ययां । संभावितस्य । च । अकीर्तिः । मरणात् । अतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! तथा देव ऋषि मनुष्य तुम्हारी दीर्घकालपर्यंत अकीर्तिकूं भी कथन करैंगे और गुणवान् पुरुषकी अकीर्ति मरणतैंभी अधिक है ॥ ३४ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जो तूं इस युद्धतैं निवृत्त होवैगा तौ देवता ऋषि मनुष्य इसतैं आदिलैके जितनेक भूतप्राणी हैं ते सर्व प्राणी परस्पर कथाप्रसंगविषे यह अर्जुन धर्मात्मा नहीं है तथा शूरवीरभी नहीं है या प्रकारकी तुम्हारी अकीर्त्तिकूं दीर्घकालपर्यंते कथन करैंगे । इहां (च अपि) यह दोनों पद पूर्व कथन करे हुए कीर्त्तिके नाशका तथा धर्मके नाशका समुच्चय करावणेवासते हैं । ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है इस युद्धतैं निवृत्त होणेकरिकै तूं कीर्त्ति धर्म दोनोंका परित्याग करिकै केवल पापकूंही प्राप्त नहीं होवैगा । किंतु अकीर्त्तिकूंभी तूं प्राप्त होवैगा । तथा केवल तूंही ता अकीर्त्तिकूं प्राप्त नहीं होवैगा । किंतु दूसरे देव ऋषि मनुष्यादिक प्राणीभी तुम्हारी अकीर्त्तिकूं कथन करैंगे इति । शंका–हे भगवन् ! युद्धविषे अपणे मरणेका संदेह रहे है । यातैं ता मरणके निवृत्त करणेवासतै अपणी अकीर्त्तिभी सहारणेकूं योग्य है । जिस कारणतैं अपणे आत्माकी रक्षा करणी अत्यंत अपेक्षित है । यह वार्त्ता महाभारतके शांतिपर्वविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । " साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरुत वा पृथक् । विजेतुं प्रयतेतारीन् नयुद्धेत कदाचन ॥ १ ॥ अनित्यो विजयो यस्मात् दृश्यते युद्ध्यमानयोः । पराजयश्च संग्रामे तस्माद्युद्धं विवर्जयेत् ॥ २ ॥ त्रयाणामप्युपायानां पूर्वोक्तानामसंभवे । तथा युद्धेत संयत्तो विजयेत रिपून्यथा " ॥ ३ ॥ अर्थ यह । साम, दान, भेद या तीन उपायोंकरिकै अथवा एक एक उपायकरिकै यह बुद्धिमान् पुरुष अपणे शत्रुवोंके जय करणे वासतै प्रयत्न करै ॥ १ ॥ जिस कारणतैं युद्ध करणेहारे पुरुषोंका संग्रामविषे नियमतैं जय देखणेविषे आवता नहीं । किंतु बहुत स्थलविषे पराजयही देखणेमें आवता है । तिस कारणतैं यह बुद्धिमान् पुरुष युद्धकूं नहीं करै ॥ २ ॥ और पूर्व कथन करे जो साम, दान, भेद यह तीन उपाय । तिन तीनों उपायोंका जहां असंभव होवै तहां यह पुरुष ऐसा सावधान होइकै युद्ध करै जिसकरिकै अपणे शत्रुवोंकूं जय करि लेवै ॥ ३ ॥ यातैं मरणतैं भयकूं प्राप्त हुए पुरुषकूं अकीर्त्तिजन्य दुःख क्या करैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता शंकाकी निवृत्ति करै हैं

अपणे धर्मका त्याग करिकै क्या अपणे धर्मका नहीं अनुष्ठान करिकै तथा यह अर्जुन साक्षात् महादेवादिक श्वरोंके साथभी युद्ध करता भया है। यातैं यह अर्जुन महान् पराक्रमवाला है। या प्रकारकी अपणी कीर्त्तिका परित्याग करिकै "न निवर्त्तेत संग्रामात्" इत्यादिक शास्त्रकरिकै निषिद्ध जो संग्रामतैं निवृत्तिरूप आचरण है ता निषिद्ध आचरणजन्य पापकूंही तूं केवल प्राप्त होवैगा। किसी धर्मकूं अथवा किसी कीर्त्तिकूं तूं प्राप्त होवैगा नहीं इति। अथवा (स्वधर्मं हित्वा पापमवाप्स्यसि) या वचनका यह दूसरा अर्थ करणा पूर्व अनेक जन्मोंविषे तुमनैं इकट्ठे करे जो पुण्यरूप धर्म हैं तिन धर्मोंका परित्याग करिकै तूं केवल राजकृत पापकूंही प्राप्त होवैगा। तात्पर्य यह। जो कदाचित् तूं इस युद्धतैं पीछे फिरैगा तौभी यह दुर्योधनादिक दुष्ट अवश्यकरिकै तुम्हारा हनन करैंगे। और इस युद्धतैं पीछे हठिकरिकै जो तूं इन दुर्योधनादिकोंके हस्ततैं मरैगा तौ बहुत जन्मोंविषे इकट्ठे करे हुए अपणे पुण्यकर्मोंका परित्याग करिकै इन दुर्योधनादिकोंनैं करे हुए पापकर्मोंकूंही तूं प्राप्त होवैगा सो ऐसा करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है। यह वार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कथन करी है। तहां श्लोक। "यस्तु भीतः परावृत्तः संग्रामे हन्यते परैः। भर्तुर्यद्दुष्कृतं किंचित् तत्सर्वं प्रतिपद्यते ॥ १ ॥ यच्चास्य सुकृतं किंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम्। भर्ता तत्सर्वमादत्ते परावृत्त हतस्य तु" ॥ २ ॥ अर्थ यह। संग्रामविषे भयभीत होइकै पीछै हट्या हुआ जो पुरुष शत्रुपुरुषोंनैं हनन करता है सो पुरुष हनन करणेहारे पुरुषके सर्व पापोंकूं प्राप्त होवै है ॥ १ ॥ और युद्धतैं पीछै फिरिकै हननकूं प्राप्त हुए तिस पुरुषनैं स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिवासतै जितनैंकी पुण्यकर्म करे थे ते सर्व पुण्यकर्म सो हनन करणेहारा पुरुष लै जावै है ॥ २ यह वार्त्ता याज्ञवल्क्यमुनिनैंभी कही है। "राजा सुकृतमादत्ते हतानां विपलायिनाम्"। अर्थ यह। युद्धतैं पीछै फिरिकै हननकूं प्राप्त हुए जो योद्धा हैं तिन योद्धा पुरुषोंके सर्व पुण्यकर्मोंकूं सो हनन करणेहारा राजा लै जावै है इति। इतनै कहणेकरिकै पूर्व अर्जुननैं जो (पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः। एतान्न हंतुमिच्छामि घ्नतोपि मधुसूदन) या प्रकारके वचन कहे थे। तिन सर्व वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार पूर्व श्लोकविषे युद्धके परित्याग करणेकरिकै अर्जुनकूं कीर्त्तिरूप इष्टकी तथा धर्मरूप इष्टकी अप्राप्ति कथन करी। तथा पापरूप अनिष्टकी प्राप्ति कथन करी। तहां पापरूप अनिष्ट तौ बहुत कालतैं पीछे परलोकविषे दुःखरूप फलकी प्राप्ति करै है। और शिष्टपुरुषोंनैं करी जो निंदा है सो निंदारूप अनिष्ट तौ अबीही दुःखरूप फलकी प्राप्ति करै है। तथा बुद्धिमान् पुरुषोंनैं सो निंदाजन्य दुःख सहन करणेकूंभी अशक्य है। यह वार्त्ता श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करै हैं।

कृष्ण अपि त्रैलोक्यराज्यस्य) या प्रकारका वचन पूर्व हम कथन करि आये हैं। यातैं फलकी इच्छातैं रहित हमारेकूं सो युद्ध करणा उचित नहीं है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति ता युद्धके नहीं करणेकरिकै दोषकी प्राप्तिका कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ॥ ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ (पदच्छेदः) अथ। चेत्। त्वम्। इमम्। धर्म्यम्। संग्रामम्। न। करिष्यसि। ततः। स्वधर्मम्। कीर्तिम्। च। हित्वा। पापम्। अवाप्स्यसि ॥३३॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो कदाचित् तूं इस धर्मरूप संग्रामकूं नहीं करैगा तौ तिस संग्रामके नहीं करणेतैं तूं अपणे धर्मकूं तथा कीर्तिकूं परित्याग करिकै पापकूं प्राप्त होवैगा ॥ ३३ ॥

टीका। पूर्व युद्धकी कर्त्तव्यता कथन करी ता युद्धकी कर्त्तव्यतारूप प्रथम पक्षकी अपेक्षा करिकै युद्धकूं नहीं करणा यह दूसरा पक्ष है । ता दूसरे पक्षके बोधन करणेवासतै इस श्लोकके आदिविषे (अथ) यह शब्द कथन करा है । तहां भीष्मद्रोणादिक वीर पुरुष हैं प्रतियोगी जिसके ऐसा जो यह संग्राम है सो युद्धरूप संग्राम हिंसादिक दोषोंतैं रहित है यातैं धर्म्यरूप है । अथवा श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्मतैं अविरुद्ध है यातैं धर्म्यरूप है । ते श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्म मनुभगवाननैं यह कहैं हैं । यह क्षत्रिय राजा रणभूमिविषे युद्ध करता हुआ कपटतैं रहित आयुधोंकरिकै शत्रुवोंकूं हनन करे । तथा रथतैं विना समान पृथिवीविषे स्थित शत्रुकूंभी नहीं हनन करे । तथा नपुंसक शत्रुकूंभी नहीं हनन करे । तथा जो शत्रु मैं तुम्हारा हूं या प्रकारका वचन कहै तिसकूंभी नहीं हनन करे । तथा जो शत्रु निद्राविषे सोया होवै । तथा जो शत्रु वस्त्रोंतैं रहित नग्न होवै । तथा जो शत्रु आयुधों तैं रहित होवै। तथा जो दूसरेके साथि केवल युद्ध देखणेवासतै आया होवै । तथा जो परीक्षा करणेहारा होवै । तथा जो रोगी होवै तथा जो पुरुष भययुक्त होवै । तथा जो पुरुष युद्धतैं पीछे भागा होवै । इत्यादिक शत्रु पुरुषोंकूं यह योद्धा पुरुष हनन करैं नहीं । इत्यादिक श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्मोंका उल्लंघन करिकै जो पुरुष युद्ध करै है सो पुरुष ता युद्धके स्वर्गादिक फलकूं प्राप्त होवै नहीं । किंतु सो पुरुष केवल पापकूंही प्राप्त होवै है । और तूं अर्जुन तौ दुर्योधनादिक शत्रुवोंनैं युद्ध करणेवासतै बुलाया हुआभी जो सद्धर्मकरिकै युक्त इस युद्धरूप संग्रामकूं नहीं करैगा क्या धर्मतैं अथवा लोकतैं भयभीत हुआ जो तूं इस युद्धतैं पीछे फिरैगा तौ "निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत्" इत्यादिक शास्त्रकरिकै विधान करे हुए युद्धके नहीं करणेतैं

करते हुए तथा ता युद्धतैं पीछे मुख नहीं करते हुये स्वर्गकूं प्राप्त होवै हैं इति । किंवा जैसे 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' या वचनतैं विधान करी जो यज्ञविषे पशुकी हिंसा ता हिंसाकूं 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' यह निषेध स्पर्श करि सकै नहीं । तैसे यह युद्धभी शास्त्रकरिकै विधान करा है यातैं ता युद्धकूंभी सो निषेध स्पर्श करि सकै नहीं। तात्पर्य यह । 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' यह तौ सामान्यशास्त्र है । और 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' यह विशेषशास्त्र है। तहां सामान्यशास्त्रकी अपेक्षा कारिकै विशेषशास्त्र बलवान् होवै है यातैं ता विशेषशास्त्रकरिकै सामान्यशास्त्रका संकोच करा जावै है। यातैं शास्त्रविहित युद्ध यज्ञादिकोंतैं भिन्न स्थलविषे किसीभी प्राणीकी हिंसा करणी नहीं या प्रकार ता सामान्यशास्त्रका संकोच करणा संभवै है। जो कदाचित् 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' या सामान्यशास्त्रके अर्थका इस प्रकारका संकोच नहीं करियै तौ 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' इत्यादिक सब वचन व्यर्थ होवैंगे यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जैसे अग्निषोमीय पशुकी हिंसा शास्त्रविहित होणेतैं प्रत्यवायका जनक होवै नहीं तैसे युद्धविषे स्थित हिंसाभी शास्त्रविहित होणेतैं प्रत्यवायका जनक होवै नहीं इति । और युद्धविषेभी भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके हननकारिकै जो दोष कथन करा था सोभी संभवै नहीं काहेतैं यह भीष्मद्रोणादिक यद्यपि तुम्हारे गुरु हैं तथापि ते भीष्मद्रोणादिक आततायि हैं यातैं तिन्होंके हनन करणेतैं दोष होवै नहीं । यह वार्त्ता मनु भगवान्नैंभी कथन करी है । तहां श्लोक । "गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम् । आततायिनमायांतं हन्यादेवाविचारयन् । नाततायिवधे दोषो हंतुर्भवति कश्चन" । अर्थ यह । अपणा गुरु होवै अथवा बालक होवै अथवा वृद्ध होवै अथवा शास्त्रवेत्ता ब्राह्मण होवै परंतु आततायि होवै सो आततायि पुरुष जिस कालविषे अपणे सन्मुख प्राप्त होवै तिसी कालविषे यह बुद्धिमान् पुरुष विचारतैं विनाही ता आततायि पुरुषकूं हनन करै ता आततायिके हनन करणे तैं इस पुरुषकूं दोषकी प्राप्ति होवै नहीं इति । आततायिका लक्षण प्रथम अध्यायविषे कथन करि आये हैं यातैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके हननकारिकै तुम्हारेकूं किंचित्मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवैगी नहीं । इहां (सुखिनः क्षत्रियाः) या वचनकरिकै युद्धकर्त्ता पुरुषकूं सुखकी प्राप्ति कथन करी । ताकरिकै (स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव) अर्थ यह । अपणे बांधवोंकूं मारिकै मैं सुखकूं नहीं प्राप्त होवौंगा या अर्जुनके वचनका खंडन करा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! जिस पुरुषकूं जिस कर्मके फलकी इच्छा होवै है सो पुरुषही तिस फलकी प्राप्तिवासतै तिस कर्मविषे प्रवृत्त होवै है । फलकी इच्छातैं विना किसीकीभी प्रवृत्ति होवै नहीं । यह वार्त्ता सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है । और हमारेकूं ता युद्धके फलकी इच्छा है नहीं । या कारणतैंही (न कांक्षे विजयं

विना ही प्राप्त हुआ तथा प्रतिबंधतैं रहित स्वर्गका साधनरूप इस प्रकारके युद्धकुं जे क्षत्रिय राजे प्राप्त होवै हैं ते क्षत्रिय सुखकूंही प्राप्त होवैं हैं ॥ ३२ ॥

टीका। हे पृथाके पुत्र अर्जुन ! तुम हमारेसाथि युद्ध करो या प्रकारकी प्रार्थनारूप प्रयत्नतैं विनाही प्राप्त भया जो यह युद्ध है कैसा है यह युद्ध भीष्मद्रोणादिक वीरपुरुष प्रतिपक्षी होइके जिस युद्धके करणे हारे हैं तथा जो युद्ध कीर्ति, राज्यकी प्राप्ति इत्यादिक दृष्टफलोंका साधन है। ऐसे युद्धकूं जे क्षत्रिय राजे प्राप्त होवै हैं ते क्षत्रिय राजे परम सुखकूंही प्राप्त होवै हैं। काहेतैं ता युद्धकरिके जो कदाचित् जय होवै है तौ विनाही प्रयत्नतैं इस लोकविषे यशकी तथा राज्यकी प्राप्ति होवै है। और जो कदाचित ता युद्धतैं पराजय होवै है। तौ अत्यंत शीघ्रही स्वर्गकी प्राप्ति होवै है। याही अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करैं हैं (स्वर्गद्वारमपावृतं) इति। कैसा है यह युद्ध प्रतिबंधतैं रहित स्वर्गके प्राप्तिका साधनरूप है क्या व्यवधानतैं विनाही स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारा है। यद्यपि ज्योतिष्टोमादिक यज्ञभी स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारे हैं तथापि ते ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ स्वर्गरूपफलकी प्राप्तिविषे इस वर्त्तमान शरीरके नाशकी तथा प्रतिबंधके अभावकी अपेक्षा करे हैं याते ते ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ चिरकालके पीछेही ता स्वर्गरूप फलकी प्राप्ति करे हैं। युद्धकी न्याई शीघ्रही स्वर्गकी प्राप्ति करे नहीं। इहां (स्वर्गद्वारमपावृतं) इस वचनकारिकै भगवानूनें जैसे श्येनयज्ञके करणेतैं प्रत्यवाय होवै है तैसे युद्धके करणेतैंभी प्रत्यवाय होवैगा या प्रकारकी अर्जुनकी शंका निवृत्त करी। तहां 'श्येनेनाभिचरन् यजेत' इत्यादिक वचनोंकरिकै यद्यपि ते श्येनयज्ञादिक विधान करे हैं तथापि ते श्येनयज्ञादिक अपणे फलके दोषकरिकै दुष्ट हैं। काहेतैं तिन श्येनयज्ञादिकोंका फलरूप जो शत्रुका मरण है। सो शत्रुका मरणरूप फल 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि ब्राह्मणं न हन्यात्' इत्यादिक शास्त्रकरिकै निषिद्ध है यातैं सो शत्रुका हननरूप फल प्रत्यवायका जनक है। और ता श्येनयज्ञके फलविषे कोई विधिवचनभी है नहीं यातैं विधियुक्त अर्थविषे निषेधका अवकाश होवै नहीं या प्रकारके न्यायकीभी तहां प्राप्ति होवै नहीं। और युद्धका फल जो स्वर्ग है सो स्वर्ग किसी शास्त्रकरिकै निषिद्ध है नहीं। किंतु सो स्वर्ग शास्त्रकरिकै विहित है। यह वार्त्ता मनुभगवानूनेंभी कथन करी है। तहां श्लोक। "आहवेषु मिथोन्योन्यं जिघांसंतो महीक्षितः। युद्धमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यांत्यपराङ्मुखाः" अर्थ यह। युद्धविषे परस्पर हनन करणेकी इच्छावाले जे क्षत्रिय राजे हैं ते क्षत्रिय राजे यथाशक्तिपरिमाण परस्पर युद्ध

द्धही श्रेष्ठ धर्म है इति। यह वार्त्ता पाराशरऋषिनैंभी कही है। तहां श्लोक। "क्षत्रियो हि प्रजा रक्षन् शस्त्रपाणिः प्रदंडवान्। निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत्"। अर्थ यह। क्षत्रिय राजा अपणे प्रजाका रक्षण करै तथा शस्त्रोंकूं हस्तविषे धारण करै। तथा दुष्ट जनोंकूं दंड देवै। तथा अन्य शत्रुवोंके सैन्योंकूं जीतिकरिकै धर्मकरिकै पृथिवीका पालन करै इति। यह वार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कही है। तहां श्लोकद्वय। "समोत्तमाधमे राजा चाहूतः पालयन् प्रजाः। न निवर्तेत संग्रामात् क्षात्रं धर्ममनुस्मरन् ॥ १ ॥ संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानां चैव पालनम्। शुश्रूषा ब्राह्मणानां च राज्ञः श्रेयस्करं परम्" ॥ २ ॥ अर्थ यह। अपणे प्रजावोंका पालन करता हुआ यह क्षत्रिय राजा अपणे समान जातिवाले क्षत्रियोंनैं तथा उत्तम जातिवाले ब्राह्मणोंनैं तथा अधम जातिवाले वैश्यादिकोंनैं संग्राम करणेवासतै बुलाया हुआ अपणे क्षत्रियके धर्मकूं स्मरण करता हुआ ता संग्रामतैं निवृत्त नहीं होवै ॥ १ ॥ और संग्रामतैं निवृत्त नहीं होणा तथा प्रजाका पालन करणा तथा ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा करणी यह तीनों धर्म राजाके परम श्रेयके करणेहारे हैं ॥ २ ॥ इत्यादिक स्मृतिवचनोंतैं क्षत्रिय राजाका युद्धही श्रेष्ठ धर्म सिद्ध होवै है। इहां यद्यपि युद्धतैं भिन्न दूसरेभी अनेक धर्म क्षत्रियके श्रेयके साधनरूप हैं यातैं युद्धतैं भिन्न दूसरा कोई धर्म क्षत्रियके श्रेयका साधन नहीं है। या प्रकारका कहणा संभवता नहीं। तथापि क्षत्रिय राजाके सर्व धर्मोंविषे ता युद्धरूप धर्मकी श्रेष्ठता कहणेवासतै श्रीभगवान्नैं सो वचन कथन करा है। कोई दूसरे धर्मोंके निषेध करणेवासतै सो वचन भगवान्नैं नहीं कह्या इतनैं कहणेकरिकै युद्धतैंभी अत्यंत श्रेष्ठ कोई दूसरा धर्म है यातैं ता धर्मके करणेवासतै युद्धतैं निवृत्ति संभव होइ सकै है या प्रकारके शंकाकीभी निवृत्ति करी। तथा (न च श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे) या प्रकारके अर्जुनके वचनकाभी खंडन करा इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! यद्यपि क्षत्रिय राजाका धर्म होणेतैं सो युद्ध अवश्यकरिकै हमारेकूं करणे योग्य है। तथापि भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके साथि सो युद्ध करणा हमारेकूं उचित नहीं है। जिस कारणतैं अपणे गुरुवोंके साथि युद्ध करणा अत्यंत निंदित कर्म है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं।

(मू. श्लो.) यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ॥ सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभंते युद्धमीदृशम् ॥ ३२ ॥ (पदच्छेदः) यदृच्छया। च। उपपन्नम्। स्वर्गद्वारम्। अपावृतम्। सुखिनः। क्षत्रियाः। पार्थ। लभंते। युद्धम्। ईदृशम्॥३२॥ (पदार्थः) हे पार्थ प्रयत्नतैं

या तीनोंका शोक करणा संभवता नहीं इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इस प्रकार स्थूलशरीर तथा सूक्ष्मशरीर तथा तिन दोनों शरीरोंका कारणरूप अविद्या या तीन उपाधियोंके अविवेककरिकै मिथ्यारूप संसारविषे सत्यत्व तथा आत्मधर्मत्व आदिकोंकी प्रतीतिरूप तथा सर्वप्राणियोंका साधारण जो अर्जुनका भ्रम है ता अर्जुनके भ्रमकी निवृत्ति करणेवासतै श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति स्थूल सूक्ष्म कारण या तीन उपाधियोंतैं भिन्नकरिकै आत्माका स्वरूप कथन करता भया। अबी युद्धरूप स्वधर्मविषे हिंसादिकोंकी बाहुल्यताकरिकै अधर्मत्वबुद्धिरूप तथा करुणादिक दोषोंकरिकै जन्य ऐसा जो अर्जुनका असाधारण भ्रम है ता असाधारण भ्रमके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् ता अर्जुनकेप्रति ता हिंसाप्रधान युद्धविषेभी स्वधर्मताकरिकै अधर्मपणेका अभाव कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकंपितुमर्हसि ॥ धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥ (पदच्छेदः) स्वधर्मम्। अपि। च। अवेक्ष्य। न। विकंपितुम्। अर्हसि। धर्म्यात्। हि। युद्धात्। श्रेयः। अन्यत्। क्षत्रियस्य। न। विद्यते ॥ ३१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन अपणे क्षत्रियके धर्मकूं देखिकरिकै भी तूं युद्धतैं चलायमान होणेकूं नहीं योग्य है जिस कारणतैं क्षत्रिय राजाकूं धर्मरूप युद्धतैं दूसरा श्रेयका साधन नहीं विद्यमान है ॥ ३१ ॥

टीका। हे अर्जुन! पूर्व उक्त रीतिसैं केवल परमार्थतत्वका विचार करिकेही तूं युद्धतैं निवृत्त होणेकूं योग्य नहीं है किंतु क्षत्रिय राजावोंका जो युद्धतैं पीछे नहीं हटणा या प्रकारका अपराङ्मुखत्व धर्म है ता अपराङ्मुखत्वरूप स्वधर्मकूं शास्त्रतैं विचार करिकेभी तूं ता स्वधर्मरूप युद्धतैं अधर्मत्वकी भ्रांतिकरिकै निवृत्त होणेकूं योग्य नहीं है। यातैं (यद्यप्येते न पश्यंति) इस वचनतैं आदिलेके (नरके नियतं वासो भवति) इस वचन पर्यंत तिन सर्व वचनोंकरिकै जो तुमनैं युद्धविषे पापकी कारणता कथन करी थी तथा (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकरिकै जो तुमनैं युद्धविषे गुरुवोंके वध करणेका तथा ब्राह्मणोंके वध करणेका निषेध करा था सो यह सर्व वार्त्ता तुमनैं धर्मशास्त्रके अविचारतैं कथन करी थी। काहेतैं जिस कारणतैं अपराङ्मुखत्वरूप धर्मसहित जो युद्ध है ता युद्धतैं क्षत्रिय राजाकूं दूसरा कोई श्रेयका साधन है नहीं। किंतु यह युद्धही पृथिवीके जयद्वारा प्रजाका रक्षण तथा ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा इत्यादिक क्षत्रियोंके धर्मका निर्वाह करणेहारा है यातैं क्षत्रिय राजावोंकूं सर्व धर्मोंतैं सो यु

विषे आश्चर्यरूपता है। दूसरा सर्व अर्थ स्पष्ट है इति। और किसी टीकाविषे तौ (आश्चर्यवत्पश्यति) या श्लोकका यह अर्थ करा है। पूर्व श्लोक विषे कथन करा जो भूतभौतिक प्रपंच है ता प्रपंचकू कोईक ब्रह्मवेत्ता पुरुष आश्चर्यवत् देखें हैं। तात्पर्य यह। स्वप्नऐंद्रजालिक पदार्थोंके तुल्य देखे है इति और अन्य विद्वान् पुरुष इस प्रपंचकूं आश्चर्यवत् कथन करे है। तात्पर्य यह। सत् असत्तें विलक्षण या प्रपंचकूं लोक अप्रसिद्ध अनिर्वचनीयरूपकरिकै कथन करे है इति। और अन्य पुरुष इस प्रपंचकूं आश्चर्यवत् श्रवण करे है। तात्पर्य यह। अनात्मरूपकरिकै प्रसिद्ध जो यह प्रपंच है ता प्रपंचविषे 'इमे लोका इमे देवा इमे वेदा इदं सर्वं यदयमात्मा' इत्यादिक श्रुतिकरिकै जो प्रत्यक्आत्मरूपताका श्रवण है सोभी आश्चर्यरूप है इति। और कोईक पुरुष तौ इस प्रपंचका श्रवणकरिकै तथा स्वप्नादिक दृष्टांतोंतें कथन करिकै तथा साक्षात्कारकरिकैभी वास्तवतें जानता नहीं इति ॥ २९ ॥ पूर्वश्लोकोंविषे कथन करा जो सर्व प्राणियोंके प्रति साधारण भ्रमकी निवृत्तिका साधनरूप विचार ता विचारकी अबी समाप्ति करें हैं।

(मू. श्लो) देही नित्यमवध्योयं देहे सर्वस्य भारत ॥ तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥ (पदच्छेदः) देही। नित्यम्। अवध्यः। अयम्। देहे। सर्वस्य। भारत। तस्मात्। सर्वाणि। भूतानि। न। त्वं। शोचितुं। अर्हसि ॥३०॥ (पदार्थः) हे भारत सर्व प्राणियोंके देहके नाश हुएभी यह देही आत्मा नाश होवै नहीं यह वार्त्ता जिस कारणतें नियत है तिस कारणतें तूं अर्जुन इन सर्व भूतोंका शोक करणेकूं नहीं योग्य हैं ॥ ३० ॥

टीका। हे अर्जुन! ब्रह्मातें आदिलेके चींटीपर्यंत जितनेक प्राणी हैं तिन सर्व प्राणियोंके देहके नाश हुएभी यह लिंगदेहरूप उपाधिवाला आत्मा नाशकूं प्राप्त होवै नहीं। जैसे घटरूप उपाधियोंके नाश हुएभी तिन घटोंविषे स्थित आकाश नाश होवै नहीं तैसे तिन देहोंके नाश हुएभी यह आत्मादेव नाश होवै नहीं। जिस कारणतें यह वार्त्ता नियमपूर्वक है तिस कारणतें भीष्मद्रोणादिक भावकूं प्राप्त हुए जो यह स्थूलसूक्ष्मरूप आकाशादिक सर्व भूत हैं तिन भूतोंके उद्देशकरिकै तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं हैं। तात्पर्य यह। इस स्थूल शरीरका तौ अवश्यकरिकै नाश होवैगा। ता नाशके निवृत्त करणेविषे कोईभी समर्थ नहीं है। या कारणतें इस स्थूल शरीरका शोक करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है। और सूक्ष्म लिंगदेह तौ आत्माकी न्याईं शस्त्रादिकोंकरिकै नाश होता नहीं यातें ता लिंगदेहकाभी शोक करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है। यातें स्थूलदेह, लिंगदेह तथा आत्मा

नहीं। जबी श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी कोईक पुरुष इस आत्माकूं नहीं जानि सकै है तबी श्रवणादिकोंकूं नहीं करणेहारे पुरुष इस आत्माकूं नहीं जानैं हैं याके विषे क्या कहणा है। यह वार्त्ता वार्त्तिककार भगवान्नैंभी कथन करी है तहां श्लोक। "कुतस्तज्ज्ञानमिति चेत्तद्धि बंधपरिक्षयात्। असावपि च भूतो वा भावी वा वर्त्ततेऽथवा" इति। अर्थ यह। सो आत्माका ज्ञान किसतैं प्राप्त होवै है ऐसी शिष्यकी शंकाके हुए सो आत्माका ज्ञान प्रतिबंधके नाशतैं प्राप्त होवै है सो प्रतिबंधभी भूतप्रतिबंध भावीप्रतिबंध वर्त्तमानप्रतिबंध यह तीन प्रकारका होवै है। तहां श्रवणादिकालविषे पूर्वदृष्ट अनात्म पदार्थोंका वारंवार स्मरण होणा याका नाम भूतप्रतिबंध है। और जन्मादिकोंकी प्राप्ति करणेहारा जो कोई प्रबल अदृष्टविशेष है ताका नाम भावि प्रतिबंध है और विषयासक्ति, मंदबुद्धि, कुतर्क, विपरीत अर्थविषे दुराग्रह यह चारि प्रकारका वर्त्तमानप्रतिबंध है इति। या तीनों प्रतिबंधोंविषे एक प्रतिबंधभी जिस अधिकारी पुरुषविषे है सो अधिकारी पुरुष श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी आत्माकूं जानि सकै नहीं जैसे वामदेवकूं भावी प्रतिबंधके वशतैं श्रवणादिकोंकरिकै तिस जन्मविषे ज्ञान हुआ नहीं किंतु दूसरे जन्मविषे माताके उदरमें ता प्रतिबंधके नाश हुएतैं ता वामदेवकूं आत्मज्ञानकी प्राप्ति हुई है। यह वार्त्ता आत्मपुराणके प्रथम अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं। और "ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः" या स्मृतिनैं पापकर्मरूप प्रतिबंधके नाशतैं अनंतरही या अधिकारी पुरुषोंकूं ज्ञानकी प्राप्ति कथन करी है। और तिन सर्वप्रतिबंधोंका नाश होणा अत्यंत दुर्लभ है। या कारणतैं यह आत्मादेव दुर्विज्ञेय है इति। इहां (श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्) या वचनका जो यह पूर्व उक्त अर्थ नहीं करिये किंतु इस आत्मादेवकूं श्रवणकरिकैभी कोईभी पुरुष जानि सकता नहीं या प्रकारका जो अर्थ करिये तौ "आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः"। या श्रुतिके साथि या गीताके वचनकी एकवाक्यता सिद्ध नहीं होवैगी। तथा "यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः" या भगवान्के वचनकाभी विरोध होवैगा इति अथवा। (न चैव कश्चित्) या अंत्यके वचनका "कश्चित् एनं न पश्यति कश्चित् एनं न वदति कश्चित् एनं न शृणोति कश्चित् श्रुत्वापि एनं न वेद" या प्रकार सर्वत्र संबंध करणा ताकरिकै यह पंच प्रकार सिद्ध होवैं हैं कोईक पुरुष इस आत्मादेवकूं केवल जानेही है कथन करि सकै नहीं ॥ १ ॥ और कोईक पुरुष तौ इस आत्मादेवकूं जानैभी है तथा कथनभी करै है ॥ २ ॥ और कोईक पुरुष तौ वचनकूं श्रवणभी करै है तथा ता वचनके अर्थकूंभी जानै है ॥ ३ ॥ और कोईक पुरुष वचनकूं श्रवणकरिकैभी ताके अर्थकूं जानता नहीं ॥ ४ ॥ और कोई पुरुष तौ दर्शन कथन श्रवण इन सर्वतैं बहिर्भूत होवै है ॥ ५ ॥ तहां अविद्वान्पक्षविषे असंभावना विपरीतभावनाकरिकै प्रतिबद्ध होणेतैंही ता दर्शन वेदन श्रवण

अत्यंत दुर्विज्ञेय है इति। अब श्रोता पुरुषकी दुर्लभताकूं कथन करिकैभी ता आत्माकी दुर्विज्ञेयता निरूपण करे हैं । (आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद इति) हे अर्जुन ! आत्माकूं साक्षात्कार करणेहारा तथा आत्माका कथन करणेहारा जो मुक्त पुरुष है । ता मुक्त पुरुषतैं भिन्न जो मुमुक्षु जन है । सो मुमुक्षु जन समित्पाणि होइके विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप जाइके जो इस आत्माकूं श्रवण करे है क्या सर्व वेदांतवाक्योंके तात्पर्यका विषयरूपकरिकें निश्चय करे है सोभी अत्यंत आश्चर्यवत हैं। आर ता ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं आत्माका श्रवण करिकैभी मननिदिध्यासनकी परिपक्वताकरिकै जो आत्माका साक्षात्कार करणा है सोभी आश्चर्यवत् है । सो साक्षात्कारकी आश्चर्यरूपता (आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनं) या वचनकरिके पूर्व कथन करि आये हैं। और पूर्वकी न्यांई इहांभी श्रवणका विषय आत्मा तथा श्रवणरूप क्रिया तथा श्रवणकर्त्ता पुरुष या तीनोंकाही आश्चर्यवत् यह विशेषण जानणा। तहां आत्माविषे तथा श्रवणरूप क्रियाविषे तौ पूर्व उक्त आश्चर्यवत्रूपताही जानि लेणी । और श्रवणकर्त्ता पुरुषविषे तौ यह आश्चर्यरूपता है । पूर्व अनेक जन्मौंविषे अनुष्ठान करे जो पुण्यकर्म हैं । तिन पुण्यकर्मोंकारिकै निवृत्त होइ गया है पापरूप मल जिसके मनका तथा गुरुशास्त्रके वचनोंविषे अत्यंत है श्रद्धा जिसकी ऐसे उत्तम अधिकारी पुरुषोंकी जो इस लोकविषे दुर्लभता है सा दुर्लभताही ता श्रोता पुरुषविषे आश्चर्यरूपता है। यह वार्त्ता श्रीभगवान् आपही "मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः" इति । या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे। तहां श्रुतिभी। " श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वंतोपि बहवोयं न विदुः आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः " इति । अर्थ यह । यह आत्मादेव बहुत पुरुषोंकूं तौ श्रवणवासतैंभी नहीं प्राप्त होता । और बहुत पुरुष तौ श्रवण करते हुएभी इस आत्माकूं जानि सकते नहीं । और इस आत्मादेवका वक्ता पुरुषभी बहुत आश्चर्यरूप है । और इस आत्मादेवकूं प्राप्त होणेहारा पुरुषभी बहुत कुशल है । और ब्रह्मवेत्ता कुशल गुरुकरिकै उपदेश करा हुआ इस आत्माके जानणेहारा विद्वान् पुरुषभी आश्चर्यरूप है इति। शंका—हे भगवन् ! जो अधिकारी पुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं वेदांतशास्त्रका श्रवणमनननिदिध्यासन करैगा सो अधिकारी पुरुष ता आत्माकूं अवश्यकरिकै साक्षात्कार करैगा। याके विषे क्या आश्चर्य है । ऐसी अजुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (न चैव कश्चित् इति) या वचनविषे स्थित जो चकार है सो चकार पूर्ववचनविषे स्थित (एनं वेद) या दोनोंके अनुषंगवासतै है। पूर्ववचनविषे स्थित पदका उत्तरवचनविषे संबंध करणेका नाम अनुषंग है। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । कोईक पुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी किसी प्रतिबंधके वशतैं इस आत्माकूं जानि सकता

तहां गंगापदका शक्य अर्थ जो जलका प्रवाह है ता जलके प्रवाहका जैसे तीरके साथि संयोगसंबंध है तैसे ता जलविषे रहणेहारे मत्स्य नौकादिक अनेक पदार्थोंके साथि संयोगसंबंध है । शंका--यद्यपि शक्य अर्थका संबंध अनेक पदार्थोंके साथि होवै है । तथापि जिस अर्थके बोध करावणेविषे वक्ता पुरुषका तात्पर्य होवै है । तिसीही अर्थका ता शब्दतैं बोध होवै है । तिसतैं अन्य अन्य अर्थका बोध होवै नहीं । समाधान । सो वक्ता पुरुषका तात्पर्यभी सर्व श्रोतापुरुषोंके प्रति तुल्यही है । यातैं तिन सर्व श्रोता पुरुषोंकूं ता वक्ताके तात्पर्यतैं तिसी अर्थका बोध होणा चाहिये । सो ऐसा देखणेविषे आवता नहीं । शंका--तिन सर्व श्रोता पुरुषोंविषे कोई एक श्रोताही ता वक्ता पुरुषके तात्पर्यविशेषकूं निश्चय करे है । ते सर्व श्रोता पुरुष तिस तात्पर्यकूं निश्चय करिसकै नहीं । समाधान । या तुमारे कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध होवै है । ता श्रोता पुरुषविषे स्थित जो कोई निर्दोषत्वरूप विशेष धर्म है सो धर्मही ता वक्ता पुरुषके तात्पर्यका निश्चय करावणेहारा है इति । सो तात्पर्यका निश्चायक निर्दोषत्वरूप विशेष धर्म हमारे मतविषेभी किसीतैं निवृत्त करा जावै नहीं । यातैं जिस शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूं वक्ताके तात्पर्य निश्चयपूर्वक भागत्यागलक्षणाकरिकै तत्त्वमसि आदिक महावाक्यके अर्थका बोध तुमोंनैं अंगीकार करीता है तिसी शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूंही 'तत्वमसि' आदिक शब्दविशेष शक्तिलक्षणादिरूप संबंधतैं विनाही अखंड चैतन्यवस्तुका साक्षात्कार उत्पन्न करे हैं । यातैं इस हमारे शक्तिलक्षणादिक संबंधके अनंगीकारपक्षविषे किंचित्मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवै नहीं । उलटा इस हमारे पक्षविषे "यतो वाचोनिवर्त्तंते" या श्रुतिका अर्थभी संकोचतैं विनाही सिद्ध होवै है । और लक्षणाअंगीकारपक्षविषे तौ याश्रुतिका जिस आत्माकूं शक्तिवृत्तिकारिकै वचन बोधन नहीं करे हैं या प्रकारका संकोच करणा होवै है इति । यहही भगवानूका अभिप्राय वार्त्तिककार सुरेश्वराचार्यनैंभी "अगृहीत्वैव संबंधमभिधानाभिधेययोः । हित्वा निद्रां प्रबुध्यंते सुषुप्तेर्बोधिताः परैः" इत्यादिक श्लोकोंकारिकै वर्णन करा है । तिन श्लोकोंका यह अभिप्राय है । शब्दकी अचिंत्यशक्ति होवै है । यातैं जैसे सुषुप्तिकूं प्राप्त हुए पुरुषोंकू ता कालविषे शब्द अर्थ या दोनोंके शक्तिलक्षणादिक संबंधोंका ज्ञान है नहीं । तथापि ते सुषुप्त पुरुष अन्य पुरुषों नैं हे देवदत्त ! इत्यादिक शब्दोकारिकै बोधन करे हुए ता सुषुप्तितैं जाग्रत्कूं प्राप्त होवै हैं । तैसे यह शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषभी शक्तिलक्षणादिक संबंधके ज्ञानतैं विनाही तत्वमसि आदिक वाक्योंतैं अद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कार करे हैं । इसतैं आदिलेके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्‌रूपता ता वदनरूप क्रियाविषे है इति । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । वचनका विषय आत्मा तथा ता वचनका वक्ता विद्वान् पुरुष तथा सा वचनरूप क्रिया यह तीनों अत्यंत आश्चर्यरूप हैं । या कारणतैं सो आत्मादेव

अंत्यत दुर्लभ है । या प्रकारके अभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहे हैं । (आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः इति) हे अर्जुन ! इस आत्मादेवकूं अन्य पुरुष आश्चर्यवत् कथन करे है । इहां (अन्यः) या शब्दकरिकै सर्व अज्ञानी जनोंतैं विलक्षण पुरुषका ग्रहण करणा । कोई आत्माके देखणेहारे पुरुषतैं भिन्न पुरुषका ग्रहण नहीं करणा । काहेतैं जो पुरुष जिस वस्तुकूं जाने है । सो पुरुषही तिस वस्तुका कथन करे है । तिस वस्तुके ज्ञानतैं विना तिस वस्तुका कथन संभवै नहीं । यातैं आत्माके जानणेहारे पुरुषतैं भिन्न पुरुषका जो अन्य शब्दकरिकै ग्रहण करियें तौ वदतोव्याघातदोषकी प्राप्ति होवैगी इति । इहांभी (एनं) या शब्दकरिकै कथन करा जो आत्मारूप कर्म है तथा (वदति) या शब्दकरिकै कथन करी जो वदनरूप क्रिया है तथा (अन्यः) या शब्दकरिकै कथन करा जो ता वदनरूप क्रियाका कर्त्ता है या तीनोंकाही आश्चर्यवत् यह विशेषण जानणा । तहां आत्मारूप कर्मविषे तथा विद्वान् पुरुषरूप कर्त्ताविषे आश्चर्यवतरूपता इसी श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं सो इहांभी जानि लेणा । अब वदनरूप क्रियाविषे आश्चर्यवत्‌रूपता निरूपण करे हैं । हे अर्जुन ! सर्व शब्दोंका अवाच्य जो आत्मा देव है ता आत्मादेवका जो कथन है सो कथनभी आश्चर्यवत् है । तहां श्रुति । “ यतो वाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसा सह ” । अर्थ यह । मनसहित वाणीभी जिस आत्माकूं न प्राप्त होइके जिस आत्मातैं निवृत्त होइ आवै हैं इति । तात्पर्य यह । अविद्या अंतःकारणादिक विशिष्ट अर्थविषे है शक्ति जिनोंकी तथा भागत्यागलक्षणाकरिकै कल्पित है संबंध जिनोंका ऐसे जो तत् त्वं आदिक शब्द हैं तिन शब्दोंकरिकै सर्व धर्मों तैं रहित शुद्ध आत्माका जो निर्विकल्पक साक्षात्काररूप प्रतिपादन है सो अत्यंत आश्चर्यरूप है । जिस कारणतैं लोकविषे किसी जातिगुणादिक धर्मोंकूं अंगीकार करिकैही शब्द अपणे अर्थकूं बोधन करे है । जातिगुणादिक धर्मों तैं विना किसीभी अर्थकूं शब्द बोधन करता नहीं इति । अथवा । सुषुप्त पुरुषके उठावणेहारे वचनकी न्यांई इन तत्वमसि आदिक वाक्यों नैं शक्तिरूप संबंधतैं विनाही तथा लक्षणारूप संबंधतैं विनाही तथा अन्य किसी संबंधतैं विनाही जो शुद्ध आत्माका प्रतिपादन करीता है सो अंत्यत आश्चर्यवत् है । जिस कारणतैं शब्दका सामर्थ्य किसी पुरुषतैंभी चिंतन करा जावै नहीं । शंका—शक्तिलक्षणादिक संबंधतैं विनाही सो शब्द जो कदाचित् अपणें अर्थका बोधन करता होवै तौ तिस शब्दतैं किसी दूसरे पदार्थकाभी बोध होणा चाहिये । ता शब्दके संबंधका अभाव सर्व पदार्थोंविषे तुल्यही है । समाधान । यह दोष लक्षणाअंगीकारपक्षविषेभी तुल्यही है । काहेतैं शक्यअर्थके संबंधका नाम लक्षणा है । सा शक्यसंबंधरूप लक्षणाभी अनेक पदार्थोंविषे रहे है । यातैं तिन सर्व पदार्थोंका बोध होणा चाहिये । जैसे गंगाविषे ग्राम है या वचनविषे स्थित जो गंगापद है ता गंगापदकी तीरविषे लक्षणा होवै है ।

अर्थरूप जो आत्माकी दर्शनरूप क्रिया है । सा दर्शनरूप क्रियाभी आश्चर्यवत् है । काहेतैं जो अंतःकरणका वृत्तिरूप ज्ञान स्वरूपतैं मिथ्यारूप हुआभी सत्य आत्माका अभिव्यंजक है । तथा जो ज्ञान अविद्याका कार्यरूप हुआभी ता अविद्याकूं नाश करै है । तथा जो ज्ञान अविद्यारूप कारणकूं नाश करता हुआ ता अविद्याका कार्य होणेतैं अपणेकूंभी नाश करै है । इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्रूपता ता ज्ञानरूप दर्शनविषे है इति । अब ता दर्शनरूप क्रियाके विद्वान्रूप कर्ताविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपण करे हैं । (कश्चित्) या शब्दकरिकै कथन करा जो आत्मसाक्षात्कारवान् पुरुष है सो विद्वान् पुरुषभी आश्चर्यवत् है । काहेतैं यह विद्वान् पुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यातैं तथा अविद्याके कार्य तैं रहित हुआभी प्रारब्धकर्मकी प्रबलतातैं अज्ञानी पुरुषकी न्यांई व्यवहार करे है । तथा यह विद्वान् पुरुष सर्वदा समाधिविषे स्थित हुआभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै है । तथा यह विद्वान् पुरुष व्युत्थानकूं प्राप्त हुआभी पुनः समाधिकूं अनुभव करै है । इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्रूपता ता विद्वान् पुरुषविषे है इति । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जो आत्मा तथा जिस आत्माका ज्ञान तथा जिस आत्माके जानणेहारा पुरुष यह तीनों आश्चर्यरूप हैं । तिस परम दुर्विज्ञेय आत्माकूं तूं विनाही प्रयत्नतैं किसप्रकार जानि सकैगा । किंतु प्रयत्नतैं विना ता आत्माका जानणा अत्यंत कठिन है इति । इस प्रकार उपदेश करणेहारे ब्रह्मवेत्ता पुरुषके अभावतैंभी आत्मा दुर्विज्ञेय है । काहेतैं जो विद्वान् पुरुष आप आत्माकूं अपरोक्ष जाने है । सो विद्वान् पुरुषही दूसरे अधिकारी पुरुषके प्रति तिस आत्माका उपदेश करि सकै है । और जो पुरुष आपही आत्माकूं नहीं जानता । सो अज्ञानी पुरुष दूसरे किसीके प्रति आत्माका उपदेश करि सकै नहीं । और जो विद्वान् पुरुष आत्माकूं अपरोक्ष जाने है । सो विद्वान् पुरुष विशेषकरिकै तौ समाधियुक्तही होवै है । यातैं सो समाधिविषे जुड्या हुआ ब्रह्मवेत्ता पुरुष दूसरे अधिकारी पुरुषोंके प्रति किस प्रकार आत्माका उपदेश करैगा । किंतु नहीं करैगा । जिस कारणतैं चित्तकी बाह्यवृत्तितैं विना उपदेश करणा संभवता नहीं । और जिस ब्रह्मवेत्ता पुरुषका चित्त ता समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त हुआ है । सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष यद्यपि अधिकारीजनोंके प्रति आत्माके उपदेश करणेविषे समर्थ है तथापि सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष दूसरे अधिकारी पुरुषोंकूं जानणा कठिन है । और जो जो कदाचित् यह अधिकारी पुरुष जिस किसी प्रकारकरिकै ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं जानैभी तौभी सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष लाभ पूजा ख्याति आदिक प्रयोजनकी अपेक्षा करै नहीं । यातैं सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष ता अधिकारी पुरुषके प्रति आत्माका उपदेश नहीं करैगा । और सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष जो कदाचित् जिस प्रकारतैं कृपामात्रकरिकै ता अधिकारी पुरुषके प्रति आत्माका उपदेश करैभी तौभी ऐसा कृपालु ब्रह्मवेत्ता पुरुष ईश्वरकी न्यांई

(मू. श्लो.) आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ॥ आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ २९ ॥ (पदच्छेदः) आश्चर्यवत् । पश्यति । कश्चित् । एनम् । आश्चर्यवत् । वदति । तथा । एवं । च । अन्यः । आश्चर्यवत् । च । एनम् । अन्यः । शृणोति । श्रुत्वा । अपि । एनं । वेद । न । च । एव । कश्चित् ॥ २९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन कोईक पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत् देखता है तथा अन्य कोई पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत्ही कथन करे है तथा अन्य कोई पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत् श्रवण करे है तथा कोईक पुरुष इस आत्माकूं श्रवणकरिकेभी नहीं जाने है ॥ २९ ॥

टीका। (एनं) या पदकरिकै कथन करा जो आत्मारूप कर्म है। तथा (पश्यति) या पदकरिके कथन करी जो दर्शनरूप क्रिया है। तथा (कश्चित्) या पदकरिकै कथन करा जो अधिकारी पुरुषरूप कर्त्ता है। या तीनोंकाही (आश्चर्यवत्) यह विशेषण है। तहां प्रथम आत्मारूप कर्मविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपण करैं हैं। हे अर्जुन! यह आत्मादेव आश्चर्यवत् है क्या अद्भुत पदार्थके समान है। तथा अविद्याकरिकै कल्पित नानाप्रकारकै विरुद्धकर्मवाला हुआ प्रतीत होवे है। या कारणतैं यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्वदा विद्यमान हुआभी अविद्यमान हुएकी न्याईं प्रतीत होवे है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं स्वप्रकाशचैतन्यरूप हुआभी जडकी न्याईं प्रतीत होवे है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं आनंदरूप हुआभी दुःखी हुएकी न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित हुआभी विकारवान्की न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं नित्य हुआभी अनित्यकी न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं प्रकाशमान् हुआभी अप्रकाशमान्की न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं ब्रह्मतैं अभिन्न हुआभी भिन्न हुएकी न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्वदा मुक्त हुआभी बद्ध हुएकी न्याईं प्रतीत होवै है। तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं अद्वितीयरूप हुआभी सद्वितीयकी न्याईं प्रतीत होवै है। इसतैं आदिलेके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत् रूपता आत्माविषे है। ऐसे आश्चर्यवत् आत्माकूं शमदमादिक साधनसंपन्न तथा अंत्यशरीरवाला कोईक पुरुषही गुरुशास्त्रके उपदेशतैं अविद्यारचित सर्व द्वैतप्रपंचका निषेध करिकै परमात्माके स्वरूपमात्रकूं विषय करणेहारी तथा महावाक्यरूप वेदांतकरिकै जन्य तथा सर्व पुण्यकर्मोंकी फलरूप ऐसी अंतःकरणकी वृत्तिविषे साक्षात्कार करै है। अब दर्शनरूप क्रियाविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपण करै हैं। (पश्यति) या शब्दका

तन्नामरूपाभ्यामेव व्याक्रियत इति"। अर्थ यह। यह आकाशादिक प्रपंच अपणी उत्पत्तितैं पूर्व अव्याकृतरूप होता भया सो अव्याकृतरूप प्रपंच सृष्टिकालविषे नामरूपकरिकै प्रगट होता भया इति । इत्यादिक श्रुति मायाउपहित चैतन्यरूप आव्यक्तकूंही अकाशादिक सर्व प्रपंचका उपादानरूप तथा आधाररूप कथन करैं हैं। और ता उपादानरूप अव्यक्तकूं या आकाशादिक प्रपंचके लयकी स्थानरूपता तौ अर्थतैंही सिद्ध होवै है काहेतैं कार्यका अपणे उपादानकारणविषेही लय देखणेमें आवै है । उपादानकारणकूं छोडिकै किसी अन्य पदार्थविषे कार्यका लय होवै नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया अज्ञानकरिकै कल्पित होणेतैं अत्यंत तुच्छ जो यह आकाशादिक पंचभूत हैं तिन भूतोंका उद्देश करिकैभी जबी तुम्हारेकूं शोक करणा उचित नहीं भया तबी तिन आकाशादिक भूतोंका कार्यरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक शरीर हैं तिन शरीरोंका उद्देशकरिकै शोक करणा उचित नहीं है याकेविषे क्या कहणा है इति । अथवा आकाशादिक पंचभूत तथा तिन्होंके कार्य शरीरादिक अपणे अव्यक्त रूपकरिकै सर्वदा विद्यमान हैं किसीभी कालविषे तिन्होंका नाश होवै नहीं यातैं तिन्होंके उद्देशकरिकै प्रलाप करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है। इहां। (हे भारत) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा तूं शुद्धवंशविषे उत्पन्न हुआ है यातैं तूं शास्त्रके अर्थकूं निश्चय करणे योग्य है ता शास्त्रके अर्थकूं तूं क्यूं नहीं निश्चय करता इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! या लोकविषे शास्त्रके अर्थकूं जानणेहारे बहुत विद्वान् पुरुषभी शोक करते हुए देखणेविषे आवते हैं यातैं तूं विद्वान् होइके शोक किसवासते करता है या प्रकारका उपालंभ वारंवार हमारेकूं आप किसवासतै देते हो। किंवा शास्त्रविषे यह कह्या है। "वक्तुरेव हि तज्जाड्यं श्रोता यत्र न बुद्ध्यते" अर्थ यह । जहां श्रोता बोधकं नहीं प्राप्त होवै तहां वक्ताकीही जडता जानणी इति। यातैं तुम्हारे वचनके अर्थका नहीं बोध होणाभी हमारेकूं दोष नहीं है । समाधान—हे अर्जुन ! जैसे तुम्हारेकूं आत्माके अज्ञानतैंही शोक हुआ है तैसे अन्यभी विद्वानोंकूं जो शोक होवै है सोभी आत्माके अज्ञानतैंही होवै है । और जैसे अन्य पुरुषोंकं आत्माके प्रतिपादक शास्त्रोंके अर्थका जो नहीं बोध हुआ है सो अपणे अंतःकरणके दोषतैं नहीं हुआ है कोई वक्ता पुरुषके दोषतैं नहीं। तैसे तुम्हारेकूं जो हमारे वचनके अर्थका बोध नहीं भया है सोभी अपणे अंतःकरणके दोषतैं नहीं भया है याकेविषे कोई हमारा दोष नहीं है यातैं तुम्हारे पूर्व उक्त दोनों दोष संभवते नहीं। या प्रकारके अभिप्राय करिकै श्रीभगवान् आत्माके दुर्विज्ञेयताकूं निरूपण करैं हैं।

अव्यक्तादीनि । भूतानि । व्यक्तमध्यानि । भारत । अव्यक्तनिधनानि । एव । तत्र । का । परिदेवना ॥ २८ ॥ (पदार्थः) हे भारत यह शरीर आदिकालविषे अव्यक्त हैं तथा मध्यकालविषे व्यक्त हैं तथा मरणकालविषेभी अव्यक्तही हैं ऐसे शरीरोंविषे दुःखजन्य प्रलाप क्या करणा है ॥ २८ ॥

टीका । हे भारत ! पृथिवी आदिक पंच भूतोंका समुदायरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक नामवाले स्थूल शरीर हैं ते यह शरीर अपणी उत्पत्तितैं पूर्व प्रतीत होवैं नहीं । और यह शरीर जन्मतैं अनंतर तथा मरणतैं पूर्व मध्यकालविषे प्रतीत होवैं हैं । और मरणतैं अनंतरभी यह शरीर प्रतीत होवैं नहीं । यातैं यह शरीर आदिकालविषे तथा अंतकालविषे तौ अव्यक्त हैं तथा मध्यकालविषे व्यक्त हैं । नहीं प्रतीत होणेका नाम अव्यक्त है और प्रतीत होणेका नाम व्यक्त है । जैसे स्वप्नके पदार्थ तथा इंद्रजालके पदार्थ तथा रज्जुसर्पादिक अपणी प्रतीतिके समानकालविषेही स्थित होवैं हैं अपणी प्रतीतितैं पूर्वउत्तरकालविषे स्थित होवैं नहीं तैसे यह शरीरभी केवल मध्यकालविषेही प्रतीत होवैं हैं । पूर्वउत्तरकालविषे प्रतीत होवैं नहीं । और "आदावंते च यन्नास्ति वर्त्तमानेपि तत्तथा" । अर्थ यह । जो पदार्थ आदिकालविषे तथा अंतकालविषे नहीं होवै है सो पदार्थ मध्यकालविषेभी नहीं होवै है जैसे स्वप्नादिकोंके पदार्थ आदिअंतकालविषे नहीं हैं यातैं मध्यकालविषेभी नहीं हैं । तैसे यह शरीरभी आदिकालविषे तथा अंतकालविषे हैं नहीं यातैं मध्यकालविषेभी नहीं हैं । ऐसे मिथ्यारूप अत्यंत तुच्छ शरीरोंविषे दुःखजन्य प्रलाप करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है जैसे स्वप्नविषे अपणे बांधवोंकूं तथा धनकूं प्राप्त होइकै जाग्रत् अवस्थाविषे तिन बांधव धनादिकोंके नाशकरिकै कोई मूढ पुरुषभी शोक करता नहीं । तैसे या अनित्य भीष्मद्रोणादिक शरीरोंका उद्देश करिकै तुम्हारेकूं शोक करणा योग्य नहीं है इति । अथवा । भूतशब्दकरिकै आकाशादिक पंचमहाभूतोंका ग्रहणकरणा ता पक्षविषे या श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करणी । अव्याकृत नामा जो अविद्याउपहित चैतन्य है ताका नाम अव्यक्त है सो अव्यक्त है पूर्व अवस्था जिन आकाशादिक भूतोंकी तिन आकाशादिक भूतोंका नाम अव्यक्तादि है । तथा नामरूपकरिकै प्रगटरूप है स्थिति अवस्था जिन आकाशादिक भूतोंकी तिन आकाशादिक भूतोंका नाम व्यक्तमध्य है । और जैसे घटशरावादिक कार्योंका मृत्तिकारूप उपादानकारणविषे लय होवै है तैसे अव्यक्तरूप अपणे कारणविषे निधन क्या प्रलय है जिन आकाशादिक भूतोंका तिन आकाशादिक भूतोंका नाम अव्यक्तनिधन है । तहां श्रुति "तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासी

अदृष्टदुःखके भयकरिकै शोक करणेकूं योग्य नहीं है इति । किंवा । अग्निहोत्रादिक नित्यकर्मोंकी न्यांई जो कदाचित् युद्धकूं नित्यकर्मरूप नहीं अंगीकार करिये किंतु ता युद्धकूं केवल काम्यकर्मरूपही अंगीकार करिये । तहां याज्ञवल्क्यस्मृति ॥ " य आहवेषु युध्यंते भूम्यर्थमपराङ्मुखाः । अकूटैरायुधैर्यांति ते स्वर्गं योगिनो यथा " । अर्थ यह । जे योद्धा पुरुष भूमिके राजकी प्राप्तिवासतै युद्धविषे कपटतैं रहित शस्त्रोंकरिकै युद्ध करैं हैं तथा ता युद्धतैं विमुख होते नहीं ते योद्धा पुरुष योगी पुरुषोंकी न्यांई स्वर्गकूं प्राप्त होवैं हैं इति । या वचनकरिकै युद्धविषे काम्यकर्मरूपता प्रतीत होवै है । तथा (हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीं) या भगवान्के वचनतैंभी ता युद्धविषे काम्यकर्मरूपताही प्रतीत होवै है तथापि प्रारंभ करा हुआ काम्यकर्मभी अवश्यकरिकै समाप्त करणेयोग्य होवै है यातैं सो प्रारंभ करा हुआ काम्यकर्मभी नित्यकर्मके तुल्यही होवै है और यह युद्धरूप कर्मभी पूर्व तुमनैं प्रारंभ करा है यातैं इस युद्धविषे काम्यकर्मरूपताके अंगीकार किये हुएभी नित्यकर्मकी न्यांई यह युद्धरूप कर्म तुम्हारेकूं परित्याग करणेकूं अशक्य है इति । अथवा । (अथ चैनं नित्यजातं) यह श्लोक तथा (जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः) यह श्लोक यह दोनों श्लोक आत्माके नित्यत्वपक्षविषेही हैं । आत्माके अनित्यत्वपक्षविषे ते दोनों श्लोक नहीं हैं काहेतैं परम आस्तिक जो अर्जुन है ता अर्जुनविषे वेदबाह्य नास्तिकोंके मतका अंगीकार करणा संभवता नहीं या पक्षविषे ता श्लोकके अक्षरोंकी या प्रकारतैं योजना करणी । जो वस्तु वास्तवतैं नित्य हुआही देहइंद्रियादिकोंके संबंधके वशतैं जन्मे हुएकी न्यांई प्रतीत होवै ताका नाम नित्यजात है । ऐसे वास्तवतैं नित्य हुए आत्माकूंभी जो तूं जन्म्या हुआ मानै तथा वास्तवतैं नित्य हुए आत्माकूंभी जो तूं मरा हुआ मानै तौभी तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं है इति । इस प्रकारकी प्रतिज्ञा प्रथम श्लोकविषे करिकै ता प्रतिज्ञाकी सिद्धि करणेवासतै द्वितीय श्लोककरिकै हेतु कहैं हैं । (जातस्य हि इति) यद्यपि नित्यवस्तुका जन्ममरण संभवै नहीं तथापि उपाधिके जन्ममरणतैं ता नित्यवस्तुविषेभी जन्ममरणका व्यवहार पूर्व कथन करि आये हैं । दूसरा सर्व अर्थ स्पष्टही है इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥

तहां पूर्व प्रसंगविषे सर्व प्रकारतैं आत्माके अशोच्यत्वका निरूपण करा । अब आत्माकूं शोकका अविषय हुएभी भूतोंका समुदायरूप इन भीष्मद्रोणादिक शरीरोंका उद्देश करिकै मैं शोक करता हूं या प्रकारकी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता शंकाकी निवृत्ति करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ॥ अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥ (पदच्छेदः)

स्वभाववाला यह आत्मा है। ता आत्माका तिन प्रारब्धकर्मोंके नाशतैं अनंतर तिन देहइंद्रियादिकोंके संबंधकी निवृत्तिरूप मरण अवश्यकरिकै होवै है काहेतैं या लोकविषे जिन जिन पदार्थोंका कर्मके वशतैं संयोग होवै है तिन तिन पदार्थोंका अंतविषे अवश्यकरिकै वियोग होवै है। और जिस आत्माका सो मरण होवै है तिस आत्माका पूर्व शरीरविषे करे हुए पुण्यपापकर्मोंके फल भोगणेवासतै अवश्यकरिकै जन्म होवै है। इहां यद्यपि मृत्युकूं प्राप्त हुएका अवश्यकरिकै जन्म होवै है या प्रकारके नियमका जीवन्मुक्त पुरुषविषे व्यभिचार होवै है काहेतैं जीवन्मुक्त पुरुषका मृत्यु तौ होवै है परंतु ता जीवन्मुक्त पुरुषका पुनः जन्म होवै नहीं तथापि संचितकर्मवाले पुरुषका मरणतैं अनंतर अवश्यकरिकै जन्म होवै है या अर्थविषे श्रीभगवान्का तात्पर्य है जीवन्मुक्त पुरुषके ज्ञानरूप अग्निकरिकै सर्व संचित कर्म भस्म होइ जावैं हैं यातैं ता जीवन्मुक्त पुरुषकूं मरणतैं अनंतर पुनः जन्मकी प्राप्ति होवै नहीं इति। तिस कारणतैं निवृत्त करणेकूं अशक्य ऐसा जो यह जन्ममरणरूप अर्थ है ता अर्थविषे तूं विद्वान् शोक करणेकूं योग्य नहीं है। यह वार्त्ता श्रीभगवान् (ऋतेपि त्वान्न भविष्यंति सर्वे) या वचनकरिकै आगे कथन करैंगे। तात्पर्य यह। जो कदाचित् तुमनैं युद्ध करिकै नहीं हनन करे हुए यह भीष्मद्रोणादिक जीवतेही रहैं तौ तिन भीष्मद्रोणादिकोंके साथि युद्ध करणेविषे तुम्हारेकूं शोक करणा उचित होवै परंतु यह भीष्मद्रोणादिक तौ तुम्हारे युद्धतैं विना आपही कर्मके क्षयतैं मृत्युकूं प्राप्त हो वैं गे तिन भीष्मद्रोणादिकोंके मृत्युके निवृत्त करणेविषे तुम्हारा सामर्थ्य है नहीं यातैं तुम्हारेकूं दृष्टदुःखजन्य शोक करणा उचित नहीं है इति। इस प्रकार अदृष्टदुःखजन्य शोककी शंकाविषेभी (तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि) यहही उत्तर जानि लेणा। इहां इस लोकविषे बांधवोंके मरणजन्य जो दुःख है ताका नाम दृष्टदुःख है और परलोकविषे पापकर्मजन्य जो दुःख है ताका नाम अदृष्टदुःख है तहां अदृष्टदुःखजन्य शोकपक्षविषे (अपरिहार्येर्थे) या वचनका यह अर्थ करणा। जैसे ब्राह्मणकूं अग्निहोत्रादिक कर्म नियमतैं करणे योग्य हैं तैसे क्षत्रिय राजाकूं युद्धरूप कर्मभी नियमतैं करणे योग्य हैं। और जैसे ज्योतिष्टोमादिक यज्ञोंविषे पशुवोंकी हिंसा करणेतैं दोष होवै नहीं तैसे युद्धविषेभी बांधवादिकोंकी हिंसा करणेतैं दोष होवै नहीं। तहां गौतमस्मृति। "न दोषो हिंसायामाहवे इति"। अर्थ यह। युद्धविषे हिंसाके करणेतैं दोष होवै नहीं इति। यह सर्व वार्त्ता (स्वधर्ममपि चावेक्ष्य) इस श्लोकविषे आगे स्पष्ट होवैगी यातैं जैसे वेदनैं विधान करे जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं तिन विहित कर्मोंके न करणेतैं ब्राह्मणकूं प्रत्यवायकी प्राप्ति होवै है या कारणतैं ते अग्निहोत्रादिक कर्म परित्याग करणेकूं अशक्य हैं। तैसे वेदविहित होणेतैं परित्याग करणेकूं अशक्य जो यह युद्धरूप अर्थ है ता युद्धरूप अर्थविषे तूं

अर्जुनका संबोधन दिया है। यातें (हे महाबाहो) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनका उपहास सूचन करा है इति । अथवा (हे महाबाहो) या संबोधनके कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुन ऊपरि अपणी कृपा सूचन करी क्या सर्व पुरुषोंविषे श्रेष्ठ जो तूं अर्जुन है तिस तुम्हारेविषे आत्मा अनित्य है या प्रकारकी कुदृष्टि संभवती नहीं इति । तहां विज्ञानरूप आत्मा क्षणिक है इस पक्षविषे तथा यह स्थूल देहही आत्मा है या पक्षविषे तथा देहके साथही आत्मा जन्ममरणकूं प्राप्त होवै है या पक्षविषे दूसरे जन्मका तौ अभावही है यातैं इन तीनों पक्षोविषे पापका भय संभवता नहीं और पापके भय करिकैही तूं शोककूं करता है । इन तीनों पक्षोंविषेभी आत्मा क्षणिक है या पक्षविषे तौ दृष्टदुःखभी संभवै नहीं काहेतैं जिस बांधवोंके नाशके दर्शनतैं सो दृष्टदुःख होवे है सो बांधवोंके नाशका दर्शन ता क्षणिक आत्माविषे संभवताही नहीं । यह क्षणिक पक्षविषे दूसरे पक्षोंतैं अधिकता है। और ता क्षणिक पक्षतैं भिन्न दूसरे पक्षोंविषे तौ दृष्टदुःख तथा ता दृष्टदुःखजन्य शोक संभव होइ सकै है । या अर्थके जनावणे वास्तैही श्रीभगवान्नैं (एवं) यह शब्द कथन करा है । क्या ता पक्षविषे दृष्टदुःखजन्य शोकके संभव हुएभी अदृष्टदुःखजन्य शोक करणा सर्व प्रकारतैं तुम्हारेकूं उचित नहीं है इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! पूर्व उक्त तीन पक्षोंविषे यद्यपि शोक करणा उचित नहीं है तथापि जिस पक्षविषे सृष्टिके आदिकालतैं लैके प्रलयपर्यंत आत्मा स्थिर रहै है तथा जिस तार्किकके पक्षविषे आत्मा सर्वदा नित्य है तिन दोनों पक्षोंविषे दृष्टदुःख तथा अदृष्टदुःख यह दोनों प्रकारका दुःख संभवै है यातैं ता दृष्टअदृष्टदुःखके भयकारिकै मैं शोक करता हूं ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् द्वितीय श्लोककरिकै ताका उत्तर कहैं हैं ।

(मू. श्लो) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ॥ तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७॥ (पदच्छेदः) ॥ जातस्य । हि । ध्रुवः । मृत्युः । ध्रुवम् । जन्म । मृतस्य । च । तस्मात् । अपरिहार्ये । अर्थे । न । त्वं । शोचितुम् । अर्हसि ॥२७॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिसै कारणतैं जन्मकूं प्राप्त हुए आत्माका अवश्यकरिकै मृत्यु होवै है तैसा मरणकूं प्राप्त हुएका अवश्य करिकै जन्म होवै है तिसै कारणतैं निवृत्त करणेकूं अशक्य जन्ममरणरूप अर्थविषे तूं शोकै करणेकूं नहीं योग्य है ॥ २७ ॥

टीका । पूर्वजन्मोंविषे करे जो पुण्यपापरूप कर्म हैं तिन कर्मोंके वशतैं प्राप्त भया है शरीरइंद्रियादिकोंका संबंधरूप जन्म जिसकूं ऐसा जो स्थिर

औपाधिक होणेतैं अमुख्य हैं मुख्य नहीं इति । इस प्रकार कोईक वादी आत्माकूं अनित्य मानैं हैं । और कोईक वादी ता आत्माकूं नित्य मानैं हैं। तहां आत्मा अनित्य है या पक्षविषेभी श्रीभगवान् आत्माके शोकका निषेध करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥ (पदच्छेदः) अथ । च । एनं । नित्यजातं । नित्यं । वा । मन्यसे । मृतं । तथापि । त्वं । महाबाहो । न । एवं । शोचितुम् । अर्हसि ॥ २६ ॥ (पदार्थः) अनित्यपक्षविषे भी जो तूं इस आत्माकूं नित्यही जन्म्या हुआ तथा नित्यही मरा हुआ मानता होवैं तथापि हे महाबाहो अर्जुन तूं इस प्रकारका शोक करणेकूं नहीं योग्य हैं ॥ २६ ॥

टीका । हे अर्जुन ! यह आत्मादेव अत्यंत दुर्बोध है यातैं वारंवार ता आत्माके श्रवण हुएभी ता आत्माके निश्चय करणेकी असामर्थ्यतातैं पूर्व कथन करे हुए हमारे पक्षका नहीं अंगीकार करिकै जो तूं किसी दूसरे पक्षका अंगीकार करता होवै ता दूसरे पक्षविषेभी आत्मा अनित्य है या अनित्य पक्षकूं आश्रयण करिकै जो तूं इस आत्मादेवकूं नित्यही जन्म्या हुआ तथा नित्यही मरा हुआ मानता होवै तहां विज्ञानरूप आत्मा क्षणिक है या क्षणिक पक्षविषे तौ नित्य या शब्दका प्रतिक्षण यह अर्थ करना । क्या आत्माकूं क्षणक्षणविषे जो तूं जन्म्या हुआ तथा मरा हुआ मानता होवै इति । और ता क्षणिक पक्षतैं भिन्न दूसरे पक्षोंविषे तौ ता नित्यशब्दका आवश्यक होणेतैं नियत यह अर्थ करणा । क्या यह देवदत्त नामा पुरुष जन्म्या है तथा यह देवदत्तनामा पुरुष मरा है या प्रकारकी लौकिक प्रतीतिके वशतैं नियमकरिकै जो तूं आत्माका जन्ममरण कल्पना करता होवै तथापि हे महाबाहो अर्जुन ! (अहो बत महत्पापं कर्त्तुं व्यवसिता वयं) या प्रकारके शोक करणेकूं तूं योग्य नहीं है काहेतैं जैसे भीष्मद्रोणादिक आत्मा नित्यही जन्म मरणवाले हैं तैसे तूं आपभी नित्यही जन्ममरणवाला है । इहां (हे महाबाहो !) या संबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनका उपहास सूचन करा । जैसे या लोकविषे जो कोई पुरुष किसी निकृष्ट कर्मकं करै है तिस कालविषे ता पुरुषके मातापितादिक वृद्ध पुरुष ता पुरुषके प्रति तूं हमारे कुलविषे बहुत सुपुत्र उत्पन्न हुआ है या प्रकारका वचन कहैं हैं सो वचन ता पुरुषके उपहासकूंही सूचन करै है । तैसे अत्यंत बहिर्मुख पुरुषोंनैं अंगीकार करा जो आत्माका अनित्यपणा है ता अनित्यपणेकूं सो अर्जुन अंगीकार करता भया । ता कालविषे श्रीभगवान्नैं (हे महाबाहो) यह

निर्विकार नित्य आत्माकूं न जाणिकरिकै जो तूं पूर्व शोक करता भया है सो तुम्हारेकूं युक्त था परंतु अबी हमारे उपदेशतैं आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानिकरिकै तुम्हारेकूं शोक करणा उचित नहीं है। तहां श्रुति। "तरति शोकमात्मवित्"। अर्थ यह। आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा विद्वान् पुरुष सर्व शोकोंतैं रहित होवै है इति ॥ २५ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे आत्मा जन्ममरणादिक विकारोंतैं रहित है या कारणतैं तूं शोक करणेकूं योग्य नही है। यह वार्त्ता भगवानूनैं अर्जुनकेप्रति कथन करी। अब ता आत्माविषे जन्ममरणादिक विकारोंकूं अंगीकार करिकैभी तूं शोक करणेकूं योग्य नही है या अर्थकूं श्रीभगवान् दो श्लोकोंकरिकै प्रतिपादन करे हैं। तहां आत्मा विज्ञानस्वरूप है तथा क्षणक्षणविषे विनाशकूं प्राप्त होवै है या प्रकारका आत्मा सौगत मानैं हैं इति। और यह स्थूल देहही आत्मा है सो स्थूल देहरूप आत्मा स्थिर हुआभी क्षणक्षणविषे परिणामकूं प्राप्त होवै है तथा जन्मकूं प्राप्त होवै है तथा नाशकूं प्राप्त होवै है तथा प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्ध है। या प्रकारका आत्मा लोकायतिक मानैं हैं इति। और आत्मा देहतैं भिन्न हुआभी देहके साथिही जन्मै है तथा देहके साथिही नाश होवै है। या प्रकारका आत्मा कोईक दूसरे मानैं हैं इति। और सृष्टिके आदिकालविषे जैसे आकाशकी उत्पत्ति होवै है तैसे आत्माकीभी उत्पत्ति होवै है। और देहोंके भेद हुएभी सो आत्मा कल्पपर्यंत स्थिर रहै है। इस कल्पके अंतविषे सो आत्मा नाशकूं प्राप्त होवै है या प्रकारका आत्मा कोई दूसरे मानैं हैं इति। और आत्मा नित्य है सो नित्यही आत्मा जन्मकूं तथा मरणकूं प्राप्त होवै है या प्रकारका आत्मा तार्किक मानैं हैं। तिन तार्किकोंका यह अभिप्राय है। अपूर्व देहइंद्रियादिकोंके संबंधका नाम जन्म है। और पूर्व देहइंद्रियादिकोंके संबंधकी निवृत्तिका नाम मरण है यह जन्ममरण दोनों धर्मअधर्मकरिकै जन्य हैं यातैं ता धर्मअधर्मका आधाररूप जो नित्य वस्तु है ता नित्य वस्तुकेही यह जन्ममरण मुख्य हैं। और शरीरादिक अनित्य वस्तुविषे जो धर्म अधर्मकी आधारता मानियें तौ ता आश्रयके नाशतैं ता धर्मअधर्मकाभी नाश होवैगा यातैं करे हुए कर्मोंकी फलके भोगतैं बिनाही निवृत्तिरूप कृतहानिदोष तथा नकरे हुए कर्मोंका फलभोगरूप अकृताभ्यागमदोष या दोनों दोषोंकी प्राप्ति होवैगी यातैं अनित्य वस्तुविषे ता धर्मअधर्मकी आधारता संभवै नहीं यातैं शरीरादिक अनित्य वस्तुके ते जन्ममरण मुख्य नहीं हैं किंतु गौण हैं। या प्रकारका आत्मा तार्किक मानैं हैं। और कोईक शास्त्रवाले तौ यह मानैं हैं जैसे श्रोत्ररूप नित्य आकाशका कर्णशष्कुलीरूप उपाधिके जन्मतैं जन्म होवै है। और ता कर्णशष्कुलीरूप उपाधिके नाशतैं नाश होवै है। ते जन्ममरण दोनों औपाधिक होणेतैं अमुख्य हैं। तैसे नित्य आत्माकाभी देहरूप उपाधिके जन्मतैं जन्म होवै है। तथा देहरूप उपाधिके मरणतैं मरण होवै है। ते जन्ममरणरूप दोनों

दाहादिरूप क्रियाके कर्मपणेकी अयोग्यता निरूपण करी। और (अव्यक्तोयमचिंत्योयं) या अर्ध श्लोककरिकै ता आत्माविषे छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करणेहारे प्रमाणोंका अभाव कथन करा । या कारणतैं इहां पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं । और (वेदाविनाशिनंनित्यं) इत्यादिक श्लोकोंविषे भगवान् भाष्यकारोंनैं अर्थतैं तथा शब्दतैं पुनरुक्तिदोषकी निवृत्ति करी नहीं ताकेविषे भाष्यकारोंका यह अभिप्राय है यह आत्मादेव अत्यंत दुर्बोध है। यातैं श्रीकृष्णभगवान् वारंवार प्रसंगकूं पाइकै तिसी आत्मादेवकूं शब्दांतरकरिकै निरूपण करैं हैं। काहेतैं या अधिकारी पुरुषोंके संसारकी निवृत्ति करणेवास्ते यह आत्मवस्तु किसी प्रकारकरिकैभी जो इन अधिकारी पुरुषोंके बुद्धिविषे आरूढ होवै तौ श्रेष्ठ है इति । यातैं दुर्विज्ञेय आत्मवस्तुके पुनःपुनः कथन करणेविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं । लोकप्रसिद्ध वस्तुके पुनःपुनः कथन करणेविषेही पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै है इति । इहां किसी टीकाविषे अव्यक्त, अचिंत्य, अविकार्य या तीनों पदोंका या प्रकारका अर्थ कथन करा है प्रत्यक्षप्रमाणका विषय जो यह स्थूल शरीर है ताका नाम व्यक्त है ता स्थूल शरीर तैं यह प्रत्यक् आत्मा भिन्न है यातैं यह प्रत्यक् आत्मा अव्यक्त कह्या जावै है । और रूपादिकोंके प्रकाशरूप कार्यकरिकै अनुमान करणेयोग्य जो चक्षु आदिकोंका समुदायरूप लिंगशरीर है ता लिंगशरीरका नाम चिंत्य है ता लिंगशरीरतैंभी यह आत्मादेव भिन्न है यातैं यह आत्मादेव अचिंत्य कह्या जावै है । और स्थूलसूक्ष्मरूप कार्यभावकरिकै स्थित होणेयोग्य जो त्रिगुणात्मक मूलाज्ञानरूप कारणशरीर है जो अज्ञानरूप कारणशरीर केवल साक्षीकरिकैही गम्य है ता कारणशरीरका नाम विकार्य है ता कारणशरीरतैंभी यह आत्मा भिन्न है यातैं यह आत्मादेव अविकार्य कह्या जावै है । इस प्रकार गुरुशास्त्रनैं अधिकारी पुरुषके प्रति स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरके निषेधमुखकरिकै यह आत्मादेव उपदेश करीता है । कोई गोशृंगग्राहिका न्यायकरिकै इस प्रकारका यह आत्मा है या प्रकार विधिमुखकरिकै कथन करीता नहीं तहां किसीने पूछा हमारी गौ कौन है आगेतैं किसी पुरुषनैं ता गौकूं शृंगतैं पकड़िकरिकै यह तुम्हारी गौ है या प्रकार गौ दिखाई याका नाम गोशृंगग्राहिका न्याय है इति । इस प्रकार पूर्व उक्त अनेक प्रकारकी युक्तियोंकरिकै आत्माकी नित्यता तथा निर्विकारताके सिद्ध हुए तुम्हारेकूं शोक करणा उचित नहीं है या प्रकारका उपसंहार श्रीभगवान् करैं हैं (तस्मादेवं) इत्यादिक अर्ध श्लोककरिकै हे अर्जुन! यह जो पूर्व हमनें तुम्हारेप्रति नित्य निर्विकार आत्माका स्वरूप कथन करा है ता आत्माके स्वरूपका साक्षात्कारही शोकके कारणरूप अज्ञानका निवर्त्तक है । ऐसे आत्मसाक्षात्कारके प्राप्त हुए तुम्हारेकूं सो शोक करणा उचित नहीं है कारण के निवृत्त हुए ताके कार्यकीभी अवश्यकरिकै निवृत्ति होवै है । तात्पर्य यह । ऐसे

और जो पदार्थ किसीभी स्थानविषे प्रत्यक्ष नहीं होवै है ता पदार्थके व्याप्तिका ज्ञानही संभवता नहीं। यातैं ता पदार्थका अनुमानभी होवै नहीं। और या आत्माका तौ नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्ष होवै नहीं। यातैं अनुमान प्रमाणकरिकैभी ता आत्माके छेद्यत्वादिकोंका ग्रहण होइ सकै नहीं इति। शंका—हे भगवन्! जो पदार्थ किसीभी स्थलविषे प्रत्यक्ष होवै है ता पदार्थकाही अन्य स्थलविषे अनुमान होवै है सर्वथा अप्रत्यक्ष पदार्थका अनुमान होवै नहीं। यह जो आपने नियम कह्या सो संभवता नहीं काहेतैं नेत्रादिक इंद्रियोंका तथा धर्म अधर्मका किसीभी स्थलविषे प्रत्यक्ष होता नहीं। परंतु तिनोंविषेभी अनुमानकी विषयता तौ देखणेमें आवती है। ता अनुमानका यह प्रकार है रूपादिकोंकी प्रतीति करणकरिकै साध्य होणेकूं योग्य है क्रिया होणेतैं जा जा क्रिया होवै है सा सा करणकरिकै साध्य होवै है। जैसे छेदनरूप क्रिया कुठाररूप करणकरिकै साध्य है इति। या प्रकारके अनुमानतैं रूपादिकोंकी प्रतीतियोंका करणरूपकरिकै नेत्रादिक इंद्रियोंकी सिद्धि होवै है। तथा यह पुरुष धर्मवान् है सुखी होणेतैं। तथा यह पुरुष अधर्मवान् है दुःखी होणेतैं इति। या अनुमानतैं धर्मअधर्मकी सिद्धि होवै है। तैसे सर्वथा अप्रत्यक्ष आत्माविषेभी अनुमानकी विषयता बनि सकै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं (अविकार्योयम् इति) हे अर्जुन! नानाप्रकारकी विक्रियावाले जो इंद्रियादिक पदार्थ हैं ते इंद्रियादिक पदार्थही अपणे कार्यकी अन्यथा अनुपपत्तिकरिकै कल्प्यमान हुए अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमानप्रमाणका विषय होवैं हैं। और यह आत्मादेव तौ सर्व विक्रियातैं रहित है। या कारणतैं यह आत्मादेव अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमानप्रमाणका विषय होवै नहीं और अनुमानकी न्याई लौकिकशब्दभी प्रत्यक्षादि प्रमाणपूर्वकही होवै है। यातैं ता प्रत्यक्षप्रमाणके निषेध हुए ता लौकिक शब्दकाभी अर्थतैंही निषेध सिद्ध होवै है इति। शंका—हे भगवन्! प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति, लौकिकशब्द यह चारों प्रमाण ता आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूं मत ग्रहण करैं तथापि वेदप्रमाण तिन छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करैगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं। (उच्यते इति) हे अर्जुन! वेद भगवाननैं तौ यह आत्मादेव अच्छेद्य अव्यक्तरूपकरिकै प्रतिपादन करीता है। यातैं लक्षणावृत्तिकरिकै निर्विकार आत्माकूं प्रतिपादन करणेहारा सो वेदभगवान् ता आत्माके छेद्यत्वादिक धर्मोंकूं कैसे प्रतिपादन करैगा किंतु नहीं प्रतिपादन करैगा। यातैं आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिक धर्मोंकूं विषय करणेहारा कोईभी प्रमाण है नहीं। या कारणतैं यह आत्मादेव अच्छेद्य अदाह्यरूप है इति। इहां (नैनं छिंदंति शस्त्राणि) इस श्लोककरिकै शस्त्र अग्नि आदिकोंविषे आत्माके नाश करणेका असामर्थ्य कथन करा। और (अच्छेद्योयमदाह्योयं) इस श्लोककरिकै ता आत्माविषे छेदन

अंतर्यामि है । यातैं इस आत्मादेवकूं ते शस्त्रादिक किस प्रकार छेदनादिक करैंगे किंतु नहीं करैंगे इति । इस अर्थविषे "येन सूर्यस्तपति तेजसेद्धः" इत्यादिक श्रुतियांभी प्रमाणरूप जानि लेणी । इस अर्थकूं या गीताके सप्तम अध्यायविषे श्रीभगवान् आपही प्रगट करैंगे इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंवा । इस आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूं विषय करणेहारा कोई प्रमाणभी है नहीं । या कराणतैंभी इस आत्माविषे तिन छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंका अभाव है । या प्रकारके अर्थकूं अव्यक्तोयं इत्यादिक अर्ध श्लोककरिकै श्रीभगवान् कथन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तोयमचिंत्योयमविकार्योयमुच्यते॥तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥२५॥ (पदच्छेदः) अव्यक्तः । अयम् । अचिंत्यः । अयम् । अविकार्यः । अयम् । उच्यते । तस्मात् । एवं । विदित्वा । एनं । न । अनुशोचितुम् । अर्हसि ॥ २५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन वेदभगवान्नें यह आत्मा अव्यक्त कह्या है तथा यह आत्मा अचिंत्य कह्या है तथा यह आत्मा अविकार्य कह्या है तिस कारणतैं तूं इस आत्माकूं इस प्रकारका जानिकरिकै शोक करणेकूं नहीं योग्य है ॥ २५ ॥

टीका । जो पदार्थ नेत्रादिक इंद्रियजन्य ज्ञानका विषय होवै है सो पदार्थ प्रत्यक्ष कह्या जावै है । प्रत्यक्ष होणेतैं सो पदार्थ व्यक्त कह्या जावै है । जैसे रूपादिक गुणोंवाले घटादिक पदार्थ हैं । और यह आत्मादेव तौ रूपादिक गुणोंतैं रहित होणेतैं नेत्रादिक इंद्रियजन्य ज्ञानका विषय है नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव अप्रत्यक्ष है । अप्रत्यक्ष होणेतैं यह आत्मादेव अव्यक्त कह्या जावै है । या कारणतैं प्रत्यक्षप्रमाण ता आत्माके छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करि सकै नहीं । शंका—हे भगवन्! आत्माविषे प्रत्यक्षप्रमाणके अप्रवृत्त हुएभी अनुमानप्रमाण प्रवृत्त होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहैं हैं (अचिंत्योयम् इति) जो पदार्थ अनुमानप्रमाणजन्य ज्ञानका विषय होवै है । सो पदार्थ चिंत्य कह्याजावै है । जैसे पर्वतादिकोंविषे स्थित अग्नि आदिक पदार्थ अनुमानजन्य ज्ञानके विषय होणेतैं चिंत्य कहे जावैं हैं । और यह आत्मादेव तौ तिन अग्नि आदिक अनुमेय पदार्थोंतैं विलक्षण है क्या अनुमानजन्य ज्ञानका विषय नहीं है । यातैं यह आत्मादेव अचिंत्य कह्या जावै है । तात्पर्य यह । जो पदार्थ किसीभी स्थानविषे प्रत्यक्ष होवै है तिस पदार्थकाही अन्य स्थानविषे अनुमान होवै है । सर्वथा अप्रत्यक्ष पदार्थका अनुमान होवै नहीं जैसे गृहादिक स्थानोंविषे प्रत्यक्ष जो अग्नि है ता अग्निकी धूमविषे व्याप्ति निश्चयकरिकै यह पुरुष पर्वतविषे धूमकूं देखिकरिकै यह पर्वत अग्निवाला है या प्रकारका अनुमान करै है ।

अचल होणेतैं जो जो पदार्थ अविकारी नहीं होवै है सो सो पदार्थ अचलभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति । इतने कहणेकरिकै आत्माविषे संस्कार्यत्वका निषेध करा । इहां पूर्व अवस्थाका परित्याग करिकै जो दूसरी अवस्थाकी प्राप्ति है ताका नाम विक्रिया है । और अवस्थाके एक हुएभी जो चलनमात्र है ताका नाम क्रिया है । यातैं अविक्रियत्वरूप साध्यकी तथा अचलत्वरूप हेतुकी एकता सिद्ध होवै नहीं । जिस कारणतैं यह आत्मादेव नित्य सर्वगत स्थाणु अचलरूप है । तिस कारणतैं यह आत्मादेव सनातन है क्या सर्वदा एकरूप है किसीभी क्रियाका कर्मरूप नहीं है । तात्पर्य यह । जो पदार्थ क्रियाजन्य फलवाला होवै है ता पदार्थका नाम कर्म है । सो क्रियाजन्य फल उत्पत्ति, प्राप्ति, विकृति, संस्कृति या भेदकरिकै चारि प्रकारका होवै है ता चारि प्रकारके फलके योगतैं यथाक्रमतैं सो कर्मभी उत्पाद्य, प्राप्य, विकार्य, संस्कार्य या भेदतैं चारि प्रकारका होवै है । तहां यह आत्मादेव नित्य है यातैं उत्पाद्यरूप कर्मभी नहीं है । अनित्य घटादिकही उत्पाद्यरूप होवैं हैं । और यह आत्मादेव सर्वत्र व्यापक है यातैं प्राप्यरूप कर्मभी नहीं है परिच्छिन्न ग्रामादिकही प्राप्यरूप होवैं हैं । और यह आत्मादेव स्थाणुरूप है यातैं विकार्यरूप कर्मभी नहीं है । स्थाणुभावतैं रहित विक्रियावाले क्षीरादिकही विकार्यरूप होवैं हैं । और यह आत्मादेव चलनरूप क्रियातैं रहित अचल है यातैं संस्कार्यरूप कर्मभी नहीं है । क्रियावाले दर्पणादिक पदार्थही संस्कार्यरूप होवैं हैं इति । तहां श्रुति । " आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यः वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः निष्कलं निष्क्रियं शांतम् इति " । अर्थ यह । यह आत्मादेव आकाशकी न्यांई सर्वत्र व्यापक है तथा नित्य है तथा महान् वृक्षकी न्यांई अचल हुआ स्थित हैं तथा अपणे स्वप्रकाशस्वरूपविषे स्थित हैं तथा एक अद्वितीयरूप है तथा निरवयव है तथा क्रियातैं रहित है तथा शांतस्वरूप है इति । इत्यादिक श्रुतियां या आत्मादेवकूं नित्य, सर्वगत, स्थाणु, अचलरूपकरिकै कथन करैं हैं । तथा " यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अंतरो योऽप्सु तिष्ठन्नद्भ्योंतरो यस्तेजसि तिष्ठंस्तेजसोंतरो यो वायौ तिष्ठन्वायोरंतरः इति " । अर्थ यह । जो आत्मादेव पृथिवीविषे स्थित हुआ ता पृथिवीतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव जलोंविषे स्थित हुआ तिन जलोंतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव अग्निरूप तेजविषे स्थित हुआ ता तेजतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव वायुविषे स्थित हुआ ता वायुतैंभी अंतर है इति । इत्यादिक श्रुतियां सर्वत्र व्यापक आत्माकूं सर्वका अंतर्यामिरूपकरिकै कथन करती हुई ता आत्माविषे शस्त्रादिकृत छेदनादिकोंकी अविषयता कथन करैं हैं । तात्पर्य यह । जो पदार्थ तिन शस्त्रादिकोंके अंतर नहीं स्थित होवै है । तिस पदार्थकूंही ते शस्त्रादिक छेदनादिक करैं हैं । और यह आत्मादेव तौ तिन शस्त्रादिक जड पदार्थोंकूं सत्तास्फूर्ति देणेहारा होणेतैं तिन शस्त्रादिकोंकाभी प्रेरक

यत्वादिक चारोंके समुचय करावणेवासतै है। शंका—हे भगवन्! जिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंके बलतैं आत्माविषे शस्त्रादिकृत छेदनादिकोंका अभाव सिद्ध करते हो ते अच्छेद्यत्वादिक हेतु आत्माविषे रहते नहीं। यातैं तिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंकरिकै आत्माविषे छेदनादिकोंका अभाव किस प्रकार सिद्ध होवैगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंकी सिद्धि करणेवासतै श्लोकके उत्तरार्धकरिकै हेतुका कथन करैं हैं। (नित्यः इति) हे अर्जुन! जो पदार्थ पूर्व अपर भाववाला होवै है सो पदार्थ अनित्य होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ पूर्व अपर भाववाले हैं यातैं अनित्य हैं और यह आत्मादेव तौ पूर्व अपर भावतैं रहित है यातैं नित्य है। नित्य होणेतैंही यह आत्मादेव उत्पत्तितैं रहित है और जो पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं होवै है सो पदार्थ अनित्यही होवै है जैसे घटादिक पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं हैं यातैं अनित्यही हैं। तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् सर्वत्र व्यापक नहीं होवैगा तौ अनित्यही होवैगा। यद्यपि नैयायिकोंनैं पृथिवी आदिकोंके परमाणुवोंकूं अव्यापक मानिकैभी नित्यही मान्या है यातैं जो अव्यापक होवै है सो अनित्यही होवै है या प्रकारका नियम संभवै नहीं। तथापि वेदांतसिद्धांतविषे ते नित्य परमाणु अंगीकार नहीं हैं यातैं ता नियमका भंग होवै नहीं और यह आत्मादेव तौ अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वत्र व्यापक है या कारणतैं यह आत्मादेव नित्य है। या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया। यह आत्मा नित्य होणेकूं योग्य है सर्वत्र व्यापक होणेतैं जो पदार्थ नित्य नहीं होवै है सो पदार्थ सर्वत्र व्यापकभी नहीं होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। सर्वत्र व्यापक होणेतैं यह आत्मादेव प्राप्तिका विषयभी नहीं है। और या लोकविषे जो जो पदार्थ विकारी होवै है सो सो पदार्थ सर्वत्र व्यापक होवै नहीं। जैसे घटादिक पदार्थ विकारी हैं यातैं सर्वत्र व्यापकभी नहीं हैं। तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् विकारी होवैगा तौ सर्वत्र व्यापक नहीं होवैगा। और यह आत्मादेव तौ स्थाणु है क्या अविकारी है। या कारणतैं यह आत्मादेव सर्वत्र व्यापक है या कहणेतैं यह अनुमान सिद्ध भया यह आत्मा सर्वत्र व्यापक होणेकूं योग्य है। अविकारी होणेतैं जो जो पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं होवै है सो सो पदार्थ अविकारीभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। इतनेकरिकै आत्माविषे विकार्यत्वका निषेध करा और या लोक विषे जो जो पदार्थ चलनरूप क्रियावाला होवै है सो सो पदार्थ विकारीही होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ चलनरूप क्रियावाले हैं यातैं विकारी हैं। तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् चलनरूप क्रियावाला होवैगा तौ विकारीही होवैगा और यह आत्मादेव तौ ता चलनरूप कियातैं रहित अचल है। या कारणतैं यह आत्मादेव विकारीभी नहीं है या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया यह आत्मा अविकारी होणेकूं योग्य है

लक्षक है। अथवा या लोकविषे पृथिवी, जल अग्नि, वायु या चारोंविषेही नाशकी कारणता देखनेमें आवै है । आकाशविषे किसीभी पदार्थके नाशकी कारणता देखणेविषे आवती नहीं। यातैं इहां पृथिवी, जल, तेज, वायु, या चारि भूतोंकाही कथन करा है। आकाशका कथन करा नहीं। और या लोकविषे जितनेक नाशके कारण हैं ते सर्व पृथिवी आदिक चारि भूतोंके अंतरभूतही हैं । यातैं पृथिवी आदिक चारि भूतोंके निषेध करिके नाश करणेहारे सर्व पदार्थोंका निषेध सिद्ध होइ सकै है। तहां खड्गादिक शस्त्र पृथिवीविशेषका विकाररूप होणेतैं पृथिवीरूपही हैं इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥

शंका—हे भगवन् ! आत्माकूं शस्त्रादिक नाश नहीं करि सकते या प्रकारकी प्रतिज्ञामात्रकरिकै अर्थकी सिद्धि होवै नहीं । किंतु किसी हेतुनैंही अर्थकी सिद्धि होवै है। यातैं आत्माकूं ते शस्त्रादिक नाश नहीं करि सकते या प्रतिज्ञाविषे कौन हेतु है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन शस्त्रादिकोंकूं आत्माके नाश करणेकी असामर्थ्यताविषे तथा आत्माकूं तिन शस्त्रादिजन्य नाशकी अयोग्यताविषे हेतु कहे हैं ।

(मू. श्लो.) अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्यो शोष्य एव च ॥ नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोयं सनातनः ॥२४॥ (पदच्छेदः) अच्छेद्यः । अयं । अदाह्यः । अयं । अक्लेद्यः । अशोष्यः । एव च । नित्यः । सर्वगतः । स्थाणुः । अचलः । अयं । सनातनः ॥ २४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह आत्मा अच्छेद्य है तथा यह आत्मा अदाह्य है तथा अक्लेद्य है तथा अशोष्य है तथा यह आत्मा नित्य है तथा सर्वगत है तथा स्थाणु है तथा अचल है तथा सनातन है ॥ २४ ॥

टीका। हे अर्जुन ! जिस कारणतैं यह आत्मा छेदन करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं खड्गादिक शस्त्र छेदन करि सकते नहीं। और जिस कारणतैं यह आत्मा दाह करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं अग्नि दाह करि सकता नहीं। और जिस कारणतैं यह आत्मा क्लेदन करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं जल क्लेदन करि सकता नहीं। और जिस कारणतैं यह आत्मा शोषण करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं वायु शोषण करि सकता नहीं। इस प्रकार यथाक्रमतैं अच्छेद्यादिक चारि हेतुवोंकी पूर्व श्लोकउक्त प्रतिज्ञाविषे योजना करणी। इहां (एव च) या वचनविषे स्थित जो एव यह शब्द है। सो एवशब्द अच्छेद्यत्वादिक चारोंके साथि संबंधकूं प्राप्त हुआ आत्माविषे छेद्यत्वादिक धर्मोंकी व्यावृत्ति करे है। क्या आत्मा अच्छेद्यही है नतु छेद्य है इस प्रकार अदाह्यत्वादिक धर्मोंविषेभी जानि लेणा। और च यह शब्द तिन अच्छे

या श्लोककरि यह अभिप्राय वर्णन करा है। जैसे यह देवदत्तादि नामवाला पुरुष पूर्वले जीर्ण वस्त्रोंका परित्याग करिकै दूसरे नवीन वस्त्रोंका ग्रहण करैहै। तैसे यह देही आत्माभी पूर्वले जीर्ण शरीरोंका परित्याग करिकै दूसरे नवीन शरीरोंकूं प्राप्त होवै है। तहां जैसे आगमन तथा निर्गमन तथा नामरूपादिकोंकी विचित्रता तथा शिथिलता इत्यादिक सर्व विकार तिन वस्त्रोंविषेही होवै हैं। ता पुरुषविषे ते विकार होवैं नहीं। तैसे उत्पत्तिनाशादिक सर्व विकार या शरीरोंविषेही होवै हैं। निरवय आत्माविषे ते उत्पत्तिनाशादिक विकार होवै नहीं। इतने कहणेकरिकै आत्माविषे देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नपणा तथा सर्व विकारों तैं रहितपणा तथा नित्यपणा सूचन करा इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ ॥ शंका—हे भगवन्! जैसे अग्निकरिकै गृहके दाह हुए ता गृहविषे स्थित पुरुषकाभी दाह होइ जावै है। तैसे या स्थूल देहके नाश हुए ता देहके भीतर स्थित आत्माकाभी नाश होवेगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः॥ न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषयति मारुतः॥ २३॥ (पदच्छेदः) न। एनं। छिंदंति। शस्त्राणि। न। एनं। दहति। पावकः। न। च। एनं। क्लेदयंति। आपः। न। शोषयति। मारुतः॥ २३॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! इस आत्माकूं खड्गादिक शस्त्रभी नहीं छेदन करे हैं तथा इस आत्माकूं अग्निभी नहीं दाह करे है तथा इस आत्माकूं जलभी नहीं गालि सकै है तथा इस आत्माकूं वायुभी नहीं शोषण करै है॥ २३॥

टीका। हे अर्जुन! जैसे खड्गादिक तीक्ष्ण शस्त्र या स्थूल शरीरकूं छेदन करे हैं। तैसे इस आत्माकूं ते तीक्ष्ण शस्त्रभी छेदन करि सकते नहीं। और जैसे अत्यंत प्रज्वलित अग्नि या शरीरकूं भस्म करे है। तैसे सो प्रज्वलित अग्नि या आत्माकूं भस्म करि सकै नहीं। और जैसे अत्यंत वेगवाला जल या शरीरकूं गीला करिकै ताके अवयवोंकी शिथिलतारूप क्लेदन करे है। तैसे सो अत्यंत वेगवाला जलभी या आत्माकूं क्लेदन करि सकै नहीं। और जैसे अत्यंत प्रबल वायु या शरीरादिकोंका नीरसतारूप शोषण करे है। तैसे सो अत्यंत प्रबल वायुभी या आत्माकूं शोषण करि सकै नहीं। इहां यद्यपि जितनेकी नाश करणेहारे पदार्थ हैं तिन सर्व पदार्थोंका आत्माविषे निषेध वांछित है। यातैं केवल शस्त्रादिकोंकाही निषेध करणा उचित नहीं है। तथापि युद्धके समय विषे ते शस्त्रादिकही प्राप्त हैं। यातैं भगवान्नैं तिन शस्त्रादिकोंकाही निषेध करा है। सो शस्त्रादिकोंका निषेध नाश करणेहारे सर्व पदार्थोंके निषेधका उप

(मू. श्लो.) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २२ ॥ (पदच्छेदः) वासांसि । जीर्णानि । यथा । विहाय । नवानि । गृह्णाति । नरः । अपराणि । तथा । शरीराणि । विहाय । जीर्णानि । अन्यानि । संयाति । नवानि । देही ॥ २२ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जैसें यह पुरुष जीर्ण वस्त्रोंकूं परित्याग करिकै दूसरे नवीन वस्त्रोंकूं ग्रहण करे है तैसें यह देहीभी इन जीर्ण शरीरोंकूं परित्याग करिकै दूसरे नवीन शरीरोंकूं प्राप्त होवै है ॥ २२ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसे विक्रियातैं रहित हुआही यह पुरुष पूर्वले निकृष्ट जीर्ण वस्त्रोंका परित्याग करिकै दूसरे उत्कृष्ट नवीन वस्त्रोंका ग्रहण करे है । तैसे उत्तम धर्मोंकूं करणेहारे यह भीष्मद्रोणादिक देहीभी अवस्थाकरिकै तथा तपकरिकै कृश हुए या भीष्मादिक नामोंवाले शरीरोंका परित्याग करिकै पूर्व संपादन करे हुए पुण्यकर्मोंके फल भोगणेवासते सर्वतैं उत्कृष्ट देवतादिक शरीरोंकूं प्राप्त होवै हैं । तहां श्रुति । "अन्यन्नवतरं कल्याणतरं रूपं कुरुते पित्र्यं वा गांधर्वं वा दैवं वा प्राजापत्यं वा ब्राह्मं वा इति" । अर्थ यह । यह जीवात्मा पूर्वले शरीरका परित्याग करिकै पुण्यकर्मोंके वशतैं पितृलोकविषे अथवा गंधर्वलोकविषे अथवा देवलोकविषे अथवा प्रजापतिलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे दूसरे उत्कृष्ट देवताशरीरकूं प्राप्त होवै है इति । इतने कहणेकरिके यह अर्थ सिद्ध भया । जीवत्कालपर्यंत करा जो धर्मका अनुष्ठान ता अनुष्ठानजन्य क्लेशकरिकै अत्यंत कृश शरीरवाले हुए जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं ते भीष्मद्रोणादिक इस वर्त्तमान शरीरके नाशतैं विना ता धर्मानुष्ठानके फल भोगणेविषे समर्थ होइ सकैं नहीं । किंतु तिन स्वर्गादिक सुखोंकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक जो यह वर्त्तमान शरीर हैं तिन वर्त्तमान शरीरोंके नाशतैं अनंतरही ते भीष्मद्रोणादिक तिन स्वर्गादिक सुखोंके भोगणेविषे समर्थ होवैंगे । यातैं धर्मयुद्धकरिकै जबी तूं इन भीष्मद्रोणादिकोंके वर्त्तमान शरीरोंकूं नाश करैगा । तबी यह भीष्मद्रोणादिक या जीर्ण शरीररूप प्रतिबंधतैं रहित होइके स्वर्गादिक लोकोंविषे दिव्य शरीरकूं प्राप्त होइके नानाप्रकारके सुखोंकूं प्राप्त होवैंगे । सो यह तिन भीष्मद्रोणादिकोंऊपरि तुम्हारा महान् उपकार है । यातैं तिन भीष्मद्रोणादिकोंका महान् उपकार करणेहारा जो यह युद्ध है ता युद्धविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंका अपकारत्वबुद्धिरूप भ्रमकूं तूं मत कर इति । या प्रकारका भगवान्‌का अभिप्राय (अपराणि अन्यानि संयाति) या तीन पदोंके कहणेतैं जान्या जावै है । और किसी टीकाविषे तो

नया। तहां जो पुरुष आप तौ तिस क्रियाकूं करै नहीं और तिस क्रियाविषे दूसरेकूं प्रेरणा करै है ता पुरुषकूं प्रयोजककर्त्ता कहैं हैं । तात्पर्य यह ।
यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित है । यातैं अपणेविषे ता हननरूप क्रियाका कर्त्तापणा आरोपण करिकै तथा हमारेविषे ता हननरूप
क्रियाका प्रयोजककार्त्तापणा आरोपण करिकै तुमनैं पापके प्राप्तिकी शंका कदाचितभी नहीं करणी इति । इहां श्रीभगवान्नैं आत्माविषे अविक्रियता
दिखाइकै कर्तृत्वका निषेध करा । तिसतैं यह जान्या जावै है । श्रीभगवान्का सर्व कर्मोंके निषेधविषे तात्पर्य है । केवल हननरूप क्रियाके निषेध
विषे तात्पर्य नहीं है । यातैं मूलश्लोकविषे जो केवल हननक्रियाका निषेध करा है सो निषेध सर्व कर्मोंके निषेधका उपलक्षक है। पूर्व प्रसंगविषे हनन
रूप क्रियाही प्राप्त है । या कारणतैं भगवान्नैं ता हननरूप क्रियाका निषेध. करा है । परंतु ता हननरूप क्रियाके निषेध करिकै सर्व कर्मोंका निषेधही
भगवान्कूं संमत है । काहेतैं अविक्रियत्वरूप हेतु आत्माविषे जैसे हननरूप क्रियाका निषेध करे है तैसे दूसरे सर्व कर्मोंकाभी निषेध करे है । केवल
हननरूप क्रियाका निषेध करै नहीं । या कारणतैंही (तस्य कार्यं न विद्यते) या वचनकरिकै श्रीभगवान् आपही सर्व कर्मोंका निषेध आगे कथन करैगा।
या कहणेकरिकै या प्रकारकी मूढ जनोंकी शंकाकाभी खंडन हुआ जानणा । सा शंका यह है । (कं घातयति हंति कं) या वचनकरिकै भगवान्नैं केवल
हननरूप क्रियाका निषेध करा है दूसरे कर्मोंका निषेध करा नहीं । यातैं ता हननरूप कर्मतैं भिन्न दूसरे कर्म तौ भगवान्कूंभी कर्त्तव्यतारूपकरिकै
अंगीकार हैं इति । सो यह वादीकी शंका–संभवै नहीं । काहेतैं (तस्माद्युद्धयस्व भारत) या वचनकरिकै हननरूप कर्मका तौ भगवान्नैं आपही वि
धान करा है । यातैं (कं घातयति हंति कं) या वचनका आत्मा वास्तवतैं हननक्रियाका कर्त्ता नहीं है यह अर्थही अंगीकार करणा होवेगा । सो आत्माविषे
वास्तवतैं कर्त्तापणेका अभाव जैसे हननरूप क्रियाविषे है तैसे दूसरे कर्मोंविषेभी समान है इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! पूर्व उक्त श्रु
तियुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माविषे तौ अविनाशीपणाही सिद्ध होवै है । तथापि या स्थूल शरीरोंविषे सो अविनाशीपणा है नहीं । किंतु यह शरीर, नाशवान् है
और तिन शरीरोंके नाश करणेका साधन यह युद्ध है । यातैं अनेक पुण्यकर्मोंके साधनरूप जो यह भीष्मद्रोणादिकोंके शरीर हैं तिन शरीरोंका युद्ध करिकै नाश
करणा हमारेकूं कैसे उचित होवैगा । किंतु तिन भीष्मद्रोणादिकोंके शरीरका नाश करणा हमारेकूं उचित नहीं है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान्
उत्तर कहे हैं ।

च्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् "। अर्थ यह । यह विद्वान् पुरुष जभी परिपूर्ण अद्वितीय ब्रह्म मैं हूं या प्रकार आत्माकूं जानै है । तभी यह विद्वान् पुरुष किस वस्तुकी इच्छा करता हुआ किसके प्रयोजनवासतै या शरीरकूं संताप करैगा । किंतु नहीं करैगा इति । यह श्रुति शुद्ध आत्माके जानणेहारे विद्वान् पुरुषविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिक संसारके अभावकूं बोधन करै है । तात्पर्य यह । शुद्ध आत्माके ज्ञानकरिकै या विद्वान् पुरुषके अज्ञानकी निवृत्ति होवै है । ता अज्ञानके निवृत्त हुए अहं मम अध्यासकी निवृत्ति होवै है । ता अध्यासके निवृत्त हुए रागद्वेषादिकोंकी निवृत्ति होवै है । ता रागद्वेषादिकोंके निवृत्त हुए कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकोंकी निवृत्ति होवै है । इस प्रकार आत्माका ज्ञानही सर्व अनर्थोंके निवृत्तिका कारण है । यहां इस श्लोकविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्राय है । वास्तवतैं विचारकरिकै देखिये तौ यह आत्मादेव सर्व विकारोंतैं रहित है यातैं कोईभी किसी कार्यकूं करता नहीं तथा करावता नहीं । तथापि यह मूढ पुरुष अज्ञानके वशतैं स्वप्नकी न्याईं अपणे आत्माविषे कर्तृत्वादिक धर्म मानै है । यह वार्ता (उभौ तौ न विजानीतः) या गीताके वचनकरिकै पूर्व कथन करि आये हैं । तहां श्रुतिभी । " ध्यायतीव लेलायतीव " । यह अर्थ वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित यह आत्मादेव बुद्धिरूप उपाधि जभी ध्यान करै है तभी ध्यान करताकी न्याईं प्रतीत होवै है और बुद्धिरूप उपाधि जभी चलायमान होवै है तभी चलायमान हुएकी न्याईं प्रतीत होवै है इति । इसी कारणतैं सर्व शास्त्र अविद्वान् अधिकारीके वासतैही कथन करैं हैं विद्वान् पुरुषके वासतै कोईभी शास्त्र है नहीं । काहेतैं सो विद्वान् पुरुष तौ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानरूप मूलसहित अध्यासके निवृत्त हुए आत्माविषे कर्तृत्वादिक मानता नहीं । जैसे स्थाणुके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा पुरुष ता स्थाणुविषे चौरपणा मानता नहीं । तैसे आत्माके अकर्तृत्वादिक वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा सो विद्वान् पुरुष ता आत्माविषे कर्त्तापणा मानता नहीं । यातैं यह सिद्ध भया । सर्व विकारोंतैं रहित होणेतैं । तथा अद्वितीयरूप होणेतैं सो विद्वान् पुरुष हननादिक क्रियाकूं न करता है न करावता है । तहां श्रुति " आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् नबिभेति कुतश्चनेति " । अर्थ यह । ब्रह्मके स्वरूपभूत आनंदकूं जानणेहारा विद्वान् पुरुष किसीतैंभी भयकूं प्राप्त होवै नहीं इति । इहां भयका निषेध सर्व विकारोंके निषेधका उपलक्षक है । इस प्रकार वास्तवतैं आत्माविषे कर्तृत्वादिकोंके अभाव हुएभी सो अर्जुन अपणेविषे ता हननरूप क्रियाका कर्त्तापणा आरोपण करिकै तथा श्रीभगवानविषे ता हननरूप क्रियाका प्रयोजककर्त्तापणा आरोपण करिकै अपणेविषे तथा भगवान्विषे ता हिंसाजन्य दोषकी शंका करता भया । और श्रीभगवान्भी ता अर्जुनके अभिप्रायकूं जानिकरिकै ता अर्जुनविषे हननरूप क्रियाके कर्त्तापणेका निषेध करता भया । और अपणेविषे ता हननरूप क्रियाके प्रयोजककर्त्तापणेका निषेध करता

जन्यत्व हेतुकरिकै आत्माविषे विनाशीपणेका अनुमानभी होइ सकै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् आत्माविषे ता जन्यत्वहेतुकी असिद्धि कथन करैं हैं। (अजं इति) जो कदाचित्भी जन्मकूं नहीं प्राप्त होवे ताका नाम अज है। ऐसा जन्मरूप आद्यविकारतैं रहित आत्मा है। ता अजपणेविषे हेतु कहैं हैं। (नित्यं इति) जो सर्वकालविषे विद्यमान होवै ताका नाम नित्य है। और या लोकविषे जो पदार्थ पूर्व नहीं विद्यमान होवे है ता पदार्थकाही जन्म देखणेविषे आवे है। जैसे घटपटादिक पदार्थ अपणी उत्पत्तितैं पूर्व नहीं विद्यमान हुएही पश्चात् जन्मकूं प्राप्त होवे हैं। और यह आत्मादेव तौ सर्व कालविषे विद्यमान है। यातैं या आत्मादेवका कदाचित्भी जन्म संभवै नहीं। या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया। आत्मा जन्मतैं रहित होणेकूं योग्य है। नित्य होणेतैं जो पदार्थ जन्मतैं रहित नहीं होवै है सो पदार्थ नित्यभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। अथवा। अविनाशी या पदकरिकै बाधतैं रहित सत्यवस्तुका ग्रहण करणा। और नित्य या शब्दकरिकै सर्वत्र व्यापक वस्तुका ग्रहण करणा। ताकेविषे हेतु कहैं हैं। (अजं अव्ययं इति) इहां जन्मतैं रहित वस्तुका नाम अज है। और नाशतैं रहित वस्तुका नाम अव्यय है। और या लोकविषे जो पदार्थ उत्पत्तिमान् होवे है तथा नाशवान् होवै है सो पदार्थ सत्यरूप तथा सर्वत्र व्यापक होवै नहीं। जैसे उत्पत्तिनाशवान् घटादिक पदार्थ सत्यरूप नहीं हैं तथा सर्वत्र व्यापकभी नहीं हैं। और यह आत्मादेव तौ उत्पत्तिनाशतैं रहित है। यातैं यह आत्मादेव सत्यरूप है तथा सर्वत्र व्यापक है। या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया। आत्मा अविनाशी तथा नित्य होणेकूं योग्य है अज तथा अव्यय होणेतैं जो पदार्थ अविनाशी तथा नित्य नहीं होवै है सो पदार्थ अज तथा अव्ययभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। इस प्रकार अविनाशीरूप तथा नित्यरूप तथा अजरूप तथा अव्ययरूप जो यह आत्मादेव है। ता आत्मादेवकूं जो पुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशतैं मैं जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित हूं तथा बुद्धि आदिक सर्व पदार्थोंका प्रकाशक हूं तथा सर्व द्वैतप्रपंचतैं रहित हूं तथा परमानंदबोधरूप हूं या प्रकार साक्षात्कार करै है। सो विद्वान् पुरुष किसकूं हनन करै है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करै है। किंतु सो विद्वान् पुरुष किसीकूंभी हनन करता नहीं। तथा किसी प्रकारकरिकैभी हनन करता नहीं। और सो विद्वान् पुरुष किसकूं हनन करावै है। तथा किस प्रकारकरिकै हनन करावै है। किंतु सो विद्वान् पुरुष किसकूंभी हनन करावता नहीं। तथा किसी प्रकारकरिकैभी हनन करावता नहीं। काहेतैं जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित तथा कर्त्तापणेतैं रहित जो विद्वान् पुरुष है ता विद्वान् पुरुषकूं ता हननरूप क्रियाविषे साक्षात्कर्त्तापणा तथा प्रयोजककर्त्तापणा संभवै नहीं। तहां श्रुति। "आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति पूरुषः। किमि

जन्ममरणके निषेधकरिकै अस्ति विपरिणाम या दोनोंका निषेधभी जानि लेणा। हे अर्जुन ! जिस कारणतैं यह आत्मादेव जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित है। तिस कारणतैं शस्त्रादिक उपायोंकरिकै या शरीरके हनन हुएभी ता शरीरके कल्पित संबंधवाला हुआभी यह आत्मादेव किसीभी उपाय करिकै हननकूं प्राप्त होवै नहीं। जैसे घटरूप उपाधिके नाश हुएभी आकाशका नाश होवै नहीं। तैसे देहादिक उपाधियोंके नाश हुएभी आत्माका नाश होवै नहीं। तहां श्रुति "अविनाशी वाऽरेऽयमात्मा"। अर्थ यह। हे मैत्रेयी ! यह आत्मादेव विनाशतैं रहित है इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

पूर्व (य एनं वेत्ति हंतारं) या श्लोकविषे (नायं हंति न हन्यते) या वचनकरिकै आत्मा नहीं तौ किसीकूं हनन करता है और नहीं किसीकरिकै हत होता है या प्रकारकी प्रतिज्ञा करी थी। तहां आत्मा किसीकरिकैभी हनन नहीं होता है। या प्रतिज्ञाका तौ पूर्व श्लोकविषे विस्तारतैं उपपादन करा। अब आत्मा किसीकूंभी हनन नहीं करता है या प्रतिज्ञाका उपपादन करता हुआ श्रीभगवान् पूर्व प्रसंगका उपसंहार करै है।

(मू. श्लो.) वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ॥ कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हंति कम् ॥ २१ ॥ (पदच्छेदः) वेद । अविनाशिनं । नित्यं । यः । एनं । अजं । अव्ययं । कथं । सः । पुरुषः । पार्थ । कं । घातयति । हंति । कं ॥ २१ ॥

(पदार्थः) हे पार्थ जो पुरुष इस आत्मादेवकूं अविनाशीरूप नित्यरूप अजरूप अव्ययरूप जाने है सो पुरुष किसकूं हनन करै है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करै है और सो पुरुष किसकूं हनन करावै है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करावै है किंतु सो पुरुष न किसीकूं हनन करै है तथा न किसीका हनन करावै है ॥ २१ ॥

टीका। विनाश होणेका नहीं है स्वभाव जिसका ताकूं अविनाशी कहै हैं। ऐसा विनाशरूप अंतविकारतैं रहित जो आत्मा है ताके अविनाशीपणे विषे हेतु कहै हैं (अव्ययं इति) नहीं विद्यमान है अवयवोंका अपचयरूप तथा गुणोंका अपचयरूप व्यय जिसविषे ताका नाम अव्यय है। या लोक विषे पटादिक पदार्थोंका तंतु आदिक अवयवोंके अपचयकरिकै तथा रूपादिक गुणोंके अपचयकरिकै विनाश देखणेविषे आवै है। और यह आत्मा देव तौ निरवयव होणेतैं अवयवोंके अपचयतैं रहित है तथा निर्गुण होणेतैं गुणोंके अपचयतैं रहित है। यातैं या आत्मादेवका कदाचित्भी विनाश संभवै नहीं। या कहणेतैं यह अनुमान सिद्ध भया। आत्मा अविनाशी होणेकूं योग्य है। अव्यय होणेतैं जो पदार्थ अविनाशी नहीं होवै है सो पदार्थ अव्ययभी नहीं होवै है जैसे पटादिक पदार्थ हैं इति। शंका—हे भगवन् ! आत्मा विनाशी होणेकूं योग्य है जन्य होणेतैं घटादिकोंकी न्यांई या प्रकार

होवे नहीं । जो पदार्थ पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै उत्तरकालविषे नहीं विद्यमान होवै है सो पदार्थही मरणरूप विकारकूं प्राप्त होवै है । जैसे घटादिक पदार्थ पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै उत्तर कालविषे अविद्यमान होवै हैं । यातैं ते घटादिक पदार्थ नाशरूप विकारकूंभी प्राप्त होवै हैं । और यह आत्मादेव तौ ता उत्तर कालविषेभी विद्यमान है यातैं यह आत्मादेव मरणरूप विकारकूं प्राप्त होवे नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव नित्य है क्या विनाश होणेके योग्य नहीं है । इहां (न जायते म्रियते वा) या वचनकरिकै आत्माके जन्ममरणके अभावकी प्रतिज्ञा करी । और (कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः) या वचनविषे स्थित पदोंकी दो प्रकारतैं योजनाकरिकै ता प्रतिज्ञाका उपपादन करा और (अजो नित्यः) या वचनकरिकै ता प्रतिज्ञाका उपसंहार करा । इहां जन्मादिक षट्विकारोंविषे जन्मरूप जो आदिका विकार है तथा मरणरूप जो अंतका विकार है तिन दोनों विकारोंके निषेधकरिकै यद्यपि तिन दोनों विकारोंके मध्यवर्त्ति तथा तिन दोनों विकारोंके व्याप्त जो चारि विकार हैं । तिनोंका निषेध होइ सकै है । तथापि इहां नहीं कथन करे जो गमन आगमनादिक विकार हैं तिन सर्व विकारोंके निषेधके जनावणेवासतै श्रीभगवान् अपक्षय, वृद्धि, या दोनों विकारोंका शाश्वत पुराण या दोनों शब्दोंकरिकै निषेध करे है (शाश्वत इति) तहां यह आत्मादेव कूटस्थतारूप नित्यतावाला है । यातैं या आत्मादेवका स्वरूपतैं अपक्षय होवै नहीं । और यह आत्मादेव निर्गुण है । यातैं या आत्मादेवका गुणतैंभी अपक्षय होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव शाश्वत है । जो वस्तु अपक्षय अपचयतैं रहित होके सर्व कालविषे विद्यमान होवै है ता वस्तुका नाम शाश्वत है । ऐसा यह आत्मादेवही है । शंका–हे भगवन्! यह आत्मादेव अपक्षयकूं तौ मत प्राप्त होवे तौभी वृद्धिकूं किसवासतै नहीं प्राप्त होवे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए भगवान् कहैं हैं (पुराण इति) हे अर्जुन! यह आत्मादेव इसतैं पूर्वभी नवीनही था । कोई इस लोकविषे यह आत्मादेव नवीन अवस्थाकूं प्राप्त भया नहीं । यातैं यह आत्मादेव पुराण है । तात्पर्य यह । सर्व कालविषे यह आत्मादेव एकरूप है इति । और या लोकविषे जो पदार्थ किसी उपचयरूप नवीन अवस्थाकूं प्राप्त होवै है । सो पदार्थही वृद्धिकूं प्राप्त होवै है । जैसे शरीरादिक पदार्थ हैं और यह आत्मादेव तौ सर्व कालविषे एकरूपही हैं यातैं यह आत्मादेव अपचयकूं तथा उपचयकूं प्राप्त होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव वृद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं । इहां ज्वरादिक रोगोंकरिकै जो शरीरके अवयवोंकी क्षीणता है ताका नाम अपचय है । और अन्नादिकोंके भक्षणकरिकै जो शरीरके अवयवोंकी वृद्धि है ताका नाम उपचय है । इहां अस्ति, विपरिणाम यह दोनों विकार जन्म नाश या दोनों विकारोंके अंतर्भूत हैं । यातैं तिन दोनों विकारोंका पृथक् निषेध करा नहीं । ता

पुरुष अत्यंत कायर हैं । या प्रकारके भेद जनावणेवासतै सा दोबार पदोंकी आवृत्ति करी है इति ॥ इहां (य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतम्) या श्लोकके पूर्वार्द्धविषे " हंता चेन्मन्यते हंतुं हतश्चेन्मन्यते हतम् " या कठवल्ली श्रुतिके पूर्वार्द्धका अर्थ निरूपण करा । श्रुतिका तथा श्लोकका उत्तरार्द्ध एकसरीखाही है इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका–हे भगवन् ! यह आत्मादेव ता हननरूप क्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप किस कारणतैं नहीं होवै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए यह आत्मादेव जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित है यातैं ता हननरूप क्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप होवै नहीं । या प्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् ता कठवल्ली उपनिषद्‌के द्वितीय मंत्र करिकै कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ॥ अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ (पदच्छेदः) न । जायते । म्रियते । वा । कदाचित् । न । अयं । भूत्वा । भविता । वा । न । भूयः । अजः । नित्यः । शाश्वतः । अयं । पुराणः । न । हन्यते । हन्यमाने । शरीरे ॥ २० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह आत्मादेव नहीं जन्मे है तथा नहीं मरै है तथा यह आत्मा कदाचित्‌भी पूर्व नहीं होइकरिकै पुनः उत्पत्तिमान् नहीं होवै है जिस कारणतैं यह आत्मादेव अज है तथा अनित्य है तथा शाश्वत है तथा पुराण है ऐसा आत्मा शरीरके हनन हुएभी नहीं हनन होवै है ॥ २० ॥

टीका । जन्म, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम, अपक्षय, विनाश यह षट् भावविकार शास्त्रविषे कथन करे हैं तिन षट् विकारोंविषे आद्यके जन्मरूप विकारका तथा अंतके नाशरूप विकारका श्रीभगवान् खंडन करे हैं (न जायते म्रियते वेति) हे अर्जुन ! यह आत्मादेव जन्मकूं प्राप्त होवै नहीं । काहेतैं यह आत्मादेव किसीभी कालविषे पूर्व नहीं होइकै पश्चात् उत्पत्तिवाला होता नहीं । जो पदार्थ पूर्व नहीं होइकै पश्चात् होवै है । सो पदार्थही उत्पत्तिरूप विक्रियाकूं प्राप्त होवै है । जैसे घटादिक पदार्थ पूर्व नहीं होइकै पश्चात् होवै हैं । यातैं ते घटादिक पदार्थ उत्पत्तिरूप विकारवालेभी हैं । और यह आत्मादेव तौ पूर्वकालविषेभी विद्यमान है । यातैं यह आत्मादेव उत्पत्तिरूप विकारकूं प्राप्त होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव अज है और यह आत्मादेव मरणरूप विकारकूंभी प्राप्त होवै नहीं । काहेतैं यह आत्मादेव पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै कदाचित्‌भी उत्तरकालविषे अविद्यमान

(मू. श्लो.) य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतम् ॥ उभौ तौ न विजानीतो नायं हंति न हन्यते ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) यः । एनं । वेत्ति । हंतारं । यः । च । एनं । मन्यते । हतं । उभौ । तौ । न । विजानीतः । न । अयं । हंति । न । हन्यते ॥ १९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जो पुरुष इस आत्माकूं हननकर्त्ता जाने है तथा जो पुरुष इस आत्माकूं हनन हुआ माने है ते दोनों पुरुष आत्माकूं नहीं जानते हैं काहेतें यह आत्मा किसीकूंभी नहीं हनन करै है तथा आपभी नहीं हननकूं प्राप्त होवै है ॥ १९ ॥

टीका । हे अर्जुन ! पूर्व हमनैं कथन करा जो अविनाशी अप्रमेयरूप देही आत्मा है । ता आत्माकूं जो पुरुष मैं इस वस्तुका हनन करणेहारा हूं या प्रकार हननरूप क्रियाका कर्त्ता जाने है । और जो पुरुष इस आत्मादेवकूं देहके हनन करिकै मैं हनन हुआ हूं या प्रकार हननक्रियाका कर्मरूप जाने है । ते दोनों पुरुष देहाभिमानि होणेतैं कर्त्ताकर्मभावतैं रहित अधिकारी आत्माकूं शास्त्रप्रमाणतैं देहादिकोंतैं भिन्न करिकै जानते नहीं । क्यूं नहीं जानते जिस कारणतैं यह आत्मादेव किसीभी प्राणीकूं हनन करता नहीं । तथा आपभी किसी करिकै हनन होता नहीं । ऐसे हनन क्रियाके कर्त्ताकर्म भावतैं रहित आत्मादेवकूं जे मूढ पुरुष ता हननक्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप माने हैं ते मूढ पुरुष आत्माके वास्तवस्वरूपकूं जानते नहीं । इहां यद्यपि (य एनं वेत्ति हंतारं हतं वा) इतने वचनमात्र कहणेकरिकैही ता पूर्व उक्त अर्थकी सिद्धि होइ सकै है । यातैं (य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतम्) यह दोवार पदोंकी आवृत्ति करणी निष्फल है । तथापि सा पदोंकी आवृत्ति वाक्यके अलंकारवासतै है इति । अथवा (य एनं वेत्ति हंतारम्) या वचनकरिकै नैयायिकोंका कथन करा है । काहेतैं ते नैयायिक आत्माकूंही हननादिक क्रियावोंका कर्त्ता माने हैं और (यश्चैनं मन्यते हतं) या वचनकरिकै चार्वाकोंका कथन करा है । काहेतैं ते चार्वाकादिक शरीरादिरूप आत्माकूं नाशवान् माने हैं । ते नैयायिक तथा चार्वाक दोनों आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानते नहीं । या प्रकार तिन वादियोंके भेद जनावणेवासतै सा दोवार पदोंकी आवृत्ति करी है इति । अथवा जे पुरुष आत्माकूं हननक्रियाका कर्त्ता जाने हैं ते पुरुष अत्यंत शूरवीर हैं । और जे पुरुष ता आत्माकूं हननक्रियाका कर्म माने हैं ते

स्वप्रकाशज्ञानरूप आत्मा तौ कदाचित्भी नाश होवै नहीं। और यह भीष्मद्रोणादिक शरीर तौ मिथ्यारूप हैं तथा अनित्य हैं। यातैं ते शरीर आपही नष्ट हुए जैसे हैं। ऐसे अनित्य शरीरोंके हननतैं निवृत्त होइकै तूं अपणे स्वधर्मकूं नाश मत कर इति। इहां (युद्धयस्व) या वचनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति युद्धरूप कर्मका विधान नहीं करा। किंतु ता वचनकरिकै भगवान्नैं पूर्व प्राप्त युद्धका अनुवाद मात्र करा है। काहेतैं आत्मज्ञानके उपदेशप्रसंगमें ता युद्धरूप धर्मकी विधि संभवै नहीं। किंतु भगवान्के उपदेशतैं विनाहीं सो अर्जुन पूर्व युद्धविषे प्रवृत्त हुआ था। परंतु शोकमोहके वशतैं सो अर्जुन ता युद्धतैं निवृत्त होता भया। सो शोकमोह भगवान्के उपदेशजन्य ज्ञानतैं निवृत्त होता भया। यातैं 'अपवादाऽपवादे उत्सर्गस्य स्थितिः' या न्यायकरिकै (युद्धयस्व) यह भगवान्का वचन अनुवादरूपही है विधिरूप नहीं। इहां पूर्व प्राप्त युद्धका शोक मोह अपवाद है और ता शोकमोहका विचारजन्य ज्ञान अपवाद है। ता शोकमोहरूप अपवादके विचारजन्य ज्ञानरूप अपवादके विद्यमान हुए तहां पूर्व प्राप्त युद्धरूप उत्सर्गकीही स्थिति होवै है। जैसे भोजन करणेविषे प्रवृत्त हुआ क्षुधावान् पुरुष किसी अशुद्धि आदिकोंकी शंकाकरिकै ता भोजनतैं निवृत्त होइ जावै और कोई धर्मात्मा पुरुष ताके शंकाकी निवृत्ति करिकै ता पुरुषके प्रति तूं भोजन कर या प्रकारका वचन कहै। इहां तूं भोजन कर या प्रकारका वचन विधिरूप नहीं है किंतु पूर्व प्राप्त भोजनका अनुवादरूप है। पूर्व अप्राप्त अर्थके बोधन करणेहारा वचनही विधिरूप होवै है। और कोईक ग्रंथकार तौ (युद्धयस्व) या वचनकूं विधिरूप मानिके मोक्षकी प्राप्तिविषे ज्ञान कर्म दोनोंका समुच्चय अंगीकार करे हैं सो तिनोंका कहणा असंगत है। काहेतैं (युद्धयस्व) या वचनतैं मोक्षकी प्राप्ति ज्ञान कर्म दोनोंके समुच्चयतैं होवै है यह अर्थ प्रतीत होवै नहीं। और ज्ञान कर्मका समुच्चय आगे विस्तारतैं खंडन करैंगे इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! (अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्).इत्यादिक वचनोंकरिकै भीष्मद्रोणादिक बांधवोंके नाशजन्य शोककै निवृत्त हुएभी तिन भीष्मद्रोणादिकोंके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो पाप है ता पापके निवृत्त करणेका कोई उपाय है नहीं। और जो आप यह कहो जहां शोक नहीं होवै है तहां पापभी नहीं होवै है। सो यह नियम संभवता नहीं। काहेतैं किसी पुरुषनैं अपणे शत्रु ब्राह्मणका हनन करा। तहां ता शत्रु ब्राह्मणके हनन करणेविषे ता पुरुषकूं शोक ता होवै नहीं। यातैं ता पुरुषकूं ता ब्रह्महत्याजन्य पापभी नहीं होणा चाहिये। और शोकके नहीं हुएभी ता पुरुषकूं पाप तौ अवश्यकरिकै होवै है। यातैं भीष्मद्रोणादिकोंकूं हनन कर्त्ता जो मैं अर्जुन हूं तथा तिनोंके हनन करणेविषे हमारेकूं प्रेरणा करणहारे जो आप हो तिन हम दोनोंकूही ता बांधवोंकी हिंसातैं पाप अवश्यकरिकै होवैगा यातैं तूं युद्ध कर। यह जो वचन पूर्व आपनैं कथन करा है सो असंगत है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कठवल्लीउपनिषद्के मंत्रकरिकै ता शंकाकी निवृत्ति करै हैं।

आत्माके कल्पित हुए शून्यवादकी प्राप्ति होवैगी यातैं आत्मा ज्ञानतैं भिन्न नहीं है । किंतु आत्मा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपही है । ऐसा स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप हुआभी यह आत्मा अविद्यारूप उपाधिके संबंधतैं साक्षी कह्या जावै है। और वृत्तिमत् अंतःकरणरूप उपाधिके संबंधतैं प्रमाता कह्या जावै है । तिसी प्रमाताके यह चक्षु आदिक इंद्रिय करण होवैं हैं । और सोईही प्रमाता तिन चक्षु आदिक इंद्रियोंद्वारा अंतःकरणके वृत्तिरूप परिणामके साथि बाह्य घटादिक पदार्थोंकूं व्याप्य करिकै तिन घटादिकोंके आकार होवै है। तिस अंतःकरणके एकही वृत्तिरूप परिणामविषे घटावच्छिन्न चैतन्य तथा अंतःकरणावच्छिन्न चैतन्य दोनों एकताभावकूं प्राप्त होवैं हैं। जैसे गृहविषे घटके प्राप्त हुए ता गृहाकाशकी तथा घटाकाशकी एकता होवै है । तैसे वृत्तिरूप उपाधिके तथा घटरूप उपाधिके एकदेशविषे स्थित हुए ता वृत्तिउपहित चेतनकी तथा घटउपहित चेतनकी एकता होवै है। तिसतैं अनंतर सो घटावच्छिन्न चैतन्य प्रमाता चैतन्यके अभेदतैं अपणे अज्ञानकूं नाश करता हुआ अपरोक्ष होवै है। और अपणा उपाधिरूप जो घट है ता घटकूं अपणे तादात्म्य अध्यासतैं सो चैतन्य प्रकाश करै है। और अत्यंत स्वच्छ जो अंतःकरणकी परिणामरूप वृत्ति है ता वृत्तिकूं ता वृत्तिउपहित चैतन्य प्रकाश करै है। इस प्रकार अंतःकरण, वृत्ति, घट या तीनोंकी अपरोक्षता होवै है। 'अहं जानामि घटम्' यह तीनोंके अपरोक्षताका आकार है । इस प्रकार अंतरबाहिर स्थित सर्व अनात्मपदार्थोंकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य यद्यपि एकरूप है तथापि घटादिक बाह्य पदार्थोंके प्रकाश करणेविषे ता चैतन्यकूं अंतःकरणके वृत्तिकी अपेक्षा रहै है। या कारणतैंही ता चैतन्यविषे प्रमातापणा है। और अंतःकरणके तथा ता अंतःकरणकी वृत्तियोंके प्रकाश करणेविषे ता चैतन्यकूं किसी वृत्तिकी अपेक्षा हैनहीं या कारणतैंही ता चैतन्यविषे साक्षीरूपता है । जो कदाचित् सो चैतन्य अंतःकरणके वृत्तिकूं घटादिकोंकी न्याईं दूसरी वृत्तिकी अपेक्षाकरिकै प्रकाश करैगा तौ ता दूसरी वृत्तिकूं तीसरी वृत्तिकी अपेक्षाकरिकै प्रकाश करैगा ता तीसरी वृत्तिकूं चतुर्थ वृत्तिकरिकै प्रकाश करैगा । या प्रकार वृत्तियोंकी धारा मानणेविषे अनवस्थादोषकी प्राप्ति होवैगी यातैं सो साक्षी आत्मा अपणे स्वरूपतैंही अंतःकरणकूं तथा ताके वृत्तियोंकूं प्रकाश करै है । तिनोंके प्रकाशविषे वृत्तिकी अपेक्षा करै नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जिस कारणतैं पूर्व उक्त श्रुतियुक्तियोंकरिकै यह स्वप्रकाश स्फुरणरूप आत्मा सर्वदा नित्य है तथा सर्वत्र व्यापक है तथा जन्ममरणरूप संसारतैं रहित है तथा सर्व पदार्थोंका प्रकाशक है तथा सर्वदा एकरूप है । तिस कारणतैं ऐसे अविनाशी आत्माके नाशकी शंका करिकै अपणे युद्धरूप धर्मविषे पूर्व प्रवृत्त हुए तुम्हारेकूं तिस युद्धतैं उपराम होणा योग्य नहीं है या प्रकारका वचन श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहै हैं (तस्माद्युद्ध्यस्व भारत) इति । तात्पर्य यह ।

नहीं । और " एकमेवाद्वितीयं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म " इत्यादिक शास्त्र अद्वितीय ब्रह्मतैं भिन्न सर्व जगतविषे कल्पितपणेकूं कथन करता हुआ अपणेविषेभी कल्पितरूपताकूं बोधन करै है। जो कदाचित् सो शास्त्र अपणेविषे कल्पितपणेकूं नहीं बोधन करैगा तौ सो शास्त्र सद्वितीयब्रह्मकूं अद्वितीयरूपकरिकै बोधन करता हुआ आपही अप्रमाणरूप होवैगा। और कल्पित वस्तु अकल्पित वस्तुके परिच्छेदकूं करै नहीं यह वार्ता पूर्व कथन करि आये हैं यातैं ता स्वप्रकाश आत्माविषे भेदरूप वस्तुपरिच्छेदकीभी प्राप्ति होवै नहीं। किंवा। सर्व कालविषे आत्माकी स्वप्रकाशता केवल श्रुतिप्रमाणकरिकैही सिद्ध नहीं है किंतु भगवान् भाष्यकारोंनैं युक्तिनैंभी सा आत्माकी स्वप्रकाशता सिद्ध करी है। सा युक्ति यह है जिस पुरुषकूं जिस वस्तुविषे संशय, विपर्यय, व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी नहीं होवै है तिस पुरुषकूं तिस वस्तुविषे तिन संशयादिकोंका विरोधी ज्ञान अवश्य करिकै होवै है। या प्रकारका नियम सर्वत्र देखणेविषे आवै है। जैसे जिस पुरुषकूं जिस घटविषे घट है अथवा नहीं है या प्रकारका संशय तथा घट नहीं है या प्रकारका विपर्यय तथा घट नहीं है या प्रकारकी व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी नहीं होवै है तिस पुरुषकूं तहां तिन संशयादिक तीनोंका विरोधी 'घटोऽस्ति' या प्रकारका ज्ञान अवश्यकरिकै होवै है। जो कदाचित् सो विरोधी ज्ञान तहां नहीं होवै तौ तिन संशयादिक तीनोंविषे कोई एक अवश्य होणा चाहिये। और आत्माविषे तौ किसीभी पुरुषकूं मैं हूं अथवा नहीं हूं या प्रकारका संशय तथा मैं नहीं हूं या प्रकारका विपर्यय तथा मैं नहीं हूं या प्रकारकी व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी होवै नहीं यातैं तिन सर्व पुरुषोंकूं सर्वकालविषे तिन संशयादिकोंका विरोधी आत्माके वास्तवस्वरूपका ज्ञान अवश्य कहणा होवैगा। जो कदाचित् सो आत्माके स्वरूपका ज्ञान नहीं होवै तौ तिन संशयादिक तीनोंविषे कोई एक अवश्य करिकै होणा चाहिये। और आत्माविषे ते संशयादिक होते नहीं यातैं सो आत्मा सर्वकालविषे स्वप्रकाशरूप है इति। किंवा। वेदांतसिद्धांतविषे सो स्वप्रकाशज्ञान आत्माके आश्रित रहै नहीं किंतु ता स्वप्रकाशज्ञानरूपही आत्मा है। जो कदाचित् आत्माकूं ता ज्ञानका आश्रय मानियें तौ जो वस्तु जिस ज्ञानका आश्रयरूप कर्त्ता होवै है सोईही वस्तु तिस ज्ञानका विषयरूप कर्म होवै नहीं किंतु ज्ञानका कर्त्ता तथा कर्म भिन्न भिन्न होवै है यातैं ता ज्ञानकरिकै आत्माकी सिद्धि नहीं होवैगी। किंवा। आत्माकूं जो ज्ञानतैं भिन्न मानियें तौ जो जो पदार्थ ज्ञानतैं भिन्न होवै है सो सो पदार्थ जडही होवै है। जैसे ज्ञानतैं भिन्न होणेतैं घटादिक पदार्थ जडरूप हैं तैसे ज्ञानतैं भिन्न होणेतैं आत्माभी जडरूप होवैगा। और जो जो पदार्थ जड होवैं हैं सो सो पदार्थ कल्पित होवैं हैं। जैसे जड होणेतैं घटादिक पदार्थ कल्पित हैं तैसे जड होणेतैं आत्माभी कल्पित होवैगा।

ता आत्माकी सिद्धिविषे एक उपनिषद्रूप शास्त्रही प्रमाण कह्या है। तथा " तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि " या श्रुतिनैंभी ता आत्माकी सिद्धिविषे उपनिषद्रूप प्रमाण कथन करा है यातैं प्रमाणका विषय होणेतैं ता चैतन्यरूप आत्माविषे सो भेदरूप वस्तुपरिच्छेद अवश्यकरिकै प्राप्त होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं । (अप्रमेयस्येति) हे अर्जुन जैसे घटपटादिक सर्व पदार्थोंकूं प्रकाश करणेहारा जो सूर्य भगवान् है ता सूर्यभगवानकूं अपणे प्रकाशवासते घटादिक पदार्थोंकी अपेक्षा होवै नहीं । तैसे प्रमाणप्रमेयादिक सर्व जगत्कूं प्रकाश करणेहारा जो स्वप्रकाश चैतन्यरूप आत्मा है ता चैतन्य आत्माकूं अपणे प्रकाश करणेवासतै प्रमाणादिकोंकी अपेक्षा होवै नहीं या कारणतैं सो आत्मादेव अप्रमेय है । तहां श्रुति । " एकधैवानुद्रष्टव्यमेतदप्रमेयं ध्रुवमप्रमेयं न तत्र सूर्यो भाति न चंद्रतारकं नेमा विद्युतो भांति कुतोयमग्निः तमेव भातमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति येनेदं सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात् विज्ञातारमरे केन विजानीयात् " । अर्थ यह । यह चैतन्यआत्मा एक प्रकारकरिकैही देखणे योग्य है तथा यह आत्मादेव अप्रमेय है तथा कूटस्थ है तथा अप्रमेय है । और ता स्वयंज्योति आत्माविषे सूर्यभी प्रकाश करै नहीं तथा चंद्रमा तारागणभी प्रकाश करैं नहीं तथा विद्युत्भी प्रकाश करै नहीं तथा यह अग्निभी प्रकाश करै नहीं और ता स्वयंज्योति आत्माके प्रकाशकूं आश्रयणकरिकैही पश्चात् यह सूर्यचंद्रमादिक सर्व पदार्थ प्रतीत होवै हैं तथा ता आत्मादेवके स्वयंज्योति प्रकाशकरिकैही यह सूर्यचंद्रमादिक सर्व जगत् प्रकाशमान होवै है। और जिस स्वयंज्योति आत्माकरिकै यह लोक या सर्व पदार्थोंकूं जानै हैं तिस सर्वके द्रष्टा विज्ञाता आत्माकूं यह जीव किस प्रमाणकरिकै जानि सकैगा किंतु किसीभी प्रमाणकरिकै जानि सकै नहीं इति । ऐसे स्वयंज्योति आत्माकूं अपणे प्रकाशवासतै किसीभी प्रमाणकी अपेक्षा है नहीं किंतु अपणेविषे कल्पित जो अज्ञान है तथा ता अज्ञानका कार्य है ता कार्यसहित अज्ञानकी निवृत्तिवासतै ता स्वयंज्योति आत्माकूं कल्पित वृत्तिविशेषकी अपेक्षा है काहेतैं जैसा यक्ष होवै तैसाही तिसका बलि होवै है या शास्त्रके न्यायतैं कल्पित वस्तुका कल्पित वस्तुही विरोधी सिद्ध होवै है यातैं कल्पित अंतःकरणकी वृत्तिकरिकै कल्पित कार्यसहित अज्ञानकी निवृत्ति संभवै है । और कल्पित सर्व प्रपंचकी निवृत्ति करणेहारी सा अंतःकरणकी वृत्तिविशेष केवल तत्त्वमसि आदिक वाक्यमात्रतैंही उत्पन्न होवै है प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंकरिकै उत्पन्न होवै नहीं यातैं ता वृत्तिविशेषकी उत्पत्तिवासतै शास्त्रका आरंभभी सफल है । और सो चैतन्यस्वरूप आत्मादेव सर्व कालविषे स्वतःही प्रकाशमान् है तथा सर्व कल्पनाका अधिष्ठान है तथा सर्व दृश्यप्रपंचका प्रकाशक है । ऐसे स्वप्रकाश अधिष्ठान आत्माविषे वंध्यापुत्र शशशृंगादिकोंकी न्याई असत्यरूपता संभवै

तिस प्राणमयकोशकाभी सोईही शारीरआत्मा है शरीरविषे जो विद्यमान होवै ताका नाम शारीर है इति । या प्रकारका श्रुतिवचन मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय या तीन कोशोंविषेभी जानि लेणा । यह पंचकोशोंकी प्रक्रिया आत्मपुराणके दशम अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं। अथवा (अंतवंत इमे देहाः) या श्लोकके पदोंकी या प्रकारतैं योजना करणी । तीन लोकविषे वर्त्तमान सर्व प्राणियोंके संबंधी जो स्थावरजंगमरूप देह हैं ते सर्व देह एकही स्वयंज्योति आत्माके श्रुतिनैं कथन करे हैं। तहां श्रुति । "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा । कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" अर्थ यह । एक अद्वितीय आत्मादेव सर्व शरीरोंविषे गूढ होइके स्थित है तथा सर्वव्यापी है तथा सर्व भूतोंका अंतरआत्मा है तथा पुण्यपापरूप कर्मोंका फलप्रदाता है। तथा सर्व भूतोंका अधिष्ठान है तथा बुद्धि आदिक सर्व संघातका साक्षी है तथा चैतन्यरूप है तथा अद्वितीयरूप है तथा निर्गुण है तथा निष्क्रिय है इति । यह श्रुति स्थावरजंगमरूप सर्व शरीरोंके संबधवाले एक नित्य विभु आत्माकूं कथन करे है। शंका—हे भगवन् ! जितनेपर्यंत यह काल रहै है तितनेपर्यंत स्थायी होणा याका नाम नित्यपणा है । सो यह नित्यपणा कालके साथि आत्माका नाश अंगीकार किये हुएभी अविद्यादिकोंकी न्याईं ता आत्माविषे संभव होइ सकै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं । (अनाशिनः इति) हे अर्जुन देशकालवस्तुपरिच्छेदवाले जो अविद्यादिक हैं ते अविद्यादिक अधिष्ठान आत्माविषे कल्पित होणेतैं यद्यपि अनित्य हैं तथापि तिन अविद्यादिकोंविषे सो यावत्काल स्थायित्वरूप गौण नित्यपणा प्रतीत होवै है । तीन कालविषे अबाध्यत्वरूप मुख्य नित्यत्व तिन अविद्यादिकोंविषे है। नहीं और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित होणेतैं अकल्पित जो आत्मा है ता आत्माके नाशका कोई कारण है नहीं यातैं ता आत्माविषे मुख्यही कूटस्थरूप नित्यत्व है। अविद्यादिकोंकी न्याईं परिणामिरूप नित्यत्व तथा यावत्कालस्थायित्वरूप नित्यत्व ता आत्माविषे है नहीं । शंका—ऐसे सर्व देहोंके संबधवाले चैतन्य आत्माविषे कोई प्रमाण है अथवा नहीं है तहां ता चैतन्य आत्माविषे कोई प्रमाण नहीं है यह द्वितीयपक्ष तौ संभवै नहीं काहेतैं जो वस्तु किसी प्रमाणजन्य ज्ञानका विषय नहीं होवै है सो वस्तु असत्यही होवै है । जैसे वंध्यापुत्र तथा शशशृंग किसी प्रमाणजन्य ज्ञानके विषय नहीं हैं यातैं असत्यही हैं तैसे प्रमाणजन्य ज्ञानका अविषय होणेतैं सो चैतन्य आत्माभी असत्यही होवैगा । तथा ता आत्माके साक्षात्कारवासतै जो शास्त्रका आरंभ है सोभी व्यर्थही होवैगा । इत्यादिक सर्व दोषोंकी निवृत्ति करणेवासतै ता देही आत्माविषे कोई प्रमाण है यह प्रथम पक्ष अवश्यकरिकै अंगीकार करणा होवैगा । किंवा । 'शास्त्रयोनित्वात्' या सूत्रके व्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनैंभी

नित्य तथा शरीररूप उपाधिवाला तथा नाशतैं रहित तथा प्रमेयभावतैं रहित ऐसा जो स्फुरणरूप आत्मा है ता एक आत्माकेही यह नाशवान् सर्व देह कथन करे हैं तिसं कारणतैं तूं युद्ध कर ॥ १८ ॥

टीका । वृद्धिक्षयवाले होणेतैं शरीर नामकरिकै प्रसिद्ध तथा नाशरूप अंतवाले जो यह प्रत्यक्ष देह हैं । इहां (देहाः) या बहुवचनकरिकै स्थूल सूक्ष्म कारणरूप जितनेक विराट् सूत्र अव्याकृत नामा समष्टि व्यष्टि शरीर हैं तिन सर्व शरीरोंका ग्रहण करणा । और नित्य तथा विनाशतैं रहित तथा आध्यासिकसंबंधकरिकै शरीरवाला ऐसा जो स्वप्रकाश स्फुरणरूप आत्मा है ता एकही आत्माके ते स्थूल सूक्ष्म कारणरूप सर्व शरीर दृश्यरूप हैं तथा भोगरूप हैं यातैं श्रुतिभगवतीनैं तथा ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैं ते सर्व देह दृश्यत्वरूपकरिकै तथा भोग्यत्वरूपकरिकै ता एकही आत्माके संबंधी कथन करे हैं । तहां तैत्तिरीय श्रुतिविषे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय या पंच कोशोंकी कल्पना करिकै तिन सर्व कोशोंका अधिष्ठानरूप तथा अकल्पित पुच्छप्रतिष्ठारूप ब्रह्म कथन करा है । तहां पंचीकृत पंचमहाभूत जो हैं तथा तिन पंचमहाभूतोंका कार्यरूप जो सर्व मूर्त्त पदार्थोंका समुदायरूप विराट् है सो अन्नमयकोश है । यह स्थूल समष्टि है । और ता स्थूल समष्टिका कारणरूप जो अपंचीकृत पंचमहाभूत हैं तथा तिन अपंचीकृत भूतोंका कार्यरूप जो सर्व अमूर्त्तपदार्थोंका समुदायरूप सूत्रनामा हिरण्यगर्भ है सो सूक्ष्म समष्टि है । तहां "त्रयं वा इदं नाम रूपं कर्मेति" या बृहदारण्यक उपनिषद्की श्रुतिनैं ता सूक्ष्म समष्टिकूं नाम, रूप, कर्म यह तीन रूप कह्या है । तहां सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थित कर्मरूपताकरिकै जबी क्रियाशक्तिमात्रकूं ग्रहण करै है तबी प्राणमय संज्ञाकूं प्राप्त होवै है । और सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थित नामरूपताकरिकै जबी ज्ञानशक्तिमात्रकूं ग्रहण करै है तबी मनोमय संज्ञाकूं प्राप्त होवै है । और सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थितरूप स्वरूपताकरिकै तिस क्रियानाम दोनोंका आश्रय होणेतैं जबी कर्तृत्वमात्रकूं ग्रहण करै है तबी विज्ञानमय संज्ञाकं प्राप्त होवै है । या प्रकार सो एकही हिरण्यगर्भ नामा लिंगशरीर रूप कोश प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय यह तीन कोशरूप होवै है । और ता हिरण्यगर्भरूप लिंगशरीरकाभी कारणरूप तथा सर्व प्रपंचके वासना रूप संस्कारोंका आश्रयरूप ऐसा जो अव्याकृत नामा मायाउपहितचैतन्य आत्मा है सो आनंदमयकोश है । ते अन्नमयादिक सर्व एकही आत्माके शरीर श्रुतिनैं कहे हैं । तहां श्रुति । "तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्येति" । अर्थ यह । पूर्व अन्नमयकोशका जो सत्यज्ञान अनंतरूप शारीर आत्मा कथन करा है

सो स्वयंज्योतिपुरुषही या सर्व जगत्का अवधिरूप है तथा परागतिरूप है इति । यह श्रुति सर्व जगत्के बाधका अवधिरूपकरिकै ता स्वयं ज्योति पुरुषका कथन करै है। यह वार्त्ता भगवान् भाष्यकारोंनैंभी कथन करी है। "सर्वं विनश्यद्वस्तुजातं पुरुषांतं विनश्यति पुरुषो विनाशहेत्वभावान्न विनश्यति" । अर्थ यह । या स्थूल प्रपंचतैं आदिलेके अव्याकृतपर्यंत जितनेका नाशवान् वस्तु हैं ते सर्व वस्तु चैतन्यरूप पुरुषपर्यंत नाशकूं प्राप्त होवैं हैं। और तिस पुरुषके नाश करणेहारा कोई कारण है नहीं यातैं सो पुरुष नाशकूं प्राप्त होवै नहीं इति। इतनैं कहणेकरिकै क्षणिक विज्ञानवादियोंका मतभी खंडन करा काहेतैं जो कदाचित् आत्मा क्षणिक होवै तौ जो मैं बाल्य अवस्थाविषे अपणे मातापिताकूं अनुभव करता भया सोईही मैं अबी वृद्ध अवस्थाविषे ता मातापिताकं स्मरण करता हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान सर्व प्राणियोंकूं होवै है सो नहीं होणा चाहिये। काहेतैं जो पुरुष जिस वस्तुकूं देखै है सोईही पुरुष कालांतरविषे तिस वस्तुकूं स्मरण करै है। अन्य पुरुषकरिकै देखी हुई वस्तुका अन्य पुरुषकूं स्मरण होवै नहीं यातैं सो आत्मा क्षणिक नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया सर्वत्र व्यापक तथा एक अद्वितीयरूप जो स्वप्रकाश स्फुरणरूप सत् वस्तु है सो स्फुरणरूप सत् वस्तु पूर्व उक्त देशकालादिक सर्व परिच्छेदतैं रहित है यातैं ता सत् वस्तुका अभाव कदाचित्भी नहीं होवै है। यह जो श्रीभगवान्नैं कह्या है सो यथार्थ कह्या है इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका–पूर्व आपनैं स्फुरणरूप सत् वस्तुकूं अविनाशी कह्या सो संभवता नहीं काहेतैं जैसे पान, काथा, चूना, सुपारी या चारोंका समुदायरूप जो तांबूल है तिस तांबूलविषे रक्तता उत्पन्न होवै है तैसे पृथिवी, जल, तेज, वायु या चारि भूतोंका समुदायरूप जो यह स्थूल शरीर है ता स्थूल शरीरविषे एक चैतन्यताधर्म उत्पन्न होवै है यातैं सो चैतन्यरूप स्फुरण या स्थूल शरीरकाही धर्म है। और यह स्थल शरीर तौ क्षण क्षणविषे नाशकूं प्राप्त होवै है यातैं ता शरीररूप धर्मीके नाश हुए ता ज्ञानरूप स्फुरणकाभी अवश्य करिकै नाश होवैगा या प्रकारकी भूतचैतन्यवादियोंकी शंकाके हुए तिन भूतचैतन्यवादियोंके खंडन करणेवासतै श्रीभगवान् (नासतो विद्यते भावो) या पूर्व कहे हुए वचनका अर्थ अबी विस्तारतैं निरूपण करैं हैं।

(मू. श्लो.) अंतवंत इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ॥ अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १८॥ (पदच्छेदः) अंतवंतः। इमे । देहाः। नित्यस्य। उक्ताः। शरीरिणः। अनाशिनः। अप्रमेयस्य । तस्मात्। युध्यस्व। भारत ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे भारत

काहेतें जो पूर्व अज्ञात हुआ इदानींकालविषे ज्ञात होवै है ताकूंही इदानींकालविषे ज्ञात कहैं हैं । और जो हेतु अपणे साध्यतें अभिन्न होवे है सो हेतु सिद्धसाधनतादोषवाला होवै है । या कारणतैंभी ता दुष्ट हेतुतें अज्ञातत्वरूप साध्यकी सिद्धि होवै नहीं । किंवा । घटादिकोंकी अज्ञात अवस्थाके ज्ञानतें विना तिन घटादिकोंविषे स्वविषयक प्रत्यक्षज्ञानके प्रति कारणता ग्रहण करी जावै नहीं काहेतें जिस वस्तुविषे जिस कार्यतें नियम करिकै पूर्ववर्त्तिपणेका ज्ञान होवै है तिसी वस्तुविषे ता कार्यकी कारणता ग्रहण करी जावै है । जैसे मृत्तिकाविषे घटरूप कार्यतें पूर्ववर्त्तिपणेके ज्ञान हुएतें अनंतरही ता मृत्तिकाविषे घटके कारणताका ज्ञान होवै है । पूर्ववर्त्तिपणेके ज्ञानतें विना कारणताका ज्ञान होवै नहीं यातें ता घटके प्रत्यक्षज्ञानतें पूर्व ता घटके अज्ञात अवस्थाका ज्ञान अवश्य अंगीकार करा चाहिये । किंवा । ता घटके अज्ञात अवस्थाका ज्ञान जो नहीं होता होवै तौ मैं घटकूं नहीं जानता हूं या प्रकारके सर्व लोकोंके अनुभवका विरोध होवैगा यातें यह अर्थ सिद्ध भया अज्ञातरूप स्फुरण अपणे स्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रकाशमान हुआ अपणेविषे कल्पित घटादिक पदार्थोंकूंभी प्रकाश करै है यातें ता अज्ञातरूप स्फुरणविषेही तिन घटादिक पदार्थोंका कल्पितपणा सिद्ध होवै है । जो कदाचित् सो अज्ञातरूप स्फुरण तिन घटादिक पदार्थोंके प्रकाश नहीं करता होवै तौ तिन घटादिक पदार्थोंकूं स्वभावतें जड होणेतें तिन घटादिकोंका अज्ञातपणा तथा ता अज्ञातपणेका ज्ञान दोनों नहीं सिद्ध होवैंगे । और ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे जो अज्ञातपणा है सो अपणेविषे कल्पित अज्ञानकरिकैही है । यह वार्त्ता (अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यंति जंतवः) या वचनकरिकै श्रीभगवान् आपही आगे कहैंगे । इतने कहणेकरिकै ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे विभुपणा सिद्ध करा । तहां श्रुति । "महद्भूतमनंतमपारं विज्ञानघन एवेति सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म इति" । अर्थ यह । सो सत् वस्तुरूप स्फुरण महान्रूप है तथा अनंत है तथा अपार है तथा विज्ञानघन है तथा सत्य है तथा ज्ञानरूप है तथा अनंत है इति । यह श्रुति ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे महत्पणा तथा अनंतपणा कथन करै है । तहां ता ज्ञानरूप स्फुरणविषे कल्पित जो यह सर्व जगत्है ता सर्व जगतके साथि ता स्फुरणका जो कल्पित तादात्म्यसंबंध है यहही ता स्फुरणविषे महत्पणा है । और देशकालवस्तुपरिच्छेदतें जो रहितपणा है यहही ता स्फुरणविषे अनंतपणा है । इतने कहणेकरिकै शून्यवादियोंका मतभी खंडन करा काहेतें अधिष्ठानवस्तुतें विना कोईभी भ्रम होवै नहीं । तथा अधिष्ठानतें विना ता भ्रमका बाधभी होवै नहीं । और शून्यवादियोंके मतविषे कोई सत् वस्तु अधिष्ठानतें है नहीं यातें तिन्होंका मत असंगत है । तहां श्रुति । " पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परागतिः " । अर्थ यह । स्वयंज्योतिरूप पुरुषतें परे कोईभी वस्तु है नहीं । किंतु

चैतन्यरूप स्फुरणकी सिद्धि नहीं होवै है । किंतु साक्षात् श्रुतिप्रमाणकरिकैभी ता ज्ञानरूप स्फुरणकी सिद्धि होवै है । तहां श्रुति । " यद्वैतन्न पश्यति पश्यन्वैतद्द्रष्टव्यं न पश्यति नहि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् " । अर्थ यह । सुषुप्ति अवस्थाविषे यह आत्मादेव द्वैतप्रपंचकूं जो नहीं देखता है सो अपणे चैतन्यरूप स्फुरणके अभाव हुएतें नहीं देखता है यह वार्त्ता कही जावै नहीं किंतु ता सुषुप्ति अवस्थाविषे यह आत्मादेव अपणे चैतन्यरूप स्फुरणकरिकै देखता हुआभी तहां द्वैतप्रपंचका अभाव होणेतें ता द्वैतप्रपंचकूं देखता नहीं काहेतें ता द्रष्टा आत्माका स्वरूपभूत जो स्फुरणरूप दृष्टि है सा दृष्टि नाशतें रहित है यातें ता स्फुरणरूप दृष्टिका किसीभी अवस्थाविषे अभाव होवै नहीं इति । यह श्रुति सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशरूप स्फुरणके सद्भावकूं तथा नित्यताकूं कथन करै है । किंवा । जैसे अहंकारादिक ता ज्ञानरूप स्फुरणविषे कल्पित हैं तैसे घटादिक विषयोंके अज्ञात अवस्थाकूं प्रकाश करणेहारा जो सत् वस्तुरूप स्फुरण है ता स्फुरणविषे ते घटादिक विषयभी कल्पित हैं । काहेतें जो घट हमनें पूर्व नहीं जान्या था सोईही घट अबी हमनें जान्या है या प्रकारके अनुभवकरिकैही सा घटकी अज्ञात अवस्था सिद्ध होवै है । और जो ज्ञान अज्ञात वस्तुका प्रकाश करै है सो ज्ञानही प्रमाज्ञान होवै है या प्रकार अज्ञात अर्थका ज्ञापकत्वरूप प्रमाज्ञानका लक्षण सर्व शास्त्रवाले अंगीकार करैं हैं । या कारणतेंही नैयायिकों नें 'यथार्थानुभवः प्रमा' या प्रमाके लक्षणविषे पूर्वज्ञात अर्थकं विषय करणेहारी स्मृतिके निवारण करणेवासतै अनुभव यह पद कथन करा है । तहां घटादिक विषयोंविषे जो अज्ञातपणा है सो अज्ञातपणा नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै जान्या जावै नहीं काहे तें ता अज्ञातपणेके जानणेविषे नेत्रादिक इंद्रियोंका सामर्थ्य है नहीं । और सो घटादिकोंका अज्ञातपणा अनुमानप्रमाणकरिकैभी जान्या जावै नहीं काहेतें जैसे पर्वतविषे स्थित अग्निके जनावणेहारा धूमरूप लिंग होवै है तैसे ता अज्ञातपणेके जनावणेहारा कोई लिंग है नहीं । तहां जो वादी ता अज्ञातपणेकी सिद्धिवासतै या प्रकारका अनुमान करै यह घट पूव अज्ञात था इदानींकालविषे ज्ञात होणेतें सो या प्रकारके अनुमानकरिकैभी सो घटका अज्ञातपणा सिद्ध होवै नहीं काहे तें जहां एकही घटविषे व्यवधानतें रहित 'अयं घटः' 'अयं घटः' या प्रकारके अनेक ज्ञान होवैं हैं तहां प्रथम ज्ञानकूं छोडिकै द्वितीय तृतीय आदिक ज्ञानोंका विषय जो घट है ता घटविषे इदानींकालविषे ज्ञातपणारूप हेतु तौ रहै है परंतु पूर्व अज्ञातपणारूप साध्य रहै नहीं काहेतें ता स्थलविषे पूर्व पूर्व ज्ञानकरिकै ज्ञात घटकूंही उत्तर उत्तर ज्ञान विषय करैं हैं यातें साध्यके अभाववाले घटविषे रहणेहारा सो हेतु व्यभिचारी है ता व्यभिचारी हेतुतें पूर्व अज्ञातत्वरूप साध्यकी सिद्धि होइ सकै नहीं । किंवा । इदानीं ज्ञातत्वरूप हेतुका पूर्व अज्ञातत्वरूप साध्यतें भेद सिद्ध होवै नहीं ।

परिच्छेदकूं करि सकैं नहीं तैसे सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे कल्पित जो विषय इंद्रियादिक हैं ते विषय इंद्रियादिक ता अकल्पित स्फुरणके परिच्छेदकूं करि सकैं नहीं और जो वादी ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे परिच्छिन्नपणेका आरोप अंगीकार करै सो औपाधिक परिच्छिन्नपणा हमारेकूंभी अंगीकार है। परंतु ता स्फुरणविषे वास्तवतैं परिच्छिन्नपणा है नहीं। किंवा। 'अहं घटं जानामि'। अर्थ यह। मैं घटकूं जानता हूं या ज्ञानविषे अहंकार तौ आश्रयरूपकरिकै प्रतीत होवै है। और घट विषयरूपकरिकै प्रतीत होवै है। और उत्पत्तिनाशवाली कोई अंतःकरणकी वृत्ति तौ सर्वत्र व्यापक सत्‌रूप स्फुरणके अभिव्यंजकतारूपकरिकै प्रतीत होवै है ता अभिव्यंजकवृत्तिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशकरिकैही ता वृत्ति उपहित सत्‌रूप स्फुरणविषे उत्पत्ति नाश प्रतीत होवै है। वास्तवतैं ता सत्‌रूप स्फुरणका उत्पत्तिनाश होवै नहीं। अथवा। आत्मा मनका संयोग ज्ञानका कारण होवै यह नैयायिकोंनैंभी अंगीकार करा है। ता संयोगरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशकरिकैही ता संयोग उपहित सत्‌रूप स्फुरणविषे सो उत्पत्तिनाश प्रतीत होवै है वास्तवतैं ता स्फुरणका उत्पत्तिनाश होवै नहीं। जैसे मीमांसकोंके मतविषे स्वभावतैं उत्पत्तिनाशतैं रहित जो वर्णात्मक शब्द है ता शब्दविषे ध्वनिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। और जैसे नैयायिकोंके मतविषे वास्तवतैं उत्पत्ति नाशतैं रहित जो आकाश है ता आकाशविषे घटरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। तैसे वेदांतसिद्धांतविषेभी वास्तवतैं उत्पत्तिनाशतैं रहित जो ज्ञानरूप स्फुरण है ता स्फुरणविषे अंतःकरणकी वृत्तिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। अथवा आत्मामनका संयोगरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका ता स्फुरणविषे आरोप होवै है वास्तवतैं ता सत्‌वस्तुरूप स्फुरणका उत्पत्ति नाश होवै नहीं। और यद्यपि ता सत्‌वस्तुरूप स्फुरणविषे यह अहंकार कल्पित है यातैं ता कल्पित अहंकारविषे ता स्फुरणकी आश्रयता संभवै नहीं। तथापि ता अहंकारकी वृत्तिके साथि ता स्फुरणका तादात्म्य अध्यास है। या कारणतैं ता वृत्तिके आश्रयरूप अहंकारके आश्रित हुआ सो स्फुरण प्रतीत होवै है वास्तवतैं सो अहंकार ता स्फुरणका आश्रय नहीं है काहेतैं सुषुप्ति अवस्थाविषे ता अहंकारके अभाव हुएभी ता अहंकारके सूक्ष्म वासनायुक्त अज्ञानकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य स्वतःही स्फुरण होवै है। जो कदाचित् सुषुप्ति अवस्थाविषे सो चैतन्य स्वतः स्फुरणरूप नहीं होवै तौ इतने कालपर्यंत मैं किंचित्‌मात्रभी नहीं जानता भया या प्रकारका अज्ञानविषयक स्मरण जो सुषुप्तितैं उठे हुए पुरुषकूं होवै है सो नहीं होणा चाहिये। और या प्रकारका स्मरण तौ सर्व पुरुषोंकूं होवै है यातैं यह जान्या जावै है सुषुप्ति अवस्थाविषे अज्ञानकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य स्वतः स्फुरणरूप है ता स्फुरणरूप अनुभवकरिकैही जाग्रत् अवस्थाविषे सो अज्ञानविषयक स्मरण होवै है। किंवा। केवल जाग्रत् अवस्थाके स्मरणकी अनुपपत्तितैंही सुषुप्ति अवस्थाविषे

प्रतीतितैं ज्ञानरूप स्फुरणका उत्पत्ति तथा नाश सिद्ध होवै है और 'अहं घटं जानामि' अर्थ यह-मैं घटकूं जानता हूं या प्रकारकी प्रतीतिभी सर्व लोकोंकूं होवै है या प्रतीतितैं अहंशब्दके अर्थविषे ता ज्ञानरूप स्फुरणकी आश्रयता सिद्ध होवै है । और घटविषे ता ज्ञानरूप स्फुरणकी विषयता सिद्ध होवै है । यातैं सो ज्ञानरूप स्फुरण देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाही सिद्ध होवै है । ऐसे परिच्छिन्न ज्ञानरूप स्फुरणतैं जबी ता सत् वस्तुका वास्तवतैं अभेद हुआ तबी ता सत् वस्तुविषेभी सो देशकालवस्तुपरिच्छेद प्राप्त होवैगा यातैं सो सत् वस्तु देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित है यह आपका वचन संभवता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

(मू. श्लो.) अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ॥ विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥ (पदच्छेदः) अविनाशि । तु । तत् । विद्धि । येन । सर्वम् । इदं । ततम् । विनाशम् । अव्ययस्य । अस्य । न । कश्चित् । कर्तुम् । अर्हति ॥ १७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ! जिसं सत्‌रूप स्फुरणनैं यह सर्व दृश्यप्रपंच व्याप्त करा है तिसं सत्‌रूप स्फुरणकूं तूं परिच्छेदरूप विनाशतैं रहित ही जान जिस कारणतैं इसं अपरिच्छिन्न सत्‌रूप स्फुरणका परिच्छिन्नतारूप विनाशकूं कोईभी करणेकूं नहीं समर्थ है १७ ॥

टीका । देशकृत परिच्छेद, कालकृत परिच्छेद, वस्तुकृत परिच्छेद या तीन प्रकारके परिच्छेदोंका नाम विनाश है सो विनाश जिसकूं प्राप्त होवै है ताका नाम विनाशि है ऐसे परिच्छिन्न पदार्थ हैं तिन विनाशि पदार्थोंतैं जो विलक्षण होवै ताका नाम अविनाशि है क्या तीन प्रकारके परिच्छेदतैं रहित वस्तुका नाम अविनाशि है । हे अर्जुन ! ता सत् वस्तुरूप स्फुरणकूं तूं इस प्रकारका अविनाशि जान कैसा है सो सत् वस्तुरूप स्फुरण जिस एक अद्वितीय नित्य विभुरूप स्फुरणनैं स्वतः सत्तास्फूर्त्तितैं रहित यह सर्व दृश्य प्रपंच व्याप्त करा है । जैसे रज्जुरूप अधिष्ठाननैं अपणे इदम्‌अंशकरिकै कल्पित सर्प, दंड, जलधारादिक व्याप्त करीते हैं तैसे जिस सत् वस्तुरूप स्फुरणनैं अपणी सत्तास्फूर्तिके अध्यासकरिकै यह सर्व दृश्यप्रपंच व्याप्त करा है । ऐसे सत् वस्तुरूप स्फुरणकूं तूं परिच्छिन्नतारूप विनाशतैं रहितही जान काहेतैं परिच्छेदरूप नाशतैं रहित तथा सर्वदा अपरोक्षरूप ऐसा जो सर्वत्र व्यापक सत्‌रूप स्फुरण है ता सत् वस्तुरूप स्फुरणके परिच्छिन्नतारूप विनाशकूं कोई आश्रय अथवा कोई विषय अथवा कोई इंद्रिय अर्थका संबंधरूप हेतु करणेविषे समर्थ होवै नहीं काहेतैं कल्पित वस्तु अकल्पित वस्तुके परिच्छेदकूं करि सकै नहीं जैसे रज्जुविषे कल्पित सर्प दंडादिक अकल्पित रज्जुके

णादिक पदार्थोंका परस्परभी भेद सिद्ध होवे नहीं। तिन द्रव्यादिकोंके भेदके असिद्ध हुए तिन द्रव्यगुणादिक धर्मियोंविषे सत्ताजातिरूप धर्मभी कल्पना करा जावे नहीं। यातैं सत् वस्तुरूप धर्मीविषे द्रव्यगुणादिक पदार्थोंका अभेदही अंगीकार करणेयोग्य है। सो जड चेतनका अभेद वास्तवतैं तौ संभवे नहीं किंतु आध्यासिकअभेदही संभवे है। किंवा। नैयायिकोंनैं विभुरूप कालपदार्थका सर्व पदार्थोंके साथि संबंध अंगीकार करा है ता कालके संबंधकूं ग्रहण करिकेही 'घटः सन्', 'पटः सन्' इत्यादिक सर्व व्यवहार संभव होइ सकै है ता कालसंबंधतैं भिन्न सत्ताजातिरूप पदार्थके मानणेविषे कोई प्रमाण है नहीं। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया जैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे अघटरूप जो पटादिक पदार्थ हैं तिन पटादिक पदार्थोंकूं अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे घटरूपता होवे नहीं। और जैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे घटरूपकरिकै स्थित जो घट है ता घटकी अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे अघटरूपता साक्षात् इंद्रकरिकैभी सिद्ध होइ सके नहीं। तैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे असत्‌रूपकरिकै विद्यमान जो पदार्थ है ता असत् पदार्थका अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे सत्व सिद्ध होइ सकै नहीं। तैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे सत्‌रूपकरिकै विद्यमान जो पदार्थ है ता सत् पदार्थका अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे असत्त्व सिद्ध होइ सकै नहीं। यातैं सत्, असत् दोनोंका नियतरूपही अंगीकार करणेकूं योग्य है। यातैं एकही सत् वस्तु मायाकल्पित असत्‌की निवृत्ति करिकै मोक्षरूप अमृतकी प्राप्तिके योग्य होवै है। तथा सत् वस्तुमात्रकी दृष्टिकरिकै पूर्व उक्त तितिक्षाभी संभव होइ सकै है इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! पूर्व कथन करा जो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित सत् वस्तु है सो सत् वस्तु ज्ञानरूप स्फुरणतैं भिन्न है अथवा अभिन्न है। तहां प्रथम भेदपक्ष तौ संभवे नहीं काहेतैं ता सत् वस्तुकूं जो ज्ञानरूप स्फुरणतैं भिन्न अंगीकार करोगे तौ सो सत् वस्तु भेदरूप वस्तुपरिच्छेदवाला होवैगा। ता परिच्छिन्नताकी प्राप्तिरूप दोषकी निवृत्ति वासतै सो सत् वस्तु ज्ञानरूप स्फुरणतैं अभिन्न है यह दूसरा पक्ष अंगीकार करणा होवैगा। और जैसे 'अयं सर्पः' या प्रतीतिकरिकै रज्जुविषे जो सर्पका अभेद प्रतीत होवै है सो अभेद वास्तवतैं है नहीं किंतु सो अभेद आध्यासिक है। तैसे ता सत् वस्तुविषे ज्ञानरूप स्फुरणका जो आध्यासिक अभेद अंगीकार करोगे तौ ता ज्ञानरूप स्फुरणतैं वास्तवतैं भिन्न हुआ सो सत् वस्तु घटादिक पदार्थोंकी न्याईं जड होवैगा। यातैं ता जडता दोषकी निवृत्ति वासतै ता सत् वस्तुविषे ज्ञानरूप स्फुरणका वास्तव अभेद अंगीकार करणा होवैगा। ता वास्तव अभेदके अंगीकार किये हुएभी ता सत् वस्तुविषे पुनः देशकालवस्तुपरिच्छेदकी प्राप्ति होवैगी काहेतैं हमारेविषे पूर्वला घटका ज्ञान नाश हुआ है अभी पटका ज्ञान उत्पन्न भया है। या प्रकारकी प्रतीति सर्व लोकोंकं होवै है। ता

जलरूप कार्यकरिकै नूं तेजरूप कारणकूं निश्चय कर। तथा ता तेजरूप कार्यकरिकै तूं सत्वस्तुरूप कारणकूं निश्चय कर। हे श्वेतकेतु यह सर्व प्रजा ता सत्वस्तुतैंही उत्पन्न होवे है। तथा ता सत् वस्तुविषेही स्थित होवै है तथा ता सत् वस्तुविषेही लयकूं प्राप्त है इति। यह श्रुति ता सत् वस्तु विषेही पृथिवी आदिक सर्व विकारोंका कल्पितपणा कथन करै है। "सदेव सौम्येदमग्रआसीत्" इत्यादिक सर्व श्रुतियोंका अर्थ आत्मपुराणके द्वादश अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं। किंवा। 'द्रव्यं सत्, 'गुणः सन्' इत्यादिक प्रतीतियोंका विषय जो सत्ता है सा सत्ता पराजातिरूप है या प्रकारका वचन जो नैयायिकों नैं कथन करा है सो तिन्हींका कहणा अत्यंत असंगत है काहेतैं सन् सन् यह सत्ताकूं विषय करणेहारी प्रतीति द्रव्यादिक सर्व पदार्थमात्रविषे समान होवै है। केवल द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे सा प्रतीति होवै नहीं। यातैं सन् सन् या प्रकारकी प्रतीतिकरिकै द्रव्य गुणकर्ममात्रविषे रहणेहारी सत्ताजातिकी कल्पना होइ सकै नहीं। और एकरूप प्रतीति एकरूप विषयकरिकेही सिद्ध होवै है। ता एकरूप प्रतीतिविषे संबंधका भेद तथा स्वरूपका भेद कल्पना करणा अनुचित है। जैसे अनेक घटोंविषे 'अयं घटः, 'अयंघटः, या प्रकारकी जो एकरूप प्रतीति है सा एकरूप प्रतीति घटत्वरूप एकरूप विषय करिकेही सिद्ध होइ सकै है। यातैं घटव्यक्तियोंविषे ता घटत्वधर्मके संबंधका भेद कल्पना करणा अनुचित है। तैसे सन् सन् यह एकरूपप्रतीति द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे तौ समवायसंबंधविशिष्ट सत्ताकूं विषय करै है और सामान्य, विशेष, समवाय या तीन पदार्थोंविषे सामानाधिकरण्यसंबंधविशिष्ट सत्ताकूं विषय करै है या प्रकार संबंधका भेद कल्पना करणा उचित नहीं है। और विषयकी एकरूपताके अभाव हुएभी जो कदाचित् प्रतीतिकी एकरूपता अंगीकार करौगे तौ तुम्हारे मतविषे किसीभी जातिकी सिद्धि नहीं होवैगी। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया नैयायिकोंनैं अंगीकार करी जो सत्ताजाति है सा सत्ताजाति 'घटः सन्, 'पटः सन्' इत्यादिक सत् व्यवहारोंका साधक नहीं है किंतु ज्ञात अज्ञात अवस्थाकूं प्रकाश करणेहारा तथा स्वतः स्फुरणरूप एकही सत् वस्तु अपणे तादात्म्य अध्यासकरिकै सर्व पदार्थोंविषे सन् सन् या प्रकारके सत् व्यवहारका साधक होवै है। किंवा। 'सन् घटः, 'सन् पटः' इत्यादिक प्रतीतियां घटपटादिक व्यक्तियोंविषे सत्ताव्यक्तिके अभेदमात्रकूं विषय करैं हैं तिन घटपटादिक व्यक्तियोंविषे सत्ताजातिके समवायिपणेकूं ते प्रतीतियां विषय करैं नहीं। काहेतैं अभेदकूं विषय करणेहारी जो प्रतीति है ता प्रतीतिका भेदघटित समवायसंबंधकरिकै निर्वाह होइ सकै नहीं। इस प्रकार 'द्रव्यं सत्, 'गुणः सन्' इत्यादिक प्रतीतियोंकरिकै ता एक सत् वस्तुका द्रव्यादिक सर्व पदार्थोंके साथि अभेद सिद्ध हुए ता एक सत् वस्तुके साथि अभिन्न होणेतैं तिन द्रव्यगु

मृत्तिकादिक कारणोंके नाशतैं अभावभी होवे है यातैं असत् पदार्थका भाव नहीं होवै है और सत् वस्तुका अभाव नहीं होवै है या प्रकारका आपका वचन संभवता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (उभयोरपीति) हे अर्जुन ! सत् वस्तुका तथा असत् वस्तुका जो अंत है। क्या जो सत् वस्तु होवै है सो सर्व कालविषे सत्ही होवै है कदाचित्भी असत् होवै नहीं और जो असत् वस्तु होवै है सो सर्व कालविषे असत्ही होवै है कदाचित्भी सत् होवै नहीं या प्रकारकी नियमरूप जो मर्यादा है सो मर्यादारूप अंत वस्तुके यथार्थ स्वरूपकूं जानणेहारे ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैंही विचारपूर्वक श्रुतिस्मृतियुक्तियोंकारिकै निश्चय करा है। कुतार्किक नैयायिकादिकोंनैं सो मर्यादारूप अंत निश्चय करा नहीं । इहां श्रुतिस्मृतिप्रमाणतैं विरुद्ध तर्कका नाम कुतर्क है तिन कुतर्कोंकूं कथन करणेहारे ऋदियोंकूं कुतार्किक कहैं हैं ऐसे कुतार्किक पुरुषोंविषे सो पूर्व उक्त विपरीतभ्रम संभव होइ सकै है। इहां श्लोकविषे (अंतस्तु) या वचनविषे स्थित जो तु यह शब्द है ता तुशब्दका निश्चयरूप अवधारण अर्थ है तिस तुशब्दका (अंतः) या पदके साथि जो अन्वय करिये तौ यह अर्थ सिद्ध होवै है सत् वस्तु सत्ही होवै है और असत् वस्तु असत्ही होवै है या प्रकार ता सत् असत्का नियमही तत्त्वदर्शी पुरुषों नैं देख्या है ता सत् असत् वस्तुका अनियम देख्या नहीं इति । और तिस तुशब्दका (तत्त्वदर्शिभिः) या पदके साथि जो अन्वय करिये तौ यह अर्थ सिद्ध होवै है। तत्त्वदर्शी पुरुषोंनैंही ता सत् असत् वस्तुका नियम देख्या है । अतत्त्वदर्शी पुरुषोंनैं सो नियम देख्या नहीं इति। तहां श्रुति । " सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयमिति ऐतदात्म्यामिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति " । अर्थ यह । हे प्रियदर्शन यह दृश्यमान प्रपंच अपणी उत्पत्तितैं पूर्व सत् वस्तुरूपही होता भया है सो सत् वस्तु एक अद्वितीयरूपही होता भया इति । या प्रकार छांदोग्यउपनिषद्के षष्ठ अध्यायके आदिविषे कथन करिकै ताके अंतविषे यह कह्या है । यह सर्व जगत् आत्मास्वरूपही है सो आत्माही सत्यरूप है। हे श्वेतकेतु ! सो सत् वस्तु आत्मा तूं हैं इति। यह श्रुति सजातीय, विजातीय, स्वगत भेदतैं रहित एक अद्वितीय वस्तुकूंही कथन करै है और " वाचारंभणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् " । अर्थ यह । घटशरावादिक विकार केवल वाणीमात्र होणेतैं मिथ्या हैं तिन घटशरावादिक विकारोंका कारणरूप मृत्तिकाही सत्य है इति । यह श्रुति परस्पर व्यभिचारीरूप घटशरावादिक विकारोंविषे मिथ्यापणेकूंही कथन करै है । तथा " अन्नेन सौम्यशुंगेनापो मूलमन्विच्छ अद्भिः सौम्यशुंगेन तेजोमूलमन्विच्छ तेजसा सौम्यशुंगेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाः सौम्येमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठा इति " । अर्थ यह। हे प्रियदर्शन ! श्वेतकेतु या पृथिवीरूप कार्यकरिकै तं जलरूप कारणकूं निश्चय कर। तथा

प्रकार इदंरूपकरिकै अनुगत हुई प्रतीत होवै है यातैं सा रज्जु तिन कल्पित सर्पदंडादिकोंविषे अनुगत है और ता सर्पकी प्रतीतिविषे दंडकी प्रतीति होवै नहीं और ता दंडकी प्रतीतिविषे सर्पकी प्रतीति होवै नहीं यातैं ते कल्पित सर्पदंडादिक परस्पर व्यभिचारी होणेतैं अनुगत नहीं हैं । या कारणतैंही ते अनुगत सर्पदंडादिक ता अनुगत रज्जुविषे कल्पित हैं तैसे ‘ सन् घटः, सन् पटः ’ या प्रकार सर्व पदार्थोंविषे सत् वस्तु तौ अनुगत होइकै प्रतीत होवै है यातैं सो सत् वस्तु सर्वत्र अनुगत है । और घट, पट नहीं है तथा पट, घट नहीं है या प्रकार घटपटादिक पदार्थ परस्पर व्यभिचारी होणेतैं अननुगत हैं या कारणतैं यह अननुगत घटपटादिक प्रपंच ता अनुगत सत् वस्तुविषे कल्पित है । शंका—हे भगवन् ! अनुगत पणेतैं रहित व्यभिचारी वस्तुकूं जो कल्पित मानैंगे तौ सत् वस्तुभी कल्पित होवैगा काहेतैं सो सत् वस्तुभी शशशृंग वंध्यापुत्रादिक तुच्छ पदार्थोंतैं व्यावृत्त होणेतैं व्यभिचारीही है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं। (नाभावो विद्यते सतः इति) हे अर्जुन ! सत् अधिकरणविषे रहणेहारा जो भेद है ता भेदके प्रतियोगीपणेका नामही वस्तुपरिच्छेद है । जैसे घटरूप सत् वस्तुविषे रहणेहारा जो पटका भेद है ता भेदका प्रतियोगीपणा ता पटविषे है यहही ता पटविषे वस्तुपरिच्छेद है और शशशृंग वंध्यापुत्रादिक असत् पदार्थोंविषे सत्रूपता है नहीं यातैं तिन शशशृंगादिक असत् पदार्थोंतैं सत् वस्तुका भेद अंगीकार किये हुएभी ता सत् वस्तुविषे वस्तुपरिच्छेदकी प्राप्ति होवै नहीं और स्वप्रकाश नित्यविभुरूप एकही सत् वस्तु सर्वत्र व्यापक है यातैं ता सत् वस्तुविषे किसी सत व्यक्तिका भेद संभवै नहीं काहेतैं ‘घटः सन्, पटः सन्’ इत्यादिक प्रतीति सर्व लोकोंकूं होवै है । यातैं सत् वस्तुविषे घटादिक पदार्थोंविषे रहणेहारे भेदका प्रतियोगीपणा संभवता नहीं । ऐसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित सत् वस्तुका देशकालवस्तुकृत परिच्छिन्नत्वरूप अभाव संभवै नहीं काहेतैं जैसे घटत्व और घटत्वका अभाव यह दोनों धर्म परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे रहते नहीं । तैसे परिच्छिन्नत्व अपरिच्छिन्नत्व यह दोनों धर्मभी परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे रहैं नहीं । शंका—जिसविषे देशकालवस्तुपरिच्छेदका निषेध करते हो ऐसी कोई सत् वस्तु है नहीं किंतु सत्ता नामा एक परा जाति है सा सत्ताजाति द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे तौ समवायसंबंधकरिकै रहै है । और तिन द्रव्यादिकोंविषे रहणेहारे जो सामान्य, विशेष, समवाय यह तीन पदार्थ हैं तिन्होंविषे सा सत्ताजाति सामानाधिकरण्यसंबंधकरिकै रहै है । या कारण तैंही तिन द्रव्यादिक षट् पदार्थोंविषे ‘द्रव्यं सत्, गुणः सन्’ इत्यादिक सत् व्यवहार होवै है यातैं उत्पत्तितैं पूर्व वर्त्तमानप्रागभावके प्रतियोगी होणेतैं असत्रूप जो घटादिक हैं तिन असत् घटादिकोंकाही कुलाल दंड चक्रादिक कारणोंके व्यापारतैं सत्त्व होवै है और तिन सत्रूप घटादिकोंकाही

जल, तेज, वायु या चारोंके परमाणुवोंकूं तथा मनकूं मूर्त्तद्रव्य मानैं हैं तथा नित्य मानैं हैं यातैं ते नैयायिक तिन परमाणुवोंविषे तथा मनविषे केवल देशकृत परिच्छेदही अंगीकार करैं हैं कालकृत परिच्छेद अंगीकार करैं नहीं या कारणतैं इहां कालकृत परिच्छेदतैं देशकृत परिच्छेद भिन्न ग्रहण करा है। और सजातीय भेद विजातीय भेद स्वगत भेद या तीन प्रकारके भेदोंका नाम वस्तुकृत परिच्छेद है । जैसे एक वृक्षका दूसरे वृक्षतैं जो भेद है ता भेदकूं सजातीयभेद कहैं हैं। और तिसी वृक्षका पाषाणादिकोंतैं जो भेद है ता भेदकूं विजातीयभेद कहैं हैं। और तिसी वृक्षका अपणे पत्रपुष्पफलादिकोंतैं जो भेद है ता भेदकूं स्वगतभेद कहैं हैं। अथवा जीवईश्वरका भेद १ जीवजगत्का भेद २ जीवोंका परस्पर भेद ३ ईश्वरजगत्का भेद ४ जगत्का परस्पर भेद ५ या पंच प्रकारके भेदका नाम वस्तु परिच्छेद है। यद्यपि वेदांतसिद्धांतविषे जो पदार्थ कालकृत परिच्छेदवाला तथा देशकृत परिच्छेदवाला होवै है सो पदार्थ नियमकरिकै वस्तुपरिच्छेदवालाभी होवै है यातैं कालकृत देशकृत परिच्छेदके ग्रहण कियेतैं वस्तुकृत परिच्छेदकाभी ग्रहण होइ सकै है ता वस्तुकृत परिच्छेदका भिन्न ग्रहण करणा उचित नहीं है । तथापि नैयायिकोंके मतविषे आकाश काल दिशा यह तीनों नित्य हैं तथा विभु हैं यातैं तिन आकाशादिकोंविषे ते नैयायिक कालकृत परिच्छेद तथा देशकृत परिच्छेद मानते नहीं परंतु तिन आकाशादिकोंविषे ते नैयायिक वस्तुकृतपरिच्छेद तौ अंगीकार करैं हैं या कारणतैं कालकृत परिच्छेद देशकृत परिच्छेद या दोनों परिच्छेदोंतैं वस्तुकृत परिच्छेदकूं भिन्न ग्रहण करा है । इस प्रकारके तीन परिच्छेदोंवाला होणेतैं असत्रूप जो शीतउष्णादिक सर्व प्रपंच है ता असत् प्रपंचका सत्तारूप भाव संभवै नहीं । इहां सत्ताशब्दकरिकै तीन परिच्छेदोंतैं रहिततारूप पारमार्थिकपणेका ग्रहण करणा जैसे घटत्व और घटत्वका अभाव यह दोनों धर्म परस्पर विरोधि होणेतैं एक अधिकरणविषे कदाचित्भी रहते नहीं। तैसे परिच्छिन्नत्वरूप असत्त्व तथा अपरिच्छिन्नत्वरूप सत्व यह दोनों धर्मभी परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे कदाचित्भी रहते नहीं । तात्पर्य यह । अनात्मरूप जितनाक दृश्य प्रपंच है सो दृश्य प्रपंच सर्वत्र अनुगत है नहीं यातैं किसी कालविषे तथा किसी देशविषे तथा किसी वस्तुविषे ता दृश्य प्रपंचका अनिषेध होवै नहीं किंतु ता दृश्य प्रपंचका सर्व देशकालवस्तुविषे निषेधही होवै है । जैसे घटका अपणी उत्पत्तितैं पूर्वकालविषे तथा नाशतैं उत्तरकालविषे तथा अपणे अधिकरणकूं छोडिकै अन्य सर्व देशविषे तथा पटादिक वस्तुवोंविषे 'घटो नास्ति' या प्रकारका निषेधही होवै है। और जो सत् वस्तु है सो सर्वत्र अनुगत है । यातैं ता सत् वस्तुका किसी कालविषे तथा किसी देशविषे तथा किसी वस्तुविषे कदाचित्भी निषेध होवै नहीं । यातैं जैसे एकही रज्जुविषे प्रतीत भये जो सर्प, दंड, जलधारा, माला आदिक हैं तिन कल्पित सर्पादिकोंविषे सा रज्जु तौ 'अयं सर्पः, अयं दंडः' या

स्पर्शोंकी तितिक्षा कैसे संभवैगी। तथा यह पुरुष मोक्षकी प्राप्तिवासतै कैसे योग्य होवैगा। समाधान—हे अर्जुन! जैसे शुक्तिविषे कल्पित जो रजत है ता रजतकी शुक्तिरूप अधिष्ठानके ज्ञानतैं निवृत्ति होवै है तैसे या सर्व द्वैतप्रपंचकूं आत्माविषे कल्पित होणेतैं ता अधिष्ठान आत्माके ज्ञानकरिकै ता कल्पित प्रपंचकी निवृत्ति बनि सकै है। शंका—हे भगवन्! जैसे आत्माकी प्रतीति होवै है तैसे अनात्म प्रपंचकीभी प्रतीति होवै है यातैं आत्मा अनात्मा दोनोंकी तुल्यप्रतीतिके हुए आत्माकी न्याईं अनात्मजगत्‌भी सत्य किस वासतै नहीं होवै। तथा अनात्मजगत्‌की न्याईं आत्माभी असत्य किस वासतै नहीं होवै। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीकृष्णभगवान् तिन दोनोंविषे विशेषता वर्णन करैं हैं।

(मू. श्लो.) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः॥ उभयोरपि दृष्टोंतस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥ १६॥ (पदच्छेदः) न। असतः। विद्यते। भावः। न। अभावः। विद्यते। सतः। उभयोः। अपि। दृष्टः। अंतः। तु। अनयोः। तत्त्वदर्शिभिः॥ १६॥ (पदार्थः) हे अर्जुन! असत्‌वस्तुकी सत्ता नहीं संभवै है तथा सत्‌वस्तुका अभाव नहीं संभवै है इन सत् असत् दोनोंकी भी मर्यादा तत्त्वदर्शी पुरुषोंनें देखी है॥ १६॥

टीका। कालकृत परिच्छेद देशकृत परिच्छेद वस्तुकृत परिच्छेद या तीन प्रकारके परिच्छेदोंवाला जो पदार्थ होवै है सो पदार्थ असत् कह्या जावै है। ऐसे घटादिक अनात्म पदार्थ हैं। तहां प्रागभावका तथा प्रध्वंसाभावका जो प्रतियोगीपणा है ताका नाम कालपरिच्छेद है। जैसे घटकी उत्पत्तितैं पूर्व ता घटका मृत्तिकाविषे प्रागभाव रहै है ता प्रागभावका प्रतियोगीपणा ता घटविषे है। और ता घटके नाशतैं अनंतर ता घटका प्रध्वंसाभाव ता घटके कपालोंविषे रहै है और ता प्रध्वंसाभावका प्रतियोगीपणा ता घटविषे है यातैं सो घट कालकृत परिच्छेदवाला है। घटके नाश हुएतैं अनंतर जो ठीकरे रहैं हैं तिन्होंका नाम कपाल है। और अत्यंताभावका प्रतियोगीपणा है ताका नाम देशपरिच्छेद है। जैसे जिस देशविषे घट रहै है ता देशकूं छोडिके अन्य सर्व देशविषे ता घटका अत्यंताभाव रहै है। ता अत्यंताभावका जो प्रतियोगीपणा ता घटविषे रहै है। यातैं सो घट देशकृत परिच्छेदवाला है। तहां वेदांतसिद्धांतविषे यद्यपि जो पदार्थ कालकृत परिच्छेदवाला होवै है सो पदार्थ नियमकरिकै देशकृत परिच्छेदवालाभी होवै है। यातैं कालकृत परिच्छेदके ग्रहण करणेकरिकैही देशकृत परिच्छेदकाभी ग्रहण होइ सकै है ता देशकृत परिच्छेदका भिन्न ग्रहण करणा संभवै नहीं। तथापि नैयायिक पृथिवी

घटादिक विषयोंके साथि वृत्तिद्वारा संबंध है ता संबंधके उत्पत्तिनाशादिकोंकूं सा प्रतीति विषय करै है। जो ऐसा नहीं अंगीकार करिये तौ तिस तिस ज्ञानकी उत्पत्ति तथा नाश तथा भेद आदिकोंकी कल्पना करणेविषे अत्यंत गौरवदोषकी प्राप्ति होवैगी यातैं सो साक्षी आत्मारूप ज्ञान नित्य है तथा विभु है तथा एक अद्वितीयरूप है। तहां श्रुति। "नहि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यः महद्भूतमनंतमपारं विज्ञानघन एव तदेव ब्रह्मापूर्वमनपरमनंतरमबाह्यमयमात्मा ब्रह्मसर्वानुभूरिति"। अर्थ यह। द्रष्टा आत्माका स्वरूपभूत जो ज्ञानरूप दृष्टि सा दृष्टि नाशतैं रहित है यातैं ता दृष्टिका किसी अवस्थाविषे अभाव होवै नहीं। और यह ज्ञानस्वरूप आत्मा आकाशकी न्यांई सर्वत्र व्यापक है तथा नित्य है। और यह ज्ञानस्वरूप आत्मा महानूरूप है तथा अनंत है तथा अपार है तथा विज्ञानघन है। और यह ज्ञानस्वरूप ब्रह्म कारणतैं रहित है तथा कार्यतैं रहित तथा अंतरपणेतैं रहित है तथा बाह्यपणेतैं रहित है यह ज्ञानस्वरूप आत्मा ब्रह्मरूप है इति। इत्यादिक अनेक श्रुतियां आत्माकूं विभु नित्य स्वप्रकाश ज्ञानरूपकारिकै कथन करैं हैं। इतने कहणेकरिकै अविद्यारूप कारणउपाधितैंभी आत्माका भेद सिद्ध हुआ यातैं यह अर्थ सिद्ध भया स्थूलसूक्ष्मकारणरूप असत्य उपाधियोंकरिकै करा हुआ जो आत्माविषे बंधभ्रम है ता बंधभ्रमकी जबी आत्माके ज्ञानकरिकै निवृत्ति होवै है तबी या स्वयंज्योति पुरुषकूं मोक्षकी प्राप्ति होवै है या हमारे सिद्धांतविषे पूर्व उक्त किंचित्मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवै नहीं। इहां (हे पुरुषर्षभ) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा स्वप्रकाशचैतन्यरूपताकरिकै जो तुम्हारेविषे पुरुषपणा है तथा परमानंदरूपताकारिकै जो तुम्हारेविषे सर्व द्वैतप्रपंचकी अपेक्षाकरिकै श्रेष्ठतारूप ऋषभपणा है ता अपणे पुरुषपणेकूं तथा ऋषभपणेकूं नहीं जानता हुआही तूं शोककूं प्राप्त हुआ है यातैं ता शोकके निवृत्तिका कोई दूसरा उपाय है नहीं किंतु ता अपणे स्वरूपके ज्ञानतैंही तुम्हारे शोककी निवृत्ति होवैगी। तहां श्रुति। "तरति शोकमात्मवित्"। अर्थ यह। आत्मवेत्ता पुरुष शोकतैं रहित होवै है इति। या श्लोकविषे (पुरुषं) इस एकवचनकरिकै सांख्यशास्त्रके मतका खंडन करा काहेतैं ते सांख्यशास्त्रवाले अनेक पुरुषोंकूं अंगीकार करैं हैं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् यद्यपि चेतन आत्मा पुरुष एकही है तथापि ता पुरुषविषे सत्यरूप जड पदार्थोंका जो द्रष्टापणारूप संसार है सो संसार असत्य नहीं है किंतु सो संसार सत्य है। ता संसारके सत्य हुए शीतउष्णादिक सुखदुःखके कारणोंके विद्यमान हुए ता सुखदुःखका भोगभी अवश्यकरिकै होवैगा। और सत्य वस्तुकी ज्ञानतैं निवृत्ति होवै नहीं। जो सत्य वस्तुकीभी ज्ञानतैं निवृत्ति होवै तौ सत्य आत्माकीभी ज्ञानतैं निवृत्ति होणी चाहिये यातैं पूर्व कथन करी हुई मात्रा

विषेभी अंतःकरणादिक उपाधिके वशतैं जो तिन संसारधर्मोंके संबंधकी प्रतीति है यहही आत्माविषे बंध है । और अपणे वास्तव स्वरूपके ज्ञान करिकै जबी अपणे स्वरूपके अज्ञानकी निवृत्ति होवै है तथा ता अज्ञानके कार्यरूप बुद्धि आदिक उपाधियोंकी निवृत्ति होवै है तथा ता उपाधिकृत सर्वभ्रमकी निवृत्ति होवै है तबी सर्व दृश्यप्रपंचके संबंधतैं रहित होणे तैं शुद्धरूप तथा स्वप्रकाश परमानंदरूपताकरिकै सर्वत्र परिपूर्णरूपजो आत्मा है ता आत्मादेवका स्वतःही कैवल्यरूप मोक्ष होवै है यातैं बंध मोक्ष या दोनोंका भिन्न भिन्न अधिकरण नहीं है किंतु एकही आत्मा दोनोंका अधिकरण है । या कहणेतैं अंतःकरण आत्मा या प्रकारके नाममात्रविषेही विवाद है । तिन दोनों नामोंका अर्थ एकही है । यह जो पूर्ववादीनैं कहा था सोभी खंडन हुआ जानणा काहेतैं प्रकाश्य और प्रकाशक या दोनोंकी एकता संभवै नहीं । जैसे प्रकाश्य जो घटादिक पदार्थ हैं तथा प्रकाशक जो दीपकादिक हैं तिन दोनोंकी एकता संभवै नहीं तैसे प्रकाश्यरूप जो अंतःकरणादिक हैं तथा प्रकाशक जो साक्षी आत्मा है तिन दोनोंकीभी एकता संभवै नहीं किंतु प्रकाश्य पदार्थ प्रकाशकतैं भिन्नही होवै है जो कदाचित एकही पदार्थकूं प्रकाश्यरूप तथा प्रकाशकरूप मानियें तौ एकही पदार्थविषे प्रकाशरूप क्रियाका कर्त्तापणा तथा कर्मपणा प्राप्त होवैगा सो अत्यंत विरुद्ध है । एकही वस्तुविषे एक क्रियानिरूपित कर्त्तापणा तथा कर्मपणा कहांभी देखणेविषे आवता नहीं । शंका—एकही वस्तुविषे जो प्रकाश्यता तथा प्रकाशकता नहीं होवै तौ आत्माविषेभी सा प्रकाश्यता तथा प्रकाशकता कैसे संभवैगी । समाधान—स्वयंज्योति आत्माविषै हम केवल प्रकाशकताही अंगीकार करते हैं घटादिक पदार्थोंकी न्याईं आत्माविषे प्रकाश्यता हम अंगीकार करते नहीं । और आत्माविषे जो अंतःकरणादिकोंका प्रकाशकपणा है सो स्वप्रकाशज्ञानरूपतातैं भिन्न नहीं है किंतु सो प्रकाशकपणा स्वप्रकाश ज्ञानरूपताही है । ऐसा प्रकाशकपणा आत्मातैं भिन्न अंतःकरणादिकोंविषे संभवता नहीं । शंका—बुद्धिकी वृत्तियोंतैं भिन्न दूसरा कोई ज्ञान है नहीं यातैं बुद्धिकी वृत्तियांही ज्ञानरूप हैं । समाधान—ज्ञान सर्व देशविषे तथा सर्व कालविषे अनुगत है तथा भेद करणेहारे धर्मोंतैं रहित है यातैं सो ज्ञान विभु है तथा नित्य है तथा एक है । और बुद्धिका परिणामरूप वृत्तियां तौ परिच्छिन्न हैं तथा अनित्य हैं तथा अनेक हैं । ऐसे विभु नित्य एक ज्ञानकूं परिच्छिन्न अनित्य अनेक वृत्तिरूपता संभवै नहीं । शंका—ज्ञानकूं जो नित्य तथा एक अंगीकार करोगे तौ हमारेविषे पूर्वला घटज्ञान नाश हुआ है और अबी पटज्ञान उत्पन्न भया है या प्रकारकी प्रतीति ज्ञानके उत्पत्तिनाशकूं तथा भेदकूं विषय करणेहारी असंगत होवैगी । समाधान—सा प्रतीति ज्ञानके उत्पत्तिनाशकूं विषय करती नहीं किंतु ता साक्षीआत्मारूप ज्ञानका जो

होवे नहीं । जैसे अग्निरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना ताके उष्णादिक स्वाभाविक धर्मोंकी निवृत्ति होवे नहीं तैसे आत्मारूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना ता स्वाभाविक बंधरूप धर्मकी कदाचित्भी निवृत्ति नहीं होवैगी । और आत्मा तौ नित्य है यातैं ता आत्माकी कदाचित्भी निवृत्ति संभवे नहीं यातैं आत्मा कदाचित्भी मुक्त नहीं होवैगा । यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । "आत्मा कर्त्रादिरूपश्चेन्मा कांक्षीस्तर्हि मुक्तताम् । नहि स्वभावो भावानां व्यावर्तेतौष्ण्यवद्रवेः" । अर्थ यह । आत्मा जो कदाचित् स्वभावतैंही कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूप बंधवाला होवै तौ हे शिष्य तूं मुक्तपणेकी इच्छा मत कर काहेतैं भावपदार्थोंका जो स्वाभाविक धर्म होवै है सो धर्म ता भावपदार्थरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना कदाचित्भी निवृत्त होवै नहीं । जैसे सूर्यका स्वाभाविक धर्म जो उष्णता है सो उष्णतारूप धर्म सूर्यरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना निवृत्त होवै नहीं इति । किंवा आत्माविषे स्वाभाविक बंधके अंगीकार किये किसीकूंभी मोक्षकी प्राप्ति नहीं होवैगी । सो यह वार्त्ता "विमुक्तश्च विमुच्यते ज्ञानादेव तु कैवल्यम्" इत्यादिक ज्ञानतैं मोक्षकी प्राप्तिकूं कथन करणेहारी अनेक श्रुतियोंतैंभी विरुद्ध है । शंका—आत्माविषे जो कदाचित् स्वाभाविक बंध हम अंगीकार करैं तौ यह पूर्व उक्त दोष हमारेकूं प्राप्त होवे परंतु ता आत्माविषे सो बंध हम स्वाभाविक अंगीकार करते नहीं । किंतु ता आत्माविषे बुद्धि आदिक उपाधिकृत बंध है । तहां श्रुति । "आत्मेंद्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः" । अर्थ यह । इंद्रियमनरूप उपाधिकरिकै युक्त आत्मा भोक्ता होवै है या प्रकार बुद्धिमान् पुरुष कथन करैं हैं इति । इस प्रकार आत्माविषे उपाधिकृत बंधके अंगीकार किये हुए आत्मारूप धर्मीके विद्यमान हुएभी ता औपाधिक बंधकी निवृत्ति करिकै मुक्तिकी प्राप्ति होइ सकै है । समाधान—हे वादी या तुम्हारे कहणेकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है जो वस्तु अपणे धर्मोंकूं अन्य वस्तुविषे स्थितरूप करिकै प्रतीत करावै है ता वस्तुका नाम उपाधि हैं । जैसे रक्त वर्णवाला जपाकुसुम अपणे रक्त वर्णकूं समीपवर्ति स्फटिकमणिविषे स्थित रूपकरिकै प्रतीत करावै है यातैं ता जपाकुसुमकूं उपाधि कहैं हैं तैसे यह बुद्धि आदिकभी अपणे सुखदुःखादिक धर्मोंकूं आत्माविषे स्थितरूप करिकै प्रतीत करावैं हैं यातैं यह बुद्धि आदिकभी उपाधिहैं । और जो धर्म उपाधिकृत होवै है सो धर्म असत्यही होवै है । जैसे जपाकुसुमरूप उपाधिकृत जो स्फटिकमणिविषे रक्तता है सा रक्तता असत्यही है तैसे बुद्धि आदिक उपाधिकृत जो आत्माविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वादिक बंध है सो बंधभी असत्यही होवैगा । इस प्रकार बंधविषे औपाधिकता मानिकरिकै असत्यरूपताकूं अंगीकार करणेहारा तूं वादी हमारे सिद्धांतरूप मार्गविषेही प्राप्त भया है यातैं तूं हमारे अनुकूल है प्रतिकूल नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिक सर्व संसारधर्मोंके संबंधतैं रहित आत्मा

प्राप्त करता हुआ पुरुषसंज्ञाकूं प्राप्त होवै है इति। ऐसे स्वयंज्योति आत्माकूं अनात्म अंतःकरणके धर्मरूपकरिकै तथा दृश्यरूपकरिकै यह दुःखसुख समान नहीं हैं या कारणतैं ता आत्माकूं समदुःखसुख कहैं हैं। इहां दुःखसुखका ग्रहण पूर्व उक्त अंतःकरणके कामसंकल्पादिक सर्व धर्मोंका उपलक्षक है। तहां श्रुति। "एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य न वर्धते कर्मणा नो कनीयान्"। अर्थ यह। ब्रह्मरूप ब्राह्मणका यह नित्य महिमा है जो पुण्यकर्मकरिकै सुखरूप वृद्धिकूं नहीं प्राप्त होवै है। और पापकर्मकरिकै दुःखरूप कनिष्ठताकूं नहीं प्राप्त होवै है इति। या श्रुतिनैं आत्माविषे सुख दुःख दोनों धर्मोंका निषेध करा है ताकरिकै कामसंकल्पादिक सर्व धर्मोंका निषेधभी जानि लेणा। और सो स्वयंज्योति आत्मा अपणे चिदाभास द्वारा बुद्धिके साथि तादात्म्य अध्यासकूं प्राप्त होइकै ता बुद्धिकूं शुभ अशुभ कार्यविषे प्रेरणा करे है यातैं ता बुद्धिके प्रेरक साक्षी आत्माकूं धीर या नामकरिकै कथन करैं हैं। "धियमीरयतीति धीरः इति"। तहां श्रुति। "सधीः स्वप्नो भूत्वेमं लोकमतिक्रामति"। अर्थ यह। बुद्धिरूप उपाधिवाला यह आत्माही स्वप्नकूं प्राप्त होइकै इस जाग्रत्का परित्याग करे है इति। इतने कहणेकरिकै आत्माविषे बंधकी प्रसक्ति दिखाई। जिस अधिकरणविषे जो वस्तु स्वभावतैं होवै नहीं तिस अधिकरणविषे तिस वस्तुका आरोप करणा याका नाम प्रसक्ति है। यह वार्त्ता दूसरे शास्त्रविषेभी कथन करी है तहां श्लोक। "यतो मानानि सिध्यंति जाग्रदादित्रयं तथा। भावाभावविभागश्च स ब्रह्मास्मीति बोध्यते"। अर्थ यह। जिस स्वयंज्योति आत्मातैं प्रत्यक्षादिक सर्व प्रमाण सिद्ध होवैं हैं तथा जाग्रदादिक तीन अवस्था सिद्ध होवैं हैं तथा यह भावपदार्थ है यह अभाव है इत्यादिक भेद सिद्ध होवैं हैं सो साक्षी आत्माही "ब्रह्मास्मि" इत्यादिक महावाक्योंनैं बोधन करीता है इति। ऐसे सम दुःखसुख धीरपुरुषकूं पूर्व उक्त सुखदुःखके देणेहारे मात्रास्पर्श जिस कारणतैं वास्तवतैं व्यथाकी प्राप्ति करते नहीं काहेतैं सो स्वयंज्योति पुरुष सर्व विकारोंका प्रकाशक होणेतैं तिन विकारोंके योग्य नहीं है। तहां श्रुति। "सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः। एकस्तथा सर्वभूतांतरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्य इति"। अर्थ यह। जैसे सर्व लोकोंका चक्षु जो सूर्यभगवान् है सो सूर्यभगवान् चक्षुके विषय बाह्य दोषोंकरिकै लिपायमान होवै नहीं तैसे एक अद्वितीयरूप सर्व भूतोंका अंतरआत्मा बाह्य लोक दुःखोंकरिकै लिपायमान होवै नहीं इति। इस कारणतैं सो धीर पुरुष अपणे स्वरूपभूत ब्रह्मात्माके एकताज्ञानकरिकै सर्व दुःखोंके उपादानकारणरूप अज्ञानकी निवृत्तिपूर्वक अद्वितीय स्वप्रकाश परमानंदरूप मोक्षकी प्राप्तिवासतै योग्य होवै है जो कदाचित् यह स्वयंज्योति आत्मा आरोपित बंधका आश्रय नहीं होवै किंतु स्वाभाविक बंधका आश्रय होवै तो धर्मीकी निवृत्तितैं विना स्वाभाविक धर्मोंकी निवृत्ति

रणी होवैगी । ता अंतःकरणकूंही जबी चेतनरूपता सिद्ध हुई तबी ता अंतःकरणतैं भिन्न तथा ता अंतःकरणकूं प्रकाश करणेहारे भोक्ता आत्माविषे कोई प्रमाण है नहीं यातैं केवल नाममात्रविषे विवाद सिद्ध होवैगा तिन नामोंके अर्थविषे कोई विवाद होवैगा नहीं । किसी वादीनैं तिसकूं अंतःकरण नामकरिके कथन करा । किसी वादीनैं तिसकूं आत्मा नामकरिके कथन करा । और ता अंतःकरणतैं भिन्न जो चेतन आत्मा अंगीकार करोगे तौ वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकार करी जो बंधमोक्ष दोनोंकी समानाधिकरणता है सा सिद्ध नहीं होवैगी किंतु ता बंधमोक्षका भिन्न भिन्न अधिकरण सिद्ध होवैगा । तहां सुखदुःखका आश्रय होणेतैं अंतःकरण तौ बंधका अधिकरण होवैगा और ता अंतःकरण तैं भिन्न आत्मा मोक्षका अधिकरण होवैगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् कहैं हैं ॥

(मू. श्लो.) यं हि न व्यथयंत्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ॥ समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥ (पदच्छेदः) ॥ यम् । हि । न । व्यथयंति । एते । पुरुषं ॥ पुरुषर्षभ । समदुःखसुखम् । धीरम् । सः । अमृतत्वाय । कल्पते ॥ १५ ॥ (पदार्थः) हे पुरुषोंविषे श्रेष्ठ अर्जुन समान हैं दुःखसुख जिसकूं ऐसे जिस धीर पुरुषकूं यह मात्रास्पर्श जिस कारणतैं नहीं व्यथा करते तिस कारणतैं सो धीर पुरुष मोक्षकी प्राप्तिवासतै योग्य होवैहै ॥ १५ ॥

टीका । हे अर्जुन ! "अत्रायं पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति" । अर्थ यह । स्वप्न अवस्थाविषे सूर्यादिक ज्योतियोंके अभाव हुए यह आत्मा पुरुषही स्वयंज्योति है इति । या श्रुतिप्रमाणतैं स्वप्रकाशरूपकरिकै सिद्ध जो चेतन आत्मा है सो चेतन आत्मा अपणे परिपूर्ण रूपकरिकै सर्व शरीररूप पुरियोंविषे निवास करै है या कारणतैं श्रुतिभगवती ता चेतन आत्माकूं पुरुष या नामकरिकै कथन करै है । अथवा । अष्ट पुरोंविषे जो निवास करै है ताका नाम पुरुष है ते अष्ट पुर यह हैं । श्लोक । " कर्मेंद्रियाणि खलु पंच तथापराणि ज्ञानेंद्रियाणि मनआदिचतुष्टयं च ॥ प्राणादिपंचकमथो वियदादिकं च कामश्च कर्म च तमः पुनरष्टमी पूरिति " । अर्थ यह । वागादिक पंच कर्मइंद्रिय १ तथा श्रोत्रादिक पंच ज्ञानइंद्रिय २ तथा मनआदिक अंतःकरणचारि ३ तथा प्राणादिक पंचप्राण ४ तथा आकाशादिक पंचभूत ५ तथा काम ६ तथा कर्म ७ तथा तम ८ या अष्टोंका नाम पुर है । इहां तम शब्दकरिकै कारणअज्ञान ग्रहण करणा इति । तहां श्रुति । "स वायं पुरुषः सर्वासु पूर्षु परिवाशयः" अर्थ यह । यह चेतन आत्मा शरीरादिरूप सर्व पुरियोंविषे नि

है। यातैं आत्माकूं तिन सुखदुःखादिक धर्मोंकी आश्रयता संभवै नहीं यातैं नैयायिकादिकोंनैं जो आत्माविषे विकारीपणा तथा भेद अंगीकार करा है सो केवल भ्रांतिकरिकै अंगीकार करा है । हे अर्जुन! आगमापायी होणेतैं तथा दृश्य होणेतैं नित्य द्रष्टा आत्मातैं भिन्न जो यह अंतःकरण है ता अंतःकरणविषे सुखदुःखकी उत्पत्ति करणेहारे जो मात्रास्पर्श हैं ते मात्रास्पर्श नियतस्वभाववाले नहीं हैं किंतु अनियतस्वभाववाले हैं काहेतैं एक कालविषे सुखकूं उत्पन्न करणेहारे जो शीतउष्णादिक हैं तेही शीतउष्णादिक अन्य कालविषे दुःखकूंही उत्पन्न करैं हैं इसी प्रकार किसी कालविषे दुःखकूं उत्पन्न करणेहारे जो शीतउष्णादिक हैं तेही शीतउष्णादिक अन्यकालविषे सुखकूंही उत्पन्न करैं हैं । यातैं ते मात्रास्पर्श अनियत स्वभाववाले हैं । इहां शीतउष्णका ग्रहण आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक या तीन प्रकारके सुखदुःखके ग्रहणकाभी उपलक्षक है तहां ज्वरादिक व्याधियोंकरिकै अंतःकरणविषे उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आध्यात्मिक दुःख कहैं हैं । और सिंहसर्पादिक भूतोंकरिकै उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आधिभौतिक दुःख कहैं हैं । और जल अग्नि ग्रहादिकोंकरिकै उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आधिदैविक दुःख कहैं हैं इस प्रकार सुखकेभी तीन भेद जानि लेणे । यातैं हे अर्जुन अत्यंत अस्थिर स्वभाववाले तथा तैं निर्विकार आत्मातैं भिन्न विकारी अंतःकरणकूं सुखदुःखकी प्राप्ति करणेहारे ऐसे जो भीष्मद्रोणादिकोंके संयोगवियोगरूप मात्रास्पर्श हैं तिन मात्रास्पर्शोंकूं तूं सहन कर । तात्पर्य यह । यह मात्रास्पर्श मैं अविकारी आत्माकी किंचित्मात्रभी हानि करते नहीं या प्रकारके विवेककरिकै तूं तिन मात्रास्पर्शोंकी उपेक्षा कर । दुःखादिक धर्मवाले अंतःकरणके तादात्म्य अध्यास करिकै तूं अपणे आत्माकूं दुःखी मत मान यहही तिन मात्रास्पर्शोंका सहन है । इहां (हे कौंतेय हे भारत) या दोनों संबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा मातृकुल तथा पितृकुल या दोनों कुलोंकरिकै अत्यंत शुद्ध जो तूं अर्जुन है तिस तुम्हारेकूं या प्रकारका अज्ञान उचित नहीं है इति। और किसी टीकाविषे (आगमापायिनः) यह विशेषण मात्रास्पर्शोंकाही कथन करा है । आगमापायी होणेतैं ते मात्रास्पर्श अनित्य हैं या प्रकार ताका अर्थ करा है । परंतु इस व्याख्यानविषे (शीतोष्णसुखदुःखदाः) या वचनकरिकै कथन करी जो सुखदुःखकी प्राप्ति सा सुखदुःखकी प्राप्ति ते मात्रास्पर्श किसकूं करैं हैं या प्रकारकी जिज्ञासाके हुए अंतःकरणकूं सुखदुःखकी प्राप्ति करैं हैं या प्रकारके अर्थतैं अंतःकरणका ग्रहण होवै है। और पूर्व व्याख्यानविषे (आगमापायिनः) यह शब्द अंतःकरणकाही वाचक है यातैं ता शब्दतैंही अंतःकरणकी प्राप्ति है इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥शंका-- हे भगवन् ! अंतःकरणकूं जो सुखदुःखका आश्रय अंगीकार करोगे तौ तिस अंतःकरणकूंही कर्ताभोक्तापणेकी प्राप्तिकरिकै चेतनरूपता अंगीकार क

तथा चेतन है तथा अद्वितीय है तथा निर्गुण है तथा निष्क्रिय है इति । ऐसे निर्विकार नित्य आत्माकूं अनित्य अंतःकरणके सुखदुःखादिक धर्मोंकी आश्रयता संभवै नहीं काहेतैं धर्म और धर्मी या दोनोंका अभेदही होवै है अभेदतैं विना दूसरा कोई तिन्होंका संबंध संभवता नहीं सो नित्यअनित्यका अभेद कहणा अत्यंत विरुद्ध है यातैं ते सुखदुःखादिक आत्माके धर्म नहीं हैं । और सुखदुःखादिरूप साक्ष्य पदार्थोंविषे साक्षी आत्माका धर्मपणा कदाचित्भी संभवै नहीं यातैं यह अर्थ सिद्ध भया सुखदुःखादिक धर्मोंका आश्रय केवल अंतःकरणही है आत्मा तिन सुखदुःखादिक धर्मोंका आश्रय नहीं है । सो अंतःकरण शरीरशरीरविषे भिन्न भिन्न है ता अंतःकरणके भेदकूं अंगीकार करिकैही कोई सुखी है कोई दुःखी है इत्यादिक व्यवस्था संभव होइ सकैं हैं यातैं सुखदुःखादिकोंकी व्यवस्थाके अनुपपत्तितैं शरीरशरीरविषे आत्माका भेद मानणा अत्यंत असंगत है । किंवा सर्व जगत्का प्रकाश करणेहारा तथा जन्मादिक विकारोंतैं रहित जो आत्मा है सो आत्मा सत्रूप करिकै तथा स्फुरणरूपकरिकै सर्व पदार्थोंविषे अनुगत हुआ प्रतीत होवै है यातैं ता सत्तास्फुरणरूप आत्माके भेदविषे कोईभी प्रमाण नहीं है उलटा "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः" इत्यादिक अनेक श्रुतियां आत्माके अभेदविषेही प्रमाण हैं । किंवा । सुखदुःखादिकोंकी उत्पत्तिविषे अंतःकरणकूं कारणता है । यह वार्त्ता नैयायिकोंकूं तथा सिद्धांतीकूं दोनोंकूं अंगीकार है । तहां नैयायिक तौ मनरूप अंतःकरणकूं सुखदुःखादिक धर्मोंका निमित्तकारण मानैं हैं । और आत्माकूं सुखदुःखादिकोंका समवायिकारण मानैं हैं । और सिद्धांतविषे अंतःकरणकूंही सुखदुःखादिकोंका उपादानकारण मान्या है । तहां "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" इत्यादिक श्रुतियोंनै आत्माकूं निर्गुण कह्या है यातैं निर्गुण आत्माविषे गुणकी समवायिकारणता कहणी श्रुतितैं विरुद्ध है । और अंतःकरणतैं विना दूसरे किसी पदार्थविषे सुखदुःखादिकोंकी समवायिकारणता संभवै नहीं । और निमित्तकारणताकी अपेक्षा करिकै समवायिकारणता श्रेष्ठभी होवै है यातैं नैयायिकोंनैंभी अंतःकरणकूंही सुखदुःखादिकोंका समवायिकारण मान्या चाहिये । किंवा । केवल युक्तिकरिकैही अंतःकरणविषे सुखदुःखादिक धर्मोंकी उपादानकारणता सिद्ध नहीं है । किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी सिद्ध है । तहां श्रुति । "कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धा अश्रद्धा धृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एवेति" । अर्थ यह । इच्छा, संकल्प, संशय, श्रद्धा, अश्रद्धा, धैर्य, अधैर्य, लज्जा, वृत्तिज्ञान, भय यह सर्व मनरूपही हैं इति । यह श्रुति कामादिक विकारोंका मनके साथि अभेद कथन करती हुई मनकूं तिन कामादिक विकारोंका उपादानकारणत्व कथन करै है । ता श्रुतिविषे कामादिक विकार सुखदुःखादिक धर्मोंकेभी उपलक्षक हैं । और आत्माकूं तौ स्वप्रकाशज्ञान आनंदरूपताकरिकै अनेक श्रुतियोंनैं कथन करा

एक शरीरविषे सुखदुःखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे सुखदुःखकी प्राप्ति देखणेविषे आवती नहीं यातें शरीर शरीरविषे भिन्न भिन्न आत्मा मान्या चाहिये । इस प्रकार आत्माके भेद सिद्ध हुए भीष्मद्रोणादिकोंतैं भिन्न मैं आत्मा यद्यपि नित्य हूं तथा विभु हूं तथापि मैं आत्मा सुखदुःखादिक गुणोंवाला हूं यातें तिन भीष्मद्रोणादिक बांधवोंके देहकूं नाश हुए हमारेविषे सुखका वियोग तथा दुःखका संबंध अवश्यकरिकै होवेगा यातें हमारेकूं शोक मोह करणा अनुचित नहीं है किंतु उचित है । इस प्रकारके अर्जुनके अभिप्रायकी शंकाकरिकै सो श्रीभगवान् लिंगदेहके विवेक करणेवासतै कहे हैं ।

(मू. श्लो.) मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ॥ आगमापायिनोनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) मात्रास्पर्शाः । तु । कौंतेय । शीतोष्णसुखदुःखदाः । आगमापायिनः । अनित्याः । तान् । तितिक्षस्व । भारत ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे कूंतीके पुत्र हे भरतवंशविषे उत्पन्न हुआ अर्जुन अनियतस्वभाववाले जो इंद्रियोंके विषयोंके साथि संबंध हैं ते उत्पत्तिनाशवान् अंतःकरणकूंही शीतउष्णकी प्राप्तिद्वारा सुखदुःखकी प्राप्ति करणेहारे हैं तिन्होंकूं तूं सहन कर ॥ १४ ॥

टीका । जिन्होंकरिके विषय जाने जावैं हैं तिन्होंका नाम मात्रा है ऐसे नेत्रादिक इंद्रिय हैं । नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकैही रूपादिक विषय जाने जावैं हैं तिन नेत्रादिक इंद्रियोंके जो रूपादिक विषयोंके साथि यथायोग्य संबंध हैं तिन्होंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै जन्य जो तिस तिस विषयाकार अंतःकरणका परिणामरूप वृत्तियां हैं तिन्होंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । कौषीतकिउपनिषद्विषे वागादिक दश इंद्रियोंकूं प्रज्ञामात्रा कहा है और नामादिक दश विषयोंकूं भूतमात्रा कहा है तिन वागादिक दश इंद्रियोंका तथा नामादिक दश विषयोंका इहां मात्राशब्दकरिकै ग्रहण करणा । तिन इंद्रियविषयरूप मात्रावोंके जो परस्पर विषयविषयीभावसंबंध हैं तिन्होंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । मात्रा यह तृतीयाविभक्त्यंत प्रमाताका वाचक भिन्न पद जानणा । ता प्रमाताके साथि जो विषय इंद्रियोंके संबंध हैं तिनोंका नाम मात्रास्पर्श है । और आगम नाम उत्पत्तिका है । और अपाय नाम नाशका है सो आगम तथा अपाय जिसका होवै ताका नाम आगमापायी है ऐसे आगमापायी अंतःकरणकूंही ते मात्रास्पर्श शीतउष्णादिकोंकी प्राप्तिद्वारा सुखदुःखकी प्राप्ति करैं हैं । सर्वत्र व्यापक नित्य आत्माकूं ते मात्रास्पर्श सुखदुःखकी प्राप्ति करैं नहीं काहेतें सो नित्य आत्मा निर्गुण है तथा निर्विकार है । तहां श्रुति । "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च"। अर्थ यह । यह आत्मादेव सर्वका साक्षी है

है । यातैं सर्व शरीरोंविषे तूं एकही आत्मा व्यापक है । इस प्रकार सर्व शरीरोंविषे आत्माकी एकताके सिद्ध हुएभी यह भीष्मद्रोणादिक वध्य हैं और मैं अर्जुन इन्होंका घातक हूं या प्रकारकी भेद कल्पनाकूं कारकै जो तूं मोहकूं प्राप्त भया है ताकेविषे तुम्हारा अविद्वान्‌पणा ही हेतु है । और जो विद्वान् पुरुष सर्व शरीरोंविषे आत्माकी एकताकूं जानैं हैं ते विद्वान् धीर पुरुष ताकेविषे मोहकूं प्राप्त होवैं नहीं काहेतैं मैं इन्होंका हनन करणेहारा हूं और हमारेकारकै यह हनन होवैंगे या प्रकारका भेददर्शन ता विद्वान् पुरुषकूं होता नहीं या कहणेकारकै भगवान्‌नैं यह अनुमान सूचन करा वादियोंके विवादका विषयरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक सर्व देह हैं ते सर्व देह एक भोक्ता आत्मावाले हैं देहत्व धर्म वाले होणेतैं तुम्हारे बाल्ययौवनादिक देहोंकी न्याईं इति । तहां श्रुतिभी कहै है । " एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा इति " अर्थ यह । एकही आत्मादेव सर्वभूतप्राणियोंविषे व्यापक है तथा काष्ठोंविषे अग्निकी न्याईं गुप्त है । तथा सर्वभूतप्राणियोंका अंतरआत्मा है इति । इतने कहणेकारकै आत्माविषे नित्यपणा तथा विभुपणा सिद्ध करा ताकरिकै इतने मत खंडन करे तहां चार्वाक नास्तिक तौ या स्थूल देहकूंही आत्मा मानैं हैं । और तिन चार्वाकोंके एकदेशियोंविषे कोईक तौ इंद्रियोंकही आत्मा मानैं हैं और कोईक मनकूंही आत्मा मानैं हैं और कोईक प्राणोंकूही आत्मा मानैं हैं । और सौगत तौ क्षणिक विज्ञानकूंही आत्मा मानैं हैं । और दिगंबर तौ देहतैं भिन्न तथा स्थिर स्वभाववाला तथा देहके समान परिमाणवाला आत्माकूं मानैं हैं । और मध्यम परिमाणवालेविषे नित्यता संभवै नहीं यातैं नित्य तथा अणुपरिमाणवाला आत्मा है या प्रकार दिगंबरोंके एकदेशी मानैं हैं । सिद्धांतमैं आत्माकूं नित्य तथा विभु मानणेविषे ते सर्व मत खंडन होइ जावैं हैं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् आत्मा नित्य है तथा विभु है या अर्थविषे तौ हम विवाद करते नहीं परंतु सर्व देहोंविषे आत्मा एक है या अर्थकूं हम नहीं सहारि सकते हैं काहेतैं बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार या नव गुणोंवाला नित्य विभु आत्मा होवै है सो आत्मा शरीर शरीरविषे भिन्न भिन्न होवै है या प्रकार वैशेषिक अंगीकार करैं हैं । इसीही पक्षकूं दूसरे तार्किक, मीमांसक आदिकभी अंगीकार करैं हैं । और आत्माकूं निर्गुण मानणेहारे सांख्यशास्त्रवाले तौ आत्मा सुखदुःखादिक गुणोंवाला है या अर्थविषे यद्यपि विवाद करैं हैं तथापि शरीर शरीरविषे आत्मा भिन्न भिन्न है या अर्थविषे ते सांख्यशास्त्रवालेभी विवाद करते नहीं जो कदाचित् सर्व शरीरोंविषे एकही आत्मा अंगीकार करिये तौ एक शरीरविषे सुखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे सुखकी प्राप्ति होणी चाहिये तथा एक शरीरविषे दुःखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे दुःखकी प्राप्ति होणी चाहिये । और

दूसरा तौ कोई कारण संभवता नहीं किंतु केवल पूर्वजन्मके संस्कारही तिन हर्षशोकादिकोंके कारण हैं । जो कदाचित् पूर्वजन्मके संस्कार नहीं अंगीकार करियें तौ माताके उदरतैं बाहिर निकस्या जो बालक है ता बालककी उसी कालविषे माताके स्तन्यपानादिकोंविषे प्रवृत्ति होवै है सा नहीं होणी चाहिये काहेतैं चेतन प्राणियोंकी जो जो प्रवृत्ति होवै है सा सा प्रवृत्ति यह वस्तु हमारे इष्टका साधन है या प्रकारके इष्टसाधनताज्ञा नकरिकै जन्य होवै है । इष्टसाधनताज्ञानतैं विना कोईभी प्रवृत्ति होवै नहीं । यातैं बालककी जो माताके स्तन्यपानविषे प्रथम प्रवृत्ति है ता प्रवृत्तितैं पूर्व यह स्तन्यपान हमारे इष्टका साधन है या प्रकारका इष्टसाधनताज्ञान ता बालककूं अवश्य मान्या चाहिये । और ता जन्मकालविषे ता बालककूं सो इष्टसाधनताज्ञान अनुभवरूप तौ संभवता नहीं किंतु सो इष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूप मानणा होवैगा । और जो जो स्मृतिरूप ज्ञान होवै है सो सो पूर्व अनुभवजन्य संस्कारोंतैंही होवै है संस्कारोंतैं विना स्मृतिज्ञान होवै नहीं । यातैं ता बालककूं पूर्वजन्मोंविषे यह माताका स्तन्यपान हमारे क्षुधाकी निवृत्तिरूप इष्टका साधन है या प्रकारका अनुभव बहुतवार हुआ है ता अनुभवजन्य संस्कारोंतैंही ता बालककूं जन्मकालविषे सो स्मरणरूप इष्टसाधनताज्ञान होवै है । यह अंगीकार करणा होवैगा । और ते संस्कारभी अनुद्बुद्ध हुए स्मृतिज्ञानकूं उत्पन्न करै नहीं किंतु उद्बुद्ध हुएही ते संस्कार स्मृतिज्ञानकूं उत्पन्न करैं हैं जो अनुद्बुद्ध संस्कारोंतैंभी वस्तुकी स्मृति होती होवै तौ सर्व कालविषे ता वस्तुकी स्मृति होणी चाहिये । यातैं जन्मकालविषे ता बालकके पूर्वजन्मके संस्कारोंका उद्बोधन करणेहारा पुण्यपापरूप अदृष्टतैं विना दूसरा कोई संभवता नही । किंतु जिन पूर्वजन्मोंके पुण्यपापरूप अदृष्टोंनें यह वर्त्तमान शरीर दिया है । ते पुण्यपापरूप अदृष्टही ता जन्मकालविषे पूर्वजन्मके संस्कारोंकूं उद्बुद्ध करैं हैं । और ते पूर्वजन्मके संस्कार तथा पुण्यपापरूप अदृष्ट आत्मारूप आश्रयतैं विना स्वतंत्र रहैं नहीं यातैं पूर्वजन्मविषे आत्माकी विद्यमानता अंगीकार करी चाहिये । या प्रकारकी युक्तिकरिकेही पूर्व उत्तर शरीर विषे आत्माकी एकता सिद्ध होवै है इति । अथवा । (देहिनोस्मिन्) या श्लोकका यह तीसरा अर्थ करणा जैसे तैं एकही देह आत्माका क्रमतैं देहके बाल्यादिक अवस्थावोंकी उत्पत्ति विनाश हुएभी नित्य होणेतैं भेद नहीं होवै है तैसे विभु होणेतें एकही आत्माकूं एकही कालविषे सर्व देहोंकी प्राप्ति होवै है । तहां आत्माकूं जो देहादिकोंकी न्याईं मध्यम परिमाणवाला मानियैं तौ आत्माविषे देहादिकोंकी न्याईं अनित्यता प्राप्त होवैगी । और आत्माकूं जो अणुपरिमाणवाला मानियैं तौ सर्व शरीरविषे व्यापक सुखदुःखकी प्रतीति नहीं होणी चाहिये तिन दोनों दोषोंकी निवृत्ति करणेवास्तै आत्माकूं विभु मान्या चाहिये । और सर्व शरीरोंविषे ‘ अहम् अस्मि अहम् अस्मि ’ या प्रकारकी एकाकार प्रतीति देखणेविषे आवै

परस्पर कारणकार्यभाव होवे है। किंवा बाल्य, यौवन, वृद्ध या तीन अवस्थावोंके भेद हुएभी तीन अवस्थारूप धर्मोंका आश्रय जो देह है सो देह बाल्य अवस्थातैं लैके वृद्ध अवस्थापर्यंत एकही रहै है ता देहकी एकताकूंही सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करै है । आत्माके एकताकूं सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करै नहीं। या प्रकारका वचन जो सो चार्वाकादिकोंका है सो संभवे नहीं काहे तैं स्वप्नविषे जाग्रतके देहतैं भिन्नही देह होवे है। और योगके प्रभावतैं योगी पुरुष अनेक देहोंकूं रचे है। तहां धर्मीरूप देहोंकाही भेद है यातैं तहां सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीं होणा चाहिये। और सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान तौ स्वप्नद्रष्टा पुरुषकूं तथा योगी पुरुषकूंभी होवै है यातैं देहोंकी एकताकूं सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करै नहीं । इसी अभिप्रायकरिकै बाल्यादिक अवस्था तथा स्वप्नद्रष्टा योगी पुरुषके देह यह दो प्रकारके दृष्टांत दिये हैं यातैं जैसे मरुमरीचिकादिकोंविषे जलादिकोंकी बुद्धि भ्रांतिरूप होवै है तैसे मैं स्थूल हूं मैं गौर हूं मैं चलता हूं इत्यादिक बुद्धियांभी भ्रांतिरूपही हैं काहेतैं अधिष्ठान वस्तुके ज्ञानतैं तिन दोनों बुद्धियोंका बाध होइ जावै है। जिसका अधिष्ठानके ज्ञानकरिकै बाध होवै है सो भ्रांतिही होवै है। यह वार्त्ता (न जायते) इत्यादिक वचनोंविषे आगे स्पष्ट होवैगी इतने कहणेकरिकै देहतैं भिन्न हुआभी आत्मा ता देहके उत्पन्न हुए ता देहके साथि उत्पन्न होवै है तथा देहके नाश हुए ता देहके साथि नाश होवै है यह वादीका पक्षभी खंडन हुआ जानणा काहेतैं ता पक्षविषे यद्यपि बाल्य यौवनादिक अवस्थावोंके भेद हुएभी सोईहों मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञानधर्मीरूप देहकी एकताकूं लैके संभव होइ सकै है तथापि जिस स्वप्नविषे तथा योगजन्य ऐश्वर्यविषे धर्मीरूप देहोंकाही भेद होवै है। तिस स्थलविषे सोईही मैं हूं इस प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान ता वादीके मतविषे नहीं संभवैगा । और तहांभी सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान तौ होवै है यातैं देहके उत्पत्तिनाशके साथि आत्माका उत्पत्तिनाश मानणा अत्यंत विरुद्ध है। अथवा। (देहिनोस्मिन्) या श्लोकका यह दूसरा अर्थ करणा जैसे जन्मादिक विकारोंतैं रहित एकही आत्माकूं कौमारादिक तीन अवस्थावोंकी प्राप्ति होवै है तैसे इस देहतैं प्राणोंके उत्क्रमणतैं अनंतर दूसरे देहकी प्राप्ति होवै है। तहां जैसे बाल्यादिक अवस्थावोंकी प्राप्तिकालविषे सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवै है तैसे मरणतैं अनंतर दूसरे देहके प्राप्त हुए सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवै नहीं यातैं सोईही मैं हूं या प्रकारके प्रत्यभिज्ञाज्ञानकरिकै यद्यपि तहां पूर्व उत्तर देहोंविषे आत्माकी एकता सिद्ध होवै नहीं तथापि युक्तिकरिकै तहां आत्माकी एकता सिद्ध होइ सकै है सा युक्ति यह है माताके उदरतैं बाहिर निकस्या हुआ जो बालक है तिस बालककूं इसी कालविषे हर्ष, शोक, भय आदिकोंकी प्राप्ति होवै है तिन हर्षशोकादिकोंकी प्राप्तिविषे

(मू. श्लो.) देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ॥ तथा देहांतरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) देहिनः । अस्मिन् । यथा । देहे । कौमारं । यौवनं । जरा । तथा । देहांतरप्राप्तिः । धीरः । तत्र । न । मुह्यति ॥ १३ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे देही आत्माकूं इस देहविषे कौमार यौवन जरा यह तीन अवस्था प्राप्त होवैं हैं तैसे दूसरे देहकीभी प्राप्ति होवै है तिसविषे धीर पुरुष नहीं मोहकूं प्राप्त होवै है ॥ १३ ॥

टीका। भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान या तीन कालोंविषे स्थित जितनेक जगत्मंडलवर्त्ती देह हैं ते सर्व देह जिसके होवैं ताकूं देही कहैं हैं सो एकही देही आत्मा विभु होणेतैं सर्व देहोंके साथि संबंधवाला है यातैं ता एक चेतन आत्माकरिकेही सर्व शरीरोंविषे नाना प्रकारकी चेष्टा सिद्ध होइ सकैं हैं । देहदेहविषे आत्माके भेद मानणेमैं किंचित्मात्रभी प्रमाण नहीं है । या अर्थके सूचन करणेवास्तैही (देहिनः) या पदविषे एकवचनका कथन करा है। और पूर्वश्लोकविषे जो (सर्वे वयं) यह बहुवचन कथन करा था ता बहुवचनका शरीरोंके भेदविषे तात्पर्य है कोई आत्माके भेदविषे ता बहुवचनका तात्पर्य नहीं है यातैं पूर्वउत्तर वचनोंका विरोध होवै नहीं । ऐसे एक देही आत्माके जैसे इस वर्त्तमान स्थूलदेहविषे बाल्य अवस्था यौवन अवस्था वृद्ध अवस्था यह परस्पर विरुद्ध तीन अवस्था होवैं हैं तिन बाल्यादिक तीन अवस्थावोंके भेदकरिकै ता देही आत्माका भेद होवै नहीं काहेतैं जो मैं पूर्व बाल्य अवस्थाविषे अपणे मातापिताकूं अनुभव करता भया हूं सोईही मैं अबी वृद्ध अवस्थाविषे अपणे पुत्र पौत्रादिकोंका अनुभव करता हूं । या प्रत्यभिज्ञाज्ञानके बलतैं बाल्य अवस्थाके आत्माका तथा वृद्ध अवस्थाके आत्माका अभेदही सिद्ध होवै है । और बाल्य अवस्थाके शरीरका तथा वृद्ध अवस्थाके शरीरका भेद तौ सर्वकूं प्रत्यक्षही प्रतीत होवै है यातैं देहके भेदकारिकै आत्माका भेद होवै नहीं । इसी प्रकार जन्मादिक विकारोंतैं रहित आत्माकूं इस शरीरतैं अत्यंत विलक्षण शरीरकी प्राप्ति स्वप्नविषे तथा योगके प्रभावजन्य ऐश्वर्यविषे होवै है । तहां तिस तिस देहोंके भेदकी प्रतीति हुएभी सोईही मैं हूं या प्रकारके प्रत्यभिज्ञाज्ञानके बलतैं आत्माकी एकताही सिद्ध होवै है । जो कदाचित यह स्थूल देहही आत्मा होवै तौ बाल्ययौवनादिक अवस्थावोंके भेदकरिकै देहके भेद सिद्ध हुए सोई मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीं होणा चाहिये। काहेतैं अन्यविषे रहे हुए संस्कार अन्य पुरुषके प्रत्यभिज्ञाज्ञानके कारण होवैं नहीं किंतु एक अधिकरणविषे वर्त्तमान हुए संस्कारोंका तथा प्रत्यभिज्ञाज्ञानका

(पदार्थः) हे अर्जुन मैं कृष्ण भगवान् इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया हूं यह नहीं कह्या जावै है तथा तूं अर्जुन इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया है यहभी नहीं कह्या जावै है तथा यह सर्व राजे इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होते भये हैं यहभी नहीं कह्या जावै है किंतु मैं तूं यह सर्व राजे पूर्व होतेही भये हैं तथा इसतैं आगे हम सर्व नहीं होवैंगे यहभी नहीं कह्या जावै है किंतु हम सर्व आगेभी होवैंगे ॥ १२ ॥

टीका । हे अर्जुन ! जैसे सर्व जगतका कारण मैं कृष्णभगवान् इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया हूं यह कह्या जावै नहीं किंतु इसतैं पूर्वभी मैं होता भया हूं तैसे तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होते भये हैं यह कह्या जावै नहीं किंतु तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं पूर्वभी होते भये हैं इतने कहणेकरिकै आत्माविषे प्रागभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया । और मैं कृष्णभगवान् तथा तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं आगे कदाचित्भी नहीं होवैंगे यह कह्या जावै नहीं किंतु इसतैं आगेभी हम सर्व होवैंगेही इतने कहणेकरिकै आत्माविषे प्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया या कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध भया भूतकालविषे तथा भविष्यत् कालविषे तथा वर्त्तमानकालविषे जो विद्यमान होवै है ताकूं नित्य कहैं हैं यह नित्यका लक्षण आत्माविषेही घटै है । या स्थूल देहविषे घटता नहीं यातैं यह आत्माही नित्य होणेतैं यह आत्मा स्थूल शरीरतैं विलक्षणही सिद्ध होवै है । इसी विलक्षणताकूं (नत्वेवाहं) या वचनविषे स्थित तु या शब्दकरिकै सूचन करा है इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् ! चेतनता धर्मकरिकै विशिष्ट जो यह स्थूल देह है सो स्थूल देहही आत्मा है या प्रकार चार्वाक नास्तिक मानैं हैं । या स्थूल देहकूं आत्मा माणनेमैं तिन्होंके मतविषे मैं स्थूल हूं मैं गौर हूं मैं चलता हूं इत्यादिक ज्ञानोंकी प्रामाण्यताभी बाधतैं रहित सिद्ध होवै है । या देहतैं जो आत्माकूं भिन्न मानिये तौ यह सर्व ज्ञान अप्रमारूप होवैंगे यातैं या स्थूल देहतैं आत्मा भिन्न नहीं है किंतु स्थूलत्व गौरत्व आदिक धर्मोंवाला यह स्थूल देहही आत्मा है किंवा या स्थूल शरीरतैं जो आत्माकूं भिन्नभी अंगीकार करिये तौभी ता आत्माविषे जन्ममरणका अभाव संभवै नहीं काहेतैं देवदत्त नामा पुरुष जन्मकूं प्राप्त भया है तथा देवदत्त नामा पुरुष मरणकूं प्राप्त भया है या प्रकारकी प्रतीति सर्व जनोंकूं होवै है यातैं देहके जन्मसाथि आत्माकाभी जन्म संभवै है तथा देहके मरणसाथि आत्माकाभी मरण संभवै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं ।

होवै है तथापि ते ब्रह्मवेत्ता पुरुष ता व्युत्थानकालविषे तिन बांधवोंकूं मिथ्यारूपकरिकै निश्चय करैं हैं । और जैसे रज्जुरूप अधिष्ठानके साक्षात्कार करिकै सर्पभ्रमके निवृत्त हुएतैं अनंतर ता सर्पभ्रमजन्य भयकंपादिक आपही निवृत्त होइ जावैं हैं। और जैसे पित्तदोषयुक्त रसनइंद्रियवाले पुरुषकूं कदाचित् गुडविषे तिक्त रसकी प्रतीति हुएभी ता गुडविषे मधुररसके निश्चयकूं बलवान् होणेतैं तिक्त रसकी इच्छाकरिकै ता पुरुषकी गुडविषे प्रवृत्ति होवै नहीं तैसे शोकके अविषय पदार्थोंविषे जो शोचत्वबुद्धिरूप भ्रम है सो भ्रमभी अधिष्ठान आत्माके अज्ञानकरिकै करा हुआ है। जबी अधिष्ठान आत्माके साक्षात्कारकरिकै ता अज्ञानकी निवृत्ति होवै है तबी ता अज्ञानका कार्यरूप शोचत्वभ्रम आपही निवृत्ति होइ जावै है। और वसिष्ठादिक महान् पुरुषोंनैं प्रारब्धकर्मकी प्रबलतातैं जो शोकमोहादिक करे हैं ते शोकमोहादिक शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करे जावैं नहीं। काहेतैं शिष्ट पुरुषोंनैं धर्मबुद्धिकरिकै अनुष्ठान करा जो अलौकिक व्यवहार है सोईही शिष्टाचार कह्या जावै है। यह शिष्टाचारका लक्षण तिन वसिष्ठादिकोंके शोकमोहादिकोंविषे घटता नहीं काहेतैं ते शोकमोहादिक पशुपक्षी आदिक सर्व प्राणियोंविषे स्वभावतैंही प्राप्त हैं यातैं तिन्होंविषे अलौकिकरूपता संभवै नहीं और तिन वसिष्ठादिकोंनैं कोई धर्मबुद्धिकरिकै शोकमोहादिक करे नहीं यातैं तिन शोकमोहादिकोंविषे शिष्टाचाररूपता संभवै नहीं। और या प्रकारके शिष्टाचारके लक्षणका परित्याग करिकै जो सामान्यतैं शिष्ट पुरुषोंके व्यवहारमात्रकूंही प्रमाण मानिये तौ शिष्ट पुरुषोंकी जो मलमूत्रादिकोंका परित्यागरूप स्वाभाविक चेष्टा है सा स्वाभाविक चेष्टाभी शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करी चाहिये। और ता स्वाभाविक चेष्टाकूं कोईभी बुद्धिमान् पुरुष शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करता नहीं यातैं वसिष्ठादिकोंके शोकमोहकूं देखिकरिकै तुम्हारेकूं शोकमोह करणा योग्य नहीं है इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ अब (नत्वेवाहं) इत्यादिक ओगणीस १९ श्लोकोंकरिकै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इस वचनका अर्थ विस्तारतैं निरूपण करैं हैं। और तिसतैं अनंतर (स्वधर्ममपि चावेक्ष्य) इत्यादिक अष्ट श्लोकोंकरिकै (प्रज्ञावादांश्च भाषसे) इस वचनका अर्थ विस्तारतैं निरूपण करैंगे काहेतैं साधारण असाधारण यह पूर्व उक्त दो प्रकारका मोह भिन्न भिन्न प्रयत्नकरिकैही निवृत्त होवै है एक प्रयत्नकरिकै निवृत्त होवै नहीं। तहां स्थूल शरीरतैं आत्माका भेद सिद्ध करणेवासतै प्रथम आत्माविषे नित्यत्व सिद्ध करैं हैं।

(मू. श्लो.) नत्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ॥ न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः)
न । तु । एव । अहं । जातु । न । आसं । न । त्वं । न । इमे । जनाधिपाः । न । च । एव । न । भविष्यामः । सर्वे । वयम् । अतः । परं ॥१२॥

टीका । हे अर्जुन ! आत्मदृष्टिकारिकै तथा शरीरदृष्टिकरिकै शोक करणेके नहीं योग्य जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं तिन्होंका तूं पंडित होइकैभी शोक करता है ते भीष्मद्रोणादिक हमारे निमित्त मृत्युकूं प्राप्त होते हैं तिन भीष्मद्रोणादिकोंतैं विना मैं राज्यसुखादिकोंकूं क्या करौंगा या प्रकारका शोक (दृष्टेमं स्वजनं कृष्ण) इत्यादिक वचनोंकारिकै तूं करता भया है सो शोक करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है काहेतैं शोक करणेके अयोग्य पदार्थों विषे शोचत्वबुद्धिरूप भ्रम पशु पक्षी आदिक सर्व प्राणीमात्रविषे साधारण है और तूं तौ अत्यंत पंडित होइकैभी तिस भ्रमकूं प्राप्त भया है यातैं तुम्हारेकूं यह भ्रम होणा अत्यंत अनुचित है । और (कुतस्त्वा कश्मलमिदं) इत्यादिक मेरे वचनोंकारिकै तुम्हारेकूं यह हमनैं बहुत अनुचित करा है या प्रकारके विचारकी प्राप्ति होणी चाहीती थी और तूं आपभी बुद्धिमान है ऐसा बुद्धिमान् हुआभी तूं बुद्धिमान् पुरुषोंकारिकै नहीं कहणे योग्य (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकूं कथन करता है परंतु लज्जाकरिकै तूष्णीभावकूं तूं प्राप्त होता नहीं इसतैं परे दूसरा क्या अनुचित व्यवहार होवै है यातैं युद्धतैं निवृत्तिरूप अधर्मविषे जो धर्मत्वबुद्धिरूप भ्रांति है तथा युद्धरूप धर्मविषे जो अधर्मत्वबुद्धिरूप भ्रांति है सा असा धारण भ्रांति तैं अत्यंत पंडितकूं उचित नहीं है । अथवा (प्रज्ञावादांश्च भाषसे) या वचनका यह अर्थ करणा देहतैं भिन्न करिकै आत्माकूं जानणेहारे जो प्रज्ञावान् पुरुष हैं तिन प्रज्ञावान् पुरुषोंके (नरके नियतं वासः पतंति पितरो ह्येषां) इत्यादिक वचनमात्रोंकूंही तूं कथन करता है परंतु तिन प्रज्ञावान् पुरुषोंकी न्याईं तिन वचनोंके यथार्थ तात्पर्यकूं तूं जाणता नहीं । जो तूं शास्त्रके वचनोंका यथार्थ तात्पर्य जाणता तौ तूं शोकमोहकूं प्राप्त नहीं होता । शंका—हे भगवन् वसिष्ठादिक जो महान् पुरुष हुए हैं तिनोंनैंभी अपणे पुत्रादिक बांधवोंके मरणेकारिकै महान् शोक करा है यातैं अपणे बांधवोंके मरणेविषे शोक करणा अनुचित नहीं है किंतु शिष्टाचारकरिकै प्राप्त होणेतैं सो शोक करणा उचित है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए भगवान् कहैं हैं । (गतासूनिति) हे अर्जुन ! विचारकारिकै उत्पन्न भया है आत्माके वास्तव स्वरूपका ज्ञान जिन्होंकूं ऐसे जो पंडित हैं ते पंडित पुरुष प्राणोंतैं रहित बांधवोंके शरीरोंका तथा प्राणयुक्त बांधवोंके शरीरोंका शोक करते नहीं । तात्पर्य यह । मृत्युकं प्राप्त हुए यह हमारे बांधव सर्व पदार्थोंका परित्याग कारिकै जाते भये हैं ते हमारे बांधव अबी क्या करते होवैंगे तथा किस स्थानविषे स्थित होवैंगे । और यह जीवते हुए हमारे बांधव तिन मरे हुए संबंधियोंके वियोगकारिकै कैसे जीवैंगे । या प्रकारके व्यामोहकूं ते पंडित पुरुष प्राप्त होते नहीं काहेतैं तिन ब्रह्मवेत्ता पंडित पुरुषोंकूं समाधिकालविषे तौ तिन बांधवोंकी प्रतीतिही नहीं होवै है और समाधितैं उत्थानकालविषे यद्यपि तिन ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंकूं बांधवोंकी प्रतीति

कह्या जावै है इति। यह वार्त्ता 'अशोच्यान्' इत्यादिक वचनोंविषे आगे स्पष्ट होवेगी इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां अर्जुनकी युद्धरूप स्वधर्मविषे पूर्वस्वभावतैं उत्पन्न हुईभी प्रवृत्ति दो प्रकारके मोहकरिकै तथा ता मोहजन्य शोककरिकै प्रतिबद्ध होती भई । यातैं पुनः वा युद्धरूप स्वधर्मविषे अर्जुनकी प्रवृत्ति करावणेवासतै ता अर्जुनका सो दो प्रकारका मोह अवश्यकरिकै दूर करणेकं योग्य है तहां सर्व संसारधर्मोंतैं रहित स्वप्रकाश परमानंदस्वरूप आत्माविषे स्थूल सूक्ष्म दोनों शरीर तिन दोनों शरीरोंका कारणरूप अविद्या या तीनों उपाधियोंके अविवेककरिकै जो मिथ्यारूप संसारविषे सत्यत्व तथा आत्मधर्मत्व आदिक प्रतीति हैं सो प्रथम मोह है सो मोह सर्व प्राणिमात्रविषे रहै है यातैं सो मोह साधारण है । और युद्धरूप स्वधर्मविषे हिंसादिकोंकी बाहुल्यताकरिकै जो अधर्मत्वकी प्रतीति है सो दूसरा मोह है । यह दूसरा मोह करुणादिक दोषकरिकै केवल अर्जुनकूंही प्राप्त भया है यातैं दूसरा मोह असाधारण है । तहां स्थूल सूक्ष्म कारण या तीन उपाधियोंके विवेककरिकै प्राप्त भया जो शुद्ध आत्मस्वरूपका बोध है सो बोध प्रथम मोहका निवर्त्तक है यातैं सो बोध सर्व प्राणीमात्रकूं साधारण है । और युद्धविषे यद्यपि हिंसादिक होवैं हैं तथापि सो युद्ध क्षत्रिय राजावोंका स्वधर्म है यातैं ता युद्धविषे अधर्मरूपता नहीं है या प्रकारका जो बोध है सो बोध दूसरे मोहका निवर्त्तक है । यह दूसरा बोध केवल अर्जुनके प्रतिही है यातैं यह दूसरा बोध असाधारण है । इस प्रकार दो प्रकारके बोधकरिकै जबी दो प्रकारके मोहकी निवृत्ति होवै है तबी ता मोहरूप कारणके निवृत्त हुएतैं अनंतर ताके शोकरूप कार्यकी आपही निवृत्ति होइ जावै है । ता शोककी निवृत्तिविषे किसी दूसरे साधनकी अपेक्षा होवै नहीं। या प्रकारके अभिप्रायकरिकै सो श्रीकृष्णभगवान् ता दोनों प्रकारके मोहका कथन करता हुआ ता अर्जुनके प्रति कहै है।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ॥ गतासूनगतासूंश्च नानुशोचंति पंडिताः ॥ ११ ॥

(पदच्छेदः) अशोच्यान् । अन्वशोचः । त्वं । प्रज्ञावादान् । च । भाषसे । गतासून् । अगतासून् । च । न । अनुशोचंति । पंडिताः ॥ ११ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन शोक करणेके अयोग्य भीष्मद्रोणादिकोंकूं तूं शोक करता है तथा बुद्धिमान् पुरुषोंकरिकै नहीं कहणे योग्य वचनोंकूं तूं कथन करता है और पंडित पुरुष तौ प्राणोंतैं रहित बांधवोंकूं तथा प्राणयुक्त बांधवोंकूं नहीं शोक करते ॥ ११ ॥

हृषीकेशः । प्रहसन् । इव । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । विषीदंतम् । इदं । वचः ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र सो कृष्णभगवान् दोनों सेनावाके मध्यविषे विषादकूं प्राप्त हुए तिस अर्जुनके प्रति प्रहास करते हुएकी न्याईं यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ १० ॥

टीका । हे भरतवंशविषे उत्पन्न हुआ धृतराष्ट्र ! पूर्वयुद्धका उद्यम करिकै दोनों सेनावोंके मध्यविषे आइकै ता उद्यमके विरोधी मोहरूप विषादकूं प्राप्त भया जो अर्जुन है ता अर्जुनका सो अनुचित आचरण प्रगट करिकै लज्जारूप समुद्रविषे डुबावते हुएकी न्याईं सो अंतर्यामी भगवान् ता अर्जुनके प्रति परम गंभीर है अर्थ जिसका तथा अनुचित आचरणकूं प्रकाश करणेहारा जो 'अशोच्यान्' इत्यादिक वक्ष्यमाण वचन है ता वचनकूं कहता भया। इहां (प्रहसन्निव) या वचनविषे स्थित जो (इव) यह शब्द है ताका यह अभिप्राय है अन्य पुरुषका अनुचित आचरण प्रगट करिकै ताके लज्जाकूं उत्पन्न करणा याका नाम प्रहास है। और सा लज्जा दुःखरूपही होवै है यातैं जो पुरुष जिस पुरुषके द्वेषका विषय होवै है । सो पुरुषही तिस पुरुषके प्रहासका मुख्य विषय होवै है। और अर्जुन तौ भगवान्‌के द्वेषका विषय है नहीं किंतु सो अर्जुन भगवान्‌के कृपाका विषय है और अर्जुनके अनुचित आचरणका जो प्रकाश करणा है सोभी ता अर्जुनके लज्जाके उत्पत्तिका हेतु नहीं है किंतु सो अनुचित आचरणका प्रकाश ता अर्जुनके विवेकके उत्पत्तिका हेतु है यातैं अर्जुनविषे सो प्रहास गौण है मुख्य नहीं। तात्पर्य यह। जैसे कोई पुरुष अपणे शत्रुके लज्जाकी उत्पत्ति करणेवासतै ताके अनुचित आचरणका प्रकाश करै है तैसे सो श्रीकृष्णभगवान्‌भी अर्जुनके विवेककी उत्पत्ति करणेवासतै ता अर्जुनके अनुचित आचरणकूं प्रकाश करता भया। और लज्जाकी उत्पत्ति तौ अनुचित आचरणके प्रकाशतैं अनंतर अवश्यही होवै है यातैं सा लज्जाकी उत्पत्ति होवो अथवा नहीं होवो परंतु ता लज्जाकी उत्पत्ति करणेविषे भगवान्‌का तात्पर्य नहीं है केवल विवेककी उत्पत्तिविषेही भगवान्‌का तात्पर्य ह। या सर्व अर्थका इव शब्दकरिकै सूचन करा । और (सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतं) यह जो अर्जुनका विशेषण कह्या है ताका यह अभिप्राय है युद्धके आरंभतैं पूर्वही अपणे गृहविषे स्थित हुआ तूं जो कदाचित् युद्धकी उपेक्षा करता तौ यह तुम्हारा अनुचित आचरण नहीं कह्या जाता। परंतु तूं तौ महान् उत्साहपूर्वक इस युद्धभूमिविषे आइकै इस युद्धकी उपेक्षा करता भया है यातैं यह तुम्हारा बहुत अनुचित आचरण

वर्त्तक अंतर्यामी कृष्णभगवान्‌के प्रति ते पूर्व उक्त वचन कहिकरिकै अंतविषे मैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके साथि कदाचित्‌भी युद्ध नहीं करोंगा या प्रकारका वचन ता गोविंदके प्रति कहिकरिकै तूष्णीभावकं प्राप्त होता भया। इहां गोविंद शब्दका या प्रकारका अर्थ शास्त्रविषे कथन करा है। गोभिर्वेदांतवाक्यैरेव विंदते लभ्यते इति गोविंदः। अर्थ यह। गोशब्द "तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि" इत्यादिक वेदांतवाक्योंका वाचक है। तिन वेदांत वाक्योंकारिकैही जो प्राप्त होवै ताकूं गोविंद कहै हैं। अथवा "गां वेदलक्षणां वाणीं विंदतीति गोविंदः" अर्थ यह। ऋग्, यजुष्, साम, अथर्वण या चारि वेदरूप वाणीकूं जो भली प्रकारतैं जाने है ताकूं गोविंद कहैं हैं। इतने कहणेकरिकै सर्व वेदोंके उपादानकारणत्वरूपकरिकै कृष्णभगवान्‌विषे सर्वज्ञता सूचन करी। और इस श्लोकके आदिविषे (एवमुक्त्वा) या वचनकारिकै सो अर्जुन (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकारिकै युद्धके स्वरूपकी अयोग्यता कथन करता भया। और तिसतैं अनंतर (न योत्स्ये) या वचनकारिकै सो अर्जुन ता युद्धके फलके अभावकूं कथन करता भया। तिसतैं अनंतर सो अर्जुन तूष्णीभावकूं प्राप्त होता भया। तात्पर्य यह। युद्ध करणेवासतै अर्जुननैं जो पूर्व नेत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका दशनादिरूप व्यापार करा था ता सर्व श्यापारकी निवृत्तिकरिकै निर्व्यापार होता भया। यहही अर्जुनका तूष्णीभाव जानणा केवल वाणीमात्रका निरोध तूष्णीभाव नहीं जानणा। इहां (बभूव ह) या वचनविषे स्थित जो हशब्द है। ता हशब्दकारिकै यह अर्थ सूचन करा स्वभावतैंही आलस्यतैं रहित तथा सर्व शत्रुओंकूं संताप करणेहारा जो अर्जुन है तिस अर्जुनविषे आगंतुक आलस्य तथा शत्रुओंका अतापकत्व कदाचित्‌भी नहीं रहि सकैगा इति। और सर्वज्ञताकूं सूचन करणेहारा जो गोविंदपद है तथा सर्वशक्तिसंपन्नताकूं सूचन करणेहारा जो हृषीकेश पद है ता दोनों पदोंकारिकै ता कृष्णभगवान्‌विषे अर्जुनके शोकमोहकी निवृत्ति करणेमें आयासका अभाव सूचन करा। तात्पर्य यह। सर्व शक्तिसंपन्न सर्वज्ञ कृष्णभगवान्‌कूं अत्यंत अल्प शोकमोहकी निवृत्ति करणेविषे क्या परिश्रम होवै है इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ तहां युद्धकी उपेक्षावान् अर्जुनकी भगवान्‌नैंभी उपेक्षाही करी होवैगी या प्रकारकी जो धृतराष्ट्रकी दुराशा है ता दुराशाके निवृत्त करणेवासतै सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति युद्धविषे अर्जुनकी उपेक्षा देखिकरिकैभी सो कृष्णभगवान् ता अर्जुनकी उपेक्षा नहीं करता भया या प्रकारका वचन कहैं ।

(मू. श्लो.) तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतमिदं वचः ॥ १० ॥ (पदच्छेदः) तम्। उवाच।

यातैं तिन अनित्य भोगोंतैं शोककी निवृत्ति संभवै नहीं उलटा ते भोग तीन कालविषे या पुरुषकूं शोककीही प्राप्ति करैं हैं। तहां न प्राप्त हुए ते भोग अपणी इच्छाकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करैं हैं। और प्राप्तिकालविषे ते भोग पराधीनताकरिकै तथा नाशके भयकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करैं हैं। और अपणे नाशकालविषे ते भोग वियोगकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करैं हैं। ऐसे शोकके करणेहारे अनित्य भोगोंकरिकै शोककी निवृत्ति संभवै नहीं। तहां श्रुति। "तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यजितो लोकः क्षीयते इति"। अर्थ यह। जैसे कर्मकरिकै प्राप्त होणेतैं इस लोकके पदार्थ नाशकूं प्राप्त होवैं हैं तैसे पुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्त होणेतैं स्वर्गादिक लोकोंके पदार्थभी नाशकूं प्राप्त होवैं हैं इति। या श्रुतिकरिकै सर्व भोगोंविषे अनित्यताही सिद्ध होवै है। और इस लोकके तथा परलोकके सर्व पदार्थ अनित्य होणेकूं योग्य हैं। कार्य होणेतैं जो जो कार्य होवै है सो सो अनित्यही होवै है। जैसे प्रसिद्ध घटादिक पदार्थ हैं या प्रकारके अनुमानरूप युक्तिकरिकैभी तिन सर्व भोगोंविषे अनित्यताही सिद्ध होवै है। और इस लोकके पदार्थोंका नाश तौ सर्व लोकोंकूं प्रत्यक्षही प्रतीत होवै है। ऐसे अनित्य पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकै शोककी निवृत्ति संभवै नहीं यातैं शोककी निवृत्तिवासतै हमारेकूं युद्ध करणा योग्य नहीं है। इतनेकरिकै इस लोक परलोकके भोगोंका वैराग्य अधिकारीका विशेषणरूप करिकै वर्णन करा इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ हे संजय इस प्रकारके वचनोंकूं कहिकरिकै सो अर्जुन क्या करता भया ऐसी धृतराष्ट्रकी आकांक्षाके हुए संजय कहै है।

(मू. श्लो.) संजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतपः ॥ न योत्स्य इति गोविंदमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ ९ ॥
(पदच्छेदः) एवम्। उक्त्वा। हृषीकेशं। गुडाकेशः। परंतपः। न। योत्स्ये। इति। गोविंदम्। उक्त्वा। तूष्णीं। बभूव। ह ॥९॥
(पदार्थः) हे धृतराष्ट्र शत्रुवोंकूं संताप करणेहारा तथा निद्राकूं जीतणेहारा अर्जुन हृषीकेश भगवानके प्रति इस प्रकारके वचन कहिकरिकै अंतविषे मैं नहीं युद्ध करौंगा या प्रकारका वचन ता गोविंदके प्रति कथन करिकै तूष्णीभावकूं प्राप्त होता भया ॥ ९ ॥

टीका। गुडाका नाम निद्राका है ता निद्राकूं जो अपणे वश करै है ताकूं गुडाकेश कहै हैं। दूसरे गुडाकेश शब्दके अर्थ प्रथम अध्यायविषे कथन करि आये हैं। ऐसे निद्रारूप आलस्यतैं रहित तथा अपणे शत्रुवोंकूं संतापकी प्राप्ति करणेहारा जो अर्जुन है सो अर्जुन हृषीक नामा इंद्रियोंके प्र

पत्नमृद्धं । राज्यं । सुराणाम् । अपि । च । आधिपत्यं ॥ ८ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् जो श्रेय हमारे इंद्रियोंके संताप करणेहारे शोककूं निवृत्त करै तिस श्रेयकूं मैं नहीं देखता हूं इस भूमिविषे शत्रुवोंतैं रहित तथा धनधान्यकरिकै युक्त राज्यकूं प्राप्त होइकै तथा देवतावोंके अधिपतिपणेकूं भी प्राप्त होइकै मैं ता श्रेयकूं नहीं देखता हूं ॥ ८ ॥

टीका । हे भगवन् ! जो श्रेय प्राप्त होइकै हमारे शोककू निवृत्त करै ता श्रेयकूं मैं जानता नहीं या कारणतैं हमारे प्रति आप ता श्रेयका उपदेश करो । इतने कहणेकरिकै अर्जुननैं या श्रुतिका अर्थ सूचन करा " सोहं भगवः शोचामि तं मां भगवाञ्छोकस्य पारं तारयतु इति " । अर्थ यह । हे भगवन् सनत्कुमार आत्मवेत्ता पुरुष शोककूं तरै है यह वार्त्ता हमनैं आपसरीखे विद्वान् पुरुषोंके मुखतैं श्रवण करी है । और मैं नारद तौ शोककूं प्राप्त होता हूं यातैं मैं आत्मवेत्ता नहीं हूं । ऐसे मैं नारदकूं आप शोकके पारकूं प्राप्त करौ । तात्पर्य यह । ब्रह्मविद्याका उपदेश करिकै हमारे शोककूं आप नाश करो इति । यह सनत्कुमारनारदका संवाद आत्मपुराणके त्रयोदश अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं । शंका—हे अर्जुन ! ता शोकके नहीं निवृत्त हुएभी तुम्हारी क्या हानि है । ऐसी भगवान्‌की शंकाकरिकै अर्जुन ता शोकका विशेषण कहै है (इंद्रियाणामुच्छोषणमिति) हे भगवन् सो शोक सर्व कालविषे हमारे इंद्रियोंकूं संतापकी प्राप्ति करणेहारा है ऐसे शोकके विद्यमान हुए हमारी महान् हानि है यातैं ता शोककी निवृत्ति अवश्य करी चाहिये । शंका—हे अर्जुन ! जो तूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होवैगा तौ तुम्हारे शोककी निवृत्ति अवश्य करिकै होवैगी । तहां इस युद्धविषे जो तुम्हारा जय होवैगा तौ राज्यकी प्राप्तिकरिकै तुमारे शोककी निवृत्ति होवैगी और जो तूं युद्धविषे मृत्युकूं प्राप्त होवैगा तौ स्वर्गकी प्राप्तिकरिकै तुम्हारे शोककी निवृत्ति होवैगी । यातैं इस युद्धकूं छोडिकै शोकके निवृत्तिवासतै तूं दूसरा उपाय किसवासतै खोजता है । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है । (अवाप्य भूमाविति) हे भगवन् ! या भूमिविषे शत्रुवोंतैं रहित तथा धनधान्यादिक पदार्थोंकरिकै युक्त ऐसे राज्यकूं प्राप्त होइकै तथा इंद्रतैं आदि लेके हिरण्यगर्भपर्यंत सर्व देवतावोंके ऐश्वर्यकूं प्राप्त होइकै जो कदाचित् मैं स्थित होवौं तौभी जो श्रेय हमारे शोककूं निवृत्तकरणेहारा है ता श्रेयकूं मैं देखता नहीं यातैं सो शोकके निवृत्तकरणेहारा श्रेय इस युद्धतैं कोई भिन्नही है । तात्पर्य यह । इस लोकके विषयभोगोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयभोगोंविषे श्रुतिप्रमाणकरिकै तथा युक्तिरूप अनुमानप्रमाणकरिकै अनित्यताही सिद्ध होवै है ।

रिकै प्राप्त हुआभी स्वर्ग दुःखकरिके मिश्रितही होवै है। तथा नाशकूं प्राप्त होवै है। यातैं रोगकी निवृत्तिविषे तथा स्वर्गकी प्राप्तिविषे सो एकांतिकपणा तथा आत्यंतिकपणा संभवता नहीं । और ब्रह्मात्मसाक्षात्कारतैं अनंतर सो परमपुरुषार्थरूप श्रेय अवश्यकरिके प्राप्त होवै है। यातैं ता श्रेयविषे एकांतिकपणाभी है । और एकवार प्राप्त हुआ सो श्रेय कदाचित्भी नाशकूं प्राप्त होवै नहीं । यातैं ता श्रेयविषे आत्यंतिकपणाभी है ऐसे श्रेयका हमारेप्रति उपदेश करो । शंका—हे अर्जुन श्रुतिविषे यह कह्या है। "नापुत्रायाशिष्याय वै पुनः"। अर्थ यह । जो पुरुष पुत्रभावतैं तथा शिष्यभावतैं रहित होवै ता पुरुषके प्रति ब्रह्मविद्याका उपदेश नहीं करणा इति । और तूं तौ हमारा सखा है। हमारा शिष्य तूं है नहीं। यातैं तुम्हारे प्रति मैं कैसे श्रेयका उपदेश करौं। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (शिष्यस्तेहमिति) हे भगवन्! आपकी शिक्षाके योग्य होणेतैं मैं। आपका शिष्यही हूं मैं आपका सखा नहीं हूं काहेतैं समानज्ञानवाले पुरुषोंकाही परस्पर सखाभाव होवे है न्यून अधिक ज्ञानवाले पुरुषोंका परस्पर सखाभाव होवै नहीं । और मैं तुम्हारी अपेक्षाकरिके अत्यंत न्यूनज्ञानवाला हूं। यातैं मैं आपका सखा नहीं हूं किंतु शिष्य हूं यातैं तुम्हारे शरणकूं प्राप्त हुआ जो मैं हूं तिस मैं शिष्यकूं आप कृपा करिके श्रेयका उपदेश करो। शिष्यभावतैं रहितपणेकी शंकाकरिके आप हमारी उपेक्षा मत करो। इतनेकरिके ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप शिष्यके गमनकूं बोधन करणेहारी इन दोनों श्रुतियोंका अर्थ निरूपण करा ते दोनों श्रुति यह हैं। "तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं इति भृगुर्वै वारुणिर्वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति"॥ अर्थ यह। ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै यह अधिकारी पुरुष अपणे हस्तोंविषे समिदादिक भेटकूं लेकरिकै श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुके समीप जावै इति । और वरुणका पुत्र भृगुऋषि ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै अपणे वरुणपिताके समीप जाता भया तहां. जाइकै हे भगवन् हमारेप्रति ब्रह्मका उपदेश करो या प्रकारका प्रश्न करता भया इति। यह वरुणभृगुका संवाद आत्मपुराणके दशम अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं इति ॥ ७ ॥ ❋ ॥ शंका—हे अर्जुन! तूं सर्व शास्त्रोंका वेत्ता पंडित है यातैं तूं आपही श्रेयका विचार कर तूं हमारा शिष्य किसवासतै होता है ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है।

(मू. श्लो.) नहि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणाम् ॥ अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥
॥ ८ ॥ (पदच्छेदः) नहि । प्रपश्यामि । मम । अपनुद्यात् । यत् । शोकम् । उच्छोषणम् । इंद्रियाणाम् । अवाप्य । भूमौ । अस

६

ब्रूहि । तत् । मे । शिष्यः । ते । अहं । शाधि । मां । त्वां । प्रपन्नं ॥ ७ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् कार्पण्यदोषकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्त हुआ है स्वभाव जिसका तथा धर्मविषयक संशयकरिकै व्याप्त हुआ है चित्त जिसका ऐसा मैं अर्जुन तुम्हारेप्रति श्रेय पूछता हूं यातैं जो निश्चित श्रेय होवै सो हमारेप्रति कथन करो मैं तुम्हारा शिष्य हूं यातैं तुम्हारे शरणकूं प्राप्त हुए हमारेकूं आप शिक्षा करो ॥ ७ ॥

टीका । इस लोकविषे जो पुरुष यत्किंचित् धनकी हानिकूंभी नहीं सहारि सकै है ता पुरुषकूं कृपण कहैं हैं ता कृपण पुरुषके समान होणेतैं मोक्षरूप पुरुषार्थकी प्राप्तितैं रहित सर्व अनात्मवेत्ता अज्ञानी पुरुष कृपण हैं । तहां श्रुति । " यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः " । अर्थ यह । हे गार्गि, अधिकारी मनुष्यशरीरकूं प्राप्त होइकै जो पुरुष इस अक्षर आत्माकूं न जानिकरिकै इस लोकतैं जावै है सो अज्ञानी पुरुष कृपणही है इति । तहां स्मृति । " कृपणोऽजितेंद्रियः " । अर्थ यह । जिस पुरुषनैं अपणे इंद्रियोंकूं नहीं जीत्या है सो पुरुष कृपणही है इति । इत्यादिक श्रुतिस्मृतियोंके प्रमाणतैं अज्ञानी पुरुषोंविषेही कृपणरूपता सिद्ध होवै है । ऐसे कृपण पुरुषोंविषे रहणेहारा जो देहादिक अनात्मपदार्थोंका अध्यास है ता अध्यासका नाम कार्पण्य है ता कार्पण्यकरिकै उत्पन्न भया जो इस जन्मविषे यहही हमारे बांधव हैं तिन्हके नाश हुए हम जीविकारिकै क्या करैंगे या प्रकारका अभिनिवेशरूप ममतालक्षणदोष है ता दोषकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्त हुआ है युद्धका उद्यमरूप स्वभाव जिसका ऐसा जो मैं अर्जुन हूं । तथा धर्मविषे निर्णय करणेहारे प्रमाणके अदर्शनतैं क्या इन भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणाही हमारा धर्म है अथवा इन भीष्मादिकोंका पालन करणा हमारा धर्म है तथा क्या पृथिवीका परिपालन करणा हमारा धर्म है अथवा पूर्व प्राप्त वनविषे निवासही हमारा धर्म है इत्यादिक अनेक संशयोंकारिकै व्याप्त है चित्त जिसका ऐसा जो मैं अर्जुन हूं सो मैं अर्जुन तुम्हारेप्रति अपणा श्रेय पूछता हूं यातैं जो परमपुरुषार्थरूप श्रेय एकांतिकरूप तथा आत्यंतिकरूप निश्चयकारिकै होवै सो श्रेय आप हमारे प्रति कथन करो । तहां स्वसाधनोंतैं अनंतर अवश्यभावीपणेका नाम एकांतिकपणा है । और एकवार उत्पन्न हुएका पुनः कदाचित्भी नाश नहीं होणा याका नाम आत्यंतिकपणा है । जैसे लोकविषे औषधके किये हुए कदाचित् रोगकी निवृत्ति नहींभी होवै है । और जो कदाचित् ता औषधकरिकै रोगकी निवृत्ति होवैभी है तौभी पुनः रोगकी उत्पत्ति करिकै सा रोगकी निवृत्ति नाश होइ जावै है । इस प्रकार यागके किये हुएभी किसी प्रतिबंधके वशतैं स्वर्गकी प्राप्ति नहींभी होवै है । और ता यागक

शय अंगीकार करिये तौ ता सेनाके अधिकताके संशयकरिकैही जयका संशय सिद्ध होइ सकै है। यातैं (यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः) या द्वितीयपादकरिकै कथन करा जो जयका संशय है सो व्यर्थ होवैगा या कारणतैं प्रथम व्याख्यानही बहुत टीकाकारोंकूं संमत है इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

इहां पूर्वग्रंथकरिकै संसारके दोषोंका निरूपण करा ताकरिकै अधिकारी पुरुषके विशेषण कथन करे । तहां (न च श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे) ३१ इस वचनविषे रणविषे मरणकूं प्राप्त हुए शूरवीरकूं योगयुक्त संन्यासियोंके समान योगक्षेमकी प्राप्ति कथन करी ता कहणेकारिकै "अन्यत् श्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयः" या कठवल्ली श्रुतिकरिकै सिद्ध मोक्षरूप श्रेयका कथन करा ता मोक्षरूप श्रेयतैं इतर पदार्थोंविषे अर्थतैं अश्रेयरूपता कथन करी ता कहणेकारिकै नित्यअनित्य वस्तुका विवेक दिखाया । और (न कांक्षे विजयं कृष्ण) ३२ इस श्लोककरिकै इस लोकके विषयजन्य सुखतैं वैराग्य दिखाया । और (अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः) ३५ या वचनकरिकै स्वर्गादिक लोकोंके विषयजन्य सुखतैं वैराग्य दिखाया । और (नरके नियतं वासो भवति) ४४ या वचनकरिकै या स्थूल शरीरतैं भिन्न करिकै आत्माका स्वरूप दिखाया । और (किं नो राज्येन गोविंद) ३२ या वचनकरिकै मनका निग्रहरूप शम दिखाया । और (किं भोगैर्जीवितेन वा) ३२ या वचनकरिकै इंद्रियोंका निग्रहरूप दम दिखाया । और (यद्यप्येते न पश्यंति) ३८ या वचनकरिकै निर्लोभता दिखाई । और (तन्मे क्षेमतरं भवेत्) ४६ या वचनकरिकै तितिक्षा दिखाई । इस प्रकार या गीताशास्त्रके प्रथम अध्यायका अर्थ संन्यासके साधनोंको सूचन करै है । और इस द्वितीय अध्यायविषे तौ (श्रेयोभोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके) ५ या वचनकरिकै भिक्षाअन्नके भोजनकरिकै उपलक्षित संन्यासका निरूपण करा । अब ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवास्ते श्रुतिनैं कथन करा जो ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप शिष्यका गमन है ताका निरूपण करैं हैं काहेतैं जिस पुरुषनैं संसारके सर्व दोषोंकूं जान्या है तथा जो पुरुष इस लोकके तथा परलोकके विषयजन्य सुखोंतैं अत्यंत वैराग्यकूं प्राप्त भया है तिसतैं अनंतर जो पुरुष विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके शरणकूं प्राप्त भया है ऐसे साधनसंपन्न पुरुषकूंही ब्रह्मविद्याके ग्रहण करणेका अधिकार है । तहां पूर्वग्रंथविषे भीष्मद्रोणादिकोंके संकटके वशतैं " व्युत्थायाऽथ भिक्षाचर्यं चरंति " या श्रुतिकरिकै सिद्ध भिक्षाचर्याविषे अर्जुनकी अभिलाषा दिखाई अब विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप अर्जुनका गमनभी तिन भीष्मद्रोणादिकोंके संकटके व्याजकरिकैही निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ॥ यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥ (पदच्छेदः) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः । पृच्छामि । त्वाम् । धर्मसंमूढचेताः । यत् । श्रेयः । स्यात् । निश्चितम् ।

अथवा हमारेकूं यह कौरव जीतेंगे किंवा जिनें भीष्मादिक बांधवोंकूं हनन करिके हम जीवनेकीभी इच्छा नहीं करते हैं ते भीष्मद्रोणादिक बांधवही हमारे सम्मुख स्थित हुए हैं ॥ ६ ॥

टीका । हे भगवन् ! भिक्षाअन्नका भोजन तथा युद्ध ता दोनों धर्मोंविषे हमारेकूं कौन धर्म श्रेष्ठ है । क्या हिंसातैं रहित होणेतैं भिक्षाका अन्नही श्रेष्ठ है अथवा स्वधर्म होणेतैं युद्धही श्रेष्ठ है या वार्त्ताकूं हम जानि सकते नहीं । शंका—हे अर्जुन भिक्षाअन्नका भोजन तथा युद्ध या दोनों धर्मों विषे स्वधर्म होणेतैं युद्धही तुम्हारेकूं श्रेष्ठ है । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (यद्वेति) हे भगवन् जो कदाचित् हम युद्धविषे प्रवृत्तभी होवैं तौभी हमही इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं जय करैंगे अथवा यह भीष्मद्रोणादिकही हमारेकूं जय करैंगे इस वार्त्ताकूंभी हम जाणते नहीं । जो कदाचित् यह भीष्मद्रोणादिकही हमारेकूं जीतेंगे तौ अंतविषे हमारेकूं भिक्षा मांगिकेही भोजन करणा पड़ैगा अथमा हमारा मरण होवैगा । इन दोनों वार्त्ताओंविषे एक वार्त्ता तौ अवश्यकारिकै होवैगी यातैं ता युद्धतैं प्रथमही भिक्षा मांगिके भोजन करणा हमारेकूं श्रेष्ठ है । शंका—हे अर्जुन हमारा जय होवैगा अथवा इन भीष्मद्रोणादिकोंका जय होवैगा या प्रकारका संशय तूं किसवासतै करता है मैं कृष्णभगवान् तुम्हारी सहायता विषे हूं यातैं तुम्हाराही निश्चयकरिकै जय होवैगा । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (यानेवेति) हे भगवन् जो कदाचित् आपकी सहायताकरिकै हमारा जयभी होवै तौभी सो जय अंततैं हमारा पराजयही है काहेतैं जिन भीष्मद्रोणादिक बांधवोंकूं हनन करिकै हम अपणे जीवनमात्रकीभी इच्छा नहीं करते तौ तिन्होंकूं हननकारिकै हम विषयभोगोंकी इच्छा कैसे करैंगे किंतु नहीं करैंगे ते भीष्मद्रोणादिकही हम युद्धविषे मरैंगे या प्रकारका निश्चय करिकै हमारे सम्मुख स्थित हुए हैं । ऐसे प्रिय बांधवोंकूं नाश करिकै जो जय होणा है सो जयभी पराजयरूपही है यातैं भिक्षाअन्नके भोजनतैं इस युद्धविषे श्रेष्ठता नहीं है इति । इहां किसी टीकाकारनैं (न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो) या प्रथम पादका यह अर्थ कथन करा है । हमारे मध्यविषे कौन सेना अधिक है या वार्त्ताकूं हम जानते नहीं सो यह अर्थ संभवता नहीं काहेतैं इस श्लोकतैं आगले श्लोकविषे (पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः) या वचनकरिकै अर्जुननैं धर्मविषेही संशय दिखाया है । ता वचनके अनुसार इस श्लोकविषेभी भिक्षाअन्न और युद्ध या दोनों धर्मोंविषेही अर्जुनका संशय संभवै है । सेनाकी अधिकताविषे संशय संभवै नहीं । किंवा (न चैतद्विद्मः) या वचनकरिकै जो सेनाके अधिकताका सं

श्लोक । "अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित् । इति सत्यं महाराज बद्धोस्म्यर्थेन कौरवैः" । अर्थ यह । हे महाराज युधिष्ठिर यह पुरुष अपणे अर्थकाही दास होवै और सो अर्थ किसीभी पुरुषका दास होता नहीं यह जो वार्त्ता शास्त्रविषे कही है सा वार्त्ता सत्य है । या कारण तैंही मैं अपणे अर्थके लोभकरिकै इन कौरवोंके साथि वांध्या हुआ हूं इति । यातैं अर्थके लोभवाले इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे सो पूर्व उक्त माहात्म्य संभवता नहीं । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए सो अर्जुन कहै है (हत्वेति) हे भगवन् ते भीष्मद्रोणादिक यद्यपि अर्थकी कामनावाले हैं तथापि ते भीष्मद्रोणादिक हमारी अपेक्षाकरिकै तौ गुरुही हैं यह अर्थ अर्जुननैं पुनः गुरुशब्दके कथनकरिकै सूचन करा । ऐसे अर्थकामनावालेभी गुरुवोंकूं हनन करिकै मैं केवल विषयोंकूंहीं भोगौंगा ता गुरुवोंके मारणेकरिकै मैं मोक्षकूं तौ प्राप्त होवौंगा नहीं ते विषयभोगभी केवल इस लोकविषेही हमारेकूं प्राप्त होवैंगे । परलोकविषे ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त होवैंगे नहीं । इस लोकविषेभी श्रेष्ठ पुरुषोंकरिकै अनिंदित ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त नहीं होवैंगे । किंतु अयशरूपी रुधिरकरिकै व्याप्त होणेतैं अत्यंत निंदित ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त होवैंगे । तात्पर्य यह । इन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके मारणेकरिकै जबी इस लोकविषेभी हमारेकूं इस प्रकारका दुःख होवैगा तबी परलोकके दुःखका मैं क्या वर्णन करौं । अथवा (अर्थकामान्) यह विषयरूप भोगोंका विशेषण जानना ता पक्षविषे यह अर्थ करना । इन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं हनन करिकै मैं केवल अर्थकामरूप विषयोंकूंही भोगौंगा परंतु तिन्होंके मारणेकरिकै हमारेकूं कोई धर्मकी तथा मोक्षकी प्राप्ति होवैगी नहीं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे अर्जुन भिक्षाअन्नका भोजन करणा क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकै निषिद्ध है और युद्ध करणा तौ क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकै विधान करा है यातैं स्वधर्म होणेतैं युद्धही तुम्हारेकूं श्रेयकी प्राप्ति करणेहारा है । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जन कहै है ।

(मू. श्लो.) न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ॥ यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥ (पदच्छेदः) ॥ नच । एतत् । विद्मः । कतरत् । नः । गरीयः । यद्वा । जयेम । यदिवा । नः । जयेयुः । यान् । एव । हत्वा । न । जिजीविषामः । ते । अवस्थिताः । प्रमुखे । धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् हमारेकूं भिक्षा और युद्ध इन दोनोंके मध्यविषे कौन धर्म श्रेष्ठ है इस वार्त्ताकूं हम नहीं जानते हैं और युद्धविषे प्रवृत्त हुएभी क्या हम जीतैंगे

भीष्मद्रोणादिक गुरुओंकूं हनन करिकै हमारेकूं यह राज्यभी श्रेष्ठ नहीं है काहेतैं शास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । "अकृत्वा परसंतापमगत्वा खलमंदिरम् । अक्लेशयित्वा चात्मानं यदल्पमपि तद्बहु" । अर्थ यह । दूसरे प्राणियोंकूं संतापकी प्राप्ति नं करिकै तथा वेदविरुद्ध नास्तिकोंके मंदिरकूं न जाइ करिकै तथा अपणे आत्माकूं क्लेशकी प्राप्ति नहीं करिकै इस पुरुषकूं जो अल्प पदार्थकीभी प्राप्ति होवै सा अल्प पदार्थकी प्राप्तिभी इस पुरुषनैं बहुत करिकै मानणी इति । यातैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके मारणेकरिकै प्राप्त होणेहारा जो राज्य है ता राज्यतैं हम इन भीष्मादिकोंकूं न मारिकै या भिक्षाअन्नकूंही बहुतकरिकै मानते हैं। यह सर्व अर्थ अर्जुननैं (हि) या शब्दकरिकै सूचन करा । शंका—हे अर्जुन "गुरोरप्यवलिप्तस्य" या पूर्व उक्त वचनकरिकै इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे गुरुपणेका अभाव हम कथन करि आये हैं यातैं वारंवार तूं इह्नोंविषे गुरुबुद्धि किसवासतै करता है। ऐसी भगवान्की शंकाके हुए सो अर्जुन कहै है। (महानुभावानिति) हे भगवन् श्रवण, अध्ययन, तप, आचार इत्यादिक श्रेष्ठ गुणोंकरिकै महान् है प्रभाव जिह्नोंका ऐसे जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं तिन भीष्मादिकोंनैं कालकामादिकभी अपणे वश करैं हैं ऐसे महान् पुण्यवाले भीष्मादिकोंकूं पूर्व उक्त क्षुद्र पापकर्मका स्पर्शमात्रभी होवै नहीं यातैं यत्किंचित् अनुचित कर्मकूं देखिकरिकै ऐसे महानुभाव पुरुषोंविषे गुरुत्वबुद्धिका परित्याग करणा हमारेकूं योग्य नहीं है। अथवा (हिमहानुभावान्) यह एकही पद है ताका यह अर्थ करणा । "हिमं जाड्यमपहंतीति हिमहा आदित्यो अग्निर्वा तस्यैव अनुभावः सामर्थ्यं येषां ते हिमहानुभावाः तान्" । अर्थ यह । जडतारूप जो हिम है ता हिमकूं जो नाश करै ताका नाम हिमहा है ऐसा सूर्य भगवान् है अथवा अग्नि है ता सूर्यभगवान्के तथा अग्निके समान है सामर्थ्य जिन्होंका तिन्होंका नाम हिमहानुभाव है। ऐसे अति तेजस्वी भीष्मद्रोणादिकोंकूं ते पूर्व उक्त क्षुद्र पाप दोषकी प्राप्ति करै नहीं। यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है। श्लोक । "धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम् । तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा" । अर्थ यह । ईश्वर पुरुषोंका शीघ्रही धर्ममर्यादाका उल्लंघन देखणेविषे आवता है सो धर्ममर्यादाका उल्लंघन तिन तेजस्वी पुरुषोंकूं दोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं जैसे शुद्ध अशुद्ध सर्व पदार्थोंकूं भक्षण करणेहारा जो अग्नि है तिस अग्निकूं सो अशुद्ध वस्तुका भक्षण दोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं इति। तैसे इन भीष्मद्रोणादिक तेजस्वी पुरुषोंकूं ते पूर्वउक्त अनुचित कर्मदोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं ॥ शंका—हे अर्जुन यह भीष्मद्रोणादिक जबी अपणे अर्थके लोभकरिकै इस युद्धविषे प्रवृत्त होवैंगे तबी वेचा है अपणा आत्मा जिन्होंनैं ऐसे इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे सो पूर्व उक्त माहात्म्य किस प्रकार संभवैगा। यह वार्त्ता भीष्मपितामहनैं आपही युधिष्ठिरके प्रति कथन करी है। तहां

नोंकूं हनन करते नहीं । यातैं पूजाके योग्य भीष्मद्रोणादिक गुरुओंकूं तुम हनन करो या प्रकारका वचन कहणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है इति॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका— हे अर्जुन ! भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य इत्यादिकोंविषे जो पूज्यता है सा पूज्यता गुरुपणेकरिकै है ता गुरुपणेतैं विना तिन्हकी पूज्यताविषे दूसरा कोई कारण है नहीं सो गुरुपणा यद्यपि पूर्वकालविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंविषे रह्या था तथापि इस कालविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंकूं गुरुरूपकरिकै अंगीकार करणा तुम्हारेकूं उचित नहीं है काहेतैं धर्मशास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । "गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः । उत्पथं प्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते" अर्थ यह । जो गुरु अहंकारादिक दोषोंकरिकै उन्मत्तभावकूं प्राप्त भया है तथा जो गुरु शास्त्रविहित करणे योग्य अर्थकूं तथा शास्त्रनिषिद्ध अकरणेयोग्य अर्थकूं जाणता नहीं तथा जो गुरु शास्त्रनिषिद्ध मार्गविषे प्रवृत्त होवै है ऐसे गुरुका शिष्यनैं परित्यागही करणा इति । यह सर्व लक्षण इन भीष्मद्रोणाचार्यादिकोंविषे घटैं हैं काहेतैं यह भीष्मद्रोणादिक युद्धके गर्वकरिकै महान् उन्मत्तभावकूं प्राप्त हुए हैं । और इन भीष्मद्रोणादिकोंनैं कपट करिकै राज्यका ग्रहण करा है तथा अपणे शिष्योंके साथि द्रोह करा है यातैं यह भीष्मद्रोणादिक कार्यअकार्यके ज्ञानतैंभी रहित हैं या कारणतैंही शास्त्रनिषिद्ध मार्गविषे वर्त्तणेहारे हैं । ऐसे भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणाही श्रेष्ठ है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहै है ।

(मू. श्लो.) गुरूनहत्वा हि महानुभावाञ्श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ॥ हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुंजीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥ (पदच्छेदः) ॥ गुरून् । अहत्वा । हि । महानुभावान् । श्रेयः । भोक्तुं । भैक्ष्यम् । अपि । इह । लोके । हत्वा । अर्थकामान् । तु । गुरून् । इह । एव । भुंजीय । भोगान् । रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् जिस कारणतैं महानुभाव गुरुओंकूं न हनन करिकै इस लोकविषे भिक्षाअन्नकूं भोजन करणा भी श्रेष्ठ है इन अर्थकामवाले भी गुरुओंकूं हननं करिकै मैं इस लोकविषे ही रुधिरलिप्त विषयोंकूं भोगौंगा ॥ ५ ॥

टीका । हे भगवन् ! भीष्मद्रोणाचार्यादिक गुरुओंकूं न हनन करिकै हमारा परलोक तौ अवश्यकरिकै सिद्ध होवैगा । और इस लोकविषे तौ तिन भीष्मद्रोणादिक गुरुओंकूं न हनन करिकै राज्यतैं रहित हुए हम राजाओंकूं शास्त्रनिषिद्ध भिक्षाअन्नभी भोजन करणेकूं अत्यंत श्रेष्ठ है । परंतु तिन

टीका । हे भगवन् ! हमारे कुलविषे वृद्ध तथा गुणोंकरिकै वृद्ध जो यह भीष्मपितामह है तथा धनुर्विद्याका गुरु जो यह द्रोणाचार्य है यह दोनों अपणे पिताकी न्याईं पुष्प चंदन अक्षतादिकोंकरिके पूजन करणेयोग्य हैं । ऐसे भीष्मद्रोणादिक वृद्धोंके साथि क्रीडास्थानविषे आनंदकी प्राप्तिवा सतै लीलायुद्ध करणाभी हमारेकूं उचित नहीं है तौ इस रणभूमिविषे तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै तिन भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणा हमारेकूं किस प्रकार उचित होवैगा किंतु तिन भीष्मादिकोंका हनन करणा हमारेकूं उचित नहीं है । इहां यह तात्पर्य है । यह दुर्योधनादिक भीष्मपितामहकूं तथा द्रोणाचार्यकूं छोडिकरिके तौ हमारे साथि युद्ध करैंगे नहीं किंतु भीष्मद्रोणकूं सम्मुख करिकै हमारे साथि युद्ध करैंगे । तहां भीष्म द्रोणाचार्यके साथि युद्ध करणा धर्म तौ है नहीं काहेतैं वेदकरिकै विधान करा हुआ जो फलवान् अर्थ है ताका नाम धर्म है । या प्रकारका धर्मका लक्षण जैसे भीष्मद्रोणादिकोंके पूजनविषे घटे है तैसे तिन्होंके साथि युद्ध करणेविषे सो लक्षण नहीं यातैं सो युद्ध धर्मरूप नहीं है । शंका—हे अर्जुन जैसे वृद्धपुरुषोंके साथि युद्ध करणेका शास्त्रविषे विधान नहीं करा है यातैं ता युद्धविषे धर्मरूपता नहीं संभवती तैसे ता युद्धका शास्त्रविषे निषेधभी तौ नहीं करा है यातैं ता युद्धविषे अधर्मरूपताभी नहीं संभवती । शास्त्रकरिकै निषिद्धही अधर्म होवै है । समाधान—हे भगवन् शास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । “ गुरुं हुंकृत्य तुंकृत्य विप्रान्निर्जित्य वादतः । श्मशाने जायते वृक्षः कंकगृध्रोपसेवितः । ” अर्थ यह । जो पुरुष अपणे गुरुके प्रति हुंकारशब्द कहै है तथा तुंकारशब्द कहै है तथा साधुब्राह्मणोंकूं विवादतैं जय करै है सो पुरुष मरिकरिकै श्मशानभूमिविषे कंक गृध्र आदिक पक्षियोंकरिकै सेवित वृक्षशरीरकूं प्राप्त होवै है इति । इत्यादिक शास्त्रोंके वचनोंनैं शब्दमात्रकरिकैभी गुरुका द्रोह निषेध करा है । जबी शब्दमात्र करिके गुरुका द्रोहभी अधर्मरूप हुआ तबी तिन भीष्मद्रोणादिक गुरुओंके साथि तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै युद्ध करणा अधर्मरूप है । याके विषे क्या कहणा है । इहां (हे मधुसूदन हे अरिसूदन) यह दो संबोधन भगवान्के जो अर्जुननैं कहे हैं तिन दोनोंका अर्थ एकही है काहेतैं मधुनामा असुरकूं जो हनन करै है ताकूं मधुसूदन कहैं हैं । और शत्रुरूप अरियोंकूं जो हनन करै है ताकूं अरिसूदन कहै हैं यातैं एकवार कहैं हुए अर्थका पुनः कथन करणेविषे यद्यपि अर्जुनकूं पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै है तथापि सो अर्जुन तिस कालविषे शोककरिकै व्याकुल था यातैं ता अर्जुनकूं पूर्व उत्तर अर्थका स्मरण रह्या नहीं यातैं पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं स्वस्थचित्तवाले पुरुषविषेही सो पुनरुक्तिदोष दिया जावै है अथवा मधुसूदन अरिसूदन यादो संबोधनोंकरिकै अर्जुननैं भगवान्के प्रति यह अर्थ सूचन करा । हे भगवन् आपभी तौ मधुअसुरादिक शत्रुओंकूंही हनन करतेहो अपणे मि

टीका । हे पृथाके पुत्र ओज तेज आदिकोंका भंगरूप जो अधैर्य है ता अधैर्यरूप जो क्लीबभाव है ता क्लीबभावकूं तूं मत प्राप्त होउ । इहां (हे पार्थ) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यह अर्थ सूचन करा पृथामातानैं देवताका आराधन करिकै ता देवताके प्रसादतैं तुम्हारेकूं पाया था । यातैं तुम्हारेविषे बलकी अधिकता अत्यंत प्रसिद्ध है ऐसा पृथाका पुत्र तूं इस क्लीबभावके योग्य नहीं है । अब अर्जुनपणेकरिकैभी ता क्लीबभावकी अयोग्यता निरूपण करैं हैं । (नैतदिति) साक्षात् महेश्वरके साथिभी युद्ध करणेहारा तथा सर्व लोकविषे प्रसिद्ध महान् प्रभाववाला ऐसा जो तूं अर्जुन है तिस तुम्हारेविषे यह अधैर्यरूप क्लीबभाव कदाचित्भी बनता नहीं । शंका—हे भगवन् ! (न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः) अर्थ यह । मेरा मन भ्रमण करता है यातैं मैं अपणे शरीरके स्थित करणेविषेभी समर्थ नहीं हूं । यह अपणा वृत्तांत पूर्वही मैंनैं आपके प्रति कथन करा था यातैं अबी हमारेकूं आप वारंवार किस वासतै कहते हो । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं (क्षुद्रम् इति) हे अर्जुन जिसकूं हृदयका दौर्बल्य कहैं हैं ऐसा जो मनका भ्रमणादिरूप अधैर्य है सो अधैर्य स्वाश्रयपुरुषके क्षुद्रपणेका कारण होणेतैं क्षुद्ररूप है अथवा सो भ्रमणादिरूप अधैर्य सुगमही निवृत्त करा जावै है यातैं क्षुद्ररूप है । ऐसे क्षुद्र अधैर्यकूं विचारके बलतैं शीघ्रही परित्याग करिकै इस स्वधर्मरूप युद्धके करणेवासतै तुम सावधान होवो । इहां (हे परंतप) या अर्जुनके संबोधन कहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । " परं शत्रुं तापयतीति परंतपः " ॥ अर्थ यह । अपणे शत्रुओंकूं जो संतापकी प्राप्ति करै ताका नाम परंतप है ऐसा परंतप होइकैभी अत्यंत क्षुद्र अधैर्यरूप शत्रुका नाश नहीं करणा यह बहुत आश्चर्यकी वार्त्ता है यातैं अपणे परंतप नामके सार्थक करणेवासतै तुम्हारेकूं ता अधैर्यरूप शत्रुका नाश अवश्य करणे योग्य है इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन्! इस युद्धका जो मैं परित्याग करता हूं सो कोई शोकमोहादिकोंके वशतैं नहीं करता हूं किंतु इस युद्धविषे धर्मरूपता है नहीं उलटा अधर्मरूपता है या कारणतैं मैं इस युद्धका परित्याग करता हूं । या प्रकारके अर्जुनके अभिप्रायकूं संजय कथन करै है ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ॥ इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४ ॥ (पदच्छेदः)

कथं । भीष्मम् । अहं । संख्ये । द्रोणं । च । मधुसूदन । इषुभिः । प्रतियोत्स्यामि । पूजार्हौ । अरिसूदन ॥ ४ ॥ (पदार्थः)

हे मधुसूदन हे अरिसूदन इस रणभूमिविषे मैं अर्जुन पूजाकेयोग्य भीष्मकूं तथा द्रोणकूं बाणोंकरिकै किस प्रकार हननं करौंगा किंतु नहीं हनन करौंगा ॥ ४ ॥

श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया हे अर्जुन स्नेहरूप कृपा तथा पूर्व उक्त विषाद तथा अश्रुपात यह तीनों हैं कारण जिसके तथा शिष्ट पुरुषोंकरिकै निंदित होणेतैं अत्यंत मलिन है स्वरूप जिसका ऐसा जो यह युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल है सो कश्मल इस युद्धभूमिविषे सर्व क्षत्रियोंतैं श्रेष्ठ तुम्हारेकूं किस हेतुतैं प्राप्त भया है । तात्पर्य यह । सो युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल तुम्हारेकूं मोक्षकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है । अथवा स्वर्गकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है । अथवा कीर्त्तिकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है इति। अब या तीनों हेतुओंकूं यथाक्रमतैं अनार्यजुष्टं, अस्वर्ग्यं, अकीर्त्तिकरं, या तीन विशेषणोंकरिकै श्रीभगवान् निषेध करै है । (अनार्यजुष्टं) इत्यादिक अर्धश्लोककरिकै । हे अर्जुन अपणे वर्णआश्रमके धर्मोंकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा मोक्षकी इच्छा करणेहारे जो अशुद्ध अंतःकरणवाले मुमुक्षु जन हैं ऐसे मुमुक्षु जनोंनैं तो यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल कदाचित्भी सेवन करणेयोग्य नहीं है। और सर्व कर्मोंके संन्यासका अधिकारी तौ शुद्ध अंतःकरणवालाही होवै है। यह वार्त्ता आगे कथन करैंगे यातैं मोक्षकी इच्छारूप हेतुतैं ता कश्मलकी प्राप्ति संभवै नहीं । और यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारे धर्मका विरोधी है यातैं स्वर्गकी इच्छावान् पुरुषनैंभी सो कश्मल सेवन करणेयोग्य नहीं है । और सो कश्मल इस लोकविषे कीर्त्तिका अभाव करणेहारा है अथवा अपकीर्त्ति करणेहारा है यातैं इस लोकके कीर्त्तिकी इच्छावान् पुरुषोंनैंभी सो कश्मल सेवन करणेयोग्य नहीं है यातैं यह अर्थ सिद्ध भया मोक्षकी इच्छावान् पुरुषोंनैं तथा स्वर्गकी इच्छावान् पुरुषोंनैं तथा कीर्त्तिकी इच्छावान् पुरुषोंनैं यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल सर्वथा परित्याग करणेयोग्य है । और तूं तौ मोक्षकी तथा स्वर्गकी तथा कीर्त्तिकी इच्छावान् हुआभी इस कश्मलकूं सेवन करता है । यातैं यह तुम्हारा बहुत अनुचित व्यवहार है इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका—हे भगवन् । अपणे बांधवोंकी सेनाके देखणेकरिकै उत्पन्न भया जो अधैर्य है ता अधैर्यके वशतैं धनुषमात्रकूंभी धारण करणेविषे असमर्थ जो मैं हूं तिस हमारेकूं अबी क्या करणेयोग्य है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहैं हैं।

(मू. श्लो.) क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ॥ क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥ (पदच्छेदः) क्लैब्यं । मास्म गमः । पार्थ । न । एतत् । त्वयि । उपपद्यते । क्षुद्रं । हृदयदौर्बल्यं । त्यक्त्वा । उत्तिष्ठ । परंतप ॥३॥ (पदार्थः) हे पृथाके पुत्र तूं क्लीबभावकूं मत प्राप्त होउ तैं अर्जुनविषे यह क्लीबभाव नहीं बनि सकता है परंतप या क्षुद्र हृदयके दौर्बल्यकूं परित्याग करिके तूं युद्धवासते उठि खड़ा होउ ॥ ३ ॥

युक्तियोंसहित यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया। ता अर्जुनकी सो भगवान् उपेक्षा नहीं करता भया । इहां संजयनैं कृष्णभगवान्का जो (मधुसूदनः) यह नाम कथन करा है ताकरिकै संजयनैं धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ सूचन करा "मध्वाख्यम् असुरं सूदयतीति मधुसूदनः" । अर्थ यह । मधु नामा असुरकूं जो नाश करै है ताकूं मधुसूदन कहैं हैं। ऐसा दुष्टोंके संहार करणेहारा कृष्णभगवान् अपणे स्वभावके अनुसार ता अर्जुनके प्रतिभी तुम्हारे दुर्योधनादिक दुष्ट पुत्रोंके हनन करणेकाही उपदेश करैगा। अथवा अपणे मधुसूदन नामके सार्थक करणेवासतै सो कृष्णभगवान् अर्जुनकूं निमित्तमात्र करिकै आपही तुम्हारे दुष्ट पुत्रोंकूं हनन करैगा। यातैं तुमनैं अपणे पुत्रोंके जयकी आशा कदाचित्भी नहीं करणी इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ अब ता कृष्णभगवान्के वचनका दो श्लोकोंकरिकै कथन करैं हैं।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्॥ अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥ (पदच्छेदः) कुतः। त्वा। कश्मलम्। इदम्। विषमे। समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टम्। अस्वर्ग्यम्। अकीर्तिकरम्। अर्जुन ॥२॥ (पदार्थः) हे अर्जुन। इस भययुक्त स्थानविषे तुम्हारेकूं यह कश्मल किस हेतुतैं प्राप्त भया है कैसा है सो कश्मल श्रेष्ठ पुरुषोंकरिकै असेवित है तथा स्वर्गका विरोधी है तथा अकीर्ति करणेहारा है ॥ २ ॥

टीका। (श्रीभगवानुवाच) या वचनविषे स्थित जो भगवान्पद है ता भगवान्पदका शास्त्रविषे यह अर्थ कथन करा है । श्लोक। "ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इतींगना" ॥ अर्थ यह। संपूर्ण जो ऐश्वर्य है १ तथा संपूर्ण जो धर्म है २ तथा संपूर्ण जो यश है ३ तथा संपूर्ण जो श्री है ४ तथा संपूर्ण जो वैराग्य है ५ तथा संपूर्ण जो ज्ञान है ६ या षटोंका नाम भग है इति । ते ऐश्वर्यादिक षट्भग प्रतिबंधतैं रहित हुए नित्यही जिसविषे रहैं ताका नाम भगवान् है। अथवा भगवान्शब्दका यह अर्थ है । श्लोक । "उत्पत्तिं च विनाशं च भूतानामागतिं गतिम्। वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति" । अर्थ यह। जो सर्वज्ञ पुरुष सर्व भूतोंके उत्पत्तिकूं तथा ता उत्पत्तिके कारणकूं जानै है। तथा तिन सर्व भूतोंके नाशकूं तथा ता नाशके कारणकूं जानै है। तथा जो सर्वज्ञ पुरुष सर्व भूतोंके संपदारूप आगतिकूं तथा सर्व भूतोंके आपदारूप गतिकूं जानै है तथा जो सर्वज्ञ पुरुष विद्याकूं तथा अविद्याकूं जानै है सो सर्वज्ञ पुरुष भगवान् या नामकरिकै कहणेयोग्य है इति। ऐसा

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ अथ द्वितीयाध्यायप्रारंभः ॥ तहां सर्व प्राणियोंकी अहिंसा तथा भिक्षा अन्नका भोजन यही हमारा परम धर्म है या प्रकारकी बुद्धि करिकै अर्जुनकी युद्धतैं विमुखताकूं श्रवण करिकै अपणे दुर्योधनादिक पुत्रोंके राज्यकी अचलताकूं निश्चय करिकै स्वस्थ हुआ है चित्त जिसका ऐसा जो धृतराष्ट्र है ता धृतराष्ट्रकी हर्षकरिकै उत्पन्न भई जो आकांक्षा (तिसतैं अनंतर क्या वृत्तांत होता भया या प्रकारकी) है ता आकांक्षाके निवृत्त करणेकी इच्छावान् सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया । यह वार्त्ता वैशंपायन जनमेजयके प्रति कहै है ।

(मू. श्लो.) संजय उवाच ॥ तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ॥ विषीदंतमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥ (पदच्छेदः) तं । तथा । कृपया । आविष्टम् । अश्रुपूर्णाकुलेक्षणं । विषीदंतम् । इदं । वाक्यम् । उवाच । मधुसूदनः ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र पूर्व उक्त कृपानैं व्याप्त करा हुआ तथा अश्रुकरिकै पूर्ण तथा आकुल हैं नेत्र जिसके तथा विषादकूं प्राप्त हुआ ऐसा जो अर्जुन है ताके प्रति श्रीकृष्णभगवान् यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ १ ॥

टीका । यह भीष्म दुर्योधनादिक हमारे संबंधी हैं या प्रकारका व्यामोह है कारण जिसविषे ऐसा जो स्नेहविशेष है ता स्नेहका नाम कृपा है । ता कृपानैं व्याप्त करा हुआ जो अर्जुन है । इहां (कृपयाविष्टं) इतने कहणेकरिकै अर्जुन विषे व्याप्तिरूप क्रियाका कर्मपणा कथन करा । और ता स्नेहरूप कृपाविषे ता व्याप्तिरूप क्रियाका कर्त्तापणा कथन करा । ता कहणेकरिकै ता कृपाविषे आगंतुकपणा निवृत्त करा । ऐसी स्वभावसिद्ध कृपानैं सो अर्जुन व्याप्त करा है । या कारणतैंही सो अर्जुन विषादकूं प्राप्त हुआ है तहां स्नेहके विषयरूप जो अपणे बांधव हैं । तिन बांधवोंके नाशकी शंकाहै कारण जिसका ऐसा जो शोकरूप चित्तका व्याकुलीभाव है ताका नाम विषाद है । इहां (विषीदंतं) या शब्दकरिकै ता विषादविषे प्राप्तिरूप क्रियाका कर्मपणा कथन करा । और अर्जुनविषे ता प्राप्तिरूप क्रियाका कर्त्तापणा कथन करा । ता कहणेकरिकै तिस विषादविषे आगंतुकपणा सूचन करा । कदाचित् उत्पन्न होणेहारे पदार्थकूं आगंतुक कहैं हैं ऐसे आगंतुक विषादके वशतैं अश्रुरूप जलकरिकै पूर्ण हुए हैं नेत्र जिसके तथा वस्तुके दर्शनकी असामर्थ्यरूप आकुलताकरिकै युक्त हैं नेत्र जिसके ऐसा जो अर्जुन है ता अर्जुनके प्रति सो मधुसूदनभगवान् अनेक प्रकारकी

प्रकारका अर्थ करणा । सो मरण हमोरेकूं क्षेमकी प्राप्तिवासतैंही होवैगा काहेतैं शास्त्रविषे क्षेमका यह स्वरूप कथन करा है । "अप्राप्तप्रापणं योगः क्षेमस्तु स्थितरक्षणम्" । अर्थ यह । अप्राप्तवस्तुकी जो प्राप्ति है ताका नाम योग है । और पूर्वस्थित वस्तुका जो रक्षण है ताका नाम क्षेम है इति । और क्षेमतैंभी जो अधिक क्षेम होवै ताका नाम क्षेमतर है । सो इहां प्रसंगविषे यह क्षेमतर है । अपणे कुलके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो दोष है तथा ता दोषकरिकै प्राप्त होणेहारी जो नरककी प्राप्ति है तथा इस लोकविषे प्राप्त होणेहारी जो अपकीर्ति है इत्यादिक सर्व अनर्थोंकी निवृत्तिपूर्वक जो पूर्वकृत पुण्यकर्मोंके नाशका अभाव है सोईही क्षेमतर है सो क्षेमतर हमोरेकूं इस मरणतैंही प्राप्त होवैगा । यातैं इन बांधवोंके साथि युद्ध करणेतैं हमारा मरणही श्रेष्ठ है इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥
तिसतैं अनंतर क्या वृत्तांत होता भया ऐसी धृतराष्ट्रकी शंकाकरिकै संजय कहे है ।

(मू. श्लो.) संजय उवाच ॥ एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ॥ विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥
इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
(पदच्छेदः) एवम् । उक्त्वा । अर्जुनः । संख्ये । रथोपस्थे । उपाविशत् । विसृज्य । सशरम् । चापम् । शोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥
(पदार्थः) हे धृतराष्ट्र ! शोककरिकै पीडित है मन जिसका ऐसा अर्जुन संग्रामविषे इस प्रकारका वचन कहिकरिकै शरसहित धनुषकूं परित्याग करिकै रथके ऊपरि बैठता भया ॥ ४७ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! अपणे बांधवोंके विनाशरूप निमित्ततैं उत्पन्न भया जो शोक है ता शोककरिकै पीडित है मन जिसका ऐसा सो अर्जुन ता संग्रामविषे कृष्णभगवान्‌केप्रति ता पूर्व उक्त वचनकूं कहिकरिकै तथा शरसहित धनुषका परित्याग करिकै ता रथके ऊपरि स्थित होता भया इति ॥ ४७ ॥ इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥

तथापि भीमसेनादिकोंकं ता युद्ध करणेकी बहुत उत्कट इच्छा है। यातैं बांधवोंका नाश तौ अवश्यकरिकै होवैगा । पुनः तुम्हारेकूं क्या कार्य करणे योग्य हैं । ऐसी भगवान्‌की शंकाकरिकै अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ॥ धार्तराष्ट्रा रणेहन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ ४६ ॥ (पदच्छेदः) यदि । मां अप्रतीकारम् । अशस्त्रं । शस्त्रपाणयः । धार्तराष्ट्राः । रणे । हन्युः । तत् । मे । क्षेमतरं । भवेत् ॥ ४६ ॥ (पदार्थः) जबी प्रतीकारतैं रहित तथा शस्त्रोंतैं रहित हमारेकूं यहं शस्त्रोंवाले धृतराष्ट्रके पुत्रादिक इस युद्धभूमिविषे हनन करैंगे सो हनन हमारा अत्यंत क्षेमरूप होवैगा ॥ ४६ ॥

टीका । हे भगवन् ! अपणे प्राणोंकी रक्षावासतै करेहुएकी जो प्रतिक्रिया है ताका नाम प्रतीकार है । जैसे अपणे प्राणोंकी रक्षा करणेवासतै ताडन करणेहारे पुरुषकूं जो ताडन करणा है ताका नाम प्रतीकार है । ता प्रतीकारतैं रहितका नाम अप्रतीकार है । अथवा इन बांधवोंकूं मैं हनन करौंगा या प्रकारके निश्चयमात्रकरिकै प्राप्त भया जो पाप है ता पापकी निवृत्ति करणेहारा जो शरीरके नाशतैं विना अन्य प्रायश्चित्त है ता प्रायश्चित्तका नाम प्रतीकार है ता प्रतीकारतैं जो रहित होवै ताका नाम अप्रतीकार है ऐसा अप्रतीकार जो मैं हूं या कारणतैंही मैं शस्त्रों तैं रहित हूं । ऐसे प्रतीकारतैं रहित तथा शस्त्रों तैं रहित मेरेकूं जो कदाचित् शस्त्र हैं हाथविषे जिनोंके ऐसे यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्र इस युद्धभूमिविषे हनन करैंगे तौ सो हमारा हनन हमारा अत्यंत हितरूप होवैगा । काहेतैं "अहिंसा परमो धर्मः" इत्यादिक वचनोंकरिकै कथन करा जो सर्व भूतप्राणियोंकी अहिंसारूप धर्म है सो अहिंसारूप धर्म अपणे प्राणोंतैंभी उत्कृष्ट है। काहेतैं इन प्राणोंके धारणतैं अनेक प्रकारके पापकी उत्पत्ति होवै है और ता अहिंसाधर्मतैं कोई पाप उत्पन्न होवै नहीं उलटा महान् पुण्य उत्पन्न होवै है। यातैं इस जीवनकी अपेक्षाकरिकै सो हमारा मरणही अत्यंत हितरूप है और अपणे बांधवोंके मारणेके संकल्पकरिकै उत्पन्न भया जो पाप है ता पापकी निवृत्ति करणेहारा दूसरा कोई प्रायश्चित्त है नहीं । किंतु यह हमारा मरणही ता पापके निवृत्तिका प्रायश्चित्त है। या कारणतैंभी यह हमारा मरणही हमारा अत्यंत हितरूप है। इहां किसी पुस्तकविषे (तन्मे प्रियतरं भवेत्) या प्रकारका पाठभी होवै है ता पाठकाभी यह पूर्व उक्त अर्थही जानि लेना। अथवा (तन्मे क्षेमतरं भवेत्) या वचनका इस

अपश्चात्तापिनः पापान्निरयान् यांति दारुणान् " ॥ अर्थ यह । जे पुरुष पापोंविषे प्रीतिवाले हैं तथा ता पापकी निवृत्तिवासतै प्रायश्चित्तकूं करते नहीं तथा पश्चात्तापकूंभी नहीं करते ते पुरुष ता पापके वशतैं दारुण नरकोंकूं प्राप्त होवैं हैं इति । इत्यादिक अनेक वचन पापी पुरुषोंकूं नरककी प्राप्ति कथन करे हैं । इहां (नरके नियतम्) या वचनविषे ककारके उत्तर अकारका लोप मानिके अनियतं ऐसा पदच्छेद करा है । ता अनियतपदका पूर्व अर्थ कथन करा । और जो अकारका लोप तहां न अंगीकार करिये तौ नियतं या प्रकारका पदच्छेद करणा । ता नियतपदका अवश्यकरिकै यह अर्थ करणा । क्या ऐसे मनुष्योंकूं नरकविषे अवश्यकरिकै निवास होवै है इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ तहां अपणे बांधवोंकी हिंसाविषे है परिअवसान जिसका ऐसा जो युद्ध करणेका निश्चय है सो निश्चयभी सर्व प्रकारतैं अत्यंत पापिष्ठ है तौ यह युद्धरूप कर्म अत्यंत पापिष्ठ है याकेविषे क्या कहणा है । या अर्थके कहणेवासतै ता युद्धके निश्चय करणेकरिकै अपणेकं धिक्कार करता हुआ सो अर्जुन कहै है ।

(मू. श्लो.) अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ॥ यद्राज्यसुखलोभेन हंतुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ (पदच्छेदः) अहो । बत । महत्पापं । कर्तुं । व्यवसिताः । वयं । यत् । राज्यसुखलोभेन । हंतुं । स्वजनम् । उद्यताः ॥ ४५ ॥ (पदार्थः) बडा आश्चर्य है बडा खेद है जो हम महान् पापकूं करणे वासतै निश्चयवाले हुए हैं जो हम राज्यसुखके लोभकरिकै अपणे बांधवोंकूं हनन करणेवासतै उद्यमवाले हुए हैं सोईही महान् पाप है ॥ ४५ ॥

टीका । हे भगवन् ! यह हमारेकूं बडा आश्चर्य होता है तथा बडा खेद होता है । जो हम विचारवान् होकैभी इसमहान् पापके करणेवासतै प्रयत्नवाले हुए हैं । सो कौन पाप है जिसके करणेवासतै तुम प्रयत्नवाले हुए हो । ऐसी भगवान्की शंकाकरिकै अर्जुन कहै है । (यदिति) राज्यकी प्राप्तिकरिकै प्राप्त होणेहारा जो क्षणभंगुर विषयसुख है ता विषयसुखविषे जो लंपटतारूप लोभ है ता लोभकरिकै जो हम अपणे भ्रातापुत्रादिक बांधवोंकूं तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै हनन करणेवासतै उद्यमवाले हुए हैं सोईही महान् पाप है इसतैं परे दूसरा कोई पाप है नहीं । तात्पर्य यह । जो तुम्हारी ऐसी बुद्धि है तौ युद्धका अभिनिवेश करिकै तूं इहां किसवासतै आया है या प्रकारका वचन आपनैं कहणा नहीं । काहेतैं विचारतैं विनाही कार्यकूं करणेहारा जो मैं हूं तिस हमने यह बहुत उद्धतपणा करा है इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ शंका—हे अर्जुन ! तुम्हारेकूं यद्यपि युद्धादिकोंतैं वैराग्य हुआ है

करणेहारे पुरुषोंके पितर पिंडादिक क्रियातैं रहित होइके अवश्य नरकविषे पड़ैं हैं । यह यद्यपितैं आदि लेके सर्व अर्थ (पतंति पितरो हि एषाम्) या वचनविषे स्थित हि, या शब्दकरिकै अर्जुननैं सूचन करा इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ॥ उत्साद्यंते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥ (पदच्छेदः) दोषैः । एतैः । कुलघ्नानाम् । वर्णसंकरकारकैः । उत्साद्यंते । जातिधर्माः । कुलधर्माः । च । शाश्वताः ॥ ४३ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् कुलके हनन करणेहारे पुरुषोंके वर्णसंकरके करणेहारे इनै दोषों नैं परंपरातैं प्राप्त जातिके धर्म तथा कुलके धर्म नाश करते हैं ॥ ४३ ॥

टीका । हे भगवन् ! जे पुरुष यह कार्य हमारेकूं करणेयोग्य है तथा यह कार्य हमारेकूं नहीं करणे योग्य है या प्रकारके विचारका परित्याग करिकै कामक्रोधलोभादिकोंके वश हुए कुलधर्मोंके प्रवर्तक पुरुषोंका हनन करते हैं । तिन पुरुषोंका नाम कुलघ्न है तिन कुलघ्न पुरुषोंके वर्णसंकरकी उत्पत्ति करणेहारे जो पूर्व उक्त दोष हैं तिन दोषोंनैं श्रुतिस्मृतिमूलक तथा परंपरातैं प्राप्त जो क्षत्रियत्वादिक जातिप्रयुक्त धर्म हैं तथा कुलके जो असाधारण धर्म हैं ते सर्व धर्म नाश करते हैं इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दनन ॥ नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ (पदच्छेदः) उत्सन्नकुलधर्माणां । मनुष्याणां । जनार्दन । नरके । अनियतं । वासः । भवति । इति । अनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन नष्ट करे हैं कुल जातिआदिकोंके धर्म जिनोंनैं ऐसे मनुष्योंका नरकविषे अवधितैं रहित निवास होवै ह इसप्रकार हम आचार्योंके मुखतैं श्रवण करते भये हैं ॥ ४४ ॥

टीका । हे जनार्दन ! जे पुरुष लोभके वश होइके अपणे कुलका हनन करिकै अपणे कुलके धर्मोंकूं तथा जातिके धर्मोंकूं नष्ट करैं हैं तिन पुरुषोंका युगमन्वंतरादिक अवधितैं रहित रौरवादिक नरकोंविषे निवास होवै है । यह वार्त्ता हम केवल अपणी बुद्धिकी कल्पनातैं नहीं कहते किंतु पूर्व आचार्योंके मुखतैं तथा महान् ऋषियोंके मुखतैं यह वार्त्ता हम श्रवण करते भये हैं । तहां श्लोक ॥ " प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः पापेष्वभिरता नराः ।

वर्णसंकर केवल कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके नरकवासतै नहीं होवै है । किंतु ता वर्णसंकरकरिकै तिनोंके पितरोंकूंभी नरककी प्राप्ति होवै है । या अ
र्थकूं कहै हैं । (पतंतीति) अपणे पितरोंवासतै पिंडक्रियाके करणेहारे तथा जलक्रियाके करणेहारे जो पुत्र हैं ते पुत्र पीछे रहे नहीं यातैं निवृत्त
होइ गई हैं पिंडक्रिया तथा जलक्रिया जिनोंकी ऐसे जो कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके पितर हैं ते पितर नरककी प्राप्तिवासतै स्वर्गतैं नीचे पडैं
हैं । इहां यद्यपि इतिहासपुराणादिकोंविषे यह वार्त्ता कथन करी है । एक कालविषे परशुराम सर्व क्षत्रियोंकूं हनन करता भया । तिसतैं अनंतर
तिन क्षत्रियोंकी स्त्रियां ब्राह्मणोंतैं पुत्रोंकूं उत्पन्न करती भई । जो कदाचित् अन्य पुरुषतैं उत्पन्न हुए पुत्रकी दी हुई पिंडक्रिया तथा जलक्रिया पि
ताकूं नहीं प्राप्त होती होवै तौ ते क्षत्रिय राजावोंकी स्त्रियां ब्राह्मणोंतैं पुत्रोंकूं किसवासतै उत्पन्न करती भई हैं । यातैं यह जान्या जावै है जैसे स्त्री
रूप क्षेत्रविषे वीर्यरूप बीजकी प्राप्ति करणेहारे बीजपति पुरुषकूं ता पुत्रके दिये हुए पिंडादिक प्राप्त होवैं हैं तैसे ता स्त्रीरूप क्षेत्रके पति पुरुषकूंभी ता
पुत्रके दिये हुए पिंडादिक प्राप्त होवैं हैं तथापि श्रुतिविषे बीजपति पुरुषकूंही ता पुत्रके दिये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्ति कथन करी है । क्षेत्रपति पुरु
षकूं ता पुत्रके दिये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्ति कथन करी नहीं । तहां श्रुति । "न शेषो अग्ने अन्यजातमस्ति" ॥ अर्थ यह । हे अग्नि अपणी स्त्रीविषे
अन्य पुरुषतैं उत्पन्न भया जो पुत्र है सो पुत्र होवै नहीं इति । किंवा यह वार्त्ता यास्कमुनिनैंभी कथन करी है । "अन्योदर्यो मनसापि न मंत
व्यो ममायं पुत्रः" इति । अर्थ यह । अपणी स्त्रीविषे अन्य पुरुषतैं उत्पन्न भया जो पुत्र है ता पुत्रकूं या क्षेत्रपति पितानैं यह हमाराही पुत्र है
या प्रकार मनकरिकैभी नहीं जानणा इति । किंवा श्रुतिविषे अपणे वर्त्तमान पिताका संशयभी कथन करा है । तहां श्रुति । "ये यजामहे इति यो
हमस्मिससन्यजे" इति । अर्थ यह । जे हम हैं ते हम यजन करते हैं । हम ब्राह्मण हैं अथवा अब्राह्मण हैं यह वार्त्ता हम जानते नहीं । काहेतैं लो
कप्रसिद्ध वर्त्तमान जो यह पिता है सो पिता इसी पितातैं मैं उत्पन्न भया हूं अथवा किसी अन्य पितातैं मैं उत्पन्न भया हूं या प्रकारके संशयक
रिकै ग्रस्त हैं यातैं यहही हमारा पिता है या प्रकारका निश्चय संभवे नहीं । यातैं जे हम हैं ते हम यजन करते हैं इति । इत्यादिक श्रुतिवच
नोंकरिकै बीजपति पिताकूंही पिंडादिकोंकी प्राप्ति सिद्ध होवै है क्षेत्रपति पिताकूं पिंडादिकोंकी प्राप्ति सिद्ध होवै नहीं । और स्त्रीरूप क्षेत्रविषे
अन्य पुरुषतैं पुत्रकी उत्पत्तिकूं कथन करणेहारे जो स्मृति आदिक शास्त्रोंके वचन हैं तिन वचनोंका इस लोकविषे वंशके स्थापन करणेविषे तात्पर्य
है । कोई क्षेत्रपति पुरुषकूं ता पुत्रके दिये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्तिविषे तिन वचनोंका तात्पर्य नहीं है । यातैं वर्णसंकरपुत्रोंके उत्पन्न हुए तैं कुलनाश

टीका। अपणे वंशपरंपराकरिके प्राप्त तथा अपणे कुलके अनुसार तथा जातिके अनुसार करणेयोग्य ऐसे जो अग्निहोत्रादिक धर्म हैं तिन धर्मोंकी प्रवृत्ति करणेहारे जो वृद्ध पुरुष हैं, तिन वृद्ध पुरुषोंका जबी नाश होवै है तबी तिन कर्त्ता पुरुषोंके अभाव होणेतैं ते अग्निहोत्रादिक सर्व कुलके धर्म नाशकूं प्राप्त होवैं हैं। और तिन वृद्ध पुरुषोंके नाशकरिके तिन सर्व धर्मोंके नाश हुएतैं अनंतर शिक्षा करणेहारे वृद्ध पुरुषोंके अभावतैं बाकी रहे हुए स्त्रीबालकादिरूप कुलकूं अनाचाररूप अधर्म अपणे वश करि लेवै है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ किंच।

(मू. श्लो.) अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंति कुलस्त्रियः ॥ स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ (पदच्छेदः) अधर्माभिभवात्। कृष्ण। प्रदुष्यंति। कुलस्त्रियः। स्त्रीषु। दुष्टासु। वार्ष्णेय। जायते। वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ (पदार्थः) हे कृष्ण ता अधर्मके वशपणेतैं कुलीन सर्व स्त्रियां व्यभिचारिणी होवैं हैं हे वार्ष्णेय तिन व्यभिचारिणी स्त्रियोंविषे वर्णसंकरपुत्र उत्पन्न होवैं हैं ॥ ४१ ॥

टीका। हे कृष्ण! ता अधर्मकी वृद्धितैं अनंतर हमारे पतियोंनें धर्मका उल्लंघन करिके जो कुलका नाश करा है तौ हमारेकूं पतिव्रताधर्मका उल्लंघन करिके व्यभिचार करणेविषे कौन दोष होवैगा। या प्रकारकी कुतर्ककरिके युक्त हुई ते कुलकी स्त्रियां व्यभिचारकर्मविषे प्रवृत्त होवैं हैं। अथवा धर्मशास्त्रविषे पतिके धर्म अधर्मका फल स्त्रीकूंभी कथन करा है। यातैं कुलके नाश करणेकरिके पापकूं प्राप्त हुए जो पति हैं तिन पतित पतियोंके संबंधतैं तिन स्त्रियोंकी व्यभिचारकर्मविषे प्रवृत्ति होवै है। तिन व्यभिचारिणी स्त्रियोंविषे ऊंच जातिवाले पुरुषोंके संबंधतैं अथवा नीच जातिवाले पुरुषोंके संबंधतैं वर्णसंकरपुत्र उत्पन्न होवैं हैं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ किंच।

(मू. श्लो.) संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ॥ पतंति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ (पदच्छेदः) संकरः। नरकाय। एव। कुलघ्नानां। कुलस्य। च। पतंति। पितरः। हि। एषां। लुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ (पदार्थः) किंच कुलका संकर कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके नरकवासतै ही होवै है तथा इन कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके पितरभी पिंडजलक्रियातें रहित हुए नरकविषे पडैं हैं ॥ ४२ ॥

टीका। हे भगवन्! कुलविषे उत्पन्न भया जो वर्णसंकर है सो वर्णसंकर कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंकूं नरककी प्राप्तिवासतैही होवै है। किंवा सो

होवे है यातें यह जान्या जावै है। श्रेयसाधनताज्ञानही पुरुषोंका प्रवर्त्तक है और जिसके साथि कदाचित्भी अश्रेयका संबंध नहीं होवे ताका नाम श्रेय है। जो ऐसा नहीं अंगीकार करिये तौ शत्रुके मारणे वासतै करा जो श्येनयज्ञ है ता श्येनयज्ञकूंभी धर्मरूपता होनी चाहिये। काहेतें शत्रुके मरणरूप श्रेयकी साधनता ता श्येनयज्ञविषेभी है परंतु सो शत्रुका मरणरूप श्रेय अश्रेयका असंबंधी नहीं है। किंतु श्येनयज्ञकरिके शत्रुकूं मारनेहारे पुरुषकूं नरकरूप अश्रेयकी प्राप्ति होवै है। यातें सो शत्रुका मरणरूप श्रेय नरकरूप अश्रेयके संबंधवालाही है। यातें ता श्येनयज्ञविषे धर्मरूपता संभवे नहीं। यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कही है। तहां श्लोक। "फलतोपि च यत्कर्म नानर्थेनानुबध्यते। केवलप्रीतिहेतुत्वात् तद्धर्म इति कथ्यते"। अर्थ यह। जो कर्म अपणे फलकी प्राप्तितैंभी अनर्थके साथि संबंधवाला नहीं होवै किंतु केवल सुखकाही हेतु होवै ता कर्मकूं धर्म या नामकरिकै कथन करैं हैं इति। यातें जैसे श्येनयज्ञ यद्यपि "श्येनेनाभिचरन् यजेत" इत्यादिक शास्त्रकरिकै विधान करा है। तथापि ता श्येनका शत्रुका मरणरूप फल नरकरूप अश्रेयके संबंधवाला है यातें श्रेष्ठ पुरुषोंकी ता श्येनयज्ञविषे प्रवृत्ति होवै नहीं। तैसे यह युद्धभी "आहूतो न निवर्त्तेत" इत्यादिक शास्त्रके वचनोंकरिकै यद्यपि विधान करा है तथापि ता युद्धके विजयराज्यादिक फल "स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनम्" इत्यादिक वचनोंकरिकै कथन करा जो कुलके नाशतैं पाप है ता पापरूप अश्रेयके संबंधवालेही हैं। यातें ते विजयराज्यादिक फल श्रेयरूप नहीं हैं। ऐसे विजयराज्यादिकोंकी प्राप्तिवासतै हमारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा योग्य नहीं है इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ तहां युद्धके फलरूप जो विजयराज्यादिक हैं ते अश्रेयरूप होणेतें हमारी इच्छाके विषय नहीं हैं। यातें तिन विजयराज्यादिकोंकी प्राप्तिवासतै हमारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा योग्य नहीं है। यह अर्थ पूर्व श्लोकविषे कथन करा। अब तिसी अर्थकूं पुनः दृढ करणेवासतै सो अर्जुन तिन विजयराज्यादिकोंविषे अनर्थका संबंधीपणा कथन करिकै अश्रेयरूपता वर्णन करै है पंच श्लोकोंकरिकै।

(मू. श्लो.) कुलक्षये प्रणश्यंति कुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ ४० ॥ (पदच्छेदः) कुलक्षये। प्रणश्यंति। कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे। नष्टे। कुलं। कृत्स्नं। अधर्मः। अभिभवति। उत ॥ ४० ॥ (पदार्थः) हे भगवन्! कुलके नाश हुए परंपरासैं प्राप्त कुलके सर्व धर्म नाशकूं प्राप्त होवैं हैं। और धर्मके नाश हुए बाकी रहे सर्व हीं कुलकूं अधर्म अपणे वश करि लेवै है ॥ ४० ॥

होवैं गे किंतु हम ताकेविषे कदाचित्‌भी नहीं प्रवृत्त होवैं गे इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ शंका–हे अर्जुन ! यद्यपि यह भीष्मादिक लोभतैं युद्धविषे प्रवृत्त हुए हैं तथापि धर्मशास्त्रविषे यह कह्या है। "आहूतो न निवर्तेत द्यूतादपि रणादपि" इति। "विजितं क्षत्रियस्य" इति। अर्थ, यह–क्षत्रिय राजाकूं जो कोई पुरुष जूवा खेलणेवासतै तथा युद्ध करणेवासतै आइकै बुलावै तौ सो क्षत्रिय ता जूवातैं तथा युद्धतैं निवृत्त नहीं होवै किंतु ता पुरुषके साथि जूवा तथा युद्ध अवश्यकरिकै करै। और युद्ध करिकै इकट्ठा करा हुआ जो धन है सो धनही क्षत्रियका धर्म्य धन है इति। इत्यादिक धर्मशास्त्रके वचनोंकरिकै क्षत्रिय राजाका युद्धधर्म सिद्ध होवै है। तथा युद्ध करिकै इकट्ठा करा हुआ धनही धर्म्य धन सिद्ध होवै। और तुम्हारेकूं इन भीष्मादिकोंनैं युद्ध करणेवासतै बुलाया है यातैं तुम्हारेकूं इस युद्धविषे अवश्य प्रवृत्त होणा चाहिये। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है।

(मू. श्लो.) कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्त्तितुम् ॥ कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥ (पदच्छेदः) कथं। नं। ज्ञेयम्। अस्माभिः। पापात्। अस्मात्। निवर्तितुम्। कुलक्षयकृतम्। दोषम्। प्रपश्यद्भिः। जनार्दन ॥३९॥ (पदार्थः) हे जनार्दन ! कुलके नाशकृत् दोषकूं जानणेहारे हमोंनैं पापके हेतुरूप इस युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै कैसे नहीं विचार करणा योग्य है किंतु अवश्य विचार करणा योग्य है ॥ ३९ ॥

टीका। हे जनार्दन ! अपणे कुलके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो दोष है ता दोषकूं भली प्रकारतैं जानणेहारे जो हम हैं तिन हमोंनैं पापकी प्राप्ति करणेहारे इस युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै क्या नहीं विचार करणा योग्य है किंतु ता युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै हमोरेकूं अवश्य विचार करणा योग्य है। और "किमकार्यं दुरात्मनाम्"। अर्थ, यह– दुरात्मा पुरुषोंकूं कौन कार्य करणे योग्य नहीं है किंतु दुरात्मा पुरुषोंकूं सर्व करणेयोग्य है। या न्यायकूं अंगीकार करिकै यह दुर्योधनादिक जैसे राज्यके लोभकरिकै अपणे कुलका नाश करैं हैं। तथा अपणे मित्रोंके साथि द्रोह करैं हैं तैसे हमोरेकूं करणा योग्य नहीं है। और "आहूतो न निवर्त्तेत" यह जो धर्मशास्त्रका वचन आपनैं पूर्व कह्या था सो वचन केवल लोभमूलक है यातैं सो वचन "स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनम्" या वचनकरिकै बाधित है यातैं ता लोभमूलक वचनकूं अंगीकार करिकै हमारी युद्धविषे प्रवृत्ति संभवै नहीं। इहां यह तात्पर्य है। जिस पुरुषकूं जिस कार्यविषे यह कार्य हमारे श्रेयका साधन है या प्रकारका ज्ञान होवै है सो पुरुषही तिस कार्यविषे प्रवृत्त

(मू. श्लो.) यद्यप्येते न पश्यंति लोभोपहतचेतसः ॥ कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ ३८ ॥ (पदच्छेदः) यद्यपि । एते । न । पश्यंति । लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृतं । दोषं । मित्रद्रोहे । च । पातकं ॥ ३८ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् लोभ ग्रस्तचित्तवाले यह भीष्मादिक यद्यपि कुलके नाशकृत दोषकूं तथा मित्रोंके द्रोहविषे पातककूं नहीं देखते तथापि हम ताकूं देखते हैं ॥ ३८ ॥

टीका । हे भगवन् ! प्राप्त हुए पदार्थके त्यागकं नहीं सहारणेका नाम लोभ है ता लोभकरिकै इन भीष्मादिकोंका चित्त ग्रस्त होइ रह्या है या कारणतैं यह भीष्मादिक कुलके नाश करणेकारिकै प्राप्त होणेहारे दोषकूं तथा अपणे मित्रोंके साथि द्रोह करणेकारिकै प्राप्त होणेहारे पातककूं यद्यपि विचार करिकै देखते नहीं तथापि हम ता दोषकं तथा पातककूं भली प्रकार जाणते हैं यातैं इन भीष्मादिकोंकी तौ यद्यपि युद्धविषे प्रवृत्ति संभवै है तथापि ता युद्धविषे हमारी प्रवृत्ति संभवती नहीं । इतने कहणेकरिकै अर्जुननैं या शंकाकी निवृत्ति करी सा शंका यह है हे अर्जुन ! यह भीष्मादिक जो शिष्ट पुरुष हैं तिन्होंकी अपणे बांधवोंके हननविषे प्रवृत्ति देखणेमैं आवै है । और जो जो शिष्ट पुरुषोंका आचार होवै है सो सो वेदमूलकही होवै है । जैसे श्राद्धादिक कर्मोंविषे प्रवृत्तिरूप शिष्ट पुरुषोंका आचार वेदमूलक होवै है । और ता शिष्ट पुरुषोंके आचारके अनुसारही दूसरे पुरुषोंकी प्रवृत्ति होवै है यातैं भीष्मादिक शिष्ट पुरुषोंकी अपणे बांधवोंके हननविषे प्रवृत्तिकूं देखिकरिकै तुम्हारेकूंभी तिसीविषे प्रवृत्त होणा चाहिये । या भगवान्‌के शंकाकी अर्जुननैं (लोभोपहतचेतसः) या विशेषणके कहणेकरिकै निवृत्ति करी काहेतैं जिस शिष्ट पुरुषोंके आचारविषे लोभादिक दोष कारण नहीं होवैं किंतु केवल धर्मबुद्धिही कारण होवे । तिसी आचारविषे वेदमूलकता कल्पना करी जावै है । और सोइही शिष्ट पुरुषोंका आचार इतर जीवोंकूं अंगीकार करणे योग्य होवै है । और जिस शिष्ट पुरुषके आचारविषे केवल लोभादिक दोषही कारण होवैं ता शिष्ट पुरुषके आचारविषे वेदमूलकता कल्पना करी जावै नहीं । और सो लोभादिपूर्वक शिष्ट पुरुषोंका आचार इतर पुरुषोंकूं अंगीकार करणे योग्यभी नहीं है । और इन भीष्मादिकोंका जो बांधवोंके हनन करणेविषे प्रवृत्तिरूप आचार है ताके विषेभी केवल लोभादिक दोषही कारण हैं यातैं सो इन भीष्मादिकोंका आचार वेदमूलक नहीं है । ऐसे इन भीष्मादिकोंके लोभमूलक आचारकूं ग्रहण करिकै हम बांधवोंके हनन करणेविषे कैसे प्रवृत्त

त्मात्रभी हानिकी प्राप्ति नहीं इति ॥ ३६ ॥ ❀ तहां अन्य प्राणियोंकी हिंसा करणेविषे कोई फल है नहीं । उलटी अनर्थकीही प्राप्ति होवै है यातैं किसीभी प्राणीकी हिंसा करणे योग्य नहीं है। यह वार्त्ता (न च श्रेयोनुपश्यामि) इस वचनतैं आदि लेकै अत्रपर्यंत अर्जुननैं कथन करी । अब ता वार्त्ताकी समाप्ति करैं हैं ।

(मू. श्लो.) तस्मान्नार्हा वयं हंतुं धार्तराष्ट्रान्स्वबांधवान् ॥ स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥३७॥ (पदच्छेदः) तस्मात् । न । अर्हाः । वयं । हंतुं । धार्तराष्ट्रान् । स्वबांधवान् । स्वजनं । हि । कथं । हत्वा । सुखिनः । स्याम । माधव॥३७॥ (पदार्थः) हे माधव तिसै कारणतैं हम अपणे बांधव धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं हनन करणेकूं नहीं योग्य हैं जिसै कारणतैं अपणे बांधवोंकूं हनन करिकै हम कैसे सुखी होवैंगे किंतु नहीं सुखी होवैंगे ॥ ३७ ॥

टीका । इहां (तस्मात्) या तत् शब्दकरिकै पूर्व कथन करा जो बांधवोंकी हिंसा करणेविषे अदृष्टरूप फलका अभाव तथा अनर्थकी प्राप्ति तिन दोनोंका ग्रहण करणा ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है । जिस कारणतैं बांधवोंकी हिंसा करिकै स्वर्गादिरूप अदृष्टफलकी प्राप्ति होवै नहीं उलटी महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है तिस कारणतैं हम अपणे दुर्योधनादिक बांधवेंके हनन करणेकी इच्छा करते नहीं । शंका--हे अर्जुन बांधवोंके हनन करिकै स्वर्गादिरूप अदृष्टसुखकी प्राप्ति मत होवो तथापि इस लोकका अदृष्टसुख तौ तुम्हारेकूं अवश्यकरिकै प्राप्त होवैगा । ऐसी भगवान्की शंकाकरिकै अर्जुन कहै है (स्वजनं हीति) हे माधव अपणे संबंधियेंके सुखवासतैही श्रेष्ठ पुरुषोंकी प्रवृत्ति होवै है यातैं अपणे संबंधियोंकूंही हनन करिकै हम किस प्रकार सुखकूं प्राप्त होवैंगे किंतु उलटे दुःखकूंही प्राप्त होवैंगे। इहां (हे माधव) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा मा नाम लक्ष्मीका है, धव नाम पतिका है, लक्ष्मीका जो पति होवै ताका नाम माधव है । ऐसा लक्ष्मीका पति होइकै आप हमारेकूं लक्ष्मीतैं रहित बांधवोंकी हिंसारूप निंदित कर्मविषे प्रवृत्त करणे योग्य नहीं हो इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ शंका--हे अर्जुन ! युद्धविषे अपणे बांधवोंकी हिंसा करिकै जो कदाचित् किसी दृष्टअदृष्टसुखकी प्राप्ति नहीं होती होवै उलटी दोषकीही प्राप्ति होवै तौ इन भीष्मादिक महान् पुरुषोंकी ता कुलके क्षय करणेविषे तथा स्वजनोंकी हिंसा करणेविषे किसवास्तै प्रवृत्ति होती है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहै है ।

शस्त्रपाणिर्धनापहः ॥ क्षेत्रदारापहारी च षडेते आततायिनः" अर्थ यह। अग्निके देणेहारा तथा विषके देणेहारा तथा शस्त्र जिसके हाथविषे है तथा परधनके हरण करणेहारा तथा पराये क्षेत्रके हरण करणेहारा तथा परस्त्रीके हरण करणेहारा यह षट् आततायी कहे जावैं हैं इति । और इन दुर्योधनादिकोंविषे तौ सो षट् प्रकारकाही आततायीपणा है। और दूसरे शास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । " आततायिनमायांतं हन्यादेवाविचारयन् ॥ नाततायिवधे दोषो हंतुर्भवति कश्चन"। अर्थ यह। अकस्मात्‌तैं आया हुआ जो आततायी पुरुष है तिस आततायी पुरुषकूं यह बुद्धिमान् पुरुष तिसी कालविषेही हनन करै ताके हनन करणेविषे किंचित्‌मात्रभी विचार नहीं करै । जिस कारणतैं तिस आततायी पुरुषके हनन करणेविषे ता हनन करणेहारे पुरुषकूं किंचित्‌मात्रभी दोष होवै नहीं इति या शास्त्रके वचनतैं आततायीके मारणेकारकै दोषाभाव प्रतीत होवै है यातैं यह दुर्योधनादिक आततायी तुम्हारेकूं अवश्य हनन करणे योग्य हैं। ऐसीभगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है। (पापमेवेति) इन दुर्योधनादिक आततायियोंकूं भी हनन करिकै स्थित हुए हमारेकूं पाप अवश्य आश्रयण करैगा । अथवा इन्होंके हनन करिकै हमारेकूं केवल पापही आश्रयण करैगा। दूसरा कोई दृष्टप्रयोजन तथा अदृष्टप्रयोजन प्राप्त होवैगा नहीं। और 'आततायिनं हन्यात्' यह पूर्व उक्त वचन यद्यपि आततायी पुरुषोंके हननका विधान करै है तथापि सो वचन अर्थशास्त्रका है धर्मशास्त्रका सो वचन है नहीं ता अर्थशास्त्रतैं धर्मशास्त्र बलवान् होवै है । और धर्मशास्त्र तौ प्राणिमात्रकी हिंसा करणेका निषेध करै है। सो धर्मशास्त्र यह है। " स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनम् " इति ॥ " न हिंस्यात्सर्वाभूतानि " इति ॥ अर्थ यह। जो पुरुष अपणे कुलका नाश करै है सोईही पुरुष अत्यंत पापिष्ठ जानणा। और यह बुद्धिमान् पुरुष सर्व भूतप्राणियोंकी हिंसा नहीं करै इति। यह धर्मशास्त्र पूर्व उक्त अर्थशास्त्रतैं बलवान् है। यातैं इन बांधवोंका हनन करणा हमारेकूं होग्य नहीं है। अथवा (पापमेवाश्रयेत्) इत्यादिक अर्द्ध श्लोकका या प्रकारतैं दूसरा व्याख्यान करणा। शंका—हे अर्जुन! दुर्योधनादिकोंके हनन करणेविषे यद्यपि तुम्हारेकूं प्रीति नहीं है तथापि तुम्हारेकूं हनन करणेविषे इन दुर्योधनादिकोंकूं प्रीति है यातैं यह दुर्योधनादिक तुम्हारेकूं अवश्यकरिकै हनन करैंगे । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (पापमेवेति) पापम् । एव । आश्रयेत् । अस्मान् । हत्वा । एतान् । आततायिनः ॥ अर्थ, यह—हमारेकूं हननकरिकै स्थित हुए इन दुर्योधनादिक आततायियोंकं केवल पापही आश्रयण करैगा दूसरा कोई सुख इन्होंकूं प्राप्त नहीं होवैगा। तात्पर्य यह । यह दुर्योधनादिक पूर्व तौ आततायी हैं ही और नहीं युद्ध करणेहारे हमारेकूं हनन करिकै अबीभी यह दुर्योधनादिकही पापी होवैंगे इसविषे हमारेकूं कोई पापका संबंध है नहीं यातैं हमारेकं किंचि

हनन करणेकरिकै जो कदाचित् हमोरेकूं भूमि, स्वर्ग और पाताल या तीन लोकोंके राज्यकी प्राप्ति होइ जावै तौ भी मैं इन आचार्यादिकोंके हननकी इच्छा करता नहीं तौ इस पृथिवीमात्रके राज्यकी प्राप्तिवासतै मैं इन आचार्यादिकोंकूं नहीं हनन करौंगा याकेविषे क्या कहणा है। इहां (हे मधुसूदन) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषे वैदिक मार्गका प्रवर्त्तकपणा सूचन करा। ऐसे वैदिक मार्गके प्रवर्त्तक होइकै आप हमोरेकूं आचार्यादिकोंके हननविषे किसवासतै प्रवृत्त करते हो इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ शंका—हे अर्जुन आचार्यादिकोंके मारणेविषे जो तूं दोष मानता है तौ तिन आचार्य आदिकोंकूं छोडिकै दूसरे धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं तुम हनन करो काहेतैं इन दुर्योधनादिकोंनैं तुम्हारेकूं लाक्षागृहविषे दाहादिकोंकरिकै बहुत प्रकारके दारुण दुःखोंकी प्राप्ति करी है यातैं तिन दुर्योधनादिकोंके हनन करणेविषे तुम्हारी प्रीति संभवै है। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है।

(मू. श्लो.) निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ॥ पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥ (पदच्छेदः) निहत्य। धार्तराष्ट्रान्। नः। का। प्रीतिः। स्यात्। जनार्दन। पापम्। एव। आश्रयेत्। अस्मान्। हत्वा। एतान्। आततायिनः ॥ ३६ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन इन दुर्योधनादिकोंकूं हनन करिकै हमोरेकूं कौन प्रीति होवैगी किंतु कोईभी प्रीति नहीं होवैगी उलटा इन आततायियोंकूं हनन करिकै हमोरेकूं पाप ही आश्रयण करैगा ॥ ३६ ॥

टीका। हे जनार्दन! धृतराष्ट्रके पुत्र जो यह दुर्योधनादिक हैं ते हमारे भ्राता हैं तिन भ्राताओंकूं हनन करिकै हमारेकूं कौन सुख होवैगा। किंतु तिन्होंके हनन करिकै हमारेकूं किंचित् मात्रभी सुखकी प्राप्ति नहीं होवैगी। तात्पर्य यह। मूढजनोंके प्रीतिका विषय जो क्षणमात्रवर्त्ती सुखाभास है ता सुखाभासके लोभ करिकै बहुत कालपर्यंत नरकके प्राप्तिका हेतुरूप यह बांधवोंकी हिंसा हमारेकूं करणेयोग्य नहीं है। इहां जो सुखरूपतातैं रहित होवै तथा सुखकी न्याई प्रतीत होवै ताकूं सुखाभास कहैं हैं। ऐसे विषयजन्य सुख हैं इति। और (हे जनार्दन) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। हे भगवन् यह दुर्योधनादिक जो कदाचित् मारणेही योग्य होवैं तौभी आपही इन्होंकूं हनन करो जिस कारणतैं प्रलयकालविषे सर्व जनोंके हननकर्त्ता आपकूं किंचित्‌मात्रभी पापका स्पर्श होता नहीं इति। शंका—हे अर्जुन! शास्त्रविषे यह वचन कह्या है। श्लोक। " अग्निदो गरदश्चैव

भी संभव होइसकै है । तहां अपणे प्राणोंके त्याग हुए भी अपणे बांधवोंके सुखवासतै धनकी आशा संभव होइसकै है । या शंकाकी निवृत्ति करणेवासतै प्राणोंतैं भिन्न धनका ग्रहण करा है इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका-- हे अर्जुन ! जिन बांधवोंके सुखवासतै तुम्हारेकूं यह राज्यादिक अपेक्षित है ते तुम्हारे बांधव इस युद्धविषे आये नहीं । ऐसी भगवान्‌की शंकाके निवृत्त करणेवासतै सो अर्जुन तिन बांधवोंका विशेषकरिकै वर्णन करै है ।

(मू०श्लो०) आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ॥ मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबंधिनस्तथा ॥ ३४ ॥ (पदच्छेदः) आचार्याः । पितरः । पुत्राः । तथा । एव । च । पितामहाः । मातुलाः । श्वशुराः । पौत्राः । श्यालाः । संबंधिनः । तथा ॥ ३४ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् इस युद्धभूमिविषे कोई तौ हमारे आचार्य हैं तथा कोई पितर हैं तथा कोई पुत्र हैं तथा कोई पितामह हैं तथा कोई मातुल हैं तथा कोई श्वशुर हैं तथा कोई पौत्र हैं तथा कोई श्याल हैं तथा कोई संबंधी हैं ॥ ३४ ॥

टीका । इस श्लोकका अर्थ स्पष्टही है ताका अभिप्राय यह है इस युद्धभूमिविषे जितनेक योद्धा एकठे हुए हैं ते सर्व योद्धा हमारे संबंधी ही हैं तिन संबंधियोंतैं भिन्न कोई है नहीं ते सर्व संबंधी तौ अभी मरणेकूं तयार हुए हैं । यातैं किस संबंधीके राज्यसुखादिकोंवासतै मैं इस युद्धविषे प्रवृत्त होवौं इति ॥ ३४ ॥ ॥ ❀ ॥ शंका--हे अर्जुन जो कदाचित् कृपाकरिकै तूं इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं नहीं हनन करैगा तौभी यह भीष्मद्रोणादिक राज्यके लोभकरिकै तुम्हारेकूं अवश्य हनन करैंगे यातैं तुमही इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं हनन करिकै राज्यकूं भोगो । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है ।

(मू. श्लो.) एतान्न हंतुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ॥ अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किंनु महीकृते ॥३५॥ (पदच्छेदः) एतान् । न । हंतुम् ॥ इच्छामि । घ्नतः । अपि । मधुसूदन । अपि । त्रैलोक्यराज्यस्य । हेतोः । किंनु । महीकृते ॥ ३५ ॥ (पदार्थः) हे मधुसूदन मेरेकूं हनन करते हुए भी इन आचार्यादिकोंकूं मैं तीन लोकके राज्यकी प्राप्तिवासतै भी हनन करणेकूं नहीं इच्छा करता तौ इस पृथिवीमात्रके राज्यकी प्राप्तिवासतै मैं इन्होंके हननकी इच्छा कैसे करौंगा ॥ ३५ ॥

टीका । हे मधुसूदन ! भगवान तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै हमारेकूं हनन करणेहारेभी जो यह पूर्व उक्त आचार्यादिक हैं तिन्होंके हनन करणेकी इच्छामात्र भी मैं नहीं करता तौ तिन आचार्यादिकोंकूं मैं तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै किस प्रकार हनन करौंगा । किंतु नहीं हनन करौंगा । किंवा तिन आचार्यादिकोंके

राज्यादिक फलोंतैं वैराग्यकूं भलीप्रकार जाणते हो इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन धर्मशास्त्रविषे यह वचन कह्या है ॥ श्लोक ॥ "वृद्धौ च मातापितरौ भार्या साध्वी सुतः शिशुः । अप्यकार्यशतं कृत्वा भर्त्तव्या मनुरब्रवीत्" । अर्थ यह । अपणे वृद्ध जो मातापिता हैं । तथा पतिव्रता जो स्त्री है । तथा बाल्य अवस्थावाले जो पुत्र हैं । ये सर्व बांधव, इस पुरुषनैं न करणेयोग्य अनेक कार्योंकूं करिकैभी भरणपोषण करणेयोग्य हैं । यह वार्ता मनुभगवान् कहता भया है इति । इत्यादिक शास्त्रोंके वचननैं वृद्ध मातापितादिक संबंधियोंके भरणपोषणवासतै करा हुआभी अधर्म या पुरुषके दोषवासतै होवै नहीं यातैं जो कदाचित् तुम्हारेकूं इन राज्यसुखादिकोंतैं वैराग्यभी होवै तौ भी इन अपणे संबंधियोंके राज्यसुखादिकोंवासतै तुम्हारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा चाहिये । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ॥ त इमेवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ ३३ ॥ (पदच्छेदः) । येषाम् । अर्थे । कांक्षितं । नः । राज्यं । भोगाः । सुखानि । च । ते । इमे । अवस्थिताः । युद्धे । प्राणान् । त्यक्त्वा । धनानि । च ॥ ३३ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् हमारेकूं जिनं बांधवोंके वासतै राज्य तथा विषय तथा सुख अपेक्षित है ते ये बांधव अपणे प्राणोंकी आशाकूं तथा धनकी आशाकूं त्याग करिकै इस युद्धविषे स्थित हुए हैं ॥ ३३ ॥

टीका । हे भगवन् ! एकाकी पुरुषकूं तौ ये राज्यादिक अपेक्षित होवैं नहीं । और जिन बांधवोंके वासतै हमारेकूं यह राज्य अपेक्षित है । तथा सुखके साधनरूप विषय अपेक्षित हैं । तथा विषयजन्य सुख अपेक्षित है ते ये हमारे बांधव अपणे प्राणोंकी आशाकूं छोडिकरिकै तथा धनकी आशाकूं छोडिकरिकै मरणेवासतै इस युद्धभूमिविषे स्थित हुए हैं यातैं अपणे स्वार्थवासतै तथा अपणे संबंधियोंके स्वार्थवासतै इस युद्धरूप कार्यविषे हमारी प्रवृत्ति संभवती नहीं । यहां पूर्वश्लोकविषे यद्यपि भोगशब्दकरिकै विषयजन्य सुखका ग्रहण करा था तथापि इस श्लोकविषे भोगोंतैं सुखकूं भिन्न ग्रहण करा है । यातैं यहां भोगशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै सुखके साधनरूप स्पर्शादिक विषयोंका ग्रहण करणा । और (प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च) या वचनविषे प्राणोंका त्याग तथा धनका त्याग कथन करा है सो जीवित अवस्थाविषे प्राणोंका त्याग तथा धनका त्याग संभवता नहीं । यातैं प्राणशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै प्राणकी आशाका ग्रहण करणा । और धनशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै धनकी आशाका ग्रहण करणा । तिन प्राणादिकोंके आशाका परित्याग जीवित अवस्थाविषे

विंतेनं । वा ॥ ३२ ॥ (पदार्थः) हे कृष्ण मैं विजयकूं नहीं चाहता तथा राज्यकूंभी नहीं चाहता तथा सुखोंकूंभी नहीं चाहता हे गोविंद हमारेकूं इस राज्यकरिके क्या फल होवैगा तथा विषयसुखोंकरिके क्या फल होवैगा तथा विजयकरिके क्या फल होवैगा किंतु तिन्होंकी प्राप्तिकरिके किंचित्मात्रभी फल नहीं होवैगा ॥ ३२ ॥

टीका । हे कृष्णभगवन् ! अपणे बांधवोंकी हिंसा करिके प्राप्त होणेहारा जो विजय है तिस विजयकी प्राप्तिकी मैं इच्छा करता नहीं । तथा ता विजयतैं पश्चात् प्राप्त होणेहारा जो राज्य है ता राज्यके प्राप्तिकीभी मैं इच्छा करता नहीं । तथा ता राज्यकी प्राप्तितैं पश्चात् प्राप्त होणेहारे जो विषयजन्य सुख हैं तिन विषयसुखोंके प्राप्तिकीभी मैं इच्छा करता नहीं । इतनै कहणेकरिके अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा या लोकविषे तिस तिस फलकी इच्छावान् पुरुषही तिस तिस फलकी प्राप्तिके उपायविषे प्रवृत्त होवै है । फलकी इच्छातैं रहित पुरुष ता फलके उपायविषे प्रवृत्त होवै नहीं । जैसे भोजनरूप फलके प्राप्तिकी इच्छावान् पुरुषही ता भोजनरूप फलकी प्राप्तिके उपायरूप अन्नपाकविषे प्रवृत्त होवै है । भोजनकी इच्छातैं रहित पुरुष ता अन्नके पकावणे विषे प्रवृत्त होवै नहीं । तैसे विजय, राज्य, विषयसुख इन फलोंके प्राप्तिकी जिस पुरुषकूं इच्छा होवै सो पुरुष तिन विजयादिक फलोंकी प्राप्तिके उपायरूप युद्धविषे प्रवृत्त होवै और हमारेकूं तौ तिन विजयराज्यादिक फलोंके प्राप्तिकी इच्छा है नहीं यातैं इस युद्धरूप उपायविषे हमारी प्रवृत्ति संभवै नहीं शंका—हे अर्जुन अन्य दुर्योधनादिकोंके इच्छाका विषयरूप जो ये विजय, राज्य, सुख आदिक हैं तिन्होंविषे तुम्हारेकूं इच्छाका अभाव किस वास्तै हुआ है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (किं नो राज्येनेति) हे गोविंद धर्म अधर्मके स्वरूपकूं नहीं जानणेहारे जो ये दुर्योधनादिक हैं तिन्होंकूं इन राज्यसुखादिकोंविषे इच्छा होवो परंतु धर्म अधर्मके स्वरूपकूं जानणेहारे जो हम हैं तिन हमारेकूं या प्रसिद्ध राज्यकरिकै तथा विषयसुखोंकरिके तथा जीवनका साधनरूप विजयकरिके किस प्रयोजनकी प्राप्ति होवैगी । किंतु तिन राज्यादिकोंकरिके हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजन सिद्ध नहीं होवैगा । तात्पर्य यह । विजय, राज्य, भोग इन तीनोंकी प्राप्तितैं विनाही वनविषे निवास करणेहारे जो हम हैं तिन हमारा तिस संतोषकरिकैही या जगत्विषे कीर्तिपूर्वक जीवन होवैगा यातैं इन राज्यादिकोंके प्राप्तिकी हमारेकूं इच्छा है नहीं । यहां (हे गोविंद) या संबोधनकरिके अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । गो नाम इंद्रियोंका है तिन इंद्रियोंकूं अधिष्ठानरूपकरिकै जो नित्यही प्राप्त होवै ताका नाम गोविंद है । ऐसे अंतर्यामी स्वरूप आप हमारे इस लोकके

श्रेयरूप फलकी प्राप्ति बहुत विचार कियेतैं अनंतर प्रतीत होवै है । थोडे विचार कियेतैं प्रतीत होवै नहीं । ऐसी भगवान्‌की शंकाके निवृत्त करणेवासतै अर्जुननैं (अनुपश्यामि) या वचनविषे (अनु) यह शब्द कथन करा है ता अनुशब्दका पश्चात् यह अर्थ होवै है । और पूर्ववृत्तांतकी अपेक्षा करिकेही पश्चात कह्या जावै है यातैं यह अर्थ सिद्ध होवै है बहुत विचार कियेतैं पश्चात्‌भी मैं बांधवोंके मारणेकरिकै अपणे श्रेयकूं देखता नहीं । और (स्वजनं) या कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा जो अपणे संबंधी नहीं हैं तिन्होंका युद्धविषे हनन करिकैभी मैं अपणे श्रेयकूं देखता नहीं । काहेतैं शास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक ॥ "द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमंडलवर्त्तिनौ । परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ॥ " अर्थ, यह–इस लोकविषे दो प्रकारके पुरुषही सूर्यमंडलविषे स्थित होवैं हैं । एक तौ योगकरिकै युक्त संन्यासी और दूसरा युद्धविषे सन्मुख हुआ जो पुरुष मरणकूं प्राप्त हुआ है, इति । इत्यादिक शास्त्रके वचनकरिकै युद्धविषे मृत्युकूं प्राप्त हुए योद्धाकूंही स्वर्गादिक श्रेयकी प्राप्ति कथन करी है । हनन करता पुरुषकूं किंचित्‌मात्रभी श्रेयकी प्राप्ति शास्त्रनें कथन करी नहीं यातैं अपणे अस्वजनोंके मारणेकरिकैभी जब श्रेयकी प्राप्ति नहीं होवै है तब अपणे स्वजनोंके मारणेकरिकै ता श्रेयकी प्राप्ति कैसेहोवैगी । किंतु नहीं होवैगी । यह सर्व अर्थ अर्जुननैं (स्वजनं) या शब्दकरिकै सूचन करा । और सिद्धसाधनरूप दोषकी निवृत्ति करणेवासतै अर्जुननैं (आहवे) यह पद कथन करा है । काहेतैं (आहवे) यह युद्धका वाचक पद जो नहीं कहते तौ युद्धतैं विना बांधवोंकी हिंसा करिकै श्रेयकी प्राप्ति कोईभी शास्त्रवेत्ता पुरुष अंगीकार करता नहीं । तिसी अर्थकूं अर्जुननैंभी सिद्ध करा यातैं सिद्ध अर्थका साधनरूप सिद्धसाधनदोष अर्जुनकूं प्राप्त होता ता दोषकी निवृत्ति करणेवासतै अर्जुननैं (आहवे) यह पद कथन करा है । तात्पर्य यह युद्धतैं विना संबंधियोंके मारणेकरिके श्रेयकी प्राप्तिकूं कोईभी पुरुष अंगीकार करता नहीं । और मैं तौ युद्धविषेभी संबंधियोंके ।रणेकरिके श्रेयकी प्राप्ति देखता नहीं, इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका–हे अर्जुन युद्धविषे अपणे स्वजनोंके मारणेकरिकै स्वर्गादिकरूप अदृष्टप्रयोजनकी प्राप्ति तौ मत होवै परंतु युद्धविषे तिन स्वजनोंके मारणेकरिकै तुम्हारेकूं विजय, राज्य, विषयसुख या दृष्टप्रयोजनकी प्राप्ति तौ निर्विवाद है। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है।

(मू. श्लो.) न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ॥ किं नो राज्येन गोविंद किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ (पदच्छेदः न । कांक्षे । विजयं । कृष्ण । न । च । राज्यं । सुखानि । च । किं । नः । राज्येन । गोविंद । किं । भोगैः । जी

वाचक है । और णप्रत्यय आनंदका वाचक है ता सत्ता और आनंद दोनोंका एकताभावरूप परब्रह्म कृष्ण या नामकरिकै कह्या जावै है, इति । या शास्त्रके वचनतैं आप सत् आनंदरूप होणेतैं शोकमोहादिक विकारोंतैं रहित हो । तात्पर्य यह अपणे बांधवोंका दर्शन जैसे हमारेकूं भया है तैसे आपकूंभी तिन बांधवोंका दर्शन भया है । परंतु हमारे न्याईं आपकूं शोकमोहादिक विकार प्राप्त हुए नहीं यह आपविषे महान् विशेषता है यातैं आपकी न्याईं हमारेकूंभी शोकतैं रहित करो । यह सर्व अर्थ ता अर्जुननैं (हे कृष्ण) या संबोधनकरिकै सूचन करा । तहां तुम्हारे शोकके निवृत्त करणेका हमारेविषे सामर्थ्य नहीं है ऐसी भगवान्‌की शंकाके निवृत्त करणेवासतै सो अर्जुन (हे केशव) या संबोधनकरिकै ता भगवान्‌विषे अपणे शोक निवृत्त करणेका सामर्थ्य सूचन करता भया । तहां केशौ वाति अनुकंप्यतया गच्छतीति केशवः । अर्थ, यह—जगत्‌कूं उत्पन्न करणेहारे ब्रह्माका नाम कहै और जगत्‌के संहार करणेहारे रुद्रका नाम ईश है तिन दोनोंकूं अपणे अनुग्रहका पात्र जानिकरिकै जो प्राप्त होवै ताका नाम केशव है । ऐसे आपकूं हमारे शोकके निवृत्त करणेविषे किंचित्‌मात्रभी प्रयत्न नहीं है । अथवा (कृष्ण) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषे भक्तजनोंके दुःखका निवर्त्तकपणा बोधन करा । और (केशव) या संबोधन करिकै केशी आदिक दुष्ट दैत्योंकी निवृत्तिकरिकै सर्वदा भक्तजनोंकी प्रतिपालकता सूचन करी । ऐसा आपका स्वभाव है। यातैं हमारेकूंभी शोककी निवृत्तिकारिकै अवश्य पालन करोगे, इति॥ ३० ॥ ❀ तहां समीचीन प्रवृत्तिका कारणरूप जो तत्त्वज्ञान है ता तत्त्वज्ञानका प्रतिबंधक जो शोक है ता शोकका पूर्व मुखशोषणादिक लिंगोंद्वारा तीन श्लोकोंकरिकै निरूपण करा । अब ता शोककरिकै जन्य जो विपरीत प्रवृत्तिका कारणरूप विपरीत बुद्धि है ता विपरीत बुद्धिका निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) नच श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे॥३१॥(पदच्छेदः)नच । श्रेयः । अनुपश्यामि । हत्वा । स्वजनम् । आहवे ॥ ३१ ॥

(पदार्थः) इस युद्धविषे अपणे बांधवोंकूं हनन करिकै मैं अपणे श्रेयकूं नहीं देखता हूं ॥ ३१ ॥

टीका । हे भगवन् ! इस युद्धविषे इन भीष्मादिक बांधवोंके मारणेकरिकै मैं अपणे श्रेयकूं देखता नहीं । यहां पुरुषार्थका नाम श्रेय है । और यह पुरुष जिस पदार्थके प्राप्तिकी प्रार्थना करै है ता पदार्थका नाम पुरुषार्थ है सो पुरुषार्थरूप श्रेय दो प्रकारका होवै है एक तौ दृष्टश्रेय होवै है और दूसरा अदृष्टश्रेय होवै है । तहां इस लोकके जो राज्यादिक सुख हैं तिन्होंका नाम दृष्टश्रेय है । और स्वर्गादिक सुखोंका नाम अदृष्टश्रेय है ता दोनों प्रकारके श्रेयोंकी प्राप्ति इन बांधवोंके मारणेकरिकै मैं देखता नहीं ॥ शंका—हे अर्जुन ! इस युद्धविषे स्वजनोंके मारणेकरिकै श्रेयकी प्राप्ति तौ होवै है परंतु सा

(मू. श्लो.) गांडीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ॥ न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ ३० ॥ निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ॥ (पदच्छेदः) गांडीवं । स्रंसते । हस्तात् । त्वक् । च । एव । परिदह्यते । न । च । शक्नोमि । अवस्थातुं । भ्रमति । इव । च । मे । मनः ॥ ३० ॥ निमित्तानि । च । पश्यामि । विपरीतानि । केशव ॥ (पदार्थः) हे केशव ! मेरे हस्ततैं गांडीव धनुष नीचे पडचा जावै है तथा मेरी त्वचा दाहकूं प्राप्त होवै है तथा मेरा मनभी भ्रमण करे है यातैं अपणे शरीरके स्थित करणेकूंभी मैं नहीं समर्थ होवौं हूं ॥ ३० ॥ तथा मैं विपरीत निमित्तोंकूंभी देखतां हूं ॥

टीका । हे भगवन् ! ता शोककरिकै यह गांडीव धनुषभी हमारे हस्ततैं नीचै पडचा जाता है । तथा हमारी त्वचाभी अत्यंत दाहकूं प्राप्त होवै है । यह हमारा धनुष नीचै पडचा जावे है । या वचनके कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणी अधैर्यरूप दुर्बलता बोधन करी । और मेरी त्वचा दाहकूं प्राप्त होवै है या वचनके कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणे अंतरका संताप सूचन करा । और इस कालविषे मैं अपणे शरीरके स्थित करणेविषेभी समर्थ नहीं हूं इतने कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणे मूर्च्छा अवस्थाकूं सूचन करा । जिस कारणतैं मूर्च्छा अवस्थाविषेही यह पुरुष अपणे शरीरके स्थित करणेविषे समर्थ नहीं होवै है । अब ता मूर्च्छा अवस्थाकी प्राप्तिविषे हेतु कहै हैं । (भ्रमतीव च मे मन, इति) यह मेरा मन भ्रमण करता पुरुषकी न्याई भ्रमण करै है । सो भ्रमण करता पुरुषकी सादृश्यतारूप जो मनका कोई विकारविशेष है । जिसकूं (इव) या शब्दकरिकै कथन करा है । सोईही विकारविशेष मूर्च्छाकी पूर्व अवस्था होवै है । (न च शक्नोमि) या वचनविषे स्थित जो चकार है सो हेतुका वाचक है ताका यह अर्थ है । जिसवासतै हमारा मन ता मूर्च्छाके पूर्व अवस्थाकूं प्राप्त भया है इसवासतै मैं या अपणे शरीरकूं अभी स्थित करणेविषे समर्थ नहीं हूं । अब ता शरीरके स्थित करणेकी असामर्थ्यविषे दूसराभी निमित्त कथन करैं हैं । (निमित्तानीति) हे भगवन् ! थोडेही कालविषे दुःखकी प्राप्तिकूं सूचन करणेहारे जो वाम नेत्रका स्फुरणादिक विपरीत निमित्त हैं तिनोंकूंभी मैं अनुभव करता हूं । इस कारणतैंभी मैं स्थित होणेकूं समर्थ नहीं होता । यहां अठावीसवें श्लोकविषे (दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण) या वचनविषे स्थित जो (कृष्ण) यह संबोधन है । ताकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । मैं अर्जुन अनात्मवेत्ता होणेतैं दुःखी हूं । या कारणतैं मैं शोकजन्य क्लेशकूं अनुभव करता हूं । और "कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते" ॥ अथ, यह—कृष्धातु सत्ता

तथा अश्रुपात इत्यादिक विषादके कार्योंकी स्थिति बाधने करी । काहेतैं या लोकविषे विषादवान् पुरुषके वचनविषे यह वार्त्ता प्रसिद्ध देखणेविषे आवै है । और (कौंतेयः) या पदका अभिप्राय तौ पूर्व श्लोकविषे कहे हुए पार्थपदके अभिप्रायकी न्याई जानि लेणा । कुंतीकूंही पृथा नामकरिकै कथन करैं हैं, इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब श्रीकृष्णभगवान्‌केप्रति सो अर्जुनका वचन (अर्जुन उवाच ।) इसतैं आदि लेकै (एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये) इस वाक्यतैं पूर्व ग्रंथकारिकै संजय कथन करे है । तहां स्वधर्मविषे प्रवृत्तिका कारणरूप जो तत्त्वज्ञान है ता तत्त्वज्ञानका प्रतिबंधक जो अपणे शरीरविषे तथा परशरीरविषे यह मेरे हैं या प्रकारका आत्मीयत्व अभिमान है ता अभिमानकारिकै युक्त तथा केवल अनात्मपदार्थोंकूं जानणेहारा तथा इस युद्धकारिकै हमारा तथा इन बांधवोंका अवश्य नाश होवैगा या प्रकार देखणेहारा ऐसा जो अर्जुन है ता अर्जुनकूं महान् शोक प्राप्त होता भया ता अर्जुनके शोककूं ता शोककारिकै व्याप्त लिंगोंके कथनपूर्वक तीन श्लोकोंकारिकै निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच । दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥ २८ ॥ सीदंति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ॥ वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ ॥ २९ ॥ (पदच्छेदः) दृष्ट्वा । इमं । स्वजनं । कृष्ण । युयुत्सुं । समुपस्थितं ॥ २८ ॥ सीदंति । मम । गात्राणि । मुखं । च । परिशुष्यति । वेपथुः । च । शरीरे । मे । रोमहर्षः । च । जायते । ॥ २९ ॥ (पदार्थः) हे कृष्ण ! यां रणभूमिविषे प्राप्त हुए तथा युद्धकी इच्छावाले ईन बांधवोंकूं देखिकरिकै हमारे हस्तपादादिक अंग व्यथाकूं प्राप्त होवैं हैं तथां मेरा मुखभी सूकता जावै है तथां हमारे शरीरविषे कंप उत्पन्न होवै है तथां हमारे रोम खडे होवैं हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

टीका । हे श्रीकृष्णभगवन् ! युद्धकी इच्छाकारिकै या रणभूमिविषे प्राप्त भये जो ये भीष्मादिक हमारे बांधव हैं तिनोंकूं देखिकरिकै हमारे चित्तविषे उत्पन्न भया जो शोक है ता शोककरिकै ये हमारे हस्तपादादिक अंग बहुत व्यथाकूं प्राप्त होवैं हैं । तथा यह हमारा मुखभी सूकता जावै है । तथा यह हमारे शरीरविषे कंप उत्पन्न होवै है । तथा हमारे रोम खडे होवैं हैं । इहां यद्यपि (मुखं च शुष्यति) इतने कहणेकरिकैही निर्वाह होइ सकै है तथापि श्रमादिक निमित्तोंतैं जो मुखका शोषण होवै है तिसकी अपेक्षाकारिकै शोकजन्य मुखके शोषणविषे अधिकता कथन करणेवासते (परिशुष्यति) इहां परि या शब्दका कथन करा है, इति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ❀ ॥ किं च ।

अवस्थावाले अश्वत्थामा जयद्रथ आदिक सखावोंकूं देखता भया। तथा कृतवर्मा भगदत्त आदिक सुहृदोंकूं देखता भया। इहां (सुहृदः) या शब्दकरिकै दूसरेभी जितनेक उपहार करणेहारे मातामहादिक हैं तिन सर्वोंका ग्रहण करना। इस प्रकार जैसे परसेनाविषे सो अर्जुन अपने पितृव्यादिक संबंधियोंकूं देखता भया तैसे अपनी सेनाविषेभी तिन पितृव्यादिक संबंधियोंकूंही देखता भया। इहां अपने पिताके भ्राताका नाम पितृव्य है। और अपनी माताके भ्राताका नाम मातुल है। माताके पिताका नाम मातामह है, इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार सर्व संबंधियोंके दर्शन हुएतैं अनंतर यह संबंधियोंकी हिंसा महान् अधर्मरूप है या प्रकारकी मोहरूप विपरीतबुद्धिकरिकै नष्ट हुआ है विवेक जिसका तथा यह युद्धविषे स्थित हिंसा शास्त्रविहित होणेतैं धर्मरूप है या प्रकारके यथार्थ ज्ञानका प्रतिबंध करणेहारा तथा ममताबुद्धि है कारण जिसका ऐसा जो शोकमोहरूप चित्तका वैक्लव्य है ताकरिकै निवृत्त होइ गया है विवेक जिसका ऐसा जो अर्जुन है ता अर्जुनकूं पूर्व आरंभ करे हुए युद्धरूप स्वधर्मतैं उपराम होणेकी इच्छा महान् अनर्थके देणेहारी उत्पन्न होती भई। या अर्थकूं अब निरूपण करैं हैं।

(मू. श्लो.) तान्समीक्ष्य स कौंतेयः सर्वान्बंधूनवस्थितान् ॥ २७ ॥ कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ॥ (पदच्छेदः) तान्। समीक्ष्य। सः। कौंतेयः। सर्वान्। बंधून्। अवस्थितान् ॥ २७ ॥ कृपया। परया। आविष्टः। विषीदन्। इदम्। अब्रवीत्। (पदार्थः) सो कुंतीका पुत्र अर्जुन तौ युद्धभूमिविषे स्थित तिन सर्व बांधवोंकूं भली प्रकार देखिकरिकै ॥ २७ ॥ परम कृपा करिकै व्याप्त हुआ विषादकूं प्राप्त हुआ यौ प्रकारका वचन कहता भया ॥

टीका। हे धृतराष्ट्र! तिन सर्व बांधवोंकूं देखिकरिकै स्वतःसिद्ध कृपाकरिकै व्याप्त हुआ सो अर्जुन उपतापरूप विषादकूं प्राप्त हुआ या प्रकारका वचन श्रीभगवान्के प्रति कहता भया। इहाँ ता अर्जुनविषे स्वतःसिद्ध कृपाके बोधन करणेवासते ता कृपाका परा यह विशेषण दिया है। अथवा (कृपया परयाविष्टः) या वचनविषे कृपया अपरया आविष्टः या प्रकारका पदच्छेद करणा। या पक्षविषे ता वचनका ऐसा अर्थ करणा अपणी सेनाविषे तौ ता अर्जुनकी पूर्वभी कृपा होती भई। और तिस कालविषे तौ ता अर्जुनकी कौरवोंकी सेनाविषेभी अपरा नामा दूसरी कृपा होती भई। इहां (विषीदन्निदमब्रवीत्) या वचनकरिकै विषाद वचन उच्चारण या दोनोंविषे समानकालपणा कथन करा। ताकरिकै ता वचनउच्चारणकालविषे गद्गदकंठता

पृथाका तूं पुत्र है। यातैं तूं हमारा संबंधी है। यातैं यह कृष्णभगवान् हमारे सारथीपणेकूं छोडिके दुर्योधनके पक्षविषे स्थित होवैगा या प्रकारकी चिंता तुमनैं कदाचित्भी नहीं करणी। किंतु हमारे सारथीपणेविषे तूं निश्चिंत होइके इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं निःशंक होइके देख। इहां इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं तूं देख या वचनपर्यंत जो भगवान्का कहना है ताका यह अभिप्राय है मैं तुम्हारे सारथीपणेविषे अत्यंत सावधान हूं। और तं तो अब ही शोकमोहके वशतैं रथीपणेका परित्याग करा चाहता है। यातैं या सेनाके दर्शनकरिकै तुम्हारा कौन प्रयोजन सिद्ध भया। या प्रकार ता अर्जुनकूं धैर्यकी प्राप्ति करणेवासतै सो वचन भगवान्ने कथन करा है। अन्यथा सो भगवान् दोनों सेनावोंके मध्यविषे रथकूं स्थापन करता भया इतनाही वचन कहणा योग्य था, इति ॥ २४ ॥ २५ ॥ ❀ ॥ शंका—ता दोनों सैनावोंके मध्यविषे स्थित होइके सो अर्जुन क्या देखता भया। या प्रकारकी धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए सो संजय कहै है।

(मू. श्लो.) तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथपितामहान् ॥ आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ॥ (पदच्छेदः) ॥ तत्र। अपश्यत्। स्थितान्। पार्थः। पितॄन्। अथ। पितामहान्। आचार्यान् ॥ मातुलान्। भ्रातॄन्। पुत्रान्। पौत्रान्। सखीन्। तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्। सुहृदः। च। एव। सेनयोः। उभयोः। अपि।
(पदार्थः) या सेनाकूं देखो ऐसी भगवान्की आज्ञाके हुए सो अर्जुन दोनों सैनावोंविषे स्थित पितृव्योंकूं तथा पितामहोंकूं तथा आचार्योंकूं तथा मातुलोंकूं तथा भ्रातावोंकूं तथा पुत्रोंकूं तथा पौत्रोंकूं तथा सखावोंकूं ॥ २६ ॥ श्वशुरोंकूं तथा सुहृदोंकूं ही देखता भया ॥

टीका। हे धृतराष्ट्र! ता कृष्णभगवान्नैं युद्धके आरंभ करावणेवासतै जब ता अर्जुनके प्रति सेना देखनेकी आज्ञा करी तब ही सो अर्जुन दोनों सेनावोंविषे स्थित जो योद्धा हैं तिनोंकूं देखता भया। तहां परसेनाविषे सो अर्जुन अपने भूरिश्रवादिक पितृव्योंकूं देखता भया। तथा भीष्म सोमदत्त आदिक पितामहोंकूं देखता भया। तथा द्रोण कृप आदिक आचार्योंकूं देखता भया। तथा शल्य शकुनि आदिक मातुलोंकूं देखता भया। तथा दुर्योधन आदिक भ्रातावोंकूं देखता भया। तथा लक्ष्मण आदिक पुत्रोंकूं देखता भया। तथा तिन लक्ष्मणादिक पुत्रोंके पुत्रोंकूं देखता भया। तथा अपने समान

जो भक्तजनोंकूं प्राप्त होवै ताका नाम गुडाक है । ऐसा शिवभगवान् है । तहां श्रुतिः—" स्वादुष्किलायंमधुमानुतायम्" इति । ऐसा शिवभगवान् है ईश जिसका ताका नाम गुडाकेश है, इति । और हृषीक नाम इंद्रियोंका है । तिन सर्व इंद्रियोंकूं जो अपणे अपणे कार्यविषे प्रवृत्त करै ताका नाम हृषीकेश है । ऐसे हृषीकेशभगवान्के प्रति जब ता गुडाकेश अर्जुननैं दोनों सेनावोंके मध्यविषे रथके स्थापन करणेकी आज्ञा करी तब सो कृष्णभगवान्, यह अर्जुन हमारा भृत्य होइकै मेरेकूं स्वामीकूं नीचकर्मरूप सारथीपणेविषे प्रेरणा करता है या प्रकारका दोष आरोपण करिके ता अर्जुनऊपरि क्रोध नहीं करता भया । जिस वासते सो कृष्णभगवान् सर्वदा भक्तजनोंके अधीन रहै है । तथा ता अर्जुनकूं युद्धतैं निवृत्तभी नहीं करता भया । किंतु ता अर्जुनके वचनकूं मानिकै तिन दोनों सेनावोंके मध्यदेशविषे भीष्मद्रोण दोनोंके सन्मुख तथा सर्व राजावोंके सन्मुख ता अर्जुनके उत्तम रथकूं स्थापन करता भया । इहां यद्यपि सर्व राजावोंके सन्मुख ता रथकूं स्थापन करता भया इतने मात्र कहणेकरिकैही भीष्मद्रोणादिक सर्व राजावोंका ग्रहण होइसकै है यातैं भीष्मद्रोणका पृथक् कहणा अनुचित है । तथापि सर्व राजावोंविषे ता भीष्मद्रोणकी अत्यंत प्रधानता बोधन करणेवासतै तिन दोनोंका पृथक् ग्रहण करा है । तहां रथकूं स्थापन करता भया इतने कहणेकरिकैही यद्यपि निर्वाह होइ सकै है तथापि दूसरे सर्व रथोंतैं ता रथविषे उत्कृष्टता बोधन करणेवासतै ता रथका उत्तम यह विशेषण दिया है । ता रथकी उत्कृष्टताविषे यह हेतु है एक तौ सो रथ अग्निदेवतानैं दिया है । और दूसरा साक्षात् श्रीकृष्णभगवान् ता रथके चलावणेवारा सारथी है । और तीसरा साक्षात् अर्जुन जिस रथविषे स्थित है । और चतुर्थ हनुमान् जिस रथकी ध्वजाविषे स्थित है । इतने हेतुवोंकरिकै ता रथविषे सर्व रथोंतैं उत्कृष्टता है । ऐसे उत्तम रथकूं दोनों सेनावोंके मध्यविषे स्थापन करिकै सर्वके अंतर गुह्य अभिप्रायकूं जाणणेहारा सो श्रीकृष्णभगवान् या अर्जुनकूं इन संबंधियोंके दर्शनतैं शोकमोहकी प्राप्ति भई है या प्रकार जानिकै उपहाससहित ता अर्जुनके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया । हे पार्थ ! कुरुवंशविषे है उत्पत्ति जिनोंकी ऐसे जो ये भीष्मादिक एकठे हुए हैं तिनोंकूं तूं भलीप्रकारतैं देख । इहां (हे पार्थ) या प्रकारके संबोधनकरिकै भगवान्नैं यह अर्थ सूचन करा पृथा नामा माताका जो पुत्र होवै ताका नाम पार्थ है । सा पृथा अपणे स्त्रीस्वभावतैं सर्वदा शोकमोहकरिकै युक्त है । ता पृथाका तूं पुत्र है । यातैं तुम्हारेविषेभी सो शोक मोह प्राप्त भया है । या प्रकार अर्जुनके उपहासकूं पार्थ या शब्दकरिकै सूचन करता हुआ श्रीभगवान् अपणेविषे हृषीकेश शब्दका अर्थरूप अंतर्यामीपणा बोधन करता भया इति । अथवा (हे पार्थ) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । हमारे पिताकी भगिनी जो पृथा है तिस

(मू. श्लो.) संजय उवाच ॥ एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ॥ उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥ (पदच्छेदः) एवम् । उक्तः । हृषीकेशः । गुडाकेशेन । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । स्थापयित्वा । रथोत्तमम् ॥२४॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः । सर्वेषाम् । च । महीक्षिताम् । उवाच । पार्थ । पश्य । एतान् । समवेतान् । कुरून् । इति ॥ २५ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र ! इस प्रकार गुडाकेश अर्जुनकरिके कह्या हुआ हृषीकेश भगवान् दोनों सेनावोंके मध्यदेशविषे भीष्मद्रोण दोनोंके सन्मुख तथा सर्व राजावोंके सन्मुख ता उत्तम रथकूं स्थापन करिके हे पार्थ इन एकट्ठे हुए कारवोंकूं तूं देख यों प्रकारका वचन कहता भया ॥ २४ ॥ २५ ॥

टीका । हे (भारत) यह धृतराष्ट्रका संबोधन है । ता संबोधनकारिकै संजयनैं यह अर्थ सूचन करा तुम्हारी भरतराजाके वंशविषे उत्पत्ति हुई है । ता अपणे भरतवंशकी मर्यादाकूं विचार करिकै भी तुम्हारेकूं अपणे संबंधियोंका द्रोह परित्याग करणेयोग्य है, इति ॥ इहां अर्जुनकूं गुडाकेश नाम करिकै कथन करा ता गुडाकेश शब्दका यह अर्थ है । गुडाकायाः ईशः गुडाकेशः । अर्थ, यह—गुडाका नाम निद्राका है ता निद्राका जो ईश होवै क्या जिसनैं निद्राकूं अपणे वशवर्ती करी होवै ताका नाम गुडाकेश है, इति । अथवा गुडावत् केशाः यस्य स गुडाकेशः । अर्थ, यह—" अंगुष्ठतर्जनीयोगो गुडा नाम्नी तु मुद्रिका " । या शास्त्रके वचननैं हस्तके अंगुष्ठका जो तर्जनी अंगुलीके साथि संबंध है ताका नाम गुडा मुद्रिका है । ता गुडामुद्रिकाके परिमाण हैं अग्र केश जिसके ताका नाम गुडाकेश है, इति । अथवा गुडं अकति व्याप्नोतीति गुडाकः शिवः स शिवः ईशो यस्य स गुडाकेशः । अथ, यह—"गुडो गोलेक्षुपाकयोः" या कोशके वचननैं गुडशब्द गोलका वाचक है । तथा लोकप्रसिद्ध गुडका वाचक है । तहां जैसे अग्निकरिकै तपे हुए लोहपिंडकूं सो अग्नि अंतरबाहिर व्यापक करिकै रहै है तैसे या ब्रह्मांडरूप गोलकूं अंतरबाहिर व्याप्त करिकै जो स्थित होवै ताका नाम गुडाक है । ऐसा शिवभगवान् है । तहां श्रुतिः—"विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवम् " ॥ अर्थ, यह—सर्व विश्वकूं व्याप्त करणेहारा जो एक शिव है ता शिवकूं अपणा आत्मारूप जानिके यह पुरुष मोक्षकूं प्राप्त होवै है । ऐसा गुडाकनामा शिव है ईश जिसका ताका नाम गुडाकेश है, इति । अथवा गुडवन्मधुररसान् भक्तान् अकति प्राप्नोतीति गुडाकः शिवः । स शिवः ईशो यस्य स गुडाकेशः अर्थ, यह—जैसे यह लोकप्रसिद्ध गुड मधुर होवै है तैसे मधुर हुआ

योद्धावोंविषे किस योद्धाकूं हमारे साथि युद्ध करणा योग्य है । या प्रकारका एक महान् कौतुक है ता कौतुकका ज्ञानही या दोनों सेनावोंके मध्यविषे रथ स्थित करनेका प्रयोजन है, इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका—हे अर्जुन ! ये भीष्मद्रोणादिक बांधवही युद्धके संकल्पका परित्याग करिकै तुम दोनोंका परस्पर मित्रभाव करावैंगे तूं युद्धका संकल्प किसवासतै करता है। ऐसी श्रीकृष्णभगवान्की शंकाके हुए सो अर्जुन कहै है ॥

(मू. श्लो.) योत्स्यमानानवेक्षेहं य एतेऽत्र समागताः ॥ धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ (पदच्छेदः) योत्स्यमानान् । अवेक्षे । अहम् । ये । एते । अत्र । समागताः । धार्तराष्ट्रस्य । दुर्बुद्धेः । युद्धे । प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ (पदार्थः) दुर्बुद्धिवाले धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनके युद्धविषे प्रियकी इच्छा करते हुए जे ये भीष्मद्रोणादिक याँ कुरुक्षेत्रभूमिविषे प्राप्त हुए हैं तिनं युद्धकी कामनावाले भीष्मद्रोणादिक योद्धावोंकूं मैं अर्जुन भलीप्रकार देखौं ॥ २३ ॥

टीका । हे भगवन् ! अपणी रक्षा करणेहारे उपायका अज्ञानरूप जो दुर्बुद्धि है ता दुर्बुद्धिकरिकै युक्त जो यह धृतराष्ट्रका पुत्र दुर्योधन है ता दुर्योधनके केवल युद्धकरिकैही प्रियकी इच्छा करते हुए जो ये भीष्मद्रोणादिक योद्धा या धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे प्राप्त हुए हैं तिन युद्धकी इच्छा वाले भीष्मद्रोणादिकोंकूं जैसे मैं भली प्रकारतैं देखौं तैसे मेरे रथकूं आप स्थित करो । इहां (युद्धे प्रियचिकीर्षवः) या विशेषणके कहणेकरिकै अर्जुननें यह अर्थ सूचन करा ये भीष्मद्रोणादिक वृद्ध पुरुषभी केवल युद्धकरिकैही या दुर्योधनके हितकी इच्छा करते हैं । ता दुर्योधनके दुर्बुद्धि आदिकोंकी निवृत्ति करिकै या दुर्योधनके हितकी इच्छा करते नहीं । ऐसे भीष्मद्रोणादिकों नैं हम दोनोंकी मित्रता क्या करावणी है, इति । और (योत्स्यमानान्) या विशेषणके कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा या भीष्मद्रोणादिकोंकूं केवल हमारे साथि युद्ध करनेकीही इच्छा है कांई हमारे साथि मित्रभाव करनेकी इनोंकूं इच्छा है नहीं । यातैं इनोंके साथि युद्ध करणेवासतै हमारेकूं प्रथम इनोंका देखणा उचित है, इति ॥ ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका—इस प्रकार अर्जुनकरिकै प्रेरणा करा हुआ सो श्रीकृष्णभगवान् अहिंसारूप परम धर्मकूं आश्रयण करिकै ता अर्जुनकूं अवश्यकरिकै ता युद्धतैं निवृत्त करैगा । या प्रकारके धृतराष्ट्रके अभिप्रायकी शंका करिकै ता शंकाके निवृत्त करणेकी इच्छावान् सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया या प्रकारका वचन वैशंपायन जनमेजयके प्रति कथन करै है ।

जिस वासतै प्रयोजननैं विना मंद पुरुषोंकीभी प्रवृत्ति होवै नहीं तौ बुद्धिमान् पुरुषोंकी प्रयोजननैं विना किस प्रकार प्रवृत्ति होवैगी ? किंतु नहीं होवैगी । ऐसी श्रीकृष्णभगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन ताका प्रयोजन कथन करै है ।

(मू. श्लो.) यावदेतान्निरीक्षेहं योद्धुकामानवस्थितान् ॥ कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ (पदच्छेदः) यावत् । एतान् । निरीक्षे । अहम् । योद्धुकामान् । अवस्थितान् । कैः । मया । सह । योद्धव्यम् । अस्मिन् । रणसमुद्यमे ॥२२॥ (पदार्थः) हे भगवन् जितने देशविषे स्थित होइके मैं अर्जुन युद्धकी कामनावाले तथा रणभूमिविषे स्थित इन भीष्मादिक योद्धावोंकूं भली प्रकार देखौं तितने देशविषे हमारे रथकूं ले जाइके स्थित करो ॥ इस युद्धरूप व्यापारविषे मैं ने किनोंके साथि युद्ध करणा योग्य है ॥ २२ ॥

टीका । हे भगवन् ! हमारे साथि युद्ध करनेकी है कामना जिनोंकूं ऐसे जो युद्धभूमिविषे स्थित ये भीष्मद्रोणादिक वीर पुरुष हैं तिन भीष्मद्रोणादिक सर्व योद्धावोंकूं जितने देशविषे जाइकै मैं देखणेविषे समर्थ होवौं तितने देशविषे या हमारे रथकूं आप स्थित करो । अथवा (यावत्) यह पद कालका वाचक है । क्या जितने कालपर्यंत इन भीष्मादिक सर्व योद्धावोंकूं मैं भली प्रकारसैं देखौं तितने कालपर्यंत या हमारे रथकूं दोनों सेनावोंके मध्यविषे आप स्थित करो, इति । इहां (योद्धुकामान्) या विशेषणकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा ये भीष्मद्रोणादिक केवल युद्धकीही कामनावाले हैं । यातैं हमारे साथि कदाचित्‌भी ये मित्रभाव करैंगे नहीं । और (अवस्थितान्) या विशेषणकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा हमारे जयकरिकै ये भीष्मद्रोणादिक या रणभूमितैं कदाचित्‌भी चलायमान नहीं होवैंगे, इति । शंका—हे अर्जुन ! तूं तौ युद्धके करणेहारा है कोई युद्धके देखणेहारा तूं नहीं है । यातैं भीष्मद्रोणादिक योद्धावोंके देखणेकरिकै तुम्हारा कौन प्रयोजन सिद्ध होवैगा ? ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए सो अर्जुन तिनोंके देखणेका प्रयोजन कथन करै है । (कैर्मया सह योद्धव्यं इति) इहां (सह) या पदका (कैः मया) या दोनों पदोंके साथि संबंध संभवै है । ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है । बांधवोंकाही परस्पर युद्धका उद्यम हुआ है जिसविषे ऐसी जो यह रणभूमि है तिसविषे स्थित जो ये हमारे प्रतिपक्षी भीष्मद्रोणादिक हैं तिनोंविषे किस योद्धाके साथि हमारेकूं युद्ध करणा योग्य है । तथा तिन भीष्मद्रोणादिक सर्व

भया । ता कृष्णभगवान्‌की संमतितैं विना सो अर्जुन तिस कालविषे स्वतंत्र होइकै किंचित्‌मात्र भी कार्यकूं नहीं करता भया । इहां (हे महीपते) या संबोधनकरिकै संजयने धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ सूचन करा । ये अर्जुनादिक पांडव जिस कार्यका आरंभ करते हैं सो प्रथम विचार करिकै ही करते हैं । विचारतैं विना किसी कार्यविषे भी प्रवृत्त होते नहीं । यातैं ये पांडव राजनीतिविषे तथा धर्मविषे अत्यंत कुशल हैं । और तुम्हेंनैं जो इन पांडवोंका राज्य लिया है सो विचार कियेतैं विना ही लिया है । यातैं तुम्हारेविषे राजनीति तथा धर्म दोनों नहीं हैं । यातैं तुम्हारा कदाचित् भी जय होणेहारा नहीं है । किंतु नीतिधर्मवाले इन पांडवोंका ही जय होवैगा, इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब अढाई श्लोककरिकै ता अर्जुनके वचनका निरूपण करैं हैं ।

(मू० श्लो०) अर्जुन उवाच ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥ (पदच्छेदः) सेनयोः । उभयोः । मध्ये । रथं । स्थापय । मे । अच्युत ॥ २१ ॥ (पदार्थः) हे अच्युत दोनों सेनाआके मध्यभागविषे मेरे रथकूं स्थापन करो ॥ २१ ॥ ॥

टीका । हे श्रीकृष्णभगवन् ! यह जो हमारी सेना है । तथा हमारे प्रतिपक्षी दुर्योधनादिकोंकी जो यह सेना है तिन दोनों सेनाओंके मध्यदेशविषे या हमारे रथकूं आप स्थित करो । या प्रकारकी आज्ञा सो अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति करता भया । इतने कहणेकरिकै यह अर्थ सूचन करा । परमेश्वरके जो अनन्य भक्त हैं तिन भक्तोंकूं या लोकविषे कोई भी कार्य दुर्घट नहीं है । जिस कारणतैं साक्षात् परमेश्वर भी तिन भक्तोंकी आज्ञाकूं अंगीकार करैं हैं । यातैं इन पांडवोंका निश्चयकरिकै जय होवैगा, इति ॥ शंका— हे अर्जुन ! या दोनों सेनाओंके मध्यविषे जो मैं तुम्हारे रथकूं स्थापन करौंगा तौ यह दुर्योधनादिक शत्रु हमारेकूं रथतैं नीचै गिराइ देवैंगे । या प्रकारकी श्रीकृष्णभगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहै है (अच्युत इति) हे भगवन् सर्व देशविषे तथा सर्व कालविषे तथा सर्व वस्तुविषे जो नाशकूं नहीं प्राप्त होवै है ताकूं अच्युत कहैं हैं ऐसे अच्युत आप हो । ऐसे आपकूं कौन पुरुष नीचै गिरावनेमें समर्थ है किंतु ऐसा कोई भी पुरुष समर्थ नहीं है । इहां (हे अच्युत) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीकृष्णभगवान्‌विषे निर्विकारता बोधन करी । और निर्विकारविषे क्रोधादिक विकार संभवैं नहीं यातैं मेरे रथकूं आप स्थापन करो या प्रकारकी आज्ञा करनेकरिकै श्रीभगवान्‌विषे संभावना करा जो अर्जुनऊपरि क्रोध है ता क्रोधकूं भी अच्युत या संबोधनकरिकै अर्जुननैं निवृत्त करा इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका—हे अर्जुन या दोनों सेनाओंके मध्यविषे तो मैं तुम्हारे रथकूं ले जाताहूं परंतु तहां रथके ले जाणेकरिकै तुम्हारा कौन प्रयोजन सिद्ध होवैगा । सो अपणा प्रयोजन तूं हमारेप्रति कथन कर

यह। जैसे शस्त्रकरिकै हृदयदेशके भेदन कियेतैं पीडा होवै है। तिसी प्रकारकी पीडाकूं सो शब्द उत्पन्न करता भया । इहां (पृथिवीं चैव) या मूलश्लोकके पदविषे स्थित जो चकार है ता चकारकरिकै पूर्वादिक सर्व दिशाओंका तथा पर्वतकी गुहाओंका ग्रहण करा है। (एव) यह शब्द श्लोकके पादपूर्णतावासतै है, इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ पूर्वश्लोकविषे धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रादिक संबंधियोंविषे भयकी प्राप्ति कथन करी अब पांडवोंविषे तिन दुर्योधनादिकोंतैं विपरीत निर्भयताका निरूपण करैं हैं ।

(मू. श्लो.) अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्त्तराष्ट्रान् कपिध्वजः ॥ प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पांडवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ॥ (पदच्छेदः) ॥ अथ । व्यवस्थितान् । दृष्ट्वा । धार्त्तराष्ट्रान् । कपिध्वजः । प्रवृत्ते ! शस्त्रसंपाते । धनुः । उद्यम्य । पांडवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं । तदा । वाक्यं । इदं । आह । महीपते । (पदार्थः) हे पृथिवीके पति धृतराष्ट्र ता भयकी उत्पत्तितैं अनंतरभी युद्धके उद्यमकरिकै स्थित धृतराष्ट्रके संबंधियोंकूं देखिकरिकै तिस कालविषे शस्त्रप्रहारके प्रवर्त्तमान हुए कपिध्वज अर्जुन गांडीव नामा धनुषकूं हाथविषे उठाइके श्रीकृष्णभगवान्के प्रति यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ २० ॥

टीका। हे धृतराष्ट्र ! पांडवोंके शंखोंके महान् शब्दोंकूं श्रवण करिकै तुम्हारे दुर्योधनादिकोंके चित्तविषे उत्पन्न भया जो भय है ता भयकरिकै यद्यपि तिन दुर्योधनादिकोंकूं ता युद्धतैं भागणाही प्राप्त भया था । तथापि ते दुर्योधनादिक अपणे ढीठ स्वभावतैं ता युद्धतैं नहीं भागते भये। उलटा युद्धके उद्यमकरिकै युक्त हुए ता रणभूमिविषेही स्थित होते भये। ऐसे दुर्योधनादिकोंकूं नेत्रोंसैं देखिकरिकै ता कालविषे सो कपिध्वज अर्जुन युद्ध करणेवासतै गांडीव नामा धनुषकूं अपणे हस्तविषे उठाइके अपणे सारथी हृषीकेशभगवान्के प्रति या प्रकारका वचन कहता भया इहां सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है पराक्रम जिसका ऐसा जो हनुमान् है ताकूं कपि कहैं हैं सो हनुमान् कपि है ध्वजाविषे जिसके ताकूं कपिध्वज कहैं हैं। ता कपिध्वज विशेषणके कहणेकरिकै संजयनैं यह अर्थ बोधन करा। जिस हनुमान्की सहायताकरिकै श्रीरामचंद्रनैं रावणादिक सर्व असुरोंकूं हनन करा है । ऐसा हनुमान् जिस अर्जुनकी ध्वजाविषे स्थित है। जिस अर्जुनकूं किसीभी योद्धातैं भय होवैगा नहीं और नेत्रादिक सर्व इंद्रियोंका प्रवर्तक होणेतैं सर्व अंतःकरणकी वृत्तियोंका जो ज्ञाता होवै ताकूं हृषीकेश कहैं हैं। ऐसे अंतर्यामी श्रीकृष्णभगवान्केप्रति सो अर्जुन या प्रकारका वचन कहता

टीका । हे धृतराष्ट्र ! श्रीकृष्णभगवान्सहित अर्जुनादिक पंच पांडवोंकी प्रवृत्तिकूं देखिकरिकै तिन पांडवोंके पक्षपाति काशीराजा तथा शिखंडी तथा धृष्टद्युम्न तथा विराट राजा तथा सात्यकि राजा तथा द्रुपदराजा तथा द्रौपदीके प्रतिविंध्यादिक पंचपुत्र तथा सुभद्राका पुत्र अभिमन्यु ये सर्व योद्धा भिन्न भिन्न अपणे अपणे शंखोंकूं बजावते भये । इहां मुखविषे स्थित श्मश्रुरूप बालोंतैं रहितपणेका नाम शिखंड है सो शिखंड जिसविषे होवै ताका नाम शिखंडी है । सो शिखंडी पंचाल देशका राजा है । और धृष्टद्युम्न या नामविषे धृष्ट और द्युम्न ये दो पद हैं तहां शत्रुवोंकूं पीडा करणेहारेका नाम धृष्ट है द्युम्न नाम बलका है । शत्रुवोंकूं पीडा करणेहारा है बल जिसका ताकूं धृष्टद्युम्न कहै हैं । और सत्यक नामा राजाका जो पुत्र होवै ताका नाम सात्यकि है । और जानुपर्यंत जिसकी बाहु विशाल होवैं ताकूं महाबाहु कहै हैं । तहां (परमेष्वासः) यह विशेषण काशीराजाका है । और (महारथः) यह विशेषण शिखंडी राजाका है । और (अपराजितः) ये विशेषण सात्यकि राजाका है । और (महाबाहुः) यह विशेषण सुभद्राके पुत्रका है । अथवा परमेष्वासः महारथः अपराजितः महाबाहुः ये चारों विशेषण काशीराजातैं आदि लैके सर्व राजाओंके जानणे इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ता अर्जुनादिक पांडवोंके शंखोंके शब्दकूं श्रवण करिकै तिन दुर्योधनादिकोंकी किस प्रकारकी स्थिति होती भई या प्रकारकी धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए संजय कहै है ।

(मू. श्लो.) स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ॥ नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) सः । घोषः । धार्तराष्ट्राणां । हृदयानि । व्यदारयत् । नभः । च । पृथिवीं । च । एव । तुमुलः । व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ (पदार्थः) सो महान् शंखोंका शब्द आकाशकूं तथा पृथिवीकूं अपणे प्रतिध्वनिरूप शब्दकरिकै पूर्ण करता हुआ धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रादिक संबंधियोंके हृदयोंकूं विदारण करता भया ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! तुम्हारे दुर्योधनादिकोंकी सेनाविषे भी सो शंखादिकोंका शब्द यद्यपि महान् होता भया । तथापि सो शंखादिकोंका शब्द तिन पांडवोंकूं किंचित्मात्र भी क्षोभकी प्राप्ति नहीं करता भया । और पांडवोंकी सेनाविषे स्थित जो पांचजन्य, देवदत्त, पौंड्र इत्यादिक शंख हैं तिन शंखोंके बजावणेतैं उत्पन्न भया जो ध्वनिरूप शब्द है सो ध्वनिरूप महान् शब्द अपणी प्रतिध्वनिरूप शब्दकरिकै आकाशकूं तथा पृथिवीकूं तथा पूर्वादिक दिशाओंकूं तथा पर्वतकी गुहाओंकूं पूर्ण करता हुआ तुम्हारे संबंधी दुर्योधनादिकोंके तथा सेनापति भीष्मादिकोंके हृदयोंकूं भेदन करता भया । तात्पर्य

इहां कुंतीमातानैं महान् तप करिकै धर्मराजाका आराधन करा था। ता धर्मराजातैं कुंतीकूं युधिष्ठिर पुत्रकी प्राप्ति भईथी। यातैं यह युधिष्ठिर राजा महाबलवान् है। या प्रकार ता युधिष्ठिरके प्रभावका बोधन करणेवासतै संजयनैं ता युधिष्ठिरका कुंतीपुत्र यह विशेषण दिया है। और सो युधिष्ठिर राजसूययज्ञका कर्ता है। यातैं राजाशब्दकी मुख्य अर्थता इस युधिष्ठिरविषेही घटै है। या प्रकारके अर्थका बोधन करणेवासतै संजयनैं ता युधिष्ठिरका राजा यह विशेषण दिया है। और युद्धविषे जयरूप फलका भागी हुआ जो स्थित होवै ताकूं युधिष्ठिर कहैं हैं। ता युधिष्ठिरपदकारिकै संजयनैं यह अर्थ सूचन करा या संग्रामविषे जयरूप फलका भागी हुआ यह युधिष्ठिरही स्थित होवैगा। ताके प्रतिपक्षी दुर्योधनादिक ता जयरूप फलके भागी हुए या संग्रामविषे स्थित होवैं गे नहीं इति। इहां दो श्लोकोंकारिकै पांचजन्य, देवदत्त, पौंड्र, अनंतविजय, सुघोष, मणिपुष्पक ये षट् शंखोंके नाम कथन करे। ता करिकै संजयनैं यह अर्थ बोधन करा या पांडवोंकी सेनाविषे अपणे अपणे नामोंकरिकै प्रसिद्ध इतने शंख हैं। और दुर्योधन राजाकी सेनाविषे तौ अपणे नामकारिकै प्रसिद्ध एकभी शंख नहीं है। यातैं यह पांडवोंकी सेना तुम्हारे दुर्योधनादिक पुत्रोंकी सेनातैं अत्यंत प्रबल है इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब धृतराष्ट्रकूं जो अपणे पुत्रोंके जयकी आशा है ता आशाके निवृत्त करणेवासतै सो संजय ता पांडवोंके पक्षविषे वर्त्तमान दूसरे राजाओंकी एकसंमतिकूं दो श्लोकोंकारिकै कथन करै है।

(मू. श्लो.) काश्यश्च परमेष्वासः शिखंडी च महारथः ॥ धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ॥ सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥ १८ ॥ (पदच्छेदः) काश्यः । च । परमेष्वासः । शिखंडी । च । महारथः । धृष्टद्युम्नः । विराटः । च । सात्यकिः । च । अपराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदः । द्रौपदेयाः । सर्वशः । च । पृथिवीपते । सौभद्रः । च । महाबाहुः । शंखान् । दध्मुः । पृथक् । पृथक् ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे पृथिवीका पति धृतराष्ट्र महान् धनुषवाला जो काशीका राजा है तथा महारथी जो शिखंडी है तथा धृष्टद्युम्न जो है तथा विराट राजा जो है तथा शत्रुवोंकारिकै नहीं जीत्या हुआ जो सात्यकि राजा है ॥ १७ ॥ तथा द्रुपद राजा जो है तथा द्रौपदीके जो पंच पुत्र हैं तथा महान् बाहुवाला जो सुभद्राका पुत्र है यह सर्व योद्धा भिन्न भिन्न अपणे अपणे शंखोंकूं बजावते भये ॥ १८ ॥

(मू. श्लो.) पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः ॥ पौंड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ (पदच्छेदः) पांचजन्यं । हृषीकेशः । देवदत्तं । धनंजयः । पौंड्रं । दध्मौ । महाशंखं । भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ (पदार्थः) श्रीकृष्णभगवान् पांचजन्य नामा शंखकूं बजावता भया तथा अर्जुन देवदत्त नामा शंखकूं बजावता भया और लोकोंकूं भयकी प्राप्ति करणेहारे हैं कर्म जिसकें तथा वृकंकी न्याई है उदर जिसका ऐसा भीमसेन पौंड्र नामा महाशंखकूं बजावता भया ॥ १५ ॥

टीका। पंचजनेंतें जो उत्पन्न होवै ताकूं पांचजन्य कहे हैं ता पांचजन्य नामा शंखकूं हृषीकेश बजावता भया । और देवताओंनें दिया हुआ जो शंख है ताका नाम देवदत्त है ता देवदत्त नामा शंखकूं धनंजय बजावता भया । इहां संजयनें श्रीकृष्णभगवान्कूं जो हृषीकेश नाम करिके कथन करा है ताका यह अभिप्राय है हृषीकेश या नामविषे हृषीक और ईश ये दो पद हैं तहां हृषीक नाम इंद्रियोंका है ईश नाम प्रेरकका है ते दोनों पद मिलिके सर्व इंद्रियोंकूं अपणे अपणे कार्यविषे प्रवृत्त करणेहारे अंतर्यामी ईश्वरकूं कथन करैं हैं। ऐसा सर्वका अंतर्यामी कृष्णभगवान् जिन पांडवोंकी सहायताविषे है तिन पांडवोंकूं तुम्हारे दुर्योधनादिक पुत्र जय करि सकैंगे नहीं और ता संजयनें अर्जुनकूं जो धनंजय नामकरिके कथन करा है ताका यह अभिप्राय है सर्व दिशाओंके जयकालविषे सर्व राजाओंकूं जीतिकरिके अर्जुन धनकूं लेआवता भया है । या कारणतें ता अर्जुनकूं धनंजय कहैं हैं। ऐसा महान् पराक्रमवाला अर्जुन तुम्हारे पुत्रोंतें जीत्या जावेगा नहीं । और ता संजयनें भीमसेनका जो वृकोदर यह विशेषण दिया है ताका यह अभिप्राय है वृककी न्याईं ता भीमसेनविषे बहुत अन्नके पचावणेकी सामर्थ्य है यातें सो भीमसेन अत्यंत बलवान् है, इति ॥ १५ ॥

(मू. श्लो.) अनंतविजयं राजा कुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ (पदच्छेदः) अनंतविजयं । राजा । कुंतीपुत्रः युधिष्ठिरः । नकुलः । सहदेवः । च । सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ (पदार्थः) कुंतीका पुत्र राजा युधिष्ठिर अनंतविजय नामा शंखकूं बजावता भया और नकुल तथा सहदेव ये दोनों यथाक्रमतैं सुघोष और मणिपुष्पक या दोनों शंखोंकूं बजावते भये ॥ १६ ॥

टीका। नाशतें रहित विजय प्राप्त होवै जिसतें ताका नाम अनंतविजय है ऐसे अनंतविजय नामा शंखकूं कुंतीका पुत्र राजा युधिष्ठिर बजावता भया ।

धृतराष्ट्र तौ सेनापति भीष्मकी प्रवृत्तितैं अनंतर ता दुर्योधनकी सेनाविषे अनेक शंख तथा अनेक भेरी तथा अनेक पणव तथा अनेक आनक तथा अनेक गोमुख शीघ्रं ही वजंते भये सो शंखादिकोंका शब्द महान् होता भया ॥ १३ ॥ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! ता सेनापति भीष्मके शंखके शब्दकूं श्रवण करिकै उत्पन्न हुआ है युद्ध करणेका उत्साह जिन्होंविषे ऐसे जो द्रोणाचार्यादिक योद्धा हैं ते सर्व योद्धा अपणे अपणे शंखोंकूं शीघ्रही बजावते भये । तथा दूसरे सेनाचर पुरुष भेरी, पणव, आनक, गोमुख इत्यादिक वादित्रोंकूं शीघ्रही बजावते भये । तिन शंख भेरी आदिकोंका सो ध्वनिरूप शब्द महान् होता भया ता महान् शब्दकूं श्रवणकरिकैभी तिन पांडवोंकूं किंचित्मात्रभी क्षोभ नहीं होता भया । इहां पणव नाम मृदंगका है । आनक नाम नगारेका है । गोमुख नाम रणसिंहाका है, इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार दुर्योधन राजाकी सेनाकी प्रवृत्तिकूं कथन करिकै अब पांडवोंकी सेनाकी प्रवृत्तिकूं सो संजय कथन करै है ।

(मू. श्लो.) ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यंदने स्थितौ ॥ माधवः पांडवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) ततः । श्वेतैः । हयैः । युक्ते । महति । स्थितौ । स्यंदने । माधवः । पांडवः । च । एव । दिव्यौ । शंखौ । प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र भीष्मादिकोंके शंखादिकोंके शब्द श्रवणतैं अनंतर श्वेतवर्णवाले अश्वोंकरिकै युक्त तथा महान् ऐसे रथविषे स्थित जो श्रीकृष्णभगवान् है तथा अर्जुन है ते दोनों दिव्य शंखोंकूं बजावते भये ॥ १४ ॥

टीका । या श्लोकके अक्षरोंका अर्थ स्पष्टही है । ताका भावार्थ यह है । यद्यपि पांडवोंकी सेनाविषे अर्जुनकी न्याई तथा भगवान्की न्याई दूसरेभी सर्व योद्धा अपणे अपणे रथोंविषेही स्थित थे । यातैं केवल अर्जुनका तथा कृष्णभगवान्काही रथस्थत्वरूपविशेषण संभवै नहीं । तथापि (ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते) इत्यादिक विशेषणयुक्त रथविषे जो अर्जुनकी तथा भगवान्की स्थिति कथन करी है सो दूसरे रथोंतैं ता अर्जुनके रथकी उत्कृष्टता बोधन करणेवासतै कथन करी है । यातैं अग्नि देवतानैं अर्जुनके ताईं दिया जो रथ है सो रथ किसीभी शत्रुकरिकै चलायमान होइ सकै नहीं । ऐसे महान् रथविषे स्थित जो अर्जुन तथा कृष्ण भगवान् है ते दोनों किसीभी शत्रुकरिकै जीते जावैं नहीं, इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ अब सो अर्जुन तथा श्रीकृष्णभगवान् जिन शंखोंकूं बजावते भये हैं तिन शंखोंके नाम तथा भीमादिकोंके शंखोंके नाम दो श्लोकोंकरिकै वर्णन करैं हैं ।

(मू. श्लो.) तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ॥ सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः) तस्य । संजनयन् । हर्षं । कुरुवृद्धः । पितामहः । सिंहनादं । विनद्य । उच्चैः । शंखं । दध्मौ । प्रतापवान् ॥ १२ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र महान् प्रतापवाला तथा कुरुवंशविषे वृद्ध ऐसा भीष्मपितामह तिस दुर्योधन राजाके हर्षकूं उत्पन्न करता हूआ सिंहनादकूं करिकै उच्चैः स्वरतें शंखकं बजावता भया ॥ १२ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ! पांडवोंकी सेनाकूं देखिकरिकै उत्पन्न हुआ है भय जिसकूं तथा ता भयकी निवृत्ति करणेवास्तै कपटकरिकै ता द्रोणाचार्यके शरणकूं प्राप्त हुआ तथा इस काल विषेभी यह दुर्योधन हमारे साथि कपट करे है या प्रकारके असंतोषतैं वाणीमात्रकरिकैभी जिसका आचार्यनैं आदर नहीं करा। तथा ता द्रोणाचार्यकी उपेक्षाकूं जानिकै (अयनेषु च सर्वेषु) इत्यादिक वचनोंकरिकै भीष्मपितामहकी स्तुति करी है जिसनैं ऐसा जो दुर्योधन राजा है । ता दुर्योधनके भयकी निवृत्ति करणेहारा तथा ता दुर्योधन राजाके जयका सूचन करणेहारा ऐसा जो बुद्धिविषे स्थित उल्लासरूप हर्ष है ता हर्षकूं उत्पन्न करता हुआ सो भीष्मपितामह महान् सिंहनादकूं करिकै उच्चैः स्वरतैं शंखकूं बजावता भया । इहां संजयनैं भीष्मके कुरुवृद्ध, पितामह, प्रतापवान् यह तीन विशेषण दिये हैं । तहां (कुरुवृद्धः) या प्रथम विशेषणकरिकै तौ ता भीष्मविषे द्रोणाचार्यके तथा दुर्योधन राजाके अभिप्रायका ज्ञान सूचन करा जिसवास्तै लोकविषे वृद्ध पुरुषोंविषेही पुत्रादिकोंके अभिप्रायका ज्ञान होवै है और (पितामहः) या द्वितीय विशेषणकरिकै जैसे द्रोणाचार्यनैं या दुर्योधनादिकोंकी उपेक्षा करी है तैसे हमारेकूं इन्होंकी उपेक्षा करणी योग्य नहीं है या प्रकारका अभिप्राय सूचन करा । और तीसरे (प्रतापवान्) या विशेषणकरिकै यह अर्थ सूचन करा । उच्चैः स्वरतैं सिंहनादपूर्वक जो भीष्मनैं शंखकूं बजाया है सो भीष्मके शंखका शब्द पांडवोंकी सेनाकूं अवश्यकरिकै भयकी प्राप्ति करैगा इति ॥ १२ ॥ ❀ अब ता सेनापति भीष्मकी प्रवृत्तितैं अनंतर जिस प्रकार सर्व योद्धाओंकी प्रवृत्ति होती भई ताकं संजयनिरूपण करै है ।

(मू. श्लो.) ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ॥ सहसैवाभ्यहन्यंत स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) ततः । शंखाः । च । भेर्यः । च । पणवानकगोमुखाः । सहसा । एव । अभ्यहन्यंत । सः । शब्दः । तुमुलः । अभवत् ॥ १३ ॥ (पदार्थः) हे

भिरक्षितं यह दुर्योधनकी सेनाका विशेषण है इति ॥ १० ॥ ❀ शंका–हे दुर्योधन या पांडवोंकी सेनाकी अपेक्षा करिकै अपणी सेनाकूं प्रबल जानिकै जो तूं भयतैं रहित है तौ किसवासतै तू बहुत कल्पना करता है। ऐसी आशंकाके हुए सो दुर्योधन राजा कहै है।

(मू. श्लो.) अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ॥ भीष्ममेवाभिरक्षंतु भवंतः सर्व एव हि ॥ ११ ॥ (पदच्छेदः) अयनेषु। च। सर्वेषु। यथाभागम्। अवस्थिताः। भीष्मम्। एवं। अभिरक्षंतु। भवंतः। सर्वे। एव हि ॥ ११ ॥ (पदार्थः) जिस कारणतैं द्रोणाचार्यादिक तुम सर्व योद्धा व्यूहरचनायुक्त सेनाके सर्व प्रवेशमार्गोंविषे अपणे अपणे स्थानविषे स्थित हुए याँ भीष्मपितामहकूं हीं सर्व ओरतैं रक्षण करो ॥ ११ ॥

टीका। (अयनेषु च) या पदविषे स्थित जो चकार है सो चकार पूर्व कर्त्तव्यकी अपेक्षा करिकै कर्त्तव्यविशेषका बोधक है। युद्धके प्रारंभकालविषे योद्धा पुरुषोंके यथायोग्य युद्धभूमिविषे पूर्वउत्तरादिक दिशावोंके विभाग करिकै जो स्थितिके स्थान नियम करे जावैं हैं तिन स्थानोंका नाम अयन है। और सर्व सेनाका पति तौ ता सर्व सेनाकूं अपणे आश्रित करिकै ता सर्व सेनाके मध्यविषे स्थित होवै है। सो इस हमारी सेनाका पति भीष्मपितामह है। सो भीष्मपितामह युद्धके अत्यंत अभिनिवेशतैं अपणे सन्मुखदेशकी तरफ तथा अपणे पृष्टदेशकी तरफ तथा अपणे वामभागदक्षिणभागकी तरफ देखता नहीं यातैं द्रोणाचार्यादिक तुम सर्व योद्धा अपणे भिन्न भिन्न रणभूमिनकूं परित्याग करिकै अपणे अपणे यथायोग्य स्थानविषे स्थित हुए या भीष्मपितामहका ही सर्व ओरतैं रक्षण करो जिसकरिकै कोई परसेनाका शत्रु किसी मार्गद्वारा आइकै या भीष्मपितामहका हनन नहीं करे। इस प्रकार सावधान होइकै रक्षण करो। जब तुम सर्व योद्धा या भीष्मपितामहका रक्षण करोगे तबही ता भीष्मपितामहकी कृपातैं हम सर्वोंका रक्षण होवैगा इति ॥ ११ ॥ ❀। शंका–हे संजय! या प्रकारके वचन जब ता दुर्योधन राजानैं कथन करे तिसतैं अनंतर ते भीष्मादिक योद्धा क्या कार्य करते भये। या प्रकारकी ता धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए कोई हमारी स्तुति करो अथवा कोई हमारी निंदा करो इस दुर्योधन राजाके वासतै यह हमारा देह अवश्यकरिकै पतन होवैगा या प्रकारके अभिप्रायकरिकै सो भीष्ममितामह ता दुर्योधनके चित्तविषे हर्ष उत्पन्न करता हुआ सिंहनादकूं तथा शंखके शब्दकूं करता भया या प्रकारका उत्तर सो संजय ता धृतराष्ट्रकेप्रति कथन करै है।

स्त्रविद्याविषे कुशल अनेक शूरवीर हैं यातैं ते दोनों सेना समानही हैं । ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हुए सो दुर्योधन राजा दूसरे प्रकारतैंभी तिन पांडवोंकी सेनातैं अपणी सेनाविषे अधिकता वर्णन करै है ।

(मू. श्लो.) अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥ पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥ (पदच्छेदः) अपर्याप्तं । तत् । अस्माकं । बलं । भीष्माभिरक्षितं । पर्याप्तं । तु । इदं । एतेषां । बलं । भीमाभिरक्षितं ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे आचार्य हमारी सो सेना अनंत है तथा भीष्मकरिकै सर्व ओरतैं रक्षण करी है और यह पांडवोंकी यह सेना तो न्यून है तथा भीमकरिकै रक्षण करी है॥१०॥

टीका । हे आचार्य ! यह हमारी सेना एकादश अक्षौहिणी संख्यावाली है । तथा सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है महिमा जिसकी तथा अत्यंत सूक्ष्म है बुद्धि जिसकी ऐसा जो भीष्म है ता भीष्मकरिकै सा हमारी सेना सर्व ओरतैं रक्षण करी है । यातैं सा हमारी सेना तिन पांडवोंकी सेनातैं प्रबल है । और यह पांडवोंकी सेना तौ सप्त अक्षौहिणी संख्यावाली होणेतैं हमारी सेनातैं न्यून है । तथा अत्यंत चपलबुद्धिवाले दुर्बल भीमसेनकरिकै सर्व ओरतैं रक्षण करी हुई है । यातैं यह पांडवोंकी सेना हमारी सेनातैं अत्यंत दुर्बल है । अथवा । अपर्याप्तं तत् अस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितं पर्याप्तं तु इदं एतेषां बलं भीमाभिरक्षितं । या दशमें श्लोकके पदोंकी या प्रकारतैं योजना करणी । सो पांडवोंकी सेना हमारे पराजय करणेवासतै समर्थ नहीं है । जिसवासतै सा पांडवोंकी सेना भीष्माभिरक्षित है । क्या महान् पराक्रमवाला तथा सूक्ष्मबुद्धिवाला जो भीष्म है सो भीष्मपितामह हमोंनें स्थापन करा है जिस पांडवोंकी सेनाके निवृत्त करणेवासतै । या कारणतैं सा पांडवोंकी सेना भीष्माभिरक्षित है । और यह हमारी सेना तौ इन पांडवोंके पराजय करणेंविषे समर्थ है । जिस कारणतैं यह हमारी सेना भीमाभिरक्षित है । क्या अत्यंत दुर्बल हृदय जिसका तथा अत्यंत स्थल है बुद्धि जिसकी ऐसा सो भीमसेन है । सो भीमसेन इन्होंनें स्थापन करा है जिस हमारी सेनाके निवृत्त करणेवासतै । या कारणतैं यह हमारी सेना भीमाभिरक्षित है । यातैं ऐसो दुर्बल पांडवोंकी सेनातैं हमारेकूं किंचित्मात्रभी भय है नहीं । इहां प्रथम व्याख्यानविषे भीष्मेण अभिरक्षितं भीष्माभिरक्षितं तथा भीमेन अभिरक्षितं भीमाभिरक्षितं या तृतीयातत्पुरुषसमासकरिकै भीष्माभिरक्षितं यह दुर्योधनकी सेनाका विशेषण है । और भीमाभिरक्षितं यह पांडवोंकी सेनाका विशेषण है । और दूसरे व्याख्यानविषे तौ भीष्मः अभिरक्षितो यस्मै तत् भीष्माभिरक्षितं तथा भीमः अभिरक्षितो यस्मै तत् भीमाभिरक्षितं या प्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै भीष्माभिरक्षितं यह पांडवोंकी सेनाका विशेषण है । और भीमा

अभिप्रायतैं तिन चारोंकी गिनती करैं हैं (अश्वत्थामा इति) हे आचार्य! आपका पुत्र जो अश्वत्थामा है तथा हमारा छोटा भ्राता जो विकर्ण है तथा सो मदत्त राजाका पुत्र जो सौमदत्ति है जाकूं भूरिश्रवा कहै हैं तथा सिंधुदेशका राजा जो जयद्रथ है । ये चारों महान् शूरवीर हैं । इहां जैसे दुर्योधननैं भीष्मादिकोंकी अपेक्षा करिकै द्रोणाचार्यकी जो प्रथम गिणती करी है । सो ता द्रोणाचार्यकी प्रसन्नता करणेवासते करी है । तैसे विकर्णादिकोंकी अपेक्षा करिकै जो द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाकी प्रथम गिणती करी है सो भी ता द्रोणाचार्यकी प्रसन्नता करनेवासतै करी है । या लोकविषे अपनी उत्कृष्टताकूं तथा अपणे पुत्रकी उत्कृष्टताकूं श्रवण करिकै सर्व लोक प्रसन्न होवैं हैं । इहां (जयद्रथः) या पदके स्थानविषे किसी पुस्तकमें (तथैव च) यह पाठ भी होवै, है इति ॥ ८ ॥ ❀ शंका—हे दुर्योधन तुम्हारी सेनाविषे क्या इतने ही शूरवीर हैं ? ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हुए सो दुर्योधन हमारी सेनाविषे दूसरे भी बहुत शूरवीर हैं या प्रकारका उत्तर कथन करै है ।

(मू. श्लो.) अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ॥ नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ (पदच्छेदः) अन्ये । च । बहवः । शूराः । मदर्थे । त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः । सर्वे । युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ (पदार्थः) हे आचार्य हमारी सेनाविषे पूर्व उक्त शूरवीरोंतैं दूसरे भी बहुत शूरवीर हैं कैसे हैं ते शूरवीर मेरे जयरूप प्रयोजनवासतै अपणे जीवनेकी आशाकूं भी जिन्होंनैं परित्याग करी है तथा नानाप्रकारके शस्त्र हैं युद्धके साधन जिन्होंके तथा ते सर्व शूरवीर युद्धविषे बहुत कुशल हैं ॥ ९ ॥

टीका । हे आचार्य ! केवल पूर्व उक्त भीष्मादिक ही हमारी सेनाविषे नहीं हैं किंतु तिन भीष्मादिकोंत भिन्न दूसरे भी शल्य, कृतवर्मा, भगदत्त इत्यादिक बहुत शूरवीर हैं । कैसे हैं ते शूरवीर । अपने प्राणोंका परित्याग करिकै भी या दुर्योधनका जय हम संपादन करैंगे या प्रकारके निश्चय करिकै युक्त हैं । तथा शूल, चक्र, गदा, खड्ग इत्यादिक नानाप्रकारके शस्त्र हैं युद्धके साधन जिन्होंके या कारणतैं ही ते सर्व शूरवीर युद्धविषे बहुत कुशल हैं । इहां (शूराः) इत्यादिक विशेषणोंकरिकै ता दुर्योधननै अपणी सेनाविषे पांडवोंकी सेनातैं बाहुल्यता कथन करी । तथा अपनेविषे ता सेनाकी अनन्य भक्ति कथन करी । तथा अपनी सेनाकी शूरता तथा युद्धविषे अत्यंत उद्यम तथा अत्यंत कुशलता कथन करी । ऐसी हमारी सेना इन पांडवोंकी सेनातैं अधिक बलवाती है, इति ॥ ९ ॥ ❀ शंका । हे दुर्योधन जैसे तुम्हारी सेनाविषे शस्त्रअस्त्रविद्याविषे कुशल भीष्मादिक अनेक शूरवीर हैं तैसे पांडवोंकी सेनाविषे भी शस्त्रअ

स्थानविषे लेजाणेहारे मुख्य नायक हैं। ते सर्व योद्धा यद्यपि असंख्यात हैं तथापि तिन सर्व योद्धावोंविषे यत्किंचित् योद्धावोंकूं नामतैं उच्चारण कारिकै तिनों तैं भिन्न सर्व योद्धावोंके लखावणेवासतै मैं आपके प्रति कथन करताहूं। ते सर्व योद्धा आपकूं पूर्वही ज्ञात हैं। यातैं किसी अज्ञात योद्धावोंके जनावणे वासतै मैं आपके प्रति तिन योद्धावोंके नाम कथन करता नहीं किंतु पूर्वही ज्ञात योद्धावोंके स्मरण करणेवासतै मैं तिनोंके नामोंकूं कथन करताहूं। इहां (अस्माकं तु) या पदविषे स्थित जो तुशब्दहै ता तुशब्द करिकै ता दुर्योधनने अंतर उत्पन्न हुये भयका बाहिर नहीं प्रगट करणा या प्रकारकी अपणी ढीठता बोधन करी। और (हे द्विजोत्तम) या विशेषणके कहणेकरिकै सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यकी स्तुति करता हुआ अपणे युद्धरूप कार्यविषे ता द्रोणाचार्यकी प्रवृत्तिकूं संपादन करता भया। और ता द्रोणाचार्यके द्वेषपक्षविषे तो सो दुर्योधन (हे द्विजोत्तम) या विशेषणकरिकै यह अर्थ बोधन करता भया तूं ब्राह्मण होणेतैं युद्धविषे कुशल है नहीं यातैं जो कदाचित् तूं हमारेतैं विमुख होइकै पांडवोंके पक्षविषेभी जावैगा। तौभी भीष्मादिक श्रेष्ठ क्षत्रिय हमारे पक्षविषे वियमान हैं। यातैं तुम्हारेतैं विना हमारी किंचित्मात्रभी हानि होवैगी नहीं। और (संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते) या कहणेकरिकै ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा अपने प्रिय शिष्य पांडवोंकी सेनाकूं देखिकै हर्षकरिकै व्याकुल हुआ है मन जिसका ऐसा जो तूं है तिस तुम्हारेकूं अपने भीष्मादिक शूर पुरुषोंकी विस्मृति मत होवै या कारणतैं अपणी सेनाके भीष्मादिक शूरपुरुषोंकी स्मृति करावणेवासते मैं यत्किंचित् तिन शूरवीरोंके नाम तुम्हारे प्रति कथन करताहूं, इति ॥ ७ ॥ ❀ अब सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यके समीप अपणी सेनाविषे स्थित शूरवीरोंकी गिनती करै है।

(मू. श्लो.) भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिर्जयद्रथः ॥ ८ ॥ (पदच्छेदः) भवान्। भीष्मः। च। कर्णः। च। कृपः। च। समितिंजयः। अश्वत्थामा। विकर्णः। च। सौमदत्तिः। जयद्रथः ॥ ८ ॥ (पदार्थः) आप द्रोणाचार्य तथा भीष्मपितामह तथा कर्ण तथा संग्रामकूं जय करणेहारा कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा तथा विकर्ण तथा सौमदत्ति तथा जयद्रथ ॥ ८ ॥

टीका। हे आचार्य ! हमारी सेनाविषे प्रथम तो आप महान् शूरवीर हो। तथा भीष्मपितामह है। तथा कर्ण है। तथा संग्रामकूं जय करणेहारा कृपाचार्य है। शंका–द्रोणाचार्यका पुत्र जो अश्वत्थामा है तिसकी कर्ण तैं अनंतर गिणती करणेतैं द्रोणाचार्यकूं मनविषे क्रोध हुआ होवैगा। या प्रकार ता द्रोणाचार्यके क्रोधकी शंका करिकै ता क्रोधकी निवृत्ति करणेवासतै सो दुर्योधन यह अश्वत्थामादिक चारि तौ हमारी सेनाविषे सर्व शूरवीरों तैं श्रेष्ठ नायक हैं या प्रकारके

युयुधानादिक सर्व राजाओंके जानने। और सुभद्राका जो पुत्र होवै ताका नाम सौभद्र है ऐसा अभिमन्यु है और द्रौपदीके जो प्रतिविंध्यादिक पंच पुत्र हैं तिनोंका नाम द्रौपदेय है। और (द्रौपदेयाश्च) या पदविषे स्थित जो चकार है ता चकारकरिकै पूर्व उक्त राजाओंते भिन्न पांड्य राजा घटोत्कच आदिक सर्व राजोंका ग्रहण करणा। और युधिष्ठिरादिक पंच पांडव अत्यंत प्रसिद्ध हैं। यातैं दुर्योधननैं तिन पंचपांडवोंकी गिणती करी नहीं। अथवा (भीमार्जुन समा युधि) या वचनकरिकै ता दुर्योधननैं युयुधानादिक सर्व शूरवीरोंविषे भीम, अर्जुनकी उपमा दई है। यातैं भीमार्जुन यह पद पांचों पांडवोंका उपलक्षक है। इस प्रकार युयुधान राजातैं आदि लेके द्रौपदीके पंच पुत्रोंपर्यंत कथन करे जो सप्तदश राजा तिनों तैं भिन्न दूसरे भी तिनोंके संबंधी शूरवीर बहुत हैं। ते सर्व शूरवीर महारथी हैं। रथी अथवा अर्धरथी इन्होंविषे कोई है नहीं। इहां (महारथाः) या शब्दकरिकै अतिरथीकाभी ग्रहण करणा। तहां महारथी, अतिरथी, रथी, अर्धरथी या चारोंका शास्त्रविषे या प्रकारका लक्षण कथन करा है। तहां श्लोक। "एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनाम्। शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च महारथ इति स्मृतः॥ अमितान्योधयेद्यस्तु संप्रोक्तोऽतिरथस्तु सः। रथस्त्वेकेन यो योद्धा तन्न्यूनोऽर्धरथः स्मृतः"। अर्थ, यह—जो पुरुष एकलाही धनुषवाले दशसहस्र शूरवीरोंके साथि युद्ध करै है तथा शस्त्रशास्त्रविषे अत्यंत कुशल होवै है ता पुरुषकूं महारथी कहैं हैं। और जो पुरुष एकलाही असंख्यात शूरवीरोंके साथि युद्ध करै है तथा शस्त्रशास्त्रविषे अत्यंत कुशल होवै है ता पुरुषकूं अतिरथी कहैं हैं। और जो पुरुष एक शूरवीरके साथिही युद्ध करै है ताकूं रथी कहैं हैं। और जो पुरुष ता रथीतैंभी न्यून बलवाला होवै है ताकूं अर्धरथी कहै हैं॥ ६॥ ❀ शंका—हे दुर्योधन! इन पांडवोंकी सेनाविषे महान् शूरवीरोंकूं देखिकै जो कदाचित् तुम्हारेकूं भय होता होवै तौ इन पांडवोंके साथि शत्रुपणेका परित्याग करिकै तुम मित्रता करो या प्रकारके द्रोणाचार्यके अभिप्रायकी आशंका करिकै सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यके प्रति अपणी सेनाविषे स्थित शूरवीरोंके नामोंका वर्णन करै है।

(मू. श्लो.) अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम॥ नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते॥ ७॥ (पदच्छेदः)

अस्माकं। तु। विशिष्टाः। ये। तान्। निबोध। द्विजोत्तम। नायकाः। मम। सैन्यस्य। संज्ञार्थं। तान्। ब्रवीमि। ते॥ ७॥

(पदार्थः) हे सर्व ब्राह्मणोंविषे श्रेष्ठ आचार्य हमारे सबोंके मध्यविषे जे श्रेष्ठ योद्धा हैं तिनं योद्धावोंकूं आप निश्चय करो मेरी सेनाके जो प्रधान नायक हैं तिनोंविषे यत्किंचित् नायकोंकूं नामतैं उच्चारण करिकै मैं तुम्हारे ताईं कथन करताहूं॥ ७॥

टीका। हे आचार्य! हमारी सेनाविषे जे योद्धा विद्या, बल, पौरुष, कुल, शील इत्यादिक गुणोंकरिकै श्रेष्ठ हैं। तथा जे योद्धा हमारी सेनाकूं तिस तिस

टीका । हे आचार्य या पांडवोंकी सेनाविषे केवल एक धृष्टद्युम्न नामा द्रुपदपुत्र ही शूरवीर नहीं है जिसकरिकै या पांडवोंकी सेनाकी हम उपेक्षा करि देवें। किंतु या पांडवोंकी सेनाविषे दूसरे भी बहुत शूरवीर हैं। यातैं तिनोंके जय करणेवासतै हमारेकूं अवश्यकरिकै प्रयत्न करणा चाहिये। तिनोंकी उपेक्षा करणी योग्य नहीं है। अब तिन शूरवीरोंके विशेषणोंका कथन करैं हैं (महेष्वासाः इति) इषु नाम बाणोंका है। ते इषु (बाण) चलाइयें जिनोंकरिकै तिनोंका नाम इष्वास है ऐसे धनुष हैं। ते इष्वास (धनुष) महान् हैं जिन शूरवीरोंके तिन शूरवीरोंका नाम महेष्वासाः है तात्पर्य यह । ते शूरवीर बाणोंकरिकै दूरसे ही परसेनाके भगावणेविषे कुशल हैं इति। शंका, ते शूरवीर महान् धनुषोंवाले तो हैं परंतु तिनोंविषे युद्ध करणेकी कुशलता नहीं होवेगी। ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हुए सो दुर्योधन राजा उत्तर कहे है (भीमार्जुनसमा युधि इति) हे आचार्य सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है पराक्रम जिनोंका ऐसे जो भीम अर्जुन हैं ता भीम अर्जुनके समान ही जिन शूरवीरोंका युद्धविषे पराक्रम है। शंका--ऐसे पराक्रमवाले कौन कौन शूरवीर हैं । ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हुए सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यकेप्रति तिन शूरवीरोंके नामोंका कथन करै है। (युयुधान इति) अतिशयकरिकै जो युद्धकूं करै है ताका नाम युयुधान है ऐसा सात्यकि नामा राजा है। और शत्रुओंकूं जो विशेषकरिकै भ्रमण करावे है ताका नाम विराट है। और द्रु नाम वृक्षका है। पद नाम चिह्नका है। ता वृक्षका है ध्वजाविषे चिह्न जिसके ताका नाम द्रुपद है। यह तीनों महारथी हैं ॥ ४ ॥ और शत्रुवोंकूं भयकी प्राप्ति करणेहारेका नाम धृष्ट है। केतु नाम ध्वजाका है। भयका कारण है ध्वजा जिसकी ताका नाम धृष्टकेतु है। और चिकितान नामा राजाका जो पुत्र होवे ताका नाम चेकितान है। और काशीका जो राजा होवे ताका नाम काशिराज है ते तीनों राजे वीर्यवान् हैं। तेजबलकरिकै युक्त शत्रुवोंकूं भी जो विविध प्रकारतैं भगाइ देवे ताका नाम वीर है। तिस वीर पुरुषका जो कर्म होवे ताका नाम वीर्य है सो वीर्य जिसविषे वर्त्तमान होवे ताका नाम वीर्यवान् है। और पुरु नाम बहुतोंका है। तिन बहुत शूरोंकूं जो जय करै है ताका नाम पुरुजित् है। और कुंतीके पिताका नाम कुंतिभोज है। और शिबि नामा राजाके कुलविषे जो उत्पन्न होवे ताका नाम शैब्य है। ते तीनों राजा नरपुंगव हैं। सर्व नरोंविषे जो श्रेष्ठ होवे ताका नाम नरपुंगव है ॥ ५ ॥ और युधा नाम युद्धका है और मन्यु नाम क्रोधका है। युद्धविषे है क्रोधका वेग जिसका ताका नाम युधामन्यु है। यह युधामन्यु पंचाल देशका राजा है। सो युधामन्यु विक्रांत है। विशेषकरिकै जांकविषे पराक्रम रहैं हैं ताका नाम विक्रांत है। और ओजस् नाम बलका है। उत्तम है ओजस् जिसका ताका नाम उत्तमौजाः है। सो उत्तमौजाः नामा राजा भी पंचालदेशका राजा है कैसा है सो उत्तमौजाः नामा राजा वीर्यवान् है । अथवा वीर्यवान् नरपुंगव विक्रांत ये तीनोंविशेषण

भ्रांतितैं रहित दूसरे किसीकूं ता सेनाके दर्शनतैं आनंद होवैगा नहीं । जिसकूं यह पांडवोंकी सेना मैं दिखावों । यातैं आपही चलिकै तिन पांडवोंकी सेनाकूं देखो । इस प्रकार ता द्रोणाचार्यकूं पांडवोंकी सेना दिखावता हुआ सो दुर्योधन ता आचार्यविषे अपणे गूढद्वेषकूं बोधन करता भया । इतने कहणेकरिकै संजयनै ता धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ बोधन करा । धर्मक्षेत्रविषे प्राप्त होइकै भी जिन तुम्हारे दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं अपणे आचार्यविषे भी ऐसी द्वेषबुद्धि हुई है ते दुर्योधनादिक ता धर्मक्षेत्रके प्रभावतैं पश्चात्तापकूं प्राप्त होइकै तिन पांडवोंकूं युद्ध करैतैं बिना ही राज्य देदेवैंगे या प्रकारकी संभावना तुमनैं कदाचित् भी नहीं करणी, इति ॥ ३ ॥ ॥ शंका - सर्व शूरवीरोंविषे अप्रसिद्ध ऐसा जो द्रुपदपुत्र है ता एक द्रुपदपुत्रकरिकै व्यूहरचनायुक्त करी हुई जो यह पांडवोंकी सेना है ता पांडवोंकी सेनाकूं हम सर्वोंविषे कोई एक साधारण शूरवीर भी जय करि लेवैगा । तुम तिन पांडवोंकी सेनातैं किस वासते भय करते हो । ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हुए सो दुर्योधन राजा (अत्र शूराः) इत्यादिक तीन श्लोकोंकरिकै तिन पांडवोंकी सेनाविषे स्थित शूरवीरोंके नाम वर्णन करैं हैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(मू. श्लो.) अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ॥ युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ॥ पुरुजित्कुंतिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रांत उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ॥ सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ (पदच्छेदः) अत्र । शूराः । महेष्वासाः । भीमार्जुनसमाः । युधि । युयुधानः । विराटः । च । द्रुपदः । च । महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुः । चेकितानः । काशिराजः । च । वीर्यवान् । पुरुजित् । कुंतिभोजः । च । शैब्यः । च । नरपुंगवः ॥५॥ युधामन्युः । च । विक्रांतः । उत्तमौजाः । च । वीर्यवान् । सौभद्रः । द्रौपदेयाः । च । सर्वे । एव । महारथाः ॥६॥ (पदार्थः) इस पांडवोंकी सेनाविषे युद्धविषे भीमअर्जुनके समान तथा महान् धनुषोंवाले ऐसे शूरवीर बहुत विद्यमान हैं तिनोंके ये नाम हैं महारथीरूप युयुधान नामा राजा तथा विराट नामा राजा तथा द्रुपद नामा राजा ॥ ४ ॥ तथा विशेष पराक्रमवाला धृष्टकेतु नामा राजा तथा चेकितान नामा राजा तथा काशिराजा तथा सर्व मनुष्योंविषे श्रेष्ठ पुरुजित् नामा राजा तथा कुंतिभोज नामा राजा तथा शैब्य नामा राजा ॥ ५ ॥ तथा विशेष पराक्रमवाला युधामन्यु नामा राजा तथा वीर्यवाला उत्तमौजा नामा राजा तथा सौभद्र नामा राजा तथा द्रौपदीके पंच पुत्र यह सर्वही महारथी हैं ॥ ६ ॥ ॥ ॥

सेना अनेक अक्षौहिणी संख्यावाली होणेतैं महान् है । या कारणतैं ही सा सेना निवृत्त करणेकूं अशक्य है । ऐसी पांडवोंकी सेनाकूं आप नेत्रोंकरिके प्रत्यक्ष देखो मैं आपका शिष्य हूं । यातैं मैं केवल आपके आगे प्रार्थना करताहूं कोई आपकूं आज्ञा नहीं करता । ता हमारी प्रार्थनाकूं अंगीकार करिके जब आप ता पांडवोंकी सेनाकूं देखोगे तबी तिन पांडवोंके अविज्ञानकूं आप ही निश्चय करोगे । शंका–तिन पांडवोंनैं करी जो हमारी अविज्ञा है सा अविज्ञा निवृत्त करणेकूं अशक्य है यातैं सा अविज्ञा हमारेकूं सहारणी ही उचित है । या प्रकारकी द्रोणाचार्यके शंकाके हुए तिस अविज्ञाके निवृत्त करणेका उपाय आपकूं अत्यंत सुगम है या प्रकारका उत्तर सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यके प्रति कथन करै है (व्यूढां तव शिष्येण इति) हे आचार्य । तुम्हारेतैं धनुर्विद्या सीखाहुआ जो द्रुपद राजाका पुत्र धृष्टद्युम्न नामा तुम्हारा बुद्धिमान शिष्य है । ता द्रुपदपुत्रनै यह पांडवोंकी सेना शकटाकार तथा पद्मादि आकार करी हुई है और शिष्यकी अपेक्षाकरिके गुरुविषे अधिकताही होवै है यह वार्ता सर्व लोकशास्त्रविषे सिद्ध है यातैं आपकूं तिनोंकी अविज्ञाके निवृत्त करणेका उपाय अत्यंत सुगम है इहां धृष्टद्युम्ननैं सा पांडवोंकी सेना व्यूहरचनायुक्त करी है या प्रकारका वचन नहीं कथन करिके द्रुपदपुत्रनै सा सेना व्यूहरचनायुक्त करी है या प्रकारका वचन जो दुर्योधननैं कथन करा है सो द्रोणाचार्यके प्रति द्रुपद राजाका पूर्वला वैर सूचन करिके क्रोधकी उत्पत्ति करणेवासतै सो वचन कथन करा है । और ता द्रुपदपुत्रका बुद्धिमान् यह जो विशेषण दुर्योधननैं कथन करा है सो ता द्रुपदपुत्रकी आपनैं उपेक्षा कदाचित् भी नहीं करणी या प्रकार ताकी उपेक्षाके अभावका बोधन करणेवासतै दिया है यातैं हे आचार्य दूसरे सर्व कार्योंका परित्याग करिके आप शीघ्र ही चलिके ता सेनाकूं देखो । अथवा या श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करणी (पांडुपुत्राणां) या पदका (आचार्य) या पदके साथि तथा (चमूं) या पदके साथि संबध करणा । इस प्रकार तिन पदोंकी योजना करणेतैं यह अर्थ सिद्ध होवै है हे पांडुपुत्रोंके आचार्य तिन पांडवोंकी सेनाकूं तूं देख तिन पांडवोंविषे ही तुम्हारा अत्यंत स्नेह है यातैं तिन पांडवोंका ही तूं आचार्य है हमारा तूं आचार्य नहीं है । और तुम्हारे शिष्य द्रुपदपुत्रनैं यह सैना व्यूहरचनायुक्त करी है । या कहणेकरिके ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा तुम्हारे नाश करणेवासतै उत्पन्न हुआ भी यह द्रुपदपुत्र तुमनैं ही इसकूं धनुर्विद्या पढाई यातैं यह तुम्हारी मूढताही हमारे अनर्थका कारण है और सो द्रुपदपुत्र बुद्धिमान है या कहणे करिके ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा ॥ इस द्रुपदपुत्रनै अपणे शत्रुवोंतैं ही तिन शत्रुवोंके मारणेका उपायरूप धनुर्विद्या ग्रहण करी है या कारणतैं यह द्रुपदपुत्र अत्यंत बुद्धिमान् है । हे आचार्य ऐसे अपणे शिष्योंकी सैनाकूं देखिकरिके आपकूं ही आनंद होवैगा । जिस कारणतैं आप भ्रांतियुक्त हो ।

शुभबुद्धिवाले होइकै पांडवोंके ताईं राज्य समर्पण करैंगे या प्रकारकी शंकाकरिकै तूं ग्लानिकूं मत प्राप्त होउ या प्रकार ता धृतराष्ट्रकै संतोष करावणेवासतै सो संजय प्रथम ता दुर्योधनके दुष्ट स्वभावका वर्णन करै है । (दृष्ट्वेति) हे धृतराष्ट्र धृष्टद्युम्नादिक शूरवीर पुरुषोंने व्यूहरचना करिकै स्थापन करी जो पांडवोंकी सेना है ता सेनाकूं सो दुर्योधन राजा अपणे नेत्रोंसैं प्रत्यक्ष देखिकरिकै धनुर्विद्याके संप्रदायकी प्रवृत्ति करणेहारे द्रोणाचार्यके समीप आप ही जाइकै यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया । ता द्रोणाचार्यकूं अपणे समीप बुलाइकै सो वचन नहीं कहता भया । तहां सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यके समीप आप ही जाता भया या कहणेकरिकै ता दुर्योधनविषे पांडवोंकी सैनाके दर्शनतैं उत्पन्न भया भय सूचन करा । तहां सो दुर्योधन यद्यपि भयकरिकै अपणी रक्षावासतै ता द्रोणाचार्यके समीप जाता भया । तथापि सो दुर्योधन राजनीतिविषे बहुत कुशल है यातैं आचार्यके समीप शिष्यनैं आप ही चलिकै जाणा या प्रकार आचार्यकी महानताके व्याजकरिकै अपणे भयकूं गुह्य राखता भया । या प्रकारके अर्थके बोधन करणेवासतै संजयनैं दुर्योधनका राजा यह विशेषण दिया है । यद्यपि द्रोणाचार्यके प्रति सो राजा दुर्योधन कहता भया इतने कहणेमात्रकरिकै ही निर्वाह होइ सकै है । वचन या पदके कहणेका कछु प्रयोजन नहीं है । तथापि वचन या पदके कहणेकरिकै ता वाक्यविषे संक्षिप्तत्व, बहु अर्थप्रतिपादकत्व इत्यादिक अनेक गुणवत्त्व कथन करा । अथवा सो दुर्योधन राजा केवल वचनमात्र ही कहता भया । किंचित्‌मात्र भी अर्थ नहीं कहता भया । यह अर्थ वचनपदकरिकै सूचन करा, इति ॥ २ ॥ तहां जिस प्रकारका वचन ता दुर्योधननैं द्रोणाचार्यके समीप जाइकै कथन करा था ता वचनका (पश्यैतां) इसतैं आदि लैके (तस्य संजनयन् हर्षं) इसतैं पूर्वग्रंथकरिकै विस्तारतैं निरूपण करैं हैं । तहां या द्रोणाचार्यके अत्यंत प्रिय शिष्य जो पांडव हैं तिन पांडवोंविषे या द्रोणाचार्यका अत्यंत स्नेह है । यातैं यह द्रोणाचार्य हमारे पक्षविषे स्थित होइक तिन पांडवोंके साथि युद्ध नहीं करैगा । या प्रकारकी संभावना अपणे मनविषे करिकै सो दुर्योधन राजा तिन पांडवोंऊपरि ता द्रोणाचार्यका क्रोध उत्पन्न करणेवासतै ता द्रोणाचार्यके समीप तिन पांडवोंकी अविज्ञाकूं कथन करता हुआ या प्रकारका वचन कहता भया ॥

(मू. श्लो.) पश्यैतां पांडुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ॥ व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥ (पदच्छेदः) ॥ पश्य । एतां । पांडुपुत्राणाम् । आचार्य । महतीं । चमूं । व्यूढां । द्रुपदपुत्रेण । तव । शिष्येण । धीमता ॥ ३ ॥ (पदार्थः) हे आचार्य पांडुराजाके पुत्रोंकी ईस महान् सेनाकूं तूं देख जो सेना तुम्हारे बुद्धिमान शिष्य द्रुपदपुत्रनैं व्यूहरचनायुक्त करी है ॥ ३ ॥

टीका । हे आचार्य आपसरीखे महानुभाव पुरुषोंकी भी अविज्ञाकरिकै तथा भयतैं रहित होइकै अत्यंत समीप स्थित जो यह पांडवोंकी सेना है सा

धनादिक पुत्र हैं । तिन हमारे पुत्रोंका ता धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रके प्रभावतैं जो कदाचित् अंतःकरण शुद्ध हुआ होवैगा । ता चित्तकी शुद्धिकरिकै पश्चात्तापकूं प्राप्त हुए ते हमारे पुत्र पूर्व कपटकरिकै लिये हुए राज्यकूं जो कदाचित तिन पांडवोंके ताईं देदेवैंगे तौ ते हमारे पुत्र युद्धतैं विना ही नाशकूं प्राप्त हुए इस प्रकार अपणे पुत्रोंकूं राज्यकी प्राप्तिविषे तथा पांडवोंकूं राज्यकी अप्राप्तिविषे अत्यंत दृढ उपायकूं नहीं देखता हुआ जो धृतराष्ट्र है ता धृतराष्ट्रका सो महान् उद्वेग ही ता प्रश्नका बीज है । तहां (हे संजय) या संबोधनकरिकै ता धृतराष्ट्रनैं यह अर्थ बोधन करा रागद्वेषादिक दोषोंकूं जो भली प्रकारकरिकै जय करै है ताका नाम संजय है । ऐसे रागद्वेषतैं रहित आप हो । यातैं पक्षपाततैं रहित होइकै आप हमारे प्रति सर्व वृत्तांत कथन करो । इहां यद्यपि (मामकाः किमकुर्वत) या प्रकारके वचनमात्रकरिकैही ता धृतराष्ट्रके प्रश्नकी सिद्धि होइ सकै है काहेतैं ते युधिष्ठिरादिक पांडवभी ता धृतराष्ट्रके ही संबंधी हैं यातैं (पांडवाः) यह कहना व्यर्थ है । तथापि (पांडवाः) या शब्दके भिन्न कहने करिकै ता धृतराष्ट्रनैं तिन पांडवोंविषे ममत्वका अभाव दिखाइकै तिन पांडवोंविषे अपणे द्रोहकूं सूचन करा; इति ॥ १ ॥ ॥ हे जनमेजय । इस प्रकार कृपारूप नेत्रोंतैं रहित तथा लोकप्रसिद्ध नेत्रोंतैं रहित तथा अपणे पुत्रोंके स्नेहमात्रकरिकै युक्त ऐसा धृतराष्ट्र है ता धृतराष्ट्रके प्रश्नकूं श्रवण करिकै तथा ता धृतराष्ट्रके अभिप्रायकूं जाणिकरिकै सो धर्मात्मा संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति यह वचन कहता भया ॥

(मू. श्लो.) संजय उवाच । दृष्ट्वा तु पांडवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) दृष्ट्वा । तु । पांडवानीकं । व्यूढं । दुर्योधनः । तदा । आचार्यम् । उपसंगम्य । राजा । वचनम् । अब्रवीत् ॥ २ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र ता संग्रामके आरंभकालविषे राजा दुर्योधन व्यूहरचनायुक्त पांडवोंकी सेनाकूं देखिकरिकै द्रोणाचार्यके समीप जाइकै या प्रकारका वचन कहता भया ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टीका । तहां युधिष्ठिरादिक पांडवोंविषे भीष्मादिक वीर पुरुषोंतैं दृष्टभयकी संभावनामात्र भी होवै नहीं । और बांधवोंकी हिंसाजन्य पापरूप अदृष्टतैं जो अर्जुनकूं भय प्राप्त हुआ था सो केवल भ्रांतिकरिकै हुआ था । सो अर्जुनका अदृष्टभय भी श्रीभगवान्नैं ब्रह्मविद्याके उपदेशतैं निवृत्त करा । या प्रकार पांडवोंकी उत्कृष्टता बोधन करणेवासते संजयनैं (दृष्ट्वा तु) यह तुशब्द कथन करा है । तहां हमारे दुर्योधनादिक पुत्र धर्मक्षेत्रके कुरुक्षेत्रके प्रभावतैं

टीका। जैसे उत्तम भूमिरूप क्षेत्र व्रीहि यवादिक अन्नके उत्पत्तिका तथा वृद्धिका कारण होवै है तैसे पूर्व अविद्यमान धर्मके उत्पत्तिका जो कारण होवै। तथा पूर्व विद्यमान धर्मके वृद्धिका जो कारण होवै अथवा धर्मके क्षयतैं जो रक्षा करणेहारा होवै ताका नाम धर्मक्षेत्र है। और कुरुदेशके अंतर जो स्थित होवै ताका नाम कुरुक्षेत्र है। इस प्रकार निवासमात्र करणेकरिकै धर्मकी तथा धर्मके फलकी प्राप्ति करणेहारा जो धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्र है सो श्रुति स्मृति आदिक सर्व शास्त्रोंविषे प्रसिद्ध है। तहां श्रुति ॥ "यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम्, इति"। अर्थ, यह-जो कुरुक्षेत्र सर्व देवतावोंका देवयजनरूप है। तथा सर्व भूतप्राणियोंकूं ब्रह्मरूप मोक्षके प्राप्तिका स्थानरूप है, इति ॥ यह श्रुति जाबालउपनिषद्विषे बृहस्पतिने याज्ञवल्क्यके प्रति कथन करी है। और "कुरुक्षेत्रं देवयजनम्" यह श्रुति शतपथब्राह्मणविषे कथन करी है। इत्यादिक श्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकै सिद्ध जो कुरुक्षेत्र है ता धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे युद्धकी इच्छा करिकै इकट्ठे हुए जो दुर्योधनादिक मेरे पुत्र हैं तथा युधिष्ठिरादिक पांडव हैं ते सर्व क्या कार्य करते भये। शंका—(युयुत्सवः) या विशेषणकरिकै धृतराष्ट्रनैं अपने पुत्रोंविषे तथा पांडवोंविषे युद्ध करनेकी इच्छा कथन करी। और या लोकविषे यह नियम है जिस पुरुषकूं जिस कार्य करणेकी पूर्व इच्छा होवै है सो पुरुष तिस इच्छाके अनुसार तिसी कार्यविषे प्रवृत्त होवै है अन्य कार्यविषे प्रवृत्त होवै नहीं। यातैं ता पूर्व युद्धकी इच्छाके अनुसार तिन दुर्योधनादिकोंकी युद्धरूप कार्यविषे ही प्रवृत्ति होवैगी अन्य किसी कार्यविषे तिनोंकी प्रवृत्ति होवैगी नहीं। याते तिनोंका परस्पर किस प्रकारका युद्ध होता भया या प्रकारका प्रश्नही ता धृतराष्ट्रकूं करणेयोग्य था। ता प्रश्नका परित्याग करिकै मेरे पुत्र तथा पांडव क्या कार्य करते भये यह जो धृतराष्ट्रनैं प्रश्न करा है सो असंगत है। समाधान। ता धृतराष्ट्रके प्रश्नका यह अभिप्राय है ते हमारे दुर्योधनादिक पुत्र तथा युधिष्ठिरादिक पांडव पूर्व उत्पन्न हुई युद्धकी इच्छाके अनुसार युद्धकूं ही करते भये अथवा किसी निमित्त करिकै ता युद्धकी इच्छाके निवृत्त हुए कोई दूसरा ही कार्य करते भये। तहां युद्धकी इच्छाकी निवृत्तिविषे दो प्रकारका कारण संभवै है, एक तौ दृष्टभय दूसरा अदृष्टभय। तहां भीष्म अर्जुनादिक महान् शूरवीरोंके दर्शनतैं उत्पन्न भया जो भय है सो दृष्टभयरूप युद्धकी निवृत्तिका कारण प्रसिद्ध ही है ॥ यातैं सो दृष्टभयरूप निमित्त ता धृतराष्ट्रनैं कथन करा नहीं। और दूसरे अदृष्टभयरूप कारणके कथन करणेवासतै ता धृतराष्ट्रनैं कुरुक्षेत्रका धर्मक्षेत्र यह विशेषणदिया है। ऐसे धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे प्राप्त हुए जो युधिष्ठिरादिक पांडव हैं ते पांडव पूर्व ही धर्मात्मा होनेतैं जो कदाचित् दोनों पक्षोंविषे होणेहारे हिंसाजन्य अधर्मतैं भयभीत होइके ता युद्धतैं निवृत्त होइ जावैंगे तौ हमारे दुर्योधनादिक पुत्र अवश्यकरिकै राज्यकूं प्राप्त होवैंगे। अथवा पूर्व स्वभावतैं ही पापात्मा जो हमारे दुर्यो

दनैं तथा स्वामीमधुसूदननैं तथा नीलकंठपंडितनैं बहुत उत्साहपूर्वक या गीताशास्त्रऊपरि संस्कृत टीका करी हैं। तिन संस्कृत टीकावोंतैं यद्यपि व्याकरणादिक साधनसंपन्न मुमुक्षु जनोंकूं या गीताशास्त्रके अर्थका बोध होइ सकै है, तथापि तिन संस्कृत टीकावोंतैं व्याकरणादिक साधनोंतैं रहित केवल भाषाके पठन करणेहारे मुमुक्षु जनोंकूं या गीताशास्त्रके अर्थका बोध होइ सकै नहीं। यातैं तिन मुमुक्षु जनोंके प्रति या गीताशास्त्रके अर्थका बोध करावणेवासतै हम तिन संस्कृत टीकावोंके अभिप्रायकूं लेके यह गीतागूढार्थदीपिका नामा प्राकृत टीकाका आरंभ करैं हैं इति। तहां निष्काम कर्मोंका जो अनुष्ठान है तिसकूंही शास्त्रविषे मोक्षका मूलरूपकरिके कथन करा है। और शोकमोहादिक पापरूप असुरता मोक्षकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक है। काहेतैं तिन शोकमोहादिक असुरोंकी प्राप्तितैं ही यह पुरुष अपणे वर्णाश्रमके धर्मतैं भ्रष्ट होवै है तथा शास्त्रनिषिद्ध कर्मविषे प्रवृत्त होवे है तथा फलकी इच्छापूर्वक अहंकारसहित नानाप्रकारकी क्रियाकूं करै है। इस प्रकार शोकमोहादिक पापरूप असुरोंकरिकै नित्यही युक्त हुआ यह पुरुष मोक्षरूप पुरुषार्थकूं न प्राप्त होइकै जन्ममरणादिक अनेक दुःखोंकूं प्राप्त होवै है। सो दुःख स्वभावतैंही सर्व प्राणियोंके द्वेषका विषय है। यातैं ता दुःखकी निवृत्तिवासतै ता दुःखके साधनरूप शोकमोहादिक अवश्यकरिकै त्याग करणे योग्य हैं। और या अनादि संसारविषे अनेक जन्मोंकरिकै ते शोकमोहादिक दुःखके कारण दृढताकूं प्राप्त हुए हैं। यातैं तिन शोकमोहादिकोंका त्याग करणा अत्यंत कठिन है। और तिन शोकमोहादिकोंकी निवृत्तितैं विना मोक्षकी प्राप्ति होवै नहीं। यातैं ते हमारे शोकमोहादिक किस उपाय करिकै नाशकूं प्राप्त होवैंगे। इस प्रकारकी उत्कट इच्छावान् जो मुमुक्षु जन है। ताके बोध करणेवासतै श्रीकृष्णभगवान् या गीताशास्त्रकूं कथन करता भया। ता गीताशास्त्रविषे "अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्" इत्यादिक श्लोकोंकरिकै शोकमोहादिक असुरोंकी निवृत्तिके उपायका उपदेश करिकै अपणे वर्णाश्रमके धर्मोंके अनुष्ठानतैं तुम मोक्षरूप पुरुषार्थकूं प्राप्त होवो। या प्रकारका जो भगवान्का उपदेश है सो उपदेश सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारण है केवल एक अर्जुनके प्रति सो उपदेश नहीं है॥ शंका—श्रीकृष्णभगवान्का जो कदाचित् सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारण ही उपदेश होवै तौ या गीताशास्त्रविषे श्रीकृष्णभगवान्का तथा अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका किसवासतै रक्खी है॥ समाधान जैसे उपनिषदोंका उपदेश सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारण हुआ भी तिन उपनिषदोंविषे जो जनकयाज्ञवल्क्यादिकोंका संवादरूप आख्यायिका हैं ते आख्यायिका तिस तिस उपनिषद्रूप ब्रह्मविद्याकी स्तुतिवासतै हैं तैसे या गीताशास्त्रविषे जो श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका है सा आख्यायिका भी या गीतारूप ब्रह्मविद्याकी स्तुतिवासतै है। ता स्तुतिका यह प्रकार है। सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है महानुभाव जिसका ऐसा जो अर्जुन है।

सो अर्जुन राज्य, गुरु, पुत्र, मित्र आदिक पदार्थोंविषे मैं इनोंका हूं ये मेरे हैं या प्रकारकी बुद्धिकरिकै स्नेहकूं प्राप्त होता भया । ता स्नेहकरिकै उत्पन्न भया जो शोक, मोह ता शोकमोहकरिकै नष्ट होइ गया है विवेकविज्ञान जिसका ऐसा सो अर्जुन पूर्वस्वभावतैं ही क्षत्रियोंके धर्मरूप युद्धविषे प्रवृत्त हुआ भी ता शोकमोहके प्रभावतैं ता धर्मयुद्धतैं उपराम होता भया। तथा संन्यासियोंका धर्मरूप जो भिक्षावृत्तितैं जीवन है ते भिक्षाजीवनादिक धर्म यद्यपि क्षत्रिय राजावोंकूं शास्त्रकरिकै निषिद्ध हैं तथापि सो अर्जुन ता शोकमोहके वशतैं ता भिक्षाजीवनरूप परधर्मके करणेवासतै प्रवृत्त होता भया। इस प्रकार सो अर्जुन ता शोकमोहके वशतैं महान् अनर्थविषे मग्न होता भया । ऐसा अर्जुन श्रीकृष्णभगवान्के उपदेशतैं या गीतारूप ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होइकै ता शोकमोहतैं रहित होइकै पुनः अपणे युद्धरूप धर्मविषे प्रवृत्त होता भया। ताकरिकै सो अर्जुन कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होता भया। ऐसे महान् प्रयोजनकी प्राप्ति करणेहारी यह गीतारूप ब्रह्मविद्या है। यातैं यह गीतारूप ब्रह्मविद्या अत्यंत श्रेष्ठ है। या प्रकार या गीतारूप ब्रह्मविद्याकी स्तुति करणेवासतै श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका या गीताशास्त्रविषे स्थित है । यातैं अर्जुनशब्दकरिकै या गीताशास्त्रके उपदेशका अधिकारी मात्र कथन करा है। या कारणतैं ही युद्धरूप स्वधर्मविषे पूर्व अर्जुनकी प्रवृत्ति हुए भी ता युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिका कारणरूप शोक मोह "कथं भीष्ममहं संख्ये" इत्यादिक वचनोंकरिकै अर्जुननैं दिखाये हैं। या प्रकार आगे कथन करैंगे। तहां युद्धरूप स्वधर्मविषे विवेकतैं विना ही अर्जुनकी किस निमित्ततैं प्रवृत्ति भई है या प्रकारकी जिज्ञासाके हुए "दृष्ट्वा तु पांडवानीकम्" इत्यादिक वचनकरिकै परसेनाकी चेष्टा ही ता प्रवृत्तिविषे निमित्त कथन करा है। तिस अर्थकी सिद्धिवासतै "धर्मक्षेत्रे" इत्यादि श्लोककरिकै धृतराष्ट्रका प्रश्न संजयके प्रति है। और "धृतराष्ट्र उवाच" यह वैशंपायनका वचन जन्मेजयके प्रति है। तहां पूर्व पांडवोंके जयके अनेक प्रकारके कारणोंकूं श्रवण करिकै अपणे पुत्रोंके राज्यतैं भ्रष्टपणेतैं भयभीत हुआ सो धृतराष्ट्र अपणे पुत्रोंके जयकी इच्छा करता हुआ या प्रकार संजयसे पूँछता भया ॥

(मू० श्लो०) धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥ (पदच्छेदः) धर्मक्षेत्रे । कुरुक्षेत्रे । समवेताः । युयुत्सवः । मामकाः । पांडवाः । च । एव । किम् । अकुर्वत । संजय ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे संजय । धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे एकठे हुए तथा युद्धकी इच्छा करते हुए मेरे पुत्र तथा पांडुराजाके पुत्र क्या करते भये ॥ १ ॥

है । और पूर्व सविकल्पसमाधिकरिकै निरोधकूं प्राप्त भया जो चित्त है ता निरुद्धचित्तविषे तीन भूमिकावाली निर्विकल्पसमाधि उत्पन्न होवै है । तहां प्रथम भूमिकाविषे तौ यह विद्वान् पुरुष अपणी इच्छातैं उत्थानकूं प्राप्त होवै है । और द्वितीयभूमिकाविषे सो विद्वान् पुरुष दूसरे किसीकरिकै बोधन करा हुआ उत्थानकूं प्राप्त होवै है । और तृतीय भूमिकाविषे सो विद्वान् पुरुष अपणी इच्छाकरिकै तथा किसी दूसरेकरिकै उत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं । किंतु सर्व कालविषे ताकी ब्रह्माकारवृत्ति रहै है । ऐसे निर्विकल्पसमाधिवान् पुरुषकूंही शास्त्रविषे ब्राह्मण कहैं हैं । तथा ब्रह्मविद्वरिष्ठ कहैं हैं तथा गुणातीत कहैं हैं । तथा स्थितप्रज्ञ कहैं हैं तथा विष्णुभक्त कहैं हैं तथा अतिवर्णाश्रमी कहे हैं तथा जीवन्मुक्त कहैं हैं तथा आत्मरति कहैं हैं । ऐसा जीवन्मुक्त पुरुष कृतकृत्यभावकूं प्राप्त भया है यातैं शास्त्र भी ता जीवन्मुक्त पुरुषतैं निवृत्त होवै है । तात्पर्य यह । ता जीवन्मुक्त पुरुषऊपरि शास्त्रका कोईभी विधि निषेध नहीं है । किंवा "यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥ तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः" ॥ अर्थ, यह जिस अधिकारी पुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्ति है तैसी ही गुरुविषे परम भक्ति है । तिस अधिकारी पुरुषके बुद्धिविषेही यह शास्त्रप्रतिपादित अर्थ प्रकाशमान होवै है, इति ॥ या श्रुतिप्रमाणतैं शरीरमनवाणीकृत भगवद्भक्तिका सर्व अवस्थाओंविषे उपयोग सिद्ध होवै है । तहां पूर्व पूर्व भूमिका विषे करी हुई सा भगवद्भक्ति उत्तर उत्तर भूमिकाकी प्राप्ति करैहै । ता भगवद्भक्तितैं बिना विघ्नोंकी बाहुल्यतातैं फलकी प्राप्ति होणी अत्यंत दुर्लभ है । यह वार्त्ता " पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोपि सः । अनेकजन्मसंसिद्धः" इत्यादिक भगवान्‌के वचनोंतैं ही सिद्ध होवै है । पूर्व पूर्व जन्मोंविषे उत्पन्न भये जो संस्कार हैं ते संस्कार अचिंत्यशक्तिवाले हैं तिन पूर्वसंस्कारोंके प्रभावतैं जो कोई पुरुष आकाशफलपातकी न्याईं पूर्वही कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होवै है तिस पुरुषके वासतै भी शास्त्रका आरंभ करा जावै नहीं । जिस वासतै पूर्वसिद्धिसाधनोंके अभ्यासतैं भगवत्कृपा अत्यंत दुर्विज्ञेय है । इस प्रकार पूर्वभूमिकाके सिद्ध हुए भी उत्तर उत्तर भूमिकाकी प्राप्तिवासतै यह अधिकारी पुरुष भगवद्भक्तिकूं अवश्यकरिकै करै । ता भगवद्भक्तितैं बिना सा उत्तरभूमिका सिद्ध होवै नहीं । किंवा । जैसे पूर्व अवस्थाविषे ता भगवद्भक्तिके फलकी कल्पना होवै है । तैसे जीवन्मुक्तिदशाविषे ता भगवद्भक्तिके फलकी कल्पना होवै नहीं । किंतु ता जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुषविषे जैसे अद्वेष्टृत्व, अदंभित्व आदिक धर्म स्वभावभूत होइकै रहैं हैं । तैसे सा भगवद्भक्ति भी स्वभावभूत होइकै रहैं है । यह वार्त्ता " तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते" इत्यादिक वचनोंकरिकै श्रीभगवान्‌नैं प्रतिपादन करी है । या कारणतैं सो जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुष ही मुख्य प्रेमभक्त कह्या जावै है । इत्यादिक सर्व मोक्षके साधन श्रीकृष्णभगवान्‌नैं या गीताशास्त्रविषे कथन करे हैं । तिन मोक्षके साधनोंकूं देखिकरिकै श्रीमच्छंकराचार्यनैं तथा स्वामीशंकरानं

हिंसादिक निषिद्ध कर्मोंका पारित्याग करिकै फलकी इच्छातैं रहित केवल निष्काम कर्मोंकूं करै। तिन निष्काम कर्मोंविषे भी परमेश्वरके नामोंका जप तथा स्तुति आदिक परधर्मरूप हैं। ता निष्काम कर्मोंकरिकै तथा परमेश्वरके जप स्तुति आदिकोंकरिकै या अधिकारी पुरुषका चित्त प्रतिबंधकरूप सर्व पापोंतैं रहित होइकै विचार करणेयोग्य होवै है। तिसतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषविषे नित्य अनित्य वस्तुका विवेक उत्पन्न होवै है। तिस विवेकतैं अनंतर इस लोकके विषयसुखोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक वशीकार नामा वैराग्य उत्पन्न होवै है। तिस वैराग्यकी प्राप्तितैं अनंतर शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपरति और तितिक्षा या षट्संपत्तिकी प्राप्तिकरिकै सर्वका पारित्यागरूप संन्यास प्राप्त होवै है। ता संन्यासतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषकूं मोक्षकी प्राप्तिकी इच्छारूप मुमुक्षुता प्राप्त होवै है। ता मुमुक्षुताकी प्राप्तितैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुके समीप जावै है। तिसतैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष ता ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं वेदांतशास्त्रका श्रवण करै है। तथा ता श्रवण करे हुए अर्थका मनन करै है॥ ता श्रवणमननविषे ही सर्व उत्तरमीमांसाशास्त्रका उपयोग है। ता श्रवणमननकी परिपक्वतातैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष निदिध्यासनकूं प्राप्त होवै है। ता निदिध्यासनविषे ही संपूर्ण योगशास्त्रका उपयोग है। तहां श्रवणकरिकै वेदांतशास्त्ररूप प्रमाणगत असंभावनाकी निवृत्ति होवै है। और मननकरिकै आत्मरूप प्रमेयगत असंभावनाकी निवृत्ति होवै है। और निदिध्यासनकरिकै देहादिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूप विपरीतभावनाकी निवृत्ति होवै है। तिसतैं अनंतर ता असंभावनादिक दोषोंतैं रहित चित्तविषे गुरूपदिष्ट महावाक्यतैं ब्रह्मात्माका साक्षात्कार उत्पन्न होवै है। ता ब्रह्मात्मसाक्षात्कारके उत्पन्न हुए या अधिकारी पुरुषके अविद्याकी निवृत्ति होवै है। ता आवरणशक्तिप्रधान अविद्याके निवृत्त हुएतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषके भ्रम तथा संशय निवृत्त होवैं हैं। तथा भावी जन्मोंकी प्राप्ति करणेहारे सर्व संचितकर्म नाशकूं प्राप्त होवैं हैं। और ता आत्मसाक्षात्कारके प्रभावतैं आगामी कर्मोंकी उत्पत्ति ही होवै नहीं। परंतु प्रारब्धकर्मरूप विक्षेपके वशतैं या अधिकारी पुरुषकी वासना निवृत्त होवै नहीं। जिस कारणतैं सा वासना सर्वतैं बलवती है। ऐसी बलवती वासनाभी संयमरूप उपायकरिकै निवृत्त होवै है। तहां धारणा, ध्यान और समाधि या भेदकरिकै सो संयम तीन प्रकारका होवै है। ता संयमकी प्राप्तिवासतै ही प्रथम यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार या पांचोंका उपयोग होवै है। और या अधिकारी पुरुषकूं ईश्वरके प्रणिधानतैं सा समाधि शीघ्रही प्राप्त होवै है। ता समाधिकरिकै या अधिकारी पुरुषका मनोनाश होवै है। तथा वासनाक्षय होवै है। और तत्त्वज्ञान, मनोनाश और वासनाक्षय या तीनोंका एककालविषे अभ्यास कियेतैं या अधिकारी पुरुषकूं जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवै है। इसी जीवन्मुक्तिकी प्राप्तिवासतै श्रुतिविषे विद्वत्संन्यासका कथन करा

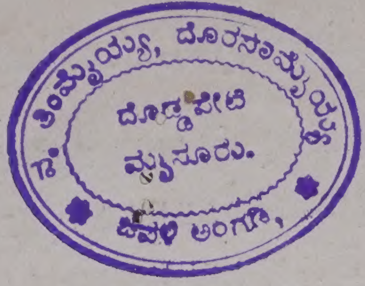
रूप तथा अद्वैतरूपअमृतकी वर्षा करणेहारी तथा सप्तशत ७०० श्लोकरूप गीताउपनिषद् नामा ब्रह्मविद्या स्थापन करते भये । ता गीतारूप ब्रह्मविद्याका अज्ञानसहित सर्व प्रपंचका अभावरूप तथा सत् चित् आनंदस्वरूप तथा जीवतैं अभिन्न अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्ष ही परम प्रयोजन है । तिसी अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्षकूं शास्त्रोंविषे विष्णुका परमपद कहैं हैं। और तिसी अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्षकीप्राप्तिवासते सृष्टिकै आदिकालविषे सर्वज्ञ ईश्वरनैं कर्म, उपासना और ज्ञान या तीन कांडोंकरिकै युक्त ऋगादिक वेद उत्पन्न करे हैं। और यह अष्टादश अध्यायरूप भगवद्गीता भी ऋगादि वेदरूप है। यातैं यह भगवद्गीता भी षट्षट् अध्यायरूप तीन षटोंकरिकै यथाक्रमतैं कर्म, उपासना और ज्ञान या तीन कांडरूप है । तहां षट् अध्यायरूप प्रथम षट्कविषे तौ कर्मनिष्ठा कथन करी है। और षट् अध्यायरूप द्वितीय षट्कविषे तौ भगवद्भक्तिनिष्ठारूप उपासना कथन करी है और षट् अध्यायरूप तृतीय षट्कविषे तौ ज्ञाननिष्ठा कथन करी है। तहां मध्यके षट्कविषे स्थित जो भगवद्भक्तिनिष्ठा है सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक जो पापरूप विघ्न हैं तिन सर्व विघ्नोंकूं नाश करणेहारी है। यातैं सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाविषे तथा ज्ञाननिष्ठाविषे दोनोंविषे अनुगत है। याकारणतैं ही सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्ममिश्रा, शुद्धा और ज्ञानमिश्रा या भेदकरिकै तीन प्रकारकी होवै है। तहां या गीताके प्रथम षट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्ममिश्रा कही जावै है। और द्वितीय षट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा शुद्धा कही जावै है। और तृतीयषट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा ज्ञानमिश्रा कही जावै है। तहां कर्मनिष्ठाकरिकै मिली हुई भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम कर्ममिश्रा है । और ज्ञाननिष्ठाकरिकै मिली हुई भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम ज्ञानमिश्रा है और केवल भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम शुद्धा है। इस प्रकार यह भगवद्गीता ऋगादिक वेदोंकी न्यांई तीन कांडरूप है। तहां या गीताके प्रथम षट्करूप कर्मकांडविषे कर्मोंके तथा तिन कर्मोंके त्यागके निरूपणरूप मार्गकरिकै अनेक प्रकारकी युक्तियोंसे त्वंपदका अर्थरूप कूठस्थ शुद्ध आत्माका निरूपण करा है। और द्वितीय षट्करूप उपासनाकांडविषे भगवद्भक्तिनिष्ठाके वर्णनरूप मार्गकरिकै तत्पदार्थरूप परमात्मा देवका निरूपण करा है। तृतीय षट्करूप ज्ञानकांडविषे तिन शोधित तत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप महावाक्योंका अर्थ निरूपण करा है। इसप्रकारसे तीन षट्करूप तीन कांडोंका परस्पर संबंध संभवै है । और पूर्व पूर्व अध्यायके अर्थका उत्तरोउत्तर अध्यायके अर्थसाथि जिस जिस प्रकारका संबंध संभवै है । सो सो संबध तिस तिस अध्यायके निरूपणकालविषे कथन करैंगे। अब या अष्टादश अध्यायरूप भगवद्गीताविषे जो जो मोक्षके साधन विस्तारकरिकै निरूपण करे हैं तिन सर्व साधनोंका प्रथम संक्षेपतैं निरूपण करें हैं। यह अधिकारी पुरुष प्रथम स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करणेहारे काम्यकर्मोंका परित्याग करिकै तथा नरकादिक दुःखोंकी प्राप्ति करणेहारे

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥ श्लोकः ॥ शंकरं शंकराचार्यं व्यासं नारायणात्मकम् ॥ सरस्वतीं च ब्रह्माणं प्रणमामि पुनःपुनः ॥ १ ॥ प्रकाशितब्रह्मतत्त्वं प्रकृष्टगुणशालिनम् ॥ प्रणवस्योपदेष्टारं प्रणमाम्यनिशं गुरुम् ॥ २ ॥ श्रीकृष्णचरणद्वंद्वं प्रणिपत्य पुनःपुनः ॥ प्रायः प्रत्यक्षरं कुर्वे गीतागूढार्थदीपिकाम् ॥ ३ ॥ अर्थ, यह - श्रीशंकररूप जो श्रीशंकराचार्य हैं तिनोंकूं तथा नारायणरूप जो व्यासभगवान् हैं तिनोंकूं तथा सरस्वतीदेवीकूं तथा ता सरस्वतीके भर्ता ब्रह्माकूं मैं वारंवार नमस्कार करताहूं, इति ॥ १ ॥ और जिन श्रीगुरुवोंनैं हमारे हृदयविषे ब्रह्मतत्त्व प्रकाश करा है। तथा ज गुरु विवेकवैराग्यादिक उत्तम गुणोंकरिकै युक्त हैं । तथा जे गुरु हम अधिकारी जनोंके प्रति प्रणवमंत्रका उपदेश करणेहारे हैं। ऐसे श्रीगुरुवोंकूं मैं वारंवार नमस्कार करता हूं, इति ॥ २॥ और या गीताशास्त्रका कर्त्ता जो श्रीकृष्णभगवान् हैं तिन श्रीकृष्णभगवानूके दोनों चरणकमलोंकूं वारंवार प्रणाम करिकै मैं मुमुक्षु जनोंके प्रति श्रीगीताजीके प्रतिअक्षरोंका अर्थ निश्चय करावणेवासतै श्रीशंकराचार्यकृत भाष्य तथा स्वामीशंकरानन्दकृत टीका तथा स्वामीमधुसूदनकृत टीका तथा नीलकंठपंडितकृत टीका या चारोंके अभिप्रायकूं लेके यह गीतागूढार्थदीपिका नामा टीका करताहूं ॥ ३ ॥ तहाँ इस लोकविषे महान् तप, बल, तेज, शक्ति करिकै संपन्न तथा सर्व विद्यावोंका समुद्र तथा संपूर्ण सर्वज्ञोंका भूषणरूप तथा साक्षात् नारायणरूप तथा परमकृपालु ऐसे जो श्रीव्यासभगवान् हैं सो व्यासभगवान् आगे उत्पन्न होणेहारे अधिकारी जनोंकी बुद्धिकी मंदताकूं देखिकरिकै तिन अधिकारी जनोंके प्रति धर्मादिक सर्व पुरुषार्थकी प्राप्ति करणेवासतै ता पुरुषार्थकी प्राप्तिके साधनोंकूं कथन करणेहारे वेदराशिका ऋग्, यजुः साम और अथर्वण या भेदकरिकै चारि प्रकारका विभाग करते भये। तथा तिन ऋगादिक चारि वेदोंविषे स्थित जो ऐतरेयादिक अनेक शाखा हैं तिन शाखावोंविषे एक एक शाखाकूं अपणे पैल वैशंपायनादिक शिष्यप्रशिष्यादिद्वारा बधावते भये । इस प्रकार तिन ऋगादिक वेदोंके प्रवृत्त हुए भी तिन वेदोंका अर्थ परम सूक्ष्म है तथा अत्यंत गूढ है तथा अत्यंत दुर्विज्ञेय है यातैं ता वेदअर्थके जानणेविषे जिन अधिकारी पुरुषोंकी बुद्धि समर्थ नहीं है ऐसे अधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रह करिकै सो श्रीव्यासभगवान् तिन अधिकारी पुरुषोंकेप्रति धर्मादिक सर्व पुरुषार्थोंकी प्राप्ति करणेवासतै तिन धर्मादिक सर्व पुरुषार्थोंके साधनोंकूं कथन करणेहारी तथा शतसहस्र १००००० श्लोकोंकरिकै युक्त एक भारत नामा संहिताकूं रचते भये । और जैसे सर्व नक्षत्रमालाके मध्यविषे चंद्रमंडल स्थित होवैहै तैसे ता भारत नामा संहिताके मध्यविषे सो श्रीव्यासभगवान् केवल मुमुक्षु जनोंके प्रति कार्यप्रपंचसहित अनादि अविद्याकी निवृत्तिद्वारा विदेहकैवल्यरूप फलकी प्राप्तिवासतै जीवब्रह्मके अभेदकूं प्रतिपादन करणेहारी तथा श्रीकृष्णभवान् अर्जुनका संवाद

करके वेदान्तसिद्धान्तको सुस्पष्टकरदिया है. ऐसे २ और भी अनेक २ ग्रंथ निर्माणकरके जगत्के ऊपर उपकारपरंपरा करी है. हमारे ऊपर भी इन परमोपकारी महात्मा पुरुषका बड़ाही अनुग्रह है. यह हम बड़े आनन्दसे मान्यकरते हैं. कारण इन महात्मा श्रीस्वामीचिद्घनानन्दजी महाराजजीने अपने अलौकिक बुद्धिवैभवसे पूर्वोक्त ग्रंथोंको निर्माण करके सर्व लोगोंको इनका लाभ होवे इस उद्देशसे पूर्णकृपाकरके सर्व अधिकारपूर्वक मेरेको ये सर्व ग्रंथ मुद्रणकरके प्रसिद्धकरनेके अर्थ दिये हैं. मैंने भी महाराजकी आज्ञानुसार छपवाय कर प्रसिद्ध कियेहैं. स्वामीजीके पूर्णअनुग्रहसे इन ग्रंथोंका पुनर्मुद्रणादि सर्व अधिकार मेरेको दिये हैं वे भी मैंने स्वीकार करके राजपट्टारूढकरके संरक्षण किये हैं. स्वामीजीके पूर्णप्रतापसे इस **"गूढार्थदीपिका"** भाषाटीकाकी चार आवृत्ति हार्थोंहाथ विकगई हैं. अब यह पंचमआवृत्ती मैंने छापके प्रसिद्धकरीहै. अब मेरेको यह बात निवेदन करनेको बड़ा खेद होता है ! ! कलिकाल बड़ा विकराल है ! इसमें बड़े बड़े मान्यलोकभी लोभके फंदेमें फँसकर अपनी श्रेष्ठताको और सुकीर्तिको मलीनकरते हैं. उदाहरणसेही सज्जनों को विदित होजायगा कि,-मैंने इस **"गीतागूढार्थदीपिका"** को छपाकरके राजनियमानुसार रजिस्टरकराके प्रसिद्धकरी है. तिसपरभी हमारे छपेहुए पुस्तकसे लाभ होनेके लोभसे बड़ेबड़े मान्यवर महाशयोंने इस ग्रन्थको छापनेका उद्योग किया. जब हमने उनको अंजन दिया, तब उन्होंने आँख खोलकर सचेत हो हमारेपास प्रतिज्ञापूर्वक प्रार्थना की है कि, आजसे हम आपके रजिस्टर कियेहुए कोईभी ग्रन्थ नहीं छापेंगे यह हमारेसे जो आपके रजिस्टर पुस्तक छपनेका अपराध हुआहै इसको आप क्षमा करेंगे यह कहा और अन्य प्रेसमें छपेहुए फार्मभी हमको देदिये हैं. यह एक उदाहरणार्थ लिखा है. औरभी ऐसे कितनेके प्रतिष्ठित व्यापारियोंने जो हमसे ऐसे २ व्यवहारकिये हैं उनको भी हमने सचेत किया है, तथापि बड़े बड़े लोक अभी-तक लोभ वशीभूत हो अपने सुकीर्तिको तिलांजलि देनेमें उद्यत होते हैं ! क्या यह कलिकालका कौतुक है ! कारण, ऐसी ध्वनि आईहै कि, किसी उच्च कुलके महाशयने हमारे रजिस्टरकियेहुए **आत्मपुराण**को बड़ेभारी लोभकी आशाकरके छपवाया है पर अभीतक वह प्रकाशित नहीं किया है. कियाभी हो तो अभीतक गुपचुपमें है. परंतु हम यही सूचितकर रखतेहैं कि, इसबातका उन्होंने पूर्ण विचार करनाचाहिये कि, पाप करनेपर सशास्त्र (राजशासन) प्रायश्चित्त लिये विना शुद्धी होतीनहीं. अंतमें हम सादर विनयपूर्वक सब व्यापारि महाशयोंको निवेदन करते हैं कि, अब ऐसा कोई साहस करें नहीं. यदि किसीने कुछ कियाभी है तो उनको यथार्थफल मिलचुका है. भविष्यतमें कोई ऐसा काम करें तो उनकोभी यथार्थफल दिये बिना नहीं रहाजायगा. अब समस्त सज्जनोंको सविनय प्रार्थना है कि, इस ग्रन्थको अवश्य संग्रह करके श्रीभगवद्‌गुरुवेदान्तसिद्धांतका परिज्ञान संपादन करके अपने जन्मका साफल्य करें इति शम् ।

आपका प्रेमाकांक्षी-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष, खेतवाड़ी-बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS Proprietor "Shri Venkteshwar" STEAM PRESS, BOMBAY.


ಸ. ತಿಮ್ಮಯ್ಯ, ದೊರಸಾಮ್ಯಯ್ಯನ
ದೊಡ್ಡಪೇಟೆ
ಮೈಸೂರು.
ಜವಳಿ ಅಂಗಡಿ,